

Corpus Indicum Graecorum et Latinorum Scriptorum

Kyle P. Johnson

January 17, 2015

Contents

| | |
|--|-----------|
| Contents | ii |
| 1 Introduction | 1 |
| 2 Pre–classical Greek sources | 3 |
| 2.1 Aesopus et Aesopica | 3 |
| 2.2 Dionysius Chalcus | 4 |
| 3 Classical Greek sources | 7 |
| 3.1 Hellanicus of Mytilene | 7 |
| 3.2 Hecataeus | 9 |
| 3.3 Aeschylus | 10 |
| 3.4 Democritus | 10 |
| 3.5 Aristocrates | 11 |
| 3.6 <i>Scholia In Aeschylum</i> | 12 |
| 3.7 Hecataeus | 13 |
| 3.8 Orphica, <i>Lithica kerygmata</i> | 14 |
| 3.9 Herodotus | 14 |
| 3.10 Ctesias of Cnidus | 30 |
| 3.11 Ephippus Comic | 44 |
| 3.12 Menander | 45 |
| 3.13 Clearchus of Soli | 45 |
| 3.14 Eudoxus of Cnidus | 46 |
| 3.15 Aristoxenus | 47 |
| 3.16 Aristoteles et Corpus Aristotelicum | 47 |
| 3.17 Megasthenes | 52 |
| 4 Hellenistic Greek sources | 71 |
| 4.1 Historia Alexandri Magni | 71 |

CONTENTS

| | | |
|----------|--|------------|
| 4.2 | Claudius Ptolemaeus | 106 |
| 4.3 | Anonymi Historici (FGrH), Heraclis historia (Tabula Albana) (IG 14.1293) | 118 |
| 4.4 | Adespota Papyracea (SH), Epigrammata | 118 |
| 4.5 | Dionysius Scytobrachion | 119 |
| 4.6 | Vettius Valens | 119 |
| 4.7 | Apollodorus of Artemita | 121 |
| 4.8 | <i>Scholia In Homerum</i> | 123 |
| 4.9 | Timon | 124 |
| 4.10 | <i>Lyrice Adespota</i> | 124 |
| 4.11 | Theopompus | 125 |
| 4.12 | Anaxarchus | 125 |
| 4.13 | Speusippus | 127 |
| 4.14 | Callixenus of Rhodes | 127 |
| 4.15 | Paradoxographus Vaticanus | 128 |
| 4.16 | Theophrastus | 129 |
| 4.17 | Ephraem the Syrian | 132 |
| 4.18 | <i>Artaxerxis Epistulae</i> | 133 |
| 4.19 | Polemon Periegetes | 133 |
| 4.20 | Phylarchus | 134 |
| 4.21 | Demosthenes | 135 |
| 4.22 | <i>Scholia In Apollonium Rhodium</i> | 135 |
| 4.23 | Philochorus | 136 |
| 4.24 | Aristodemus | 137 |
| 4.25 | <i>Scholia In Euclidem</i> | 137 |
| 4.26 | Ephorus | 138 |
| 4.27 | Lycophron (scholia in) | 139 |
| 4.28 | Phaenias of Eresus | 141 |
| 4.29 | Berosus | 141 |
| 4.30 | <i>Scholia In Theocritum</i> | 142 |
| 4.31 | Megasthenes, <i>Indica</i> | 142 |
| 4.32 | Hipparchus | 170 |
| 4.33 | Nicander | 172 |
| 4.34 | Aristophanes of Byzantium | 173 |
| 4.35 | Callisthenes | 179 |
| 4.36 | Duris of Samos | 181 |
| 5 | Roman empire, Greek and Latin sources | 183 |
| 5.1 | Dionysius Periegetes | 183 |

CONTENTS

| | | |
|------|---------------------------------|-----|
| 5.2 | Galenus | 187 |
| 5.3 | Arrian | 205 |
| 5.4 | Origen | 251 |
| 5.5 | Pseudo-Scymnus | 256 |
| 5.6 | Cassius Dio | 256 |
| 5.7 | Hippolytus Scr. Eccl | 260 |
| 5.8 | Nicolaus of Damascus | 263 |
| 5.9 | Philo of Alexandria | 264 |
| 5.10 | De bello Parthico | 267 |
| 5.11 | Clemens Alexandrinus | 267 |
| 5.12 | Eutropius / Paeanii translatio | 271 |
| 5.13 | Longus | 273 |
| 5.14 | Pseudo-Apollodorus | 273 |
| 5.15 | <i>Periplus Maris Erythraei</i> | 275 |
| 5.16 | Strabo | 286 |
| 5.17 | Manetho | 316 |
| 5.18 | Eusebius | 317 |
| 5.19 | Pseudo-Galenus | 327 |
| 5.20 | Theophilus of Antioch | 328 |
| 5.21 | Basil of Caesarea | 329 |
| 5.22 | <Perictione> | 330 |
| 5.23 | Polybius | 331 |
| 5.24 | Diogenes Laertius | 332 |
| 5.25 | Juba II Rex Mauretaniae | 333 |
| 5.26 | Diophantus | 333 |
| 5.27 | Diogenianus | 334 |
| 5.28 | Polyaenus | 335 |
| 5.29 | Dionysius Periegetes | 338 |
| 5.30 | <Damigeron Magus> | 340 |
| 5.31 | Favorinus | 340 |
| 5.32 | Chrysermus of Alexandria | 341 |
| 5.33 | Athenaeus Mechanicus | 342 |
| 5.34 | Oppian of Apamea | 343 |
| 5.35 | <i>Physiologus</i> | 344 |
| 5.36 | Cornelius Alexander Polyhistor | 345 |
| 5.37 | Julius Pollux | 346 |
| 5.38 | Thessalus of Tralles | 348 |
| 5.39 | Xenophon of Ephesus | 350 |

CONTENTS

| | | |
|----------|--|------------|
| 5.40 | Pausanias | 350 |
| 5.41 | Philo Mech. | 351 |
| 5.42 | Philostratus Major | 351 |
| 5.43 | Pseudo-Dioscorides | 352 |
| 5.44 | Evagrius Scholasticus | 352 |
| 5.45 | Porphyrius | 355 |
| 5.46 | Harpocraton | 357 |
| 5.47 | Alexander of Aphrodisias | 357 |
| 5.48 | Pseudo-Sosthenes | 359 |
| 5.49 | Dionysius Halicarnassensis | 360 |
| 5.50 | Apollonius Phil. | 361 |
| 5.51 | Ammonius Saccas | 363 |
| 5.52 | Agathemerus | 363 |
| 5.53 | Celsus | 364 |
| 5.54 | Ephraem Syrus | 366 |
| 5.55 | Aelius Herodianus | 367 |
| 5.56 | Archigenes | 377 |
| 5.57 | Herodian | 379 |
| 5.58 | Arrian of Nicomedia | 380 |
| 5.59 | Nicolaus of Damascus | 470 |
| 5.60 | Augustus | 472 |
| 5.61 | Aretaeus of Cappadocia | 473 |
| 5.62 | Plutarch | 473 |
| 5.63 | Appian | 474 |
| 5.64 | Dio Cassius | 476 |
| 5.65 | Testamentum Salomonis | 477 |
| 5.66 | Himerius | 478 |
| 5.67 | Oribasius | 480 |
| 5.68 | Philumenus | 488 |
| 5.69 | Cephalion | 488 |
| 5.70 | Athanasius | 489 |
| 5.71 | Aelius Aristides | 492 |
| 5.72 | Ptolemaeus VIII Euergetes II <Hist.> | 494 |
| 6 | Late Antique | 497 |
| 6.1 | Nonnus | 498 |
| 6.2 | Asclepius of Tralles | 551 |
| 6.3 | Acta Philippi | 552 |

CONTENTS

| | | |
|------|--|-----|
| 6.4 | Calani Epistula (date ?) | 552 |
| 6.5 | Corpus Hermeticum | 553 |
| 6.6 | Hippiatrica | 553 |
| 6.7 | Cyril of Alexandria | 556 |
| 6.8 | Acta Thomae | 559 |
| 6.9 | Pseudo-Nonnus | 565 |
| 6.10 | Joannes Malalas | 565 |
| 6.11 | Alexander romance | 569 |
| 6.12 | Joannes Stobaeus | 571 |
| 6.13 | Syriani, Sopatri Et Marcellini Scholia (?) | 574 |
| 6.14 | Flavius Claudius Julianus Imperator | 575 |
| 6.15 | Asterius of Amasea | 577 |
| 6.16 | Stephanus Med. | 578 |
| 6.17 | Joannes Philoponus | 579 |
| 6.18 | Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria | 581 |
| 6.19 | Philostorgius | 583 |
| 6.20 | John of Damascus | 585 |
| 6.21 | <i>Chronicon Paschale</i> | 589 |
| 6.22 | Choricus of Gaza | 591 |
| 6.23 | Eutecnius | 593 |
| 6.24 | Mantissa Proverbiorum | 594 |
| 6.25 | Marcian of Heraclea | 594 |
| 6.26 | Aëtius | 601 |
| 6.27 | Anonymi De Astrologia Dialogus | 609 |
| 6.28 | Timotheus of Gaza | 610 |
| 6.29 | Salaminius Hermias Sozomenus | 611 |
| 6.30 | Papyri magicæ | 614 |
| 6.31 | Procopius | 614 |
| 6.32 | Proclus Phil. | 617 |
| 6.33 | Agathias Scholasticus | 618 |
| 6.34 | Olympiodorus the Younger | 618 |
| 6.35 | Basilus | 620 |
| 6.36 | Theodoretus | 621 |
| 6.37 | Paulus (med.) | 626 |
| 6.38 | Nonnosus | 631 |
| 6.39 | Epiphanius | 633 |
| 6.40 | Stephanus Gramm. | 637 |
| 6.41 | Scholia In Demosthenem | 643 |

CONTENTS

| | | |
|----------|---|------------|
| 6.42 | Joannes Chrysostomus | 644 |
| 6.43 | Fragmenta Alchemica, Tractatus alchemicus (fragmenta) (date?) | 653 |
| 6.44 | Anonymi In Aristotelis (date ?) | 655 |
| 7 | Byzantine | 657 |
| 7.1 | Georgius Acropolites | 658 |
| 7.2 | Testamenta XII Patriarcharum | 659 |
| 7.3 | Geoponica | 660 |
| 7.4 | Constantine VII | 661 |
| 7.5 | Patria of Constantinople | 670 |
| 7.6 | Joannes Rhet (?) | 671 |
| 7.7 | Michael Apostolius | 672 |
| 7.8 | Pseudo-Macarius | 675 |
| 7.9 | Michael Attaleiates | 676 |
| 7.10 | George Pachymeres | 678 |
| 7.11 | Anthologia Graeca | 679 |
| 7.12 | Theophanes Continuatus | 681 |
| 7.13 | Manuel Philes | 682 |
| 7.14 | Joannes Zonaras | 684 |
| 7.15 | <i>Scholia In Clementem Alexandrinum</i> | 688 |
| 7.16 | Phalaridis Epistulae | 689 |
| 7.17 | Theodorus Scutariota | 689 |
| 7.18 | Nikephoros I of Constantinople | 689 |
| 7.19 | Josephus Genesius | 691 |
| 7.20 | Nicephorus Gregoras | 692 |
| 7.21 | Anthologiae Graecae Appendix | 694 |
| 7.22 | Nicetas Choniates | 695 |
| 7.23 | Pseudo-Codinus | 695 |
| 7.24 | Chronicon Paschale | 697 |
| 7.25 | Laonicus Chalcocondyles Hist. | 698 |
| 7.26 | Etymologicum Gudianum | 701 |
| 7.27 | Nikephoros Bryennios | 702 |
| 7.28 | Pseudo-Sphrantzes | 703 |
| 7.29 | <i>Encomium Heraclii ducis</i> | 704 |
| 7.30 | Joannes VI Cantacuzenus | 704 |
| 7.31 | Constantinus Manasses | 705 |
| 7.32 | Michael Glycas | 706 |
| 7.33 | Lexica In Opera Gregorii Nazianzeni | 708 |

CONTENTS

| | | |
|----------|--|------------|
| 8 | Unsorted entries | 711 |
| 8.1 | Vitae Dionysii Periegetae, Vita Dionysii | 711 |
| 8.2 | Apomasar Astrol. | 711 |
| 8.3 | [Clitophon] Hist. | 713 |
| 8.4 | Georgius Syncellus Chronogr. | 713 |
| 8.5 | Plutarchus Biogr. | 716 |
| 8.6 | Eustathius | 723 |
| 8.7 | Joannes Scylitzes Hist. | 724 |
| 8.8 | Pytheas Perieg. | 737 |
| 8.9 | Maximus Confessor Theol.) | 738 |
| 8.10 | Socrates Scholasticus Hist. | 739 |
| 8.11 | Sextus Empiricus Phil. | 740 |
| 8.12 | Eustathius Philol., Scr. Eccl. | 741 |
| 8.13 | Scholia In Aristotelem | 757 |
| 8.14 | Uranus Hist. | 757 |
| 8.15 | Sopater Rhet. | 757 |
| 8.16 | Theognostus Gramm. | 757 |
| 8.17 | Pseudo-Zonaras Lexicogr. | 759 |
| 8.18 | Scholia In Lucianum | 760 |
| 8.19 | (H)eren(n)ius Philo Gramm. | 760 |
| 8.20 | Hippocrates et Corpus Hippocraticum Med. | 760 |
| 8.21 | Anonymi Medici Med. | 761 |
| 8.22 | Dionysius Hist. | 762 |
| 8.23 | Hesychius Lexicogr. | 762 |
| 8.24 | Achilles Tatius Scr. Erot. | 766 |
| 8.25 | Antenor Hist. | 767 |
| 8.26 | Julianus Scr. Eccl. | 767 |
| 8.27 | Lycophron Trag. | 768 |
| 8.28 | Paulus Silentarius Poeta | 768 |
| 8.29 | Simplicius Phil. | 769 |
| 8.30 | Oppianus Epic. | 769 |
| 8.31 | Pseudo-Symeon Hist. | 769 |
| 8.32 | Joannes Antiochenus Hist. | 772 |
| 8.33 | Cosmas Indicopleustes Geogr. | 773 |
| 8.34 | Cyrillus Biogr. | 778 |
| 8.35 | Clemens Romanus et Clementina Theol. | 785 |
| 8.36 | Philosophus Christianus Alchem. | 788 |
| 8.37 | Scholia In Dionysium Periegetam | 788 |

CONTENTS

| | | |
|------|---|-----|
| 8.38 | Flavius Josephus Hist. | 791 |
| 8.39 | Zosimus Hist. | 793 |
| 8.40 | Hephaestion Astrol. | 793 |
| 8.41 | Antiphon Orat. | 796 |
| 8.42 | Pausanias Perieg. | 796 |
| 8.43 | Alexander Med. | 798 |
| 8.44 | Claudius Aelianus Soph. | 799 |
| 8.45 | Procopius Rhet., Scr. Eccl. | 815 |
| 8.46 | Etymologicum Genuinum | 816 |
| 8.47 | Scholia In Pindarum | 817 |
| 8.48 | Posidonius Phil. | 817 |
| 8.49 | Eratosthenes et Eratosthenica Philol. | 821 |
| 8.50 | Theodore (? Abu-Qurrah) (? of Nicaea) | 822 |

Chapter 1

Introduction

This corpus is simple. It offers every reference to India in Classical Greek and Latin literature. More specifically, it collects the context of every occurrence of 'Ind' in the TLG and 'Ind' in the PHI5 corpora.

Chapter 2

Pre-classical Greek sources

2.1 Aesopus et Aesopica

Aesop's Fables or the Aesopica is a collection of fables credited to Aesop, a slave and story-teller believed to have lived in ancient Greece between 620 and 560 BCE. Of diverse origins, the stories associated with Aesop's name have descended to modern times through a number of sources. They continue to be reinterpreted in different verbal registers and in popular as well as artistic mediums. (From Wikipedia¹)

Aesopus et Aesopica Scr. Fab., Fabulae tabulis ceratis Assendelftianis servatae (0096: 003) "Corpus fabularum Aesopicarum, vol. 1.2, 2nd edn.", Ed. Hausrath, A., Hunger, H. Leipzig: Teubner, 1959. Fable 1, line 5

τοιγ(α)ροῦν ἀλώπηξ κατὰ τὴν ἑαυτῆς ἀγχνόϊαν (ἐνό)ησε τὰς ἐνέδρας καὶ οὐτ(ω)ς ἑαυτὴν ἤρμω- σεν, ἵνα καὶ τὴν χά(ριν) ἀναπληρώσῃ καὶ (τόν) κ[λίνδυν]ον ἐκφύγῃ.

Aesopus et Aesopica Scr. Fab., Fabulae Aphthonii rhetoris (0096: 006) "Corpus fabularum Aesopicarum, vol. 1.2, 2nd edn.", Ed. Hausrath, A., Hunger, H. Leipzig: Teubner, 1959. Fable 6bis, line 2

λέγει δὲ (Αἰσωπος ὁ μυθοποιός), ὅτι ὁ πριάμενος τὸν Ἰνδὸν ἐδυσχέραινε πρὸς τὴν χροιάν.

Aesopus et Aesopica Scr. Fab., Fabulae Aphthonii rhetoris Fable 6bis, line 6

ὥς δὲ αὐτῶ τὸ μὲν χρώμα ἔμενεν ἀχραιφνές, τὸ δῆρμα δὲ ἐξετρίβετο, φιλονεικῶν [δὲ] κατέμαθε μόλις, ὅτι ἡ χροιά φύσις ἦν τῷ Ἰνδῶ καὶ ὅτι ἔαον αὐτοῦ τὴν ψυχὴν ἢ τὴν μελανίαν

1. http://en.wikipedia.org/wiki/Aesop%27s_Fables

CHAPTER 2. PRE-CLASSICAL GREEK SOURCES

ἀφαιρήσεσθαι. ΜΥΘΟΣ Ο ΤΗΣ ΠΑΡΘΕΝΟΥ ΚΑΙ ΤΟΥ ΛΕΟΝΤΟΣ ΗΔΟΝΩΝ ΑΠΟ-
ΤΡΕΠΩΝ

λέων ἦρα παρθένου καὶ προσελθὼν τῷ πατρὶ τῆς παιδὸς ἐγγυῆσαι τὴν κόρην πρὸς γάμον
ἔδειτο.

Aesopus et Aesopica Scr. Fab., Fabulae Syntipae philosophi (0096: 009) “Corpus
fabularum Aesopicarum, vol. 1.2, 2nd edn.”, Ed. Hausrath, A., Hunger, H. Leipzig:
Teubner, 1959. Fable 41, line t

ΑΙΘΙΟΨ ΙΝΔ*ΟΣ ΛΟΤΟΜΕΝΟΣ

ἀνὴρ τις ἑωρακὼς Αἰθίοπα τινα Ἴνδον λουόμενον ἐν τῷ ποταμῷ ἔφη πρὸς αὐτόν· “μὴ
συνταράσσης καὶ θολοποιῆς τὸ ὕδωρ.

2.2 Dionysius Chalcus

Confirm person. Date?

tion, search

Dionysius Chalcus (Greek: Διονύσιος ὁ Χαλκοῦς) was an ancient Athenian poet and orator. According to Athenaeus, he was called Chalcus (“brazen”) because he advised the Athenians to adopt a brass coinage (xv. p. 669). His speeches have not survived, but his poems are referred to and quoted by such authors as Plutarch (Nicias, 5), Aristotle (Rhetoric, iii. 2), and Athenaeus (xv, p. 668, 702; x, p. 443; xiii, p. 602). The extant fragments are chiefly elegies on symposiac subjects and are characterized by extravagant metaphors.

Plutarch credits Dionysius Chalcus with leading the band of Athenian colonists who founded Thurii in 443 BC. (From Wikipedia²)

Dionysius Epic., Fragmenta (1326: 001) “Die griechischen Dichterfragmente der
römischen Kaiserzeit, vol. 1, 2nd edn.”, Ed. Heitsch, E. Göttingen: Vandenhoeck &
Ruprecht, 1963. Fragment 5b, line 2

ἐν δὲ τε Κάσπειροι ποσσικλυτοί, ἐν δ' Ἀριηνοί, Κοσσαῖος γενεὴν Κασπειρόθεν, οἳ ῥά τε πάν-
των Ἰνδῶν, ὅσσοι ἔασιν, ἀφάρτερα γούνατ' ἔχουσιν· ὅσπον γάρ τ' ἐν ὄρεσσιν ἀριστεύουσι λέοντες,
ἢ ὅπόσον δελφῖνες ἔσω ἁλὸς ἠχηέσεως, αἰετὸς εἰν ὄρνισι μεταπρέπει ἀγρομένοισι ἵπποι τε πλα-
κόνετος ἔσω πεδίοιο θέοντες, τόσπον ἐλαφροτάτοις περιπροφέρουσι πόδεσσιν Κάσπειροι μετὰ
φῦλα, τά τ' ἄφθιτος ἔλλαχεν ἡώς.

2. http://en.wikipedia.org/wiki/Dionysius_Chalcus

2.2. DIONYSIUS CHALCUS

Dionysius Epic., Fragmenta Fragment 9v, line 29

Φῆ καὶ μέσσον ὄρουσεν ἀνὰ στρατὸν, ἔν[θα μάλιστα] Κηθαῖοι πυρίκαυτον ἐπὶ μόθον
ἐκλο[νέοντο,] [ς]τὰς [δ'] ὅ γε Δηριαδῆα καὶ ἄλ[λου]ς ἱαχ[εν αὐδῶν·] [ᾧ]δ' ἄρα νῦν φράζεσθε
γυναικ[ᾶ]ν ἀτμέ[νες Ἰνδοί,] [Δ]ηριάδη δ' ἑκπαγλον ἐ[πιστά]μενος τ[άδε φράζω·] ο[ὗ] γάρ
κεν πρὶν τοῦτο κατὰ [στ]ένος αἶθο[πος ὀρμήν] οἴνου ἐρώησαιτε καὶ ἐκ κακότητα φύ[γοιτε,]
πρὶν κε θοῇ ἐνὶ νυκτὶ διάλλυδις εἰρύς[σαντες] ὠμάδια κρέα θηρὸς ἀπὸ ζωοῖο φάγη[τε].

Dionysius Epic., Fragmenta Fragment 11r, line 9

[μμεναι ἀλ] [κ]ατεναντίον [Φηρῶν ἄσχετον ὕβριν ἀ[λ]υσκά[ζ] οἱ δ' ἄμα Πορθάωνος
ἀτασθαλί[η] Αἰθιππος Προκάων τε Τυρηθ[ή] ἠδὲ λιπῶ[ν] Μοτύης τε θεῶν [ἐζόμενο[. κ]ονήσιν
ἀφελκε[ῖ] ἔστι δ[....]υοεντος ὑπὲρ πεδί[οιο] μεσ[σ]όθι τύμ]βος ἐρεμνός α[. .]χα[.....]σος
ἰερά[. .] Ἰνδ[ι].....ικ[. .] τοί δ' α[....]ε[....]ιον[γαῖαν ὅσην Γάγγης τε π[ῆ] ἐνθα δὲ κῆρα
φυγόντες ἀπ[ὸ] Πεισίνοος τε Δάμας τε Πολ[ύ] τῶν οἱ μὲν σιγῇ δεδμη[μένοι] τρεῖς ἔσαν ὅττι ἐ
πρόσθε[ῖ] αὐτὰρ ὁ καὶ μύθοισι καὶ α[ἰ] Παρπαδίκης Κόκα[λός τε?] Πεισίνοος προφέρ[ιστος]

Chapter 3

Classical Greek sources

3.1 Hellanicus of Mytilene

Confirm person.

Hellanicus of Lesbos (Ancient Greek: Ἑλλάνικος) was an ancient Greek logographer who flourished during the latter half of the 5th century BC. He was born in Mytilene on the isle of Lesbos in 490 BC and is reputed to have lived to the age of 85. According to the Suda, he lived for some time at the court of one of the kings of Macedon, and died at Perperene, a city in Aeolis on the plateau of Kozak near Pergamon, opposite Lesbos.

His work includes the first mention of the legendary founding of Rome by the Trojans; he writes that the city was founded by Aeneas when accompanying Odysseus on travels through Latium. However, he supported the idea that the Etruscans lay behind the origins of the Pelasgians, an ancient Greek people who were thought to have antedated the great Achaean invasions.

Some thirty works are attributed to him—chronological, historical and episodic. Mention may be made of:

The Priestesses of Hera at Argon: a chronological compilation, arranged according to the order of succession of these functionaries
The Carneonikae: a list of the victors in the Carnean games (the chief Spartan musical festival), including notices of literary events
An Atthis, giving the history of Attica from 683 to the end of the Peloponnesian War (404), which is referred to by Thucydides (1.97), who says that he treated the events of the years 480–431 briefly and superficially, and with little regard to chronological sequence

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Phoronis: chiefly genealogical, with short notices of events from the times of Phoroneus, primordial king in Peloponnesus. Troica and Persica: histories of Troy and Persia.

Hellanicus authored works of chronology, geography, and history, particularly concerning Attica, in which he made a distinction between what he saw as Greek mythology from history. His influence on the historiography of Athens was considerable, lasting until the time of Eratosthenes (3rd century BC).

He transcended the narrow local limits of the older logographers, and was not content to merely repeat the traditions that had gained general acceptance through the poets. He tried to give the traditions as they were locally current, and availed himself of the few national or priestly registers that presented something like contemporary registration.

He endeavoured to lay the foundations of a scientific chronology, based primarily on the list of the Argive priestesses of Hera, and secondarily on genealogies, lists of magistrates (e.g. the archons at Athens), and Oriental dates, in place of the old reckoning by generations. But his materials were insufficient and he often had recourse to the older methods.

On account of his deviations from common tradition, Hellanicus is often called an untrustworthy writer by the ancients themselves, and it is a curious fact that he appears to have made no systematic use of the many inscriptions which were ready to hand. Dionysius of Halicarnassus censures him for arranging his history, not according to the natural connection of events, but according to the locality or the nation he was describing; and undoubtedly he never, like his contemporary Herodotus, rose to the conception of a single current of events wider than the local distinction of race. His style, like that of the older logographers, was dry and bald. (From Wikipedia¹)

Hellanicus Hist., Testimonia (0539: 001) “FGrH #4, #323a, #687a”. Volume-Jacoby’-T 1a,4,T, fragment 19, line 3

STRABON I 2, 35: *Θεόπομπος* (II) δὲ ἐξομολογεῖται φήσας, ὅτι καὶ μύθους ἐν ταῖς ἱστορίαις ἐρεῖ, κρείττον ἢ ὡς Ἡρόδοτος καὶ Κτησίας (III) καὶ Ἑλλάνικος καὶ οἱ τὰ Ἰνδικὰ συγγράψαντες (III). AVIEN.

Hellanicus Hist., Fragmenta (0539: 002) “FGrH #4, #323a, #601a, #608a, #645a, #687a”. Volume-Jacoby’-F 1a,4,F, fragment 87, line 16

1. http://en.wikipedia.org/wiki/Hellanicus_of_Mytilene

3.2. HECATAEUS

.. καὶ τρίτον ἐπὶ τούτοις θεὸν ἀσώματον πτέρυγας ἐπὶ τῶν ὤμων ἔχοντα χρυσᾶς, ὃς ἐν μὲν ταῖς λαγόσι προσπεφυκυίας εἶχε ταύρων κεφαλᾶς, ἐπὶ δὲ τῆς κεφαλῆς δράκοντα πελώριον παντοδαπαῖς μορφαῖς θηρίων ἰνδαλλόμενον’.

Hellanicus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby’-F 1a,4,F, fragment 154b, line 5

Κράτης δὲ Ἑρεμνοῦς γράφει καὶ ἀποδίδωσι τοὺς Ἰνδοὺς, ἐπεὶ μέλανες οὗτοι.

Hellanicus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby’-F 1a,4,F, fragment 185, line 5

.. ἐν ἀριστεραῖ δὲ οἱ πρὸς ἑω σκύθαι νομάδες καὶ οὗτοι μέχρι τῆς ἐώιας θαλάττης καὶ τῆς Ἰνδικῆς παρατείνοντες.

Hellanicus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby’-F 1a,4,F, fragment 190, line 1

ροηδ. 36: Ἑλλάνικος ἐν Ἰνδοῖς εἶναί φησι κρήνην Σίλλην καλουμένην, ἐφ’ ἧς καὶ τὰ ἐλαφρότατα καταποντίζεται.

3.2 Hecataeus

Hecataeus of Miletus (c. 550 BC – c. 476 BC[1]) (Greek Ἑκαταῖος), named after the Greek goddess Hecate, was an early Greek historian of a wealthy family. He flourished during the time of the Persian invasion. After having travelled extensively, he settled in his native city, where he occupied a high position, and devoted his time to the composition of geographical and historical works. When Aristagoras held a council of the leading Ionians at Miletus to organize a revolt against the Persian rule, Hecataeus in vain tried to dissuade his countrymen from the undertaking.[2] In 494 BC, when the defeated Ionians were obliged to sue for terms, he was one of the ambassadors to the Persian satrap Artaphernes, whom he persuaded to restore the constitution of the Ionic cities.[3] Hecataeus is the first known Greek historian,[4] and was one of the first classical writers to mention the Celtic people. (From Wikipedia²)

of Miletus?

Hecataeus Hist., Fragmenta (0538: 002) “FGrH #1”. Volume-Jacoby’-F 1a,1,F, fragment 33, line 4

.. καὶ αὐτοῖς παῖδενμα τὴν φρουρὰν <ἔχειν> οὐ κατανυστάζουσι· διδάσκονται γὰρ τοι σοφαίαι τινὶ Ἰνδικῇ καὶ τοῦτο.

Hecataeus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby’-F 1a,1,F, fragment 294a, line 1

> (es folgt F 292 b). – s. Γανδάραι· Ἰνδῶν ἔθνος.

2. http://en.wikipedia.org/wiki/Hecataeus_of_Miletus

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Hecataeus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 1a,1,F, fragment 296, line 1
u 70 β: (φ 292a) καὶ περὶ τὸν Ἰνδὸν δέ φησι ποταμὸν γίνεσθαι τὴν κυνάραν.
Hecataeus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 1a,1,F, fragment 297, line 1
s. Ἀργάντη· πόλις Ἰνδίας, ὡς Ἑκαταῖος.
Hecataeus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 1a,1,F, fragment 298, line 1
– s. Καλαπῖαι· γένος Ἰνδικόν.
Hecataeus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 1a,1,F, fragment 299, line 1
– s. Ὠπίαι· ἔθνος Ἰνδικόν.
Hecataeus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 1a,1,F, fragment 299, line 2
Ἑκαταῖος Ἀσίαι «ἐν δ' αὐτοῖς οἰκέουσιν ἄνθρωποι παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν Ὠπίαι, ἐν δὲ
τείχος βασιλῆιον.
Hecataeus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 1a,1,F, fragment 299, line 4
ἀπὸ δὲ τούτου ἐρημὴ μέχρις Ἰνδῶν.

3.3 Aeschylus

“” (From Wikipedia³)

Aeschylus Trag., Supplices (0085: 001) “Aeschyli tragoediae, 2nd edn.”, Ed. Murray, G. Oxford: Clarendon Press, 1955, Repr. 1960. Line 284

καὶ Νεῖλος ἂν θρέψειε τοιοῦτον φυτόν, Κύπριος χαρακτήρ τ' ἐν γυναικείοις τύποις εἰκῶς
πέπληκται τεκτόνων πρὸς ἀρσένων· Ἰνδὰς τ' ἀκούω νομάδας ἵπποβάμοσιν εἶναι καμήλοις
ἀστραβιζούσας χθόνα, παρ' Αἰθίοφιν ἀστυγειτονουμένας.

Aeschylus Trag., Fragmenta (0085: 008) “Die Fragmente der Tragödien des Aischylos”, Ed. Mette, H.J. Berlin: Akademie-Verlag, 1959. Tetralogy 10, play A, fragment 74a, line 6

Ξενοφῶντα δὲ γένος τι Ἰνδῶν φάναι τὸν ‘χλούνην’ εἶναι, καθάπερ καὶ <παρ' Αἰσχύλῳ ἐν
Ἡδωνοῖς> ‘μακροσκελὴς μὲν.

3.4 Democritus

Democritus (Greek: Δημόκριτος, Dēmokritos, “chosen of the people”) (ca. 460 BC – ca. 370 BC) was an Ancient Greek philosopher born in Abdera, Thrace, Greece.[1] He was an influential pre-Socratic philosopher and pupil of Leucippus, who formulated an atomic theory for the universe.[2]

3.

3.5. ARISTOCRATES

His exact contributions are difficult to disentangle from those of his mentor Leucippus, as they are often mentioned together in texts. Their speculation on atoms, taken from Leucippus, bears a passing and partial resemblance to the nineteenth-century understanding of atomic structure that has led some to regard Democritus as more of a scientist than other Greek philosophers; however their ideas rested on very different bases.[3] Largely ignored in ancient Athens, Democritus was nevertheless well known to his fellow northern-born philosopher Aristotle. Plato is said to have disliked him so much that he wished all his books burned.[1] Many consider Democritus to be the "father of modern science".[4]

He traveled to Asia, and was even said to have reached India and Ethiopia.[10] (Cicero, de Finibus, v.19; Strabo, xvi). (From Wikipedia⁴)

Democritus Phil., Testimonia (1304: 001) "Die Fragmente der Vorsokratiker, vol. 2, 6th edn.", Ed. Diels, H., Kranz, W. Berlin: Weidmann, 1952, Repr. 1966. Fragment 1, line 15

τοῖς τε Γυμνοσοφισταῖς φασὶ τινες συμμιῆσαι αὐτὸν ἐν Ἰνδία καὶ εἰς Αἰθιοπίαν ἐλθεῖν.

Democritus Phil., Testimonia Fragment 2, line 5

SUIDAS Δημόκριτος Ἡγησιστράτου (οἱ δὲ Ἀθηνοκρίτου ἢ Δαμασίππου) γεγονώς ὅτε καὶ Σωκράτης ὁ φιλόσοφος κατὰ τὴν <οζ> Ὀλυμπιάδα [472 – 469] (οἱ δὲ κατὰ τὴν <π> [460 – 457] φασίν). Ἀβδηρίτης ἐκ Θράκης, φιλόσοφος, μαθητὴς κατὰ τινὰς Ἀναξαγόρου καὶ Λευκίππου, ὡς δὲ τινες, καὶ μάγων καὶ Χαλδαίων Περσῶν· ἦλθε γὰρ καὶ εἰς Πέρσας καὶ Ἰνδοὺς καὶ Αἰγυπτίους καὶ τὰ παρ' ἐκάστοις ἐπαιδεύθη σοφά.

Democritus Phil., Testimonia Fragment 16, line 4

ἦκεν οὖν πρὸς τοὺς Χαλδαίους καὶ εἰς Βαβυλῶνα καὶ πρὸς τοὺς μάγους καὶ τοὺς σοφιστὰς τῶν Ἰνδῶν.

Democritus Phil., Testimonia Fragment 40, line 3

Δαμασίππου Ἀβδηρίτης πολλοῖς συμβαλὼν γυμνοσοφισταῖς ἐν Ἰνδοῖς καὶ ἱερεῦσιν ἐν Αἰγύπτῳ καὶ ἀστρολόγοις καὶ ἐν Βαβυλῶνι μάγοις.

3.5 Aristocrates

Aristocrates (in Greek *Ἀριστοκράτης*; lived 4th century BC) was a person against whom Demosthenes wrote an oration, still extant, entitled Against

4. <http://en.wikipedia.org/wiki/Democritus>

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Aristocrates (Κατὰ Ἀριστοκράτους). He wrote it shortly before 352 BC for Euthycles, who accused Aristocrates of proposing an illegal decree in relation to Charidemus, a Euboean adventurer who acted as chief minister for the Thracian prince Cersobleptes and desired to assume with Athenian help full control of king Cotys former dominions. (From Wikipedia⁵)

Aristocrates Hist., Fragmenta (1189: 003) “FHG 4”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 2, line 2

Plutarch. Lyc. c. 4: Ὅτι δὲ καὶ Λιβύην καὶ Ἰβη-ρίαν ἐπῆλθεν ὁ Λυκοῦργος, καὶ περὶ τὴν Ἰνδικὴν πλα-νηθεὶς τοῖς γυμνοσοφισταῖς ὠμίλησεν, οὐδένα πλὴν Ἀριστοκράτη τὸν Ἰππάρχου Σπαρτιάτην εἰρηκότα γινώσκομεν.

3.6 *Scholia In Aeschylum*

“” (From Wikipedia⁶)

Scholia In Aeschylum, Scholia in Aeschylum (scholia vetera) (5010: 001) “Scholia Graeca in Aeschylum quae exstant omnia, vols. 1 & 2.2”, Ed. Smith, O.L. Leipzig: Teubner, 1:1976; 2.2:1982. Play Supp, hypothesis-epigram-scholion 559, line 1

χιονόβοσκον] φασὶ γὰρ λυομένης χιόνος παρὰ Ἰνδοῖς πληροῦσθαι αὐτόν.

Scholia In Aeschylum, Scholia in Prometheus vinctum (scholia vetera) (5010: 005) “The older scholia on the Prometheus bound”, Ed. Herington, C.J. Leiden: Brill, 1972. Vita-argumentum-scholion-epigram sch, verse 844b, line 3

A. PPd (post 844a) et Ya (iuxta Prom. 852): Ἰστέον δὲ ὅτι ὅπερ ὁ Νεῖλος ἐν τῇ Αἰγύπτῳ ποιεῖ, τοῦτο καὶ ὁ ἐν τῇ Ἰνδῇ ῥέων ποταμός.

Scholia In Aeschylum, Scholia in Prometheus vinctum (scholia vetera) Vita-argumentum-scholion-epigram sch, verse 844b, line 6

ἄρδει γὰρ καὶ οὗτος τὰ ἐκεῖσε πεδία, διαφέρει δὲ τι τοῦ Νείλου· μετὰ δὲ τὸ ἀρδεῦσαι τοῦτον τὰ ἐκεῖσε χωράφια, συνελθόντες οἱ ἐν τῇ Ἰνδῇ οἰκοῦντες φωνὰς εὐχαριστηρίους μετὰ κυμβά-λων καὶ ἤχων ὀργάνων τούτῳ τῷ ποταμῷ ἀναπέμ-πουσι.

Scholia In Aeschylum, Scholia in Aeschylum (scholia recentiora) (5010: 009) “Aeschyli tragoediae superstites et deperditarum fragmenta, vol. 3 [Scholia Graeca ex codicibus aucta et emendata]”, Ed. Dindorf, W. Oxford: Oxford University Press, 1851, Repr. 1962. Play Pr, hypothesis-verse of play 851, line 5

O.P. Ἰστέον δὲ ὅτι ὅπερ ὁ Νεῖλος ἐν τῇ Αἰγύπτῳ ποιεῖ, τοῦτο καὶ ὁ ἐν τῇ Ἰνδῇ ῥέων ποταμός.

5. http://en.wikipedia.org/wiki/Aristocrates_of_Athens

6.

3.7. HECATAEUS

Scholia In Aeschylum, Scholia in Aeschylum (scholia recentiora) Play Pr, hypothesis-verse of play 851, line 7

μετὰ δὲ τὸ ἀρδεῦσαι τοῦτον τὰ ἐκεῖσε χωράφια, συνελθόντες οἱ ἐν τῇ Ἰνδῇ οἰκοῦντες φωνὰς εὐχαριστηρίους μετὰ κυμβάλων καὶ ἤχων ὀργάνων τούτῳ τῷ ποταμῷ ἀναπέμπουσι.

3.7 Hecataeus

Hecataeus of Miletus (c. 550 BC – c. 476 BC[1]) (Greek Ἑκαταῖος), named after the Greek goddess Hecate, was an early Greek historian of a wealthy family. He flourished during the time of the Persian invasion. After having travelled extensively, he settled in his native city, where he occupied a high position, and devoted his time to the composition of geographical and historical works. When Aristagoras held a council of the leading Ionians at Miletus to organize a revolt against the Persian rule, Hecataeus in vain tried to dissuade his countrymen from the undertaking.[2] In 494 BC, when the defeated Ionians were obliged to sue for terms, he was one of the ambassadors to the Persian satrap Artaphernes, whom he persuaded to restore the constitution of the Ionic cities.[3] Hecataeus is the first known Greek historian,[4] and was one of the first classical writers to mention the Celtic people. (From Wikipedia⁷)

Correct Hecataeus?

Hecataeus Hist., Fragmenta (1390: 002) “FGrH #264”. Volume-Jacoby’-F 3a,264,F, fragment 25, line 620

(2) ἔπειτ’ εἰς μὲν τὴν Ἐρυθρὰν θάλατταν ἀπέστειλε στόλον νεῶν τετρακοσίων, πρῶτος τῶν ἐγχωρίων μακρὰ σκάφη ναυπηγησάμενος, καὶ τὰς τε νήσους τὰς ἐν τοῖς τόποις κατεκτήσατο, καὶ τῆς ἡπει-ρου τὰ παρὰ θάλατταν μέρη κατεστρέφατο μέχρι τῆς Ἰνδικῆς· αὐτὸς δὲ μετὰ τῆς δυνάμεως περὶ τὴν πορείαν [διὰ Συρίας] ποιησάμενος κατεστρέφατο πᾶσαν τὴν Ἀσίαν.

Hecataeus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby’-F 3a,264,F, fragment 25, line 624

(4) καὶ γὰρ τὸν Γάγγην ποταμὸν διέβη, καὶ τὴν Ἰνδικὴν ἐπῆλθε πᾶσαν ἕως ὠκεανοῦ, καὶ τὰ τῶν Σκυθῶν ἔθνη μέχρι Τα-νάιδος ποταμοῦ τοῦ διορίζοντος τὴν Εὐρώπην ἀπὸ τῆς Ἀσίας· ὅτε δὴ φασὶ τῶν Αἰγυ-πτίων καταλειφθέντας περὶ τὴν Μαιῶτιν λίμνην συστήσασθαι τὸ τῶν Κόλχων ἔθνος.

7. http://en.wikipedia.org/wiki/Hecataeus_of_Miletus

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

3.8 Orphica, *Lithica kerygmata*

Orphica, Fragmenta (0579: 010) “Die Fragmente der Vorsokratiker, vol. 1, 6th edn.”, Ed. Diels, H., Kranz, W. Berlin: Weidmann, 1951, Repr. 1966. Fragment 13, line 20

.. καὶ τρίτον ἐπὶ τούτοις <θεὸν ἀσώματον,> πτέρυγας ἐπὶ τῶν ὤμων ἔχοντα χρυσᾶς, ὃς ἐν μὲν ταῖς λαγύσιν προσπεφυκυίας εἶχε ταύρων κεφαλᾶς, ἐπὶ δὲ τῆς κεφαλῆς δράκοντα πελώριον παντοδαπαῖς μορφαῖς θηρίων ἰνδαλλόμενον .

Orphica, *Lithica kerygmata* (0579: 012) “Les lapidaires grecs”, Ed. Halleux, R., Schamp, J. Paris: Les Belles Lettres, 1985. Section 8, line 3

Γεννᾶται δὲ ἐν τῇ Ἰνδικῇ.

Orphica, *Lithica kerygmata* Section 26, line 11

Οὗτος ὁ λίθος γεννᾶται ἐν Ἰνδία, ὅπου ὁ Φισὼν ποταμὸς ἐκ τοῦ παραδείσου ἔρχεται.

Orphica, *Lithica kerygmata* Section 29, line 14

Γίνεται δὲ ἐν τῇ Ἰνδικῇ, ὅπου καὶ οἱ προγεγραμμένοι.

Orphica, *Lithica kerygmata* Section 32, line 1

Οὗτος ἐν τῇ Ἰνδικῇ γίνεται λευκὰς ζώνας πλείστας ἔχων ἐν ἑαυτῷ ἀεριζούσας.

3.9 Herodotus

3.9.1 About Herodotus

Herodotus (/hɪˈrɒdətəs/; Ancient Greek: Ἡρόδοτος Hēródotos) was an ancient Greek historian who was born in Halicarnassus, Caria (modern day Bodrum, Turkey) and lived in the fifth century BC (c.484 – 425 BC). He has been called the “Father of History”, and was the first historian known to collect his materials systematically, test their accuracy to a certain extent and arrange them in a well-constructed and vivid narrative.[1] The Histories—his masterpiece and the only work he is known to have produced—is a record of his “inquiry” (or *ἱστορία* *historía*, a word that passed into Latin and acquired its modern meaning of “history”), being an investigation of the origins of the Greco-Persian Wars and including a wealth of geographical and ethnographical information. Although some of his stories were fanciful, he claimed he was reporting only what had been told to him. Little is known of his personal history. (From Wikipedia)

On gold-digging ants:

3.9. HERODOTUS

His accounts of India are among the oldest records of Indian civilization by an outsider.[56]

Discoveries made since the end of the 19th century have both added to and detracted from his credibility. His description of Gelonus, located in Scythia, as a city thousands of times larger than Troy was widely disbelieved until it was rediscovered in 1975. The archaeological study of the now-submerged ancient Egyptian city of Heracleion and the recovery of the so-called "Nau-cratis stela" give extensive credibility to Herodotus's previously unsupported claim that Heracleion was founded during the Egyptian New Kingdom.

Other claims he made are inconsistent with archeological and cuneiform document evidence. For instance, his account of the Medes appears to accord poorly with Assyrian and Babylonian records and with archeological evidence.[citation needed]

One of the most recent developments in Herodotus scholarship was made by the French ethnologist Michel Peissel. On his journeys to India and Pakistan, Peissel claims to have discovered an animal species that may finally illuminate one of the most bizarre passages in Herodotus's *Histories*. In Book 3, passages 102 to 105, Herodotus reports that a species of fox-sized, furry "ants" lives in one of the far eastern, Indian provinces of the Persian Empire. This region, he reports, is a sandy desert, and the sand there contains a wealth of fine gold dust. These giant ants, according to Herodotus, would often unearth the gold dust when digging their mounds and tunnels, and the people living in this province would then collect the precious dust. Now, Peissel says that in an isolated region of northern Pakistan, on the Deosai Plateau in Gilgit-Baltistan province, there exists a species of marmot, (the Himalayan marmot), (a type of burrowing squirrel) that may have been what Herodotus called giant "ants". Much like the province that Herodotus describes, the ground of the Deosai Plateau is rich in gold dust. According to Peissel, he interviewed the Minaro tribal people who live in the Deosai Plateau, and they have confirmed that they have, for generations, been collecting the gold dust that the marmots bring to the surface when they are digging their underground burrows. The story seems to have been widespread in the ancient world, because later authors like Pliny the Elder mentioned it in his gold mining section of the *Naturalis Historia*.

Even more tantalizing, in his book, *The Ants' Gold: The Discovery of the Greek El Dorado in the Himalayas*, Peissel offers the theory that Herodotus may have become confused because the old Persian word for "marmot" was

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

quite similar to that for "mountain ant". Because research suggests that Herodotus probably did not know any Persian (or any other language except his native Greek), he was forced to rely on a multitude of local translators when travelling in the vast multilingual Persian Empire. Therefore, he may have been the unwitting victim of a simple misunderstanding in translation. As Herodotus never claims to have himself seen these "ant/marmot" creatures, it is likely that he was simply reporting what other travellers were telling him, no matter how bizarre or unlikely he personally may have found it to be. In the age when most of the world was still mysterious and unknown and before the modern science of biology, the existence of a giant ant may not have seemed so far-fetched. The suggestion that he completely made up the tale may continue to be thrown into doubt as more research is conducted.[57][58]

With that said, Herodotus did follow up in passage 105 of Book 3, with the claim that the "ants/marmots" are said to chase and devour full-grown camels; again, this could simply be dutiful reporting of what was in reality a tall tale or legend told by the local tribes to frighten foreigners from seeking this relatively easy access to gold dust. On the other hand, the details of the "ants" seem somewhat similar to the description of the camel spider (Solifugae), which are said to chase camels, have lots of hair bristles, and could quite easily be mistaken for ants. On account of the fear of encountering one, there have been "many myths and exaggerations about their size".[59] Images of camel spiders[60][61] could give the impression that this could be mistaken for a giant ant, but certainly not the size of a fox. (From Wikipedia)

3.9.2 Histories

Text: Herodotus Hist., *Historiae* (0016: 001) "Hérodote. Histoires, 9 vols.", Ed. Legrand, Ph.-E. Paris: Les Belles Lettres, 1:1932; 2:1930; 3:1939; 4 (3rd edn.): 1960; 5:1946; 6:1948; 7:1951; 8:1953; 9:1954, Repr. 1:1970; 2:1963; 3:1967; 5:1968; 6:1963; 7:1963; 8:1964; 9:1968. Book 1, section 192, line 18

Κυνῶν δὲ Ἰνδικῶν τοσοῦτο δὴ τι πλῆθος ἐτρέφετο ὥστε τέσσερες τῶν ἐν τῷ πεδίῳ κῶμαι μεγάλαι, τῶν ἄλλων ἐοῦσαι ἀτελέες, τοῖσι κυσὶ προσετέταχτο σιτία παρέχειν. Go to Context

Herodotus Hist., *Historiae* Book 3, section 38, line 15

Δαρεῖος δὲ μετὰ ταῦτα καλέσας Ἰνδῶν τοὺς καλεομένους Καλλατίας, οἳ τοὺς γονέας κατ-εσθίουσι, εἶρετο, παρεόντων τῶν Ἑλλήνων καὶ δι' ἑρμηνέος μανθανόντων τὰ λεγόμενα, ἐπὶ τίνι χρήματι δεξαίατ' ἂν τελευτῶντας τοὺς πατέρας κατακαίειν πυρί· οἱ δὲ ἀμβώ-σαντες μέγα εὐφημέειν μιν ἐκέλευον. Go to Context

3.9. HERODOTUS

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 94, line 7

Μόσχοισι δὲ καὶ Τιβαρηνοῖσι καὶ Μάκρωσι καὶ Μοσσυνοῖκοισι καὶ Μαρσὶ τριηκόσια τάλαντα προεί- ρητο· νομὸς εἵνατος καὶ δέκατος οὗτος Ἰνδῶν δὲ πλεῖστος τε πολλῶ πλείστον ἐστὶ πάντων τῶν ἡμεῖς ἴδμεν ἀνθρώπων καὶ φόρον ἀπαγγίνεον πρὸς πάντας τοὺς ἄλλους ἐξήκοντα καὶ τριηκόσια τάλαντα ψήγματος· νομὸς εἰκοστός οὗτος. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 97, line 9

.. οἱ περὶ τε Νύσῃν τὴν ἱρὴν κατοίκηνται καὶ τῷ Διονύσῳ ἀνάγουσι τὰς ὀρτάς· [οὔτοι οἱ Αἰθίοπες καὶ οἱ πλησιόχωροι τούτοισι σπέρματι μὲν χρέωνται τῷ αὐτῷ τῷ καὶ οἱ Καλλαντίαι Ἰνδοί, οἰκὴ- ματα δὲ ἐκτὴνται κατὰ γαῖαν]· οὔτοι συναμφοτέροι διὰ τρί- του ἔτεος ἀγνέουσιν, ἀγνέουσιν δὲ καὶ τὸ μέχρις ἐμέο, δύο χοίνικας ἀπύρου χρυσοῦ καὶ διηκοσίας φάλαγγας ἐβένου καὶ πέντε παῖδας Αἰθίοπας καὶ ἐλέφαντος ὀδόντας μεγά- λους εἴκοσι. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 98, line 1

Τὸν δὲ χρυσὸν τοῦτον τὸν πολλὸν οἱ Ἰνδοί, ἀπ' οὗ τὸ ψήγμα τῷ βασιλεῖ τὸ εἰρημένον κομίζουσι, τρόπῳ τοιῷδε κτῶνται. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 98, line 3

Ἔστι τῆς Ἰνδικῆς χώρας τὸ πρὸς ἥλιον ἀνί- σχοντα ψάμμος· τῶν γὰρ ἡμεῖς ἴδμεν, τῶν καὶ περὶ ἀτρεκές τι λέγεται, πρῶτοι πρὸς ἡῷ καὶ ἡλίου ἀνατολὰς οἰκέουσι ἀνθρώπων τῶν ἐν τῇ Ἀσίῃ Ἰνδοί· Ἰνδῶν γὰρ τὸ πρὸς τὴν ἡῷ ἐρημὴ ἐστὶ διὰ τὴν ψάμμον. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 98, line 8

Ἔστι δὲ πολλὰ ἔθνεα Ἰνδῶν καὶ οὐκ ὁμόφωνα σφίσι, καὶ οἱ μὲν αὐτῶν νομάδες εἰσὶ, οἱ δὲ οὐ, οἱ δὲ ἐν τοῖσι ἔλεσι οἰκέουσι τοῦ ποταμοῦ καὶ ἰχθὺς σιτέονται ὠμούς, τοὺς αἰρέουσι ἐκ πλοίων καλαμίνων ὀρμώμενοι· καλάμου δὲ ἐν γόνυ πλοῖον ἕκαστον ποιεῖται. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 98, line 12

Οὔτοι μὲν δὴ τῶν Ἰνδῶν φορέουσι ἐσθῆτα φλοῖνην· ἐπεὶ ἀν' ἐκ τοῦ ποταμοῦ φλοῦν ἀμῆσωνται καὶ κόψωσι, τὸ ἐνθεύτεν φορμοῦ τρόπον κα- ταπλέξαντες ὡς θώρηκα ἐνδύνουσι. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 99, line 1

Ἄλλοι δὲ τῶν Ἰνδῶν πρὸς ἡῷ οἰκέοντες τούτων νομάδες εἰσὶ, κρεῶν ἐδεσταὶ ὠμῶν, καλέονται δὲ Παδαῖοι. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 100, line 1

Ἐτέρων δὲ ἐστὶ Ἰνδῶν ὁδε ἄλλος τρόπος· οὔτε κτείνουσι οὐδὲν ἔμφυχον οὔτε τι σπεύρουσι οὔτε οἰκίας νομίζουσι ἐκτῆσθαι ποιηφαιγέουσιν τε, καὶ αὐτοῖσι <ῥσπρίον τι> ἐστὶ ὅσον κέγχυρος τὸ μέγαθος ἐν κάλυκι, αὐτόματον ἐκ τῆς γῆς γινόμενον, τὸ συλλέγοντες αὐτῇ τῇ κάλυκι ἔφουσί τε καὶ σιτέονται. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 101, line 2

Μίξις δὲ τούτων τῶν Ἰνδῶν τῶν κατέλεξα πάντων ἐμφανὴς ἐστὶ κατὰ περ τῶν προβάτων, καὶ τὸ χρώμα φορέουσι ὅμοιον πάντες καὶ παραπλήσιον Αἰθίοφι. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 101, line 7

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Οὗτοι μὲν τῶν Ἰνδῶν ἐκαστέρῳ τῶν Περσέων οἰκέουσι καὶ πρὸς νότου ἀνέμου καὶ Δαρείου βασιλέως οὐδαμὰ ὑπήκουσαν. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 102, line 2

Ἄλλοι δὲ τῶν Ἰνδῶν Κασπατέρῳ τε πόλι καὶ τῇ Πακτυϊκῇ χώρῃ εἰσὶ πρόσοικοι, πρὸς ἄρκτου τε καὶ βορέω ἀνέμου κατοικημένοι τῶν ἄλλων Ἰνδῶν, οἱ Βακτρίοισι παραπλησίην ἔχουσι δαί- ταν. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 102, line 5

Οὗτοι καὶ μαχιμώτατοί εἰσι Ἰνδῶν καὶ οἱ ἐπὶ τὸν χρυσὸν στελλόμενοι εἰσι οὗτοι· κατὰ γὰρ τοῦτό ἐστι ἐρημὴ διὰ τὴν ψάμμον. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 102, line 16

Ἐπὶ δὲ ταύτην τὴν ψάμμον στέλλονται ἐς τὴν ἐρημον οἱ Ἰνδοί, ζευζάμενος ἕκαστος καμή- λους τρεῖς, σειρη- φόρον μὲν ἐκατέρωθεν ἔρσενα παρέλκειν, θήλειαν δὲ ἐς μέσον· ἐπὶ ταύτην δὲ αὐτὸς ἀναβαίνει, ἐπιτηδεύσας ὅκως ἀπὸ τέκνων ὡς νεωτάτων ἀποσπᾶσας ζεύξει· αἱ γὰρ σφι καμήλοι ἴππων οὐκ ἥσσονες ἐς ταχυτήτά εἰσι· χωρὶς δὲ ἄχθεα δυνατώτεραι πολλὸν φέρειν. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 104, line 1

Οἱ δὲ δὴ Ἰνδοὶ τρόπῳ τοιούτῳ καὶ ζεύξι τοιαύτῃ χρεώμενοι ἐλαύνουσι ἐπὶ τὸν χρυσὸν λελογισ- μένως ὅκως [ἀν] καυμάτων τῶν θερμότητων ἐόντων ἔσον- ται ἐν τῇ ἄρπαγῇ· ὑπὸ γὰρ τοῦ καύματος οἱ μύρμηκες ἀφανέες γίνονται ὑπὸ γῆν. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 104, line 12

Θερμότατος δὲ ἐστὶ ὁ ἥλιος τούτοις τοῖσι ἀνθρώποις τὸ ἐωθινόν, οὐ κατὰ περ τοῖσι ἄλλοις μεσαμβρίας, ἀλλ' ὑπερτείλας μέχρις οὗ ἀγορῆς δια- λύσιος· τοῦτον δὲ τὸν χρόνον καίει πολλῶ μᾶλλον ἢ τῇ μεσαμβρίῃ τὴν Ἑλλάδα, οὕτω ὥστε ἐν ὕδατι λόγος αὐτοῦς ἐστὶ βρέχεσθαι τηνικαῦτα· μεσοῦσα δὲ ἡ ἡμέρη σχεδὸν παραπλησίως καίει τοὺς <τε> ἄλλους ἀνθρώπους καὶ τοὺς Ἰνδοὺς· ἀποκλινομένης δὲ τῆς μεσαμβρίας γίνεται σφι ὁ ἥλιος κατὰ περ τοῖσι ἄλλοις ὁ ἐωθινός· καὶ τὸ ἀπὸ τούτου ἀπιδὼν ἐπὶ μᾶλλον ψύχει, ἐς ὃ ἐπὶ δυσμῇσι ἔων καὶ τὸ κάρτα ψύχει. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 105, line 1

Ἐπεὶ δὲ ἔλθωσι ἐς τὸν χώρον οἱ Ἰνδοὶ ἔχοντες θυλάκια, ἐμπλήσαντες ταῦτα τῆς ψάμμου τὴν ταχίστην ἐλαύνουσι ὀπίσω· αὐτίκα γὰρ οἱ μύρμηκες ὀδμῇ, ὡς δὲ λέγεται ὑπὸ Περσέων, μαθόντες διώκουσι. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 105, line 6

Εἶναι δὲ ταχυτήτα οὐδενὶ ἐτέρῳ ὅμοιον, οὕτω ὥστε, εἰ μὴ προλαμ- βάνειν τοὺς Ἰνδοὺς τῆς ὁδοῦ ἐν ᾧ τοὺς μύρμηκας συλλέγε- σθαι, οὐδένα ἂν σφῶν ἀποσφύζεσθαι. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 105, line 12

Τὸν μὲν δὲ πλέω τοῦ χρυσοῦ οὕτω οἱ Ἰνδοὶ κτῶνται, ὡς Πέρσαι φασί· ἄλλος δὲ σπανιώτερός ἐστι ἐν τῇ χώρῃ ὀρυσσόμενος. [Go to Context](#)

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 106, line 4

3.9. HERODOTUS

Τοῦτο μὲν γὰρ πρὸς τὴν ἡῶ ἐσχάτη τῶν οἰκεο- μένων ἡ Ἰνδικὴ ἐστὶ, ὥσπερ ὀλίγω πρότερον εἶρηκα· ἐν ταύτῃ τοῦτο μὲν τὰ ἐμψυχα, <τὰ> τετράποδά τε καὶ τὰ πετεινά, πολλῶ μείζω ἢ ἐν τοῖσι ἄλλοισι χωρίοισι ἐστὶ, πᾶ- ρεξ τῶν ἵππων (οὔτοι δὲ ἐσσοῦνται ὑπὸ τῶν Μηδικῶν, Νησαίων δὲ καλεομένων ἵππων), τοῦτο δὲ χρυσὸς ἄπλετος αὐτόθι ἐστὶ, ὁ μὲν ὀρυσσόμενος, ὁ δὲ καταφορεόμενος ὑπὸ [τῶν] ποταμῶν, ὁ δὲ ὥσπερ ἐσήμνηα ἀρπαζόμενος. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 3, section 106, line 12

Τὰ δὲ δένδρεα τὰ ἄγρια αὐτόθι φέρει καρπὸν εἴρια καλλονῇ τε προφέροντα καὶ ἀρετῇ τῶν ἀπὸ τῶν οἴων· καὶ ἐσθῆτι Ἴνδοι ἀπὸ τούτων τῶν δενδρέων χρέωνται. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 4, section 40, line 7

Μέχρι δὲ τῆς Ἰνδικῆς οἰκέεται [ἡ] Ἀσίη· τὸ δὲ ἀπὸ ταύτης ἔρημος ἤδη τὸ πρὸς τὴν ἡῶ, οὐδὲ ἔχει οὐδεὶς φράσαι οἶον δὴ τι ἐστί. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 4, section 44, line 2

Τῆς δὲ Ἀσίης τὰ πολλὰ ὑπὸ Δαρείου ἐξευρέθη, ὃς βουλόμενος Ἴνδὸν ποταμόν, ὃς κροκοδείλους δεύτερος οὗτος ποταμῶν πάντων παρέχεται, τοῦτον τὸν ποταμὸν εἰδέναι τῇ ἐς θάλασσαν ἐκδιδοί, πέμπει πλοίοισι ἄλλους τε τοῖσι ἐπίσταντες τὴν ἀληθείην ἐρέειν καὶ δὴ καὶ Σκύλακα ἄνδρα Καρυανδέα. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 4, section 44, line 12

Μετὰ δὲ τούτους περιπλώσαντας Ἴνδούς τε κατεστρέψατο Δαρεῖος καὶ τῇ θαλάσῃ ταύτῃ ἐχρᾶτο. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 5, section 3, line 1

Θρηίκων δὲ ἔθνος μέγιστόν ἐστι μετὰ γε Ἴνδούς πάντων ἀνθρώπων· εἰ δὲ ὑπ' ἐνὸς ἄρχαιτο ἢ φρονέοι κατὰ τούτῳ, ἅμαχόν τ' ἂν εἴη καὶ πολλῶ κράτιστον πάντων ἐθνέων κατὰ γνώμην τὴν ἐμήν· ἀλλὰ γὰρ τοῦτο ἄπορόν σφι καὶ ἀμήχανον μὴ κοτε ἐγγένηται· εἰσὶ δὲ κατὰ τοῦτο ἀσθενέες. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 7, section 9, line 6

Καὶ γὰρ δεινὸν ἂν εἴη πρῆγμα, εἰ Σάκας μὲν καὶ Ἴνδούς καὶ Αἰθιοπίας τε καὶ Ἀσσυρίους ἄλλα τε ἔθνεα πολλὰ καὶ μεγάλα, ἀδικήσαντα Πέρσας οὐδέν, ἀλλὰ δύναμιν προσκτᾶσθαι βουλόμενοι, καταστρεφόμενοι δούλους ἔχομεν, Ἕλληνας δὲ ὑπάρξαντας ἀδικίης οὐ τιμωρησόμεθα. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 7, section 65, line 1

Βακτρίων δὲ καὶ Σακέων ἦρχε Ἰστιάσπης ὁ Δαρείου τε καὶ Ἀτόσσης τῆς Κύρου. Ἴνδοι δὲ εἴματα μὲν ἐνδευκότες ἀπὸ ξύλων πεποιημένα, τόξα δὲ καλάμινα εἶχον καὶ οἷστους καλαμί- νους· ἐπὶ δὲ σίδηρος ἦν· ἐσταλμένοι μὲν δὴ ἦσαν οὕτω Ἴνδοί, προσετείταχαι δὲ συστρατευόμενοι Φαρναζάθρη τῷ Ἀρταβάτῳ. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 7, section 65, line 4

Ἴνδοι δὲ εἴματα μὲν ἐνδευκότες ἀπὸ ξύλων πεποιημένα, τόξα δὲ καλάμινα εἶχον καὶ οἷ- στοὺς καλαμί- νους· ἐπὶ δὲ σίδηρος ἦν· ἐσταλμένοι μὲν δὴ ἦσαν οὕτω Ἴνδοί, προσετείταχαι δὲ συστρατευόμενοι Φαρναζάθρη τῷ Ἀρταβάτῳ. Go to Context

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Herodotus Hist., Historiae Book 7, section 70, line 3

Τῶν μὲν δὴ ὑπὲρ Αἰγύπτου Αἰθιοπῶν καὶ Ἀραβίων ἤρχε Ἀρσάμης, οἱ δὲ ἀπὸ ἡλίου ἀνα-
τολέων Αἰθίοπες (διῆνοι γὰρ δὴ ἐστρατεύοντο) προσετέταχτο τοῖσι Ἰνδοῖσι, διαλλάσσοντες εἶδος
μὲν οὐδὲν τοῖσι ἐτέροισι, φωνὴν δὲ καὶ τρίχωμα μῦνον· οἱ μὲν γὰρ ἀπὸ ἡλίου Αἰ-
θίοπες ἰθύτρι-
χῆς εἰσι, οἱ δ' ἐκ τῆς Λιβύης οὐλότατον τρί-
χωμα ἔχουσι πάντων ἀνθρώπων. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 7, section 70, line 7

Οὗτοι δὲ οἱ ἐκ τῆς Ἀσίας Αἰθίοπες τὰ μὲν πλέω κατὰ περ Ἰνδοὶ ἐσεσάχατο, προμε-
τωπίδια
δὲ ἵππων εἶχον ἐπὶ τῇσι κεφαλῇσι σύν τε τοῖσι ὥσι ἐκδεδαρμένα καὶ τῇ λοφιῇ· καὶ ἀντὶ μὲν
λόφου ἢ λοφιῇ κατέχρα, τὰ δὲ ὅτα τῶν ἵππων ὀρθὰ πεπηγότα εἶχον· προ-
βλήματα δὲ ἀντ'
ἀσπίδων ἐποιεῦντο γεράνων δοράς. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 7, section 86, line 2

Μῆδοι δὲ τὴν περ ἐν τῷ πεζῷ εἶχον σκευὴν· καὶ Κίςσιοι ὥσαύτως. Ἰνδοὶ δὲ σκευὴ μὲν ἐσεσά-
χατο τῇ αὐτῇ καὶ ἐν τῷ πεζῷ, ἥλαυνον δὲ κέλητας καὶ ἄρματα· ὑπὸ δὲ τοῖσι ἄρμασι ὑπῆσαν
ἵπποι καὶ ὄνοι ἄγριοι. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 7, section 187, line 5

Γυναικῶν δὲ σιτοποιῶν καὶ παλλακῶν καὶ εὐνούχων οὐδεὶς ἂν εἴποι ἀτρεκέα ἀριθμόν· οὐδ'
αὖ ὑπόζυ-
γίων τε καὶ τῶν ἄλλων κτηνέων τῶν ἀχθοφόρων καὶ κυνῶν Ἰνδικῶν τῶν ἐπομένων,
οὐδ' ἂν τούτων ὑπὸ πλήθεος οὐδεὶς ἂν εἴποι ἀριθμόν. Go to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 8, section 113, line 12

Ὡς δὲ ἀπύκατο ἐς τὴν Θεσσαλίην, ἐνθαῦτα Μαρδόνιος ἐξελέγετο πρώτους μὲν τοὺς μυρίους
Πέρσας τοὺς Ἀθανάτους καλεομένους, πλὴν Ὑδάρνεος τοῦ στρατη-
γοῦ (οὗτος γὰρ οὐκ ἔφη
λείψεσθαι βασιλέως), μετὰ δὲ τῶν ἄλλων Περσέων τοὺς θωρηκοφόρους καὶ τὴν ἵππον τὴν χιλὴν,
καὶ Μήδους τε καὶ Σάκας καὶ Βακτρίους [τε] καὶ Ἰνδούς, καὶ τὸν πεζὸν καὶ τὴν ἵππον. Go
to Context

Herodotus Hist., Historiae Book 9, section 31, line 19

Μετὰ δὲ Βακτρίους ἔστησε Ἰνδούς· οὗτοι δὲ ἐπέσχον Ἑρμιονέας τε καὶ Ἑρε-
τρίεας καὶ
Στυρέας τε καὶ Χαλκιδέας. Go to Context

3.9. HERODOTUS

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

3.9.3 ΠΡΟΕΙΡΗΤΟΙ ΤΑΛΑΝΤΑ

(94) Παρικάνιοι δὲ καὶ Αἰθίοπες οἱ ἐκ τῆς Ἀσίας τετρακόσια τάλαντα ἀπαγίνεον· νομὸς ἑβδομος καὶ δέκατος οὗτος. Ματινηοῖσι δὲ καὶ Σάσπειρσι καὶ Ἀλαροδίοισι διηκόσια ἐπετέτακτο τάλαντα· νομὸς ὄγδοος καὶ δέκατος οὗτος. Μόσχρισι δὲ καὶ Τιβαρηνοῖσι καὶ Μάκρῳσι καὶ Μοσσυνοίοισι καὶ Μαρσὶ τριηκόσια τάλαντα προεῖρητο· νομὸς εἵνατος καὶ δέκατος οὗτος. Ἰνδῶν δὲ πλεῖστος τε πολλῶν πλεῖστον ἐστὶ πάντων τῶν ἡμεῖς ἴδμεν ἀνθρώπων καὶ φόρον ἀπαγίνεον πρὸς πάντας τοὺς ἄλλους ἐξήκοντα καὶ τριηκόσια τάλαντα ψήγματος· νομὸς εἰκοστὸς οὗτος.

(95) Τὸ μὲν δὴ ἀργύριον τὸ Βαβυλώνιον πρὸς τὸ Εὐβοϊκὸν συμβαλλόμενον τάλαντον γίνε-
ται τεσσεράκοντα καὶ πεντακόσια καὶ εἰνακισχίλια τάλαντα. Τὸ δὲ χρυσίον τρισκαίδεκάσ-
σιον λογιζομένων, τὸ ψήγμα εὐρίσκεται ἐὼν Εὐβοϊκῶν τάλαντων ὀγδάκοντα καὶ ἑξακοσίῳ
καὶ τετρακισχίλιον. Τούτων ὧν πάντων συντιθέμενον τὸ πλῆθος Εὐβοϊκὰ τάλαντα συνελέγετο
ἐς τὸν ἐπέτειον φόρον Δαρείῳ μύρια καὶ τετρακισχίλια καὶ πεντακόσια καὶ ἐξήκοντα· τὸ δ'
ἔτι τούτων ἔλασσον ἀπείεις οὐ λέγω. (96) Οὗτος Δαρείῳ προσήιε φόρος ἀπὸ τῆς τε Ἀσίας καὶ
τῆς Λιβύης ὀλιγαχόθεν· προϊόντος μέντοι τοῦ χρόνου καὶ ἀπὸ νήσων προσήιε ἄλλος φόρος καὶ
τῶν ἐν τῇ Εὐρώπῃ μέχρι Θεσσαλίας οἰκημένων. Τοῦτον τὸν φόρον θησαυρίζει βασιλεὺς τρόπῳ
τοιῷδε· ἐς πίθους κεραμίνους τήξας καταχέει, πλήσας δὲ τὸ ἄγγος περιαιρείει τὸν κέραμον·
ἐπεὰν δὲ δεηθῇ χρημάτων, κατακόπτει τοσοῦτο ὅσου ἂν ἐκάστοτε δέηται.

(97) Αὗται μὲν νυν ἀρχαί τε ἦσαν καὶ φόρων ἐπιτάξεις. Ἡ Περσίς δὲ χώρα μούνη μοι οὐκ
εἴρηται δασμοφόρος· ἀτελέα γὰρ Πέρσαι νέμονται χώραν. Οἷδε δὲ φόρον μὲν οὐδένα ἐτάχθησαν
φέρειν, δῶρα δὲ ἀγίνεον· Αἰθίοπες οἱ πρόσουροι Αἰγύπτῳ, τοὺς Καμβύσης ἐλαύνων ἐπὶ τοὺς
μακροβίους Αἰθίοπας κατεστρέψατο, ... οἱ περὶ τε Νύσσην τὴν ἰρὴν κατοίκηνται καὶ τῷ Διονύσῳ
ἀνάγουσι τὰς ὀρτάς· [οὔτοι οἱ Αἰθίοπες καὶ οἱ πλησιόχωροι τούτοις σπέρματι μὲν χρέωνται τῷ
αὐτῷ τῷ καὶ οἱ Καλλαντίαι Ἰνδοί, οἰκήματα δὲ ἔκτληται κατὰ γαίαν]· οὔτοι συναμφοτέροι
διὰ τρίτου ἔτεος ἀγίνεον, ἀγινέουσι δὲ καὶ τὸ μέχρις ἐμέο, δύο χοίνικας ἀπύρου χρυσίου καὶ
διηκοσίας φάλαγγας ἐβένου καὶ πέντε παιῖδας Αἰθίοπας καὶ ἐλέφαντος ὀδόντας μεγάλους
εἴκοσι. Κόλχοι δὲ ταξάμενοι ἐς τὴν δωρεὴν καὶ οἱ προσεχέες μέχρι Καυκάσιος ὄρεος (ἐς τοῦτο
γὰρ τὸ ὄρος ὑπὸ Πέρσῃσι ἄρχεται, τὰ δὲ πρὸς βορρῇν ἀνεμὸν τοῦ Καυκάσιος Περσέων οὐδὲν ἔτι
φροντίζει), οὔτοι ὧν δῶρα τὰ ἐτάξαντο ἔτι καὶ ἐς ἐμὲ διὰ πεντετηρίδος ἀγίνεον, ἑκατὸν παιῖδας

3.9. HERODOTUS

0.0.1 Law of the Indians

(94) The Paricanians and Ethiopians in Asia brought in four hundred talents: this is the seventeenth division. To the Matienians and Saspeirians and Alarodians was appointed a tribute of two hundred talents: this is the eighteenth division. To the Moschoi and Tibarenians and Macronians and Mossynoicoi and Mares three hundred talents were ordered: this is the nineteenth division. Of the Indians the number is far greater than that of any other race of men of whom we know; and they brought in a tribute larger than all the rest, that is to say three hundred and sixty talents of gold-dust: this is the twentieth division. 5R

(95) Now if we compare Babylonian with Euboïc talents, the silver is found to amount to nine thousand eight hundred and eighty 82 talents; and if we reckon the gold at thirteen times the value of silver, weight for weight, the gold-dust is found to amount to four thousand six hundred and eighty Euboïc talents. These being all added together, the total which was collected as yearly tribute for Dareios amounts to fourteen thousand five hundred and sixty Euboïc talents: the sums which are less than these 83 I pass over and do not mention. (96) This was the tribute which came in to Dareios from Asia and from a small part of Libya: but as time went on, other tribute came in also from the islands and from those who dwell in Europe as far as Thessaly. This tribute the king stores up in his treasury in the following manner:—he melts it down and pours it into jars of earthenware, and when he has filled the jars he takes off the earthenware jar from the metal; and when he wants money he cuts off so much as he needs on each occasion. 10R 15R 20R

(97) These were the provinces and the assessments of tribute: and the Persian land alone has not been mentioned by me as paying a contribution, for the Persians have their land to dwell in free from payment. The following moreover had no tribute fixed for them to pay, but brought gifts, namely the Ethiopians who border upon Egypt, whom Cambyses subdued as he marched against the Long-lived Ethiopians, those 84 who dwell about Nysa, which is called "sacred," and who celebrate the festivals in honour of Dionysos: these Ethiopians and those who dwell near them have the same kind of seed as the Callantian Indians, and they have underground dwellings. 85 These both together brought every other year, and continue to bring even to my own time, two quart measures 86 of unmelted gold and two hundred blocks of ebony and five Ethiopian boys and twenty large elephant tusks. The Colchians also had set themselves among those 25R 30R

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

καὶ ἑκατὸν παρθένους. Ἀράβιοι δὲ χίλια τάλαντα ἀγίνεον λιβανωτοῦ ἀνὰ πᾶν ἔτος. Ταῦτα μὲν οὗτοι δῶρα παρέξ τοῦ φόρου βασιλεῖ ἐκόμιζον.

- 30 (98) Τὸν δὲ χρυσὸν τοῦτον τὸν πολλὸν οἱ Ἰνδοί, ἀπ' οὗ τὸ ψῆγμα τῷ βασιλεῖ τὸ εἰρημένον κομίζουσι, τρόπῳ τοιῷδε κτῶνται. Ἔστι τῆς Ἰνδικῆς χώρας τὸ πρὸς ἥλιον ἀνίσχοντα ψάμμος· τῶν γὰρ ἡμεῖς ἴδμεν, τῶν καὶ πέρι ἀτρεκές τι λέγεται, πρῶτοι πρὸς ἡῶ καὶ ἡλίου ἀνατολὰς οἰκέουσι ἀνθρώπων τῶν ἐν τῇ Ἀσίῃ Ἰνδοί. Ἰνδῶν γὰρ τὸ πρὸς τὴν ἡῶ ἐρημὴ ἐστὶ διὰ τὴν ψάμμον. Ἔστι δὲ πολλὰ ἔθνεα Ἰνδῶν καὶ οὐκ ὁμόφωνα σφίσι, καὶ οἱ μὲν αὐτῶν νομάδες εἰσὶ, 35 οἱ δὲ οὐ, οἱ δὲ ἐν τοῖσι ἔλεσι οἰκέουσι τοῦ ποταμοῦ καὶ ἰχθῦς σιτέονται ὠμούς, τοὺς αἰρέουσι ἐκ πλοίων καλαμίνων ὀρμώμενοι· καλάμου δὲ ἐν γόνυ πλοῖον ἕκαστον ποιεῖται. Οὗτοι μὲν δὴ τῶν Ἰνδῶν φορέουσι ἐσθῆτα φλοῖνην· ἐπεὰν ἐκ τοῦ ποταμοῦ φλοῦν ἀμήσωνται καὶ κόψωσι, τὸ ἐνθεῦτεν φορμοῦ τρόπον καταπλέξαντες ὡς θώρηκα ἐνδύνουσι. (99) Ἄλλοι δὲ τῶν Ἰνδῶν πρὸς ἡῶ οἰκέοντες τούτων νομάδες εἰσὶ, κρεῶν ἐδεσται ὠμῶν, καλέονται δὲ Παδαῖοι. Νομαίοισι δὲ 40 τοιοισίδε λέγονται χρᾶσθαι. Ὅς ἂν κάμη τῶν ἀστῶν, ἦν τε γυνὴ ἦν τε ἀνὴρ, τὸν μὲν ἄνδρα ἄνδρες οἱ μάλιστα οἱ ὀμιλέοντες κτείνουσι, φάμενοι αὐτὸν τηκόμενον τῇ νούσῳ τὰ κρέα σφίσι διαφθεῖρεσθαι· ὁ δὲ ἄπαρνός ἐστι μὴ μὲν νοσέειν, οἱ δὲ οὐ συγγινωσκόμενοι ἀποκτείναντες κατευωχέονται· ἢ δὲ ἂν γυνὴ κάμη, ὡσαύτως αἱ ἐπιχρεώμεναι μάλιστα γυναῖκες ταῦτα τοῖσι ἀνδράσι ποιεῦσι. Τὸν γὰρ δὴ ἐς γῆρας ἀπικόμενον θύσαντες κατευωχέονται. Ἐς δὲ τούτου 45 λόγον οὐ πολλοὶ τινες αὐτῶν ἀπικνέονται· πρὸ γὰρ τοῦ τὸν ἐς νοῦσον πίπτοντα πάντα κτείνουσι. (100) Ἐτέρων δὲ ἐστὶ Ἰνδῶν ὃδε ἄλλος τρόπος· οὔτε κτείνουσι οὐδὲν ἐμφυχον οὔτε τι σπείρουσι οὔτε οἰκίας νομίζουσι ἐκτῆσθαι ποιηφαγέουσιν τε, καὶ αὐτοῖσι <ὄσπριόν τι> ἐστὶ ὅσον κέγχρος τὸ μέγαθος ἐν κάλυκι, αὐτόματον ἐκ τῆς γῆς γινόμενον, τὸ συλλέγοντες αὐτῇ τῇ κάλυκι ἔφουσί τε καὶ σιτέονται. Ὅς δ' ἂν ἐς νοῦσον αὐτῶν πέσῃ, ἐλθὼν ἐς τὴν ἔρημον κεῖται· φροντίζει 50 δὲ οὐδεὶς οὔτε ἀποθανόντος οὔτε κάμνοντος. (101) Μίξις δὲ τούτων τῶν Ἰνδῶν τῶν κατέλεξα πάντων ἐμφανὴς ἐστὶ κατὰ περ τῶν προβάτων, καὶ τὸ χρῶμα φορέουσι ὅμοιον πάντες καὶ παραπλήσιον Αἰθίοφι. Ἡ γονὴ δὲ αὐτῶν, τὴν ἀπένται ἐς τὰς γυναῖκας, οὐ κατὰ περ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων ἐστὶ λευκή, ἀλλὰ μέλαινα κατὰ περ τὸ χρῶμα· τοιαύτην δὲ καὶ Αἰθίοπες ἀπένται θορὴν. Οὗτοι μὲν τῶν Ἰνδῶν ἑκαστέρῳ τῶν Περσέων οἰκέουσι καὶ πρὸς νότου ἀνέμου 55 καὶ Δαρείου βασιλέος οὐδαμὰ ὑπήκουσαν. (102) Ἄλλοι δὲ τῶν Ἰνδῶν Κασπατῦρῳ τε πόλι

3.9. HERODOTUS

who brought gifts, and with them those who border upon them extending as far as the range of the Caucasus (for the Persian rule extends as far as these mountains, but those who dwell in the parts beyond Caucasus toward the North Wind regard the Persians no longer),—these, I say, continued to bring the gifts which they had fixed for themselves every four years 87 even down to my own time, that is to say, a hundred boys and a hundred maidens. Finally, the Arabians brought a thousand talents of frankincense every year. Such were the gifts which these brought to the king apart from the tribute. 35R

(98) Now this great quantity of gold, out of which the Indians bring in to the king the gold-dust which has been mentioned, is obtained by them in a manner which I shall tell:—That part of the Indian land which is towards the rising sun is sand; for of all the peoples in Asia of which we know or about which any certain report is given, the Indians dwell furthest away towards the East and the sunrising; seeing that the country to the East of the Indians is desert on account of the sand. Now there are many tribes of Indians, and they do not agree with one another in language; and some of them are pastoral and others not so, and some dwell in the swamps of the river 88 and feed upon raw fish, which they catch by fishing from boats made of cane; and each boat is made of one joint of cane. These Indians of which I speak wear clothing made of rushes: they gather and cut the rushes from the river and then weave them together into a kind of mat and put it on like a corslet. 40R

(99) Others of the Indians, dwelling to the East of these, are pastoral and eat raw flesh: these are called Padaians, and they practise the following customs:—whenever any of their tribe falls ill, whether it be a woman or a man, if a man then the men who are his nearest associates put him to death, saying that he is wasting away with the disease and his flesh is being spoilt for them: 89 and meanwhile he denies stoutly and says that he is not ill, but they do not agree with him; and after they have killed him they feast upon his flesh: but if it be a woman who falls ill, the women who are her greatest intimates do to her in the same manner as the men do in the other case. For 90 in fact even if a man has come to old age they slay him and feast upon him; but very few of them come to be reckoned as old, for they kill every one who falls into sickness, before he reaches old age. 45R

(100) Other Indians have on the contrary a manner of life as follows:—they neither kill any living thing nor do they sow any crops nor is it their custom to possess houses; but they feed on herbs, and they have a grain of the size of millet, in a sheath, which grows of itself from the ground; this they gather and boil with the sheath, and make it their food: and whenever any of them falls into 50R 55R 60R

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

καὶ τῇ Πακτυϊκῇ χώρῃ εἰσὶ πρόσοικοι, πρὸς ἄρκτου τε καὶ βορέω ἀνέμου κατοικημένοι τῶν ἄλλων Ἰνδῶν, οἳ Βακτρίοισι παραπλησίην ἔχουσι δίαίταν. Οὗτοι καὶ μαχιμώτατοί εἰσι Ἰνδῶν καὶ οἱ ἐπὶ τὸν χρυσὸν στελλόμενοί εἰσι οὗτοι· κατὰ γὰρ τοῦτό ἐστι ἐρημὴ διὰ τὴν ψάμμον.

- Ἐν δὴ ὧν τῇ ἐρημῇ ταύτῃ καὶ τῇ ψάμμῳ γίνονται μύρμηκες μεγάθεα ἔχοντες κυνῶν
60 μὲν ἐλάσσω, ἀλωπέκων δὲ μέζω· εἰσὶ γὰρ αὐτῶν καὶ παρὰ βασιλείῃ τῷ Περσέων ἐνθεῦτεν
θηρευθέντες. Οὗτοι ὧν οἱ μύρμηκες ποιούμενοι οἴκησιν ὑπὸ γῆν ἀναφέρουσι [τὴν] ψάμμον κατὰ
περ οἱ ἐν τοῖσι Ἑλλήσι μύρμηκες κατὰ τὸν αὐτὸν τρόπον, εἰσὶ δὲ καὶ τὸ εἶδος ὁμοιότατοι· ἡ δὲ
ψάμμος ἡ ἀναφερομένη ἐστὶ χρυσίτις. Ἐπὶ δὲ ταύτῃ τὴν ψάμμον στέλλονται ἐς τὴν ἐρημον
οἱ Ἰνδοί, ζευζάμενος ἕκαστος καμήλους τρεῖς, σειρη- φόρον μὲν ἐκατέρωθεν ἔρσενά παρέλκειν,
65 θήλεαν δὲ ἐς μέσον· ἐπὶ ταύτῃ δὴ αὐτὸς ἀναβαίνει, ἐπιτηδεύσας ὅπως ἀπὸ τέκνων ὡς νεωτάτων
ἀποσπάσας ζεύξει· αἱ γὰρ σφι κάμηλοι ἵππων οὐκ ἥσσονες ἐς ταχυτήτά εἰσι· χωρὶς δὲ ἄχθεα
δυνατώτεροι πολλὸν φέρειν. (103) Τὸ μὲν δὲ εἶδος ὁκοῖόν τι ἔχει ἡ κάμηλος, ἐπισταμένοισι τοῖσι
Ἑλλήσι οὐ συγγράφω· τὸ δὲ μὴ ἐπιστέαται αὐτῆς, τοῦτο φράσω· κάμηλος ἐν τοῖσι ὀπισθίοις
σκέλεσι ἔχει τέσσερας μηρούς καὶ γούνατα τέσσερα, τὰ τε αἰδοῖα διὰ τῶν ὀπισθίων σκελέων
70 πρὸς τὴν οὐρὴν τετραμμένα. (104) Οἱ δὲ δὴ Ἰνδοὶ τρόπῳ τοιούτῳ καὶ ζεύξι τοιαύτῃ χρεώμενοι
ἐλαύνουσι ἐπὶ τὸν χρυσὸν λελογισμένως ὅπως [ἂν] καυμάτων τῶν θερμότητων ἐόντων ἔσονται
ἐν τῇ ἄρπαγῃ· ὑπὸ γὰρ τοῦ καύματος οἱ μύρμηκες ἀφανέες γίνονται ὑπὸ γῆν. Θερμότητος
δὲ ἐστὶ ὁ ἥλιος τούτοις τοῖσι ἀνθρώποις τὸ ἐωθινόν, οὐ κατὰ περ τοῖσι ἄλλοις μεσαμβρίας,
ἀλλ' ὑπερτείλας μέχρις οὗ ἀγορῆς διαλύσις· τοῦτον δὲ τὸν χρόνον καίει πολλῶ μᾶλλον ἢ
75 τῇ μεσαμβρίῃ τὴν Ἑλλάδα, οὕτω ὥστε ἐν ὕδατι λόγος αὐτοῦς ἐστὶ βρέχεσθαι τηνικαῦτα·
μεσοῦσα δὲ ἡ ἡμέρη σχεδὸν παραπλησίως καίει τοὺς <τε> ἄλλους ἀνθρώπους καὶ τοὺς Ἰνδοὺς·
ἀποκλινομένης δὲ τῆς μεσαμβρίας γίνεται σφι ὁ ἥλιος κατὰ περ τοῖσι ἄλλοις ὁ ἐωθινός· καὶ
τὸ ἀπὸ τούτου ἀπιὼν ἐπὶ μᾶλλον ψύχει, ἐς δ' ἐπὶ δυσμῆσι ἐὼν καὶ τὸ κάρτα ψύχει. (105)
Ἐπεὰν δὲ ἔλθωσι ἐς τὸν χῶρον οἱ Ἰνδοὶ ἔχοντες θυλάκια, ἐμπλήσαντες ταῦτα τῆς ψάμμου
80 τὴν ταχίστην ἐλαύνουσι ὀπίσω· αὐτίκα γὰρ οἱ μύρμηκες ὁδμῇ, ὡς δὴ λέγεται ὑπὸ Περσέων,

3.9. HERODOTUS

sickness, he goes to the desert country and lies there, and none of them pay any attention 65R
either to one who is dead or to one who is sick. (101) The sexual intercourse of all these
Indians of whom I have spoken is open like that of cattle, and they have all one colour of
skin, resembling that of the Ethiopians: moreover the seed which they emit is not white
like that of other races, but black like their skin; and the Ethiopians also are similar in 70R
this respect. These tribes of Indians dwell further off than the Persian power extends,
and towards the South Wind, and they never became subjects of Dareios. (102) Others
however of the Indians are on the borders of the city of Caspatyros and the country of
Pactyike, dwelling towards the North 91 of the other Indians; and they have a manner of
living nearly the same as that of the Bactrians: these are the most warlike of the Indians,
and these are they who make expeditions for the gold. 75R

For in the parts where they live it is desert on account of the sand; and in this desert
and sandy tract are produced ants, which are in size smaller than dogs but larger than
foxes, for 92 there are some of them kept at the residence of the king of Persia, which
are caught here. These ants then make their dwelling under ground and carry up the 80R
sand just in the same manner as the ants found in the land of the Hellenes, which
they themselves 93 also very much resemble in form; and the sand which is brought up
contains gold. To obtain this sand the Indians make expeditions into the desert, each
one having yoked together three camels, placing a female in the middle and a male like
a trace-horse to draw by each side. On this female he mounts himself, having arranged 85R
carefully that she shall be taken to be yoked from young ones, the more lately born the
better. For their female camels are not inferior to horses in speed, and moreover they
are much more capable of bearing weights. (103) As to the form of the camel, I do not
here describe it, since the Hellenes for whom I write are already acquainted with it, but I
shall tell that which is not commonly known about it, which is this:—the camel has in 90R
the hind legs four thighs and four knees, 94 and its organs of generation are between the
hind legs, turned towards the tail. (104) The Indians, I say, ride out to get the gold in
the manner and with the kind of yoking which I have described, making calculations so
that they may be engaged in carrying it off at the time when the greatest heat prevails;
for the heat causes the ants to disappear underground. Now among these nations the sun
is hottest in the morning hours, not at midday as with others, but from sunrise to the 95R
time of closing the market: and during this time it produces much greater heat than at
midday in Hellas, so that it is said that then they drench themselves with water. Midday

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

- μαθόντες διώκουσι. Εἶναι δὲ ταχυτῆτα οὐδενὶ ἐτέρῳ ὅμοιον, οὕτω ὥστε, εἰ μὴ προλαμβάνειν τοὺς Ἰνδοὺς τῆς ὁδοῦ ἐν ᾧ τοὺς μύρμηκας συλλέγεσθαι, οὐδένα ἂν σφῶν ἀποσφύζεσθαι. Τοὺς μὲν νυν ἔρσενας τῶν καμήλων, εἶναι γὰρ ἥσσονας θέειν τῶν θηλέων, παραλύεσθαι ἐπελκομένους, οὐκ ὁμοῦ ἀμφοτέρους· τὰς δὲ θηλέας ἀναμιμνησκομένας τῶν ἑλιπον τέκνων ἐνδιδόναι μαλακὸν οὐδέν.
- 85 Τὸν μὲν δὴ πλέω τοῦ χρυσοῦ οὕτω οἱ Ἰνδοὶ κτῶνται, ὡς Πέρσαι φασί· ἄλλος δὲ σπανιώτερός ἐστι ἐν τῇ χώρῃ ὀρυσσόμενος.

- (106) Αἱ δ' ἐσχατιαί κως τῆς οἰκεομένης τὰ κάλλιστα ἔλαχον, κατὰ περ ἡ Ἑλλὰς τὰς ὥρας πολλὸν τι κάλλιστα κεκρημένας ἔλαχε. Τοῦτο μὲν γὰρ πρὸς τὴν ἡῶ ἐσχάτη τῶν οἰκομένων ἡ Ἰνδική ἐστι, ὥσπερ ὀλίγῳ πρότερον εἶρηκα· ἐν ταύτῃ τοῦτο μὲν τὰ ἔμψυχα, <τὰ>
- 90 τετράποδά τε καὶ τὰ πετεινά, πολλῶ μέρῳ ἢ ἐν τοῖσι ἄλλοισι χωρίοις ἐστι, πᾶρεξ τῶν ἵππων (οὔτοι δὲ ἐσσοῦνται ὑπὸ τῶν Μηδικῶν, Νησαίων δὲ καλεομένων ἵππων), τοῦτο δὲ χρυσὸς ἄπλετος αὐτόθι ἐστί, ὁ μὲν ὀρυσσόμενος, ὁ δὲ καταφορεόμενος ὑπὸ [τῶν] ποταμῶν, ὁ δὲ ὥσπερ ἐσήμνηνα ἀρπαζόμενος. Τὰ δὲ δένδρεα τὰ ἄγρια αὐτόθι φέρει καρπὸν εἴρια καλλονῇ τε προφέροντα καὶ ἀρετῇ τῶν ἀπὸ τῶν οἴων· καὶ ἐσθῆτι Ἰνδοὶ ἀπὸ τούτων τῶν δένδρεων χρέωνται.

3.9. HERODOTUS

however has about equal degree of heat with the Indians as with other men, while after midday their sun becomes like the morning sun with other men, and after this, as it goes further away, it produces still greater coolness, until at last at sunset it makes the air very cool indeed. (105) When the Indians have come to the place with bags, they fill them with the sand and ride away back as quickly as they can, for forthwith the ants, perceiving, as the Persians allege, by the smell, begin to pursue them: and this animal, they say, is superior to every other creature in swiftness, so that unless the Indians got a start in their course, while the ants were gathering together, not one of them would escape. So then the male camels, for they are inferior in speed of running to the females, if they drag behind are even let loose 95 from the side of the female, one after the other; 96 the females however, remembering the young which they left behind, do not show any slackness in their course. 97 Thus it is that the Indians get most part of the gold, as the Persians say; there is however other gold also in their land obtained by digging, but in smaller quantities. 100R 105R 110R

(106) It seems indeed that the extremities of the inhabited world had allotted to them by nature the fairest things, just as it was the lot of Hellas to have its seasons far more fairly tempered than other lands: for first, India is the most distant of inhabited lands towards the East, as I have said a little above, and in this land not only the animals, birds as well as four-footed beasts, are much larger than in other places (except the horses, which are surpassed by those of Media called Nessaian), but also there is gold in abundance there, some got by digging, some brought down by rivers, and some carried off as I explained just now: and there also the trees which grow wild produce wool which surpasses in beauty and excellence that from sheep, and the Indians wear clothing obtained from these trees. 115R 120R

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

3.10 Ctesias of Cnidus

3.10.1 About Ctesias

Ctesias of Cnidus (/ˈtiːzəs/; Ancient Greek: Κτησίας) was a Greek physician and historian from Cnidus in Caria. Ctesias, who lived in the 5th century BC, was physician to Artaxerxes Mnemon, whom he accompanied in 401 BC on his expedition against his brother Cyrus the Younger.

Ctesias was the author of treatises on rivers, and on the Persian revenues, of an account of India entitled *Indica* (which is of value as recording the beliefs of the Persians about India), and of a history of Assyria and Persia in 23 books, called *Persica*, written in opposition to Herodotus in the Ionic dialect, and professedly founded on the Persian royal archives. (From Wikipedia)

About *Indica*:

A record of the view of Persians of India, under the title *Indica* includes descriptions of god like people, philosophers, artisans, unquantifiable gold, among other riches and wonders.[3] The book only remains in fragments and in reports made about the book by later authors. (From Wikipedia)

3.10.2 [?][?][?]- appearing in testimonia and fragmenta

Text: Ctesias Hist., Med., Testimonia (0845: 001) “FGrH #688”. Volume-Jacoby’-T 3c,688,T, fragment 10, line 1

Bibl. 72 p. 45 a 20: ἀνεγνώσθη δὲ αὐτοῦ καὶ τὰ Ἰνδικὰ ἐν ἐνὶ βιβλίῳ, ἐν οἷς μᾶλλον ἰωνίζει. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Testimonia Volume-Jacoby’-T 3c,688,T, fragment 11b, line 3

– 1, 2, 35: Θεόπομπος (115 F 381) δὲ ἐξομολογεῖται φήσας ὅτι καὶ μύθους ἐν ταῖς ἱστορίαις ἐρεῖ κρεῖττον ἢ ὡς Ἡρόδοτος καὶ Κτησίας καὶ Ἑλλάνικος καὶ οἱ τὰ Ἰνδικὰ συγγράψαντες. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Testimonia Volume-Jacoby’-T 3c,688,T, fragment 11f, line 1

8, 28 p. 606a 8: ἐν δὲ τῇ Ἰνδικῇ, ὡς φησι Κτησίας (F 45ka), οὐκ ὦν ἀξιόπιστος. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Testimonia Volume-Jacoby’-T 3c,688,T, fragment 11h, line 2

3.10. CTESIAS OF CNIDUS

Verae narr. 1, 3: Κτησίας ὁ Κτησιόχου ὁ Κνίδιος, ὃς συνέγραψεν περὶ τῆς Ἰνδῶν χώρας καὶ τῶν παρ' αὐτοῖς ἃ μήτε αὐτὸς εἶδεν μήτε ἄλλου ἀληθεύοντος ἤκουσεν. [Go to Context](#)

Ctesias Hist., Med., Testimonia Volume-Jacoby'-T 3c,688,T, fragment 13, line 6

τῶν μέντοι γε μύθων, ἐν οἷς ἐκείνῳ λοιδореῖται, οὐδ' οὗτος ἀφίσταται (T 11), καὶ μάλιστα ἐν τοῖς ἐπιγραφόμενοις αὐτῷ Ἰνδικά'. [Go to Context](#)

Ctesias Hist., Med., Fragmenta (0845: 002) "FGrH #688". Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 37

(2) οὗτω δὲ τῶν πραγμάτων τῷ Νίνῳ προχωρούντων, δεινὴν ἐπιθυμίαν ἔσχε τοῦ καταστρέφασθαι τὴν Ἀσίαν ἅπασαν τὴν ἐντὸς Τανάιδος καὶ Νείλου· ὡς ἐπίπαν γὰρ τοῖς εὐτυχοῦσιν ἢ τῶν πραγμάτων ἐπίρροια τὴν τοῦ πλείονος ἐπιθυμίαν παρίσθησι· διόπερ τῆς μὲν Μηδίας σατράπην ἓνα τῶν περὶ αὐτὸν φίλων κατέστησεν, αὐτὸς δ' ἐπήει τὰ κατὰ τὴν Ἀσίαν ἔθνη καταστρεφόμενος· καὶ χρόνον ἑπτακαίδεκαετῇ καταναλώσας πλὴν Ἰνδῶν καὶ Βακτριανῶν τῶν ἄλλων ἀπάντων κύριος ἐγένετο. [Go to Context](#)

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 431

(2) πυνθανομένη δὲ τὸ τῶν Ἰνδῶν ἔθνος μέγιστον εἶναι τῶν κατὰ τὴν οἰκουμένην καὶ πλείστην τε καὶ καλλίστην χώραν νέμεσθαι, διανοεῖτο στρατεύειν εἰς τὴν Ἰνδικήν, ἧς ἐβασίλευε μὲν Σταβρο-βάτης κατ' ἐκείνους τοὺς χρόνους, στρατιωτῶν δ' εἶχεν ἀναρίθμητον πλῆθος· ὑπῆρχον δ' αὐτῷ καὶ ἐλέφαντες πολλοὶ καθ' ὑπερβολήν, λαμπρῶς κεκοσμημένοι τοῖς εἰς τὸν πόλεμον καταπληκτικοῖς. [Go to Context](#)

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 436

(3) ἡ γὰρ Ἰνδικὴ χώρα διάφορος οὕσα τῷ κάλλει καὶ πολλοῖς διειλημμένη ποταμοῖς, ἀρδεύεται τε πολλαχοῦ, καὶ διττοὺς καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἐκφέρει καρπούς· διὸ καὶ τῶν πρὸς τὸ ζῆν ἐπιτηδείων τοσοῦτον ἔχει πλῆθος, ὥστε διὰ παντὸς ἀφθονον ἀπόλαυσιν τοῖς ἐγχωρίοις παρέχεσθαι· λέγεται δὲ μηδέποτε κατ' αὐτὴν γεγονέναι σιτοδείαν ἢ φθορὰν καρπῶν διὰ τὴν εὐκρασίαν τῶν τόπων. [Go to Context](#)

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 446

ὑπὲρ ὧν τὰ κατὰ μέρος ἡ Σεμίραμις ἀκούσασα προήχθη μὴδὲν προαδικηθεῖσα τὸν πρὸς Ἰνδοὺς ἐξενεγκεῖν πόλεμον. [Go to Context](#)

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 454

(7) ὁ γὰρ Ἰνδὸς ποταμός, μέγιστος ὧν τῶν περὶ τοὺς τόπους καὶ τὴν βασιλείαν αὐτῆς ὀρίζων, πολλῶν προσεδεῖτο πλοίων πρὸς τε τὴν διάβασιν καὶ πρὸς τὸ τοὺς Ἰνδοὺς ἀπὸ τούτων ἀμύνασθαι· περὶ δὲ τὸν ποταμὸν οὐκ οὔσης ὕλης, ἀναγκαῖον ἦν ἐκ τῆς Βακτριανῆς περὶ παρακομίζεσθαι τὰ πλοῖα. [Go to Context](#)

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 460

(8) θεωροῦσα δ' ἡ Σεμίραμις ἑαυτὴν ἐν τῇ τῶν ἐλεφάντων χρεΐαι πολὺ λειπομένην, ἐπενοήσατο τι κατασκευάζειν ἰδίωμα τούτων τῶν ζώων, ἐλπίζουσα καταπλήξεσθαι τοὺς Ἰνδοὺς διὰ τὸ νομίζειν αὐτοὺς μὴ εἶναι τὸ σύνολον ἐλέφαντας ἐκτὸς τῶν κατὰ τὴν Ἰνδικήν. [Go to Context](#)

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 471

(10) οἱ δὲ ταῦτα κατασκευάζοντες αὐτῇ τεχνῖται προσεκαρ- τέρουν τοῖς ἔργοις ἐν τινὶ περιβόλῳ περιωικοδομημένοι καὶ πύλας ἔχοντι τηρουμένας ἐπιμελῶς, ὥστε μηδένα μῆτε τῶν ἔσωθεν ἐξέναι τεχνιτῶν μῆτε τῶν ἔξωθεν εἰσιέναι πρὸς αὐτούς· τοῦτο δ' ἐποίησεν, ὅπως μηδεὶς τῶν ἔξωθεν ἴδῃ τὸ γινόμενον μηδὲ διαπέσῃ φήμη πρὸς Ἴνδους περὶ τούτων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 483

.... (4) ὁ δὲ τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς Σταβροβάτης πυνθανόμενος τὰ τε μεγέθη τῶν ὀνομαζομένων δυνάμεων καὶ τὴν ὑπερβολὴν τῆς εἰς τὸν πόλεμον παρασκευῆς, ἔσπευδεν ἐν ἅπασιν ὑπερθέσθαι τὴν Σεμίραμιν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 486

(5) καὶ πρῶτον μὲν ἐκ τοῦ καλάμου κατεσκευάσε πλοῖα ποτάμια τετρακισχίλια· ἡ γὰρ Ἰνδικὴ παρά τε τοὺς ποταμούς καὶ τοὺς ἐλώδεις τόπους φέρει καλάμου πλῆθος, οὗ τὸ πάχος οὐκ ἂν ῥαϊδίως ἄνθρωπος περιλάβοι· λέγεται δὲ καὶ τὰς ἐκ τούτων κατασκευαζόμενας ναῦς διαφοροὺς κατὰ τὴν χρεῖαν ὑπάρχειν, οὗσης ἀσῆπτου ταύτης τῆς ὕλης. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 491

(6) ποιησάμενος δὲ καὶ τῆς τῶν ὀπλῶν κατασκευῆς πολλὴν ἐπιμέλειαν καὶ πᾶσαν ἐπελθὼν τὴν Ἰνδικήν, ἤθροισε δύναμιν πολὺ μείζονα τῆς Σεμιράμιδι συναχθείσης. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 502

(2) ἡ δὲ Σεμίραμις ἀναγνοῦσα τὴν ἐπιστολὴν καὶ καταγελάσασα τῶν γεγραμμένων, διὰ τῶν ἔργων ἔφησε τὸν Ἰνδὸν πειράσεσθαι τῆς περὶ αὐτὴν ἀρετῆς. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 503

ἐπεὶ δὲ προάγουσα μετὰ τῆς δυνάμεως ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν παρε- γενήθη, κατέλαβε τὰ τῶν πολεμίων πλοῖα πρὸς μάχην ἔτοιμα. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 512

μετὰ δὲ ταῦθ' ὁ μὲν τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς ἀπήγαγε τὴν δυνάμιν ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ, προσποιούμενος μὲν ἀναχωρεῖν διὰ φόβον, τῇ δ' ἀληθείᾳ βουλόμενος τοὺς πολεμίους προτρέψασθαι διαβῆναι τὸν ποταμόν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 518

(6) ἡ δὲ Σεμίραμις κατὰ νοῦν αὐτῇ τῶν πραγμάτων προχωρούντων, ἔξευξε τὸν ποταμὸν κατασκευάσασα πολυτελῆ καὶ μεγάλην γέφυραν, δι' ἧς ἅπασαν διακομίσασα τὴν δυνάμιν ἐπὶ μὲν τοῦ ξεύγματος φυλακὴν κατέλιπεν ἀνδρῶν ἑξακισμυρίων, τῇ δ' ἄλλῃ στρατιᾷ προῆγεν ἐπιδιώκουσα τοὺς Ἰνδοὺς, προηγουμένων τῶν εἰδῶλων, ὅπως οἱ τῶν πολεμίων κατάσκοποι τῷ βασιλεῖ ἀπαγγείλωσι τὸ πλῆθος τῶν παρ' αὐτῇ θηρίων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 521

(7) οὐ διεφύεσθαι δὲ κατὰ γὰρ τοῦτο τῆς ἐλπίδος, ἀλλὰ τῶν ἐπὶ κατασκοπὴν ἐκπεμφθέντων τοῖς Ἰνδοῖς ἀπαγγελλόντων τὸ πλῆθος τῶν παρὰ τοῖς πολεμίῳ ἐλεφάντων, ἅπαντες διηγοῦντο πόθεν αὐτῇ συνακολουθεῖ τοσοῦτο πλῆθος θηρίων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 528

3.10. CTESIAS OF CNIDUS

(8) οὐ μὴν ἔμεινέ γε τὸ ψεῦδος πλείω χρόνον κρυπτόμενον· τῶν γὰρ παρὰ τῇ Σεμιράμιδι στρατευομένων τινὲς κατελήφθησαν νυκτὸς ἐν τῇ στρατοπεδείᾳ ῥαιθυμοῦντες τὰ περὶ τὰς φυλακάς, φοβηθέντες δὲ τὴν ἐπακολουθοῦσαν τιμωρίαν νῆτομόλησαν πρὸς τοὺς πολεμίους καὶ τὴν κατὰ τοὺς ἐλέφαντας πλάνην ἀπήγγειλαν· ἐφ' οἷς θαρρήσας ὁ τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς καὶ τῇ δυνάμει διαγγείλας τὰ περὶ τῶν εἰδώλων, ἐπέστρεψεν ἐπὶ τοὺς Ἀσσυρίους διατάξας τὴν δύναμιν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 531

(19) τὸ δ' αὐτὸ καὶ τῆς Σεμιράμιδος ἐπιτελούσης, ὡς ἡγγισαν ἀλλήλοις τὰ στρατόπεδα, Σταβροβάτης ὁ τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς προαπέστειλε πολὺ πρὸ τῆς φάλαγγος τοὺς ἵππεῖς μετὰ τῶν ἁρμάτων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 534

(2) δεξαμένης δὲ τῆς βασιλίσσης εὐρώστως τὴν ἔφοδον τῶν ἵππέων, καὶ τῶν κατεσκευασμένων ἐλεφάντων πρὸ τῆς φάλαγγος ἐν ἴσοις διαστήμασι τεταγμένων, συνέβαινε πτύρεσθαι τοὺς τῶν Ἰνδῶν ἵππους. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 536

(3) τὰ γὰρ εἰδῶλα πόρρωθεν μὲν ὁμοίαν εἶχε τὴν πρόσοψιν τοῖς ἀληθινοῖς θηρίοις, οἷς συνήθεις ὄντες οἱ τῶν Ἰνδῶν ἵπποι τεθαρρηκότως προσίπτευν· τοῖς δ' ἐγγίσασι ἢ τε ὁσμὴ προσέβαλλεν ἀσυνήθης, καὶ τὰλλα διαφορὰν ἔχοντα πάντα παμμεγέθη τοὺς ἵππους ὀλοσχερῶς συνετάραττε· διὸ καὶ τῶν Ἰνδῶν οἱ μὲν ἐπὶ τὴν γῆν ἔπιπτον, οἱ δὲ τῶν ζώων ἀπειθούντων τοῖς χαλινοῖς ὡς ἐτύγχανεν εἰς τοὺς πολεμίους ἐξέπιπτον μετὰ τῶν κομιζόντων αὐτοὺς ἵππων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 542

(4) ἡ δὲ Σεμίραμις μετὰ στρατιωτῶν ἐπιλέκτων μαχομένη καὶ τῷ προτερήματι δεξιῶς χρησαμένη, τοὺς Ἰνδοὺς ἐτρέφετο· ὧν φυγόντων πρὸς τὴν [τῶν Ἰνδῶν] φάλαγγα, Σταβροβάτης ὁ βασιλεὺς οὐ καταπλαγεὶς ἐπήγαγε τὰς τῶν πεζῶν τάξεις, προηγουμένων τῶν ἐλεφάντων, αὐτὸς δ' ἐπὶ τοῦ δεξιοῦ κέρατος τεταγμένος καὶ τὴν μάχην ἐπὶ τοῦ κρατίστου θηρίου ποιούμενος ἐπήγαγε καταπληκτικῶς ἐπὶ τὴν βασίλισσαν κατ' αὐτὸν τυχικῶς τεταγμένην. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 554

(7) τραπέντος οὖν τοῦ πλήθους παντός, ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰνδῶν ἐπ' αὐτὴν ἐβιάζετο τὴν Σεμίραμιν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 562

(8) πάντων δὲ φευγόντων ἐπὶ τὴν σχεδῖαν, καὶ τοσούτου πλήθους εἰς ἓνα καὶ στενὸν βιαζομένου τόπον, οἱ μὲν τῆς βασιλίσσης ὑπ' ἀλλήλων ἀπέθνησκον, συμπατούμενοι καὶ φυρόμενοι παρὰ φύσιν ἀναμιξί ἵππεῖς τε καὶ πεζοί, τῶν δὲ Ἰνδῶν ἐπικειμένων, ὥσμος ἐγένετο βίαιος ἐπὶ τῆς γεφύρας διὰ τὸν φόβον, ὥστε πολλοὺς ἐξωθουμένους ἐφ' ἑκάτερα μέρη τῆς γεφύρας ἐμπίπτειν εἰς τὸν ποταμόν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 567

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

(9) ἡ δὲ Σεμίραμις ἐπειδὴ τὸ πλεῖστον μέρος τῶν ἀπὸ τῆς μάχης διασωζομένων διὰ τὸν ποταμὸν ἔτυχε τῆς ἀσφαλείας, ἀπέκοψε τοὺς συνέχοντας δεσμούς [τὴν γέφυραν]· ὧν λυθέντων, ἡ μὲν σχεδία κατὰ πολλὰ διαιρεθεῖσα μέρη καὶ συχνοὺς ἐφ' ἑαυτῆς ἔχουσα τῶν διωκόντων Ἰνδῶν ὑπὸ τῆς τοῦ ῥεύ- ματος σφοδρότητος ὥς ἔτυχε κατηνέχθη, καὶ πολλοὺς μὲν τῶν Ἰνδῶν διέ- φθειρε, τῇ δὲ Σεμιράμιδι πολλὴν ἀσφάλειαν παρσκευάσσε, κωλύσασα τὴν τῶν πολεμίων ἐπ' αὐτὴν διάβασιν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 570

(10) μετὰ δὲ ταῦθ' ὁ μὲν τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς, διοσημείων αὐτῶι γενομένων, καὶ τῶν μάν- τεων ἀποφαινομένων σημαίνεσθαι τὸν ποταμὸν μὴ διαβαίνειν, ἡσυχίαν ἔσχεν, ἡ δὲ Σεμίραμις ἀλλαγὴν ποιησαμένη τῶν αἰχμαλώτων, ἐπανήλθεν εἰς Βάκτρα, δύο μέρη τῆς δυνάμεως ἀπο- βεβληκυῖα. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 1b, line 586

αὕτη μὲν οὖν βασιλεύσασα τῆς Ἀσίας ἀπάσης πλην Ἰνδῶν ἐτελεύτησε τὸν προειρημένον τρό- πον, βιώσασα μὲν ἔτη ἐξήκοντα καὶ δύο, βασιλεύσασα δὲ δύο πρὸς τοῖς τεττα- ράκοντα. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 9, line 67

καὶ πίπτει καὶ αὐτὸς Κῦρος ἐκ τοῦ ἵππου, καὶ Ἰνδὸς ἀνὴρ – συνεμάχουν γὰρ καὶ Ἰνδοὶ τοῖς Δερβίκεσιν, ἐξ ὧν καὶ τοὺς ἐλέφαντας ἔφερον – οὗτος ὁ Ἰνδὸς πεπτωκότα Κύρον βάλλει ἀκοντίῳ ὑπὸ τὸ ἰσχύον εἰς τὸν μηρόν· ἐξ οὗ καὶ τελευτᾷ. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 11, line 2

s.v. Δυρβαῖοι· ἔθνος καθῆκον εἰς Βάκτρον καὶ τὴν Ἰνδικήν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 11, line 3

<Κτησίας ἐν Περσικῶν <ι>· «χώρα δὲ πρὸς νότον πρόσκειται Δυρβαῖοι, <πρὸς τὴν Βα- κτρίαν καὶ Ἰνδικὴν κατα- τείνοντες>. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 11, line 5

οὗτοι εὐδαίμονες ἄνδρες καὶ πλούσιοι καὶ κάρτα δίκαιοι εἰσι> [πρὸς τὴν Βακτρίαν καὶ Ἰνδικὴν κατατείνοντες]· <οὗτοι οὔτε ἀδικοῦσιν οὔτε ἀποκτεννύουσιν ἀνθρώπων οὐδένα· ἐὰν δέ τι εὗρωσι ἐν τῇ ὁδῷ χρυσίον ἢ ἱμάτιον ἢ ἀργύριον ἢ ἄλλο τι, οὐδὲν ἀποκινήσειαν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 33, line 4

Bibl. 72 p. 45 a 1 – 4: (76) ἀπὸ Ἐφέσου μέχρι Βάκτρων καὶ Ἰνδικῆς ἀριθμὸς σταθμῶν, ἡμερῶν, παρασαγγῶν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45, line 3

Bibl. 72 p. 45 a 21 – 50 a 4: (T 10) λέ- γει περὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὸ μὲν στενὸν αὐτοῦ τὸ εὖρος <μ> σταδίων εἶναι, τὸ δὲ πλατύτα- τον καὶ διακοσίων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45, line 7

(2) λέγει περὶ αὐτῶν τῶν Ἰνδῶν, ὅτι πλείους σχεδὸν συμπτάντων ἀνθρώπων (cf. F 49). Go to Context

3.10. CTESIAS OF CNIDUS

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 10

(5) ὅτι οὐκ ἔει, ἀλλ' ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ ποτίζεται ἡ Ἰνδική. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 28

καὶ περὶ τοῦ ὀρνέ- ου τοῦ βιττάκου, ὅτι γλώσσαν ἄν- θρωπίνην ἔχει καὶ φωνήν, μέγεθος μὲν ὅσον ἱέραξ, πορφύρεον δὲ πρό- σωπον· καὶ πάγωνα φέρει μέλανα, αὐτὸ δὲ κυάνεόν ἐστιν ὡς τὸν τρά- χηλον ὥσπερ κιννάβαρι· διαλέγεσθαι δὲ αὐτὸ ὥσπερ ἄνθρωπον Ἰνδιστί, ἂν δὲ Ἑλληνιστί μάθῃ, καὶ Ἑλληνιστί. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 39

(10) περὶ τῶν κυνῶν τῶν Ἰνδικῶν ὅτι μέγιστοί εἰσιν, ὡς καὶ λέοντι μάχεσθαι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 47

(14) ὅτι ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς ῥέων διὰ πεδίων καὶ δι' ὀρέων ῥεῖ, ἐν οἷς καὶ ὁ λεγόμενος Ἰνδικὸς κάλαμος φύεται, πάχος μὲν ὅσον δύο ἄνδρες περιωργυι- ωμένοι <μόλις> περιάβουιν, τὸ δὲ ὕψος ὅσον μυριοφόρου νεὼς ἰστός· εἰσὶ καὶ ἔτι μείζους καὶ ἐλάττους, οἷους εἰκὸς ἐν ὄρει μεγάλα. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 121

ἐστὶ δὲ πολλὰ ἐν τῇ Ἰνδικῇ. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 126

(16) περὶ τῶν Ἰνδῶν ὅτι δικαιότατοι· καὶ περὶ τῶν ἐθνῶν καὶ νομίμων αὐτῶν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 131

(18) ὅτι βρονταὶ καὶ ἀστρα- παὶ καὶ ὑετοὶ οὐκ εἰσιν ἐν τῇ Ἰνδικῇ, ἀνεμοὶ δὲ πολλοὶ καὶ πρηστῆρες πολλοί· καὶ ἀρπάζουσιν ὅ τι ἂν λάβωσιν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 133

ὁ δὲ ἥλιος ἀνίσχων τὸ ἥμισυ τῆς ἡμέρας ψύχος ποιεῖ, τὸ δ' ἄλλο λίαν ἀλεεινὸν ἐν τοῖς πλείστοις τῶν τῆς Ἰνδικῆς τόπων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 134

(19) ὅτι οἱ Ἰνδοὶ οὐχ ὑπὸ τοῦ ἡλίου εἰσὶ μέλανες (§ 44) ἀλλὰ φύσει· εἶναι γὰρ φησιν ἐν αὐτοῖς καὶ ἄνδρας καὶ γυναῖκας λευκοτάτους πάντων, εἰ καὶ ἐπ' ἐλαττον· ἰδεῖν δὲ καὶ αὐτὸν τοιαύτας Ἰνδὰς δύο γυναῖκας καὶ πέντε ἄνδρας. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 137

(20) ὅτι πιστῶσαι τὰ περὶ τοῦ ἡλίου βουλόμενος ὡς ἐν <λε> ἡμέραις ἐν Ἰνδαί φέρεται, λέγει ὅτι καὶ τὸ πῦρ ἐκ τῆς Αἵτνης ῥέον τὸν μέσον χῶρον, ἅτε δικαίων ἀνδρῶν ὄντων, οὐ φθείρει, φθείρον τὰ ἄλλα· καὶ ἐν Ζακύνθῳ κρηνίδας ἰχθυοφόρους εἶναι, ἐξ ὧν αἶρεται πίσις· καὶ ἐν Νάξῳ κρήνην, ἐξ ἧς οἶνος ἐνίοτε ῥεῖ καὶ μάλα ἡδύς· καὶ ὅτι πῦρ ἐστὶν ἐγγύς Φασήλιδος ἐν Λυκίᾳ ἀθάνατον, καὶ ὅτι αἰεὶ καίεται ἐπὶ πέτρας καὶ νύκτα καὶ ἡμέραν, καὶ ὕδατι μὲν οὐ σβέννυται, ἀλλὰ ἀναφλέγει, φορυτῶι δὲ σβέννυται. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 147

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

(21) ὅτι <ἐν> μέσῃ Ἰνδικῇ ἀνθρωποὶ εἰσι μέλανες – κα- λούνται Πυγμαῖοι – ὁμόγλωσσοι τοῖς ἄλλοις Ἰνδοῖς. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 177

(23) ἔπονται δὲ τῷ βασιλεῖ τῶν Ἰνδῶν τού- των τῶν Πυγμαίων ἄνδρες τρισχίλιοι· σφόδρα γάρ εἰσι το- ξόται. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 182

δικαιοτάτοι δὲ εἰσι, καὶ νόμοισι χρῶνται ὥσπερ καὶ οἱ Ἰνδοί. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 203

ἔστι δὲ καὶ χρυσὸς ἐν τῇ Ἰνδικῇ χώραι, οὐκ ἐν τοῖς ποτα- μοῖς εὕρισκόμενος καὶ πλυνόμενος, ὥσπερ ἐν τῷ Πακτωλῷ ποτα- μῷ, ἀλλ' ὄρη πολ- λὰ καὶ μεγάλα, ἐν οἷς οἰκοῦσι γρυ- πες, ὄρνεα Go to Context

τετρά-

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 226

(27) ὅτι τὰ πρό- βατα τῶν Ἰνδῶν καὶ αἱ αἴγες μεί- ζους ὄνων εἰσί. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 239

ἤ δὲ οὔτε ἡμέρος οὔτε ἄγχιός ἐστιν ἐν τῇ Ἰνδικῇ. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 241

(28) οἱ δὲ φοίνικες οἱ ἐν Ἰνδοῖς καὶ οἱ τού- των βάλανοι τρι- πλάσιοι τῶν ἐν Βα- βυλωνί. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 255

(32) ὅτι φησὶν ὡς Ἰνδῶν οὐδεὶς κεφαλαλγεί οὐδὲ ὀφθαλμιαὶ οὐδὲ ὀδονταλ- γεί οὐδὲ ἐλκοῦται τὸ στόμα οὐδὲ σηπεδόνα οὐδεμίαν ἴσχει. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 320

(36) ἔστι δὲ καὶ ποταμὸς διαρρέων διὰ τῆς Ἰνδικῆς, οὐ μέγας μὲν ἀλλ' ὡς ἐπὶ δύο σταδίου τοῦ εὗρος· ὄνομα δὲ τῷ ποταμῷ Ἰνδιστὶ μὲν Ἰπαρ- χος (?), Ἑλληνιστὶ δὲ φέρων πάντα τὰ ἀγαθὰ. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 330

τῷ δένδρῳ δὲ τούτῳ ὄνομά ἐστιν Ἰνδιστὶ σιπταχόρα, <ὅπερ> Ἑλληνιστὶ σημαίνει γλυκύ, ἡδύ· κακέϊθεν οἱ Ἰνδοὶ συλλέγουσι τὸ ἥλεκ- τρον. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 344

οἰκοῦ- σι δὲ ἐν τοῖς ὄρεσι μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 346

μέλανες δὲ εἰσι καὶ δίκαιοι πάνυ (§ 43), ὥσπερ καὶ οἱ ἄλλοι Ἰνδοί (§ 30), οἷς καὶ ἐπιμίγνυν- ται. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 352

καλοῦνται δὲ ὑπὸ τῶν Ἰνδῶν Καλύστριοι, ὅπερ ἐστὶν Ἑλληνιστὶ Κυνοκέφαλοι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 369

3.10. CTESIAS OF CNIDUS

ταῦτα οὖν τὰ θηρία τρίβοντες οἱ Ἰνδοὶ βάπτουσι τὰς φοινικίδας καὶ τοὺς χιτῶνας καὶ ἄλλο ὃ τι ἂν βούλωνται· καὶ εἰσὶ βελτίω τῶν παρὰ Πέρσαις βαμμάτων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 388

(41) οἱ δὲ Κυνοκέφαλοι σχεδὶαν ποιησάμενοι καὶ ἐπιθέντες ἀπάγουσι φόρτον τούτου καὶ τῆς πορφύρας, τὸ ἄνθος καθαρὸν ποιήσαντες, [καὶ τοῦ ἡλέκτρου] <ξ> καὶ <σ> τάλαντα τοῦ ἐνιαυτοῦ· καὶ ὅταν τὸ φοινίκιον βάπτεται, τοῦ φαρμάκου ἕτερα τοσαῦτα· καὶ ἡλέκτρου χίλια τάλαντα ἀπάγουσι κατ' ἐνιαυτὸν τῷ Ἰνδῶν βασιλεῖ. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 389

καὶ ἕτερα δὲ κατάγοντες πωλοῦσι τοῖς Ἰνδοῖς πρὸς ἄρτους καὶ ἄλφιτα καὶ ξύλινα ἱμάτια. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 410

οὗτοι δὲ οἱ ἄνθρωποι μέλανες μὲν εἰσιν ὥσπερ οἱ ἄλλοι Ἰνδοί (§ 19), ἐργάζονται δὲ οὐδέν, οὐδὲ ἐσθίουσι σῖτον, οὐδὲ πίνουσιν ὕδωρ, πρόβατα δὲ πολλὰ τρέφουσι καὶ βοῦς καὶ αἰγας καὶ οἰς, πίνουσι δὲ τὸ γάλα, ἄλλο δὲ οὐδέν· ὅταν δὲ γέννηται τινι αὐτῶν παιδίον, οὐ τέτρηται τὴν πυγὴν οὐδὲ ἀποπατεῖ, ἀλλὰ τὰ μὲν ἰσχία ἔχει, τὸ δὲ τρῆμα συμπέφυκε· διὸ ἀποπατοῦσι μὲν οὐ, οὐρεῖν δὲ ὥσπερ τυρὸν αὐτοὺς φασιν οὐ πάνυ παχύν ἀλλὰ θολερὸν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 420

(45) ὅτι εἰσὶν ὄνοι ἄγριοι ἐν τοῖς Ἰνδοῖς, ἴσοι ἵπποις καὶ μείζους. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 473

(46) ὅτι ἐν τῷ ποταμῷ τῷ Ἰνδῷ σκώληξ (§ 3) γίνεται, τὸ μὲν εἶδος οἶον περ ἐν ταῖς συκαῖς εἴωθε γίνεσθαι, τὸ δὲ μῆκος πῆχεις ἑπτὰ, καὶ μείζους δὲ καὶ ἐλάτους· τὸ δὲ πάχος δεκαεπτά παιῖδα μόλις φασὶ ταῖς χερσὶ περιλαβεῖν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 511

ὅταν δὲ παρέλθωσιν αἱ τριάκοντα ἡμέραι, ἀπορρίπτουσι τὸν σκώληκα, καὶ τὸ ἔλαιον ἀσφαλισάμενοι ἄγουσι τῷ βασιλεῖ μόνωι τῶν Ἰνδῶν· ἄλλωι δὲ οὐκ ἔξεστιν ἐξ αὐτοῦ ἔχειν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 519

(47) ὅτι ἐστὶ δένδρα ἐν Ἰνδοῖς ὑψηλὰ ὥσπερ κέδρος ἢ κυπάριστος, τὰ δὲ φύλλα ὥσπερ φοῖνιξ, ὀλίγον πλατύτερα· καὶ μασχαλίδας οὐκ ἔχει. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 521

ὀνομάζεται δὲ Ἰνδιστὶ μὲν κάρπιον, Ἑλληνιστὶ δὲ μυροδόδα. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 526

καὶ ἔπεμψεν ὁ Ἰνδῶν τῷ Περσῶν βασιλεῖ, καὶ <φῆσιν ἰδεῖν αὐτὸ Κτησίαν> καὶ ὁσφρανθῆναι ὁσμῆς οἴας οὔτε εἰπεῖν ἦν οὔτε εἰκάσαι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 530

> (49) ὅτι κρήνην ἐν Ἰνδοῖς φῆσιν, ὅσον πέντε ὀργυιῶν ἢ περιμέτρος, τετράγωνος δέ. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 3c,688,F, fragment 45, line 536

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

λούονται δὲ ἐν αὐτῷ οἱ ἐπι- σημότατοι τῶν Ἰνδῶν καὶ ἄνδρες καὶ παῖδες καὶ γυναῖκες, κολυμβῶσι δὲ ἐπὶ πόδας ῥίπτοντες ἑαυτούς· ὅταν δὲ εἰς- πηδῶσιν, ἐκβάλλει αὐτοὺς τὸ ὕδωρ ἄνω. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45, line 550
καλεῖται δὲ Ἰνδιστὶ βαλλάδῃ, Ἑλληνιστὶ δὲ ὠφελίμῃ. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45, line 552
(50) εἰσὶν ἐν τοῖς ὄρεσι τοῖς Ἰνδικοῖς, ὅπου ὁ κάλαμος (§ 15) αὐτῶν φύεται, ἄνθρωποι τὸ πλῆθος αὐτῶν ἄχρι καὶ τριῶν μυριάδων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45, line 564
εἰσὶ δὲ σφόδρα πολεμισταί, καὶ βασιλεῖ τῶν Ἰνδῶν ἔπονται τοξόται τούτων πεντακισχίλιοι, καὶ ἀκοντισταί. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45a, line 4

Dion. Per. 1143): Κτησίας μὲν δὴ, εἰ δὴ τῷ ἱκανὸς καὶ Κτησίας ἐς τεκμηρίωσιν (T 11g), ἵνα μὲν στενότατος αὐτὸς αὐτοῦ ὁ Ἰνδὸς ἐστί, τεσσαράκοντα σταδίου <λέγει> ὅτι διέχουσιν αὐτῷ αἱ ὄχθαι, ἵνα δὲ πλατύτατος, καὶ ἑκατόν· τὸ πολὺ δὲ εἶναι αὐτοῦ τὸ μέσον τούτοις. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45b, line 1
17, 29: τοῦ Ἰνδῶν βασιλέως ἐλαύν- νοντος ἐπὶ τοὺς πολεμίους δέκα μυριάδες ἐλεφάντων προ- ηγοῦνται μαχίμων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45b, line 11
ἰδεῖν δὲ ἐν Βαβυλῶνι ὁ αὐτὸς λέ- γει> τοὺς φοίνικας αὐτορρίζους ἀνατρεπομένους ὑπὸ τῶν ἐλεφάντων τὸν αὐτὸν τρόπον, ἐμπίπτοντων τῶν θηρίων αὐτοῖς βιαιότατα· ὁρῶσι δ' ἄρα, ἂν ὁ Ἰνδὸς ὁ πωλεύων αὐτοὺς κελεύσῃ δρᾶσαι τοῦτο αὐτοῖς. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45c, line 4

Chil. 7, 738: εἰ θαῦμα δὲ νομίζοι τις Ἀρράβων τοὺς καλάμους (Uranios 675 F 21), / ὁ Τζέτζης λέγει, τοὺς Ἰνδῶν καλάμους τῷ Κτησίᾳ / ὡς διοργυίους γράφοντι τὸ πλάτος τίς πιστεύσει; Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45d,Alpha, line 4

ἔστι δέ τι, <εἰ δὲ πιστεῦσαι Κτησίᾳ> ἐκεῖνος γὰρ τὸ ἐν Ἰνδοῖς θηρίον, ὡς ὄνομα εἶναι μαρτιχόραν, τοῦτ' ἔχειν ἐπ' ἀμφοτέρᾳ φησι τριστοίχους τοὺς ὀδόντας. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45d,Beta, line 2

4, 21 (PHILES De an. propr. 38): θηρίον Ἰνδικὸν βίαιον τὴν ἀλλήν, μέγεθος κατὰ τὸν λέοντα τὸν μέγιστον, τὴν δὲ χροάν ἐρυθρόν, ὡς κιννάβαριν εἶναι δοκεῖν, δασὺ δὲ ὡς κύνες· φωνῇ τῇ Ἰνδῶν μαρτιχόρας ὠνόμασται. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45d,Beta, line 23

3.10. CTESIAS OF CNIDUS

<λέγει δ' ἄρα Κτη- σίας, καί φησιν ὁμολογεῖν αὐτῶι τοὺς Ἰνδούς,> ἐν ταῖς χώραις τῶν ἀπολυομένων ἐκείνων κέντρων ὑπανα- φύεσθαι ἄλλα, ὡς εἶναι τοῦ κακοῦ τοῦδε ἐπιγονήν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45d,Beta, line 32

ὅτι δὲ κρεῶν ἀνθρωπείων ἐμπιμ- πλάμενον τόδε τὸ ζῶιον ὑπερήδεται, κατηγορεῖ καὶ τὸ ὄνομα· νοεῖται γὰρ τῇι Ἑλλήνων φωνῇ ἢ Ἰνδῶν ἀνθρωπο- φάγον αὐτὸ εἶναι· ἐκ δὲ τοῦ ἔργου καὶ κέκληται. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45d,Beta, line 35

τὰ βρέφη δὲ τῶνδε τῶν ζῶιων Ἰνδοὶ θηρῶσιν ἀκέντροις τὰς οὐράς ἔχοντα· καὶ λίθωι δὲ ἔτι διαθλῶσιν αὐτάς, ἵνα ἀδυνατῶσι τὰ κέντρα ἀναφύειν· φωνὴν δὲ σάλπιγγος ὡς ὅτι ἐγγυτάτω προίεται. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45d,Beta, line 39

λέγει δὲ <καὶ ἐωρακέναι τόδε τὸ ζῶιον ἐν Πέρσῃς Κτη- σίας ἐξ Ἰνδῶν κομισθὲν δῶρον τῶι Περσῶν βασιλεῖ, εἰ δὴ τῶι ἱκανὸς τεκμηριῶσαι ὑπὲρ τῶν τοιούτων Κτησίᾳς. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45d,Gamma, line 2

PAUSAN. 9, 21, 4: θηρίον δὲ <τό> <ἐν τῶι Κτησίῳ λόγῳ τῶι ἐς Ἰνδούς> – μαρτι<χ>όρα ὑπὸ τῶν Ἰνδῶν, ὑπὸ δὲ Ἑλλήνων φησὶν ἀνδροφάγον λελέχθαι – εἶναι πεί- θομαι τὸν τίγριν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45d,Gamma, line 8

ὀδόντας δὲ αὐτὸ τριστοίχους κατὰ ἐ<κα>- τέραν τὴν γένυν καὶ κέντρα ἐπὶ ἄκρας ἔχειν τῆς οὐράς· τούτοις δὲ τοῖς κέντροις ἐγγύθεν ἀμύνεσθαι καὶ ἀποπέμ- πειν ἐς τοὺς πορρωτέρω τοξότου ἀνδρὸς ὁιστῶι ἴσον, ταύτην οὐκ ἀληθῆ τὴν φήμην οἱ Ἰνδοὶ δέξασθαι δοκοῦσί μοι παρ' ἀλλήλων ὑπὸ τοῦ ἄγαν ἐς τὸ θηρίον δέματος. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45f*,Alpha, line 3

De an. 2, 67 (Suppl. Aristot. I 1 ed. Lambros p. 53, 27): εἰσὶ δὲ ἐν τοῖς Ἰνδικοῖς οἱ Πυγμαῖοι καλοῦνται. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45f*,Alpha, line 5

χώρα δ' αὐτῶν πολλὴ μέση ἐν τῇ Ἰνδικῇ, καὶ ἀνθρωποὶ εἰσι μέλανες ὥσπερ οἱ ἄλλοι Ἰνδοὶ καὶ ὁμόγλωσσοι ἐκείνοις, μικροὶ δὲ κάρτα· καὶ οἱ μακρότατοι αὐτῶν εἰσι πῆ- χεων δύο, οἱ δὲ πλεῖστοι πῆχεος καὶ ἡμίσεος, ἄνδρες καὶ γυναῖκες. Go to Context

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45f*,Alpha, line 28

αὐτοὶ δὲ εἰσι σιμοὶ τε καὶ αἰσχροὶ καὶ οὐδὲν ἐοικότες τοῖς ἄλλοις Ἰνδοῖς· εἰσὶ δὲ καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν μικραὶ καὶ αἰσχραί, ὥσπερ οἱ ἄνδρες. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45g, line 2

4, 26: τοὺς λαγῶς καὶ τὰς ἀλώπεκας θηρῶσιν οἱ Ἰνδοὶ τὸν τρόπον τοῦτον· κυνῶν ἐς τὴν ἄγρην οὐ δέονται, ἀλλὰ νεοττοὺς συλλαβόντες ἀετῶν καὶ κοράκων καὶ ἰκτίνων προσέτι τρέφουσι καὶ ἐκπαιδεύουσι τὴν θήραν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45h, line 2

4, 27: τὸν γρυῖπα ἀκούω τὸ ζῶιον τὸ Ἰνδικὸν τετράπουρον εἶναι κατὰ τοὺς λέοντας, καὶ ἔχει ὄνυχας καρτεροὺς ὥς ὅτι μάλιστα, καὶ τούτους μέντοι τοῖς τῶν λεόντων παραπλησίους. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45h, line 13

καὶ Βάκτριοι μὲν γειτνιῶντες Ἰνδοῖς λέγουσιν αὐτοὺς φύλακας εἶναι τοῦ χρυσοῦ <τοῦ> αὐτόθι· καὶ ὀρύττειν τε αὐτόν φασιν αὐτοὺς καὶ ἐκ τούτου τὰς καλίας ὑποπλέκειν, τὸ δὲ ἀπορ- ρέον Ἰνδοὺς λαμβάνειν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45i,Beta, line 3

De an. 2, 556 (Suppl. Aristot. I 1 p. 139, 13): <ἐκ τοῦ Κτησίου· «τὰ πρό- βατα τῶν Ἰνδῶν αἱ τε αἰγες μείζονες ὄνων τῶν μεγίστων εἰσὶ. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45k,Alpha, line 2

8, 28 p. 606 a 8: ἐν δὲ τῇ Ἰνδικῇ, <ὥς φησι Κτησίας οὐκ ὦν ἀξιόπιστος,> οὐτ' ἄγριος οὔτε ἡμερος ὤς, τὰ δ' ἄναιμα καὶ τὰ φοιιδωτὰ πάντα μεγάλα. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45k,Beta, line 3

3, 3: ἴδια δὲ ἄρα φύσεως ζώων καὶ ταῦτα ἦν· ὧν οὔτε ἄγριον οὔτε ἡμερον ἐν Ἰνδοῖς γίνεσθαι <λέγει Κτησίας. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45k,Gamma, line 3

De an. 2, 572 (Suppl. Arist. I 1) p. 143, 17: <ἐκ τοῦ Κτησίου· «ὧς οὔτε ἡμερός ἐστιν οὔτε ἄγριος ἐν τῇ Ἰνδικῇ ὅλως γῆι, οὐδ' ἂν φάγοι Ἰνδῶν οὐδεὶς ὕος κρέας οὐδὲν περ μᾶλλον ἢ ἀνθρώπου». Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45l*, line 1

4, 36: ἡ τῶν Ἰνδῶν γῆ, <φασὶν αὐτὴν οἱ συγγραφεῖς> πολυφάρμακόν τε καὶ τῶν βλα- στημάτων τῶνδε δεινῶς πολύγονον εἶναι· καὶ τὰ μὲν σώζειν αὐτῶν καὶ ἐκ τῶν κινδύνων ῥύεσθαι τοὺς ὑπὸ τῶν δακέτων ὁμοῦ τῷ θανάτῳ ὄντας (πολλὰ δὲ ἐκεῖθι τοιαῦτα), τὰ δὲ ἀπολλύναι

3.10. CTESIAS OF CNIDUS

καὶ διαφθείρειν ὀξύτατα, ὧν ἓν περ καὶ τὸ ἐκ τοῦ ὀφείως <τοῦ πορφυροῦ> γινόμενον εἴη ἄν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45l*, line 14
ὀδόντων δὲ ἄγονός ἐστιν ὁ ὄφεις οὗτος· εὐρίσκεται δ' ἐν τοῖς πυρωδεστάτοις τῆς Ἰνδικῆς χωρίοις.

Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45m*, line 2
4, 41: γένος ὀρνίθων Ἰνδικῶν βραχυτάτων καὶ τοῦτο εἴη ἄν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45m*, line 6
καὶ Ἰνδοὶ μὲν αὐτὸ φωνῇ τῇ σφετέραι δίκαιρον φιλοῦσιν ὀνομάζειν, Ἕλληνες δέ, <ὡς ἀκούω,> δίκαιον. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45m*, line 13
σπουδὴν δὲ ἄρα τὴν ἀνωτάτω τίθενται Ἰνδοὶ ἐς τὴν κτῆσιν αὐτοῦ· κακῶν γὰρ αὐτὸ ἐπί-
ληθον ἡγοῦνται τῷ ὄντι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45m*, line 16
καὶ οὖν καὶ ἐν τοῖς δώροις τοῖς μέγα τιμίοις τῷ Περσῶν βασιλεῖ ὁ Ἰνδῶν πέμπει καὶ τοῦτο·
ὁ δὲ καὶ τῶν ἄλλων ἀπάντων προτιμᾷ λαβὼν, καὶ ἀποθησαυρίζει κακῶν ἀνιάτων ἀντίπαλόν
τε καὶ ἀμυντήριον, εἰ ἀνάγκη καταλάβοι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45m*, line 22
[[καὶ διὰ ταῦτα ἀντικρίνοντες βασιανίσωμεν τῶν φαρμάκων τοῦ τε Ἰνδικοῦ καὶ τοῦ Αἰγυ-
πτίου ὁπότερον ἦν προτιμότερον· ἐπεὶ τὸ μὲν ἐφ' ἡμέραν αὐτὴν ἀνεῖχε τε καὶ ἀνέστελλε τὰ
δάκρυα τὸ Αἰγύπτιον, τὸ δὲ λήθην κακῶν παρεῖχεν αἰώ- νιον τὸ Ἰνδικόν· καὶ τὸ μὲν γυναι-
κὸς δῶρον ἦν, τὸ δὲ ὄρνιθος ἢ ἀπορρήτου φύσεως, δεσμῶν τῶν ὄντως βαρυ- τάτων ἀπολυούσης
δι' ὑπηρετοῦ τοῦ προειρημένου· καὶ Ἰνδοὺς κτήσασθαι αὐτὸ εὐτυχίσαντας, ὡς τῆς ἐνταυθοῖ
φρουρᾶς ἀπολυθῆναι ὅταν ἐθέλωσιν]]. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45n,Alpha,
line 2

Hist. mir. 17: <Κτησίας παρ' Ἰνδοῖς ξύλον γίνεσθαι φησιν,> ὃ καλεῖται πάρηβον. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45p,Beta, line
3

Chil. 7, 713: <καὶ ὁ Κτησίας ἐν Ἰνδοῖς> εἶναι τοιαῦτα <λέγει,> / ἡλεκ- τροφόρα δένδρα τε
καὶ τοὺς Κυνοκε- φάλους· / δικαίους πάνυ δὲ φησι, ζῆν δ' ἐκ τῶν ἀγρευμάτων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45p,Gamma,
line 2

4, 46: ἐν Ἰνδοῖς γίνεται θηρία τὸ μέγεθος ὅσον γένοιτο ἂν οἱ κύνθαιοι, καὶ ἐστὶν ἐρυθρά·
κινναβάρεϊ δὲ εἰκά- σαις ἄν, εἰ πρῶτον θεάσαιτο αὐτά. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45p,Gamma,
line 11

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

θηρῶσι δὲ αὐτὰ οἱ Ἴνδοι καὶ ἀποθλίβουσι, καὶ ἐξ αὐτῶν βάπτουσι τὰς τε φοινικίδας καὶ τοὺς ὑπ' αὐταῖς χιτῶνας καὶ πᾶν ὅ τι ἂν ἐθέλωσιν ἄλλο ἐς τήνδε τὴν χρόαν ἐκ- τρέφαι τε καὶ χρῶσαι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45p,Gamma, line 24

γίνονται δὲ ἐνταῦθα τῆς Ἰνδικῆς ἔνθα οἱ κύνθαιοι καὶ οἱ καλούμενοι Κυνο- κέφαλοι, οἷς τὸ ὄνομα ἔδωκεν ἡ τοῦ σώματος ὄψις τε καὶ φύσις· τὰ δὲ ἄλλα ἀνθρώπων ἔχουσι, καὶ ἡμφιεσμένοι βαδίζουσι δορὰς θηρίων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45p,Gamma, line 32

καὶ εἰσι δι- καιοι, καὶ ἀνθρώπων λυποῦσιν οὐδένα· καὶ φθέγγονται μὲν οὐδέν, ὠρύονται δέ, τῆς γε μὴν Ἰνδῶν φωνῆς ἐπαίουσι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45q, line 3

4, 52: ὄνους ἀγρίους οὐκ ἐλάττους ἵππων τὰ μεγέθη ἐν Ἰνδοῖς γίνεσθαι πέπυσμαι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45q, line 12

ἐκ δὴ τῶνδε τῶν ποικίλων κεράτων πίνειν Ἰνδοὺς ἀκούω, καὶ ταῦτα οὐ πάντας ἀλλὰ τοὺς τῶν Ἰνδῶν κρατίστους, ἐκ δια- στημάτων αὐτοῖς χρυσὸν περιχέαντας, οἷονεῖ ψελλίοις τισὶ κοσμήσαντας βραχίονα ὥραϊον ἀγάλματος. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45q, line 27

πεπίστευται δὲ τοὺς ἄλλους τοὺς ἀνὰ πᾶσαν τὴν γῆν ὄνους καὶ ἡμέρους καὶ ἀγρίους καὶ τὰ ἄλλα τὰ μώνυχα θηρία ἀστραγάλους οὐκ ἔχειν οὐδὲ μὴν ἐπὶ τῷ ἥπατι χολήν, ὄνους δὲ τοὺς Ἰνδοὺς <λέγει Κτησίας> τοὺς ἔχοντας τὸ κέρασ ἀστρα- γάλους φορεῖν καὶ ἀχόλους μὴ εἶναι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45q, line 40

διατριβαὶ δὲ τοῖς ὄνοις τῶν Ἰνδι- κῶν πεδίων τὰ ἐρημότατα. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45q, line 42

ἐπιόντων δὲ τῶν Ἰνδῶν ἐπὶ τὴν ἄγραν αὐτῶν, τὰ μὲν ἀπαλὰ καὶ ἔτι νεαρὰ ἑαυτῶν νέμεσθαι κατόπιν ἐῷσιν, αὐτοὶ δὲ ὑπερμαχοῦσι, καὶ ἴασι τοῖς ἵππευσιν ὁμόσε, καὶ τοῖς κέρασι παίουσι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45q, line 60

ζῶντα μὲν οὖν τέλειον οὐκ ἂν λάβοις, βάλλονται δὲ ἀκοντίοις καὶ οἰστοῖς, καὶ τὰ κέρατα οὕτω τὰ ἐξ αὐτῶν Ἴνδοι [νεκρῶν] σκυλεύσαντες ὥς εἶπον περιέπουσιν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45q, line 62

ὄνων δὲ Ἰνδῶν ἄβρωτόν ἐστι <τὸ> κρέας· τὸ δὲ αἷτιον, πέφυκεν εἶναι πικρότατον. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45r, line 2

3.10. CTESIAS OF CNIDUS

5, 3: ὁ ποταμὸς ὁ Ἰνδὸς ἄθρὸς ἐστὶ, μόνος δὲ ἐν αὐτῷ τίκτεται σκῶ- ληξ φασί. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45r, line 42

τοῦτο δὴ τὸ ἔλαιον βασιλεῖ τῶν Ἰνδῶν κομίζουσι, σημεῖα ἐπιβάλλοντες· ἔχειν γὰρ αὐτοῦ ἄλλον οὐδὲ ὅσον ῥανίδα ἐφείται. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45r, line 51

τούτῳ τοί φασι τὸν τῶν Ἰνδῶν βασιλέα καὶ τὰς πόλεις αἰρεῖν τὰς ἐς ἔχθραν προελθούσας οἱ, καὶ μήτε κριοὺς μήτε χελώνας μήτε τὰς ἄλλας ἐλεπόλεις ἀναμένειν, ἐπεὶ καταπιμπρὰς ἦρη- κεν· ἀγγεῖα γὰρ κεραμεῖα ὅσον κοτύλην ἕκαστον χωροῦντα ἐμπλήσας αὐτοῦ καὶ ἀποφράξας ἀνωθεν ἐς τὰς πύλας σφενδονᾷ, ὅταν τε τύχηι <τῶν> θυρί- δων, τὰ μὲν ἀγγεῖα προσαράττε- ται καὶ ἀπερράγη, καὶ τὸ ἔλαιον κατῶλισθε, καὶ τῶν θυρῶν πῦρ κατε- χύθη, καὶ ἄσβεστόν ἐστι· καὶ ὅπλα δὲ κᾶει καὶ ἀν- θρώπους μαχομένους, καὶ ἄπλητόν ἐστι τὴν ἰσχύν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45s,Alpha, line 4

Hist. mir. 150: περὶ δὲ λιμνῶν <Κτησίαν μὲν ἱστορεῖν> λέγει (scil. Καλλίμα- χος [F 407 XXII Pf.]) τῶν ἐν Ἰνδοῖς λιμνῶν τὴν μὲν τὰ εἰς αὐτὴν ἀφιέμενα <μὴ> καταδέχεσθαι, καθάπερ τὴν ἐν Σικελίᾳ καὶ Μήδοις, πλὴν χρυσίον καὶ σίδηρον καὶ χαλκόν· καὶ ἂν τι ἐμπέσῃ πλάγιον, ὀρθὸν ἐκβάλλειν· ἰᾶσθαι δὲ τὴν καλουμένην λεύκη. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 45s,Beta, line 2

φλορ. 3: κρήνη ἐν Ἰν- δοῖς, ἥ τοὺς κολυμβῶντας ἐπὶ τὴν γῆν ἐκβάλλει ὡς ἀπ' ὄργανου, <ὡς ἱστορεῖ Κτησίας>. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 46a, line 2

16, 31: <λέγει δὲ ἄρα Κτησίας ἐν λόγοις Ἰνδικοῖς> τοὺς καλουμένους Κυναμολγούς τρέφειν κύνας πολλοὺς κατὰ τοὺς Ἵρκανοὺς τὸ μέγεθος, καὶ εἶναι γε ἰσχυρῶς κυνοτρόφους. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 46b, line 3

POLLUX 5, 41: οἱ δὲ Κυναμολγοὶ κύνες εἰσὶ περὶ τὰ ἔλη τὰ μεσημ- βρινά, γάλα δὲ βοῶν ποιοῦνται τὴν τροφήν· καὶ τοὺς ἐπιόντας τοῦ θέρους τῷ ἔθνει βοῦς Ἰνδικούς καταγωνίζονται, ὡς ἱστορεῖ Κτησίας. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 47a, line 1

Hist. mir. 146: (F 1 l α) τὴν δ' ἐν τοῖς Ἰνδοῖς κρήνην <Σ>ίλαν οὐδὲ τὸ κουφότατον τῶν <ἐμ>βληθέντων ἑᾶν ἐπιμένειν, ἀλλὰ πάντα· καθέλκειν· καὶ ταῦτα δὲ πλείους εἰρήκασιν καὶ ἐπὶ πλειόνων ὑδάτων. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 49a, line 1

Ind. 3, 6: Κτησίης δὲ ὁ Κνίδιος τὴν Ἰνδῶν γῆν ἴσῃ τῇ ἄλλῃ Ἀσίῃ λέγει. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 49b, line 2

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

STRABON 15, 1, 12: Κτησίου μὲν οὐκ ἐλάττω τῆς ἄλλης Ἀσίας τὴν Ἰνδικὴν λέγοντος.
Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 50, line 2

Od. σ 3): Κτησίας δὲ παρ' Ἰνδοῖς φησιν οὐκ εἶναι τῷ βασιλεῖ μεθυσθῆναι. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 51b, line 2

TZETZ. Chil. 7, 629: Καρυανδέως Σκύλακος (709 F 7) ὑπάρχει τι βιβλίον / περὶ τὴν Ἰνδικὴν γράφον ἀνθρώπους πεφυκέναι, / οὐσπερ φασὶ Σκιάποδας καὶ γε τοὺς Ὠτολίκ- νους / . Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 63, line 4

De mens. 4, 14: ἡ γένεσις τοῦ πιπέρεως <κατὰ τοὺς παλαιοὺς καὶ Κτησίαν τὸν Κνίδιον> τοιαύτη· ἔθνος ἐστὶ κατὰ τὴν Ἀζού- μιν, Βησσάδαι τοῦνομα, σάμασι σμικροῖς καὶ ἀδρανεστά- τοις κεχρημένοι, κε- φαλαῖς μεγάλαις καὶ ἀκάρτοις καὶ παρὰ τὴν Ἰνδῶν φύσιν ἀπλόθριξιν· σπηλαίοις δὲ ἐνοικοῦσιν ὑπογείοις, καὶ κρημνοβατεῖν ἐπιστάμενοι διὰ τὴν τοῦ τόπου συν- τρο- φίαν. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 63, line 7

ὁ δὲ Μάξιμός φησι· «φυτόν ἐστὶ ἐν τῇ Ἰνδαίᾳ πρῶτον μὲν ἀνάκανθον, φυτουργούμενον δὲ ὡς ἄμπελος ἀναδενδρὰς ἢ ὑπὸ χάρακα, φέρει δὲ τὸν καρπὸν βοτρυώδη ὡς τερέβινθος, ἔχει δὲ φύλλον κισσῶδες ὑπόμακρον. Go to Context

Ctesias Hist., Med., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 3c,688,F, fragment 71, line 2

TZETZ. Chil. 8, 985/92: Ἡρόδοτος (3, 110/2), Διόδωρος (2, 49), <Κτησίας> πάντες ἄλλοι / λέγουσι τὴν Εὐδαίμονα τυγχάνειν Ἀραβίαν, / ὥσπερ καὶ γῆν τὴν Ἰνδικὴν, εὐωδε- στάτην ἄγαν, / ἀρώμασιν ἐκπνέουσιν ὡς καὶ τὴν γῆν ἐκείνης, / καὶ λίθους κοπτο- μένους δὲ ταύτης ἀρωματίζειν. Go to Context

3.11 Ephippus Comic

Ephippus (Ephippos) of Athens was an Ancient Greek comic poet of the middle comedy.

We learn this from the testimonies of Suidas and Antiochus of Alexandria[1], and from the allusions in his fragments to Plato, and the Academic philosophers,[2] and to Alexander of Pherae and his contemporaries, Dionysius the Elder, Cotys, Theodorus[disambiguation needed], and others.[3] (From Wikipedia⁸)

8. http://en.wikipedia.org/wiki/Ephippus_of_Athens.

3.12. MENANDER

Ephippus Comic., Fragmenta (0450: 002) “Fragmenta comicorum Graecorum, vol. 3”, Ed. Meineke, A. Berlin: Reimer, 1840, Repr. 1970. Play Ger, fragment 1, line 7
καὶ περιόικους εἶναι ταύτης Ἰνδοῦς, Λυκίους, Μυγδονιώτας, Κραναοῦς, Παφίους.

3.12 Menander

Menander (Greek: Μένανδρος, Menandros; c. 341/42– c. 290 BC) was a Greek dramatist and the best-known representative of Athenian New Comedy.[1] He was the author of more than a hundred comedies, and took the prize at the Lenaia festival eight times.[2] His record at the City Dionysia is unknown but may well have been similarly spectacular. (From Wikipedia⁹)

Menander Comic., Fragmenta (0541: 045) “Menandri quae supersunt, vol. 2, 2nd edn.”, Ed. Körte, A., Thierfelder, A. Leipzig: Teubner, 1959. Fragment 24, line 3

εὐποροῦμεν, οὐδὲ μετρίως· ἐκ Κύνδων χρυσίον, Περσικαὶ στολαὶ δ' ἐκεῖναι πορφυρᾶ τε στρώματα ἔνδον ἔστ', ἄνδρες, ποτήρι' <Ἰν>δικ>ά <τε> τορεύματα κακτυπωμάτων πρόσωπα, τραγέλαφοι, λαβρώνια.

3.13 Clearchus of Soli

Clearchus of Soli (Greek: Κλέαρχος, Klearkhos) was a Greek philosopher of the 4th-3rd century BCE, belonging to Aristotle's Peripatetic school. He was born in Soli in Cyprus.

He wrote extensively on eastern cultures, and is thought to have traveled to the Bactrian city of Ai-Khanoum (Alexandria on the Oxus) in modern Afghanistan. Writings

Clearchus wrote extensively around 320 BCE on eastern cultures, from Persia to India, and several fragments from him are known. His book “Of Education” (Greek: Περὶ παιδείας, Peri paideiās) was preserved by Diogenes Laertius.

9. <http://en.wikipedia.org/wiki/Menander>

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Clearchus in particular expressed several theories on the connection between western and eastern religions. In "Of Education", he wrote that "the gymnosophists are descendants of the Magi". In another text, quoted by Josephus, Clearchus reported a dialogue with Aristotle, where the philosopher states that the Hebrews were descendants of the Indian philosophers:

"Jews are derived from the Indian philosophers; they are named by the Indians Calami, and by the Syrians Judaei, and took their name from the country they inhabit, which is called Judea; but for the name of their city, it is a very awkward one, for they call it Jerusalem." Josephus, *Contra Apionem*, I, 22.[1] (From Wikipedia¹⁰)

Clearchus Phil., *Fragmenta* (1270: 001) "Klearchos", Ed. Wehrli, F. Basel: Schwabe, 1969; *Die Schule des Aristoteles*, vol. 3, 2nd edn.. Fragment 6, line 15

κακείνος τοίνυν τὸ μὲν γένος ἦν Ἰουδαῖος ἐκ τῆς Κοίλης Συρίας, οὗτοι δ' εἰσὶν ἀπόγονοι τῶν ἐν Ἰνδοῖς φιλοσόφων.

Clearchus Phil., *Fragmenta* Fragment 6, line 16

καλοῦνται δέ, ὥς φασιν, οἱ φιλόσοφοι παρὰ μὲν Ἰνδοῖς Καλανοί, παρὰ δὲ Σύροις Ἰουδαῖοι, τοῦνομα λαβόντες ἀπὸ τοῦ τόπου.

3.14 Eudoxus of Cnidus

Eudoxus /'ju:dəksəs/ of Cnidus (Greek: Εὐδόξος ὁ Κνίδιος Eúdoxos ho Knídios; 408 BC – 355 BC) was a Greek astronomer, mathematician, scholar and student of Plato. All of his works are lost, though some fragments are preserved in Hipparchus' commentary on Aratus's poem on astronomy.[1] Theodosius of Bithynia's important work, *Sphaerics*, may be based on a work of Eudoxus. (From Wikipedia¹¹)

Eudoxus Astron., *Fragmenta* (1358: 001) "Die Fragmente des Eudoxos von Knidos", Ed. Lasserre, F. Berlin: De Gruyter, 1966. Fragment 240, line 2

PARAPEGMA MILES. 456 D I 1 [Χηλαὶ ἐσπέραι δύνου]σιν κατ' Εὐ[δόξον, κατὰ δὲ Ἰνδῶν Καλλανέα [die insequenti Χηλαὶ ἐς- π]έραι δύνουσιν.

10. http://en.wikipedia.org/wiki/Clearchus_of_Soli

11. http://en.wikipedia.org/wiki/Eudoxus_of_Cnidus

3.15. ARISTOXENUS

3.15 Aristoxenus

Aristoxenus of Tarentum (Greek: Ἀριστόξενος; fl. 335 BC) was a Greek Peripatetic philosopher, and a pupil of Aristotle. Most of his writings, which dealt with philosophy, ethics and music, have been lost, but one musical treatise, *Elements of Harmony*, survives incomplete, as well as some fragments concerning rhythm and meter. The *Elements* is the chief source of our knowledge of ancient Greek music.[1] (From Wikipedia¹²)

Aristoxenus Mus., *Fragmenta* (0088: 006) “Aristoxenos”, Ed. Wehrli, F. Basel: Schwabe, 1967; *Die Schule des Aristoteles*, vol. 2, 2nd edn.. Fragment 53, line 3

... φησὶ δ' Ἀριστόξενος ὁ μουσικὸς Ἰνδῶν εἶναι τὸν λόγον τοῦτον.

Aristoxenus Mus., *Fragmenta* Fragment 53, line 6 τοῦ δ' εἰπόντος, ὅτι ζητῶν περὶ τοῦ ἀνθρωπίνου βίου, καταγελάσαι τὸν Ἰνδόν, λέγοντα μὴ δύνασθαι τίνα τὰ ἀνθρώπινα κατιδεῖν ἀγνοοῦντά γε τὰ θεῖα.

3.16 Aristoteles et Corpus Aristotelicum

Aristotle (Ancient Greek: Ἀριστοτέλης [aristotélɛ:s], Aristotélēs) (384 BC – 322 BC)[1] was a Greek philosopher and polymath, a student of Plato and teacher of Alexander the Great. His writings cover many subjects, including physics, metaphysics, poetry, theater, music, logic, rhetoric, linguistics, politics, government, ethics, biology, and zoology. Together with Plato and Socrates (Plato's teacher), Aristotle is one of the most important founding figures in Western philosophy. Aristotle's writings were the first to create a comprehensive system of Western philosophy, encompassing ethics, aesthetics, logic, science, politics, and metaphysics. (From Wikipedia¹³)

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *De caelo* (0086: 005) “Aristote. Du ciel”, Ed. Moraux, P. Paris: Les Belles Lettres, 1965. Bekker page 298a, line 11

Διὸ τοὺς ὑπολαμβάνοντας συν- ἄπτειν τὸν περὶ τὰς Ἡρακλείας στήλας τόπον τῷ περὶ τὴν Ἰνδικήν, καὶ τοῦτον τὸν τρόπον εἶναι τὴν θάλατταν μίαν, μὴ λίαν ὑπολαμβάνειν ἅπιστα δοκεῖν· λέγουσι δὲ τεκμαιρόμενοι καὶ τοῖς ἐλέφασιν, ὅτι περὶ ἀμφοτέρους τοὺς τόπους

12. <http://en.wikipedia.org/wiki/Aristoxenus>

13. <http://en.wikipedia.org/wiki/Aristotle>

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

τοὺς ἐσχάτους ὄντας τὸ γένος αὐτῶν ἐστίν, ὡς τῶν ἐσχάτων διὰ τὸ συνάπτειν ἀλλήλοις τοῦτο πεπονηθότων.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *Ethica Eudemia* (0086: 009) “[Aristotelis *ethica Eudemia*]”, Ed. Susemihl, F. Leipzig: Teubner, 1884, Repr. 1967. Bekker page 1226a, line 29

διὸ οὐ βου- λευόμεθα περὶ τῶν ἐν Ἰνδοῖς, οὐδὲ πῶς ἂν ὁ κύκλος τετρα- γωνισθῇ.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *De generatione animalium* (0086: 012) “Aristotelis *de generatione animalium*”, Ed. Drossaart Lulofs, H.J. Oxford: Clarendon Press, 1965, Repr. 1972. Bekker page 746a, line 34

σπάνια μὲν οὖν γίγνεται τὰ τοιαῦτα ἐπὶ τῶν ἄλλων, γίγνεται δὲ καὶ ἐπὶ κυνῶν καὶ ἀλωπέκων καὶ λύκων <καὶ θάων>· καὶ οἱ Ἰνδικοὶ δὲ κύ- νες ἐκ θηρίου τινὸς κυνώδους γεννῶνται καὶ κυνός.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *Historia animalium* (0086: 014) “Aristote. *Histoire des animaux*, vols. 1–3”, Ed. Louis, P. Paris: Les Belles Lettres, 1:1964; 2:1968; 3:1969. Bekker page 499b, line 19

Μονοκέρατα δὲ καὶ μῶ- νυχα ὀλίγα, οἷον ὁ Ἰνδικὸς ὄνος.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *Historia animalium* Bekker page 499b, line 20

Καὶ ἀστράγαλον δ' ὁ Ἰνδικὸς ὄνος ἔχει τῶν μωνύχων μόνον· ἡ γὰρ ὕς, ὥσπερ ἐλέχθη πρό- τερον, ἐπαμφοτερίζει, διὸ καὶ οὐ καλλιαστράγαλόν ἐστιν.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *Historia animalium* Bekker page 501a, line 26

Ἔστι δέ τι, εἰ δεῖ πιστεῦσαι Κτησίᾳ· ἐκεῖνος γὰρ τὸ ἐν Ἰνδοῖς θηρίον, ᾧ ὄνομα εἶναι μαρτιχό- ραν, τοῦτ' ἔχειν ἐπ' ἀμφοτέρᾳ φησι τριστοίχους τοὺς ὀδόντας· εἶναι δὲ μέγεθος μὲν ἡλίκον λέοντα καὶ δασὺ ὁμοίως, καὶ πόδας ἔχειν ὁμοί- ους, πρόσωπον δὲ καὶ ὦτα ἀνθρωποειδές, τὸ δ' ὄμμα γλαυκόν, τὸ δὲ χρῶμα κινναβάρινον, τὴν δὲ κέρκον ὁμοίαν τῇ τοῦ σκορπίου τοῦ χερσαίου, ἐν ᾗ κέντρον ἔχειν καὶ τὰς ἀπο- φυάδας ἀπακοντίζειν, φθέγγεσθαι δ' ὅμοιον φωνῇ ἅμα σύριγγος καὶ σάλπιγγος, ταχὺ δὲ θεῖν οὐχ ἥττον τῶν ἐλά- φων, καὶ εἶναι ἄγριον καὶ ἀνθρωποφάγον.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *Historia animalium* Bekker page 571b, line 34

Ἐξαγριαίνον- ται δὲ καὶ οἱ ἐλέφαντες περὶ τὴν ὀχέαν, διόπερ φασὶν οὐκ εἶναι αὐτοὺς ὀχεύειν τὰς θηλείας τοὺς τρέφοντας ἐν τοῖς Ἰν- δοῖς· ἐμμανεῖς γὰρ γινομένους ἐν τοῖς χρόνοις τούτοις ἀνα- τρέπειν τὰς οἰκῆσεις αὐτῶν ἅτε φαύλως ὠκοδομημένας, καὶ ἄλλα πολλὰ ἐργάζεσθαι.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *Historia animalium* Bekker page 597b, line 27

Ὅλως δὲ τὰ γαμφώνυχα πάντα βραχυτράχηλα καὶ πλατύγλωττα καὶ μιμητικά· καὶ γὰρ τὸ Ἰνδικὸν ὄρνεον ἢ ψιττάκη, τὸ λεγόμενον ἀνθρω- πόγλωττον, τοιοῦτόν ἐστι· καὶ ἀκολαστότερον δὲ γίνεται, ὅταν πῖν οἶνον.

3.16. ARISTOTELES ET CORPUS ARISTOTELICUM

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Historia animalium Bekker page 606a, line 8

Ἐν δὲ Λι- βύῃ πάσῃ οὔτε σῦς ἄγριός ἐστιν οὔτ' ἑλαφος οὔτ' αἰξ ἄγριος· ἐν δὲ τῇ Ἰνδικῇ, ὡς φησὶ Κτησίας οὐκ ὦν ἀξιόπιστος, οὔτ' ἄγριος οὔτε ἡμερος ὕς, τὰ δ' ἄναιμα καὶ τὰ φοιιδωτὰ πάντα μεγάλα.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Historia animalium Bekker page 607a, line 4

Φασὶ δὲ καὶ ἐκ τοῦ τίγριος καὶ κυνὸς γίνεσθαι τοὺς Ἰνδικούς, οὐκ εὐ- θὺς δ' ἄλλ' ἐπὶ τῆς τρίτης μίξεως· τὸ γὰρ πρῶτον γεννη- θὲν θηριῶδες γίνεσθαι φασιν.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Historia animalium Bekker page 607a, line 34

Ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ Ἰνδικῇ ὀφείδιόν τι, οὗ μόνου φάρμακον οὐκ ἔχουσιν.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Historia animalium Bekker page 610a, line 19

Χρῶνται δ' οἱ Ἰνδοὶ πολεμιστηρίοις, καθάπερ τοῖς ἄρ- ρεσι, καὶ ταῖς θηλείαις· εἰσὶ μέντοι καὶ ἐλάττονες αἱ θή- λειαι καὶ ἀψυχότεραι πολὺ.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Magna moralia (0086: 022) “Aristotle, vol. 18 (ed. G.C. Armstrong)”, Ed. Susemihl, F. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1935, Repr. 1969. Book 1, chapter 17, section 4, line 6

πολλάκις γὰρ διανοούμεθα ὑπὲρ τῶν ἐν Ἰνδοῖς, ἄλλ' οὔτι καὶ προαιρούμεθα.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Meteorologica (0086: 026) “Aristotelis meteorologicorum libri quattuor”, Ed. Fobes, F.H. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1919, Repr. 1967. Bekker page 350a, line 25

ῥεῖ δὲ καὶ ὁ Ἰνδὸς ἐξ αὐ- τοῦ, πάντων τῶν ποταμῶν ῥεῦμα πλεῖστον.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Meteorologica Bekker page 362b, line 21

τὸ γὰρ ἀπὸ Ἡρακλείων στηλῶν μέχρι τῆς Ἰνδικῆς τοῦ ἐξ Αἰ- θιοπίας πρὸς τὴν Μαιῶτιν καὶ τοὺς ἐσχατεύοντας τῆς Σκυθίας τόπους πλέον ἢ πέντε πρὸς τρία τὸ μέγεθος ἐστίν, ἐάν τέ τις τοὺς πλοῦς λογίζηται καὶ τὰς ὁδοὺς, ὡς ἐνδέχεται λαμ- βάνειν τῶν τοιούτων τὰς ἀκριβεῖας.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Meteorologica Bekker page 362b, line 28

τὰ δὲ τῆς Ἰνδικῆς ἔξω καὶ τῶν στηλῶν τῶν Ἡρακλείων διὰ τὴν θάλατταν οὐ φαίνεται συνείρειν, τῷ συνεχῶς εἶναι πᾶσαν οἰκουμένην)· ἐπεὶ δ' ὁμοίως ἔχειν ἀνάγκη τόπον τινὰ πρὸς τὸν ἕτερον πόλον ὥσπερ ὃν ἡμεῖς οἰκοῦμεν πρὸς τὸν ὑπὲρ ἡμῶν, δῆλον ὡς ἀνάλογον ἔξει τὰ τ' ἄλλα καὶ τῶν πνευ- μάτων ἢ στάσις· ὥστε καθάπερ ἐνταῦθα βορέας ἐστίν, κακεῖ- νοις ἀπὸ τῆς ἐκεῖ ἄρκτου τις ἄνεμος οὕτως ὢν, ὃν οὐδὲν δυ- νατὸν διέχειν δεῦρο, ἐπεὶ οὐδ' ὁ βορέας οὗτος εἰς τὴν ἐνταῦθα οἰκουμένην πᾶσαν ἐστίν· ἐστίν γὰρ ὥσπερ ἀπόγειον τὸ πνεῦμα τὸ βορέιον [ἕως ὁ βορέας οὗτος εἰς τὴν ἐνταῦθα οἰκουμένην]

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Mirabilium auscultationes (0086: 027) “Aristotelis opera, vol. 2”, Ed. Bekker, I. Berlin: Reimer, 1831, Repr. 1960. Bekker page

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

834a, line 1

Φασὶ δὲ καὶ ἐν Ἰνδοῖς τὸν χαλκὸν οὕτως εἶναι λαμ- πρὸν καὶ καθαρὸν καὶ ἀνίωτον, ὥστε μὴ διαγινώσκεσθαι τῇ χροῇ πρὸς τὸν χρυσόν, ἀλλ' ἐν τοῖς Δαρείου ποτηρίοις βατιακάς εἶναι τινὰς καὶ πλείους, ἃς εἰ μὴ τῇ ὁσμῇ, ἀλλ' ὥς οὐκ ἦν διαγινῶναι πότερόν εἰσι χαλκαὶ ἢ χρυσαῖ.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *Mirabilium auscultationes* Bekker page 835a, line 6

Θαυμαστὸν δὲ τί φασιν ἐν Ἰνδοῖς περὶ τὸν ἐκεῖ μό- λυβδον συμβαίνειν· ὅταν γὰρ ταχεῖς εἰς ὕδωρ καταχυθῇ ψυχρόν, ἐκπηδᾷ ἐκ τοῦ ὕδατος.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *Mirabilium auscultationes* Bekker page 835b, line 5

Ἐν Ἰνδοῖς ἐν τῷ Κέρατι καλουμένῳ ἰχθύδιά φασι γίνεσθαι ἃ ἐν τῷ ξηρῷ πλανᾶται καὶ πάλιν ἀποτρέχει εἰς τὸν ποταμόν.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *De mundo* (0086: 028) “Aristotelis qui fertur libellus de mundo”, Ed. Lorimer, W.L. Paris: Les Belles Lettres, 1933. Bekker page 393b, line 3

Πρὸς γε μὴν ταῖς ἀνασχέσεσι τοῦ ἡλίου πάλιν εἰς- ρέων ὁ Ὠκεανός, τὸν Ἰνδικόν τε καὶ Περσικὸν διανοίξας κόλ- πον, ἀναφαίνει συνεχῇ τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν διειληφώς.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *De mundo* Bekker page 393b, line 15

Τούτων δὲ οὐκ ἐλάττους ἢ τε Ταπροβάνη πέραν Ἰνδῶν, λοξὴ πρὸς τὴν οἰκουμένην, καὶ ἡ τ' Φεβδὸλ καλουμένη, κατὰ τὸν Ἀραβικὸν κειμένη κόλπον.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *De mundo* Bekker page 397b, line 18

Διὸ καὶ τῶν πα- λαιῶν εἰπεῖν τινες προήχθησαν ὅτι πάντα ταῦτά ἐστι θεῶν πλέα τὰ καὶ δι' ὀφθαλμῶν ἰνδαλλόμενα ἡμῖν καὶ δι' ἀκοῆς καὶ πάσης αἰσθήσεως, τῇ μὲν θεῇ δυνάμει πρέποντα κατα- βαλλόμενοι λόγον, οὐ μὴν τῇ γε οὐσίᾳ.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *De mundo* Bekker page 398a, line 28

Τὴν δὲ σύμπασαν ἀρχὴν τῆς Ἀσίας, περατουμένην Ἑλλησπόν- τω μὲν ἐκ τῶν πρὸς ἐσπέραν μερῶν, Ἰνδῶ δὲ ἐκ τῶν πρὸς ἑω, διειλήφesan κατὰ ἔθνη στρατηγοὶ καὶ σατράπαι καὶ βασιλεῖς, δοῦλοι τοῦ μεγάλου βασιλέως, ἡμεροδρόμοι τε καὶ σκοποὶ καὶ ἀγγελιαφόροι φρυκτωριῶν τε ἐποπτῆρες.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *De partibus animalium* (0086: 030) “Aristote. Les parties des animaux”, Ed. Louis, P. Paris: Les Belles Lettres, 1956. Bekker page 643b, line 6

Πάντα γὰρ ὡς εἰπεῖν, ὅσα ἡμεῖς καὶ ἄγρια τυγχάνει ὄντα, οἷον ἀνθρω- ποι, ἵπποι, βόες, κύνες ἐν τῇ Ἰνδικῇ, ὕες, αἰγες, πρόβατα· ὧν ἕκαστον, εἰ μὲν ὁμώνυμον, οὐ διήρηται χωρὶς, εἰ δὲ ταῦτα ἐν εἴδει, οὐχ οἷόν τ' εἶναι διαφορὰς τὸ ἄγριον καὶ τὸ ἡμέρον.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., *De partibus animalium* Bekker page 663a, line 19

3.16. ARISTOTELES ET CORPUS ARISTOTELICUM

Ἔστι δὲ τὰ πλεῖστα τῶν κερατοφόρων διχαλά, λέγεται δὲ καὶ μώνυχον, ὃν καλοῦσιν Ἰνδικὸν ὄνον.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., De partibus animalium Bekker page 663a, line 23

Τὰ μὲν οὖν πλεῖστα, καθάπερ καὶ τὸ σῶμα διήρηται τῶν ζώων οἷς ποιεῖται τὴν κίνησιν, δεξιὸν καὶ ἀριστερόν, καὶ κέρατα δύο πέφυκεν ἔχειν διὰ τὴν αἰτίαν ταύτην· ἔστι δὲ καὶ μονοκέρατα, οἷον ὃ τε ὄρυξ καὶ ὁ Ἰνδικὸς καλούμενος ὄνος.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Politica (0086: 035) “Aristotelis politica”, Ed. Ross, W.D. Oxford: Clarendon Press, 1957, Repr. 1964. Bekker page 1332b, line 24

εἰ μὲν τοίνυν εἴησαν τοσοῦτον διαφέροντες ἄτεροι τῶν ἄλλων ὅσον τοὺς θεοὺς καὶ τοὺς ἥρωας ἡγούμεθα τῶν ἀνθρώπων διαφέρειν, εὐθὺς πρῶτον κατὰ τὸ σῶμα πολλὴν ἔχοντας ὑπερβολήν, εἴτα κατὰ τὴν ψυχὴν, ὥστε ἀναμφισβήτητον εἶναι καὶ φανεράν τὴν ὑπεροχὴν τοῖς ἀρχομένοις τὴν τῶν ἀρχόντων, δηλὸν ὅτι βέλτιον αἰετὸς τοὺς αὐτοὺς τοὺς μὲν ἄρχειν τοὺς δ' ἄρχεσθαι καθάπαξ· ἐπεὶ δὲ τοῦτ' οὐ ῥᾶδιον λαβεῖν οὐδ' ἔστιν ὥσπερ ἐν Ἰνδοῖς φησὶ Σκύλαξ εἶναι τοὺς βασιλείας τοσοῦτον δια- φέροντας τῶν ἀρχομένων, φανερόν ὅτι διὰ πολλὰς αἰτίας ἀναγκαῖον πάντας ὁμοίως κοινωνεῖν τοῦ κατὰ μέρος ἄρχειν καὶ ἄρχεσθαι.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Problemata (0086: 036) “Aristotelis opera, vol. 2”, Ed. Bekker, I. Berlin: Reimer, 1831, Repr. 1960. Bekker page 895b, line 25

καὶ γὰρ ἀνθρωποὶ που φαίνονται ἄγριοι ὄντες καὶ κύνες ἐν Ἰνδοῖς καὶ ἵπποι ἄλλοθι, ἀλλ' οὐ λέοντες ἡμεροὶ οὐδὲ παρδάλεις οὐδ' ἔχεις οὐδ' ἄλλα πολλὰ.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Sophistici elenchi (0086: 040) “Aristotelis topica et sophistici elenchi”, Ed. Ross, W.D. Oxford: Clarendon Press, 1958, Repr. 1970 (1st edn. corr.). Bekker page 167a, line 8

ὁμοίως δὲ καὶ τὸ παρὰ τὸ πῆ καὶ τὸ ἀπλῶς· οἷον ὁ Ἰνδός, ὅλος μέλας ὢν, λευκός ἐστι τοὺς ὀδόντας· λευκός ἄρα καὶ οὐ λευκός ἐστιν.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Topica (0086: 044) “Aristotelis topica et sophistici elenchi”, Ed. Ross, W.D. Oxford: Clarendon Press, 1958, Repr. 1970 (1st edn. corr.). Bekker page 116a, line 38

ἔστι δὲ τοῦτο ταὐτὸ τῷ πρὸ αὐτοῦ, διαφέρει δὲ τῷ τρόπῳ· τὸ μὲν γὰρ τοὺς φίλους δικαίους εἶναι δι' αὐτὸ αἰρούμεθα, καὶ εἰ μὴδὲν ἡμῖν μέλλει ἔσεσθαι, καὶ ἐν Ἰνδοῖς ὥσιν· τὸ δὲ τοὺς ἐχθροὺς δι' ἕτερον, ὅπως μὴθὲν ἡμᾶς βλάπτωσιν.

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Fragmenta varia (0086: 051) “Aristotelis qui ferebantur librorum fragmenta”, Ed. Rose, V. Leipzig: Teubner, 1886, Repr. 1967. Category 1, treatise title 3, fragment 35, line 4

γεγενῆσθαι γὰρ παρὰ μὲν Πέρσαις μάγους, παρὰ δὲ Βαβυλωνίοις ἢ Ἀσσυρίοις Χαλδαίους, καὶ γυμνο- σοφιστάς παρ' Ἰνδοῖς, παρὰ τε Κελτοῖς καὶ Γαλάταις τοὺς καλουμένους δρυΐδας καὶ σεμνοθέους, καθά φησιν <Ἀριστο- τέλης> ἐν τῷ μαγικῷ καὶ Σωτίων ἐν εἰκοστῷ τρίτῳ τῆς δια- δοχῆς.

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Fragmenta varia Category 6, treatise title 37, fragment 263, line 1

c. 49: *φασὶ δὲ καὶ ἐν Ἰνδοῖς τὸν χαλλκὸν οὕτως εἶναι λαμπρὸν καὶ καθαρὸν καὶ ἀνίωτον, ὥς μὴ διαγινώσκεσθαι τῇ χροῇ πρὸς τὸν χρυσόν, ἀλλ' ἐν τοῖς Δα-ρείου ποτηρίοις βατιάκας εἶναι τινὰς καπήλους, αἳ εἰ μὴ τῇ ὁσμῇ, ἄλλως οὐκ ἦν διαγινῶναι πότερόν εἰσι χαλκαὶ ἢ χρυσαῖ.*

Aristoteles et Corpus Aristotelicum Phil., Fragmenta varia Category 6, treatise title 37, fragment 264, line 7

(61) *θαυμαστόν δέ τι φασὶν ἐν Ἰνδοῖς περὶ τὸν ἐκεῖ μόλυβδον συμβαίνειν· ὅταν γὰρ τακεῖς εἰς ὕδωρ καταχυθῇ ψυχρόν, ἐκπηδᾷ ἐκ τοῦ ὕδατος.*

3.17 Megasthenes

Megasthenes[pronunciation?] (*Μεγασθένης*, ca. 350 – 290 BCE) was a Greek ethnographer and explorer in the Hellenistic period, author of the work *Indica*. He was born in Asia Minor (modern day Turkey) and became an ambassador of Seleucus I of the Seleucid dynasty possibly to Chandragupta Maurya in Pataliputra, India. However the exact date of his embassy is uncertain. Scholars place it before 298 BC, the date of Chandragupta's death.

Arrian explains that Megasthenes lived in Arachosia, with the satrap Sibyrtius, from where he visited India:

”Megasthenes lived with Sibyrtius, satrap of Arachosia, and often speaks of his visiting Sandracottus, the king of the Indians.” Arrian, *Anabasis Alexandri* [1]

We have more definite information regarding the parts of India Megasthenes visited. He entered the subcontinent through the district of the Pentapotamia, providing a full account of the rivers found there (thought to be the five affluents of the Indus that form the Punjab region), and proceeded from there by the royal road to Pataliputra. There are accounts of Megasthenes having visited Madurai (then, a bustling city and capital of the Pandyas), but he appears not to have visited any other parts of India.

At the beginning of his *Indica*, he refers to the older Indians who know about the prehistoric arrival of Dionysus and Hercules in India, which was a story very popular amongst the Greeks during the Alexandrian period. Particularly important are his comments on the religions of the Indians. He mentions the devotees of Heracles and Dionysus but he does not mention Buddhists,

3.17. MEGASTHENES

something that gives support to the theory that the latter religion was not widely known before the reign of Ashoka.[2]

His *Indica* served as an important source for many later writers such as Strabo and Arrian. He describes such features as the Himalayas and the island of Sri Lanka. He also describes a caste system different from the one that exists today, which shows that the caste system may to some extent be fluid and evolving. However, it might be that, being a foreigner, he was not adequately informed about the caste system. His description follows:

The first is formed by the collective body of the Philosophers, which in point of number is inferior to the other classes, but in point of dignity preeminent over all. The philosopher who errs in his predictions incurs censure, and then observes silence for the rest of his life. The second caste consists of the Husbandmen, who appear to be far more numerous than the others. They devote the whole of their time to tillage; nor would an enemy coming upon a husbandman at work on his land do him any harm, for men of this class, being regarded as public benefactors, are protected from all injury. The third caste consists of the Shepherds and in general of all herdsmen who neither settle in towns nor in villages, but live in tents. The fourth caste consists of the Artizans. Of these some are armourers, while others make the implements that husbandmen and others find useful in their different callings. This class is not only exempted from paying taxes, but even receives maintenance from the royal exchequer. The fifth caste is the Military. It is well organized and equipped for war, holds the second place in point of numbers, and gives itself up to idleness and amusement in the times of peace. The entire force—men-at-arms, war-horses, war-elephants, and all—are maintained at the king's expense. The sixth caste consists of the Overseers. It is their province to inquire into and superintend all that goes on in India, and make report to the king, or, where there is not a king, to the magistrates. The seventh caste consists of the Councillors and Assessors,—of those who deliberate on public affairs. It is the smallest class, looking to number, but the most respected, on account of the high character and wisdom of its members; for from their ranks the advisers of the king are taken, and the treasurers, of the state, and the arbiters who settle disputes. The generals of the army also, and the chief magistrates, usually belong to this class.

Later writers such as Arrian, Strabo, Diodorus, and Pliny refer to *Indica* in their works. Of these writers, Arrian speaks most highly of Megasthenes, while Strabo and Pliny treat him with less respect. *Indica* contained many legends and fabulous stories, similar to those we find in the *Indica* of Ctesias.

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Megasthenes' Indica is the first well-known Western account of India and he is regarded as one of the founders of the study of Indian history in the West. He is also the first foreign Ambassador to be mentioned in Indian history.

Megasthenes also comments on the presence of pre-Socratic views among the Brahmans and Jews. Five centuries later Clement of Alexandria, in his Stromateis, may have misunderstood Megasthenes to be responding to claims of Greek primacy by admitting Greek views of physics were preceded by those of Jews and Indians. Megasthenes, like Numenius of Apamea, was simply comparing the ideas of the different ancient cultures.[3] (From Wikipedia¹⁴)

Megasthenes Hist., Fragmenta (1489: 003) "FHG 2", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment t1-43, line 1

INΔ*IKΑ.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 1
(EΠITOMH.)

Diodorus II, 35: Ἡ τοίνυν Ἰνδικὴ τετράπλευρος οὕσα τῷ σχήματι, τὴν μὲν πρὸς ἀνατολὰς νεύουσιν πλευρὰν καὶ τὴν πρὸς τὴν μεσημβρίαν ἡ μεγάλη πε- ριέχει θάλαττα, τὴν δὲ πρὸς τὰς ἄρκτους τὸ Ἡμωδὸν ὅρος διείργει τῆς Σκυθίας, ἣν κατοικοῦσι τῶν Σκυθῶν οἱ προσαγορευόμενοι Σάκαι· τὴν δὲ τετάρτην τὴν πρὸς δύσιν ἐστραμμένην διείληφεν ὁ Ἰνδὸς προσαγορευόμενος ποταμὸς, μέγιστος ὢν σχεδὸν τῶν ἀπάντων μετὰ τὸν Νεῖλον.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 9

(2) Τὸ δὲ μέγεθος τῆς ὅλης Ἰνδικῆς φασὶν ὑπάρ- χειν ἀπὸ μὲν ἀνατολῶν πρὸς δύσιν δις μυρίων ὀκτακισ- χιλίων σταδίων, ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων πρὸς μεσημβρίαν τρις μυρίων δις χιλίων.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 15

Τηλικαύτη δὲ οὕσα τὸ μέγεθος δοκεῖ μάλιστα τοῦ κόσμου περιέχειν τὸν τῶν θηρι- νῶν τρο- πῶν κύκλον, καὶ πολλὰ μὲν ἐπ' ἄκρας τῆς Ἰνδικῆς ἰδεῖν ἔστιν ἄσκειους ὄντας τοὺς γνώμονας, νυκτὸς δὲ τὰς ἄρκτους ἀθεωρήτους· ἐν δὲ τοῖς ἐσχά- τοις οὐδ' αὐτὸν τὸν ἄρκτοῦρον φαίνεσθαι· καθ' ὃν δὴ τρόπον φασὶ καὶ τὰς σκιάς κεκλίσθαι πρὸς μεσημ- βρίαν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 20

3. Ἡ δ' οὖν Ἰνδικὴ πολλὰ μὲν ὄρη καὶ μεγάλα ἔχει δένδρεσι παντοδαποῖς καρπύμοις πληθύ- οντα, πολλὰ δὲ πεδία καὶ μεγάλα καρποφόρα, τῷ μὲν κάλλει διάφορα, ποταμῶν δὲ πλήθει διαιρούμενα.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 31

(4) Καὶ πλείστους δὲ καὶ μεγίστους ἐλέφαντας ἐκτρέφει, χορηγοῦσα τὰς τροφὰς ἀφθόνως, δι' ἃς ταῖς ῥώμασι τὰ θηρία ταῦτα πολὺ προέχει τῶν κατὰ τὴν Λιβύην γενωμένων· διὸ καὶ

14. <http://en.wikipedia.org/wiki/Megasthenes>

3.17. MEGASTHENES

πολλῶν θηρευο- μένων ὑπὸ τῶν Ἰνδῶν καὶ πρὸς τοὺς πολεμικοὺς ἀγῶνας κατασκευαζομένων
μεγάλας συμβαίνει γίνεσθαι ῥοπὰς πρὸς τὴν νίκην.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 46

(7) Χωρὶς δὲ τῶν δημητριακῶν καρπῶν φύεται κατὰ τὴν Ἰνδικὴν πολλὴ μὲν κέγχρος,
ἀρδευομένη τῇ τῶν ποταμίων ναμάτων δαφιλεία, πολὺ δὲ ὄσπριον καὶ διά- φορον, ἔτι δὲ ὄρυζα
καὶ τὸ προσαγορευόμενον βόσπορον, καὶ μετὰ ταῦτ' ἄλλα πολλὰ τῶν πρὸς διατροφήν χρη-
σίμων· καὶ τούτων τὰ πολλὰ ὑπάρχει αὐτοφυῆ· οὐκ ὀλίγους δὲ καὶ ἄλλους ἐδαδίμους καρπούς
φέρει δυνα- μένους τρέφειν ζῶα, περὶ ὧν μακρὸν ἂν εἴη γράφειν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 53

(8) Διὸ καὶ φασὶ μηδέποτε τὴν Ἰνδικὴν ἐπισχεῖν λιμὸν ἢ καθόλου σπάνιν τῶν πρὸς τροφήν
ἡμερον ἀνηκόντων.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 61

Διττῶν γὰρ ὄμβρων ἐν αὐτῇ γινομένων καθ' ἕκαστον ἔτος, τοῦ μὲν χειμερινοῦ, καθὰ παρὰ
τοῖς ἄλλοις ὁ σπό- ρος τῶν πυρίνων γίνεται καρπῶν, τοῦ δ' ἑτέρου κατὰ τὴν θειρινὴν τροπὴν,
καθ' ἣν σπεῖρεσθαι συμβαίνει τὴν ὄρυζαν καὶ τὸ βόσπορον, ἔτι δὲ σήσαμον καὶ κέγχρον, κατὰ
[δὲ] τὸ πλείστον ἀμφοτέροις τοῖς καρποῖς οἱ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν ἐπιτυγχάνουσι· πάντων δὲ (μὴ)
τελεσφο- ρουμένων, θατέρου τῶν καρπῶν οὐκ ἀποτυγχάνουσιν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 73

(10) Συμβάλλονται δὲ παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς καὶ τὰ νόμιμα πρὸς τὸ μηδέποτε ἔνδειαν τροφῆς
παρ' αὐτοῖς εἶναι· παρὰ μὲν γὰρ τοῖς ἄλλοις ἀνθρώποις οἱ πολέμιοι καταφθείροντες τὴν χώραν
ἀγεώργητον κατασκευάζουσι· παρὰ δὲ τούτοις τῶν γεωρ- γῶν ἱερῶν καὶ ἀσύλων ἐωμένων, οἱ
πλησίον τῶν παρα- τάξεων γεωργοῦντες ἀνεπαίσθητοι τῶν κινδύνων εἰσίν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 85

XXXVII. 11. Ἐχει δὲ καὶ ποταμούς ἢ χώρα τῶν Ἰνδῶν πολλοὺς καὶ μεγάλους πλωτοὺς,
οἳ τὰς πηγὰς ἔχοντες ἐν τοῖς ὄρεσι τοῖς πρὸς τὰς ἄρκτους κεκλιμένοις φέρονται διὰ τῆς πεδιάδος,
ὧν οὐκ ὀλίγοι συμμίσγοντες ἀλλήλοις ἐμβάλλουσιν εἰς ποταμὸν τὸν ὀνομαζόμενον Γάγγην.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 100

Καὶ γὰρ Ἀλέ- ξανδρος ὁ Μακεδὼν ἀπάσης τῆς Ἀσίας κρατήσας μό- νους τοὺς Γανδαρί-
δας οὐκ ἐπολέμησε· καταντήσας γὰρ ἐπὶ τὸν Γάγγην ποταμὸν μετὰ πάσης τῆς δυνάμεως,
καὶ τοὺς ἄλλους Ἰνδοὺς καταπολεμήσας, ὥς ἐπύθετο τοὺς Γανδαρίδας ἔχειν τετρακισχιλίους
ἐλέφαντας πο- λεμικῶς κεκοσμημένου, ἀπέγνων τὴν ἐπ' αὐτοὺς στρα- τείαν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 104

(14) Ὁ δὲ παραπλήσιος τῷ Γάγγη ποταμὸς, προσαγορευόμενος δὲ Ἰνδός, ἄρχεται μὲν
ὁμοίως ἀπὸ τῶν ἄρκτων, ἐμβάλλων δὲ εἰς τὸν Ὠκεανὸν ἀφορίζει τὴν Ἰνδικήν· πολλὴν δὲ διεξὼν
πεδιάδα χώραν δεχε- ται ποταμούς οὐκ ὀλίγους πλωτοὺς, ἐπιφανεστάτους δὲ Ἵπανιν καὶ
Ἰδάσπην καὶ Ἀχεσίον.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 114

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

(16) Τοῦ δὲ κατὰ τοὺς ποτα- μούς πλήθους καὶ τῆς τῶν ὑδάτων ὑπερβολῆς αἰτίαν φέρουσιν οἱ παρ' αὐτοῖς φιλόσοφοι καὶ φυσικοὶ τοιαύτην· τῆς Ἰνδικῆς φασὶ τὰς περικειμένας χώρας, τὴν τε Σκυθῶν καὶ Βακτριανῶν, ἔτι δὲ καὶ τῶν Ἀριανῶν, ὑψηλοτέρας εἶναι τῆς Ἰνδικῆς· ὥστε εὐλόγως εἰς τὴν ὑποκειμένην χώραν πανταχόθεν συρρεούσας τὰς λιβά- δας ἐκ τοῦ κατ' ὀλίγον ποιεῖν τοὺς τόπους καθύγρους καὶ γεννᾶν ποταμῶν πλήθος.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 120

(17) Ἴδιον δέ τι συμ- βαίνει περὶ τινὰ τῶν κατὰ τὴν Ἰνδικὴν ποταμῶν τὸν ὀνομαζόμενον Σίλλαν, ῥέοντα δὲ ἐκ τινος ὁμωνύμου κρήνης· ἐπὶ γὰρ τούτου μόνου τῶν ἀπάντων ποταμῶν οὐδὲν τῶν ἐμβαλλομένων εἰς αὐτὸν ἐπιπλεῖ, πάντα δ' εἰς τὸν βυθὸν καταδύεται παραδόξως.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 125

XXXVIII. 18. Τὴν δ' ὅλην Ἰνδικὴν οὖσαν ὑπερμε- γέθη λέγεται κατοικεῖν ἔθνη πολλὰ καὶ παντοδαπὰ, καὶ τούτων μηδὲν ἔχειν τὴν ἐξ ἀρχῆς γένεσιν ἔπηλυν, ἀλλὰ πάντα δοκεῖν ὑπάρχειν αὐτόχθονα, πρὸς δὲ τούτοις μήτε ξενικὴν ἀποικίαν προσδέχεσθαι πώποτε μήτε εἰς ἄλλο ἔθνος ἀπεσταλκέναι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 139

20. Μυθολογοῦσι δὲ παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς οἱ λογιώτατοι περὶ ὧν καθήκον ἂν εἴη συντόμως· διελθεῖν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 144

Φασὶ γὰρ ἐν τοῖς ἀρχαιοτάτοις χρόνοις, παρ' αὐτοῖς ἔτι τῶν ἀνθρώπων καιμηδὸν οἰκούντων, παραγενέσθαι τὸν Διόνυσον ἐκ τῶν πρὸς ἐσπέρας τόπων ἔχοντα δύναμιν ἀξιόλογον· ἐπελθεῖν δὲ τὴν Ἰνδικὴν ἅπασαν, μηδεμιᾶς οὔσης ἀξιολόγου πόλεως τῆς δυναμένης ἀντιτάξασθαι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 158

(22) Μετὰ δὲ ταῦτα τῆς παραθέσεως τῶν καρ- πῶν ἐπιμεληθέντα μεταδιδόναι τοῖς Ἰνδοῖς, καὶ τὴν εὐρεσιν τοῦ οἴνου καὶ τῶν ἄλλων τῶν εἰς τὸν βίον χρη- σίμων παραδούναι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 169

Βασιλεύσαντα δὲ πάσης τῆς Ἰνδικῆς ἔτη δύο πρὸς τοῖς πεντήκοντα γῆρα τελευτῆσαι· διαδεξαμέ- νους δὲ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ τὴν ἡγεμονίαν ἀεὶ τοῖς ἀφ' ἑαυτῶν ἀπολιπεῖν τὴν ἀρχήν· τὸ δὲ τελευταῖον πολ- λαῖς γενεαῖς ὕστερον καταλυθείσης τῆς ἡγεμονίας δη- μοκρατηθῆναι τὰς πόλεις.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 177

XXXIX. 24. Περὶ μὲν οὖν τοῦ Διονύσου καὶ τῶν ἀπογόνων αὐτοῦ τοιαῦτα μυθολογοῦσιν οἱ τὴν ὀρεινὴν τῆς Ἰνδικῆς κατοικοῦντες.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 185

(25) Γαμήσαντα δὲ πλείους γυ- ναῖκας, υἱοὺς μὲν πολλοὺς, θυγατέρα δὲ μίαν γεννη- σαι· καὶ τούτων ἐνηλίκων γενομένων, πᾶσαν τὴν Ἰνδικὴν διελόμενον εἰς ἴσας τοῖς τέκνοις μερίδας ἅπαν- τας τοὺς υἱοὺς ἀποδεῖξαι βασιλέας, μίαν δὲ θυγατέρα θρέψαντα καὶ ταύτην βασιλίσσαν ἀποδεῖξαι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 201

3.17. MEGASTHENES

(28) Νομίμων δ' ὄντων παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς ἐνίων ἐξηλλαγμένων θαυμασιώτατον ἂν τις ἡγήσαιτο τὸ κα- ταδειχθὲν ὑπὸ τῶν ἀρχαίων παρ' αὐτοῖς φιλοσόφων· νενομοθέτηται γὰρ παρ' αὐτοῖς δοῦλον μηδὲνα τὸ πα- ράπαν εἶναι, ἐλευθέρους δ' ὑπάρχοντας τὴν ἰσότητα τιμᾶν ἐν πᾶσι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 211

XL. 29. Τὸ δὲ πᾶν πλῆθος τῶν Ἰνδῶν εἰς ἑπτὰ μέρη διήρηται, ὧν ἐστὶ τὸ μὲν πρῶτον σύστημα φιλοσόφων, πλήθει μὲν τῶν ἄλλων μερῶν λειπόμενον, τῇ δ' ἐπι- φανείᾳ πάντων πρωτεῦον· ἀλειτούργητοι γὰρ ὄντες οἱ φιλόσοφοι πάσης ὑπουργίας οὔθ' ἑτέρων κυριεύουσιν οὔθ' ὑφ' ἑτέρων δεσπόζονται.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 222

(30) Παραλαμβάνονται δὲ ὑπὸ μὲν τῶν ἰδιωτῶν εἰς τε τὰς ἐν τῷ βίῳ θυσίας καὶ εἰς τὰς τῶν τετελευτηκότων ἐπιμελείας, ὡς θεοῖς γεγο- νότες προσφιλέστατοι καὶ περὶ τῶν ἐν Ἄδου μάλιστα ἐμπεύρωσ ἔχοντες, ταύτης τε τῆς ὑπουργίας δῶρά τε καὶ τιμὰς λαμβάνουσιν ἀξιολόγους· τῷ δὲ κοινῷ τῶν Ἰνδῶν μεγάλως παρέχονται χρεῖας παραλαμβάνοντες μὲν κατὰ τὸ νέον ἔτος ἐπὶ τὴν μεγάλην σύνοδον, προ- λέγοντες δὲ τοῖς πλήθεσι περὶ αὐχμῶν καὶ ἐπομβρίας, ἔτι δὲ ἀνέμων εὐπνοίας καὶ νόσων καὶ τῶν ἄλλων τῶν δυναμένων τοὺς ἀκούοντας ὠφελῆσαι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 244

Τῆς δὲ χώρας μισθοὺς τελοῦσι τῷ βασιλεῖ διὰ τὸ πᾶσαν τὴν Ἰνδικὴν βασιλικὴν εἶναι, ἰδιώτη δὲ μηδενὶ γῆν ἐξεῖναι κεκτῆσθαι· χωρὶς δὲ τῆς μισθώσεως τετάρτην εἰς τὸ βασιλικὸν τελοῦσι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 253

34. Τρίτον δ' ἐστὶ φῦλον τὸ τῶν βουκόλων καὶ ποι- μένων καὶ καθόλου πάντων τῶν νομέων, οἳ πόλιν μὲν ἢ κώμην οὐκ οἰκοῦσι, σκηνήν τε δὲ βίῳ χρῶνται· οἳ δ' αὐτοὶ καὶ κυνηγοῦντες καθαράν ποιοῦσι τὴν χώραν ὀρνέων καὶ θηρίων· εἰς ταῦτα δὲ ἀσκοῦντες καὶ φιλο- πονοῦντες ἐξημεροῦσι τὴν Ἰνδικήν, πλήθουσιν πολλῶν καὶ παντοδαπῶν θηρίων τε καὶ ὀρνέων τῶν κατεσθιόν- των τὰ σπέρματα τῶν γεωργῶν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 268

37. Ἐκτον δ' ἐστὶ τὸ τῶν ἐφόρων· οὗτοι δὲ πολυ- πραγμονοῦντες πάντα καὶ ἐφορῶντες τὰ κατὰ τὴν Ἰν- δικὴν ἀπαγγέλλουσι τοῖς βασιλεῦσιν, ἐὰν δὲ ἡ πόλις αὐτῶν ἀβασίλευτος ᾖ, τοῖς ἄρχουσιν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 278

39. Τὰ μὲν οὖν μέρη τῆς διηρημένης πολιτείας παρ' Ἰνδοῖς σχεδὸν ταῦτά ἐστιν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 282

XLII. 40. Ἐχει δ' ἡ τῶν Ἰνδῶν χώρα πλείστους καὶ μεγίστους ἐλέφαντας, ἀλλῇ τε καὶ μεγέθει πολὺ διαφέροντας.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 292

41. Εἰσὶ δὲ παρ' Ἰνδοῖς καὶ ἐπὶ τοὺς ξένους ἄρχον- τες τεταγμένοι καὶ φροντίζοντες ὅπως μηδεὶς ξένος ἀδικῇται· τοῖς δ' ἄρρωστοῦσι τῶν ξένων ἰατροὺς εἰσά- γουσι καὶ τὴν ἄλλην ἐπι-

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

μέλειαν ποιούνται, καὶ τελευ- τήσαντας θάπτουσιν, ἔτι δὲ τὰ καταλειφθέντα χρήματα τοῖς προσήκουσιν ἀποδίδασιν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 1, line 300

Περὶ μὲν οὖν τῆς Ἰνδικῆς καὶ τῶν κατ' αὐτὴν ἀρχαιολογουμένων ἀρκεσθῆσόμεθα τοῖς ῥηθεῖσι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 2, line 3

Ἔ, 6, 2: Τῆς δὲ ὡς ἐπὶ νότον Ἀσίας τετραχῇ αὖ τεμνομένης μεγίστην μὲν μοῖραν τῶν Ἰνδῶν γῆν ποιεῖ Ἐρατοσθένης τε καὶ Μεγασθένης, ὃς ξυνῆν μὲν Σιβυρτίῳ τῷ σατράπῃ τῆς Ἀραχωσίας· πολλάκις δὲ λέγει ἀφικέσθαι παρὰ Σανδράκοττον τὸν Ἰνδῶν βασιλέα· ἐλαχίστην δὲ ὅσῃν ὁ Εὐφράτης ποτα- μὸς ἀπείργει ὡς πρὸς τὴν ἡμετέραν θάλασσαν· δύο δὲ αἱ μεταξὺ Εὐφράτου τε ποταμοῦ καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἀπειρ- γόμεναι, αἱ δύο ξυντεθεῖσαι μόλις ἄξιαι τῇ Ἰνδῶν γῇ ξυμβαλεῖν· ἀπείργεσθαι δὲ τὴν Ἰνδῶν χώραν πρὸς μὲν ἑω τε καὶ ἀπηλιώτην ἄνεμον ἔστε ἐπὶ μεσημβρίαν τῇ μεγάλῃ θαλάσῃ· τὸ πρὸς βορρᾶν δὲ αὐτῆς ἀπείρ-

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 2, line 15

Ἰνδῶν βασιλέα· ἐλαχίστην δὲ ὅσῃν ὁ Εὐφράτης ποτα- μὸς ἀπείργει ὡς πρὸς τὴν ἡμετέραν θάλασσαν· δύο δὲ αἱ μεταξὺ Εὐφράτου τε ποταμοῦ καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἀπειρ- γόμεναι, αἱ δύο ξυντεθεῖσαι μόλις ἄξιαι τῇ Ἰνδῶν γῇ ξυμβαλεῖν· ἀπείργεσθαι δὲ τὴν Ἰνδῶν χώραν πρὸς μὲν ἑω τε καὶ ἀπηλιώτην ἄνεμον ἔστε ἐπὶ μεσημβρίαν τῇ μεγάλῃ θαλάσῃ· τὸ πρὸς βορρᾶν δὲ αὐτῆς ἀπείρ- γειν τὸν Καύκασον τὸ ὄρος ἔστε ἐπὶ τοῦ Ταύρου τὴν ξυμβολήν· τὴν δὲ πρὸς ἐσπέραν τε καὶ ἄνεμον Ἰάπυγα ἔστε ἐπὶ τὴν μεγάλην θάλασσαν, ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς ἀπο- τέμνεται.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 2, line 31

... Εἰ δὴ οὖν εἷς τε ποταμὸς παρ' ἐκάστοις, καὶ οὐ μεγάλοι οὗτοι ποταμοὶ, ἱκανοὶ γῆν πολλὴν ποιῆσαι, ἐς θάλασσαν προχεόμενοι, ὅποτε ἰλὺν καταφέρουσι καὶ πηλὸν ἐκ τῶν ἄνω τόπων, ἐνθενπερ αὐτοῖς αἱ πηγαὶ εἰσιν, οὐδὲ ὑπὲρ τῆς Ἰνδῶν ἄρα χώρας ἐς ἀπιστίαν ἵεναι ἄξιον, ὅπως πεδῖον τε ἢ πολλή ἐστι, καὶ ἐκ τῶν ποτα- μῶν τὸ πεδῖον ἔχει προσκεχωσμένον.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 2, line 36

Ἐρμον μὲν γάρ καὶ Κάϋστρον καὶ Κάϊχόν τε καὶ Μαϊάνδρον ἢ ὅσοι πολλοὶ ποταμοὶ τῆς Ἀσίας ἐς τήνδε τὴν ἐντὸς θάλασσαν ἐκδιδοῦσιν, οὐδὲ ξύμπαντας ξυντεθέντας ἐν τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν ἄξιον ξυμβαλεῖν πλήθους ἕνεκα τοῦ ὕδατος, μὴ ὅτι τῷ Γάγγγῃ τῷ μεγίστῳ, ὅτῳ οὔτε Νείλου ὕδαρ τοῦ Αἰγυπτίου οὔτε ὁ Ἰστρος ὁ κατὰ τὴν Εὐρώπην ῥέων ἄξιοι ξυμβαλεῖν· ἀλλ' οὐδὲ τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ ἐκεῖνοί γε πάντες ξυμμιχθέντες ἐς ἴσον ἔρχονται· ὃς μέγας τε εὐθύς ἀπὸ τῶν πηγῶν ἀνίσχει, καὶ πεντεκαίδεκα ποτα- μὸς πάντας τῶν Ἀσιανῶν μείζονας παραλαβὼν, καὶ τῇ ἐπωνυμίᾳ κρατήσας, οὕτως ἐκδιδοῖ ἐς θάλασσαν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 2, line 45

Ταῦτά μοι ἐν τῷ παρόντι περὶ Ἰνδῶν τῆς χώρας λε- λέχθω· τὰ δὲ ἄλλα ἀποκείσθω ἐς τὴν Ἰνδικὴν ξυγ- γραφήν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 3, line 1

3.17. MEGASTHENES

Strabo XV: Τὴν Ἰνδικὴν περιώρικεν ἀπὸ μὲν τῶν ἄρκτων τοῦ Ταύρου τὰ ἔσχατα· ἀπὸ δὲ τῆς Ἀριανῆς μέχρι τῆς ἐώας θαλάττης, ἅπερ οἱ ἐπιχώριοι κατὰ μέρος Παροπάμισόν τε καὶ Ἡμωδὸν καὶ Ἰμασὸν καὶ ἄλλα ὀνομάζουσι, Μακεδόνες δὲ Καύκασον· ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ὁ Ἰνδὸς ποταμός· τὸ δὲ νότιον καὶ τὸ πρὸς- εἴων πλευρὸν πολὺ μείζω τῶν ἐτέρων ὄντα προπέπτω- κεν εἰς τὸ Ἀτλαντικὸν πέλαγος, καὶ γίνεται ῥομβοειδὲς τὸ τῆς χώρας σχῆμα, τῶν μειζόνων πλευρῶν ἑκατέρου πλεονεκτοῦντος παρὰ τὸ ἀπεναντίον πλευρὸν τρισχιλίοις

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 3, line 16

Τῆς μὲν οὖν ἐσπερίου πλευρᾶς ἀπὸ τῶν Καυκασίων ὄρων ἐπὶ τὴν νότιον θάλατταν στάδιοι μάλιστα λέγονται μύριοι τρισχίλιοι παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν μέχρι τῶν ἐκβο- λῶν αὐτοῦ· ὥστ' ἀπεναντίον ἢ ἐωθινή προσλαβοῦσα τοὺς τῆς ἄκρας τρισχιλίους ἔσται μυρίων καὶ ἑξα- κισχιλίων σταδίων.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 3, line 34

.. Ἐκ δὲ τούτων πάρεστιν ὁρᾶν, ὅσον διαφέρουσιν αἱ τῶν ἄλλων ἀποφάσεις, Κτησίου μὲν οὐκ ἐλάττω τῆς ἄλλης Ἀσίας τὴν Ἰνδικὴν λέγοντος, Ὀνησικρίτου δὲ τρί- τον μέρος τῆς οἰκουμένης, Νεάρχου δὲ μνηνὸν ὁδὸν τετ- τάρων τὴν δι' αὐτοῦ τοῦ πεδίου, Μεγασθένους δὲ καὶ Δηϊμάχου μετριάσαντων μᾶλλον· ὑπὲρ γὰρ διςμυρίου τιθέασι σταδίους, τὸ ἀπὸ τῆς νοτίου θαλάττης ἐπὶ τὸν Καύκασον.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 4, line 4

Strabo II.: Φησὶν ὁ Ἰππαρχος ἐν τῷ δευτέρῳ Ὑπομνήματι αὐτὸν τὸν Ἐρατοσθένη δια- βάλλειν τὴν τοῦ Πατροκλέους πίστιν ἐκ τῆς πρὸς Μεγασθένη διαφωνίας περὶ τοῦ μήκους τῆς Ἰνδικῆς τοῦ κατὰ τὸ βόρειον πλευρὸν, τοῦ μὲν Μεγασθένους λέγοντος στα- δίων μυρίων ἑξακισχιλίων, τοῦ δὲ Πατροκλέους χιλίοις λείπειν φαμένου.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 6, line 2

Arrian. Ind. 3, 7: Μεγασθένει δὲ τὸ ἀπὸ ἀνατο- λέων ἐς ἐσπέρην πλάτος ἐστὶ τῆς Ἰνδῶν γῆς, ὃ τι περ οἱ ἄλλοι μῆκος ποίεουσι· καὶ λέγει Μεγασθένης, μυρίων καὶ ἑξακισχιλίων σταδίων εἶναι, ἵνα περ τὸ βραχύτατον αὐτοῦ.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 7a, line 3

Strabo II: Μεγασθένει φήσαντι ἐν τοῖς νοτίοις μέρεσι τῆς Ἰνδικῆς τὰς τε ἄρκτους ἀπο- κρύπτεσθαι καὶ τὰς σκιάς ἀντιπίπτειν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 7b, line 2

Δηϊμάχου φήσαντος μηδαμοῦ τῆς Ἰνδικῆς μήτ' ἀποκρύπτεσθαι τὰς ἄρκτους μήτ' ἀντι- πίπτειν τὰς σκιάς ὅπερ ὑπέληφεν ὁ Μεγασθένης.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 9, line 2

Plinius H. N. VII, 22, 6: Ab iis in interiore situ Mo- nedes et Suari, quorum mons Maleus, in quo umbrae ad septemtrionem cadunt hieme, aestate in austrum, per senos menses. Septemtriones eo tractu semel in anno apparere, nec nisi quindecim diebus, Baeton auctor est: hoc idem pluribus locis Indiae fieri, Megasthenes. Strabo XV: Μεγα- σθένης δὲ τὴν εὐδαι- μονίαν τῆς Ἰνδικῆς ἐπισημαίνεται τῷ δίκαρπον εἶναι καὶ δίφορον, καθάπερ

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

καὶ Ἐρατοσθένης ἔφη, τὸν μὲν εἰπὼν σπύρον χειμερινόν, τὸν δὲ θερινόν, καὶ ὄμβρον ὁμοίως· οὐδὲν γὰρ ἔτος εὐρίσκεισθαι φησι πρὸς ἀμφοτέρους καιροὺς ἄνομβρον· ὥστε εὐετηρίαν ἐκ τούτου συμβαίνειν, ἀφόρου μηδέποτε τῆς γῆς οὐσης· τοὺς τε ξυλίνους καρποὺς γεννᾶσθαι πολλοὺς, καὶ τὰς ῥίζας τῶν φυτῶν, καὶ μάλιστα τῶν μεγάλων καλάμων, γλυκείας καὶ φύσει καὶ ἐψήσει, χλιαυομένου τοῦ ὕδατος τοῖς ἡλίοις, τοῦ τ' ἐκπίπτοντος ἐκ Διὸς, καὶ τοῦ ποταμίου.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 11, line 2

Aelian. N. A. XVII, 39: Ἐν τῇ Πραξιακῇ χώρᾳ, Ἰνδῶν δὲ αὕτη ἐστίν, Μεγασθένης φησὶ πιθήκους εἶναι τῶν μεγίστων κυνῶν οὐ μείους, ἔχειν δὲ καὶ οὐράς πηχῶν πέντε· προσπεφυκέναι δὲ ἄρα αὐτοῖς καὶ προκόμια, καὶ πώγωνας καθειμένους καὶ βαθεῖς· καὶ τὸ μὲν πρὸς ὦπον εἶναι πᾶν λευκούς, τὸ σῶμα δὲ μέλανας ἰδεῖν, ἡμέρους δὲ καὶ φιλανθρωποτάτους, καὶ τὸ τοῖς ἄλλα- χόθι πιθήκοις συμφυεῖς οὐκ ἔχειν τὸ κακότητος.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 12, line 2

Aelian. N. A. XVI, 41: Μεγασθένης φησὶ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν σκορπίους γίνεσθαι πτερωτοὺς μεγέθει μεγάλους, τὸ κέντρον δὲ ἐγχρίπτειν τοῖς Εὐρωπαίοις παραπλησίως· γίνεσθαι δὲ καὶ ὄφεις αὐτόθι, καὶ τούτους πτηνοὺς· ἐπιφοιτᾶν δὲ οὐ καθ' ἡμέραν, ἀλλὰ νύκτωρ, καὶ ἀφίεναι ἐξ αὐτῶν οὐρον, ὅπερ οὖν ἂν κατὰ τινος ἀποστάξεως σώματος, σῆψιν ἐργάζεται παραχρῆμα.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 13b, line 4

Aelianus XVI, 20: Ἐν τοῖς χωρίοις τοῖς ἐν Ἰνδῇ, λέγω δὴ τοῖς ἐνδοτάτω, ὅρη φασὶν εἶναι δύσβατά τε καὶ ἐνθηρά· καὶ ἔχειν ζῶα ὅσα καὶ ἡ καθ' ἡμᾶς τρέφει γῆ, ἄγρια δέ· καὶ γάρ τοι καὶ τὰς οἷς τὰς ἐκεῖ φασιν εἶναι καὶ ταύτας θηρία, καὶ κύνας καὶ αἰγας καὶ βοῦς, αὐτόνομά τε ἀλᾶσθαι καὶ ἐλεύθερα, ἀφειμένα νομευτικῆς ἀρχῆς.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 13b, line 11

Πλήθη δὲ αὐτῶν καὶ ἀριθμοῦ πλείω φασὶν οἱ τούτων συγγραφεῖς, καὶ οἱ τῶν Ἰνδῶν λόγιοι· ἐν δὴ τοῖς καὶ τοὺς Βραχμᾶνας ἀριθμεῖν ἄξιον, καὶ γάρ τοι καὶ ἐκεῖνοι ὑπὲρ τῶνδε ὁμολογοῦσι τὰ αὐτά.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 13b, line 36

Νομάς δὲ ἐρήμους ἀσπάζεταιται καὶ πλανᾶται μόνον· ὥρα δὲ ἀφροδίτης τῆς σφετέρας συνδυασθεῖς πρὸς τὴν θήλειαν πεπράυνται, καὶ μέντοι καὶ συννόμω ἐστόν· εἴτα ταύτης παραδραμούσης καὶ τῆς θηλείας κυούσης, ἐκθηριοῦται αὕτης, καὶ μονίας ἐστὶν ὅδε ὁ Ἰνδὸς καρτάζωνος.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 13b, line 42

c. 21: Ὑπερελθόντι τὰ ὅρη τὰ γειτνιῶντα τοῖς Ἰνδοῖς κατὰ τὴν ἐνδοτάτην πλευρὰν φανοῦνται, φασὶν, αὐλῶνες δασύτατοι, καὶ καλεῖται γε ὑπ' Ἰνδῶν ὁ χώρος Κόρουδα· ἀλῶνται δὲ ἄρα, φασὶν, ἐν τοῖσδε τοῖς αὐλῶσι ζῶα Σατύροις ἐμφερῇ τὰς μορφάς, τὸ πᾶν σῶμα λάσια, καὶ ἔχει κατὰ τῆς ἰξύος ἵππουριν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 15, line 2

Plinius VIII, 14, 1: Megasthenes scribit in India serpentes in tantam magnitudinem adolesce, ut solidos hauriant cervos taurosque. Aelian. N. A. VIII, 7: Μεγασθένης ἀκούω λέγοντος περὶ τὴν τῶν Ἰνδῶν θάλατταν γίγνεσθαι τι ἰχθύδιον, καὶ τοῦτο μὲν ὅταν ζῇ,

3.17. MEGASTHENES

ἀθάνατον εἶναι, κάτω που νηρόμενον καὶ ἐν βυθῷ, ἀποθανόν δὲ ἀναπλεῖν· οὗ τὸν ἀψάμενον λειποθυμεῖν καὶ ἐκθνήσκειν τὰ πρῶτα, εἴτα μέντοι καὶ ἀποθνήσκειν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 17, line 2

Plinius H. N. VI, 24: Megasthenes flumine dividi (Taprobanen insulam tradit) incolasque palaeogonos appellari, aurique margaritarumque fertiliores quam Indos. Antigonus Hist. Mirab. c. 147: Μεγασθένην δὲ τὸν τὰ Ἰνδικὰ γεγραφότα ἱστορεῖν, ἐν τῇ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν θαλάττῃ δένδρεα φύεσθαι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 18a, line 2

Arrianus Ind. 4, 2 – 13: Αὐτοῖν δὲ τοῖν μεγάλ-στοιν ποταμοῖν τοῦ τε Γάγγεω καὶ τοῦ Ἰνδοῦ τὸν Γάγγεα μεγέθει πολὺ τι ὑπερφέρειν Μεγασθένης ἀνέγραψεν, καὶ ὅσοι ἄλλοι μνήμην τοῦ Γάγγεω ἔχουσιν· (3) αὐτὸν τε γὰρ μέγαν ἀνίσχειν ἐκ τῶν πηγέων, δέχεσθαι τε ἐς αὐτὸν τὸν τε Καϊνὰν ποταμὸν, καὶ τὸν Ἑραννοβόαν καὶ τὸν Κοσσόανον, πάντας πλωτούς· ἔτι δὲ Σῶνόν τε ποταμὸν καὶ Σιττόκατιν καὶ Σολόματιν, καὶ τούτους πλω-τούς.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 18a, line 14

(4) Ἐπὶ δὲ Κονδοχάτῃν τε καὶ Σάμβον καὶ Μάγωνα καὶ Ἀγόρανιν καὶ Ὠμαλιν· ἐμβάλλουσι δὲ ἐς αὐτὸν Κορμενάσης τε μέγας ποταμὸς καὶ Κάκουθις καὶ Ἀνδώματις ἐξ ἔθνεος Ἰνδικοῦ τοῦ Μανδιαδινῶν ῥέων· (5) καὶ ἐπὶ τούτοισιν Ἀμυστις παρὰ πόλιν Καταδούπην, καὶ Ὀξύ-ματις ἐπὶ Παζάλαισι καλου-μένοισι, καὶ Ἑρρένυσις ἐν Μάθαισιν, ἔθνεϊ Ἰνδικῷ, ξυμ-βάλλει τῷ Γάγγει.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 18a, line 26

(8) Τῷ δὲ Ἰνδῷ ἐς ταῦτόν ἔρχεται.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 18a, line 33

(10) Ὁ δὲ Ἀκесίνης ἐν Μαλλοῖς ξυμβάλλει τῷ Ἰνδῷ· καὶ Τούταπος δὲ μέγας ποταμὸς ἐς τὸν Ἀκесίνην ἐκδιδοί.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 18a, line 36

Τούτων ὁ Ἀκесίνης ἐμπλησθεὶς καὶ τῇ ἐπικλήσει ἐκνικήσας αὐτὸς τῷ ἐωϋτοῦ ἤδη οὐνόματι ἐσβάλλει ἐς τὸν Ἰνδόν· (11) Κω-φὴν δὲ ἐν Πευκελαιήτιδι, ἅμα οἱ ἄγων Μαλάμαντόν τε καὶ Σόαστον καὶ Γαρροϊάν, ἐκδιδοί ἐς τὸν Ἰνδόν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 18a, line 41

(12) Καθ' ἑαυτὴν δὲ τούτων Πάρενος καὶ Σάπαρνος, οὐ πολὺ διέχοντες, ἐμβάλλου-σιν ἐς τὸν Ἰνδόν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 18b, line 2

Τὸ δὲ αἴτιον ὅστις ἐθέλει φράζειν τοῦ πλήθεός τε καὶ μεγέθεος τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν, φρα-ζέτω· ἐμοὶ δὲ καὶ ταῦτα ὡς ἀκοὴ ἀναγεγραφθῶ.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 18b, line 5

Ἐπεὶ καὶ ἄλλων πολλῶν ποταμῶν οὐνόματα Μεγασθένης ἀνέγρα-ψεν, οἱ ἔξω τοῦ Γάγγεω τε καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἐκδιδοῦσιν ἐς τὸν ἑῶν τε καὶ μεσημβρινὸν τὸν ἔξω πόντον· ὥστε τοὺς πάντας ὀκτῶ καὶ πενήκοντα λέγει ὅτι εἰσὶν Ἰνδοὶ ποταμοὶ ναυσίποροι πάντες.

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 18b, line 9

Ἀλλ' οὐδὲ Μεγασθένης πολλὴν δοκεῖ μοι ἐπελθεῖν τῆς Ἰνδῶν χώρας, πλὴν γε ὅτι πλεῖνα ἢ οἱ ἔνν' Ἀλέξανδρῳ τῷ Φιλίππου ἐπελ- θόντες.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 19a, line 2

Arrianus Ind. 6, 2: Καὶ τόδε λέγει Μεγασθένης ὑπὲρ ποταμοῦ Ἰνδικοῦ, Σίλαν μὲν εἶναι οἱ οὐνομα, ῥέειν δὲ ἀπὸ κρήνης ἐπωνύμου τῷ ποταμῷ διὰ τῆς χώρας τῆς Σιλέων, καὶ τούτων ἐπωνύμων τοῦ ποταμοῦ τε καὶ τῆς κρήνης· (3) τὸ δὲ ὕδωρ παρέχεσθαι τοῖονδε· οὐδὲν εἶναι ὅτεφ' ἀντέχει τὸ ὕδωρ, οὔτε τι νήχεσθαι ἐπ' αὐτοῦ οὔτε τι ἐπιπλέειν, ἀλλὰ πάντα γὰρ ἐς βυσσὸν δύνειν· οὕτω τι ἀμενηνότερον πάντων εἶναι τὸ ὕδωρ ἐκεῖνο καὶ ἡεροειδέστερον.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 20, line 2

E LIBRO SECUNDO.

Strabo XV: Ἡμῖν δὲ τίς ἂν δικαία γένοιτο πίστις περὶ τῶν Ἰνδικῶν ἐκ τῆς τοιαύτης στρα- τείας τοῦ Κύρου ἢ τῆς Σεμίραμιδος;

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 20, line 5

Συναποφαίνεται δὲ πῶς καὶ Μεγασθένης τῷ λόγῳ τούτῳ, κελεύων ἀπιστεῖν ταῖς ἀρχαίαις περὶ Ἰνδῶν ἱστορίαις· οὔτε γὰρ παρ' Ἰνδῶν ἔξω σταλῆναι ποτε στρατιάν, οὔτ' ἐπελθεῖν ἔξωθεν καὶ κρατῆσαι, πλὴν τῆς μεθ' Ἡρακλέους καὶ Διονύσου, καὶ τῆς νῦν μετὰ Μακεδόνων.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 20, line 16

Ἰδάθυρσον δὲ τὸν Σκύθην ἐπι- δραμεῖν τῆς Ἀσίας μέχρι Αἰγύπτου· τῆς Ἰνδικῆς δὲ μηδὲνα τούτων ἄψασθαι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 20, line 19

Πέρσας δὲ μισθοφόρους μὲν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς μεταπέμψασθαι Ἰδρακας· ἐκεῖ δὲ μὴ στρατεῦ-σαι, ἀλλ' ἐγγὺς ἐλθεῖν μόνον, ἥνικα Κῦρος ἤλαυνεν ἐπὶ Μασσαγέτας.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 21, line 2

Arrianus Ind. 5, 4: Οὗτος ὧν ὁ Μεγασθένης λέγει, οὔτε Ἰνδοὺς ἐπιστρατεῦσαι οὐδαμοῖσιν ἀνθρώποισιν, οὔτε Ἰνδοῖσιν ἄλλους ἀνθρώπους· (5) ἀλλὰ Σέσωστριν μὲν τὸν Αἰγύπτιον, τῆς Ἀσίας καταστρεφάμενον τὴν πολλήν, ἔστε ἐπὶ τὴν Εὐρώπην σὺν στρατιῇ ἐλάσαντα ὀπίσω ἀπονοστήσαι· (6) Ἰνδάθυρσιν δὲ τὸν Σκύθεα ἐκ Σκυθίας ὁρμηθέντα πολλὰ μὲν τῆς Ἀσίας ἔθνεα κατα- στρέψασθαι, ἐπελθεῖν δὲ καὶ τὴν Αἰγυπτίων γῆν κρα- τέοντα· (7) Σεμίραμιν δὲ τὴν Ἀσσυρίην ἐπιχειρεῖν, μὲν στέλλεσθαι εἰς Ἰνδοὺς, ἀποθανεῖν δὲ πρὶν τέλος ἐπιθεῖναι τοῖσι βουλευ-μασιν· ἀλλὰ Ἀλέξανδρον γὰρ

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 21, line 12

οὔτε Ἰνδοῖσιν ἄλλους ἀνθρώπους· (5) ἀλλὰ Σέσωστριν μὲν τὸν Αἰγύπτιον, τῆς Ἀσίας κατα- στρεφάμενον τὴν πολλήν, ἔστε ἐπὶ τὴν Εὐρώπην σὺν στρατιῇ ἐλάσαντα ὀπίσω ἀπονοστήσαι· (6) Ἰνδάθυρσιν δὲ τὸν Σκύθεα ἐκ Σκυθίας ὁρμηθέντα πολλὰ μὲν τῆς Ἀσίας ἔθνεα κατα- στρέψασθαι, ἐπελθεῖν δὲ καὶ τὴν Αἰγυπτίων γῆν κρα- τέοντα· (7) Σεμίραμιν δὲ τὴν Ἀσσυρίην ἐπιχειρεῖν, μὲν στέλλεσθαι εἰς Ἰνδοὺς, ἀποθανεῖν δὲ πρὶν τέλος ἐπιθεῖναι τοῖσι βουλευ-μασιν· ἀλλὰ Ἀλέξανδρον γὰρ στρατεῦσαι ἐπὶ Ἰνδοὺς μόνον.

3.17. MEGASTHENES

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 21, line 14

(8) Καὶ πρὸ Ἀλεξάν-δρου Διονύσου μὲν περὶ πολλὸς λόγος κατέχει, ὡς καὶ τούτου στρα-τεύσαντος ἐς Ἰνδοὺς, καὶ καταστρεφαιμένου Ἰνδοῦς· Ἡρακλέος δὲ περὶ οὐ πολλός.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 21, line 18

(9) Διονύσου μὲν γε καὶ Νύσσα πόλις μνήμα οὐ φαῦλον τῆς στρατη-λασίης καὶ ὁ Μηρὸς τὸ ὄρος, καὶ ὁ κισσὸς ὅτι ἐν τῷ ὄρεϊ τούτῳ φύεται· καὶ αὐτοὶ οἱ Ἰνδοὶ ὑπὸ τυμπάνων τε καὶ κυμβάλων στελλόμενοι ἐς τὰς μάχας· καὶ ἐσθῆς αὐτοῖσι κατὰστικτος ἐοῦσα, καθάπερ τοῦ Διονύσου τοῖσι βάκχοισιν· (10) Ἡρακλέος δὲ οὐ πολλὰ ὑπομνήματα.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 21, line 30

(12) Καὶ ἐν Σίβαισιν, Ἰνδικῷ γένει, ὅτι δορὰς ἀμπεχομένους εἶδον τοὺς Σίβας, ἀπὸ τῆς Ἡρακλέος στρατηλασίης ἔφασκον τοὺς ὑπολειφθέντας εἶναι τοὺς Σίβας· καὶ γὰρ καὶ σκυτά-λην φέρουσί τε οἱ Σίβαι, καὶ τοῖς βουσὶν αὐ-τῶν ῥόπαλον ἐπικέκαυται· καὶ τοῦτο ἐς μνήμην ἀνέφε-ρον τοῦ ῥόπαλου τοῦ Ἡρακλέος.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 22a, line 8

<Καὶ Μεγασθένης> δὲ <ἐν τῇ δ'> (l. δευτέρα) <τῶν Ἰνδικῶν> μνημονεύει αὐτῶν, δι' ἧς ἀπο-φαίνειν πειρᾶται τοῦτον τὸν βασιλέα τῇ ἀνδρείᾳ καὶ τῷ μεγέ-θει τῶν πράξεων ὑπερβεβηκότα τὸν Ἡρακλέα· κατα-στρέφασθαι γὰρ αὐτὸν φησι Λιβύης τὴν πολλὴν καὶ Ἰβηρίαν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 22a, line 14

Καὶ Διοκλῆς δὲ ἐν τῇ δευτέρᾳ τῶν Περσικῶν μνημονεύει τούτου τοῦ βασιλέως, καὶ Φιλό-στρατος ἐν ταῖς Ἰνδικαῖς αὐτοῦ καὶ Φοινικικαῖς ἱστορίαις, ὅτι οὗ-τος ὁ βασιλεὺς ἐπολιόρχησε Τύρον ἔτεσι τρισὶ καὶ δέκα, βασιλεύοντος κατ' ἐκεῖνον τὸν καιρὸν Ἰθωβάλου τῆς Τύρου.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 22b, line 3

Syncellus: Τὸν Ναβουχοδονόσωρ ὁ Μεγασθένης ἐν τῇ δ' (l. δευτέρα) τῶν Ἰνδικῶν Ἡρα-κλέους ἀλκιμώτερον ἀποφαίνει, ὃς ἀνδρεία μεγάλη Λιβύης τὸ πλεῖστον καὶ Ἰβηρίας κα-τε-στρέφατο.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 1

Arrianus Ind. c. 7: Ἔθνεα δὲ Ἰνδικὰ εἴκοσι καὶ ἑκατὸν τι ἅπαντα λέγει <Μεγασθένης> δυοῖν δέοντα.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 3

[Καὶ πολλὰ μὲν εἶναι ἔθνεα Ἰνδικὰ καὶ αὐτὸς ξυμφέ-ρομαι Μεγασθένει· τὸ δὲ ἀτρεκές οὐκ ἔχω εἰκάσαι ὅπως ἐκμαθὼν ἀνέγραψεν, οὐδὲ πολλοστὸν μέρος τῆς Ἰνδῶν γῆς ἐπελθὼν, οὐδὲ ἐπιμίσξης πᾶσι τοῖς γένεσιν ἐούσης ἐς ἀλλήλους.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 8

Πάλαι μὲν δὴ νομάδας εἶναι Ἰνδοὺς κατὰπερ Σκυ-θέων τοὺς οὐκ ἀροτῆρας, οἱ ἐπὶ τῇσιν ἀμάξῃσι πλανώ-μενοι ἄλλοτε ἄλλην τῆς Σκυθίης ἀμείβουσιν, οὔτε πό-λιας οἰκέοντες οὔτε ἱερὰ θεῶν σέβοντες· οὕτω μὲν Ἰνδοῖσι πόλιας εἶναι μὲν ἱερὰ θεῶν δεδομημένα· ἀλλ' ἀμπεχέσθαι μὲν δορὰς θηρίων ὅσων κατακτάνοιεν· σι-τέεσθαι δὲ τῶν δενδρέων τὸν φλοιόν· καλέεσθαι δὲ τὰ

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

δένδρεα ταῦτα τῇ Ἰνδῶν φωνῇ <Τάλα> καὶ φύεσθαι ἐπ' αὐτῶν κατάπερ τῶν φοινίκων ἐπὶ τῇσι κορυφῇσιν οἷά περ τολύπας.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 19

Σιτέεσθαι δὲ καὶ τῶν θηρίων ὅσα ἔλοιεν ὠμοφαγέοντας, πρὶν δὲ Διόνυσον ἐλθεῖν ἐς τὴν χώραν τῶν Ἰνδῶν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 20

Διόνυσον δὲ ἐλθόντα, ὥς καρτερὸς ἐγένετο Ἰνδῶν, πόλιός τε οἰκῆσαι καὶ νόμους θέσθαι τῇσι πόλιν, οἴνου τε δοτῆρα Ἰνδοῖς γενέσθαι κατάπερ Ἑλλήσι, καὶ σπείρειν διδάξαι τὴν γῆν διδόντα αὐτὸν σπέρματα· ἢ οὐκ ἐλάσαντος ταύτῃ Τριπτολέμου, ὅτε περ ἐκ Δήμητρος ἐστάλη σπείρειν τὴν γῆν πᾶσαν, ἢ πρὸ Τριπτολέμου τις οὗτος Διόνυσος ἐπελθὼν τὴν Ἰνδῶν γῆν σπέρματά σφισιν ἔδωκε καρποῦ τοῦ ἡμέ-ρου· βόας τε ὑπ' ἀρότρῳ ζεύξει Διόνυσον πρῶτον, καὶ ἀροτῆρας ἀντὶ νομάδων ποιῆσαι Ἰνδῶν τοὺς πολλοὺς καὶ ὀπλίσαι ὅπλοισι τοῖσιν ἀρηϊοῖσι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 33

Καὶ θεοὺς σέβειν ὅτι ἐδίδαξε Διόνυσος ἄλλους τε καὶ μάλιστα δὴ ἑαυτὸν κυμβαλίζοντας καὶ τυμπανίζοντας· καὶ ὄρχησιν δὲ ἐκ- διδάξαι τὴν σατυρικὴν, τὸν κόρδακα παρ' Ἑλλήσι καλεόμενον· καὶ κομᾶν Ἰνδοὺς τῷ θεῷ, μιτρηφορέειν τε ἀναδεῖξαι καὶ μύρων ἀλοιφὰς ἐκδιδάξαι, ὥστε καὶ εἰς Ἀλέξανδρον ἔτι ὑπὸ κυμβάλων τε καὶ τυμπάνων ἐς τὰς μάχας Ἰνδοὶ καθίσταντο.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 37

C. 8. Ἀπρόντα δὲ ἐκ τῆς Ἰνδῶν γῆς, ὥς οἱ ταῦτα κε- κοσμέατο, καταστήσαι βασιλέα τῆς χώρας Σπατέμβαν, τῶν ἐταίρων ἓνα τὸν βακχιδέστατον· τελευτήσαντος δὲ Σπατέμβαν τὴν βασιλικὴν ἐκδέξασθαι Βουδύαν τὸν τούτου παῖδα· καὶ τὸν μὲν πεντήκοντα καὶ δύο ἔτεα βασιλεῦσαι Ἰνδῶν, τὸν πατέρα· τὸν δὲ παῖδα εἴκοσιν ἔτεα· καὶ τούτου παῖδα ἐκδέξασθαι τὴν βασιλικὴν Κρα- δεύαν· καὶ τὸ ἀπὸ τούδε τὸ πολὺ μὲν κατὰ γένος ἀμεί- βειν τὴν βασιλικὴν, παῖδα παρὰ πατρὸς ἐκδεκόμενον· εἰ δὲ ἐκλείποι τὸ γένος, οὕτω δὴ ἀριστίνδην καθίστα-

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 47

κοσμέατο, καταστήσαι βασιλέα τῆς χώρας Σπατέμβαν, τῶν ἐταίρων ἓνα τὸν βακχιδέστατον· τελευτήσαντος δὲ Σπατέμβαν τὴν βασιλικὴν ἐκδέξασθαι Βουδύαν τὸν τούτου παῖδα· καὶ τὸν μὲν πεντήκοντα καὶ δύο ἔτεα βασιλεῦσαι Ἰνδῶν, τὸν πατέρα· τὸν δὲ παῖδα εἴκοσιν ἔτεα· καὶ τούτου παῖδα ἐκδέξασθαι τὴν βασιλικὴν Κρα- δεύαν· καὶ τὸ ἀπὸ τούδε τὸ πολὺ μὲν κατὰ γένος ἀμεί- βειν τὴν βασιλικὴν, παῖδα παρὰ πατρὸς ἐκδεκόμενον· εἰ δὲ ἐκλείποι τὸ γένος, οὕτω δὴ ἀριστίνδην καθίστα- σθαι Ἰνδοῖσι βασιλέας.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 48

Ἡρακλέα δὲ, ὄντινα ἐς Ἰνδοὺς ἀφικέσθαι λόγος κα- τέχει, παρ' αὐτοῖσιν Ἰνδοῖσι γηγενέα λέγεσθαι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 51

Τοῦ- τον τὸν Ἡρακλέα μάλιστα πρὸς Σουρασηνῶν γεραίρε- σθαι Ἰνδικοῦ ἔθνεος, ἵνα δύο πόλεις μεγάλαι Μέθορά τε καὶ Κλεισόβورا, καὶ ποταμὸς Ἰωβάρης πλωτὸς δια- ρέει τὴν

3.17. MEGASTHENES

χώρην αὐτῶν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 55

Τὴν σκευὴν δὲ οὗτος ὁ Ἡρα- κλῆς ἦντινα ἐφόρει, <Μεγασθένης> λέγει ὅτι ὁμοίην τῷ Θηβαίῳ Ἡρακλεῖ, ὡς αὐτοὶ Ἰνδοὶ ἀπηγέονται· καὶ τούτῳ ἄρσενας μὲν παῖδας πολλοὺς κάρτα γενέσθαι ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, (πολλῇσι γὰρ δὴ γυναιξὶν ἐς γάμον ἐλ- θεῖν καὶ τοῦτον τὸν Ἡρακλέα,) θυγατέρα δὲ μουνό- γενέν· οὐνομα δὲ εἶναι τῇ παιδί Πανδαίην, καὶ τὴν χώραν ἵνα τε ἐγένετο καὶ ἥστινος ἐπέτρεψεν αὐτὴν ἄρ- χεῖν Ἡρακλῆς, Πανδαίην, τῆς παιδὸς ἐπώνυμον· καὶ ταύτη ἐλέφαντας μὲν γενέσθαι ἐκ τοῦ πατρὸς ἐς πεν- τακοσίους, ἵππων δὲ ἐς τετρακισχίλιν, πεζῶν δὲ ἐς τὰς τρεῖς καὶ δέκα μυριάδας.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 64

Καὶ τάδε μετεξέτεροι Ἰνδῶν περὶ Ἡρακλέος λέγουσιν· ἐπελθόντα αὐτὸν πᾶσαν γῆν καὶ θάλασσαν καὶ καθήραντα ὅ τι περ κακὸν κίναδος, ἐξευρεῖν ἐν τῇ θαλάσῃ κόσμον γυναικῆϊον· [ὄντινα καὶ εἰς τοῦτο ἔτι οἱ τε ἐξ Ἰνδῶν τῆς χώρας τὰ ἀγώγιμα παρ' ἡμέας ἀγινέοντες σπουδῇ ὠνεόμενοι ἐκκομίζουσι· καὶ Ἑλλήνων δὲ πάλαι καὶ Ῥωμαίων νῦν ὅσοι πολυ- κτέανοι καὶ εὐδαί- μονες, μέζονι ἔτι σπουδῇ ὠνεούνται·] τὸν μαργαρίτην δὴ τὸν θαλάσσιον, οὕτω τῇ Ἰνδῶν γλώσσῃ καλεόμενον· τὸν γὰρ Ἡρακλέα, ὡς καλὸν οἱ

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 75

περὶ Ἡρακλέος λέγουσιν· ἐπελθόντα αὐτὸν πᾶσαν γῆν καὶ θάλασσαν καὶ καθήραντα ὅ τι περ κακὸν κίναδος, ἐξευρεῖν ἐν τῇ θαλάσῃ κόσμον γυναικῆϊον· [ὄντινα καὶ εἰς τοῦτο ἔτι οἱ τε ἐξ Ἰνδῶν τῆς χώρας τὰ ἀγώγιμα παρ' ἡμέας ἀγινέοντες σπουδῇ ὠνεόμενοι ἐκκομίζουσι· καὶ Ἑλλήνων δὲ πάλαι καὶ Ῥωμαίων νῦν ὅσοι πολυ- κτέανοι καὶ εὐδαίμονες, μέζονι ἔτι σπουδῇ ὠνεούνται·] τὸν μαργαρίτην δὴ τὸν θαλάσσιον, οὕτω τῇ Ἰνδῶν γλώσσῃ καλεόμενον· τὸν γὰρ Ἡρακλέα, ὡς καλὸν οἱ ἐφάνη τὸ φόρημα, ἐκ πάσης τῆς θαλάσσης ἐς τὴν Ἰν- δῶν γῆν συναγι- νέειν τὸν μαργαρίτην δὴ τοῦτον, τῇ θυ- γατρὶ τῇ ἑωυτοῦ εἶναι κόσμον.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 87

Καὶ εἶναι γὰρ καὶ παρ' Ἰνδοῖσι τὸν μαργαρίτην τριστάσιον κατὰ τιμὴν πρὸς χρυσίον τὸ ἄπεφθον, καὶ τοῦτο ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ ὄρυς- σόμενον.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 94

Καὶ ὑπὲρ τούτου λεγό- μενον λόγον εἶναι παρ' Ἰνδοῖσιν· Ἡρακλέα, ὀφιγόνου οἱ γενομένης τῆς παιδὸς, ἐπεὶ τε δὴ ἐγγὺς ἔμαθεν ἑωυτῷ εὐῶσαν τὴν τελευτήν, οὐκ ἔχοντα ὅτεω ἀνδρὶ ἐκδῶ τὴν παιδα ἑωυτοῦ ἐπαΐω, αὐτὸν μιγῆναι τῇ παιδί ἐπτατέτῃ εὐούσῃ, ὡς γένος ἐξ οὗ τε κακείνης ὑπολείπεσθαι Ἰνδῶν βασιλέας.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 119

Ἀπὸ μὲν δὴ Διονύσου βασιλέας ἡρίθμεον Ἰνδοὶ ἐς Σανδράκοττον τρεῖς καὶ πεντήκοντα καὶ ἑκατόν· ἔτεα δὲ δύο καὶ τεσσαράκοντα καὶ ἑξακισχίλια· ἐν δὲ τού- τοις τρεῖς τὸ πᾶν εἰς ἐλευ- θερίην ** τὴν δὲ καὶ ἐς τριη- κόσια· τὴν δὲ εἰκοσί τε ἐτέων καὶ ἑκατόν (*)· πρεσβύ- τερόν τε Διόνυσον Ἡρακλέος δέκα καὶ πέντε γενεῇ- σιν Ἰνδοὶ λέγουσιν· ἄλλον δὲ οὐδένα ἐμβαλεῖν ἐς γῆν

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

τὴν Ἰνδῶν ἐπὶ πολέμῳ, οὐδὲ Κῦρον τὸν Καμβύσεω, καί- τοι ἐπὶ Σκύθας ἐλάσαντα καὶ τᾶλλα πολυπραγμονέστα- τον δὴ τῶν κατὰ τὴν Ἀσίην βασιλέων γενόμενον τὸν

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 23, line 132

Οὐ μὲν δὴ οὐδὲ Ἰνδῶν τινα ἔξω τῆς οἰκῆς σταλῆναι ἐπὶ πολέμῳ διὰ δικαιοσύνην.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 26, line 2

Arrian. Ind. c. 10: Λέγεται δὲ καὶ τάδε, μνημῆια ὅτι Ἰνδοὶ τοῖς τελευτήσασιν οὐ ποιεῖουσιν, ἀλλὰ τὰς ἀρε- τὰς γὰρ τῶν ἀνδρῶν ἱκανὰς ἐς μνήμην τίθενται τοῖσιν ἀποθανοῦσι, καὶ τὰς ψυχὰς αὐτοῖσιν ἐπᾶδονται.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 26, line 6

(2) Πο- λίων δὲ ἀριθμὸν οὐκ εἶναι ἂν ἀτρεκές ἀναγράψαι τῶν Ἰνδικῶν ὑπὸ πλήθους· ἀλλὰ γὰρ ὅσαι παραποτάμια αὐ- τέων ἢ παραθαλάσσια, ταύτας μὲν ξυλίνας ποιεῖσθαι· (3) οὐ γὰρ εἶναι ἐκ πλίνθου ποιεομένης διαρκέσαι ἐπὶ χρόνον τοῦ τε ὕδατος ἕνεκα τοῦ ἐξ οὐρανοῦ, καὶ ὅτι οἱ ποταμοὶ αὐτοῖσιν ὑπερβάλλοντες ὑπὲρ τὰς ὀχθὰς ἐμπί- πλᾶσι τοῦ ὕδατος τὰ πεδία.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 26, line 14

(4) Ὅσαι δὲ ἐν ὑπερδε- ξίοισι τε καὶ μετεώροισι τόποισι καὶ τούτοισιν ὑψηλοῖσιν, ὠκισμέναι εἰσὶ, ταύτας δὲ ἐκ πλίνθου τε καὶ πηλοῦ ποιεῖσθαι· (5) μεγίστην δὲ πόλιν ἐν Ἰνδοῖσιν εἶναι Παλίμ- βοθρα καλεομένην, ἐν τῇ Πρασίων γῇ, ἵνα αἱ συμβολαὶ εἰσι τοῦ τε Ἐρανοβόα ποταμοῦ καὶ τοῦ Γάγγεως· τοῦ μὲν Γάγγεω, τοῦ μεγίστου ποταμῶν· ὁ δὲ Ἐρανοβόας τρίτος μὲν ἂν εἴη τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν, μέζων δὲ τῶν ἄλλῃ καὶ οὗτος· ἀλλὰ ξυγχωρεῖ αὐτὸς τῷ Γάγγει, ἐπει- δὴν ἐμβάλλῃ ἐς αὐτὸν τὸ ὕδωρ.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 26, line 28

(8) Εἶναι δὲ καὶ τόδε μέγα ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, πάντας Ἰνδοὺς εἶναι ἐλευθέρους, οὐδὲ τινα δούλον εἶναι Ἰνδόν· τοῦτο μὲν Λακεδαιμονίοισιν ἐς ταῦτό συμβαίνει καὶ Ἰνδοῖσι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 26, line 32

(9) Λακεδαιμονίοισι μὲν γε οἱ εἰλωτες δούλοι εἰσι καὶ τὰ δούλων ἐργάζονται· Ἰνδοῖσι δὲ οὐδὲ ἄλλος δούλός ἐστι μῆτι γε Ἰνδῶν τις.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 27, line 2

Strabo XV: Εὐτελεῖς δὲ κατὰ τὴν διαίταν οἱ Ἰνδοὶ πάντες, μᾶλλον δ' ἐν ταῖς στρατείαις· οὐδ' ὄχλῳ περιττῷ χαίρουσι· διόπερ εὐκοσμοῦσι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 27, line 46

Δούλοις δὲ οὗτος μὲν φησι μηδὲνα Ἰνδῶν χρῆσθαι· [Ὀνησίκριτος δὲ τῶν ἐν τῇ Μουσικανοῦ τοῦτ' ἴδιον ἀποφαίνει κτλ.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 28, line 2

Athenaeus IV: <Μεγασθένης ἐν τῇ δευτέρᾳ τῶν Ἰνδικῶν> τοῖς Ἰνδοῖς φησιν ἐν τῷ δείπνῳ παρατίθεσθαι ἐκάστῳ τράπεζαν, ταύτην δ' εἶ- ναι ὁμοίαν ταῖς ἐγγυθήκαις· καὶ ἐπιτίθεσθαι ἐπ' αὐτῇ τρυβλίον χρυσοῦν, εἰς ὃ ἐμβαλεῖν αὐτοὺς πρῶτον μὲν τὴν ὀρυζαν ἐφθῆν, ὥς ἂν τις ἐψῆσει χόνδρον, ἔπειτα ὅψα πολλὰ κεχειρουργημένα ταῖς Ἰνδικαῖς σκευασίαις.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 29, line 2

3.17. MEGASTHENES

Strabo II: Ἄπαντες μὲν τοίνυν οἱ περὶ τῆς Ἰνδικῆς γράψαντες ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ψευδολόγοι γεγό- νασι, καθ' ὑπερβολὴν δὲ Διήμαχος· τὰ δὲ δεύτερα λέγει Μεγασθένης· Ὀνησίκριτος δὲ καὶ Νέαρχος καὶ ἄλλοι τοιοῦτοι παραψελλίζοντες ἤδη.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 34, line 2

praeterea locustis eos ali et esse pernices.] Man- dorum nomen iis dedit Cli- tarchus et <Megasthenes>, trecentosque eorum vi- cos annumerat. Feminas septimo aetatis anno parere, senectam quadragesimo accidere. Plutarch. De fac. in luna c. 24: Τὴν μὲν γὰρ Ἰν- δικὴν ῥίζαν, ἣν φησι <Μεγα- σθένης> μῆτ' ἐσθίωντας μῆτε πίνοντας ἀλλ' ἀστόμους ὄντας ὑπο- τύφειν καὶ θυμῖαν καὶ τρέφεσθαι τῇ ὁσμῇ, πό- θεν ἂν τις ἐκεῖ φυομένην λάβοι μὴ βρεχομένης τῆς σελήνης;

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 35, line 2

E LIBRO TERTIO.

Arrian. Ind. c. 11: Νενέμηνται δὲ οἱ πάντες Ἰνδοὶ ἐς ἑπτὰ μάλιστα γενεάς· ἐν μὲν αὐτοῖσιν οἱ σο- φισταὶ εἰσι, πλήθει μὲν μείους τῶν ἄλλων, δόξῃ δὲ καὶ τιμῇ γερατώτατοι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 35, line 8

(2) Οὔτε γὰρ τι τῷ σώματι ἐργά- ζεσθαι ἀναγκαίη σφὶν προσκίεταί, οὔτε τι ἀποφέρειν ἀπ' ὅτου πονέουσιν ἐς τὸ κοινόν· οὐδὲ τι ἄλλο ἀνάγκης ἀπλῶς ἐπεῖναι τοῖσι σοφιστῇσιν, ὅτι μὴ θύειν τὰς θυσίας τοῖσι θεοῖσιν ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ τῶν Ἰνδῶν· (3) καὶ δὲ ἰδίᾳ θύει, ἐξηγητῆς αὐτῷ τῆς θυσίης τῶν τις σοφιστέων τούτων γίνεται, ὡς οὐκ ἂν ἄλλως κεχαρισμένα τοῖς θεοῖσι θύσαντας.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 35, line 12

(4) Εἰσὶ δὲ καὶ μαντικῆς οὔτοι μοῦνοι Ἰνδῶν δαήμονες, οὐδὲ ἐφεῖται ἄλλῳ μαντεύεσθαι ὅτι μὴ σοφῶ ἀνδρί.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 35, line 32

9. <Δεύτεροι> δ' ἐπὶ τούτοισιν οἱ γεωργοὶ εἰσιν· πλήθει πλεῖστοι Ἰνδῶν ἐόντες· καὶ τούτοισιν οὔτε ὅπλα ἐστὶν ἀρήια οὔτε μέλει τὰ πολέμια ἔργα, ἀλλὰ τὴν χώραν οὔτοι ἐργάζονται· καὶ τοὺς φόρους τοῖσι τε βασι- λεῦσι καὶ τῇσι πόλισιν, ὅσαι αὐτόνομοι, οὔτοι ἀποφέ- ρουσι· (10) καὶ εἰ πόλεμος ἐς ἀλλήλους τοῖσιν Ἰνδοῖσι τύχει, τῶν ἐργαζομένων τὴν γῆν οὐ θέμις σφὶν ἀπτεσθαι, οὐδὲ αὐτὴν τὴν γῆν τάμνειν· ἀλλὰ οἱ μὲν πολεμέουσι καὶ κατακαίνουσιν ἀλλήλους ὅπως τύχοιεν, οἱ δὲ πλησίον αὐτῶν κατ' ἡσυχίαν ἀροῦσιν ἢ τρυγῶσιν ἢ κλαδοῦσιν ἢ θερίζουσιν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 35, line 42

11. <Τρίτοι> δὲ εἰσιν Ἰνδοῖσιν οἱ νομέες, οἱ τε καὶ βουκόλοι, καὶ οὔτοι οὔτε κατὰ πόλιας οὔτε ἐν τῇσι κώμησιν οἰκέουσι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 35, line 55

2. <Πέμπτον> δὲ γένος ἐστὶν Ἰνδοῖσιν οἱ πολεμισταί, πλήθει μὲν δεύτερον μετὰ τοὺς γε- ωργούς, πλείστη δὲ ἐλευθερίῃ τε καὶ εὐθυμίῃ ἐπιχρεόμενον· καὶ οὔτοι ἀσκη- ταὶ μούνων τῶν πολεμικῶν ἔργων εἰσὶ.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 35, line 67

CHAPTER 3. CLASSICAL GREEK SOURCES

5. <Ἐκτοι> δέ εἰσιν Ἰνδοῖσιν οἱ ἐπίσκοποι καλεόμε- νοι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 35, line 70

Οὗτοι ἐφορῶσι τὰ γινόμενα κατὰ τε τὴν χώραν καὶ κατὰ τὰς πόλιας· καὶ ταῦτα ἀναγ-
γέλλουσι τῷ βασιλεῖ, ἵνα περ βασιλεύονται Ἰνδοί, ἢ τοῖσι τέλεσιν, ἵνα περ αὐ- τόνομοι εἰσὶ· καὶ
τούτοισιν οὐ θέμις ψεύδος ἀγγεῖλαι οὐ- δέν· οὐδέ τις Ἰνδῶν αἰτίην ἔσχε ψεύσασθαι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 36, line 2

Strabo XV: (1) <Φησί> δὴ τὸ τῶν Ἰνδῶν πλῆθος εἰς ἑπτὰ μέρη διηρῆσθαι, καὶ πρώτους
μὲν τοὺς φιλοσόφους εἶναι κατὰ τιμὴν, ἐλαχίστους δὲ κατ' ἀριθμὸν· χρῆσθαι δ' αὐτοῖς ἰδίᾳ μὲν
ἐκάστῳ τοὺς θύοντας ἢ τοὺς ἐναγίζοντας, κοινῇ δὲ τοὺς βασιλέας κατὰ τὴν μεγάλην λεγομένην
σύνοδον, καθ' ἣν τοῦ νέου ἔτους ἅπαντες οἱ φιλόσοφοι τῷ βασιλεῖ συνελθόντες ἐπὶ θύρας, ὅ τι ἂν
ἐκάστος αὐτῶν συντάξῃ τῶν χρη- σίμων, ἢ τηρήσῃ πρὸς εὐετηρίαν καρπῶν τε καὶ ζώων καὶ
περὶ πολιτείας, προφέρει τοῦτο εἰς τὸ μέσον· ὅς δ' ἂν τρεῖς ἐφευσμένος ἁλῶ, νόμος ἐστὶ σιγαῖν διὰ

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 36b, line 2

Aelianus XIII, 9: Ἴππον δὲ ἄρα Ἰνδὸν κατασχεῖν καὶ ἀνακροῦσαι προπηδῶντα καὶ ἐκθέ-
οντα οὐ παντὸς ἦν, ἀλλὰ τῶν ἐκ παιδὸς ἱππεῖαν πεπαιδευ- μένων.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 38a, line 2

Arrianus Ind. c. 13: Θηρῶσι δὲ Ἰνδοὶ τὰ μὲν ἄλλα ἄγρια θηρία, κατὰ περ καὶ Ἑλ- ληνες·
ἢ δὲ τῶν ἐλεφάντων σφὶν θήρη οὐδὲν τι ἄλλη ἔοικεν, ὅτι καὶ ταῦτα τὰ θηρία οὐδαμοῖσιν ἄλλοισι
θη- ρίοισιν ἐπέοικεν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 38a, line 66

(2) Ἀγοντες δὲ εἰς τὰς κώμας τοὺς ἀλόντας τοῦ τε χλωροῦ καλάμου καὶ τῆς ποίης τὰ
πρῶτα ἐμφαγεῖν ἔδοσαν· (3) οἱ δὲ ὑπὸ ἀθυμίας οὐκ ἐθέλουσιν οὐδὲν σιτέεσθαι, τοὺς δὲ περιστά-
μενοι οἱ Ἰνδοὶ ὠδαῖσί τε καὶ τυμπάνοις καὶ κυμβάλοισιν ἐν κύκλῳ κρούοντές τε καὶ ἐπάδοντες
κατευνάζουσι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 38a, line 94

Ταῦτα παρ' Ἰνδοῖσιν ἐστὶν αὐτοῖσιν ἱήματα.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 38b, line 1

Aelianus N. A. XII, 44: Ἐν Ἰνδοῖς ἂν ἁλῶ τέλειος ἐλέφας, ἡμερωθῆναι χαλεπός ἐστι, καὶ
τὴν ἐλευθερίαν ποθῶν φονᾷ· ἐὰν δὲ αὐτὸν καὶ δεσμοῖς διαλάβῃς, ἔτι καὶ μᾶλλον ἐς τὸν θυμὸν
ἐξάπτεται, καὶ δεσπότην οὐχ ὑπο- νέμει.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 38b, line 5

Ἀλλ' οἱ Ἰνδοὶ καὶ ταῖς τροφαῖς κολακεύουσιν αὐ- τὸν, καὶ ποικίλοις καὶ ἐφολκοῖς δελέασι
πραῦναι πει- ρῶνται, παρατιθέντες, ὥς πληροῦν τὴν γαστέρα καὶ θέλγειν τὸν θυμὸν· ὁ δὲ
ἄχθεται αὐτοῖς, καὶ ὑπερορᾷ· Τί οὖν ἐκεῖνοι κατασοφίζονται καὶ δρῶσι;

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 38c, line 2

Idem XIII, 6: Τῶν τεθηραμένων ἐλεφάντων ἰῶν- ται τὰ τραύματα οἱ Ἰνδοὶ τὸν τρόπον
τοῦτον.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 39a, line 4

3.17. MEGASTHENES

Strabo XV: Μεγασθένης δὲ περὶ τῶν μυρμήκων οὕτω φησὶν, ὅτι ἐν Δέρδαις, ἔθνη μεγάλῳ τῶν προσεφώνων καὶ ὀρεινῶν Ἰνδῶν, ὁροπέδιον εἶη τρισχιλίων πῶς τὸν κύ- κλον σταδίων· ὑποκειμέ- νων δὲ τούτῳ χρυσορυχείων, οἱ μεταλλεύοντες εἶεν μύρμηκες, θηρίων ἀλωπέκων οὐκ ἐλάττους, τάχος ὑπερφυῆς ἔχοντες, καὶ ζῶντες ἀπὸ θή- ρας.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 39b, line 9

Arrianus Ind. c. 5, 4: Μεγασθένης δὲ καὶ ἀτρεκέας εἶναι ὑπὲρ τῶν μυρμήκων τὸν λόγον ἱστορεῖ, τούτους εἶναι τοὺς τὸν χρυσὸν ὀρύσσοντας, οὐκ αὐτοῦ τοῦ χρυ- σοῦ ἕνεκα, ἀλλὰ φύσι γὰρ κατὰ τῆς γῆς ὀρύσσουσιν, ἵνα φωλεύοιεν· κατὰπερ οἱ ἡμέτεροι οἱ σμικροὶ μύρμηκες ὀλί- γον τῆς γῆς ὀρύσσουσιν· (6) ἐκείνους δὲ, εἶναι γὰρ πέκων μέζονας, πρὸς λόγον τοῦ μεγέθους σφῶν καὶ τὴν γῆν ὀρύσσειν· τὴν δὲ γῆν χρυσίτιν εἶναι, καὶ ἀπὸ ταύ- της γίνεσθαι Ἰνδοῖσι τὸν χρυσόν.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 41a, line 3

Clem. Alex. Strom. I: Μεγασθένης ὁ συγγραφεὺς ὁ Σελεύκῳ τῷ Νικάτορι συμβεβιωκῶς ἐν τῇ τρίτῃ τῶν Ἰνδικῶν ᾧδε γράφει· »Ἄπαντα μέντοι τὰ περὶ φύσεως εἰρημένα παρὰ τοῖς ἀρχαίοις λέγεται καὶ παρὰ τοῖς ἔξω τῆς Ἑλλάδος φιλο- σοφοῦσι, τὰ μὲν παρ' Ἰνδοῖς ὑπὸ τῶν Βραχμάνων, τὰ δὲ ἐν τῇ Συρίᾳ ὑπὸ τῶν καλουμένων Ἰουδαίων.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 41b, line 8

Clemens I. 1.: Διττὸν δὲ τούτων τὸ γένος· οἱ μὲν Σαρμᾶναι αὐτῶν, οἱ δὲ Βραχμᾶναι καλούμενοι· καὶ τῶν Σαρμανῶν οἱ Ὑλόβιοι προσαγο- ρευόμενοι οὔτε πόλεις οἰκοῦσιν οὔτε στέγας ἔχουσιν, δένδρων δὲ ἀμφιέννυνται φλοιοῖς, καὶ ἀκρόδρυα σιτοῦν- ται καὶ ὕδωρ ταῖς χερσὶ πίνουσιν· οὐ γάμον, οὐ παιδο- ποιᾶν ἴσασιν, [ὥσπερ οἱ νῦν Ἑγκρατῆται καλούμενοι, εἰσὶ δὲ τῶν Ἰνδῶν οἱ τοῖς Βούττα πειθόμενοι παραγ- γέλμασιν, ὃν δι' ὑπερβολὴν σεμνότητος ὡς θεὸν τετιμή- κασι.

Megasthenes Hist., Fragmenta Fragment 42, line 16

καὶ ὁ Κάλανος, ἀκόλαστος ἄνθρωπος, καὶ ταῖς Ἀλε- ξάνδρου τραπέζαις δεδουλωμένος· τοῦτον μὲν οὖν ψέ- γεσθαι, τὸν δὲ Μάνδανιν ἐπαινέσθαι, ὃς τῶν τοῦ Ἀλε- ξάνδρου ἀγγέλων καλούντων πρὸς τὸν Διὸς υἱόν, πειθομένῳ τε δῶρα ἔσεσθαι ὑπισχυομένων, ἀπει- θοῦντι δὲ κόλασιν· μήτε ἐκεῖνον φαίη Διὸς υἱόν, ὃς γε ἄρχει μηδὲ πολλοστοῦ μέρους τῆς γῆς· μηδὲ αὐτῷ δεῖν τῶν παρ' ἐκείνου δωρεῶν, ᾧ οὐδεὶς κόρος· μήτε δὲ ἀπειλῆς εἶναι φόβον, ᾧ ζῶντι μὲν ἀρκοῦσα εἶη τρο- φός ἢ Ἰνδική, ἀποθανόντι δὲ ἀπαλλάξαιτο τῆς σαρκὸς ἀπὸ γήρως τετρυνωμένης, μεταστὰς εἰς βελτίῳ καὶ καθαρώτερον βίον· ὥστ' ἐπαινέσαι τὸν Ἀλέξανδρον καὶ συγχωρῆσαι.

Chapter 4

Hellenistic Greek sources

Up to conquest of the eastern Mediterranean by Rome.

4.1 *Historia Alexandri Magni*

“” (From Wikipedia¹)

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta (1386: 001) “*Historia Alexandri Magni*, vol. 1”, Ed. Kroll, W. Berlin: Weidmann, 1926. Book 2, chapter 7, section 9, line 3

ὥστε καὶ σὺ μετὰπεμψαι τῆς ὅλης ἡπείρου τοὺς σατράπας· ἔστι γάρ σοι ἔθνη Περσῶν καὶ Πάρθων καὶ Ἑλυμαίων καὶ Βαβυλωνίων καὶ τῶν κατὰ τὴν Μεσοποτα- μίαν καὶ τὴν Ἰλλυρίαν χώραν, ἵνα μὴ σοι τὰ Βάκτρων καὶ τὰ Ἰνδῶν ἢ τῶν Σεμιράμεως μελάθρων εἴπω.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 2, chapter 12, section 1, line 2

Γράφει δὲ καὶ τῷ Πῶρῳ δεόμενος βοηθείας· λαβὼν δὲ ὁ Πῶρος γράφει· Πῶρος βασιλεὺς Ἰνδῶν Δαρείῳ βασιλεῖ Περσῶν χαίρειν.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 2, chapter 19, section 1, line 3

Ἦδη δὲ πάλιν ὁ Δαρεῖος ἐστέλλετο πρὸς ἑτέραν συμβολήν· καὶ γράφει Πῶρῳ ἐπιστολὴν περιέχουσαν οὕτως· [Ἐπιστολὴ Δαρείου Πῶρῳ βασιλεῖ Ἰνδῶν.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 2, chapter 22, section 17, line 2

Θύσας δὲ τοῖς ἐγχωρίοις θεοῖς καὶ ἀναλαβὼν τὴν δύναμιν μαθὼν Πῶρον συμμαχῆσοντα Δαρείῳ τὴν ὁδοιπορίαν ἐποιεῖτο πρὸς Ἰνδοὺς.

1.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 1, section 3, line 1

τί ἄρτι κάμνομεν πορευόμενοι πρὸς Ἰνδοὺς εἰς θηριώδεις τόπους μὴ προσήκοντας τῇ Ἑλλάδι;

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 2, section 1, line 1

Καὶ μεθ' ἡμέρας εἰς τοὺς τῆς Ἰνδικῆς <ὁρους> ἐγένοντο· ὑπήντησαν δὲ αὐτῷ γραμματεφόροι Πῶρου καὶ ἐπέδωκαν αὐτῷ [τὰ] γράμματα.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 2, section 2, line 1

ὁ δὲ ἀνεγίνωσκεν οὕτως· [Ἐπιστολὴ Πῶρου βασιλέως Ἰνδῶν Ἀλεξάνδρῳ.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 2, section 2, line 2

Βασιλεὺς Πῶρος Ἰνδῶν Ἀλεξάνδρῳ τῷ τὰς πόλεις λεηλατοῦντι προστάττω.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 2, section 3, line 1

ἐγὼ γὰρ ἀήττητός εἰμι, οὐ μόνον ἀνθρώπων βασιλεὺς ὢν, ἀλλὰ καὶ θεῶν· παρόντα γὰρ ὃν λέγουσι Διόνυσον ἀπῆλασαν τῇ ἰδίᾳ δυνάμει οἱ Ἰνδοί.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 2, section 9, line 1

ἔτι προθυμότερους ἡμᾶς ἐποίησας εἰς μάχην σοι ὀτρυνθῆναι, λέγων τὴν Ἑλλάδα μηδὲν ἄξιον ἔχειν τῆς Ἰνδῶν χώρας, ὑμᾶς δὲ τοὺς Ἰνδοὺς πάντα κεκτῆσθαι.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 3, section 2, line 1

Οὕτως γράψας ἐκπέμπει· Πῶρος δὲ ὠτρύνθη ἀναγνοὺς τὰ γράμματα <καὶ> συνάγει τὰ πλήθη καὶ πλείστους ἐλέφαντας καὶ ἕτερα γεναῖα θηρία, ἅτινα συνεμάχοντο τοῖς Ἰνδοῖς.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 3, section 5, line 1

Οἱ δὲ Πέρσαι μᾶλλον καταδυναστεύουσι τοὺς Ἰνδοὺς καὶ τούτους ἀπεδίωκον τοξοβολίαις καὶ ἵππομαχίαις· πολλὴ δὲ αὐτῶν γίνεται μάχη ἀναιρούντων καὶ ἀναιρουμένων.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 4, section 5, line 2

Ἦρξαντο δὲ αἱ στρατιαὶ πρὸς ἄλληλα πολεμεῖν· καὶ ὁ Ἀλέξανδρος εἶπεν· Ὅτινες Ἰνδοί, τίνι πολεμεῖτε τοῦ βασιλέως ὑμῶν ἀναιρεθέντος;

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 4, section 7, line 2

Ταῦτα εἶπεν, ὅτι οὐκ ἀνηλόγει τὸ στράτευμα αὐτοῦ πρὸς τοὺς Ἰνδοὺς.

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 4, section 8, line 1

[Ἵπετάξατο δὲ ὁ Ἀλέξανδρος καὶ τοὺς λοιποὺς τόπους τῆς Ἰνδικῆς βασιλείας, ἐχειρώσατο δὲ καὶ τοὺς ὑπὸ Πανσανίαν Ἰνδοὺς.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 4, section 10, line 4

ἐκελεύσατο κατασκευασθῆναι πασσάλους σιδηροῦς καὶ τούτους ἐμπαγῆναι εἰς τοὺς κρημνοὺς, δι' ὧν ἀναβαίνοντες οἱ Μακεδόνες † ὠχυρωμένοι τοῖς ὑπερμαχο- μένοις Ἰνδοῖς ἴσχυσαν καταλαβέσθαι τὴν πέτραν.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 4, section 12, line 3

ἐνθεν <δέ> τις καταμάθη τὴν εὐτολμίαν μάλιστα αὐτοῦ, ἣν πόλις τῆς Ἰνδικῆς, εἰς ἣν πολλοὶ πεφευγότες ἐκ τῶν ἄλλων πόλεων ἐληλύθεισαν ὡς ἂν μεγίστην καὶ ὠχυρωτάτην.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 17, section 2, line 2

τὸ συμβεβηκὸς ἡμῖν παρὰ- δοξον ἐπὶ τῆς Ἰνδικῆς χώρας ἀναγκαῖον ἐξειπεῖν.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 17, section 2, line 3

παραγενομένων γὰρ ἡμῶν εἰς τὴν Πρασιακὴν πόλιν, ἥτις ἐδόκει μητρόπολις εἶναι τῆς Ἰνδικῆς χώρας, κατελάβομεν παρ' αὐτὴν ἐναργὲς ἀκρωτήριον τῆς θαλάσσης.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 17, section 26, line 1

γενομένου δὲ <τούτου> καί μου τὰ περίξ κατὰ φύσιν οἰκονο- μήσαντος καὶ τῶν Ἰνδῶν προθύμως συνελθόντων ἔλεγόν μοι· 'Βασιλεῦ Ἀλέξανδρε, λήψη πόλεις καὶ βασιλείας καὶ ὄρη καὶ ἔθνη, εἰς ἃ οὐδεὶς τῶν ζώντων ἐπέβη <ποτὲ βασιλεύς>.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 17, section 33, line 2

καὶ προσκαλοῦμαι ἐκ τῶν συνακολουθησάντων μοι Ἰνδῶν, ἵνα ἐρμηνείας τύχω παρ' αὐτῶν.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 17, section 33, line 4

.. ἅμα τῷ δῦναι τὸν ἥλιον φωνὴ ἠνέχθη Ἰνδικὴ ἐκ τοῦ δένδρου, ἣ ἐρμηνεύθη μοι ὑπὸ τῶν Ἰνδῶν τῶν ὄντων σὺν ἡμῖν.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 17, section 34, line 2

καὶ φοβούμενοι οὐκ ἤθελον μεθερμηνεῦσαι· σύννοος ἐγενάμην καὶ εἵλκυσα αὐτοὺς κατὰ μόνας, καὶ εἶπον τοῦτο οἱ Ἰνδοί· 'Ταχὺ ἀπολέσθαι ἔχεις ὑπὸ τῶν ἰδίων.

Historia Alexandri Magni, Recensio *α* sive Recensio vetusta Book 3, chapter 17, section 38, line 5

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

.. περιλύπου δέ μου διακειμένου καὶ λίαν δυσφοροῦντος ὃ τε Παρμενίων καὶ ὁ Φίλιππος παρεκάλουν με περὶ τὸν ὕπνον γενέσθαι· μὴ βουληθέντος δέ μου ἀναστὰς ὤρθρισα <καὶ> περὶ τὴν ἀνατολὴν σὺν τοῖς ἰ' φίλοις καὶ τῷ ἱερεῖ καὶ τοῖς Ἰνδοῖς πάλιν εἰς τὸ ἱερόν ἀπελθὼν καὶ διαστολὰς δούς προσελθὼν τε εἰς τὸ ἱερόν σὺν τῷ ἱερεῖ καὶ ἐπιθείς τὴν χεῖρα πρὸς τὸ δένδρον ἐπηρώτησα λέγων· Ἐὶ πεπλήρωταί μοι τὰ τῆς ζωῆς ἔτη, τοῦτο βούλομαι παρ' ὑμῶν μαθεῖν, εἰ ἀνακομισθήσομαι εἰς Μακεδονίαν καὶ ἀσπάζομαι τὴν μητέρα μου καὶ τὴν γυναῖκα, καὶ τότε † ἀπαναλῦσαι.

Historia Alexandri Magni, Recensio α sive Recensio vetusta Book 3, chapter 22, section 12, line 1

ὁ Περσολέτης, ὁ Ἰνδο-λέτης, ὁ καθελὼν τρόπαια Μήδων καὶ Πάρθων νῦν χωρὶς πολέμων καὶ στρατείας ὑποχείριος ἐγίνου Κανδάκη βασιλίσση· ὥστε γίνωσκε, Ἀλέξανδρε, ὅτι ὅστις δοκεῖ τῶν ἀνθρώπων φρονεῖν μέγα, ἄλλος μείζονα τούτου τὴν φρόνησιν σχῆ'.

Historia Alexandri Magni, Recensio α sive Recensio vetusta Book 3, chapter 25, section 3, line 2

ἐκεῖθεν δὲ εἰς τοὺς Ἰνδοὺς ἐστρατεύσαμεν καὶ εὐρόντες τοὺς † ἐπομένους αὐτῷ βασιλεῖς, ὄντας δὲ καὶ γυμνοσοφιστάς, καὶ λαβόντες φόρον παρ' αὐτῶν ἀφήκαμεν ἐπὶ τῶν ἰδίων τόπων μένειν παρακαλέσαντας ἡμᾶς καὶ ἐν εἰρήνῃ τὴν χώραν κατεστήσαμεν, ὥστε ἡδέως ἡμᾶς προσδέξασθαι καὶ θυσίαν ὑπὲρ ἡμῶν ποιῆσαι.

Historia Alexandri Magni, Recensio α sive Recensio vetusta Book 3, chapter 26, section 7, line 18

ταῦτα ἀκούσας ὁ φρενήρης Ἀλέξανδρος προνομήσας τὴν παραποταμίαν καὶ τὴν ἄλλην χώραν τῶν Ἰνδῶν καὶ οὕτω βωμοὺς κτίσας ἐμπύρους διὰ τοῦ στρατεύματος αὐτοῦ θυσίας τοῖς θεοῖς ἐτελείωσεν.

Historia Alexandri Magni, Recensio α sive Recensio vetusta Book 3, chapter 26, section 7, line 26

ἐν γὰρ τῇ τῶν Ἰνδῶν χώρᾳ δις καὶ πλεονάκις εἰς χειμῶνας εἰσπεσὼν διεσώθη· εἰς δὲ ἐκείνην τὴν χώραν ἐὰν τις εἰσελθεῖν τολμήσῃ, ἐπιφανῶν καὶ θαυμαστῶν ἔργων δόξαν λήψεται.

Historia Alexandri Magni, Recensio α sive Recensio vetusta Book 3, chapter 28, section 4, line 2

.. προσπλεύσαντες οὖν εὗρομεν πόλιν τοῦ Ἥλιου, ἧς ἦν περίμετρον σταδίων ρκ' [Ἡλιοπολίτης], πύργοι δὲ ἦσαν ἰδ' χρυσῷ καὶ σμαράγδῳ ὠκοδομημένοι· τὸ δὲ τεῖχος ἐκ λίθου Ἰνδικοῦ.

Historia Alexandri Magni, Recensio α sive Recensio vetusta Book 3, chapter 33, section 21, line 1

Ἀποδείκνυσιν βασιλεὺς Ἀλέξανδρος Ἰνδικῆς βασιλείᾳ τῆς μὲν παρατεινούσης παρὰ τῷ Ἰδάσπῃ ποταμῷ Ταξίλην, τῆς δὲ περιεχομένης ἀπὸ τοῦ Ἰδάσπου <μέχρις Ἰνδοῦ> ποταμοῦ Πῶρον, ἐπὶ δὲ Παροπανισαδῶν Ὀξυδράκην τὸν Βακτριανὸν τὸν Ῥωξάνης πατέρα τῆς Ἀλεξάνδρου γυναίκος.

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Historia Alexandri Magni, Recensio β (1386: 002) “Der griechische Alexanderroman. Rezension β”, Ed. Bergson, L. Stockholm: Almqvist & Wiksell, 1965. Book 1, section 2, line 8

εἰσὶ γὰρ οἱ ἐπερχόμενοι ἡμῖν Ἰνδοὶ καὶ Νοκυμαῖοι, Ὀξύδρακες, Ἰβηρες, Καύχωνες, Ἀέλαπες, Βόσποροι, Βασταρνοί, Ἀζανοί, Χάλυβες καὶ ὅσα ἄλλα ἐπὶ τῆς ἀνατολῆς παράκεινται ἔθνη μεγάλα, ἀναριθμήτων ἀνδρῶν στρατόπεδα ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον ἐπερχόμενα.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 2, section 7, line 29

ὥστε οὖν καὶ σύ, βασιλεῦ, <μετάπεμψαι> τοιούτους σατράπας καὶ ὅσα ἔθνη σοί ἐστι Περσῶν καὶ Πάρθων καὶ Μήδων καὶ Ἑλυμαίων καὶ Βαβυλωνίων καὶ τῶν κατὰ τὴν Μεσοποταμίαν καὶ Ἰλλύρων χώραν, ἵνα μὴ σοι λέγω τὰ Βάκτρων καὶ τὰ Ἰνδῶν ὀνόματα.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 2, section 11, line 20

ἔγραψε δὲ καὶ Πῶρῳ τῷ βασιλεῖ τῶν Ἰνδῶν δεόμενος βοηθείας τυχεῖν παρ’ αὐτοῦ.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 2, section 12, line 3

Δεξάμενος δὲ Πῶρος ὁ βασιλεὺς τὰ γράμματα Δαρείου καὶ ἀναγνούς τὰς συμφορὰς τὰς γινομένας αὐτῷ ἐλυπήθη καὶ ἀντιγράφει αὐτῷ οὕτως· “Πῶρος βασιλεὺς Ἰνδῶν βασιλεῖ Περσῶν Δαρείῳ χαίρειν.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 2, section 19, line 2

καὶ γράφει Πῶρῳ βασιλεῖ Ἰνδῶν οὕτως· “Βασιλεὺς Δαρείος βασιλεῖ Ἰνδῶν Πῶρῳ χαίρειν·

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 1, line 2

Μετὰ δὲ ταῦτα πάντα τὴν ὁδοιπορίαν ἐποιεῖτο Ἀλέξανδρος ἀναλαβὼν τὴν δύναμιν αὐτοῦ πρὸς Πῶρον βασιλέα τῶν Ἰνδῶν.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 1, line 6

τί οὖν κάμνομεν πορευόμενοι πρὸς Ἰνδοὺς εἰς θηριώδεις τόπους μὴ προσήκοντας τῇ Ἑλλάδι;

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 2, line 2

Καὶ παραγενομένου αὐτοῦ σὺν πάσῃ τῇ δυνάμει αὐτοῦ εἰς τοὺς ὄρους τῆς Ἰνδικῆς χώρας ὑπήντησαν αὐτῷ γραμματοφόροι σταλέντες παρὰ Πῶρου βασι- λέως Ἰνδῶν καὶ ἐπέδωκαν αὐτῷ τὰ γράμματα Πῶρου.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 2, line 5

καὶ λαβὼν Ἀλέξανδρος ἀνέγνω ἐπὶ τῶν στρατοπέδων αὐτοῦ περιέχοντα οὕτως· “Βασιλεὺς Πῶρος Ἰνδῶν Ἀλέξανδρῳ πόλεις λεηλατοῦντι· προστάσσω σοι ἀναχωρεῖν· ἄνθρωπος γὰρ ὢν τί δύνασαι πρὸς θεόν;

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 2, line 14

εἰ γὰρ χρεῖαν εἶχομεν τῆς Ἑλλάδος, πάλαι πρὶν Ἑρξου κατεδουλωσάμεθα αὐτὴν Ἰνδοί.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 2, line 30

ἔτι μᾶλλον περισσοτέρως ἡμᾶς προθύμους ἐποίησας πρὸς μάχην σοι ὀτρυνθῆναι λέγων τὴν Ἑλλάδα μὴδὲν ἄξιον ἔχειν βασιλικῆς θεωρίας, ἀλλ’ ὑμᾶς τοὺς Ἰν- δοὺς πάντα κεκτῆσθαι καὶ χώρας τε καὶ πόλεις.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 3, line 3

Πῶρος δὲ δεξάμενος τὰ γράμματα Ἀλέξανδρου καὶ ἀναγνοὺς ὠτρύνθη σφόδρα καὶ εὐθέως
συνήγαγε τὰ πλήθη τῶν βαρβάρων καὶ ἐλέφαντας καὶ ἕτερα πολλὰ θηρία, ἅτινα συνεμά-
χοντο τοῖς Ἰνδοῖς.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 3, line 8

οἱ δὲ Ἰνδοὶ τοῦτον θεασάμενοι εὐθέως παρέστησαν αὐτὸν Πῶρῳ τῷ βασιλεῖ.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 3, line 24

οἱ δὲ Πέρσαι κατεδυνάστευον τοὺς Ἰν-
δοὺς καὶ τούτους ἐπεδίωκον τοξοβολίαις καὶ ἵππομα-
χίαις.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 4, line 12

ὁ δὲ Ἀλέξανδρος κυλλάνας τοὺς πόδας [Πῶρου] ἐμπηδᾷ εἰς αὐτὸν καὶ ἐντίθησι τὸ ξίφος
αὐτοῦ εἰς τὰς λαγόνας αὐτοῦ, καὶ παραυτίκα ἀναιρεῖ Πῶρον τὸν βασιλέα Ἰνδῶν.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 4, line 14

ὁ οὖν Ἀλέξανδρος λέγει πρὸς τοὺς Ἰνδοὺς· “τάλαντες Ἰνδοί, τίνα πολεμεῖτε τοῦ βασιλέως
ὡμῶν ἀναιρεθέντος;

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 4, line 19

ταῦτα δὲ εἶπεν εἰδὼς ὅτι οὐκ ἀναλογεῖ τὸ στρατόπεδον αὐτοῦ πρὸς τὸ τῶν Ἰνδῶν μάχεσθαι.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 17, line 3

Καὶ τούτου γενομένου ὑπεχώρησεν ἀπ’ αὐτῶν ὁ Ἀλέξανδρος ὑποστρέψας εἰς τὴν κατὰ φύσιν
ὁδὸν τὴν φέρουσαν εἰς τὴν Πρασιακὴν πόλιν, ἣτις δοκεῖ μητρό-
πολις εἶναι τῆς Ἰνδικῆς χώρας,
ἐνθα Πῶρος ἦν βασιλεύων.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 17, line 5

καὶ πάντα κατὰ φύσιν διοικονομήσαντος καὶ τῶν Ἰνδῶν προθύμως συνελθόντων ἐλεγόν
τινες ἐξ αὐτῶν τῷ Ἀλέξανδρῳ· “μέγιστε βασιλεῦ, λήψῃ πόλεις θαυμαστάς καὶ βασιλείας καὶ
ὄρη, εἰς ἃ οὐδεὶς τῶν ζώντων ἐπέβη ποτὲ βασιλεύς.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 17, line 28

προσκαλεῖται οὖν ἐκ τῶν συνακολουθησάντων αὐτῷ Ἰνδῶν, ἵνα ἐρμηνείας τύχῃ παρ’ αὐτῶν.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 17, line 31

Ἐγένετο δὲ ἅμα τῷ δύναι τὸν ἥλιον, φωνὴ ἠνέχθη Ἰνδικὴ ἀπὸ τοῦ δένδρου.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 17, line 32

οἱ δὲ συνόντες αὐτῷ Ἰνδοὶ φοβούμενοι οὐκ ἠθέλησαν μεθερμηνεῦσαι.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 17, line 44

περίλυπος δὲ γενόμενος Ἀλέξανδρος ἀναστὰς ὄρθρου σὺν τοῖς ἱερεῦσι καὶ τοῖς φίλοις αὐτοῦ
καὶ τοῖς Ἰνδοῖς πάλιν εἰς τὸ ἱερὸν εἰσῆλθεν.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 17, line 53

καὶ ἐξελθὼν ἐκεῖθεν ἐκίνησεν ἀναχωρῶν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς, καὶ παραγίνεται ἐν Περσίδι.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 22, line 31

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

ὁ Περσολέτης, ὁ Ἰνδολέτης, ὁ καθελὼν τρόπαια Μήδων καὶ Πάρθων καὶ ὅλην τὴν ἀνατολὴν καταβαλὼν νῦν χωρὶς πολέμου καὶ στρατιᾶς ὑποχείριος γέγονας Κανδάκης.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 22, line 43

ἐὰν γὰρ γνώσωσί σε ὄντα Ἀλέξανδρον, ἀναιροῦσί σε εὐθέως, ὅτι σὺ Πῶρον τὸν βασιλέα Ἰνδῶν ἀνῆρσας.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 25, line 6

τὴν μὲν πρὸς Δαρεῖον μάχην οἶμαι ὑμᾶς ἀκηκοέναι, ἐκεῖθεν δὲ εἰς τοὺς Ἰνδοὺς ἐπεστρατεύσαμεν καὶ ἡττήσαμεν τοὺς ἡγουμένους αὐτῶν καὶ κατεδουλώσαμεν αὐτοὺς διὰ τῆς ἄνω προνοίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio β Book 3, section 28, line 11

τὸ δὲ τεῖχος τῆς πόλεως ἐκείνης Ἰνδικὸν ἦν.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 1) (1386: 003) “Der griechische Alexanderroman. Rezension γ. Buch I”, Ed. von Lauenstein, U. Meisenheim am Glan: Hain, 1962; Beiträge zur klassischen Philologie 4. Section 2, line 11

εἰσὶ γὰρ οἱ ἐπερχόμενοι ἡμῖν· Ἰνδοὶ καὶ Νοκημαῖοι Ὀξύδρακες Ἰβηροὶ Καύχονες Ἀέλαπες Βοσπορηνοὶ Βαστρανοὶ Ἀξανοὶ Χάλυβες καὶ ὅσα ἄλλα ἐπὶ τῆς ἀνατολῆς παρὰκείται ἔθνη.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 2) (1386: 004) “Der griechische Alexanderroman. Rezension γ. Buch II”, Ed. Engelmann, H. Meisenheim am Glan: Hain, 1963; Beiträge zur klassischen Philologie 12. Section 11, line 21

ἔγραψε δὲ καὶ ἐπιστολὴν πρὸς Πῶρον, βασιλέα τῶν Ἰνδῶν, περιέχουσαν οὕτως· τῷ ἐν θεοῖς θεῷ μεγάλῳ βασιλεῖ Πῶρῳ χαίρειν Δαρεῖος ὁ δυστυχής· τὰ περὶ τῶν ἡμετέρων δυστυχημάτων καὶ γράφειν ἀδύνατον· οἶμαι δὲ σὲ τὸν ἐμὸν δεσπότην ἀκηκοέναι τῶν πολλῶν ὀλίγα, ὥς παῖς εἰς ἡμᾶς Μακεδόνων ἐπιβὰς ληστρικῶς καταναγκάζει μετανάστας τῶν οἰκείων γενέσθαι, τὴν δουλικὴν ἡθετηκῶς τύχην· δεσποτικῶς ἡμᾶς σπουδάζει διατεθῆναι καὶ τὴν τῆς ἐμῆς ἀρχῆς ταῖς δυσμαῖς παραπέμψαι.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 2) Section 11, line 34

ἐπίσταμαι γὰρ ἀκαταμάχητον εἶναι τὸ τῶν Ἰνδῶν στίφος· ἐπικάμφθητι δὴ μου τοῖς γράμμασιν καὶ τὴν ἐκ ψυχῆς αἵτησιν πλήρωσον καὶ τοὺς κατεπείγοντάς με Μακεδόνας ἀμύνασθαι θέλησον.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 2) Section 12, line 11

γράφει δὲ καὶ ἐπιστολὴν πρὸς Δαρεῖον περιέχουσαν οὕτως· Πῶρος βασιλεὺς Ἰνδῶν βασιλεῖ Περσῶν Δαρεῖῳ χαίρειν· ἀναγνοὺς τὰ γεγραμμένα ἡμῖν ὑπὸ σοῦ ἐλυπήθην σφόδρα καὶ ἀπορῶ θέλων σοὶ συντυχεῖν καὶ βουλεύεσθαι περὶ τῶν συμπερόντων· κωλύομαι δὲ ὑπὸ τῆς συνεχούσης με σωματικῆς νόσου· εὐθύμως οὖν διάγε, ὥς ἡμῶν συμπαρόντων σοὶ καὶ μὴ δυναμένων στέργειν τὴν ὕβριν ταύτην.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 2) Section 19, line 2

ὁ δὲ Δαρεῖος νῦν τρεπίζετο εἰς ἕτερον πόλεμον, γράφει δὲ καὶ Πῶρῳ, βασιλεῖ Ἰνδῶν, οὕτως· βασιλεὺς Δαρεῖος βασιλεῖ Ἰνδῶν Πῶρῳ χαίρειν· < > < > ἐπὶ τῇ γενομένῃ καταστροφῇ τοῦ

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

οἴκου μου ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις, ἐπεὶδὴ ἐπιβάς ὁ Μακεδὼν θηρὸς ἀγρίου τύ- χην ἔχων οὐ βούλεται τὴν μητέρα μου καὶ τὴν γυναῖκα καὶ τὰ τέκνα ἀποδοῦναι· ἐμοῦ δὲ ἐπαγγεिलाμένου καὶ θησαυροὺς καὶ ἄλλα τινὰ πλείονα παρασχεῖν αὐτῷ οὐ πείθεται.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 2) Section 35a,44, line 11

ἀλλὰ καὶ ἐν ὀλί- γῃ πορφύρα στιλβούσῃ ἐν ἱματίῳ ἐναβρύνεσθε μεγάλως, τῶν Ἰν- δῶν ὀλοπορφύρων ὄντων καὶ τῶν δούλων αὐτῶν ὀλοπόρφυρα φοροῦν- των· καὶ ὑμεῖς ἐπὶ κάλον ἡγεῖσθε τὴν πορφύραν καὶ ὀλίγη χρῆσθε.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 2) Section 35a,57, line 2

σύ δέ, βασιλεῦ Ἀλέξανδρε, τὰ ἡμέτερα φρονεῖν παραγενό- μενος εἰς Ἰνδοὺς καὶ Βραγμᾶνας ἰδὼν ἐπ' ἐρημίας οἴκησον γυμνός· ἄλλως γάρ σε οὐ δυνάμεθα ἡμεῖς δέξασθαι, ἐὰν μὴ πρῶτον τὰς ἀρχὰς ἀπορρίψῃς ἀπὸ σεαυτοῦ, ἐφ' οἷς νῦν γένηθας καὶ μέγα φρονεῖς· ἄφονται δέ σου προνοίας λόγοι, οὗσπερ πρότερον εἰρήκειν σοι· καὶ ἀγαπήσεις ἐκ καρδίας σου πάντα, ὅσα τότε ἐπήνεσας θαυμάσας· καὶ εἰ ἐμοὶ πεισθῇς καὶ ποιή- σῃς ταῦτα, οὐδεὶς ὅλως οὐκέτι πολεμήσει σε οὐδ' ἀφελέσθαι σου τίς τι δυνήσεται ποτε λοιπόν, ὧν οὐ κέκτησαι· ἐὰν γάρ ἐμοὶ πεισθῇς κατὰ κράτος καὶ ἀσφαλῶς, οὐδεὶς οὐδὲν τοῦ ὑμετέρου βίου εὐρήσει παρὰ σοι· ὕλαι γάρ σε θρέψουσιν, λοι-

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 2) Section 43, line 78

τανῶν δὲ Πῶρον τὸν τῶν Ἰνδῶν βασιλέα εὐτρεπιζόμεθα πολεμῆσαι καὶ ὅσα περὶ ἡμῶν ἡ θεία εὐδῶσειεν πρόνοια.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 2) Section 44, line 2

ἀπάρας οὖν τῶν ἐκεῖ ὥρμησεν κατὰ Ἰνδῶν· καὶ δὴ τὴν Ἡλίου καταλαβόμενος χώραν εἰσελθὼν ἐν τῇ πόλει.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) (1386: 005) “Der griechische Alexanderroman. Rezension γ. Buch III”, Ed. Parthe, F. Meisenheim am Glan: Hain, 1969; Beiträge zur klassischen Philologie 33. Section 2, line 2

τῶν ἐκεῖσε οὖν διελθόντων ἡμῶν ἄγγελοι ἤλθοσαν Πῶρου τῶν Ἰνδῶν βασιλέως πρὸς Ἀλέξαν- δρον ἐπιστολὴν κομισάμενοι περιέχουσαν οὕτως· ἐπειδὴ περ, Ἀλέξανδρε, ἡ κατὰ Δαρείου νίκη εἰς ὑπεροψίαν μείζονά σε ἐθράσυνε, καὶ κατὰ θεὸν ἦρας τὸ δόρυ σου, ἀπεί- ρως ἔχων ὅση παρ' ἐμοὶ δύναμις καὶ ὅτι τῷ θυμῷ τῷ ἐμῷ οὐχ ὑποστήσεται ἡ ὑπὸ οὐρανόν· σύ γὰρ ἄνθρωπος ὧν τί δύνα- σαι πρὸς θεόν;

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 2, line 20

εἰ γὰρ χρεῖαν εἶχομεν τῆς Ἑλλάδος, πάλαι <ἀν> πρὶν Ξέρξου κατεδουλωσάμεθα αὐτὴν οἱ Ἰνδοί.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 3

Πῶρος δεξάμενος τὰ γράμματα Ἀλεξάνδρου καὶ ἀναγνούς ὡτρύνθη σφόδρα καὶ εὐθέως συνήγαγε τὰ πλήθη τῶν βαρβάρων καὶ ἐλέφαντας καὶ ἕτερα πολλὰ θηρία, ἅτινα τοῖς Ἰνδοῖς συνεμάχοντο.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 8

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

τί οὖν κάμνομεν εἰς Ἰνδοὺς εἰς θηριώδεις τόπους, μὴ προσήκοντας τῇ Ἑλλάδι;

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 21

τοῦτο μέντοι ὑμᾶς ὑπομνήσω, ὥς ὅτι κακείνους τοὺς πολέμους ἐγὼ μόνος ἐνίκησα· καὶ ὅσους βούλομαι λαβεῖν τῶν Ἰνδῶν, πάλιν ἐγὼ μόνος νικήσω· ἐμοῦ γὰρ ἐν βούλημα πρὸς τὸν πόλεμον τὰς ψυχὰς πάντων ἐθάρσυνε ἥδη ἀδρανοῦντας πρὸς τὰ Δαρείου πλήθη.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 34

εἰς τοὺς ὄρους τῆς Ἰνδικῆς χώρας ὥς δὲ ἦλθον ἐγγύς οἱ Μακεδόνες καὶ Πέρσαι, ἰδὼν Ἀλέξανδρος τὴν παράταξιν Πώρου ἐφοβήθη οὐ τοὺς ὄχλους, ἀλλὰ τοὺς θήρας· θεωρήσας γὰρ τὸ ξένον τῶν θηρίων ἐθαύμασεν· ἀνθρώποις γὰρ εἶχεν ἔθος μάχεσθαι καὶ οὐ θηρίοις.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 41

οἱ δὲ Ἰνδοὶ τοῦτον θεασάμενοι εὐθέως παρέστησαν αὐτὸν Πῶρῳ τῷ βασιλεῖ.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 62

ὥς δὲ τὸν πόλεμον συνεκρότησαν, γενναίως ἀντίκεινται Πέρσαι καὶ Μακεδόνες τῷ Ἰνδικῷ στρατεύματι· καὶ τούτους ἐπέδιδικον τοξοβολίαις καὶ ἵππομαχίαις.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 66

τῇ δὲ ἐπιούσῃ ἡμέρᾳ πολέμου συγκροτηθέντος ἄφνω ἐλέφαντες ἦλθον τῇ τῶν Ἰνδῶν παρατάξει ξυλίνους ἐπιφερόμενοι τείχεσι· καὶ ἐπ' αὐτοὺς ἄνδρες ἔνοπλοι ἴσταντο καὶ δόρατα ταῖς χερσὶν ἔχοντες.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 84

ναί, ναί, κτείνατε δὴ με, πάντας ἱκετεύω, εἴ γε βούλεσθε Ἰνδοῖς παραδοῦναι.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 96

† καὶ δὴ ἡμέρας καταλαβούσης τὸ Ἰνδικὸν εἰς μάχην ἐξῆι στρατόπεδον· εἰς ἐλέφαντας δέ, ὥς προεῖπον, ἐπιβεβηκότες δίκην περιπατοῦσαι πόλεις ἐφαίνοντο τοῖς τείχεσι κατωχυ- ρωμέναι.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 106

καὶ δειλία Ἰνδοῖς ἐκ τούτου ἐπέπεσεν.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 110

τούτων οὕτως γενομένων, ὁ πόλεμος πάλιν συνεκροτεῖτο καὶ ὑπερισχύουσιν Ἰνδοὶ τῷ στρα- τοπέδῳ Ἀλεξάνδρου.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 3, line 112

ὁ δὲ Ἀλέξανδρος ἐκεῖσε θαυμαστῶς ἐμαχήσατο, καὶ μόλις τὸ Ἰνδικὸν ἠδυνήθη ἀποστρέψαι στῖφος, ὥστε παρ' Ἰνδῶν κυκλωθέντα μόλις ἢ πρόνοια τῷ Βουκεφάλῳ ἵππῳ ἐπιβάντα διέσωσε.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 4, line 23

ὥς δὲ κύριος Ἀλέξανδρος καὶ Ἰνδοῖς ἐγγεγόνει, τὸ σκυθρωπὸν Μακεδόνων ἑαδίως ἐθεράπευσεν καὶ ἀμνήμων ἦν τῶν ἐναγῶν βουλευμάτων.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 17, line 3

ἔδοξεν οὖν αὐτῷ τὸ καταβόρειον μέρος ὑπεξελθεῖν καὶ τὴν ὁδὸν τὴν φέρουσιν εἰς τὴν Πρα- σιακὴν, ἥτις δοκεῖ μητροπόλις εἶναι τῆς Ἰνδικῆς χώρας, ἐνθα ἦν Πῶρος βασιλεύων.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 17, line 5

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

καὶ πάντα κατὰ φύσιν διοικονομήσαντος καὶ τῶν Ἰνδῶν προθύμως συν- ελθόντων, ἔλεγόν τινες τῷ Ἀλεξάνδρῳ· “μέγιστε βασιλεῦ, λήψει πόλεις θαυμαστάς καὶ βασιλείας καὶ ὄρη, εἰς ἃ οὐδεὶς τῶν ζώντων ἐπέβη ποτὲ βασιλεύς.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 17, line 37

συνῆλθον δὲ τῷ Ἀλεξάνδρῳ ἄνδρες ἱκανοί, καὶ κελεύει καθοπτεῦσαι τὸν τόπον κύκλῳ· προσ- καλεῖται οὖν ἐκ συνακολουθησάντων αὐτῷ Ἰνδῶν, ἵνα ἐρμηνείας τύχῃ παρ’ αὐτῶν.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 17, line 40

ἐγένετο ἅμα τὸ δῦναι τὸν ἥλιον, φωνὴ ἠνέχθη Ἰνδικὴ ἀπὸ τοῦ δένδρου.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 17, line 41

οἱ δὲ συνόντες αὐτῷ Ἰνδοὶ φοβούμενοι οὐκ ἠθέ- λησαν μεθερμηνεύσαι.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 17, line 46

οἱ δὲ εἶπον· “Ἀλέξανδρε βασιλεῦ, ἐν τάχει ἀπολέσθαι ἔχεις ἀπὸ τῶν † Ἰνδῶν †.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 17, line 58

περίλυπος δὲ γενόμενος Ἀλέξανδρος ἀναστὰς ὄρθρου σὺν τοῖς ἱερεῦσιν καὶ φίλοις αὐτοῦ <καὶ> τοῖς Ἰν- δοῖς πάλιν εἰς τὸ ἱερόν εἰσῆλθε καὶ προσευξάμενος προσῆλθε σὺν τῷ ἱερεῖ.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 17, line 67

ταῦτα ἀκούσας περίλυπος σφόδρα γέγονε· καὶ ἐξελθὼν ἐκεῖθεν ἐκίνησεν ἀναχωρῶν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 20, line 2

ταῦτα δὲ ἀκούσας Ἀντίοχος ἐξῆλθε παραλαβὼν τὸν Κανδάβλην καὶ χιλιάδας ἑκατὸν ἀπὸ τε Περσῶν, Ἰνδῶν καὶ Μακεδόνων καὶ ὥρμησεν ἐπὶ Εὐαγρίδην.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 22, line 41

ὁ Περσολέτης, ὁ Ἰνδολέτης, ὁ καθελὼν τρόπῳ Μήδους καὶ Πάρθους καὶ ὅλην τὴν ἀνατολὴν καταλαβὼν, νῦν χωρὶς πολέμου καὶ στρατιᾶς ὑποχείριος γέγονας Κανδάκης· ὥστε νῦν γίνω- σκε, Ἀλέξανδρε, ὅτι ὅστις δοκεῖ τῶν ἀνθρώ- πων ὑπερφρονεῖν μέγα, καὶ ἄλλος μείζονα τούτου φρονήσει.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 25, line 6

ἐκεῖθεν δὲ εἰς τοὺς Ἰνδοὺς ἐπεστρατεύσαμεν καὶ ἡττήσαμεν τοὺς ἡγουμένους αὐτῶν· καὶ κατεδουλωσάμεθα αὐτοὺς διὰ τῆς ἄνω προνοίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 28, line 9

ἀπὸ δὲ τοῦ ποταμοῦ ἐκείνου ἀποπλεύσαντες ἤλθομεν εἰς νησὶν τινα μεγάλην· καὶ εὗρομεν ἐκεῖ πόλιν τὴν τοῦ Ἥλιου καλουμένην, ἐν ἣ πύργοι ἦσαν δώδεκα ἀπὸ χρυσοῦ καὶ σμαράγδων ὠκοδομημένοι· τὸ δὲ τεῖχος τῆς πόλεως ἐκείνης Ἰνδικὸν ἦν· ἐν μέσῳ δὲ ταύτης ἦν βωμὸς χρυσοῦ καὶ σμαράγδῳ ὠκοδομημένος ἔχων ἀναβαθμοὺς ἑπτὰ· ἐπάνω δὲ ἴστατο ἄρμα ἵππων καὶ ὁ ἵππηλάτης ἐκ χρυσοῦ καὶ σμαράγδου ὠκοδομημένα· τὸ δὲ τεῖχος αὐτῆς ὑψηλόν.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 30aC, line 9

ἐδόκει δέ μοι περὶ τῆς ἄνω προνοίας βελτίον δηλῶσαι σε, καὶ τὰ ἐμοὶ συμβάντα ἐν ταύτῃ ἀνάγνωθι τῇ ἐπιστολῇ· καθὼς γὰρ πρῶτόν σοι εἶπον, ὅτι εἰς τὴν Ἰνδίαν παραγενό- μενοι ἐν

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

τρισι συμβολαῖς τοὺς Ἰνδοὺς ἐπολεμήσαμεν, τὸ δὲ τελευταῖον μετὰ Πῶρου τοῦ βασιλέως μονομαχήσας τοῦτον ἀπέκτεινα καὶ πᾶσαν τὴν Ἰνδίαν παραλαβὼν καὶ ὁμόνοιαν Μακεδόσιν καὶ Πέρσαις καὶ Ἰνδοῖς ποιησάμενος τοὺς πάντας ἀνέλαβον.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 33, line 13

ἀνθυποστραφεῖς δὲ Πῶρον ἀπέκτεινα τὸν τῶν Ἰνδῶν βασιλέα.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 33C, line 60

εἴθ' οὕτως διανέμει τὴν ἀρχὴν ὁ Ἀλέξανδρος τοῖς ἑαυτοῦ ἄρχουσι, ἤγουν Σελεύκῳ, Πτολεμαίῳ τῷ Φιλίππῳ, Ἀντιόχῳ, Φίλῳ τῷ Βύζῃ· Σέλευκον μὲν Πέρσαις καὶ Ἰνδοῖς βασιλεύειν, Φίλιππον δὲ τὸν καὶ Πτολεμαῖον Αἴγυπτον ἄρχειν, Ἀντίοχον δὲ τὴν μέσσην γαίαν τῶν Ἀσσυρίων, Φίλωνα δὲ τὸν καὶ Βύζαντα τὴν Μακεδονικὴν διέπειν ἀρχήν, τὰ περὶ Ὀλυμπίადος πλείστα παραινέσας αὐτῷ.

Historia Alexandri Magni, Recensio γ (lib. 3) Section 35, line 36

ονας, Κανζότας, Κανζήτας, Ῥυσπηρήτας, Χαρουρίτας, Ὀφιομάγους, Ὀφίοποδας, Ἐλεφαντινόποδας, Σκηβρυότας, Ἐξαμάρους, Λογγιβάρδους, Λεβεσεντιανούς, Ἐβρίδας, Δερματησίους, Ἀβάσγους, Ἀρμενίους, Ῥουσίους, Ὀχλους, Σαρακηνοὺς, Σύρους, Ἀλανοὺς, Ἐβρεπάους, Ἐβρεξάους, Ἐξαχείρους, Ἐξαστίχους, Λωροπόδους, Ὑποφαλαγγίους, Πρίσκους, Λακοὺς, Πολύποδας, Πατησόφους, Λέβεις, Λυκοκρά- νους, Κυοκεφάλους (sic), Λοκομίτας, Ὀστρικούς, Πανζήτας, Δελεήμας, Σανδαλεῖς, Κανσάδεις, Κασανδριώτας, Αἰγιώτας, Ὑποβιώτας, Ὑποβοτίους, Ἰνδοὺς, Σινδιανούς, Σουγδάους, Βαρμαίους, Αἰγυπτίους <σὺν> τοῖς κατοικοῦσιν τοῖς σκοτεινοῖς τόποις, Ἐβραίους, Θρυμβήτας, Κούσκους, Χα- ζάρους, Βουλγάρους, Χουνάβους, Πίνσας, Αἰθίοπας καὶ Ῥωμαίους τοὺς νικητόρας στρατιώτας.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε (1386: 006) "Anonymi Byzantini vita Alexandri regis Macedonum", Ed. Trumpf, J. Stuttgart: Teubner, 1974. Chapter 17, section 4, line 2

Δαρεῖος δὲ μετ' ὀλίγων ἱππέων φυγῶν διασώζεται καὶ γράψας ἐπιστολὴν πρὸς Πῶρον τὸν τῶν Ἰνδῶν βασιλέα, ὃς ἦν αὐτῷ προσφιλής, περιέχουσαν τάδε· Τῷ ἐν θεοῖς θεῷ μεγάλῳ βασιλεῖ Πῶρι Δαρεῖος ὁ δυστυ- χής χαίρειν.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 17, section 4, line 18

ἐπίσταμαι γὰρ ἀκαταμάχητον εἶναι τὸ τῶν Ἰνδῶν στῖφος ὡς καὶ σε ἴσα θεοῖς ὄντα πάντα τὰ δοκούμενα δυνατά.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 17, section 6, line 2

μαθὼν δὲ τὴν τῶν Ἰνδῶν ἔλευσιν Δαρεῖος ὀλίγον τι ἀνέθορε καὶ πρὸς ἐλπίδα ἦλθε.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 17, section 6, line 6

καὶ δὴ τῶν Ἰνδῶν ἐν Περσίδα φθασάντων καὶ τῶν ἀμφοτέρων λαῶν εἰς ἐνόητα γενομένων καὶ εἰς πλήθη ἄπειρα γεγονότα ὥρμησαν κατὰ Ἀλεξάνδρου.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 17, section 7, line 1

Οἱ δὲ τῶν Ἰνδῶν στρατηγοὶ ἀποστέλλουσι <τινας> κα- τασκοπεῦσαι Ἀλέξανδρον, οἵτινες παρὰ τῶν ἔξω βιγλῶν ἐκρα- τήθησαν.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 17, section 7, line 20

οἱ δὲ τὴν φάλαγγα φυλάσσοντες Μακεδόνες φασὶ τοῖς κατασκόποις· Ἰδοὺ καὶ τὸ Μακεδονικὸν ληστήριον· εἰ οὐκ αὐτάρκες τῷ Ἰνδικῷ καὶ Περσικῷ μάχεσθαι στρατοπέ- δω, ἰδοὺ τὰς φάλαγγας ἡμῶν βλέπετε.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 18, section 1, line 7

φόβος δὲ καὶ τρόμος πᾶσιν ἐγένετο Πέρσαις ὁμοῦ καὶ Ἰν- δοῖς, ἰδρῶτες δὲ περὶ αὐτοὺς ἐγένοντο.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 18, section 5, line 3

Ἀκούσας δὲ ταῦτα κελεύει Σέλευκον τὸν στρατηγὸν αὐτοῦ ἀπελθόντα πρὸς τὸ Περσικὸν στράτευμα, εἰπὼν αὐτῷ· Τοὺς Ἰνδοὺς ἀπόστειλον ἀπελθεῖν εἰς τὰ ἴδια ἀφαιρεθέντων τῶν ἰδίων ὅπλων.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 32, section 4, line 4

ἀνακαλεῖταί σοι ἡ ἀνατολὴ καὶ Πῶρου τῶν Ἰνδῶν βασιλεία, ἣν νικήσεις.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 34, section 9, line 1

Τανῦν δὲ πρὸς Πῶρον τὸν τῶν Ἰνδῶν βασιλέα εὐτρεπι- ζόμεθα πολεμῆσαι, καὶ ὅσα περὶ ἡμῶν ἡ θεία εὐδῶσειε πρό- νοια.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 35, section 1, line 2

ἀπάρας τῶν ἐκεῖ ὥρμησε κατὰ Ἰνδῶν, καὶ δὴ τὴν Ἡλίου καταλαβόμενος χώραν εἰσελθὼν ἐν τῇ πό- λει, ἱερὸν ἐλέγετο ἐκεῖσε τοῦ ἡλίου εἶναι καὶ ἱερά τινα δένδρα.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 36, section 4, line 2

Ὡς δὲ τὸν πόλεμον συνεκρότησαν, γενναίως ἀντίκεινται Πέρσαι καὶ Μακεδόνες τῷ Ἰνδικῷ στρατεύματι.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 36, section 4, line 5

ἐπὶ τούτοις ἄφνω ἐλέφαντες ἐμφαίνονται τῇ Ἰνδῶν παρα- τάξει ξύλινα τείχη ἐπιφερόμενοι, καὶ ἐπ' αὐτῶν ἄνδρες ἑνοπλοὶ ἦσαν λίθους καὶ δόρατα ταῖς χερσὶν ἔχοντες.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 36, section 5, line 12

ναί, ναί, κτείνετε δὴ με πάντες ἰκετεύω, εἰ καὶ βούλεσθε Ἰνδοῖς παραδοῦναι.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 36, section 6, line 1

Καὶ δὴ ἡμέρας καταλαβούσης τὸ Ἰνδικὸν εἰς μάχην ἐξῆι στρατόπεδον.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 36, section 6, line 11

καὶ δειλία Ἰνδοῖς ἐκ τούτου ἐπέπεσε καί· ὧ ἡμῖν ἀπὸ τοῦδε, εἶπον, τοῦ μειρακίου, καὶ τοὺς λέοντας ἀπέ- στρεψε καὶ τοὺς ἐλέφαντας ἀπεδίωξε, ποία δὲ λοιπὸν ἐλπίς ἡμῶν;

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 36, section 6, line 15

— ἐπὶ τούτοις πάλιν πόλεμος συγκεκρότηται καὶ ὑπερις- χύουσιν Ἰνδοὶ τῆς τοῦ Ἀλεξάνδρου φάλαγγος.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 36, section 6, line 16

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

ἐκεῖ πλεῖστα Ἀλέξανδρος ἐμαχήσατο, καὶ μόλις τὸ Ἰνδικὸν ἠδυνήθη ἀπο- στρέψαι στῖφος, ὥστε καὶ παρ' Ἰνδῶν κυκλωθέντα μόλις ἢ πρόνοια τῷ Βουκεφάλῳ ἵππῳ ἐποχούμενον διεσώ- σατο.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 37, section 1, line 5

εἶπεν οὖν αὐτὸν καὶ ὑπὲρ αὐτῶν πάντως ἐτοίμως ἔχειν ἀποθανεῖν ὡς μονομαχήσοντα ἐν λόγῳ τοιῷδε· ἐπὰν τὸ Ἰνδι- κὸν ἐπελθὼν θεασάμεθα στρατόπεδον, Πῶρῳ τὰδε πρὸ τῆς συμβο- λῆς φθέγγομαι, τούτῳ ἐμφανισθεῖς πρὸς μονομαχίαν· εἰ μὲν ἐπελθὼν πατάξει με, ἔστε ὑμεῖς αὐτῷ εἰς δουλείαν, εἰ δὲ καὶ παρ' ἐμοῦ τεθνήσκει, ἔσονται ἡμῖν καὶ Ἰνδοὶ εἰς δουλείαν.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 37, section 2, line 4

ἡ δὲ Ἀλεξάνδρου παρὰ ταῖς τοιαύτης ἦν· ῥομβοειδῆς καὶ φοβερὰ ὡς οὐπώποτε ἐνεφαίνετο ὥστε καὶ λίαν ἐπ' αὐτῇ δυσχεραίνειν Ἰνδοὺς καὶ· τίς γε τοιαύτης, εἰπεῖν, περι- γενέσθαι δυνή- σεται φάλαγγος;

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 37, section 2, line 6

– καὶ δὴ πλησίον γενομένων, Ἀλέξανδρος ἐξελθὼν Ἰνδοῖς ἐξεφώνησεν· εἶπατε Πῶρῳ ἐξελθόντι μονομαχήσαι μετ' ἐμοῦ.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 37, section 2, line 12

– ὁ δὲ λόγος ἔδοξεν ἀρέσαι ἐνώπιον Ἰνδῶν καὶ Πῶρου τοῦ βασιλέως.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 41, section 1, line 2

Ταῦτα ἀκούσας ἐξῆλθε παραλαβὼν τὸν Κανδαύλην καὶ χιλιάδας ἑκατὸν ἀπὸ τῶν Περσῶν καὶ Ἰνδῶν καὶ Μακεδόνων καὶ ὥρμησεν κατὰ τοῦ Εὐαγρίδου.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 45, section 1, line 13

ἀνθυποστραφεῖς δὲ Πῶρον ἀπέκτεινα τὸν τῶν Ἰνδῶν βασιλέα, καὶ μέχρι τῆς ἐσχάτου διώδευσα θα- λάσσης ἔνθα Ἡλίου ὀνομάζεται χώρα.

Historia Alexandri Magni, Recensio ε Chapter 46, section 1, line 3

Σέλευκον μὲν Πέρσαις καὶ Ἰνδοῖς κυριεύειν, Φίλιππον δὲ Αἰ- γύπτου ἄρχειν, Ἀντίοχον δὲ τὴν μέσσην γαῖαν τῶν Ἀσσυρίων, Φίλωνα δὲ τὸν καὶ Βύζαντα τὴν Μακεδονικὴν διέπειν ἀρχήν, τὰ περὶ Ὀλυμπιάδος πλεῖστα παραινέσας αὐτῷ.

Historia Alexandri Magni, Recensio λ (lib. 3) (1386: 007) “Die Rezension λ des Pseudo-Kallisthenes”, Ed. van Thiel, H. Bonn: Habelt, 1959. Page 37, line 3

Τούτου δὲ γενομένου ὑπέστρεψεν Ἀλέξανδρος καὶ ἤρξατο τῆς ὁδοῦ τῆς φερούσης εἰς τὴν Πρασιακὴν πόλιν, ἥτις δοκεῖ εἶναι μητρόπολις τῆς <Ἰνδικῆς> χώρας.

Historia Alexandri Magni, Recensio λ (lib. 3) Page 39, line 1

ὁ δὲ γέρων λέγει· “τὸ μὲν [ἐν] δένδρον ὃ ἥλιος ἄρχεται βαρβαρικῶς τῷ λόγῳ, ἐν δὲ τῷ τέλει Ἑλληνικῶς πληροῖ, τὸ δὲ [ἕτερον] δένδρον ἢ σελήνη ἄρχεται μὲν Ἑλληνικῶς, τελεῖται δὲ Ἰνδικῶς.

Historia Alexandri Magni, Recensio λ (lib. 3) Page 48, line 13

ὁ Περσολέτης, ὁ Ἰνδο- λέτης, ὁ καθελὼν τρόπαια μεγάλων βασιλέων Δαρείου καὶ Πῶρου, Πάρθων καὶ Μήδων, καὶ ὅλην τὴν ἀνατολὴν καταλαβὼν νῦν δὲ χωρὶς πολέμου καὶ στρατῶν ὑποχείριος γέγονας μιᾶς γυναικός.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio λ (lib. 3) Page 57, line 15

ὁ δὲ Πτολεμαῖος εἶπεν· “οὐχ οὕτως ἀρμόζει <βασιλεῦ>, ἀλλὰ πορευσώμεθα μετὰ τῶν στρατοπέδων [καί] τὰ τῶν Ἰνδῶν βασι- λεια ἀφανῆσαι.

Historia Alexandri Magni, Recensio λ (lib. 3) Page 60, line 8

μᾶλλον δὲ φρενήρης ὢν, ἔξελθε πρὸς τοὺς υἱοὺς μου καὶ εἰρήνευσον αὐτούς, διότι ὁ υἱός μου ὁ πρεσβύτερος ὀργίζεται κατὰ σου, διότι ἀνεῖλες Πῶρον τὸν βασιλέα Ἰνδῶν.

Historia Alexandri Magni, Recensio β (e cod. Paris. gr. 1685 et cod. Messinensi 62) (1386: 011) “Der griechische Alexanderroman. Rezension β”, Ed. Bergson, L. Stockholm: Almqvist & Wiksell, 1965. Book 3, section 29, line 41

εὗρον δὲ ἐκεῖ καὶ Κανδαύλην τὸν υἱὸν Κανδάκης τῆς βασιλίσσης Ἰνδικῆς χῶ- ρας σὺν τῇ αὐτοῦ γυναικὶ ἐν οἴκῳ ἡσφαλισμένους.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444) (1386: 012) “Ps.–Kallisthenes. Zwei mittelgriechische Prosa–Fassungen des Alexanderromans, 2 vols.”, Ed. Lolos, A., Konstantinopulos, V.L. Meisenheim am Glan: Hain, 1983; Beiträge zur klassischen Philologie 141 & 150. Chapter 52, section 6, line 5

Καὶ εἶπεν· “Ἐλα, Ἀλέξανδρε, μὲ ἀγάπην καὶ προσκύνει τὸ θεὸν τὸ Σα- βαώθ καὶ πάντοτε καὶ νύκταν καὶ ἡμέραν παρακάλει τὸν θεὸν εἰς βοήθειάν σου καὶ τὴν δύναμιν ὅλην τῆς Περσίας θέλεις χαλάσειν· καὶ ἐσὺ ὑπηγαίνεις εἰς τὴν Αἴγυπτον καὶ θέλεις τὴν ἐπάρειν· καὶ τὸν Πῶρον τῆς Ἰνδίας θέλεις σκοτώσειν· καὶ εἰς ἀσθένειαν με- γάλην θέλεις πέσειν.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444) Chapter 65, section 3, line 5

Καὶ ὡς ἤκουσεν ἡ στρατία τῆς Ἰνδίας τοὺς λόγους, ἐδειλίασεν πολλὰ καὶ ὡσὰν καταστα- νέον εἰς τὸν πό- λεμον ἔρχονται.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444) Chapter 66, section 1, line 2

Τόμου ἐμαζώκθησαν τὰ δύο φουσάτα, ὁ ἥλιος ἀπὸ τὸν κορ- νιακτὸν ἐσκοτίσθη· φόβος εἰς τὸ φουσάτον τῆς Ἰνδίας καὶ εἰς τοὺς Μακεδόνas ἐσέβην.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444) Chapter 66, section 2, line 2

Τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα καὶ τῶν Μακεδόνων καὶ τῆς Περσίας ἐσέβην φό- βος μέγας καὶ αὐτὴν τὴν νύκταν ἀρχέρισαν οἱ Πέρσοι νὰ φεύγουν· ἰδόντας τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα ἔφυγαν καὶ αὐτοὶ καὶ ἐποίησαν πλεόν ἐντροπήν.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444) Chapter 66, section 3, line 1

Τῆς Ἰνδίας οἱ στρατηγοὶ ἰδόντας τὸν Ἀλέξανδρον καὶ οἱ Πέρσοι ὅτι ἔφθασεν ἀπὸς τοῦ ὁ βασιλεὺς ἔδωκαν νὰ φεύγουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444) Chapter 86, section 3, line 2

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Καὶ ἀπ' αὐτοῦ ἐσηκώθη καὶ ἐπερπάτησεν ἕξι ἡμέρες καὶ ἦλθεν εἰς τὸ σύννορον τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)

Chapter 87, section t, line 2

Περὶ ὅταν ἦλθεν ὁ Ἀλέξανδρος εἰς τὸν τόπον τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)

Chapter 89, section 1, line 21

Καὶ ὅσον ἔλθεις μὲ πολὺ πλῆθος φουσάτον τόσον ἐγὼ μὲ πολλὴν ἀνδρείαν σὲ θέλω τζακίσειν καὶ οὐδὲ εἰς τὸν κόσμον ὅλον σὲ θέλω διώξειν, μόνον εἰς τὴν Ἰνδιαν σὲ θέλω φάειν.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)

Chapter 91, section 3, line 6

Ὡς ἡγαπημένοι μου καὶ ἀνδρειωμένοι μου Μακεδόνες, ἀ- πὸ ὅλες τὲς γλώσσες ἐνδοξότα- τοι καὶ τιμημένοι καὶ πρωτοκαβαλ- λαραῖοι χρυσοπτερινιστηράτοι, τὸ πῶς ὅλον τὸν κόσμον ἐπαράλαβε- τε καὶ ὅλην τὴν οἰκουμένην ἐπατάξετε μὲ τὴν δεξιὰ σας χεῖρα, καὶ τὴν σήμερον ἡμέραν ἐσκιάσθητε ἀπὸ τοὺς ἀνάνδρους καὶ σκιά- σταραίους καὶ οὐδετιποτέϊνους τοὺς Ἰνδιῶτες;

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)

Chapter 92, section 1, line 7

Νὰ ἡ- ξεύρης ὅτι ὅλον τὸν κόσμον ἐπαράλαβα καὶ ἐξεβήκαμεν γεροὶ καὶ θέλομε νὰ πολε- μήσωμεν μὲ τὸν βασιλέα τῆς Ἰνδίας τὸν Πῶρον.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)

Chapter 92, section 1, line 9

Καὶ τόμου ἰδεῖς τὴν γραφὴ μου, αὐτὴν τὴν ὥρα μὲ ὅλα τὰ φουσά- τα τῆς Δύσης νὰ φθάσης εἰς τὴν Ἰνδιαν.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)

Chapter 93, section 2, line 3

Καὶ ὡς εἶδεν ὁ Πῶρος, ἦλθεν εἰς τὸ φουσάτον του καὶ ἔκραξεν ὅλους, ὅπου εἶχεν, καὶ εἶπεν τοὺς· “Ὡς ἀνδρειωμένοι καὶ μεγιστάνοι στρατιῶτες τῆς Ἰνδίας, μὲ τοὺς Μακεδόνους ἐ- πολε- μήσαμεν καὶ ἐσκοτώθησαν πολὺ πλῆθος ἀπὸ ἐμᾶς καὶ ζημία με- γάλην ἐγένη.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)

Chapter 94, section 2, line 11

Καὶ αὐτοῦ στέκει ὁ Σελεύκιος ὁ Φιλόνης καὶ εἶπε τοῦ Ἀλεξάνδρου· “Ἡγα- πημένε καὶ ἐνκαρδιακέ μου ἀφέντη καὶ ὀλονοῦ τοῦ κόσμου βασι- λεύς, βασιλέα ὑψηλότατε καὶ μέγα χονκιάρη καὶ κάστρον τῆς οἰ- κουμένης ὀλονῆς, Ἀλέξανδρε βασιλέα, οὐδὲν πρέπει ἐσέναν ἀν- τίκρυτα νὰ ἐστέκεσαι μὲ τῆς Ἰνδίας τὸν Πῶρον· καὶ μηδὲν ἀρ- γῆς, ἀμὴ ἔτζι σύρε καταπάνου τοὺς ἐγγήγορα, ὅτι τὸ φουσάτο μας ἐ- ναι πολλὰ δυνατόν, ὅπου δὲν εἶδαν τοὺς πολέμους σας καὶ θέλο- με τοὺς τζακίσειν”.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)

Chapter 94, section 3, line 3

Καὶ οἱ Ἰνδιῶτες ὡς ἤκουσαν, φόβος καὶ τρόμος τοὺς ὑπόπεσεν πολλὰ.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 95, section 1, line 12

Καὶ πρέπει ἐγὼ νὰ πολεμήσω, ὅπου κρατῶ τὸ βασίλειον τῆς Περσίας καὶ εἶμαι μὲ τὸ
ῥιζικόν σου αὐθέντης τῆς Περσίας, καὶ ὁ Πῶρος ἔναι τῆς Ἰνδίας”.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 96, section 2, line 3

Καὶ ὁ Ἀλέξανδρος ἔπεσεν εἰς τὸ πέσιμον τοῦ Πῶρου μὲ τὸ φουσάτον του καὶ ἀπόστειλεν
κουρσατόρους καὶ ἐκούρσεψεν τὸν τόπον τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 98, section 1, line 9

Ἀμὴ ἐσὺ ἔχεις μανί- αν καὶ κάκητα ὀληνῆς τῆς Ἰνδίας· δεῖχνεσαι ἀτός σου ἀπὸ τὸ ἔργον
σου.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 98, section 1, line 11

Καὶ ἐὰν τοὺς στρατιῶτες τῆς Ἰνδίας οὐδὲν ποθῆς καὶ ἀγαπᾷς, ἐγὼ πολλὰ πονῶ καὶ θέλω
τοὺς Μακεδόνας.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 98, section 1, line 18

Καὶ ἂν σκο- τώσης ἐσὺ ἐμένα, νὰ εἶσαι νοικοκύρης εἰς ὅλον μου τὸ φουσάτον, νὰ ἔναι δικό
σου· εἰ δὲ σκοτώσω ἐσέναν, ἐγὼ αὐτὸ μὲ τὸ δί- καιο <νὰ εἶμαι> αὐθέντης ὀληνῆς τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 99, section 1, line 4

Καὶ ἐχάρην ὅλος ὁ λαὸς τῆς Ἰνδίας καὶ ἐπαραπάρθη πολλὰ ὁ Πῶρος καὶ ἐχάρη ἡ Οὐλιού-
πονη, καὶ εἶπεν· “Εσὺ εἶσαι ὁ Φιλόνης, τῆς Περσίας ἀφέντης;

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 99, section 1, line 13

Καὶ ἂς εἶσαι ἐδικός μου καὶ ἀφέντευσεν τὴν Περσίαν καὶ ἀπὸ τὴν Ἰνδιαν νὰ σοῦ δίδω τὸ
τέταρτον μερτικόν”.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 101, section 1, line 2

Θεέ μου ὑψηλότατε, ὅπου ἀναπεύεσαι εἰς τοὺς ἀγίους, γενοῦ βοηθός μου τὴν σήμερον
ἡμέραν εἰς τὸν Πῶρον τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 102, section 1, line 14

Καὶ τῆς Ἰνδίας ὡς εἶδαν τὰ φουσάτα, ἔδωκαν τὸ φυγίον νὰ φεύγουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 102, section 2, line 3

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Ἡ βασίλισσα ἡ Κλετεμήτρα τὰ μαλλία της ἀπόλυκεν ἕως τὴν γῆν καὶ τὸ πολυτίμητον φόρεμα ἔσκισεν καὶ μὲ δέκα χιλιά- δες ἀρχόντισσες τῆς Ἰνδίας ἦλθεν καὶ ἐσυναπάντησε μὲ κλαυθ- μὸν καὶ μὲ δαρμὸν πολὺν τὸ κορμὶ τοῦ Πῶρον, καὶ μὲ θλίψιν με- γάλην καὶ θρήνον ἐσυναπάντησαν τὸν βασιλέα τὸν Πῶρον.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 103, section 2, line 16

Καὶ ἤφεραν τοῦ Ἀλέξανδρου ἑκατὸ χιλιάδες φαρία τοῦ στάβλου τῆς Ἰνδίας ὅλο ἄρματω- μένα μὲ κουβέρτες ἀπὸ σύρμα.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 103, section 2, line 29

Ἀλέξανδρος τὸν ἐδικὸν του τὸν βοεβόντα τὸν Ἀντίοχον ἐ- ποίησεν αὐθέντη τῆς Ἰνδίας ὅλης.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 111, section 1, line 3

Καὶ ὄρισεν ὁ Ἀντίοχος καὶ ἐδώρισαν τοῦ Κανταυλούσην ἀπα- νωφόριν μακεδονίτικον πο- λυτίμητον καὶ φαρὶν ἀπὸ τὴν Ἰνδία ἀ- ποκάτου κουβερτιασμένον ἀπὸ τὸν κορκόνδειλον.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 113, section 3, line 6

Καὶ αὐτὸς τὸν εἶπεν· “Εγὼ ἤμουν ὁ Σωνσόχος ὁ βασι- λεὺς τῆς Ἰνδίας, ὅπου οὐκάποτες ἠπῆρα τὸν κόσμον ὅλον, καὶ ἀπὸ τὴν παραφρασίαν μου τὴν πολλὴν πολλὰ ὑψώθηκα καὶ εἰς τὴν Ἀνατολὴν εἰς τὴν ἄκραν τῆς γῆς ἤθελα νὰ ὑπηγαίνω.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 114, section 1, line 18

Καὶ ὁ Τάρειος τὸν εἶπεν· “Σύρε παραπίσω· αὐτοῦ θέλεις ἰδεῖν τὸν Πῶρον τῆς Ἰνδίας τὸν βασι- λέαν”.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 115, section 1, line 2

Ὁ Ἀλέξανδρος τὸν βασιλέαν τὸν Πῶρον εἶδεν καὶ εἶπεν του “ὦ μεγαλειότατε Πῶρε τῆς Ἰνδίας, μίαν βολὰν ἴσα μὲ τὸν θεὸν ὀνομάξουσιν, καὶ τώρα ὥσάν ἕνας ἄτυχος ἄνθρωπος κολά- ζεσαι ἐ- δῶ”.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 117, section 4, line 25

Ὁ Δορυφόρος τὴν μη- τέρα του οὐδὲν ἤκουσεν, ἀμὴ ἔλεγεν· “Ἐναν ἄνθρωπον τοῦ Ἀλε- ξάνδρου οὐδὲν μὲ ἀφήνετε νὰ σκοτώσω, ὅτι αὐτὸς πολλὰς χιλιάδες ἐδικές μας λαὸν ἐσκότωσε ἀνθρώπους, καὶ τὸν πεθερόν μου τὸν Πῶρον τῆς Ἰνδίας ἐσκότωσεν.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 117, section 5, line 22

Καὶ ὁ αὐθέντης του τὸν λωλὸν τὸν πεθερόν σου, τὸν Πῶρον, μὲ ἕνα σπαθὶν τὸν ἐσφαξεν τῆς Ἰνδίας τὸν βασιλέαν”.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 119, section 1, line 6

Ἀρχὴ τὸν Ἀντίοχον ἔδωκεν τὴν Ἰνδιαν ὅλην νὰ ἀφεντεύη ὀρίσεν.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 124, section 3, line 3

Καὶ αὐτοῦ ὁ Ἀλέξανδρος τὸν Ἀριστοτέλην τὸν ἐδικόν του ἐδώρισεν ἕναν στέμμα καὶ ἀπανωφόριν μέγαν τοῦ Πῶρου τοῦ βασιλέως τῆς Ἰνδίας καὶ δέκα χιλιάδες χρυσὰ τάλαντα καὶ τρεῖς χιλιάδες μύδια μαργαριτάριν.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 125, section 5, line 8

Καὶ αὐτοῦ ἀρχίρισεν ὁ Ἀλέξανδρος νὰ δείχῃ τοὺς πολέμους τοὺς μεγάλους, ὅπου εἶχεν ποιήσῃν μὲ τὸν Τάρειον τῆς Περσίας τὸν βασιλέαν καὶ μὲ τὸν Πῶρον τῆς Ἰνδίας τὸν βασιλέαν καὶ μὲ τοὺς ἄλλους βασιλεῖς τῆς Ἀνατολῆς καὶ τῆς Δύσης.

Historia Alexandri Magni, Recensio F (cod. Flor. Laurentianus Ashburn 1444)
Chapter 125, section 11, line 12

Ὅλοι οἱ Πέρσηδες ἐθαύμασαν τὴν φρόνησίν του καὶ τὰ ποιήματά του, καὶ τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα καὶ ὅλος ὁ κόσμος ἀποκάτου τὸν ἥλιον ἐτρόμαξεν, ἡ Ἀνατολή καὶ ἡ Δύσις, Ἀρκτος καὶ Μεσημβρία.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) (1386: 013)
“Ps.-Kallisthenes. Zwei mitteligriechische Prosa-Fassungen des Alexanderromans, 2 vols.”, Ed. Lolos, A., Konstantinopulos, V.L. Meisenheim am Glan: Hain, 1983; Beiträge zur klassischen Philologie 141 & 150. Chapter 52, section 6, line 5

Ἐλα, Ἀλέξανδρε, μὲ ἀγάπην καὶ προσκύνησον τὸν θεὸν τὸν Σαβαώθ καὶ πάντοτε νύκταν καὶ ἡμέραν παρακάλειέ τον εἰς τὴν βοήθειάν σου καὶ τὴν δύναμιν τῆς Περσίας θέλει χαλάσει· καὶ ἐσὺ πῆγαινε εἰς τὴν Αἴγυπτον, θέλεις τὴν παραλάβει· καὶ τὸν Πῶρον τῆς Ἰνδίας θέλεις σκοτώσει· καὶ αὐθέντης μέγας θέλεις γίνει.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 59, section 1, line 5

Ὁ Ἀλέξανδρος αὐτὴν τὴν νύκταν ἐφάνην του εἰς τὸν ὕπνον του ὁ προφήτης Ἰερεμίας μὲ τὴν ἀλλαγὴν τῶν ἀρχιερέων, ὅταν ἦτον εἰς τὴν Ἱερουσαλήμ εἰς τὴν ἀγίαν Σιών καὶ εἶπε του· “Ἀνθρωπέ μου Ἀλέξανδρε, γίνου ἀπὸς σου ἀποκρισάρης καὶ τὸν βασιλέα τὸν Τάρειον καταπάτησε καὶ ἰδὲς τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα, ὅπου φέρνει καταπάνω σου, καὶ νὰ ἰδῇς ἀπὸς σου τὰ φουσάτα μὲ τὴν καρδίαν σου· καὶ ἂν σὲ ἐγνωρίσουν ἐκεῖ εἰς τὸν Τάρειον, ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ Σαβαώθ νὰ σὲ ἐβγάλῃ καλὰ ἀπ’ ἐκεῖ· ἀμὴ οὐδὲν ἔχῃς ἐγνοῖαν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 64, section t, line 2

Περὶ ὅταν ἔστειλεν ὁ Τάρειος εἰς τὸν Πῶρον τὸν βασιλέα τῆς Ἰνδίας <ἐπιστολήν>.

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 64, section 1, line 5

Εἰς τριάντα ἔξ βασιλεία ἤμουν καὶ ἐ- γὼ ὀκάποτες, ὥσάν τὸ ἤκουσεν ἡ βασιλεία σου, καὶ ἐσὺ εἶσαι τῆς Ἰνδίας ὁ θεὸς καὶ ἡ δεξιὰ σου ἡ στερεὰ ἐνὶ εἰς ὅλα τὰ βασι- λεία τοῦ κόσμου ὁλοunu, τῆς Ἰνδίας ὑψηλότατε βασιλέα.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 64, section 4, line 2

Πάντοτε ἐνὶ τιμημένον τῆς Ἰν- δίας τὸ φουσάτον, ὑψηλότατε, καὶ ἐσὺ ὁμοῖος τὸν θεὸν καὶ ἐλε- ημόνησε τὴν παρακάλεισίν μου καὶ στείλε μου φουσάτον καὶ ἐλευθέ- ρωσέ με ἀπὸ τοὺς λωλοὺς καὶ ἀνελεήμονας Μακεδόνας καὶ οὐδὲν πρέπει νὰ κακοπαθῶ, ὅπου ἐνὶ ἡ δυνάμεις σου ἡ φρικτή, ὅπου ἔχεις.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 64, section 7, line 1

Ὡς ἤκουσεν ὁ Τάρειος ὅτι ἦλθαν τὰ φουσάτα τῆς Ἰνδίας ἦλθεν ἀπὸ τὴν μεγάλην θλίψιν εἰς χαράν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 64, section 7, line 5

Καὶ ὅρισαν τοὺς Πέρσας καὶ ἐμαζώχθησαν καὶ ἤϊρε τὸ φουσάτον του δέκα φορές ἀπὸ ἑκατὸ χιλιάδες· καὶ ἔτζι ἐκίνησεν πρὸς τὸν Ἀλέξανδρον μὲ ὅλους τοὺς βοηβοντάδες τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 65, section 2, line 5

Καὶ οἱ βοηβοντάδες τῆς Ἰνδίας τοὺς ἐρωτῆσαν περὶ τὸ φουσάτον τοῦ Ἀλεξάνδρου καὶ αὐτοὶ τοὺς ἀπεκρίθησαν “Ἡμεῖς ὅσον ἠδυνήθημεν καὶ ἐγρυκῆ- σαμεν νὰ σᾶς ὁμολογήσωμεν· εἶδαμεν φουσάτον πολὺν καὶ ἀνδρειωμένον καὶ δυνατὰ ἔρχονται καταπάνω σας· ἐγνοῖαν καμμίαν οὐδὲν ἔχουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 65, section 3, line 5

Καὶ ὥς ἤκουσαν οἱ στρατιῶτες τῆς Ἰνδίας, ἐδειλίασαν πολ- λὰ καὶ ὥσάν ἀποστάνεον εἰς τὸν πόλεμον ἔρχονται.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 66, section 1, line 2

Τόμου ἐμαζώχθησαν τὰ δύο φουσάτα, ὁ ἥλιος ἀπὸ τὸν κο- νιαρτὸν ἐσκοτίσθη· φόβος εἰς τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα καὶ εἰς τῆς Μακεδονίας ἐσέβη.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 66, section 2, line 1

Εἰς τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα καὶ εἰς τῆς Μακεδονίας ἐσέβη καὶ εἰς τῆς Περσίας ἐσέβη μέγας φόβος ἀπὸ τὸ δὸς καὶ λάβε· καὶ αὐτὴν τὴν ἡμέραν ἀρ- χίνισαν νὰ φεύγουν.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 66, section 3, line 1

Τῆς Ἰνδίας οἱ στρατηγοὶ ἰδόντες τὸν Ἀλέξανδρον καὶ οἱ Πέρσηδες ὅτι ἔφθασεν αὐτός του ἔδωκαν καὶ φεύγουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 66, section 6, line 3

Ὁ Ἀλέξανδρος ἔκραξεν ἕναν ἀπὸ τοὺς ἰδικούς του τοὺς μεγιστάνους, τὸ ὄνομά του Φοῖνιξ, καὶ εἶπε τον· “Σύρε εἰς τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα καὶ ἕως τῆς Περσίας καὶ εἰπέτέ τους· “Νὰ ἢ- ξεύρετε ὅτι ὁ βασιλεὺς ὁ ἰδικός σας ἐσκοτώθη· καὶ στέκεστε <καὶ> μὴδὲν φεύγετε! Εἰ δὲ ἀρχινίσετε νὰ φεύγετε, τὴν σήμερον ἡμέραν θέλετε ἀποθάνει ἐκ τὸ σπαθὶν μου.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 66, section 7, line 2

Τὸν Σελευκούσῃν ἔστειλεν εἰς τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα νὰ ἐπάρῃ τὰ ἄλογα καὶ τὰ ἄρματα τοὺς καὶ “αὐτουνούς ζωντανούς νὰ τοὺς στείλετε εἰς τὸν βασιλέαν τους.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 66, section 7, line 6

Ὅλα τὰ φλάμπουρα τοῦ Πῶρου τοῦ βασιλέως τῆς Ἰνδίας καὶ οἱ τρουμπέ-τες οἱ μεγάλες διακοσίες, ὅπου ἦσαν, ἔδωκαν <νὰ φεύγουν> καὶ οἱ ἄλλες τόσες ἀνακαράδες τὰ ἄλογά τους ὅλα καὶ τὰ ἄρματα τοὺς ἐπαρέδω-καν τοῦ Φιλόνῃ· καὶ ἐπῆραν συμπάθιον καὶ ὑπῆγαν πρὸς τὸν τόπον τους.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 66, section 9, line 1

Οἱ Περσῆδες ἐχωρίσθησαν ἀπὸ τῆς Ἰνδίας τὸ φου-σάτον καὶ ἐζύγωσαν καὶ προσεκύνησαν τὸν Φιλόνῃ ἀντίτοπα τὸν Ἀ-λέξανδρον καὶ ἐσμίχθησαν μὲ τοὺς Μακεδόνες καὶ ἐχάρηκαν χαρὰν μεγάλην, τὸ πᾶς τοὺς ἐπαρέδωκεν ὁ θεὸς νὰ δουλεύουν τὸν Ἀλέξαν-δρον.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 82, section 1, line 6

Ἀμὴ σύρε ἐγλήγορα, ὅτι σὲ ἀκαρτερεῖ τὸ φουσάτον σου τῆς Ἰνδίας καὶ τοῦ Πῶρου ἢ αὐθεντία καὶ ὁ μέγας βασιλεὺς ὁ Πῶρος· καὶ αὐτοῦ τὴν δύναμιν θέλεις χαλάσει παντελῶς καὶ τὸν θέλεις σκοτώσει.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 86, section 3, line 2

Καὶ ἀπ’ αὐτοῦ ἐσηκώθη καὶ ἐπερπάτησεν ἡμέρες 5’ καὶ ἦλθεν εἰς τὸ σύνορον τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 87, section t, line 2

Περὶ ὅταν εἰσῆλθεν ὁ Ἀλέξανδρος εἰς τὸ σύνορον τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 88, section 1, line 1

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Καὶ ὡς ἤκουσεν ὁ Πῶρος ὅτι ἔρχεται ὁ Ἀλέξανδρος, ἔ- στειλεν ἐπιστολάτορα μὲ ἐπιστολήν· ἔγραφεν οὕτως· “Πῶρος ὁ τρανὸς καὶ ὑψηλότατος βασιλεὺς, τῆς Ἰνδίας ὁ θεός, τὸν Ἀλέξανδρον τῆς Μακεδονίας γράφω.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 89, section 1, line 22

Καὶ ὅσον θέλεις ἔλθει ἐσὺ μὲ πλῆθος φουσάτον, τόσον θέλω καὶ ἐγὼ μὲ πολλὴν ἀνδρείαν σὲ θέλω τζακίσει καὶ σὲ θέλω διώξει, μόνον εἰς τὴν Ἰνδιαν σὲ θέλω φάει.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 90, section 2, line 1

Καὶ ἦλθα εἰς τὸν βασιλέα τῆς Ἰνδίας ἢ νὰ σκοτώσῃ αὐ- τὸς ἐμένα ἢ ἐγὼ νὰ σκοτώσω αὐτὸν καὶ νὰ τοὺς παραλάβωμεν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 90, section 10, line 2

Καὶ ἐξέβηκα δεξιὰ καὶ διὰ ἓνα χρόνον ἐξέβηκα εἰς τὴν οἰκουμένην, εἰς τῆς Ἰνδίας τὸν Πῶρον τὸν βασιλέα, καὶ θέλομεν νὰ πολεμήσωμεν μετ’ αὐτόν, διότι νὰ γένῃ τὸ θέλημα τοῦ θεοῦ γληγορότερα.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 91, section 1, line 1

Ὁ Πῶρος, ὁ βασιλεὺς τῆς Ἰνδίας, ὅλον τὸν κόσμον ἐσὺ- ναξε καὶ ἄλλα βασιλῆα, φουσάτα πολλὰ ἀναρίθμητα, καὶ ἔγραψε τὰ φουσάτα του καὶ ἤϊρε ἐννεήντα φορές ἀπὸ χίλιες χιλιάδες καὶ εἶχεν καὶ δέκα χιλιάδες λέοντας, ὅπου ἦσαν μαθημένοι εἰς τὸν πόλεμον.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 91, section 3, line 6

Ὡς ἡγαπημένοι καὶ ἀνδρειωμένοι Μακεδόνες, ἀπὸ ὅλον τὸ γένος ἐνδοξότατοι καὶ τετιμημένοι καβαλλαραῖοι χρυσοπτερνιστῆ- ράτοι, ὅλον τὸν κόσμον ἐπαραλάβετε καὶ ὅλην τὴν οἰκουμένην ἐ- πατάξατε μὲ τὴν δεξιάν σας χεῖρα, καὶ τὴν σήμερον ἡμέραν ἐσκι- αστήκετε ἀπὸ τοὺς ἀτυχοὺς ἀνδρας καὶ σκιασταραίους καὶ οὐδετι- ποτεῖνους τοὺς Ἰνδιῶτες;

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 91, section 4, line 6

Οἱ Μακεδόνες ὡς ἤκουσαν τοὺς λόγους τοῦ Ἀλεξάνδρου, ἔκλαυσαν πολλὰ καὶ εἶπαν τοῦ βασιλέως· “Ὡ βασιλεῦ Ἀλέξανδρε καὶ μέγα αὐθέντη χρυσοκέφαλε, κάλλιον ἐνὶ νὰ ἀποθάνω- μεν ὅλοι ἀντάμα παρὰ νὰ ζήσωμεν πολὺ· ἀμὴ ἢ δημηγευσία ἐτούτῃ οὐδὲν ἔ- νι ἀπὸ ἡμᾶς, ἀμὴ οἱ δημηγέρτες καὶ οἱ σκιασταραῖοι οἱ Πέρση- δες καὶ <οἱ> ἄνθρωποι οἱ γειτόνοι τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα, ἤθελαν νὰ μᾶς σκιάσουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 91, section 4, line 7

Ἀμὴ ἐμεῖς καλὰ σᾶς ἐγνωρίσαμεν τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα, ὅ- ταν εἶχεν στείλει εἰς τὴν Περσίαν τὰ φουσάτα του ὁ Πῶρος εἰς βοήθειαν τοῦ Ταρείου τοῦ βασιλέως”.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 93, section 2, line 4

Καὶ ὡς εἶδεν ὁ Πῶρος τὴν ἀπώλειαν τοῦ πολέμου, ἦλθεν εἰς τὸ φουσάτον καὶ ἔκραξε τοὺς αὐθέντας καὶ βασιλεῖς, ὅπου εἶ- χεν, καὶ εἶπεν τοὺς· “Ὡ πολυανδρειωμένοι στρατιῶτες τῆς Ἰνδίας, μὲ τοὺς Μακεδόνας ἐπολεμήσαμεν καὶ ἐσκοτώθηκεν πολὺ πλη- θος ἀπ’ ἐμᾶς καὶ ζημία μεγάλη ἐγίγνετο.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 94, section 2, line 12

Καὶ αὐτοῦ ἔστεκεν ὁ Σελευκούσης ὁ Φιλόνης καὶ εἶπεν τοῦ Ἀλέξανδρου· “Ὡ ἡγαπημένε μου καὶ ἐγκαρδιακὲ μου αὐθέντη, ὁλονοῦ τοῦ κόσμου βασιλεῦ, βασιλεῦ ὑψηλότατε καὶ αὐθέντη χρυσοκέφαλε καὶ κάστρον τῆς οἰκουμένης ὅλης, Ἀλέξανδρε βασιλέα, οὐδὲν πρέπει ἐσὺ νὰ στέκεσαι ἀντίκρυς τὸν βασιλέα τῆς Ἰνδίας, τὸν Πῶρον· καὶ μηδὲν ἀργῆς καὶ ἔττι σύρε ἀπάνω του ἐγλήγορα, ὅτι τὸ φουσάτον μας τῶρα ἐνὶ δυνατὸν, ὅτι οὐδὲν εἶδαν τὸν πόλεμον”.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 94, section 3, line 4

Καὶ οἱ Ἰνδιῶτες ὡς ἤκουσαν, εἰς φόβον μέγαν καὶ εἰς τρόμον ἔπεσαν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 95, section 1, line 11

Καὶ πρέπει ἐγὼ νὰ πολεμήσω, ὅπου κρατῶ τὸ βασίλειον τῆς Περσίας, καὶ ὁ Πῶρος ἐνὶ τῆς Ἰνδίας”.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 95, section 1, line 25

Καὶ τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα πολλὰ ἐπολέμι- ζαν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 96, section 2, line 3

Καὶ ὁ Ἀλέξανδρος ἔπεσε εἰς τὸ πέσιμον τοῦ Πῶρου μὲ τὰ φουσάτα του καὶ ἀπέστειλαν κουρσάτορας καὶ ἐκούρσευαν τὸν τόπον τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 97, section 2, line 2

Καὶ ὡς ἤκουσαν τοῦ Πῶρου τὲς ἐπιστολές, ὅπου ἦσαν εἰς τοῦ Βορέως τὸ μέρος, ἦλθαν εἰς βοήθειαν τοῦ Πῶρου τοῦ βασιλέως τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 98, section 1, line 8

Α- μὴ ἐσὺ ἂν ἔχῃς μανίαν καὶ κάκηταν ὅλης τῆς Ἰνδίας, δείχνεσαι ἀτός σου ἀπὸ τὸ ἔργον σου.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 98, section 1, line 10

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Καὶ ἂν ἐσὺ τοὺς στρατιώτας τῆς Ἰνδίας οὐδὲν ποθῆς καὶ ἀγαπᾷς, ἐγὼ ποθῶ καὶ θέλω τοὺς Μακεδόνας.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 98, section 1, line 16

Εἰ δὲ ἐγὼ σκοτώσω πάλι ἐσένα, νὰ εἶμαι αὐθέντης ὅλης τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 99, section 1, line 4

Καὶ ἐχάρηκεν ὁ λαὸς ὅλος τῆς Ἰνδίας καὶ ἐπαρεπάρθην πολλὰ ὁ Πῶρος καὶ ἐχάρηκε πολλὰ καὶ εἶπεν· “Εσὺ εἶσαι ὁ Φιλόνης τοῦ Ταρείου ὁ ἀντίτοπος τῆς Περσίας ὁ αὐθέντης;

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 99, section 1, line 12

Καὶ ἄς εἶσαι ἰδικός μου καὶ αὐθέντευσεν τὴν Περσίαν καὶ ἀπὸ τὴν Ἰνδίαν νὰ σὲ δώσω τὸ τέταρτον μερδικόν”.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 99, section 1, line 15

Καὶ ὁ Φιλόνης τὸν ἀπεκρίθη· “Εγὼ τὴν σήμερον ἡμέραν εἶμαι αὐθέντης τῆς Περσίας καὶ ἐσὺ μὲ δίδεις τὸ τέταρτον μερδικόν ἀπὸ τὴν Ἰνδίαν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 99, section 1, line 16

Ὁ Ἀλέξανδρος ὅλην τὴν Ἰνδίαν μοῦ ἔδωκεν ὅταν τὴν περιλάβῃ νὰ μὲ κάμῃ αὐθέντην τῆς Ἰνδίας”.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 99, section 1, line 23

Καὶ ὁ Πῶρος τὸν ἀπεκρίθη καὶ εἶπε πάλι τοῦ Φιλόνη· “Γένου ἰδικός μου καὶ νὰ σοῦ δώσω τὴν θυγατέραν μου καὶ εἰς τὸν θάνατόν μου νὰ σὲ κάμῃ αὐθέντην εἰς τὴν Ἰνδίαν ὅλην”.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 101, section 1, line 2

Καὶ ἔτι ἀρχί- νισεν ὁ Ἀλέξανδρος νὰ παρακαλῇ τὸν θεὸν τοῦ οὐρανοῦ καὶ τῆς γῆς Σαβαώθ· “Θεέ μου ὑψηλότατε, ὅπου ἀναπαύεσαι εἰς τοὺς ἁγίους, γένου βοηθός μου τὴν σήμερον εἰς τὸν Πῶρον τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 102, section 1, line 15

Καὶ τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα ἔδωκαν εἰς τὸ φυγίον νὰ φεύγουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 102, section 2, line 3

Καὶ ἅ’ χιλιάδες ἀρχόντισσες τῆς Ἰνδίας ἤλθαν καὶ ἐσυναπάντησαν <μὲ> τὸν κλαυθμὸν καὶ δάκρυα πολλὰ τὸ κορμὶν τοῦ Πῶρου, καὶ μὲ θλίψιν καὶ θρήνον ἐ- συναπάντησαν τὸν Πῶρον.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 103, section 2, line 12

Καὶ ἤφεραν τοῦ Ἀλεξάνδρου ἑκατὸν φαρία τοῦ στάβλου τῆς Ἰνδίας ὅλα ἄρμα- τωμένα καὶ κουβέρτες ἀπὸ σύρμα.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 103, section 2, line 24

Ὁ Ἀλέξανδρος τὸν ἠγαπημένον τὸν ἰδικόν του τὸν βοϊβόντα του τὸν Ἀντίοχον ἐποίησεν αὐθέντην τῆς Ἰνδίας ὅλης.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 111, section 1, line 3

Καὶ ὄρισεν ὁ Ἀντίοχος καὶ ἐδώρισαν τὸν Καταυλούσην ἁ- πανωφόριν μακεδονίτικον καὶ φαριν ἀπὸ τὴν Ἰνδιάν ἀποκάτω κουβερ- τισμένον ἀπὸ κορκόνδειλον.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 113, section 3, line 5

Καὶ αὐτὸς τὸν εἶπεν· “Ἐγὼ εἶμαι ὁ Σωχὸν ὁ βασιλεὺς τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 114, section 1, line 17

Καὶ ὁ Τάρειος τὸν εἶπεν· “Σύρε παραπέσω καὶ αὐτοῦ θέλεις ἰδεῖ τὸν Πῶρον τὸν βασιλέα τῆς Ἰνδίας”.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 115, section 1, line 2

Ὁ Ἀλέξανδρος τὸν Πῶρον τὸν βασιλέα εἶδε τον καὶ εἶδε του· “Ὡ μεγαλειότατε Πῶρε τῆς Ἰνδίας, ἐστὶ μὲ τὸν θεὸν ἴσια ὀνομάζουσιν, καὶ τώρα ὥσαν ἕνας <ἄτυχος ἄνθρωπος> κολλάζεσαι ἐ- δῶ”.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 117, section 4, line 26

Ὁ Δορυφόρος τὴν μητέρα του οὐδὲν τὴν ἤκου- σεν, ἀμὴ ἔλεγεν· “Ἐναν ἄνθρωπον τοῦ Ἀλεξάνδρου οὐδὲν μὲ ἀφή- νετε νὰ σκοτώσω· αὐτὸς πολλοὺς ἀνθρώπους ἰδικούς μου ἐσκότωσεν, χιλιάδες καὶ μυριάδες, καὶ τὸν πεθερόν μου τὸν Πῶρον, τῆς Ἰν- δίας τὸν βασιλέα, ἐσκότωσεν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 117, section 5, line 23

Καὶ ὁ αὐθέντης του τὸν λωλὸν τὸν πεθερόν σου, τὸν Πῶ- ρον, διὰ τὴν ἐπαρσίαν του καὶ τὴν κακὴν του φρόνεσιν μὲ μίαν σπαθέα τὸν ἐθανάτωσε τῆς Ἰνδίας τὸν βασιλέα”.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 119, section 1, line 7

Ἀρχὴ τὴν Ἰνδιάν ὅλην τὴν ἔδωκεν τοῦ Ἀντιόχου νὰ αὐθεντεύη καὶ νὰ τὴν ὀρίζη.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 120, section 4, line 12

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Καὶ ἦσαν καὶ πλεώτεροι, ὅπου ἤβλεπαν, ἕως χιλιάδες ἑκατὸν ἄνθρωποι μαζωμένοι· ἀρχὴ οἱ Πέρσηδες, τῆς Ἰν- δίας τὰ φουσάτα, οἱ Σιριάνηδες καὶ οἱ Ἑβραῖοι, οἱ Δῆδες, Φοινικαῖοι, Γελφοί, Ἀλαμπετάνοι, πολλοὶ ἐκ τὴν Ἀνατολὴν καὶ τῆς Ἰνδίας ἦσαν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 123, section 2, line 2

Καὶ αὐτὴν τὴν ἡμέραν ἤφεραν ἓναν ἄνθρωπον ἀπὸ τὴν Ἰν- διαν δεξιῶτην εἰς τὸν Ἀλέξανδρον καὶ ἔλεγαν ὅτι τέτοιος δεξι- ῶτης ἐνι, ὅτι ἐκ τὸ δακτυλίδιν διαβάζει τὴν σαΐταν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 124, section 3, line 3

Καὶ αὐτοῦ ὁ Ἀλέξανδρος τὸν ἰδικόν του τὸν Ἀριστοτέ- λην ἐδώρισέν τον ἓνα στέμμα καὶ τὸ ἀπανωφόριον τοῦ Πῶρου τοῦ βασιλέως τῆς Ἰνδίας καὶ δέκα χιλιάδες χρυσὰ τάλαντα καὶ δέκα χιλιάδες μῦδια μαργαριτάριν.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 125, section 5, line 8

Καὶ αὐτοῦ ἀρχίνισεν ὁ Ἀλέξανδρος νὰ δείχνῃ τοὺς πολέμους τοὺς μεγάλους, ὅπου ἐποίησε μὲ τὸν Τάρειον τῆς Περσίας τὸν βα- σιλέα καὶ μὲ τὸν Πῶρον τῆς Ἰνδίας καὶ τῆς Ἀνατολῆς καὶ τῆς Δύσης.

Historia Alexandri Magni, Recensio E (cod. Eton College 163) Chapter 125, section 11, line 11

Ὅλοι οἱ Πέρσηδες ἐθαύμασαν καὶ τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα καὶ ὁ- λος ὁ κόσμος ἀποκάτω τὴν Ἰνδιαν καὶ τοῦ ἡλίου ἐτρόμαξαν, ἡ Ἀνατολὴ καὶ ἡ Δύσις, Ἄρκτος καὶ Μεσημβρία.

Historia Alexandri Magni, Recensio V (cod. Vind. theol. gr. 244) (1386: 014) “Der byzantinische Alexanderroman nach dem Codex Vind. Theol. gr. 244”, Ed. Mitsakis, K. Munich: Institut für Byzantinistik und neugriechische Philologie der Universität, 1967; Miscellanea Byzantina Monacensia 7. Page 72, line 20

Ὁ Ἀλέξανδρος αὐτὴν τὴν ὥραν, ἤγουν τὴν νύκταν, εἶδεν ὄνειρον ὅτι ἦλθεν ὁ προφήτης Ἰερε- μίας καὶ ἦτον ἐντυμένος ἀρχιε- ρατικὴν στολὴν καὶ εἶπεν του· «Ἐγγλήγορα, τέκνον Ἀλέξανδρε, σῦρε καὶ γένου ἀποκρισιάρης εἰς τὸν Δάρειον καὶ καταπάτησέ τον αὐτὸν καὶ τὰ φουσάτα του καὶ τῆς Ἰνδίας ὅπου φέρνει κατα- πάνου σου· καὶ ἐὰν σὲ ἐγνωρίσουν εἰς τὸν Δάρειον, ὁ θεὸς τοῦ οὐρανοῦ καὶ τῆς γῆς Σαβαώθ σὲ θέλει φυλάξῃ καὶ θέλεις σωθῇ ἀβλαβὴς ἀπέκει.

Historia Alexandri Magni, Recensio V (cod. Vind. theol. gr. 244) Page 79, line 23

Καὶ οὕτως ὁ Ἀλέξανδρος ὄρθω- σεν καὶ ὑπῆγεν εἰς τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα, ἤγουν εἰς τὸν βασιλέα.

Historia Alexandri Magni, Recensio V (cod. Vind. theol. gr. 244) Page 79, line 24

Ὁ Πῶρος καὶ μέγας καὶ ὑψηλότατος βασιλέας τῆς Ἰνδίας ὄλης», τοιούτως λέγει ἡ γραφή, «ὅτι κάτι ἤκουσα, Ἀλέξανδρε, ὅτι τὸν Δάρειον ἐσκότωσες καὶ ὑψώθης πολλὰ καὶ ἀπὸ τὴν ἀνα- γνωσίαν σου τὴν πολλὴν ἦλθες εἰς τὸ σύννομόν μου νὰ χαθῇς.

Historia Alexandri Magni, Recensio V (cod. Vind. theol. gr. 244) Page 82, line 9

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Καὶ τῆς Ἰνδίας τὰ φουσάτα ὡς εἶδαν, ἔδωκαν νὰ φεύγουν· Ὁ Ἀλέξανδρος κατόπισθεν τοὺς ἐδίωχεν καὶ [f. 42v] ἐσκότωσεν τρεῖς χιλιάδες.

Historia Alexandri Magni, Recensio V (cod. Vind. theol. gr. 244) Page 83, line 2

Ὁ Ἀλέξανδρος τὸ βοηβόντα τὸν Ἀντίο- χον ἔκαμιν αὐθέντην τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ (1386: 016) “Ἡ φυλλάδα τοῦ μεγαλέξαντρου. Διήγησις Ἀλεξάνδρου τοῦ Μακεδόνα”, Ed. Veloudis, G. Athens: Hermes, 1977; Νέα Ἑλληνικὴ Βιβλιοθήκη 39. Section 103, line 11

Καὶ τὸν βασιλέα τῆς Ἰνδίας θέλεις σκοτώσει· καὶ εἰς ἀσθένειαν θέλεις πέσει· καὶ ὁ Θεὸς θέλει σὲ βοηθήσει καὶ θέλεις γένει ὅλου τοῦ κόσμου βασιλεύς· καὶ εἰς τὸν Παράδεισον κοντὰ θέλεις ὑπάγει καὶ θέλεις εὖρει ἐκεῖ ἄνδρες καὶ γυναῖκες εἰς ἓνα νησί φυλακωμένους, ὅπου εἶναι τὸ φαγί τους παρικὰ καὶ τὸ ὄνομά τους εἶναι Μακάριοι· καὶ θέλουν σοῦ ὁμολο- γήσει διὰ τὴν ζωὴν σου καὶ διὰ τὸν θάνατόν σου.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 136, line 9

Αὐτὴν τὴν νύκτα εἶδεν ὁ Ἀλέξανδρος ὄνειρον ὅτι ἦλθεν ὁ προφήτης Ἰερεμίας καὶ ἦτον ἐν- δευμένος ἀρχιερατικὴν στολὴν, ὡσὰν τὸν εἶδεν εἰς τὴν Ἱερουσαλήμ, καὶ εἶπε του: Ὁ γλήγορα ὑπάγε εἰς τὸν Δάρειον ἀποκρισάρης καὶ καταπάτησέ τον, ὁμοίως καὶ τὰ στρα- τεύματα τῆς Ἰνδίας, ὅπου ἔρχονται κατεπάνω σου· καὶ εἰς σὲ γνω- ρίσουν, ὁ Θεὸς θέλει σὲ φυλάξει.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 148, line 9

Καὶ ὅρισε νὰ γράψουν χαρτὶ παραπονετικὸν εἰς τὸν Πῶρον, τὸν βα- σιλέα τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 148, line 13

Εἰς τὸν βασιλέα τὸν ὑψηλότατον παρὰ ὅλους τοὺς βασιλεῖς τῆς γῆς, ὅπου εἶσαι κύριος τῶν αὐθεντάδων τῆς οἰκουμένης καὶ ἐπίγειος θεὸς τῆς Ἰνδίας, ἡ δεξιὰ σου εἶναι στε- ρεὰ εἰς ὅλα τὰ βασίλεια τῆς γῆς.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 150, line 12

Καὶ ἐκίνησαν τὰ φου- σάτα τῆς Ἰνδίας εἰς βοήθειαν τοῦ Δαρείου.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 150, line 13

Καὶ ὡς ἤκουσεν ὁ Δά- ρειος ὅτι ἦλθαν τὰ φουσάτα τῆς Ἰνδίας, ἐσύναξε καὶ αὐτὸς τὰ φουσάτα του τῆς Περσίας καὶ ἔγραψέ τα καὶ ἤϊρε τα χίλιες χιλιάδες.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 151, line 13

Καὶ ἐρώτησάν τους οἱ ἄρχοντες τῆς Ἰνδίας διὰ τὰ φουσάτα τοῦ Ἀλεξάνδρου, καὶ αὐτοὶ εἶπαν: Ἡμεῖς καθὼς εἶδαμεν, ἔτι μαρτυροῦμεν.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 152, line 3

Καὶ ὡσὰν ἤκουσαν τὰ φουσάτα τῆς Ἰνδίας, ἐδειλίασαν καὶ ὡσὰν ἐγγαρεμένοι ἤρχονταν εἰς τὸν πόλεμον.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 152, line 12

Καὶ αὐτὴν τὴν ὥραν δὲν ἐγνωρί- ζετο τίς εἶναι Πέρσης ἢ Ἰνδῆς ἢ Μακεδών.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 153, line 2

Καὶ ὡσὰν ἐνύκτωσεν, ἐφοβήθησαν οἱ Ἰνδοὶ καὶ οἱ Πέρσαι καὶ ἄρχισαν νὰ φύγουν.

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 153, line 4

Καὶ ὡσὰν εἶδεν ὁ Ἀλέξανδρος ὅτι ἐγύρισαν οἱ Ἰνδοὶ, δὲν ἠμπόρεσε νὰ βαστάξῃ, μόνον εἰσέβη εἰς τὸ στράτευμα τῆς Ἰνδίας μὲ τὸ τάγμα του, ἑκατὸν χιλιάδες, ὅπου ἦσαν ὅλοι διαλεκτοί, καὶ ἔκαμε μεγάλους φόνους καὶ πολλούς.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 153, line 7

Καὶ οἱ Ἰνδοὶ, ὡσὰν εἶδαν τὸν Ἀλέξανδρον, ἔδωκαν νὰ φεύγουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 153, line 9t

Φυγὴ τῶν Ἰνδῶν.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 153, line 10

Καὶ ὡσὰν εἶδαν οἱ Πέρσαι τὰ φουσάτα τῆς Ἰνδίας πῶς φεύγουν, ἄρχισαν καὶ αὐτοὶ νὰ φεύγουν, μὲ τὸ νὰ μὴν δύνωνται νὰ πολεμοῦν.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 155, line 3

Ἔστειλε καὶ τὸν Φι- λόνην εἰς τὸ φουσάτον τῆς Ἰνδίας νὰ πάρῃ τὰ ἄλογά τους καὶ αὐτοὺς νὰ τοὺς ἀφήσῃ νὰ ὑπάγουν εἰς τὸν αὐθέντην τους τὸν Πῶρον.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 155, line 6

Καὶ ὑπῆγεν ὁ Φιλόνης καὶ εἶπε τὸν ὅρισμὸν τοῦ Ἀλεξάνδρου εἰς τοὺς Ἰνδοὺς.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 155, line 14

Καὶ οἱ Πέρσαι ἔξε- χωρίσθηκαν ἀπὸ τὰ φουσάτα τῆς Ἰνδίας καὶ ἐπροσκύνησαν τὸν Φι- λόνην καὶ ἦλθαν εἰς μίξιν μὲ τὰ φουσάτα τῆς Μακεδονίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 187, line 5

Μόνον κάμε ἐτοῦτο ὅπου σοῦ λέγομεν καὶ γύρισε ὀπίσω δεξιὰ καὶ σύρε πάλιν νὰ ἀκολουθή- σης τοὺς συνηθισμένους σου πολέμους, ὅτι καρτερεῖ σε καὶ ὁ βα- σιλεὺς τῆς Ἰνδίας νὰ πολεμή- σετε.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 192, line 4

Καὶ ἀπ' αὐτοῦ ἐπεριπάτησεν ἡμέρας ἕξ καὶ ἦλθεν εἰς τὸ σύνορον τῆς Ἰνδίας καὶ ἐξέβη εἰς τὸν κόσμον.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 192, line 10

Ἐμαθεν δὲ ὁ Πῶρος, ὁ βα- σιλεὺς τῆς Ἰνδίας, ὅτι ἦλθεν ὁ Ἀλέξανδρος εἰς τὸ σύνορόν του καὶ τοῦ ἔγραψεν ἐπιστολὴν τοιαύτην: Ἐπιστολὴ Πῶρου πρὸς Ἀλέξανδρον.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 193, line 2

Ὁ Πῶρος, ὁ μέγας βασιλεὺς τῆς Ἰνδίας, ὅπου λάμπει ὡσὰν θεός, εἰς τὸν Ἀλέξανδρον τὸν βασιλέα.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 194, line 9

Ἀλέξανδρος, ὁ βασιλεὺς τῶν βασιλείων, ὃχι μὲ τὸ ἐδικόν μου θέλημα, ἀμὴ μὲ τοῦ παντο- κράτορος Σαβαώθ, ὅπου ἔκαμε τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, εἰς τὸν βασιλέα τῆς Ἰνδίας Πῶρον, ὅπου λέγει πῶς λάμπει ὡσὰν ὁ ἥλιος καὶ γίνεται θεὸς ἐπίγειος, ὁ οὐτιδανός, ὁ γαῖ- δαρος, ὁ τρελός, ὁ ἄτυχος ἄνθρωπος τοῦ κόσμου ὅλου.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 195, line 2

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Καὶ αὐτὸς τέτοιας λογιῆς ἐθεοποιεῖτο εἰς ὅλην τὴν Περσίαν, ὥσαν καὶ ἐσένα τῶρα εἰς τὴν Ἰνδίαν, καὶ ἐγὼ τὸν ἐσκότωσα μὲ τὴν δύναμιν τοῦ παντο- κράτορος Σαβαώθ.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 196, line 6

Ἀκόμη καὶ εἰς τοὺς ἄλλους βασιλεῖς τῆς Ἰνδίας στείλετε γράμματα νὰ ἔλ- θουν ὅλοι.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 197, line 8

Καὶ ὡς τὸ ἤκουσεν ὁ Ἀλέξανδρος, ὅρισε καὶ ἐσυμμάζωχθησαν τὰ φουσάτα τοῦ ὅλα ἐμ- προσθέν του καὶ εἶπε: Ὡς ἡγαπημένοι μου Μακεδόνες καὶ ἀπὸ ὅλες τῖς γενεῆς ὑψηλότεροι, τὸν κόσμον ὅλον ἐπήραμεν καὶ τὴν οἰκουμένην ἐπεριλάβαμεν καὶ τὴν σήμερον ἐφο- βηθήκατε ἀπὸ τοὺς ἀνάνδρους Ἰνδούς.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 200, line 6

Ἄς ἡξεύρετε πῶς ὅλον τὸν κόσμον εἶδαμεν καὶ ἐγυρίσαμεν ὑγιεῖς καὶ ἤλθαμεν εἰς τὴν Ἰνδίαν καὶ θέλο- μεν νὰ πολεμήσωμεν μὲ τὸν Πῶρον.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 200, line 9

Καὶ τὴν ὥραν ὅπου νὰ ἰδῇτε τὴν γραφὴν μου, νὰ φθάσετε τὸ ὀγληγορώτερον μὲ ὅλα τῆς Δύσεως τὰ φουσάτα εἰς τὴν Ἰνδίαν».

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 204, line 9

Καὶ ἐστάθη ὁ Φιλόνης καὶ ὁ Σέλευκος καὶ εἶ- παν: «Ὡς ἡγαπημένε αὐθέντη καὶ τοῦ κόσμου ὅλου βασιλεῦ, δὲν πρέπει νὰ στέκης ἀντίκρυ τοῦ βασιλέως τῆς Ἰνδίας νὰ τὸν βλέπης, ἀμὴ σύρε κατεπάνω του καὶ μὴν ἀργῆς, ὅτι ὁ Πῶρος ἔχει φουσάτα πολλὰ παρὰ ἡμᾶς.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 205, line 9

Καὶ δὲν πρέπει ἐσένα νὰ πολεμήσης μὲ τὸν Πῶρον, ὅτι ἐσύ εἶσαι τῆς οἰκουμένης ὅλης βασι- λεύς, ἀμὴ νὰ πολε- μήσω ἐγὼ, ὅπου εἶμαι μὲ τὸ ἐδικόν σου ῥιζικὸν αὐθέντης τῆς Περσίας καὶ αὐτὸς εἶναι τῆς Ἰνδίας καὶ εἴμεσθεν παρόμοιοι.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 206, line 8

Καὶ ἐπολέμησαν τὰ φουσάτα τῆς Ἰνδίας πολλὰ ἀνδρειωμένα καὶ ὕστερον ἐνικήθησαν καὶ ἄρχισαν νὰ φεύγουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 207, line 8

Ὁ δὲ Ἀλέξανδρος ἦλθεν εἰς τὸ κονάκι τοῦ Πῶρου καὶ ἔστειλε τὰ φουσάτα τοῦ καὶ ἐκούρ- σευσαν τὸν τό- πον τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 209, line 13

Ἀμὴ ὥσαν βλέπω, ἐσύ ἔχεις ἐχθρητα τῶν στρατιωτῶν τῆς Ἰνδίας καὶ θέλεις νὰ τοὺς χάσης ὅλους.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 210, line 12

Καὶ ὡς ἤκουσεν ὅλον τὸ φουσάτον τῆς Ἰνδίας, ἐχάρη.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 212, line 8

Καὶ ὥσαν εἶδεν τὸν θάνατον τοῦ Πῶρου τῆς Ἰνδίας τὸ φου- σάτον, ἔδωκαν νὰ φεύγουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio φ Section 213, line 1

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Καὶ ἡ βασίλισσα ἡ Κλυταιμνή- στρα ἀπέλυσε τὰ μαλλιά της ἕως τὴν γῆν καὶ τὸ πολύτι-
μόν της φό- ρημα ἔσκιεν καὶ μὲ δέκα χιλιάδες ἀρχόντισσες τῆς Ἰνδίας ἦλθε καὶ ἐσυναπάντησε
τὸ λείψανον τοῦ Πῶρου μὲ κλαυθμόν καὶ ὄδυρόν καὶ μὲ θλίψιν μεγάλην.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 215, line 4

Ἦκούσατε πῶς τὸν Δάρειον, τὸν βασιλέα τῆς Περσίας, ἀφάνισα, ὁμοίως καὶ τὸν φρικτὸν
Πῶρον τῆς Ἰνδίας καὶ πολλοὺς βασιλεῖς ὅπου ἐδούλωσα καὶ τοὺς ἔκαμα διὰ νὰ μὲ ἔχουν ὅλοι
αὐθέντην τους καὶ νὰ μοῦ δίδουν ὅλοι χαράτζιον.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 239, line 1

Καὶ ὁ Δάρειος τοῦ εἶπε· Σύρε παρεμπρὸς νὰ ἰδῇς καὶ τὸν Πῶρον, τὸν βασιλέα τῆς Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 248, line 14

ὁ Δορυφόρος εἶπε· Ἀφῆσόν με, μητέρα μου, νὰ σκοτώσω ἓνα ἄνθρωπον τοῦ Ἀλεξάν- δρου,
ὅπου αὐτὸς πολλὰς χιλιάδες λαὸν μοῦ ἐσκότωσεν, ἀκόμη καὶ τὸν πενθερόν μου Πῶρον, τὸν
βασιλέα τῆς Ἰνδίας, καὶ ὅπου ἡ γυ- ναίκα μου κλαίει μερόνυκτον διὰ τὸν θάνατόν του· καὶ
πίστευσόν με ὅτι ὁ Ἀντίοχος πλέον ζῶν δὲν ἔχει.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 265, line 2

Καὶ ἀνεγίνωσκε τὴν ἐπιστολὴν ὁ Ἀριστοτέλης, καὶ ὁ Ἀλέξανδρος ἐκάθετο εἰς ἓναν θρόνον,
ὅπου εἶχε βήματα δώ- δε- κα, ἐγκοσμημένος· ὁ ὁποῖος ἦτον τοῦ Πῶρου, τοῦ βασιλέως τῆς
Ἰνδίας.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 268, line 10

Καὶ αὐτὴν τὴν ἡμέραν ἤφεράν τον ἓνα ἄνθρωπον ἀπὸ τὴν Ἰνδίαν, καὶ ἔλεγεν ὅτι τέτοιος
τοξότης εἶναι, ὅπου ἀπὸ τὴν μέσην τοῦ δακτυλιδίου διαβαίνει τὴν σαῖτταν.

Historia Alexandri Magni, Recensio ϕ Section 285, line 1

Προσέτι ἀφῆνω τοῦ Πτολεμαίου ὅλην τὴν Αἴγυπτον καὶ τὴν Ἀλεξάνδρειαν· Σελεύκου
τὴν Περσίαν καὶ Βαβυλώνα· Ἀντιγόνου τὴν Κιλικίαν· Φίλωνος τὴν Μηδίαν· Πύθωνος τὴν
Φρυγίαν καὶ Λυ- δίαν· Μελεάγρου τὴν Παφλαγονίαν· Εὐμενίου τὴν Καππαδοκίαν· Κασ-
σάνδρου τὴν Λυκίαν καὶ Ἑλλήσποντον· Λυσιμάχου τὴν Θράκην· Ἀντιπάτρου τὴν Ποντικήν·
Ὁξύαρτου τὴν Βακτριανήν· Φιλίππου τὴν Δραγαῖνην· Ἀντιόχου τὴν Ἰνδίαν· Φραταφέρνην
τὴν Παρθίαν καὶ τὴν Ἑρκανίαν· τὴν δὲ Περσίαν καὶ Μεσοποταμίαν ἀφῆνω τοῦ Ὀβλίου.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408)
(1386: 018) “Das byzantinische Alexandergedicht nach dem codex Marcianus 408
herausgegeben”, Ed. Reichmann, S. Meisenheim am Glan: Hain, 1963; Beiträge zur
klassischen Philologie 13. Line 96

Ἐπέρχεται γὰρ μέγιστον ἔθνος ἡμῖν βαρβάρων, οὐχ ἓν ὑπάρχον τὸ φανέν, πολλὰ δὲ μυ-
ριάδες ἡμῖν κατεπερχόμεναι· πρῶτον Ἰνδῶν τὰ γένη, Ἰβηρες Ὀξυδῶρκες σὺν Νοημαίοις πᾶσιν,
Βοσπόροι καὶ Νοκιμαροι, Χάλβαι, πολὺ τι πλῆθος, ὅσα τε πρὸς ἀνατολὴν ἔθνη Περσῶν ὑπάρ-
χει, ἀναριθμήτοις μαχηταῖς, ἀνδράσι μεγιστάνοις, αὐτὴν πᾶσαν τὴν Αἴγυπτον βουλόμενοι
συστρέψαι.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 2971

Ὅταν ἐπέμφθην παρὰ σοῦ,» προσείρηκε σατράπης, »πρὸς τὸν πατέρα Φίλιππον τούτου τοῦ Μακεδόνος λαβέσθαι φόρους παρ' αὐτοῦ, εἶδον αὐτὸν ἐκεῖσε· ἔγνων γὰρ τούτου φρόνησιν, ἰσχὺν καὶ χαρακτῆρα· εἶπερ οὖν δέχη συμβουλὴν ἐμοῦ τοῦ σοῦ σατράπου, τοὺς Πέρσας ἅπαντας ἐλθεῖν ἐκ πάσης οἰκουμένης μετὰ σπουδῆς σὺ πρόσταξον, ὥσαύτως ἔθνη πάντα τὰ δουλικῶς συνόντα σοι, φημί Βαβυλωνίων, τῶν Ἑλμαίων, Πάρθων τε καὶ Μεσοποταμίων, τῶν Ἰλαυρίων, Χωρανῶν, Βάκτρων, Ἰνδῶν τῶν ἔσω, ἀλλὰ καὶ τοὺς τὰ μέλεθρα ταῦτα Σεμιραμέως, (ἔστι σοι δ' ὀγδοήκοντα σὺν ἑκατὸν τὰ γένη,) στράτευσον ἅπαντας αὐτοὺς Θεῶν τῇ συμμαχίᾳ, καὶ Μακεδόσιν Ἑλλήσιν ἀντιπαραταχθῶμεν· καὶ μὲν μὴ πάρεσμεν αὐτοὶ δυνάμει μαχεσθῆναι καὶ πολεμῆσαι τοῖς ἐχθροῖς, ἀλλ' οὖν γε τούτους μᾶλλον τῷ πλήθει προσφοβήσομεν ποιήσαντες φυγάδας.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 3287

Μαθὼν δὲ Πῶρος ἅπαντα τὰ παρὰ τοῦ Δαρείου τούτῳ γραφέντα δυστυχῶς, πληροῦται λύπη πλείστη, αὐτῷ δὲ προσαντέγραψεν ἐπιστολὴν τοίανδε· »Πῶρος Ἰνδῶν ὁ βασιλεὺς τῷ βασιλεῖ Δαρείῳ Περσῶν, προσαγορεύω σοι καὶ προσλαλῶ σοι χαίρειν.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 3323

Αὐτὴν δὲ τὴν ἐπιστολὴν πᾶσαν ἰδὼν Δαρεῖος ἐδάκρυσεν ἀναμνησθεὶς μητρός, συζύγου, τέκνων, ὁμοῦ προσπαρασόμενος ψυχὴν τε καὶ καρδίαν, καὶ χώραν Βακτριανὴν καὶ πᾶσαν τὴν Ἰνδίαν ὅλην προσεκαλέσατο πρὸς μάχην Ἀλέξανδρου.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 3804

Δαρεῖος ἠντρεπίζετο καὶ πάλιν εἰς τὴν μάχην καὶ πολεμεῖν Ἀλέξανδρον ὁ δυστυχὴς ἐκ τρίτου· ὅθεν Ἰνδῶν τῷ βασιλεῖ τῷ Πῶρῳ γράφει ταῦτα· »Δαρεῖος βασιλεὺς Περσῶν ἀνακτι Πῶρῳ χαίρειν.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 3822

Λοιπὸν αὐτὸς συνάθροισον Ἰνδῶν πάντα τὰ γένη εἰς Πύλας τὰς Κασπιακὰς καὶ τοῖς συνεργομένοις ἀνδράσι σὺ χορήγησον χρυσὸν πολὺν καὶ σίτον καὶ πλείστα τὰ χορτάσματα· πάντα γοῦν τῶν λαφύρων ἔσται σοι τὰ ἡμίσεια· χαρίσομαί σοι μᾶλλον τὸν ἵππον τὸν Βουκέφαλον ὃν οὗτος ἐποχεῖται, ὁ Μακεδόνων τύραννος, ὥσαύτως δίδωμί σοι τὴν πανοπλίαν τὴν αὐτοῦ σὺν παλλακαῖς ταῖς τούτου.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 3832

Λαβὼν οὖν σὺ τὰ γράμματα μετὰ σπουδῆς τῆς πλείστης ἄθροισον πᾶσαν στρατιὰν καὶ στείλον ἡμῖν τάχει· ἔρρωσο, Πῶρε, βασιλεῦ μέγιστε τῆς Ἰνδίας.

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4475

Μετὰ δὲ ταῦτ' Ἀλέξανδρος ἐποίει τὴν πορείαν, τῶν Μακεδόνων ἅπαντα παραλαβὼν τὰ πλήθη, πρὸς βασιλέα τῶν Ἰνδῶν, τὸν προρρηθέντα Πῶρον.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4482

Πολλὴν οὖν ἔρημον ὁδὸν καὶ τόπους διελθόντες ἀνδρῶν, φαραγγῶδεις τε καὶ φοβερούς, κρημνώδεις, πρὸς Μακεδόνας ἔλεγον ἅπαντες οἱ σατράπαι· »Μέχρι Περσίδος ἄρκετὸν ἡμᾶς ποιεῖσθαι μάχην καὶ τὸν Δαρεῖον καθελεῖν, ὡς ἀπαιτοῦντα φόρους ἡμᾶς καὶ πάντας Ἕλληνας· κάμωμεν τί γὰρ ἄρτι ἐρχόμενοι πρὸς τοὺς Ἰνδοὺς εἰς θηριώδεις τόπους, Ἑλλάδι μὴ προσήκοντας, ἠγριωμένους ὄντας;

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4498

Λοιπὸν ὑπόμνησιν ὑμῖν ταύτην ἐγὼ ποιήσω· ὡς τοὺς πολέμους ἐγώ γε τοὺς δυνατοὺς ἐκείνους μόνος αὐτὸς ἐνίκησα, τὴν τῶν Ἰνδῶν δὲ μάχην ἐγὼ κατατροπώσομαι καλλίστῃ συμβουλίᾳ.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4518

Ἀλέξανδρος οὖν τάχιστα πρὸς τῶν Ἰνδῶν τὴν χώραν ἀνδρείως εἰσελήλυθε σὺν πάσῃ τῇ δυνάμει, καὶ προσυπὴντησαν αὐτῷ Πῶρου γραμματοφόροι ἐπιστολὰς κομίζοντες· ἃς καὶ λαβὼν εἰς χεῖρας προσέταξε μέσον στρατοῦ ταύτας ἀναγνωσθῆναι.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4524

Ἔλεγον δὲ τὰ γράμματα κατὰ λεπτὸν τοιάδε· »Πῶρος Ἰνδῶν ὁ βασιλεὺς ὁ μέγας Ἀλέξανδρῳ, τῷ πόλεις καταστρέφοντι, λεηλατοῦντι ταύτας.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4530

Νομίζεις εἶναι σθεναρὸς ὑπὲρ Ἰνδοὺς καὶ μέγας· γίνωσκε γοῦν, Ἀλέξανδρε, μείζων τυγχάνω πάντων, μὴ μόνον μέγας βασιλεὺς ὢν ἐπὶ γῆς ἀνθρώπων, ἀλλ' ἔχω καὶ Διόνυσον Θεὸν προσσυμμαχοῦντα, ὃν καὶ πατέρα τῶν Θεῶν λέγουσι πάντες εἶναι.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4544

Ἄν δὲ καὶ χρεῖαν εἶχομεν Ἑλλάδος, σῆς πατρίδος, Ἰνδοὶ καθυπετάξασι πρῶτοι παρὰ τὸν Ξέρξην, ἀλλ' ὡς μηδὲν κατέχοντας ἄξιον θεωρίας βασιλικῆς ἢ γνώσεως, μᾶλλον δ' ἀχρεῖον ἔθνος, προσαπεστράφημεν ὑμᾶς, μή που καὶ μιανθῶμεν· τὸ κρεῖττον πᾶς ἐπιθυμεῖ καὶ σπεύδει συλλαβέσθαι.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4569

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Περὶ σποτέρως μᾶλλον σὺ προθύμους ἀπειργάσω πρὸς μάχην ὀτρυνθῆναί σοι τοὺς τῶν Ἑλλήνων παῖδας, ὡς τὴν Ἑλλάδα λέγοντα μηδὲν χρηστὸν κατέχειν θεώρημα βασιλικόν, ὑμᾶς δ' Ἰνδοὺς κεκτῆσθαι πάντα τὰ τιμιώτερα, πόλεις χρηστὰς καὶ χώρας.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4602

Ὡς δὲ πλησίον ἦλθον τούτων οἱ Μακεδόνες, Πέρσαι καὶ πάντες Ἕλληνες, Ἀλέξανδρος προσβλέψας μεγάλην τὴν παράταξιν τοῦ Πῶρου, ἐφοβήθη οὐ στρατιώτας τοὺς αὐτοῦ, τούτου δὲ μᾶλλον θήρας· ξένον γὰρ ἦν θεώρημα τῶν φοβερῶν θηρίων· οὐκ ἦν ἡ μάχη πρὸς Ἰνδοὺς, ἀλλὰ πρὸς τὰ θηρία.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4606

Σχῆμα δὲ στρατιωτικὸν περιβαλὼν εἰσῆλθεν, Ἰνδοῖς δόξας ὀφώνια τροφὰς ἐξαγοράσαι· ὄντινα τάχος βασιλεῖ τῷ Πῶρῳ παριστῶσι.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4634

Κατετροποῦντο δὲ λοιπὸν Ἰνδοὺς οἱ Μακεδόνες καὶ τούτους κατεδίωκον σφάττοντες κατὰ κράτος, ἔχοντες Πέρσας ἰσχυροὺς συμμάχους καὶ βαρβάρους, βάλλοντες τούτους βέλεσι, πυκναῖς τοξοβολίαις, πολλὴ δὲ γέγονεν αὐτοῖς ἡ μάχη τοῦ πολέμου.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4639

Νῶτα δεδώκασιν Ἰνδοὶ πᾶσι τοῖς Μακεδόσιν, αὐτὸ δὲ στράτευμα Περσῶν γενναίως ἠνδραγάθει· ἀλλ' ἵππος ὁ Βουκέφαλος ἐξασθενήσας πίπτει καὶ λύπην προέξενσε μεγάλην Ἀλέξανδρῳ· λοιπὸν χαῦνος ὁ πόλεμος ὕστερον ἐγγέγονει.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4644

Ἡμέραις τοίνυν εἴκοσιν Ἰνδοὶ σὺν Μακεδόσι καὶ τοῖς Πέρσαις ἅπασι μάχην πολλὴν ἰστώντες καὶ πόλεμον ἀθροίζοντες ἅπαντες κατ' ἀλλήλων, οὐκ ἴσχυεν Ἀλέξανδρος Ἰνδοὺς κατατροπῶσαι· πολὺ γὰρ ἦν τὸ στράτευμα τὸ τῶν Ἰνδῶν καὶ μέγα· ὅθεν καὶ δειλιάσαντες Πέρσαι σὺν Μακεδόσι σαντούς κατεβουλεύσαντο τῷ Πῶρῳ προδιδόναι.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4655

Εἴθ' οὕτως ἔγραψεν αὐτὸς ἐπιστολὴν τῷ Πῶρῳ, λέγων· «Οὐκ ἔστι, βασιλεῦ, τοῖς σοῖς Ἰνδοῖς καὶ Πέρσαις καὶ πᾶσι Μακεδόσι μου χρηστὰ τὰ τοῦ πολέμου· πάντες γὰρ οὗτοι φθείρονται μαχόμενοι κακίστως.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4673

Ἔσπευδεν οὖν Ἀλέξανδρον ὁ Πῶρος θανατῶσαι· τὰ πλήθη δὲ παρέστασαν πάντα τῶν στρατευμάτων ἐξ ἑκατέρων τῶν μερῶν, Ἰνδῶν καὶ τῶν Ἑλλήνων.

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4685

Ἦρξαντο γοῦν ἀμφοτέρω τὰ πλήθη στρατευμάτων μάχην ποιεῖν πρὸς ἄλληλα καὶ πολεμεῖν καὶ πάλιν· καὶ δούς Ἀλέξανδρος φωνὴν αὐτοῖς Ἰνδοῖς προσέφη· »Ὡ τάλανες καὶ δυστυχεῖς Ἰνδεῖς, τί πολεμεῖτε;

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4694

Εἶπε δ' Ἀλέξανδρος αὐτοῖς· «Παύσασθε πολεμοῦντες· ἀπελευθέρους γὰρ ὑμᾶς ὡς ἀναιτίους ἔχω· ἀπέλθετε, συστράφητε, μὴ τινα φόβον σχόντες· οὐ γὰρ κατετολμήσατε πρὸς τὸ στρατόπεδόν μου· Πῶρος γὰρ κατηνάγκασεν Ἰνδοὺς μαχέσασθαι με.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4811

Αἱ δὲ γυναῖκες πόρρωθεν εἰσὶν ἀποικισμέναι πλησίον Γάγγου ποταμοῦ τοῖς Ἰνδοῖς τοῖς τόποις· οἱ γοῦν Βραχμᾶνοι πρὸς αὐτὰς περῶσι τὰς γυναῖκας καθ' ὃν καιρὸν τὰ πρὸς βορρᾶ ἥλιος ἀνατρέχει, ἐν Ἰουλίῳ τῷ μηνί, τῷ μετ' αὐτὸν Αὐγούστῳ· οἵτινες εὐκρατότεροι γενόμενοι, Βραχμᾶνοι πρὸς οἷστρον διεγείρονται, μιγνύμενοι γυναῖκας.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4909

Εἶθ' οὕτως ἀνεχώρησαν ἀμφοτέρω τὰ μέρη· ὑπέστρεψεν Ἀλέξανδρος ὁδὸν τὴν κατ' εὐθείαν τὴν ἐπὶ πρόσω φέρουσαν Πρασιακὴν τὴν πόλιν, ἥτις ἐστὶ μητρόπολις τῆς Ἰνδικῆς τῆς χώρας, εἰς ἣν καὶ Πῶρος πρότερον ἔτυχε βασιλεύων.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4914

Αὐτῶν δὲ πάντα τῶν Ἰνδῶν καλῶς οἰκονομήσας, ἦλθον τινὲς ἐντόπιοι λέγοντες χρησμολόγοι πρὸς τὸν Ἀλέξανδρον Ἰνδεῖς τὰ μέλλοντα συμβῆναι· »Μέγιστε πάντων βασιλεῦ, λήψη μεγάλας πόλεις, ἀναριθμήτους, θαυμαστάς, ὄρη καὶ βασιλείας, ἅπερ οὐδεὶς τῶν ἑκπαλαι κατηῆξε βασιλέων.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4934

Ἐκάλουν οὖν ὀνόματα δένδροις δυσὶν ἐκείνοις, τοῖς φθεγγομένοις τὴν φωνὴν ὁμοίαν τῶν ἀνθρώπων, τὸ πρῶτον ἄρσεν ἥλιον, τὸ θῆλυ δὲ σελήνην· Ἰνδεῖς δὲ ταῦτα λέγουσι μουθεαμάθους κλήσιν.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4961

Εἶθ' οὕτως ἦλθε σὺν αὐτοῖς ἔσθωθεν τῶν ἀδύτων, ἄνδρας κατέχων ἱκανούς· ὅθεν κελεύει κύκλῳ τούτους τὸν τόπον κατιδεῖν καὶ πάντα κατοπτεῦσαι· καὶ τινὰς δ' ἀπὸ τῶν Ἰνδῶν ἐκεῖ προσεκαλεῖτο καταμαθέσθαι παρ' αὐτῶν πάντα τὰ κεκρυμμένα.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4968

Τοῦ δύναι δὲ τὸν ἥλιον, ὡς σύνηθες, τὸ δένδρον φωνὴν Ἰνδῶν ἐφώνησε φθεγγόμενον ἀρίστως· οἱ δὲ συνόντες σὺν αὐτῷ, πάντα τὰ λαληθέντα καλῶς κατανοήσαντες καὶ σφόδρα φοβηθέντες, οὐκ ἤθελον τῷ βασιλεῖ τὰ τῆς φωνῆς μαθεῖσθαι· σύννοους οὖν οὗτος γεγονώς καὶ τούτους κατὰ μόνας παραλαβὼν ἠρώτησε· «Τίς ἢ φωνὴ τοῦ δένδρου;

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4975

Κρυφίως δ' οὔτοι πρὸς αὐτόν, «Ἀλέξανδρε», προσεῖπον, »ἔχεις κακῶς ἐκ τῶν Ἰνδῶν τὸν βίον ἐξελθεῖν σε.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 4984

Ἀνατελλούσης δὲ λοιπὸν ὡς ἔθος τῆς σελήνης, τὸ δένδρον προσεφώνησεν ἐλληνικῇ τῇ γλώσσῃ· »Ἐν Βαβυλωνί σε θανεῖν, Ἀλέξανδρε, προλέγω· σὺ φονευθεὶς ἐκ τῶν Ἰνδῶν καὶ μᾶλλον οὐ δυνήσῃ, γῆν Μακεδόνων κατιδεῖν ἢ τὴν Ὀλυμπιάδα.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 5006

Ἄμα δὲ τὴν ἀνατολὴν ἡλίου γενομένην καὶ τὴν αὐγὴν ἐλθῆναί τε πρὸς τὴν μορφὴν τοῦ δένδρου, ὅξεϊα φωνὴ γέγονε λέγουσα διαρρήδην· »Ἀλέξανδρε, πεπλήρωται σὸς χρόνος ὁ τοῦ βίου, πλὴν οὐ ταφῆς σὺ πρὸς τὴν γῆν τὴν σὴν Μακεδονίαν ἢ κατιδεῖν μητέρα σὴν οὐκ ἔχεις, ἀλλ' ἐν ταύτῃ τῇ Βαβυλωνί πρὸς μικρὸν κακῶς καταφθαρήσῃ, καὶ μετ' ὀλίγον μήτηρ σή, σύζυγός σου Ῥωξάνη μέλλουσιν αὗται παρ' Ἰνδῶν δεινῶς ἀποκτανθῆναι· λοιπὸν ἐμέ τοῖς ἐμπροσθεν πλέον μὴ διενόχλει· οὐ γὰρ ἀκούσης ἕτερον· ἄπελθε γοῦν τῶν ᾧδε.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 5010

Περίλυπος δὲ γεγονὼς Ἀλέξανδρος καὶ πάλιν, ἐκεῖθεν ἀνεχώρησεν Ἰνδῶν ἐάσας χώραν, καὶ πρὸς τὰ Σεμιράμεως ἀνάκτορα κατῆλθεν.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 5024

Εἰς Αἴγυπτον ἐρχόμενος σὺν πάσῃ μου δυνάμει, κατέμαθον μέσον ὁδοῦ τῶν ἀρετῶν ἐνεῖναι βαμδὸν ἐν τόποις τοῖς ὑμῶν, ὡς μέγα τοῦτον τέρας· ὡσαύτως προσανέμαθον εἶναι Θεοῦ μνημεῖον ἐν πεδιάσιν ἰνδικαῖς, μέγιστον ἡρωεῖον, ἅπερ ἰδεῖν ἐπιθυμῶ καλῶς καὶ κατοπτεῦσαι, καὶ ταῦτα λέξαι πρὸς ὑμᾶς, ὡς πάμπολυν τὸν χρόνον ὑμεῖς ἐκυριεύσατε πάσης τῆς γῆς Αἰγύπτου, τυραννικῶς κατάρχοντες τόπους τοὺς ἀλλοτρίους.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 5031

Εἰ δ' οὐ, πρὸς μάχην ἔρχομαι κακῶς ἐξολοθρεῦσαι χώραν ὑμῶν τὴν τῶν Ἰνδῶν αὐτὴν τὴν ἐσωτέραν.

4.1. HISTORIA ALEXANDRI MAGNI

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 5292

ὁ τῶν Περσῶν καὶ τῶν Ἰνδῶν ὀλέσας δυναστείαν, ὁ στήσας πολλὰ τρόπαια Μήδων τε καὶ τῶν Πάρθων, καὶ πᾶσαν τὴν Ἀνατολὴν καὶ Δύσιν ἐκπορθήσας, ὁ κόσμον ἐκνενικηκώς, χωρὶς αὐτοῦ πολέμου καὶ πάσης ἄλλης στρατιᾶς, γέγονας τῆς Κανδάκης τῆς χήρας ὑποχείριος· λοιπὸν μὴ φρόνει μέγα.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 5317

ἦτις καὶ πρὸς αὐτόν φησιν· «Ἀλέξανδρε, καὶ τοῦτο γενναῖον καὶ βασιλικὸν κακῶς προσεβουλεύσω· ἀλλὰ μὴδὲν ἀγωνιᾶς· μὴ φοβηθῆς, ὦ τέκνον· ὥσπερ γὰρ σύ μου τὸν υἱὸν καὶ τὴν γυναικα τούτου ἐκ τῶν Βεβρύκων ἔσωσας μεγίστη σου φρονήσει, οὕτω καὶ γὰρ φυλάξω σε πάλιν ἐπανελθεῖν σε πρὸς τὰ στρατόπεδα τὰ σά, φόβον μὴ σχῶν μὴδὲνα, σὲ προσφωνοῦσ' Ἀντίγονον· εἰ γὰρ καὶ γνωριούσιν εἶναί σε τὸν Ἀλέξανδρον, ἀποκτενοῦσι ξίφει, ὡς Πῶρον ἀποκτείναντα τὸν τῶν Ἰνδῶν δεσπότην· ἡ γὰρ γυνὴ θάτέρου μου τέκνου, θυγάτηρ Πῶρου.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 5471

Κατεδουλώσαμεν Ἰνδοὺς, καὶ βασιλέας τούτων σὺν ἡγουμένοις τοῖς αὐτῶν, μεγάλα καυχώμενους, ἡττήσαμεν, τῆς ἀνωθεν Προνοίας συμμαχούσης· ὅθεν καὶ φόρους παρ' αὐτῶν λαβόντες οὐκ ὀλίγους, πρὸς τοὺς Βραχμάνους ἤλθομεν καὶ γῆν τῶν μακροβίων, καὶ τούτους κατοπτεύσαντες μεθ' ἱλαροῦ τοῦ τρόπου, καὶ πᾶσαν χώραν τὴν αὐτῶν καὶ πάντα βίον τούτων ἀναμαθόντες ἀκριβῶς, πολλὰ δ' ὠφεληθέντες, καὶ τούτους καταστήσαντες, μὴ τι λαβόντες τούτων (οὐ πράγματα γὰρ πάρεισιν ἐκείνοις τοῖς ἀνδράσιν,)

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 5600

Εἴτ' ἀποπλεύσαντες ἡμεῖς τοῦ ποταμοῦ ταχίστως, νῆσον μεγάλην εὖρομεν ἀπέχουσαν ἡπείρου ἐκμετρητοὺς πρὸς ἑκατὸν εἴκοσι τοὺς σταδίους· εἰς ἣν ἐλθόντες εἶδομεν πόλιν αὐτὴν Ἥλιου, ἔχουσαν πύργους δώδεκα χρυσεούς σμαραγδίνους· τὰ τείχη δὲ τῆς πόλεως ἔξ Ἰνδικοῦ χρυσίου.

Historia Alexandri Magni, Recensio Byzantina poetica (cod. Marcianus 408) Line 6120

Ἐγράφη δὲ πρὸς ἔτεσι τοῖς ἑξακισχιλίοις ἕξ σὺν τοῖς ἐνενήκοντα καὶ τοῖς ὀκτακοσίοις, Ἰνδικτιῶνος ἐν αὐτοῖς τρεχούσης ἐνδεκάτης.

Historia Alexandri Magni, Recensio poetica (recensio R) (1386: 019) “Διήγησις τοῦ Ἀλεξάνδρου. The tale of Alexander. The rhymed version”, Ed. Holton, D. Thessalonica: n.p., 1974; Βυζαντινὴ καὶ Νεοελληνικὴ βιβλιοθήκη. Line 1769

Εἰς ἕξι μέρες τὸ λοιπὸν στὰ ὄρη Ἰνδῶν σῶνουν, ἐκεῖ γὰρ ἀπελεύσασι ὅλοι τοὺς καὶ τεντώνουν.

Historia Alexandri Magni, Recensio poetica (recensio R) Line 1996

Νὰ γράψω ἐπεθύμησα ἐσένα τί ἐγίνη στήν χώραν γὰρ τὴν Ἰνδικήν, ὅπόκαμαν ἐκεῖνοι.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Historia Alexandri Magni, Recensio poetica (recensio R) Line 2026

Ἐλέφαντας ἠύρισκαμεν κι ὅλοι καβαλικέψαν, στὴ χώρα γὰρ τὴν Ἰνδικὴν ἐπήγαν κ' ἐπέ-
ξέψαν.

Historia Alexandri Magni, Recensio poetica (recensio R) Line 2031

Στὴν Ἰνδικὴν ἐδιάβημαν καὶ περικαρτεροῦμε, στὴν ἔρημον κινήσαμε τότες καὶ περπα-
τοῦμε.

Historia Alexandri Magni, Recensio poetica (recensio R) Line 2094

Οἱ ἐντόπιοι μᾶς ὀδηγοῦν κ' ἐπήγαμε μὲ κόπον, μὲ βία γὰρ ἐσώσαμε στῆς Ἰνδικῆς τὸν
τόπον.

Historia Alexandri Magni, Recensio poetica (recensio R) Line 2095

Κ' ἤλθασι ὁκ τοὺς Ἰνδικούς ὀμπρὸς μου νὰ σταθοῦσι κ' εἴπασι· Ἐὼ ἠύρισκονται δένδρα
ὅπου λαλοῦσι.

Historia Alexandri Magni, Recensio poetica (recensio R) Line 2114

Καὶ βασιλεύει ἥλιος, τὰ δένδρη γὰρ λαλοῦσι, καὶ ἡ φωνὴ τοὺς Ἰνδική, δὲν ξεύρω τί μιλοῦσι.

4.2 Claudius Ptolemaeus

Claudius Ptolemy (/ˈtɒləmi/; Greek: Κλαύδιος Πτολεμαῖος, Klaudios Ptolemaios, pronounced [kláwdios ptolēmé:os]; Latin: Claudius Ptolemaeus; c. AD 90 – c. AD 168) was a Greco-Roman writer of Alexandria, known as a mathematician, astronomer, geographer, astrologer, and poet of a single epigram in the Greek Anthology.[1][2] He lived in the city of Alexandria in the Roman province of Egypt, wrote in Greek, and held Roman citizenship.[3] Beyond that, few reliable details of his life are known. His birthplace has been given as Ptolemais Hermiou in the Thebaid in an uncorroborated statement by the 14th century astronomer Theodore Meliteniotes.[4] This is very late, however, and there is no other reason to suppose that he ever lived anywhere else than Alexandria,[4] where he died around AD 168.[5] (From Wikipedia²)

Claudius Ptolemaeus Math., Apotelesmatica (= Tetrabiblos) (0363: 007) “Claudii Ptolemaei opera quae exstant omnia, vol. 3.1”, Ed. Boll, F., Boer, E. Leipzig: Teubner, 1940, Repr. 1957. Book 2, chapter 3, section 22, line 3

τοῦ δὲ δευτέρου τεταρτημορίου τοῦ κατὰ τὸ νότιον μέρος τῆς Μεγάλης Ἀσίας τὰ μὲν ἄλλα
μέρη τὰ περι- ἔχοντα Ἰνδικὴν Ἀριανὴν Γεδρουσίαν Παρθίαν Μηδίαν Περσίδα Βαβυλωνίαν

2. <http://en.wikipedia.org/wiki/Ptolemy>

4.2. CLAUDIUS PTOLEMAEUS

Μεσοποταμίαν Ἀσσυρίαν καὶ τὴν θέσιν ἔχοντα πρὸς νοταπηλιώτην τῆς ὅλης οἰκουμένης εἰκότως καὶ αὐτὰ συνοικεῖται μὲν τῷ νοταπηλιωτικῷ τριγώνῳ Ταύρου καὶ Παρθένου καὶ Αἰγόκερω· οἰκοδε- σποτεῖται δὲ ὑπὸ τοῦ τῆς Ἀφροδίτης καὶ τοῦ τοῦ Κρόνου ἐπὶ ἐφῶν σχημάτων.

Claudius Ptolemaeus Math., Apotelesmatica (= Tetrabiblos) Book 2, chapter 3, section 28, line 6

τῇ δὲ Παρθένῳ καὶ τῷ τοῦ Ἑρμοῦ τὰ περὶ τὴν Βαβυλωνίαν καὶ Μεσοπο- ταμίαν καὶ Ἀσσυρίαν, διό καὶ παρὰ τοῖς ἐνταῦθα τὸ μαθηματικὸν καὶ παρατηρητικὸν τῶν πέντε ἀστέρων ἐξαίρετον συνέπεσε, τῷ δὲ Αἰγόκερῳ καὶ τῷ τοῦ Κρόνου τὰ περὶ τὴν Ἰνδικὴν καὶ Ἀριανὴν καὶ Γεδρουσίαν, ὅθεν καὶ τὸ τῶν νεμομένων τὰς χώρας ἐκείνας ἀμορφον καὶ ἀκάθαρτον καὶ θηριῶδες.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 1-3) (0363: 009) “Claudii Ptolemaei geographia, vol. 1.1”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1883. Book 1, chapter 7, section 6, line 5

Φησὶ γάρ, «ὅτι καὶ οἱ μὲν τῆς Ἰνδικῆς εἰς τὴν Λιμυρικὴν πλέοντες, ὡς φησι Διόδωρος ὁ Σάμιος ἐν τῷ τρίτῳ, ἔχουσι τὸν Ταῦρον μεσουρανοῦντα καὶ τὴν Πλειάδα κατὰ μέσσην τὴν κεραίαν· οἱ δ' εἰς τὴν Ἀζανίαν ἀπὸ τῆς Ἀραβίας ἀναγόμενοι εὐθύνουσι τὸν πλοῦν πρὸς μεσημβρίαν καὶ τὸν Κάνωβον ἀστέρα, ὅστις ἐκεῖ λέγεται Ἴππος καὶ ἐστὶ νοτιώτατος.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 1-3) Book 1, chapter 9, section 1, line 3

Ἐπειτα καὶ κατὰ τὸν μεταξὺ τῶν Ἀρωμά- των καὶ τῶν Ῥάπτων πλοῦν, «Διογένη μὲν τινὰ φησι τῶν εἰς τὴν Ἰνδικὴν πλεόντων ὑπο- στρέφοντα τὸ δεύτερον, ὅτε ἐγένετο κατὰ τὰ Ἀρώματα, ἀπωσθῆναι ἀπαρκτίᾳ, καὶ ἐν δεξιᾷ ἔχοντα τὴν Τρωγλοδυτικὴν ἐπὶ ἡμέρας εἴκοσι πέντε παραγενέσθαι εἰς τὰς λίμνας, ὅθεν ὁ Νεῖ- λος ῥεῖ, ὣν ἐστὶ τὸ τῶν Ῥάπτων ἀκρωτήριον ὀλίγῳ νοτιώτερον· Θεόφιλον δὲ τινὰ τῶν εἰς τὴν Ἀζανίαν πλεόντων ἀπὸ τῶν Ῥάπτων ἀναχθῆ- ναι νότῳ, καὶ εἰκοστῇ ἡμέρᾳ ἐληλυθέναι εἰς τὰ Ἀρώματα.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 1-3) Book 1, chapter 13, section 1, line 3

Στοχάσαιτο δ' ἂν τις τηλικούτον εἶναι τὸ μῆκος καὶ δι' ὧν ἐκτίθεται διαστημάτων κατὰ τὸν πλοῦν τὸν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς μέχρι τοῦ τῶν Σινῶν κόλπου καὶ Καπτιγάρων, ἐὰν τὸ παρὰ τὰς κολπώσεις καὶ τὰς ἀνωμαλίας τῶν πλῶν καὶ ἔτι τὰς θέσεις ἐπιλογίζηται κατὰ συνεγγι- σμὸν τῶν ἐπιβολῶν.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 1-3) Book 1, chapter 14, section 7, line 2

Ἄλλ' ὁ μὲν διὰ τῆς ἀρχῆς τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ μεσημβρινὸς ὀλίγῳ δυτικώτερός ἐστὶ τοῦ βορείου τῆς Ταπρο- βάνης ἀκρωτηρίου κατὰ τὸν Μαρίνον, ὅπερ ἀντίκειται τῷ Κῶρυ· τούτου δ' ἀφέστηκεν ὁ διὰ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Βαίτιος ποταμοῦ ὠριαῖα δια- στήματα ἢ, μοίρας δὲ ρκ', καὶ ἔτι ὁ διὰ τῶν ἐκ- βολῶν τοῦ Βαίτιος τοῦ διὰ τῶν Μακάρων νήσων μοίρας ε'· ὥστε καὶ ὁ μὲν διὰ τοῦ Κῶρυ μεσημ- βρινὸς ἀπέχει τοῦ διὰ τῶν Μακάρων νήσων μι- κρῷ πλεόν

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

μοιρῶν ρκε', ὁ δὲ διὰ Καττιγάρων

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 1-3) Book 1, chapter 16, section 1, line 10

Παρήλθε δέ τινα αὐτὸν καὶ κατὰ τοὺς πε- ριορισμούς, ὡς ὅταν τὴν μὲν Μυσίαν πᾶσαν ἀπ' ἀνατολῶν ὀρίξῃ τῇ Ποντικῇ θαλάσσῃ, τὴν δὲ Θράκην ἀπὸ δυσμῶν Μυσία τῇ ἄνω, καὶ τὴν μὲν Ἰταλίαν ἀπ' ἄρκτων μὴ Ῥαιτία καὶ Νω- ρικῶ μόνον, ἀλλὰ καὶ Παννονία, τὴν δὲ Παν- νονίαν ἀπὸ μεσημβρίας Δαλματία μόνῃ καὶ μηκέτι τῇ Ἰταλία, καὶ τοὺς μὲν μεσογείους Σογδιανούς καὶ τοὺς Σάκας γειτνιάζειν ἀπὸ με- σημβρίας τῇ Ἰνδικῇ, τοὺς δὲ βορειοτέρους τοῦ Ἰμάου ὄρους, ὃ ἐστὶν ἄρκτικώτατον τῆς Ἰνδι- κῆς, δύο παραλλήλους τὸν τε δι' Ἑλλησπόν- του καὶ τὸν διὰ Βυζαντίου μὴ γράφῃ διὰ τῶν εἰρημένων ἐθνῶν, ἀλλὰ πρώτως τὸν διὰ μέσου Πόντου.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 1-3) Book 1, chapter 16, section 1, line 11

ριορισμούς, ὡς ὅταν τὴν μὲν Μυσίαν πᾶσαν ἀπ' ἀνατολῶν ὀρίξῃ τῇ Ποντικῇ θαλάσσῃ, τὴν δὲ Θράκην ἀπὸ δυσμῶν Μυσία τῇ ἄνω, καὶ τὴν μὲν Ἰταλίαν ἀπ' ἄρκτων μὴ Ῥαιτία καὶ Νω- ρικῶ μόνον, ἀλλὰ καὶ Παννονία, τὴν δὲ Παν- νονίαν ἀπὸ μεσημβρίας Δαλματία μόνῃ καὶ μηκέτι τῇ Ἰταλία, καὶ τοὺς μὲν μεσογείους Σογδιανούς καὶ τοὺς Σάκας γειτνιάζειν ἀπὸ με- σημβρίας τῇ Ἰνδικῇ, τοὺς δὲ βορειοτέρους τοῦ Ἰμάου ὄρους, ὃ ἐστὶν ἄρκτικώτατον τῆς Ἰνδι- κῆς, δύο παραλλήλους τὸν τε δι' Ἑλλησπόν- του καὶ τὸν διὰ Βυζαντίου μὴ γράφῃ διὰ τῶν εἰρημένων ἐθνῶν, ἀλλὰ πρώτως τὸν διὰ μέσου Πόντου.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 1-3) Book 1, chapter 17, section 3, line 2

Καὶ πάλιν τὰ Σήμυλλα τὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐμπόριον μὴ μόνον τοῦ Μαρέως ἀκρωτηρίου δυτι- κώτερον ὑπ' αὐτοῦ τεθειμένον, ἀλλὰ καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ· μό- νον γὰρ μεσημβρινώτερον ὁμολογεῖται τῶν στο- μάτων εἶναι τοῦ ποταμοῦ παρὰ τε τῶν ἐντεῦθεν εἰσπλευσάντων καὶ χρόνον πλεῖστον ἐπελθόν- των τοὺς τόπους καὶ παρὰ τῶν ἐκεῖθεν ἀφικομέ- νων πρὸς ἡμᾶς, καλούμενον ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων Τίμουλα· παρ' ὧν καὶ τὰ τε ἄλλα τὰ

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 1-3) Book 1, chapter 17, section 4, line 2

τοῦ Μαρέως ἀκρωτηρίου δυτικώτερον ὑπ' αὐτοῦ τεθειμένον, ἀλλὰ καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ· μό- νον γὰρ μεσημβρινώτερον ὁμολογεῖται τῶν στο- μάτων εἶναι τοῦ ποταμοῦ παρὰ τε τῶν ἐντεῦθεν εἰσπλευσάντων καὶ χρόνον πλεῖστον ἐπελθόν- των τοὺς τόπους καὶ παρὰ τῶν ἐκεῖθεν ἀφικομέ- νων πρὸς ἡμᾶς, καλούμενον ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων Τίμουλα· παρ' ὧν καὶ τὰ τε ἄλλα τὰ περὶ τὴν Ἰνδικὴν μερικώτερον καὶ κατ' ἐπαρ- χίας ἐμάθομεν καὶ τὰ ταύτης τῆς χώρας ἐνδο- τέρω μέχρι τῆς Χρυσῆς Χερσονήσου καὶ ἐντεῦ- θεν ἕως τῶν Καττιγάρων, τὸ μὲν ὅτι πρὸς ἀνατολὰς ἐστὶν ὁ πλοῦς εἰσπλεόντων καὶ πάλιν ἐξόντων πρὸς δυσμὰς συνιστορούντων, τὸ δ' ἄτακτον καὶ ἀνώμαλον τοῦ χρόνου τῶν διανύ- σεων προσομολογούντων, καὶ ὅτι ὑπέγκειται τῶν Σινῶν ἢ τε τῶν Σηρῶν χώρα καὶ ἡ μητρό- πολις, καὶ τὰ ἀνατολικώτερα τούτων ἄγνωστός

4.2. CLAUDIUS PTOLEMAEUS

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 1-3) Book 1, chapter 17, section 4, line 17

ἄτακτον καὶ ἀνώμαλον τοῦ χρόνου τῶν διανύ- σεων προσομολογούντων, καὶ ὅτι ὑπέρκειται τῶν Σινῶν ἢ τε τῶν Σηρῶν χώρα καὶ ἡ μητρό- πολις, καὶ τὰ ἀνατολικώτερα τούτων ἄγνωστός ἐστι γῆ λίμνας ἔχουσα ἐλώδεις, ἐν αἷς κάλα- μοι μεγάλοι φύονται καὶ συνεχεῖς οὕτως, ὥστε ἐχομένους αὐτῶν ποιῆσθαι τὰς διαπεραιώσεις· καὶ ὅτι οὐ μόνον ἐπὶ τὴν Βακτριανὴν ἐντεῦθεν ἐστὶν ὁδὸς διὰ τοῦ Λιθίνου πύργου, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τὴν Ἰνδικὴν διὰ Παλιμβόθρων· ἡ δὲ ἀπὸ τῆς μητροπόλεως τῶν Σινῶν ἐπὶ τὸν ὄρμον τὰ Καττίγαρα πρὸς δυσμὰς ἐστὶ καὶ μεσημβριαν, ὡς διὰ τοῦτο μὴ πίπτειν αὐτὴν κατὰ τὸν διὰ τῆς Σήρας καὶ τῶν Καττιγάρων μεσημβρινόν, ἐξ ᾧ φησιν ὁ Μαρίνος, ἀλλὰ κατὰ τινὰ τῶν ἀνατολικωτέρων.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) (0363: 014) “Claudii Ptolemaei geographia, vols. 1-2”, Ed. Nobbe, C.F.A. Leipzig: Teubner, 1:1843; 2:1845, Repr. 1966.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 8, section 2, line 4

Ἡ Καρμανία περιορίζεται ἀπὸ μὲν <ἄρκτων> τῇ ἐκτεθειμένῃ μεσημβρινῇ πλευρᾷ τῆς Ἑρήμου Καρ- μανίας, ἀπὸ δὲ <ἀνατολῶν> Γεδρωσία παρὰ Περσι- καὶ ὄρη κατὰ τὴν δι’ αὐτῶν ἐπιzeugνυμένην μεσημβρι- νὴν γραμμὴν, ἀπὸ τοῦ πρὸς τῇ Ἑρήμῳ πέρατος μέχρι τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους κατὰ θέσιν ἐπέχουσιν μοίρας .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 8, section 6, line 1

..... ρ<δ> κ<β> §· ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> μέρος τοῦ Ἰνδικοῦ πε- λάγους τῷ μέχρι τοῦ εἰρημένου πέρατος, οὗ ἡ περι- γραφή ἔχει οὕτως· Μετὰ τὴν Καρπέλαν ἄκραν ἐν τῷ Παράγοντι κόλπῳ, Κανθάτις πόλις .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 8, section 10, line 1

..... <ρ>γ δ’ <κ> ζ’· μεθ’ ᾧ τὸ εἰρημένον μέχρι τοῦ Ἰνδικοῦ πελά- γους πέρας ἐπέχει μοίρας .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 8, section 16, line 1

..... ρ<ε> γ’ κ<ε> §· ἐν δὲ τῷ Ἰνδικῷ πελάγει Πάλλα ἢ Πόλλα .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 12, section 6, line 4

..... ρι<γ> <μ>δ γ’ Ἰνδικομορδᾶνα .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 15, section 1, line 9

..... <ρ>ξ λ<ε> ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> μέρος τῆς ἐκτὸς Γάγγου ποτα- μοῦ Ἰνδικῆς κατὰ τὴν ἐπιzeugνύουσαν τὰ ἐκτεθειμένα πέρατα κατὰ παράλληλον γραμμὴν.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 16, section 1, line 10

..... <ρ>π λε ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> τῷ τε λοιπῷ μέρει τῆς ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικῆς διὰ τῆς αὐτῆς παραλλήλου γραμμῆς μέχρι πέρατος, οὗ ἡ θέσις ἐπέχει μοίρας .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 18, section 1, line 4

Οἱ Παροπανισάδαι περιορίζονται ἀπὸ μὲν <δύσεως> Ἀρείᾳ παρὰ τὴν εἰρημένην πλευρὰν, ἀπὸ δὲ <ἄρκτων> τῷ ἐκτεθειμένῳ μέρει τῆς Βακτριανῆς, ἀπὸ δὲ <ἀνατολῶν> 20 Ἰνδικῆς μέρει τῇ ἀπὸ τῶν πηγῶν τοῦ Ὠξοῦ ποταμοῦ διὰ τῶν Καυκασίων ὁρῶν ἐκβαλλομένη μεσημβρινῇ γραμμῇ μέχρι πέρατος, οὗ ἡ θέσις ἐπέχει μοίρας .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 20, section 1, line 4

Ἡ Ἀραχωσία περιορίζεται ἀπὸ μὲν <δύσεως> Δραγγιανῇ, ἀπὸ δὲ <ἄρκτων> Παροπανισάδαις κατὰ τὰς ἐκτεθειμένας αὐτῶν πλευράς, ἀπὸ δὲ <ἀνατολῶν> 20 Ἰνδικῆς μέρει κατὰ μεσημβρινῇ γραμμῇ τὴν ἐκβαλλομένην ἀπὸ τοῦ πρὸς τοῖς Παροπανισάδαις ὀρίου μέχρι πέρατος, οὗ ἡ θέσις ἐπέχει μοίρας .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 20, section 2, line 2

Ἐμβάλλει δὲ εἰς τὴν χώραν ποταμὸς ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ ἐκτρεπόμενος, οὗ αἱ πηγαὶ ἐπέχουσι μοίρας .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 21, section 1, line 5

Ἡ Γέδρωσία περιορίζεται ἀπὸ μὲν <δύσεως> Καρμανία κατὰ τὴν ἐκτεθειμένην μέχρι θαλάσσης μεσημβρινῇ γραμμῇ, ἀπὸ δὲ ἄρκτων Δραγγιανῇ καὶ Ἀραχωσία παρὰ τὰς διωρισμένας αὐτῶν μεσημβρινὰς γραμμάς, ἀπὸ δὲ <ἀνατολῶν> 20 Ἰνδικῆς μέρει παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν κατὰ τὴν ἐκβαλλομένην γραμμῇ ἀπὸ τοῦ πρὸς τῇ Ἀραχωσίᾳ ὀρίου μέχρι τοῦ ἐπὶ θαλάσσης πέρατος, ὃ ἐπέχει μοίρας .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 21, section 1, line 9

.... <ρ>θ <κ> ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> μέρει τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους, οὗ ἡ περιγραφὴ ἔχει οὕτως· μετὰ τὸ πρὸς τῇ Καρμανίᾳ πέρας Ἀράβιος ποταμοῦ ἐκβολαί .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 21, section 3, line 5

..... ρι<γ> <κ>ς ☐ ἂφ' ὧν εἰς τὸν Ἰνδὸν ἐμβάλλουσιν τινες ποταμοί, ὧν τοῦ ἐνὸς ἡ πηγὴ .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 6, chapter 21, section 4, line 9

4.2. CLAUDIUS PTOLEMAEUS

Τὰ μὲν οὖν ἐπὶ θαλάσῃ τῆς χώρας κατέχουσιν <Ἀρβιτῶν> κῶμαι, τὰ δὲ παρὰ τὴν Καρμανίαν <Παρσίδαι> (ἢ Παρσίραι), τὰ δὲ παρὰ τὴν Ἀραχωσίαν <Μουσαρναῖοι>, ἡ δὲ μέση τῆς χώρας πᾶσα κα- λεῖται <Παραδηνή>, καὶ ὑπ' αὐτὴν <Παρισινή>, μεθ' ἣν τὰ πρὸς τῷ Ἰνδῷ κατέ- χουσι <Ράμναι>. Πόλεις δὲ καὶ κῶμαι τῆς Γεδρωσίας καταλέγον- ται αἰδε- Κούνη .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter C, section 1, line 1

[Πίναξ δέκατος] Ἰνδικῆς τῆς ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ. [Πίναξ ἐνδέκατος] Ἰνδικῆς τῆς ἐκτὸς Γάγγου ποταμοῦ. Σινῶν. [Πίναξ δωδέκατος] Ταπροβάνης νήσου καὶ τῶν περὶ αὐτήν. Ὑπο- γραφὴ κεφαλαιώδης τοῦ τῆς οἴκου- μένης πίνακος. Κρικωτῆς σφαίρας μετὰ τῆς οἰκουμένης κατα- γραφὴ.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section T, line 1

Τῆς ἐντὸς Γάγγου Ἰνδικῆς θέσις.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 1, line 1

Ἡ ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ Ἰνδικὴ περιορίζεται ἀπὸ μὲν <δύσεως> Παροπανισάδαις καὶ Ἀραχωσία καὶ Γεδρωσία παρὰ τὰς ἐκτεθειμένας αὐτῶν ἀνατολικὰς πλευράς, ἀπὸ δὲ <ἄρ- κτων> Ἰμάῳ ὅρει παρὰ τοὺς ὑπερ- κειμένους αὐτοῦ Σογδιαίους καὶ Σάκας· ἀπὸ δὲ <ἀνα- τολῶν> τῷ Γάγγῃ ποταμῷ, ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> καὶ ἔτι <δύσεως> μέρει τοῦ Ἰνδικοῦ πελά- γους, οὗ ἡ παρα- λία ἔχει περιγραφὴν τοιαύτην· Συραστηνῆς ἐν κόλπῳ, καλουμένῳ Κάνθι, ναύσταθμον ὅρμος .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 2, line 3

..... ρ<θ> ¶' <κ> τὸ δυσμικώτατον τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ στόμα, ὃ καλεῖται Σάγαπα .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 2, line 5

..... ρ<ι> γ' ι<θ> ¶' γ' τὸ ἐφεξῆς αὐτοῦ τοῦ Ἰνδοῦ, ὃ κα- λεῖται Σίνθων .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 19, line 2

. ρμ<η> ¶' <ι>η δ' . Ὅρη δὲ ὀνομάζεται ἐν τῷ καλουμένῳ τμή- ματι τῆς Ἰνδικῆς τὰ τε Ἀπόκοπα, ἃ καλεῖται Ποινὰ Θεῶν, ὧν τὰ πέρατα ἐπέχει μοίρας.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 26, line 1

Ἡ δὲ τάξις τῶν εἰς τὸν Ἰνδὸν ῥεόντων πο- ταμῶν ἀπὸ τοῦ Ἰμάου ὅρους οὕτως ἔχει· Κῶα ποταμοῦ πηγαί .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 26, line 5

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

- ρκ<β> §' λ<ς> τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ πηγαί .
 Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 27, line
 2
- ρλ<α> λ<ε> §' · Ζαράδρου ποταμοῦ πηγαί ρλ<β> λ<ς> συμβολή Κῶα καὶ Ἰνδοῦ .
 Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 27, line
 4
- ... ρκ<β> §' λ<α> γο' συμβολή Ζαράδρου καὶ Ἰνδοῦ .
 Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 28, line
 1
- .. ρκ<ς> §' λ<α> §' συμβολή Βιδάσπου καὶ Σανδαβάλ ρκ<ς> γο' λ<β> γο' ἐκτροπή
 ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ εἰς τὸ Οὐῖνδιον ὄρος .
 Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 28, line
 4
- ρκ<ζ> κ<ζ> ἐκτροπή τοῦ Ἰνδοῦ εἰς τὴν Ἀραχω-σίαν .
 Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 28, line
 9
- ρι<ε> κ<δ> §' ἐκτροπή τοῦ Ἰνδοῦ εἰς τὰ Ἄρβιτα ὄρη ρι<ζ> κ<ε> ς' ἐκτροπή τοῦ
 Ἰνδοῦ εἰς τοὺς Παρο-πανισάδας .
 Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 28, line
 12
- ρκ<δ> §' λ<α> γ' ἐκτροπή τοῦ Ἰνδοῦ εἰς τὸ Σάγαπα στόμα .
 Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 28, line
 14
- ρι<γ> γο' κ<γ> δ' ἀπὸ δὲ τοῦ Σάγαπα εἰς τὸν Ἰνδὸν ρι<α> κ<α> §' ἐκτροπή
 τοῦ Ἰνδοῦ εἰς τὸ Χρυσοῦν στόμα .
 Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 28, line
 17
- ρι<β> §' κ<β> ἐκτροπή τοῦ Ἰνδοῦ εἰς τὸ Χαρίφου στόμα .
 Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 42, line
 7
- Ἡ δὲ τῶν ἐν τούτῳ τῷ τμήματι χωρῶν καὶ τῶν ἐν αὐτῷ πόλεων ἡ καμῶν τάξις ἔχει
 τὸν τρόπον τοῦτον· ὑπὸ μὲν γὰρ τὰς τοῦ Κῶα πηγὰς ἱδρυνται <Λαμβάται>, καὶ ἡ ὄρεινὴ
 αὐτῶν ἀνατείνει μέχρι τῆς τῶν Καμηδῶν, ὑπὸ δὲ τὰς τοῦ Σουάστου ἡ <Σουαστηνὴ>, ὑπὸ δὲ
 τὰς τοῦ Ἰνδοῦ <Δαράδραι>, καὶ ἡ ὄρεινὴ αὐτῶν ὑπέρεκται· ὑπὸ δὲ τὰς τοῦ Βιδάσπου καὶ τοῦ
 Σανδαβάλ καὶ τοῦ Ἄδριος πηγὰς ἡ <Κασπειρία>, ὑπὸ δὲ τὰς Βιβάσιος καὶ τοῦ Ζαράδρου
 καὶ τοῦ Δια-μόυνα καὶ τοῦ Γάγγου ἡ <Κυλινδρινή>, καὶ ὑπὸ μὲν τοὺς Λαμβάτας καὶ τὴν
 Σουαστηνὴν ἡ <Γωρυαῖα>, καὶ πόλεις αἰδε· Καίसानα .

4.2. CLAUDIUS PTOLEMAEUS

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 44, line 1

..... ρ<κ> β' <λ>β β' · μεταξύ δὲ τοῦ Σουάστου καὶ τοῦ Ἰνδοῦ <Γαν- δάροι> καὶ πόλεις αἶδε· Προκλαῖς .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 45, line 1

..... ρκ<δ> γ' <λ>γ γ' · μεταξύ δὲ τοῦ Ἰνδοῦ καὶ τοῦ Βιδάσπου πρὸς μὲν τῷ Ἰνδῷ ἡ <Ἄρσα> χώρα καὶ πόλεις αἶδε· Ἰθάγουρος .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 49, line 5

..... ρκ<η> <λ> β' Ἀρδόνη ρ<κ>ς δ' <λ> ς' Ἰνδάβαρα .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 55, line 2

Πάλιν ἡ μὲν παρὰ τὸ λοιπὸν μέρος τοῦ Ἰν- δοῦ πᾶσα καλεῖται κοινῶς μὲν <Ἰνδοσκυθία>, ταύτης δὲ ἡ μὲν παρὰ τὸν διαμε- ρισμὸν τῶν στομάτων <Παταληνή>, καὶ ἡ ὑπερκειμένη αὐτῆς <Ἀβιρία>, ἡ δὲ περὶ τὰ στόματα τοῦ Ἰνδοῦ καὶ ἡ περὶ τὸν Κάνθι κόλπον <Συραστηνή>· καὶ πόλεις τῆς Ἰνδοσκυθίας αἶδε· ἀπὸ μὲν <δύσεως> τοῦ ποταμοῦ ἄποθεν· Ἀρτοάρτα .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 62, line 1

Τῆς δὲ Ἰνδοσκυθίας τὰ ἀπὸ ἀνατολῶν, τὰ μὲν ἀπὸ θαλάσσης κατέχει ἡ <Λαρική> χώρα, ἐν ἣ με- σόγειοι ἀπὸ μὲν δύσεως τοῦ Ναμάδου ποταμοῦ πό- λεις ἦδε· Βαρύγαζα ἐμπόριον .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 64, line 4

Τὰ δὲ ὑπερ- κείμενα κατανέμονται <Πουλῖνδαι Ἀγριοφάγοι>, καὶ ὑπὲρ αὐτοὺς ἔτι <Χα- τριαῖοι>, ἐν οἷς ἀπὸ δύσεως καὶ ἀπ' ἀνατολῶν τοῦ Ἰνδοῦ πο- ταμοῦ πόλεις αἶδε· Νιγρανί- γραμμα .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 83, line 6

..... <ρ>κ <κ> δ' Ταβασώ ρκ<α> β' <κ> γο' Ἰνδη .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 1, section 94, line 1

Νῆσοι δὲ παράκεινται τῷ ἐκκειμένῳ τῆς Ἰνδικῆς μέρει, ἐν μὲν τῷ Κάνθι κόλπῳ, Βαράκη .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 2, section T, line 1

Τῆς ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικῆς θέσις.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 2, section 1, line 1

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Ἡ ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικὴ περιορίζεται ἀπὸ μὲν <δύσεως> τῷ Γάγγῃ ποταμῷ, ἀπὸ δὲ <ἀρκτων> τοῖς ἐκτεθειμένοις μέρεσι τῆς τε Σκυθίας καὶ τῆς Σηρικῆς, ἀπὸ δὲ <ἀνατολῶν> τοῖς τε Σίναις κατὰ τὴν ἀπὸ τοῦ πρὸς τῇ Σηρικῇ πέρας ἐκβαλλομένην με- σημβρινὴν γραμμὴν μέχρι τοῦ καλουμένου Μεγάλου κόλπου, καὶ αὐτῷ τῷ κόλπῳ, ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> τῷ τε Ἰνδικῷ πελάγει καὶ μέρει τῆς Πρασώδους θα- λάσσης, ἥτις ἀπὸ τῆς Μενουθιάδος νήσου διατείνει κατὰ παράλληλον γραμμὴν μέχρι τῶν ἀντικειμένων

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 2, section 18, line

5

Πάλιν δὲ μεταξὺ τοῦ Βηπύργου ὄρους καὶ τῶν Δαμάσων ὄρων τὰ μὲν ἀρκτικώτατα κατέχου- σιν <Ἀνινάχαι> (ἢ Ἀμι- νάχαι), ὑπὸ δὲ τούτους <Ἰνδαπράθαι>, μεθ' οὓς <Ἰβηρίγ- γαι>, εἴτα <Δαβάσαι> (ἢ Δα- μάσαι?).

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 2, section 20, line

6

ὁ σημαίνει <γυμνῶν κόσμος>· καὶ μεταξὺ τῶν Δαμάσων ὄρων καὶ τοῦ πρὸς τοὺς Σίνας ὄριου ἀρκτικώτατοι <Κάκοβαι>· καὶ ὑπὸ τούτους <Βασανᾶραι>· εἴτα ἡ <Χαλκίτις> χώρα, ἐν ᾗ πλείστα μέταλλα χαλκοῦ· ὑπὸ δὲ ταύτην μέχρι τοῦ Με- γάλου κόλπου <Κουδοῦται> καὶ <Βάξραι> μεθ' οὓς <Ἰνδοί>, εἴτα <Δοᾶναι> παρὰ τὸν ὁμώνυμον ποταμόν· καὶ μετὰ τούτους ὀρεινὴ συνάπτουσα τῇ τῶν <Ληστῶν> χώρα, τίγρεις ἔχουσα καὶ ἐλέφαντας· αὐτοὺς δὲ τοὺς τῶν Ληστῶν χώραν κατανεμομένους θηριώδεις τε εἶναι λέγουσι καὶ ἐν σπηλαίοις οἰκοῦν- τας καὶ τὸ δέρμα ἔχοντας παραπλήσιον <ἵππων> πο- ταμίων, ὥς μὴ διακόπτεσθαι βέλεσιν.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 2, section 26, line

2

Νῆσοι δὲ φέρονται κατὰ τοῦ ἐκκειμένου τῆς Ἰν- δικῆς τμήματος αἶδε· Βαζακάτα .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 3, section 1, line

4

Οἱ Σῖναι περιορίζονται ἀπὸ μὲν <ἀρκτων> τῷ ἐκτεθειμένῳ μέρει τῆς Σηρικῆς, ἀπὸ δὲ <ἀνα- τολῶν> καὶ <μεσημβρίας> ἀγνώστῳ γῇ, ἀπὸ δὲ <δύσεως> τῇ ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικῇ κατὰ τὴν διωρισμένην μέχρι τοῦ Μεγάλου κόλπου γραμμὴν, καὶ αὐτῷ τῷ Μεγάλῳ κόλπῳ καὶ τοῖς ἐφεξῆς αὐτῷ κειμένοις, τῷ τε καλου- μένῳ Θηριώδει καὶ τῷ τῶν Σινῶν, ὃν περιοικοῦσιν <Ἰχθυοφάγοι Αἰθίοπες>, κατὰ περιγραφὴν τοι- αύτην· μετὰ τὸ πρὸς τῇ Ἰνδικῇ τοῦ κόλπου ὄριον, Ἀσπίθρα ποταμοῦ ἐκβολαί .

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 4, section 1, line

1

Τῷ δὲ Κῶρυ ἀκρωτηρίῳ, τῷ τῆς Ἰνδικῆς, ἀν- τίκειται τὸ τῆς Ταπροβάνης νήσου ἄκρον, ἥτις ἐκαλεῖ- το πάλαι Σιμούνδου, νῦν δὲ Σαλίκη· καὶ οἱ κατέχον- τες αὐτὴν κοινῶς <Σάλαι>, μαλλοῖς γυναικείοις εἰς ἅπαν ἀναδεδεμένοι.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 5, section 2, line

6

4.2. CLAUDIUS PTOLEMAEUS

Τῆς γῆς τὸ κατὰ τὴν ἡμετέραν οἰκουμένην μέρος περιορίζεται ἀπὸ μὲν <ἀνατολῶν> ἀγνώ-
στω γῆ τῇ παρακειμένη τοῖς ἀνατολικοῖς ἔθνεσι τῆς Μεγάλης Ἀσίας Σίναις τε καὶ τοῖς ἐν τῇ
Σηρικῇ, ἀπὸ δὲ <με- σημβρίας> ὁμοίως ἀγνώστω γῆ νῇ περικλειούσῃ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος καὶ
τῇ περιεχούσῃ τὴν ἀπὸ μεσημ- βρίας τῆς Λιβύης Αἰθιοπίαν Ἀγίσυμβα χώραν καλου- μένην,
ἀπὸ δὲ <δυσμῶν> τῇ τε ἀγνώστῃ γῆ τῇ περι- λαμβανούσῃ τὸν Αἰθιοπικὸν κόλπον τῆς Λιβύης,
καὶ τῷ ἐφεξῆς δυτικῷ Ὠκεανῷ, παρακειμένῳ τοῖς τῆς Λι- βύης καὶ τῆς Εὐρώπης δυσμικωτά-
τοις μέρεσιν, ἀπ' <ἀρκτων> δὲ τῷ συνημμένῳ ὠκεανῷ, τῷ περιέχοντι τὰς Βρετανικὰς νήσους
καὶ τὰ βορειότατα τῆς Εὐρώπης, καλουμένῳ δὲ Δουηκαλυδονίῳ τε καὶ Σαρματικῷ καὶ τῇ
ἀγνώστω γῆ παρακειμένη ταῖς ἀρκτικωτάταις

χώ-

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 5, section 4, line

4

Ἡ δὲ Ὑρκανία ἢ καὶ Κασπία θάλασσα πάντοθεν ὑπὸ τῆς γῆς περικέκλεισται νήσῳ κατὰ
τὸ ἀντικείμενον παραπλησίως· ὁμοίως δὲ καὶ ἡ περὶ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος πᾶσα μετὰ τῶν συν-
ημμένων αὐτῇ κόλπων παρὰ τε τὸν Ἀράβιον κόλπον καὶ τὸν Περσι- κόν, καὶ τὸν Γαγγητικόν,
καὶ τὸν ἰδίως καλούμενον Μέγαν κόλπον, περιεχομένη καὶ αὐτὴ πάντοθεν ὑπὸ τῆς γῆς.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 5, section 5, line

5

Διὸ καὶ τῶν τριῶν ἡπείρων ἡ μὲν <Ἀσία> συν- ἅπτει τῇ τε Λιβύῃ, καὶ διὰ τοῦ κατὰ τὴν
Ἀραβίαν αὐχένος, ὅς καὶ χωρίζει τὴν καθ' ἡμᾶς θάλασσαν ἀπὸ τοῦ Ἀραβικοῦ κόλπου, καὶ
διὰ τῆς περιεχύσεως τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος ἀγνώστου γῆς.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 7, chapter 5, section 9, line

3

Ὅμοίως δὲ καὶ τῶν εἰρημένων ἐμπεριέχεσθαι τῇ γῇ <θαλασσῶν>, πρώτη μὲν ἐστὶ μεγέθει
πάλιν ἢ κατὰ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος, δευτέρα δὲ ἢ καθ' ἡμᾶς, τρίτη δὲ ἡ Ὑρκανία ἢ καὶ Κασπία.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 1, section 3, line

2

Παρὰ γὰρ ταύτην τὴν αἰτίαν τὸ μὲν Ἰνδικὸν πέλαγος μετὰ τὴν Ταπρο- βάνην ἐπὶ τὰς
ἀρκτους ἀπέστρεψαν, ἐνστάντος αὐτοῖς τοῦ πίνακος πρὸς τὴν ἐπὶ τὰς ἀνατολὰς προχώρησιν,
ἐπεὶ μηδὲν εἶχε τοιοῦτον ἐπὶ τῆς ὑπερκειμένης κατὰ τὸ βόρειον Σκυθίας ἀντιπαραγράφειν.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 1, section 4, line

4

Τὸν δὲ δυτικὸν Ὠκεανὸν ἐπὶ τὰς ἀνατολὰς ἀπέστρεψαν πάλιν, ἐνστάντος αὐτοῖς τοῦ πί-
νακος ἐπὶ τὴν μεσημβρινὴν διάστασιν, ἐπεὶ μηδ' ἐνταῦθα τὸ τῆς ἐντὸς Λιβύης βάθος ἢ τὸ τῆς
Ἰνδικῆς εἶχε τι δυνάμε- νον κατὰ τὸ συνεχές ἀντιπαρασταθῆναι τῇ δυτικῇ παραλίῳ· ὥς καὶ
διὰ τὰ τοιαῦτα τὴν περὶ τοῦ περιῆ- ρεῖσθαι τὴν γῆν ὅλην τῷ Ὠκεανῷ δόξαν ἄρξασθαι μὲν
ἀπὸ γραφικῶν ἀμαρτημάτων, καταστρέφαι δὲ εἰς ἀσύστατον ἱστορίαν.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 16, section 2, line 3

Περιορίζεται δὲ ὁ πίναξ ἀπὸ μὲν <ἀνατολῶν> Ἀραβίῳ κόλπῳ καὶ Ἐρυθρᾷ θαλάσῃ καὶ Βαρβαρικῇ πελάγει καὶ μέρει τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους, ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> ἀγνώστῃ γῇ, καὶ ἀπὸ <δύσεως> ἀγνώστῃ γῇ καὶ δυτικῇ Ὠκεανῷ, ἀπὸ δὲ <ἄρκτων> ταῖς τε δυσὶ Μαυριτανίαις καὶ Ἀφρικῇ καὶ Κυρηναϊκῇ καὶ Αἰγύπτῳ.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 22, section 2, line 2

Περιορίζεται δὲ ὁ πίναξ ἀπὸ μὲν <ἀνατολῶν> Γεδρωσίᾳ καὶ Ἰνδικῇ πελάγει, ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> αὐτῷ τῷ Ἰνδικῷ πελάγει καὶ τῇ Ἐρυθρᾷ θαλάσῃ, ἀπὸ δὲ <δύσεως> Ἀραβικῷ κόλπῳ, ἀπὸ δὲ <ἄρκτων> ταῖς δυσὶν Ἀραβίαις τῇ τε Πετραίᾳ καὶ τῇ Ἐρήμῳ καὶ τῷ Περσικῷ κόλπῳ καὶ τῇ Ἐρήμῳ Καρμανίᾳ.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 23, section 2, line 3

Περιορίζεται δὲ ὁ πίναξ ἀπὸ μὲν <ἀνατολῶν> τῇ ἐντὸς Ἰμάου ὄρους Σκυθίᾳ, ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> τῷ τε ὑπὲρ τὴν ἐντὸς τε καὶ ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικὴν Ἰμάῳ ὄρει καὶ Παροπανισάδαις καὶ Ἀρείᾳ τῇ τε Παρθίᾳ καὶ μέρει τῆς Ὑρκανίας θαλάσσης, ἀπὸ δὲ <δύσεως> μέρει τε Μηδίας καὶ Ὑρκανίας θαλάσσης καὶ τῇ ἐν Ἀσίᾳ Σαρματίᾳ, ἀπὸ δὲ <ἄρκτων> ἀγνώστῃ γῇ.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 24, section 2, line 3

Περιορίζεται δὲ ὁ πίναξ ἀπὸ μὲν <ἄρκτων> καὶ <ἀνατολῶν> ἀγνώστῃ γῇ, ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> Σίναις τε καὶ μέρει τῆς Ἰνδικῆς, ἀπὸ δὲ <δύσεως> τοῖς τε Σάκαις καὶ τῇ ἐντὸς Ἰμάου ὄρους Σκυθίᾳ.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 25, section 2, line 2

Περιορίζεται δὲ ὁ πίναξ ἀπὸ μὲν <ἀνατολῶν> Ἰνδικῇ, ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> Ἰνδικῇ πελάγει, ἀπὸ δὲ <δύσεως> ταῖς δυσὶ Καρμανίαις καὶ Παρθίᾳ, ἀπὸ δὲ <ἄρκτων> Μαργιανῇ καὶ Βακτριανῇ.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 26, section 1, line 2

Ὁ δέκατος πίναξ τῆς Ἀσίας περιέχει τὴν ἐντὸς Γάγγου τοῦ ποταμοῦ <Ἰνδικὴν> σὺν ταῖς παρακειμέναις αὐτῇ νήσοις.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 26, section 2, line 2

Περιορίζεται δὲ ὁ πίναξ ἀπὸ μὲν <ἀνατολῶν> τῇ ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικῇ, ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> μέρει τε τοῦ Γαγγητικοῦ κόλπου καὶ Ἰνδικῇ πελάγει, ἀπὸ δὲ <δύσεως> Γεδρωσίᾳ καὶ

4.2. CLAUDIUS PTOLEMAEUS

Ἀραχωσία καὶ τοῖς Παρο- πανισάδαις, ἀπὸ δὲ <ἄρκτων> τῶ ὑπὸ τοὺς Σογδιανούς καὶ Σάκας Ἰμάω ὄρει.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 27, section 1, line 2

Ὁ ἐνδέκατος πίναξ τῆς Ἀσίας περιέχει τὴν ἐκτὸς Γάγγου <Ἰνδικήν> καὶ <Σίναν> σὺν ταῖς παρακειμέναις νήσοις.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 27, section 2, line 3

Περιορίζεται δὲ ὁ πίναξ ἀπὸ μὲν <ἀνατολῶν> ἀγνώστῃ γῇ, ἀπὸ δὲ <μεσημβρίας> μέρει τοῦ Γάγγη- τικοῦ κόλπου καὶ Ἰνδικῶ πελάγει καὶ Μεγάλῳ κόλπῳ, ἔτι ἀγνώστῃ γῇ, ἀπὸ δὲ <δύσεως> τῇ ἐντὸς Γάγγου Ἰνδικῇ, ἀπὸ δὲ <ἄρκτων> μέρει τε Σακῶν καὶ Σκυθία τῇ ἐντὸς Ἰμάου ὄρους καὶ Σηρικῇ.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 27, section 3, line 1

Τῶν οὖν ἐν τῇ ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικῇ διασήμεων πόλεων ἡ μὲν <Τάκωλα> τὴν μεγίστην ἡμέραν ἔχει ὥραν ι<β> δ', καὶ διέστηκεν Ἀλεξανδρείας πρὸς ἑὼ ὥραις <ς> καὶ γο'· λαμβάνει δὲ τὸν ἥλιον δις τοῦ ἔτους κατὰ κορυ- φὴν, ἀπέχοντα τῆς θερινῆς τροπῆς ἐφ' ἐκάτερα μοίρας <ο>θ β'.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 28, section 2, line 1

Περιορίζεται δὲ ὁ πίναξ πάντοθεν Ἰνδικῶ πελάγει.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 29, section 26, line 2

Ἀρεία Παροπανισάδαι Δραγγιανὴ Ἀραχωσία Γεδρωσία· πίναξ ι'. Ἰνδικὴ ἡ ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ· πίναξ ια'.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 29, section 27, line 2

Ἰνδικὴ ἡ ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ· πίναξ ια'. Ἰνδικὴ ἡ ἐκτὸς Γάγγου ποταμοῦ Σινῶν χώρα· πίναξ ιβ'.

Claudius Ptolemaeus Math., Geographia (lib. 4-8) Book 8, chapter 30, section 26, line 4

Ὁ δωδέκατος καὶ τελευταῖος ἀπὸ μοιρῶν ρ<ι>ς ἕως μοιρῶν ρλ<ε>· γίνεται μῆκος μοιρῶν <ι>θ· πλάτος ἀπὸ βορείων μοιρῶν <ι>β β' ἢ διὰ τὴν Κῶρυ ἀκρωτηρίου καταγραφὴν ὡς ἂν φαινόμενον τῆς πρὸς τὴν Ἰνδικὴν σχέσιν τῆς Ταπροβάνης ἐμφαίνῃ μοιρῶν ι<γ> γ'· ἀπὸ δὲ νοτίων μοιρῶν <ς> β'· ὡς συνάγεσθαι πλάτος μοιρῶν <ι>θ β' γ' ἢ ὅλων εἴκοσι.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

4.3 Anonymi Historici (FGrH), Heraclis historia (Tabula Albana) (IG 14.1293)

Source Date: 1st century BC (From Wikipedia³)

Anonymi Historici (FGrH), Heraclis historia (Tabula Albana) (IG 14.1293) (1139: 002) “FGrH #40”. Volume-Jacoby’-F 1a,40,F, fragment 1a, line 36

/ Ἡρακλῆς δ’ ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ἦλθε / ποταμὸν καὶ πόλιν Ἡράκλειαν / τὰν ἐν Σίβαις οἰκίζει.

4.4 Adespota Papyracea (SH), Epigrammata

“” (From Wikipedia⁴)

Adespota Papyracea (SH), Epigrammata (2648: 003) “Supplementum Hellenisticum”, Ed. Lloyd-Jones, H., Parsons, P. Berlin: De Gruyter, 1983. Fragment 977, line 1

οὐκ ἐμὰ τ[....[βάρβαρον εἶσιδε τοῦτο[ουκικατονφοι.ονο.ι[οὔριον ὀλκάδι λαῖφον..

τίς σε τὸν ευ..τηρα κ-

οὐκ ἐμὰ ταῦτα λάφυρα οἱ τρισσοί σοι ταῦτα ■ Ἰνδὸν ὃδ’ ἀπύει τύμβος Ταύρων θανόντα κεῖσθαι, ὁ δὲ κτείνας πρόσθεν ἐπεῖδ’ Αἶδαν· θῆρ ἅπερ ἄντα δρακεῖν, σὺς ἢ ῥ’ ἀπὸ τᾶς Καλυδῶνος λείψανον, ἐνκάρποις ἐμὲ πεδίοις τρέφετο Ἀρσινόας ἀτίνακτον, ἀπ’ αὐχένος ἀθρόα φρίσσων λ]όχμαισ· καὶ γε[ν]ύων ἀφρόν ἀμεργόμενος· σὺν δὲ πεσὼν σκύλακος τόλμαι στήθη μὲν ἐτοίμως ἠλόκις, οὐ μέλλων δ’ αὐχέν’ ἔθηκ’ ἐπὶ γὰν, δρα]ξάμενος γὰρ ὁμοῦ λοφιᾷ μεγάλῳ τένοντος ο]ὐ πρ[ι]ν ἐμυσεν ὀδόντ’ ἔσθ’ ὑπέθηκ’ Αἶδαι.

Adespota Papyracea (SH), Epigrammata Fragment 977, line 22

ἄλλο

■ σκύλαξ ὁ τύμβωι τῶιδ’ ὕπ’ ἐκτερισμένος Ταύρων, ἐπ’ αὐθένταισιν οὐκ ἀμήχανος· κάπρωι γὰρ ὡς συνῆλθεν ἀντίαν ἔριν, ὁ μὲν τις ὡς ἄπλατος οἰδήσας γένυν στήθος κατηλόκιζε λευκαίνων ἀφρῶι· ὁ δ’ ἀμφὶ νώτῳ δισσοῖν ἐμβαλὼν ἵχνος ἐδράξατο φρίσσοντος ἐκ στέρνων μέσων καὶ γαῖι συνεσπείρασεν· Αἶδαι δὲ δούς τὸν αὐτόχειρ’ ἔθναισκεν, Ἰνδὸν ὡς νόμος.

3. <http://referenceworks.brillonline.com/entries/brill-s-new-jacoby/anonymus-history-of-herakles-tabula-albana-ig-14-1293-heraclis-historia-40-a40>

4.

4.5. DIONYSIUS SCYTOBRACHION

4.5 Dionysius Scytobrachion

Era? “” (From Wikipedia⁵) Dionysius Scytobrachion Gramm., Fragmenta (1881: 002) “FGrH #32”. Volume-Jacoby’-F 1a,32,F, fragment 8, line 108

(4) γηγενὲς γὰρ ὑπάρχον καὶ φυσικῶς ἐκ τοῦ στόματος ἄπλατον ἐκβάλλον φλόγα τὸ μὲν πρῶτον φανῆναι περὶ τὴν Φρυγίαν καὶ κατακαῦσαι τὴν χώραν, ἣν μέχρι τοῦ νῦν Κατακεκαυμένην Φρυγίαν ὀνομάζεσθαι· ἔπειτ’ ἐπελθεῖν τὰ περὶ τὸν Ταῦρον ὄρη συνεχῶς καὶ κατακαῦσαι τοὺς ἐξῆς δρυμοὺς μέχρι τῆς Ἰνδικῆς· μετὰ δὲ ταῦτα πάλιν ἐπὶ θάλατταν τὴν ἐπάνοδον ποιησάμενον περὶ μὲν τὴν Φοι- νίκην ἐμπρῆσαι τοὺς κατὰ τὸν Λίβανον δρυμοὺς, καὶ δι’ Αἰγύπτου πορευθὲν ἐπὶ τῆς Λιβύης διελθεῖν τοὺς περὶ τὴν ἐσπέραν τόπους καὶ τὸ τελευταῖον εἰς τοὺς περὶ τὰ Κεραύνια δρυμοὺς ἐγκατασκήψαι.

Dionysius Scytobrachion Gramm., Fragmenta Volume-Jacoby’-F 1a,32,F, fragment 8, line 236

(7) τὸν δ’ οὖν Διόνυσόν φασὶ τὴν κατάβασιν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὴν θάλατταν ποιησάμενον καταλαβεῖν ἅπαντας τοὺς Τιτᾶνας ἡθροικότας δυνάμεις καὶ διαβεβηκότας εἰς Κρήτην ἐπ’ Ἀμμωνα.

Dionysius Scytobrachion Gramm., Fragmenta Volume-Jacoby’-F 1a,32,F, fragment 13, line 2

ρ υ 904: ὥκα δὲ Καλλιχόροιο παρὰ προχοῆς ποταμοῖο ἦλυθον, ἔνθ’ ἐνέπουσι Διὸς Νυσήιον υἱᾶ Ἰνδῶν ἡνίκα φῦλα λιπὼν κατενάσσατο Θήβας, ὀργιάσαι] ποταμὸς Παφλαγονίας ἱερὸς Διονύσου περὶ Ἡράκλειαν, οὗ μέμνηται καὶ Καλλίμαχος (F 100c Schn.) .

Dionysius Scytobrachion Gramm., Fragmenta Volume-Jacoby’-F 1a,32,F, fragment 13, line 5

ὅτι δὲ κατε- πολέμησεν Ἰνδοὺς ὁ Διόνυσος Διονύσιός φησι καὶ Ἀριστόδημος ἐν πρώτῳ Θη- ραϊκῶν ἐπιγραμμάτων (III) καὶ Κλείταρχος ἐν ταῖς Περὶ Ἀλέξανδρον Ἱστορίαις (II) .

4.6 Vettius Valens

Vettius Valens (February 8, 120 – c. 175) was a 2nd-century Hellenistic astrologer, a somewhat younger contemporary of Claudius Ptolemy.

Valens’ major work is the Anthology, ten volumes in Greek written roughly within the period 150 to 175. The Anthology is the longest and most detailed treatise on astrology which has survived from that period. A working

5.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

professional astrologer, Valens includes over a hundred sample charts from his case files in the Anthology.

Although originally a native of Antioch, he appears to have traveled widely in Egypt in search of specific astrological doctrines to bolster his practice. At the time Alexandria was still home to a number of astrologers of the older Babylonian, Greek and Egyptian traditions. He published much of what he learned from the tradition and through his practice in his Anthology, written in an engaging and instructional style. The Anthology is thus of great value in piecing together actual working techniques of the time.

Valens' work is also important because he cites the views of a number of earlier authors and authorities who would otherwise be unknown. The fragments from works attributed to the alleged pharaoh Nechepso and the high priest Petosiris, pseudopigraphal authors of the 2nd century BC, survive mainly through direct quotations in Valens' work.

The three manuscripts of the Anthology all date from 1300 or later.[1] The text, however, appears to be fairly reliable and complete, although disorganized in places.

Although Ptolemy, the astronomer, mathematician, astrologer of ancient Alexandria and author of *Tetrabiblos* (the most influential astrological text ever written), was generally regarded as the colossus of Hellenistic-period astrology in the many centuries following his death, it is most likely that the actual practical astrology of the period resembled the methods elaborated in Valens' Anthology. Modern scholars tend to counterpoise the two men, since both were roughly contemporary and lived in Alexandria; yet Valens' work elaborated the more practical techniques that arose from ancient tradition, while Ptolemy, very much the scientist, tended to focus more on creating a theoretically consistent model based on his Aristotelian causal framework. The balance given by Valens' Anthology is therefore very instructive. No other Hellenistic author has contributed as much to our understanding of the everyday, practical astrological methods of the early Roman/late Hellenistic era.

Deciding that the traditional religion was useless, he found in fate a substitute religion. For him absolute determination gave emotional satisfaction and aroused an almost mystical feeling. Knowing that everything was already predetermined gave one a sense of freedom from anxiety and a sense of salvation. (From Wikipedia⁶)

6. http://en.wikipedia.org/wiki/Vettius_Valens

4.7. APOLLODORUS OF ARTEMITA

Vettius Valens Astrol., Anthologiarum libri ix (1764: 001) “Vettii Valentis anthologiarum libri”, Ed. Kroll, W. Berlin: Weidmann, 1908, Repr. 1973. Page 7, line 24

Ἔστι δὲ τὰ ὑποτεταγμένα κλίματα· κατὰ τὴν κεφαλὴν Μηδία καὶ οἱ συνεχεῖς τόποι· <τῷ δὲ στήθει Βαβυλωνία· τὰ πρὸς τῷ Ἡνιόχῳ δεξιὰ, Σκυθία>· ἡ Πλειάς, [ἡ] Κύπρος· τὰ ἀριστερά, Ἀραβία καὶ οἱ περὶ τόποι· κατὰ τοὺς ὤμους Περσίς καὶ τὰ Καυκάσια ὄρη, ὑπὸ τὸ κύρτωμα † ἄρχονται· ὑπὸ τὴν ὁσφύν Αἰ- θιοπία· ὑπὸ τὸ μέτωπον Ἑλυμαῖς· ὑπὸ τὰ κέρατα Καρχηδονία· μέσοις μέρεσιν Ἀρμενία, Ἰνδική, Γερμανία.

Vettius Valens Astrol., Anthologiarum libri ix Page 8, line 20

Ἔστι δὲ Διδύμοις ὑποτεταγμένα κλίματα τάδε· ἐμπρόσθια, Ἰνδική καὶ οἱ συνεχεῖς τόποι καὶ Κελτική· στήθος, Κιλικία, Γα- λατία, Θράκη καὶ [ἡ] Βοιωτία.

Vettius Valens Astrol., Anthologiarum libri ix Page 12, line 29

Πρόσκειται δὲ αὐτῷ κλίματα τάδε· ἐμπρόσθια, Συρία· μέσα, Εὐφράτης καὶ Τίγρις, Αἴγυπτος καὶ Λιβύη καὶ οἱ συνεχεῖς Αἴγυ- πτίων ποταμοὶ καὶ Ἰνδὸς ποταμός· κατὰ δὲ τὸ μέσον τῆς Κάλπης Τάναϊς καὶ οἱ λοιποὶ ποταμοὶ ἐκ τοῦ † ὑπὸ τοὺς πόδας ῥέοντες πρὸς νότον καὶ ζέφυρον.

Vettius Valens Astrol., Anthologiarum libri ix Page 13, line 17

πρόσκειται δὲ κλίματι τῆς Ἐρυθρᾶς θα- λάσσης, ἔχον νήσους οὐκ ὀλίγας παρ' ἑαυτό, ἃς ὑπέρκειται ἡ Ἰνδία καὶ ὁ λεγόμενος Ἰνδικὸς ὠκεανός· ἐν δὲ τοῖς ἀπηλιωτικοῖς αὐτοῦ μέρεσι τὴν Παρθίαν ἔχει καὶ τὴν Ἰνδικὴν χώραν κατὰ θίξιν καὶ τὸν Ἀπηλιωτικὸν ὠκεανόν, ἐκ τῶν βορείων αὐτοῦ μερῶν τὴν Σκυ- θικὴν χώραν· ἐκ δὲ τῶν πρὸς λίβα αὐτοῦ μερῶν ψαύει προσκλύ- ζον Μυοσόρμου, Ὀρθοῦ ὄρμου καὶ τῶν περὶ πόλεων.

Vettius Valens Astrol., Anthologiarum libri ix Page 14, line 7

μέσα, Συρία, Ἐρυθρὰ θάλασσα· [τὰ ἐμπρόσθια] Ἰνδική μέση, Περσίς καὶ οἱ συνεχεῖς τόποι, Ἀραβικὴ θάλασσα καὶ Ἐρυθρὰ καὶ Βορυσθένης ποταμός.

4.7 Apollodorus of Artemita

Apollodorus of Artemita (Greek: Ἀπολλόδωρος Ἀρτεμιτηνός) (c. 130–87 BCE) was a Greek writer of the 1st century BCE.

Apollodorus wrote a history of the Parthian Empire, the Parthika (Greek: τὰ Παρθικά), in at least four books. He is quoted by Strabo and Athenaeus. Strabo stated that he was very reliable. Apollodorus seems to have used the archives of Artemita and Seleucia on the Tigris for his work. Some information on Greco-Bactrians are preserved in Strabo's work:

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

"The Greeks who caused Bactria to revolt grew so powerful on account of the fertility of the country that they became masters, not only of Ariana, but also of India, as Apollodorus of Artemita says: and more tribes were subdued by them than by Alexander—by Menander in particular (at least if he actually crossed the Hypanis towards the east and advanced as far as the Imaus), for some were subdued by him personally and others by Demetrius, the son of Euthydemus the king of the Bactrians; and they took possession, not only of Patalena, but also, on the rest of the coast, of what is called the kingdom of Saraostus and Sigerdis. In short, Apollodorus says that Bactriana is the ornament of Ariana as a whole; and, more than that, they extended their empire even as far as the Seres and the Phryni." (Strabo, *Geographia*, 11.11.1)

He is also quoted for his general geographical knowledge of Central Asia:

"Accordingly, if the distance from Hyrcania to Artemita in Babylonia is eight thousand stadia, as is stated by Apollodorus of Artemita, and the distance from there to the mouth of the Persian Sea another eight thousand, and again eight thousand, or a little less, to the places that lie on the same parallel as the extremities of Ethiopia, there would remain of the above-mentioned breadth of the inhabited world the distance which I have already given,¹⁴ from the recess of the Hyrcanian Sea to the mouth of that sea" (Strabo, *Geographia*, 11.11.1) (From Wikipedia⁷)

Apollodorus Hist., Fragmenta (1164: 002) "FHG 4", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 5, line 6

Τοσοῦτον δὲ ἰσχυσαν οἱ ἀποστήσαντες Ἕλληνες αὐτὴν διὰ τὴν ἀρετὴν τῆς χώρας, ὥστε τῆς τε Ἀριανῆς ἐπε- κράτουν καὶ τῶν Ἰνδῶν, ὡς φησιν Ἀπολλόδωρος ὁ Ἀρ- τεμιτηνός, καὶ πλείω ἔθνη κατεστρέψαντο ἢ Ἀλέξαν- δρος, καὶ μάλιστα Μένανδρος (εἶγε καὶ τὸν Ὑπανιν διέβη, πρὸς ἑω, καὶ μέχρι τοῦ Ἰσάμου προ- ἦλθε). τὰ μὲν γὰρ αὐτός, τὰ δὲ Δημήτριος ὁ Εὐθυ- δήμου υἱὸς τοῦ Βακτρίων βασιλέως· οὐ μόνον δὲ τὴν Πατταληνὴν κατέσχον, ἀλλὰ καὶ τῆς ἄλλης παραλίας τὴν τε Σαραόστου καλουμένην, καὶ τὴν Σιγέρδιδος βασιλείαν.

Apollodorus Hist., Fragmenta Fragment 6, line 5

Strabo XV: Ἀπολλόδωρος γοῦν, ὁ τὰ Παρθικὰ ποιήσας, μεμνημένος καὶ τῶν τὴν Βα- κτριανὴν ἀποστησάντων Ἑλλήνων παρὰ τῶν Συριακῶν βασι- λέων, τῶν ἀπὸ Σελεύκου τοῦ Νικάτορος, φησὶ μὲν αὐ- τοὺς αὐξηθέντας ἐπιθέσθαι καὶ τῇ Ἰνδικῇ· οὐδὲν δὲ προσανακαλύπτει τῶν πρότερον ἐγνωσμένων, ἀλλὰ καὶ ἐναντιολογεῖ, πλείω τῆς Ἰνδικῆς ἐκείνους ἢ Μακεδό- νας καταστρέφασθαι λέγων.

7. http://en.wikipedia.org/wiki/Apollodorus_of_Artemita

4.8. SCHOLIA IN HOMERUM

4.8 *Scholia In Homerum*

“” (From Wikipedia⁸)

Scholia In Homerum, Scholia in Iliadem (scholia vetera) (5026: 001) “Scholia Graeca in Homeri Iliadem (scholia vetera), vols. 1–5, 7”, Ed. Erbse, H. Berlin: De Gruyter, 1:1969; 2:1971; 3:1974; 4:1975; 5:1977; 7:1988. Book of Iliad 17, verse 213–4, line of scholion 1

b(BE3)

Scholia In Homerum, Scholia in Odysseam (scholia vetera) (5026: 007) “Scholia Graeca in Homeri Odysseam, 2 vols.”, Ed. Dindorf, W. Oxford: Oxford University Press, 1855, Repr. 1962. Book 1, hypothesis-verse 23, line 2

Η. διχθὰ δεδαΐαται] ἀπὸ μεσημβρίας διερχόμενος ὁ Νεῖλος διορίζει τοὺς Αἰθίοπας, ἐκ μὲν ἀνατολῆς ἔχων τοὺς Ἰνδοὺς, ἐκ δυσμῶν δὲ νομάδας καὶ Βλέμνας.

Scholia In Homerum, Scholia in Odysseam (scholia vetera) Book 4, hypothesis-verse 84, line 7

τινὲς δὲ γράφουσιν Ἑρεμνοὺς, ὃ ἐστὶ τοὺς Ἰνδοὺς, οἱ δὲ τοὺς εἰς τὴν ἔραν δύνοντας διὰ τοὺς καύσωνας, οὓς καὶ Τρωγλοδύτας φασί.

Scholia In Homerum, Scholia in Odysseam (scholia vetera) Book 4, hypothesis-verse 84, line 13

ρ. Ἑρεμβοὺς τοὺς Τρωγλοδύτας τοὺς Σαρακηνούς παρὰ τὸ εἰς τὴν ἔραν δύνειν· οἱ δὲ τοὺς Ἰνδοὺς παρὰ τὸ ἔρεβος, μέλανες γὰρ, ὅθεν καὶ Κράτης τοὺς Ἑρεμνοὺς γράφει· οἱ δὲ ἴδιον ἔθνος.

Scholia In Homerum, Scholia in Odysseam (scholia vetera) Book 4, hypothesis-verse 84, line 19

οἱ δὲ τοὺς Ἰνδοὺς παρὰ τὸ ἔρεβος, μέλανες γὰρ, ὅθεν καὶ Κράτης Ἑρέμνους γράφει.

Scholia In Homerum, Scholia in Odysseam 1.1–309 (scholia vetera) (5026: 008) “Scholia in Homeri Odysseae α 1–309 auctiora et emendatiora”, Ed. Ludwich, A. Königsberg: Hartung, 1888–1890, Repr. 1966. Hypothesis-verse of Odyssey 23, line of scholion 10

H Ma P Q V. ἀπὸ μεσημ- βρίας διερχόμενος ὁ Νεῖλος διορίζει τοὺς Αἰθίοπας, ἐκ μὲν ἀνατολῆς ἔχων τοὺς Ἰνδοὺς, ἐκ δυσ- μῶν δὲ Νομάδας καὶ Βλέμνας.

Scholia In Homerum, Scholia in Iliadem (scholia vetera) (= D scholia) (5026: 017) “Homeri Ilias, 2 vols.”, Ed. Heyne, C.G. Oxford: Oxford University Press, 1834. Book of Iliad 6, verse 133, line of scholion 7

Ἡ δὲ Νύσσα ἐν μὲν τισὶ χώραις ὄρος, ὡς ἐν Βοιωτίᾳ καὶ Θράκῃ, καὶ Ἀρα- βία, καὶ Ἰνδικῇ, καὶ Λιβύῃ, καὶ Νάξῳ.

8.

4.9 Timon

Timon of Phlius, 17th-century engraving

Timon of Phlius (Greek: Τίμων, gen.: Τίμωνος; c. 320 BC – c. 230 BC) was a Greek skeptic philosopher, a pupil of Pyrrho, and a celebrated writer of satirical poems called Silloi (Greek: Σίλλοι). He was born in Phlius, moved to Megara, and then he returned home and married. He next went to Elis with his wife, and heard Pyrrho, whose tenets he adopted. He also lived on the Hellespont, and taught at Chalcedon, before moving to Athens, where he lived until his death. His writings were said to have been very numerous. He composed poetry, tragedies, satiric dramas, and comedies, of which very little remains. His most famous composition was his Silloi, a satirical account of famous philosophers, living and dead, in hexameter verse. The Silloi has not survived intact, but it is mentioned and quoted by several ancient authors. (From Wikipedia⁹)

Ἰνδαλμοί?

Timon Phil., Fragmenta et tituli (1735: 003) “Supplementum Hellenisticum”, Ed. Lloyd-Jones, H., Parsons, P. Berlin: De Gruyter, 1983. Fragment 841-843(+844), line t
 νῦν δὲ με λευγαλαῖς ἔρισιν εἴμαρτο δαμῆναι καὶ πενίῃ καὶ ὅς’ ἄλλα βροτοὺς κηφῆνας
 ἐλαστρεῖ. Ἰνδαλμοί

τοῦτό μοι, ὦ Πύρρων, ἰμείρεται ἦτορ ἀκοῦσαι, πῶς ποτ’ ἔανηροταγεις ἔῃστα μεθ’ ἡσυχίης
 αἰεὶ ἀφροντίστως καὶ ἀκινήτως κατὰ ταῦτα μὴ προσέχων δίνους ἡδυλόγου σοφίης, μούνος δ’
 ἀνθρώποισι θεοῦ τρόπον ἡγεμονεύεις, ὅς περὶ πᾶσαν ἐλῶν γαῖαν ἀναστρέφεται, δεικνὺς εὐτόρνου
 σφαίρης πυρκαῦτορα κύκλον.

4.10 *Lyrica Adespota*

“” (From Wikipedia¹⁰)

Lyrica Adespota (CA), Fragmenta lyrica (0230: 001) “Collectanea Alexandrina”, Ed. Powell, J.U. Oxford: Clarendon Press, 1925, Repr. 1970. Fragment 2, line 90

[Βά]ρβαρον ἀνάγω χρόν ἄπλετον, θεᾶ Σελή[νη], πρὸς ἐνθμόν ἀνετον βήματι βαρβάρῳ
 [προβαίνων]. Ἰνδῶν δὲ πρόμοι πρὸς ἰ[ε]ρόθρουν δότε [τυπανισμόν, [Σ]ηρικὸν ἰδίως θεαστικὸν
 βῆμα παραλ[λάξ].

9. [http://en.wikipedia.org/wiki/Timon_\(philosopher\)](http://en.wikipedia.org/wiki/Timon_(philosopher))

10.

4.11. THEOPOMPUS

4.11 Theopompus

Theopompus (Ancient Greek: Θεόπομπος) (born c. 380 BC) was a Greek historian and rhetorician

The works of Theopompus were chiefly historical, and are much quoted by later writers. They included an Epitome of Herodotus's History (Whether this work is actually his is debated^[1]), the Hellenics, the History of Philip, and several panegyrics and hortatory addresses, the chief of which was the Letter to Alexander. (From Wikipedia¹¹)

Theopompus Hist., Fragmenta (0566: 002) "FGrH #115". Volume-Jacoby'-F 2b,115,F, fragment 340, line 2

– V 42: *ἐνδοξος δὲ καὶ ὁ Ἑπειρωτικὸς Κέρβερος καὶ ὁ Ἀλεξάνδρου Περίτας, τὸ θρέμμα τὸ Ἰνδικόν· ἐκράτει δ' οὗτος λέοντος, ἑκατὸν μυνῶν ἐωνημένος.*

Theopompus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2b,115,F, fragment 371, line 1

– – s. *Ἰνδάρᾳ· Σικανῶν πόλιν.*

Theopompus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2b,115,F, fragment 381, line 3

i 2, 35: *Θεόπομπος δὲ ἐξομολογεῖται φήσας, ὅτι καὶ μύθους ἐν ταῖς ἱστορίαις ἐρεῖ κρεῖττον ἢ ὡς Ἡρόδοτος καὶ Κτησίας (III) καὶ Ἑλλάνικος (4) καὶ οἱ τὰ Ἰνδικὰ συγγράψαντες (III). – VII 7, 5: <τῶν μὲν οὖν Ἑπειρωτῶν ἔθνη φησὶν εἶναι Θεόπομπος τετταρεσκαίδεκα.*

4.12 Anaxarchus

Anaxarchus (play /ˌænəɡˈzɑrkəs/; Greek: Ἀνάξαρχος; c. 380 – c. 320 BC) was a Greek philosopher of the school of Democritus. Together with Pyrrho, he accompanied Alexander the Great into Asia. The reports of his philosophical views suggest that he was a forerunner of the Greek skeptics.

Anaxarchus was born at Abdera in Thrace. He was the companion and friend of Alexander the Great in his Asiatic campaigns. According to Diogenes Laertius, in response to Alexander's claim to have been the son of Zeus-Ammon, Anaxarchus pointed to his bleeding wound and remarked, "See the blood of a mortal, not ichor, such as flows from the veins of the immortal

11. <http://en.wikipedia.org/wiki/Theopompus>

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

gods.”[1] Diogenes Laertius also says that Nicocreon, the tyrant of Cyprus, commanded him to be pounded to death in a mortar, and that he endured this torture with fortitude and Cicero relates the same story.[2]

Plutarch tells a story that at Bactra, in 327 BC in a debate with Callisthenes, he advised all to worship Alexander as a god even during his lifetime, is with greater probability attributed to the Sicilian Cleon.

When Alexander was trying to show that he is divine so that the Greeks and Macedonians would perform proskynesis to him, Anaxarchus said that Alexander could “more justly be considered a god than Dionysus or Hercules” (Arrian, 104) Philosophy

Very little is known about his philosophical views. It is thought that he represents a link between the atomism of Democritus, and the skepticism of Pyrrho.

Anaxarchus is said to have studied under Diogenes of Smyrna, who in turn studied under Metrodorus of Chios, who used to declare that he knew nothing, not even the fact that he knew nothing.[2] According to Sextus Empiricus, Anaxarchus “compared existing things to a scene-painting and supposed them to resemble the impressions experienced in sleep or madness.”[3] It was under the influence of Anaxarchus that Pyrrho is said to have adopted “a most noble philosophy, . . . taking the form of agnosticism and suspension of judgement.”[4] Anaxarchus is said to have praised Pyrrho’s “indifference and sang-froid.”[5] Anaxarchus is said to have possessed “fortitude and contentment in life,” which earned him the epithet eudaimonikos (“fortunate”),[1] which may imply that he held the end of life to be eudaimonia. (From Wikipedia¹²)

Anaxarchus Phil., Testimonia (0714: 001) “Die Fragmente der Vorsokratiker, vol. 2, 6th edn.”, Ed. Diels, H., Kranz, W. Berlin: Weidmann, 1952, Repr. 1966. Fragment 2, line 3

.. ἤκουσε Βρύσωνος τοῦ Στίλπωνος, ὡς Ἀλέξανδρος ἐν Διαδοχαῖς [fr. 146 FHG III 243], εἶτα Ἀναξάρχου ξυνακολουθῶν πανταχοῦ, ὡς καὶ τοῖς Γυμνοσοφισταῖς ἐν Ἰνδαίαι συμμῖξαι καὶ τοῖς Μάγοις .

Anaxarchus Phil., Testimonia Fragment 2, line 5

τοῦτο δὲ ποιεῖν ἀκούσαντα Ἰνδοῦ τινος ὀνειδίζοντος Ἀναξάρχῳ, ὡς οὐκ ἂν ἕτερόν τινα διδάξαι οὗτος ἀγαθόν, αὐτὸς αὐλᾶς βασιλικᾶς θεραπεύων.

12. <http://en.wikipedia.org/wiki/Anaxarchus>

4.13. SPEUSIPPUS

4.13 Speusippus

Speusippus (c. 408 – 339/8 BC[1]) was an ancient Greek philosopher. Speusippus was Plato's nephew by his sister Potone. After Plato's death, Speusippus inherited the Academy and remained its head for the next eight years. However, following a stroke, he passed the chair to Xenocrates. Although the successor to Plato in the Academy, he frequently diverged from Plato's teachings. He rejected Plato's Theory of Forms, and whereas Plato had identified the Good with the ultimate principle, Speusippus maintained that the Good was merely secondary. He also argued that it is impossible to have satisfactory knowledge of any thing without knowing all the differences by which it is separated from everything else. (From Wikipedia¹³)

Speusippus Phil., Fragmenta (1692: 005) "Speusippus of Athens", Ed. Tarán, L. Leiden: Brill, 1981; Philosophia Antiqua 39. Fragment 67, line 63

πάντα γὰρ ὡς εἰπεῖν, ὅσα ἡμέρα καὶ ἄγρια τυγχάνει ὄντα, οἷον ἄνθρωποι, ἵπποι, βόες, κύνες ἐν τῇ Ἰνδικῇ, ὕες, αἰγες, πρόβατα· ὧν ἕκαστον, εἰ μὲν ὁμώνυμον, οὐ διήρηται χωρὶς, εἰ δὲ ταῦτα ἐν εἴδει, οὐχ οἷόν τ' εἶναι διαφορὰς τὸ ἄγριον καὶ τὸ ἡμέρον.

4.14 Callixenus of Rhodes

Callixenus of Rhodes was a Hellenistic author from Rhodes. He was a contemporary of Ptolemy II Philadelphus [309 BCE – 246 BCE]. He wrote two works, both of which are lost. "Peri Alexandreias"

This consisted of at least four books, and was much used by Athenaeus (Athen. v. p. 196, &c., ix. p. 387, xi. pp. 472, 474, 483; Harpocrat. s. v. eggythike). It contained the main account of the tesseracton. Title unknown

This seems to have been a catalogue of painters and sculptors (zografonte kai andriantopoion anagrafe), of which Sopater, in the twelfth book of his Eclogae had made an abridgement. (Phot. Bibl. Cod. 161 ; comp. Preller, Polem. Fragm. p. 178, &c.) (From Wikipedia¹⁴)

13. <http://en.wikipedia.org/wiki/Speusippus>

14. http://en.wikipedia.org/wiki/Callixenus_of_Rhodes

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Callixenus Hist., Fragmenta (1240: 003) “FHG 3”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 1, line 118

Κατεναντίον δὲ τούτου ἄλλο συμπόσιον πολυ- τελὲς περίπτερον· οἱ γὰρ κίονες αὐτοῦ ἐκ λίθων Ἰνδικῶν συνέκλειντο.

Callixenus Hist., Fragmenta Fragment 2, line 247

Ἐπὶ δὲ ἄλλης τετρακύκλου, ἣ περιεῖχε τὴν ἐξ Ἰνδῶν κάθοδον Διονύσου, Διόνυσος ἦν δωδεκάπηγος, ἐπ’ ἐλέφαντος κατακείμενος, ἡμφιεσμένος προφυρίδα, καὶ στέφανον κισσοῦ καὶ ἀμπέλου χρυσοῦν ἔχων, εἶχεν ἐν ταῖς χερσὶ θυρσόλογχον χρυσοῦν· ὑπεδέδετο δ’ ἐμ- βάδας χρυσογραφεῖς.

Callixenus Hist., Fragmenta Fragment 2, line 278

Αὗται δ’ εἶχον σκηναὶς βαρβαρικὰς, ἐφ’ ὧν ἐκάθηντο γυναῖκες Ἰνδαὶ καὶ ἕτεραι, κεκοσμημέναι ὡς αἰχμάλωτοι.

Callixenus Hist., Fragmenta Fragment 2, line 288

Ἦγοντο δὲ καὶ κύνες δισχίλιοι τετρακό- σιοι, οἱ μὲν Ἰνδοί, οἱ λοιποὶ δὲ Ὑρκανοὶ καὶ Μολοσσοὶ καὶ ἐτέρων γενῶν.

Callixenus Hist., Fragmenta Fragment 2, line 296

Εἰπὼν δὲ καὶ ἄλλα πλεῖστα, καὶ καταλέξας ζώων ἀγέλας, ἐπιφέρει· »Πρόβατα Αἰθιοπικὰ ἑκατὸν τριάκοντα, Ἀράβια τριακόσια, Εὐβοϊκὰ εἴκοσι, ὀλόλευκοι βόες Ἰνδικοὶ εἴκοσι ἕξ, Αἰθιοπικοὶ ὀκτώ, ἄρκτος μὲν λευκὴ μεγάλη μία, παρδάλεις τεσσαρεσκαίδεκα, πάνθηρες ἑκαταίδεκα, λυγκία τέσσαρα, ἄρκηλοι τρεῖς, καμηλοπάρδαλις μία, ξινόκερος Αἰθιοπικὸς εἷς.

Callixenus Hist., Fragmenta Fragment 3d, line 5

Οὕτως γὰρ καὶ Πολέμων κ. τ. λ. Harpocration v. ἐγγυθήκη: Εἶη δ’ ἂν σκευδὸς τι πρὸς τὸ κρατῆρας ἢ λέβητας ἢ τι τοιούτων οὐκ ἀλλότριον ἐπικεῖσθαι ἐπιτήδειον εἶναι, ὡς Καλλίξενός τε ἐν δ’ Περὶ Ἀλεξανδρείας ὑποσημαίνει, καὶ Δαῖμαχος ὁ Πλαταιεὺς ἐν β’ Περὶ Ἰνδικῆς.

4.15 Paradoxographus Vaticanus

Paradoxographoi (griechisch *παραδοξογράφοι*) oder Paradoxographien sind antike listenartige Sammlungen von wunderbaren Tatsachen. Die Bezeichnung selbst stammt nicht aus der Antike, sondern wurde nach ersten Belegen im zwölften Jahrhundert erst im neunzehnten Jahrhundert zur Sammelbezeichnung der Gattung.

Paradoxographische Schriften sind eine antike Literaturgattung. Als Erfinder der Gattung gilt Kallimachos. Bei vielen Paradoxographien handelt es sich um anonyme oder pseudepigraphische Schriften. Letzteres gilt etwa von der Aristoteles zugeschriebenen Schrift *Περὶ θαυμασίων ἀκουσμάτων*

4.16. THEOPHRASTUS

(„Über Dinge, die wunderbar zu hören sind“). Zu den ersteren gehören die anonymen Sammlungen von Exzerpten älterer Paradoxographien: Paradoxographus Florentinus, Vaticanus und Palatinus.

Paradoxographische Schriften sind dadurch von z. B. mythologischen Schriften unterschieden, dass ihre Autoren davon ausgehen, dass es sich bei den berichteten außergewöhnlichen Ereignissen oder Gegebenheiten (die „Mirabilien“) um zwar seltsame, aber doch empirische Tatsachen handelt. Inhaltlich überwiegen Tier- und Wassermirabilien, es finden sich aber auch Berichte über (aus der Sicht der Verfasser) bemerkenswerte Eigentümlichkeiten fremder Völker. (From Wikipedia¹⁵)

Paradoxographus Vaticanus, Admiranda (0582: 001) “Paradoxographorum Graecorum reliquiae”, Ed. Giannini, A. Milan: Istituto Editoriale Italiano, 1965. Section 34, line 1

Περὶ τὴν Ἰνδικὴν ἔστι λίμνη, ἥτις πάντα ἑδέχεται πλὴν χρυσοῦ καὶ ἀργύρου.

Paradoxographus Vaticanus, Admiranda Section 35, line 1

Ἑλλάνικος ἐν Ἰνδοῖς εἶναι φησι κρήνην Σίλαν καλουμένην, ἐφ’ ἧς καὶ τὰ ἐλαφρότατα καταποντίζεται.

Paradoxographus Vaticanus, Admiranda Section 42, line 1

Ἐν Παδαίοις, Ἰνδικῶ ἔθνει, ὁ συνετώτατος τῶν παρόντων κατάρχεται τῶν ἱερῶν· αἰτεῖται δὲ παρὰ τῶν θεῶν οὐδὲν ἄλλο πλὴν δικαιοσύνης.

Paradoxographus Vaticanus, Admiranda Section 53, line 1

Παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς ὁ τεχνίτου πηρώσας χεῖρα ἢ ὀφθαλμὸν θανάτῳ ζημιοῦται.

4.16 Theophrastus

Theophrastus (Greek: Θεόφραστος; c. 371 – c. 287 BC[1]), a Greek native of Eresos in Lesbos, was the successor to Aristotle in the Peripatetic school. He came to Athens at a young age, and initially studied in Plato’s school. After Plato’s death he attached himself to Aristotle. Aristotle bequeathed to Theophrastus his writings, and designated him as his successor at the Lyceum. Theophrastus presided over the Peripatetic school for thirty-six years, during which time the school flourished greatly. After his death, the Athenians honoured him with a public funeral. His successor as head of the school was Strato of Lampsacus.

15. <http://en.wikipedia.org/wiki/Paradoxography>

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

The interests of Theophrastus were wide-ranging, extending from biology and physics to ethics and metaphysics. His two surviving botanical works, *Enquiry into Plants*[2] and *On the Causes of Plants*, were an important influence on medieval science. There are also surviving works *On Moral Characters*, *On Sensation*, *On Stones*, and fragments on *Physics* and *Metaphysics* all written in Greek. In philosophy, he studied grammar and language, and continued Aristotle's work on logic. He also regarded space as the mere arrangement and position of bodies, time as an accident of motion, and motion as a necessary consequence of all activity. In ethics, he regarded happiness as depending on external influences as well as on virtue, and famously said that "life is ruled by fortune, not wisdom." (From Wikipedia¹⁶)

Theophrastus Phil., *Historia plantarum* (0093: 001) "Theophrastus. *Enquiry into plants*, 2 vols.", Ed. Hort, A. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1916, Repr. 1:1968; 2:1961. Book 1, chapter 7, section 3, line 1

Ἰδία δὲ ῥίζης φύσις καὶ δύναμις ἢ τῆς Ἰνδικῆς συκῆς· ἀπὸ γὰρ τῶν βλαστῶν ἀφίησι, μέχρι οὗ ἂν συνάψῃ τῇ γῇ καὶ ῥιζωθῇ, καὶ γίνεται περὶ τὸ δένδρον κύκλῳ συνεχὲς τὸ τῶν ῥιζῶν οὐχ ἀπτό- μενον τοῦ στελέχους ἀλλ' ἀφεστηκός.

Theophrastus Phil., *Historia plantarum* Book 4, chapter 4, section 1, line 5

Ἐν δὲ τῇ Ἀσίᾳ παρ' ἐκάστοις ἰδί' ἅττα τυγχάνει· τὰ μὲν γὰρ φέρουσιν αἱ χῶραι τὰ δ' οὐ φύουσιν· οἷον κιττὸν καὶ ἐλάαν οὗ φασιν εἶναι τῆς Ἀσίας ἐν τοῖς ἄνω τῆς Συρίας ἀπὸ θαλάττης πένθ' ἡμερῶν· ἀλλ' ἐν Ἰνδοῖς φανῆναι κιττὸν ἐν τῷ ὄρει τῷ Μηρῷ καλουμένῳ, ὅθεν δὴ καὶ τὸν Διόνυσον εἶναι μυθολογοῦσι.

Theophrastus Phil., *Historia plantarum* Book 4, chapter 4, section 4, line 1

Ἡ δὲ Ἰνδικὴ χώρα τὴν τε καλουμένην ἔχει συκὴν, ἣ καθίησιν ἐκ τῶν κλάδων τὰς ῥίζας ἀν' ἐκαστον ἔτος, ὥσπερ εἴρηται πρότερον· ἀφίησι δὲ οὐκ ἐκ τῶν νέων ἀλλ' ἐκ τῶν ἑνῶν καὶ ἔτι παλαιότερων· αὗται δὲ συνάπτουσιν τῇ γῇ ποιοῦσιν ὥσπερ δρύφακτον κύκλῳ περὶ τὸ δένδρον, ὥστε γίνεσθαι καθάπερ σκηνήν, οὗ δὴ καὶ εἰώθασιν διατρίβειν.

Theophrastus Phil., *Historia plantarum* Book 4, chapter 4, section 5, line 3

Ἔστι δὲ καὶ ἕτερον δένδρον καὶ τῷ μεγέθει μέγα καὶ ἡδύκαρπον θαυμαστῶς καὶ μεγαλόκαρπον· καὶ χρῶνται τροφῇ τῶν Ἰνδῶν οἱ σοφοὶ καὶ μὴ ἀμπεχόμενοι.

Theophrastus Phil., *Historia plantarum* Book 4, chapter 4, section 11, line 8

ταῦτα μὲν οὖν κατὰ τὴν Ἰνδικήν.

Theophrastus Phil., *Historia plantarum* Book 4, chapter 4, section 14, line 3

Περὶ τὸν Ἰνδόν οὖν τῶν φυομένων καὶ πλεῖστον ἐξηλλαγμένα πρὸς τὰ ἄλλα τὰ εὖοςμα τὰ περὶ Ἀραβίαν καὶ Συρίαν καὶ Ἰνδοὺς, οἷον ὃ τε λιβανωτὸς καὶ ἡ σμύρνα καὶ ἡ κασία καὶ

16. <http://en.wikipedia.org/wiki/Theophrastus>

4.16. THEOPHRASTUS

τὸ ὀποβάλαμον καὶ τὸ κινάμωμον καὶ ὅσα ἄλλα τοιαῦτα· περὶ ὧν ἐν ἄλλοις εἴρηται διὰ πλειόνων.

Theophrastus Phil., Historia plantarum Book 4, chapter 7, section 3, line 1

Οἱ δέ, ὅτε ἀνάπλους ἦν τῶν ἐξ Ἰνδῶν ἀποστα- λέντων ὑπὸ Ἀλεξάνδρου, τὰ ἐν τῇ θαλάττῃ φυόμενα, μέχρι οὗ μὲν ἂν ἦ ἐν τῷ ὑγρῷ, χρωμά φασι ἔχειν ὅμοιον τοῖς φυκίοις, ὅπότεν δ' ἐξ- ενεχθέντα τεθῇ πρὸς τὸν ἥλιον, ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ ἐξομοιοῦσθαι τῷ ἀλί.

Theophrastus Phil., Historia plantarum Book 4, chapter 7, section 8, line 1

Γίνεται δὲ τοῦτο καὶ ἐν Ἰνδοῖς, ὥσπερ ἐλέχθη, καὶ ἐν Ἀραβίᾳ.

Theophrastus Phil., Historia plantarum Book 4, chapter 11, section 13, line 6

.. Ὁ δὲ Ἰνδικὸς ἐν μεγίστῃ διαφορᾷ καὶ ὥσπερ ἕτερον ὅλως τὸ γένος· ἔστι δὲ ὁ μὲν ἄρρην στερρός, ὁ δὲ θήλυς κοῖλος· διαιροῦσι γάρ καὶ τοῦτον τῷ ἄρρηνι καὶ θήλει.

Theophrastus Phil., Historia plantarum Book 7, chapter 13, section 8, line 11

μεγίστη δὲ καὶ ἰδιωτάτη διαφορὰ τῶν ἐριοφόρων· ἔστι γάρ τι γένος τοιοῦ- τον, ὃ φύεται μὲν ἐν αἰγιαλοῖς ἔχει δὲ τὸ ἔριον ὑπὸ τοὺς πρώτους χιτῶνας, ὥστε ἀνὰ μέσον εἶναι τοῦ τε ἐδωδίου τοῦ ἐντὸς καὶ τοῦ ἔξω· ὑφαίνεται δὲ ἐξ αὐτοῦ καὶ πόδεια καὶ ἄλλα ἱμάτια· δι' ὃ καὶ ἐριώδες τοῦτο καὶ οὐχ ὥσπερ τὸ ἐν Ἰνδοῖς τριχῶδες.

Theophrastus Phil., Historia plantarum Book 8, chapter 4, section 2, line 15

διαφορὰ δὲ μεγάλη καὶ τὸ παραβλασθητικὴν εἶναι, καθάπερ εἵπομεν τὴν Ἰνδικήν.

Theophrastus Phil., Historia plantarum Book 9, chapter 1, section 2, line 10

Ἡ δ' ὑγρότης τῶν μὲν πάχος ἔχει μόνον, ὥσπερ τῶν ὀπωδῶν· τῶν δὲ καὶ δακρυώδης γίνεται, καθά- περ ἐλάτης πεύκης τερεβίνθου πίτυος ἀμυγδαλῆς κεράσου προύμνης ἀρκεύθου κέδρου τῆς ἀκάνθης τῆς Αἰγυπτίας πτελέας, καὶ γὰρ αὕτη φέρει κόμμι πλὴν οὐκ ἐκ τοῦ φλοιοῦ ἀλλ' ἐν τῷ κωρύκῳ, ἔτι δὲ ἀφ' ὧν ὁ λίβανος καὶ ἡ σμύρνα, δάκρυα γὰρ καὶ ταῦτα, καὶ τὸ βάλαμον καὶ <ἡ> χαλβάνη καὶ εἴ τι τοιοῦτον ἕτερον, οἷον φασι τὴν ἄκανθαν τὴν Ἰνδικήν, ἀφ' ἧς γίνεται τι ὅμοιον τῇ σμύρνῃ· συνίσταται δὲ καὶ ἐπὶ τῆς σχίνου καὶ ἐπὶ τῆς ἀκάνθης τῆς ἰξίνης καλουμένης, ἐξ ὧν ἡ μαστίχη.

Theophrastus Phil., Historia plantarum Book 9, chapter 7, section 2, line 12

τὰ δὲ ἄλλα πάντα τὰ εὖοςμα οἷς πρὸς τὰ ἀρώματα χρωῶνται, τὰ μὲν ἐξ Ἰνδῶν κομίζεται κακεῖθεν ἐπὶ θάλατταν καταπέμπεται, τὰ δ' ἐξ Ἀραβίας, οἷον πρὸς τῷ κινάμῳ καὶ τῇ κασίᾳ καὶ κώμακον· ἕτερον δ' εἶναι τὸ κώμακον καρπὸν· τὸ δ' ἕτερον παραμίσ- γουσιν εἰς τὰ σπουδαιότατα τῶν μύρων.

Theophrastus Phil., Historia plantarum Book 9, chapter 7, section 2, line 18

τὸ δὲ καρδάμωμον καὶ ἄμωμον οἱ μὲν ἐκ Μηδείας, οἱ δ' ἐξ Ἰνδῶν καὶ ταῦτα καὶ τὴν νάρδον καὶ τὰ ἄλλα ἢ τὰ πλεῖστα.

Theophrastus Phil., Historia plantarum Book 9, chapter 15, section 2, line 10

ἐν Ἰνδοῖς δὲ καὶ ἕτερα γένη πλείω, περιττότατα δέ, εἴπερ ἀληθῆ λέγουσιν, ἢ τε δυνα- μένη τὸ αἷμα διαχεῖν καὶ οἷον ὑποφεύγειν, καὶ πάλιν ἡ συνάγουσα καὶ πρὸς ἑαυτὴν ἐπισπασμένη, ἃ δὴ φασι εὐρῆσθαι πρὸς τὰ τῶν ὀφιδίων τῶν θανατηφόρων δῆγματα.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Theophrastus Phil., De lapidibus (= fr. 2, Wimmer) (0093: 004) “Theophrastus. De lapidibus”, Ed. Eichholz, D.E. Oxford: Clarendon Press, 1965. Section 36, line 5

γίνεται δὲ ἐν ὀστρείῳ τινὶ παραπλησίῳ ταῖς πίνναις <πλὴν ἐλάττονι· μέγεθος δὲ ἡλίκον ἰχθύος ὀφθαλμὸς εὐμεγέθης>, φέρει δ' ἢ τε Ἰνδικὴ χώρα καὶ νῆσοί τινες τῶν ἐν τῇ Ἐρυθρᾷ.

Theophrastus Phil., De lapidibus (= fr. 2, Wimmer) Section 38, line 3

τρόπον δὲ τιν' οὐ πόρρω τούτου τῇ φύσει καὶ ὁ Ἰνδικὸς κάλαμος ἀπολελιθωμένος.

Theophrastus Phil., Physicorum opiniones (0093: 008) “Doxographi Graeci”, Ed. Diels, H. Berlin: Reimer, 1879, Repr. 1965. Section 12, line 50

τὸ παραπλήσιον μέντοι καὶ τοὺς κατὰ τὴν Ἰνδικὴν δράκοντάς φασι πάσχειν.

Theophrastus Phil., Fragmenta (0093: 010) “Theophrasti Eresii opera, quae supersunt, omnia”, Ed. Wimmer, F. Paris: Didot, 1866, Repr. 1964. Fragment 171, section 2, line 2

Τὰ δ' ἐν Ἰν-δοῖς ἰχθύδια τὰ ἐκ τῶν ποταμῶν εἰς τὴν γῆν ἐξόντα καὶ πηδῶντα καὶ πάλιν εἰς τὸ ὕδωρ ἀπιόντα, καθάπερ οἱ βάτραχοι, θαυμαστὰ μὲν οὖν, οὐχ ὁμοίως δὲ τούτοις, ὅσῳ τὸ ὀλίγον χρόνον ἢ πολὺν καὶ τελευταῖον ἦττον θαυμαστόν· ἢ δ' ὅψις ὁμοία τούτων τοῖς μαζίναις καλουμένοις.

Theophrastus Phil., De causis plantarum (lib. 2–6) (0093: 014) “Theophrasti Eresii opera, quae supersunt, omnia”, Ed. Wimmer, F. Paris: Didot, 1866, Repr. 1964. Book 2, chapter 10, section 2, line 8

Ἐπεὶ καὶ τὰ μικρόκαρπα πάνθ' ὥς ἐπὶ τὸ πολὺ μείζω καὶ τὰ εἰς μέγεθος ὥρ-μημένα μικροκαρπότερα καθάπερ καὶ ἡ Ἰνδικὴ συκὴ καλουμένη.

Theophrastus Phil., De causis plantarum (lib. 2–6) Book 3, chapter 3, section 3, line 7

Τάχα δὲ καὶ ἡ ὄρμη γίνεται διὰ τὸ πε-ρίεχον· ὅπου δ' αὖ θερινὸς ὄμβρος πολὺς ὥσπερ ἐν Αἰ-θιοπία καὶ ἐν Ἰνδοῖς ἢ περὶ Αἴγυπτον ὁ Νεῖλος ἐνταῦθα δὴ πρὸ τούτων ἢ μετὰ τούτους εἰκὸς τὴν φυτεῖαν ἀρ-μόττειν· τῆνικαῦτα γὰρ ἡ τοῦ ἀέρος κρᾶσις σύμμε-τρος.

4.17 Ephraem the Syrian

Ephrem the Syrian (Syriac: ܐܦܪܗܡ ܫܘܪܝܐ, ܡܪܝܬܐ ܫܘܪܝܐ Mār Efrēm Sûryāyâ;[1] Greek: Ἐφραίμ ὁ Σŷρος; Latin: Ephraem Syrus; ca. 306 – 373) was a Syriac deacon and a prolific Syriac-language hymnographer and theologian of the 4th century.[2][3][4][5] His works are hailed by Christians throughout the world and many denominations venerate him as a saint. He has been

4.18. *ARTAXERXIS EPISTULAE*

declared a Doctor of the Church in Roman Catholicism. He is especially beloved in the Syriac Orthodox Church. (From Wikipedia¹⁷)

Ephraem Hist., Poeta, Chronicon (3170: 001) “Ephraemius”, Ed. Bekker, I. Bonn: Weber, 1840; Corpus scriptorum historiae Byzantinae.

Ephraem Hist., Poeta, Chronicon Line 3137

Μουχούμετ ἀνὴρ ἡγεμὼν τῆς Περσίδος ἤρατο μάχην κατὰ Βαβυλωνίων Ἰνδῶν θ', ἐαυτῷ
δυσμενῶν ἀντιπάλων, δι' ὧν τροποῦται τοὺς ἐχθροὺς κατὰ κράτος.

4.18 *Artaxerxis Epistulae*

“” (From Wikipedia¹⁸)

Artaxerxis Epistulae, Epistulae (0045: 001) “Epistolographi Graeci”, Ed. Hercher, R. Paris: Didot, 1873, Repr. 1965. Epistle 1, line 1

Βασιλεὺς μέγας Ἀρταξέρξης τοῖς ἀπὸ Ἰνδικῆς ἕως τῆς Αἰθιοπίας ἑπτὰ καὶ εἴκοσι καὶ ἑκατὸν
σατραπειῶν ἄρχουσι τάδε γράφει.

4.19 Polemon Periegetes

Polemon (2nd century BCE) was a Stoic philosopher and geographer. Of Athenian citizenship, he is known as Polemon of Athens, but he was born either in Ilium, Samos, or Sicyon, and is also known as Polemon of Ilium and Polemon Periegetes. He travelled throughout Greece, and wrote about the places he visited. He also compiled a collection of the epigrams he saw on the monuments and votive offerings. None of these works survive, but many later writers quote from them.

In his travels, Polemon collected the epigrams he found into a work On the inscriptions to be found in cities (Greek: Περὶ τῶν κατὰ πόλεις ἐπιγραμμάτων).^[4] In addition, other works of his are mentioned, upon the votive offerings and monuments in the Acropolis of Athens, at Lacedaemon, at Delphi, and elsewhere, which no doubt contained copies of numerous epigrams. His works may have been a chief source of the Garland of Meleager. Athenaeus and other writers make very numerous quotations from

17. <http://en.wikipedia.org/wiki/Ephraem>

18.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

his works. They were chiefly descriptions of different parts of Greece; some are on paintings preserved in various places, and several are controversial, among which is one against Eratosthenes.

Sir James Frazer considered him the most learned of all Greek antiquaries. "His acquaintance both with the monuments and with the literature seems to have been extensive and profound. The attention which he bestowed on inscriptions earned for him the nickname of the 'monument-tapper.'" [5] (From Wikipedia¹⁹)

Polemon Perieg., Fragmenta (0586: 001) "FHG 3", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1853. Fragment 92, line 1

Idem II: Καὶ περὶ τὸν Ἰνδὸν δέ φησι ποταμὸν γίνεσθαι τὴν κυνάραν.

Polemon Perieg., Fragmenta Fragment 92, line 6

Καὶ Σκύλαξ δὲ ἢ Πο- λέμων γράφει· «εἶναι μὲν τὴν γῆν ὑψηλὴν κρήνησι καὶ ὀχετοῖσιν, ἐν δὲ τοῖς οὖρεσι πέφυκε κυνάραι καὶ βοτάνη ἄλλη,» καὶ ἐν τοῖς ἐξῆς· «ἐντεῦθεν δὲ ὄρος παρέτεινε τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ἰνδοῦ ἐνθεν καὶ ἐνθεν ὑψηλὸν τε καὶ δασὺ ἀγρίῃ ὕλῃ καὶ ἀκάνθῃ κυνάραι.

4.20 Phylarchus

Phylarchus (Greek: Φύλαρχος, Phylarkhos; lived 3rd century BC) was a Greek historical writer whose works have been lost, but not before having been considerably used by other historians whose works have survived. (From Wikipedia²⁰)

Phylarchus Hist., Fragmenta (1609: 002) "FGrH #81". Volume-Jacoby'-F 2a,81,F, fragment 35a, line 2

hist. mir. 18: Φύλαρχος ἐν <κ> τῶν Ἱστοριῶν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς φησιν ἐνεχθῆναι λευκὴν ῥίζαν, ἣν κόπτοντας μεθ' ὕδατος καταπλάττειν τοὺς πόδας, τοὺς δὲ καταπλασθέντας ἄνδρας τῆς συνουσίας λήθην ἴσχειν καὶ γίγνεσθαι ὁμοίους εὐνούχοις.

Phylarchus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,81,F, fragment 35b, line 2

ι 32 p. 18 D E: Φύλαρχος δὲ Σανδρόκοττόν φησι τὸν Ἰνδῶν βασιλέα Σελεύκῳ μεθ' ὧν ἔπεμψε δῶρων ἀποστεῖλαι τινὰς δυνάμεις στυτικὰς τοιαύτας ὡς ὑπὸ τοὺς πόδας τιθεμένας τῶν συνουσιαζόντων οἷς μὲν ὀρμὰς ἐμποιεῖν ὀρνίθων δίκην, οὓς δὲ καταπαύειν.

19. http://en.wikipedia.org/wiki/Polemon_of_Athens

20. <http://en.wikipedia.org/wiki/Phylarchus>

4.21. DEMOSTHENES

Phylarchus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,81,F, fragment 36, line 5

γράφει δὲ οὕτως· <«τούτῳ δὲ τῷ ἐλέφαντι συνε- τρέφετο θήλεια ἐλέφας, ἣν Νίκαιαν ἐκά- λουν· ἡ τελευ- τῶσα ἢ τοῦ τρέφοντος Ἰνδοῦ γυνὴ παιδίον αὐτῆς τρια- κοσταῖον παρακατέθετο.

Phylarchus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,81,F, fragment 41, line 15

τὰς δὲ χρυσᾶς πλατάνους καὶ τὴν χρυσὴν ἄμπελον, ὑφ' ἣν οἱ Περσῶν βασι- λεῖς ἐχρημάτι- ζον πολλάκις καθήμενοι, σμαραγδίνους βότρυς ἔχουσιν καὶ τῶν Ἰνδικῶν ἀνθρώπων ἄλλων τε παντοδαπῶν λίθων ὑπερβαλλόντων ταῖς πολυτελείαις, ἐλάττω φησὶν ὁ Φύλαρχος φαίνεσθαι τῆς καθ' ἡμέραν ἐκαστοτε γινομένης παρ' Ἀλεξάνδρῳ δαπάνης.

Phylarchus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,81,F, fragment 78, line 4

et os. 29 p. 362 βξ: οὐ γὰρ ἄξιον προσέχειν τοῖς Φρυγίοις γράμμασιν, ἐν οἷς λέγεται Χάροπος μὲν τοῦ Ἡρακλέους γενέσθαι θυγάτηρ Ἰσίου, Αἰακοῦ δὲ τοῦ Ἡρακλέους ὁ Τυφών· οὐδὲ Φυ- λάρχου μὴ καταφρονεῖν γράφοντος, ὅτι πρῶτος εἰς Αἴγυπτον ἐξ Ἰνδῶν Διόνυσος ἤγαγε δύο βοῦς, ὧν ἡν τῷ μὲν Ἄπις ὄνομα τῷ δ' Ὀσίρις.

4.21 Demosthenes

“” (From Wikipedia²¹)

Demosthenes Orat., Epistulae (0014: 063) “Demosthenis orationes, vol. 3”, Ed. Rennie, W. Oxford: Clarendon Press, 1931, Repr. 1960. Epistle 4, section 7, line 5

καὶ ἐὼ Καππαδόκας καὶ Σύρους καὶ τοὺς τὴν Ἰνδικὴν χώραν κατοικοῦντας ἀνθρώ- πους ἐπ' ἔσχατα γῆς· οἷς ἅπασιν συμβέβηκε πολλὰ καὶ δεινὰ πεπονθέναι καὶ χαλεπά.

4.22 Scholia In Apollonium Rhodium

“” (From Wikipedia²²)

Scholia In Apollonium Rhodium, Scholia in Apollonii Rhodii Argonautica (scholia vetera) (5012: 001) “Scholia in Apollonium Rhodium vetera”, Ed. Wendel, K. Berlin: Weidmann, 1935, Repr. 1974. Page 80, line 1

Διονύσου ἐρασθεῖσα Ἀφροδίτη ἐμίγη αὐτῷ καὶ ἀναχωρήσαντος αὐτοῦ εἰς τὴν Ἰνδικὴν ἐμίγη τῷ Ἀδώνιδι.

Scholia In Apollonium Rhodium, Scholia in Apollonii Rhodii Argonautica (scholia vetera) Page 193, line 20

οὕτω δὲ κέκληται ὁ ποταμὸς ἀπὸ τοῦ τὸν Διόνυσον αὐτόθι στῆσαι χορόν, ὅτε ἀπὸ Ἰνδῶν ὑπέστρεφε.

21.

22.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Scholia In Apollonium Rhodium, Scholia in Apollonii Rhodii Argonautica (scholia vetera) Page 193, line 21

ὅτι δὲ ἐπολέμησεν Ἰνδοὺς ὁ Διόνυσος, Διονύσιός (32 fg 13 J.) φησι καὶ Ἀριστόδημος ἐν α' Θηβαϊκῶν ἐπιγραμμάτων (fg VII Radtke Herm. 36, 1901, 54) καὶ Κλείταρχος ἐν ταῖς Περὶ Ἀλέξανδρον ἱστορίαις (137 fg 17 J.), προσιστορῶν, ὅτι καὶ Νύσα ὅρος ἐστὶν ἐν Ἰνδικῇ καὶ κισσῷ προσόμοιον φυτόν φυτεύεται ἐκεῖ, ὃ προσαγορεύεται σκινδαψός.

4.23 Philochorus

Philochorus, of Athens, Greek historian during the 3rd century BC, (d. circa 261 BCE), was a member of a priestly family. He was a seer and interpreter of signs, and a man of considerable influence.

He was strongly anti-Macedonian in politics, and a bitter opponent of Demetrius Poliorcetes. When Antigonos Gonatas, the son of the latter, besieged and captured Athens (261), Philochorus was put to death for having supported Ptolemy Philadelphus, who had encouraged the Athenians in their resistance to Macedonia.

His investigations into the usages and customs of his native Attica were embodied in an Atthis, in seventeen books, a history of Athens from the earliest times to 262 BC. Considerable fragments are preserved in the lexicographers, scholiasts, Athenaeus, and elsewhere. The work was epitomized by the author himself, and later by Asinius Pollio of Tralles (perhaps a freedman of the famous Gaius Asinius Pollio).

Philochorus also wrote on oracles, divination and sacrifices; the mythology and religious observances of the tetrapolis of Attica; the myths of Sophocles; the lives of Euripides and Pythagoras; the foundation of Salamis, Cyprus. He compiled chronological lists of the archons and Olympiads, and made a collection of Attic inscriptions, the first of its kind in Greece. (From Wikipedia²³)

Philochorus Hist., Fragmenta (0583: 002) "FGrH #328". Volume-Jacoby'-F 3b,328,F, fragment 7a, line 2

23. <http://en.wikipedia.org/wiki/Philochorus>

4.24. ARISTODEMUS

p. 307, 1 Bonn.): Διονύσου πράξεις καὶ τὰ περὶ Ἰνδούς, Λυκοῦργόν τε καὶ Ἀ- κταίωνα καὶ Πενθέα, ὅπως τε Περσεῖ συστάς εἰς μάχην ἀναιρεῖται, ὥς φησι Δείναρχος ὁ ποιητής, οὐχ ὁ ῥήτωρ.

4.24 Aristodemus

Who is this?

Aristodemus Hist., Myth., Fragmenta (1875: 002) "FHG 3", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 1d, line 2

ΘΗΒΑΙΚΑ ΕΠΙΓΡΑΜΜΑΤΑ

E LIBRO PRIMO.

Schol. Apoll. Rhod. II, 904: Ὅτι κατεπολέμη- σεν Ἰνδούς ὁ Διόνυσος, Διονύσιος φησὶ καὶ Ἀριστόδη- μος ἐν πρώτῳ Θηβαϊκῶν ἐπιγραμμάτων.

4.25 Scholia In Euclidem

Euclid (play /'ju:klɪd/ EWK-lid; Ancient Greek: Εὐκλείδης Eukleidēs), fl. 300 BC, also known as Euclid of Alexandria, was a Greek mathematician, often referred to as the "Father of Geometry". He was active in Alexandria during the reign of Ptolemy I (323–283 BC). His Elements is one of the most influential works in the history of mathematics, serving as the main textbook for teaching mathematics (especially geometry) from the time of its publication until the late 19th or early 20th century.[1][2][3] In the Elements, Euclid deduced the principles of what is now called Euclidean geometry from a small set of axioms. Euclid also wrote works on perspective, conic sections, spherical geometry, number theory and rigor. (From Wikipedia²⁴)

Scholia In Euclidem, Scholia in Euclidis elementa (scholia vetera et recentiora) (5022: 001) "Euclidis opera omnia, vols. 5.1–5.2, 2nd edn.", Ed. Stamatis, E.S. (post J.L. Heiberg) Leipzig: Teubner, 1977. Book 9, scholion 11, line 1

Ad prop. 8

Δῆλον ἐκ τῶνδε, διὰ τί ἐν τῇ Ἰνδικῇ ψήφῳ ἐν ταῖς τῶν πλευρῶν τῶν τετραγώνων λήψιν ἀνὰ μείζονα τὸ γίνεται, οὐ γίνεται, γίνεται, οὐ γίνεται λέγομεν, διότι ἢ τε μονὰς τετράγωνός ἐστι καὶ ὁ τρίτος ἀπ' αὐτῆς καὶ ὁ πά- λιν τρίτος μετ' αὐτὸν καὶ ἕξης.

24. <http://en.wikipedia.org/wiki/Euclid>.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Scholia In Euclidem, Scholia in Euclidis elementa (scholia vetera et recentiora) Book 10, scholion 9, line 66

ἢ ἐπειδὴ τὰ μέτρα θέσει ἐξ ἡμῶν αὐτῶν λαμβάνεται καὶ οὐ φύσει, καὶ εἰκὸς ἐστὶ παρ' ἡμῖν, εἰ οὕτως ἔτυχε, τὸν πῆχυν δέκα δακτύλων εἶναι, παρ' ἄλλοις δὲ οἷον Ἰνδοῖς ὀκτῶ δακτύλων καὶ παρ' ἄλλοις ἄλλων, διὰ τοῦτο πρόσκει- ται τὸ δεῖν αἰτῆσαι πηλικότητα πῆχεως, ὥς εἰ ἐλέγομεν· δεῖ λαβεῖν τὴν πηλικότητα τοῦ πῆχεως ὀρισμένην, ὥσπερ καὶ τὸν πῆχυν ἡμᾶς ἔροιτό τις, πόσων ἐστὶ δακτύλων, δεῖ αἰτῆσαι τὸ πηλίκον αὐτοῦ· οὐδὲ γὰρ ὁ δάκτυλος οὐδ' ὁ ποῦς οὐδ' ὁ μέδιμνος οὐδ' ἄλλο οὐδὲν παρὰ πᾶσιν ἐστὶ τὰ αὐτά, ὥς εἴρηται.

4.26 Ephorus

of Cyme in Aeolia, in Asia Minor, was an ancient Greek historian. Information on his biography is limited; he was the father of Demophilus, who followed in his footsteps as a historian, and to Plutarch's claim that Ephorus declined Alexander the Great's offer to join him on his Persian campaign as the official historiographer.[1] Together with the historian Theopompus, he was a pupil of Isocrates, in whose school he attended two courses of rhetoric.[citation needed] But he does not seem to have made much progress in the art, and it is said to have been at the suggestion of Isocrates himself that he took up literary composition and the study of history.[citation needed] (From Wikipedia²⁵)

Ephorus Hist., Fragmenta (0536: 003) "FGrH #70". Volume-Jacoby'-F 2a,70,F, fragment 30a, line 4

> STRABON I 2, 28: μνηύει δὲ καὶ Ἐφωρος τὴν παλαιὰν περὶ τῆς Αἰθιοπίας δόξαν, ὅς φησιν ἐν τῷ περὶ τῆς Εὐρώπης λόγῳ, τῶν περὶ τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν τόπων εἰς τέσσαρα μέρη διηρημένων, τὸ πρὸς τὸν ἀπηλιώτην Ἰνδοὺς ἔχειν, πρὸς νότον δὲ Αἰθίοπας, πρὸς δύσιν δὲ Κελτούς, πρὸς δὲ βορρᾶν ἄνεμον Σκύθας.

Ephorus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,70,F, fragment 30b, line 1

> KOSMAS INDIKOPL.

Ephorus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,70,F, fragment 30b, line 3

<<τὸν μὲν γὰρ ἀπηλιώ- την καὶ τὸν ἐγγυὲς ἀνατολῶν τόπον Ἰνδοὶ κατοικοῦσι· τὸν δὲ πρὸς νότον καὶ μεσημβρίαν Αἰθίοπες νέμονται· τὸν δὲ ἀπὸ ζεφύρου καὶ δυσμῶν Κελτοὶ κατέχουσι· τὸν δὲ κατὰ βορρᾶν καὶ τοὺς ἄρκτους Σκύθαι κατοικοῦσιν.

Ephorus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,70,F, fragment 30b, line 9

25. <http://en.wikipedia.org/wiki/Ephorus>.

4.27. LYCOPHRON (SCHOLIA IN)

ἔστιν μὲν οὖν οὐκ ἴσον ἕκαστον τούτων τῶν μερῶν, ἀλλὰ τὸ μὲν τῶν Σκυθῶν καὶ τῶν Αἰθιοπῶν μείζον, τὸ δὲ τῶν Ἰνδῶν καὶ τῶν Κελτῶν ἔλαττον.

Ephorus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 2a,70,F, fragment 30b, line 11

καὶ παραπλήσιον ἕκα- τέρων ἀλλήλοις ἔχει τοῦ τόπου τὸ μέγεθος· οἱ μὲν γὰρ <Ἰνδοί> εἰσι μεταξὺ θερινῶν καὶ χειμερινῶν ἀνατολῶν· Κελτοὶ δὲ τὴν ἀπὸ θερινῶν μέχρι χειμερινῶν δυσμῶν χώραν κατέχουσι· καὶ τοῦτο μὲν ἴσόν ἐστιν ἐκείνῳ τῷ διαστήματι καὶ μάλιστα πῶς ἀντικείμενον.

Ephorus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 2a,70,F, fragment 30b, line 19

<<NOTOS XEIMEPINH ANATOLH <AIΘIOΠES> XEIMEPINH ΔΤΣΙΣ>
<<ΑΠΗΛΙΩΤΗΣ <ΙΝΔ*ΟΙ>> <<ΚΕΛΤΟΙ> ΖΕΦΥΡΟΣ>> <ΘΕΡΙΝΗ ΑΝΑΤΟΛΗ
<ΣΚΥΘΑΙ> ΘΕΡΙΝΗ ΔΤΣΙΣ ΒΟΡΡΑΣ>> ἀκριβῶς ὁ Ἐφωρος καὶ λόγῳ καὶ τῇ κατα-
γραφῇ.

Ephorus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 2a,70,F, fragment 30c, line 4

| τὴν μὲν γὰρ ἐντὸς ἀνατολῶν πᾶσαν σχεδὸν | οἰκοῦσιν Ἰνδοί, τὴν δὲ πρὸς μεσημβρίαν |
Αἰθιοπεῖς ἐγγὺς κείμενοι νότον πνοῆς· | τὸν ἀπὸ ζεφύρου Κελτοὶ δὲ μέχρι δυσμῶν τόπον | θερινῶν
ἔχουσιν, τὸν δὲ πρὸς βορρᾶν Σκύθαι.

Ephorus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 2a,70,F, fragment 191, line 22

παραταχ[θεί|ς]ας δὲ πολὺν χρόνον[ν] | πολλὰς μὲν τῶν κ[ιν]|δυνευουσῶν βαρβα[ρι]|κῶν
νεῶν διέφθε[ι|ρ]εν, ἕκατὸν δ' αὐτοῖς | ἀνδράσιν εἴλε ζωγρή|[σας τ]ὸν π[.....]ων. col. II v. 77
– 83 zeilenanfänge. frg. 11: τὸν μὲ|ν | [στρατηγὸ]ν αὐτῶν | [Φερενδάτη]ν (F 192)
ἀδελ|[φιδου]ν ὄντ|α τοῦ βασι|[λέως ἐν τῇ] σκηνῇ frg. 12 – 13 col. I 89 – 90: – col. II
.....]ε | [..]διετέλ[ουν ὁ]ντες· | [ὥστ]ε νομίζοντες ἀ|πὸ τῆς ἡπείρ[ου] τὴν | ἔφοδον αὐτ[οῖς]
γεγ[ο]νέναι τῶν π[ο]λεμίων πρὸς τὰ[ς] ναῦ[ς] ἐ|φευγον, ὑπολαμβά|νοντες αὐτοῖς εἶναι |
φιλίας.

Ephorus Hist., Fragmenta Volume-Jacoby' -F 2a,70,F, fragment 208, line 5

(2) ἐπεὶ δὲ αἱ τε παρ' Ἰνδῶν καὶ τινῶν ἄλλων ἐθνῶν καθυστέρουν διὰ τὸ μακρὰν ἀφεστάναι
τοὺς τόπους, μετὰ τῆς συναχθείσης στρατιᾶς ὥρμησεν ἀπαντήσων τῷ Κύρῳ.

4.27 Lycophron (scholia in)

a Hellenistic Greek tragic poet, grammarian, and commentator on comedy,
to whom the poem Alexandra is attributed (perhaps falsely).

One poem traditionally attributed to him, Alexandra or Cassandra,[1] has
been preserved in its complete form, running to 1474 iambic trimeters. It
consists of a prophecy uttered by Cassandra and relates the later fortunes

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

of Troy and of the Greek and Trojan heroes. References to events of mythical and later times are introduced, and the poem ends with a reference to Alexander the Great, who was to unite Asia and Europe in his world-wide empire.

The style obtained for the poem's author, even among the ancients, the title of "obscure"; one modern scholar says the *Alexandra* "may be the most illegible piece of classical literature, one which nobody can read without a proper commentary and which even then makes very difficult reading." [2] The poem is evidently intended to display the writer's knowledge of obscure names and uncommon myths; it is full of unusual words of doubtful meaning gathered from the older poets, and long-winded compounds coined by the author. It was probably written as a show-piece for the Alexandrian school, rather than as straight poetry. It was very popular in the Byzantine period, and was read and commented on very frequently; the manuscripts of the *Cassandra* are numerous. Two explanatory paraphrases of the poem survive, and the collection of scholia by Isaac and John Tzetzes is very valuable (much used by, among others, Robert Graves in his *Greek Myths*). (From Wikipedia²⁶)

Scholia In Lycophronem, Scholia in Lycophronem (scholia vetera et recentiora partim Isaac et Joannis Tzetzae) (5030: 001) "*Lycophronis Alexandra*, vol. 2", Ed. Scheer, E. Berlin: Weidmann, 1958. Scholion 174, line 9

οἱ δὲ Κόλχοι Ἰνδικοὶ Σκύθαι εἰσὶν οἱ καὶ Λαῶες καλούμενοι πλησίον οἰκούντες Ἀβασγῶν τῶν πρὶν Μασσαγετῶν ἢ τῶν Κόλχων τὰ φάρμακα αὐθιμερινὸν ἀναιροῦσιν.

Scholia In Lycophronem, Scholia in Lycophronem (scholia vetera et recentiora partim Isaac et Joannis Tzetzae) Scholion 175, line 96

ὕστερον δὲ τῷ Θησέϊ ἐπιβουλεύσασα ἐκβάλλεται τῆς πατρίδος μετὰ τοῦ παιδός, ὃς βαρβάρων ἐπικρατήσας τὴν ὑπ' αὐτὸν Μηδείαν ἐκάλεσε καὶ στρατεύσας ἐν Ἰνδοῖς τελευτᾷ.

Scholia In Lycophronem, Scholia in Lycophronem (scholia vetera et recentiora partim Isaac et Joannis Tzetzae) Scholion 254, line 2a

* Τ τὸ <ἰνδάλλεται> οὐ μόνον ἐπὶ τῆς ὀφείας, ἀλλὰ καὶ ἀκοῆς τέταχε.

Scholia In Lycophronem, Scholia in Lycophronem (scholia vetera et recentiora partim Isaac et Joannis Tzetzae) Scholion 254, line 5b

ss3 <ἰνδάλλεται> ἀπεικάζεται ὁμοιοῦται καταχρηστικῶς· κυ- ρίως γὰρ ἐπ' ὀφθαλμοῖς λέ- γομεν τὸ ἰνδάλλιν.

Scholia In Lycophronem, Scholia in Lycophronem (scholia vetera et recentiora partim Isaac et Joannis Tzetzae) Scholion 595, line 3

26. .

4.28. PHAENIAS OF ERESUS

ss3 <οἱ θαλασσίαν>· οἵτινες φίλοι τοῦ Διομήδους ἔρω- διοὶ ἢ λάροι γενόμενοι <αἰνήσουσι> τὴν ἐν θαλάσῃ δια- γωγὴν καὶ <δίκην> τῶν <πορκέων> καὶ ἀλιέων <ἰνδαλθέν- τες> καὶ ὁμοιω- θέντες εἰς τὴν <δομὴν> καὶ δέμας κατὰ μετα- πλασμὸν <κύκνοις εὐγλήνοισ> καὶ εὐοφθάλμοις.

4.28 Phaenias of Eresus

Phaenias of Eresus (Ancient Greek: Φαινίας ὁ Ἐρέσιος, Phainias; also Phainias) was a Greek philosopher from Lesbos, important as an immediate follower of and commentator on Aristotle. He came to Athens about 332 BCE, and joined his compatriot, Theophrastus, in the Peripatetic school. His writings on logic and science appear to have been commentaries or supplements to the works of Aristotle and Theophrastus. He also wrote extensively on history. None of his works have survived. (From Wikipedia²⁷)

Phaenias Phil., Fragmenta (1578: 001) “Phainias von Eresos. Chamaileon. Praxiphanes”, Ed. Wehrli, F. Basel: Schwabe, 1969; Die Schule des Aristoteles, vol. 9, 2nd edn.. Fragment 12, line 16

ib. XXIII 422 d: ἐλέγχει δ' αὐτὸν (sc. τὸν ξένον) ὁ τῶν κόσμων ἀριθ- μὸς οὐκ ὢν Αἰγύπτιος οὐδ' Ἰνδὸς ἀλλὰ Δωριεὺς ἀπὸ Σικελίας, ἀνδρὸς Ἱμεραίου τοῦνομα Πέτρωνος.

Phaenias Phil., Fragmenta Fragment 45, line 7

ὕφαινεται δ' ἐξ αὐτοῦ καὶ πόδεια καὶ ἄλλα ἱμάτια”, ὡς καὶ Φαινίας φησί· “τὸ δὲ ἐν Ἰνδοῖς τριχῶ- δές ἐστι.

4.29 Berossus

Berossus (play /bəˈrɒsəs/) or Berosus (play /bəˈrɒʊsəs/; Akkadian: Bēl-rē'ušu, “Bel is his shepherd”; Greek: Βήρωσος[1]) was a Hellenistic-era Babylonian writer, a priest of Bel Marduk[2] and astronomer writing in Greek, who was active at the beginning of the 3rd century BC. Versions of two excerpts of his writings survive, at several removes. (From Wikipedia²⁸)

27. http://en.wikipedia.org/wiki/Phaenias_of_Eresus.

28. <http://en.wikipedia.org/wiki/Berossus>.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Beros(s)us Astrol., Hist., Fragmenta (1222: 003) “FHG 2”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 14c, line 15

Περὶ τούτων γοῦν συμφωνεῖ καὶ Φιλόστρα-
τος ἐν ταῖς Ἱστορίαις, μεμνημένος τῆς Τύρου
πολιορκίας, καὶ Μεγασθένης ἐν τῇ τετάρτῃ τῶν Ἰνδικῶν, δι’ ἧς ἀποφαίνεται πειρᾶται τὸν προ-
ειρημένον βασιλέα τῶν Βαβυλωνίων Ἡρακλέους ἀνδρεία καὶ μεγέθει πρά-
ξεων διεννηοχένοι·
καταστρέψασθαι γὰρ αὐτὸν φησι καὶ Λιβύης τὴν πολλὴν καὶ Ἰβηρίαν.

4.30 *Scholia In Theocritum*

I have no idea of the date of this.

Scholia In Theocritum, Scholia in Theocritum (scholia vetera) (5038: 001) “Scho-
lia in Theocritum vetera”, Ed. Wendel, K. Leipzig: Teubner, 1914, Repr. 1967.
Prolegomenon-anecdote-poem 17, section-verse 106/107, line 5 περὶ δὲ τῶν μυρμηκῶν
τῶν μεταλλευόντων χρυσὸν ἐν Ἰνδικοῖς πολλοὶ ἱστορήκασιν.

4.31 Megasthenes, *Indica*

4.31.1 About Megasthenes

Megasthenes (Μεγασθένης, ca. 350 – 290 BCE) was a Greek ethnographer and explorer in the Hellenistic period, author of the work *Indica*. He was born in Asia Minor (modern day Turkey) and became an ambassador of Seleucus I of the Seleucid dynasty possibly to Chandragupta Maurya in Pataliputra, India. However the exact date of his embassy is uncertain. Scholars place it before 298 BC, the date of Chandragupta’s death.

Arrian explains that Megasthenes lived in Arachosia, with the satrap Sibyr-
tius, from where he visited India: “Megasthenes lived with Sibyr-
tius, satrap of Arachosia, and often speaks of his visiting Sandracottus, the king of the
Indians.” Arrian, *Anabasis Alexandri* [1]

We have more definite information regarding the parts of India Megas-
thenes visited. He entered the subcontinent through the district of the
Pentapotamia, providing a full account of the rivers there (thought to be the
five affluents of the Indus that form the Punjab region), and proceeded from
there by the royal road to Pataliputra. There are accounts of Megasthenes

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

having visited Madurai (then, a bustling city and capital of the Pandyas), but he appears not to have visited any other parts of India.

At the beginning of his *Indica*, he refers to the older Indians who know about the prehistoric arrival of Dionysus and Hercules in India, which was a story very popular amongst the Greeks during the Alexandrian period. Particularly important are his comments on the religions of the Indians. He mentions the devotees of Heracles (Lord Krishna) and Dionysus (Lord Shiva or King Lord Indra), but he does not mention Buddhists, something that gives support to the theory that the latter religion was not widely known before the reign of Ashoka.[2]

His *Indica* served as an important source for many later writers such as Strabo and Arrian. He describes such features as the Himalayas and the island of Sri Lanka. He also describes a caste system different from the one that exists today, which shows that the caste system may to some extent be fluid and evolve. However, it might be that, being a foreigner, he was not adequately informed about the caste system. His description follows:

“The first is formed by the collective body of the Philosophers, which in point of number is inferior to the other classes, but in point of dignity pre-eminent over all. The philosopher who errs in his predictions incurs censure, and then observes silence for the rest of his life.

“The second caste consists of the Husbandmen, who appear to be far more numerous than the others. They devote the whole of their time to tillage; nor would an enemy coming upon a husbandman at work on his land do him any harm, for men of this class, being regarded as public benefactors, are protected from all injury.

“The third caste consists of the Shepherds and in general of all herdsmen who neither settle in towns nor in villages, but live in tents.

“The fourth caste consists of the Artizans. Of these some are armourers, while others make the implements that husbandmen and others find useful in their different callings. This class is not only exempted from paying taxes, but even receives maintenance from the royal exchequer.

“The fifth caste is the Military. It is well organized and equipped for war, holds the second place in point of numbers, and gives itself up to idleness and amusement in the times of peace. The entire force—men-at-arms, war-horses, war-elephants, and all—are maintained at the king’s expense.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

“The sixth caste consists of the Overseers. It is their province to inquire into and superintend all that goes on in India, and make report to the king, or, where there is not a king, to the magistrates.

“The seventh caste consists of the Councillors and Assessors,—of those who deliberate on public affairs. It is the smallest class, looking to number, but the most respected, on account of the high character and wisdom of its members; for from their ranks the advisers of the king are taken, and the treasurers, of the state, and the arbiters who settle disputes. The generals of the army also, and the chief magistrates, usually belong to this class.

Later writers such as Arrian, Strabo, Diodorus, and Pliny refer to Indica in their works. Of these writers, Arrian speaks most highly of Megasthenes, while Strabo and Pliny treat him with less respect. Indica contained many legends and fabulous stories, similar to those we find in the Indica of Ctesias.”

Megasthenes’ Indica is the first well-known Western account of India and he is regarded as one of the founders of the study of Indian history in the West. He is also the first foreigner Ambassador to be mentioned in the Indian history.

Megasthenes also comments on the presence of pre-Socratic views among the Brahmans and Jews. Five centuries later Clement of Alexandria, in his Stromateis, may have misunderstood Megasthenes to be responding to claims of Greek primacy by admitting Greek views of physics were preceded by those of Jews and Indians. Megasthenes, like Numenius of Apamea, was simply comparing the ideas of the different ancient cultures.[3] (From Wikipedia)

4.31.2 *Indica*

Text: Megasthenes Hist., Fragmenta (1489: 003) | “FHG 2”, Ed. Müller, K. |Paris: Didot, 1841–1870.

ΙΝΔΙΚΑ. (ΕΠΙΤΟΜΗ.) 1.1 Diodorus II, 35: Ἡ τοίνυν Ἰνδικὴ τετράπλευρος οὕσα τῶ σχήματι, τὴν μὲν πρὸς ἀνατολὰς νεύουσιν πλευρὰν καὶ τὴν πρὸς τὴν μεσημβρίαν ἢ μεγάλην πε- ριέχει θάλαττα, τὴν δὲ πρὸς τὰς ἄρκτους τὸ Ἡμῶδον 1.5 ὅρος διείργει τῆς Σκυθίας, ἣν κατοικοῦσι τῶν Σκυθῶν οἱ προσαναγορευόμενοι Σάκαι· τὴν δὲ τετάρτην τὴν πρὸς δύσιν ἐστραμ- μένην διείληφεν ὁ Ἰνδὸς προσαναγορευόμενος ποταμὸς, μέγιστος ὢν σχεδὸν τῶν ἀπάντων μετὰ τὸν Νεῖλον. (2) Τὸ δὲ μέγεθος τῆς ὅλης Ἰνδικῆς φασιν ὑπάρ- 1.10 χεῖν ἀπὸ μὲν ἀνατολῶν πρὸς δύσιν δις μυρίων ὀκτακίς- χιλίων σταδίων, ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων πρὸς μεσημβρίαν τρισμυρίων δις χιλίων. Τηλικαύτη δὲ οὕσα τὸ μέγεθος δοκεῖ μάλιστα τοῦ κόσμου περιέχειν τὸν τῶν θερι- νῶν

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

τροπῶν κύκλον, καὶ πολλαχῇ μὲν ἐπ' ἄκρας τῆς 1.15 Ἰνδικῆς ἰδεῖν ἔστιν ἀσκίους ὄντας τοὺς γινώμονας, νυκτὸς δὲ τὰς ἄρκτους ἀθεωρήτους· ἐν δὲ τοῖς ἐσχά- τοις οὐδ' αὐτὸν τὸν ἀρκτοῦρον φαίνεσθαι· καθ' ὃν δὴ τρόπον φασὶ καὶ τὰς σκιάς κεκλίσθαι πρὸς μεσημ- βρίαν. 1.20 3. Ἡ δ' οὖν Ἰνδικὴ πολλὰ μὲν ὄρη καὶ μεγάλα ἔχει δένδρεσι παντοδαποῖς καρπίμοις πληθύνοντα, πολλὰ δὲ πεδία καὶ μεγάλα καρποφόρα, τῷ μὲν κάλλει διάφορα, ποταμῶν δὲ πλήθεσι διαιρούμενα. Τὰ πολλὰ δὲ τῆς χώρας ἀρδεύεται, καὶ διὰ τοῦτο διττοὺς ἔχει τοὺς κατ' 1.25 ἔτος καρπούς· ζῶν τε παντοδαπῶν γέμει διαφόρων τοῖς μεγέθεσι καὶ ταῖς ἀλκαῖς, τῶν μὲν χειρσαίων, τῶν δὲ καὶ πτηνῶν. (4) Καὶ πλείστους δὲ καὶ μεγίστους ἐλέφαντας ἐκτρέφει, χορηγοῦσα τὰς τρο- φὰς ἀφθόνως, δι' ἃς ταῖς ῥώμασι τὰ θηρία ταῦτα πολὺ προέχει τῶν 1.30 κατὰ τὴν Λιβύην γεννωμένων· διὸ καὶ πολλῶν θηρευο- μένων ὑπὸ τῶν Ἰνδῶν καὶ πρὸς τοὺς πολεμικοὺς ἀγῶνας κατασκευαζομένων μεγάλας συμβαίνει γίνεσθαι ξοπὰς πρὸς τὴν νίκην. XXXVI. 5. Ὁμοίως δὲ καὶ τοὺς ἀνθρώπους ἢ πο- 1.35 λυκαρπία τρέφουσα τοῖς τε ἀναστήμασι τῶν σωμά- των καὶ τοῖς ὄγκοις ὑπερφέροντας κατασκευάζει· εἶναι δὲ αὐτοὺς συμβαίνει καὶ πρὸς τὰς τέχνας ἐπιστή- μονας, ὥς ἂν ἀέρα μὲν ἔλκοντας καθαρὸν, ὕδωρ δὲ λε- πτομερέστατον πίνοντας. (6) Ἡ δὲ γῆ πάμφορος οὕσα 1.40 τοῖς ἡμέροις καρποῖς ἔχει καὶ φλέβας καταγείους πολλῶν καὶ παντοδαπῶν μετάλλων· γίνεται γὰρ ἐν αὐτῇ πολὺς μὲν ἄργυρος καὶ χρυσός, οὐκ ὀλίγος δὲ χαλκός καὶ σί- δηρος, ἔτι δὲ καττίτερος καὶ τᾶλλα τὰ πρὸς κόσμον τε καὶ χρεῖαν καὶ πολε- μικήν παρασκευὴν ἀνήκοντα. 1.45 (7) Χωρὶς δὲ τῶν δημητριακῶν καρπῶν φυεταὶ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν πολλὰ μὲν κέγχρος, ἀρδευομένη τῇ τῶν ποταμίων ναμάτων δαφίλειά, πολὺ δὲ ὄσπριον καὶ διά- φορον, ἔτι δὲ ὄρυζα καὶ τὸ προσαγορευόμενον βόσπορον, καὶ μετὰ ταῦτ' ἄλλα πολλὰ τῶν πρὸς διατροφὴν χρη- 1.50 σίμων· καὶ τούτων τὰ πολλὰ ὑπάρχει αὐτοφυῆ· οὐκ ὀλίγους δὲ καὶ ἄλλους ἐδωδίμους καρπούς φέρει δυνα- μένους τρέφειν ζῶα, περὶ ὧν μακρὸν ἂν εἴη γρά- φειν. (8) Διὸ καὶ φασὶ μηδέποτε τὴν Ἰνδικὴν ἐπισχεῖν λιμὸν ἢ καθόλου σπάνιν τῶν πρὸς τροφὴν ἡμερον ἀνηκόντων. 1.55 Διττῶν γὰρ ὄμβρων ἐν αὐτῇ γινομένων καθ' ἕκαστον ἔτος, τοῦ μὲν χειμερινοῦ, καθὰ παρὰ τοῖς ἄλλοις ὁ σπό- ρος τῶν πυρίνων γίνεται καρπῶν, τοῦ δ' ἐτέρου κατὰ τὴν θερινὴν τροπὴν, καθ' ἣν σπείρεσθαι συμβαίνει τὴν ὄρυζαν καὶ τὸ βόσπορον, ἔτι δὲ σήσαμον καὶ κέγχρον, 1.60 κατὰ [δὲ] τὸ πλεῖστον ἀμφοτέροις τοῖς καρποῖς οἱ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν ἐπι- τυγχάνουσι· πάντων δὲ (μὴ) τελεσφο- ρουμένων, θατέρου τῶν καρπῶν οὐκ ἀποτυγχάνουσιν. (9) Οἱ τε αὐτοματίζοντες καρποὶ καὶ αἱ κατὰ τοὺς ἐλώ- δεις τόπους φυόμεναι ῥίζαι διάφοροι ταῖς γλυκύτησιν 1.65 οὕσαι πολλὴν παρέχονται τοῖς ἀνθρώποις δαφίλειαν· πάντα γὰρ σχεδὸν τὰ κατὰ τὴν χώραν πεδία γλυκεῖαν ἔχει τὴν ἀπὸ τῶν ποταμῶν ἱκμάδα καὶ τὴν ἀπὸ τῶν ἐν τῷ θέρει [γινομένων] κατ' ἐνιαυτὸν κυκλικῇ τινι πε- ριόδῳ παραδόξως εἰωθότων γίνεσθαι δαφίλειαν, χλιαρῶν 1.70 πιπτόντων ὑδάτων ἐκ τοῦ περιέχοντος ἀέρος, καὶ τὰς ἐν τοῖς ἔλεσι ῥίζας ἔφοντος τοῦ καύματος, καὶ μάλιστα τῶν μεγάλων καλάμων. (10) Συμβάλλονται δὲ παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς καὶ τὰ νόμιμα πρὸς τὸ μηδέποτε ἔνδειαν τροφῆς παρ' αὐτοῖς εἶναι· παρὰ μὲν γὰρ τοῖς ἄλλοις 1.75 ἀνθρώποις οἱ πολέμιοι καταφθείροντες τὴν χώραν ἀγεώργητον κατα- σκευάζουσι· παρὰ δὲ τούτοις τῶν γεωρ- γῶν ἱερῶν καὶ ἀσύλων ἐωμένων, οἱ πλησίον τῶν παρα- τάξεων γεωργοῦντες ἀνεπαίσθητοι τῶν κινδύνων εἰσίν. Ἀμφοτέροι γὰρ οἱ πολεμοῦντες ἀλλήλους

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

μὲν ἀποκτείνει- 1.80 νουσιν ἐν ταῖς μάχαις, τοὺς δὲ περὶ τὴν γεωργίαν ὄντας ἑώσιν ἀβλαβεῖς, ὥς κοινούς ὄντας ἀπάντων εὐεργέτας, τὰς τε χώρας τῶν ἀντιπολεμούντων οὐτ' ἐμπυρίζουσιν οὔτε δένδροτομοῦσιν. XXXVII. 11. Ἐχει δὲ καὶ ποταμούςς ἢ χώρα τῶν 1.85 Ἰνδῶν πολλοὺς καὶ μεγάλους πλωτοὺς, οἳ τὰς πηγὰς ἔχοντες ἐν τοῖς ὄρεσι τοῖς πρὸς τὰς ἄρκτους κεκλιμένοις φέρονται διὰ τῆς πεδιάδος, ὧν οὐκ ὀλίγοι συμμίσγοντες ἀλλήλοις ἐμβάλλουσιν εἰς ποταμὸν τὸν ὀνομαζόμενον Γάγγην. (12) Οὗτος δὲ τὸ πλάτος γενόμενος σταδίῳ

1.90 τρίακοντα φέρεται μὲν ἀπὸ τῆς ἄρκτου πρὸς μεσημβρίαν, ἐξερεύγεται δὲ εἰς τὸν Ὠκεανόν, ἀπολαμβάνων εἰς τὸ πρὸς ἑὸ μέρος τὸ ἔθνος τὸ τῶν Γανδαριδῶν (Γαγγαριδῶν?), πλείστους ἔχον καὶ μεγίστους ἐλέφαντας. (13) Διὸ καὶ τῆς χώρας ταύτης οὐδεὶς πώποτε βασιλεὺς 1.95 ἐπηλύς ἐκράτησε, πάντων τῶν ἀλλοεθνῶν φοβουμένων τὸ πλῆθος καὶ τὴν ἀλκὴν τῶν θηρίων. Καὶ γὰρ Ἀλέξανδρος ὁ Μακεδὼν ἀπάσης τῆς Ἀσίας κρατήσας μόλις τοὺς Γανδαριδας οὐκ ἐπολέμησε· καταντήσας γὰρ ἐπὶ τὸν Γάγγην ποταμὸν μετὰ πάσης τῆς δυνάμεως, 1.100 καὶ τοὺς ἄλλους Ἰνδοὺς καταπολεμήσας, ὥς ἐπύθετο τοὺς Γανδαριδας ἔχειν τετρακισχίλους ἐλέφαντας πολεμικῶς κεκοσμημένους, ἀπέγνων τὴν ἐπ' αὐτοὺς στρατείαν. (14) Ὁ δὲ παραπλήσιος τῷ Γάγγη ποταμὸς, προσαγορευόμενος δὲ Ἰνδός, ἄρχεται μὲν ὁμοίως ἀπὸ 1.105 τῶν ἄρκτων, ἐμβάλλων δὲ εἰς τὸν Ὠκεανὸν ἀφορίζει τὴν Ἰνδικήν· πολλὴν δὲ διεξὼν πεδιάδα χώραν δέχεται ποταμούςς οὐκ ὀλίγους πλωτοὺς, ἐπιφανεστάτους δὲ Γπαννὶ καὶ Ὑδάσπην καὶ Ἀκεσίνον. (15) Χωρὶς δὲ τούτων ἄλλο πλῆθος ποταμῶν παντοδαπῶν διαρρεῖ, 1.110 καὶ ποιεῖ κατάφυτον πολλοῖς κηπεύμασι καὶ καρποῖς παντοδαποῖς τὴν χώραν. (16) Τοῦ δὲ κατὰ τοὺς ποταμούςς πλῆθος καὶ τῆς τῶν ὑδάτων ὑπερβολῆς αἰτίαν φέρουσιν οἱ παρ' αὐτοῖς φιλόσοφοι καὶ φυσικοὶ τοιαύτην· τῆς Ἰνδικῆς φασὶ τὰς περικειμένας χώρας, τὴν τε 1.115 Σκυθῶν καὶ Βακτριανῶν, ἔτι δὲ καὶ τῶν Ἀριανῶν, ὑψηλοτέραι εἶναι τῆς Ἰνδικῆς· ὥστε εὐλόγως εἰς τὴν ὑποκειμένην χώραν πανταχόθεν συρρεούσας τὰς λιβάδας ἐκ τοῦ κατ' ὀλίγον ποιεῖν τοὺς τόπους καθύγρους καὶ γεννᾶν ποταμῶν πλῆθος. (17) Ἴδιον δὲ τι συμβαίνει περὶ τινὰ τῶν κατὰ τὴν Ἰνδικὴν ποταμῶν τὸν ὀνομαζόμενον Σίλλαν, ῥέοντα δὲ ἐκ τινος ὁμωνύμου κρήνης· ἐπὶ γὰρ τούτου μόνου τῶν ἀπάντων ποταμῶν οὐδὲν τῶν ἐμβαλλομένων εἰς αὐτὸν ἐπιπλεῖ, πάντα δ' εἰς τὸν βυθὸν καταδύεται παραδόξως. 1.125 XXXVIII. 18. Τὴν δ' ὅλην Ἰνδικὴν οὔσαν ὑπερμεγέθη λέγεται κατοικεῖν ἔθνη πολλὰ καὶ παντοδαπὰ, καὶ τούτων μὴδὲν ἔχειν τὴν ἐξ ἀρχῆς γένεσιν ἐπηλύς, ἀλλὰ πάντα δοκεῖν ὑπάρχειν αὐτόχθονα, πρὸς δὲ τούτοις μῆτε ξενικὴν ἀποικίαν προσδέχσθαι πώποτε μῆτε εἰς 1.130 ἄλλο ἔθνος ἀπεσταλκέναι. (19) Μυθολογοῦσι δὲ τοὺς ἀρχαιοτάτους ἀνθρώπους τροφαῖς μὲν κεχρησθαι τοῖς αὐτομάτως φυομένοις ἐκ τῆς γῆς καρποῖς, ἐσθῆσι δὲ ταῖς δοραῖς τῶν ἐγχωρίων ζώων, καθάπερ καὶ παρ' Ἑλλήσιν· ὁμοίως δὲ καὶ τῶν τεχνῶν τὰς εὐρέσεις καὶ 1.135 τῶν ἄλλων τῶν πρὸς βίον χρησίμων ἐκ τοῦ κατ' ὀλίγον γενέσθαι, τῆς χρεῖας αὐτῆς ὑψηλομένης εὐφυεῖ ζῳῇ καὶ συνεργούς ἔχοντι πρὸς ἅπαντα χεῖρας καὶ λόγον καὶ ψυχῆς ἀγχινοῖαν. 20. Μυθολογοῦσι δὲ παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς οἱ λογιώτατοι 1.140 περὶ ὧν καθῆκον ἂν εἴη συντόμως· διελθεῖν. Φασὶ γὰρ ἐν τοῖς ἀρχαιοτάτοις χρόνοις, παρ' αὐτοῖς ἔτι τῶν ἀνθρώπων κωμηδὸν οἰκούντων, παραγενέσθαι τὸν Διόνυσον ἐκ τῶν πρὸς ἐσπέρας τόπων ἔχοντα δύναμιν ἀξιόλογον· ἐπελθεῖν δὲ τὴν Ἰνδικὴν ἅπασαν, μὴδεμιᾶς 1.145 οὔσης ἀξιο-

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

λόγου πόλεως τῆς δυναμένης ἀντιτάξασθαι. (21) Ἐπιγενομένων δὲ καυμάτων μεγάλων, καὶ τῶν τοῦ Διονύσου στρατιωτῶν λοιμικῇ νόσῳ διαφθειρομένων, συνέσει διαφέροντα τὸν ἡγεμόνα τοῦτον ἀπαγαγεῖν τὸ στρατόπεδον ἐκ τῶν πεδινῶν τόπων εἰς τὴν ὄρεινὴν· 1.150 ἐνταῦθα δὲ πνεόντων ψυχρῶν ἀνέμων καὶ τῶν ναμα- τιαίων ὑδάτων καθαρῶν ξέοντων πρὸς αὐταῖς ταῖς πη- γαῖς, ἀπαλλαγῆναι τῆς νόσου τὸ στρατόπεδον· ὀνομά- ζεσθαι δὲ τῆς ὄρεινῆς τὸν τόπον τοῦτον Μηρόν, καθ' ὃν ὁ Διόνυσος ἐξέτρεψε τὰς δυνάμεις ἐκ τῆς νόσου· ἀφ' οὗ 1.155 δὴ καὶ τοὺς Ἕλληνας περὶ τοῦ θεοῦ τούτου παραδεδω- κέναι τοῖς μεταγενεστέροις τετράφθαι τὸν Διόνυσον ἐν μηρῷ. (22) Μετὰ δὲ ταῦτα τῆς παραθέσεως τῶν καρ- πῶν ἐπιμεληθέντα μεταδιδόναι τοῖς Ἰνδοῖς, καὶ τὴν εὔρεσιν τοῦ οἴνου καὶ τῶν ἄλλων τῶν εἰς τὸν βίον χρη- 1.160 σίμων παραδιδόναι. Πρὸς δὲ τούτοις πόλεων τε ἀξιολό- γων γεννηθῆναι κτίστην, μεταγαγόντα τὰς κώμας εἰς τοὺς εὐθέτους τόπους, τιμᾶν τε καταδείξαι τὸ θεῖον καὶ νόμους εἰσηγήσασθαι καὶ δικαστήρια, κα- θόλου δὲ πολ- λῶν καὶ καλῶν ἔργων εἰσηγητὴν γενόμενον θεὸν νομι- 1.165 σθῆναι καὶ τυχεῖν ἀθανάτων τιμῶν. (23) Ἰστοροῦσι δ' αὐτὸν καὶ γυναικῶν πλήθος μετὰ τοῦ στρατοπέδου πε- ριάγεσθαι, καὶ κατὰ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις παρατάξεις τυμπάνοις καὶ κυμβάλοις κεχρηῆσθαι, μήπω σάλπιγγος εὐρημένης. Βασιλεύσαντα δὲ πάσης τῆς Ἰνδικῆς ἔτη 1.170 δύο πρὸς τοῖς πεν- τήκοντα γῆρα τελευτῆσαι· διαδεξαμέ- νους δὲ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ τὴν ἡγεμονίαν ἀεὶ τοῖς ἀφ' ἑαυτῶν ἀπολιπεῖν τὴν ἀρχήν· τὸ δὲ τελευταῖον πολ- λαῖς γενεαῖς ὕστερον καταλυθείσης τῆς ἡγεμονίας δη- μοκρατηθῆναι τὰς πόλεις. 1.175 XXXIX. 24. Περὶ μὲν οὖν τοῦ Διονύσου καὶ τῶν ἀπογόνων αὐτοῦ τοιαῦτα μυθολογοῦσιν οἱ τὴν ὄρεινὴν τῆς Ἰνδικῆς κατοικοῦντες. Τὸν τε Ἡρακλέα φασὶ παρ' αὐτοῖς γεγενῆσθαι, καὶ παραπλησίως τοῖς Ἕλλησι τὸ τε ῥόπαλον καὶ τὴν λεοντὴν αὐτῷ προσάπτουσι· τῇ

1.180 δὲ τοῦ σώματος ῥώμη καὶ ἀλκῇ πολλῶ τῶν ἄλλων ἀν-θρώπων διενεγκεῖν, καὶ κα- θαρὰν ποιῆσαι τῶν θηρίων γῆν τε καὶ θάλατταν. (25) Γαμήσαντα δὲ πλείους γυ- ναῖκας, υἱοὺς μὲν πολλοὺς, θυγατέρας δὲ μίαν γεννη-σαι· καὶ τούτων ἐνηλίκων γενομένων, πᾶσαν τὴν 1.185 Ἰνδικὴν διελόμενον εἰς ἴσας τοῖς τέκνοις μερίδας ἅπαν-τας τοὺς υἱοὺς ἀποδείξαι βασιλέας, μίαν δὲ θυγατέρα θρέψαντα καὶ ταύτην βασίλισσαν ἀποδείξαι. (26) Κτί-στην τε πόλεων οὐκ ὀλίγων γενέσθαι, καὶ τούτων τὴν ἐπιφανεστάτην καὶ μεγίστην προσαγορεύσαι Παλί- 1.190 βοθρα· κατασκευάσαι δ' ἐν αὐτῇ καὶ βασιλεία πολυ-τελῇ καὶ πλήθος οἰκητόρων καθιδρῦ-σαι· τὴν τε πόλιν ὀχυρῶσαι τάφροις ἀξιολόγοις ποταμίαις ὕδασι πληρου-μέναις. (27) Καὶ τὸν μὲν Ἡρακλέα τὴν ἐξ ἀνθρώπων μετὰστασιν ποιησάμενον ἀθανάτου τυχεῖν τιμῆς· τοὺς 1.195 δ' ἀπογόνους αὐτοῦ βασιλεύσαντας ἐπὶ πολλὰς γενεὰς καὶ πράξεις ἀξιολόγους μεταχει-ρισαμένους μήτε στρα-τεῖαν ὑπερόριον ποιήσασθαι, μήτε ἀποικίαν εἰς ἄλλο ἔθνος ἀποστεῖλαι. Ὑστερον δὲ πολλοῖς ἔτεσι τὰς πλεί-στας μὲν τῶν πόλεων δημοκρατηθῆναι, τινῶν δὲ ἐθνῶν 1.200 τὰς βασιλείας διαμεῖναι μέχρι τῆς Ἀλεξάνδρου διαβά-σεως. (28) Νομίων δ' ὄντων παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς ἐνίων ἐξηλλαγμένων θαυμασιώτατον ἂν τις ἡγήσαιτο τὸ κα-ταδειχθῆν ὑπὸ τῶν ἀρχαίων παρ' αὐτοῖς φιλοσόφων· νενομοθέτηται γὰρ παρ' αὐτοῖς δούλον μηδὲνα τὸ πα- 1.205 ράπαν εἶναι, ἐλευθέρους δ' ὑπάρχοντας τὴν ἰσότητά τιμᾶν ἐν πᾶσι. Τοὺς γὰρ μαθόντας μὴθ' ὑπερέχειν μὴθ' ὑποπίπτειν ἄλλοις κράτιστον ἔξιν βίον πρὸς ἀπάσας τὰς περιστάσεις·

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

εὐηθες γὰρ εἶναι νόμους μὲν ἐπ' ἴσης τιθέναι πᾶσι, τὰς δ' ἐξουσίας ἀνωμάλους κα- 1.210 τα-
σκευάζειν. XL. 29. Τὸ δὲ πᾶν πλῆθος τῶν Ἰνδῶν εἰς ἑπτὰ μέρη διήρηται, ὧν ἐστὶ τὸ μὲν πρῶτον
σύστημα φιλοσόφων, πλήθει μὲν τῶν ἄλλων μερῶν λειπόμενον, τῇ δ' ἐπι- φανείᾳ πάντων πρω-
τεῦον· ἀλειτούργητοι γὰρ ὄντες οἱ 1.215 φιλόσοφοι πάσης ὑπουργίας οὔθ' ἐτέρων κυριεύουσιν
οὔθ' ὑφ' ἐτέρων δεσπόζονται. (30) Παραλαμβάνονται δὲ ὑπὸ μὲν τῶν ἰδιωτῶν εἰς τε τὰς ἐν
τῷ βίῳ θυσίας καὶ εἰς τὰς τῶν τετελευτηκότων ἐπιμελείας, ὡς θεοῖς γεγο- νότες προσφιλέστα-
τοι καὶ περὶ τῶν ἐν Ἄιδου μάλιστα 1.220 ἐμπείρως ἔχοντες, ταύτης τε τῆς ὑπουργίας δῶρά
τε καὶ τιμὰς λαμβάνουσιν ἀξιολόγους· τῷ δὲ κοινῷ τῶν Ἰνδῶν μεγάλας παρέχονται χρεῖας
παραλαμβάνοντες μὲν κατὰ τὸ νέον ἔτος ἐπὶ τὴν μεγάλην σύνοδον, προ- λέγοντες δὲ τοῖς
πλήθεσι περὶ αὐχμῶν καὶ ἐπομβρίας, 1.225 ἔτι δὲ ἀνέμων εὐπνοίας καὶ νόσων καὶ τῶν ἄλ-
λων τῶν δυναμένων τοὺς ἀκούοντας ὠφελῆσαι. (31) Τὰ μέλλοντα γὰρ προακούσαντες οἱ τε
πολλοὶ καὶ ὁ βασιλεὺς ἐκπλη- ροῦσιν αἰεὶ τὸ μέλλον ἐκλείπειν καὶ προκατασκευάζουσιν αἰεὶ τι
τῶν χρησίμων· ὁ δὲ ἀποτυχὼν τῶν φιλοσόφων 1.230 ἐν ταῖς προρρήσεσιν ἄλλην μὲν οὐδεμίαν
ἀναδέχεται τιμωρίαν ἢ βλασφημίαν, ἄφρωνος δὲ διατελεῖ τὸν λοι- πὸν βίον. 32. Δεύτερον δ'
ἐστὶ μέρος τὸ τῶν γεωργῶν, οἱ τῷ πλήθει τῶν ἄλλων πολὺ προέχουσιν δοκοῦσιν· οὗτοι δὲ 1.235
πολέμων καὶ τῆς ἄλλης λειτουργίας ἀφειμένοι περὶ τὰς γεωργίας ἀσχολοῦνται· καὶ οὐδεὶς ἂν
πολέμιος περιτυ- χῶν γεωργῷ κατὰ τὴν χώραν ἀδικήσειεν, ἀλλ' ὡς κοι- νοὺς εὐεργέτας ἡγού-
μενοι πάσης ἀδικίας ἀπέχονται. Διόπερ ἀδιάφθορος ἡ χώρα διαμένουσα καὶ καρποῖς 1.240
βρίθουσα πολλὴν ἀπόλαυσιν παρέχεται τῶν ἐπιτηδείων τοῖς ἀνθρώποις. (33) Βιοῦσι δ' ἐπὶ τῆς
χώρας μετὰ τέκνων καὶ γυναικῶν γεωργοὶ, καὶ τῆς εἰς τὴν πόλιν καταβάσεως παντελῶς
ἀφεστήκασιν. Τῆς δὲ χώρας μισθοὺς τελοῦσι τῷ βασιλεῖ διὰ τὸ πᾶσαν τὴν Ἰνδικὴν 1.245 βα-
σιλικὴν εἶναι, ἰδιώτῃ δὲ μηδενὶ γῆν ἐξεῖναι κεκτηθῆσαι· χωρὶς δὲ τῆς μισθώσεως τετάρτην εἰς τὸ
βασιλικὸν τελοῦσι. 34. Τρίτον δ' ἐστὶ φύλον τὸ τῶν βουκόλων καὶ ποι- μένων καὶ καθόλου
πάντων τῶν νομέων, οἱ πόλιν μὲν 1.250 ἢ κώμην οὐκ οἰκοῦσι, σκηνήν τε δὲ βίῳ χρῶνται· οἱ δ'
αὐτοὶ καὶ κυνηγοῦντες καθαράν ποιοῦσι τὴν χώραν ὀρνέων καὶ θηρίων· εἰς ταῦτα δὲ ἀσκοῦντες
καὶ φιλο- πονοῦντες ἐξημεροῦσι τὴν Ἰνδικήν, πλήθουσιν πολλῶν καὶ παντοδαπῶν θηρίων τε καὶ
ὀρνέων τῶν κατεσθίων- 1.255 των τὰ σπέρματα τῶν γεωργῶν. XLI. 35. Τέταρτον δ' ἐστὶ
μέρος τὸ τῶν τεχνιτῶν· καὶ τούτων οἱ μὲν εἰσὶν ὀπλοποιοί, οἱ δὲ τοῖς γεωργοῖς ἢ τισὶν ἄλλοις τὰ
χρήσιμα πρὸς ὑπηρεσίαν κατασκευά- ζουσιν· οὗτοι δὲ οὐ μόνον ἀτελεῖς εἰσιν, ἀλλὰ καὶ 1.260
σιτομετρίαν ἐκ τοῦ βασιλικοῦ λαμβάνουσι. 36. Πέμπτον δὲ στρατιωτικόν, εἰς τοὺς πολέμους
εὐθετοῦν, τῷ μὲν πλήθει δεύτερον, ἀνέσει δὲ καὶ παι- διᾷ πλείστη χρώμενον ἐν ταῖς εἰρήναις.
Τρέφεται δ' ἐκ τοῦ βασιλικοῦ πᾶν τὸ πλῆθος τῶν στρατιωτῶν καὶ τῶν 1.265 πολεμιστῶν
ἵππων τε καὶ ἐλεφάντων. 37. Ἑκτον δ' ἐστὶ τὸ τῶν ἐφόρων· οὗτοι δὲ πολυ- πραγμονοῦντες
πάντα καὶ ἐφορῶντες τὰ κατὰ τὴν Ἰν- δικὴν ἀπαγγέλλουσι τοῖς βασιλεῦσιν, ἐὰν δὲ ἡ πόλις
αὐτῶν ἀβασίλευτος ᾗ, τοῖς ἄρχουσιν.

1.270 38. Ἐβδομον δ' ἐστὶ μέρος τὸ βουλευὼν μὲν καὶ συν- εδρεῦον τοῖς ὑπὲρ τῶν κοινῶν
βουλευομένοις, πλήθει μὲν ἐλάχιστον, εὐγενεῖα δὲ καὶ φρονήσει μάλιστα θαυ- μαζόμενον· ἐκ
τούτων γὰρ οἱ τε σύμβουλοι τοῖς βασι- λεῦσιν εἰσιν οἱ τε διοικηταὶ τῶν κοινῶν καὶ οἱ δικασταὶ

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

1.275 τῶν ἀμφισβητουμένων, καὶ καθόλου τοὺς ἡγεμόνας καὶ τοὺς ἄρχοντας ἐκ τούτων ἔχουσι. 39. Τὰ μὲν οὖν μέρη τῆς διηρημένης πολιτείας παρ' Ἰνδοῖς σχεδὸν ταῦτά ἐστιν. Οὐκ ἔξεστι δὲ γὰρ- μεῖν ἐξ ἄλλου γένους ἢ προαιρέσεις ἢ τέχνας μεταχει- 1.280 ρίζεσθαι, οἷον στρατιώτην ὄντα γεωργεῖν ἢ τεχνίτην ὄντα φιλοσοφεῖν. XLII. 40. Ἐχει δ' ἡ τῶν Ἰνδῶν χώρα πλείστους καὶ μεγίστους ἐλέφαντας, ἀλλή τε καὶ μεγέθει πολὺ διαφέροντας. Ὀχεύεται δὲ τοῦτο τὸ ζῶον οὐχ, ὥσπερ 1.285 τινὲς φασιν, ἐξηλλαγμένως, ἀλλ' ὁμοίως ἵπποις καὶ τοῖς ἄλλοις τετραπόδοις ζώοις· κύουσι δὲ τοὺς μὲν ἐλα- χίστους μῆνας ἐκκαίδεκα, τοὺς δὲ πλείστους ὀκτωκαί- δεκα. Τί- κτουσι δὲ καθάπερ ἵπποι κατὰ τὸ πλεῖστον ἓν, καὶ τρέφουσι τὸ γεννηθὲν αἱ μητέρες ἐπ' ἔτη ἕξ. 1.290 Ζῶσι δ' οἱ πλείστοι καθάπερ ὁ μακροβιώτατος ἄνθρω- πος, οἱ δὲ μάλιστα γηράσαντες ἔτη διακόσια. 41. Εἰσὶ δὲ παρ' Ἰνδοῖς καὶ ἐπὶ τοὺς ξένους ἄρχον- τες τεταγμένοι καὶ φροντίζον- τες ὅπως μηδεὶς ξένος ἀδικῇται· τοῖς δ' ἀρρωστοῦσι τῶν ξένων ἰατροὺς εἰσά- 1.295 γουσι καὶ τὴν ἄλλην ἐπιμέλειαν ποιοῦνται, καὶ τελευ- τήσαντας θάπτουσιν, ἔτι δὲ τὰ καταλειφθέντα χρήματα τοῖς προσήκουσιν ἀποδιδόασιν. (42) Οἱ τε δικασταὶ τὰς κρίσεις παρ' αὐτοῖς ἀκριβῶς διαγινώσκουσι, καὶ πικρῶς τοῖς ἀμαρτάνουσι προσφέρονται. Περὶ μὲν οὖν 1.300 τῆς Ἰνδικῆς καὶ τῶν κατ' αὐτὴν ἀρχαιολογουμένων ἀρκεσθῆσόμεθα τοῖς ῥηθείσι. t2-20.1

E LIBRO PRIMO.

2.1 Arrianus Exp. Al. V, 6, 2: Τῆς δὲ ὡς ἐπὶ νότον Ἀσίας τετραχῇ αὐτὴν τεμνομένης μεγίστην μὲν μοῖραν τῶν Ἰνδῶν γῆν ποιεῖ Ἐρατοσθένης τε καὶ Μεγασθένης, ὃς ξυνῆν μὲν Σιβυρτίῳ τῷ σατράπῃ τῆς Ἀραχωσίας· 2.5 πολλάκις δὲ λέγει ἀφικέσθαι παρὰ Σανδράκοττον τὸν Ἰνδῶν βασιλέα· ἐλαχίστην δὲ ὅσῃν ὁ Εὐφράτης ποτα- μὸς ἀπείργει ὡς πρὸς τὴν ἡμετέραν θάλασσαν· δύο δὲ αἱ μεταξὺ Εὐφράτου τε ποταμοῦ καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἀπειρ- γόμεναι, αἱ δύο ξυντεθεῖσαι μόλις ἄξιαι τῇ Ἰνδῶν γῇ 2.10 ἔμμελαι· ἀπείργεσθαι δὲ τὴν Ἰνδῶν χώραν πρὸς μὲν ἑῷ τε καὶ ἀπηλιώτην ἄνεμον ἔστε ἐπὶ μεσημβρίαν τῇ μεγάλῃ θαλάσῃ· τὸ πρὸς βορρᾶν δὲ αὐτῆς ἀπείρ- γειν τὸν Καύκασον τὸ ὄρος ἔστε ἐπὶ τοῦ Ταύρου τὴν ἔμμελιν· τὴν δὲ πρὸς ἐσπέραν τε καὶ ἄνεμον Ἰάπυγα 2.15 ἔστε ἐπὶ τὴν μεγάλῃν θάλασσαν, ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς ἀπο- τέμνεται. Καὶ ἔστι πεδῖον ἡ πολλὴ αὐτῆς· καὶ τοῦτο, ὡς εἰκάζουσιν, ἐκ τῶν ποταμῶν προσκεχωσμένον· εἶναι γὰρ οὖν καὶ τῆς ἄλλης χώρας ὅσα πεδία οὐ πρόσω θαλάσσης τὰ πολλὰ τῶν ποταμῶν παρ' ἐκάστοις ποιή- 2.20 ματα, ὥστε καὶ τῆς χώρας τὴν ἐπωνυμίαν τοῖς ποτα- μοῖς ἐκ παλαιοῦ προσκεῖσθαι, καθάπερ Ἑρμου τέ τι πεδῖον λέγεσθαι, ὃς κατὰ τὴν Ἀσίαν γῆν ἀνίσχων ἐξ ὄρους Μητρὸς Δινδυμήνης παρὰ πόλιν Σμύρναν Αἰο- λικὴν ἐκδιδοῖ ἐς θάλασσαν· καὶ ἄλλο Καῦστρου πεδῖον 2.25 Λυδίου ποταμοῦ, καὶ Καῖκου ἄλλο ἐν Μυσίᾳ, καὶ Μαιάνδρου τὸ Καρικὸν ἔστε ἐπὶ Μίλητον πόλιν Ἰωνι- κήν Εἰ δὲ οὖν εἰς τε ποταμὸς παρ' ἐκάστοις, καὶ οὐ μεγάλοι οὗτοι ποταμοί, ἱκανοὶ γῆν πολλὴν ποιῆσαι, ἐς θάλασσαν προχεόμενοι, ὅποτε ἰλὺν καταφέρουεν καὶ 2.30 πηλὸν ἐκ τῶν ἄνω τόπων, ἐνθενπερ αὐτοῖς αἱ πηγαὶ εἰσιν, οὐδὲ ὑπὲρ τῆς Ἰνδῶν ἄρα χώρας ἐς ἀπιστίαν ἵεναι ἄξιον, ὅπως πεδῖον τε ἡ πολλὴ ἐστί, καὶ ἐκ τῶν ποτα- μῶν τὸ πεδῖον ἔχει προσκεχωσμένον. Ἑρμον μὲν γὰρ καὶ Καῦστρον καὶ Καῖκόν τε καὶ Μαιάνδρον ἢ ὅσοι 2.35 πολλοὶ ποταμοὶ τῆς Ἀσίας ἐς τὴνδε τὴν ἐντὸς θάλασσαν ἐκδιδοῦσιν, οὐδὲ ἔμπεπαντας ξυντεθέντας ἐνὶ τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν ἄξιον ἔμμελαι πλῆθους ἕνεκα τοῦ ὕδατος, μὴ ὅτι τῷ Γάγγῃ τῷ

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

μεγίστω, ὅτω οὔτε Νείλου ὕδωρ τοῦ Αἰγυπτίου οὔτε ὁ Ἰστρος ὁ κατὰ τὴν Εὐρώπην ῥέων 2.40 ἄξιοι ζυμβαλεῖν· ἀλλ' οὐδὲ τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ ἐκεῖνοί γε πάντες ζυμμιχθέντες ἐς ἴσον ἔρχονται· ὃς μέγας τε εὐθύς ἀπὸ τῶν πηγῶν ἀνίσχει, καὶ πεντεκαίδεκα ποτα- μούς πάντας τῶν Ἀσιανῶν μείζονας παραλαβὼν, καὶ τῇ ἐπωνυμία κρατήσας, οὕτως ἐκδιδοῖ ἐς θάλασσαν. 2.45 Ταῦτά μοι ἐν τῷ παρόντι περὶ Ἰνδῶν τῆς χώρας λε- λέχθω· τὰ δὲ ἄλλα ἀποκείσθω ἐς τὴν Ἰνδικὴν ζυγ- γραφήν. 3.1 Strabo XV: Τὴν Ἰνδικὴν περιώρικεν ἀπὸ μὲν τῶν ἄρκτων τοῦ Ταύρου τὰ ἔσχατα· ἀπὸ δὲ τῆς Ἀριανῆς μέχρι τῆς ἐφ' ἑαυτὴν θαλάττης, ἅπερ οἱ ἐπιχώριοι κατὰ μέρος Παροπάμισόν τε καὶ Ἡμωδὸν καὶ Ἰμασὸν 3.5 καὶ ἄλλα ὀνομάζουσι, Μακεδόνες δὲ Καύκασον· ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ὁ Ἰνδὸς ποταμός· τὸ δὲ νότιον καὶ τὸ πρὸς- εἴων πλευρὸν πολὺ μείζω τῶν ἐτέρων ὄντα προπέπτω- κεν εἰς τὸ Ἀτλαντικὸν πέλαγος, καὶ γίνεται ῥομβοειδὲς τὸ τῆς χώρας σχῆμα, τῶν μείζονων πλευρῶν ἑκατέρου 3.10 πλεονεκτοῦντος παρὰ τὸ ἀπεναντίον πλευρὸν τρισχιλίους σταδίους, ὅσον ἐστὶ τὸ κοινὸν ἄκρον τῆς τε ἐσθινῆς

παραλίας καὶ τῆς μεσημβρινῆς, ἔξω προπεπτωκὸς ἐξ ἴσης ἐφ' ἑκάτερον παρὰ τὴν ἄλλην ἡύονα. Τῆς μὲν οὖν ἐσπερίου πλευρᾶς ἀπὸ τῶν Καυκασίων ὄρων ἐπὶ 3.15 τὴν νότιον θάλατταν σταδίοι μάλιστα λέγονται μύριοι τρισχίλιοι παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν μέχρι τῶν ἐκβο- λῶν αὐτοῦ· ὥστ' ἀπεναντίον ἡ ἐσθινὴ προσλαβοῦσα τοὺς τῆς ἄκρας τρισχιλίους ἔσται μυρίων καὶ ἑξα- χισχιλίων σταδίων. Τοῦτο μὲν οὖν πλάτος τῆς χώ- 3.20 ρας τὸ τ' ἐλάχιστον, καὶ τὸ μέγιστον. Μῆκος δὲ τὸ ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἑω- τούτου δὲ τὸ μὲν μέχρι Παλιβόθρων ἔχοι- τις ἂν βεβαιωτέως εἰπεῖν· καταμε- μέτρηται γὰρ σχοινοῖς, καὶ ἐστὶν ὁδὸς βασιλικὴ σταδίων μυρίων· τὰ 3.25 δ' ἐπέκεινα στοχασμῷ λαμβάνεται διὰ τῶν ἀνάπλων τῶν ἐκ θαλάττης διὰ τοῦ Γάγγου ποταμοῦ μέχρι Πα- λιβόθρων· εἴη δ' ἂν σταδίων ἑξαχισχιλίων. Ἔσται δὲ τὸ πᾶν, ἢ βραχύτατον, μυρίων ἑξαχισχιλίων, ὥς ἐκ τε τῆς ἀναγραφῆς τῶν σταθμῶν τῆς πεπιστευ- μένης μάλιστα 3.30 λαβεῖν Ἐρατοσθένης φησί· καὶ ὁ <Μεγασθένης> οὕτω συναποφαίνεται· Πατροκλῆς δὲ χιλίους ἑλαττόν φησι ... Ἐκ δὲ τούτων πάρεστιν ὁρᾶν, ὅσον διαφέρουσιν αἱ τῶν ἄλλων ἀποφάσεις, Κτησίου μὲν οὐκ ἐλάττω τῆς ἄλλης Ἀσίας τὴν Ἰνδικὴν λέγοντος, Ὀνησικρί- του δὲ τρί- 3.35 τον μέρος τῆς οἰκουμένης, Νεάρχου δὲ μηνῶν ὁδὸν τετ- τάρων τὴν δι' αὐτοῦ τοῦ πεδίου, Μεγασθένους δὲ καὶ Δηϊμάχου μετριασάντων μᾶλλον· ὑπὲρ γὰρ διςμυρίους τιθέασι σταδίους, τὸ ἀπὸ τῆς νοτίου θαλάττης ἐπὶ τὸν Καύκασον. 4.1 Strabo II.: Φησὶν ὁ Ἰππαρχος ἐν τῷ δευτέρῳ Ὑπομνήματι αὐτὸν τὸν Ἐρατοσθένη διαβάλλειν τὴν τοῦ Πατροκλέους πίστιν ἐκ τῆς πρὸς Μεγασθένη διαφωνίας περὶ τοῦ μήκους τῆς Ἰνδικῆς τοῦ κατὰ τὸ 4.5 βόρειον πλευρὸν, τοῦ μὲν Μεγασθένους λέγοντος στα- δίων μυρίων ἑξαχισχιλίων, τοῦ δὲ Πατροκλέους χιλίους λείπειν φαμένου. 5.1 Strabo II.: δυοῖν ἀντιμαρτυρούντων αὐτῷ Δηϊμάχου τε καὶ Μεγασθέ- νους, οἱ καθ' οὓς μὲν τόπους διςμυρίων τὸ διάστημά φασι τὸ ἀπὸ τῆς κατὰ 5.5 μεσημβρίαν θαλάττης, καθ' οὓς δὲ καὶ τριςμυρίων. Τούτους γε δὴ τοιαῦτα λέγειν καὶ τοὺς ἀρχαίους πίνα- κας τούτοις ὁμολογεῖν. 6.1 Arrian. Ind. 3, 7: Μεγασθένης δὲ τὸ ἀπὸ ἀνατο- λέων ἐς ἐσπέρην πλάτος ἐστὶ τῆς Ἰνδῶν γῆς, ὃ τι περ οἱ ἄλλοι μῆκος ποιεῖν· καὶ λέγει Μεγασθένης, μυρίων καὶ ἑξαχισχιλίων σταδίων εἶναι, ἵνα περ τὸ βραχύτατον 6.5 αὐτοῦ. Τὸ δὲ ἀπὸ ἄρκτου πρὸς μεσημβρίην, τοῦτο δὲ αὐτῷ μῆκος γίνεται, καὶ ἐπέχει τριηκοσίους καὶ διςχιλίους, ἵνα περ τὸ

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

στεινότατον αὐτοῦ. 7a.1 Strabo II: Μεγασθένης φησάντι ἐν τοῖς νοτίοις μέρεσι τῆς Ἰνδικῆς τὰς τε ἄρκτους ἀπο- κρύπτεσθαι καὶ τὰς σκιάς ἀντιπίπτειν. 7b.1 Strabo II: Δημάρχου φησαντος μηδαμοῦ τῆς Ἰνδικῆς μήτ' ἀποκρύπτεσθαι τὰς ἄρκτους μήτ' ἀντι- πίπτειν τὰς σκιάς ὅπερ ὑπέληφεν ὁ Μεγασθένης. 8.1 Plinius H. N. VII, 22, 6: Ab iis in interiore situ Mo- nedes et Suari, quorum mons Maleus, in quo umbrae ad septemtrionem cadunt hieme, aestate in austrum, 8.5 per senos menses. Septemtriones eo tractu semel in anno apparere, nec nisi quindecim diebus, Baeton auctor est: hoc idem pluribus locis Indiae fieri, Megasthenes. 9.1 Strabo XV: Μεγασθένης δὲ τὴν εὐδαι- μονίαν τῆς Ἰνδικῆς ἐπισημαίνεται τῷ δίκارπον εἶναι καὶ δίφορον, καθάπερ καὶ Ἐρατοσθένης ἔφη, τὸν μὲν εἰπὼν σπύρον χειμερινόν, τὸν δὲ θερινόν, καὶ ὁμβρον 9.5 ὁμοίως· οὐδὲν γὰρ ἔτος εὐρίσκεσθαι φησὶ πρὸς ἀμφοτέρους καιροὺς ἄνομβρον· ὥστε εὐετηρίαν ἐκ τούτου συμβαίνειν, ἀφόρου μηδέποτε τῆς γῆς οὕσης· τοὺς τε ξυλίνους καρ- πούς γεννᾶσθαι πολλούς, καὶ τὰς ῥίζας τῶν φυτῶν, καὶ μάλιστα τῶν μεγάλων καλάμων, γλυκείας καὶ φύσει 9.10 καὶ ἐφήσει, χλιανομένου τοῦ ὕδατος τοῖς ἡλίοις, τοῦ τ' ἐκπίπτοντος ἐκ Διός, καὶ τοῦ ποταμίου. Τρόπον δὲ τινα λέγειν βούλεται, διότι ἡ παρὰ τοῖς ἄλλοις λεγο- μένη πέψις καὶ καρπῶν καὶ χυμῶν παρ' ἐκείνοις ἔφη- σίς ἐστι· καὶ κατεργάζεται τοσοῦτον εἰς εὐστομίαν, 9.15 ὅσον καὶ ἡ διὰ πυρός· διὸ καὶ τοὺς κλάδους φησὶν εὐ- καμπεῖς εἶναι τῶν δένδρων, ἐξ ὧν οἱ τροχοί· ἐκ δὲ τῆς αὐτῆς αἰτίας ἐνίοις καὶ ἐπανθεῖν ἔριον. 10.1 Strabo XV: Καὶ τίγρεις δ' ἐν τοῖς Πρα- σίοις φησὶν ὁ Μεγασθένης γίνεσθαι μεγίστους, σχεδὸν δέ τι καὶ διπλασίους λέοντων· δυνατοὺς δὲ ὥστε τῶν ἡμέρων τινὰ, ἀγόμενον ὑπὸ τεττάρων, τῷ ὀπισθίῳ σκέ- 10.5 λει δραξάμενον ἡμιόνου, βιάσασθαι καὶ ἐλκύσαι πρὸς ἑαυτόν. Κερκοπιθήκους δὲ μεί- ζους τῶν μεγίστων κυνῶν, λευκοὺς πλὴν τοῦ προσώπου· τοῦτο δ' εἶναι μέλαν· παρ' ἄλλοις δ' ἀνάπαλιν· τὰς δὲ κέρκους μείζους δυοῖν πῆχεων· ἡμερωτάτους δὲ καὶ οὐ κακοήθεις περὶ ἐπιθέ-

10.10 σεις καὶ κλοπάς. Λίθους δ' ὀρύττεσθαι λιβανόχρους, γλυκυτέρους σύκων ἢ μέλιτος. Ἀλλαχοῦ δὲ διπήχεις ὄφεις ὑμενοπτέρους ὥσπερ αἱ νυκτερίδες, καὶ τούτους δὲ νύκτωρ πέτεσθαι, σταλαγμούς ἀφιέντας οὖρων, τοὺς δὲ ἰδρώτων, διασπίνοντας τὸν χρῶτα τοῦ μὴ φυλαξα- 10.15 μένου· καὶ σκορπίους εἶναι πτηνοὺς, ὑπερβάλλοντας μεγέθεσι· φύεσθαι δὲ καὶ ἔβενον· εἶναι δὲ καὶ κύνας ἀλκίμους, οὐ πρότερον μεθιέντας τὸ δηχθὲν πρὶν εἰς τοὺς ῥώθωνας ὕδωρ καταχυ- θῆναι· ἐνίοις δ' ὑπὸ προθυμίας ἐν τῷ δήγματι διαστρέφεσθαι τοὺς ὀφθαλ- 10.20 μούς, τοῖς δὲ καὶ ἐκπίπτειν· κατασχεθῆναι δὲ καὶ λέοντα ὑπὸ κυνός καὶ ταῦρον· τὸν δὲ ταῦρον καὶ ἀπο- θανεῖν κρατούμενον τοῦ ῥύγχους πρότερον ἢ ἀφεθῆναι. 11.1 Aelian. N A. XVII, 39: Ἐν τῇ Πραξιακῇ χώρᾳ, Ἰνδῶν δὲ αὕτη ἐστίν, Μεγασθένης φησὶ πιθήκους εἶναι τῶν μεγίστων κυνῶν οὐ μείους, ἔχειν δὲ καὶ οὐράς πη- χῶν πέντε· προσπεφυκέναι δὲ ἄρα αὐτοῖς καὶ προκόμια, 11.5 καὶ πώγωνας καθειμένους καὶ βαθεῖς· καὶ τὸ μὲν πρὸς- ὤπον εἶναι πᾶν λευκούς, τὸ σῶμα δὲ μέλανας ἰδεῖν, ἡμέρους δὲ καὶ φιλανθρωποτάτους, καὶ τὸ τοῖς ἄλλα- χόθι πιθήκοις συμφυῆς οὐκ ἔχειν τὸ κακοήθες. 12.1 Aelian. N. A. XVI, 41: Μεγασθένης φησὶ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν σκορπίους γίνεσθαι πτερωτοὺς μεγέθει με- γίστους, τὸ κέντρον δὲ ἐγχρίπτειν τοῖς Εὐρωπαίοις παραπλη- σίως· γίνεσθαι δὲ καὶ ὄφεις αὐτόθι, καὶ τούτους 12.5 πτηνοὺς· ἐπιφοιτᾶν δὲ οὐ καθ' ἡμέραν, ἀλλὰ νύκτωρ, καὶ ἀφιέναι ἐξ αὐτῶν οὖρον, ὅπερ οὖν ἐὰν κατὰ τινος ἀποστάξῃ σώματος, σῆ-

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

ψιν ἐργάζεται παραχρήμα. Καὶ τὰ μὲν τοῦ Μεγασθένους ταῦτα. 13a.1 Strabo XV: Φησὶ γὰρ τοὺς τὸν Καύκασον οἰκοῦντας ἐν τῷ φανερωῖ γυναιξὶ μίσγεσθαι καὶ σαρκοφαγεῖν τὰ τῶν συγγενῶν σώματα· πετροκυλιστὰς δ' εἶναι κερκοπιθήκους, οἱ λίθους κατα- 13a.5 κυλίουσι χρημνοβατοῦντες ἐπὶ τοὺς διώκοντας, τὰ τε παρ' ἡμῖν ἡμεῖρα ζῶα τὰ πλεῖστα παρ' ἐκείνοις ἄγρια εἶναι· ἵππους τε λέγει μονοκέρωτας ἐλαφοκράνους· κα- λάμους δὲ μῆκος μὲν τριάκοντα ὀργυῶν τοὺς ὀρθίους, τοὺς δὲ χαμαικλινεῖς πεντήκοντα· πάχος δὲ, ὥστε τὴν 13a.10 διάμετρον τοῖς μὲν εἶναι τριπλήρη, τοῖς δὲ διπλασίαν. 13b.1 Aelianus XVI, 20: Ἐν τοῖς χωρίοις τοῖς ἐν Ἰνδία, λέγω δὴ τοῖς ἐνδοτάτῳ, 13b.5 ὅρη φασὶν εἶναι δύσβατά τε καὶ ἐνθηρα· καὶ ἔχειν ζῶα ὅσα καὶ ἢ καθ' ἡμᾶς τρέφει γῆ, ἄγρια δέ· καὶ γὰρ τοὶ καὶ τὰς οἷς τὰς ἐκεῖ φασὶν εἶναι καὶ ταύτας θηρία, καὶ κύνας καὶ αἶγας καὶ βοῦς, αὐτόνομά τε ἀλᾶσθαι καὶ ἐλεύθερα, ἀφειμένα νομει- τικῆς ἀρχῆς. Πλήθη δὲ αὐτῶν 13b.10 καὶ ἀριθμοῦ πλείω φασὶν οἱ τούτων συγγραφεῖς, καὶ οἱ τῶν Ἰνδῶν λόγιοι· ἐν δὴ τοῖς καὶ τοὺς Βραχμᾶνας ἀριθμεῖν ἄξιον, καὶ γὰρ τοὶ καὶ ἐκείνοι ὑπὲρ τῶνδε ὁμολογοῦσι τὰ αὐτά. Λέγεται δὲ καὶ ζῶον ἐν τούτοις εἶναι μονόκερων, καὶ ὑπ' αὐτῶν ὀνομάζεσθαι καρτά- 13b.15 ζῶον· καὶ μέγεθος μὲν ἔχειν ἵππου τοῦ τελείου, καὶ λόφον, καὶ λάχνην ἔχειν ξανθὴν, ποδῶν δὲ ἄριστα εἶλη- χέναι, καὶ εἶναι ὠκιστον, καὶ τοὺς μὲν πόδας ἀδιαρ- θρώτους τε καὶ ἐμφερεῖς ἐλέφαντι συμπεφυκέναι, τὴν δὲ οὐρὰν συός· μέσον δὲ τῶν ὀφρύων ἔχειν ἐκπεφυκός 13b.20 κέρας, οὐ λεῖον, ἀλλὰ ἐλιγμούς ἔχον τινὰς καὶ μάλα αὐτοφυεῖς, καὶ εἶναι μέλαν τὴν χροάν· λέγεται δὲ καὶ ὀξύτατον εἶναι τὸ κέρας ἐκείνο· φωνὴν δὲ ἔχειν τὸ θηρίον ἀκούω τοῦτο πάντων ἀπηχεστάτην τε καὶ γεγωνοτάτην· καὶ τῶν μὲν ἄλλων αὐτῷ ζῶων προσιόντων φέρειν, καὶ 13b.25 πρᾶον εἶναι, λέγουσι δὲ ἄρα πρὸς τὸ ὁμόφυλον δύσεριν εἶναι πως. Καὶ οὐ μόνον φασὶ τοῖς ἄρρεσιν εἶναι τινα συμφυὴ κύριξιν τε πρὸς ἀλλήλους καὶ μάχην, ἀλλὰ καὶ πρὸς τὰς θηλείας ἔχουσι θυμὸν τὸν αὐτὸν, καὶ προάγειν τε τὴν φιλονεικίαν καὶ μέχρι θανάτου ἡττηθέντα ἐξά- 13b.30 γουσαν· ἔστι μὲν οὖν καὶ διὰ παντὸς τοῦ σώματος ῥω- μαλέον, ἀλκή δὲ οἱ τοῦ κέρατος ἁμαχός ἐστι. Νομᾶς δὲ ἐρήμους ἀσπάζεται καὶ πλανᾶται μόνον· ὥρα δὲ ἀφροδίτης τῆς σφετέρας συνδυασθεὶς πρὸς τὴν θήλειαν πεπράϋνται, καὶ μέντοι καὶ συννόμῳ ἐστὼν· εἴτα ταύτης 13b.35 παραδραμούσης καὶ τῆς θηλείας κυούσης, ἐκθηριοῦται αὐτῆς, καὶ μονίας ἐστὶν ὅδε ὁ Ἰνδὸς καρτάζωνος. Τούτων οὖν πῶλους πάνυ νεαροὺς κομίζεσθαι φασὶ τῷ τῶν Πραισίων βασιλεῖ, καὶ τὴν ἀλκὴν ἐν ἀλλήλοις ἀποδεί- κνυσθαι κατὰ τὰς πανηγυρικός· τέλειον δὲ ἀλῶναί ποτε 13b.40 οὐδεὶς μέμνηται. Id. c. 21: Ὑπερελθόντι τὰ ὅρη τὰ γειτνιῶντα τοῖς Ἰνδοῖς κατὰ τὴν ἐνδοτάτην πλευρὰν φανοῦνται, φασὶν, αὐλῶνες δασύτατοι, καὶ καλεῖται γε ὑπ' Ἰνδῶν ὁ χώρος Κόρουδα· ἀλῶνται δὲ ἄρα, φασὶν, ἐν 13b.45 τοῖσδε τοῖς αὐλῶσι ζῶα Σατύροις ἐμφερῇ τὰς μορφάς, τὸ πᾶν σῶμα λάσια, καὶ ἔχει κατὰ τῆς ἰξύος ἵππουριν. Καὶ καθ' ἑαυτὰ μὲν μὴ ἐνοχλούμενα διατρίβειν ἐν τοῖς δρυμοῖς ὑλοτραγοῦντα, ὅταν δὲ αἰσθῶνται κυνηγετῶν κτύπου, καὶ ἀκούσῃ κυνῶν ὑλακῆς, ἀναθέουσιν εἰς 13b.50 τὰς ἀκρωρείας αὐτὰς ἀμηχάνῳ τῷ τάχει· καὶ γὰρ εἰσι ταῖς ὀρειβάσιαις ἐντριβεῖς. Καὶ ἀπομάχονται πέτρας τινὰς κυλινδρῶντες κατὰ τῶν ἐπιόντων, καὶ καταλαμ-

βανόμενοι γε πολλοὶ διαφθείρονται. Καὶ ἐκ τούτων εἰσὶν ἐκεῖνοι δυσάλωτοι· καὶ μόλις ποτὲ

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

καὶ διὰ μακροῦ 13b.55 τινὰς αὐτῶν <εἰς Πραισίους> κομίζεσθαι λέγουσι· καὶ τούτων μέν-
τοι ἢ τὰ νοσοῦντα ἐκομίσθη, ἢ θήλέα τινα καὶ κυοῦντα· καὶ συνέβη γε θηραθῆναι τοῖς μὲν
διὰ τὴν νωθείαν, ταῖς δὲ διὰ τὸν τῆς γαστρὸς ὄγκον. 14.1 Plinius VIII, 14, 1: Megasthenes
scribit in India serpentes in tantam magnitudinem adolere, ut solidos hauriant cervos
taurosque. 15.1 Aelian. N. A. VIII, 7: Μεγασθένους ἀκούω λέ- γοντος περὶ τὴν τῶν Ἰνδῶν
θάλατταν γίνεσθαι τι ἰχθύ- διον, καὶ τοῦτο μὲν ὅταν ζῇ, ἀθέατον εἶναι, κάτω που νηχόμε-
νον καὶ ἐν βυθῷ, ἀποθανόν δὲ ἀναπλεῖν· οὗ τὸν 15.5 ἀψάμενον λειποθυμεῖν καὶ ἐκθνήσκειν τὰ
πρῶτα, εἴτα μέντοι καὶ ἀποθνήσκειν. 16.1 Plinius H. N. VI, 24: Megasthenes flumine dividi
(Taprobanen insulam tradit) incolasque palaeogonos appellari, aurique margaritarumque
fertiliores quam Indos. 17.1 Antigonus Hist. Mirab. c. 147: Μεγασθένην δὲ τὸν τὰ Ἰν-
δικὰ γεγραφότα ἱστορεῖν, ἐν τῇ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν θαλάττῃ δένδρεα φύεσθαι. 18a.1 Arrianus
Ind. 4, 2 – 13: Αὐτοῖν δὲ τοῖν μεγί- στοιν ποταμοῖν τοῦ τε Γάγγεω καὶ τοῦ Ἰνδοῦ τὸν Γάγ-
γεω μεγέθει πολὺ τι ὑπερφέρειν Μεγασθένης ἀνέγραψεν, καὶ ὅσοι ἄλλοι μνήμην τοῦ Γάγ-
γεω ἔχουσιν· (3) αὐτόν 18a.5 τε γὰρ μέγαν ἀνίσχειν ἐκ τῶν πηγέων, δέχεσθαι τε ἐς αὐτόν
τόν τε Καῖνὰν ποταμόν, καὶ τὸν Ἐρρινοβοῶν καὶ τὸν Κοσσόανον, πάντας πλωτοῦς· ἔτι δὲ
Σῶνόν τε ποταμόν καὶ Σιττόκατιν καὶ Σολόματιν, καὶ τούτους πλω- 18a.10 τοῦς. (4) Ἐπὶ
δὲ Κονδοχάτην τε καὶ Σάμβον καὶ Μάγωνα καὶ Ἀγόρανιν καὶ Ὠμαλιν· ἐμβάλλουσι δὲ ἐς
αὐτόν Κορμενάσης τε μέγας ποταμὸς καὶ Κάκουθις καὶ Ἀνδῶματις ἐξ ἔθνους Ἰνδικοῦ τοῦ
Μανδιαδινῶν ῥέων· (5) καὶ ἐπὶ 18a.15 τούτοις Ἀμυστις παρὰ πόλιν Καταδοῦπην, καὶ Ὀξύ-
ματις ἐπὶ Παζάλαισι καλου- μένοισι, καὶ Ἐρρένυσις ἐν Μάθαισιν, ἔθνεϊ Ἰνδικῷ, ξυμβάλλει
τῷ Γάγγει. 18a.20 (6) Τούτων λέγει Μεγασθένης οὐδένα εἶναι τοῦ Μαιάν- δρου ἀποδέοντα,
ἵνα περ ναυσίπορος ὁ Μαίανδρος. (7) Εἶναι ἂν τὸ εὖρος τῷ Γάγγει, ἔνθα περ αὐτὸς ἐαυτοῦ
στενότατος, εἰς ἑκατὸν σταδίους· πολλαχὲ δὲ καὶ λι- μνάζειν, ὥς μὴ ἀποπτον εἶναι τὴν πέ-
ρην χώραν, ἵνα περ 18a.25 χθαμαλὴ τε ἐστὶ καὶ οὐδαμῇ γηλόφοισιν ἀνεστηκυῖα. (8) Τῷ δὲ
Ἰνδῷ ἐς ταῦτόν ἔρχεται. Ἰδρωῶτης μὲν Καμβισθόλοισι παρεληφὼς τὸν τε Ἰφρασιν ἐν Ἀστρό-
βαισι καὶ τὸν Σαράγγην ἐκ Κηκέων καὶ τὸν Νεῦ- 18a.30 δρον ἐξ Ἀττακηνῶν, ἐς Ἀκεσίνην
ἐμβάλλουσιν. (9) Ἰδῶ- σπης ἐν δὲ Ὀξυδράκαισιν ἄγων ἅμα οἱ τὸν Σίναρον ἐν Ἀρίσπαισι, ἐς
τὸν Ἀκεσίνην ἐκδιδοῖ καὶ οὗτος. (10) Ὁ δὲ Ἀκεσίνης ἐν Μαλλοῖς ξυμβάλλει τῷ Ἰνδῷ· καὶ Τού-
ταπος δὲ μέγας ποταμὸς ἐς τὸν Ἀκεσίνην ἐκδιδοῖ. Τούτων 18a.35 ὁ Ἀκεσίνης ἐμπλησθεὶς καὶ τῇ
ἐπικλήσει ἐκνικήσας αὐτὸς τῷ ἐαυτοῦ ἤδη οὐνόματι ἐσβάλλει ἐς τὸν Ἰνδόν· (11) Κω-
φὴν δὲ ἐν Πευκελαιήτιδι, ἅμα οἱ ἄγων Μαλάμαντόν τε καὶ Σόαστον καὶ Γαρροῖαν, ἐκδιδοῖ ἐς τὸν Ἰνδόν.
(12) Καθ' ὑπερθε δὲ τούτων Πάρενος 18a.40 καὶ Σάπαρνος, οὐ πολὺ διέχοντες, ἐμβάλ-
λουσιν ἐς τὸν Ἰνδόν. Σόανος δὲ, ἐκ τῆς ὄρεινῆς τῆς Ἀβισσαρέων, ἔρημος ἄλλου ποταμοῦ, ἐκ-
διδοῖ ἐς αὐτόν. Καὶ τούτων τοὺς πολλοὺς Μεγασθένης 18a.45 λέγει, ὅτι πλωτοὶ εἰσιν. 18b.1 Τὸ δὲ αἰτίον ὅστις
ἐθέλει φράζειν τοῦ πλήθους τε καὶ μεγέθους τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν, φράζετω· ἐμοὶ δὲ καὶ ταῦτα
ὡς ἀκοῇ ἀναγεγράφθω. Ἐπεὶ καὶ ἄλλων πολλῶν ποταμῶν οὐνόματα Μεγασθένης ἀνέγρα-
18b.5 ψεν, οἱ ἔξω τοῦ Γάγγεω τε καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἐκδιδοῦσιν ἐς τὸν ἑῶν τε καὶ μεσημβρινόν τὸν
ἕξω πόντον· ὥστε τοὺς πάντας ὁκτῶ καὶ πεντήκοντα λέγει ὅτι εἰσὶν Ἰνδοὶ ποταμοὶ ναυσίποροι

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

πάντες. Ἀλλ' οὐδὲ Μεγασθένης πολλὴν δοκέει μοι ἐπελθεῖν τῆς Ἰνδῶν χώρας, πλὴν 18b.10 γε ὅτι πλεῖνα ἢ οἱ ξὺν Ἀλεξάνδρῳ τῷ Φιλίππου ἐπελ- θόντες. Συγγενέσθαι γὰρ Σανδρακόττῳ λέγει, τῷ με- γίστῳ βασιλεῖ καὶ Πώρῳ, ἔτι τούτου μέζονι 18c.1 Strabo XV: Λέγουσιν οἱ μὲν τριάκοντα σταδίων τοῦλάχιστον πλάτος, οἱ δὲ καὶ τριῶν· Μεγασθένης δὲ, ὅταν ἦ μέτριος, καὶ ἐς ἑκατὸν εὐρύνεσθαι, βάθος δὲ εἴκοσι ὀργυῶν τοῦλάχιστον. Ἐπὶ 18c.5 δὲ συμβολῇ τούτου κτλ. 19a.1 Arrianus Ind. 6, 2: Καὶ τόδε λέγει Μεγασθένης ὑπὲρ ποταμοῦ Ἰνδικοῦ, Σίλαν μὲν εἶναι οἱ οὐνομα, ῥέειν δὲ ἀπὸ κρήνης ἐπωνύμου τῷ ποταμῷ διὰ τῆς χώρας τῆς Σιλέων, καὶ τούτων ἐπωνύμων τοῦ ποταμοῦ τε καὶ 19a.5 τῆς κρήνης· (3) τὸ δὲ ὕδωρ παρέχεσθαι τοῖόνδε· οὐδὲν

εἶναι ὅτεω ἀντέχει τὸ ὕδωρ, οὔτε τι νήχεσθαι ἐπ' αὐτοῦ οὔτε τι ἐπιπλέειν, ἀλλὰ πάντα γὰρ ἐς βυσσὸν δύνειν· οὕτω τι ἀμεννότερον πάντων εἶναι τὸ ὕδωρ ἐκείνο καὶ ἡεροειδέστερον. 19b.1 Strabo XV: Ἐν δὲ τῇ ὀρεινῇ Σιλίαν ποταμὸν εἶναι, ᾧ μὴδὲν ἐπιπλεῖ· Δημόκριτον μὲν οὖν ἀπιστεῖν ἅτε πολλὴν τῆς Ἀσίας πεπλανημένον· καὶ Ἀριστοτέλης δὲ 19b.5 ἀπιστεῖ.

E LIBRO SECUNDO.

20.1 Strabo XV: Ἡμῖν δὲ τίς ἂν δικαία γένοιτο πίστις περὶ τῶν Ἰνδικῶν ἐκ τῆς τοιαύτης στρατείας τοῦ Κύρου ἢ τῆς Σεμίραμιδος; Συναποφαίνεται δὲ πως καὶ Μεγασθένης τῷ λόγῳ 20.5 τούτῳ, κελεύων ἀπιστεῖν ταῖς ἀρχαίαις περὶ Ἰνδῶν ιστορίαις· οὔτε γὰρ παρ' Ἰνδῶν ἔξω σταλῆναί ποτε στρατιάν, οὔτ' ἐπελθεῖν ἔξωθεν καὶ κρατῆσαι, πλὴν τῆς μεθ' Ἡρακλέους καὶ Διονύσου, καὶ τῆς νῦν μετὰ Μακεδόνων. Καίτοι Σέσωστριν μὲν τὸν Αἰγύπτιον καὶ 20.10 Τεάρχωνα τὸν Αἰθίοπα ἕως Εὐρώπης προελθεῖν, Ναβοκοδρόσορον δὲ τὸν παρὰ Χαλδαίοις εὐδοκιμήσαντα, Ἡρακλέους μᾶλλον, καὶ ἕως Σπηλῶν ἐλάσαι· μέχρι μὲν δὴ δεῦρο καὶ Τεάρχωνα ἀφικέσθαι· ἐκείνον δὲ καὶ ἐκ τῆς Ἰβηρίας εἰς τὴν Θράκην καὶ τὸν Πόντον 20.15 ἀγαγεῖν τὴν στρατιάν. Ἰδάνθυρον δὲ τὸν Σκύθην ἐπι- δραμεῖν τῆς Ἀσίας μέχρι Αἰγύπτου· τῆς Ἰνδικῆς δὲ μὴδὲνα τούτων ἀφασθαι. Καὶ Σεμίραμιν δ' ἀποθανεῖν πρὸ τῆς ἐπιχειρήσεως. Πέρσας δὲ μισθοφόρους μὲν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς μεταπέμψασθαι Ἵδρακας· ἐκεῖ δὲ μὴ 20.20 στρατεῦσαι, ἀλλ' ἐγγυὺς ἐλθεῖν μόνον, ἥνικα Κῦρος ἤλαυνεν ἐπὶ Μασσαγέτας. Καὶ τὰ περὶ Ἡρακλέους δὲ καὶ Διονύσου Μεγασθέ- νης μὲν μετ' ὀλίγων πιστὰ ἡγεῖται· τῶν δ' ἄλλων οἱ πλείους, ὧν ἐστὶ καὶ Ἐρατοσθένης, ἀπιστα καὶ μυ- 20.25 θώδη, καθάπερ καὶ τὰ παρὰ τοῖς Ἑλλήσιν. 21.1 Arrianus Ind. 5, 4: Οὗτος ὧν ὁ Μεγασθένης λέγει, οὔτε Ἰνδοὺς ἐπιστρατεῦσαι οὐδαμοῖσιν ἀνθρώποισιν, οὔτε Ἰνδοῖσιν ἄλλους ἀνθρώπους· (5) ἀλλὰ Σέσωστριν μὲν τὸν Αἰγύπτιον, τῆς Ἀσίας καταστρεφάμενον τὴν 21.5 πολλὴν, ἔστε ἐπὶ τὴν Εὐρώπην σὺν στρατιῇ ἐλάσαντα ὀπίσω ἀπονοστήσαι· (6) Ἰνδάθυρον δὲ τὸν Σκύθεα ἐκ Σκυθίας ὀρμηθέντα πολλὰ μὲν τῆς Ἀσίας ἔθνεα κατα- στρέφασθαι, ἐπελθεῖν δὲ καὶ τὴν Αἰγυπτίων γῆν κρα- τέοντα· (7) Σεμίραμιν δὲ τὴν Ἀσσυρίην ἐπιχειρεῖν, 21.10 μὲν στέλλεσθαι εἰς Ἰνδοὺς, ἀποθανεῖν δὲ πρὶν τέλος ἐπιθεῖναι τοῖσι βουλευμασιν· ἀλλὰ Ἀλέξανδρον γὰρ στρατεῦσαι ἐπὶ Ἰνδοὺς μούνον. (8) Καὶ πρὸ Ἀλεξάν- δρου Διονύσου μὲν περί πολλὸς λόγος κατέχει, ὡς καὶ τούτου στρατεύσαντος ἐς Ἰνδοὺς, καὶ καταστρεφάμενου 21.15 Ἰνδοὺς· Ἡρακλέος δὲ περί οὐ πολλός. (9) Διονύσου μὲν γε καὶ Νύσσα πόλις μνήμα οὐ φαῦλον τῆς στρατη- λασίης καὶ ὁ Μηρὸς τὸ ὄρος, καὶ ὁ κισσὸς ὅτι ἐν τῷ ὄρεϊ τούτῳ φύεται· καὶ αὐτοὶ οἱ Ἰνδοὶ ὑπὸ τυμπάνων τε καὶ κυμβάλων στελλόμε-

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

νοι ἐς τὰς μάχας· καὶ ἐσθῆς 21.20 αὐτοῖσι κατάστικτος ἐοῦσα, καθάπερ τοῦ Διονύσου τοῖσι βάκχοισιν· (10) Ἡρακλῆος δὲ οὐ πολλὰ ὑπομνήματα. Ἀλλὰ τὴν Ἄορνον γὰρ πέτρην, ἣντινα Ἀλέξανδρος βίῃ ἐχειρώσατο, ὅτι Ἡρακλῆς οὐ δυνατὸς ἐγένετο ἐξελεῖν, Μακεδονικὸν δοκέει μοί τι κόμπασμα, καθάπερ καὶ τὸν 21.25 Παραπάμισον Καύκασον ἐκάλεον Μακεδόνες, οὐδὲν τι προσήκοντα τοῦτον τῷ Καυκάσῳ. (11) Καὶ τι καὶ ἄντρον ἐπιφρασθέντες ἐν Παραπαμισάδαισι, τοῦτο ἔφρασαν ἐκεῖνο εἶναι τοῦ Προμηθέως τοῦ Τιτῆνος τὸ ἄντρον, ἐν ᾧ ἐκρέματο ἐπὶ τῇ κλοπῇ τοῦ πυρός. (12) Καὶ 21.30 ἐν Σίβαισιν, Ἰνδικῶ γενεῇ, ὅτι δορὰς ἀμπεχομένους εἶδον τοὺς Σίβας, ἀπὸ τῆς Ἡρακλῆος στρατηλασίης ἔφασκον τοὺς ὑπολειφθέντας εἶναι τοὺς Σίβας· καὶ γὰρ καὶ σκυτάλην φέρουσι τε οἱ Σίβαι, καὶ τοῖς βουσὶν αὐτῶν ῥόπαλον ἐπικέκασται· καὶ τοῦτο ἐς μνήμην ἀνέφε- 21.35 ρον τοῦ ῥοπάλου τοῦ Ἡρακλῆος. 22a.1 Josephus Ant. Iud. X, 11, 1: [Ἐν δὲ τοῖς βασιλείοις τούτοις ἀναλήμματα λίθινα ἀνοικοδομήσας (scil. ὁ Ναβουχοδονόσορος), καὶ τὴν ὄψιν ἀποδοὺς ὁμοιοτάτην τοῖς ὄρεσι καταφυτεύσας δένδρεσι παντοδαποῖς ἐξείρ- 22a.5 γάσατο, διὰ τὸ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ ἐπιθυμεῖν τῆς οἰκείας διαθήσεως ὡς τεθραμμένην ἐν τοῖς κατὰ Μηδίαν τόποις.] <Καὶ Μεγασθένης> δὲ <ἐν τῇ δ' > (l. δευτέρᾳ) <τῶν Ἰνδικῶν> μνημονεύει αὐτῶν, δι' ἧς ἀποφαίνειν πειράται τοῦτον τὸν βασιλέα τῇ ἀνδρείᾳ καὶ τῷ μεγέ- 22a.10 θεῖ τῶν πράξεων ὑπερβεβηκότα τὸν Ἡρακλέα· καταστρέφασθαι γὰρ αὐτόν φησι Λιβύης τὴν πολλὴν καὶ Ἰβηρίαν. Καὶ Διοκλῆς δὲ ἐν τῇ δευτέρᾳ τῶν Περσικῶν μνημονεύει τούτου τοῦ βασιλέως, καὶ Φιλόστρατος ἐν ταῖς Ἰνδικαῖς αὐτοῦ καὶ Φοινικικαῖς ἱστορίαις, ὅτι οὗ- 22a.15 τος ὁ βασιλεὺς ἐπολιόρκησε Τύρον ἔτεσι τρισὶ καὶ δέκα, βασιλεύοντος κατ' ἐκεῖνον τὸν καιρὸν Ἰθωβάλου τῆς Τύρου. 22b.1 Syncellus: Τὸν Ναβουχοδονόσωρ ὁ Μεγασθένης ἐν τῇ δ' (l. δευτέρᾳ) τῶν Ἰνδικῶν Ἡρακλέους ἀλκιμώτερον ἀποφαίνει, ὃς

ἀνδρεία μεγάλη Λιβύης τὸ πλεῖστον καὶ Ἰβηρίας κα- 22b.5 τεστρέφατο. Συμφωνεῖ δὲ αὐτῷ καὶ Φιλόστρατος ἐν ταῖς ἱστορίαις, ἐνθα καὶ περὶ τῆς Τύρου πολιορκίας καὶ τῶν Φοινίκων πάλαι, αἵτινες ἱστορίαι φέρονται περὶ τοῦ Ναβουχοδονόσωρ, ὅτι Συρίαν καὶ Αἴγυπτον καὶ πᾶσαν τὴν Φοινίκην κατεστρέφατο πολέμοις. 22c.1 Euseb. Pr. Ev. IX: Εὐρον δὲ καὶ ἐν τῇ Ἀβυδηνοῦ Περί Ἀσσυρίων γραφῇ περὶ τοῦ Ναβουχο- δονόσωρ ταῦτα· Μεγασθένης δὲ φησι Ναβουχοδρόσο- ρον Ἡρακλῆος ἀλκιμώτερον γεγονότα ἐπὶ τε Λιβύην 22c.5 καὶ Ἰβηρίην στρατεῦσαι· ταύτας δὲ χειρωσάμενον ἀπο- δασμὸν αὐτέων εἰς τὰ δεξιὰ τοῦ Πόντου κατοικίσαι. 23.1 Arrianus Ind. c. 7: Ἐθνεα δὲ Ἰνδικὰ εἴκοσι καὶ ἑκατὸν τι ἅπαντα λέγει <Μεγασθένης> δυοῖν δέοντα. [Καὶ πολλὰ μὲν εἶναι ἔθνεα Ἰνδικὰ καὶ αὐτὸς ξυμφέ- ρομαι Μεγασθένει· τὸ δὲ ἀτρεκές οὐκ ἔχω εἰκάσαι ὅπως 23.5 ἐκμαθὼν ἀνέγραψεν, οὐδὲ πολλοστὸν μέρος τῆς Ἰνδῶν γῆς ἐπελθὼν, οὐδὲ ἐπιμιξίης πᾶσι τοῖς γένεσιν ἐούσης ἐς ἀλλήλους.] Πάλαι μὲν δὴ νομάδας εἶναι Ἰνδοὺς καθάπερ Σκυ- θέων τοὺς οὐκ ἀροτῆρας, οἱ ἐπὶ τῆσιν ἀμάξῃσι πλανῶ- 23.10 μενοι ἄλλοτε ἄλλην τῆς Σκυθίας ἀμείβουσιν, οὔτε πό- λιας οἰκέοντες οὔτε ἱερὰ θεῶν σέβοντες· οὕτω μὲν Ἰνδοῖσι πόλιας εἶναι μὲν ἱερὰ θεῶν δεδομημένα· ἀλλ' ἀμπέχεσθαι μὲν δορὰς θηρίων ὅσων κατακτάνοιεν· σι- τέεσθαι δὲ τῶν δενδρέων τὸν φλοιόν· καλέεσθαι δὲ τὰ 23.15 δένδρεα ταῦτα τῇ Ἰνδῶν φωνῇ <Τάλα·> καὶ φύεσθαι ἐπ' αὐτῶν καθάπερ τῶν φοινίκων ἐπὶ τῇσι κορυφῇσιν οἷα περ πολύπας. Σιτέεσθαι δὲ καὶ τῶν θηρίων ὅσα ἔλοιεν ὠμοφαγέοντας, πρὶν δὴ Διόνυσον ἐλ-

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

θεῖν ἐς τὴν χώραν τῶν Ἰνδῶν. Διόνυσον δὲ ἐλθόντα, ὡς καρτερός 23.20 ἐγένετο Ἰνδῶν, πόλιός τε οἰκῆσαι καὶ νόμους θέσθαι τῇσι πόλυσιν, οἶνου τε δοτῆρα Ἰνδοῖς γενέσθαι κατὰ περ Ἑλλήσι, καὶ σπείρειν διδάξαι τὴν γῆν διδόντα αὐτὸν σπέρματα· ἢ οὐκ ἐλάσαντος ταύτῃ Τριπτολέμου, ὅτε περ ἐκ Δήμητρος ἐστάλη σπείρειν τὴν γῆν πᾶσαν, 23.25 ἢ πρὸ Τριπτολέμου τις οὗτος Διόνυσος ἐπελθὼν τὴν Ἰνδῶν γῆν σπέρματά σφισιν ἔδωκε καρποῦ τοῦ ἡμέ- ρου· βόας τε ὑπ' ἀρότρῳ ζεύξαι Διόνυσον πρῶτον, καὶ ἀροτῆρας ἀντὶ νομάδων ποιῆσαι Ἰνδῶν τοὺς πολλοὺς καὶ ὀπλίῃσαι ὀπλοισι τοῖσιν ἀρηϊοῖσι. Καὶ θεοὺς σέβειν 23.30 ὅτι ἐδίδαξε Διόνυσος ἄλλους τε καὶ μάλιστα δὴ ἐωυτὸν κυμβαλίζοντας καὶ τυμπανίζοντας· καὶ ὄρχησιν δὲ ἐκ- διδάξαι τὴν σατυρικὴν, τὸν κόρδακα παρ' Ἑλλήσι κα- λόμενον· καὶ κομᾶν Ἰνδοὺς τῷ θεῷ, μιτρηφορέειν τε ἀναδείξαι καὶ μύρων ἀλοιφὰς ἐκδιδάξαι, ὥστε καὶ εἰς 23.35 Ἀλέξανδρον ἔτι ὑπὸ κυμβάλων τε καὶ τυμπάνων ἐς τὰς μάχας Ἰνδοὶ καθίσταντο. C. 8. Ἀπρόντα δὲ ἐκ τῆς Ἰνδῶν γῆς, ὡς οἱ ταῦτα κε- κοσμέατο, καταστήσαι βασιλέα τῆς χώρας Σπατέμβαν, τῶν ἐταίρων ἕνα τὸν βακχῶδέστατον· τελευ- τήσαντος δὲ 23.40 Σπατέμβαν τὴν βασιλὴν ἐκδέξασθαι Βουδύαν τὸν τούτου παῖδα· καὶ τὸν μὲν πεντήκοντα καὶ δύο ἔτεα βασιλεῦσαι Ἰνδῶν, τὸν πατέρα· τὸν δὲ παῖδα εἴκοσιν ἔτεα· καὶ τούτου παῖδα ἐκδέξασθαι τὴν βασιλὴν Κρα- δεύαν· καὶ τὸ ἀπὸ τούδε τὸ πολὺ μὲν κατὰ γένος ἀμεί- 23.45 βειν τὴν βασιλὴν, παῖδα παρὰ πατρός ἐκδεκόμενον· εἰ δὲ ἐκλείποι τὸ γένος, οὕτω δὴ ἀριστίνδην καθίστα- σθαι Ἰνδοῖσι βασιλέας. Ἡρακλέα δὲ, ὄντινα ἐς Ἰνδοὺς ἀφικέσθαι λόγος κα- τέχει, παρ' αὐτοῖσιν Ἰνδοῖσι γηγενέα λέγεσθαι. Τοῦ- 23.50 τον τὸν Ἡρακλέα μάλιστα πρὸς Σουρασηνῶν γεραίρε- σθαι Ἰνδικοῦ ἔθνεος, ἵνα δύο πόλεις μεγάλας Μέθορά τε καὶ Κλεισόβورا, καὶ ποταμὸς Ἰωβάρης πλωτὸς διαρ- ρέει τὴν χώραν αὐτῶν. Τὴν σκευὴν δὲ οὗτος ὁ Ἡρα- κλὴς ἦντινα ἐφόρει, <Μεγασθένης> λέγει ὅτι ὁμοίην 23.55 τῷ Θηβαίῳ Ἡρακλεῖ, ὡς αὐτοὶ Ἰνδοὶ ἀπηγέονται· καὶ τούτῳ ἄρσενας μὲν παῖδας πολλοὺς κάρτα γενέσθαι ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, (πολλῇσι γὰρ δὴ γυναιξὶν ἐς γάμον ἐλ- θεῖν καὶ τοῦτον τὸν Ἡρακλέα,) θυγατέρα δὲ μουνό- γενέην· οὖνομα δὲ εἶναι τῇ παιδί Πανδαίην, καὶ τὴν 23.60 χώραν ἵνα τε ἐγένετο καὶ ἥστινος ἐπέτρεψεν αὐτὴν ἄρ- χειν Ἡρακλὴς, Πανδαίην, τῆς παιδὸς ἐπώνυμον· καὶ ταύτῃ ἐλέφαντας μὲν γενέσθαι ἐκ τοῦ πατρὸς ἐς πεν- τακοσίους, ἵππων δὲ ἐς τετρακισχιλὴν, πεζῶν δὲ ἐς τὰς τρεῖς καὶ δέκα μυριάδας. Καὶ τὰδε μετεξέτεροι Ἰνδῶν 23.65 περὶ Ἡρακλέος λέγουσιν· ἐπελθόντα αὐτὸν πᾶσαν γῆν καὶ θάλασσαν καὶ καθήραντα ὃ τι περ κακὸν κίναδος, ἐξευρεῖν ἐν τῇ θαλάσῃ κόσμον γυναικῆιον· [ὄντινα καὶ εἰς τοῦτο ἔτι οἱ τε ἐξ Ἰνδῶν τῆς χώρας τὰ ἀγώ- γιμα παρ' ἡμέας ἀγινέοντες σπουδῇ ὠνεόμενοι ἐκκομίζουσι· 23.70 καὶ Ἑλλήνων δὲ πάλαι καὶ Ῥωμαίων νῦν ὅσοι πολυ- κτέανοι καὶ εὐδαίμονες, μέζονι ἔτι σπουδῇ ὠνεύονται·] τὸν μαργαρίτην δὴ τὸν θαλάσσιον, οὕτω τῇ Ἰνδῶν γλώσσῃ καλούμενον· τὸν γὰρ Ἡρακλέα, ὡς καλὸν οἱ ἐφάνη τὸ φόρημα, ἐκ πάσης τῆς θαλάσσης ἐς τὴν Ἰν- 23.75 δῶν γῆν συναγινέειν τὸν μαργαρίτην δὴ τοῦτον, τῇ θυ- γατρὶ τῇ ἐωυτοῦ εἶναι κόσμον. Καὶ λέγει <Μεγασθένης> (*), θηρεύεσθαι αὐτοῦ τὴν κόγχην δικτύοις, νέμεσθαι δ' ἐν τῇ θαλάσῃ κατ' αὐτὸ πολλὰς κόγχας, κατὰ περ τὰς μελίσσας· καὶ εἶναι

23.80 γὰρ καὶ τοῖσι μαργαρίτησι βασιλέα ἢ βασίλισσαν, ὡς τῇσι μελισσῇσι. Καὶ ὅστις μὲν ἐκεῖνον κατ' ἐπιτυχίην συλλάβοι, τοῦτον δὲ εὐπετέως περιβάλλειν καὶ τὸ ἄλλο σμῆνος τῶν

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

μαργαριτέων· εἰ δὲ διαφύγοι σφᾶς ὁ βασι- λεύς, τούτῳ δὲ οὐκέτι θηρατοὺς εἶναι τοὺς ἄλλους· τοὺς 23.85 ἀλόντας δὲ περιορᾶν κατασαπῆναί σφισι τὴν σάρκα, τῷ δὲ ὁστέῳ ἐς κόσμον χρῆ- σθαι. Καὶ εἶναι γὰρ καὶ παρ' Ἰνδοῖσι τὸν μαργαρίτην τριστάσιον κατὰ τιμὴν πρὸς χρυσίον τὸ ἀπεφθον, καὶ τοῦτο ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ ὄρυς- σόμενον. 23.90 C. 9. Ἐν δὲ τῇ χώρῃ ταύτῃ, ἵνα ἐβασίλευσεν ἡ θυγά- τρη τοῦ Ἡρακλέος, τὰς μὲν γυναῖκας ἐπταέτεας εἰούσας ἐς ὥρην γάμου ἵναι, τοὺς δὲ ἄνδρας τεσσαράκοντα ἔτεα τὰ πλεῖστα βιώσκεσθαι *. Καὶ ὑπὲρ τούτου λεγό- μενον λόγον εἶναι παρ' Ἰνδοῖσιν· Ἡρακλέα, ὀφιγόνου 23.95 οἱ γενομένης τῆς παιδός, ἐπεὶ τε δὴ ἐγγυὺς ἔμαθεν ἑωυτῷ εἰούσαν τὴν τελευταίην, οὐκ ἔχοντα ὅτεω ἀνδρὶ ἐκδῶ τὴν παιῖδα ἑωυτοῦ ἐπαξίῳ, αὐτὸν μιγῆναι τῇ παιδί ἐπταέτεϊ εἰούσῃ, ὡς γένος ἐξ οὗ τε κακείνης ὑπολείπεσθαι Ἰνδῶν βασιλέας. Ποῆσαι ὦν αὐτὴν Ἡρακλέα ὡραίην γάμου· 23.100 καὶ ἐκ τοῦδε ἅπαν τὸ γένος τοῦτο ὅτου ἡ Πανδαίῃ ἐπῆρξε, ταῦτό τοῦτον γέρας ἔχειν παρὰ Ἡρακλέος [Ἐμοὶ δὲ δοκέει, εἴπερ ὦν τὰ ἐς τοσόνδε ἄτοπα Ἡρα- κλέης οἶός τε ἦν ἐξεργάζεσθαι, καὶ αὐτὸν ἀποφῆναι μα- κροβιώτερον, ὡς ὡραίῃ μιγῆναι τῇ παιδί. Ἀλλὰ γὰρ εἰ 23.105 ταῦτα ὑπὲρ τῆς ὥρης τῶν ταύτῃ παιδῶν ἀπρεκέα ἐστίν, ἐς ταῦτόν φέρειν δοκέει ἔμοιγε ἐς ὃ τι περ καὶ ὑπὲρ τῶν ἀνδρῶν τῆς ἡλικίης ὅτι τεσσαρακοντούτεες ἀποθνήσκου- σιν οἱ πρεσβύτατοι αὐτῶν. Οἷς γὰρ τό τε γῆρας τοσῶδε ταχύτερον ἐπέρχεται καὶ ὁ θάνατος ὁμοῦ τῷ γῆραϊ, 23.110 πάντως που καὶ ἡ ἀκμὴ πρὸς λόγον τοῦ τέλεος ταχυ- τέρη ἐπανθείει· ὥστε τριακοντούτεες μὲν ὠμογέροντες ἂν που εἴεν αὐτοῖσιν οἱ ἄνδρες, εἴκοσι δὲ ἔτεα γεγονότες οἱ ἔξω ἡβῆς νεηνίσκοι· ἡ δὲ ἀκροτάτη ἡβη ἀμφὶ τὰ πεντεκαίδεκα ἔτεα· καὶ τῇσι γυναῖξιν ὥρῃ τοῦ γάμου 23.115 κατὰ λόγον ἂν οὕτω ἐς τὰ ἐπτά ἔτεα συμβαίνοι.] Καὶ γὰρ τοὺς καρποὺς ἐν ταύτῃ τῇ χώρῃ πεπαίνεισθαι τε ταχύτερον μὲν τῆς ἄλλης, αὐτὸς οὗτος <Μεγασθένης> ἀνέγραψε, καὶ φθίνειν ταχύτερον. Ἀπὸ μὲν δὴ Διονύσου βασιλέας ἡρίθμεον Ἰνδοὶ ἐς 23.120 Σανδράκοττον τρεῖς καὶ πεντήκοντα καὶ ἑκατόν· ἔτεα δὲ δύο καὶ τεσσαράκοντα καὶ ἑξακισχίλια· ἐν δὲ τού- τοις τρεῖς τὸ πᾶν εἰς ἐλευθερίην ** τὴν δὲ καὶ ἐς τριη- κόσια· τὴν δὲ εἴκοσι τε ἐτέων καὶ ἑκατόν (*)· πρεσβύ- τερόν τε Διονύσον Ἡρακλέος δέκα καὶ πέντε γενεῇ- 23.125 σιν Ἰνδοὶ λέγουσιν· ἄλλον δὲ οὐδένα ἐμβα- λεῖν ἐς γῆν τὴν Ἰνδῶν ἐπὶ πολέμῳ, οὐδὲ Κῦρον τὸν Καμβύσεω, καί- τοι ἐπὶ Σκύθας ἐλάσαντα καὶ τᾶλλα πολυπραγμονέστα- τον δὴ τῶν κατὰ τὴν Ἀσίην βασιλέων γενόμενον τὸν Κῦρον· ἀλλὰ Ἀλέξανδρον γὰρ ἐλθεῖν τε καὶ κρατῆσαι 23.130 πάντων τοῖς ὅπλοις, ὅσους γε δὴ ἐπῆλθε· καὶ ἂν καὶ πάντων κρατῆσαι, εἰ ἡ στρατιὴ ἤθελεν. Οὐ μὲν δὲ οὐδὲ Ἰνδῶν τινα ἔξω τῆς οἰκίης σταλῆναι ἐπὶ πολέμῳ διὰ δικαιοσύνην. 24.1 Phlegon Mirab. c. 33: Μεγασθένης δὲ φησιν, τὰς ἐν Παλαιᾷ κατοικοῦσας γυναῖκας ἑξαετείς γινομένης τίκτειν. 25.1 Strabo XV: Ἐπὶ δὲ τῇ συμβολῇ τούτου (τοῦ Γάγγου) τε καὶ τοῦ ἄλλου ποταμοῦ τὰ Παλίβοθρα ἰδρῦσθαι (sc. Με- γασθένης φησὶ) σταδίῳ ὀγδοήκοντα τὸ μῆκος, πλάτος δὲ πεντεκαίδεκα, ἐν παραλληλο- 25.5 γράμμῳ σχήματι, ξύλινον περίβολον ἔχουσιν κατατε- τρημένον, ὥστε διὰ τῶν ὁπῶν τοξεύειν· προκεισθαι δὲ καὶ τάφρον φυλακῆς τε χάριν καὶ ὑποδοχῆς τῶν ἐκ τῆς πόλεως ἀπορροϊῶν. Τὸ δ' ἔθνος, ἐν ᾧ ἡ πόλις αὕτη, καλεῖσθαι Πρασίους, διαφορώτατον τῶν πάντων· τὸν 25.10 δὲ βασιλεύοντα ἐπώνυμον δεῖ τῆς πόλεως εἶναι Παλί- βοθρον καλούμενον, πρὸς τῷ ἰδίῳ τῷ ἐκ

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

γενετῆς ὀνό- ματι, καθάπερ τὸν Σανδρόκοττον, πρὸς ὃν ἦκεν ὁ Με- γασθένης πεμφθείς. 26.1 Arrian. Ind. c. 10: Λέγεται δὲ καὶ τάδε, μνημῆια ὅτι Ἴνδοι τοῖς τελευτήσασιν οὐ ποιέουσιν, ἀλλὰ τὰς ἀρε- τὰς γὰρ τῶν ἀνδρῶν ἱκανὰς ἐς μνήμην τίθενται τοῖσιν ἀποθανούσι, καὶ τὰς ψδὰς αἱ αὐτοῖσιν ἐπάδονται. (2) Πο- 26.5 λίων δὲ ἀριθμὸν οὐκ εἶναι ἂν ἀπρεκές ἀναγράψαι τῶν Ἰνδικῶν ὑπὸ πλήθεος· ἀλλὰ γὰρ ὅσαι παραποτάμια αὐ- τέων ἢ παραθαλάσσια, ταύ- τας μὲν ξυλίνας ποιέεσθαι· (3) οὐ γὰρ εἶναι ἐκ πλίνθου ποιεόμενας διαρκέσαι ἐπὶ χρόνον τοῦ τε ὕδατος ἕνεκα τοῦ ἐξ οὐρανοῦ, καὶ ὅτι οἱ 26.10 ποταμοὶ αὐτοῖσιν ὑπερβάλλοντες ὑπὲρ τὰς ὄχθας ἐμπι- πλάσι τοῦ ὕδατος τὰ πεδία. (4) Ὅσαι δὲ ἐν ὑπερδε- ξίοισι τε καὶ μετεώροισι τό- ποισι καὶ τούτοισιν ὑψηλοῖσιν, ψκισμέναι εἰσὶ, ταύτας δὲ ἐκ πλίνθου τε καὶ πηλοῦ ποιέεσθαι· (5) μεγίστην δὲ πόλιν ἐν Ἰνδοῖσιν εἶναι Παλίμ- 26.15 βοθρα καλεομένην, ἐν τῇ Πρασίων γῇ, ἵνα αἱ συμβολαὶ εἰσὶ τοῦ τε Ἐραννοβόα ποταμοῦ καὶ τοῦ Γάγγεως· τοῦ μὲν Γάγγεω, τοῦ μεγίστου ποταμῶν· ὁ δὲ Ἐραννοβόας τρίτος μὲν ἂν εἴη τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν, μέζων δὲ τῶν ἄλλῃ καὶ οὗτος· ἀλλὰ ξυγχωρεῖ αὐτὸς τῷ Γάγγῃ, ἐπει- 26.20 δὲ ἐμβάλλῃ ἐς αὐτὸν τὸ ὕδωρ. (6) Καὶ λέγει Μεγα-

σθένης, μῆκος μὲν ἐπέχειν τὴν πόλιν κατ' ἑκατέρην τὴν πλευρὴν ἵναπερ μακροτάτη αὕτη ἐωυτῆς ψκισται ἐς ὀγδοήκοντα σταδίους τὸ δὲ πλάτος ἐς πεντεκαίδεκα· (7) τάφρον δὲ περιβε- βλησθαι τῇ πόλει τὸ εὖρος ἑξάπλε- 26.25 θρον, τὸ δὲ βάθος τριήκοντα πήχεων· πύργους δὲ ἐβδο- μήκοντα καὶ πεντακοσίους ἐπέχειν τὸ τεῖχος καὶ πύλας τέσσαρας καὶ ἐξήκοντα. (8) Εἶναι δὲ καὶ τόδε μέγα ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, πάντας Ἰνδοὺς εἶναι ἐλευθέρους, οὐδὲ τινα δοῦλον εἶναι Ἰνδόν· τοῦτο μὲν Λακεδαιμονίοισιν 26.30 ἐς ταῦτό συμβαίνει καὶ Ἰνδοῖσι. (9) Λακεδαιμονίοισι μὲν γε οἱ εἰλωτες δοῦλοι εἰσὶ καὶ τὰ δούλων ἐργάζονται· Ἰνδοῖσι δὲ οὐδὲ ἄλλος δοῦλός ἐστι μῆτι γε Ἰνδῶν τις. 27.1 Strabo XV: Εὐτελεῖς δὲ κατὰ τὴν δίαίταν οἱ Ἰνδοὶ πάντες, μᾶλλον δ' ἐν ταῖς στρατείαις· οὐδ' ὅλῳ περιττῷ χαίρουσι· διόπερ εὐκοσμοῦσι. Πλεί- στη δ' ἐπιχειρία περὶ τὰς κλοπὰς. Γενομένους 27.5 δ' οὖν ἐν τῷ Σανδρόκοττου στρατο- πέδῳ φησὶν ὁ <Μεγασθένης> τετταράκοντα μυριάδων πλήθους ἰδρυμένου, μηδεμίαν ἡμέραν ἰδεῖν ἀννηνεγμένα κλέμματα πλειόνων ἢ διακοσίων δραχμῶν ἄξια, ἀγρὰ- φοις καὶ ταῦτα νόμοις χρωμένοις. (2) Οὐδὲ γὰρ γράμ- 27.10 ματα εἰδέναι αὐτοὺς, ἀλλ' ἀπὸ μνήμης ἕκαστα διοικεῖ- σθαι (*)· εὖ πράττειν δ' ὅμως διὰ τὴν ἀπλότητα καὶ τὴν εὐτέλειαν· οἷόν τε γὰρ οὐ πίνειν, ἀλλ' ἐν θυσίαις μόνον· πίνειν δ' ἀπ' ὀρύζης ἀντὶ κριθίνου συντιθέντας. Καὶ σιτία δὲ τὸ πλεόν ὄρυζαν εἶναι ῥοφητήν. (3) Καὶ 27.15 ἐν τοῖς νόμοις δὲ καὶ ἐν τοῖς συμβολαίοις τὴν ἀπλότητα ἐλέγχεσθαι ἐκ τοῦ μὴ πολυδίκους εἶναι· οὔτε γὰρ ὑπο- θήκης οὔτε παρακαταθήκης εἶναι δίκας· οὐδὲ μαρτύ- ρων, οὐδὲ σφραγίδων αὐτοῖς δεῖν, ἀλλὰ πιστεύειν πα- ραβαλλομένους· καὶ τὰ οἴκοι δὲ τὸ πλεόν ἀφρουρεῖν. 27.20 Ταῦτα μὲν δὴ σωφρονικά. Τάλλ' οὐδ' ἂν τις ἀποδέ- ξαιτο· τὸ μόνους διαιτᾶ- σθαι αἰεὶ, καὶ τὸ μὴ μίαν εἶναι πᾶσιν ὥραν κοινὴν δείπνου τε καὶ ἀρίστου, ἀλλ' ὅπως ἐκάστῳ φίλον. Πρὸς γὰρ τὸν κοινωνικὸν καὶ τὸν πολιτι- κὸν βίον ἐκείνως χρεῖττον 27.25 4. Γυμνάσιον δὲ μάλιστα τρίψιν δοκιμάζουσι, καὶ ἄλλως καὶ διὰ σκυταλίδων ἐβενίνων λείων ἐξομαλίζον- ται τὰ σώματα. Λιταὶ δὲ καὶ αἱ ταφαί, καὶ μικρὰ χώ- ματα. Ἰπεναντίως δὲ τῇ ἄλλῃ λιτότητι

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

κοσμούνται. Χρυσοφοροῦσι γάρ καὶ διαλίθω κόσμῳ χρώνται, σιν- 27.30 δόνας τε φοροῦσιν εὐανθεῖς καὶ σκιάδια αὐτοῖς ἔπεται· τὸ γὰρ κάλλος τιμῶντες ἀσκοῦσιν ὅσα καλλωπίζει τὴν ὄψιν· ἀλήθειάν τε ὁμοίως καὶ ἀρετὴν ἀποδέχονται· διόπερ οὐδὲ τῇ ἡλικίᾳ τῶν γερόντων προνομίαν διδῶσιν, ἂν μὴ καὶ τῷ φρονεῖν πλεονεκτῶσι. Πολλὰς δὲ 27.35 γαμοῦσιν ὠνητὰς παρὰ τῶν γονέων, λαμβάνουσί τε ἀντιδιδόντες ζεύγος βοῶν· ὧν τὰς μὲν εὐπειθείας χάριν, τὰς δ' ἄλλας ἡδονῆς καὶ πολυτεκνίας· εἰ δὲ μὴ σωφρο- νεῖν ἀναγκάσαιεν, πορνεύειν ἔξεστι. Θύει δὲ οὐδεὶς ἐστεφανωμένος οὐδὲ σπένδει, οὐδὲ σφάττουσι τὸ ἱερεῖον 27.40 ἀλλὰ πνίγουσιν, ἵνα μὴ λεωβη- μένον ἀλλ' ὀλόκληρον διδῶται τῷ θεῷ. 5. Ψευδομαρτυρίας δ' ὁ ἀλούς ἀκρωτηριάζεται· ὃ τε πηρώσας οὐ τὰ αὐτὰ μόνον ἀντιπάσχει, ἀλλὰ καὶ χειροκοπεῖται· ἐὰν δὲ καὶ τεχνίτου χεῖρα ἢ ὀφθαλμὸν 27.45 ἀφέλῃται, θανατοῦται. Δούλοις δὲ οὗτος μὲν φησι μὴδὲνα Ἰνδῶν χρῆσθαι· [Ὀνησίκριτος δὲ τῶν ἐν τῇ Μουσικανοῦ τοῦτ' ἴδιον ἀποφαίνει κτλ.]. 6 Τῷ βασιλεῖ δ' ἡ μὲν τοῦ σώματος θεραπεία διὰ γυναικῶν ἐστίν, ὠνητῶν καὶ αὐτῶν παρὰ τῶν πατέρων· 27.50 ἔξω δὲ τῶν θυρῶν οἱ σωματοφύλακες καὶ τὸ λοιπὸν στρατιωτικόν· μεθύοντα δὲ κτείνασα γυνὴ βασιλέα γέ- ρας ἔχει συνεῖναι τῷ ἐκείνῳ διαδεξαμένῳ· διαδέχονται δ' οἱ παῖδες. Οὐδ' ὑπνοῖ μεθ' ἡμέραν ὁ βασιλεὺς, καὶ νύκτωρ δὲ καθ' ὥραν ἀναγκάζεται τὴν κοίτην ἀλλάτ- 27.55 τεῖν διὰ τὰς ἐπιβουλάς. 7. Τῶν γε μὴ κατὰ πόλεμον ἐξόδων μία μὲν ἐστίν ἡ ἐπὶ τὰς κρίσεις, ἐν αἷς διημερεῖ διακοῦων οὐδὲν ἥττον, καὶ ὥρα γένηται τῆς τοῦ σώματος θεραπείας· αὕτη δ' ἐστίν ἡ διὰ τῶν σκυταλίδων τρίψις· ἅμα γάρ 27.60 καὶ διακοῦει καὶ τρίβεται τεττάρων περιστάντων τρι- βέων. Ἑτέρα δ' ἐστίν ἡ ἐπὶ τὰς θυσίας ἔξοδος. Τρίτη δ' ἐπὶ θήραν βακχική τις, κύκλῳ γυναικῶν περιεχυ- μένων, ἔξωθεν δὲ τῶν δορυφόρων· παρυσχρῖνίσται δ' ἡ ὁδός· τῷ δὲ παρελθόντι ἐντὸς μέχρι γυναικῶν θά- 27.65 νατος· προηγούνται δὲ τυμπανισταὶ καὶ κωδω- νοφόροι. Κυνηγετεῖ δ' ἐν μὲν τοῖς περιφράγμασιν ἀπὸ βήματος τοξέων· παρυστᾶσι δ' ἐνοπλοὶ δύο ἢ τρεῖς γυναῖκες· ἐν δὲ ταῖς ἀφράκτοις θήραις ἀπ' ἐλέφαντος· αἱ δὲ γυναῖ- κες αἱ μὲν ἐφ' ἀρμάτων, αἱ δ' ἐφ' ἵππων, αἱ δὲ καὶ ἐπ' 27.70 ἐλεφάντων, ὥς καὶ συστρατεύουσιν, ἡσκημένοι παντὶ ὄπλῳ. [Ἐχει μὲν οὖν καὶ ταῦτα πολλὴν ἀθήλειαν πρὸς τὰ παρ' ἡμῖν· ἔτι μέντοι μᾶλλον τὰ τοιαῦτα.] Φησὶ γὰρ τοὺς τὸν Καύκασον οἰκοῦντας ἐν τῷ φανερωῷ γυναιξὶ 27.75 μίσγεσθαι, καὶ σαρκοφαγεῖν τὰ τῶν συγγενῶν σώματα. Πετροκυλιστὰς δ' εἶναι κερκοπιθήκους κτλ. 28.1 Athenaeus IV: <Μεγασθένης ἐν τῇ δευτέρᾳ τῶν Ἰνδικῶν> τοῖς Ἰνδοῖς φησιν ἐν τῷ

δείπνῳ παρατίθεσθαι ἐκάστῳ τράπεζαν, ταύτην δ' εἶ- ναι ὁμοίαν ταῖς ἐγγυθήκαις· καὶ ἐπιτίθεσθαι ἐπ' αὐτῇ 28.5 τρυβλίον χρυσοῦν, εἰς ὃ ἐμβαλεῖν αὐτοὺς πρῶτον μὲν τὴν ὀρυζαν ἐφθὴν, ὥς ἂν τις ἐψήσειε χόνδρον, ἔπειτα ὅφα πολλὰ κεχειρουργημένα ταῖς Ἰνδικαῖς σκευασίαις. 29.1 Strabo II: Ἀπαντες μὲν τοίνυν οἱ περὶ τῆς Ἰνδικῆς γράψαντες ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ψευδολόγοι γεγό- νασιν, καθ' ὑπερβολὴν δὲ Δήμαχος· τὰ δὲ δεύτερα λέγει Μεγασθένης· Ὀνησίκριτος δὲ καὶ Νέαρχος καὶ ἄλλοι 29.5 τοιοῦτοι παραφελλίζοντες ἦδη. Καὶ ἡμῖν δ' ὑπῆρξεν ἐπὶ πλέον κα- τιδεῖν ταῦτα, ὑπομνηματιζόμενοις τὰς Ἀλε- ξάνδρου πράξεις· διαφερόντως δ' ἀπιστεῖν ἄξιον Δη- μάχῳ τε καὶ Μεγασθένει. Οὗτοι γάρ εἰσιν οἱ τοὺς Ἐνωτοκοίτας καὶ τοὺς Ἀστόμους καὶ Ἀρρινας ἰστοροῦν- 29.10 τες, Μονοφθάλμους τε καὶ Μακροσκελεῖς καὶ Ὀπισθο- δακτύλους· ἀνεκαίνισαν δὲ καὶ τὴν Ὀμηρικὴν τῶν Πυγμαίων γερανομαχίαν, τρισπιθάμους εἰπόντες· οὐ-

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

τοι δὲ καὶ τοὺς χρυσοῦς μύρμηκας καὶ Πᾶνας σφηνο- κεφάλους ὄφεις τε καὶ ἐλάφους σὺν κέρασι καταπίνον- 29.15 τας· περὶ ὧν ἕτερος τὸν ἕτερον ἐλέγχει, ὅπερ καὶ Ἐρατοσθένης φησίν. Ἐπέμψθησαν μὲν γὰρ εἰς τὰ Πα- λίμβοθρα, ὁ μὲν Μεγασθένης πρὸς Σανδρόκοττον, ὁ δὲ Δη- ἰμάχος πρὸς Ἀλλιτροχάδην τὸν ἐκείνου υἱὸν κατὰ πρεσβείαν· ὑπομνήματα δὲ τῆς ἀποδημίας κατέλειπον 29.20 τοιαῦτα, ὃς ἡσθήποτε αἰτίας προαχθέντες. Πατρο- κλῆς δὲ ἥκιστα τοιοῦτος· καὶ οἱ ἄλλοι δὲ μάρτυρες οὐκ ἀπίθανοι, οἷς κέχρηται ὁ Ἐρατοσθένης. 30.1 Strabo XV: Ὑπερ- ἐκπίπτων δ' ἐπὶ τὸ μυ- θῶδες πεντασπιθᾶμους ἀνθρώπους λέγει καὶ τρισπιθᾶ- μους, ὧν τινὰς ἀμύκτῃρας, ἀναπνοὰς ἔχοντας μόνον δύο ὑπὲρ τοῦ στόματος· πρὸς δὲ τοὺς τρισπιθᾶμους πόλε- 30.5 μόν εἶναι ταῖς γεράνοις (ὃν καὶ Ὀμηρον δηλοῦν) καὶ τοῖς πέρδιξιν, οὓς χηνομεγέθεις εἶναι· τούτους δ' ἐκλέ- γειν αὐτῶν τὰ ὡὰ καὶ φθείρειν· ἐκεῖ γὰρ ὥστοκεῖν τὰς γεράνους· διόπερ μῆδα- μοῦ μῆδ' ὡὰ εὐρίσκεισθαι γερά- νων, μῆτ' οὖν νεόττια· πλειστάκις δ' ἐκπίπτειν γέρανον 30.10 χαλκῇν ἔχουσαν ἀκίδα ἀπὸ τῶν ἐκεῖθεν πληγμάτων. Ὅμοια δὲ καὶ τὰ περὶ τῶν Ἐνωτοκοιτῶν καὶ τῶν ἀγρίων ἀνθρώπων καὶ ἄλλων τετραπῶδων. Τοὺς μὲν οὖν ἀγρίους μὴ κομισθῆναι παρὰ Σανδρόκοττον· ἀποκαρτερεῖν γάρ (*)· ἔχειν δὲ τὰς μὲν πτέρνας πρόσθεν, τοὺς δὲ ταρσοὺς 30.15 ὀπίσθεν καὶ τοὺς δακτύλους. Ἀστόμους δὲ τινὰς ἀχθῆ- ναι, ἀνθρώπους ἡμέρους· οἰκεῖν δὲ περὶ τὰς πηγὰς τοῦ Γάγγου· τρέφεσθαι δ' ἀτμαῖς ὀπτῶν κρεῶν καὶ καρπῶν καὶ ἀνθέων ὀσμαῖς, ἀντὶ τῶν στομάτων ἔχοντας ἀνα- πνοὰς· χαλεπαίνειν δὲ τοῖς δυσώδεσι, καὶ διὰ τοῦτο 30.20 πε- ριγίνεσθαι μόλις καὶ μάλιστα ἐν στρατοπέδῳ. Περὶ δὲ τῶν ἄλλων διηγεῖσθαι τοὺς φιλοσόφους Ὀκλύποδας τε ἱστοροῦντας ἵππων μᾶλλον ἀπιόντας· Ἐνωτοκοίτας δὲ ποδῆρη τὰ ὦτα ἔχοντας, ὡς ἐγκαθεύδειν, ἰσχυροὺς δ' ὥστ' ἀνασπᾶν δένδρα καὶ ῥήττειν νευράν· Μονομμά- 30.25 τοὺς δὲ ἄλλους, ὦτα μὲν ἔχοντας κυνὸς, ἐν μέσῳ δὲ τῷ μετώπῳ τὸν ὀφθαλμὸν, ὀρθοχαίτας, λασί- οὺς τὰ στήθη τοὺς δὲ Ἀμύκτῃρας εἶναι παμφάγους, ὡμοφάγους, ὀλι- γοχρονίους, πρὸ γήρωος θνήσκοντας· τοῦ δὲ στόματος τὸ ἄνω προχειλότερον εἶναι πολὺ. Περὶ δὲ τῶν χιλιετῶν 30.30 Ὑπερβορέων τὰ αὐτὰ λέγειν Σιμωνίδῃ καὶ Πινδάρῳ καὶ ἄλλοις μυθολόγοις. [Μῦθος δὲ καὶ τὸ ὑπὸ Τιμαγέ- νους λεχθὲν, ὡς ὅτι χαλκὸς ὕοιτο σταλαγμοῖς χαλκοῖς καὶ σύροιτο. Ἐγγυτέρῳ δὲ πίστεώς φησιν ὁ <Μεγα- σθένης> ὅτι οἱ ποταμοὶ καταφέρουσιν ψῆγμα χρυσοῦ, καὶ 30.35 ἀπ' αὐτοῦ φόρος ἀπάγειτο τῷ βασιλεῖ· τοῦτο γὰρ καὶ ἐν Ἰβηρίᾳ συμβαίνει.] 31.1 Plinius VII, 2, 14: In monte, cui nomen est Nulo, (Nullo v. l.), homines esse aversis plantis, octonos digitos in singulis habentes, auctor est <Me- gasthenes>. (15) In multis autem ontibus genus 31.5 hominum capitibus caninis ferarum pellibus velari, pro voce latratum edere, unguibus armatum venatu et aucupio vesci. [Horum supra centum viginti millia fuisse prodente se Ctesias scribit, et in quadam gente Indiae feminas semet in vita 31.10 parere genitosque confestim canescere, etc.] 32.1 Solinus 52, 36: Ad montem, qui Nulo dicitur, habitant, quibus adversae plantae sunt et octoni digiti in plantis singulis. <Megasthenes> per di- versos Indiae montes sees scribit nationes capitibus 32.5 caninis, armatas unguibus, amictas vestitu tergo- rum, ad sermonem humanum nulla voce sed latra- tibus tantum sonantes, asperis rictibus. [Apud Ctesiam legitur, quasdam feminas ibi semel parere

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

natosque canos illico fieri, etc.] 33.1 Plinius VII, 2, 18: <Megasthenes> gentem inter Nomadas Indos narium loco foramina tantum habentem, anguium modo loripedem, vocari Scyritas. Ad extremos fines Indiae ab oriente circa fontem 33.5 Gangis Astomorum gentem sine ore, corpore toto hirtam vestiri frondium lanugine, halitu tantum viventem et odore, quem naribus trahant. Nullum iis cibum nullumque potum tantum radicum florumque varios odores et silvestrium malorum, quae

33.10 secum portant itinere, ne desit olfactus: graviore paulo odore haud difficulter exanimari. 19. Supra hos extrema in parte montium Trispithami Pygmaeiue narrantur, ternas spithamas longitudine, hoc est, ternos dodrantes non excedentes, salubri caelo semperque vernante, montibus ab aquilone oppositis: quos a gruibus infestari Homerus quoque prodidit. Fama est, insidentes arietum caprarumque dorsis, armatos sagittis veris tempore universo agmine ad mare descendere et 33.20 ova pullosque earum alitum consumere: ternis expeditionem eam mensibus confici, aliter futuris grugibus non resisti. Casas eorum luto pennisque et ovorum putaminibus construi. [Aristoteles in cavernis vivere Pygmaeos tradit: cetera de his, ut 33.25 reliqui.] 22. [Ctesias gentem ex his, quae appelle- tur Pandore, in convallibus sitam, annos ducenos vivere, in iuventa candido capillo, qui in senectute nigrescat. Contra alios quadragenos non 33.30 excedere annos iunctos Macrobiis, quorum feminae semel pariant: idque et Agatharchides tradit; praeterea locustis eos ali et esse pernices.] Mandorum nomen iis dedit Clitarchus et <Megasthenes>, trecentosque eorum vicis 33.35 cos annumerat. Feminas septimo aetatis anno parere, senectam quadragesimo accidere. 34.1 Plutarch. De fac. in luna c. 24: Τὴν μὲν γὰρ Ἰνδικὴν εἰζὶαν, ἣν φησι <Μεγασθένης> μήτ' ἐσθίωντας μήτε πίνοντας ἀλλ' ἀστόμους ὄντας ὑποτύφειν καὶ θυμῖαν καὶ τρέφεσθαι τῇ ὁσμῇ, πό- 34.5 θεν ἂν τις ἐκεῖ φυομένην λάβοι μὴ βρεχόμενη τῆς σελήνης; t35-43.1

E LIBRO TERTIO.

35.1 Arrian. Ind. c. 11: Νενέμηνται δὲ οἱ πάντες Ἰνδοὶ ἐς ἑπτὰ μάλιστα γενεάς· ἐν μὲν αὐτοῖσιν οἱ σοφισταὶ εἰσι, πλήθει μὲν μείους τῶν ἄλλων, δόξῃ δὲ καὶ τιμῇ γεραρώτατοι. (2) Οὔτε γάρ τι τῷ σώματι ἐργάζεσθαι ἀναγκαίη σφὶν προσκίεται, οὔτε τι ἀποφέρειν ἀπ' οὗτου πονέουσιν ἐς τὸ κοινόν· οὐδὲ τι ἄλλο ἀνάγκης ἀπλῶς ἐπεῖναι τοῖσι σοφιστῇσιν, ὅτι μὴ θύειν τὰς θυσίας τοῖσι θεοῖσιν ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ τῶν Ἰνδῶν. (3) καὶ δὲ ἰδίᾳ θύει, ἐξηγητῆς αὐτῷ τῆς θυσίης τῶν τις σοφιστέων 35.10 τούτων γίνεται, ὥς οὐκ ἂν ἄλλως κεχαρισμένα τοῖς θεοῖσι θύσαντας. (4) Εἰσὶ δὲ καὶ μαντικῆς οὔτοι μόνον Ἰνδῶν δαήμονες, οὐδὲ ἐφεῖται ἄλλῳ μαντεύεσθαι ὅτι μὴ σοφῷ ἀνδρί. (5) Μαντεύουσι δὲ ὅσα ὑπὲρ τῶν ὠρέων ἔτεος καὶ εἴ τις ἐς τὸ κοινόν συμφορὴ καταλαμβάνει· 35.15 τὰ δὲ ἰδία ἐκάστοισιν οὐ σφιν μέλει μαντεύεσθαι, ἢ ὥς οὐκ ἐξικνεομένης τῆς μαντικῆς ἐς τὰ σμικρότερα, ἢ ὥς οὐκ ἄξιον ἐπὶ τούτοις πονέεσθαι. (6) Ὅστις δὲ ἐς τρις μαντευσάμενος, τούτῳ δὲ ἄλλο μὲν κακὸν γίνεσθαι οὐδὲν, σιωπᾶν δὲ εἶναι ἐπ' ἀναγκῆς τοῦ λοιποῦ· 35.20 καὶ οὐκ ἔστιν ὅστις ἐξαναγκάσει τὸν ἄνδρα τούτον φωνῆσαι, οὗτου ἢ σιωπὴ κατακέχριται. (7) Οὔτοι γυμνοὶ διαιτῶνται οἱ σοφισταί, τοῦ μὲν χειμῶνος

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

ὑπαίθριοι ἐν τῷ ἡλίῳ, τοῦ δὲ θέρεος ἐπὶν ὁ ἥλιος κατέχῃ, ἐν τοῖσι λειμῶσι καὶ τοῖσιν ἔλεσιν ὑπὸ δένδροις μεγάλοισιν· ὧν 35.25 τὴν σκίην Νέαρχος λέγει ἐς πέντε πλέθρα ἐν κύκλῳ ἐξικνέεσθαι, καὶ ἂν καὶ μυρίους ἀνθρώπους ὑπὸ ἐνὶ δένδρεϊ σκιάζεσθαι· τηλικαῦτα εἶναι ταῦτα τὰ δένδρεα. (8) Σιτέονται δὲ ὥραϊα καὶ τὸν φλοιὸν τῶν δένδρεων, γλυκύν τε ὄντα τὸν φλοιὸν καὶ τρόφιμον οὐ μείον ἢ περ 35.30 αἱ βάλανοι τῶν φοινίκων. 9. <Δεύτεροι> δ' ἐπὶ τούτοις οἱ γεωργοὶ εἰσιν· πλήθει πλείστοι Ἰνδῶν ἑόντες· καὶ τούτοις οὔτε ὄπλα ἐστὶν ἀρήγια οὔτε μέλει τὰ πολέμια ἔργα, ἀλλὰ τὴν χώραν οὗτοι ἐργάζονται· καὶ τοὺς φόρους τοῖσι τε βασι- 35.35 λεῦσι καὶ τῇσι πόλισιν, ὅσαι αὐτόνομοι, οὗτοι ἀποφέ- ρουσι· (10) καὶ εἰ πόλεμος ἐς ἀλλήλους τοῖσιν Ἰνδοῖσι τύχοι, τῶν ἐργαζομένων τὴν γῆν οὐ θέμις σφὶν ἄπτεσθαι, οὐδὲ αὐτὴν τὴν γῆν τάμνειν· ἀλλὰ οἱ μὲν πολεμέουσι καὶ κατακαίνουσιν ἀλλήλους ὅπως τύχοιεν, οἱ δὲ πλησίον 35.40 αὐτῶν κατ' ἡσυχίαν ἀρουσὶν ἢ τρυγῶσιν ἢ κλαδοῦσιν ἢ θερίζουσιν. 11. <Τρίτοι> δὲ εἰσιν Ἰνδοῖσιν οἱ νομέες, οἱ τε καὶ βουκόλοι, καὶ οὗτοι οὔτε κατὰ πόλιας οὔτε ἐν τῇσι κώμησιν οἰκέουσι. Νομάδες τέ εἰσι καὶ ἀνὰ τὰ 35.45 οὖρεα βιοτεύουσι· φόρον δὲ καὶ οὗτοι ἀπὸ τῶν κτηνῶν ἀποφέρουσι· καὶ θηρεύουσιν οὗτοι ἀνὰ τὴν χώραν ὄρνι- θας τε καὶ ἄγρια θηρία. Cap. XII. <Τέταρτον> δὲ ἐστὶ τὸ δημιουργικὸν τε καὶ καπηλικὸν γένος. Καὶ οὗτοι λειτουργοὶ εἰσι, καὶ 35.50 φόρον ἀποφέρουσιν ἀπὸ τῶν ἔργων τῶν σφετέρων, πλὴν γε δὴ ὅσοι τὰ ἀρήγια ὄπλα ποιεῖουσιν· οὗτοι δὲ καὶ μισθὸν ἐκ τοῦ κοινοῦ προσλαμβάνουσιν. Ἐν δὲ τούτῳ τῷ γένει οἱ τε ναυπηγοὶ καὶ οἱ ναῦται εἰσιν, ὅσοι κατὰ τοὺς πο- ταμούς, πλάουσι. 35.55 2. <Πέμπτον> δὲ γένος ἐστὶν Ἰνδοῖσιν οἱ πολεμισταί, πλήθει μὲν δεύτερον μετὰ τοὺς γεωργούς, πλείστη δὲ

ἐλευθερίῃ τε καὶ εὐθυμίῃ ἐπιχρεόμενον· καὶ οὗτοι ἀσκη- ταὶ μούνων τῶν πολεμικῶν ἔργων εἰσί. (3) Τὰ δὲ ὄπλα ἄλλοι αὐτοῖσι ποιεῖουσιν, καὶ ἵππους ἄλλοι παρέχουσι· καὶ 35.60 διακονέουσιν ἐπὶ στρατοπέδῳ ἄλλοι, οἱ τοὺς τε ἵππους αὐτοῖσι θεραπεύουσιν καὶ τὰ ὄπλα ἐκκαθαίρουσι καὶ τοὺς ἐλέφαντας ἄγουσι καὶ τὰ ἄρματα κοσμέουσι τε καὶ ἡνιοχεύουσιν. (4) Αὐτοὶ δὲ, ἔστ' ἂν μὲν πολεμέει πολεμέουσιν, εἰρήνης δὲ γενομένης εὐθυμούνται· καὶ σφιν 35.65 μισθὸς ἐκ τοῦ κοινοῦ τοσούτῳ ἔρχεται, ὥς καὶ ἄλλους τρέφειν ἀφ' αὐτοῦ εὐμαρέως. 5. <Ἑκτοί> δὲ εἰσιν Ἰνδοῖσιν οἱ ἐπίσκοποι καλεόμε- νοι. Οὗτοι ἐφορῶσι τὰ γινόμενα κατὰ τε τὴν χώραν καὶ κατὰ τὰς πό- λιας· καὶ ταῦτα ἀναγγέλλουσι τῷ βασιλεῖ, 35.70 ἵνα περ βασιλεύονται Ἰνδοί, ἢ τοῖσι τέλεσιν, ἵνα περ αὐ- τόνομοι εἰσί· καὶ τούτοις οὐ θέμις ψευδὸς ἀργεῖλαι οὐ- δέν· οὐδὲ τις Ἰνδῶν αἰτίην ἔσχε ψεύσασθαι. 6. <Ἑβδομοί> δὲ εἰσιν οἱ ὑπὲρ τῶν κοινῶν βουλευό- μενοι ὁμοῦ τῷ βασιλεῖ, ἢ κατὰ τὰς πόλιας ὅσαι αὐτόνομοι 35.75 σὺν τῇσιν ἀρχῇσι. (7) Πλήθει μὲν ὀλίγον τὸ γένος ἐστὶ, σοφίῃ δὲ καὶ δικαιοσύνῃ ἐκ πάντων προκεκριμένον· ἐνθεν οἱ τε ἄρχοντες αὐτοῖσιν ἐπιλέγονται καὶ ὅσοι νο- μάρχαι καὶ ὑπαρχοὶ καὶ θησαυροφύλακες τε καὶ στρα- τοφύλακες, ναύαρχοί τε καὶ ταμίαι, καὶ τῶν κατὰ 35.80 γεωργίην ἔργων ἐπιστάται. 8. Γαμέειν δὲ ἐξ ἑτέρου γένους οὐ θέμις, οἷον τοῖσι γεωργοῖσιν ἐκ τοῦ δημιουργικοῦ, ἢ ἔμπαλιν· οὐδὲ δύο τέχναις ἐπιτηδεύειν τὸν αὐτὸν, οὐδὲ τοῦτο θέμις· οὐδὲ ἀμείβειν ἐξ ἑτέρου γένους εἰς ἕτερον, οἷον γεωργικὸν ἐκ 35.85 νομέος γενέσθαι, ἢ νομέα ἐκ δημιουργικοῦ. (9) Μοῦνον σφίσιν ἀνεῖται σοφιστὴν ἐκ παντὸς γένους γενέ- σθαι. ὅτι οὐ μαλθακὰ τοῖσι σοφιστῇσιν εἰσὶ τὰ πρήγματα, ἀλλὰ πάντων ταλαιπωρότατα.

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

36.1 Strabo XV: (1) <Φησί> δὴ τὸ τῶν Ἰνδῶν πλῆθος εἰς ἑπτὰ μέρη διηρῆσθαι, καὶ πρώτους μὲν τοὺς φιλοσόφους εἶναι κατὰ τιμὴν, ἐλαχίστους δὲ κατ' ἀριθμόν· χρῆσθαι δ' αὐτοῖς ἰδίᾳ μὲν ἐκάστω τοὺς 36.5 θύοντας ἢ τοὺς ἐναγίζοντας, κοινῇ δὲ τοὺς βασιλέας κατὰ τὴν μεγάλην λεγομένην σύνοδον, καθ' ἣν τοῦ νέου ἔτους ἅπαντες οἱ φιλόσοφοι τῷ βασιλεῖ συνελθόντες ἐπὶ θύρας, ὃ τι ἂν ἕκαστος αὐτῶν συντάξῃ τῶν χρη- σίμων, ἢ τηρήσῃ πρὸς εὐετηρίαν καρπῶν τε καὶ ζώων 36.10 καὶ περὶ πολιτείας, προφέρει τοῦτο εἰς τὸ μέσον· ὅς δ' ἂν τρεῖς ἐφευσμένους ἁλῶ, νόμος ἐστὶ σιγαῖν διὰ βίου· τὸν δὲ κατορθώσαντα ἄφορον καὶ ἀτελῆ κρί- νουσι. 2. Δεύτερον δὲ μέρος εἶναι τὸ τῶν γεωργῶν, οἳ πλεῖ- 36.15 στοὶ τέ εἰσι καὶ ἐπιεικέστατοι, οἳ ἐν ἀστρατεία καὶ ἀδείᾳ τοῦ ἐργάζεσθαι πόλει μὴ προσιόντες, μὴδ' ἄλλῃ χρεία, μὴδ' ὀχλήσει κοινῇ· πολλάκις γοῦν ἐν τῷ αὐτῷ χρόνῳ καὶ τόπῳ, τοῖς μὲν παρατετάχθαι συμβαίνει καὶ διακινδυνεύειν πρὸς τοὺς πολεμίους· οἳ δ' ἄρουσιν, 36.20 ἢ σκάπτουσιν ἀκινδύνως, προμάχους ἔχοντες ἐκείνους. Ἔστι δ' ἡ χώρα βασιλικὴ πᾶσα· μισθοῦ δ' αὐτὴν ἐπὶ τετάρταις ἐργάζονται τῶν καρπῶν. 3. Τρίτον τὸ τῶν ποιμένων καὶ θηρευτῶν, οἷς μό- νοις ἔξεστι θηρεύειν καὶ θρεμματοτροφεῖν, ὧνά τε πα- 36.25 ρέχει καὶ μισθοῦ ζεύγη· ἀντὶ δὲ τοῦ τὴν γῆν ἐλευθε- ροῦν θηρίων καὶ τῶν σπερμολόγων ὀρνέων μετροῦνται παρὰ τοῦ βασιλέως σῖτον, πλάνητα καὶ σκηνίτην νεμό- μενοι βίον. Περὶ μὲν οὖν τῶν θηρίων τοσαῦτα λέγεται· ἐπανιών- 36.30 τες δ' ἐπὶ τὸν <Μεγασθένη> λέγωμεν τὰ ἑξῆς, ὧν ἀπε- λίπομεν. 4. Μετὰ γὰρ τοὺς θηρευτὰς καὶ τοὺς ποιμένας <τέ- τартόν> φησιν εἶναι μέρος τοὺς ἐργαζομένους τὰς τέχνας καὶ τοὺς καπηλικούς καὶ οἷς ἀπὸ τοῦ σώματος ἡ ἐργα- 36.35 σία· ὧν οἳ μὲν φόρον τελοῦσι καὶ λειτουργίας παρέ- χονται τακτάς· τοῖς δ' ὅπλο- ποιῶσι καὶ ναυπηγοῖς μισθοὶ καὶ τροφαὶ παρὰ βασιλέως ἐκκείνται· μόνῳ γὰρ ἐργά- ζονται. Παρέχει δὲ τὰ μὲν ὅπλα τοῖς στρατιώταις ὁ στρατοφύλαξ, τὰς δὲ ναῦς μισθοῦ τοῖς πλέουσιν 36.40 ὁ ναύαρχος καὶ τοῖς ἐμπόροις. 5. <Πέμπτον> ἐστὶ τὸ τῶν πολεμιστῶν, οἷς τὸν ἄλλον χρό- νον ἐν σχολῇ καὶ πότει οἱ βίος ἐστίν, ἐκ τοῦ βασι- λικοῦ διαιτωμένοις, ὥστε τὰς ἐξόδους, ὅταν εἴη χρεία, ταχέως ποιῆσθαι, πλὴν τῶν σωμάτων μὴδὲν ἄλλο κο- 36.45 μίζοντας παρ' ἑαυτῶν. 6. <Ἑκτοί> δ' εἰσὶν οἱ ἔφοροι· τούτοις δ' δέδοται τὰ πραττόμενα, καὶ ἀναγγέλλειν λάθρα τῷ βασιλεῖ, συνεργοὺς ποιουμένοις τὰς ἐταίρας, τοῖς μὲν ἐν τῇ πόλει τὰς ἐν τῇ πόλει, τοῖς δὲ ἐν στρατοπέδῳ 36.50 τὰς αὐτόθι· καθίστανται δ' οἱ ἄριστοι καὶ πιστό- τατοι. 7. <Ἑβδομοί> δ' οἱ σύμβουλοι καὶ συνέδροι τοῦ βασι- λέως, ἐξ ὧν τὰ ἀρχεῖα καὶ δικαστήρια καὶ ἡ διοίκησις τῶν ὅλων. Οὐκ ἔστι δ' οὔτε γαμεῖν ἐξ ἄλλου γένους, 36.55 οὔτ' ἐπιτήδευμα οὔτ' ἐργασίαν με- ταλαμβάνειν ἄλλην ἐξ ἄλλης, οὐδὲ πλείους μεταχειρίζεσθαι τὸν αὐτόν, πλὴν εἰ τῶν φιλοσόφων τις εἴη· ἐᾶσθαι γὰρ τοῦτον δι' ἀρετὴν.

Strabo XV: Τῶν δ' ἀρχόντων οἳ μὲν εἰσὶν ἀγορανόμοι, οἳ δ' ἀστυνόμοι, οἳ δ' ἐπὶ τῶν στρατιω- τῶν· ὧν οἳ μὲν ποταμούς ἐξεργάζονται, καὶ ἀναμετροῦσι τὴν γῆν, ὡς ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ τὰς κλειστὰς διώρυχας 36a.5 ἀφ' ὧν εἰς τὰς ὀχετείας ταμιεύεται τὸ ὕδωρ, ἐπισκο- ποῦσιν ὅπως ἐξ ἴσης πᾶσιν ἢ τῶν ὑδάτων παρείη χρήσις. Οἳ δ' αὐτοὶ καὶ τῶν θηρευτῶν ἐπιμελοῦνται, καὶ τιμῆς καὶ κολάσεως εἰσὶ κύριοι τοῖς ἐπαξίοις· καὶ φορολογοῦσι δὲ, καὶ τὰς τέχνας τὰς περὶ τὴν γῆν ἐπιβλέπουσιν, 36a.10 ὑλοτόμων, τεκτόνων, χαλκέων, μεταλλευτῶν· ὁδοποιοῦσι δὲ, καὶ

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

κατὰ δέκα στάδια στήλην τιθέασι, τὰς ἐκτροπὰς καὶ τὰ διαστήματα δηλοῦσαν. Οἱ δ' ἀστυνόμοι εἰς ἕξ πεντάδας διήρηνται· καὶ οἱ μὲν τὰ δημιουργικὰ σκοποῦσιν, οἱ δὲ ξενοδοχοῦσιν· καὶ γὰρ καταγωγὰς νέμουςι, 36a.15 καὶ τοῖς βίοις παρακολουθοῦσι, παρέδρους δόντες· καὶ προπέμπουσιν ἢ αὐτοὺς, ἢ τὰ χρήματα τῶν ἀποθανόντων· νοσούντων τε ἐπιμελοῦνται, καὶ ἀποθανόντας θάπτουσι. Τρίτοι δ' εἰσὶν, οἱ τὰς γενέσεις καὶ θανάτους ἐξετάζουσι, πότε καὶ πῶς, τῶν τε φόρων 36a.20 χάριν, καὶ ὅπως μὴ ἀφανεῖς εἶεν αἱ κρείττους καὶ χείρους γοναί, καὶ θάνατοι. Τέταρτοι οἱ περὶ τὰς καπηλείας καὶ μεταβολὰς· οἷς μέτρων μέλει καὶ τῶν ὥραιων, ὅπως ἀπὸ συσσήμου πωλοῖτο. Οὐκ ἔστι δὲ πλείω τὸν αὐτὸν μεταβάλλεσθαι, πλὴν εἰ διττοὺς ὑποτελοίη φόρους. Πέμπτοι δ' οἱ προεστῶτες τῶν δημιουργουμένων, καὶ πωλοῦντες ταῦτα ἀπὸ συσσήμου, χωρὶς μὲν τὰ καινὰ, χωρὶς δὲ τὰ παλαιά· τῷ μιγνύντι δὲ ζημία. Ἐκτοι δὲ καὶ ὕστατοι οἱ τὰς δεκάτας ἐκλέγοντες τῶν πωλουμένων· θάνατος δὲ τῷ κλέψαντι τὸ τέλος. Ἰδία 36a.30 μὲν ἕκαστοι ταῦτα, κοινῇ δ' ἐπιμελοῦνται τῶν τε ἰδίων καὶ τῶν πολιτικῶν καὶ τῆς τῶν δημοσίων ἐπισκευῆς τιμῶν τε καὶ ἀγορᾶς καὶ λιμένων, καὶ ἱερῶν. Μετὰ δὲ τοὺς ἀστυνόμους τρίτη ἐστὶ συναρχία <ἢ περὶ τὰ στρατιωτικά>, καὶ αὕτη ταῖς πεντάσιν ἐξαχῇ 36a.35 διωρισμένη· ὧν <τὴν μὲν> μετὰ τοῦ ναυάρχου τάττουσι, <τὴν δὲ> μετὰ τοῦ ἐπὶ τῶν βοϊκῶν ζευγῶν, δι' ὧν ὄργανα κομίζεται καὶ τροφή αὐτοῖς τε καὶ τοῖς κτήνεσι καὶ τὰ χρήσιμα τῆς στρατείας. Οὗτοι δὲ καὶ τοὺς διακόνους παρέχουσι τυμπανιστὰς καὶ (τοὺς) κωδωνοφόρους, 36a.40 ἔτι δὲ καὶ ἵπποκόμους καὶ μηχανοποιούς καὶ τοὺς τούτων ὑπηρέτας· ἐκπέμπουσιν τε πρὸς κάδωνας τοὺς χορτολόγους, τιμῇ καὶ κολάσει τὸ τάχος κατασκευαζόμενοι καὶ τὴν ἀσφάλειαν. <Τρίτοι> δὲ εἰσὶν οἱ τῶν πεζῶν ἐπιμελούμενοι· <τέταρτοι> δ' οἱ τῶν 36a.45 ἵππων· <πέμπτοι> δ' ἄρμάτων· <ἐκτοι> δὲ ἐλεφάντων. Βασιλικοὶ τε σταθμοὶ καὶ ἵπποις καὶ θηρίοις· βασιλικὸν δὲ καὶ ὄπλοφυλάκιον· παραδίδωσι γὰρ ὁ στρατιώτης τὴν τε σκευὴν εἰς τὸ ὄπλοφυλάκιον καὶ τὸν ἵππον εἰς τὸν ἵππωνα καὶ τὸ θηρίον ὁμοίως. Χρῶνται 36a.50 δ' ἀχαλινώτοις· τὰ δ' ἄρματα ἐν ταῖς ὁδοῖς βόες ἔλκουσιν· οἱ δὲ ἵπποι ἀπὸ φορβιᾶς ἄγονται τοῦ μὴ παρεμπίπρασθαι τὰ σκέλη μηδὲ τὸ πρόθυμον αὐτῶν ὑπὸ τοῖς ἄρμασιν ἀμβλύνεσθαι. Δύο δ' εἰσὶν ἐπὶ τῷ ἄρματι παραβάται πρὸς ἡνίοχῳ· ὁ δὲ τοῦ ἐλέφαντος ἡνίοχος τέταρτος, 36a.55 τρεῖς δ' οἱ ἀπ' αὐτοῦ τοξεύοντες. 36b.1 Aelianus XIII, 9: "Ἴππον δὲ ἄρα Ἰνδὸν κατασχεῖν καὶ ἀνακροῦσαι προπηδῶντα καὶ ἐκθέοντα οὐ παντὸς ἦν, ἀλλὰ τῶν ἐκ παιδὸς ἱππεῖαν πεπαιδευμένων. Τοῦτο γὰρ αὐτοῖς ἔστιν ἐν ἔθει, χαλινῷ ἄρχειν αὐτῶν καὶ ῥυθμίζειν αὐτοὺς καὶ ἰθύνειν· κημοῖς δὲ ἄρα κεντρωτοῖς ἀκόλαστον τε ἔχουσι τὴν γλῶτταν, καὶ τὴν ὑπερώαν ἀβασάνιστον· ἀναγκάζουσι δὲ αὐτοὺς ὅμως οἷδε οἱ τὴν ἱππεῖαν σοφισταὶ περικυκλεῖν καὶ περιδι- 36b.10 νεῖσθαι ἐς ταὐτὸν στρεφομένους, καὶ ἥπερ εἶδον ἀστόμους. Δεῖ δὲ ἄρα τῷ τοῦτο δράσοντι καὶ ῥώμης χειρῶν, καὶ ἐπιστήμης εὖ μάλα ἱππικῆς. Πειρῶνται δὲ οἱ προήκοντες εἰς ἄκρον τῆς σοφίας καὶ ἄρμα οὕτως περικυκλεῖν καὶ περιάγειν· εἴη δ' ἂν ἄθλος οὐκ εὐκαταφρό- 36b.15 νητος, ἀδηφάγων ἵππων τέτρωτον περιστρέφειν ῥαδίως. Φέρει δὲ τὸ ἄρμα παραβάτας καὶ δύο. Ὁ δὲ στρατιώτης ἐλέφας ἐπὶ τοῦ καλουμένου θωρακίου, ἢ καὶ νῆ Δία τοῦ νώτου γυμνοῦ καὶ ἐλευθέρου, πολεμιστὰς μὲν τρεῖς, παρ' ἑκάτερα βάλλοντας, καὶ τὸν τρίτον κατόπιν· τέ- 36b.20 τартон δὲ τὸν τὴν ἄρπην κατέχοντα διὰ χειρῶν, καὶ

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

ἐκείνη τὸν θῆρα ἰθύνοντα, ὡς οἶασι ναῦν κυβερνητικὸν ἄνδρα καὶ ἐπιστάτην τῆς νεώς. 37.1 Strabo XV, 704: "Ἴππον δὲ καὶ ἐλέφαντα τρέφειν οὐκ ἔξεστιν ἰδιώτῃ· βασιλικὸν δ' ἐκάτερον νενόμισται τὸ κτῆμα, καὶ εἰσὶν αὐτῶν ἐπιμεληταί. 37.5 Θῆρα δὲ τῶν θηρίων τούτων τοιάδε. Χωρίον ψιλὸν ὅσον τεττάρων ἢ πέντε σταδίων τάφρῳ περιχαράξαντες βαθεία, γεφυροῦσι τὴν εἴσοδον στενωπᾷ γεφύρα· εἴτ' εἰσαφιάσι θηλείας τὰς ἡμερωτάτας τρεῖς ἢ τέτταρας· αὐτοὶ δ' ἐν καλυβίοις χρυπτοῖς ὑποκάθηνται λοχῶντες. 37.10 ἡμέρας μὲν οὖν οὐ προσίασιν οἱ ἄγριοι· νύκτωρ δ' ἐφ' ἑνα ποιῶνται τὴν εἴσοδον· εἰσιόντων δὲ, κλείουσι τὴν εἴσοδον λάθρα· εἴτα τῶν ἡμέρων ἀθλητῶν τοὺς ἀλκιμῶν-τάτους εἰσάγοντες, διαμάχονται πρὸς αὐτοὺς, ἅμα καὶ λιμῶ καταπονοῦντες· ἥδη δὲ καμνόντων οἱ εὐθαρσέστατοι

37.15 τῶν ἡνιόχων λάθρα καταβαίνοντες, ὑποδύνουσιν ἕκαστος τῇ γαστρὶ τοῦ οἰκείου ὀχήματος· ὀρμώμενος δ' ἐνθένδε, ὑποδύνει τῷ ἀγρίῳ, καὶ σύμποδα δεσμεῖ· γενομένου δὲ τούτου, κελεύουσι τοῖς τιθασοῖς, τύπτειν τοὺς συμπο-δισθέντας, ἕως ἂν πέσωσιν εἰς τὴν γῆν· πεσόντων 37.20 δ' ὠμοβοῶνις ἰμάσι προσλαμβάνονται τοὺς αὐχένας αὐτῶν πρὸς τοὺς τῶν τιθασῶν· ἵνα δὲ μὴ σειόμενοι τοὺς ἀναβαίνειν ἐπ' αὐτοὺς ἐπιχειροῦντας ἀποσείοιντο, τοῖς τραχήλοις αὐτῶν ἐμβάλλονται κύκλῳ τομὰς, καὶ κατ' αὐτὰς τοὺς ἰμάντας περιτιθέασιν, ὥστ' ὑπ' ἀλγηδόνων 37.25 εἴκειν τοῖς δεσμοῖς, καὶ ἡσυχάζειν· τῶν δ' ἁλόντων ἀπο-λέξαντες τοὺς πρεσβυτέρους ἢ νεωτέρους τῆς χρείας, τοὺς λοιποὺς ἀπάγουσιν εἰς τοὺς σταθμούς· δῆσαντες δὲ τοὺς μὲν πόδας πρὸς ἀλλήλους, τοὺς δὲ αὐχένας πρὸς κίονα εὖ πεπηγότα, δαμάζουσι λιμῶ· ἔπειτα χλόῃ 37.30 καλάμου καὶ πῶας ἀναλαμβάνουσι· μετὰ δὲ ταῦτα πει-θαρχεῖν διδάσκουσι, τοὺς μὲν διὰ λόγου, τοὺς δὲ με-λισμῶ τινι καὶ τυμπανισμῶ κηλοῦντες· σπάνιοι δ' οἱ δυστιθάσειτοι· φύσει γὰρ διάκεινται πρᾶως καὶ ἡμέ-ρως, ὥστ' ἐγγυὲς εἶναι λογικῶ ζῶν· τινὲς γὰρ καὶ 37.35 ἐξαίμους τοὺς ἡνιόχους ἐν τοῖς ἀγῶσι πεσόντας ἀνελό-μενοι σώζουσιν ἐκ τῆς μάχης· οἱ δὲ καὶ ὑποδύντας με-ταξὺ τῶν ἐμπροσθίων ποδῶν ὑπερμαχόμενοι διέσωσαν· τῶν δὲ χορτοφόρων καὶ διδασκάλων εἴ τινα παρὰ θυμὸν ἀπέκτειναν, οὕτως ἐπιποθοῦσιν, ὥστ' ὑπ' ἀνίας ἀπέ- 37.40 χεσθαι τροφῆς· ἔστι δ' ὅτε καὶ ἀποκαρτερεῖν. Βιβάζονται δὲ καὶ τίκτουσιν ὡς ἵπποι τοῦ ἔαρος μά-λιστα· καιρὸς δ' ἐστὶ τῷ μὲν ἄρρηνι, ἐπειδὰν οἴστρῳ κατέχηται καὶ ἀγριαίνῃ· τότε δὴ καὶ λίπους τι διὰ τῆς ἀναπνοῆς ἀνίησιν, ἣν ἔχει παρὰ τοὺς κροτάφους· ταῖς 37.45 δὲ θηλείαις, ὅταν ὁ αὐτὸς οὗτος πόρος ἀνεωγῶς τυγχάνῃ. Κύουσι δὲ τοὺς μὲν πλείστους ὀκτωκαίδεκα μῆνας, ἐλαχίστους δ' ἑκαίδεκα· τρέφει δ' ἡ μήτηρ ἕξ ἔτη. Ζῶσι δ' ὅσον μακροβιώτατοι ἄνθρωποι οἱ πολλοί, τινὲς δὲ καὶ ἐπὶ διακόσια διατείνουσιν ἔτη, πολύνουσι δὲ 37.50 καὶ δυσίατοι. Ἄκος δὲ πρὸς ὀφθαλμίαν μὲν βόειον γάλα προσκλυζόμενον, τοῖς πλείστοις δὲ τῶν νοσημάτων ὁ μέλας οἶνος πινόμενος, τραύμασι δὲ ποτὸν μὲν βούτυ-ρον, ἐξάγει γὰρ τὰ σιδήρια· τὰ δ' ἔλκη σαρ-ξὶν υἱαῖς πυριῶσιν. 38a.1 Arrianus Ind. c. 13: Θηρῶσι δὲ Ἰνδοὶ τὰ μὲν ἄλλα ἄγρια θηρία, κατὰ περ καὶ Ἑλ-ληνες· ἡ δὲ τῶν ἐλεφάντων σφὶν θήρῃ οὐδὲν τι ἄλλη ἔοικεν, ὅτι καὶ ταῦτα τὰ θηρία οὐδαμοῖσιν ἄλλοισι θη- 38a.5 ρίοισιν ἐπέοικεν. (2) Ἀλλὰ τόπον γὰρ ἐπιλεξάμενοι καὶ καυματώδεα ἐν κύκλῳ τάφρον ὀρύσσουσιν, ὅσον μεγάλῳ στρατοπέδῳ ἐπαυλίσασθαι. Τῆς δὲ τάφρου τὸ εὖρος ἐς πέντε ὀργυῖας ποιεῖνται, βάθος τε ἐς τέσσαρας. (3) Τὸν δὲ χρόν ὄντινα ἐκβάλλουσιν ἐκ τοῦ ὀρύγματος, 38a.10 ἐπὶ τὰ χεῖλεα ἐκάτερα τῆς τάφρου ἐπιφορήσαντες,

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

ἀντὶ τείχεος διαχρέονται· (4) αὐτοὶ δὲ ἐπὶ τῷ χώματι τοῦ ἐπιχειλέος τοῦ ἔξω τῆς τάφρου σκηνάς σφιν ὀρυκτὰς ποιοῦνται, καὶ διὰ τουτέων ὅπας ὑπολείπονται· δι' ὧν φῶς τε αὐτοῖσι συνεισέρχεται καὶ τὰ θηρία προσάγοντα 38a.15 καὶ ἐσελαύνοντα ἐς τὸ ἔρκος σκέπτονται. (5) Ἐνταῦθα ἐντὸς τοῦ ἔρκους καταστήσαντες τῶν τινος θηλέων τρεῖς ἢ τέσσαρας, ὅσαι μάλιστα τὸν θυμὸν χειροήθεις, μίαν εἴσοδον ἀπολιμπάνουσι κατὰ τὴν τάφρον, γεφυρώσαντες τὴν τάφρον· καὶ ταύτῃ χρόν τε καὶ ποίῃν πολλὴν ἐπιφέ- 38a.20 ρουσι τοῦ μὴ ἀρίδην εἶναι τοῖσι θηρίοις τὴν γέφυραν, μὴ τινα δόλον οἰσθῶσιν. (6) Αὐτοὶ μὲν οὖν ἐκποδὼν σφᾶς ἔχουσι κατὰ τῶν σκηνῶν τῶν ὑπὸ τῇ τάφρῳ δε- δυκότες. Οἱ δὲ ἄγριοι ἐλέφαντες ἡμέρης μὲν οὐ πελά- ζουσι τοῖσιν οἰκεομένοις, νύκτωρ δὲ πλανῶνται τε 38a.25 πάντῃ καὶ ἀγέληδὸν νέμονται τῷ μεγίστῳ καὶ γενναίῳ- τάτῳ σφῶν ἐπόμενοι, κατὰ περ αἱ βόες τοῖσι ταύροις. (7) Ἐπεὰν ὧν τῷ ἔρκει πελάσῃ, τὴν τε φωνὴν τῶν θηλέων καὶ τῇ ὁσμῇ αἰσθανόμενοι, δρόμῳ ἵενται ὡς ἐπὶ τὸν χώρον τὸν πεφραγμένον· ἐκπεριελθόντες δὲ 38a.30 τῆς τάφρου τὰ χεῖλα εὐτ' ἂν τῇ γεφύρῃ ἐπιτύχῃ, κατὰ ταύτην ἐς τὸ ἔρκος ὠθέονται. (8) Οἱ δὲ ἄνθρωποι αἰσθόμενοι τὴν εἴσοδον τῶν ἐλεφάντων τῶν ἀγρίων, οἱ μὲν αὐτῶν τὴν γέφυραν ὀξέως ἀφείλον, οἱ δὲ ἐπὶ τὰς πέλας κώμας ἀποδραμόντες ἀγγέλλουσι τοὺς ἐλεφάντας 38a.35 ὅτι ἐν τῷ ἔρκει ἔχονται· (9) οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐπιβαί- νουσι τῶν κρατίστων τε τὸν θυμὸν καὶ τῶν χειροθε- στάτων ἐλεφάντων, ἐπιβάντες δὲ ἐλαύνουσιν ὡς ἐπὶ τὸ ἔρκος, ἐλάσαντες δὲ οὐκ αὐτίκα μάχης ἀπτονται, ἀλλ' ἐῷσι γὰρ λιμῷ τε τάλαιπωρηθῆναι τοὺς ἀγρίους ἐλέ- 38a.40 φάντας καὶ ὑπὸ τῷ δίψῃ δουλωθῆναι. (10) Εὐτ' ἂν δὲ σφίσι κακῶς ἔχῃν δοκέωσι, τῆνικαῦτα ἐπιστήσαντες αὐθις τὴν γέφυραν ἐλαύνουσι τε ὡς ἐς τὸ ἔρκος, καὶ τὰ μὲν πρῶτα μάχῃ ἴσταται κρατερὴ τοῖσιν ἡμέροισι τῶν ἐλεφάντων πρὸς τοὺς ἐαλωκότας· ἔπειτα κρατέονται 38a.45 μὲν κατὰ τὸ εἶκος οἱ ἄγριοι ὑπὸ τε τῇ ἀθυμίῃ καὶ τῷ λιμῷ τάλαιπωρεύμενοι. (11) Οἱ δὲ ἀπὸ τῶν ἐλεφάντων καταβάντες παρειμένοισιν ἤδη τοῖσιν ἀγρίοις τοὺς πόδας ἄκρους συνδέουσιν· ἔπειτα ἐγκελεύονται τοῖσιν ἡμέροισι πληγῇσι σφᾶς κολάζειν πολλῇσι, ἔστ' ἂν 38a.50 ἐκεῖνοι τάλαιπωρεύμενοι ἐς γῆν πέσωσι· παραστάντες δὲ βρόχους περιβάλλουσιν αὐτοῖσι κατὰ τοὺς αὐχένους, καὶ αὐτοὶ ἐπιβαίνουσι κειμένοις. (12) Τοῦ δὲ μὴ ἀπο- σείεσθαι τοὺς ἀμβάτας μηδὲ τι ἄλλο ἀτάσθαλον ἐργά- ζεσθαι, τὸν τράχηλον αὐτοῖσιν ἐν κύκλῳ μαχαιρίῳ ὀξεί 38a.55 ἐπιτέμνουσι, καὶ τὸν βρόχον κατὰ τὴν τομὴν περι- δέουσιν, ὡς ἀτρέμα ἔχειν τὴν κεφαλὴν τε καὶ τὸν τρά- χηλον ὑπὸ τοῦ ἔλκεος. (13) Εἰ γὰρ περιστρέφοντο ὑπὸ ἀτασθαλίας, τρίβεται αὐτοῖσι τὸ ἔλκος ὑπὸ τῷ κάλῳ· οὕτω μὲν ὧν ἀτρέμα ἴσχυσι, καὶ αὐτοὶ γνωσιμαχέοντες 38a.60 ἤδη ἄγονται κατὰ τὸν δεσμὸν πρὸς τῶν ἡμέρων. Cap. XIV. Ὅσοι δὲ νῆπιοι αὐτῶν ἢ διὰ κακότητα οὐκ ἄξιοι ἐκτῆσθαι, τούτους ἐῷσιν ἀπαλλάττεσθαι ἐς τὰ σφέτερα ἦθεα. (2) Ἀγοντες δὲ εἰς τὰς κώμας τοὺς ἀλόντας τοῦ τε χλωροῦ καλάμου καὶ τῆς ποίης τὰ πρῶτα 38a.65 ἐμφαγεῖν ἔδοσαν· (3) οἱ δὲ ὑπὸ ἀθυμίας οὐκ ἐθέλουσιν οὐδὲν σιτέεσθαι, τοὺς δὲ περιϊστάμενοι οἱ Ἴνδοι ὠδαῖσί τε καὶ τυμπάνοις καὶ κυμβάλοισιν ἐν κύκλῳ κρούοντες τε καὶ ἐπάδοντες κατευνάζουσι. (4) Θυμόσφορον γὰρ εἶ- περ τι ἄλλο θηρίον ὁ ἐλέφας· καὶ τινες ἤδη αὐτῶν τοὺς 38a.70 ἀμβάτας σφῶν ἐν πολέμῳ ἀποθανόντας ἄραντες αὐτοὶ ἐξήνεγκαν ἐς ταφὴν, οἱ δὲ καὶ ὑπερήσπισαν κειμένους, οἱ δὲ καὶ πεσόντων προεκινδύνευσαν· ὁ δὲ τις πρὸς ὅ- γῃν ἀποκτείνας τὸν ἀμβάτην ὑπὸ μετανόῃς τε

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

καὶ ἀθυμίας ἀπέθανεν. (5) [Εἶδον δὲ ἐγώ γε καὶ 38a.75 ἤδη ἐλέφαντα καὶ ἄλλους ὀρχομένους, κυμβάλοιν τῷ κυμβαλίζοντι πρὸς τοῖν σκελοῖν τοῖν ἔμπροσθεν πρὸς- ηρτημένοι, καὶ πρὸς τῇ προβοσκίδι καλεομένη ἄλλο κύμβαλον. (6) ὁ δὲ ἐν μέρει τῇ προβοσκίδι ἔκρουε τὸ κύμβαλον ἐν ῥυθμῷ πρὸς ἑκατέρω τοῖν σκελοῖν. οἱ δὲ 38a.80 ὀρχομένοι ἐν κύκλῳ τε ἐχόρευον, καὶ ἐπαί- ροντές τε καὶ ἐπικάμπτοντες τὰ ἔμπροσθεν σκέλεα ἐν τῷ μέρει ἐν ῥυθμῷ καὶ οὗτοι ἔβαινον, κατότι ὁ κυμβαλίζων σφίσιν ὑφηγέτο]. (7) Βαίνεται δὲ ἐλέφας ἥρος ὥρη, κατάπερ βοῦς ἢ ἵππος, ἐπεὰν τῆσι θηλέησιν αἱ παρὰ τοῖσι κρο- 38a.85 τάφοισιν ἀναπνοαὶ ἀνοιχθεῖσαι ἐκπνέ- ωσι. κύει δὲ τοὺς ἐλαχίστους μὲν ἑκατάδεκα μῆνας, τοὺς πλείστους δὲ ὀκτωκαίδεκα. τίκτει δὲ ἐν, κατάπερ ἵππος. καὶ τοῦτο ἐκτρέφει τῷ γάλακτι ἐς ἔτος ὀγδοόν. (8) Ζῶσι δὲ φάντων οἱ πλείστα ἔτεα ζῶντες ἐς διηκόσια. πολλοὶ δὲ 38a.90 νοῦσῳ προτελευτῶσιν. γῆραϊ δὲ ἐς τόσον ἔρχονται. (9) ἔστιν αὐτοῖσι τῶν μὲν ὀφθαλμῶν ἵημα τὸ βόειον γάλα ἐγχεόμενον, πρὸς δὲ τὰς ἄλλας νοῦσους ὁ μέλας οἶνος πινόμενος, ἐπὶ δὲ τοῖσιν ἔλκεσι τὰ ὕεια κρέα ὀπτώμενα καὶ κα- ταπασσόμενα. Ταῦτα παρ' Ἰνδοῖσιν ἔστιν αὐτοῖσιν 38a.95 ἵματα. 38b.1 Aelianus N. A. XII, 44: Ἐν Ἰνδοῖς ἂν ἀλῶ τέλειος ἐλέφας, ἡμερωθῆναι χαλεπὸς ἐστὶ, καὶ τὴν ἐλευθερίαν πο- θῶν φονᾷ. ἐὰν δὲ αὐτὸν καὶ δεσμοῖς διαλάβῃς, ἔτι καὶ μᾶλλον ἐς τὸν θυμὸν ἐξάπτεται, καὶ δεσπότην οὐχ ὑπο- 38b.5 νέμει. Ἄλλ' οἱ Ἰνδοὶ καὶ ταῖς τροφαῖς κολακεύουσιν αὐ- τὸν, καὶ ποικίλοις καὶ ἐφορκῶς δελέασι πραῦνεν πει- ρῶνται, παρατιθέντες, ὥς πληροῦν τὴν γαστέρα καὶ θέλγειν τὸν θυμὸν. ὁ δὲ ἄχθεται αὐτοῖς, καὶ ὑπερορᾷ. Τί οὖν ἐκεῖνοι κατασοφίζονται καὶ δρῶσι; Μοῦσαν αὐ- 38b.10 τοῖς προσάγουσιν ἐπιχώριον, καὶ κατὰδουσιν αὐτοὺς ὀργάνῳ τινὶ καὶ τούτῳ συνήθει. καλεῖται δὲ σκινδαφὸς τὸ ὄργανον. ὁ δὲ ὑπέχει τὰ ὦτα καὶ θέλγεται, καὶ ἢ μὲν ὀργῇ πραῦνεται, ὁ δὲ θυμὸς ὑποστέλλεται τε καὶ θόρνυται, κατὰ μικρὰ δὲ καὶ ἐς τὴν τροφήν ὀρᾷ. εἴτα 38b.15 ἀφεῖται μὲν τῶν δεσμῶν, μένει δὲ τῇ μούσῃ δεδεμένος, καὶ δειπνεῖ προθύμως ἀβρὸς δαιτυμῶν καταδεδεμένος. πόθῳ γὰρ τοῦ μέλους οὐκ ἂν ἔτι ἀποσταίῃ. 38c.1 Idem XIII, 6: Τῶν τεθηραμένων ἐλεφάντων ἰὼν- ται τὰ τραύματα οἱ Ἰνδοὶ τὸν τρόπον τοῦ- τον. Καταιο- νοῦσι μὲν αὐτὰ ὕδατι χλιαρῷ, ὥσπερ οὖν τὸ τοῦ Εὐρυ- πύλου παρὰ τῷ καλῷ Ὀμήρῳ ὁ Πάτροκλος. εἴτα μὲν- 38c.5 τοὶ διαχρίουσι τῷ βουτύρῳ αὐτά. ἐὰν δὲ ἡ βαθέα, τὴν φλεγμονὴν πραῖνουσιν, ὕεια κρέα, θερμὰ μὲν, ἵναίμα δὲ ἔτι, προσφέροντες καὶ ἐντιθέντες. Τὰς δὲ ὀφθαλμίας θεραπεύουσιν αὐτῶν, βόειον γάλα ἀλεαίνοντες, εἴτα αὐ- τοῖς ἐγχεόντες. οἱ δὲ ἀνοίγουσι τὰ βλέφαρα καὶ ὥφε- 38c.10 λούμενοι ἡδοναί τε καὶ αἰσθάνονται ὥσπερ ἄνθρω- ποι. καὶ εἰς τοσοῦτον ἐπικλύζουσιν, εἰς ὅσον ἂν ὑποπαύσων- ται λημῶντες. μαρτύριον δὲ τοῦ παύσασθαι τὴν ὀφθαλ- μίαν τοῦτό ἐστι. Τὰ δὲ νοσήματα ὅσα αὐτοῖς προσπί- πτει ἄλλως, ὁ μέλας οἶνός ἐστιν αὐτοῖς ἄκος. εἰ δὲ μὴ 38c.15 γένοιτο ἐξάντης τοῦ κακοῦ τῷ φαρμάκῳ τῷδε, ἄσσωσά οἱ ἐστίν. 39a.1 Strabo XV: Μεγασθένης δὲ περὶ τῶν μυρμήκων οὕτω φησὶν, ὅτι ἐν Δέρδαις, ἔθνη μεγάλῃ τῶν προσεφών καὶ ὀρειῶν Ἰνδῶν, ὀροπέδιον εἶη τρισχιλίων πῶς τὸν κύ- 39a.5 κλον σταδίων. ὑποκειμένων δὲ τούτῳ χρυσωρυχείων, οἱ μεταλλεύοντες εἰν μύρμηκες, θηρίων ἀλωπέκων οὐκ ἐλάττους, τάχος ὑπερφυῖες ἔχοντες, καὶ ζῶντες ἀπὸ θή- ρας. Ὀρύττουσι δὲ χειμῶνι τὴν γῆν. σωρεύουσιν τε πρὸς τοῖς στομίοις, καθάπερ οἱ ἀσπάλακες. ψῆγμα 39a.10

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

δ' ἐστὶ χρυσοῦ μικρᾶς ἐφήσεως δεόμενον· τοῦθ' ἵπποζυ- γίοις μετίασιν οἱ πλησιόχωροι λάθρα· φανερώς γὰρ δια- μάχονται, καὶ διώκουσι φεύγοντας· καταλαβόντες δὲ

διαχρῶνται καὶ αὐτοὺς καὶ τὰ ὑποζύγια. Πρὸς δὲ τὸ λαθεῖν κρέα θήρεια προστιθέασιν κατὰ μέρη· περισπας- 39a.15 θέντων δ' ἀναιροῦνται τὸ ψῆγμα, καὶ τῷ τυχόντι τῶν ἐμπόρων ἀργὸν διατίθενται, χωνεύειν οὐκ εἰδότες. 39b.1 Arrianus Ind. c. 5, 4: Μεγασθένης δὲ καὶ ἀτρεκέας εἶναι ὑπὲρ τῶν μυρμήκων τὸν λόγον ἱστορεῖ, τούτους εἶναι τοὺς τὸν χρυσὸν ὀρύσσοντας, οὐκ αὐτοῦ τοῦ χρυ- σοῦ ἕνεκα, ἀλλὰ φύσι γὰρ κατὰ τῆς γῆς ὀρύσσουσιν, ἵνα 39b.5 φωλεύοιεν· κατὰπερ οἱ ἡμέτεροι οἱ σμικροὶ μύρμηκες ὀλί- γον τῆς γῆς ὀρύσσουσιν· (6) ἐκείνους δὲ, εἶναι γὰρ πέκων μέζονας, πρὸς λόγον τοῦ μεγέθους σφῶν καὶ τὴν γῆν ὀρύσσειν· τὴν δὲ γῆν χρυσίτιν εἶναι, καὶ ἀπὸ ταύ- της γίνεσθαι Ἰνδοῖσι τὸν χρυσόν. (7) Ἀλλὰ Μεγασθένης 39b.10 ἀκοὴν ἀπηγγέεται. 40.1 Strabo XV.: Περὶ δὲ τῶν φιλοσόφων λέγων (sc. <Μεγασθένης>) τοὺς μὲν ὀρεινοὺς αὐτῶν φησιν ὑμνητὰς εἶναι τοῦ Διονύσου, δεικνύντας τεκμήρια τὴν ἀγρίαν ἄμπελον παρὰ μόνοις αὐτοῖς φυομένην καὶ 40.5 κιττὸν καὶ δάφνην καὶ μυρρίνην καὶ πύξον καὶ ἄλλα τῶν ἀειθαλῶν, ὧν μηδὲν εἶναι πέραν τοῦ Εὐφράτου, πλὴν ἐν παραδείσοις σπάνια καὶ μετὰ πολλῆς ἐπιμε- λείας σωζόμενα. Διονυσιακὸν δὲ καὶ τὸ σινδονοφορεῖν καὶ τὸ μιτροῦσθαι καὶ μυ- ροῦσθαι καὶ βάπτεσθαι ἄνθηνα 40.10 καὶ τοὺς βασιλέας κωδωνοφορεῖσθαι καὶ τυμπανίζεσθαι κατὰ τὰς ἐξόδους. Τοὺς δὲ πεδιασίους τὸν Ἡρακλέα τιμᾶν. [Ταῦτα μὲν οὖν μυθώδη καὶ ὑπὸ πολλῶν ἐλεγ- χόμενα, καὶ μάλιστα [τὰ] περὶ τῆς ἀμπέλου καὶ τοῦ οἴνου, πέραν γὰρ τοῦ Εὐφράτου καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐστὶ πολλή· 40.15 καὶ ἡ Μεσοποταμία ὅλη καὶ ἡ Μηδία ἐξῆς μέχρι καὶ Περσίδος καὶ Καρμανίας· τούτων δὲ τῶν ἐθνῶν ἐκάστου πολὺ μέρος εὐάμπελον καὶ εὐοῖνον λέγεται.] Ἄλλην δὲ διαίρεσιν ποιεῖται περὶ τῶν φιλοσόφων, δύο γένη φάσκων, ὧν τοὺς μὲν Βραχμαῖνας καλεῖ, τοὺς δὲ 40.20 Σαρμαῖνας. Τοὺς μὲν οὖν Βραχμαῖ- νας εὐδοκιμεῖν μᾶλ- λον, μᾶλλον γὰρ καὶ ὁμολογεῖν ἐν τοῖς δόγμασιν· ἥδη δ' εὐθὺς καὶ κυομένους ἔχειν ἐπιμελητὰς, λογίους ἄνδρας· οὓς προσιόντας λόγον μὲν ἐπάδειν δο- κεῖν καὶ τὴν μητέρα καὶ τὸν κυόμενον εἰς εὐτεχνίαν· τὸ 40.25 δ' ἀληθές, σωφρονικὰς τινας παραινέσεις καὶ ὑποθήκας δίδοναι· τὰς δ' ἥδι- στα ἀκρωμένους, μᾶλλον εὐτέκνους εἶναι νομίζεσθαι. Μετὰ δὲ τὴν γένεσιν ἄλλους καὶ ἄλλους διαδέχεσθαι τὴν ἐπιμέλειαν, αἰεὶ τῆς μείζονος ἡλικίας χαριστέρων τυγχανούσης διδασκάλων. Διατρίβειν δὲ 40.30 τοὺς φιλοσόφους ἐν ἄλσει πρὸ τῆς πόλεως, ὑπὸ περιβόλῳ συμμέτρῳ, λιτῶς ζῶντας ἐν στιβάσι καὶ δοραῖς, ἀπε- χομένους ἐμφύχων καὶ ἀφροδισίων, ἀκρωμένους λόγων σπουδαίων, μεταδιδόντας καὶ τοῖς ἐθέλουσι· τὸν δ' ἀκρο- ώμενον οὔτε λαλῆσαι θέμις, οὔτε χρέμψασθαι, ἀλλ' 40.35 οὐδὲ πτύσαι· ἢ ἐκβάλλεσθαι τῆς συνοουσίας τὴν ἡμέραν ἐκείνην, ὡς ἀκολασταίνοντα. Ἔτη δ' ἐπτὰ καὶ τριά- κοντα οὕτως ζήσαντα ἀναχωρεῖν εἰς τὴν ἑαυτοῦ κτῆσιν ἑκάστον, καὶ ζῆν ἀδεῶς καὶ ἀνεμίνως μᾶλλον, σινδοно- φοροῦντα καὶ χρυσοφοροῦντα μετρίως ἐν ταῖς χερσὶ 40.40 καὶ τοῖς ὤσι, προσφερόμενον σάρκας τῶν μὴ πρὸς τὴν χρεῖαν συν- εργῶν ζώων, δριμέων καὶ ἀρτυτῶν ἀπεχόμε- νον· γαμεῖν δ' ὅτι πλείστας εἰς πολυτεχνίαν· ἐκ πολλῶν γὰρ καὶ τὰ σπουδαῖα πλείω γίνεσθαι ἂν· ἀδούλοις οὐσί τε τὴν ἐκ τέκνων ὑπηρεσίαν ἐγγυτάτῳ οὖσαν πλείω 40.45 δεῖν παρασκευάζεσθαι. Ταῖς δὲ γυναῖξιν ταῖς γαμεταῖς μὴ συμ-

4.31. MEGASTHENES, *INDICA*

φιλοσοφείν τοὺς Βραχμᾶνας· εἰ μὲν μοχθηραὶ γένοιτο, ἵνα μὴ τι τῶν οὐ θεμιτῶν ἐκφέροιεν εἰς τοὺς βεβήλους, εἰ δὲ σπουδαῖαι, μὴ καταλείποιν αὐτούς· οὐδένα γὰρ ἡδονῆς καὶ πόνου καταφρονούντα, ὥς δ' αὖ- 40.50 τως ζωῆς καὶ θανάτου, ἐθέλειν ὑφ' ἑτέρῳ εἶναι· τοιοῦτον δ' εἶναι τὸν σπουδαῖον καὶ τὴν σπουδαίαν. Πλείστους δ' αὐτοῖς εἶναι λόγους περὶ θανάτου· νο- μίζειν γὰρ δὴ τὸν μὲν ἐνθάδε βίον ὥς ἂν ἀκμὴν κυομέ- νων εἶναι· τὸν δὲ θάνατον γένεσιν εἰς τὸν ὄντως βίον καὶ 40.55 τὸν εὐδαίμονα τοῖς φιλοσοφήσασιν· διὸ τῇ ἀσκήσει πλεί- στη χρῆσθαι πρὸς τὸ ἐτοιμοθάνατον· ἀγαθὸν δὲ ἢ κα- κὸν μὴδὲν εἶναι τῶν συμβαινόντων ἀνθρώποις· οὐ γὰρ ἂν τοῖς αὐτοῖς τοὺς μὲν ἀχθεσθαι, τοὺς δὲ χαίρειν, ἐνυ- πνιώδεις ὑπολήψεις ἔχοντας, καὶ τοὺς αὐτοὺς τοῖς αὐτοῖς 40.60 τοτὲ μὲν ἀχθεσθαι, τοτὲ δ' αὖ χαίρειν μεταβαλλομέ- νους. Τὰ δὲ περὶ φύσιν, τὰ μὲν εὐήθειαν ἐμφαίνειν φησὶν· ἐν ἔργοις γὰρ αὐτοὺς κρείττους ἢ λόγοις εἶναι, διὰ μύθων τὰ πολλὰ πιστομένους· περὶ πολλῶν δὲ τοῖς Ἑλλήσιν ὁμοδοξεῖν· ὅτι γὰρ γενητὸς ὁ κό- 40.65 σμος καὶ φθαρτὸς, λέγειν κάκεινους, καὶ ὅτι σφαιροειδῆς· ὃ τε διοικῶν αὐτὸν καὶ ποιῶν θεὸς δι' ὅλου διαπεφοί- τηκεν αὐτοῦ· ἀρχαὶ δὲ τῶν μὲν συμπάντων ἕτεραι, τῆς δὲ κοσμοποιίας τὸ ὕδωρ· πρὸς δὲ τοῖς τέτταρσι στοι- χείοις πέμπτη τίς ἐστι φύσις, ἐξ ἧς ὁ οὐρανὸς καὶ τὰ 40.70 ἄστρο· γῆ δ' ἐν μέσῳ ἱδρύται τοῦ παντός· καὶ περὶ σπέρματος δὲ καὶ ψυχῆς ὁμοία λέγεται, καὶ ἄλλα πλείω· παραπλέκουσι δὲ καὶ μύθους, ὥσπερ καὶ Πλάτων περὶ τε ἀφθαρσίας ψυχῆς, καὶ τῶν καθ' ἄδου κρίσεων, καὶ ἄλλα τοιαῦτα. Περὶ μὲν τῶν Βραχμάνων ταῦτα λέγει. 40.75 Τοὺς δὲ Σαρμᾶνας, τοὺς μὲν ἐντιμοτάτους Ἰλολβίους φησὶν ὀνομάζεσθαι, ζῶντας ἐν ταῖς ὕλαις ἀπὸ φύλλων καὶ καρπῶν ἀγρίων, ἐσθίοντας δ' ἔχειν ἀπὸ φλοιῶν δέν-

δρείων, ἀφροδισίων χωρὶς καὶ οἴνου· τοῖς δὲ βασιλεῦσι συνεῖναι, δι' ἀγγέλων πυνθανομένοις περὶ τῶν αἰτίων, 40.80 καὶ δι' ἐκείνων θεραπεύουσι καὶ λιτανεύουσι τὸ θεῖον. Μετὰ δὲ τοὺς Ἰλολβίους δευτερεύειν κατὰ τιμὴν τοὺς ἰατρικούς, καὶ ὥς περὶ τὸν ἀνθρώπον φιλοσόφους, λι- τοὺς μὲν, μὴ ἀγραύλους δὲ, ὀρύζῃ καὶ ἀλφίτοις τρεφο- μένους, ἃ παρέχειν αὐτοῖς πάντα τὸν αἰτηθέντα καὶ 40.85 ὑποδεξάμενον ξενία· δύνασθαι δὲ καὶ πολυγόνους ποιεῖν, καὶ ἀρρενογόνους, καὶ θηλυγόνους διὰ φαρμακευτικῆς· τὴν δὲ ἰατροίαν διὰ σιτίων τὸ πλεόν, οὐ διὰ φαρμάκων ἐπιτελεῖσθαι· τῶν φαρμάκων δὲ μάλιστα εὐδοκιμεῖν τὰ ἐπίχριστα καὶ τὰ καταπλάσματα· τἄλλα δὲ κα- 40.90 κουργίας πολὺ μετέχειν. Ἀσκεῖν δὲ καὶ τούτους κα- κείνους καρτερίαν, τὴν τε ἐν πόνοις καὶ τὴν ἐν ταῖς ὑπομοναῖς, ὥστ' ἐφ' ἐνὸς σχήματος ἀκίνητον διατελέσαι τὴν ἡμέραν ὅλην. Ἄλλους δ' εἶναι τοὺς μὲν μαντικούς καὶ ἐπωδοὺς καὶ τῶν περὶ τοὺς κατοικομένους λόγων 40.95 καὶ νομίμων ἐμπείρους, ἐπαιτοῦντας καὶ κατὰ κώμας καὶ πόλεις· τοὺς δὲ χαριεστέρους τῶν καθ' ἄδου θρυ- λουμένων, ὅσα δοκεῖ πρὸς εὐσέβειαν καὶ οσιότητα· συμφιλοσοφεῖν δ' ἐνίοις καὶ γυναῖκας, ἀπεχομένας καὶ αὐτὰς ἀφροδισίων. 41a.1 Clem. Alex. Strom. I: Μεγασθένης ὁ συγγραφεὺς ὁ Σελεύκῳ τῷ Νικάτορι συμβεβιωκὼς ἐν τῇ τρίτῃ τῶν Ἰνδικῶν ὧδε γράφει· »Ἄπαντα μέντοι τὰ περὶ φύσεως εἰρημένα παρὰ τοῖς 41a.5 ἀρχαίοις λέγεται καὶ παρὰ τοῖς ἔξω τῆς Ἑλλάδος φιλο- σοφοῦσι, τὰ μὲν παρ' Ἰνδοῖς ὑπὸ τῶν Βραχμάνων, τὰ δὲ ἐν τῇ Συρίᾳ ὑπὸ τῶν καλουμένων Ἰουδαίων.» 41b.1 Clemens I. I.: Διττὸν δὲ τούτων τὸ γένος· οἱ μὲν Σαρμᾶναι αὐτῶν, οἱ δὲ Βραχμᾶναι καλούμενοι· καὶ τῶν Σαρμανῶν οἱ Ἰλολβιοὶ προσαγο- ρευόμενοι οὔτε πόλεις οἰκοῦσιν οὔτε στέγας ἔχουσιν, 41b.5 δένδρων δὲ ἀμφιέννυνται φλοιοῖς, καὶ ἀκρόδρυα

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

σιτοῦν-ται καὶ ὕδωρ ταῖς χερσὶ πίνουσιν· οὐ γάμον, οὐ παιδο-ποιάν ἴσασιν, [ὥσπερ οἱ νῦν Ἑγκρατῆται καλούμενοι, εἰσὶ δὲ τῶν Ἰνδῶν οἱ τοῖς Βούττα πειθόμενοι παραγ-γέλμασιν, ὃν δι' ὑπερβολὴν σεμνότητος ὡς θεὸν τετιμῆ- 41b.10 κασι.] 42.1 Strabo XV: <Μεγασθένης> δ' ἐν μὲν τοῖς φιλοσόφοις οὐκ εἶναι δόγμα φησὶν ἑαυτοὺς ἐξάγειν· τοὺς δὲ ποιῶντας τοῦτο, νεανικοὺς κρίνεσθαι, τοὺς μὲν σκληροὺς τῇ φύσει φερομένους ἐπὶ πληγὴν ἢ κρημνόν, 42.5 τοὺς δ' ἀπόνους ἐπὶ βυθόν, τοὺς δὲ πολυπόνους ἀπαγχο-μένους, τοὺς δὲ πυρώδεις εἰς πῦρ ὠθουμένους, οἷος ἦν καὶ ὁ Κάλανος, ἀκόλαστος ἄνθρωπος, καὶ ταῖς Ἀλε-ξάνδρου τραπέζαις δεδουλωμένος· τοῦτον μὲν οὖν ψέ-γεσθαι, τὸν δὲ Μάνδανιν ἐπαινεῖσθαι, ὅς τῶν τοῦ Ἀλε- 42.10 ξάνδρου ἀγγέλων καλούντων πρὸς τὸν Διὸς υἱόν, πειθομένῳ τε δῶρα ἔσσεσθαι ὑπισχυομένων, ἀπει-θοῦντι δὲ κόλασιν· μήτε ἐκεῖνον φαίη Διὸς υἱόν, ὅς γε ἄρχει μηδὲ πολλοστοῦ μέρους τῆς γῆς· μηδὲ αὐτῷ δεῖν τῶν παρ' ἐκεῖνου δωρεῶν, ᾧ οὐδεὶς κόρος· μήτε 42.15 δὲ ἀπειλῆς εἶναι φόβον, ᾧ ζῶντι μὲν ἀρκοῦσα εἴη τροφὸς ἡ Ἰνδική, ἀποθανόντι δὲ ἀπαλλάξαιτο τῆς σαρκὸς ἀπὸ γήρως τετρυχωμένης, μεταστὰς εἰς βελτίῳ καὶ καθαρώτερον βίον· ὥστ' ἐπαινεῖσαι τὸν Ἀλέξανδρον καὶ συγχωρῆσαι. 43.1 Arrian. Exp. Alex. VII, 2, 4: Οὐκοῦν οὐδὲ Ἀλέξανδρον ἐπιχειρῆσαι βιάσασθαι, γνόντα ἐλεύθερον ὄντα τὸν ἄνδρα· ἀλλὰ Κάλανον γὰρ ἀναπει-σθῆναι τῶν ταύτῃ σοφιστῶν, ὅντινα μάλιστα δὴ αὐτοῦ 43.5 ἀκράτορα Μεγασθένης ἀνέγραψεν· αὐτοὺς τε τοὺς σο-φιστὰς λέγειν κακίζοντας τὸν Κάλανον, ὅτι ἀπολιπὼν τὴν παρὰ σφίσιν εὐδαιμονίαν, ὁ δὲ δεσπότην ἄλλον ἢ τὸν θεὸν ἐθεράπευε. 43.8

4.32 Hipparchus

4.32.1 About Hipparchus

Hipparchus/hɪˈpɑːrkəs/ of Nicaea, or more correctly Hipparchos (Greek: Ἰππαρχος, Hipparkhos; c. 190 BC – c. 120 BC), was a Greek astronomer, geographer, and mathematician of the Hellenistic period. He is considered the founder of trigonometry but is most famous for his incidental discovery of precession of the equinoxes.²⁹ (From Wikipedia)

4.32.2 Fragmenta geographica

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica (1431: 002) “The geographical fragments of Hipparchus”, Ed. Dicks, D.R. London: Athlone Press, 1960. Fragment 13, line 3

29. <http://en.wikipedia.org/wiki/Hipparchus>.

4.32. HIPPARCHUS

Strabo, 69 – 70 ἔτι φησὶν ὁ Ἰππαρχος ἐν τῷ δευτέρῳ ὑπομνήματι αὐτὸν τὸν Ἐρατοσθένη διαβάλλειν τὴν τοῦ Πατροκλέους πίστιν ἐκ τῆς πρὸς Μεγασθένη διαφωνίας περὶ τοῦ μήκους τῆς Ἰνδικῆς τοῦ κατὰ τὸ βόρειον πλευρόν, τοῦ μὲν Μεγασθένους λέγοντος σταδίων μυρίων ἑξακισχιλίων, τοῦ δὲ Πατροκλέους χιλίοις λείπειν φαμένον· ἀπὸ γάρ τινος ἀναγραφῆς σταθμῶν ὀρμηθέντα τοῖς μὲν ἀπιστεῖν διὰ τὴν διαφωνίαν, ἐκείνη δὲ προσέχειν.

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica Fragment 13, line 11

εἰ οὖν διὰ τὴν διαφωνίαν ἐνταῦθα ἄπιστος ὁ Πατροκλῆς, καίτοι παρὰ χιλίους σταδίους τῆς διαφορᾶς οὔσης, πόσῳ χρή μᾶλλον ἀπιστεῖν ἐν οἷς παρὰ ὀκτακισχιλίους ἡ διαφορά ἐστίν, πρὸς δύο καὶ ταῦτα ἄνδρας συμφωνούντας ἀλλήλοις, τῶν μὲν λεγόντων τὸ τῆς Ἰνδικῆς πλάτος διςμυρίων σταδίων, τοῦ δὲ μυρίων καὶ διςχιλίων;

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica Fragment 14, line 3

Strabo, 71 ὥστ' οὐδ' ἐκείνο εὖ λέγει τὸ ἐπειδὴ οὐκ ἔχομεν λέγειν οὔθ' ἡμέρας μεγίστης πρὸς τὴν βραχυτάτην λόγον οὔτε γνώμονος πρὸς σκιάν ἐπὶ τῇ παρωρείᾳ τῇ ἀπὸ Κιλικίας μέχρι Ἰνδῶν, οὐδ' εἰ ἐπὶ παραλλήλου γραμμῆς ἐστίν ἡ λόξωσις, ἔχομεν εἰπεῖν, ἀλλ' ἐὰν ἀδιόρθωτον, λοξὴν φυλάξαντες, ὡς οἱ ἀρχαῖοι πίνακες παρέχουσι.

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica Fragment 15, line 2

ὄρα γάρ, εἰ τοῦτο μὲν μὴ κινοίη τις τὸ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς τὰ μεσημβρινὰ ἀνταίρειν τοῖς κατὰ Μερὸν, μηδὲ τὸ διάστημα τὸ ἀπὸ Μερὸς ἐπὶ τὸ στόμα τὸ κατὰ τὸ Βυζάντιον, ὅτι ἐστὶ περὶ μυρίους σταδίους καὶ ὀκτακισχιλίους, ποιοίη δὲ τριςμυρίων τὸ ἀπὸ τῶν μεσημβρινῶν Ἰνδῶν μέχρι τῶν ὀρῶν, ὅσα ἂν συμβαίη ἄτοπα.

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica Fragment 17, line 1

Strabo, 77 νυνὶ μὲν οὖν ὑποθέμενοι τὰ νοτιώτατα τῆς Ἰνδικῆς ἀνταίρειν τοῖς κατὰ Μερὸν, ὅπερ εἰρήκασιν πολλοὶ καὶ πεπιστεύκασιν, ἐπεδείξαμεν τὰ συμβαίνοντα ἄτοπα.

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica Fragment 17, line 14

τὸ μὲν οὖν κατὰ Μερὸν κλίμα Φίλωνά τε τὸν συγγράψαντα τὸν εἰς Αἰθιοπίαν πλοῦν ἱστορεῖν, ὅτι πρὸ πέντε καὶ τεσσαράκοντα ἡμερῶν τῆς θερινῆς τροπῆς κατὰ κορυφὴν γίνεται ὁ ἥλιος, λέγειν δὲ καὶ τοὺς λόγους τοῦ γνώμονος πρὸς τε τὰς τροπικὰς σκιάς καὶ τὰς ἰσημερινάς, αὐτὸν τε Ἐρατοσθένη συμφωνεῖν ἔγγιστα τῷ Φίλωνι, τὸ δ' ἐν τῇ Ἰνδικῇ κλίμα μηδὲνα ἱστορεῖν, μηδ' αὐτὸν Ἐρατοσθένη.

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica Fragment 17, line 18

εἰ δὲ δὴ καὶ αἱ ἄρκτοι ἐκεῖ ἀμφοτέραι, ὡς οἴονται, ἀποκρύπτονται, πιστεύοντες τοῖς περὶ Νέαρχον, μὴ δυνατόν εἶναι ἐπὶ ταύτου παραλλήλου κεῖσθαι τὴν τε Μερὸν καὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς.

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica Fragment 21, line 4

βουλόμενος γάρ βεβαιοῦν τὸ ἐξ ἀρχῆς, ὅτι οὐ μεταθετέον τὴν Ἰνδικὴν ἐπὶ τὰ νοτιώτερα, ὥσπερ Ἐρατοσθένης ἀξιοῖ, σαφὲς ἂν γενέσθαι τοῦτο μάλιστα φησὶν ἐξ ὧν αὐτὸς ἐκείνος προφέρεται· τὴν γὰρ τρίτην μερίδα κατὰ τὴν βόρειον πλευρὰν εἰπόντα ἀφορίζεσθαι ὑπὸ τῆς ἀπὸ Κασπίων πυλῶν ἐπὶ τὸν Εὐφράτην γραμμῆς σταδίων μυρίων οὔσης, μετὰ ταῦτα ἐπιφέρειν

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

ὅτι τὸ νότιον πλευρὸν τὸ ἀπὸ Βαβυλῶνος εἰς τοὺς ὄρους τῆς Καρμανίας μικρῶ πλειόνων ἐστὶν ἢ ἐννακισχιλίων, τὸ δὲ πρὸς δύσει πλευρὸν ἀπὸ Θαψάκου παρὰ τὸν Εὐφράτην ἐστὶν εἰς Βαβυλῶνα τετρακισχίλιοι ὀκτακόσιοι στάδιοι, καὶ ἐξῆς ἐπὶ τὰς ἐκβολὰς τρισχίλιοι, τὰ δὲ πρὸς ἄρκτον ἀπὸ Θαψάκου, τὸ μὲν ἀπομεμέτρηται μέχρι χιλίων ἑκατόν, τὸ λοιπὸν δ' οὐκέτι.

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica Fragment 24, line 17

ὑποθέσεις ταύτας τὴν διὰ Κασπίων πυλῶν μεσημβρινὴν γραμμὴν ἐπὶ τοῦ διὰ Βαβυλῶνος καὶ Σούσων παραλλήλου δυσμικωτέραν ἔχειν τὴν κοινὴν τομὴν τῆς κοινῆς τομῆς τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου καὶ τῆς ἀπὸ Κασπίων πυλῶν καθηκούσης εὐθείας ἐπὶ τοὺς ὄρους τοὺς τῆς Καρμανίας καὶ τῆς Περσίδος πλείοσι τῶν τετρακισχιλίων καὶ τετρακοσίων· σχεδὸν δὲ τι πρὸς τὴν διὰ Κασπίων πυλῶν μεσημβρινὴν γραμμὴν ἡμίσειαν ὀρθῆς ποιεῖν γωνίαν τὴν διὰ Κασπίων πυλῶν καὶ τῶν ὄρων τῆς τε Καρμανίας καὶ τῆς Περσίδος, καὶ νεύειν αὐτὴν ἐπὶ τὰ μέσα τῆς τε μεσημβρίας καὶ τῆς ἰσημερινῆς ἀνατολῆς· ταύτῃ δ' εἶναι παράλληλον τὸν Ἰνδὸν ποταμόν, ὥστε καὶ τοῦτον ἀπὸ τῶν ὄρων οὐκ ἐπὶ μεσημβρίαν ῥεῖν, ὥς φησιν Ἐρατοσθένης, ἀλλὰ μεταξὺ ταύτης καὶ τῆς ἰσημερινῆς ἀνατολῆς, καθάπερ ἐν τοῖς ἀρχαίοις πίναξι καταγέγραπται.

Hipparchus Astron., Geogr., Fragmenta geographica Fragment 25, line 2

Strabo, 87 χωρὶς δὲ τούτων κάκεινος εἴρηκεν, [φησὶν], ὅτι ῥομβοειδὲς ἐστὶ τὸ σχῆμα τῆς Ἰνδικῆς· καὶ καθάπερ ἡ ἑωθινὴ πλευρὰ παρέσπασται πολὺ πρὸς ἑω, καὶ μάλιστα τῷ ἐσχάτῳ ἀκρωτηρίῳ, ὃ καὶ πρὸς μεσημβρίαν προπίπτει πλέον παρὰ τὴν ἄλλην ἡύονα, οὕτω καὶ ἡ παρὰ τὸν Ἰνδὸν πλευρά.

4.33 Nicander

Nicander of Colophon (Νίκανδρος ὁ Κολοφώνιος, 2nd century BC), Greek poet, physician and grammarian, was born at Claros, (Ahmetbeyli, Izmir in modern Turkey), near Colophon, where his family held the hereditary priesthood of Apollo. He flourished under Attalus III of Pergamum. (From Wikipedia³⁰)

Nicander Epic., Theriaca (0022: 001) “Nicander. The poems and poetical fragments”, Ed. Gow, A.S.F., Scholfield, A.F. Cambridge: Cambridge University Press, 1953.

Nicander Epic., Theriaca Line 890

εἰ δέ, σύ γ' ἐκ ποίης ἀβληχρέος ἐγχλοα ῥίζαν θηρὸς ἰσαζομένην τμηξάις ἰοιδεῖ κέντρῳ σκορπίου, ἢ σίδας Ψαμαθηίδας, ἅς τε Τράφεια Κῶπαί τε λιμναῖον ὑπεθρέψαντο παρ' ὕδαρ, ἢ περ Σχοινῆός τε ῥόος Κνώποιό τε βάλλει, ὅσσα θ' ὑπ' Ἰνδὸν χεῦμα πολυφλοίσβοιο Χοάσπεω

30. <http://en.wikipedia.org/wiki/Nicander>.

4.34. ARISTOPHANES OF BYZANTIUM

πιστάκι' ἀκρεμόνεσσιν ἀμυγδαλόεντα πέφανται· καυκαλίδας, σὺν δ' αἰθὰ βάλοις φιμάδεα
μύρτα, κάρφεά θ' ὀρμίνιοι καὶ ἐκ μαράθου βρυόεντος, εἰρύσιμόν τε καὶ ἀγροτέρου σπερμειῖ
ἐρεβίνθου σὺν χλοεροῖς θάμνοισι βαλὼν βαρυῶδεα ποίην.

4.34 Aristophanes of Byzantium

Aristophanes (Greek: Ἀριστοφάνης) of Byzantium (c. 257 BC – c. 185–180 BC) was a Greek scholar, critic and grammarian, particularly renowned for his work in Homeric scholarship, but also for work on other classical authors such as Pindar and Hesiod. Born in Byzantium about 257 BC, he soon moved to Alexandria and studied under Zenodotus, Callimachus, and Dionysius Iambus. He succeeded Eratosthenes as head librarian of the Library of Alexandria at the age of sixty. (From Wikipedia³¹)

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis (0644: 001) “Excerptorum Constantini de natura animalium libri duo. Aristophanis historiae animalium epitome”, Ed. Lambros, S.P. Berlin: Reimer, 1885; Commentaria in Aristotelem Graeca, suppl. 1.1. Chapter 2, section 46, line 6

Ὅτι τῶν στενῶν ἐπέκεινα, φησί, τῶν συγκλειόντων τὴν Ἀραβίαν καὶ τὴν ἀπέναντι χώραν
νῆσοι κεῖνται σποράδες, ταπειναὶ πᾶσαι, μικραὶ τῷ μεγέθει, τὸ πλῆθος ἀμύθητοι, καρπὸν
οὐδένα γεννῶσαι πρὸς τὸν βίον, οὔτε ἡμέρον οὔτε ἄγριον, ἀπέχουσιν μὲν τῆς εἰρημένης ἡπείρου
σταδίους ὡς ἐβδομήκοντα, τετραμμέναι δὲ πρὸς τὸ δοκοῦν πέλαγος παρεκτείνειν τὴν Ἰνδικὴν
καὶ Γεδρωσίαν.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 59, line 5

οὔτοι κομῆται μὲν εἰσι καὶ πάγωνας φέρουσιν ἑξασιούς, κύνας δὲ τρέφουσι πολλοὺς καὶ
μεγάλους, ὁμοίως τοῖς Ἰρκανοῖς, καὶ τοὺς ἐπιφοιτῶντας αὐτῶν τῇ χώρᾳ Ἰνδικούς βόας δι'
αὐτῶν θηρῶσι, πλῆθος ἐπιφαινομένους ἀμύθητον ἀπὸ τροπῶν χειμερινῶν ἕως μέσου χειμῶνος·
εἴτα καὶ τὰς τῶν κυνῶν θηλείας ἀμέλγοντες τῷ γάλακτι τρέφονται, καὶ ἐξ ἄλλων δὲ θήρας
ζώων.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 67, line 1

Εἰσὶ δὲ ἐν τοῖς Ἰνδικοῖς οἱ Πυγμαῖοι καλοῦνται.

31. http://en.wikipedia.org/wiki/Aristophanes_of_Byzantium.

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani
Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 67, line 2

χώρα δ' αὐτῶν πολλή μέση ἐν τῇ Ἰνδικῇ καὶ ἄνθρωποι εἰσι μέλανες, ὥσπερ οἱ ἄλλοι Ἴνδοι καὶ ὁμόγλωσσοι ἐκείνοις, μικροὶ δὲ κάρτα, καὶ οἱ μακρότατοι αὐτῶν εἰσι πῆχυν δύο, οἱ δὲ πλείστοι πῆχεος <ένος> καὶ ἡμίσεος, ἄνδρες καὶ γυναῖκες.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani
Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 67, line 16

αὐτοὶ δὲ εἰσι σιμοὶ τε καὶ αἰσχροὶ καὶ οὐδὲν εὐκότεις τοῖς ἄλλοις Ἴνδοις.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani
Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 91, line 1

πλὴν ἐν Ἴνδοις ἐὰν ἄλλῳ τέλειος ἐλέφας χαλεπὸς ἐστὶν ἡμερωθῆναι, καὶ τὴν ἐλευθερίαν ποθῶν φονεῖ.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani
Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 91, line 4

εἰ δὲ καὶ δεσμοῖς αὐτὸν διαλάβῃς, ἔτι καὶ μᾶλλον εἰς τὸν θυμὸν ἐξάπτεται <καὶ> δουλοσύνην οὐχ ὑπομένει. ἀλλ' Ἴνδοι καὶ τροφαῖς κολακεύουσιν αὐτὸν καὶ ποικίλοις δολέεσι πρᾶυνειν πειρῶνται.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani
Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 92, line 1

Διῶκονται οὖν παρ' Ἰνδῶν ἕνεκεν ὀδόντων, διὸ τοὺς νωδούς πρὸ τῆς φάλαγγος ἰστᾶσιν, ὥσπερ ἀπατῶντες ὅτι οὐκ ἔχουσι τὸ ζητούμενον.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani
Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 100, line 1

Ἀποτρέπονται δὲ τὴν ἐν Ἴνδοις ἄρουραν <τὴν> κεκλημένην Φα- λάκραν καὶ οὐκ ἐσθίουσι.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani
Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 101, line 1

Ὅταν μέντοι ὑπὸ Ἰνδῶν ἀναγκάζωνται αὐτόρριζα δένδρα ἐκ- σπάσαι, οὐ πρότερον ἐπιχειροῦσι πρὶν διασεῖσαι, εἰ ἄρα ἀνατραπῆναι οἶόν τ' ἐστὶν ἢ μή.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani
Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 110, line 10

εἰ μὲν οὖν ἔμελλον τὴν ἐν Ἴνδοις αὐτῶν εὐπείθειαν καὶ εὐμαθίαν ἢ τὴν ἐν Αἰθιοπία ἢ τὴν ἐν Λιβύῃ γράφειν, ἴσως καὶ μῦθον ἐδόκουν τινὰ συμπλάσας κομπάζειν, εἴτα ἐπὶ φήμῃ τοῦ θηρίου τῆς φύσεως καταψεύδεσθαι· ὅπερ ἐχρῆν δρᾶν φιλοσοφούντα ἄνδρα ἥκιστα καὶ ἀληθείας ἐραστὴν διάπυρον.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani
Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 111, line 1

Οἱ Ἴνδοι τέλειον μὲν ἐλέφαντα συλλαβεῖν ῥαδίως ἀδυνατοῦσιν (οὔτε γὰρ τοσαῦτα δράσουσιν οὔτε τοσοῖδε παρέσσονται), εἰς δὲ τὰ ἔλη φοιτῶντες τὰ γειτνιῶντα τῷ ποταμῷ, εἴτα μέντοι

4.34. ARISTOPHANES OF BYZANTIUM

λαμβάνουσιν αὐτῶν τὰ βρέφη.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 113, line 1

Ἐν Ἰνδοῖς, ὡς ἀκούω, ἐλέφας καὶ δράκων ἐστὶν ἔχθιστα.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 115, line 6

οἱ τοίνυν πηρωθέντες τὸν ἕτερον ἐπὶ μετώπου ἐστάσι, τῶν λοιπῶν προβάλ- λομένων αὐτούς, ἵνα οἱ μὲν ὑποδέχωνται τὴν πρώτην ὀρμὴν, οἱ δὲ ἀμύνωσιν ἀκεραίῳ τῇ τῶν ὀδόντων ῥώμῃ καὶ ἰσοπαλεῖ, ἴσως δὲ τῶν Ἰνδῶν καὶ κατα- φιλοσοφοῦντες καὶ ἐπιδεικνύντες αὐτοῖς ὅτι ἄρα οὐχ ὑπὲρ μεγάλου τοῦ ἄθλου κινδυνεύοντες ἤκουσι.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 117, line 1

Πῶρου τοῦ Ἰνδῶν βασιλέως ὁ ἐλέφας ἐν τῇ πρὸς Ἀλέξανδρον μάχῃ τετρωμένου πολλὰ ἡσυχῇ καὶ μετὰ φειδούς τῇ προβοσκίδι ἐξήρει τὰ ἀκόντια, καὶ μέντοι καὶ αὐτὸς τετρωμένος πολλὰ οὐ πρότερον εἶξε, πρὶν ἢ συνιέναι, ὅτι ἄρα ὁ δεσπότης αὐτῷ [ὅτι] διὰ τὴν ῥοὴν τοῦ αἵματος τὴν πολλὴν παρεῖται καὶ ἐκθνήσκει.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 124, line 7

ταύτῃ τοίνυν ἡ τοῦ τρέφοντος αὐτὸν γυνὴ παιδίον ἔτυχε τεκοῦσα πρὸ ἡμερῶν τριάκοντα καὶ παρακατέθετο φωνῇ τῇ Ἰνδῶν, ἧς ἀκούουσιν ἐλέφαντες.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 125, line 6

καὶ τοῦτο μὲν Ἰνδικὸν τὸ ἔργον, ἐκεῖθεν δὲ ἐξεφοίτησε δεῦρο· ἀκούω δὲ καὶ ἐπὶ Τόπου Ῥω- μαίων βασιλεύοντος, ἀνδρὸς καλοῦ καὶ ἀγαθοῦ, ἐν τῇ Ῥώμῃ ταῦτό γεγονέναι.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 126, line 1

Τῶν τεθηραμένων ἐλεφάντων ἰῶνται τὰ τραύματα οἱ Ἰνδοὶ τὸν τρόπον τοῦτον.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 127, line 14

κατασπείρει δὲ καὶ τοῦ χώρου ἔνθα αὐλίζεται τῶν ἀνθέων πολλά, ἡδυσμένον αἰρεῖσθαι γλιχόμενος ὕπνον. Ἰνδοὶ δὲ ἐλέφαντες ἦσαν ἄρα πηχῶν ἑννέα τὸ ὕψος, πέντε δὲ τὸ εὖρος.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 128, line 1

Τὸν Ἰνδῶν βασιλέα προϊόντα ἐπὶ δίκας προσκυνεῖ ὁ ἐλέφας πρῶτος, δεδιδαγμένος τοῦτο, καὶ μάλα γε δρῶν μνημόνως τε καὶ εὐπειθῶς αὐτό.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 128, line 10

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

τέσσαρες δὲ καὶ εἴκοσι τῷ βασιλεῖ φρουροὶ παραμένουσιν ἐλέφαντες ἐκ διαδοχῆς, ὥσπερ οὖν οἱ φύλακες οἱ λαμπροί, καὶ αὐτοῖς παίδευμα τὴν φρουρὰν οὐ κατανυστάζειν· διδάσκονται γὰρ σοφία τινὶ Ἰνδικῇ καὶ τοῦτο.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 132, line 1

Ὅτι ἡ τῶν Ἰνδῶν γῆ τοὺς ἐλέφαντας ἔχει τοὺς μεγίστους καὶ ὑπερφρεστάτους, ὡς ἐκ τῶν ὀδόντων δῆλον τῶν ἐκεῖθεν κομιζομένων, καὶ δὴ καὶ τοὺς ταυρελέφαντας λεγομένους.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 156, line 1

Λέοντες δὲ ἐν Ἰνδοῖς οὐ γίνονται μέγιστοι.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 196, line 3

αἱ δὲ Ἵρκανοὶ κύνες λεοντό- ποδὲς εἰσιν, εὐστερνοὶ καὶ εὐτράχηλοι, βρυχοειδὲς ὑλακτοῦσαι καὶ πρὸς λέοντας μαχόμεναι· ἀπὸ δὲ Ἰνδῶν εἰς Ἵρκανίαν τὸ γένος ἦλθεν.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 205, line 1

Ἐν δὲ τοῖς Ἰνδικοῖς κύνες εἰσὶ μέγιστοι πάσης γῆς· καὶ πρὸς λέοντας ἕτεροι μὲν κύνες οὐ τολμῶσι προσιέναι, οἱ δὲ Ἰνδικοὶ κύνες ὁμόσε χωροῦσι, καὶ μάχονται αὐτοῖς, καὶ πολλὰ κακὰ κύνων Ἰνδικὸς λέοντι παρασχὼν ἡσᾶται ὑπὸ λέοντος.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 205, line 5

ἦδη μέντοι τινὰ εἶδον λέοντα ὑπὸ κυνὸς Ἰνδικοῦ διαφθαρέντα ἐν θήρᾳ.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 269, line 1

Εἰσὶ γε μὴν κατὰ τὴν Ἰνδίαν παρδάλεις ξανθαί τε καὶ κυαναὶ καὶ μέλαιναι καὶ λευκαί, πάσας δὲ γραμμαῖ τινες εὐκυκλοὶ τε καὶ μέλαιναι περιβάλλουσιν.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 271, line 2

ἄνθρωπος γὰρ Ἰνδὸς διὰ Γάζης, φησί, τῆς ἐμῆς διῆλθε, δύο θῆρας τοιούσδε κομίζων δῶρον τῷ βασιλεῖ· Ἀναστάσιος δὲ οὗτος ἦν· καὶ ἦσαν μέγεθος μὲν κατὰ κάμηλον, τὸ δέρμα δὲ ἀτεχνῶς πάρδαλις· εὐρεῖα χιλή, [πόδες, μέγεθος μὲν κατὰ κάμηλον] πόδες μακροί, ἥσσονες δὲ οἱ ὀπίσθιοι καὶ ὑποκλάζειν ἄρα δοκοῦντες.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 273, line 8

καὶ κυνὶ δὲ Ἰνδῷ τίγρις καὶ ἵπποι τόνδε τὸν τρόπον ὄνοις συνῆλθον.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 278, line 1

4.34. ARISTOPHANES OF BYZANTIUM

Ἡ καμηλοπάρδαλις παρ' Ἰνδοῖς ἐστὶ μάλιστα γινομένη· ἔστι δὲ τὰ μὲν ἄλλα ἔλαφος μεγίστη <εἰς> καμήλου ὕψος ἀφικνουμένη, διαφέρει δὲ τῷ τε ἄκერως εἶναι καὶ τὸν αὐχένα μήκιστον καὶ ὑπὲρ τὴν ἀναλογίαν τοῦ λοιποῦ σώματος ἔχειν εἰς ὕψος ἀνορθούμενον, καὶ τὴν δορὰν ἅπασαν ἀπὸ κεφαλῆς ἄκρας ἕως ποδῶν ἐσχάτων παρδάλει μάλιστα τῇ ποικιλίᾳ παρεμφερεστάτην, καὶ τοὺς ἐμπροσθεν πόδας τῶν ὀπισθίων ὑψηλοτέρους.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 280, line 1

Ὅτι τοὺς πάνθηρας ἐν Ἰνδίᾳ θηρεύουσι τίγρεις.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 282, line 1

Καὶ ἄλλος δὲ πάνθηρ ἐστὶν ἐν Ἰνδοῖς μύρου κατάπλεως· ὅς γε ἡνίκα αὐτὸν ὁ λιμὸς αἰρεῖ, τοῦ φωλεοῦ πρόεισι, καὶ ξυνέρχεται τοῖς θηρίοις· τὰ δὲ τῇ ὁσμῇ κηλούμενα ἡδέως τούτῳ συνομιλεῖ· πρὸς δὲ καὶ ἡρέμα θέλγων ἄγει πρὸς τὴν εὐνὴν, καὶ αὐτὰ συλλαμβάνων ἐσθίει.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 365, line 2

καὶ ἄλλο δὲ τι μυῶν γένος τῇ τῶν Ἰνδῶν ἐντρέφεται γῇ, ὣν ἡδίστη μὲν πνοὴ τοῦ σώματος ἔξεισι, τὸ χρῆμα δὲ περιμάχητόν ἐστι τοῖς πολίταις· τούτου γὰρ ἕνεκα καὶ νεκρὸν ἂν ἴδοις μὺν ἐσθῆτι † πλομίου φιλοτίμως καθαπτόμενον.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 467, line 3

ἀμέλει τοι καὶ Ἰνδοὶ μακρὰν ἀνύοντες τρίβον καθάπερ ὁδηγοῖς ταύταις ἑαυτοὺς ἐπιτρέφαντες εἶτα τὴν χρυσίτιν ἐκεῖθεν τῶν μυρμήκων ἀποσυλῶσι γῆν.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 474, line 1

Ἐν Ἰνδοῖς ταπίδες γίνονται κάλλιστα καὶ ποικιλώταται ἐκ τῶν ἐρίων ὧν αἱ κάμηλοι φέρουσιν [ἐξ αὐτῶν] ἐπὶ <τε> τῆς κεφαλῆς καὶ ἐπὶ τῶν μηρῶν ἐπὶ τε τοῦ ἄλλου σώματος παντός.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 474, line 4

καὶ οὐ βέβαπται· παντο- δαπὰ δὲ ἄνθη τῶν ἐρίων φύουσιν αἱ <κάμη>λοι αἱ Ἰνδικαὶ πλὴν πορφυροειδοῦς καὶ πρασίνου καὶ φοικνικίνου, τὰ δ' ἄλλα ἔχουσιν ἐρίων χρώματα αὐτοφυῆ αἱ κάμη<ηλοι>· αἱ μὲν γὰρ σφόδρα λευκὰ φέρουσι τὰ ἔρια αὐτόθι, αἱ δὲ σφόδρα μέ<λα>να καὶ μαλακά, αἱ δὲ κυάνεα, αἱ δὲ ὥσπερ ὄνου τὴν χρ<όαν>, αἱ δὲ πέλια, αἱ δὲ πυρρά, αἱ δὲ κροκοειδῆ, αἱ δὲ ἀτρέμας ὑπόχλωρα· ὥς δὲ τὸ σύμπαν εἰπεῖν, ἔρια παντοδαπὰ φύουσιν Ἰνδικαὶ κάμηλοι πλὴν τῶν εἰρημένων χρωμάτων.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 474, line 15

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

οἶμαι δὲ ὅτι οὐδαμοῦ γῆς γίνονται παρομοίας φύσεως, οὐδὲ ζῶα ποικιλώτερα καὶ ὀρθότερα ἔχουσι ταπίδες † ἢ ἐν Ἰνδοῖς τὰ ἐκ τῶν καμήλων ποιοῦσιν ἔρια.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 474, line 17

ἄγουσι δὲ καὶ εἰς Πέρσας τούτων τῶν ταπίδων οἱ ἔμποροι [καὶ] οἱ Βάκτριοι καὶ οἱ ἄλλοι οἱ ἐμπορευόμενοι εἰς τὴν Ἰνδικὴν γῆν ἐπὶ τῶν καμήλων, καὶ πωλοῦσι τὰς τοιαύτας διαγεγραμμένας ταπίδας μάλα τιμίας, καὶ περὶ πολλοῦ αὐτὰς ποι- οῦνται οἱ Πέρσαι, καὶ ὁ Ἰνδῶν βασιλεὺς δῶρα πέμπει τῷ Περσῶν βασιλεῖ τούτων τῶν ταπίδων.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 474, line 20

εἰσὶ δὲ καὶ ἀπὸ τῶν προβάτων ταπίδες ἐν τοῖς Ἰνδοῖς γινόμεναι, οἷαί περ ἐν Αἰγύπτῳ καὶ Σάρδεσι ποιοῦνται, καὶ βάπτουσι κάκεινα καὶ ποικίλλουσιν, ἀλλ' οὐδὲν ὁμοίᾳ εἰσι ταῖς ἐκ τῶν καμήλων ταπίσι γι- νομέναις.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 503, line 3

ἐπεπίστευτο δὲ πρὸ τοῦδε τοῦ ζῴου τῆς Ἰνδῶν μόνης φωνῆς ἐπαῖειν τοὺς ἐλάφους.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 518, line 1

Ὅτι τὰ ἐν Ἰνδοῖς πρόβατα οὐρὰς πήχεως λέγει Κτησίας ἔχειν.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 539, line 2

ἐν Ἰνδοῖς δὲ Κωῦθὰ τις κώμη λέγεται, καὶ ταῖς αἰῖ ταῖς <ἐπιχω>ρί<ο>ις οἱ νομεῖς ἰχθύας ξηροὺς παραβάλλουσιν ὡς χιλόν.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 544, line 1

Προβατεῖται <δὲ Ἰνδῶν ὅποῖαι μαθεῖν ἄξιον.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 544, line 4

τὰς αἰγας [δὲ] καὶ τὰς οἷς ὄνων <τῶν μ>εγίστων μείζονας ἀκούω καὶ ἀποκύνει τέτταρα ἐκάστην· μεί<ω γε μὴν> τῶν τριῶν οὔτε αἰῖ Ἰνδικὴ οὔτ' ἂν οἷς ποτὲ τέκοι.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 553, line 1

Ἔεται Ἰνδῶν ἡ γῆ δ<ιὰ τοῦ ἥρος μέλιτι> ὑγρῶ καὶ ἔτι πλέον ἡ Πραισίων χώρα, ὅπερ οὖν ἐμπ<ῖπ>τον <ταῖς πό>αις καὶ ταῖς τῶν ἐλείων καλάμων κόμαις, νομὰς τοῖς <βουσί> καὶ τοῖς προβάτοις παρέχει θαυμαστάς, καὶ τὰ μὲν ζ<ῶα ἐστιᾶ>ται τήνδε τὴν ἡδίστην τροφήν· μάλιστα γὰρ ἐνταῦθα οἱ νο<μεῖς ἄγους>ιν αὐτά, ἔνθα καὶ μᾶλλον ἡ δρόσος ἡ γλυκεῖα κάθηται πε<σοῦσα, ἀντεφεστιᾶ δὲ καὶ τὰ ζῶα τοὺς νομέας· ἀμέλγουσι γὰρ περιγλύκιστον γάλα, καὶ οὐ δέονται ἀναμίξαι αὐτῷ μέλι, ὅπερ δρῶσιν Ἕλληνες.

4.35. CALLISTHENES

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 556, line 1

Τὰ πρόβατα τῶν Ἰνδῶν αἱ τε αἰγες μεί- ζονες ὄνων τῶν μεγίστων εἰσὶ καὶ <τίκτει ἐκά>στη οἷς καὶ αἰξ ὥς ἐπὶ τὸ πολὺ· τριῶν δὲ <οὔτε τις οἷς οὔτε αἰξ> ἐλάσσω τίκτει· αἱ δὲ πλεῖσται τέ<σσα>ρα.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 572, line 2

Ἴς οὔτε ἡμερός ἐστίν οὔτε ἄγριος ἐν τῇ Ἰνδικῇ ὅλως γῆ, οὐδ' ἂν φάγοι Ἰνδῶν οὐδεὶς ὑὸς κρέας οὐδὲν περ μάλλον ἢ ἀνθρώπου.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 597, line 1

Οἱ δὲ Ἀραβες οἱ πρὸς τῷ ὄρει τῆς Ἰνδικῆς ὄντες ὑψαύχενοί εἰσι καὶ ποδώκεις, ὀξεῖς καὶ κού- φως πηδῶντες, γοργοὶ τὸ βλέμμα, πρὸς τὸ καῦμα μὴ ἀπαγορεύοντες, ἵπποτυφίας γέμοντες ἀληθῶς.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 612, line 1

Ἴππους μονοκέρους γῆ Ἰνδικὴ τίκτει.

Aristophanes Gramm., Aristophanis historiae animalium epitome subjunctis Aeliani Timothei aliorumque eclogis Chapter 2, section 623, line 1

Ἴππον δὲ ἄρα Ἰνδὸν κατασχεῖν καὶ ἀνακροῦσαι προπηδῶντα καὶ ἐκθέοντα οὐ παντὸς ἦν, ἀλλὰ τῶν ἐκ παιδὸς ἱππείαις πεπαιδευμένων.

4.35 Callisthenes

Callisthenes of Olynthus (in Greek Καλλισθένης; ca. 360-328 BC) was a Greek historian. He was the son of Hero (niece of Aristotle), the daughter of Proxenus of Atarneus and Arimneste, which made him the great nephew of Aristotle by his sister Arimneste. They first met when Aristotle tutored Alexander the Great. Through his great-uncle's influence, he was later appointed to attend Alexander the Great on his Asiatic expedition as a professional historian.

Fate of Callisthenes

During the first years of Alexander's campaign in Asia, Callisthenes showered praises upon the Macedonian conqueror. As the king and army penetrated further into Asia, however, Callisthenes' tone began to change. He began to sharply criticize Alexander's adoption of Persian customs, with special

CHAPTER 4. HELLENISTIC GREEK SOURCES

scorn for Alexander's growing desire that those who presented themselves before him perform the servile ceremony of proskynesis. Callisthenes was later implicated in a treasonous conspiracy and thrown into prison, where he died from torture or disease.

His death was commemorated in a special treatise (Callisthenes or a Treatise on Grief) by his friend Theophrastus, whose acquaintance he made during a visit to Athens. There are nevertheless several different accounts of how he was executed. Crucifixion is the method suggested by Ptolemy, but Chares of Mytilene and Aristobulos agree that he died of natural causes while in prison.[1] Writings of Callisthenes

Callisthenes wrote an account of Alexander's expedition up to the time of his own execution, a history of Greece from the Peace of Antalcidas (387) to the Phocian war (357), a history of the Phocian war, and other works, all of which have perished. However, his account of Alexander's expedition was preserved long enough to be mined as a direct or indirect source for other histories that have survived. Polybius scolds Callisthenes for his poor descriptions of the battles of Alexander.[2]

A quantity of the more legendary material coalesced into a text known as the Alexander Romance, the basis of all the Alexander legends of the Middle Ages, originated during the time of the Ptolemies, but in its present form belongs to the 3rd century AD. Its author is usually known as pseudo-Callisthenes, although in the Latin translation by Julius Valerius Alexander Polemius (beginning of the 4th century) it is ascribed to a certain Aesopus; Aristotle, Antisthenes, Onesicritus and Arrian have also been credited with the authorship.

There are also Syrian, Armenian and Slavonic versions, in addition to four Greek versions (two in prose and two in verse) in the Middle Ages (see Krumbacher, *Geschichte der byzantinischen Literatur*, 1897, p. 849). Valerius's translation was completely superseded by that of Leo, arch-priest of Naples in the 10th century, the so-called *Historia de Preliis*. (From Wikipedia³²)

Callisthenes Hist., Testimonia (0534: 001) "FGrH #124". Volume-Jacoby'-T 2b,124,T, fragment 7, line 74

... ἀποθανεῖν δὲ αὐτὸν οἱ μὲν ὑπ' Ἀλεξάνδρου κρεμασθέντα λέγουσιν (Ptolem. 138 F 17), οἱ δὲ ἐν πέδαις δεδεμένον καὶ νοσήσαντα (Aristob. 139 F 33)· Χάρης (125 F 15) δὲ μετὰ τὴν

32. <http://en.wikipedia.org/wiki/Callisthenes>

4.36. DURIS OF SAMOS

σύλληψιν ἑπτὰ μῆνας φυλάττεσθαι δεδεμένον, ὡς ἐν τῷ συνεδρίῳ κριθείη παρόντος Ἀριστοτέλους, ἐν αἷς δὲ ἡμέραις Ἀλέξανδρος ἐν Μαλλοῖς Ὀξυδράκαις ἐτρώθη περὶ τὴν Ἰνδίαν, ἀποθανεῖν ὑπέρπαχυν γενόμενον καὶ φθειριάσαντα.

4.36 Duris of Samos

Duris of Samos (Greek Δοῦρις); c. 350 BC – after 281 BC) was a Greek historian and was at some period tyrant of Samos.

Writings

Duris was the author of a narrative history of events in Greece and Macedonia from the battle of Leuctra (371 BC) down to the death of Lysimachus. This work, like all his others, is lost; over thirty fragments are known through quotations by other authors, including Plutarch. It was continued in the Histories of Phylarchus. Other works by Duris included a life of Agathocles of Syracuse, which was a source for books 19–21 of the Historical Library of Diodorus Siculus. Duris also wrote historical annals of Samos arranged according to the lists of the priests of Hera; and a number of treatises on literary and artistic subjects. List of Works

For the surviving fragments see the editions by Müller and Jacoby.

Histories (also listed as Macedonica and Hellenica; 33 fragments) On Agathocles (also listed as Libyca; 13 fragments) Annals of Samos (22 fragments) On Laws (2 fragments) On Games (4 fragments) On Tragedy (and perhaps On Euripides and Sophocles; 2 fragments) On Painters (2 fragments) On Sculpture (1 fragment) (From Wikipedia³³)

Duris Hist., Fragmenta (1339: 005) “FHG 2”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 71, line 2

Etym. M. v. Θώραξ: Δοῦρις ὁ Σάμιος ἐν τῷ Περὶ νόμων φησὶν, ὅτι Διόνυσος ἐπιστρατεύσας Ἰνδοῖς καὶ μὴ δυνάμενος αὐτοὺς χειρώσασθαι κρατῆρα οἴνου πληρώσας πρὸ τῆς χώρας αὐτῶν ἔθηκεν· οἱ δὲ ἐμφορηθέντες τοῦ πόματος, ἀσυνήθεις ὄντες, οὕτως ἐχειρώθησαν μεθυσθέντες.

33. <http://en.wikipedia.org/wiki/Duris>

Chapter 5

Roman empire, Greek and Latin sources

Contents

| | | |
|-----|-------------------------------|---|
| 2.1 | Aesopus et Aesopica | 3 |
| 2.2 | Dionysius Chalcus | 4 |

5.1 Dionysius Periegetes

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem (4174: 001) “Geographi Graeci minores, vol. 2”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1861, Repr. 1965. Section 36-42, line 2

Ὅπου δὲ τὸ πρῶτον ἐν τῇ ἀνατολῇ ἀνατέλλει τοῖς ἀνθρώποις τὸ πρὸς ἑᾶ μέρος, ἡῶν καὶ Ἰνδικὸν κα-
λεῖται τὸ κύμα ἐκεῖνο τῆς θαλάσσης, τουτέστι τὸ μέρος ἐκεῖνο τοῦ ὠκεανοῦ.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 570-579, line 17

Οὐδαμῶς γὰρ οὕτως ἐπὶ τοῖς αἰγιαλοῖς τῆς Θρακικῆς Ἀψύνθου οἱ Βιστονίδες, τουτέστιν οἱ
Θρᾷκες, τὸν ἐρίβρομον Εἰραφιώτην, τουτέστι τὸν Βάκχον τὸν ἐαφθέντα ποτὲ ἐν τῷ τοῦ Διὸς
μηρῷ, ἢ ἀπὸ πόλεως Εἰραφίας καλουμένης οὕτως λεγόμενον καλοῦσιν, ἐν τοῖς μυ-
στηρίοις
αὐτοῦ μέγαν ἦχον διεγείροντες· οὐδὲ οὕτω σὺν τοῖς παισὶν αὐτῶν κατὰ τὸν Γάγγην ποταμὸν
τὸν μελαίνας στροφὰς ἔχοντα τῷ μεγαλοήχῳ Διονύσῳ οἱ Ἴνδοι τὸν κῶμον ἄγουσιν, ὡς κατὰ
ταύτην τὴν χώ-
ραν αἱ γυναῖκες τῶν Ἀμνιτῶν τὸ εὐοῖ Βάκχε, τουτέστι τὸν ὕμνον τὸν εἰς τὰ
Διονύσια τελούμενον, λέγουσιν.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 580-588, line 13

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Τηνη- καὺτα γὰρ λοξότερος ὁ ἥλιος φέρεται καὶ τὸν ὀρίζοντα ἐκκλινόμενος, κατὰ εὐθειαν τῶν ἀκτίνων αὐτοῦ ἔρχο- μένων· μυλοειδῶς γὰρ αὐτὴν περιστρέφεται καὶ εἰς αὐτὴν ἐφορᾷ καθ' ὅλον τὸν κύκλον, ἕως ὅτου πάλιν ἔλθῃ ἐπὶ τοὺς τὰ νότια μέρη, ἡγουν τὸ ἀντικείμενον νότιον ἡμικύκλιον, κατοικοῦντας Ἰνδοὺς καὶ Αἰθίο- πας.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 620-626, line 11

Τὸ δὲ σχῆμα καὶ ἡ μορφή τῆς Ἀσίας ἐστὶν ὁ ἑνσμός, τουτέστιν ἡ ἑκτασις καὶ ἡ περιγραφὴ, τῶν ἀμφοτέρων ἡπείρων, τῆς τε Εὐρώπης καὶ Λιβύης, ὅμοιον δὲ ἐστὶ τὸ σχῆμα καὶ παραπλή- σιον κώνῳ, ὅπερ ἐστὶ σχῆμα στροβιλοειδές, κατὰ τὸ ἕτερον μέρος ἢ τὸ ἐναντίον ἐλκόμενον κατὰ μικρόν, καὶ ἀποξυνόμενον πρὸς τὸ ἔσχατον πέρας τῆς ἀνατολῆς, τῶν ἐτέρων δύο ἡπείρων πρὸς τὴν δύσιν κειμένων· ὅπου καὶ τοῦ ἐν Θήβῃ γεννηθέντος Διονύσου αἱ στήλαι περὶ τὰ ἔσχατα τοῦ ὠκεανοῦ ἴστανται ἐν τοῖς ἐσχάτοις μέρεσι τῶν Ἰνδῶν, ὅπου ὁ Γάγγης τὸ Νυσσαῖον λευκὸν ὕδωρ ἢ τὸ ἀπὸ Νύσσης κατερχόμενον ἐπὶ τὸν πλαταμῶνα κυλίνει.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 636-651, line 5

Ἀμφοτέρων δὲ τῶν δύο τούτων κόλπων ἀπειρος ἰσθμός μέσον διαχωρίζει, ἐνθα κακεῖσε εἰς πολλὰ μέρη τοῖς πεδίοις περιτεινόμενος, εἰς τὰ μέσα δὲ ἀπάσης τῆς Ἀσίας ὄρος ἐπιβέβηκεν ἀρξάμενον ἀπὸ τῆς Παμφυλίας μέχρι τῶν Ἰνδῶν, ἄλλοτε μὲν λοξὸν καὶ κυρτὸν, ἄλλοτε δὲ ὀρθότερον ἰχθῶν, Ταῦρον δὲ κα- λοῦσιν αὐτὸ, διότι ταυροφανές ἐστὶ καὶ ὀξυκέφαλον, ὥστε λοφουῖσθαι εἰς ὕψος πολυσχιδές, ὃ ἐστὶ εἰς πολλὰ μέρη διασχιζόμενον· εἰς γὰρ τὰς ἐξοχὰς αὐτοῦ κέρατα ταύρου μιμεῖται ἐνθα κακεῖσε τοῖς ἐκτεταμένοις ὄρεσιν.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 695-705, line 9

Ἐπὶ δὲ τούτῳ τῷ ἰσθμῷ τὸ ἀνατολικὸν ἔθνος κατοικεῖ τῶν Ἰβήρων (οἵτινές ποτε Ἰβηρες ἀπὸ τῆς Πυρήνης, ἡγουν τῆς ἐσπερίας ἢ δυτικῆς Ἰβηρίας ἐπὶ τὴν ἀνατολὴν παρεγένοντο, τοῖς Ἰρκανίοις ἄν- δρασι μεγάλην ἔχθραν συμβαλόντες), καὶ τὸ μέγα ἔθνος τῶν Καμαριτῶν, οἵτινές ποτε τὸν Διόνυσον ἀπὸ τοῦ πολέμου τῶν Ἰνδῶν προσδεξάμενοι ἐξενοδόχησαν, καὶ ἱερὸν χορὸν, ὃ ἐστὶ μέγαν, μετὰ τῶν Βακχῶν ἐ- στησαν, ζώματα καὶ νεβρίδας ἐπὶ τοῖς στήθεσιν αὐτῶν περιβαλόμενοι, εὖ οἱ εὖαν λέγοντες.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 887-893, line 6

Ἐπὶ γὰρ τοῖς προλεχθεῖσι παρ' ἐμοῦ εἰπόντος ἀκούσας ἐπίστασαι Ταῦρον τὸ ὄρος πᾶσαν τὴν Ἀσίαν διαχωρίζειν ἢ μέσῃ διατέμνειν μέχρι τῶν Ἰνδῶν.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 887-893, line 10

Καὶ τοῦτο μὲν τὸ ὄρος ἐν τῷ τετραπλεύρῳ τὸ βορειό- τερον ἔστω· ὁ δὲ Νεῖλος ποταμὸς τὸ ἐσπερίον ἢ δυτι- κώτερον πλευρὸν ὑπαρχέτω· τὸ δὲ ἑῶν, ἥτοι τὸ ἀνα- τολικώτερον, ὁ Ἰνδικὸς ὠκεανός· τὸ δὲ νότιον ἢ Ἐρυθρὰ θάλασσα ἢ τὸ κύμα τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης.

5.1. DIONYSIUS PERIEGETES

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1063-1079, line 15

Καὶ ταύτην μὲν πολλοὶ ποταμοὶ ἄρδουσι καὶ περισσῶς πιαίνουσιν, ἔνθα κακέϊσε ταῖς σκο-
λαιῖς προχύσεσιν ἐλαυνόμενοι· χωρὶς μὲν ἐστὶν ὁ μέγας Κόρος, χωρὶς δὲ ὁ Χόασπις, ὅς ἐστιν
ἀπὸ ῥροια τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ, Ἰνδικὸν ὕδωρ ἔλκων καὶ τὴν τῶν Σούσων γῆν παραρρέων.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1086-1106, line 4

Ἐφ' οἷσιν ἐθνέσι πρὸς τὴν ἀνατολὴν παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν οἱ νότιοι Σκύ- θαι, οἱ καὶ
Ἰνδοσκύθαι καλούμενοι, κατοικοῦσιν, ὅστις Ἰνδὸς κατεναντίον τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης κατέρχε-
ται, ταχὺν ῥοὴν ὀρθὸν ἐπὶ νότον ἐλαύνων, ἀπὸ τοῦ ὑψηλοῦ ὄρους Καυκάσου πρῶτον ἀρξάμενος.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1107-1113, line 1

Πρὸς ἀνατολὰς δὲ ἡ τῶν Ἰνδῶν ἐπέραστος γῆ ἐκτείνεται πασῶν ἐσχάτη περὶ τὰ χεῖλη, ἥτοι
τὸν αἰγιαλὸν, τοῦ ὠκεανοῦ, καθ' ἣν ὁ ἥλιος ἐπὶ τὰ τῶν θεῶν καὶ ἀνθρώπων ἔργα ἀνερχόμενος,
τουτέστιν ἀνατέλλων, πρῶταις ἀκτίσιν ἐπιλάμπει.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1114-1127, line 1

Τῶν Ἰνδῶν δὲ οἱ μὲν τοῦ χρυσοῦ μέ- ταλλα ἐργάζονται, εὐκαμπέσι μακέλλαις τὴν γῆν
σκάπτοντες, οἱ δὲ τοὺς ἐκ τοῦ λίνου κατασκευασθέντας ἰστούς ὑφαίνουσιν, οἱ δὲ τοὺς λευκοὺς
ὀδόντας τῶν ἐλε- φάντων πρισθέντας ἀποξύνουσιν, ἄλλοι δὲ ἐπὶ ταῖς προό- δοις ἢ ἐκβολαῖς τῶν
ξηροποτάμων ἢ τὴν γλαυκὸν λίθον τοῦ βηρύλλου ἢ τὸν τιμιώτατον καὶ διαυγῆ ἀδάμαντα
ἰχνεύουσιν, ἢ τὴν χλωρῶς διαυγάζουσιν ἰάσπιν, ἢ καὶ τὸν γλαυκὸν λίθον τοῦ θαλασσοειδοῦς
τοπάζου, καὶ τὴν γλυκερὰν ἀμέθυστον ἡσύχως πως καὶ μετρίως

πορφυ-

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1128-1140, line 3

Καὶ αὕτη μὲν ἡ Ἰνδία ἐπὶ ταῖς τρισσαῖς πλευραῖς ἀπάσαις οὖσαις λοξαῖς ἤρμοσεν, ὁμοία
τῷ εἶδει ῥόμβου· ἀλλὰ τὰ μὲν ἐσπέρια ὕδατα ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς γείτων ὑπάρχων διαχωρίζει,
καὶ τὸ κύμα τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης τὸ νότιον, ὁ δὲ Γάγγης εἰς τὴν ἀνατολὴν, καὶ ὁ Καύκασος
τὰ ἀρκτῶα τοῦ οὐρανοῦ μέρη.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1128-1140, line 12

Οἱ μὲν Δαρδανέες ἐγγιστα τοῦ μεγίστου καὶ ἀπείρου Ἰνδοῦ ποταμοῦ, ὅθεν ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς
ναυσίπορος ποταμὸς τὸν Ἀκεσίην ποταμὸν ἀπὸ τῶν ὑψηλῶν σκοπέλων συρόμενον εἰσδέχεται.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1152-1166, line 11

Τούτου χάριν τὴν μὲν ὁδὸν Νυ- σαίαν ἐκάλεσαν, κοσμίως δὲ καὶ ἐπιστημόνως σὺν τοῖς
υἱοῖς αὐτῶν πάντα ἐτέλεσαν τὰ μυστήρια, ὅποτε αὐτὸς τὰ ἔθνη τῶν μελάνων Ἰνδῶν ὥλεσε

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

καὶ τῶν Ἡμωδῶν ὄρων ἐπέβη, ἀφ' ὧντινων ὄρων βάσιν ὁ μέγας ῥοῦς τοῦ ἀνατολικοῦ ὠκεανοῦ φέρεται.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem (4174: 002) “Aristarchs Homerische Textkritik nach den Fragmenten des Didymos, vol. 2”, Ed. Ludwig, A. Leipzig: Teubner, 1885, Repr. 1971. Section 37, line 1

ὅπου δὲ τὸ πρῶτον ἐν τῇ ἀνατολῇ ἀνατέλλει τοῖς ἀνθρώποις τὸ πρὸς ἑὸ μέρος, ἡῶν καὶ Ἰνδικὸν καλοῦσι τὸ κύμα τῆς θαλάττης ἐκείνης – τουτέστι τὸ μέρος ἐκεῖνο τοῦ ὠκεανοῦ – .

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1073, line 2

χωρὶς μὲν ἐστὶν ὁ μέγας Κόρος, χωρὶς δὲ ὁ Χόασπις – ὅς ἐστιν ἀπόρροια ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ – Ἰνδικὸν ἔλκων ὕδωρ παραρρέων τε τὴν γῆν τῶν Σούσων – οὐδεὶς δὲ ἐξ αὐτοῦ, ὡς μυθεύεται, τοῦ Χόασπιδος πίνει, εἰ μὴ μόνος ὁ βασιλεὺς – .

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1088, line 2

πρὸς δὲ τὴν ἀνατολὴν τούτων τῶν Γεδρωσῶν – ἅπερ εἰσὶν ἔθνη – ἡ γῆ ἔλκεται τοῦ μεγακῆτος ὠκεανοῦ γείτων, ἐφ' οἷσιν ἔθνεσι πρὸς τὰς αὐγὰς παρὰ τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ οἱ νότιοι Σκύθαι – οἱ καὶ Ἰνδοσκύθαι καλοῦμενοι – κατοικοῦσιν, ὅστις Ἰνδικὸς κατέναντι τῆς ἐρυθρᾶς θαλάσσης κατέρχεται ταχὺν ῥοὺν ἐπὶ τὸν νότον ὀρθὸν ἐλαύνων, ἀπὸ τοῦ ἡνεμόεντος, ὃ ἐστὶν ὑψηλοῦ, ὄρους Καυκάσου τὸ πρῶτον ἀρξάμενος – ὅθεν καὶ ὁ Εὐφράτης κατέρχεται.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1093, line 2

δύο δὲ στόματα αὐτοῦ ὑπάρχει· μέση δὲ τῇ ἐρυθρᾷ θαλάσῃ – ὡς ἀπὸ τῶν στομάτων καὶ τοῦ ὠκεανοῦ – ποιῶν νῆσον κατέδραμεν, ἣν καὶ Παταλήνην καλοῦσιν οἱ ἄνθρωποι – οὕτως καὶ γὰρ οἱ Ἰνδοὶ Πάταλα ὀνομάζουσιν – .

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1096, line 2

ἐκεῖνος δὲ ὁ ποταμὸς πολλῶν ἀνδρῶν ἔθνη ἀποτεμένεται· δύνοντας μὲν ἐπὶ τὴν κλίσιν, ἥτοι τὴν δύσιν, τοῦ ἡλίου τοὺς τε Ὀρεΐτας καὶ Ἀριβας – Ἀριβες δὲ καὶ Ὀρεΐται οἱ αὐτοί, οἱ καὶ δυτικώτεροι ὄντες τοῦ Ἰνδοῦ – καὶ τοὺς λινᾶς χλαίνας ἔχοντας Ἀραχῶτας – οὗτοι δὲ μᾶλλον βορειότεροι τῶν Ὀρειτῶν εἰσι – καὶ τοὺς Σατραϊῆδας καὶ ὅσους παρὰ τῇ ἐξοχῇ τοῦ Παρνασσοῦ, κοινῶς δ' ὁμοῦ μάλα πάντας ἐπωνύμως Ἀριηνοὺς λέγουσιν – εἶπε καὶ γὰρ ἄνωθεν ἐρυθραίων Ἀριηνῶν – , οὐκ ἐπέραστον δὲ καὶ καλὴν γῆν κατοικοῦντες, ἀλλ' ὑπὸ τὴν πλήθουσιν λεπτῇ

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 1

πρὸς δ' ἀνατολὰς ἡ ἐπέραστος τῶν Ἰνδῶν ἐπὶκειται γῇ, πασῶν ἐσχάτη, παρὰ τοῖς χεῖλεσι τοῦ ὠκεανοῦ, καθ' ἣν ἐπὶ τῶν μακαρίων ἀνδρῶν τὰ ἔργα ὁ ἥλιος ἀνερχόμενος ταῖς πρώταις ἀκτῖσιν αὐτοῦ ἐπιφλέγει.

5.2. GALENUS

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1132, line 3

ἀλλὰ τοῖς ἐσπερίοις μὲν ὕδασι τὴν γῆν ἀποτμήγει, ὃ ἐστὶ διαχωρίζει, ὁμοῦριος, ἀντὶ τοῦ γείτων, ὃ Ἰνδὸς ὑπάρχων, καὶ τὸ κύμα τῆς ἐρυθρᾶς θαλάσσης τὸ νότιον, ὃ δὲ Γάγγης εἰς τὰς αὐγάς, καὶ ὁ Καύκασος ἐπὶ τοῖς ἀρκτώοις μέρεσι.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1137, line 2

καὶ ταύτην μὲν πολλοὶ καὶ πλούσιοι ἄνδρες κατοικοῦσιν, οὐχ ὁμώνυμοι καὶ ὁμοῦ ὄντες, ἀλλ' ἀμφοτέρωθεν κεχωρισμένοι, οἱ μὲν Δαρδανέες ἔγγιστα τοῦ ἀπείρου Ἰνδοῦ ποταμοῦ, ὅθεν ἀπὸ τῶν σκοπέλων – δηλονότι τῶν ὑψηλῶν τόπων, ἀφ' ὧν ἐστὶ κατασκοπήσασθαι – ὁ ναυσίπορος Ὑδάσπης λοξὸν συρό- μενον τὸν Ἀκεσίνην εἰσδέχεται.

Paraphrases In Dionysium Periegetam, In Dionysii periegetae orbis descriptionem
Section 1161, line 2

τούτου χάριν τὴν μὲν ὁδὸν Νυσσαίαν ἐκάλεσαν, κοσμίως δὲ καὶ ἐπιστημόνως σὺν τοῖς υἱοῖς αὐτῶν πάντα ἐτέλεσαν τὰ μυστήρια, ὅποτε αὐτὸς τὰ ἔθνη τῶν μελάνων Ἰνδῶν ὥλεσε καὶ τῶν Ἡμωδῶν ὁρέων ἐπέβη, ὑφ' ὧντινων ὁρῶν βάσιν τοῦ ἀνατολικοῦ ὠκεανοῦ ὁ μέγας ῥοῦς φέρεται.

5.2 Galenus

“” (From Wikipedia¹)

Galenus Med., De temperamentis libri iii (0057: 009) “Galenus de temperamentis libri iii”, Ed. Helmreich, G. Leipzig: Teubner, 1904, Repr. 1969. Kühn volume 1, page 618, line 6

Αἰγύπτιοι μὲν οὖν καὶ Ἀραβες καὶ Ἰνδοὶ καὶ πᾶν τὸ ξηρὰν καὶ θερμὴν χώραν ἐποικοῦν ἔθνος μελαίνας τε καὶ δυσανξεῖς καὶ ξηρὰς καὶ οὐλας καὶ κραύρας ἔχουσι τὰς τρίχας.

Galenus Med., De anatomicis administrationibus libri ix (0057: 011) “Claudii Galeni opera omnia, vol. 2”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1821, Repr. 1964. Volume 2, page 544, line 13

ἐὰν οὖν ποτ' ἰδῇς ζῶον, εἴτ' ἐξ Ἰνδίας ἢ καὶ Λι- βύης, εἴτε Σκυθίας ἤκον, ὃ μὴ πρόσθεν ἐθέασω, προσφε- ρόμενον τροφήν φρυγανώδη, μεγάλην τούτῳ καὶ τραχεῖαν ἴσθι παρεσκευα- σμένην κοιλίαν· εἰ δὲ καὶ τοὺς ἄνωθεν ὀδόντας οὐκ ἔχει, γαστέρας ἐξ ἀνάγκης τούτῳ πλείους ὑπάρχειν, ὥστ' εἰς μὲν τὴν πρώτην εὐθέως καταπίνειν τὴν νομὴν, αὐθις δ' ἐκ ταύτης ἐπανεμῶν κατεργάζεσθαι τῷ στόματι, καὶ μετὰ ταῦτα καταπίνειν αὐθις εἰς ἑτέραν γαστέρα, κἄπειτ' ἐκ ταύτης πάλιν εἰς ἑτέραν μεταβάλλειν, εἴτ' ἐξ ἐκείνης αὐθις εἰς ἄλλην.

1.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Galenus Med., De usu partium (0057: 017) “Galeni de usu partium libri xvii”, Ed. Helmreich, G. Leipzig: Teubner, 1:1907; 2:1909, Repr. 1968. Kühn volume 3, page 30, line 7

οὕτως οὖν καὶ μά- χαιραν ἀρίστην εἶναι φαμεν οὐ τὴν ἐκ κραύρου σιδή- ρου γεγενημένην, οἷος ὁ παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς ἐστὶ μάλιστα, καίτοι τάχιστα γε τέμνουσαν, ἀλλὰ τὴν εἰς τοσοῦτον ἤκουσαν σκληρότητος, ὥς μήτ' αὐτὴν θραύεσθαι ἐραδίως καὶ τέμνειν ἐτοίμως.

Galenus Med., Thrasybulus sive utrum medicinae sit an gymnasticae hygieine (0057: 033) “Claudii Galeni Pergameni scripta minora, vol. 3”, Ed. Marquardt, J., Müller, I., Helmreich, G. Leipzig: Teubner, 1893, Repr. 1967. Kühn volume 5, page 867, line 16

φημὶ δὴ σοι καθόλου περὶ τῶν ὀνομάτων οὐ μόνον τούτων ἀλλὰ καὶ τῶν ἄλλων ἀπάντων οὐδὲν ἔχειν εἰπεῖν σοφόν, ἀλλ' εἴτ' ἐκ τῆς τῶν Ἀσσυρίων εἴη φωνῆς τοῦνομα, παρὰ τῶν Ἀσσυρίων αὐτῶν μαυθάνειν χρῆναι τὸ πρᾶγμα, καθ' οὗ τὸ ὄνομα λέγουσιν, εἴτ' ἐκ τῆς τῶν Περσῶν ἢ Ἰνδῶν ἢ Ἀράβων ἢ Αἰθιοπῶν ἢ ὅλως ὠντινωνοῦν, ἐκείνων πυνθάνεσθαι.

Galenus Med., De sanitate tuenda libri vi (0057: 036) “Galeni de sanitate tuenda libri vi”, Ed. Koch, K. Leipzig: Teubner, 1923; Corpus medicorum Graecorum, vol. 5.4.2. Kühn volume 6, page 90, line 6

ὅπως οὖν ταῦτα γίνονται, χρὴ προθερμάναντα μετρίως ἀνατρίψαντά τε σινδόνι τὸ σύμπαν σῶμα κάπνεται δι' ἐλαίου τρίβειν.

Galenus Med., De sanitate tuenda libri vi Kühn volume 6, page 95, line 4

ἐπειδὴν δὲ τὰς μὲν τῷ μετὰ πλείονος ἐλαίου, τὰς δὲ τῷ μετὰ ἐλάττονος ἢ παντάπασιν ἐλαίου χω- ρίς, ἤτοι διὰ τῶν χειρῶν μόνον ἢ μετὰ κόνεως ἢ διὰ σινδόνων, καὶ τούτων ἤτοι σκληρῶν ἢ μαλακῶν γίνεσθαι διαφέρειν ἀλλήλων λέγωσι τὰς τρίψεις, αἰτίων καταρίθμησιν ποιοῦνται τῶν ἤτοι σκληρὰν ἢ μαλα- κὴν ἀπεργαζομένων τὴν τρίψιν.

Galenus Med., De sanitate tuenda libri vi Kühn volume 6, page 187, line 1

πρῶτον μὲν | οὖν ἀνατριβέσθω σινδόσιν ἐπι- πλέον ἢ πρόσθεν· ἔστωσαν δὲ καὶ σφοδρότεροι νῦν μᾶλλον ἢ πρό- σθεν αἱ τρίψεις καὶ διὰ σκληροτέρων ὀθονίων· εἰ δὲ καὶ χειρίδας ἑαπτάς περιθέμενοι ταῖς χερσὶν οἱ προγυμνασταὶ τρίβοιεν, ὥς ὁμαλῶ- τέραν γενέσθαι τὴν ἐνέργειαν, οὐδὲν ἂν εἴη χεῖρον.

Galenus Med., De sanitate tuenda libri vi Kühn volume 6, page 230, line 12

τὰς δ' ἐπὶ πλέοσι ποτοῖς ὑγρότητας τρίψεις ξηραὶ μόναι θεραπεύουσι διὰ τε σινδόνων ἢ χειριδίων ἐπιτελούμεναι καὶ αὐτῶν μόνων ἐνίοτε τῶν χειρῶν ἢ χωρὶς λίπους παντὸς ἢ σὺν ἐλαίῳ ἐλαχίστῳ τινί.

Galenus Med., De sanitate tuenda libri vi Kühn volume 6, page 418, line 9

ἐγὼ γοῦν παχύν τινα ἱκανῶς ὀλίγῳ χρόνῳ συμμέτρως εὐσαρκον εἰργασάμην ὅξει δρόμῳ χρῆσθαι καταναγκάζων, εἴτ' ἀπομάττων μὲν τὸν ἰδρώτα σινδόσιν ἤτοι λίαν μαλακαῖς ἢ λίαν τραχείαις, ἐφεξῆς δὲ τρίβων ἐπὶ πλείστον ἀλείμμασι διαφορητικοῖς, ἃ καλοῦσιν ἤδη συνήθως οἱ νεώτεροι τῶν ἰατρῶν »ἄκοπα».

Galenus Med., De sanitate tuenda libri vi Kühn volume 6, page 448, line 7

5.2. GALENUS

παραφυλάττειν ἔφην χρῆναι τοὺς τῇ τοιαύτῃ κατασκευῇ σώ- ματος ἐνοχλουμένους, ἡνίκα μάλιστα φαίνονται πλῆθος ἡθροικέναι σπέρ- ματος ἀποκρίσεως δεόμενον, ἐν ἡμέρᾳ τινὶ διαιτη- θέντας εὐχύμως τε καὶ μετρίως χρῆσθαι μὲν ἐπὶ τῷ δείπνῳ τρεπομένους εἰς ὕπνον τῇ συνουσίᾳ· κατὰ δὲ τὴν ἑξῆς ἡμέραν, ὅταν αὐτάρκως ἔχωσιν ὕπνου, δι- αναστάντας ἀνατρίψασθαι σιν- δόνι, μέχρις ἂν ἔρευθός τι σχῇ τὸ δέρμα· κάπειτά τινι δι' ἐλαίου τρίψει συμμέτρως χρησαμένους, εἴτα μὴ πολὺ διαλείποντας ἄρτον ἄζυμον κριθανίτην καθαρὸν ἐξ οἴνου κεκραμένου προσενεγ- καμένους, οὕτως ἐπὶ τὰς συνήθεις ἔρχεσθαι πράξεις· ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τῆς δι' ἐλαίου τρίψεως καὶ τῆς δι' ἄρτου προσφορᾶς, εἰ χωρίον ἔχει τι πλησίον ἐπιτήδειον, ἐμπεριπατῆσαι τούτῳ, πλὴν εἰ κρύος εἴη χειμέριον· ἀμεινον γὰρ ἔνδον μένειν τηνικαῦτα.

Galenus Med., Ad Glauconem de medendi methodo libri ii (0057: 067) “Claudii Galeni opera omnia, vol. 11”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1826, Repr. 1965. Volume 11, page 110, line 5

ἦν δ' ἐκεῖνα τὰ δι' ἀψιθίου κόμης καὶ μυροβαλάνου πῖεσματος καὶ νάρδων ἀμφο- τέρων Ἰνδικῆς τε καὶ Κελτικῆς, ἔτι δὲ κρόκου καὶ οἰνάνθης καὶ μαστίχης Χίας καὶ μύρων τῶν διὰ ναρδοστάχους σκευαζομένων, ἔτι δὲ μαστιχίνου καὶ σχινίνου καὶ μηλίνου καὶ οἰνανθίνου.

Galenus Med., De purgantium medicamentorum facultate (0057: 072) “Galenus de purgantium medicamentorum facultate”, Ed. Ehlert, J., 1959; Diss. Göttingen. Kühn volume 11, page 331, line 3

ταῦτα εἰ μὲν ἐν Ἰνδοῖς τις ὢν γράφων προσεκα- λείτο, χαλεπὸν ἦν ἐξελέγχειν αὐτόν.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi (0057: 075) “Claudii Galeni opera omnia, vols. 11–12”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1826, Repr. 1965. Volume 11, page 405, line 6

τὴν ἀρχὴν γὰρ, οὐδὲ μεταβάλλεται πρὸς τῆς ἐν ἡμῖν θερμασίας, ἵνα ἀντιθερμάνῃ διὰ τὸ μὴ δύνασθαι καταθραυσθῆναι χροαδῶς· ἐπεὶ ὁ γε κάλαμος ὁ ἐξ Ἰνδίας, ὃν καὶ ἀρωματίτην ὀνομάζουσιν, τῷ κοπτεσθῆναι τε καὶ διασπᾶσθαι καὶ ὅλως τῷ καταθραύεσθαι, μᾶλλον τοῦ παρ' ἡμῖν ἐναργῶς φαίνεται θερμαίνων, ὥς καὶ τοῖς πρεσβυτέροις ἡμῶν ἰατροῖς ὡμολόγηται πᾶσιν.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 11, page 821, line 18

ἀρίστη δὲ καὶ ἡ κατὰ τὴν Ἰνδίαν, ἥς ὁπός ἐστιν τὸ κομιζόμενον ἐνταυθοῖ τοῦτο φάρμακον ἢ ἀλόη προσαγορευομένη, χρείαν παμπόλ- λην παρεχόμενον ἐκ τοῦ ξηραίνειν ἀδήκτως.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 12, page 64, line 11

τὸ δ' ἕτερον, τὸ Ἰνδικόν, ἰσχυρότερόν ἐστιν εἰς ἅπαν.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 12, page 66, line 6

Μάκερ φλοιός ἐστιν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς κομιζόμενος, ἐν μὲν τῷ γεύεσθαι στρυφνὸς ἰκα- νῶς, μετὰ τινος βραχείας δριμύτητος ἀρωματιζούσης· ὁσμώ- μενος δὲ ἡδὺς ὁμοίως τοῖς πλείστοις ἀρώμασι τοῖς Ἰνδικοῖς.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 12, page 71, line 3

καὶ τὸ σάκχαρ δὲ καλούμενον, ὅπερ ἐξ Ἰνδίας τε καὶ τῆς εὐδαίμο- νος Ἀραβίας κομίζεται, περιπύγνυται μὲν, ὥς φασι, καλὰ- μοις, ἔστι δὲ τι καὶ αὐτὸ μέλιτος εἶδος.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 12, page 85, line 2

ἰσχυρότερα δ' ἐστὶν ἡ Ἰνδικὴ προσαγορευομένη, μελαντέρα τῆς Συριακῆς καλουμέ- νης ὑπάρχουσα.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 12, page 152, line 12

ἀρωματώδης πῶς ἐστὶν ἡ τῆσδε τῆς πόας ῥίζα, νάρδῳ παραπλησία τὴν δύναμιν, ἀλλ' εἰς μὲν τὰ πλεῖστα καταδεεστέρα, προτρέπει δ' οὐρα τῆς μὲν Ἰνδικῆς καὶ Συριακῆς νάρδου μᾶλλον, ὁμοίως δὲ τῇ Κελτικῇ.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 12, page 207, line 2

Περὶ χλωροῦ ἰάσπεως τε καὶ ὀμφατίτεως καὶ ἰε- ρακίτου καὶ Ἰνδικοῦ.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 12, page 207, line 16

ἀλλ' ἔξω τῆς κατὰ μέθοδον χρήσεως αἱ τοιαῦται δυνάμεις εἰσὶν, ὥσπερ γε καὶ τοῦ ἱερα- κίτου τε καὶ Ἰνδικοῦ τὸ ἐκ τῶν αἰμορροϊδῶν ἰστώντος αἷμα.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 12, page 215, line 18

προσθήσω δὲ τι τῷ κατ' αὐτὸ λόγῳ χρήσιμον οὐ περὶ διφυργοῦς μό- νον γινώσκειν, ἀλλὰ καὶ περὶ Λημνίας σφραγίδος καὶ πομ- φόλυγος καὶ ὀποβαλσάμου καὶ λυκίου τοῦ Ἰνδικοῦ.

Galenus Med., De simplicium medicamentorum temperamentis ac facultatibus libri xi Volume 12, page 216, line 8

διὰ τοῦτο τοιγαροῦν ἔς τε Λῆμνον καὶ Κύπρον καὶ τὴν Παλαιστίνην Συρίαν ἐσπού- δασα πορευθεὶς ἐκάστου τῶν φαρμάκων τούτων πολὺ πλῆ- θος εἰς ὅλον ἑμαυτοῦ παραθέσθαι τὸν βίον, ἀλλὰ καὶ τὸ λύκιον τὸ Ἰνδικὸν ἀρτίως ἐνηνεγμένον ἐς Φοινίκην ἅμα τῇ Ἰνδικῇ ἀλόῃ κατ' ἐκεῖνον τὸν χρόνον εὐτύχησα λαβεῖν, ἥνικα τὴν ἀπὸ τῆς Παλαιστίνης ὁδὸν ἐπανῆειν, αὐτῷ τε τῷ κεκομίσθαι διὰ τῶν καμήλων, σὺν τῷ παντὶ φορτίῳ, πεισθεὶς Ἰνδικὸν ὑπάρχειν αὐτὸ καὶ τῷ τὸ νοθεύμενον οὐ δύνασθαι πρὸς τῶν κομιζόντων γινώσκεσθαι, τῆς ὕλης ἐξ ἧς σκευάζεται κατὰ τοὺς τόπους ἐκείνους μὴ γεννωμένης.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x (0057: 076) "Claudii Galeni opera omnia, vols. 12–13", Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 12:1826; 13:1827, Repr. 1965. Volume 12, page 458, line 3

καὶ εἰ πλουσίοις σκευά- ζοις, ἐμβαλεῖς στάχους νάρδου τῆς τε Ἰνδικῆς καὶ τῆς Κελτι- κῆς καὶ τῆς ὀρείας καὶ γῆς Ἐρετριάδος, ἐμβαλεῖς δὲ καὶ μαλαβάθρου καὶ φύλλου μαλαβάθρου

5.2. GALENUS

καὶ ἀμώμου καὶ σμύρ- νης καὶ κρόκου καὶ κόστου καὶ ἡδυκρόου.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 589, line 11

λυκίου Ἰνδικοῦ § δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 632, line 7

§ νάρδου Ἰνδικῆς § α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 636, line 14

λυκίου Ἰνδικοῦ § δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 636, line 18

λυκίου Ἰνδικοῦ, κυτίνων ῥοιᾶς, ῥόδων ἄνθους ἀνὰ § β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 660, line 8

λυκίου Ἰνδικοῦ γο α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 680, line 7

ἐὰν δὲ ἡ παλαιὰ καὶ ὄξος παλαιὸν πρόσμισγε ἢ θεῖον λεῖον, καὶ δριμύ ὄξος εἰς στενόστομον ἀργεῖον βαλὼν, προστίθῃ τῇ ἀναπνοῇ αὐ- τῶν ἐφ' ἱκανόν, εἴτα μίσυος κυπρίου καὶ νάρδου Ἰνδικῆς τὸ ἥμισυ μετὰ χίου οἴνου λεάνας, μέχρι μελιτῶδες γένηται, πτερῶ διάχριε τοὺς πόρους καὶ ἐρίῳ ἔμφρασσε.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 713, line 15

τοιαῦτα δὲ ἐστὶ κρόκος καὶ σμύρνα καὶ λύκιον Ἰνδικόν, καὶ καστόριον δὲ καὶ λιβανωτὸς ἄνευ τοῦ στύφειν πέττει τε ἅμα καὶ διαφορεῖ.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 719, line 15

εὐδηλον δ' ὅτι λύκιον λέγω τὸ Ἰνδικόν, οὐ τουτὶ τὸ καὶ τοῖς παρ' ἡμῶν ἔθνεσι γινόμενον.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 723, line 1

ῥυπτικὸν δέ τι καὶ τὸ καλούμενον Ἀρμένιον ἔχει, καθάπερ καὶ τὸ καλούμενον Ἰνδικὸν μέλαν, καὶ διὰ τοῦτο τοῖς ἀφλεγμάντοις ἔλκεσιν ἀλύπτως ὀμιλεῖ.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 730, line 14

νάρδου Ἰνδικῆς § α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 731, line 9

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

νάρδου Ἰνδικῆς δρα- χμᾶς β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 733, line 15

νάρδου Ἰνδικῆς β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 734, line 15

νάρδου Ἰνδικῆς, λιβάνου ἄρρενος, πεπέρεως λευκοῦ ἀνὰ δραχμὴν μίαν, φοινικοβαλάνων ὅστέα δέκα, πάντα βαλὼν εἰς ἄγγος κεραμεοῦν ὅπτα φιλοπόνως, ἔπειτα εἰς θύϊαν κατεγράσας καὶ τρίψας ἐπίβαλε ὀποβαλσάμου κοχλιά- ρια δύο, ἔπειτα ἀνακόψας καὶ ξηράνας χρῶ.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 735, line 7

νάρδου Ἰν- δικῆς β' α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 735, line 13

νάρδου Ἰνδικῆς, πεπέρεως λευκοῦ ἀνὰ δραχμὴν μίαν, μέλιτος Ἀττικοῦ κύαθον α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 743, line 11

β' Ἀλόης, λυκίου Ἰνδικοῦ, ῥόδων χλω- ρῶν, κρόκου, ὀπίου, σμύρνης, ἐκάστου τὸ ἴσον, οἶνω φυ- ράσας ἀνάπλασσε τροχίσκους καὶ ξήραινεν ἐν σκιᾷ.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 747, line 16

λυκίου Ἰνδι- κοῦ β' δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 748, line 7

λυ- κίου Ἰνδικοῦ β' ιβ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 753, line 8

ἀλόης Ἰνδικῆς β' η'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 753, line 17

σμύρνης δραχμὴν μίαν, νάρδου Ἰνδικῆς β' α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 754, line 15

λυκίου Ἰνδικοῦ δραχμᾶς β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 755, line 5

νάρδου Ἰνδικῆς δραχμᾶς δ'.

5.2. GALENUS

- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 755, line 5
λυκίου Ἰνδικοῦ δραχμὰς δ'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 756, line 3
νάρδου Ἰνδικῆς ͵α' ͵α'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 756, line 8
λυκίου Ἰνδικοῦ δραχμὰς β'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 756, line 9
νάρδου Ἰνδικῆς ͵β'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 757, line 3
λυκίου Ἰνδικοῦ ͵β' ͵α'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 757, line 3
νάρδου Ἰνδικῆς δραχμὰς β'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 765, line 4
νάρδου Ἰνδικῆς ͵στ'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 765, line 17
νάρδου Ἰνδικῆς ὀβολὸν α'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 766, line 4
νάρδου Ἰνδικῆς ὀβολὸν ἓνα, κόμμεως δραχμὰς γ'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 767, line 2
ἀκακίας δραχμὴν μίαν, νάρδου Ἰνδικῆς ͵α'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 768, line 2
νάρδου Ἰνδικῆς δραχμὰς β'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 772, line 13
νάρδου Ἰνδικῆς ͵δ'.
- Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume
12, page 774, line 7

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

νάρδου Ἰνδικῆς § στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 780, line 18

[Κολλύριον Ἰνδικὸν ἀέρινον ἐπιγραφόμενον προκατα- ληπτικὸν ἀπάσης ὀφθαλμίας, ποιεῖ πρὸς ἀμβλυωπίας καὶ ψωράδεις διαθέσεις καὶ πρὸς βεβρωμένους κανθοὺς καὶ οὐ- λὰς ἀπο- σμήχει.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 781, line 6

μέλανος Ἰνδικοῦ δραχμὰς η'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 781, line 13

μέλανος Ἰνδικοῦ § ιστ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 781, line 18

μέλανος Ἰνδικοῦ § ιστ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 782, line 6

τὸ ὑγρὸν χυλῷ μαράθρου. [Ἰνδικὸν βασιλικὸν ἐπιγραφόμενον, ποιεῖ πρὸς ἀρχὰς ὑποχύσεως καὶ πᾶσαν ἀμβλυωπίαν καὶ οὐλὰς ἀπο- σμήχει.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 782, line 9

μέλανος Ἰνδικοῦ δραχμὰς στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 787, line 8

νάρδου Ἰνδικῆς § στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 790, line 3

νάρδου Ἰνδικῆς § ιβ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 825, line 18

κόστον Ἰνδικὸν κόψας καὶ σήσας λεπτοτάτῳ κοσκίνῳ, ἀναλαμβάνει αἰγείᾳ χολῇ καὶ ποιή- σας κηρωτῆς τὸ πάχος, ἐπίχρει τοὺς ἰόνθους περὶ ἐσπέραν, καὶ πρῶτ' ἀναστὰς κέλευε γάλακτι τῷ παθόντι προσκλύζεσθαι τὸ πρόσωπον.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 826, line 13

§ ὠκίμου σπέρματος, νίτρου ἐρυθροῦ, γλήχωνος χλωροῦ, σχιστῆς, κόστου Ἰνδικοῦ, κόψας, σήσας, ὁμοῦ ἀναλαβὼν στέατι χηνείῳ ἢ ὀρνιθείῳ, ὥστε κηρωτῶδες ἔχειν τὸ πάχος, ἐκ τούτου ἔμπλασε εἰς ὀθόνιον καὶ ἐπιτίθει μέχρι παν- τελοῦς ἀπαλλαγῆς.

5.2. GALENUS

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 923, line 15

καὶ μέντοι καὶ πολυτελέστερον ἐθέ- λης ποιῆσαι τὸ φάρμακον, ἐμβαλεῖς καὶ κασσίας φλοιὸν ἢ νάρδον Ἰνδικὴν ἢ τὸ τοῦ μαλαβάθρου φύλλον.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 924, line 12

ὀνομάζεται δὲ οὕτω φλοιός τις ἀρωματικὸς ἐκ τῆς Ἰνδίας κομιζόμενος, ἱκανῶς θερμαίνων τε καὶ στυ- φων, ἀλλὰ καὶ ὁ Κυρηναῖος ὁπὸς εἰς διαφόρησιν τῶν σκλη- ρυνομένων φλεγμονῶν ἐπιτήδειος, ὥσπερ γε καὶ ὁ Μηδικὸς ἢ τις τῶν μετ' αὐτούς.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 934, line 1

ὁμφακίου τριώβολον, κρόκου τριώβολον, νάρδου Ἰνδικῆς τριώβολον, τούτοις πρόσμιγε μέ- λιτος κοτύλην μίαν, καὶ οὕτω προσεμβαλὼν τὸν χυλὸν, ἐπὶ μαλθακοῦ πυρὸς κι- νῶν, ἔψε ἕως συστραφῇ, καὶ χρῶ.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 936, line 6

νάρδου Ἰν- δικῆς § α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 938, line 14

νάρδου Ἰνδικῆς, ἀμώμου ἀνὰ γο §'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 942, line 13

νάρδου Ἰνδικῆς § α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 945, line 8

λυκίου Ἰνδικοῦ § α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 946, line 11

νάρδου Ἰνδικῆς § α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 946, line 18

νάρδου Ἰνδικῆς § α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 962, line 11

καὶ τούτων δὲ αὐτῶν μέτρια μὲν ἐστὶ τὰ ξηρὰ ξόδα καὶ τὸ ἄνθος αὐτῶν ἀκρέμονές τε ξηρανθέντες, ὧν ἄρτι διήλθον φυτῶν, ὑποκυστὶς τε καὶ ῥῆον, ὃ τε τῶν σκυ- τέων λίθος, ὃ λαμπρύνουσι τὰ τῶν γυναικῶν ὑποδήματα, καλεῖται δὲ ἀγήρατος, ἀλόη τε καὶ κύπρος, ἄνθος τε σχίνου καὶ ῥίζα νάρδου τῆς Ἰνδικῆς καὶ τῆς παρ' ἡμῶν ὀρείας.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 12, page 991, line 8

πρὸς ἄφθας λύκιον Ἰνδικὸν σὺν οἴνῳ λεανθὲν περιχρίομενον, ποιεῖ καὶ ἐρείκης καρπὸς λεῖος ἢ ἐόδα ξηρὰ σὺν μέλιτι.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 17, line 8

νάρ- δου Ἰνδικῆς δραχμὰς γ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 22, line 18

¶ νάρδου Ἰν- δικῆς δραχμὰς δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 27, line 9

νάρδου Ἰν- δικῆς ¶ δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 52, line 16

νάρδου Ἰνδι- κῆς, τερμινθίνης ἀνὰ ¶ β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 53, line 17

νάρδου Ἰνδικῆς, ἐόδων ξηρῶν ἀνὰ ¶ δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 57, line 9

νάρδου Ἰνδικῆς δραχμὰς στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 76, line 14

λυκίου Ἰνδικοῦ ¶ δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 76, line 17

¶ κρόκου Κιλικίου, σμύρνης, ἱρεως, νάρδου Ἰνδικῆς, λιβάνου, ἀκακίας ἀνὰ γο α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 77, line 9

νάρδου Ἰνδι- κῆς γο α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 80, line 3

λυκίου Ἰνδικοῦ γο α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 90, line 14

νάρδου Ἰνδικῆς ¶ β'.

5.2. GALENUS

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 92, line 15

νάρδου Ἰνδικῆς τετρώβολον, ὕδατι ἀνάπλαττε τροχίσκους δυοβολιαίους.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 98, line 16

πίσσης ὑγρᾶς βρυτίας τὸ ἴσον, νάρδου Ἰνδικῆς, κρόκου, σμύρνης, λιβάνου, πεπέρεως λευκοῦ, ἐκάστου ἀνὰ β' ἥ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 127, line 3

β' σχοίνου ἄνθους, ξυλοβαλσάμου, μα- στίχης, κρόκου, νάρδου Ἰνδικῆς, ἀσάρου, κινναμώ- μου ἀνὰ β' στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 133, line 9

καὶ ἔψε ἕως τὸ ἥμισυ λειφθῇ καὶ διήθῃσιν καὶ λαβὼν ἀλόης Ἰν- δικῆς λίτραν α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 137, line 15

ἀλόης Ἰν- δικῆς β' α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 145, line 16

νάρδου Ἰνδικῆς β' δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 159, line 2

νάρδου Ἰνδικῆς γο α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 166, line 10

νάρδου Ἰνδικῆς β' δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 170, line 12

ἢ οἰνάνθην ὁμοίως τρίψας μετὰ νάρ- δου Ἰνδικῆς δὸς πιεῖν.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 185, line 3

μελιλώπου, ἀμώμου, νάρδου Ἰνδικῆς, κρόκου, σμύρνης, λιβά- νου, ξυλοκινναμώμου ἀνὰ β' κέ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 185, line 17

φύλλων μαλαβάθρου, κασσίας ῥοδιζούσης, πάνακος, ὀποβαλ- σάμου, νάρδου Ἰνδικῆς ἀνὰ γο γ'.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 187, line 9

νάρδου Ἰνδικῆς, κρόκου, σμύρνης ἀνὰ μνᾶς δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 202, line 18

νάρδου Ἰνδικῆς ¶ α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 204, line 3

νάρδου Ἰνδικῆς καὶ Κελτικῆς ἀνὰ ¶ στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 205, line 12

¶ νάρδου Ἰνδικῆς ¶ β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 213, line 15

ῥήου Ποντικῆς τῆς ῥίζης, σχοίνου ἄνθους, βαλσάμου καρποῦ, κεδρίδων, ἀνίσου, νάρ-
δου Ἰνδικῆς, κρόκου, κινναμώμου, κασσίας, φοῦ, ἀσάρου, πε-
τροσελίνου, χαμαιπίτυος ἀνὰ ¶ α' ¶'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 214, line 8

¶ Χαμαιπίτυος, πρασίου, πετροσελίνου σπέρματος, γεντιανῆς, ἄλγνου σπέρματος, ἄρ-
κτου χολῆς, νάπυος, σικύου σπέρματος, σκολοπενδρίου, πάνακος, μίλτου Λημνίας, ἐρυθροδάνου,
κράμ-
βης σπέρματος, ἀριστολοχίας, πεπέρεως, νάρδου Ἰνδικῆς, κόστου, σελίνου σπέρματος,
εὐζάμου σπέρματος, ἡρυγγίου, πολίου, ἐχίου, εὐπατορίου, ἀρκευθίδων ἀνὰ ¶ α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 233, line 5

νάρδου Ἰνδικῆς, ἀσάρου ἀνὰ ¶ α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 241, line 2

νάρδου Ἰνδικῆς ¶ δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 266, line 5

¶ Κρό-
κου, ὀπίου, ὀποπάνακος, σμύρνης, ἱρεως, ἀκόρου, μανδρα-
γόρου, ἀσάρου, κόστου,
νάρδου Ἰνδικῆς, δαύκου Κρητικῆς, μῆου ἀνὰ ¶ η'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 272, line 4

ἔνιοι δὲ οὐ τὴν Κρητικὴν χώραν, ἀλλὰ τὴν Ἰνδικὴν εἰρῆσθαι φασιν, ἐξ ἧς ὁ ἐλέφας φέρεται.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 275, line 5

5.2. GALENUS

ἔστι μὲν οὖν ἡ Κελτικὴ νάρδος ἀγαθὸν φάρμακον εἰς ὅσα περ ἂν καὶ ἡ Ἰνδική, λείπεται δὲ αὐτῆς πάμπολυ, καθάπερ γε καὶ ταύτης ἡ ὄρειος.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 276, line 18

νάρδου Ἰνδικῆς ἴσον, καστορίου ¶ στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 278, line 10

πετροσελίνου, νάρδου Ἰνδικῆς, πεπέρεως λευκοῦ καὶ μακροῦ ἀνὰ ¶ γ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 280, line 18

καστορίου, κόστου, ὀπίου, μανδραγόρου φλοιοῦ, νάρ- δου Ἰνδικῆς, ἀσάρου, Ἰλλυρίδος, ἀκό- ρου, σμύρνης ἀνὰ ¶ στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 287, line 11

¶ Κράμβης ἀγρίας σπέρ- ματος, φοῦ, κινναμώμου, ἱρεως Ἰλλυρικῆς, ἀκόρου, ἀσάρου, ὀποπάνακος, σμύρνης, νάρδου Ἰνδικῆς, ὀπίου, κόστου, μαν- δραγόρου χυλοῦ, καστορίου ἀνὰ ¶ στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 288, line 4

¶ κρόκου, ὀπίου, ὀπο- πάνακος, σμύρνης, ἱρεως, ἀκόρου, μανδραγόρου, ἀσάρου, κό- στου, νάρδου Ἰνδικῆς, δαύκου Κρητικοῦ, μήου ἀνὰ ¶ στ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 289, line 3

ἄρνογλώσσου σπέρματος ἴσον καὶ τοῦ χυλοῦ ἴσον, λυκίου Ἰνδικοῦ ¶ α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 290, line 9

λυκίου Ἰνδικοῦ ¶ δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 290, line 15

σμύρνης, ὑποκυστίδος χυλοῦ, ἀλόης, ὀπίου, τραγακάνθης, λυκίου Ἰνδικοῦ, κηκίδος, ἀνίσου, ἀκακίας, πε- πέρεως, ῥήου Ποντικοῦ ἀνὰ ¶ α'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 292, line 9

¶ Σμύρνης, λιβάνου, ἀλόης, κρόκου, ὀπίου, ῥοῦ Συριακοῦ καὶ τοῦ βυρσοδεφικοῦ, λυκίου Ἰνδι- κοῦ, ἀκακίας, σιδίων, ὑποκυστίδος χυλοῦ, κηκίδος, βαλαυ- στίων, ἐκάστου τὸ ἴσον.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 299, line 8

λυ- κίου Ἰνδικοῦ ἴσον, ὀποῦ μήκωνος ¶ δ'.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 303, line 13

νάρδου Ἰνδικῆς, ἀνίσου, ἐκά- στου τὸ ἴσον, σμύρνης β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 303, line 14

ἀλόης Ἰνδικῆς, ὑποκυστίδος χυλοῦ, λυκίου Ἰνδικοῦ, ἀκακίας χυλοῦ, ὀποῦ μήκωνος, κηκίδων ὀμφακιδίων, τραγακάνθης, πεπέρεως λευκοῦ, ἐκάστου τοσόνδε, οἶνω ἀναλαμβάνει, ἀνά- πλασσε τροχίσκους, δίδου τρι- ὥβολον.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 305, line 13

σανδαράχης, ἀρσενικοῦ, λεπίδος χαλκοῦ, σχιστῆς, ὀμφακίου, λυκίου Ἰνδικοῦ, ἀκακίας χυλοῦ, ὑποκυστίδος χυλοῦ, ἀσβέστου ἀνὰ β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 308, line 4

Λυκίου Ἰν- δικοῦ γο β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 308, line 9

λυκίου Ἰνδικοῦ γο β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 324, line 8

νάρδου Ἰνδικῆς ιστ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum secundum locos libri x Volume 13, page 330, line 14

λιβανωτίδος ὀρεινῆς, νάρδου Ἰνδικῆς, κρόκου Κιλικίου, πετροσελίνου, πολίου, πηγάνου ἀγρίου σπέρ- ματος, δικτάμνου Κρητικοῦ, ἐκάστου τὸ ἴσον, γλυκυρρίζης, λίθου Συριακοῦ ἄρ- ρένος ἀνὰ ιστ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii (0057: 077) "Claudii Galeni opera omnia, vol. 13", Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1827, Repr. 1965. Volume 13, page 494, line 2

ἀλόης Ἰνδικῆς ιβ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 650, line 18

ἀλόης Ἰνδικῆς β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 741, line 13

ἡ Ἰνδὴ Θαρσέου χειρουργοῦ πρὸς τὰς προειρημένους διαθέσεις.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 806, line 15

5.2. GALENUS

ἀλόης Ἰνδικῆς οὐγγίας δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 808, line 4

ἀλόης Ἰν- δικῆς ¶ ιβ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 822, line 6

Ἰοῦ δὲ χαλλκοῦ καὶ ἀλόης Ἰνδικῆς, Χαλλκοῦ τε κεκαυμένου καὶ διφρυγοῦς καλοῦ Ἐκκαίδεχ' ἡμισυ ἐξ ἐκάστου μίγματος, Εἴκοσι δραχμὰς δὲ χαλβάνης καὶ δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 826, line 9

¶ ἀριστολοχίας Κρητικῆς στρογγύλης, κυτίνων, χαλκίτεως ὀπτῆς, λιβάνου, σμύρνης, χαλ- κάνθου, κρο- κομάγματος, ἀλόης Ἰνδικῆς, χολῆς ταυρείας ἀνὰ ¶ η'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 831, line 11

¶ λυκίου Ἰνδικοῦ, ἀλόης Ἰνδικῆς, σμύρνης, χαλλκοῦ, στυπτηρίας σχιστῆς, χαλ- κάνθου, κυτίνων, λιβάνων ἀνὰ ¶ δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 907, line 9

ἀλόης Ἰνδικῆς ¶ β'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 981, line 11

κας- σίας, κινναμώμου, ἀμμωνιακοῦ θυμιάματος, νάρδου Ἰνδικῆς, κρόκου, σμύρνης ἀνὰ μνᾶς δ'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 983, line 6

ἀλόης Ἰνδικῆς ¶ ι'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 986, line 7

κινναμώμου, κρόκου Κιλικίου, σμύρνης, κασσίας, νάρδου Ἰνδικῆς, σχοίνου ἄνθους, καλάμου ἀρωματικοῦ, ἀμώ- μου, πεπέρεως, ῥόδου χυλοῦ, χελώνης θαλασσίας αἵματος, ἀν- δροσαίμου βοτάνης, πυρέθρου, ἐκάστου ἀνὰ ¶ λε'.

Galenus Med., De compositione medicamentorum per genera libri vii Volume 13, page 1039, line 16

νάρδου Ἰνδικῆς λίτρας β'.

Galenus Med., De antidotis libri ii (0057: 078) "Claudii Galeni opera omnia, vol. 14", Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1827, Repr. 1965. Volume 14, page 8, line 10

καθ' ἅπερ γε τὸ κα- λούμενον Ἰνδικὸν Λύκιον, ἕτερά τε πολλὰ δυσκολωτάτην ἔχοντα διά- γνωσιν ἀπὸ τῶν νενοθευμένων, ἃ χρῆ παρὰ τῶν εἰς τὰ χωρία πορευομένων, ἐπιτρόπων τε καὶ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

συγκλητι- κῶν ἀρξάντων τῆς χώρας ἀθροίζειν, ἢ καὶ τῶν κατοικούν- των ἐν αὐτοῖς φίλων, ὥσπερ ἐμὲ ποιοῦντα τεθέασθε.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 40, line 3

Τοῖς δ' ἐπὶ κιννάμωμον ἰσάζεο, μηδὲ σε λήθη Ἀγαρικὸν τούτοις ἰσοβαρὲς θέμεναι, Ἡ ἔτι καὶ σμύρνης καὶ εὐόδμου κόστοιο Καὶ κρόκου, ὃν ἄντρον θρέφατο Κωρύκιον, Καὶ κασίην, Ἰνδὴν τε βάλοις εὐώδεα νάρδον, Καὶ σχοῖνον νομάδων θαῦμα φέροις Ἀράβων, Καὶ λίβανον μίσγοιο, καὶ ἀγλαίην στήσαιο Ἀμμίγα κυανέῳ κατθέμενος πεπέρει, Δικτάμνου τε κλῶνας, ἥδὲ χλοεροῦ πρασίοιο, Καὶ ῥήον.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 43, line 8

σμύρνης, κρόκου, ζιγγιβέρεως, ῥήου Ποντικοῦ, πεν- ταφύλλου ῥίζης, νεπέτου, οὕτως οἱ Ῥωμαῖοι τὴν καλαμίν- θην ὀνομάζουσι, πρασίου, πετροσελίνου, στοιχάδος, κόστου, πεπέρεως λευκοῦ, καὶ μακροῦ, δικτάμνου Κρητικοῦ, σχοίνου ἄνθους, λιβάνου, τερμινθίνης, κασσίας σῦ- ριγγος, νάρδου Ἰνδικῆς, ἀνὰ [] στ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 52, line 11

Σμύρνης θ' ἔξ δραχμᾶς, καὶ φύλλου μαλαβάθροιο, Ἴσον δ' αὖ Ἰνδῆς νάρδου ξανθοῦ τε κρόκοιο.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 73, line 16

ἐφεξῆς δὲ τῆς προγεγραμμένης ὁ Ἄνδρό- μαχος Ἰνδικὴν νάρδον κελεύει βαλεῖν, ἥνπερ καὶ στάχυν ὀνομάζομεν νάρδου, καίτοι ῥίζαν οὔσαν, ἀπὸ τῆς πρὸς τοὺς ἀστάχους ὁμοιότητος κατὰ τὴν μορφήν, ἐφ' ἧς φυλάττεσθαι χρὴ, μὴ πως ἀποδῶ τις ἡμῖν τὴν ἐκπλυτον ὀνομαζομένην.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 83, line 17

αἱ ῥίζαι δὲ τῶν- δε, ζιγγιβέρεως, ῥεως, ῥήου, πενταφύλλου, κόστου, νάρδου Ἰν- δικῆς, νάρδου Κελτικῆς, γεντιανῆς, μήου, ἀκόρου, φοῦ, ἀριστο- λοχίας λεπτῆς.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 96, line 17

Καὶ δὴ ἐπὶ ταύταις, καὶ ῥόδων ξηρῶν ἴσας, Καὶ κινναμώμου, καὶ ὀποβαλσάμου καλοῦ, Ἡς τ' Ἴλλυριοὶ πέμπουσιν ἴσας ῥεως, Λευκοῦ τ' ἀγαρικοῦ, βουνιάδος τοῦ σπέρματος, Τούτων ἐκάστου τὰς ἴσας δώδεκα, Καὶ Κρητικὸν σκόρδιον ἐνὶ τούτων ἴσον, Σμύρνης, κρόκου, ῥᾶ, πε- τροσελίνου, στοιχάδος, Ξηρᾶς καλαμίνθης, πενταφύλλου ῥιζίων, Καὶ τοῦ πρασίου σπέρματος τῶν σφαιρίων, Λευκοῦ πεπέρεως καὶ μακροῦ, τῆς Ἰνδικῆς Νάρδου στάχυος, λιβάνου τε καὶ τερμινθίνης, Κόστου τε λευκοῦ, καὶ ἔτι δικτάμνου πόας, Σχοίνου τε, μὴ τῶν καρφίων, τοῦ δ' ἄνθεος, Ξηροῦ τ' ἀβρέκτου ζιγγιβέρεως τὰς ἴσας, Κασίας μελαίνης τοῦ φλοιοῦ, τούτων πάλιν Δίς τρεῖς ἐκάστου μίγματος δραχμῆς σταθμῶ, Πολίου τε καὶ φοῦ Ποντικοῦ, καὶ θλάσπεως, Χαμαίδρυνός τε καὶ στύρακος, καὶ κόμμεως, Καὶ γεντιανῆς, καὶ ἀκόρου, μήου τ' ἔτι

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 101, line 10

Τερμίνθου δ' ἀπὸ ῥητίνην, νάρδοιό τε ῥίζαν Ἰνδῆς, καὶ κασίης σῦριγγ, λιβάνοιό τ' ἀμήτου Χόνδροι, σπέρμα τε λεπτόν ἐν οὔρεσιν ἀλδήσκοντος, Πετροσελίνου μίσγε δραχμᾶς στ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 102, line 10

5.2. GALENUS

Σμύρνης δ' ἔξ δραχμᾶς καὶ φύλλα μαλαβάθροιο, Ἴσον δ' αὐτ' Ἰνδῆς νάρδου, ξανθοῦ τε χρόκοιο.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 107, line 17

νάρδου Ἰνδικῆς § δ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 109, line 3

νάρδου Ἰνδικῆς § δ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 109, line 14

[Ἀντίδοτος ἡ Ὀρβανοῦ λεγομένη τοῦ Ἰνδοῦ, πρὸς τὸ τὰ ἐντὸς βρέφη ἐκβάλλειν.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 109, line 16

νάρδου Ἰνδικῆς § ιστ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 111, line 14

νάρδου Ἰνδικῆς § ια'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 128, line 4

στάχυος Ἰνδικῆς δραχμᾶς, Σμύρνης τε χρηστῆς, καὶ ὀπίου, μηχανείου, Ὑποκιστίδος τε χυλοῦ, καὶ ὀποβαλσάμου, Ὀποπάνακός τε τοῦ καθαροῦ καὶ προσφάτου, Καὶ καστορίου καὶ λιβάνου πάντων ἴσα, Ἀνὰ ιβ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 148, line 13

κόστου, μήου, ἁσάρου, ἀκόρου, δαύκου Κρητικοῦ σπέρματος, πετροσελίνου, νάρδου Ἰνδικῆς, λίθου νηστωρίτου ἀνὰ § δ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 150, line 17

νάρδου Ἰνδικῆς, σμύρνης Τρωγλοδύτιδος, σχοίνου ἄνθους, κινναμώμου, χαρά- κίου, κόστου προσφάτου, πεπέρεως μακροῦ, ὑποκυστίδος, πολίου, πεπέρεως περεατικοῦ, σκορδίου, μήου Κρητικοῦ, καρδαμώμου ἀνὰ § δ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 158, line 16

νάρδου Ἰνδικῆς § δ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 168, line 4

§ Λυκίου Ἰνδικοῦ ὡς καλλίστου δίδου ὀβολοὺς γ'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 180, line 12

§ Ὀποῦ Κυρηναι- κοῦ, δαύκου Κρητικοῦ σπέρματος, ἡδυόσμου ξηροῦ, νάρδου Ἰνδικῆς, ἐκά- στον τὸ ἴσον, ἀνάπλασσε δι' ὄξους, καὶ δίδου § α'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 188, line 15

κάγχρυος καὶ σμύρνης, πεπέρεως, σεσέλεως Μασσαλεωτικοῦ, νάρδου Ἰνδικῆς, καστορίου, κινναμώμου μέλανος, ὡς λεπτοτάτου, πεπέρεως μακροῦ, Κυρηναικοῦ ὀποῦ, ἱρίδος, πηγάνου ἀγρίου σπέρματος, ἀνὰ § β'.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 197, line 5

Λυκίου κρατίστου Παταρικοῦ τριώβολον, Τοῦ δ' Ἰνδικοῦ βέλτιστον ἂν ἦ σοι παρὸν, Διδόναι προσέταπτεν ἡμέρας δυσὶν εἴκοσι, Νήστεσι δι' ὕδατος, ὥσπερ εἶπον ἀρτίως.

Galenus Med., De antidotis libri ii Volume 14, page 208, line 6

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

λυκίου Ἰνδικοῦ § δ'.

Galenus Med., De theriaca ad Pisonem (0057: 079) “Claudii Galeni opera omnia, vol. 14”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1827, Repr. 1965. Volume 14, page 263, line 1
νάρδου Ἰνδικῆς § ιστ'.

Galenus Med., De theriaca ad Pisonem Volume 14, page 292, line 15

μαλαβάθρου φύλλων Ἰνδικοῦ γο.

Galenus Med., In Hippocratis de victu acutorum commentaria iv (0057: 087) “Galenus in Hippocratis de victu acutorum commentaria iv”, Ed. Helmreich, G. Leipzig: Teubner, 1914; Corpus medicorum Graecorum, vol. 5.9.1. Kühn volume 15, page 862, line 7

έχουσιν, ἥ οἱ μέγιστοι σύνδεσμοι καταπεφυκότες εἰς πόδας ἀποτελευτῶσι, τῷ τοιῷδε, ἦν μὴ πυρετὸς καὶ ὕπνος ἐπι- γένηται καὶ τὰ ἐπόμενα οὖρα πέφιν ἔχοντα ἔλθῃ καὶ ἰδρῶ- | τες κριτικοί, πίνειν οἶνον κερρὸν οἰνώδεα καὶ ἄλητον ἐφθὼν ἐσθίειν καὶ κηρωτῇ ἀλείφειν καὶ ἐγχρῆναι τὰ τε σκέλεα περι- ελίσσειν ἕως τῶν ποδῶν, θερμῷ προβρέχων ἐν σκάφῃ, καὶ βραχίονας ἕως δακτύλων κατελίσσειν καὶ ὁσφὺν ἀπὸ τοῦ τραχήλου ἕως τῶν ἰσχίων, σίαλον ἐγκηρῶσας, ὅπως καὶ τὰ ἐμπροσθεν περιέξει, καὶ διαλιπὼν πυρία τοῖσιν ἀσκίοισι, θερ- μὸν ὕδωρ ἐγχέων, καὶ περιτείνων σινδόνιον ἐπανάκλινε αὐ- τόν.

Galenus Med., In Hippocratis librum vi epidemiarum commentarii vi (0057: 091) “Galenus in Hippocratis sextum librum epidemiarum commentaria i–vi”, Ed. Wenkebach, E. Leipzig: Teubner, 1940; Corpus medicorum Graecorum, vol. 5.10.2.2. Kühn volume 17a, page 886, line 3

τὰ δὲ ἐντὸς οὕτως ἐκαίετο, ὥστε μήτε τῶν πάνυ λεπτῶν ἱματίων καὶ σινδονίων τὰς ἐπιβολάς, μηδ' ἄλλο τι ἢ γυμνοὶ ἀνέχεσθαι.

Galenus Med., In Hippocratis librum vi epidemiarum commentarii vi Kühn volume 17a, page 902, line 12

τούς μὲν γὰρ ὑπιδόν τε καὶ ὑδερικὴν ἔχοντας ὅλην τὴν ἔξιν τοῦ σώματος <σκληρύνομεν> διὰ τε σινδόνων προανατρίβοντες καὶ σκληρᾷ τρίβει χρώμενοι καὶ γυμνάζοντες ἐν κόνει.

Galenus Med., In Hippocratis librum vi epidemiarum commentarii vi Kühn volume 17b, page 196, line 11

τῆς γὰρ <ψυχρᾶς κοίτης> σημαινούσης οὐ μόνον ὑποστορέσματα ψυχρὰ καὶ περιβλήματα, ἀπερ' ἐκ σινδόνων πυκνῶν καὶ τριβάκων ἱματίων τε τοι- ούτων γίνεται, <ἀλλὰ καὶ χωρίον ψυχρόν>, προσέρχεται τι μέγιστον ἕτερον ἐπανόρθωμα τῆς τε κατὰ τὴν ὥραν καὶ τὴν φυσικὴν κρᾶσιν ἀμετρίας <τὸ> διὰ τῆς εἰσπνοῆς ψυχρᾶς οὐσης ἐμφύχεσθαι τὸ σῶμα.

Galenus Med., Linguarum seu dictionum exoletarum Hippocratis explicatio (0057: 106) “Claudii Galeni opera omnia, vol. 19”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1830, Repr. 1965. Volume 19, page 105, line 13

ἡμερωθεῖσαι: ἀνδρὶ μιγεῖσαι, ἀντὶ τοῦ τῆς ἐπιθυμίας τυ- χοῦσαι· ἀνδρὶ μιγεῖσαι. Ἰνδικόν: οἱ μὲν γράψαντες τὰς ὀνομασίας τῶν φαρμάκων, καθάπερ Μενεσθεύς τε καὶ Ἀνδρέας ὁ τοῦ Χρύσαρος καὶ Ξενοκράτης καὶ Διοσκουρίδης ὁ Ἀλεξανδρεὺς Ἰνδικὸν ὀνομάζουσι τὸ ζιγγίβερι,

5.3. ARRIAN

πλανηθέντες ἐκ τοῦ τινος οἶε-σθαι ῥίζαν αὐτὸ τοῦ πεπέρεως ὑπάρχειν· ἀλλὰ Διοσκου-ρίδης ὁ Ἀναξαργρεὺς σαφῶς διώρισέ τε καὶ ἀπεφήνατο περὶ ζιγγιβέρεως καὶ πεπέρεως· ὁ τοῖνον Διοσκουρίδης ὁ νεώτερος ὁ γλωττογράφος, φυτὸν εἶναι φησιν ἐν Ἰνδία παραπλήσιον τῷ τοῦ πεπέρεως, οὗ ὁ καρπὸς ὀνομάζεται μυρτίδανον ὅτι μύρτῳ ἔοικεν.

Galenus Med., *Linguarum seu dictionum exoletarum Hippocratis explicatio* Volume 19, page 105, line 15

Ἰνδικόν· οἱ μὲν γράψαντες τὰς ὀνομασίας τῶν φαρμάκων, καθάπερ Μενεσθεύς τε καὶ Ἀνδρέας ὁ τοῦ Χρύσαρος καὶ Ξενοκράτης καὶ Διοσκουρίδης ὁ Ἀλέξανδρεὺς Ἰνδικὸν ὀνομάζουσι τὸ ζιγγίβερι, πλανηθέντες ἐκ τοῦ τινος οἶε-σθαι ῥίζαν αὐτὸ τοῦ πεπέρεως ὑπάρχειν· ἀλλὰ Διοσκου-ρίδης ὁ Ἀναξαργρεὺς σαφῶς διώρισέ τε καὶ ἀπεφήνατο περὶ ζιγγιβέρεως καὶ πεπέρεως· ὁ τοῖνον Διοσκουρίδης ὁ νεώτερος ὁ γλωττογράφος, φυτὸν εἶναι φησιν ἐν Ἰνδία παραπλήσιον τῷ τοῦ πεπέρεως, οὗ ὁ καρπὸς ὀνομάζεται μυρτίδανον ὅτι μύρτῳ ἔοικεν.

Galenus Med., *Linguarum seu dictionum exoletarum Hippocratis explicatio* Volume 19, page 141, line 14

στρογγύλου· τοῦ Μυρτιδάνου, αὐτὸς γὰρ οὕτως γράφει καὶ τὸ Ἰνδικὸν ὃ καλοῦσι Πέρσαι πέπερι.

5.3 Arrian

Arrian of Nicomedia (/ˈæriən/; Latin: Lucius Flavius Arrianus Xenophon; Greek: Ἀρριανός c. AD 86 – c.160) was a Roman (ethnic Greek)[3] historian, public servant, military commander and philosopher of the 2nd-century Roman period. As with other authors of the Second Sophistic, Arrian wrote primarily in Attic (Indica is in Herodotus' Ionic dialect, his philosophical works in Koine Greek) .

The Anabasis of Alexander is perhaps his best-known work, and is generally considered one of the best sources for the campaigns of Alexander the Great. (It is not to be confused with Anabasis, the best-known work of the Athenian military leader and author Xenophon from the 5th-4th century BC.) Arrian is also considered as one of the founders of a primarily military-based focus on history. His other works include Discourses of Epictetus and Indica. (From Wikipedia²)

2. <http://en.wikipedia.org/wiki/Arrian>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis (0074: 001) “Flavii Arriani quae exstant omnia, vol. 1”, Ed. Roos, A.G., Wirth, G. Leipzig: Teubner, 1967 (1st edn. corr.). Book 3, chapter 8, section 3, line 1

Βεβοηθήκεσαν γὰρ Δαρείῳ Ἰνδῶν τε ὅσοι Βακτρίοις ὄμοροι καὶ αὐτοὶ Βάκτριοι καὶ Σογδιανοί· τούτων μὲν πάντων ἡγεῖτο Βῆσσος ὁ τῆς Βακτρῶν χώρας σατράπης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 8, section 4, line 2

Βαρσαέ<ν>της δὲ Ἀραχωτῶν σατράπης Ἀραχωτούς τε ἤγε καὶ τοὺς ὀρείους Ἰνδοὺς καλουμένους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 8, section 6, line 6

ἐλέγετο δὲ ἡ πᾶσα στρατιὰ ἡ Δαρείου ἱππεῖς μὲν ἐς τε-τρακισμυρίους, πεζοὶ δὲ ἐς ἑκατὸν μυριάδας, καὶ ἄρματα δρεπανηφόρα διακόσια, ἐλέφαντες δὲ οὐ πολλοί, ἀλλὰ ἐς πεντεκαίδεκα μάλιστα Ἰνδοῖς τοῖς ἐπὶ τὰδε τοῦ Ἰνδοῦ ἦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 11, section 5, line

3

κατὰ τὸ μέσον δέ, ἵνα ἦν βασιλεὺς Δαρεῖος, οἱ τε συγγενεῖς οἱ βασιλέως ἐτετάχατο καὶ οἱ μηλοφόροι Πέρσαι καὶ Ἰνδοὶ καὶ Κᾶρες οἱ ἀνάσπαστοι καλούμενοι καὶ οἱ Μάρδοι τοξόται· Οὔξιοι δὲ καὶ Βαβυλώνιοι καὶ οἱ πρὸς τῇ ἐρυθρᾷ θαλάσῃ καὶ Σιττακηνοὶ εἰς βάθος ἐπιτεταγμένοι ἦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 13, section 1, line

3

Ὡς δὲ ὁμοῦ ἤδη τὰ στρατόπεδα ἐγίνετο, ὥφθη Δαρεῖός τε καὶ οἱ ἀμφ’ αὐτόν, οἱ τε μηλοφόροι Πέρσαι καὶ Ἰνδοὶ καὶ Ἀλβανοὶ καὶ Κᾶρες οἱ ἀνάσπαστοι καὶ οἱ Μάρδοι τοξόται, κατ’ αὐτόν Ἀλέξανδρον τεταγμένοι καὶ τὴν ἵλην τὴν βασιλικήν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 14, section 5, line

2

καὶ ταύτῃ παραρραγείσης αὐτοῖς τῆς τάξεως κατὰ τὸ διέχον διεκπαίουσι τῶν τε Ἰνδῶν τινες καὶ τῆς Περσικῆς ἵππου ὥς ἐπὶ τὰ σκευοφόρα τῶν Μακεδόνων· καὶ τὸ ἔργον ἐκεῖ καρτερόν ἐγίνετο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 15, section 1, line

8

καὶ πρῶτα μὲν τοῖς φεύγουσι τῶν πολεμίων ἱππεῦσι, τοῖς τε Παρθυαίοις καὶ τῶν Ἰνδῶν ἔστιν οἷς καὶ Πέρσαις τοῖς πλείστοις καὶ κρατίστοις ἐμβάλλει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 25, section 8, line

6

Βαρσαέντης δέ, ὃς τότε κατεῖχε τὴν χώραν, εἷς ὢν τῶν ξυνεπιθεμένων Δαρείῳ ἐν τῇ φυγῇ, προσίοντα Ἀλέξανδρον μαθὼν ἐς Ἰνδοὺς τοὺς ἐπὶ τὰδε τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἔφυγε.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 25, section 8, line

8

5.3. ARRIAN

ἔξυλλαβόντες δὲ αὐτὸν οἱ Ἴνδοι παρ' Ἀλέξανδρον ἀπέστειλαν, καὶ ἀπο- θνήσκει πρὸς Ἀλε-
ξάνδρου τῆς ἐς Δαρεῖον ἀδικίας ἕνεκα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 28, section 1, line
5

ἐπῆλθε δὲ καὶ τῶν Ἰνδῶν τοὺς προσχώρους Ἀραχώταις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 29, section 2, line
5

ὁ δὲ Ὀξος ῥέει μὲν ἐκ τοῦ ὄρους τοῦ Καυκάσου, ἔστι δὲ ποταμῶν μέγιστος τῶν ἐν τῇ Ἀσίᾳ,
ὅσους γε δὴ Ἀλέξ- ανδρος καὶ οἱ ξὺν Ἀλεξάνδρῳ ἐπῆλθον, πλὴν τῶν Ἰν- δῶν ποταμῶν· οἱ δὲ
Ἴνδοι πάντων ποταμῶν μέγιστοὶ εἰσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 15, section 6, line
2

αὐτῷ δὲ τὰ Ἰνδῶν ἔφη ἐν τῷ τότε μέλειν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 3, line
2

Ἐκ Βάκτρων δὲ ἐξήκοντος ἤδη τοῦ ἥρος ἀναλαβὼν τὴν στρατιὰν προὔχῳ ὡς ἐπ' Ἰνδοῦς,
Ἀμύνταν ἀπολιπὼν ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Βακτριῶν καὶ ξὺν αὐτῷ ἱππέας μὲν τρισχιλίους καὶ
πεντακοσίους, πεζοὺς δὲ μυρίους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 6, line
4

ἀφ- ικόμενος δὲ ἐς Νίκαιαν πόλιν καὶ τῇ Ἀθηνᾷ θύσας προὔχῳ ὡς ἐπὶ τὸν Κωφῆνα,
προπέμψας κήρυκα ὡς Ταξίλην τε καὶ τοὺς ἐπὶ τὰδε τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ, κελεύσας ἀπαντᾶν
ὅπως ἂν ἐκάστοις προχωρῇ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 6, line
7

καὶ Ταξίλης τε καὶ οἱ ἄλλοι ὑπαρχοὶ ἀπῆντων, δῶρα τὰ μέγιστα παρ' Ἰνδοῖς νομιζόμενα
κομίζοντες, καὶ τοὺς ἐλέφαντας δώσειν ἔφασκον τοὺς παρὰ σφίσιν ὄντας, ἀριθμὸν ἐς πέντε καὶ
εἴκοσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 7, line
3

Ἐνθα δὴ διελὼν τὴν στρατιὰν Ἡφαιστίωνα μὲν καὶ Περδίκκαν ἐκπέμπει ἐς τὴν Πευ-
κελαῶτιν χώραν ὡς ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμόν, ἔχοντας τὴν τε Γοργίου τάξιν καὶ Κλείτου καὶ
Μελεάγρου καὶ τῶν ἐταίρων ἱππέων τοὺς ἡμίσεας καὶ τοὺς μισθοφόρους ἱππέας ξύμπαντας,
προστάξας τὰ τε κατὰ τὴν ὁδὸν χωρία ἢ βία ἐξαιρεῖν ἢ ὁμολογία παρίστασθαι καὶ ἐπὶ τὸν
Ἰνδὸν ποταμόν ἀφικομένους παρασκευάζειν ὅσα ἐς τὴν διάβασιν τοῦ ποταμοῦ ξύμφορα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 8, line
2

καὶ οὗτοι ὡς ἀφίκοντο πρὸς τὸν Ἰνδὸν ποταμόν, ἔπρασσον ὅσα ἐξ Ἀλεξάνδρου ἦν τεταγμένα.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 24, section 3, line 1

Τὸν δὲ ἡγεμόνα αὐτὸν τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν Πτολεμαῖος ὁ Λάγου πρὸς τινὶ ἤδη γηλόφῳ ὄντα κατιδὼν καὶ τῶν ὑπασπιστῶν ἔστιν οὗς ἄμφ' αὐτὸν ζῦν πολὺ ἐλάττωσιν αὐτὸς ὦν ὁμῶς ἐδίωκεν ἔτι ἐκ τοῦ ἵππου· ὥς δὲ χαλεπὸς ὁ γήλοφος τῷ ἵππῳ ἀναδραμεῖν ἦν, τοῦτον μὲν αὐτοῦ καταλείπει παραδούς τινι τῶν ὑπασπιστῶν ἄγειν, αὐτὸς δὲ ὥς εἶχε πεζὸς τῷ Ἰνδῷ εἶπετο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 24, section 4, line 3

καὶ ὁ μὲν Ἰνδὸς τοῦ Πτολεμαίου διὰ τοῦ θώρακος παίει ἐκ χειρὸς ἐς τὸ στῆθος ξυστῶ μακρῷ, καὶ ὁ θώραξ ἔσχε τὴν πληγὴν· Πτολεμαῖος δὲ τὸν μηρὸν διαμπαξ βαλὼν τοῦ Ἰνδοῦ καταβάλλει τε καὶ σκυλεύει αὐτόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 24, section 5, line 8

καὶ οὗτοι ἐπιγενόμενοι μόγις ἐξέωσαν τοὺς Ἰνδοὺς ἐς τὰ ὄρη καὶ τοῦ νεκροῦ ἐκράτησαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 25, section 3, line 3

καὶ γίγνεται καὶ τούτοις μάχη καρτερὰ τοῦ χωρίου τῇ χαλεπότητι καὶ ὅτι οὐ κατὰ τοὺς ἄλλους τοὺς ταύτῃ βαρβάρους οἱ Ἰνδοί, ἀλλὰ πολὺ δὴ τι ἀλκιμώτατοι τῶν προσχώρων εἰσίν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 26, section 1, line 4

ὥς δὲ προσῆγεν ἡδὴ τοῖς τείχεσι, θαρρήσαντες οἱ βάρβαροι τοῖς μισθοφόροις τοῖς ἐκ τῶν πρόσω Ἰνδῶν, ἦσαν γὰρ οὗτοι ἐς ἑπτακισχιλίους, ὥς στρατοπεδευομένους εἶδον τοὺς Μακεδόνας, δρόμῳ ἐπ' αὐτοὺς ἦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 26, section 4, line 4

οἱ δὲ Ἰνδοὶ τῷ τε παραλόγῳ ἐκπλαγέντες καὶ ἅμα ἐν χερσὶ γεγενημένης τῆς μάχης ἐγκλίναντες ἔφευγον ἐς τὴν πόλιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 26, section 5, line 4

ἐπαγαγὼν δὲ τὰς μηχανὰς τῇ ὑστεραίᾳ τῶν μὲν τειχῶν τι εὐμαρῶς κατέσεισε, βιαζομένους δὲ ταύτῃ τοὺς Μακεδόνας ἢ παρέρρηκτο τοῦ τείχους οὐκ ἀτόλμως οἱ Ἰνδοὶ ἡμύνοντο, ὥστε ταύτῃ μὲν τῇ ἡμέρᾳ ἀνεκαλέσατο τὴν στρατιάν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 26, section 5, line 9

τῇ δὲ ὑστεραίᾳ τῶν τε Μακεδόνων αὐτῶν ἢ προσβολὴ καρτερωτέρα ἐγίνετο καὶ πύργος ἐπήχθη ξύλινος τοῖς τείχεσιν, ὅθεν ἐκτοξεύοντες οἱ τοξόται καὶ βέλη ἀπὸ μηχανῶν ἀφιέμενα ἀνέστελλεν ἐπὶ πολὺ τοὺς Ἰνδοὺς.

5.3. ARRIAN

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 27, section 2, line

1

Καὶ οἱ Ἰνδοί, ἕως μὲν αὐτοῖς ὁ ἡγεμὼν τοῦ χωρίου περιῆν, ἀπεμάχοντο καρτερῶς· ὡς δὲ βέλει ἀπὸ μηχανῆς τυπεῖς ἀποθνήσκει ἐκεῖνος, αὐτῶν τε οἱ μὲν τινες πεπτωκότες ἐν τῇ ξυνεχεῖ πολιορκίᾳ, οἱ πολλοὶ δὲ τραυματῖαι τε καὶ ἀπόμαχοι ἦσαν, ἐπεκρηυ- κεύοντο πρὸς Ἀλέξανδρον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 27, section 3, line

3

τῷ δὲ ἀσμένῳ γίνεται ἄνδρας ἀγαθοὺς διασῶσαι· καὶ συμβαίνει ἐπὶ τῷδε Ἀλέξανδρος τοῖς μισθοφόροις Ἰνδοῖς ὡς καταταχθέντας ἐς τὴν ἄλλην στρατιὰν ξὺν αὐτῷ στρατεύεσθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 27, section 3, line

9

νυκτὸς δὲ ἐπενόουν δρασμῷ διαχρησάμενοι ἐς τὰ σφέτερα ἦθη ἀπαναστῆναι οὐκ ἐθέλοντες ἐναντία αἰρεσθαι τοῖς ἄλλοις Ἰνδοῖς ὅπλα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 27, section 4, line

3

καὶ ταῦτα ὡς ἐξηγγέλθη Ἀλεξάνδρῳ, περιστήσας τῆς νυκτὸς τῷ γηλόφῳ τὴν στρατιὰν πᾶσαν κατα- κόπτει τοὺς Ἰνδοὺς ἐν μέσῳ ἀπολαβών, τὴν τε πόλιν αἰρεῖ κατὰ κράτος ἐρημωθεῖσαν τῶν προμαχομένων, καὶ τὴν μητέρα τὴν Ἀσσακάνου καὶ τὴν παῖδα ἔλαβεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 28, section 2, line

1

εἰ μὲν δὴ καὶ ἐς Ἰνδοὺς ἀφίκετο ὁ Ἡρακλῆς ὁ Θηβαῖος ἢ ὁ Τύριος ἢ ὁ Αἰγύπτιος ἐς οὐδέτερα ἔχω ἰσχυρίσασθαι· μᾶλλον δὲ δοκῶ ὅτι οὐκ ἀφίκετο, ἀλλὰ πάντα γὰρ ὅσα χαλεπὰ οἱ ἄνθρωποι ἐς τοσόνδε ἄρα αὖξουσιν αὐτῶν τὴν χαλεπότητα, ὡς καὶ τῷ Ἡρακλεῖ ἂν ἄπορα γενέσθαι μυθεύειν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 28, section 5, line

4

καὶ οἱ ἀμφὶ Ἡφαι- στίωνά τε καὶ Περδίκκαν αὐτῷ ἄλλην πόλιν ἐκτειχί- σαντες, Ὀροβάτις ὄνομα τῇ πόλει ἦν, καὶ Φρουράν καταλιπόντες ὡς ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ἦσαν· ὡς δὲ ἀφίκοντο, ἐπρασσον ἤδη ὅσα ἐς τὸ ζεῦξαι τὸν Ἰνδὸν ὑπὸ Ἀλεξάνδρου ἐτέτακτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 28, section 6, line

2

Ἀλέξανδρος δὲ τῆς μὲν χώρας τῆς ἐπὶ τὰδε τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ σατράπην κατέστησε Νικάνορα τῶν ἐταίρων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 28, section 6, line

3

αὐτὸς δὲ τὰ μὲν πρῶτα ὡς ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ἦγε, καὶ πόλιν τε Πευκελαῶτιν οὐ πόρρω τοῦ Ἰνδοῦ ὠκισμένην ὁμολογία παρεστήσατο καὶ ἐν αὐτῇ Φρουράν καταστήσας τῶν Μακε-

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

δόνων καὶ Φίλιππον ἐπὶ τῇ Φρουρᾷ ἡγεμόνα, ὁ δὲ καὶ ἄλλα προσηγάγετο μικρὰ πολίσματα πρὸς τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ ὥκισμένα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 29, section 3, line 5

ὥς δὲ Ἀλεξάνδρῳ ἄπορον τὴν προσβολὴν κατέμαθον οἱ βάρβαροι, ἀναστρέψαντες τοῖς ἀμφὶ Πτολεμαῖον αὐτοὶ προσέβαλλον· καὶ γίγνεται αὐτῶν τε καὶ τῶν Μακεδόνων μάχη καρτερά, τῶν μὲν διασπάσαι τὸν χάρακα σπουδὴν ποιουμένων, τῶν Ἰνδῶν, Πτολεμαίου δὲ διαφυλάξαι τὸ χωρίον· καὶ μείον σχόντες οἱ βάρ- βαροι ἐν τῷ ἀκροβολισμῷ νυκτὸς ἐπιγενομένης ἀπ- εχώρησαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 29, section 4, line 1

Ἀλέξανδρος δὲ τῶν Ἰνδῶν τινα τῶν αὐτομόλων πιστόν τε ἄλλως καὶ τῶν χωρίων δαήμονα ἐπιλέξας· μενος πέμπει παρὰ Πτολεμαῖον τῆς νυκτὸς, γράμ- ματα φέροντα τὸν Ἰνδόν, ἵνα ἐνεγέγραπτο, ἐπειδὴν αὐτὸς προσβάλλῃ τῇ πέτρᾳ, τὸν δὲ ἐπιέναι τοῖς βαρ- βάροις κατὰ τὸ ὄρος μὴδὲ ἀγαπᾶν ἐν φυλακῇ ἔχοντα τὸ χωρίον, ὥς ἀμφοτέρωθεν βαλλομένους τοὺς Ἰνδοὺς ἀμφιβόλους γίγνεσθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 29, section 6, line 2

ἔστε μὲν γὰρ ἐπὶ μεσημβρίαν ξυνειστήκει καρτερὰ μάχη τοῖς τε Ἰνδοῖς καὶ τοῖς Μακεδό- σιν, τῶν μὲν ἐκβιαζομένων ἐς τὴν πρόσβασιν, τῶν δὲ βαλλόντων ἀνιόντας· ὥς δὲ οὐκ ἀνέεσαν οἱ Μακεδόνες, ἄλλοι ἐπ' ἄλλοις ἐπίοντες, οἱ δὲ πρόσθεν ἀναπαυόμενοι, μόγις δὴ ἀμφὶ δέλην ἐκράτησαν τῆς παρόδου καὶ ξυνέμιξαν τοῖς ξὺν Πτολεμαίῳ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 1, line 3

ἐς δὲ τὴν ὑστεραίαν οἱ τε σφεν- δονῆται σφενδονῶντες ἐς τοὺς Ἰνδοὺς ἐκ τοῦ ἤδη κεχωσμέ- νου καὶ ἀπὸ τῶν μηχανῶν βέλη ἀφίεμενα ἀνέστελλε τῶν Ἰνδῶν τὰς ἐκδρομὰς τὰς ἐπὶ τοὺς χωνύοντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 2, line 1

Οἱ δὲ Ἰνδοὶ πρὸς τε τὴν ἀδιήγητον τόλμην τῶν ἐς τὸν γήλοφον βιασαμένων Μακεδόνων ἐκπλαγέντες καὶ τὸ χῶμα ξυνάπττον ἤδη ὄρωντες, τοῦ μὲν ἀπο- μάχεσθαι ἔτι ἀπείχοντο, πέμψαντες δὲ κήρυκας σφῶν παρὰ Ἀλέξανδρον ἐθέλειν ἔφασκον ἐνδοῦναι τὴν πέτρην, εἰ σφισι σπένδοιτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 4, line 8

εἶχετό τε Ἀλεξάνδρῳ ἡ πέτρα ἢ τῷ Ἡρακλεῖ ἄπορος γενομένη καὶ ἔθυνεν ἐπ' αὐτῇ Ἀλέξαν- δρος καὶ κατεσκεύασε φρούριον, παραδούς Σισικόττῳ ἐπιμελεῖσθαι τῆς Φρουρᾶς, ὃς ἐξ Ἰνδῶν

5.3. ARRIAN

μὲν πάλαι νῆτομολήκει ἐς Βάκτρα παρὰ Βῆσσον, Ἀλεξ- ἀνδρου δὲ κατασχόντος τὴν χώραν τὴν Βακτρίαν ξυνεστράτευέ τε αὐτῷ καὶ πιστὸς ἐς τὰ μάλιστα ἐφαίνετο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 7, line

1

Αὐτὸς δὲ ὡς ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ἤδη ἦγε, καὶ ἡ στρατιὰ αὐτῷ ὠδοποίει τὸ πρὸς ὡς ἰούσα ἄπορα ἄλλως ὄντα τὰ ταύτῃ χωρία.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 7, line

5

ἐνταῦθα ξυλλαμβάνει ὀλίγους τῶν βαρβάρων, καὶ παρὰ τούτων ἔμαθεν, ὅτι οἱ μὲν ἐν τῇ χώρᾳ Ἰνδοὶ παρὰ Ἀβισάρῃ ἀποπεφνευγότες εἶεν, τοὺς δὲ ἐλέφαντας ὅτι αὐτοῦ κατέλιπον νέμεσθαι πρὸς τῷ ποταμῷ τῷ Ἰνδῷ· καὶ τούτους ἠγήσασθαι οἱ τὴν ὁδὸν ἐκέλευσεν ὡς ἐπὶ τοὺς ἐλέφαντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 8, line

2

εἰσὶ δὲ Ἰνδῶν πολλοὶ κυνηγέται τῶν ἐλεφάντων, καὶ τούτους σπουδῇ ἄμφ' αὐτὸν εἶχεν Ἀλέξανδρος, καὶ τότε ἐθήρα ξὺν τούτοις τοὺς ἐλέφαντας· καὶ δύο μὲν αὐτῶν ἀπόλλυνται κατὰ κρημονοῦ σφᾶς ῥήφαντες ἐν τῇ διώξει, οἱ δὲ ἄλλοι ξυλληφθέντες ἔφερόν τε τοὺς ἀμβάτας καὶ τῇ στρατιᾷ ξυνετάσσοντο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 9, line

4

καὶ αὗται κατὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ἤγοντο ὡς ἐπὶ τὴν γέφυραν, ἥντινα Ἡφαιστίων καὶ Περδίκκας αὐτῷ ἐξ- οικοδομηκότες πάλαι ἦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 1, line 2

ARRIANOY ΑΛΕΞΑΝΔΡΟΥ ΑΝΑΒΑΣΕΩΣ ΒΙΒΛΙΟΝ ΠΕΜΠΤΟΝ

Ἐν δὲ τῇ χώρᾳ ταύτῃ, ἥντινα μετὰ τοῦ τε Κωφῆνος καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἐπῆλθεν Ἀλέξανδρος, καὶ Νῦσαν πόλιν ὠκίσθαι λέγουσι· τὸ δὲ κτίσμα εἶναι Διονύσου· Διόνυσον δὲ κτίσαι τὴν Νῦσαν ἐπεὶ τε Ἰνδοὺς ἐχειρώσατο, ὅστις δὴ οὗτος ὁ Διόνυσος καὶ ὁπότε ἢ ὅθεν ἐπ' Ἰνδοὺς ἐστράτευσεν· οὐ γὰρ ἔχω συμβαλεῖν εἰ ὁ Θηβαῖος Διόνυσος [ὅς] ἐκ Θηβῶν ἢ ἐκ Τρωάδου τοῦ Λυδίου ὀρμηθεὶς ἐπὶ Ἰνδοὺς ἦκε στρατιὰν ἄγων, τοσαῦτα μὲν ἔθνη μάχισμα καὶ ἄγνωστα τοῖς τότε Ἑλλήσιν ἐπελθόν, οὐδὲν δὲ αὐτῶν ἄλλο ὅτι μὴ τὸ Ἰνδῶν βίᾳ χειρωσάμενος· πλὴν γε δὴ ὅτι οὐκ

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 2, line 3

ΑΛΕΞΑΝΔΡΟΥ ΑΝΑΒΑΣΕΩΣ ΒΙΒΛΙΟΝ ΠΕΜΠΤΟΝ

Ἐν δὲ τῇ χώρᾳ ταύτῃ, ἥντινα μετὰ τοῦ τε Κωφῆνος καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἐπῆλθεν Ἀλέξανδρος, καὶ Νῦσαν πόλιν ὠκίσθαι λέγουσι· τὸ δὲ κτίσμα εἶναι Διονύσου· Διόνυσον δὲ κτίσαι τὴν Νῦσαν ἐπεὶ τε Ἰνδοὺς ἐχειρώσατο, ὅστις δὴ οὗτος ὁ Διόνυσος καὶ ὁπότε ἢ ὅθεν ἐπ' Ἰνδοὺς ἐστράτευσεν· οὐ γὰρ ἔχω συμβαλεῖν εἰ ὁ Θηβαῖος Διόνυσος [ὅς] ἐκ Θηβῶν ἢ ἐκ Τρωάδου τοῦ Λυδίου ὀρμηθεὶς ἐπὶ Ἰνδοὺς ἦκε στρατιὰν ἄγων, τοσαῦτα μὲν ἔθνη μάχισμα καὶ ἄγνωστα

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

τοῖς τότε Ἑλλησιν ἐπελθών, οὐδὲν δὲ αὐτῶν ἄλλο ὅτι μὴ τὸ Ἰνδῶν βία χειρωσάμενος· πλὴν γε δὴ ὅτι οὐκ ἀκριβῆ ἔξεταστέην χρὴ εἶναι τῶν ὑπὲρ τοῦ θείου ἐκ παλαιοῦ μεμυθευμένων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 2, line 6

Κωφῆνος καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἐπῆλθεν Ἀλέξαν- δρος, καὶ Νῦσαν πόλιν ᾠκίσθαι λέγουσι· τὸ δὲ κτίσμα εἶναι Διονύσου· Διόνυσον δὲ κτίσαι τὴν Νῦσαν ἐπεὶ τε Ἰνδοὺς ἐχειρώσατο, ὅστις δὴ οὗτος ὁ Διόνυσος καὶ ὁπότε ἢ ὅθεν ἐπ' Ἰνδοὺς ἐστράτευσεν· οὐ γὰρ ἔχω συμβαλεῖν εἰ ὁ Θηβαῖος Διόνυσος [ὅς] ἐκ Θηβῶν ἢ ἐκ Τρώλου τοῦ Λυδίου ὀρμηθεὶς ἐπὶ Ἰνδοὺς ἦκε στρατιὰν ἄγων, τοσαῦτα μὲν ἔθνη μάχμα καὶ ἄγνωστα τοῖς τότε Ἑλλησιν ἐπελθών, οὐδὲν δὲ αὐτῶν ἄλλο ὅτι μὴ τὸ Ἰνδῶν βία χειρωσάμενος· πλὴν γε δὴ ὅτι οὐκ ἀκριβῆ ἔξεταστέην χρὴ εἶναι τῶν ὑπὲρ τοῦ θείου ἐκ παλαιοῦ μεμυθευμένων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 5, line 3

Διόνυσος γὰρ ἐπειδὴ χειρωσάμενος τὸ Ἰνδῶν ἔθνος ἐπὶ θάλασσαν ὀπίσω κατῆε τὴν Ἑλληνικήν, ἐκ τῶν ἀπο- μάχων στρατιωτῶν, οἳ δὴ αὐτῷ καὶ βάκχοι ἦσαν, κτίζει τὴν πόλιν τήνδε μνημόσυνον τῆς αὐτοῦ πλάνης τε καὶ νίκης τοῖς ἔπειτα ἐσόμενον, καθάπερ οὖν καὶ σὺ αὐτὸς Ἀλεξάνδρειαν τε ἐκτίσας τὴν πρὸς Καυκάσῳ ὄρει καὶ ἄλλην Ἀλεξάνδρειαν ἐν τῇ Αἰγυπτίῳ γῇ, καὶ ἄλλας πολλὰς τὰς μὲν ἐκτικας ἦδη, τὰς δὲ καὶ κτίσεις ἀνά χρόνον, οἷα δὴ πλείονα Διονύσου ἔργα ἀποδείξάμενος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 6, line 9

καὶ ἐκ τούτου ἐλευ- θέραν τε οἰκοῦμεν τὴν Νῦσαν καὶ αὐτοὶ αὐτόνομοι καὶ ἐν κόσμῳ πολιτεύοντες· τῆς δὲ ἐκ Διονύσου οἰκίσεως καὶ τότε σοι γενέσθω τεκμήριον· κιττὸς γὰρ οὐκ ἄλλη τῆς Ἰνδῶν γῆς φυόμενος παρ' ἡμῖν φύεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 2, section 6, line 3

καὶ τοὺς Μακεδόνας ἠδέως τὸν κισσὸν ἰδόντας, οἷα δὴ διὰ μακροῦ ὄφθέντα (οὐ γὰρ εἶναι ἐν τῇ Ἰνδῶν χώρα κισσόν, οὐδὲ ἵναπερ αὐτοῖς ἄμπελοι ἦσαν) στεφάνους σπουδῇ ἀπ' αὐτοῦ ποιεῖσθαι, ὥς καὶ στεφανώσασθαι εἶχον, ἐφυμνούντας τὸν Διόνυσόν τε καὶ τὰς ἐπωνυμίας τοῦ θεοῦ ἀνα- καλοῦντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 3, section 3, line 3

τὸν δὲ Καύκασον τὸ ὄρος ἐκ τοῦ Πόντου ἐς τὰ πρὸς ἑω μέρη τῆς γῆς καὶ τὴν Παραπαμισσαδῶν χώραν ὥς ἐπὶ Ἰνδοὺς μετάγειν τῷ λόγῳ τοὺς Μακε-δόνας, Παραπάμισον ὄντα τὸ ὄρος αὐτοὺς καλοῦντας Καύκασον τῆς Ἀλεξάνδρου ἕνεκα δόξης, ὥς ὑπὲρ τὸν Καύκασον ἄρα ἐλθόντα Ἀλέξανδρον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 3, section 4, line 2

ἐν τε αὐτῇ τῇ Ἰνδῶν γῇ βοῦς ἰδόντας ἐγκεκαυμένας ῥόπαλον τεκ-μηριοῦσθαι ἐπὶ τῷδε, ὅτι Ἡρακλῆς ἐς Ἰνδοὺς ἀφίκετο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 3, section 5, line 1

Ἀλέξανδρος δὲ ὥς ἀφίκετο ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμόν, καταλαμβάνει γέφυράν τε ἐπ' αὐτῷ πεπονημένην πρὸς Ἡφαιστίῳ καὶ πλοῖα πολλὰ μὲν σμικρότερα, δύο δὲ τριακοντόρους, καὶ παρὰ Ταξίλου τοῦ Ἰνδοῦ δῶρα ἦκοντα ἀργυρίου μὲν τάλαντα ἐς διακόσια, ἱερεῖα δὲ βοῦς μὲν

5.3. ARRIAN

τρισχιλίας, πρόβατα δὲ ὑπὲρ μύρια, ἐλέφαν- τας δὲ ἐς τριάκοντα· καὶ ἵππεῖς δὲ ἑπτακόσιοι αὐτῷ Ἰνδῶν ἐς ξυμμαχίαν παρὰ Ταξίλου ἦκον· καὶ τὴν πόλιν Τάξιλα, τὴν μεγίστην μεταξὺ Ἰνδοῦ τε ποταμοῦ καὶ Ὑδάσπου, ὅτι αὐτῷ Ταξίλης ἐνδίδωσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 1, line 1

Ὁ δὲ Ἰνδὸς ποταμὸς ὅτι μέγιστος ποταμῶν ἐστὶ τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν τε καὶ τὴν Εὐρώπην, πλὴν Γάγγου, καὶ τούτου Ἰνδοῦ ποταμοῦ, καὶ ὅτι αἱ πηγαὶ εἰσὶν αὐτῷ ἐπὶ τὰδε τοῦ ὄρους τοῦ Παραπαμίσου ἢ Καυκάσου, καὶ ὅτι ἐκδίδωσιν ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν τὴν κατὰ Ἰνδοῦς ὡς ἐπὶ νότον ἄνεμον, καὶ ὅτι δίστομός ἐστιν ὁ Ἰνδὸς καὶ αἱ ἐκβολαὶ αὐτοῦ ἀμφοτέραι τεναγώδεις, καθάπερ αἱ πέντε τοῦ Ἰστροῦ, καὶ ὅτι Δέλτα ποιεῖ καὶ αὐτὸς ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ τῷ Αἰγυπτίῳ Δέλτα παραπλήσιον καὶ τοῦτο Πάταλα καλεῖται τῇ

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 1, line 11

τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν τε καὶ τὴν Εὐρώπην, πλὴν Γάγγου, καὶ τούτου Ἰνδοῦ ποταμοῦ, καὶ ὅτι αἱ πηγαὶ εἰσὶν αὐτῷ ἐπὶ τὰδε τοῦ ὄρους τοῦ Παραπαμίσου ἢ Καυκάσου, καὶ ὅτι ἐκδίδωσιν ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν τὴν κατὰ Ἰνδοῦς ὡς ἐπὶ νότον ἄνεμον, καὶ ὅτι δίστομός ἐστιν ὁ Ἰνδὸς καὶ αἱ ἐκβολαὶ αὐτοῦ ἀμφοτέραι τεναγώδεις, καθάπερ αἱ πέντε τοῦ Ἰστροῦ, καὶ ὅτι Δέλτα ποιεῖ καὶ αὐτὸς ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ τῷ Αἰγυπτίῳ Δέλτα παραπλήσιον καὶ τοῦτο Πάταλα καλεῖται τῇ Ἰνδῶν φωνῇ, ταῦτα μὲν ὑπὲρ τοῦ Ἰνδοῦ τὰ μάλιστα οὐκ ἀμφίλογα καὶ ἐμοὶ ἀναγεγράφθω.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 2, line 3

ἐπεὶ καὶ ὁ Ὑδάσπης καὶ Ἀκεσίνης καὶ Ὑδραώτης καὶ Ὑφασις, καὶ οὗτοι Ἰνδοὶ ποταμοὶ ὄντες, τῶν μὲν ἄλλων τῶν Ἀσιανῶν ποταμῶν πολὺ τι κατὰ μέγεθος ὑπερφέρουσι, τοῦ Ἰνδοῦ δὲ μείονες εἰσὶν καὶ πολὺ δὴ μείονες, ὅπου καὶ αὐτὸς ὁ Ἰνδὸς τοῦ Γάγγου.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 2, line 8

Κτησίας μὲν δὴ, εἰ δὴ τῷ ἱκανὸς καὶ Κτησίας ἐς τεκμηρίωσιν, ἵνα μὲν στενότατος αὐτὸς αὐτοῦ ὁ Ἰνδὸς ἐστὶ, τεσσαράκοντα σταδίους <λέγει> ὅτι διέχουσιν αὐτῷ αἱ ὄχθαι, ἵνα δὲ πλα- τύτατος, καὶ ἑκατὸν· τὸ πολὺ δὲ εἶναι αὐτοῦ τὸ μέσον τούτοις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 3, line 1

Τούτων τὸν ποταμὸν τὸν Ἰνδὸν ὑπὸ τὴν ἑὼν διέβαινε ξὺν τῇ στρατιᾷ Ἀλέξανδρος ἐς τῶν Ἰνδῶν τὴν γῆν· ὑπὲρ ᾧ ἐγὼ οὔτε οἴσισι νόμοις διαχρῶνται ἐν τῇδε τῇ συγγραφῇ ἀνέγραψα, οὔτε ζῶα εἰ δὴ τινα ἄτοπα ἢ χώρα αὐτοῖς ἐκφέρει, οὔτε ἰχθύας ἢ κήτη ὅσα ἢ οἷα ὁ Ἰνδὸς ἢ ὁ Ὑδάσπης ἢ ὁ Γάγγης ἢ οἱ ἄλλοι Ἰνδῶν ποταμοὶ φέρουσιν, οὐδὲ τοὺς μύρμηκας τοὺς τὸν χρυσὸν σφισιν ἐργαζομένους, οὐδὲ τοὺς γρυῖπας τοὺς φύλακας, οὐδὲ ὅσα ἄλλα ἐφ' ἡδονῇ μᾶλλον τι πεποιήται ἢ ἐς ἀφήγησιν τῶν ὄντων, ὡς τὰ γε κατ'

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 4, line 4

ἀλλὰ Ἀλέξανδρος γὰρ καὶ οἱ ξὺν τούτῳ στρατεύσαντες τὰ πολλὰ ἐξήλεγξαν, ὅσα γε μὴ καὶ αὐτῶν ἐστὶν οἱ ἐφεύσαντο· ἀχρύσους τε εἶναι Ἰνδοῦς ἐξήλεγξαν, ὅσους γε δὴ Ἀλέξανδρος ξὺν τῇ στρατιᾷ ἐπῆλθε, πολλοὺς δὲ ἐπῆλθε, καὶ ἥκιστα χλιδῶντας κατὰ τὴν δίαίταν, ἀλλὰ μεγάλους μὲν τὰ σώματα, οἷους μεγίστους τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν, πεντα- πήχεις τοὺς πολλοὺς ἢ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ὀλίγον ἀποδέοντας, καὶ μελαν- τέρους τῶν ἄλλων ἀνθρώπων, πλὴν Αἰθιοπῶν, καὶ τὰ πολέμια πολὺ τι γενναιοτάτους τῶν γε δὴ τότε ἐποίκων τῆς Ἀσίας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 5, line 5

τὸ γὰρ Περσῶν τῶν πάλαι, ξὺν οἷς ὀρμηθεὶς Κῦρος ὁ Καμβύσου Μήδους τε τὴν ἀρχὴν τῆς Ἀσίας ἀφείλετο καὶ ἄλλα ἔθνη τὰ μὲν κατεστρέφαστο, τὰ δὲ προσχωρήσαντά οἱ ἐκόντα κατέσχευεν, οὐκ ἔχω ἀτρεκῶς ὥς γε δὴ πρὸς τὰ Ἰνδῶν ξυμβαλεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 5, section 1, line 1

Ἀλλὰ ὑπὲρ Ἰνδῶν ἰδία μοι γεγράφεται ὅσα πιστό- τατα ἐς ἀφήγησιν οἱ τε ξὺν Ἀλεξάνδρῳ στρατεύσαντες καὶ ὁ ἐκπεριπλεύσας τῆς μεγάλης θαλάσσης τὸ κατ' Ἰνδοῦς Νέαρχος, ἐπὶ δὲ ὅσα Μεγασθένης τε καὶ Ἑρατοσθένης, δοκίμῳ ἄνδρῳ, ξυνεγραφέτην, καὶ νόμιμα ἅπτα Ἰνδοῖς ἐστὶ καὶ εἰ δὴ τίνα ἄτοπα ζῶα αὐτόθι φύεται καὶ τὸν παράπλου ἀὐτὸν τῆς ἔξω θαλάσσης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 5, section 4, line 2

ὁ δὲ Καύκασον ἐκάλουν οἱ Ἀλεξάνδρῳ ξυστρατεύσαντες Μακεδόνες, ὡς μὲν λέγεται τὰ Ἀλεξάνδρου αὖξοντες, ὅτι δὴ καὶ ἐπέκεινα ἄρα τοῦ Καυκάσου κρατῶν τοῖς ὅπλοις ἦλθεν Ἀλέξανδρος· τυχὸν δὲ καὶ ξυνεχὲς τυγχάνει ὃν τοῦτο τὸ ὅρος τῷ ἄλλῳ τῷ Σκυθικῷ Καυκάσῳ, καθάπερ οὖν αὐτῷ τούτῳ ὁ Ταῦρος· καὶ ἐμοὶ αὐτῷ πρότερόν ποτε ἐπὶ τῷδε λέλεκται Καύκασος τὸ ὅρος τοῦτο καὶ ὕστερον τῷδε τῷ ὀνόματι κλη- θήσεται· τὸν δὲ Καύκασον τοῦτον καθήκειν ἔστε ἐπὶ <τὴν> μεγάλῃν τὴν πρὸς ἑῷ τε καὶ Ἰνδοῦς θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 5, section 5, line 2

τούς οὖν ποταμούς, ὅσοι κατὰ τὴν Ἀσίαν λόγου ἄξιοι, ἐκ τοῦ Ταύρου τε καὶ τοῦ Καυκάσου ἀνίσχοντας τοὺς μὲν ὡς ἐπ' ἄρκτον τετραμμένον ἔχειν τὸ ὕδωρ, καὶ τούτων τοὺς μὲν ἐς τὴν λίμνην ἐκδιδόναι τὴν Μαιῶτιν, τοὺς δὲ ἐς τὴν Ἰρκανίαν καλουμένην θάλασσαν, καὶ ταύτην κόλπον οὔσαν τῆς μεγάλης θαλάσσης, τοὺς δὲ ὡς ἐπὶ νότον ἄνεμον τὸν Εὐφράτην τε εἶναι καὶ τὸν Τίγρητα καὶ τὸν Ἰνδόν τε καὶ τὸν Ἰδάσπην καὶ Ἀκεσίνην καὶ Ἰδραώτην καὶ Ἰφασιν καὶ ὅσοι ἐν μέσῳ τούτων τε καὶ τοῦ Γάγγου ποταμοῦ ἐς θάλασσαν καὶ οὗτοι ἐσβάλλουσιν ἢ εἰς τενάγην ἀναχε- όμενοι ἀφανίζονται, καθάπερ ὁ Εὐφράτης ποταμὸς ἀφανίζεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 2, line 3

τῆς δὲ ὡς ἐπὶ νότον Ἀσίας τετραχῇ αὐτὴν τεμνομένης μεγίστην μὲν μοῖραν τὴν Ἰνδῶν γῆν ποιεῖ Ἑρατοσθένης τε καὶ Μεγασθένης, ὃς ξυνὴν μὲν Σιβυρτίῳ τῷ σατράπῃ τῆς Ἀραχωσίας, πολλάκις δὲ λέγει ἀφικέσθαι παρὰ Σανδράκοττον τὸν Ἰνδῶν βασιλέα, ἐλαχίστην δὲ ὅσῃν ὁ Εὐφράτης ποταμὸς ἀπείργει ὡς πρὸς τὴν ἐντὸς τὴν ἡμετέραν θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 2, line 9

δύο δὲ αἱ μεταξὺ Εὐφράτου τε ποταμοῦ καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἀπειργόμεναι αἱ δύο ξυντεθεῖσαι μόλις ἄξιαι τῇ Ἰνδῶν γῇ ξυμβαλεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 3, line 2

ἀπείργεσθαι δὲ τὴν Ἰνδῶν χώραν πρὸς μὲν ἑῷ τε καὶ ἀπηλιώτην ἄνεμον ἔστε ἐπὶ μεσημβρίαν τῇ μεγάλῃ θαλάσῃ· τὸ πρὸς βορρᾶν δὲ αὐτῆς ἀπείργειν τὸν Καύκασον τὸ ὅρος ἔστε

5.3. ARRIAN

ἐπὶ τοῦ Ταύρου τὴν ζυμβολήν· τὴν δὲ ὡς πρὸς ἐσπέραν τε καὶ ἄνεμον Ἰάπυγα ἔστε ἐπὶ τὴν μεγάλην θάλασσαν ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς ἀποτεμένεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 6, line 6

εἰ δὴ οὖν εἰς τε ποταμὸς παρ' ἐκάστοις καὶ οὐ μεγάλοι οὗτοι ποταμοὶ ἱκανοὶ γῆν πολλὴν ποιῆσαι ἐς θάλασσαν προχέομενοι, ὅποτε ἰλὺν καταφέρουσιν καὶ πηλὸν ἐκ τῶν ἄνω τόπων ἐν-
θεν περ αὐτοῖς αἱ πηγαὶ εἰσιν, οὐδὲ ὑπὲρ τῆς Ἰνδῶν ἄρα χώρας ἐς ἀπιστίαν ἰέναι ἄξιον, ὅπως
πεδίον τε ἢ πολλὴ ἐστὶ καὶ ἐκ τῶν ποταμῶν τὸ πεδίον ἔχει προσκεχωσμένον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 7, line 4

Ἐρμον μὲν γάρ καὶ Κάϊστρον καὶ Κάϊκόν τε καὶ Μαίανδρον ἢ ὅσοι πολλοὶ ποταμοὶ
τῆς Ἀσίας ἐς τήνδε τὴν ἐντὸς θάλασσαν ἐκδιδοῦσιν οὐδὲ σύμπαντας ζυντεθέντας ἐνὶ τῶν Ἰνδῶν
ποταμῶν ἄξιον ζυμβαλεῖν πλήθους ἕνεκα τοῦ ὕδατος, μὴ ὅτι τῷ Γάγγῃ τῷ μεγίστῳ, ὅτῳ
οὔτε <τὸ> τοῦ Νείλου ὕδωρ τοῦ Αἰγυπτίου οὔτε ὁ Ἰστρος ὁ κατὰ τὴν Εὐρώπην ῥέων ἄξιοι
ζυμβαλεῖν, ἀλλ' οὐδὲ τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ ἐκεῖνοί γε πάντες ζυμμιχθέντες ἐς ἴσον ἔρχονται, ὃς
μέγας τε εὐθὺς ἀπὸ τῶν πηγῶν ἀνίσχει καὶ πεντε- καίδεκα ποταμοὺς πάντας τῶν Ἀσιανῶν
μείζονας παρα- λαβὼν καὶ τῇ ἐπωνυμίᾳ κρατήσας οὕτως ἐκδιδοῖ ἐς θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 8, line 6

ταῦτά μοι ἐν τῷ παρόντι περὶ Ἰνδῶν τῆς χώρας λελέχθω· τὰ δὲ ἄλλα ἀποκείσθω ἐς τὴν
Ἰνδικὴν συγγραφὴν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 7, section 1, line 1

Τὸ δὲ ζεύγμα τὸ ἐπὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ὅπως μὲν ἐποιήθη Ἀλεξάνδρῳ οὔτε Ἀριστόβουλος
οὔτε Πτολεμαῖος, οἷς μάλιστα ἐγὼ ἔπομαι, λέγουσιν· οὐδὲ αὐτὸς ἔχω ἀτρεκῶς εἰκάσαι, πότερα
πλοίοις ἐξεύχθη ὁ πόρος, καθάπερ οὖν ὁ Ἑλλήσποντός τε πρὸς Ξέρξου καὶ ὁ Βόσπορος τε καὶ
ὁ Ἰστρος πρὸς Δαρείου, ἢ γέφυρα κατὰ τοῦ ποταμοῦ διηνεκὴς ἐποιήθη αὐτῷ· δοκεῖ δ' ἔμοιγε
πλοίοις μᾶλλον ζευχθῆναι· οὐ γὰρ ἂν δέξασθαι γέφυραν τὸ βάθος τοῦ ὕδατος, οὐδ' ἂν ἐν τοσῶδε
χρόνῳ ἔργον οὕτως ἄτοπον ζυντελεσθῆναι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 1, line 2

Ῥωμαίοις μὲν δὴ οὕτω ταῦτα ἐκ παλαιοῦ ἐπῆσκηται· Ἀλεξάνδρῳ δὲ ὅπως ἐξεύχθη ὁ Ἰνδὸς
ποταμὸς οὐκ ἔχω εἰπεῖν, ὅτι μὴδὲ οἱ συστρατεύσαντες αὐτῷ εἶπον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 2, line 2

ὡς δὲ διέβη πέραν τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ, καὶ ἐνταῦθα αὐτῷ θύει κατὰ νόμον Ἀλεξάνδρος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 2, line 3

ἄρας δὲ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ ἐς Τάξιλα ἀφίκετο, πόλιν μεγάλην καὶ εὐδαίμονα, τὴν μεγίστην
τῶν μεταξὺ Ἰνδοῦ τε ποταμοῦ καὶ Ἰδάσπου.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 2, line 7

καὶ ἐδέχετο αὐτὸν Ταξίλης ὁ ὑπαρχος τῆς πόλεως καὶ αὐτοὶ οἱ τῇδε Ἰνδοὶ φιλίως.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 3, line 3

ἦκον δὲ ἐνταῦθα παρ' αὐτὸν καὶ παρὰ Ἀβισάρου πρέσβεις τοῦ τῶν ὀρείων Ἰνδῶν βασιλέως
ὁ τε ἀδελφὸς τοῦ Ἀβισάρου καὶ ἄλλοι ξύν αὐτῷ οἱ δοκιμώτατοι, καὶ παρὰ Δοξάρεως νομάρχου

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ἄλλοι, δῶρα φέροντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 3, line 8
καὶ ἀπο- δείξας σατράπην τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν Φίλιππον τὸν Μαχάτα φρουρὰν τε ἀπολείπει
ἐν Ταξίλοις καὶ τοὺς ἀπομάχους τῶν στρατιωτῶν διὰ νόσον· αὐτὸς δὲ ἦγεν ὡς ἐπὶ τὸν Ὑδάσπην
ποταμὸν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 4, line 5
ταῦτα ὡς ἔγνω Ἀλέξανδρος, Κοῖνον μὲν τὸν Πολεμοκράτους πέμψας ὀπίσω ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν
ποταμὸν τὰ πλοῖα ὅσα παρ- εσκεύαστο αὐτῷ ἐπὶ τοῦ πόρου τοῦ Ἰνδοῦ ξυντεμόντα κελεύει
φέρειν ὡς ἐπὶ τὸν Ὑδάσπην ποταμὸν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 5, line 8
αὐτὸς δὲ ἀναλαβὼν ἦν τε δύναντι ἔχων ἤκεν ἐς Τάξιλα καὶ πεντακισχιλίους τῶν Ἰνδῶν, οὓς
Ταξίλης τε καὶ οἱ ταύτῃ ὑπαρχοὶ ἦγον, ἦει ὡς ἐπὶ τὸν Ὑδάσπην ποταμὸν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 9, section 4, line 2
ἄλλως τε ἐν μὲν τῷ τότε οἱ ποταμοὶ πάντες οἱ Ἰνδικοὶ πολλοῦ τε ὕδατος καὶ θολεροῦ ἔρρεον
καὶ ὀξέος τοῦ ρεύματος· ἦν γὰρ ὥρα ἔτους ἢ μετὰ τροπὰς μάλιστα <τὰς> ἐν θέρει τρέπεται
ὁ ἥλιος· ταύτῃ δὲ τῇ ὥρᾳ ὕδατά τε ἐξ οὐρανοῦ ἀθρόα τε καταφέρεται ἐς τὴν γῆν τὴν Ἰνδικὴν
καὶ αἱ χιόνες αἱ τοῦ Καυκάσου, ἐνθεν περ τῶν πολλῶν ποταμῶν αἱ πηγαὶ εἰσι, κατατηκόμεναι
αὕξουσιν αὐτοῖς τὸ ὕδωρ ἐπὶ μέγα· χειμῶνος δὲ ἔμπαλιν ἴσχουσιν ὀλίγοι τε γίνονται καὶ
καθαροὶ ἰδεῖν καὶ ἔστιν ὅπου περάσιμοι, πλὴν γε δὴ τοῦ

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 9, section 4, line 12
τῷ τότε οἱ ποταμοὶ πάντες οἱ Ἰνδικοὶ πολλοῦ τε ὕδατος καὶ θολεροῦ ἔρρεον καὶ ὀξέος τοῦ
ρεύματος· ἦν γὰρ ὥρα ἔτους ἢ μετὰ τροπὰς μάλιστα <τὰς> ἐν θέρει τρέπεται ὁ ἥλιος· ταύτῃ
δὲ τῇ ὥρᾳ ὕδατά τε ἐξ οὐρανοῦ ἀθρόα τε καταφέρεται ἐς τὴν γῆν τὴν Ἰνδικὴν καὶ αἱ χιόνες
αἱ τοῦ Καυκάσου, ἐνθεν περ τῶν πολλῶν ποταμῶν αἱ πηγαὶ εἰσι, κατατηκόμεναι αὕξουσιν
αὐτοῖς τὸ ὕδωρ ἐπὶ μέγα· χειμῶνος δὲ ἔμπαλιν ἴσχουσιν ὀλίγοι τε γίνονται καὶ καθαροὶ ἰδεῖν
καὶ ἔστιν ὅπου περάσιμοι, πλὴν γε δὴ τοῦ Ἰνδοῦ καὶ Γάγγου καὶ τυχόν καὶ ἄλλου του· ἀλλ'
ὁ γε Ὑδάσπης περατὸς γίνεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 11, section 3, line 8

καὶ Κρατερὸς ὑπελέλειπτο ἐπὶ στρατο- πέδου τὴν τε αὐτοῦ ἔχων ἱππαρχίαν καὶ τοὺς
ἐξ Ἀραχωτῶν καὶ Παραπαμισαδῶν ἱππέας καὶ τῆς φάλαγ- γος τῶν Μακεδόνων τὴν τε
Ἀλκέτου καὶ τὴν Πολυ- πέρχοντος τάξιν καὶ τοὺς νομάρχας τῶν ἐπὶ τὰδε Ἰνδῶν καὶ τοὺς ἅμα
τούτοις τοὺς πεντακισχιλίους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 12, section 1, line 7

ἐν μέσῳ δὲ τῆς νήσου τε καὶ τοῦ μεγάλου στρατοπέδου, ἵνα αὐτῷ Κρατερὸς ὑπελέλει-
πτο, Μελέαγρός τε καὶ Ἄτταλος καὶ Γοργίας ξὺν τοῖς μισθοφόροις ἱππεύσι τε καὶ πεζοῖς

5.3. ARRIAN

ἐπετάχατο· καὶ τούτοις διαβαίνειν παρηγγέλλετο κατὰ μέρος, διελόντας τὸν στρατόν, ὅποτε
ξυνεχομένους ἤδη ἐν τῇ μάχῃ τοὺς Ἰνδοὺς ἴδοιεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 14, section 2, line

6

γνώμην δὲ ἐπεποίητο, ὥς εἰ μὲν προσμίξειαν αὐτῷ οἱ ἀμφὶ τὸν Πῶρον ξὺν τῇ δυνάμει
ἀπάσῃ, ἢ κρατήσῃ αὐτῶν οὐ χαλεπῶς τῇ ἵππῳ προσβαλὼν ἢ ἀπομαχεῖσθαι γε ἔσται τοὺς
πεζοὺς ἐν τῷ ἔργῳ ἐπιγενέσθαι· εἰ δὲ πρὸς τὴν τόλμαν τῆς διαβάσεως ἄτοπον γενομένην οἱ
Ἰνδοὶ ἐκπλαγέντες φεύγουσιν, οὐ πόρρωθεν ἔξεσθαι αὐτῶν κατὰ τὴν φυγὴν, ὥς πλείονα ἐν τῇ
ἀποχωρήσει τὸν φόνον γενόμενον ὀλίγον ἔτι ὑπολείπεσθαι αὐτῷ τὸ ἔργον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 14, section 3, line

6

Ἀριστόβουλος δὲ λέγει τὸν Πῶρου παῖδα φθάσαι ἀφικόμενον σὺν ἄρμασιν ὥς ἐξήκοντα
πρὶν τὸ ὕστερον ἐκ τῆς νήσου τῆς μικρᾶς περᾶσαι Ἀλέξανδρον· καὶ τοῦτον δυνηθῆναι ἂν
εἶρξαι Ἀλέξανδρον τῆς διαβάσεως χαλεπῶς καὶ μηδενὸς εἰργοντος περαιω-
θέντα, εἴπερ οὖν καταπηδήσαντες οἱ Ἰνδοὶ ἐκ τῶν ἁρμάτων προσέκειντο τοῖς πρώτοις τῶν ἐκβαινόντων· ἀλλὰ
παρὰ πλάξαι γὰρ ξὺν τοῖς ἄρμασι καὶ ἀκίνδυνον ποιῆσαι Ἀλεξάνδρῳ τὴν διάβασιν· καὶ ἐπὶ
τούτους ἀφεῖναι Ἀλέξανδρον τοὺς ἵπποτοξότας, καὶ τραπῆναι αὐτοὺς οὐ χαλεπῶς, πληγὰς
λαμβάνοντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 14, section 4, line

2

οἱ δὲ καὶ μάχην λέγουσιν ἐν τῇ ἐκβάσει γενέσθαι τῶν Ἰνδῶν τῶν ξὺν τῷ παιδὶ τῷ Πῶρου
ἀφιγμένων πρὸς Ἀλέξανδρον τε καὶ τοὺς ξὺν αὐτῷ ἱππέας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 15, section 2, line

1

ὥς δὲ κατέμαθεν ἀτρεκῶς τὸ πλῆθος τὸ τῶν Ἰνδῶν, ἐνταῦθα δὴ ὀξέως ἐπιτεσεῖν αὐτοῖς ξὺν
τῇ ἀμφ' αὐτὸν ἵππῳ· τοὺς δὲ ἐγκλίνει, ὥς Ἀλέξανδρον τε αὐτὸν κατεῖδον καὶ τὸ στίφος ἀμφ'
αὐτὸν τῶν ἱππέων οὐκ ἐπὶ μετώπου, ἀλλὰ κατ' ἴλας ἐμβεβληκός.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 16, section 1, line

2

Ἀλέξανδρος δὲ ὥς ἤδη καθεώρα τοὺς Ἰνδοὺς ἐκτασσομένους, ἐπέστησε τοὺς ἱππέας τοῦ πρόσω,
ὥς ἀναλαμβάνειν τῶν πεζῶν τοὺς αἰεὶ προσάγοντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 16, section 2, line

1

ὥς δὲ τὴν τάξιν κατεῖδε τῶν Ἰνδῶν, κατὰ μέσον μὲν, ἵνα οἱ ἐλέφαντες προεβέβληντο καὶ
πυκνὴ ἢ φάλαγξ κατὰ τὰ διαλείποντα αὐτῶν ἐπετέτακτο, οὐκ ἔγνω προάγειν, αὐτὰ ἐκεῖνα
ὀκνήσας ἅπερ ὁ Πῶρος τῷ λογισμῷ ξυνηθεὶς ταύτῃ ἔταξεν· ἀλλὰ αὐτὸς μὲν ἅτε ἱπποκρατῶν
τὴν πολλὴν τῆς ἵππου ἀναλαβὼν ἐπὶ τὸ εὐώνυμον κέρας τῶν πολεμίων παρήλαυνεν, ὥς ταύτῃ
ἐπιθησόμενος.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 16, section 4, line 2

Ἦδη τε ἐντὸς βέλους ἐγίγνετο καὶ ἐφῆκεν ἐπὶ τὸ κέρασ τὸ εὐώνυμον τῶν Ἰνδῶν τοὺς ἵππο-
τοξότας, ὄντας ἐς χιλίους, ὡς ταράξαι τοὺς ταύτη ἐφεστηκότας τῶν πολεμίων τῇ πυκνότητι
τε τῶν τοξευμάτων καὶ τῶν ἵππων τῇ ἐπελάσει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 1, line 1

Ἐν τούτῳ δὲ οἱ τε Ἰνδοὶ τοὺς ἵππεας πάντοθεν ξυναλίσσαντες παρίππευον Ἀλεξάνδρῳ ἀντι-
παρεξάγοντες τῇ ἐλάσει, καὶ οἱ περὶ Κοῖνον, ὡς παρήγγελτο, κατόπιν αὐτοῖς ἐπεφαίνοντο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 1, line 4

ταῦτα ξυνιδόντες οἱ Ἰνδοὶ ἀμφὶ- στομον ἠναγκάσθησαν ποιῆσαι τὴν τάξιν τῆς ἵππου, τὴν
μὲν ὡς ἐπ' Ἀλέξανδρον τὴν πολλήν τε καὶ κρατίστην, οἱ δὲ ἐπὶ Κοῖνόν τε καὶ τοὺς ἄμα τούτῳ
ἐπέστρεφον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 2, line 2

τοῦτό τε οὖν εὐθύς ἐτάραξε τὰς τάξεις τε καὶ τὰς γνώμας τῶν Ἰνδῶν καὶ Ἀλέξανδρος ἰδὼν
τὸν καιρὸν ἐν αὐτῇ τῇ ἐπὶ θάτερα ἐπιστροφῇ τῆς ἵππου ἐπιτίθεται τοῖς καθ' αὐτόν, ὥστε οὐδὲ
τὴν ἐμβολὴν ἐδέξαντο τῶν ἀμφ' Ἀλέξανδρον ἵππεων οἱ Ἰνδοί, ἀλλὰ κατηρ[ρ]άχθησαν ὥσπερ
εἰς τεῖχός τι φίλιον τοὺς ἐλέφαντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 3, line 9

καὶ ἦν τὸ ἔργον οὐδενὶ τῶν πρόσθεν ἀγώνων εἰκόσ· τά τε γὰρ θηρία ἐπεκθέοντα ἐς τὰς
τάξεις τῶν πεζῶν, ὅπῃ ἐπιστρέφειεν, ἐκεράϊζε καίπερ πυκνήν οὖσαν τὴν τῶν Μακεδόνων φά-
λαγγα, καὶ οἱ ἵππεῖς οἱ τῶν Ἰνδῶν τοῖς πεζοῖς ἰδόντες ξυνεστηκὸς τὸ ἔργον ἐπιστρέφαντες αὐθις
καὶ αὐτοὶ ἐπήλαυνον τῇ ἵππῳ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 4, line 7

καὶ ἐν τούτῳ πᾶσα ἡ ἵππος Ἀλεξάνδρῳ ἐς μίαν ἵλην ἤδη ξυνηγμένη, οὐκ ἐκ παρ- αγγελ-
ματος, ἀλλὰ ἐν τῷ ἀγῶνι αὐτῷ ἐς τήνδε τὴν τάξιν κατασταῖσα, ὅπῃ προσπέσοι τῶν Ἰνδῶν
ταῖς τάξεσι, ξὺν πολλῷ φόνῳ ἀπελύοντο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 6, line 7

ἀλλ' οἱ μὲν Μακεδόνες, ἅτε ἐν εὐρυχωρίᾳ τε καὶ κατὰ γνώμην τὴν σφῶν προσφερόμενοι
τοῖς θηρίοις, ὅπῃ μὲν ἐπιφέροιντο εἶκον, ἀποστραφέντων δὲ εἶχοντο ἐσακοντίζοντες· οἱ δὲ Ἰνδοὶ ἐν
αὐτοῖς ἀναστρεφόμενοι τὰ πλείω ἤδη πρὸς ἐκείνων ἐβλάπτοντο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 7, line 8

5.3. ARRIAN

καὶ οὕτως οἱ μὲν ἵππεῖς τῶν Ἰνδῶν πλὴν ὀλίγων κατεκόπησαν ἐν τῷ ἔργῳ· ἐκό- πτοντο δὲ καὶ οἱ πεζοὶ πανταχόθεν ἤδη προσκειμένων σφίσι τῶν Μακεδόνων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 1, line 6

καὶ οὗτοι οὐ μείονα τὸν φόνον ἐν τῇ ἀποχωρήσει τῶν Ἰνδῶν ἐποίησαν, ἀκμῆτες ἀντὶ κεκμη- κότων τῶν ἀμφ' Ἀλέξανδρον ἐπιγενόμενοι τῇ διώξει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 2, line 1

Ἀπέθανον δὲ τῶν Ἰνδῶν πεζοὶ μὲν ὀλίγον ἀπο- δέοντες τῶν δισχυρίων, ἵππεῖς δὲ ἐς τρισχι- λίους, τὰ δὲ ἄρματα ξύμπαντα κατεκόπη· καὶ Πώρου δύο παῖδες ἀπέθανον καὶ Σπιτάκης ὁ νομάρχης τῶν ταύτη Ἰνδῶν καὶ τῶν ἐλεφάντων καὶ ἁρμάτων οἱ ἡγεμόνες καὶ οἱ ἱππάρχαι καὶ οἱ στρατηγοὶ τῆς στρατιᾶς τῆς Πώρου ξύμπαντες .

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 5, line 1

Πῶρος δὲ μεγάλα ἔργα ἐν τῇ μάχῃ ἀποδείξάμενος μὴ ὅτι στρατηγοῦ, ἀλλὰ καὶ στρα- τιώτου γενναίου, ὡς τῶν τε ἱππέων τὸν φόνον κατεῖδε καὶ τῶν ἐλεφάντων τοὺς μὲν αὐτοῦ πεπτωκότας, τοὺς δὲ ἐρήμους τῶν ἡγεμόνων λυπηροὺς πλανωμένους, τῶν δὲ πεζῶν αὐτῷ οἱ πλείους ἀπολώλεσαν, οὐχ ἥπερ Δαρεῖος ὁ μέγας βασιλεὺς ἐξάρχων τοῖς ἀμφ' αὐτὸν τῆς φυγῆς ἀπεχώρει, ἀλλὰ ἔστε γὰρ ὑπέμενέ τι τῶν Ἰνδῶν ἐν τῇ μάχῃ ξυνεστηκός, ἐς τοσόνδε ἀγωνισά- μενος, τετραμένος δὲ τὸν δεξιὸν ὦμον, ὃν δὴ γυμνὸν μόνον ἔχων ἐν τῇ μάχῃ ἀν- εστρέφετο (ἀπὸ γὰρ τοῦ ἄλλου σώματος ἥρκει αὐτῷ τὰ βέλη ὁ θώραξ περιττός ὢν κατὰ τε τὴν ἰσχὺν καὶ τὴν ἁρμονίαν, ὡς ὕστερον καταμαθεῖν θεωμένοις ἦν), τότε δὴ καὶ αὐτὸς ἀπεχώρει ἐπιστρέψας τὸν ἐλέφαντα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 6, line 4

πέμπει δὴ παρ' αὐτὸν πρῶτα μὲν Ταξίλην τὸν Ἰνδόν· καὶ Ταξίλης προς- ἱππεύσας ἐφ' ὅσον οἱ ἀσφαλὲς ἐφαίνετο τῷ ἐλέφαντι ὃς ἔφερε τὸν Πῶρον ἐπιστῆσαί τε ἡξίου τὸ θηρίον, οὐ γὰρ εἶναί οἱ ἔτι φεύγειν, καὶ ἀκοῦσαι τῶν παρ' Ἀλεξάνδρου λόγων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 7, line 7

Ἀλέξανδρος δὲ οὐδὲ ἐπὶ τῷδε τῷ Πῶρῳ χαλεπὸς ἐγέ- νετο, ἀλλ' ἄλλους τε ἐν μέρει ἐπέμπε καὶ δὴ καὶ Μερόην ἄνδρα Ἰνδόν, ὅτι φίλον εἶναι ἐκ παλαιοῦ τῷ Πῶρῳ τὸν Μερόην ἔμαθεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 19, section 3, line 2

καὶ Ἀλέξανδρος τούτῳ ἔτι μᾶλλον τῷ λόγῳ ἡσθεὶς τὴν τε ἀρχὴν τῷ Πῶρῳ τῶν τε αὐτῶν Ἰνδῶν ἔδωκεν καὶ ἄλλην ἔτι χάραν πρὸς τῇ πάλαι οὔσῃ πλείονα τῆς πρόσθεν προσέθηκεν· καὶ οὕτως αὐτὸς τε βασιλικῶς κεκρημένος ἦν ἀνδρὶ ἀγαθῷ καὶ ἐκείνῳ ἐκ τούτου ἐς ἅπαντα πιστῶ ἐχρήσατο.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 19, section 3, line 8

τοῦτο τὸ τέλος τῇ μάχῃ τῇ πρὸς Πῶρόν τε καὶ τοὺς ἐπέκεινα τοῦ Ἰδάσπου ποταμοῦ Ἰνδοῦς Ἀλεξάνδρῳ ἐγένετο ἐπ' ἄρχοντος Ἀθηναίους Ἡγήμονος μηνὸς Μουνυχιῶνος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 19, section 4, line 3

καὶ τὴν μὲν Νίκαιαν τῆς νίκης τῆς κατ' Ἰνδῶν ἐπώ- νυμον ὠνόμασε, τὴν δὲ Βουκεφάλαν ἐς τοῦ ἵππου τοῦ Βουκεφάλα τὴν μνήμην, ὃς ἀπέθανεν αὐτοῦ, οὐ βληθεὶς πρὸς οὐδενός, ἀλλὰ ὑπὸ καύματος τε καὶ ἡλικίας (ἦν γὰρ ἀμφὶ τὰ τριάκοντα ἔτη) καματηρὸς γενόμενος, πολλὰ δὲ πρόσθεν ξυγκαμών τε καὶ συγκινδυνεύσας Ἀλεξάνδρῳ, ἀναβαινόμενός τε πρὸς μόνου Ἀλεξάνδρου [ὁ Βουκεφάλας οὗτος], ὅτι τοὺς ἄλλους πάντας ἀπηξίου ἀμβάτας, καὶ μεγέθει μέγας καὶ τῷ θυμῷ γενναῖος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 20, section 2, line 5

Κρατερόν μὲν δὴ ξὺν μέρει τῆς στρατιᾶς ὑπελείπετο τὰς πόλεις ἄστινας ταύτη ἐκτιζεν ἀναστήσοντά τε καὶ ἐκτειχιούντα· αὐτὸς δὲ ἤλαυνεν ὡς ἐπὶ τοὺς προσχώρους τῇ Πώρου ἀρχῇ Ἰνδοῦς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 20, section 6, line 2

ἦκον δὲ καὶ παρὰ τῶν αὐτονόμων Ἰνδῶν πρέσβεις παρ' Ἀλεξάνδρῳ καὶ παρὰ Πώρου ἄλλου του ὑπάρχου Ἰνδῶν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 20, section 8, line 3

τούτου τοῦ Ἀχεσίνου τὸ μέγεθος μόνου τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν Πτολεμαῖος ὁ Λάγρου ἀνέγραψεν· εἶναι γὰρ ἵνα ἐπέρασεν αὐτὸν Ἀλέξανδρος ἐπὶ τῶν πλοίων τε καὶ τῶν διφθερῶν ξὺν τῇ στρατιᾷ τὸ μὲν ρεῖμα ὃξὺ τοῦ Ἀχεσίνου πέτραις μεγάλαις καὶ ὀξείαις, καθ' ὧν φερόμενον βία τὸ ὕδωρ κυμαίνεσθαι τε καὶ καχλάζειν, τὸ δὲ εὖρος σταδίους ἐπέχειν πεντεκαίδεκα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 20, section 10, line 3

εἴη ἂν οὖν ἐκ τοῦδε τοῦ λόγου ξυντιθέντι τεκμηριοῦσθαι, ὅτι οὐ πόρρω τοῦ ἀληθοῦς ἀναγέγραπται τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὸ μέγεθος, ὅσοις ἐς τεσσαράκοντα σταδίους δοκεῖ τοῦ Ἰνδοῦ εἶναι τὸ εὖρος, ἵνα μέσῳς ἔχει αὐτὸς αὐτοῦ ὁ Ἰνδός· ἵνα δὲ στενότατός τε καὶ διὰ στενότητα βαθύτατος ἐς τοὺς πεντεκαίδεκα ξυνάγασθαι· καὶ ταῦτα πολλαχῇ εἶναι τοῦ Ἰνδοῦ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 21, section 1, line 5

Περάσας δὲ τὸν ποταμὸν Κοῖνον μὲν ξὺν τῇ αὐτοῦ τάξει ἀπολείπει αὐτοῦ ἐπὶ τῇ ὄχθῃ προστάξας ἐπι- μελεῖσθαι τῆς ὑπολειμμένης στρατιᾶς τῆς διαβάσεως, οἱ τὸν τε σῖτον αὐτῷ τὸν ἐκ τῆς ἡδὴ ὑπηκόου τῶν Ἰνδῶν χώρας καὶ τὰ ἄλλα ἐπιτήδεια παρακομίζειν ἔμελλον.

5.3. ARRIAN

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 21, section 2, line 2

Πῶρον δὲ ἐς τὰ αὐτοῦ ἦθη ἀποπέμπει, κελεύσας Ἰνδῶν τε τοὺς μαχίμωτάτους ἐπιλεξάμενον καὶ εἴ τινας παρ' αὐτῷ ἔχοι ἐλέφαντας, τούτους δὲ ἀναλαμβάνοντα[ς] ἵεναι παρ' αὐτόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 21, section 4, line 2

Ἐπὶ τοῦτον ἐλαύνων Ἀλέξανδρος ἀφικνεῖται ἐπὶ τὸν Ὑδραῶτην ποταμόν, ἄλλον αὖ τοῦτον Ἰνδὸν ποταμόν, τὸ μὲν εὗρος οὐ μείονα τοῦ Ἀχεσίνου, ὁξύτεν δὲ τοῦ ῥοῦ μείονα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 21, section 5, line 7

ἐνταῦθα Ἡφαιστίωνα μὲν ἐκπέμπει δούς αὐτῷ μέρος τῆς στρατιᾶς, πεζῶν μὲν φάλαγγας δύο, ἱππέων δὲ τήν τε αὐτοῦ καὶ τὴν Δημητρίου ἱππαρχίαν καὶ τῶν τοξοτῶν τοὺς ἡμίσεας, ἐς τὴν Πύρου τοῦ ἀφειστηκότος χώραν, κελεύσας παραδιδόναι ταύτην Πύρῳ τῷ ἄλλῳ, καὶ εἰ δὴ τινα πρὸς ταῖς ὄχθαις τοῦ Ὑδραῶτου ποταμοῦ αὐτόνομα ἔθνη Ἰνδῶν νέμεται, καὶ ταῦτα προσαγαγόμενον τῷ Πύρῳ ἄρχειν ἐγχειρίσαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 1, line 2

Ἐν τούτῳ δὲ ἐξαγγέλλεται Ἀλέξανδρῳ τῶν αὐτο- νόμων Ἰνδῶν ἄλλους τέ τινας καὶ τοὺς καλουμένους Καθαῖους αὐτοὺς τε παρασκευάζεσθαι ὥς πρὸς μάχην, εἰ προσάγοι τῇ χώρᾳ αὐτῶν Ἀλέξανδρος, καὶ ὅσα ὁμορὰ σφισιν <ἔθνη> ὡσαύτως αὐτόνομα, καὶ ταῦτα παρα- καλεῖν ἐς τὸ ἔργον· εἶναι δὲ τήν τε πόλιν ὀχυρὰν πρὸς ἣ ἐπενόουν ἀγωνίσασθαι, Σάγγαλα ἣν τῇ πόλει ὄνομα, καὶ αὐτοὶ οἱ Καθαῖοι εὐτολμότατοί τε καὶ τὰ πολέμια κράτιστοι ἐνομίζοντο, καὶ τούτοις κατὰ τὰ αὐτὰ Ὀξυδράκαι, ἄλλο Ἰνδῶν ἔθνος, καὶ Μαλλοί, ἄλλο καὶ τοῦτο· ἐπεὶ καὶ ὀλίγῳ πρόσθεν στρατεύσαντας ἐπ'

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 2, line 8

εἰ προσάγοι τῇ χώρᾳ αὐτῶν Ἀλέξανδρος, καὶ ὅσα ὁμορὰ σφισιν <ἔθνη> ὡσαύτως αὐτόνομα, καὶ ταῦτα παρα- καλεῖν ἐς τὸ ἔργον· εἶναι δὲ τήν τε πόλιν ὀχυρὰν πρὸς ἣ ἐπενόουν ἀγωνίσασθαι, Σάγγαλα ἣν τῇ πόλει ὄνομα, καὶ αὐτοὶ οἱ Καθαῖοι εὐτολμότατοί τε καὶ τὰ πολέμια κράτιστοι ἐνομίζοντο, καὶ τούτοις κατὰ τὰ αὐτὰ Ὀξυδράκαι, ἄλλο Ἰνδῶν ἔθνος, καὶ Μαλλοί, ἄλλο καὶ τοῦτο· ἐπεὶ καὶ ὀλίγῳ πρόσθεν στρατεύσαντας ἐπ' αὐτοὺς Πῶρον τε καὶ Ἀνισάρην ξύν τε τῇ σφετέρᾳ δυνάμει καὶ πολλὰ ἄλλα ἔθνη τῶν αὐτονόμων Ἰνδῶν ἀναστήσαντας οὐδὲν πράξαντας τῆς παρασκευῆς ἄξιον ξυνέβη ἀπελθεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 3, line 4

καὶ δευτεραῖος μὲν ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ὑδραῶτου πρὸς πόλιν ἦκεν ἣ ὄνομα Πίμπραμα· τὸ δὲ ἔθνος τοῦτο τῶν Ἰνδῶν Ἀδραῖσται ἐκαλοῦντο.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 5, line 6

Ἀλέξανδρος δὲ τό τε πλῆθος κατιδὼν τῶν βαρβάρων καὶ τοῦ χωρίου τὴν φύσιν, ὡς μάλιστα πρὸς τὰ παρόντα ἐν καιρῷ οἱ ἐφαίνετο παρετάσσετο· καὶ τοὺς μὲν ἵπποτοξότας εὐθύς ὡς εἶχεν ἐκπέμπει ἐπ' αὐτούς, ἀκροβολίζεσθαι κελεύσας παριππεύοντας, ὡς μήτε ἐκδρομὴν τινα ποιήσασθαι τοὺς Ἰνδοὺς πρὶν ξυνταχθῆναι αὐτῷ τὴν στρατιὰν καὶ ὡς πληγὰς γίγνεσθαι αὐτοῖς καὶ πρὸ τῆς μάχης ἐντὸς τοῦ ὀχυρώματος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 7, line 8

καὶ τούτων τοὺς μὲν ἵππεας ἐπὶ τὰ κέρατα διελὼν παρήγαγεν, ἀπὸ δὲ τῶν πεζῶν τῶν προσγενομένων πυκνοτέραν τὴν ζυγκλείσιν τῆς φάλαγγος ποιήσας αὐτὸς ἀναλαβὼν τὴν ἵππον τὴν ἐπὶ τοῦ δεξιῦ τεταγμένην παρήγαγεν ἐπὶ τὰς κατὰ τὸ εὐώνυμον τῶν Ἰνδῶν ἀμάξας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 1, line 2

Ὡς δὲ ἐπὶ τὴν ἵππον προσαγαγοῦσαν οὐκ ἐξέδραμον οἱ Ἰνδοὶ ἔξω τῶν ἀμαξῶν, ἀλλ' ἐπιβεβηκότες αὐτῶν ἀφ' ὑψηλοῦ ἠκροβολίζοντο, γνοὺς Ἀλέξανδρος ὅτι οὐκ εἴη τῶν ἵππέων τὸ ἔργον καταπηδήσας ἀπὸ τοῦ ἵππου πεζὸς ἐπῆγε τῶν πεζῶν τὴν φάλαγγα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 2, line 3

καὶ ἀπὸ μὲν τῶν πρώτων ἀμαξῶν οὐ χαλεπῶς ἐβιάσαντο οἱ Μακεδόνες τοὺς Ἰνδοὺς· πρὸ δὲ τῶν δευτέρων οἱ Ἰνδοὶ παραταξάμενοι ῥᾶον ἀπεμάχοντο, οἷα δὴ πυκνότεροί τε ἐφεστηκότες ἐλάττονι τῷ κύκλῳ καὶ τῶν Μακεδόνων οὐ κατ' εὐρυχωρίαν ὡσαύτως προσαγόντων σφίσιν, ἐν ᾧ τὰς τε πρώτας ἀμάξας ὑπέξῃγον καὶ κατὰ τὰ διαλείμματα αὐτῶν ὡς ἐκάστοις προὔχῳρι ἀτάκτως προσέβαλλον· ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τούτων ὁμῶς ἐξώσθησαν οἱ Ἰνδοὶ βιασθέντες πρὸς τῆς φάλαγγος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 3, line 1

τῶν πρώτων ἀμαξῶν οὐ χαλεπῶς ἐβιάσαντο οἱ Μακεδόνες τοὺς Ἰνδοὺς· πρὸ δὲ τῶν δευτέρων οἱ Ἰνδοὶ παραταξάμενοι ῥᾶον ἀπεμάχοντο, οἷα δὴ πυκνότεροί τε ἐφεστηκότες ἐλάττονι τῷ κύκλῳ καὶ τῶν Μακεδόνων οὐ κατ' εὐρυχωρίαν ὡσαύτως προσαγόντων σφίσιν, ἐν ᾧ τὰς τε πρώτας ἀμάξας ὑπέξῃγον καὶ κατὰ τὰ διαλείμματα αὐτῶν ὡς ἐκάστοις προὔχῳρι ἀτάκτως προσέβαλλον· ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τούτων ὁμῶς ἐξώσθησαν οἱ Ἰνδοὶ βιασθέντες πρὸς τῆς φάλαγγος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 4, line 5

καὶ Ἀλέξανδρος ταύτην μὲν τὴν ἡμέραν περιεστρατοπέδευσε τοῖς πεζοῖς τὴν πόλιν ὅσα γε ἡδυνήθη αὐτῷ περιβαλεῖν ἢ φάλαγγ· ἐπὶ πολὺ γὰρ ἐπέχον τὸ τεῖχος τῷ στρατοπέδῳ κυκλώσασθαι οὐ δυνατὸς ἐγένετο· κατὰ δὲ τὰ διαλείποντα αὐτοῦ, ἵνα καὶ λίμνη οὐ μακρὰν τοῦ

5.3. ARRIAN

τείχους ἦν, τοὺς ἱππέας ἐπέταξεν ἐν κύκλῳ τῆς λίμνης, γνοὺς οὐ βαθεῖαν οὖσαν τὴν λίμνην καὶ ἅμα εἰκάσας ὅτι φοβεροὶ γενόμενοι οἱ Ἰνδοὶ ἀπὸ τῆς προτέρας ἥττης ἀπολείψουσι τῆς νυκτὸς τὴν πόλιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 6, line 7

αὐτομολήσαντες δὲ αὐτῷ τῶν ἐκ τῆς πόλεως τινες φράζουσιν, ὅτι ἐν νῶ ἔχοιεν αὐτῆς ἐκείνης τῆς νυκτὸς ἐκπίπτειν ἐκ τῆς πόλεως οἱ Ἰνδοὶ κατὰ τὴν λίμνην, ἵνα περ τὸ ἐκλιπὲς ἦν τοῦ χάρακος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 4, line 2

Ἐν τούτῳ δὲ καὶ Πῶρος ἀφίκετο τοὺς τε ὑπολοίπους ἐλέφαντας ἅμα οἱ ἄγων καὶ τῶν Ἰνδῶν ἐς πεντακισχιλίους, αἱ τε μηχαναὶ Ἀλεξάνδρῳ συμπεπηγμέναι ἦσαν καὶ προσήγοντο ἤδη τῷ τείχει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 5, line 2

καὶ ἀποθνήσκουσι μὲν ἐν τῇ καταλήψει τῶν Ἰνδῶν ἐς μυρίους καὶ ἐπτακισχιλίους, ἐάλωσαν δὲ ὑπὲρ τὰς ἐπτὰ μυριάδας καὶ ἄρματα τριακόσια καὶ ἵπποι πεντακόσιοι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 6, line 8

Θάψας δὲ ὡς νόμος αὐτῷ τοὺς τελευτήσαντας Εὐμενὴ τὸν γραμματέα ἐκπέμπει ἐς τὰς δύο πόλεις τὰς ξυναφειστώσας τοῖς Σαγγάλοις δούς αὐτῷ τῶν ἱππέων ἐς τριακοσίους, φράσσοντα[ς] τοῖς ἔχουσι τὰς πόλεις τῶν τε Σαγγάλων τὴν ἄλωσιν καὶ ὅτι αὐτοῖς οὐδὲν ἔσται χαλεπὸν <ἐξ> Ἀλεξάνδρου ὑπομένουσιν τε καὶ δεχομένοις φιλίως Ἀλέξανδρον· οὐδὲ γὰρ οὐδὲ ἄλλοις τισὶ γενέσθαι τῶν αὐτονόμων Ἰνδῶν ὅσοι ἐκόντες σφᾶς ἐνέδοσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 8, line 4

ὡς δὲ ἀπέγνω διώκειν τοῦ πρόσω τοὺς φεύγοντας, ἐπανελθὼν ἐς τὰ Σάγγαλα τὴν πόλιν μὲν κατέσκαψε, τὴν χώραν δὲ τῶν Ἰνδῶν τοῖς πάλαι μὲν αὐτονόμοις, τότε δὲ ἐκουσίως προσχωρήσασιν προσέθηκεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 8, line 9

καὶ Πῶρον μὲν ζὺν τῇ δυνάμει τῇ ἀμφ' αὐτὸν ἐκπέμπει ἐπὶ τὰς πόλεις αἱ προσκεχωρήκεσαν, φρουρὰς εἰσάξοντα εἰς αὐτάς, αὐτὸς δὲ ζὺν τῇ στρατιᾷ ἐπὶ τὸν Ἰφασιν ποταμὸν προὔχῳρει, ὡς καὶ τοὺς ἐπέκεινα Ἰνδοὺς καταστρέφαιτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 25, section 2, line 1

Τὰ δὲ δὴ πέραν τοῦ Ἰφάσιος εὐδαίμονά τε τὴν χώραν εἶναι ἐξηγγέλλετο καὶ ἀνθρώπους ἀγαθοὺς μὲν γῆς ἐργάτας, γενναίους δὲ τὰ πολέμια καὶ ἐς τὰ ἴδια δὲ σφῶν ἐν κόσμῳ πολιτεύοντας (πρὸς γὰρ τῶν ἀρίστων ἄρχεσθαι τοὺς πολλοὺς, τοὺς δὲ οὐδὲν ἕξω τοῦ ἐπικικοῦς ἐξηγεῖσθαι),

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

πληθός τε ἐλεφάντων εἶναι τοῖς ταύτῃ ἀνθρώποις πολὺ τι ὑπὲρ τοὺς ἄλλους Ἰνδοὺς, καὶ μεγέθει μεγίστους καὶ ἀνδρεία.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 25, section 5, line 7

καὶ Αἴγυπτος ξὺν τῇ Λιβύῃ τῇ Ἑλληνικῇ καὶ Ἀραβίας ἔστιν ἃ καὶ Συρία ἢ τε κοίλῃ καὶ ἡ μέση τῶν ποταμῶν, καὶ Βαβυλῶν δὲ ἔχεται καὶ τὸ Σουσίων ἔθνος καὶ Πέρσαι καὶ Μῆδοι καὶ ὅσων Πέρσαι καὶ Μῆδοι ἐπῆρχον, καὶ ὅσων δὲ οὐκ ἦρχον, τὰ ὑπὲρ τὰς Κασπίας πύλας, τὰ ἐπέκεινα τοῦ Καυκάσου, ὁ Τάναϊς, τὰ πρόσω ἔτι τοῦ Τανάϊδος, Βακτριανοί, Ὑρκάνιοι, ἡ θάλασσα ἡ Ὑρκανία, Σκύθας τε ἀνεστείλαμεν ἔστε ἐπὶ τὴν ἔρημον, ἐπὶ τούτοις μέντοι καὶ ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς διὰ τῆς ἡμετέρας ξεῖ, ὁ Ὑδάσπης διὰ τῆς ἡμετέρας, ὁ Ἀκεσίνης, ὁ Ὑδραώτης, τί ὀκνεῖτε καὶ τὸν Ὑφασιν καὶ τὰ ἐπέκεινα τοῦ Ὑφάσιος γένη προσθεῖναι τῇ ἡμετέρᾳ Μακεδόνων τε ἀρχῇ;

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 26, section 2, line 3

καὶ ἐγὼ ἐπιδείξω Μακεδόσι τε καὶ τοῖς ξυμμάχοις τὸν μὲν Ἰνδικὸν κόλπον ξύρρουν ὄντα τῷ Περσικῷ, τὴν δὲ Ὑρκανίαν <θάλασσαν> τῷ Ἰνδικῷ· ἀπὸ δὲ τοῦ Περσικοῦ εἰς Λιβύην περιπλευσθήσεται στόλῳ ἡμετέρῳ τὰ μέχρι Ἡρακλέους Σπηλαίων· ἀπὸ δὲ Σπηλαίων ἡ ἐντὸς Λιβύῃ πᾶσα ἡμετέρα γίγνεται καὶ ἡ Ἀσία δὴ οὕτω πᾶσα, καὶ ὅροι τῆς ταύτης ἀρχῆς οὕσπερ καὶ τῆς γῆς ὅρους ὁ θεὸς ἐποίησε.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 27, section 7, line 9

σὺ δὲ νῦν μὴ ἄγχειν ἄκοντας· οὐδὲ γὰρ ὁμοίοις ἔτι χρήσῃ ἐς τοὺς κινδύνους, οἷς τὸ ἐκούσιον ἐν τοῖς ἀγῶσιν ἀπέσται· ἐπανελθὼν δὲ αὐτός [τε], εἰ δοκεῖ, ἐς τὴν οἰκείαν καὶ τὴν μητέρα τὴν σαυτοῦ ἰδὼν καὶ τὰ τῶν Ἑλλήνων καταστησάμενος καὶ τὰς νίκας ταύτας τὰς πολλὰς καὶ μεγάλας ἐς τὸν πατρῶον οἶκον κομίσας οὕτω δὲ ἐξ ἀρχῆς ἄλλον στόλον στέλλεσθαι, εἰ μὲν βούλει, ἐπ' αὐτὰ ταῦτα τὰ πρὸς τὴν ἑω ὠκισμένα Ἰνδῶν γένη, εἰ δὲ βούλει, ἐς τὸν Εὐξείνιον πόντον, εἰ δέ, ἐπὶ Καρχηδόνᾳ καὶ τὰ ἐπέκεινα Καρχηδονίων τῆς Λιβύης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 29, section 4, line 4

Ἐν τούτῳ δὲ ἀφίκοντο πρὸς αὐτὸν Ἀρσάκης τε ὁ τῆς ὁμόρου Ἀβισάρῃ χώρας ὑπαρχος καὶ ὁ ἀδελφὸς Ἀβισάρου καὶ οἱ ἄλλοι οἰκεῖοι, δῶρά τε κομίζοντες ἃ μέγιστα παρ' Ἰνδοῖς καὶ τοὺς παρ' Ἀβισάρου ἐλέφαντας, ἀριθμὸν ἐς τριάκοντα· Ἀβισάρην γὰρ νόσῳ ἀδύνατον γενέσθαι ἐλθεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 1, section 2, line 1
πρότερον μὲν γε ἐν τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ κροκοδείλους ἰδὼν, μόνῳ τῶν ἄλλων ποταμῶν πλὴν Νείλου, πρὸς δὲ ταῖς ὄχθαις τοῦ Ἀκεσίνου κυάμους πεφυκότας ὁποῖους ἡ γῆ ἐκφέρει ἢ Αἴγυπτία, καὶ [ὁ] ἀκούσας ὅτι ὁ Ἀκεσίνης ἐμβάλλει ἐς τὸν Ἰνδόν, ἔδοξεν ἐξευρεῖν κέναι τοῦ Νείλου τὰς ἀρχάς, ὥς τὸν Νεῖλον ἐνθὲνδε ποθεῖν ἐξ Ἰνδῶν ἀνίσχοντα καὶ δι' ἐρήμου πολλῆς γῆς ῥέοντα καὶ

5.3. ARRIAN

ταύτη ἀπολλύοντα τὸν Ἰνδὸν τὸ ὄνομα, ἔπειτα, ὁπόθεν ἄρχεται διὰ τῆς οἰκουμένης χώρας εἶναι, Νεῖλον ἤδη πρὸς Αἰθιοπῶν τε τῶν ταύτη καὶ

Αἰγυ-

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 1, section 4, line 2
καὶ δὴ καὶ πρὸς Ὀλυμπιάδα γράφοντα ὑπὲρ τῶν Ἰνδῶν τῆς γῆς ἄλλα τε γράφει καὶ ὅτι δοκοῖ αὐτῷ ἐξευρηκέναι τοῦ Νείλου τὰς πηγὰς, μικροῖς δὲ τισι καὶ φαύλοις ὑπὲρ τῶν τηλικούτων τεκμαιρό-μενον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 1, section 5, line 2
ἐπεὶ μέντοι ἀτρεκέστερον ἐξήλεγξε τὰ ἀμφὶ τῷ ποταμῷ τῷ Ἰνδῷ, οὕτω δὲ μαθεῖν παρὰ τῶν ἐπι-χωρίων τὸν μὲν Ἰδάσπην τῷ Ἀκεσίην, τὸν Ἀκεσίην δὲ τῷ Ἰνδῷ τό τε ὕδωρ συμβάλλοντας καὶ τῷ ὀνόματι συγχωροῦντας, τὸν Ἰνδὸν δὲ ἐκδιδόντα ἤδη ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν, δίστομον τὸν Ἰνδὸν ὄντα, οὐδέ<ν> τι αὐτῷ προσῆκον τῆς γῆς τῆς Αἰγυπτίας· τηνικαῦτα δὲ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς τὴν μητέρα τοῦτο <τὸ> ἀμφὶ τῷ Νείλῳ γραφὲν ἀφελεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 2, section 1, line 4
αὐτὸς δὲ ξυναγαγὼν τοὺς τε ἐταίρους καὶ ὅσοι Ἰνδῶν πρέσβεις παρ' αὐτὸν ἀφιγμένοι ἦσαν βασιλέα μὲν τῆς ἐαλωκυίας ἤδη Ἰνδῶν γῆς ἀπέδειξε Πῶρον, ἐπτά μὲν ἔθνων τῶν συμπαντων, πόλεων δὲ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ὑπὲρ τὰς δισχιλίας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 2, section 3, line 2
Φιλίππῳ δὲ τῷ σατράπῃ τῆς ἐπέκεινα τοῦ Ἰνδοῦ ὡς ἐπὶ Βακτρίους γῆς διαλιπόντι τρεῖς ἡμέρας παρήγγελλτο ἐπεσθαι ξὺν τοῖς ἀμφ' αὐτόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 1, line 9
καὶ ἐπιβάς τῆς νεῶς ἀπὸ τῆς πρώρας ἐκ χρυσῆς φιάλης ἔσπενδεν ἐς τὸν ποταμόν, τὸν τε Ἀκεσίην ξυνεπικαλούμενος τῷ Ἰδάσπῃ, ὅντινα μέγιστον αὐτῶν ἄλλων ποταμῶν συμβάλλειν τῷ Ἰδάσπῃ ἐπέπυστο καὶ οὐ πόρρω αὐτῶν εἶναι τὰς συμ-βολὰς, καὶ τὸν Ἰνδόν, ἐς ὅντινα ὁ Ἀκεσίης ξὺν τῷ Ἰδάσπῃ ἐμβάλλει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 4, line 3
ἐνδιδόντων τὰς ἀρχὰς τε καὶ ἀναπαύλας τῇ εἰρεσίᾳ καὶ τῶν ἐρετῶν ὅποτε ἀθρόοι ἐμπύπτοντες τῷ ῥοθίῳ ἐπαλαλάξειαν· αἱ τε ὄχθαι, ὑψηλότεραι τῶν νεῶν πολλαχῇ οὔσαι, ἐς στενὸν τε τὴν βοὴν ξυνάγουσαι καὶ τῇ ξυναγωγῇ αὐτῇ ἐπὶ μέγα νύξημένην ἐς ἀλλήλας ἀντέπεμπον, καὶ πού καὶ νάπαι ἐκατέρωθεν τοῦ ποταμοῦ τῇ τε ἐρημίᾳ καὶ τῇ ἀντιπέμφει τοῦ κτύπου καὶ αὐταὶ ξυνεπελάμβανον· οἱ τε ἵπποι διαφαινόμενοι διὰ τῶν ἵππαγωγῶν πλοίων, οὐ πρόσθεν ἵπποι ἐπὶ νεῶν ὀφθέντες ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ (καὶ γὰρ καὶ τὸν Διονύσου ἐπ' Ἰνδοὺς στόλον οὐκ ἐμέμνητο γενέσθαι ναυτικόν), ἐκπληξιν παρῆχον τοῖς θεωμένοις τῶν βαρβάρων, ὥστε οἱ μὲν αὐτόθεν τῇ ἀναγωγῇ παρα-γενόμενοι ἐπὶ πολὺ ἐφωμάρτουν, ἐς ὅσους δὲ τῶν ἤδη Ἀλεξάνδρῳ προσκεχωρηκότων Ἰνδῶν ἡ βοὴ τῶν ἐρετῶν ἢ ὁ κτύπος τῆς εἰρεσίας ἐξίκετο, καὶ οὗτοι ἐπὶ τῇ ὄχθῃ κατέθεον καὶ ξυνείποντο ἐπάδοντες βαρβα-ρικῶς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 4, line 4

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

καὶ τῶν ἐρετῶν ὅποτε ἄθροοι ἐμπίπτοντες τῷ ῥοθίῳ ἐπαλαλάξειαν· αἱ τε ὄχθαι, ὑψηλότε-
ραι τῶν νεῶν πολλαχῇ οὔσαι, ἐς στενόν τε τὴν βοήν ξυνάγουσαι καὶ τῇ ξυναγωγῇ αὐτῇ ἐπὶ
μέγα νύξημένην ἐς ἀλλήλας ἀντέπεμπον, καὶ που καὶ νάπαι ἐκατέρωθεν τοῦ ποταμοῦ τῇ τε
ἐρημίᾳ καὶ τῇ ἀντιπέμφει τοῦ κτύπου καὶ αὗται ξυνεπελάμβανον· οἱ τε ἵπποι διαφαινόμενοι
διὰ τῶν ἵππαγωγῶν πλοίων, οὐ πρόσθεν ἵπποι ἐπὶ νεῶν ὀφθέντες ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ (καὶ γὰρ
καὶ τὸν Διονύσου ἐπ' Ἰνδοὺς στόλον οὐκ ἐμέμνητο γενέσθαι ναυτικόν), ἔκπληξιν παρεῖχον τοῖς
θεωμένοις τῶν βαρβάρων, ὥστε οἱ μὲν αὐτόθεν τῇ ἀναγωγῇ παρα- γενόμενοι ἐπὶ πολὺ ἐφω-
μάρτουν, ἐς ὅσους δὲ τῶν ἤδη Ἀλεξάνδρῳ προσκεχωρηκότων Ἰνδῶν ἡ βοή τῶν ἐρετῶν ἢ ὁ κτύπος
τῆς εἰρεσίας ἐξίκετο, καὶ οὗτοι ἐπὶ τῇ ὄχθῃ κατέθεον καὶ ξυνείποντο ἐπάδοντες βαρβα-
ρικῶς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 5, line 2
ἀντέπεμπον, καὶ που καὶ νάπαι ἐκατέρωθεν τοῦ ποταμοῦ τῇ τε ἐρημίᾳ καὶ τῇ ἀντιπέμφει
τοῦ κτύπου καὶ αὗται ξυνεπελάμβανον· οἱ τε ἵπποι διαφαινόμενοι διὰ τῶν ἵππαγωγῶν πλοίων,
οὐ πρόσθεν ἵπποι ἐπὶ νεῶν ὀφθέντες ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ (καὶ γὰρ καὶ τὸν Διονύσου ἐπ' Ἰνδοὺς στόλον
οὐκ ἐμέμνητο γενέσθαι ναυτικόν), ἔκπληξιν παρεῖχον τοῖς θεωμένοις τῶν βαρβάρων, ὥστε
οἱ μὲν αὐτόθεν τῇ ἀναγωγῇ παρα- γενόμενοι ἐπὶ πολὺ ἐφωμάρτουν, ἐς ὅσους δὲ τῶν ἤδη
Ἀλεξάνδρῳ προσκεχωρηκότων Ἰνδῶν ἡ βοή τῶν ἐρετῶν ἢ ὁ κτύπος τῆς εἰρεσίας ἐξίκετο, καὶ
οὗτοι ἐπὶ τῇ ὄχθῃ κατέθεον καὶ ξυνείποντο ἐπάδοντες βαρβα-
ρικῶς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 5, line 5
φιλωδοὶ γάρ, εἴπερ τινὲς ἄλλοι, Ἰνδοὶ καὶ φιλορχήμονες ἀπὸ Διονύσου ἔτι καὶ τῶν ἅμα
Διονύσῳ βακχευσάντων κατὰ τὴν Ἰνδῶν γῆν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 4, section 2, line 5
προσορμιζό- μενος δὲ ὅπῃ τύχοι ταῖς ὄχθαις τοὺς προσοικούντας τῷ Ἰθάσπῃ Ἰνδοὺς τοὺς
μὲν ἐνδιδόντας σφᾶς ὁμο- λογίαις παρελάμβανεν, ἤδη δὲ τινὰς καὶ ἐς ἀλκὴν χωρήσαντας βία
κατεστρέψατο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 4, section 3, line 3
αὐτὸς δὲ ὡς ἐπὶ τὴν Μαλλῶν τε καὶ Ὀξυδρακῶν γῆν σπουδῇ ἔπλει, πλεί- στους τε καὶ
μαχιμωτάτους τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν πυνθανό- μενος καὶ ὅτι ἐξηγγέλλοντο αὐτῷ παῖδας μὲν καὶ
γυναῖκας ἀποτεθεῖσθαι εἰς τὰς ὀχυρωτάτας τῶν πόλεων, αὐτοὶ δὲ ἐγνωκέναι διὰ μάχης ἶναι
πρὸς αὐτόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 6, section 1, line 5
Αὐτὸς δὲ ἀναλαβὼν τοὺς ὑπασπιστάς τε καὶ τοὺς τοξότας καὶ τοὺς Ἀγριᾶνας καὶ τῶν
πεζεταίρων καλου- μένων τὴν Πείθωνος τάξιν καὶ τοὺς ἵπποτοξότας τε πάντας καὶ τῶν ἱππέων
τῶν ἐταίρων τοὺς ἡμίσεας διὰ γῆς ἀνύδρου ὡς ἐπὶ Μαλλοὺς ἦγεν, ἔθνος Ἰνδικὸν Ἰνδῶν τῶν
αὐτονόμων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 6, section 4, line 5
ὡς δὲ τάχιστα οἱ πελοὶ ἀφίκοντο, Περδίκκαν μὲν τὴν τε αὐτοῦ ἱππαρχίαν ἔχοντα καὶ
τὴν Κλείτου καὶ τοὺς Ἀγριᾶνας πρὸς ἄλλην πόλιν ἐκπέμπει τῶν Μαλλῶν, οἱ ξυμπεφευγότες
ἦσαν πολλοὶ τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν, φυλάσσειν τοὺς ἐν τῇ πόλει κελεύ- σας, ἔργου δὲ μὴ ἔχεσθαι

5.3. ARRIAN

ἔστ' ἂν ἀφίκηται αὐτός, ὡς μηδὲ ἀπὸ ταύτης τῆς πόλεως διαφυγόντας τινὰς αὐτῶν ἀγγέλους γενέσθαι τοῖς ἄλλοις βαρβάροις ὅτι προσάγει ἤδη Ἀλέξανδρος· αὐτὸς δὲ προσέβαλλεν τῷ τείχει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 7, section 6, line 3

εἶχετό τε ἤδη ἡ ἄκρα, καὶ τῶν Ἰνδῶν οἱ μὲν τὰς οἰκίας ἐνεπύμπρασσαν καὶ ἐν αὐταῖς ἐγκαταλαμβανόμενοι ἀπέθνησκον, οἱ πολλοὶ δὲ μαχόμενοι αὐτῶν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 8, section 4, line 4

ἀλλὰ καὶ ταύτην ἐξέλιπον οἱ Ἰνδοὶ ὡς προσάγοντα Ἀλέξανδρον ἔμαθον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 8, section 6, line 5

ὡς δὲ κατεῖδον ἱππέας μόνους, ἐπιστρέψαντες οἱ Ἰνδοὶ καρτερῶς ἐμάχοντο πλήθος ὄντες ἐς πέντε μυριάδας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 8, section 7, line 1

καὶ Ἀλέξανδρος ὡς τὴν τε φάλαγγα αὐτῶν πυκνὴν κατεῖδε καὶ αὐτῷ οἱ πεζοὶ ἀπῆσαν, προσβολὰς μὲν ἐποιεῖτο ἐς κύκλους παριππεύων, ἐς χεῖρας δὲ οὐκ ἦει τοῖς Ἰνδοῖς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 8, section 7, line 5

καὶ οἱ Ἰνδοὶ ὁμοῦ σφισι πάντων τῶν δεινῶν προσκειμένων ἀποστρέψαντες ἤδη προτροπάδην ἔφευγον ἐς πόλιν ὀχυρωτάτην τῶν πλησίον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 9, section 1, line 4

καὶ ἐν τούτῳ οὐ δεξιόμενοι οἱ Ἰνδοὶ τῶν Μακεδόνων τὴν ὁρμὴν τὰ μὲν τείχη τῆς πόλεως λείπουσιν, αὐτοὶ δὲ ἐς τὴν ἄκραν ξυνέφευγον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 9, section 4, line 3

ἤδη τε πρὸς τῇ ἐπάλξει τοῦ τείχους ὁ βασιλεὺς ἦν καὶ ἐρείσας ἐπ' αὐτῇ τὴν ἀσπίδα τοὺς μὲν ὥθει εἴσω τοῦ τείχους τῶν Ἰνδῶν, τοὺς δὲ καὶ αὐτοῦ τῷ ξίφει ἀποκτείνας γεγυμνώκει τὸ ταύτῃ τείχος· καὶ οἱ ὑπασπιστὰι ὑπέρφοβοι γενόμενοι ὑπὲρ τοῦ βασιλέως σπουδῇ ὠθούμενοι κατὰ τὴν αὐτὴν κλίμακα συντρίβουσιν αὐτήν, ὥστε οἱ μὲν ἤδη ἀνιόντες αὐτῶν κάτω ἔπεσον, τοῖς δὲ ἄλλοις ἄπορον ἐποίησαν τὴν ἄνοδον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 9, section 5, line 3

Ἀλέξανδρος δὲ ὡς ἐπὶ τοῦ τείχους στὰς κύκλῳ τε ἀπὸ τῶν πλησίον πύργων ἐβάλλετο, οὐ γὰρ πελάσαι γε ἐτόλμα τις αὐτῷ τῶν Ἰνδῶν, καὶ ὑπὸ τῶν ἐκ τῆς πόλεως, οὐδὲ πόρρῳ τούτων γε ἐσακοντιζόντων (ἔτυχε γάρ τι καὶ προσκεχωσμένον ταύτῃ πρὸς τὸ τεῖχος), δῆλος μὲν ἦν Ἀλέξανδρος ὢν τῶν τε ὅπλων τῇ λαμπρότητι καὶ τῷ ἀτόπῳ τῆς τόλμης, ἔγνω δὲ ὅτι αὐτοῦ μὲν μένων κινδυνεύσει μηδὲν ὃ τι καὶ λόγου ἄξιον ἀποδεικνύμενος, καταπηδήσας δὲ εἴσω τοῦ τείχους τυχὸν μὲν αὐτῷ τούτῳ ἐκπλήξει τοὺς Ἰνδοὺς, εἰ δὲ μή, καὶ κινδυνεύειν δέοι, μεγάλα ἔργα καὶ τοῖς ἔπειτα πυθέσθαι ἄξια ἔργασάμενος οὐκ ἀσπουδεῖ

ἀποθανεῖ-

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 9, section 6, line 3

ἐνθα δὲ ἐρείσθεις πρὸς τῷ τείχει τοὺς μὲν τινὰς ἐς χεῖρας ἐλθόντας καὶ τὸν γε ἡγεμόνα τῶν Ἰνδῶν προσφερόμενόν οἱ θρασύτερον παίσας τῷ ξίφει ἀποκτείνει· ἄλλον δὲ πελάζοντα λίθῳ βαλὼν ἔσχε καὶ ἄλλον λίθῳ, τὸν δὲ ἐγγυτέρῳ προσάγοντα τῷ ξίφει αὐθις.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 11, section 1, line 1

Ἐν τούτῳ δὲ οἱ μὲν ἔκτεινον τοὺς Ἰνδοὺς, καὶ ἀπέκτεινάν γε πάντας οὐδὲ γυναῖκα ἢ παιῖδα ὑπ-ελείποντο, οἱ δὲ ἐξέφερον τὸν βασιλέα ἐπὶ τῆς ἀσπί-δος κακῶς ἔχοντα, οὐπω γιγνώσκοντες βιώσιμον ὄντα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 11, section 3, line 3

Αὐτίκα ἐν Ὀξυδράκαις τὸ πάθημα τοῦτο γενέσθαι Ἀλεξάνδρῳ ὁ πᾶς λόγος κατέχει· τὸ δὲ ἐν Μαλλοῖς ἔθνεϊ αὐτονόμῳ Ἰνδικῷ ξυνέβη, καὶ ἡ τε πόλις Μαλλῶν ἦν καὶ οἱ βαλόντες Ἀλέξανδρον Μαλλοί, οἱ δὲ ἐγνώ-κεσαν μὲν συμμίζαντες τοῖς Ὀξυδράκαις οὕτω δια-γωνίζεσθαι, ἔφθη δὲ διὰ τῆς ἀνύδρου ἐπ' αὐτοὺς ἐλάσας πρὶν τινα ὠφέλειαν αὐτοῖς παρὰ τῶν Ὀξυδρα-κῶν γενέσθαι ἢ αὐτοὺς ἐκείνοις τι ἐπωφελῆσαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 13, section 3, line 10

οἱ δὲ ἐπέλαζον ἄλλος ἄλλοθεν, οἱ μὲν χειρῶν, οἱ δὲ γονάτων, οἱ δὲ τῆς ἐσθῆτος αὐτῆς ἀπτό-μενοι, οἱ δὲ καὶ ἰδεῖν ἐγγύθεν καὶ τι καὶ ἐπευφημήσαντες ἀπελθεῖν· οἱ δὲ ταινίαις ἔβαλλον, οἱ δὲ ἄνθεσιν, ὅσα ἐν τῷ τότε ἡ Ἰνδῶν γῆ παρεῖχε.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 1, line 6

Ἐν τούτῳ δὲ ἀφίκοντο παρὰ Ἀλέξανδρον τῶν Μαλλῶν τῶν ὑπολειπομένων πρέσβεις ἐνδι-δόντες τὸ ἔθνος, καὶ παρὰ Ὀξυδρακῶν οἱ τε ἡγεμόνες τῶν πόλεων καὶ οἱ νομάρχαι αὐτοὶ καὶ ἄλλοι ἅμα τούτοις ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα οἱ γνωριμώτατοι αὐτοκράτορες περὶ σπονδῶν δῶρά τε ὅσα μέγιστα παρ' Ἰνδοῖς κομίζοντες καὶ τὸ ἔθνος καὶ οὗτοι ἐνδιδόντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 2, line 5

συγγνωστὰ δὲ ἁμαρτεῖν ἔφασαν οὐ πάλα παρ' αὐτὸν πρεσβευσά-μενοι· ἐπιθυμεῖν γάρ, ὥσπερ τινὲς ἄλλοι, ἔτι μᾶλλον αὐτοὶ ἐλευθερίας τε καὶ αὐτόνομοι εἶναι, ἥντινα ἐλευ-θερίαν ἐξ ὅτου Διόνυσος ἐς Ἰνδοὺς ἦκε σῶαν σφίσιν εἶναι ἐς Ἀλέξανδρον· εἰ δὲ Ἀλεξάνδρῳ δοκοῦν ἐστίν, ὅτι καὶ Ἀλέξανδρον ἀπὸ θεοῦ γενέσθαι λόγος κατέχει, σατράπην τε ἀναδέεσθαι, ὄντινα τάττοι Ἀλέξανδρος, καὶ φόρους ἀποίσειν τοὺς Ἀλεξάνδρῳ δόξαντας· δίδοναι δὲ καὶ ὁμήρους ἐθέλειν ὅσους ἂν αὐτῇ Ἀλέξανδρος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 3, line 4

ὁ δὲ χιλίους ἤτησε τοὺς κρατιστεύοντας τοῦ ἔθνους, οὓς, εἰ μὲν βούλοιτο, ἀντὶ ὁμήρων καθε-ξείν, εἰ δὲ μή, ξυστρατεύοντας ἔξειν ἔστ' ἂν διαπολεμηθῇ αὐτῷ πρὸς τοὺς ἄλλους Ἰνδοὺς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 5, line 1

5.3. ARRIAN

Ὡς δὲ ταῦτα αὐτῷ κεκόσμητο καὶ πλοῖα ἐπὶ τῇ διατριβῇ τῇ ἐκ τοῦ τραύματος πολλὰ προσενεναυπή- γητο, ἀναβιβάσας ἐς τὰς ναῦς τῶν μὲν ἐταίρων ἱππέας ἐπτακοσίους καὶ χιλίους, τῶν ψιλῶν δὲ ὅσους περ καὶ πρότερον, πεζοὺς δὲ ἐς μυρίους, ὀλίγον μὲν τι τῷ Ὑδραῶτῃ ποταμῷ κατέπλευσεν, ὥς δὲ συνέμιξεν ὁ Ὑδραῶτης τῷ Ἀκεσίνῃ, ὅτι ὁ Ἀκεσίνης κρατεῖ τοῦ Ὑδραῶτου [ἐν] τῇ ἐπωνυμίᾳ, κατὰ τὸν Ἀκεσίνην αὖ ἔπλει, ἔσπε ἐπὶ τὴν ζυμβολὴν τοῦ Ἀκεσίνου καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἦκεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 5, line 2

τέσσαρες γὰρ οὗτοι μεγάλοι ποταμοὶ καὶ ναυσίποροι οἱ τέσσαρες εἰς τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν τὸ ὕδωρ ζυμβάλλουσιν, οὐ ξὺν τῇ σφετέρᾳ ἑκάστος ἐπω- νυμία, ἀλλὰ ὁ Ὑδάστης μὲν ἐς τὸν Ἀκεσίνην ἐμβάλλει, ἐμβαλὼν δὲ τὸ πᾶν ὕδωρ Ἀκεσίνην παρέχεται καλού- μενον· αὐθις δὲ ὁ Ἀκεσίνης οὗτος ζυμβάλλει τῷ Ὑδραῶτῃ, καὶ παραλαβὼν τοῦτον ἔτι Ἀκεσίνης ἐστί· καὶ τὸν Ὑφασιν ἐπὶ τούτῳ ὁ Ἀκεσίνης παραλαβὼν τῷ αὐτοῦ δὴ ὀνόματι ἐς τὸν Ἰνδὸν ἐμβάλλει· ζυμβάλλων δὲ ζυγχωρεῖ δὴ τῷ Ἰνδῷ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 5, line 10

ἐνθεν δὴ ὁ Ἰνδὸς πρὶν ἐς τὸ Δέλτα σχισθῆναι οὐκ ἀπιστῶ ὅτι καὶ ἐς ἑκατὸν σταδίους ἔρχεται καὶ ὑπὲρ τοὺς ἑκατὸν τυχόν, ἵνα περ λιμνάζει μᾶλλον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 1, line 2

Ἐνταῦθα ἐπὶ ταῖς ζυμβολαῖς τοῦ Ἀκεσίνου καὶ Ἰνδοῦ προσέμενεν ἔσπε ἀφίκετο αὐτῷ ξὺν τῇ στρατιᾷ Περδίκκας καταστρεφάμενος ἐν παρόδῳ τὸ Ἀβαστανῶν ἔθνος αὐτόνομον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 1, line 7

ἐν τούτῳ δὲ ἄλλαι τε προσγίγνονται Ἀλεξάνδρῳ τριακόντοροι καὶ πλοῖα στρογγύλα ἄλλα, ἃ δὴ ἐν Ξάθροις ἐναυπηγήθη αὐτῷ, καὶ <Σόγδοι> ἄλλο ἔθνος Ἰνδῶν αὐτόνομον προσεχώρησαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 1, line 8

καὶ παρὰ Ὀσσαδίων, καὶ τούτου γένους αὐτόνομον Ἰνδικοῦ, πρέσβεις ἦκον, ἐνδιδόντες καὶ οὗτοι τοὺς Ὀσσαδίους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 2, line 3

Φιλίππῳ μὲν δὴ τῆς σατραπείας ὅρους ἔταξε τὰς συμβολὰς τοῦ τε Ἀκεσί- νου καὶ Ἰνδοῦ καὶ ἀπολείπει ξὺν αὐτῷ τοὺς τε Θρᾶκας πάντας καὶ ἐκ τῶν τάξεων ὅσοι ἐς φυλακὴν τῆς χώρας ἱκανοὶ ἐφαίνοντο, πόλιν τε ἐνταῦθα κτίσαι ἐκέλευσεν ἐπ' αὐτῇ τῇ ζυμβολῇ τοῖν ποταμοῖν, ἐλπίσας μεγάλην τε ἔσεσθαι καὶ ἐπιφανῆ ἐς ἀνθρώπους, καὶ νεωσοίκους ποιηθῆναι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 4, line 3

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Ἐνθα δὴ διαβιβάσας Κρατερὸν τε καὶ τῆς στρα-
τιᾶς τὴν πολλὴν καὶ τοὺς ἐλέφαντας
ἐπ' ἀριστερὰ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ, ὅτι εὐπορώτερά τε ταύτῃ τὰ παρὰ τὸν ποταμὸν στρατιᾷ
βαρεῖα ἐφαίνετο καὶ τὰ ἔθνη τὰ προσοικούντα οὐ πάντῃ φίλια ἦν, αὐτὸς κατέπλει ἐς τῶν
Σόγδων τὸ βασίλειον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 4, line
9

τῆς δὲ ἀπὸ τῶν ξυμβολῶν τοῦ τε Ἰνδοῦ καὶ Ἀκεσίνου χώρας ἔστε ἐπὶ θάλασσαν σατράπην
ἀπέδειξε [ν Ὁξυάρτην καὶ] Πείθωνα ξὺν τῇ παραλίᾳ πάσῃ τῆς Ἰνδῶν γῆς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 5, line
4

Καὶ Κρατερὸν μὲν ἐκπέμπει αὐθις ξὺν τῇ στρατιᾷ [διὰ τῆς Ἀραχωτῶν καὶ Δραγγῶν
γῆς], αὐτὸς δὲ κατέπλει ἐς τὴν Μουσικανοῦ ἐπικράτειαν, ἥντινα εὐδαιμονεστάτην τῆς Ἰνδῶν
γῆς εἶναι ἐξηγγέλλετο, ὅτι οὐπω οὔτε ἀπνηθήκει αὐτῷ Μουσικανὸς ἐνδιδούς αὐτὸν τε καὶ τὴν
χώραν οὔτε πρέσβεις ἐπὶ φιλίᾳ ἐκπέμπει, οὐδὲ τι οὔτε αὐτὸς ἐπεπόμφει ἂν δὴ μεγάλῳ βασιλεῖ
εἰκός, οὔτε τι ἡτήκει ἐξ Ἀλεξάνδρου.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 6, line
7

οὕτω δὴ ἐκπλαγεῖς κατὰ τάχος ἀπῆντα Ἀλεξάνδρῳ, δῶρά τε τὰ πλείστου ἄξια παρ'
Ἰνδοῖς κομίζων καὶ τοὺς ἐλέφαντας ξύμπαντας ἄγων καὶ τὸ ἔθνος τε καὶ αὐτὸν ἐνδιδούς καὶ
ὁμολογῶν ἀδικεῖν, ὅπερ μέγιστον παρ' Ἀλεξάνδρῳ ἦν ἐς τὸ τυχεῖν ὧν τις δέοιτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 16, section 2, line
7

ὁ δὲ τὴν μὲν λείαν τῇ στρατιᾷ δίδωσι, τοὺς ἐλέφαντας δὲ ἅμα οἱ ἦγε· καὶ <αἱ> ἄλλαι δὲ
πόλεις αὐτῷ αἱ ἐν τῇ αὐτῇ χώρᾳ ἐνεδίδοντο ἐπιόντι οὐδὲ τις ἐτρέπετο ἐς ἀλλήν· οὕτω καὶ Ἰνδοὶ
πάντες ἐδεδούλωντο ἤδη τῇ γνώμῃ πρὸς Ἀλεξάνδρου τε καὶ τῆς Ἀλεξάνδρου τύχης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 16, section 3, line
1

Ὁ δὲ ἐπὶ Σάμβον αὐτῷ ἦγε τῶν ὀρεῖων Ἰνδῶν σατράπην ὑπ' αὐτοῦ κατασταθέντα, ὃς πεφευ-
γῆναι αὐτῷ ἐξηγγέλλετο ὅτι Μουσικανὸν ἀφειμένον πρὸς Ἀλεξάνδρου ἐπύθετο καὶ τῆς χώρας
τῆς αὐτοῦ ἄρχοντα· τὰ γὰρ πρὸς Μουσικανὸν αὐτῷ πολέμια ἦν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 16, section 5, line
2

ὁ δὲ καὶ ἄλλην πόλιν ἐν τούτῳ ἀποσταῖσαν εἶλεν καὶ τῶν Βραχμάνων, οἳ δὴ σοφισταὶ τοῖς
Ἰνδοῖς εἰσιν, ὅσοι αἵτιοι τῆς ἀποστάσεως ἐγένοντο ἀπέκτεινεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 16, section 5, line
4

ὑπὲρ ὧν ἐγὼ τῆς σοφίας, εἰ δὴ τίς ἐστιν, ἐν τῇ Ἰνδικῇ ξυγγραφῇ δηλώσω.

5.3. ARRIAN

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 17, section 2, line

7

ἀφίκετο δὲ αὐτῷ καὶ ὁ τῶν Πατάλων τῆς χώρας ἄρχων, ὃ δὴ τὸ Δέλτα ἔφην εἶναι τὸ πρὸς τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ἰνδοῦ ποιούμενον, μείζον ἔτι τοῦ Δέλτα τοῦ Αἰγυπτίου, καὶ οὗτος τὴν τε χώραν αὐτῷ ἐνεδίδου πᾶσαν καὶ αὐτόν τε καὶ τὰ αὐτοῦ ἐπέτρεψεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 17, section 4, line

5

.... Ἡφαιστίων ἐπετάχθη, Πείθωνα δὲ τοὺς τε ἱππακοντιστάς ἄγοντα καὶ τοὺς Ἀγριαῖνας ἐς τὴν ἐπέκεινα ὄχθην τοῦ Ἰνδοῦ διαβιβάσας, οὐχ ἥπερ Ἡφαιστίων τὴν στρατιὰν ἄγειν ἤμελλε, τὰς τε ἐκ- τετειχισμένας ἤδη πόλεις ξυνοικίσαι ἐκέλευσε καὶ εἰ δὴ τινα νεωτερίζοιτο πρὸς τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν καὶ ταῦτα ἐς κόσμον καταστήσαντα ξυμβάλλειν οἱ ἐς τὰ Πάταλα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 18, section 2, line

1

Περὶ δὲ τοῖς Πατάλοις σχίζεται τοῦ Ἰνδοῦ τὸ ὕδωρ ἐς <δύο> ποταμοὺς μεγάλους, καὶ οὗτοι ἀμφό- τεροι σώζουσι τοῦ Ἰνδοῦ τὸ ὄνομα ἔστε ἐπὶ τὴν θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 18, section 4, line

2

οὐκ ἔχοντι δὲ αὐτῷ ἡγεμόνα τοῦ πλοῦ, ὅτι πεφεύγεσαν οἱ ταύτῃ Ἰνδοί, ἀπορώτερα τὰ τοῦ κατάπλου ἦν· χειμῶν τε ἐπιγίγνεται ἐς τὴν ὑστεραίαν ἀπὸ τῆς ἀναγωγῆς καὶ ὁ ἄνεμος τῷ ῥόῳ πνέων ὑπεναντίος κοῖλόν τε ἐποίει τὸν ποταμὸν καὶ τὰ σκάφη διέσειεν, ὥστε ἐπόνησαν αὐτῷ αἱ πλεῖσται τῶν νεῶν, τῶν δὲ τριακοντόρων ἔστιν αἱ καὶ πάντῃ διελύθησαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 18, section 5, line

4

καὶ τῶν ψιλῶν τοὺς κουφοτάτους ἐκπέμψας ἐς τὴν προσωτέρω τῆς ὄχθης χώραν ξυλ- λαμβάνει τινὰς τῶν Ἰνδῶν, καὶ οὗτοι τὸ ἀπὸ τοῦδε ἐξηγοῦντο αὐτῷ τὸν πόρον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 19, section 5, line

1

αὐτὸς δὲ ὑπερβαλὼν τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὰς ἐκβολὰς ἐς τὸ πέλαγος ἀνέπλει, ὥς μὲν ἔλεγεν, ἀπιδεῖν εἴ ποῦ τις χώρα πλησίον ἀνίσχει ἐν τῷ πόντῳ, ἐμοὶ δὲ δοκεῖ, οὐχ ἥκιστα ὥς πεπλευκέναι τὴν μεγάλην τὴν ἔξω Ἰνδῶν θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 20, section 1, line

9

Ἡφαιστίων μὲν δὴ ἐτάχθη παρασκευάζειν τὰ πρὸς τὸν ἐκτειχισμὸν τε τοῦ ναυ- στάθμου καὶ τῶν νεωσοίκων τὴν κατασκευὴν· καὶ γὰρ καὶ ἐνταῦθα ἐπενόει στόλον ὑπολείπεσθαι νεῶν οὐκ ὀλίγων πρὸς τῇ πόλει τοῖς Πατάλοις, ἵνα περ ἐσχίζετο ὁ ποταμὸς ὁ Ἰνδός.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 20, section 2, line

1

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Αὐτὸς δὲ κατὰ τὸ ἕτερον στόμα τοῦ Ἰνδοῦ κατ- ἐπλεῖ αὐθις ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν, ὡς καταμαθεῖν, ὅπῃ εὐπορωτέρα ἢ ἐκβολὴ τοῦ Ἰνδοῦ ἐς τὸν πόντον γίγνεται· ἀπέχει δὲ ἀλλήλων τὰ στόματα τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ἰνδοῦ ἐς σταδίους μάλιστα ὀκτακοσίους καὶ χιλίους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 20, section 4, line 3

προσορμισθεὶς οὖν κατὰ τὴν λίμνην ἵνα περ οἱ καθηγεμόνες ἐξηγοῦντο, τῶν μὲν στρατιωτῶν τοὺς πολλοὺς καταλείπει σὺν Λεοννάτῳ αὐτοῦ καὶ τοὺς κερκούρους ξύμπαντας, αὐτὸς δὲ ταῖς τριακοντόροις τε καὶ ἡμιολίαις ὑπερβαλὼν τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἰνδοῦ καὶ προελθὼν καὶ ταύτῃ ἐς τὴν θάλασσαν εὐπορωτέραν τε κατέμαθεν τὴν ἐπὶ τάδε τοῦ Ἰνδοῦ ἐκβολὴν καὶ αὐτὸς προσορμισθεὶς τῷ αἰγιαλῷ καὶ τῶν ἱππέων τινὰς ἅμα οἱ ἔχων παρὰ θάλασσαν ἦει στα- θμούς τρεῖς, τὴν τε χώραν ὅποια τίς ἐστίν ἢ ἐν τῷ παράπλῳ ἐπισκεπτόμενος καὶ φρέατα ὀρύσσεσθαι κελεύων, ὅπως ἔχοιεν ὑδρεύεσθαι οἱ πλείοντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 21, section 3, line 11

ἐκεῖθεν δὲ ἀναλαβὼν τῶν ὑπασπι- στῶν τε καὶ τῶν τοξοτῶν τοὺς ἡμίσεας καὶ τῶν πεζε- ταίρων καλουμένων τὰς τάξεις καὶ τῆς ἵππου τῆς ἑταιρικῆς τό τε ἄγλημα καὶ ἵλην ἀφ' ἐκάστης ἱππαρχίας καὶ τοὺς ἱπποτοξότας ξύμπαντας ὡς ἐπὶ τὴν θάλασσαν ἐς ἀριστερὰ ἐτράπετο, ὕδατά τε ὀρύσσειν, ὡς κατὰ τὸν παράπλουν ἄφθονα εἴη τῇ στρατιᾷ τῇ παραπλευούσῃ, καὶ ἅμα ὡς τοῖς Ὀρεῖταις τοῖς ταύτῃ Ἰνδοῖς αὐτονόμοις ἐκ πολλοῦ οὓσιν ἄφνω ἐπιτεσεῖν, ὅτι μὴδὲν φίλιον αὐτοῖς ἐς αὐτόν τε καὶ τὴν στρατιὰν ἐπέπρακτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 24, section 2, line 5

οὐ μὴν ἀγνοήσαντα Ἀλέξανδρον τῆς ὁδοῦ τὴν χαλεπότητα ταύτῃ ἐλθεῖν, τοῦτο μὲν μόνος Νέαρχος λέγει ὧδε, ἀλλὰ ἀκούσαντα γὰρ ὅτι οὕτω τις πρόσθεν διελθὼν ταύτῃ ξὺν στρατιᾷ ἀπεσώθη, ὅτι μὴ Σεμίραμις ἐξ Ἰνδῶν ἔφυγε.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 24, section 3, line 2

ἐλθεῖν γὰρ δὴ καὶ Κῦρον ἐς τοὺς χώρους τούτους ὡς ἐσβαλοῦντα ἐς τὴν Ἰνδῶν γῆν, φθάσαι δὲ ὑπὸ τῆς ἐρημίας τε καὶ ἀπορίας τῆς ὁδοῦ ταύτης ἀπολέσαντα τὴν πολλὴν τῆς στρατιᾶς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 25, section 4, line 4

ῥεται γὰρ ἡ Γαδρωσίῳ γῇ ὑπ' ἀνέμων τῶν ἐτησίων, καθάπερ οὖν καὶ ἡ Ἰνδῶν γῇ, οὐ τὰ πεδία τῶν Γαδρωσίῳ, ἀλλὰ τὰ ὄρη, ἵνα περ προς- φέρονται τε αἱ νεφέλαι ἐκ τοῦ πνεύματος καὶ ἀνα- χέονται, οὐχ ὑπερβάλλουσαι τῶν ὀρῶν τὰς κορυφάς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 27, section 2, line 3

ἤδη τε ἐπὶ Καρμανίας προῦ- χώρει ὁ βασιλεὺς καὶ ἀγγέλλεται αὐτῷ Φίλιππον τὸν σα- τράπην τῆς Ἰνδῶν γῆς ἐπιβουλευθέντα πρὸς τῶν μισθοφόρων δόλῳ ἀποθανεῖν, τοὺς δὲ ἀποκτεί-

5.3. ARRIAN

ναντας ὅτι οἱ σωματοφύλακες τοῦ Φιλίππου οἱ Μακεδόνες τοὺς μὲν ἐν αὐτῷ τῷ ἔργῳ, τοὺς δὲ καὶ ὕστερον λαβόντες ἀπέκτειναν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 27, section 2, line 8

ταῦτα δὲ ὡς ἔγνω, ἐκπέμπει γράμματα ἐς Ἰνδοὺς παρὰ Εὐδαμόν τε καὶ Ταξίλην ἐπιμελεῖσθαι τῆς χώρας τῆς πρόσθεν ὑπὸ Φιλίππῳ τεταγμένης ἔστ' ἂν αὐτὸς σατράπην ἐκπέμψῃ ἐπ' αὐτῆς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 28, section 2, line 2

Ἦδη δὲ τινες καὶ τοιάδε ἀνέγραψαν, οὐ πιστὰ ἐμοὶ λέγοντες, ὡς συζεύξας δύο ἄρμαμάξας κατακεί-μενος ξὺν τοῖς ἐταίροις καταυλούμενος τὴν διὰ Καρ-μανίας ἤγεν, ἡ στρατιὰ δὲ αὐτῷ ἐστεφανωμένη τε καὶ παίζουσα εἶπετο, προῦκειτο δὲ αὐτῇ σῖτά τε καὶ ὅσα ἄλλα ἐς τρυφὴν παρὰ τὰς ὁδοὺς συγκεκομισμένα πρὸς τῶν Καρμανίων, καὶ ταῦτα πρὸς μίμησιν τῆς Διόνυσου βακχείας ἀπεικάζθη Ἀλεξάνδρῳ, ὅτι καὶ ὑπὲρ ἐκείνου λόγος ἐλέγετο καταστρεφόμενον Ἰνδοὺς Διόνυσον οὕτω τὴν πολλὴν τῆς Ἀσίας ἐπελθεῖν, καὶ Θρίαμβόν τε αὐτὸν ἐπικληθῆναι τὸν Διόνυσον καὶ τὰς ἐπὶ ταῖς νίκαις ταῖς ἐκ πολέμου πομπὰς ἐπὶ τῷ αὐτῷ τούτῳ θρίαμβους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 28, section 3, line 3

ἀλλὰ ἐκεῖνα ἤδη Ἀριστοβούλῳ ἐπόμενος ξυγγράφῳ, θῦσαι ἐν Καρμανία Ἀλέξανδρον χαριστήρια τῆς κατ' Ἰνδῶν νίκης καὶ ὑπὲρ τῆς στρατιᾶς, ὅτι ἀπεσώθη ἐκ Γαδρωσίων, καὶ ἀγῶνα διαθεῖναι μουσικόν τε καὶ γυμνικόν· καταλέξαι δὲ καὶ Πευκέσταν ἐς τοὺς σωματοφύλακας, ἤδη μὲν ἐγνωκότα σατράπην κατα-στῆσαι τῆς Περσίδος, ἐθέλοντα δὲ πρὸ τῆς σατραπείας μὴδὲ ταύτης τῆς τιμῆς καὶ πίστεως ἀπείρατον εἶναι ἐπὶ τῷ ἐν Μαλλοῖς ἔργῳ· εἶναι δὲ αὐτῷ ἐπτά εἰς τότε σωματοφύλακας, Λεοννάτον Ἀντέου, Ἡφαι-στίωνα τὸν Ἀμύντορος, Λυσίμαχον Ἀγαθοκλέους, Ἀρι-στόνουν Πεισαίου, τούτους μὲν Πελλαίους, Περδίκκην

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 28, section 6, line 4

τοῦτον μὲν δὴ καταπέμπει αὐθις ἐκπερι-πλεύσοντα ἔστε ἐπὶ τὴν Σουσιανῶν τε γῆν καὶ τοῦ Τίγρητος ποταμοῦ τὰς ἐκβολὰς· ὅπως δὲ ἐπλεύσθη αὐτῷ τὰ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν Περσικὴν καὶ τὸ στόμα τοῦ Τίγρητος, ταῦτα ἰδίᾳ ἀναγράψω αὐτῷ Νεάρχῳ ἐπόμενος, ὡς καὶ τήνδε εἶναι ὑπὲρ Ἀλεξάνδρου Ἑλληνικὴν τὴν συγγραφὴν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 29, section 2, line 3

ὡς δὲ ἐπὶ τοῖς ὅροις ἦν τῆς Περσίδος, Φρασαόρτην μὲν οὐ κατέλαβε σατραπεύοντα ἔτι (νόσῳ γὰρ τε-τελευτηκῶς ἐτύγχανεν ἐν Ἰνδοῖς ἔτι Ἀλεξάνδρου ὄντος), Ὁρξίνης δὲ ἐπεμέλετο τῆς Περσίδος, οὐ πρὸς Ἀλεξ-άνδρου κατασταθείς, ἀλλ' ὅτι οὐκ ἀπηξίωσεν αὐτὸν ἐν κόσμῳ Πέρσας διαφυλάξαι Ἀλεξάνδρῳ οὐκ ὄντος ἄλλου ἄρχοντος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 1, section 2, line 1

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

APPIANOT ΑΛΕΞΑΝΔΡΟΥ ΑΝΑΒΑΣΕΩΣ ΒΙΒΛΙΟΝ ΕΒΔΟΜΟΝ

Ὡς δὲ ἐς Πασαργάδας τε καὶ ἐς Περσέπολιν ἀφίκετο Ἀλέξανδρος, πόθος λαμβάνει αὐτὸν κατα- πλεῦσαι κατὰ τὸν Εὐφράτην τε καὶ κατὰ τὸν Τίγρητα ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν Περσικὴν καὶ τῶν τε ποταμῶν ἰδεῖν τὰς ἐκβολὰς τὰς ἐς τὸν πόντον, καθάπερ τοῦ Ἰνδοῦ, καὶ τὴν ταύτη θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 1, section 5, line 2
καὶ ἐπὶ τῷδε ἐπαινῶ τοὺς σοφιστὰς τῶν Ἰνδῶν, ὧν λέγουσιν ἔστιν οὗς κατα- ληφθέντας ὑπ' Ἀλεξάνδρου ὑπαιθρίους ἐν λειμῶνι, ἵνα περ αὐτοῖς διατριβαὶ ἦσαν, ἄλλο μὲν οὐδὲν ποιῆσαι πρὸς τὴν ὅφιν αὐτοῦ τε καὶ τῆς στρατιᾶς, κρούειν δὲ τοῖς ποσὶ τὴν γῆν ἐφ' ἧς βεβηκότες ἦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 2, section 2, line 4
ἐπὶ καὶ ἐς Τάξιλα αὐτῷ ἀφικομένῳ καὶ ἰδόντι τῶν σοφιστῶν <τῶν> 2 Ἰνδῶν τοὺς γυμνοὺς πόθος ἐγένετο ζυν- εῖναι τινα οἱ τῶν ἀνδρῶν τούτων, ὅτι τὴν καρτερίαν αὐτῶν ἐθαύμασε· καὶ ὁ μὲν πρεσβύτατος τῶν σοφιστῶν, ὅτου ὀμιληταὶ οἱ ἄλλοι ἦσαν, Δάνδαμις ὄνομα, οὔτε αὐτὸς ἔφη παρ' Ἀλεξάνδρου ἦξειν οὔτε τοὺς ἄλλους εἶα, ἀλλὰ ὑποκρίνασθαι γὰρ λέγεται ὡς Διὸς υἱὸς καὶ αὐτὸς εἶη, εἴπερ οὖν καὶ Ἀλέξανδρος, καὶ ὅτι οὔτε δέοιτό του τῶν παρ' Ἀλεξάνδρου, ἔχει<ν> γὰρ οἱ εὖ τὰ παρόντα, καὶ ἅμα ὄραν τοὺς ζῦν αὐτῷ πλανωμένους τοσαύτην γῆν καὶ θάλασσαν ἐπ' ἀγαθῷ οὐδενί, μηδὲ

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 2, section 4, line 1
οὔτ' οὖν ποθεῖν τι αὐτὸς ὅτου κύριος ἦν Ἀλέξανδρος δοῦναι, οὔτε αὖ δεδιέναι, ὅτου κρατοῖη ἐκεῖνος, ἔστιν οὗ εἶργεσθαι· ζῶντι μὲν γὰρ οἱ τὴν Ἰνδῶν γῆν ἐξ- αρκεῖν φέρουσιν τὰ ὥραϊα, ἀποθανόντα δὲ ἀπαλ- λαγήσεσθαι οὐκ ἐπιεικοὺς ζυνοῖκου τοῦ σώματος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 3, section 3, line 5
αὐτῷ δὲ παρασκευασθῆναι μὲν ἵππον, ὅτι βαδίσαι ἀδυνάτως εἶχεν ὑπὸ τῆς νόσου· οὐ μὴν δυνηθῆναι γε οὐδὲ τοῦ ἵππου ἐπιβῆναι, ἀλλὰ ἐπὶ κλίνης γὰρ κομισθῆναι φερόμενον, ἔστεφανω- μένον τε τῷ Ἰνδῶν νόμῳ καὶ ἄδοντα τῇ Ἰνδῶν γλώσσῃ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 3, section 3, line 6
οἱ δὲ Ἰνδοὶ λέγουσιν ὅτι ὕμνοι θεῶν ἦσαν καὶ αὐτῶν ἔπαινοι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 3, section 6, line 8
ταῦτα καὶ τοιαῦτα ὑπὲρ Καλάνου τοῦ Ἰνδοῦ ἱκανοὶ ἀναγεγράφασιν, οὐκ ἀχρεῖα πάντα ἐς ἀνθρώπους, ὅτῳ γινῶναι ἐπιμελές, [ὅτι] ὡς καρτερόν τέ ἐστὶ καὶ ἀνίκητον γνώμη ἀνθρω- πίνη ὃ τι περ ἐθέλοι ἐξεργάσασθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 4, section 2, line 4
πολλὰ μὲν δὴ ἐπεπλημμέλητο ἐκ τῶν κατεχόντων τὰς χώρας ὅσαι δορίκτητοι πρὸς Ἀλε- ξάνδρου ἐγένοντο ἔς τε τὰ ἱερὰ καὶ τάφους καὶ αὐτοὺς τοὺς ὑπηκόους, ὅτι χρόνιος ὁ εἰς Ἰνδοὺς στόλος ἐγεγένητο τῷ βασιλεῖ καὶ οὐ πιστὸν ἐφαίνετο ἀπονοστήσειν αὐτὸν ἐκ τοσῶνδε ἐθνῶν καὶ τοσῶνδε ἐλεφάντων, ὑπὲρ τὸν Ἰνδόν τε καὶ Τδάσπην καὶ τὸν Ἀκεσίνην καὶ Ἴφασιν φθειρόμενον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 5, section 5, line 2

5.3. ARRIAN

καὶ ἔστεφάνωσε χρυσοῖς στεφάνοις τοὺς ἀνδραγαθία διαπρέποντας, πρῶτον μὲν Πευκέ-
σταν τὸν ὑπερασπίσαντα, ἔπειτα Λεοννάτον, καὶ τοῦτον ὑπερασπίσαντα, καὶ διὰ τοὺς ἐν
Ἰνδοῖς κινδύ- νους καὶ τὴν ἐν Ὠροῖς νίκην γενομένην, ὅτι παραταξά- μενος σὺν τῇ ὑπολειφθείσῃ
δυνάμει πρὸς τοὺς νεωτερί- ζοντας τῶν τε Ὠρειτῶν καὶ τῶν πλησίον τούτων ὠκισμένων τῇ τε
μάχῃ ἐκράτησε καὶ τὰ ἄλλα καλῶς ἔδοξε τὰ ἐν Ὠροῖς κοσμήσαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 5, section 6, line 2
ἐπὶ τούτοις δὲ Νέαρχον ἐπὶ τῷ περίπλῳ τῷ ἐκ τῆς Ἰνδῶν γῆς κατὰ τὴν μεγά- λην θάλασ-
σαν ἔστεφάνωσε· καὶ γὰρ καὶ οὗτος ἤδη ἀφιγμένος ἐς Σοῦσα ἦν· ἐπὶ τούτοις δὲ Ὀνησίκριτον
τὸν κυβερνήτην τῆς νεῆς τῆς βασιλικῆς· ἔτι δὲ Ἡφαιστίωνα καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς σωματοφύ-
λακας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 9, section 8, line 6
σατράπας τοὺς Δαρείου τὴν τε Ἰωνίαν πᾶσαν τῇ ὑμετέρᾳ ἀρχῇ προσέθηκα καὶ τὴν Αἰο-
λίδα πᾶσαν καὶ Φρύγας ἀμφοτέρους καὶ Λυδούς, καὶ Μίλητον εἶλον πολιορκία· τὰ δὲ ἄλλα
πάντα ἐκόντα προσχωρήσαντα λαβὼν ὑμῖν καρποῦσθαι ἔδωκα· καὶ τὰ ἐξ Αἰγύπτου καὶ
Κυρήνης ἀγαθὰ, ὅσα ἀμαχεῖ ἐκτησάμην, ὑμῖν ἔρχεται, ἥ τε κοίλη Συρία καὶ ἡ Παλαιστίνη
καὶ ἡ μέση τῶν ποταμῶν ὑμέτερον κτήμᾳ εἰσι, καὶ Βαβυλῶν καὶ Βάκτρα καὶ Σοῦσα ὑμέ-
τερα, καὶ ὁ Λυδῶν πλούτος καὶ οἱ Περσῶν θησαυροὶ καὶ τὰ Ἰνδῶν ἀγαθὰ καὶ ἡ ἔξω θάλασσα
ὑμέτερα· ὑμεῖς σατράπαι, ὑμεῖς στρατηγοί, ὑμεῖς ταξιάρχαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 10, section 6, line 6

βούλεσθε, ἅπιτε πάντες, καὶ ἀπελθόντες οἴκοι ἀπαγ- γείλατε ὅτι τὸν βασιλέα ὑμῶν
Ἀλέξανδρον, νικῶντα μὲν Πέρσας καὶ Μήδους καὶ Βακτρίους καὶ Σάκας, καταστρεφόμενον
δὲ Οὐξίους τε καὶ Ἀραχωτοὺς καὶ Δράγγας, κεκτημένον δὲ καὶ Παρθυαίους καὶ Χορας- μίους
καὶ Ὑρκανίους ἔστε ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν Κασπίαν, ὑπερβάντα δὲ τὸν Καύκασον ὑπὲρ τὰς
Κασπίας πύλας, καὶ περάσαντα Ὀξον τε ποταμὸν καὶ Τάναϊν, ἔτι δὲ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν, οὐ-
δενὶ ἄλλῳ ὅτι μὴ Διονύσῳ περαθέντα, καὶ τὸν Ὑδάσπην καὶ τὸν Ἀκεσίνην καὶ τὸν Ὑδραώτην,
καὶ τὸν Ὑφασιν δια- περάσαντα ἂν, εἰ μὴ ὑμεῖς ἀπωκνήσατε, καὶ ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν
κατ' ἀμφοτέρα τοῦ Ἰνδοῦ τὰ στόματα ἐμβαλόντα, καὶ διὰ τῆς Γαδρωσίας τῆς ἐρήμου ἐλ-
θόντα, ἥ οὐδεὶς πω πρόσθεν σὺν στρατιᾷ ἦλθε, καὶ Καρμανίαν ἐν παρόδῳ προσκτησάμενον καὶ
τὴν Ὠρει- τῶν γῆν, περιπεπλευκός δὲ ἤδη αὐτῷ τοῦ ναυτικοῦ τὴν ἀπ' Ἰνδῶν γῆς εἰς Πέρσας
θάλασσαν, ὡς εἰς

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 10, section 7, line 3

Δράγγας, κεκτημένον δὲ καὶ Παρθυαίους καὶ Χορας- μίους καὶ Ὑρκανίους ἔστε ἐπὶ τὴν
θάλασσαν τὴν Κασπίαν, ὑπερβάντα δὲ τὸν Καύκασον ὑπὲρ τὰς Κασπίας πύλας, καὶ περά-
σαντα Ὀξον τε ποταμὸν καὶ Τάναϊν, ἔτι δὲ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν, οὐδενὶ ἄλλῳ ὅτι μὴ Διονύσῳ
περαθέντα, καὶ τὸν Ὑδάσπην καὶ τὸν Ἀκεσίνην καὶ τὸν Ὑδραώτην, καὶ τὸν Ὑφασιν δια- περά-
σαντα ἂν, εἰ μὴ ὑμεῖς ἀπωκνήσατε, καὶ ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν κατ' ἀμφοτέρα τοῦ Ἰνδοῦ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

τὰ στόματα ἐμβαλόντα, καὶ διὰ τῆς Γαδρωσίας τῆς ἐρήμου ἐλθόντα, ἥ οὐδεὶς πω πρόσθεν
σὺν στρατιᾷ ἦλθε, καὶ Καρμανίαν ἐν παρόδῳ προσκτησάμενον καὶ τὴν Ὠρει- τῶν γῆν, περι-
πεπλευκότος δὲ ἤδη αὐτῷ τοῦ ναυτικοῦ τὴν ἀπ' Ἰνδῶν γῆς εἰς Πέρσας θάλασσαν, ὥς εἰς Σοῦσα
ἐπανηγάγετε, ἀπολιπόντες οἴχεσθε, παραδόντες φυλάσσειν τοῖς νενικημένοις βαρβάροις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 10, section 7, line
8

Τάναϊν, ἔτι δὲ τὸν Ἰνδὸν ποταμόν, οὐδενὶ ἄλλῳ ὅτι μὴ Διονύσῳ περαθέντα, καὶ τὸν Ἰδά-
σπην καὶ τὸν Ἀκεσίνην καὶ τὸν Ἰδραώτην, καὶ τὸν Ἰφασιν δια- περάσαντα ἄν, εἰ μὴ ὑμεῖς
ἀπακνήσατε, καὶ ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν κατ' ἀμφοτέρα τοῦ Ἰνδοῦ τὰ στόματα ἐμβα-
λόντα, καὶ διὰ τῆς Γαδρωσίας τῆς ἐρήμου ἐλθόντα, ἥ οὐδεὶς πω πρόσθεν σὺν στρατιᾷ ἦλθε,
καὶ Καρμανίαν ἐν παρόδῳ προσκτησάμενον καὶ τὴν Ὠρει- τῶν γῆν, περιπεπλευκότος δὲ ἤδη
αὐτῷ τοῦ ναυτικοῦ τὴν ἀπ' Ἰνδῶν γῆς εἰς Πέρσας θάλασσαν, ὥς εἰς Σοῦσα ἐπανηγάγετε,
ἀπολιπόντες οἴχεσθε, παραδόντες φυλάσσειν τοῖς νενικημένοις βαρβάροις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 16, section 2, line
5

πόθος γὰρ εἶχεν αὐτὸν καὶ ταύτην ἐκμαθεῖν τὴν θάλασσαν τὴν Κασπίαν τε καὶ Ἰρκανίαν
καλουμένην ποία τινὶ ξυμβάλλει θαλάσση, πότῃ τῇ τοῦ πόντου τοῦ Εὐξείνου ἢ ἀπὸ τῆς
ἐφ' αὐτῇ τῆς κατ' Ἰνδοῦς ἐκπεριερχομένη ἢ μεγάλη θάλασσα ἀναχεῖται εἰς κόλπον τὸν Ἰρκανίον,
καθάπερ οὖν καὶ τὸν Περσικὸν ἐξεῦρε, τὴν Ἐρυθρὰν δὲ καλουμένην θάλασσαν, κόλπον οὖσαν
τῆς μεγάλης θαλάσσης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 16, section 3, line
6

οὐ γὰρ πω ἐξεύρητο αἱ ἀρχαὶ τῆς Κασπίας θαλάσσης, καίτοι ἐθνῶν τε αὐτὴν
<περι>οικούντων οὐκ ὀλίγων καὶ ποταμῶν πλοῦμων ἐμβαλλόντων ἐς αὐτήν· ἐκ Βάκτρων μὲν
Ὅξος, μέγιστος τῶν Ἀσιανῶν ποταμῶν, πλὴν γε δὴ τῶν Ἰνδῶν, ἐξήσιν ἐς ταύτην τὴν θάλασ-
σαν, διὰ Σκυθῶν δὲ Ἰαξάρτης· καὶ τὸν Ἀράξην δὲ τὸν ἐξ Ἀρμενίων ῥέοντα ἐς ταύτην ἐσβάλλειν
ὁ πλείων λόγος κατέχει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 18, section 1, line
5

Ἐπεὶ καὶ τοῖόνδε τινὰ λόγον Ἀριστόβουλος ἀνα- γέγραφεν, Ἀπολλόδωρον τὸν Ἀμφιπολί-
την τῶν ἐταίρων τῶν Ἀλεξάνδρου, στρατηγὸν τῆς στρατιᾶς ἦν παρὰ Μαζαίῳ τῷ Βαβυλῶνος
σατράπῃ ἀπέλιπεν Ἀλέξανδρος, ἐπειδὴ συνέμιξεν ἐπανιόντι αὐτῷ ἐξ Ἰνδῶν, ὁρῶντα πικρῶς
τιμωρούμενον τοὺς σατράπας ὅσοι ἐπ' ἄλλῃ καὶ ἄλλῃ χώρα τεταγμένοι ἦσαν, ἐπιστεῖλαι
Πειθαγόρῃ τῷ ἀδελφῷ, μάντιν γὰρ εἶναι τὸν Πειθαγόραν τῆς ἀπὸ σπλάγχχων μαντείας,
μαντεύσασθαι καὶ ὑπὲρ αὐτοῦ τῆς σωτηρίας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 18, section 6, line
1

5.3. ARRIAN

καὶ μὲν δὴ καὶ ὑπὲρ Καλλάνου τοῦ σοφιστοῦ τοῦ Ἰνδοῦ τοιοῦδε τις ἀναγέγραπται λόγος, ὁπότε ἐπὶ τὴν πυρὰν ἦει ἀποθανούμενος, τότε τοὺς μὲν ἄλλους ἐταίρους ἀσπάζεσθαι αὐτόν, Ἀλεξάνδρῳ δὲ οὐκ ἐθελῆσαι προς- ελθεῖν ἀσπασόμενον, ἀλλὰ φάναι γὰρ ὅτι ἐν Βαβυλῶνι αὐτῷ ἐντυχὼν ἀσπάζεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 19, section 1, line 5

Παρελθόντι δ' αὐτῷ ἐς Βαβυλῶνα πρεσβεῖαι παρὰ τῶν Ἑλλήνων ἐνέτυχον, ὑπὲρ ὧν μὲν ἕκαστοι πρεσ- βευόμενοι οὐκ ἀναγέγραπται, δοκεῖν δ' ἔμοιγε αἱ ἀσπασίσεις τε αὐτόν ἦσαν καὶ ἐπαινούντων ἐπὶ ταῖς νίκαις ταῖς τε ἄλλαις καὶ μάλιστα ταῖς Ἰνδοῖς, καὶ ὅτι σῶος ἐξ Ἰνδῶν ἐπανήκει χαίρειν φα- σκόντων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 20, section 1, line 6

Λόγος δὲ κατέχει ὅτι ἤκουεν Ἀραβας δύο μόνον τιμᾶν θεούς, τὸν Οὐρανόν τε καὶ τὸν Διόνυσον, τὸν μὲν Οὐρανὸν αὐτόν τε ὀρώμενον καὶ τὰ ἄστρα ἐν οἷς ἔχοντα τὰ τε ἄλλα καὶ τὸν ἥλιον, ἀφ' οὗτος μεγίστη καὶ φανοτάτη ὠφέλεια ἐς πάντα ἦκει τὰ ἀνθρώπεια, Διόνυσον δὲ κατὰ δόξαν τῆς ἐς Ἰνδοὺς στρατιᾶς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 20, section 1, line 10

οὐκ οὐκ ἀπαξιοῦν καὶ αὐτὸν τρίτον ἂν νομισθῆναι πρὸς Ἀράβων θεόν, οὐ φαυλότερα ἔργα Διονύσου ἀποδειξάμενον, εἴπερ οὖν καὶ Ἀράβων κρατήσας ἐπι- τρέψειεν αὐτοῖς, καθάπερ Ἰνδοῖς, πολιτεύειν κατὰ τὰ σφῶν νόμιμα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 20, section 2, line 7

τῆς τε χώρας ἡ εὐδαιμονία ὑπεκίνει αὐτόν, ὅτι ἤκουεν ἐκ μὲν τῶν λιμνῶν τὴν κασίαν γίνεσθαι αὐτοῖς, ἀπὸ δὲ τῶν δένδρων τὴν σμύρναν τε καὶ τὸν λιβανωτόν, ἐκ δὲ τῶν θάμνων τὸ κιννάμω- μον τέμνεσθαι, οἱ λειμῶνες δὲ ὅτι νάρδον αὐτόματοι ἐκφέρουσι· τό <τε> μέγεθος τῆς χώρας, ὅτι οὐκ ἐλάτ- των ἢ παράλιος τῆς Ἀραβίας ἦπερ ἡ τῆς Ἰνδικῆς αὐτῷ ἐξηγγέλλετο, καὶ νῆσοι αὐτῇ προσκειῖσθαι πολλαί, καὶ λιμένες πανταχοῦ τῆς χώρας ἐνεῖναι, οἷοι παρασχεῖν μὲν ὄρμους τῷ ναυτικῷ, παρασχεῖν δὲ καὶ πόλεις ἐνοικισθῆναι καὶ ταύτας γενέσθαι εὐδαίμονας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 20, section 8, line 8

ἦν μὲν γὰρ αὐτῷ προστεταγμένοι περιπλεῦσαι τὴν χερρόνησον τὴν Ἀράβων πᾶσαν ἔσπευον ἐπὶ τὸν κόλπον τὸν πρὸς Αἰγύπτῳ τὸν Ἀράβιον τὸν καθ' Ἡρώων πόλιν· οὐ μὲν ἐτόλμησέ γε τὸ πρόσω ἐλθεῖν, καίτοι ἐπὶ τὸ πολὺ παραπλεύσας τὴν Ἀράβων γῆν· ἀλλ' ἀναστρέψας γὰρ παρ' Ἀλέξαν- δρον ἐξήγγειλεν τὸ μέγεθος τε τῆς χερρονήσου θαυ- μαστόν τι εἶναι καὶ ὅσον οὐ πολὺ ἀποδέον τῆς Ἰνδῶν γῆς, ἄκραν τε ἀνέχειν ἐπὶ πολὺ τῆς μεγάλης θαλάσσης· ἦν δὲ καὶ τοὺς σὺν Νεάρχῳ ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς πλέοντας, πρὶν ἐπικαμψαί ἐς τὸν κόλπον τὸν Περσικόν, οὐ πόρρω ἀνατείνουσιν ἰδεῖν τε καὶ παρ' ὀλίγον ἐλθεῖν διαβαλεῖν ἐς αὐτήν, καὶ Ὀνησικρίτῳ τῷ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

κυβερνήτη ταύτη δοκοῦν· ἀλλὰ Νέαρχος λέγει ὅτι αὐτὸς διεκώλυσεν, ὡς ἐκπερι- πλεύσας τὸν κόλπον τὸν Περσικὸν ἔχει ἀπαργεῖλαι Ἀλεξάνδρῳ ἐφ' οἷσινσι πρὸς αὐτοῦ ἐστάλη· οὐ γὰρ ἐπὶ τῷ πλεῦσαι τὴν μεγάλην θάλασσαν ἐστάλθαι, ἀλλ'

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica (0074: 002) "Flavii Arriani quae exstant omnia, vol. 2", Ed. Roos, A.G., Wirth, G. Leipzig: Teubner, 1968 (1st edn. corr.). Chapter t, section 1, line 1

ἐπεὶ καὶ αὐτὸς ἐμεμφάμην ἔστιν ἃ ἐν τῇ ζυγγραφῇ τῶν Ἀλεξάνδρου ἔργων, ἀλλὰ αὐτόν γε Ἀλέξανδρον οὐκ αἰσχύνομαι θαυμάζω· τὰ δὲ ἔργα ἐκεῖνα ἐκάκισα ἀληθείας τε ἕνεκα τῆς ἐμῆς καὶ ἅμα ὠφελείας τῆς ἐς ἀνθρώπους· ἐφ' ὅτῳ ὠρμήθην οὐδὲ αὐτὸς ἄνευ θεοῦ ἐς τήνδε τὴν ζυγγραφὴν. INΔ*¹KH

Τὰ ἔξω Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὰ πρὸς ἐσπέρην ἔστε ἐπὶ πο- ταμὸν Κωφῆνα Ἀστακηνοὶ καὶ Ἀσσακηνοί, ἔθνεα Ἰνδικά, ἐποικέουσιν, ἀλλ' οὔτε μεγάλοι τὰ σώματα, καθάπερ οἱ ἐντὸς τοῦ Ἰνδοῦ ὠκισμένοι, οὔτε ἀγαθοὶ ὡσαύτως τὸν θυμὸν οὐδὲ μέλανες ὡσαύτως τοῖς πολλοῖς Ἰνδοῖσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 1, section 1, line 1

INΔ*¹KH

Τὰ ἔξω Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὰ πρὸς ἐσπέρην ἔστε ἐπὶ πο- ταμὸν Κωφῆνα Ἀστακηνοὶ καὶ Ἀσσακηνοί, ἔθνεα Ἰνδικά, ἐποικέουσιν, ἀλλ' οὔτε μεγάλοι τὰ σώματα, καθάπερ οἱ ἐντὸς τοῦ Ἰνδοῦ ὠκισμένοι, οὔτε ἀγαθοὶ ὡσαύτως τὸν θυμὸν οὐδὲ μέλανες ὡσαύτως τοῖς πολλοῖς Ἰνδοῖσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 1, section 4, line 1

Νυσαῖοι δὲ οὐκ Ἰνδικὸν γένος ἐστίν, ἀλλὰ τῶν ἅμα Διονύσῳ ἐλθόντων ἐς τὴν γῆν τὴν Ἰνδῶν, τυχὸν μὲν [καὶ] Ἑλλήνων, ὅσοι ἀπόμαχοι αὐτῶν ἐγένοντο ἐν τοῖς πολέμοις οὐστίνας πρὸς Ἰνδοὺς Διόνυσος ἐπολέμησε, τυχὸν δὲ καὶ τῶν ἐπιχωρίων τοὺς ἐθέλοντας τοῖς Ἑλλησι συνώκισε, τὴν τε χώραν Νυσαῖν ὠνόμασεν ἀπὸ τῆς τροφοῦ τῆς Νύσης Διόνυσος καὶ τὴν πόλιν αὐτὴν Νῦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 1, section 8, line 4

ταῦτα μὲν οἱ ποιηταὶ ἐπὶ Διονύσῳ ἐποίησαν, καὶ ἐξηγείσθων αὐτὰ ὅσοι λόγοι Ἑλλήνων ἢ βαρβάρων· ἐν Ἀσσακηνοῖσι δὲ Μάσσακα, πόλις μεγάλη, ἵνα περ καὶ τὸ κράτος τῆς γῆς ἐστὶ τῆς Ἀσσακίης· καὶ ἄλλη πόλις Πευκελαῖτις, μεγάλη καὶ αὕτη, οὐ μακρὰν τοῦ Ἰνδοῦ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 1, section 8, line 5

ταῦτα μὲν ἔξω τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ὠκισται πρὸς ἐσπέρην ἔστε ἐπὶ τὸν Κωφῆνα· τὰ δὲ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ πρὸς ἑω, τοῦτό μοι ἔστω ἡ Ἰνδῶν γῆ καὶ Ἰνδοὶ οὗτοι ἔστωσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 2, section 1, line 3

ὅροι δὲ τῆς Ἰνδῶν γῆς πρὸς μὲν βορέου ἀνέμου ὁ Ταῦρος τὸ ὅρος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 2, section 5, line 2

τὰ πρὸς ἐσπέρην δὲ τῆς Ἰνδῶν γῆς ὁ ποταμὸς ὁ Ἰνδὸς ἀπείργει ἔστε ἐπὶ τὴν μεγάλην θάλασσαν, ἵνα περ αὐτὸς κατὰ δύο στόματα ἐκδιδοί, οὐ συνεχέα ἀλλήλοισι τὰ στόματα, κατὰ περ τὰ πέντε τοῦ Ἰστροῦ ἐστὶ συνεχέα, ἀλλ' ὡς τὰ τοῦ Νείλου, ὑπ' ὅτων τὸ Δέλτα ποιεῖται τὸ

5.3. ARRIAN

Αἰγυπτίον, ὧδέ τι καὶ τῆς Ἰνδῶν γῆς Δέλτα ποιεῖ οἱ Ἰνδοὶ ποταμός, οὐ μείον τοῦ Αἰγυπτίου, καὶ τοῦτο Πάταλα τῇ Ἰνδῶν γλώσση καλεῖται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 2, section 7, line 3

τὸ δὲ πρὸς νότου τε ἀνέμου καὶ μεσαμβρίας αὐτὴ ἡ μεγάλη θάλασσα ἀπείργει τὴν Ἰνδῶν γῆν, καὶ τὰ πρὸς ἑω ἢ αὐτὴ θά- λασσα ἀπείργει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 2, section 8, line 2

τὰ μὲν πρὸς μεσημβρίας κατὰ Πάταλά τε καὶ τοῦ Ἰνδοῦ τὰς ἐκβολὰς ὤφθη πρὸς τε Ἀλεξάνδρου καὶ Μακεδόνων καὶ πολλῶν Ἑλλήνων· τὰ δὲ πρὸς ἑω Ἀλέξανδρος μὲν οὐκ ἐπῆλθε τὰ [δὲ] πρόσω ποταμοῦ Ὑφάσιος, ὀλίγοι δὲ ἀνέγραψαν τὰ μέχρι ποταμοῦ Γάγ- γεω καὶ ἵνα τοῦ Γάγγεω αἱ ἐκβολαὶ καὶ πόλις Παλίμ- βοθρα μεγίστη Ἰνδῶν πρὸς τῶν Γάγγη.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 3, section 2, line 2

οὗτος ἀπὸ τοῦ ὄρεος τοῦ Ταύρου, ἵνα τοῦ Ἰνδοῦ αἱ πηγαί, παρ' αὐτὸν <τόν>2 Ἰνδὸν ποταμὸν ἰόντι ἔσται ἐπὶ τὴν μεγάλην θάλασσαν καὶ τοῦ Ἰνδοῦ τὰς ἐκβολὰς μυρίους σταδίους καὶ τρισχι- λίους τὴν πλευρὴν λέγει ἐπέχειν τῆς γῆς τῆς Ἰνδῶν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 3, section 3, line 6

ταυ- τησὶ δὲ ἀντίπορον πλευρὴν ποιεῖ τὴν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ ὄρεος παρὰ τὴν ἑωθὴν θάλασσαν, οὐκέτι ταύτῃ τῇ πλευρῇ ἴσην, ἀλλὰ ἄκρην γὰρ ἀνέχειν ἐπὶ μέγα εἶσω εἰς τὸ πέ- λαγος, ἐς τρισχιλίους σταδίους μάλιστα ἀνατείνουσιν τὴν ἄκρην· εἴη ἂν ὦν αὐτῷ ἡ πλευρὴ τῆς Ἰνδῶν γῆς <ῆ> πρὸς ἑω μυρίους καὶ ἑξακισχιλίους σταδίους ἐπέχουσα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 3, section 4, line 1

τοῦτο μὲν αὐτῷ πλάτος τῆς Ἰνδῶν γῆς συμβαίνει, μῆκος δὲ τὸ ἀπ' ἐσπέρης ἐπὶ ἑω ἔσται μὲν ἐπὶ πόλιν Παλίμ- βοθρα μεμετρημένον σχοίνοισι λέγει ἀναγράφειν καὶ – εἶναι γὰρ ὁδὸν βασιλὴν – τοῦτο ἐπέχειν ἐς μυ- ρίους σταδίους· τὰ δὲ ἐπέκεινα οὐκέτι ὡσαύτως ἀτρεκέα· φήμας δὲ ὅσοι ἀνέγραψαν, ξὺν τῇ ἄκρῃ τῇ ἀνεχούσῃ ἐς τὸ πέλαγος ἐς μυρίους σταδίους μάλιστα ἐπέχειν λέγου- σιν· εἶναι δὲ ἂν ὦν τὸ μῆκος τῆς Ἰνδῶν γῆς σταδίων μάλιστα διςμυρίων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 3, section 6, line 1

<Κτησίης> δὲ ὁ Κνίδιος τὴν Ἰνδῶν γῆν ἴσην τῇ ἄλλῃ Ἀσίῃ λέγει, οὐδὲν λέγων, οὐδὲ <Ὀνη- σίκριτος>, τρίτην μοῖραν τῆς πάσης γῆς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 3, section 7, line 1

<Νέαρχος> δὲ μηνῶν τεσσάρων ὁδὸν τὴν δι' αὐτοῦ τοῦ πεδίου τῆς Ἰνδῶν γῆς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 3, section 7, line 2

<Μεγασθένης> δὲ τὸ ἀπὸ ἀνατολῶν ἐς ἐσπέ- ρην πλάτος ἐστὶ τῆς Ἰνδῶν γῆς ὃ τι περ οἱ ἄλλοι μῆκος ποιοῦσιν· καὶ λέγει <Μεγασθένης> μυρίων καὶ ἑξακισχι- λίων σταδίων εἶναι ἵνα περ τὸ βραχύτατον αὐτοῦ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 3, section 9, line 1

ποταμοὶ δὲ τοσοῦδε εἰσὶν ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ ὅσοι οὐδὲ ἐν τῇ πάσῃ Ἀσίῃ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 3, section 9, line 3

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

μέγιστοι μὲν ὁ Γάγγης τε καὶ ὁ Ἰν- δός, ὅτου καὶ ἡ γῆ ἐπάνωμος, ἄμφω τοῦ τε Νείλου τοῦ Αἰγυπτίου καὶ τοῦ Ἰστροῦ τοῦ Σκυθικοῦ, καὶ εἰ ἐς ταὐτὸ συνέλθοι αὐτοῖσι τὸ ὕδωρ, μέζονες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 3, section 10, line 4

δοκέειν δὲ ἔμοιγε, καὶ ὁ Ἀκεσίνης μέζων ἐστὶ τοῦ τε Ἰστροῦ καὶ τοῦ Νείλου, ἵνα περ παραλαβὼν ἅμα τὸν τε Ὑδάσπεια καὶ τὸν Ὑδραώτεια καὶ τὸν Ὑφασιν ἐμβάλλει ἐς τὸν Ἰνδόν, ὥς καὶ τριάκοντα αὐτῷ στάδια τὸ πλάτος ταύτη εἶναι· καὶ τυχὸν καὶ ἄλλοι πολλοὶ μέζονες ποταμοὶ ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ ῥέουσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 4, section 2, line 2

αὐτοῖν δὲ τοῖν μεγίστοις ποταμοῖν τοῦ τε Γάγγεω καὶ τοῦ Ἰνδοῦ τὸν Γάγγεα μεγέθει πολλὴν ὑπερφέρειν <Μεγασθένης> ἀνέγραψε, καὶ ὅσοι ἄλλοι μνήμην τοῦ Γάγγεω ἔχουσιν· αὐτὸν τε γὰρ μέγαν ἀνὴρ- χειν ἐκ τῶν πηγέων, δέχεσθαι τε ἐς ἑαυτὸν τὸν τε Καϊνὰν ποταμὸν καὶ τὸν Ἐρραννοβοῶν καὶ τὸν Κοσσό- ανον, πάντας πλωτούς, ἐπὶ δὲ Σῶνόν τε ποταμὸν καὶ Σιττόκατιν καὶ Σολόματιν, καὶ τούτους πλωτούς, ἐπὶ δὲ Κονδοχάτην τε καὶ Σάμβον καὶ Μάγωνα καὶ Ἀγό- ρανιν καὶ Ὠμαλιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 4, section 5, line 1

ἐμβάλλουσι δὲ ἐς αὐτὸν Κομμινά- σης τε μέγας ποταμὸς καὶ Κάκουθις καὶ Ἀνδώματις ἐξ ἔθνους Ἰνδικοῦ τοῦ Μαδυανδινῶν ῥέων, καὶ ἐπὶ τού- τοισιν Ἀμυστις παρὰ πόλιν Καταδούπην, καὶ Ὀξύμαγισ ἐπὶ <τοῖσι> Παζάλαις καλουμένοισι· καὶ Ἐρέννεσις ἐν Μάθαις, ἔθνεϊ Ἰνδικῷ, συμβάλλει τῷ Γάγγει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 4, section 8, line 1

τῷ δὲ Ἰνδῷ ἐς ταὐτὸν ἔρχεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 4, section 10, line 2

ὁ δὲ Ἀκεσίνης ἐν Μαλλοῖς ἐμβάλλει τῷ Ἰνδῷ· καὶ Τούταπος δὲ μέγας ποταμὸς ἐς τὸν Ἀκε- σίνην ἐκδιδοί.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 4, section 11, line 1

τούτων ὁ Ἀκεσίνης ἐμπλησθεὶς καὶ τῇ ἐπικλήσει ἐκνικήσας αὐτὸς τῷ ἑαυτοῦ ἤδη ὀνόματι ἐς- βάλλει ἐς τὸν Ἰνδόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 4, section 12, line 1

Κωφὴν δὲ ἐν Πευκελαΐτιδι, ἅμα οἱ ἄγων Μαλάμαντόν τε καὶ Σόαστον καὶ Γαροϊάν, ἐκ- διδοί ἐς τὸν Ἰνδόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 4, section 12, line 3

καθ' ἑαυτὴν δὲ τουτέων Πάρεννος καὶ Σάπαρνος, οὐ πολὺ διέχοντες, ἐμβάλλουσιν ἐς τὸν Ἰνδόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 4, section 13, line 2

οὐκ οὐκ ἀπιστίαν χρὴ ἔχειν ὑπὲρ τε τοῦ Ἰνδοῦ καὶ τοῦ Γάγγεω μηδὲ συμβλητοὺς εἶναι αὐτοῖσι τὸν τε Ἰστρον καὶ τοῦ Νείλου τὸ ὕδωρ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 4, section 15, line 3

5.3. ARRIAN

ἐς μὲν γε τὸν Νεῖλον οὐδένα ποταμὸν ἐκδι- δόντα ἴσμεν, ἀλλ' ἀπ' αὐτοῦ διώρυχας τετμημέ- νας κατὰ τὴν χώραν τὴν Αἰγυπτίην· ὁ δὲ Ἰστρος ὀλίγος μὲν ἀνίσχει ἀπὸ τῶν πηγέων, δέχεται δὲ πολλοὺς ποταμούς, ἀλλὰ οὔτε πλήθει ἴσους τοῖς Ἰνδῶν ποταμοῖσιν, οἳ ἐς τὸν Ἰνδὸν καὶ τὸν Γάγγην ἐκδιδοῦσιν, πλωτοὺς δὲ δὴ καὶ κάρτα ὀλίγους, ὧν τοὺς μὲν αὐτὸς ἰδὼν οἶδα, τὸν Ἐνον τε καὶ τὸν Σάον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 1, line 2

τὸ δὲ αἴτιον ὅστις ἐθέλει φράζειν τοῦ πλήθεος τε καὶ μεγέθους τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν, φραζέτω· ἐμοὶ δὲ καὶ ταῦτα ὡς ἀκοὴ ἀναγεγράφη.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 2, line 3

ἐπεὶ καὶ ἄλλων πολλῶν ποταμῶν οὐνόματα <Μεγασθένης> ἀνέγραψεν, οἳ ἔξω τοῦ Γάγγεω τε καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἐκδιδοῦσιν ἐς τὸν ἑῶν τε καὶ μεσημβρινὸν τὸν ἔξω πόντον, ὥστε τοὺς πάντας ὀκτὼ καὶ πεντήκοντα λέγει ὅτι εἰσὶν Ἰνδοὶ ποταμοί, ναυσίποροι πάντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 3, line 2

ἀλλ' οὐδὲ <Μεγασθένης> πολλὴν δοκεῖ μοι ἐπελθεῖν τῆς Ἰνδῶν χώρας, πλὴν γε <δὴ> ὅτι πλεῦνα ἢ οἳ ξὺν Ἀλέξανδρῳ τῷ Φιλίππου ἐπελθόντες· συγγενέσθαι γὰρ Σανδροκόττῳ λέγει, τῷ μεγίστῳ βασιλεῖ Ἰνδῶν, καὶ Πάρου ἔτι τούτῳ μείζονι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 4, line 2

οὗτος ὧν ὁ <Μεγασθένης> λέγει, οὔτε Ἰνδοὺς ἐπιστρατεῦσαι οὐδαμοῖσιν ἀν- θρώποισιν, οὔτε Ἰνδοῖσιν ἄλλους ἀνθρώπους, ἀλλὰ Σέσωστριν μὲν τὸν Αἰγύπτιον, τῆς Ἀσίας καταστρεφά- μενον τὴν πολλήν, ἔστε ἐπὶ τὴν Εὐρώπην σὺν στρατιῇ ἐλάσαντα ὀπίσω ἀπονοστήσαι, Ἰδάν- θυρσον δὲ τὸν Σκύ- θεα ἐκ Σκυθίας ὁρμηθέντα πολλὰ μὲν τῆς Ἀσίας ἔθνηα καταστρέφασθαι, ἐπελθεῖν δὲ καὶ τὴν Αἰγυπτίων γῆν κρατέοντα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 7, line 2

Σεμίραμιν δὲ τὴν Ἀσσυρίην ἐπιχειρεῖν μὲν στέλλεσθαι εἰς Ἰνδοὺς, ἀποθανεῖν δὲ πρὶν τέλος ἐπιθεῖναι τοῖς βουλευμασιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 8, line 1

ἀλλὰ Ἀλέξανδρον γὰρ στρατεῦσαι ἐπ' Ἰνδοὺς μῶνον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 8, line 3

καὶ πρὸ Ἀλεξάνδρου Διονύσου μὲν περί πολλὸς λόγος κατέχει ὡς καὶ τούτου στρατεύσαντος ἐς Ἰνδοὺς καὶ καταστρεφάμενου Ἰνδοὺς, Ἡρακλέος δὲ περί οὐ πολλός.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 9, line 3

Διονύσου μὲν γε καὶ Νῦσα πόλις μνήμα οὐ φαῦλον τῆς στρατηλασίας, καὶ ὁ Μηρὸς τὸ ὄρος, καὶ ὁ κισσὸς ὅτι ἐν τῷ ὄρει τούτῳ φύεται, καὶ αὐτοὶ οἳ Ἰνδοὶ ὑπὸ τυμπάνων τε καὶ κυμβάλων στελλόμενοι ἐς τὰς μάχας, καὶ ἐσθῆς αὐτοῖσι κατὰστικτος ἐοῦσα, κατὰπερ τοῦ Διονύσου τοῖσι βάκχοισιν· Ἡρακλέος δὲ οὐ πολλὰ ὑπομνήματα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 12, line 1

καὶ δὴ καὶ ἐν Σίβαισιν, Ἰνδικῶ γενεῇ, ὅτι δορὰς ἀμπε- χομένους εἶδον τοὺς Σίβας, ἀπὸ τῆς Ἡρακλέους στρα- τηλασίας ἔφασκον τοὺς ὑπολειφθέντας εἶναι τοὺς Σίβας· καὶ γὰρ καὶ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

σκυτάλην φορέουσί τε οἱ Σίβαι καὶ τῇσι βουσὶν αὐτῶν ῥόπαλον ἐπικέκασται, καὶ τοῦτο ἐς μνήμην ἀνέφερον τοῦ ῥοπάλου τοῦ Ἡρακλέους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 5, section 13, line 4

εἰ δέ τῳ πιστὰ ταῦτα, ἄλλος ἂν οὗτος Ἡρακλῆς εἴη, οὐχ ὁ Θηβαῖος ἢ ὁ Τύριος [οὗτος] ἢ ὁ Αἰγύπτιος, ἢ τις καὶ κατὰ τὴν ἄνω χώραν οὐ πόρρω τῆς Ἰνδῶν γῆς ὠκισμένος μέγας βασιλεύς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 6, section 1, line 3

ταῦτα μὲν μοι ἐκβολὴ ἔστω τοῦ λόγου ἐς τὸ μὴ πι- στὰ φαίνεσθαι ὅσα ὑπὲρ τῶν ἐπέκεινα τοῦ Ἰφάσιος πο- ταμοῦ Ἰνδῶν μετεξέτεροι ἀνέγραψαν· (ἔστε γὰρ ἐπὶ τὸν Ἰφασιν οἱ τῆς Ἀλεξάνδρου στρατηλασίης μετασχόντες οὐ πάντῃ ἀπιστοὶ εἰσιν)· ἐπεὶ καὶ τότε λέγει <Μεγασθένης> ὑπὲρ ποταμοῦ Ἰνδικοῦ, Σίλαν μὲν εἶναι οἱ ὄνομα, ῥέειν δὲ ἀπὸ κρήνης ἐπωνύμου τοῦ ποταμοῦ διὰ τῆς χώρας τῆς Σιλαίων, καὶ τούτων ἐπωνύμων τοῦ πο- ταμοῦ τε καὶ τῆς κρήνης, τὸ δὲ ὕδωρ παρέχεσθαι τοι- ὄνδε.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 6, section 4, line 1

ἔεται δὲ ἡ Ἰνδῶν γῆ τοῦ θέρους, μάλιστα μὲν τὰ ὄρεα, Παραπάμισός τε καὶ ὁ Ἡμωδὸς καὶ τὸ Ἰμαϊκὸν ὄρος, καὶ ἀπὸ τουτέων μεγάλοι καὶ θολεροὶ οἱ ποταμοὶ ῥέουσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 6, section 5, line 1

ἔεται δὲ τοῦ θέρους καὶ τὰ πεδία τῶν Ἰνδῶν, ὥστε λιμνάζει τὰ πολλὰ αὐτέων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 6, section 8, line 2

ἔσθαι δὲ κατὰ περ τὰ Ἰνδῶν οὐκ ἔξω ἐστὶ τοῦ εἰκότος, ἐπεὶ καὶ τᾶλλα <ἡ>2 Ἰνδῶν γῆ οὐκ ἀπέοικε τῆς Αἰθιοπίας καὶ οἱ ποταμοὶ οἱ Ἰνδοὶ ὁμοίως τῷ Νεῖλῳ τῷ Αἰθιοπικῷ τε καὶ Αἰγυπτίῳ χροκοδείλους τε φέρουσιν, ἔστιν δὲ οἱ αὐτῶν καὶ ἰχθύας καὶ ἄλλα κήτεια ὅσα ὁ Νεῖλος πλὴν ἵππου τοῦ ποταμίου, – <Ὀνησίκριτος> δὲ καὶ τοὺς ἵππους τοὺς ποταμίους λέγει ὅτι φέρουσι – τῶν τε ἀν- θρώπων αἱ ἰδέαι οὐ πάντῃ ἀπάδουσιν αἱ Ἰνδῶν τε καὶ Αἰθιοπῶν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 6, section 9, line 3

οἱ μὲν πρὸς νότου ἀνέμου Ἰνδοὶ τοῖς Αἰθίοφι μᾶλλον τι εἰκόασι μέλανές τε ἰδέσθαι εἰσὶ καὶ ἡ κόμη αὐτοῖς μέλαινα, πλὴν γε δὴ ὅτι σιμοὶ οὐχ ὡσαύτως οὐδὲ οὐλόκρανοι ὡς Αἰθίοπες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 7, section 1, line 1

ἔθνεα δὲ Ἰνδικὰ εἰκοσι καὶ ἑκατὸν τὰ ἅπαντα λέγει <Μεγασθένης>, δυοῖν δέοντα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 7, section 1, line 3

καὶ πολλὰ μὲν εἶναι ἔθνεα Ἰνδικὰ καὶ αὐτὸς συμφέρομαι <Μεγασθένης>, τὸ δὲ ἀτρεκέες οὐκ ἔχω εἰκάσαι ὅπως ἐκμαθὼν ἀνέγραψεν, οὐδὲ πολλοστὸν μέρος τῆς Ἰνδῶν γῆς ἐπελθὼν, οὐδὲ ἐπιμι- ξίης πᾶσι τοῖς γένεσιν εὐούσης ἐς ἀλλήλους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 7, section 2, line 2

πάλαι μὲν δὴ νομάδας εἶναι Ἰνδοὺς, καθάπερ Σκυθέων τοὺς οὐκ ἀροτῆρας, οἱ ἐπὶ τῇσιν ἀμάξῃσι πλανώμενοι ἄλλοτε ἄλ- λην τῆς Σκυθίας ἀμείβουσιν, οὔτε πόληας οἰκεῖντες οὔτε ἱερὰ θεῶν σέβοντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 7, section 3, line 1

5.3. ARRIAN

οὕτω μηδὲ Ἰνδοῖσι πόλλας εἶναι μηδὲ ἱερὰ θεῶν δεδομημένα, ἀλλ' ἀμπίσχεσθαι μὲν δο- ρὰς θηρίων ὅσων κατακάνοιεν, σιτέεσθαι δὲ τῶν δεν- δρέων τὸν φλοιόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 7, section 3, line 5

καλέεσθαι δὲ τὰ δένδρεα ταῦτα τῇ Ἰνδῶν φωνῇ τάλα, καὶ φύεσθαι ἐπ' αὐτῶν, κατὰ περ τῶν φοινίκων ἐπὶ τῇσι κορυφῇσιν, οἷά περ τολύπας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 7, section 5, line 1

σιτέεσθαι δὲ καὶ τῶν θηρίων ὅσα ἔλοιεν ὠμοφαγέοντας, πρὶν γε δὴ Διόνυσον ἐλθεῖν εἰς τὴν χώραν τῶν Ἰνδῶν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 7, section 5, line 2

Διόνυσον δὲ ἐλθόντα, ὡς καρτερός ἐγένετο Ἰνδῶν, πόλλας τε οἰκίσαι καὶ νόμους θέσθαι τῇσι πόλεσιν, οἴνου τε δο- τῆρα Ἰνδοῖς γενέσθαι κατὰ περ Ἑλλήσι, καὶ σπεῖρειν δι- δάξαι τὴν γῆν διδόντα αὐτὸν σπέρματα, ἣ οὐκ ἐλάσαντος ταύτῃ Τριπτολέμου, ὅτε περ ἐκ Δήμητρος ἐστάλη σπεί- ρειν τὴν γῆν πᾶσαν, ἣ πρὸ Τριπτολέμου τις οὗτος Διό- νυσος ἐπελθὼν τὴν Ἰνδῶν γῆν σπέρματά σφισιν ἔδωκε καρποῦ τοῦ ἡμέρου.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 7, section 7, line 3

βόας τε ὑπ' ἄροτρον ζεῦξαι Διόνυσον πρῶτον καὶ ἄροτῆρας ἀντὶ νομάδων ποιῆσαι Ἰνδῶν τοὺς πολλοὺς καὶ ὀπλίσαι ὅπλοισι τοῖσιν ἀρηίοισι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 7, section 9, line 1

καὶ θεοὺς σέβειν ὅτι ἐδίδαξε Διόνυσος ἄλλους τε καὶ μάλιστα δὴ ἑαυτὸν κυμβαλίζοντας καὶ τυμπανίζοντας· καὶ ὄρχησιν δὲ ἐκδιδάξαι τὴν σατυρικήν, τὸν κόρδακα παρ' Ἑλλήσι καλούμε- νον, καὶ κομᾶν [Ἰνδοὺς] τῷ θεῷ μιτρηφορέειν τε ἀναδεῖξαι καὶ μύρων ἀλοιφὰς ἐκδιδάξαι, ὥστε καὶ εἰς Ἀλέξανδρον ἔτι ὑπὸ κυμβάλων τε καὶ τυμπάνων εἰς τὰς μάχας Ἰνδοὶ καθίσταντο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 8, section 1, line 1

ἀπίνοντα δὲ ἐκ τῆς Ἰνδῶν γῆς, ὡς οἱ ταῦτα κεκοσμέατο, καταστῆσαι βασιλέα τῆς χώρας Σπατέμβαν, τῶν ἐταίρων ἓνα τὸν βακχῳδέστατον· τελευτήσαντος δὲ Σπατέμβα τὴν βασι- λήην ἐκδέξασθαι Βουδύαν τὸν τούτου παῖδα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 8, section 2, line 1

καὶ τὸν μὲν πεντήκοντα καὶ δύο ἔτεα βασιλεῦσαι Ἰνδῶν, τὸν πατέρα, τὸν δὲ παῖδα εἴκοσιν ἔτεα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 8, section 3, line 4

καὶ τούτου παῖδα ἐκδέξασθαι τὴν βασιλικήν Κραδεύαν, καὶ τὸ ἀπὸ τοῦδε τὸ πολὺ μὲν κατὰ γένος ἀμείβειν τὴν βασιλικήν, παῖδα παρὰ πατρός ἐκδεχόμενον· εἰ δὲ ἐκλείποι τὸ γένος, οὕτω δὴ ἀριστίνδην καθίστασθαι Ἰνδοῖσι βασιλέας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 8, section 4, line 1

Ἡρακλέα δέ, ὅντινα εἰς Ἰνδοὺς ἀφικέσθαι λόγος κατέχει, παρ' αὐτοῖσιν Ἰνδοῖσι γηγενέα λέγεσθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 8, section 5, line 3

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

τούτον τὸν Ἡρακλέα μάλιστα πρὸς Σουρασηνῶν γεραίρεσθαι, Ἴν- δικοῦ ἔθνεος, ἵνα δύο πόλεις μεγάλαι, Μέθορά τε καὶ Κλεισόβورا· καὶ ποταμὸς Ἰωμάνης πλωτὸς διαρρεῖ τὴν χώραν αὐτῶν· τὴν σκευὴν δὲ οὗτος ὁ Ἡρακλῆς ἦντινα ἐφόρει <Μεγασθένης> λέγει ὅτι ὁμοίην τῷ Θηβαίῳ Ἡρακλεῖ, ὡς αὐτοὶ Ἰνδοὶ ἀπηγγέονται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 8, section 6, line 4

καὶ τούτῳ ἄρσε- νας μὲν παῖδας πολλοὺς κάρτα γενέσθαι ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ – πολλῆσι γὰρ δὴ γυναιξὶν ἐς γάμον ἐλθεῖν καὶ τούτον τὸν Ἡρακλέα – , θυγατέρα δὲ μονογενέην.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 8, section 8, line 1

καὶ τάδε μετεξέτεροι Ἰνδῶν περὶ Ἡρακλέους λέγουσιν, ἐπελθόντα αὐτὸν πᾶσαν γῆν καὶ θάλασσαν καὶ καθήραντα ὃ τι περ κακόν, καινὸν εἶδος ἐξευρεῖν ἐν τῇ θαλάσῃ κόσμου γυναι- κηίου, ὅντινα καὶ εἰς τοῦτο ἔτι οἱ τε ἐξ Ἰνδῶν τῆς χώρας τὰ ἀγώγιμα παρ' ἡμέας ἀγινέοντες σπουδῇ ὠνέομενοι ἐκκομίζουσι, καὶ Ἑλλήνων δὲ πάλαι καὶ Ῥωμαίων νῦν ὅσοι πολυ- κτέανοι καὶ εὐδαίμονες μέζονι ἔτι σπουδῇ ὠνέονται, τὸν μαργαρίτην δὴ τὸν θαλάσσιον οὕτω τῇ Ἰνδῶν γλώσῃ καλεόμενον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 8, section 10, line 2

τὸν γὰρ Ἡρακλέα, ὡς καλὸν οἱ ἐφάνη τὸ φόρημα, ἐκ πάσης τῆς θαλάσσης ἐς τὴν Ἰνδῶν γῆν συναγινέειν τὸν μαργαρίτην δὴ τούτον, τῇ θυγατρὶ τῇ ἐωυτοῦ εἶναι κόσμον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 8, section 13, line 2

καὶ εἶναι γὰρ καὶ παρ' Ἰνδοῖσι τὸν μαργαρίτην τριστάσιον κατὰ τιμὴν πρὸς χρυσίον τὸ ἄπεφθον, καὶ τοῦτο ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ ὀρυσσόμενον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 9, section 2, line 2

καὶ ὑπὲρ τούτου λεγόμενον λόγον εἶναι παρὰ Ἰνδοῖσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 9, section 2, line 6

Ἡρακλέα, ὀφιγόνου οἱ γε- νομένης τῆς παιδός, ἐπεὶ τε δὴ ἐγγυὲς ἔμαθεν ἑαυτῷ εἶναι τὴν τελευτήν, οὐκ ἔχοντα ὅτῳ ἀνδρὶ ἐκδῶ τὴν παῖδα ἐωυτοῦ ἐπαξίῳ, αὐτὸν μιγῆναι τῇ παιδί ἐπταέτει εἰσῆ, ὡς γένος ἐξ οὗ τε κακείνης ὑπολείπεσθαι Ἰνδῶν βασιλέας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 9, section 9, line 1

ἀπὸ μὲν δὴ Διονύσου βασιλέας ἡρίθμεον Ἰνδοὶ ἐς Σανδρόκοττον τρεῖς καὶ πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν, ἔτεα δὲ δύο καὶ τεσσαράκοντα καὶ ἑξακισχίλια· ἐν δὲ τούτοισι τρεῖς τὸ πᾶν εἰς ἐλευθερίην *** , τὴν δὲ καὶ ἐς τριακό- σια, τὴν δὲ εἴκοσιν τε ἑτέων καὶ ἑκατὸν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 9, section 10, line 2

πρεσβύτερόν τε Διονύσον Ἡρακλέος δέκα καὶ πέντε γενεῇσιν Ἰνδοὶ λέγουσιν· ἄλλον δὲ οὐ- δένα ἐμβαλεῖν ἐς γῆν τὴν Ἰνδῶν ἐπὶ πολέμῳ, οὐδὲ Κῦρον τὸν Καμβύσῃ, καίτοι ἐπὶ Σκύθας ἐλάσαντα καὶ τᾶλλα πολυπραγμονέστατον δὴ τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν βασιλέων γενόμενον τὸν Κῦρον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 9, section 12, line 1

οὐ μὲν δὴ οὐδὲ Ἰνδῶν τινὰ ἔξω τῆς οἰκείης σταλῆναι ἐπὶ πολέμῳ διὰ δικαιοσύνην.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 10, section 1, line 1

5.3. ARRIAN

λέγεται δὲ καὶ τάδε, μνημεῖα ὅτι Ἰνδοὶ τοῖς τελευ- τήσασιν οὐ ποίεουσιν, ἀλλὰ τὰς ἀρε- τὰς γὰρ τῶν ἀνδρῶν ἱκανὰς ἐς μνήμην τίθενται τοῖσιν ἀποθανοῦσι καὶ τὰς ψυχὰς αὐτῶν αὐτοῖσιν ἐπάδονται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 10, section 2, line 2

πόλεων δὲ καὶ ἀριθμὸν οὐκ εἶναι ἂν ἀτρεκέως ἀναγράφαι τῶν Ἰνδικῶν ὑπὸ πλήθους· ἀλλὰ γὰρ ὅσαι παραποτάμια αὐτέων ἢ παραθαλάσσιαι, ταύτας μὲν ξυλῖνας ποίεσθαι· οὐ γὰρ ἂν ἐκ πλίνθου ποιεομένης διαρκέσαι ἐπὶ χρόνον τοῦ τε ὕδατος ἕνεκα τοῦ ἐξ οὐρανοῦ καὶ ὅτι οἱ ποταμοὶ αὐτοῖσιν ὑπερβάλ- λοντες ὑπὲρ τὰς ὄχθας ἐμπιμπλάσι τοῦ ὕδατος τὰ πεδία.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 10, section 5, line 1

μεγίστην δὲ πόλιν Ἰνδοῖσιν εἶναι <τὴν> Παλίμβοθρα καλεομένην, ἐν τῇ Πρασίων γῇ, ἵνα αἱ συμβολαὶ εἰσι τοῦ τε Ἐρανοβοῦ ποταμοῦ καὶ τοῦ Γάγγεω· τοῦ μὲν Γάγγεω, τοῦ μεγίστου ποταμῶν· ὁ δὲ Ἐρανοβοῦς τρίτος μὲν ἂν εἴη τῶν Ἰνδῶν ποτα- μῶν, μέζων δὲ τῶν ἄλλῃ καὶ οὗτος, ἀλλὰ ξυγχαρῆαι αὐτὸς τῷ Γάγγει, ἐπειδὴν ἐμβάλη ἐς αὐτὸν τὸ ὕδωρ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 10, section 8, line 2

εἶναι δὲ καὶ τόδε μέγα ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, πάντας Ἰνδοὺς εἶναι ἐλευθέρους, οὐδὲ τινα δοῦλον εἶναι Ἰνδόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 10, section 9, line 2

τοῦτο μὲν Λακεδαιμονίοι- σιν ἐς ταῦτ' συμβαίνει καὶ Ἰνδοῖσι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 10, section 9, line 4

Λακεδαιμονίοις μὲν γε οἱ εἰλωτες δοῦλοι εἰσιν καὶ τὰ δούλων ἐργάζονται, Ἰνδοῖσι δὲ οὐδὲ ἄλλος δοῦλός ἐστι, μήτι γε Ἰνδῶν τις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 11, section 1, line 1

νεμέμηνται δὲ οἱ πάντες Ἰνδοὶ ἐς ἑπτὰ μάλιστα γένηα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 11, section 3, line 1

οὐδὲ τι ἄλλο ἀνάγκης ἀπλῶς ἐπεῖναι τοῖς σοφιστῇσιν, ὅτι μὴ θύειν τὰς θυσίας τοῖσι θεοῖσιν ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ <τῶν>2 Ἰνδῶν· καὶ ὅστις δὲ ἰδίᾳ θύει, ἐξηγητὴς αὐτῷ τῆς θυ- σίης τῶν τις σοφιστῶν τούτων γίνεται, ὥς οὐκ ἂν ἄλλως κεχαρισμένα τοῖς θεοῖς θύσαντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 11, section 4, line 2

εἰσὶ δὲ καὶ μαντικῆς οὔτοι μούνοι Ἰνδῶν δαήμονες, οὐδὲ ἐφεῖται ἄλλῳ μαν- τεύεσθαι ὅτι μὴ σοφιστῇ ἀνδρί.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 11, section 9, line 2

δεύτεροι δ' ἐπὶ τούτοις οἱ γεωργοὶ εἰσιν, οὔτοι πλή- θει πλείστοι Ἰνδῶν ἔόντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 11, section 10, line 1

καὶ εἰ πόλεμος ἐς ἀλλήλους τοῖσιν Ἰνδοῖσι τύχοι, τῶν ἐργαζομένων τὴν γῆν οὐ θέμις σφιν ἄπτεσθαι οὐδὲ αὐτὴν τὴν γῆν τέμνειν, ἀλλὰ οἱ μὲν πολέμοις καὶ κα- τακαίνουσιν ἀλλήλους ὅπως τύχοιεν, οἱ δὲ πλησίον αὐτῶν κατ' ἡσυχίαν ἀροῦσιν ἢ τρυγῶσιν ἢ κλαδῶσιν ἢ θερίζουσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 11, section 11, line 1

τρίτοι δὲ εἰσιν Ἰνδοῖσιν οἱ νομέες, οἱ ποιμένες τε καὶ βουκόλοι.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 12, section 2, line 1
πέμπτον δὲ γένος ἐστὶν Ἰνδοῖσιν οἱ πολεμισταί, πλήθει μὲν δεύτερον μετὰ τοὺς γεωργούς,
πλείστη δὲ ἐλευθερίῃ τε καὶ εὐθυμίῃ ἐπιχρεόμενον.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 12, section 5, line 1
ἔκτοι δὲ εἰσιν Ἰνδοῖσιν οἱ ἐπίσκοποι καλεόμενοι.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 12, section 5, line 4
οὗτοι ἐφορῶσι τὰ γινόμενα κατὰ τε τὴν χώραν καὶ κατὰ τὰς πόλεις, καὶ ταῦτα ἀναγ-
γέλλουσι τῷ βασιλεῖ, ἵνα περ βα- σιλεύονται Ἰνδοί, ἢ τοῖς τέλεσιν, ἵνα περ αὐτόνομοί εἰσι.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 12, section 5, line 6
καὶ τούτοις οὐ θέμις ψεύδος ἀγγεῖλαι οὐδέν, οὐδέ τις Ἰνδῶν αἰτίην ἔσχε ψεύσασθαι.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 13, section 1, line 1
θηρῶσι δὲ Ἰνδοὶ τὰ μὲν ἄλλα ἄγρια θηρία κατὰ περ καὶ Ἕλληνες, ἡ δὲ τῶν ἐλεφάντων
σφιν θήρα οὐδέν τι ἄλλῃ ἔοικεν, ὅτι καὶ ταῦτα τὰ θηρία οὐδαμοῖσιν ἄλλοις θηρίοις ἐπέοικεν.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 14, section 3, line 3
ἀγ<αγ>όν- τες δὲ εἰς τὰς κόμας τοὺς ἀλόντας τοῦ τε χλωροῦ καλὰ- μου καὶ τῆς πόας
τὰ πρῶτα ἐμφαγεῖν ἔδοσαν, οἳ δὲ ὑπὸ ἀθυμίας οὐκ ἐθέλουσιν οὐδὲν σιτέεσθαι, τοὺς δὲ περι-
στάμενοι οἱ Ἰνδοὶ ῥῥαῖσι τε καὶ τυμπάνοις καὶ κυμβά- λαις ἐν κύκλῳ κρούοντές τε καὶ
ἐπάδοντες κατευνά- ζουσι.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 14, section 9, line 5
καὶ ἔστιν αὐτοῖσι τῶν μὲν ὀφθαλ- μῶν ἰάμα τὸ βόειον γάλα ἐγχεόμενον, πρὸς δὲ τὰς
ἄλλας νόσους ὁ μέλας οἶνος πινόμενος, ἐπὶ δὲ τοῖσιν ἔλκεσι τὰ ὕεα κρέα ὀπτώμενα καὶ κατα-
πλασσόμενα· ταῦτα παρ' Ἰνδοῖσιν ἐστὶν αὐτοῖσι ἰάματα.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 1, line 2
τοῦ δὲ ἐλέφαντος τὴν τίγριν πολλὸν τι ἀλκιμωτέραν Ἰνδοὶ ἄγουσι.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 1, line 3
τίγριος δὲ δορὴν μὲν ἰδεῖν λέγει <Νέαρ- χος>, αὐτὴν δὲ τίγριν οὐκ ἰδεῖν· ἀλλὰ τοὺς Ἰνδοὺς
γὰρ ἀπηγέεσθαι, τίγριν εἶναι μέγεθος μὲν ἡλίκον τὸν μέγι- στον ἵππον, τὴν δὲ ἀκύτητα καὶ
ἀλκὴν οἷον οὐδενὶ ἄλλῳ εἰκάσαι· τίγριν γὰρ ἐπεὰν ὁμοῦ ἔλθῃ ἐλέφαντι, ἐπιπη- δᾶν τε ἐπὶ τὴν
κεφαλὴν τοῦ ἐλέφαντος καὶ ἄγχειν εὐπετέως.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 4, line 3
ἐπεὶ καὶ ὑπὲρ τῶν μυρμήκων λέγει <Νέαρχος> μύρμηκα μὲν αὐτὸς οὐκ ἰδεῖν, ὅποιον δὲ
τινα μετεξέτεροι διέγραψαν γίνεσθαι ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, δορὰς δὲ καὶ τούτων ἰδεῖν πολλὰς ἐς τὸ
στρατόπεδον κατακο- μισθείσας τὸ Μακεδονικόν.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 7, line 1
ἐκείνους δὲ – εἶναι γὰρ ἀλωπεκέων μέζονας – πρὸς λόγον τοῦ μεγέθους σφῶν καὶ τὴν γῆν
ὀρύσσειν· τὴν δὲ γῆν χρυσίτην εἶναι, καὶ ἀπὸ ταύτης γίνεσθαι Ἰνδοῖσι τὸν χρυσόν.
- Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 8, line 2

5.3. ARRIAN

σιττακούς δὲ <Νέαρχος> μὲν ὡς δὴ τι θαῦμα ἀπηγγέεται ὅτι γίνονται ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, καὶ ὁποῖος ὄρνις ἐστὶν ὁ σιττακός, καὶ ὅπως φωνὴν ἴει ἀνθρωπίνην.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 9, line 4

ἐγὼ δὲ ὅτι αὐτός τε πολλοὺς ὁπώπεα καὶ ἄλλους ἐπισταμένους ἤδεα τὸν ὄρνιθα, οὐδὲν ὡς <ὑπὲρ> ἀτόπου δῆθεν ἀπηγγέσομαι· οὐδὲ ὑπὲρ τῶν πιθήκων τοῦ μεγέθεος, ἢ ὅτι καλοὶ παρ' Ἰνδοῖς πίθηκοί εἰσιν, οὐδὲ ὅπως θηρῶνται ἐρέω.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 10, line 4

αὐτοὺς δὲ τοὺς Ἰνδοὺς πολὺ μείζονας τούτων λέγειν εἶναι τοὺς μεγίστους ὄφεας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 11, line 2

ὅσοι δὲ ἰητροὶ Ἕλληνες, τούτοισιν οὐδὲν ἄκος ἐξεύρητο ὅστις ὑπὸ ὄφεως δηχθείη Ἰνδικοῦ· ἀλλ' αὐτοὶ γὰρ οἱ Ἰνδοὶ ἰῶντο τοὺς πληγέντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 11, line 5

καὶ ἐπὶ τῷδε <Νέαρχος> λέγει <ὅτι> συλλελεγμένους ἀμφ' αὐτὸν εἶχεν Ἀλέξανδρος Ἰνδῶν ὅσοι ἰητρικὴν σοφώτατοι, καὶ κεκήρυκτο ἀνὰ τὸ στρατόπεδον, ὅστις δηχθείη, ἐπὶ τὴν σκηνὴν φοιτᾶν τὴν βασιλέως.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 15, section 12, line 2

οὐ πολλὰ δὲ ἐν Ἰνδοῖσι πάθεα γίνεται, ὅτι αἱ ὥραι σύμμετροί εἰσιν αὐτόθι· εἰ δὲ τι μείζον καταλαμβάνοι, τοῖσι σοφιστῆσιν ἀνεκοινοῦντο· καὶ ἐκεῖνοι οὐκ ἄνευ θεοῦ ἐδόκεον ἵησθαι ὅ τι περ ἰήσιμον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 16, section 1, line 1

ἐσθῆτι δὲ Ἰνδοὶ λινὴν χρέονται, κατὰπερ λέγει <Νέ- αρχος>, λίνου τοῦ ἀπὸ τῶν δενδρέων, ὑπὲρ ὅτων μοι ἤδη λέλεκται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 16, section 3, line 1

καὶ ἐνώτια Ἰνδοὶ φορέου- σιν ἐλέφαντος ὅσοι κάρτα εὐδαίμονες· οὐ γὰρ πάντες Ἰνδοὶ φορέ- ουσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 16, section 4, line 2

τοὺς δὲ πώγωνας λέγει <Νέαρχος> ὅτι βάπτονται Ἰνδοί, χροὴν δὲ ἄλλην καὶ ἄλλην <βάπτον- ται>, οἳ μὲν ὡς λευκοὺς φαίνεσθαι οἶους λευκοτάτους, οἳ δὲ κυανέους, τοῖς δὲ φοι- νικέους εἶναι, τοῖς δὲ καὶ πορφυρέους, ἄλλοις πρασοειδέας· καὶ σκιάδια ὅτι προ- βάλλονται τοῦ θέρους ὅσοι οὐκ ἡμελημένοι Ἰνδῶν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 16, section 6, line 1

ὀπλίσιος δὲ τῆς Ἰνδῶν οὐκ ὡυτὸς εἷς τρόπος ἀλλ' οἳ μὲν πελοὶ αὐτοῖσι τόξον τε ἔχουσι, ἰσό- μηκες τῷ φο- ρέοντι τὸ τόξον, καὶ τοῦτο κάτω ἐπὶ τὴν γῆν θέντες καὶ τῷ ποδὶ τῷ ἀριστερῷ ἀντιβάντες, οὕτως ἐκτοξεύουσι, τὴν νευρὴν ἐπὶ μέγα ὀπίσω ἀπαγαγόντες· ὁ γὰρ οἰστός αὐτοῖ- σιν ὀλίγον ἀποδέων τριπήχεος, οὐδέ τι ἀντέχει τοξευθὲν πρὸς Ἰνδοῦ ἀνδρὸς τοξικοῦ, οὔτε ἀσπίς οὔτε θώρηξ οὔτε <εἶ> τι <τὸ κάρτα> καρτερόν ἐγένετο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 16, section 9, line 4

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

μάχαιραν δὲ πάντες φορέουσι, πλατεῖν δὲ καὶ τὸ μῆκος οὐ μείω τριπλήχεος· καὶ ταύτην, ἐπεὰν συστάδην καταστή αὐτοῖ- σιν ἡ μάχη – τὸ δὲ οὐκ εὐμαρέως Ἰνδοῖσιν ἐς ἀλλή- λους γίνεται – ἀμφοῖν τοῖν χερσὶν καταφέρουσιν ἐς τὴν πληγὴν, τοῦ καρτερὴν τὴν πληγὴν γενέσθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 17, section 1, line 1

τὰ δὲ σώματα ἰσχυροὶ τέ εἰσιν Ἰνδοὶ καὶ εὐμήκεες, καὶ κοῦφοι πολλόν τι ὑπὲρ τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 17, section 1, line 3

ὄχη- ματα δὲ τοῖς μὲν πολλοῖς Ἰνδῶν κάμηλοι εἰσιν καὶ ἵπποι καὶ ὄνοι, τοῖς δὲ εὐδαίμοσιν ἐλέφαντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 17, section 2, line 2

Βασιλικὸν γὰρ ὄχημα ἐλέφας παρ' Ἰνδοῖς ἐστί, δεύτερον δὲ τιμῇ ἐπὶ τούτῳ τὰ τέθριππα, τρίτον δὲ αἱ κάμηλοι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 17, section 3, line 4

αἱ γυναῖκες δὲ αὐτοῖσιν, ὅσαι κάρτα σώφρονες, ἐπὶ μὲν ἄλλῳ μισθῷ οὐκ ἂν τι διαμάρτοιεν, ἐλέφαντα δὲ λαβοῦσα γυνὴ μίσγεται τῷ δόντι· οὐδὲ αἰσχρὸν Ἰνδοὶ ἄγουσι τὸ ἐπὶ ἐλέφαντι μι- γῆναι, ἀλλὰ καὶ σεμνὸν δοκεῖ τῇσι γυναῖξιν ἄξιν τὸ κάλλος φανῆναι ἐλέφαντος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 17, section 5, line 2

σιτοφάγοι δὲ καὶ ἀροτῆρες Ἰνδοὶ εἰσιν, ὅσοι γε μὴ ὄρειοι αὐτῶν· οὗτοι δὲ τὰ θήρεια κρέα σιτεύονται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 17, section 6, line 1

ταῦτά μοι ἀπόχρη δεδηλωθῆαι ὑπὲρ Ἰνδῶν, ὅσα γνω- ριμώτατα <Νέαρχος> τε καὶ <Με- γασθένης>, δοκίμῳ ἀνδρὲ, ἀνεγγραψάτην, ἐπεὶ οὐδὲ ἡ ὑπόθεσις μοι τῆσδε τῆς συγ- γραφῆς τὰ Ἰνδῶν νόμιμα ἀναγράψαι ἦν, ἀλλ' ὅπως γὰρ παρεκομίσθη Ἀλεξάνδρῳ ἐς Πέρσας ἐξ Ἰνδῶν ὁ στόλος· ταῦτα δὲ ἐκβολὴ μοι ἔστω τοῦ λόγου.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 18, section 11, line 6

ὥς δὲ ταῦτα ἐκεκόσμητο Ἀλεξάνδρῳ, ἔθυε τοῖς θεοῖσιν ὅσοι τε πατέριοι ἢ μαντευτοὶ αὐτῷ καὶ Ποσειδῶνι καὶ Ἀμφι- τρίτῃ καὶ Νηρηίοι καὶ αὐτῷ τῷ Ὀκεανῷ, καὶ τῷ Ὑδάσπῃ ποταμῷ, ἀπ' οὗτου ὠρμαῖτο, καὶ τῷ Ἀκεσίνῃ, ἐς ὅντινα ἐκδιδοὶ ὁ Ὑδάσπης, καὶ τῷ Ἰνδῷ, ἐς ὅντινα ἀμφῶ ἐκδι- δοῦσιν· ἀγῶνές τε αὐτῷ μουσικοὶ καὶ γυμνικοὶ ἐποιεῦντο, καὶ ἱερεῖα τῇ στρατιῇ πάσῃ κατὰ τέλεα εἰδίδοτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 19, section 9, line 3

ὁ δὲ λόγος ὅδε τοῦ παρὰ- πλου μοι ἀφήγησίς ἐστιν, ὃν Νέαρχος σὺν τῷ στόλῳ παρέπλευσεν ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ τῶν ἐκβολέων ὁρμηθεὶς κατὰ τὴν θάλασσαν τὴν μεγάλην ἔσπε ἐπὶ τὸν κόλπον τὸν Περσικόν, ἣν δὴ Ἐρυθρὴν θάλασσαν μετεξέτεροι καλέουσι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 20, section 2, line 1

πό- θον μὲν εἶναι Ἀλεξάνδρῳ ἐκπεριπλῶσαι τὴν θάλασσαν τὴν ἀπὸ Ἰνδῶν ἔσπε ἐπὶ τὴν Περσικὴν, ὀκνέειν δὲ αὐτὸν τοῦ τε πλοῦ τοῦ μῆκος καὶ μή τιτι ἄρα χώρα ἐρήμῳ ἐγκύρσαντες ἢ ὄρμων ἀπόρῳ ἢ οὐ ξυμμέτρως ἐχούσῃ τῶν ὠραίων, οὕτω δὲ διαφθαρεῖ αὐτῷ ὁ στόλος, καὶ οὐ

5.3. ARRIAN

φαύλη κηλὶς αὕτη τοῖς ἔργοισιν αὐτοῦ τοῖσι μεγάλοις ἐπιγενομένη τὴν πᾶσαν εὐτυχίην αὐτῷ ἀφανίσῃ· ἀλλὰ ἐκνικῆσαι γὰρ αὐτῷ τὴν ἐπιθυμίην τοῦ καινόν τι αἰεὶ καὶ ἄτοπον ἐργάζεσθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 20, section 10, line 3

πολὺ δὲ δὴ συνεπιλαβέσθαι ἐς εὐθυμίην τῇ στρατιῇ τὸ δὴ αὐτὸν Ἀλέξανδρον ὀρμηθέντα κατὰ τοῦ Ἰνδοῦ τὰ στόματα ἀμφοτέρω ἐκπλῶσαι ἐς τὸν πόντον σφάγια τε τῷ Ποσειδῶνι ἐντεμεῖν καὶ ὅσοι ἄλλοι θεοὶ θαλάσσιοι, καὶ δῶρα μεγαλοπρεπέα τῇ θαλάσσει χαρίσασθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 21, section 2, line 3

ἄραντες δὲ ἀπὸ τοῦ ναυστάθμου τῇ πρώτῃ ἡμέρῃ κατὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ὀρμίζονται πρὸς διώρυγιν μεγάλην, καὶ μένουσιν αὐτοῦ δύο ἡμέρας· Στούρα δὲ ὄνομα ἦν τῷ χώρῳ· στάδιοι ἀπὸ τοῦ ναυστάθμου ἐς ἑκατὸν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 21, section 5, line 3

ἐνθὲν δὲ ὀρμηθέντες ἔπλεον οὐκ ἐπὶ πολλόν· ἔρμα γὰρ ἐφάνη αὐτοῖσι κατὰ τὴν ἐκβολὴν τὴν ταύτῃ τοῦ Ἰνδοῦ καὶ τὰ κύματα ἐρρόχθει πρὸς τῇ ἡϊόνι, καὶ ἡ ἡϊὼν αὕτη τραχεῖα ἦν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 21, section 8, line 1

προσοικέει δὲ ταύτῃ ἔθνος Ἰνδικόν, οἱ Ἀράβιες καλεόμενοι, ὧν καὶ ἐν τῇ μέλῳι ζυγγραφεῖ μνήμην ἔσχον, καὶ ὅτι εἰσὶν ἐπώνυμοι ποταμοῦ Ἀράβιος, ὃς διὰ τῆς γῆς αὐτῶν ἔρων ἐκδιδοῖ ἐς θάλασσαν, ὀρίζων τούτων τε τὴν χώραν καὶ τὴν Ὠρειτέων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 22, section 10, line 4

μέχρι μὲν τοῦδε Ἀράβιες, ἔσχατοι Ἰνδῶν ταύτῃ ὠκισμένοι, τὰ δὲ ἀπὸ τοῦδε Ὠρεῖται ἐπεῖχον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 25, section 2, line 2

Ὠρεῖται δὲ ὅσοι ἄνω ἀπὸ θαλάσσης οἰκεῖον· σιν, ἐσταλμένοι μὲν κατὰπερ Ἰνδοὶ εἰσι, καὶ τὰ ἐς πόλεμον ὡσαύτως παραρτέονται· γλῶσσα δὲ ἄλλη αὐτοῖσι καὶ ἄλλα νόμια.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 25, section 4, line 1

παραπλέοντων δὲ τὴν Ἰνδῶν γῆν (τὸ ἐντεῦθεν γὰρ οὐκέτι Ἰνδοὶ εἰσι) λέγει <Νέαρχος> ὅτι αἱ σκιαὶ αὐτοῖσιν οὐ ταὐτὸ ἐποίουν· ἀλλὰ ὅπου μὲν ἐπὶ πολὺ τοῦ πόντου ὡς πρὸς μεσημβρίαν προχωρήσειαν, αἱ δὲ καὶ αὐταὶ [αἱ σκιαὶ] πρὸς μεσημβρίην τετραμμέναι ἐφαίνοντο· ὁπότε δὲ τὸ μέσον τῆς ἡμέρης ἐπέχει ὁ ἥλιος, ἥδη δὲ καὶ ἔρμα σκιῆς πάντα ὤφθη αὐτοῖσι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 25, section 8, line 1

εἰκὸς ὧν καὶ ἐν Ἰνδοῖσιν, ἅτε πρὸς μεσημβρίην ὠκισμένοι, τὰ αὐτὰ δὴ πάθεα ἐπέχειν, καὶ μάλιστα δὴ κατὰ τὸν πόντον τὸν Ἰνδικόν, ὅσῳ μᾶλλον αὐτοῖσιν ἢ θάλασσα πρὸς μεσημβρίην κέκλιται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 38, section 3, line 4

ὑπὸ δὲ τὴν ἑῷ ἐς ἄλλην νῆσον πλεύσαντες ὀρμίζονται οἰκουμένην, ἵνα καὶ μαρτυρηθῇ λέγει <Νέαρχος> κατὰπερ ἐν τῇ Ἰνδῶν θαλάσσει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica Chapter 42, section 10, line 2

οὕτω μὲν ἀπεσώθη Ἀλέξανδρος ἐκ τοῦ Ἰνδοῦ τῶν ἐκβολῶν ὀρμηθεὶς ὁ στρατός.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., *Tactica* (0074: 005) “Flavii Arriani quae exstant omnia, vol. 2”, Ed. Roos, A.G., Wirth, G. Leipzig: Teubner, 1968 (1st edn. corr.). Chapter 2, section 2, line 4

καὶ τῆς δευτέρας ἰδέας τὸ μὲν ἵππικόν, ὅπερ ἵπποις χρῆται, τὸ δ' ἐπὶ ἐλεφάντων, καθάπερ τὰ Ἰνδῶν στρατόπεδα καὶ τὰ Αἰ- θιοπικά, χρόνῳ δ' ὕστερον καὶ Μακεδόνες καὶ Καρχη- δόνιοι καὶ πού καὶ Ῥωμαῖοι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., *Tactica* Chapter 19, section 6, line 3

ἀλλὰ ξύμπαντα ταῦτα τὰ ἀσκήματα ἐκλέ- λειπται, καὶ ἡ τῶν ἐλεφάντων δὲ χρεία ἐς τοὺς πο- λέμους ὅτι μὴ παρ' Ἰνδοῖς τυχὸν ἢ τοῖς ἄνω Αἰθίοψιν καὶ αὕτη ἐκλέλειπται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., *Historia successorum Alexandri* (fragmenta ap. Photium, Bibl. cod. 92) (0074: 011) “Flavii Arriani quae exstant omnia, vol. 2”, Ed. Roos, A.G., Wirth, G. Leipzig: Teubner, 1968 (1st edn. corr.). Fragment 1,36, line 5

Ἀρείων δὲ καὶ τῆς Δραγ- γηνῶν χώρας Στάσανδρον καθίστη ἡγεμόνα, τῆς δὲ Βακτρια- νῆς καὶ Σογδιανῆς Στασάνορα τὸν Σόλιον, Ἀρα- χωτῶν δὲ Σιβύρτιον· καὶ Παραπαμισάδας Ὁξυάρτη τῷ Ῥωξάνης πατρί· τῆς δὲ Ἰνδῶν γῆς τὰ μὲν ξύνορα Πα- ραπαμισάδαις Πείθωνι τῷ Ἀγήνορος, τὰς δὲ ἐχομένας ξατραπείας τὴν μὲν παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν καὶ Πά- ταλα τῶν ἐκείνη Ἰνδῶν πόλεων τὴν μεγίστην Πάρω τῷ βασιλεῖ ἐπεχώρησε, τὴν δὲ παρὰ τὸν Ὑδά- σπην ποταμὸν Ταξίλη, καὶ τούτῳ Ἰνδῷ, ἐπεὶ μὴδὲ ῥᾶδιον μετακινήσαι αὐτοὺς ἐξ Ἀλεξάνδρου τε ἐπιτετραμμένους τὴν ἀρχὴν καὶ δύναμιν ἰκανὴν ἔχοντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., *Historia successorum Alexandri* (fragmenta ap. Photium, Bibl. cod. 82) (0074: 016) “Flavii Arriani quae exstant omnia, vol. 2”, Ed. Roos, A.G., Wirth, G. Leipzig: Teubner, 1968 (1st edn. corr.). Section 5, line 2

ἦσαν δὲ ἄρχοντες Ἰνδῶν μὲν ἀπάντων Πῶ- ρος καὶ Ταξίλης, ἀλλ' ὁ μὲν Πῶρος οἱ ἐν μέσῳ Ἰν- δοῦ ποταμοῦ καὶ Ὑδάσπου νέμονται, Ταξίλης δὲ τῶν λοιπῶν· Πείθων δὲ τις τῶν τούτοις ὁμόρων ἡγεῖτο, πλὴν Παραπαμισαδῶν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., *Historia successorum Alexandri* (fragmenta ap. Photium, Bibl. cod. 82) Section 5, line 10

οἱ δὲ συνάπτοντες Ἰνδοῖς, ὅσοι ὑπὸ τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι νέμονται, Ὁξυάρτη τῷ Βακτρίῳ, ὃς ἦν Ῥωξά- νης πατήρ, εἰς ἀρχὴν ἀπε- νεμήθησαν – ἥς ἐτέχθη παῖς μετὰ τὸν τοῦ πατρὸς Ἀλεξάνδρου θάνατον, ᾧ τὸ Μακεδόνων πλῆθος τοῦ πατρὸς τὴν προσηγορίαν

Flavius Arrianus Hist., Phil., *Fragmenta* (0074: 018) “FGrH #156”. Volume-Jacoby'- F 2b,156,F, fragment 9, line 132

(36) Ἀρείων δὲ καὶ τῆς Δραγγηνῶν χώρας Στάσανδρον καθίστη ἡγεμόνα· τῆς δὲ Βα- κτρια- νῆς καὶ Σογδιανῆς Στασάνορα τὸν Σόλιον· Ἀραχωτῶν δὲ Σιβύρτιον· καὶ Παραπαμισάδας Ὁξυάρτη τῷ Ῥωξάνης πατρί· τῆς δὲ Ἰνδῶν γῆς τὰ μὲν ξύνορα Παραπαμισάδαις Πίθωνι τῷ Ἀγήνορος· τὰς δὲ ἐχομένας ξατραπείας, τὴν μὲν παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν καὶ Πάταλα τῶν ἐκείνη Ἰνδῶν πόλεων τὴν μεγίστην Πάρωι τῷ βασιλεῖ ἐπεχώρησε· τὴν δὲ παρὰ τὸν Ὑδάσπην

5.4. ORIGEN

ποταμόν Ταξίλην, καὶ τούτῳ Ἰνδῶν, ἐπεὶ μηδὲ ῥάϊδιον μετα- κινήσαι αὐτοὺς ἐξ Ἀλεξάνδρου τε ἐπιτετραμμένους τὴν ἀρχὴν καὶ δύναμιν ἱκανὴν ἔχοντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2b,156,F, fragment 175b, line 17

(12) Βραχυᾶνες καὶ αὐτοὶ Ἰνδοὶ Ἀλεξάνδρῳ τῷ βασιλεῖ ταῦτα λέγουσιν· ὀρεγόμενος σοφίας ἦλθες πρὸς ἡμᾶς Ἀλέξανδρε, ὅπερ προθυμότερον ἀποδεχόμεθα Βραχυᾶνες· ὅτι ἐστὶ βασιλικώτερον ἐν τῷ βίῳ ἡμῶν, τοῦτο γὰρ ἠθέλησας μαθεῖν, βασιλεῦ Ἀλέξανδρε.

5.4 Origen

Origen (/ˈɒrɪdʒən/; Greek: Ὠριγένης Ōrigénēs), or Origen Adamantius (184/185 – 253/254),[1] was a scholar, early Christian theologian and Church Father,[2] who was born and spent the first half of his career in Alexandria. He was a prolific writer in multiple branches of theology, including textual criticism, biblical exegesis and hermeneutics, philosophical theology, preaching, and spirituality. Some of his reputed teachings, such as the pre-existence of souls, the final reconciliation of all creatures, including perhaps even the devil (the apokatastasis),[3] and the subordination of the Son of God to God the Father, later became controversial among Christian theologians. Origen was declared anathema in 553 AD by the Second Ecumenical Council of Constantinople and by three subsequent ecumenical councils. For this reason Origen was and is not called a saint in either the Catholic or Orthodox churches. (From Wikipedia³)

Origenes Theol., Contra Celsum (2042: 001) “Origène. Contre Celse, 4 vols.”, Ed. Borret, M. Paris: Cerf, 1:1967; 2:1968; 3–4:1969; Sources chrétiennes 132, 136, 147, 150. Book 1, section 12, line 36

Τὸ δ' αὐτὸ καὶ περὶ Σύρων καὶ Ἰνδῶν καὶ τῶν ὅσοι καὶ μύθους καὶ γράμματα ἔχουσι λεκτέον.

Origenes Theol., Contra Celsum Book 1, section 14, line 30

Ἄκουε γὰρ λέγοντος τοῦ Κέλσου ὅτι ἔστιν ἀρχαῖος ἄνωθεν λόγος, περὶ ὃν δὴ αἰεὶ καὶ τὰ ἔθνη τὰ σοφώτατα καὶ πόλεις καὶ ἄνδρες σοφοὶ κατεγένοντο. Καὶ οὐκ ἐβουλήθη ἔθνος σοφώτατον εἰπεῖν καὶν παραπλησίως Αἰγυπτίοις καὶ Ἀσσυρίοις καὶ Ἰνδοῖς καὶ Πέρσαις καὶ Ὀδρύσαις καὶ Σαμόθραξι καὶ Ἐλευσινίοις τοὺς Ἰουδαίους.

3. <http://en.wikipedia.org/wiki/Origen>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Origenes Theol., Contra Celsum Book 1, section 24, line 7

οὐδὲ ὅλον, ἐπεὶ τὸ ὅλον ἐκ μερῶν ἐστὶ· καὶ οὐχ αἰρεῖ λόγος παραδέξασθαι τὸν ἐπὶ πᾶσι θεὸν εἶναι ἐκ μερῶν, ὧν ἕκαστον οὐ δύναται ὅπερ τὰ ἄλλα μέρη. ¶ Μετὰ ταῦτά φησιν ὅτι οἱ αἰπόλοι καὶ ποιμένες ἕνα ἐνόμισαν θεόν, εἴτε Ὑψιστον εἴτ' Ἀδωναῖον εἴτ' Οὐράνιον εἴτε Σαβαώθ, εἴτε καὶ ὅπη καὶ ὅπως χαίρουσιν ὀνομάζοντες τόνδε τὸν κόσμον· καὶ πλεῖον οὐδὲν ἔγνωσαν. Καὶ ἐν τοῖς ἐξῆς δὲ φησι ¶ μηδὲν διαφέρειν τῷ παρ' Ἑλλήσι φερομένῳ ὀνόματι τὸν ἐπὶ πᾶσι θεὸν καλεῖν. Δία ἢ τῷ Δεῖνα, φέρ' εἰπεῖν, παρ' Ἰνδοῖς ἢ τῷ δεῖνα παρ' Αἰγυπτίοις. ¶ Λεκτέον δὲ καὶ πρὸς τοῦτο ὅτι ἐμπίπτει εἰς τὸ προκείμενον λόγος βαθὺς καὶ ἀπόρητος, ὁ περὶ φύσεως ὀνομάτων· πότερον, ὡς οἶεται Ἀριστοτέλης, θέσει εἰς τὰ ὀνόματα ἢ, ὡς νομίζουσιν οἱ ἀπὸ τῆς Στοᾶς, φύσει, μιμουμένων τῶν πρώτων φωνῶν τὰ πράγματα, καθ' ὧν τὰ ὀνόματα, καθὸ καὶ στοιχεῖά τινα τῆς ἐτυμολογίας εἰσάγουσιν, ἢ, ὡς διδάσκει Ἐπικούρου, ἐτέρως ἢ ὡς οἰονται οἱ ἀπὸ τῆς Στοᾶς, φύσει ἐστὶ τὰ ὀνόματα, ἀπορρηξάντων τῶν πρώτων ἀνθρώπων τινὰς φωνὰς κατὰ τῶν πραγμάτων.

Origenes Theol., Contra Celsum Book 1, section 24, line 19

Ἐὰν τοίνυν δυνηθῶμεν ἐν προηγουμένῳ λόγῳ παραστήσαι φύσιν ὀνομάτων ἐνεργῶν, ὧν τισι χρῶνται Αἰγυπτίων οἱ σοφοὶ ἢ τῶν παρὰ Πέρσαις μάγων οἱ λόγιοι ἢ τῶν παρ' Ἰνδοῖς φιλοσοφούντων Βραχμᾶναι· ἢ Σαμαναῖοι, καὶ οὕτω καθ' ἕκαστον τῶν ἐθνῶν, καὶ κατασκευάσαι· οἳ οἱ τε γενώμεθα ὅτι καὶ ἡ καλουμένη μαγεία οὐχ, ὡς οἰονται οἱ ἀπὸ Ἐπικούρου καὶ Ἀριστοτέλους, πρᾶγμα ἐστὶν ἀσύστατον πάντῃ ἀλλ' ὡς οἱ περὶ ταῦτα δεινοὶ ἀποδεικνύουσι, συνεστὸς μὲν λόγους δ' ἔχον σφόδρα ὀλίγοις γνωσκομένους· τότε ἔροῦμεν ὅτι τὸ μὲν Σαβαώθ ὄνομα καὶ τὸ Ἀδωναῖ καὶ ἄλλα παρ' Ἑβραίοις μετὰ πολλῆς σεμνολογίας παραδιδόμενα οὐκ ἐπὶ τῶν τυχόντων καὶ γεννητῶν κεῖται πραγμάτων ἀλλ' ἐπὶ τίνος θεολογίας ἀπορρήτου, ἀναφερομένης εἰς τὸν τῶν

Origenes Theol., Contra Celsum Book 5, section 34, line 27

Σκύθαις γε μὴν καὶ ἀνθρώπους δαίνυσθαι καλόν· Ἰνδῶν δὲ εἰσιν οἱ καὶ τοὺς πατέρας ἐσθίωντες ὅσια δρᾶν νομίζουσι.

Origenes Theol., Contra Celsum Book 5, section 34, line 42

Δαρεῖος δὲ μετὰ ταῦτα καλέσας Ἰνδῶν τοὺς καλομένους Καλλατίας, οἱ τοὺς γονέας κατεσθίουσιν, εἶρετο, παρεόντων τῶν Ἑλλήνων καὶ δι' ἑρμηνέος μανθανόντων τὰ λεγόμενα, ἐπὶ τίνι χρήματι δεξάιαντ' ἂν τελευτῶντας τοὺς πατέρας κατακαίειν πυρί· οἱ δὲ ἀμβώσαντες μέγα εὐφημέειν μιν ἐκέλευον.

Origenes Theol., Contra Celsum Book 5, section 36, line 25

Καὶ Ἰνδῶν δὲ οἱ τοὺς πατέρας ἐσθίωντες ὅσια δρᾶν νομίζουσι, καὶ κατὰ τὸν Κέλσον, ἢ οὐκ ἄδικά γε.

Origenes Theol., Contra Celsum Book 5, section 36, line 30

Ἐκτίθεται γοῦν Ἡροδότου λέξιν συναγορεύουσαν τὸ ἕκαστον τοῖς πατρίοις νόμοις καθήκοντως χρῆσθαι, καὶ ἔοικεν ἀποδεχομένῳ τοὺς ἐπὶ Δαρείου Καλλατίας καλουμένους Ἰνδοὺς

5.4. ORIGEN

τούς γονεῖς κατεσθίοντας, ἐπεὶ πρὸς τὸν Δαρεῖον πυνθανόμενον, ἐπὶ πόσῳ χρήματι ἀποθέσθαι τοῦτον τὸν νόμον βούλονται, ἀναβοήσαντες μέγα εὐφημεῖν αὐτὸν ἐκέλευον.

Origenes Theol., Contra Celsum Book 6, section 39, line 20

Οὕτω δὲ οὐδὲ περὶ τῶν λοιπῶν ταυτόν τις ἐρεῖ· ἀπ' ἄλλων γὰρ ὀρμώμενοι Ἕλληνες πραγμά- των καὶ ἐτυμολογιῶν οὕτως ὠνόμασαν τοὺς παρ' ἑαυτοῖς νομιζομένους θεούς, ἀπ' ἄλλων δὲ Σκύθαι, οὕτω δὲ καὶ ἀπ' ἄλλων μὲν Πέρσαι ἀπ' ἄλλων δὲ Ἰνδοὶ ἢ Αἰθίοπες ἢ Λίβυες, ἢ ὅπως φίλον ἐκάστοις ὀνομάζειν, μὴ μείνασιν ἐπὶ τῆς πρώτης καὶ καθαρᾶς ἐννοίας τοῦ τῶν ὅλων δημιουργοῦ.

Origenes Theol., Contra Celsum Book 6, section 80, line 15

Καὶ Πέρσαι δὲ οἱ τὰς μητέρας γαμοῦντες καὶ θυγατράσι μιγνύμενοι ἔνθεον ἔθνος εἶναι τῷ Κέλσῳ δοκοῦσιν, ἀλλὰ καὶ Ἰνδοί, ὧν τινὰς ἐν τοῖς προειρημένοις ἔλεγε καὶ ἀνθρωπείων γεγεῦσθαι σαρκῶν.

Origenes Theol., De principiis (2042: 002) “Origenes vier Bücher von den Prinzipien”, Ed. Görgemanns, H., Karpp, H. Darmstadt: Wissenschaftliche Buchgesellschaft, 1976. Book 4, chapter 3, section 1, line 24

τίς γὰρ οὐκ ἂν τῶν μὴ παρέργως ἀναγινωσκόντων τὰ τοιαῦτα καταγινώσκοι τῶν οἰόμε- νων τῷ τῆς σαρκὸς ὀφθαλμῷ, δεηθέντι ὑψους ὑπὲρ τοῦ κατανοηθῆναι δύνασθαι τὰ κατωτέρω καὶ ὑποκείμενα, ἐωρᾶσθαι τὴν Περσῶν καὶ Σκυθῶν καὶ Ἰνδῶν καὶ Παρθυαίων βασιλείαν, καὶ ὡς δοξάζονται παρὰ ἀνθρώποις οἱ βασιλεύοντες;

Origenes Theol., Homiliae in Lucam (2042: 016) “Origenes Werke, vol. 9, 2nd edn.”, Ed. Rauer, M. Berlin: Akademie-Verlag, 1959; Die griechischen christlichen Schriftsteller 49 (35). Homily 30, page 172, line 22

Οὐκ ἐδείκνυε δὲ αὐ- τῷ τὰς βασιλείας τοῦ κόσμου, οἷον φέρε εἰπεῖν τὴν Περσῶν οἰκονομίαν ἢ τὴν Ἰνδῶν, ἀλλ' «ἐδείκνυεν αὐτῷ τὰς βασιλείας τοῦ κόσμου», τίνα τρόπον ἰσχύει αὐτῶν βασιλεύειν, ἵν' αὐτὸν προτρέψῃται ποιῆσαι, ὃ ἐνόμιζε ποιῆ- σαντος περιγενήσεσθαι τοῦ Χριστοῦ.

Origenes Theol., Fragmenta in Lucam (in catenis) (2042: 017) “Origenes Werke, vol. 9, 2nd edn.”, Ed. Rauer, M. Berlin: Akademie-Verlag, 1959; Die griechischen christlichen Schriftsteller 49 (35). Fragment 98, line 1

οἷον φέρε εἰπεῖν τὴν Περσῶν ἡγεμονίαν ἢ τὴν Ἰνδῶν, τοῦ κόσμου οὖν παντὸς τὴν δόξαν ἐδείκνυε καὶ πάσας «τὰς βασιλείας», ἀλλ' «ἐδείκνυεν αὐτῷ τὰς βασιλείας τοῦ κόσμου», τίνα τρόπον ἰσχύει αὐτῶν βασιλεύειν, ὅθεν ὡς φίλον ἀνθρώπον προέτρεπεν ἐπὶ τοῦτο, βουλόμενος καὶ αὐτοῦ ὡς καὶ τῶν λοιπῶν περιγενέσθαι.

Origenes Theol., Philocalia sive Ecloga de operibus Origenis a Basilio et Gregorio Nazianzeno facta (cap. 1–27) (2042: 019) “The philocalia of Origen”, Ed. Robinson, J.A. Cambridge: Cambridge University Press, 1893. Chapter p, section c, line 41

Πρὸς τοὺς λέγοντας τῶν φιλοσόφων μηδὲν διαφέρειν τῷ παρ' Ἑλλήσι φερομένῳ ὀνόματι τὸν ἐπὶ πᾶσι θεὸν καλεῖν Δία· ἢ τῷ δεῖνα, φέρε εἰπεῖν, παρ' Ἰνδοῖς· ἢ τῷ δεῖνα παρ' Αἰγυπτίοις.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Origenes Theol., Philocalia sive Ecloga de operibus Origenis a Basilio et Gregorio Nazianzeno facta (cap. 1-27) Chapter 1, section 17, line 29

τίς γάρ οὐκ ἂν τῶν μὴ παρέργωγς ἀναγιγνωσκόντων τὰ τοιαῦτα καταγινώσκοι τῶν οἰομένων τῷ τῆς σαρκὸς ὀφθαλμῷ, δεηθέντι ὑψους ὑπὲρ τοῦ κατανοηθῆναι δύνασθαι τὰ κατω-τέρω καὶ ὑποκείμενα, ἐωρᾶσθαι τὴν Περσῶν καὶ Σκυθῶν καὶ Ἰνδῶν καὶ Παρθυαίων βασιλείαν, καὶ ὡς δοξάζονται παρὰ ἀνθρώποις οἱ βασιλεύοντες;

Origenes Theol., Philocalia sive Ecloga de operibus Origenis a Basilio et Gregorio Nazianzeno facta (cap. 1-27) Chapter 17, section 1n, line 4

8Πρὸς τοὺς λέγοντας τῶν φιλοσόφων μηδὲν δια-φέρειν τῷ παρ' Ἑλλήσι φερομένῳ ὀνόματι τὸν ἐπὶ πᾶσι θεὸν καλεῖν Δία, ἢ τῷ δεῖνα φέρ' εἰπεῖν παρ' Ἰνδοῖς, ἢ τῷ δεῖνα παρ' Αἰγυπτίοις.

Origenes Theol., Philocalia sive Ecloga de operibus Origenis a Basilio et Gregorio Nazianzeno facta (cap. 1-27) Chapter 17, section 1, line 7

καὶ ἐν τοῖς ἐξῆς δέ φησι 'μηδὲν διαφέρειν τῷ παρ' Ἑλλήσι φερομένῳ ὀνόματι τὸν ἐπὶ πᾶσι θεὸν καλεῖν Δία, ἢ τῷ δεῖνα φέρ' εἰπεῖν παρ' Ἰνδοῖς, ἢ τῷ δεῖνα παρ' Αἰγυπτίοις.

Origenes Theol., Philocalia sive Ecloga de operibus Origenis a Basilio et Gregorio Nazianzeno facta (cap. 1-27) Chapter 17, section 1, line 19

ἐὰν τοίνυν δυνηθῶμεν ἐν προηγουμένῳ λόγῳ παραστήσαι φύσιν ὀνομάτων ἐνερ-γῶν, ὧν τισὶ χρῶνται Αἰγυπτίων οἱ σοφοί, ἢ τῶν παρὰ Πέρσαις μάγων οἱ λόγιοι, ἢ τῶν παρ' Ἰνδοῖς φιλοσοφούν-των Βράχμαναι, ἢ Σαμαναῖοι· καὶ οὕτω καθ' ἕκαστον τῶν ἐθνῶν· καὶ κατασκευάσαι οἱοί τε γενώμεθα ὅτι καὶ ἡ καλου-μένη μαγεία οὐχ, ὡς οἴονται οἱ ἀπὸ Ἐπικούρου καὶ Ἀριστο-τέλους, πρᾶγμ' ἐστὶν ἀσύστατον πάντη, ἀλλ', ὡς οἱ περὶ ταῦτα δεινοὶ ἀποδεικνύουσι, συνεστῶς μὲν, λόγους δ' ἔχον σφόδρα ὀλίγοις γινωσκομένους· τότ' ἐροῦμεν ὅτι τὸ μὲν Σαβαώθ ὄνομα καὶ τὸ Ἀδωναῖ, καὶ ὅσα ἄλλα παρ' Ἑβραίοις μετὰ πολλῆς σεμνολογίας παραδεδομένα, οὐκ ἐπὶ τῶν τυχόντων καὶ γεννητῶν κεῖται πραγμάτων, ἀλλ' ἐπὶ τινος

Origenes Theol., Philocalia sive Ecloga de operibus Origenis a Basilio et Gregorio Nazianzeno facta (cap. 1-27) Chapter 18, section 6, line 33

τὸ δ' αὐτὸ καὶ περὶ Σύρων καὶ Ἰνδῶν καὶ τῶν ὅσοι καὶ μύθους καὶ γράμ-ματα ἔχουσι λεκτέον.

Origenes Theol., Commentarium in evangelium Matthaei (lib. 10-11) (2042: 029) "Origène. Commentaire sur l'évangile selon Matthieu, vol. 1", Ed. Girod, R. Paris: Cerf, 1970; Sources chrétiennes 162. Book 10, section 7, line 15

Καὶ οἱ μὲν χερσαῖοι παρ' Ἰνδοῖς μόνοις γίνονται πρέποντες σφραγῖσι καὶ σφενδό-ναις καὶ ὄρμοις.

Origenes Theol., Commentarium in evangelium Matthaei (lib. 10-11) Book 10, section 7, line 17

Οἱ δὲ θαλάττιοι οἱ μὲν διαφέροντες παρὰ τοῖς αὐτοῖς Ἰνδοῖς εὐρίσκονται, οἵτινές εἰσι καὶ ἄριστοι ἐν τῇ ἐρυθρᾷ θαλάσσῃ γινόμενοι.

5.4. ORIGEN

Origenes Theol., Commentarium in evangelium Matthaei (lib. 10-11) Book 10, section 7, line 23

Ἔτι δὲ ταῦτα ἐλέγετο περὶ τοῦ Ἰνδικοῦ μαργαρίτου ὅτι ἐν κόγχαις γίνεται προσεοικόσι τὴν φύσιν εὐμεγέθεσι στρόμβοις.

Origenes Theol., Commentarium in evangelium Matthaei (lib. 10-11) Book 10, section 7, line 30

Ἰσθόρηται δὲ καὶ περὶ τῆς θήρας τῶν διαφερόντων, τουτέστι τῶν ἐν Ἰνδία, τοιοῦτον· ὅτι περιλαμβάνοντες οἱ ἐπιχώριοι δικτύοις κύκλον αἰγιαλοῦ μέγαν κατακολυμβῶσιν, ἓνα ἐξ ἀπάντων τὸν προηγούμενον ἐπιτηδεύοντες λαβεῖν, τούτου γὰρ ἀλόντος φασὶν ἄμοχθον γενέσθαι τὴν θήραν τῆς ὑπὸ τούτῳ ἀγέλης, οὐδενὸς ἔτι ἀτρεμοῦντος τῶν ἀπ' αὐτῆς, ἀλλὰ οἷον δεδεμένου ἱμάντι καὶ ἐπομένου τῷ ἀγελάρχῃ.

Origenes Theol., Commentarium in evangelium Matthaei (lib. 10-11) Book 10, section 7, line 37

Λέγεται δὲ καὶ ἡ γένεσις τῶν ἐν Ἰνδία μαργαριτῶν χρόνοις συνίστασθαι, τροπὰς λαμβάνοντος τοῦ ζώου πλείονας καὶ μεταβολάς, ἕως τελειωθῇ.

Origenes Theol., Commentarium in evangelium Matthaei (lib. 10-11) Book 10, section 7, line 51

Ἔτι δὲ καὶ τοῦτο ἔχει ὁ Ἰνδικὸς μαργαρίτης παρὰ τοὺς ἄλλους· λευκὸς ἐστὶ τὴν χροάν, ἀργυρῷ διαφανεῖ προσφερῆς αὐγὴν τε ὑποχλωρίζουσιν ἡρέμα διαλάμπει, ὥς ἐπίπαν δὲ σχῆμα ἔχει στρογγύλον.

Origenes Theol., Commentarium in evangelium Matthaei (lib. 10-11) Book 10, section 7, line 60

Ταῦτα μὲν οὖν περὶ τοῦ Ἰνδικοῦ.

Origenes Theol., Selecta in Psalmos [Dub.] (fragmenta e catenis) (2042: 058); MPG 12. Volume 12, page 1524, line 43

Σαβὰ δὲ πόλις τῆς Ἰνδίας, ἀφ' ἧς ἦλθεν ἡ βασίλισσα νότου πρὸς Σαλομῶντα.

Origenes Theol., Homiliae in Job (fragmenta in catenis, typus II) (e codd. Marc. gr. 21, 538) (2042: 073); MPG 17. Volume 17, page 89, line 51

Τὰ ἐσώτατα περὶ τὴν Ἰνδιαν, ἢ τὰ περὶ τὴν ἐπέκεινα χώραν, ἐνθα εἰσὶ τίμιοι λίθοι.

Origenes Theol., Scholia in Matthaicum (2042: 077); MPG 17. Volume 17, page 296, line 25

Οἱ γε μὴν περὶ μαργαριτῶν γράψαντες, φασὶν ἔξ εἶναι τὰς τούτων διαφοράς, ὧν κρίττους οἱ κατ' Ἰνδιαν ἐν κόγχαις γενόμενοι ἐκ δρόσου τῆς οὐρανίας.

Origenes Theol., Homiliae in Job (fragmenta in catenis, typus I+II) (e codd. Vat.) (2042: 086) "Analecta sacra spicilegio Solesmensi parata, vol. 2", Ed. Pitra, J.B. Paris: Tusculum, 1884, Repr. 1966. Page 391, line 4

Συριακὴν νῦν τὴν Ἑβραίων διάλεκτον κα- λεῖ, ἐπεὶ καὶ Συρίαν τὴν Ἰουδαϊαν, καὶ Σύρους οἱ πολλοὶ τοὺς Παλαιστινίους ὀνομά- ζουσιν· καὶ Ἡρόδοτος ὁ ἱστοριογράφος φησί· Περιτέμνον-

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ται δὲ Ἰνδοί, καὶ Αἰγύπτιοι, καὶ Ἀραβες, καὶ οἱ ἐν Παλαιστίνῃ Σύριοι· τοὺς Ἰουδαίους οὕτω καλοῦσιν.

5.5 Pseudo-Scymnus

Pseudo-Scymnus is the name given by Augustus Meineke to the unknown author of a work on geography written in Classical Greek, the *Periodos to Nicomedes*. It is an account of the world (*periegesis*) in 'comic' iambic trimeters which is dedicated to a King Nicomedes of Bithynia. This is either Nicomedes II Epiphanes who reigned from 149 BC for an unknown number of years or his son, Nicomedes III Euergetes.[1] (From Wikipedia⁴)

Pseudo-Scymnus Geogr., Ad Nicomedem regem, vv. 1–980 (sub titulo *Orbis descriptio*) (0068: 001) “Geographi Graeci minores, vol. 1”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1855, Repr. 1965. Line 171

Τὴν μὲν γὰρ ἐντὸς ἀνατολῶν πᾶσαν σχεδὸν οἰκοῦσιν Ἰνδοί, τὴν δὲ πρὸς μεσημβρίαν Αἰθίοπες ἐγγυὲς κείμενοι νότου πνοῆς· τὸν ἀπὸ ζεφύρου Κελτοὶ δὲ μέχρι δυσμῶν τόπον θερινῶν ἔχουσιν, τὸν δὲ πρὸς βορρᾶν Σκύθαι.

Pseudo-Scymnus Geogr., Ad Nicomedem regem, vv. 722–1026 (0068: 002) “The tradition of the minor Greek geographers”, Ed. Diller, A. Lancaster, Pennsylvania: American Philological Association, 1952. Line 933

εἰσιόντι δὲ ἀριστερὰ τοῦ Φάσιδος παρακειμένη Μιλησίων πόλις <ἐστὶ> Φᾶσις λεγομένη Ἑλληνίς· εἰς ταύτην δὲ καταβαίνειν λόγος φωναῖς διαφόροις χρώμεν' ἔχκοντ' ἔθνη, ἐν οἷς τινες λέγουσιν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς καὶ Βακτριανῆς <γῆς> συναφικνεῖσθαι βαρβάρους.

5.6 Cassius Dio

Lucius (or Claudius) Cassius Dio (alleged to have the cognomen *Cocceianus*),[1][2] (Ancient Greek: Δίων ὁ Κάσσιος, c. AD 155 – 235,[3][4] known in English as Cassius Dio, Dio Cassius, or Dio (Dione. lib), was a Roman consul and noted historian who wrote in Greek. Dio published a history of Rome in 80 volumes, beginning with the legendary arrival of

4. <http://en.wikipedia.org/wiki/Pseudo-Scymnus>

5.6. CASSIUS DIO

Aeneas in Italy; the volumes then documented the subsequent founding of Rome (753 BC), the formation of the Republic (509 BC), and the creation of the Empire (31 BC), up until AD 229. The entire period covered by Dio's work is approximately 1,400 years. Of the 80 books, written over 22 years, many survive into the modern age, intact, or as fragments, providing modern scholars with a detailed perspective on Roman history. (From Wikipedia⁵)

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* (0385: 001) "Cassii Dionis Cocceiani *historiarum Romanarum quae supersunt*, 3 vols.", Ed. Boissevain, U.P. Berlin: Weidmann, 1:1895; 2:1898; 3:1901, Repr. 1955. Book 49, chapter 41, section 3, line 6

ἐκείνοις μὲν δὴ ταῦτ' ἔνειμε, τοῖς δὲ δὴ αὐτοῦ παισὶ τοῖς ἐκ τῆς Κλεοπάτρας οἱ γεγονόσι, Πτολεμαίῳ μὲν τὴν τε Συρίαν καὶ τὰ ἐντὸς τοῦ Εὐφράτου μέχρι τοῦ Ἑλλησπόντου πάντα, Κλεοπάτρα δὲ τὴν Λιβύην τὴν περὶ Κυρήνην, τῷ τε ἀδελφῷ αὐτῶν Ἀλεξάνδρῳ τὴν τε Ἀρμενίαν καὶ τὰλλα τὰ πέραν τοῦ Εὐφράτου μέχρις Ἰνδῶν δώσειν ὑπέσχετο· καὶ γὰρ ἐκεῖνα ὡς ἔχων ἤδη ἐχαρίζετο.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* Book 54, chapter 9, section 8, line 2

πάμπολλαι γὰρ δὴ πρεσβεῖαι πρὸς αὐτὸν ἀφίκοντο, καὶ οἱ Ἰνδοὶ προκηρυκευσάμενοι πρότερον φιλίαν τότε ἐσπέισαντο, δῶρα πέμψαντες ἄλλα τε καὶ τίγρεις, πρῶτον τότε τοῖς Ῥωμαίοις, νομίζω δ' ὅτι καὶ τοῖς Ἑλλήσιν, ὀφθείσας.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* Book 54, chapter 9, section 10, line 2

εἷς δ' οὖν τῶν Ἰνδῶν Ζάρμαρος, εἴτε δὴ τοῦ τῶν σοφιστῶν γένους ᾧν, καὶ κατὰ τοῦτο ὑπὸ φιλοτιμίας, εἴτε καὶ ὑπὸ τοῦ γήρως κατὰ τὸν πατριον νόμον, εἴτε καὶ ἐς ἐπίδειξιν τοῦ τε Αὐγούστου καὶ τῶν Ἀθηναίων (καὶ γὰρ ἐκεῖσε ἦλθεν) ἀποθανεῖν ἐβελήσας ἐμυθήθη τε τὰ τοῖν θεοῖν, τῶν μυστηρίων καίπερ οὐκ ἐν τῷ καθήκοντι καιρῷ, ὡς φασι, διὰ τὸν Αὐγούστον καὶ <αὐτὸν> μεμνημένον γενομένων, καὶ πυρὶ ἑαυτὸν ζῶντα ἐξέδωκεν.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* Book 59, chapter 17, section 3, line 5

ἐπειδὴ τε ἔτοιμα ἦν, τὸν τε θάρακα τὸν Ἀλεξάνδρου, ὡς γε ἔλεγε, καὶ ἐπ' αὐτῷ χλαμύδα σηρικὴν ἀλουργῇ, πολὺ μὲν χρυσίον πολλοὺς δὲ καὶ λίθους Ἰνδικοὺς ἔχουσιν, ἐπενέδου, ξίφος τε παρεζώσατο καὶ ἀσπίδα ἔλαβε καὶ δρυὶ ἐστεφανώσατο, καὶ τούτου τῷ τε Ποσειδῶνι καὶ ἄλλοις τισὶ θεοῖς Φθόνῳ τε θύσας, μὴ καὶ βασκανία τις αὐτῷ, ὡς ἔφασκε, γένηται, ἔς τε τὸ ζεύγμα ἀπὸ τῶν Βαύλων ἐσέβαλε, παμπληθεῖς καὶ ἱππέας καὶ πεζοὺς ὠπλισμένους ἐπαγόμενος, καὶ σπουδῇ καθάπερ ἐπὶ πολέμους τινὰς ἐς τὴν πόλιν ἐσέπεσε.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* Book 68, chapter 15, section 1, line 2

Xiph. 232, 28 – 234, 16 R. St. πρὸς <δὲ> τὸν Τραϊανὸν ἐς τὴν Ῥώμην ἐλθόντα πλείσται ὅσαι πρεσβεῖαι παρὰ βαρβάρων ἄλλων τε καὶ Ἰνδῶν ἀφίκοντο.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* Book 68, chapter 29, section 1, line 2

5. http://en.wikipedia.org/wiki/Cassius_Dio

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Exc. Val. 292 (p. 713) et Xiph. 239, 14 – 16 R. St. *κάντεϋθεν ἐπ' αὐτὸν τὸν ὠκεανὸν ἐλθὼν, τὴν τε φύσιν αὐτοῦ καταμαθὼν καὶ πλοῖόν τι ἐς Ἰνδίαν πλέον ἰδὼν, εἶπεν ὅτι “πάν- τως ἂν καὶ ἐπὶ τοὺς Ἰνδοὺς, εἰ νέος ἔτι ἦν, ἐπεραιώθην”.*

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* Book 69, chapter 16, section 1, line 2

Exc. UG9 55 (p. 407). *Ἀδριανὸς δὲ τό τε Ὀλύμπιον τὸ ἐν ταῖς Ἀθήναις, ἐν ᾧ καὶ αὐτὸς ἱδρύται, ἐξεποίησε, καὶ δράκοντα ἐς αὐτὸ ἀπὸ Ἰνδίας κομι- σθέντα ἀνέθηκε· τά τε Διονύσια, τὴν μεγίστην παρ' αὐτοῖς ἀρχὴν ἄρξας, ἐν τῇ ἐσθῆτι τῇ ἐπιχωρίῳ λαμπρῶς ἐπετέλεσε.*

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* Book 72, chapter 17, section 3, line 5

ἐνέδυνε δέ, πρὶν μὲν ἐς τὸ θέατρον εἰσεῖναι, χιτῶνα χειριδωτὸν σηρικὸν λευκὸν διάχρυσον (καὶ ἐν τούτῳ γε αὐτὸν τῷ σχήματι ὄντα ἤσπαζόμεθα), ἐσιὼν δὲ ὀλοπόρφυρον χρυσῷ κατὰ- παστον, χλαμύδα τε ὁμοίαν τὸν Ἑλληνικὸν τρόπον λαμβάνων, καὶ στέφανον ἔκ τε λίθων Ἰνδικῶν καὶ ἔκ χρυσοῦ πεποιημένον, κηρύ- κειόν τε τοιοῦτον φέρων ὅποιον ὁ Ἑρμῆς.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* Book 74, chapter 5, section 1, line 1

εἶτ' εἰκόνες ἦκον ἀνδρῶν ἄλλων, οἷς τι ἔργον ἢ ἐξεύρημα ἢ καὶ ἐπιτήδευμα λαμπρὸν ἐπέ- πρακτο, καὶ μετ' αὐτοὺς οἱ τε ἵππεῖς καὶ οἱ πεζοὶ ὠπλισμένοι οἱ τε ἀθληταὶ ἵπποι καὶ τὰ ἐντάφια, ὅσα ὁ τε αὐτοκράτωρ καὶ ἡμεῖς αἱ τε γυ- ναῖκες ἡμῶν καὶ οἱ ἵππεῖς οἱ ἐλλόγιμοι οἱ τε δῆμοι καὶ τὰ ἐν τῇ πόλει συστήματα ἐπέμψαμεν· καὶ αὐτοῖς βωμὸς περίχρυσος, ἐλέ- φαντί τε καὶ λίθοις Ἰνδικοῖς ἡσκημένος, ἠκολούθει.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* Book 76, chapter 1, section 4, line 1

ἐν ταύταις ταῖς θεαῖς καὶ σῦες τοῦ Πλαυτιανοῦ ἐξήκοντα ἄγριοι ἐπάλαισαν ἀλλήλοις ὑπὸ παραγγέλματος, ἐσφάγησαν δὲ ἄλλα τε πολλὰ θηρία καὶ ἐλέφας καὶ κοροκότας· τὸ δὲ ζῶον τοῦτο Ἰνδικόν τέ ἐστι, καὶ τότε πρῶτον ἐς τὴν Ῥώμην, ὅσα καὶ ἐγὼ ἐπίσταμαι, ἐσῆχθη, ἔχει δὲ χροῖαν μὲν λεαίνης τίγριδι μεμιγμένης, εἶδος δὲ ἐκείνων τε καὶ κυνὸς καὶ ἀλώ- πεκος ἰδίως πως συγκεκραμένον.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* (versio 1 in volumine 1) (0385: 002) “Cassii Dionis Cocceiani *historiarum Romanarum quae supersunt*, vol. 1”, Ed. Boissevain, U.P. Berlin: Weidmann, 1895, Repr. 1955.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* (Xiphilini epitome) (0385: 010) “Cassii Dionis Cocceiani *historiarum Romanarum quae supersunt*, vol. 3”, Ed. Boissevain, U.P. Berlin: Weidmann, 1901, Repr. 1955. Dindorf-Stephanus page 70, line 32

Ἀντώνιος δὲ τὸν βασιλέα τῶν Ἀρμενίων δόλῳ καὶ ἀπάτῃ ἐλὼν, ὅτι μὴ συνεμάχησέν οἱ κατὰ τῶν Πάρθων, ἀργυραῖς ἀλύσεσι περιῆγεν, εἶτα καὶ χρυσαῖς τῇ Κλεοπάτρᾳ προσῆγε, καὶ τοῦ λοιποῦ τὰ ὅπλα ῥίψας συνετρύφα αὐτῇ, τοὺς παῖδας αὐτῆς βασιλέων τε βασιλέας προσαγορεύων, καὶ χώρας αὐτοῖς οὐχ ὅτι τὴν Ἀρμενίων καὶ ἃς εἶχεν, ἀλλὰ καὶ τὴν Ἰνδῶν καὶ τὴν Πάρθων ἀπονέμων.

Cassius Dio Hist., *Historiae Romanae* (Xiphilini epitome) Dindorf-Stephanus page 92, line 25

5.6. CASSIUS DIO

καὶ γὰρ καὶ Ἴνδοι προκηρυκευσάμενοι πρότερον φιλίαν τότε ἐσπείσαντο, δῶρα πέμψαντες ἀλλὰ τε καὶ τίγρεις, πρῶτον τότε Ῥωμαίοις ὀφθείσας, καὶ τι καὶ μειράκιον ἀνευ ὤμων αὐτῶ ἐδώρησαντο.

Cassius Dio Hist., Historiae Romanae (Xiphilini epitome) Dindorf-Stephanus page 93, line 1

τότε καὶ ὁ σοφιστὴς Ζά- μαρκος ὁ Ἰνδός, εἴτε ὑπὸ φιλοτιμίας εἴτε ὑπὸ τοῦ γήρως, κατὰ τὸν πάτριον νόμον πυρὶ ἑαυτὸν ζῶντα ἐξέδωκεν.

Cassius Dio Hist., Historiae Romanae (Xiphilini epitome) Dindorf-Stephanus page 162, line 26

ἐπειδὴ δὲ ἔτοιμα ἦν, τὸν τε θώρακα τοῦ Ἀλεξάνδρου, ὡς ἔλεγε, καὶ ἐπ' αὐτῷ χλαμύδα σηρικὴν ἀλουργὴ πολὺ μὲν χρυσίον πολλοὺς δὲ καὶ λίθους Ἰνδικούς ἔχουσιν ἐπενέδου, ἕξφοις τε παρεζώ- σατο καὶ ἀσπίδα ἔλαβε καὶ δρυὶ ἐστεφάνωτο.

Cassius Dio Hist., Historiae Romanae (Xiphilini epitome) Dindorf-Stephanus page S234, line 18

παρὰ τὸν Τραϊανὸν ἐς τὴν Ῥώμην ἐλθόντα πλείσται πρεσβεῖαι ἄλλων τε βαρβάρων καὶ Ἰνδῶν ἀφίκοντο.

Cassius Dio Hist., Historiae Romanae (Xiphilini epitome) Dindorf-Stephanus page S239, line 18

κάντεῦθεν ἐπ' αὐτὸν τὸν ὠκεανὸν ἐλθὼν, τὴν τε φύσιν αὐτοῦ καταμαθὼν καὶ πλοῖόν τι ἐς Ἰνδίαν πλέον ἰδὼν, εἶπεν ὅτι “πάντως ἂν καὶ ἐπὶ τοὺς Ἰνδοὺς, εἰ νέος ἔτι ἦν, ἐπεραιώθην.

Cassius Dio Hist., Historiae Romanae (Xiphilini epitome) Dindorf-Stephanus page S252, line 3

Ἀδριανὸς δὲ τό τε Ὀλύμπιον τὸ ἐν ταῖς Ἀθήναις, ἐν ᾧ καὶ αὐτὸς ἱδρυταί, ἐξεποίησε, καὶ δράκοντα ἐς αὐτὸ ἀπὸ Ἰνδίας κομισθέντα ἀνέθηκε· τὰ τε Διο- νύσια, τὴν μεγίστην παρ' αὐτοῖς ἀρχὴν ἄρξας, ἐν τῇ ἐσθῇτι τῇ ἐπι- χωρίῳ λαμπρῶς ἐπετέλεσε.

Cassius Dio Hist., Historiae Romanae (Xiphilini epitome) Dindorf-Stephanus page S277, line 23

ἐνέδυνε δέ, πρὶν μὲν εἰς τὸ θέατρον εἰσιέναι, χιτῶνα χειριδωτὸν σηρικὸν λευκὸν διάχρυσον (καὶ ἐν τούτῳ γε αὐτὸν τῷ σχήματι ὄντα ἠσπαζόμεθα), ἐσιὼν δὲ ὁλο- πόρφυρον χρυσῷ κατὰπαστον, χλαμύδα τε ὁμοίαν τὸν Ἑλληνικὸν τρόπον λαμβάνων, καὶ στέφανον ἔκ τε λίθων Ἰνδικῶν καὶ ἐκ χρυσοῦ πεποιημένον, κηρύκειόν τε τοιοῦτον φέρων ὅποῖον ὁ Ἑρμῆς.

Cassius Dio Hist., Historiae Romanae (Xiphilini epitome) Dindorf-Stephanus page S296, line 9

εἴτ' εἰκόνες ἦκον ἀνδρῶν ἄλλων, οἷς τι ἔργον ἢ ἐξέυρημα ἢ καὶ ἐπιτήδευμα λαμπρὸν ἐπέ- πρακτο, καὶ μετ' αὐτοὺς οἱ τε ἵππεῖς καὶ οἱ πεζοὶ ὠπλισμένοι οἱ τε ἀθληταὶ ἵπποι καὶ τὰ ἐντάφια, ὅσα ὁ τε αὐτοκρά- τωρ καὶ ἡμεῖς αἱ τε γυναῖκες ἡμῶν καὶ οἱ ἵππεῖς οἱ ἐλλόγιμοι οἱ τε δῆμοι καὶ τὰ ἐν τῇ πόλει συστήματα ἐπέμψαμεν· καὶ αὐτοῖς βαμὸς περίχρυσος, ἐλέφαντί τε καὶ λίθοις Ἰνδικοῖς ἠσκημένος, ἠκολούθει.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Cassius Dio Hist., Historiae Romanae (Xiphilini epitome) Dindorf-Stephanus page S314, line 30

ἐν ταύταις ταῖς θείαις καὶ σύες τοῦ Πλαυτιανοῦ ἐξήκοντα ἄγριοι ἐπάλαισαν ἀλλήλοις ὑπὸ παραγγέλματος, ἐσφάγησαν δὲ ἄλλα τε πολλὰ θηρία καὶ ἐλέφας καὶ κοροκότας· τὸ δὲ ζῶον τοῦτο Ἰνδικόν ἐστι, καὶ τότε πρῶτον ἐς τὴν Ῥώμην, ὅσα καὶ ἐγὼ ἐπίσταμαι, εἰσῆχθη, ἔχει δὲ χροῖαν μὲν λεαίνης τίγριδι μεμι- γμένης, εἶδος δὲ ἐκείνων τε καὶ κυνὸς καὶ ἀλώπεκος ἰδίως πως συγκεκραμένον.

5.7 Hippolytus Scr. Eccl

Hippolytus of Rome (170–235) was the most important 3rd-century theologian in the Christian Church in Rome,[2] where he was probably born. (From Wikipedia⁶)

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon (2115: 036) “Hippolytus Werke, vol. 4, 2nd edn.”, Ed. Helm, R. (post A. Bauer) Berlin: Akademie-Verlag, 1955; Die griechischen christlichen Schriftsteller 46. Section 47, line 2

τῶν τριῶν ἀδελφῶν αἱ φυλαὶ διε- μερίσθησαν, καὶ τῷ μὲν Σῆμ τῷ πρωτοτόκῳ ἀπὸ Περ- σίδος καὶ Βάκτρων ἕως Ἰνδικῆς τὸ μῆ- κος, πλάτος δὲ ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἕως Ῥινοκορού- ρων, Χάμ δὲ τῷ δευτέρῳ ἀπὸ Ῥινοκορού- ρων ἕως Γαδείρων τὰ πρὸς νότον, Ἰάφεθ δὲ τῷ τρίτῳ ἀπὸ Μηδίας ἕως Γαδείρων τὰ πρὸς βορρᾶν.

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 84, line 4

Αἱ δὲ χώραι εἰσιν αὗται· (1) Μηδία (2) Ἀλ- βανία (3) Ἀμαζονίς (4) Ἀρμενία μικρὰ καὶ με- γάλῃ (5) Καππαδοκία (6) Παφλαγονία (7) Γα- λατία (8) Κολχίς (9) Ἰνδικὴ Ἀχαΐα (10) Βοσπο- ρινή (11) Μαιῶτις (12) Δέρρης (13) Σαρματίς (14) Ταυριανή (15) Βασταρνίς (16) Σκυθία (17) Θράκη (18) Μακεδονία (19) Δελματία (20) Μολ- χίς (21) Θεσσαλία (22) Λωκρίς (23) Βοιωτία (24) Αἰτωλία (25) Ἀττική <(26) Ἀχαΐα> (27) Πε- λοπόννησος <(28) Ἀχαρνία> (29) Ἠπειρώτης (30) Ἰλλυρίς (31) ἢ Λυχνίτις (32) Ἀδριακὴ, ἀφ’ ἧς τὸ Ἀδριακὸν πέλαγος (33) Γαλλία (34) Θου- σκηνή (35) Λυσιτανία (36) Μεσαλία (37) Ἰταλία

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 139, line 1

(2) Αἰθιοπία ἢ βλέπουσα κατὰ Ἰνδοῦς, (3) καὶ ἑτέρα Αἰθιοπία, ὅθεν ἐκπορεύεται Γῆν ὁ <τῶν Αἰθιόπων> ποταμὸς ὁ καλούμενος Νεῖλος, (4) Ἐρυθρὰ ἢ βλέπουσα κατὰ ἀνατολάς, (5) Θηβαῖς ὅλη, (6) Λι- βύη ἢ παρεκτείνουσα μέχρι Κορκυρίνης, (7)

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 176, line 2

6. http://en.wikipedia.org/wiki/Hippolytus_of_Rome

5.7. HIPPOLYTUS SCR. ECCL

Ἰεκτάν δὲ [ὁ ἀδελφὸς Φάλεχ] ἐγέννησε (15) τὸν Ἐλμωδάδ, ὅθεν γεννῶνται οἱ Ἰνδοί, καὶ (16) τὸν Σαλέφ, ὅθεν οἱ Βακτριανοί, καὶ (17) τὸν Ἀράμ, ὅθεν οἱ Ἀράβ<ι>ες, καὶ (18) Ἰ<δ>ουράμ, ὅθεν Καρμήλιοι, καὶ (19) Αἰθήλ, ὅθεν οἱ Ἀρειανοί, καὶ (20)

Ἀβι-

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 188, line 5

Πάντων δὲ τῶν υἱῶν τοῦ Σήμ ἐστὶν ἡ κατοικία ἀπὸ Βάκτρων ἕως Ῥινοκορούρων τῆς ὀριζούσης Συρίαν καὶ Αἴγυπτον καὶ τὴν ἐρυθρὰν θάλασσαν ἀπὸ στόματος τοῦ κατὰ τὸν Ἀρσινοΐτην τῆς Ἰνδικῆς.

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 190, line 3

Ταῦτα δὲ τὰ ἐξ αὐτῶν γενόμενα ἔθνη· (1) Ἑβραῖοι <οἱ> καὶ Ἰουδαῖοι (2) Πέρσαι (3) Μῆδοι (4) Παῖονες (5) Ἀρειανοί <(6) Ἀσσύ-ριοι> (7) Ὑρκάνιοι (8) Ἰνδοί (9) Μαγαρδοί (10) Πάρθοι (11) Γερμανοί (12) Ἐλυμαῖοι (13) Κοσσαῖοι (14) Ἀραβες [οἱ] πρῶτοι οἱ καλού-μενοι Κεδρούσιοι (15) Ἀραβες δεύτεροι [οἱ καλού-μενοι] (16) Γυμνοσοφισταί.

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 192, line 4

Οἱ δὲ ἐπιστάμενοι αὐτῶν γράμματα οὗτοί εἰσιν· (1) Ἑβραῖοι οἱ καὶ Ἰουδαῖοι (2) Πέρσαι (3) Μῆδοι (4) Χαλδαῖοι (5) Ἰνδοί (6) Ἀσσύριοι.

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 195, line 3

Ἔστι δὲ ἡ κατοικία τῶν υἱῶν τοῦ Σήμ τοῦ πρωτοτόκου υἱοῦ Νῶε μῆκος μὲν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἕως Ῥινοκο-ρούρων, πλάτος δὲ ἀπὸ τῆς Περσίδος καὶ Βάκτρων ἕως τῆς Ἰνδικῆς.

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 194, line 5

Τὰ δὲ ὀνόματα τῶν χωρῶν τῶν υἱῶν τοῦ Σήμ ἐστὶ ταῦτα· (1) Περσίς σὺν τοῖς ἐπικει-μένοις αὐτῇ ἔθνεσιν (2) Βακτριανή (3) Ὑρκανία (4) Βαβυλωνία (5) Κορδυλία (6) Ἀσσυρία (7) Μεσο-ποταμία (8) Ἀραβία ἡ ἀρχαία (9) Ἐλυμαῖς (10) Ἰνδική (11) Ἀραβία ἡ εὐδαίμων <(12) Κοίλη Συρία> (13) Κομμαγηνή (14) καὶ ἡ Φοινίκη ἥπερ ἐστὶ τῶν υἱῶν τοῦ Σήμ.

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 200, line 6

Φάλεκ καὶ Ἰεκτάν τῶν δύο ἀδελφῶν κατὰ τὰς ἰδίας γλώσσας αὐτῶν ἐν τῇ πυργωποσίᾳ, ὅτε συνεχύθησαν αἱ γλώσσαι αὐτῶν, ἐστὶ ταῦτα· (1) Ἑβραῖοι οἱ καὶ Ἰουδαῖοι (2) Ἀσσύριοι (3) Χαλδαῖοι (4) Μῆδοι (5) Πέρσαι <(6) Ἀραβες πρῶτοι καὶ δεύτεροι> (7) Μαδινηαῖοι πρῶτοι καὶ δεύτεροι (8) Ἀδιαβηνοί (9) Ταῖηνοί (10) Σαλα-μοσηνοί (11) Σαρακηνοί (12) Μάγοι (13) Κάσπιοι (14) Ἀλβανοί (15) Ἰνδοί πρῶτοι καὶ β' (16) Αἰ-θίοπες πρῶτοι καὶ δεύτεροι (17) Αἰγύπτιοι καὶ Θηβαῖοι (18) Λίβυες [πρῶτοι καὶ β'] (19) Χετ-ταῖοι (20) Χαναναῖοι (21) Φερεζαῖοι (22) Εὐαῖοι (23) Ἀμορραῖοι (24) Γεργεσαῖοι (25) Ἰεβουσσαῖοι (26) Ἰδουμαῖοι (27) Σαμαρρεῖοι (28) Φοίνικες (29) Σύροι (30) Κίλικες οἱ καὶ Θαρσεῖς (31) Καπ-πάδοκες (32) Ἀρμένιοι (33) Ἰβηρες (34) Βιβρανοί (35) Σκύθαι (36) Κόλχοι (37) Σαῦνοι (38) Βοσ-πορανοί (39) Ἀσιανοί (40) Ἰσαυροί (41) Λυκάονες

Hippolytus Scr. Eccl., Chronicon Section 237, line 3

Ποταμοὶ οὖν εἰσιν ὀνομαστοὶ τεσσαράκοντα ἐν τῇ γῇ οὗτοι· (1) Ἰνδὸς ὁ καλούμενος Φισῶν (2) Νεῖλος ὁ καλούμενος Γηών (3) Τίγρις (4) Εὐφράτης (5) Ἰορδάνης (6) Κηφισός (7) Τάναῖς

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

(8) Ἴς- μηνός (9) Ἑρύμανθος (10) Ἄλυσ (11) Αἰσωπός (12) Θερμάδων (13) Ἑρασίνος (14) Ῥεῖος (15) Βορυσθένης (16) Ἀλφειός (17) Ταῦρος (18) Εὐρώτας (19) Μέανδρος (20) Ἄξιος (21) Πύ- ραμος (22) Ὀρέντης (23) Ἑβρων (24) Σαγγάριος (25) Ἀχελῷος (26) Πινειός (27) Εὐήνος (28) Σπερ- χιός (29) Κάϋστρος (30) Σιμόεις (31) Σκάμανδρος

Hippolytus Scr. Eccl., Refutatio omnium haeresium (= Philosophumena) (2115: 060) “Hippolytus. Refutatio omnium haeresium”, Ed. Marcovich, M. Berlin: De Gruyter, 1986; Patristische Texte und Studien 25. Book 1, chapter pinax, section 6, line 3

Βραχμᾶνες οἱ ἐν Ἰνδοῖς, Δρυῖδαι οἱ ἐν Κελτοῖς, καὶ Ἡσιόδοι.

Hippolytus Scr. Eccl., Refutatio omnium haeresium (= Philosophumena) Book 1, chapter 13, section 1, line 2

Δημόκριτος δὲ Λευκίππου γίνεται γνώριμος· Δημόκριτος Δαμασίππου Ἀβδηρίτης, πολλοῖς συμβαλὼν, γυμνοσοφισταῖς ἐν Ἰνδοῖς καὶ ἱερεῦσιν ἐν Αἰγύπτῳ καὶ ἀστρολόγοις καὶ μάγοις ἐν Βαβυλῶνι.

Hippolytus Scr. Eccl., Refutatio omnium haeresium (= Philosophumena) Book 1, chapter 24, section 1, line 1

Ἔστι δὲ καὶ παρὰ Ἰνδοῖς αἵρεσις φιλοσοφουμένων ἐν τοῖς Βραχμᾶ- ναις.

Hippolytus Scr. Eccl., Refutatio omnium haeresium (= Philosophumena) Book 4, chapter 28, section 13, line 2

αἱματώδη δὲ φλόγα ποιεῖ τὸ Ἰνδικὸν μέλαν ἐνθεῖς τῷ λιβανωτῷ, καθὼς προείπα- μεν.

Hippolytus Scr. Eccl., Refutatio omnium haeresium (= Philosophumena) Book 7, chapter 25, section 6, line 3

ἀλλὰ γὰρ καθάπερ ὁ νάφθαο ὁ Ἰνδικός, ὀφθεῖς μόνον ἀπὸ πάνυ πολλοῦ διαστήματος, συνάπτει πῦρ, οὕτω κάτωθεν, ἀπὸ τῆς ἀμορφίας τοῦ σωροῦ, διήκουσιν, <φησὶν> αἱ δυνάμεις ἄνω μέχρι τῆς υἰότητος.

Hippolytus Scr. Eccl., Refutatio omnium haeresium (= Philosophumena) Book 7, chapter 25, section 7, line 2

ἄπτει μὲν γὰρ καὶ λαμβάνει τὰ νοήματα κατὰ τὸν <ν>άφθαν τὸν Ἰνδικόν – οἷον ἄφθαο<τός> τις ὢν – ὁ τοῦ μεγάλου τῆς Ὀγδοάδος ἄρχοντος υἱὸς ἀπὸ τῆς μετὰ τὸ μεθό- ριον <Πνεῦμα> μακαρίας υἰότητος· ἡ γὰρ ἐν μέσῳ τοῦ ἁγίου Πνεύματος, ἐν τῷ μεθορίῳ <μένουσα> τῆς υἰότητος δύναμις ἔχοντα καὶ φερόμενα τὰ νοήματα <ἀπὸ> τῆς <μακαρίας> υἰότητος μεταδίδωσι τῷ υἱῷ τοῦ μεγάλου ἄρχοντος.

Hippolytus Scr. Eccl., Refutatio omnium haeresium (= Philosophumena) Book 8, chapter pinax, section 7, line 2

Τίς ἢ τῶν Ἑγκρατιτῶν κενοδοξία, καὶ ὅτι οὐκ ἐξ ἁγίων γραφῶν τὰ δόγματα αὐτῶν συνέστηκεν, ἀλλ’ ἐξ αὐτῶν καὶ ἐκ τῶν παρ’ Ἰνδοῖς γυμνοσοφιστῶν.

Hippolytus Scr. Eccl., Refutatio omnium haeresium (= Philosophumena) Book 10, chapter 34, section 1, line 3

5.8. NICOLAUS OF DAMASCUS

Τοιοῦτος ὁ περὶ τὸ θεῖον ἀληθὲς λόγος, ὃ ἄνθρωποι Ἕλληνές τε καὶ βάρβαροι, Χαλδαῖοί τε καὶ Ἀσσύριοι, Αἰγύπτιοί τε καὶ Λίβυες, Ἰνδοί τε καὶ Αἰθίοπες, Κελτοί τε καὶ οἱ στρατηγοῦντες Λατῖνοι, πάντες τε οἱ τὴν Εὐρώπην, Ἀσίαν τε καὶ Λιβύην κατοικοῦντες.

5.8 Nicolaus of Damascus

igation, search

Nicolaus of Damascus (Greek: Νικόλαος Δαμασκηνός, Nikolāos Damaskēnos) was a Greek[1] historian and philosopher who lived during the Augustan age of the Roman Empire. His name is derived from that of his birthplace, Damascus. He was born around 64 BC.[2]

He was an intimate friend of Herod the Great, whom he survived by a number of years. He was also the tutor of the children of Antony and Cleopatra (born in 40 BC), according to Sphronius.[3] He went to Rome with Herod Archelaus.[4]

His output was vast, but is nearly all lost. His chief work was a universal history in 144 books. He also wrote an autobiography, a life of Augustus, a life of Herod, some philosophical works, and some tragedies and comedies.

There is an article on him in the Suda.[5] (From Wikipedia⁷)

Nicolaus Hist., Fragmenta (0577: 003) “FHG 3”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 7, line 1

Exc. De ins: Ὅτι μετὰ τὸν Ἰνδικὸν πόλεμον Σε- μίραμις ἐπεὶ ὁδοιποροῦσα ἐγένετο ἐν Μήδοις, ἀναβᾶσα ἐπὶ τι ὑψηλὸν ὄρος, πάντοθεν πλήν καθ’ ἓν μέρος πε- ριερρωγὸς καὶ ἄβατον λισσάδι καὶ ἀποτόμῳ πέτρα, ἐθεᾶτο τὴν στρατιάν (1) ἀπὸ τινος ἐξέδρας, ἣν παρα- χρῆμα ὠκοδομήσατο.

Nicolaus Hist., Fragmenta Fragment 74, line 12

Μάρτυς δὲ τούτων ἡμῖν ἐστὶ καὶ Νικόλαος ὁ Δαμασκηνός, οὕτως ἱστορῶν· «Τρόπαιον δὲ στήσας Ἀντίοχος ἐπὶ τῷ Λύκῳ ποταμῷ, νικήσας Ἰν- δάτην τὸν Πάρθων στρατηγόν, αὐτόθι ἔμεινεν ἡμέρας δύο, δεηθέντος Ὑρκανοῦ τοῦ Ἰουδαίου διὰ τινὰ ἐορτὴν πάτριον, ἐν ᾗ τοῖς Ἰουδαίοις οὐκ ἦν νόμιμον ἐξοδεύειν.

Nicolaus Hist., Fragmenta Fragment 91, line 4

7. http://en.wikipedia.org/wiki/Nicolaus_of_Damascus

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Φησὶ γὰρ οὗτος ἐν Ἀντιοχείᾳ τῇ ἐπὶ Δάφνῃ παρατυχεῖν τοῖς Ἰν- δῶν πρέσβεσιν, ἀφιγμένοις παρὰ Καίσαρα τὸν Σεβα- στόν.

Nicolaus Hist., Fragmenta Fragment 91, line 28

Ἐπιγεγράφθαι δὲ τῷ τάφῳ· ΖΑΡΜΑΝΟΣ ΧΗΓΑΝ ΙΝΔ*ΟΣ ΑΠΟ ΒΑΡΓΟΣΗΣ ΚΑΤΑ ΤΑ ΠΑΤΡΙΑ ΙΝΔ*ΩΝ ΕΘΗ ΕΑΥΤΟΝ ΑΠΛΘΑΝΑΤΙΣΑΣ ΚΕΙΤΑΙ.

Nicolaus Hist., Fragmenta Fragment 101, line 568

XXVI. Ὁ δὲ νεκρὸς ἐκεῖ (1) ἔκειτο ἐνθα ἔπεσεν ἀτίμως πεφυρμένος αἵματι, ἀνδρὸς ἐλάσαν- τος μὲν πρὸς ἐσπέραν ἄχρι Βρεττανῶν τε καὶ Ὤκεανοῦ, διανοουμέ- νου δ' ἐλαύνειν πρὸς ἑῷ ἐπὶ τὰ Πάρθων ἀρχεῖα καὶ Ἰνδῶν, ὡς ἂν, κακείνων ὑπηκόων γενομένων, εἰς μίαν ἀρχὴν κεφαλαι- ωθεῖν γῆς πάσης καὶ θαλάττης τὰ κράτη· τότε δ' οὖν ἔκειτο, μηδενὸς τολμῶντος ὑπομένειν (2) καὶ τὸν νεκρὸν ἀναιρεῖσθαι.

Nicolaus Hist., Fragmenta Fragment t143, line 1

Ἄθυροι δ' αὐτῶν αἱ οἰκίαι, καὶ ἐν ταῖς ὁδοῖς κειμένων πολλῶν οὐδὲ εἷς κλέπτει. ΙΝΔ*οΙ.

Nicolaus Hist., Fragmenta Fragment 143, line 1

CXXIII, 12: Ἰνδοὶ συγκατακαίουσιν ὅταν τελευ- τήσωσι τῶν γυναικῶν τὴν προσφιλεστά- την.

Nicolaus Hist., Fragmenta Fragment 143, line 7

XLIV, 41: Παρ' Ἰνδοῖς ἐάν τις ἀποστερηθῇ δανείου ἢ παρακαταθήκης, οὐκ ἔστι κρίσις, ἀλλ' αὐτὸν αἰτιᾶ- ται ὁ πιστεύσας.

Nicolaus Hist., Fragmenta Fragment 145, line 1

IX, 52: Ἐν Παδαίοις, Ἰνδικῷ ἔθνει, οὐχ ὁ θύων, ἀλλ' ὁ συνετώτατος τῶν παρόντων κατάρ- χεται τῶν ἱερῶν.

5.9 Philo of Alexandria

Philo of Alexandria (Greek: Φίλων, Philōn; c. 20 BCE – c. 50 CE), also called Philo Judaeus, was a Hellenistic Jewish philosopher who lived in Alexandria, Egypt, during the Roman Empire.

Philo used philosophical allegory to attempt to fuse and harmonize Greek philosophy with Jewish philosophy. His method followed the practices of both Jewish exegesis and Stoic philosophy. His allegorical exegesis was im- portant for several Christian Church Fathers, but he has barely any reception history within Judaism. He believed that literal interpretations of the He-

5.9. PHILO OF ALEXANDRIA

brew Bible would stifle humanity's view and perception of a God too complex and marvelous to be understood in literal human terms. (From Wikipedia⁸)

Philo Judaeus Phil., De somniis (lib. i-ii) (0018: 019) "Philonis Alexandrini opera quae supersunt, vol. 3", Ed. Wendland, P. Berlin: Reimer, 1898, Repr. 1962. Book 2, section 56, line 3

καὶ μὴν πρὸς γε ὕπνον μαλακὸν μὲν ἔδαφος αὐταρκές ἦν – ἐπεὶ καὶ μέχρι νῦν τοὺς Γυμνο-σοφιστὰς παρ' Ἰνδοῖς χαμευνεῖν ἐκ παλαιῶν ἐθῶν κατέχει λόγος – , εἰ δὲ μή, στιβάς γοῦν ἐκ λίθων λογάδων ἢ ξύλων εὐτελῶν πεποιημένη κλίνη.

Philo Judaeus Phil., De somniis (lib. i-ii) Book 2, section 60, line 1

ἀλλὰ γὰρ ἐπετειχίσθη τοῖς ὠφελοῦσι τὰ ἡδέα τῆς κενῆς δόξης ἀλείμματα, εἰς ἃ καὶ μυρεφοὶ πονοῦσι καὶ χώραι μεγάλαι συντελοῦσι, Συρία, Βαβυλῶν, Ἰνδοί, Σκύθαι, παρ' οἷς αἱ τῶν ἀρωμάτων γενέσεις εἰσὶ.

Philo Judaeus Phil., De Abrahamo (0018: 020) "Philonis Alexandrini opera quae supersunt, vol. 4", Ed. Cohn, L. Berlin: Reimer, 1902, Repr. 1962. Section 182, line 1

νοσημάτων λοιμικῶν γενησομένους, τοὺς δ' ὑπὲρ νενομισμένης εὐσεβείας, εἰ καὶ μὴ πρὸς ἀλήθειαν οὔσης· Ἑλλήνων μὲν γε τοὺς δοκιμωτάτους, οὐκ ἰδιώτας μόνον ἀλλὰ καὶ βασιλεῖς, ὀλίγα φροντίσαντας ὧν ἐγένε- νησαν διὰ τῆς τούτων ἀναιρέσεως δυνάμεις στρατευμάτων με- γάλας καὶ πολυανθρώπους ἐν μὲν τῇ συμμαχίᾳ τεταγμένους διασῶσαι, ἐν δὲ τῇ μερίδι τῶν ἐχθρῶν αὐτοβοεῖ διαφθεῖραι· βαρβαρικά δὲ ἔθνη μέχρι πολλοῦ παιδοκτονίαν ὡς ὅσιον ἔργον καὶ θεοφιλὲς προσέσθαι, ὧν μεμνη- σθαι τοῦ ἄγους καὶ τὸν ἱερώτατον Μωυσῆν· αἰτιώμενος γὰρ αὐτοὺς τοῦ μιάσματος φάσκει, ὅτι "τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς θυγατέρας κατα- καίουσι τοῖς θεοῖς αὐτῶν" (Deut. 12, 31)· Ἰνδῶν δὲ | τοὺς γυμνο- σοφιστὰς ἄχρι νῦν, ἐπειδὴν ἄρχηται καταλαμβάνειν ἢ μακρὰ καὶ ἀνίατος νόσος, τὸ γῆρας, πρὶν βεβαίως κρατηθῆναι, πυρὰν νή- σαντας ἑαυτοὺς ἐμπιπράναι, δυναμένους ἔτι πρὸς πολυετίαν ἴσως ἀντισχεῖν· ἡδὴ δὲ καὶ γυναῖα προαποθανόντων ἀνδρῶν ὀρμηθεῖν γενηθῶτα πρὸς τὴν αὐτὴν πυρὰν καὶ ζῶντα τοῖς ἐκείνων σώ- μασιν ὑπομεῖναι συγκαταφλεχθῆναι· ταῦτα μὲν εἰκότως ἂν τις τῆς εὐτολμίας θαυμάσειεν ἐκ πολλοῦ τοῦ περιόντος καταφρονητικῶς ἔχοντα θανάτου καὶ ὡς ἐπ' ἀθανασίαν αὐτὸν ἰέμενα καὶ ἀπνευστὶ θέοντα· τὸν δὲ τί προσῆκεν ἐπαινεῖν ὡς ἐγχειρητὴν κεκαινουργημένης πράξεως, ἣν καὶ ἰδιῶται καὶ βασιλεῖς

Philo Judaeus Phil., De praemiis et poenis + De execrationibus (0018: 026) "Philonis Alexandrini opera quae supersunt, vol. 5", Ed. Cohn, L. Berlin: Reimer, 1906, Repr. 1962. Section 89, line 1

τότε μοι δοκοῦσιν ἄρκτοι καὶ λέοντες καὶ παρδάλεις καὶ τὰ παρ' Ἰνδοῖς, ἐλέφαντές τε καὶ τίγρεις, καὶ ὅσα ἄλλα τὰς ἀλλὰς καὶ τὰς δυνάμεις ἀήττητα μεταβαλεῖν ἐκ τοῦ μονωτικοῦ τε καὶ μονοτρόπου πρὸς τὸ σύννομον· καὶ τοῦ πρὸς ὀλίγον μιμήσει τῶν ἀγελαίων ἡμερωθήσεται πρὸς τὴν ἀνθρώπου φαντασίαν, μηκέτι ὡς πρότερον ἀνερεισθέντα, κατα- πλαγέντα δ' ὡς

8. <http://en.wikipedia.org/wiki/Philo>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ἄρχοντα καὶ φύσει δεσπότην εὐλαβῶς ἔξει, ἓνια δὲ καὶ τοῦ χειροήθους ἅμα καὶ φιλοδεσπότην τῇ παραζηλώσει, καθάπερ τὰ Μελιταῖα τῶν κυνιδίων ταῖς κέρκοις μεθ' ἱλαρωτέρας κινήσεως προσσαί- νοντα.

Philo Judaeus Phil., Quod omnis probus liber sit (0018: 027) “Philonis Alexandrini opera quae supersunt, vol. 6”, Ed. Cohn, L., Reiter, S. Berlin: Reimer, 1915, Repr. 1962. Section 74, line 5

κατὰ δὲ τὴν βάρβαρον, ἐν ᾗ πρεσβευταὶ λόγων καὶ ἔργων, πολυανθρωπότατα στίφη καλῶν καὶ ἀγαθῶν ἐστὶν ἀνδρῶν· ἐν Πέρσαις μὲν τὸ μάγων, οἳ τὰ φύσεως ἔργα διερευνώμενοι πρὸς ἐπίγνωσιν τῆς ἀληθείας καθ' ἡσυχίαν τὰς θείας ἀρετὰς τρανοτέραις ἐμφάσειν ἱεροφαν- τοῦνται τε καὶ ἱεροφαντοῦσιν· ἐν Ἰνδοῖς δὲ τὸ γυμνοσοφιστῶν, οἳ πρὸς τῇ φυσικῇ καὶ τὴν ἠθικὴν φιλοσοφίαν | διαπονοῦντες ὅλον ἐπίδειξιν ἀρετῆς πεποιήνται τὸν βίον.

Philo Judaeus Phil., Quod omnis probus liber sit Section 93, line 1

Κάλανος ἦν Ἰνδὸς γένος τῶν γυμνοσο- φιστῶν· οὗτος καρτερικώτατος τῶν κατ' αὐτὸν ἀπάντων | νομισθεὶς οὐ μόνον ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων ἀλλὰ καὶ πρὸς ἄλλοφύλων, ὃ δὴ σπανιώτατόν ἐστιν, ἐχθρῶν βασιλέων ἐθαυμάσθη, λόγοις ἐπαινετοῖς σπουδαῖα ἔργα συνυφίνας.

Philo Judaeus Phil., Quod omnis probus liber sit Section 96, line 3

Φίλοι πείθουσὶ σε χεῖρας καὶ ἀνάγκην προσφέρειν Ἰνδῶν φιλοσόφοις οὐδ' ἐν ὕπνοις ἐωρακότες ἡμέτερα ἔργα.

Philo Judaeus Phil., De aeternitate mundi (0018: 029) “Philonis Alexandrini opera quae supersunt, vol. 6”, Ed. Cohn, L., Reiter, S. Berlin: Reimer, 1915, Repr. 1962. Section 128, line 2

τὸ παραπλήσιον μέντοι καὶ τοὺς κατὰ τὴν Ἰνδικὴν δράκοντάς φασι πάσχειν· ἀνέρποντας γὰρ ἐπὶ τὰ μέγιστα τῶν ζώων, ἐλέφαντας, περὶ νῶτα καὶ νηδὺν ἅπασαν εἰλεῖσθαι, φλέβα δ' ἦν ἂν τύχῃ διελόντας ἐμπνέειν τοῦ αἵματος, ἀπλήστως ἐπισπω- μένους βιαίῳ πνεύματι καὶ συντόνῳ ῥοίῳ· μέχρι μὲν οὖν τινος ἕξανα- λουμένους ἐκείνους ἀντέχειν ὑπ' ἀμνηχανίας ἀνασκιρ- τῶντας καὶ τῇ προνο- μαίᾳ τὴν πλευρὰν τύπτοντας ὡς καθιζομένους τῶν δρακόντων, εἴτα ἀεὶ κενουμένου τοῦ ζωτικοῦ, πηδᾶν μὲν μηκέτι δύνασθαι, κραδαινομένους δ' ἐστάναι, μικρὸν δ' ὕστερον καὶ τῶν σκελῶν ἐξασθενησάντων, κατασει- σθέντας ὑπὸ λιφαιμίας ἀποφύχειν, πε- σόντας δὲ τοὺς αἰτίους τοῦ θανάτου συναπολλύναι τρόπῳ τοιῷδε· μηκέτ' ἔχοντες τροφὴν οἱ δράκοντες ὄν

Philo Judaeus Phil., De ebrietate ii (0018: 036) “Neu entdeckte Fragmente Philos nebst einer Untersuchung über die ursprüngliche Gestalt der Schrift de sacrificiis Abelis et Caini”, Ed. Wendland, P. Berlin: Reimer, 1891. Fragment 5, line 4

Τίς οὐκ οἶδεν ὅτι χριθαῖς μὲν ἔθνη τρέφεται μεγάλα καθάπερ τὰ πολλὰ τῶν Λιβύην νεμομένων, ὀλύραις δὲ ἕτερα, καὶ τὸ πολυανθρωπότατον Ἰνδῶν ὀρύζῃ;

5.10. DE BELLO PARTHICO

5.10 De bello Parthico

“” (From Wikipedia⁹)

Anonymi Historici (FGrH), De bello Parthico (1139: 013) “FGrH #203”. Volume-Jacoby’-T+F 2b,203,F, fragment 7b, line 2

τὰ δ’ ἐν Ἰνδοῖς πραχθησόμενα ὑπέσχετο ἤδη συγγράφειν καὶ τὸν περίπλουν τῆς ἔξω θαλάσσης.

Anonymi Historici (FGrH), De bello Parthico Volume-Jacoby’-T+F 2b,203,F, fragment 7b, line 4

καὶ οὐχ ὑπόσχεσις ταῦτα μόνον, ἀλλὰ καὶ τὸ προοίμιον τῆς Ἰνδικῆς ἤδη συντέτακται, καὶ τὸ τρίτον τάγμα καὶ οἱ Κελτοὶ καὶ Μαύρων μοῖρα ὀλίγη σὺν Κασσίω πάντες οὗτοι ἐπεραιώθησαν τὸν Ἰνδὸν ποταμόν· ὃ τι δὲ καὶ πράξουσιν ἢ πῶς δέξονται τὴν τῶν ἐλεφάντων ἐπέλασιν, οὐκ εἰς μακρὰν ἡμῖν ὁ θαυμαστός συγγραφεὺς ἀπὸ Μουζιρίδος ἢ ἀπ’ Ὀξυδρακῶν ἐπιστελεῖ.

5.11 Clemens Alexandrinus

Titus Flavius Clemens (Greek: Κλήμης ὁ Ἀλεξανδρεὺς; c. 150 – c. 215), known as Clement of Alexandria, was a Christian theologian who taught at the Catechetical School of Alexandria. A convert to Christianity, he was an educated man who was familiar with classical Greek philosophy and literature. As his three major works demonstrate, Clement was influenced by Hellenistic philosophy to a greater extent than any other Christian thinker of his time, and in particular by Plato and the Stoics.[1] His secret works, which exist only in fragments, suggest that he was also familiar with pre-Christian Jewish esotericism and Gnosticism. In one of his works he argued that Greek philosophy had its origin among non-Greeks, claiming that both Plato and Pythagoras were taught by Egyptian scholars.[2] Among his pupils were Origen and Alexander of Jerusalem.

The Protrepticus is, as its title suggests, an exhortation to the pagans of Greece to adopt Christianity, and within it Clement demonstrates his extensive knowledge of pagan mythology and theology. It is chiefly important due to Clement’s exposition of religion as an anthropological phenomenon.[14]

9.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

After a short philosophical discussion, it opens with a history of Greek religion in seven stages.[15] Clement suggests that at first, men mistakenly believed the Sun, the Moon and other heavenly bodies to be gods. The next development was the worship of the products of agriculture, from which he contends the cults of Demeter and Dionysus arose.[16] Man then paid reverence to revenge, and deified human feelings of love and fear, among others. In the following stage, the poets Hesiod and Homer attempt to enumerate the Gods; Hesiod's Theogony giving the number of twelve. Finally, men proclaimed other men, such as Asclepius and Heracles, deities.[16] Discussing idolatry, Clement contends that the objects of primitive religion were unshaped wood and stone, and idols thus arose when such natural items were carved.[17] Following Plato, Clement is critical of all forms of visual art, suggesting that artworks are but illusions and "deadly toys".[17] (From Wikipedia¹⁰)

Clemens Alexandrinus Theol., Protrepticus (0555: 001) "Clément d'Alexandrie. Le protreptique, 2nd edn.", Ed. Mondésert, C. Paris: Cerf, 1949; Sources chrétiennes 2. Chapter 2, section 26, subsection 2, line 1

Οἱ μὲν γὰρ εὐθέως ἀμφὶ τὴν οὐρανοῦ θεῶν ἀπατώ-μενοι καὶ ὄψει μόνῃ πεπιστευκότες τῶν ἀστέρων τὰς κινήσεις ἐπιθεώμενοι ἐθαύμασάν τε καὶ ἐξεθείασαν, θεοὺς ἐκ τοῦ θεῖν ὀνομάσαντες τοὺς ἀστέρας, καὶ προσεκύνησαν ἥλιον, ὡς Ἰνδοί, καὶ σελήνην, ὡς Φρύγες· οἱ δὲ τῶν ἐκ γῆς φυομένων τοὺς ἡμέρους δρεπόμενοι καρποὺς Διῶ τὸν σῖτον, ὡς Ἀθηναῖοι, καὶ Διόνυσον τὴν ἄμπελον, ὡς Θηβαῖοι, προση-γόρευσαν.

Clemens Alexandrinus Theol., Protrepticus Chapter 4, section 47, subsection 6, line 6

Πολλοὶ δ' ἂν τάχα που θαυμάσειαν, εἰ μάθοιεν τὸ Παλλάδιον τὸ διοπετὲς καλούμενον, ὃ Διομήδης καὶ Ὀδυσσεὺς ἱστοροῦνται μὲν ὑφελέσθαι ἀπὸ Ἰλίου, παρακαταθέσθαι δὲ Δημοφῶντι, ἐκ τῶν Πέλοπος ὀστέων κατασκευάσθαι, καθάπερ τὸν Ὀλύμπιον ἐξ ἄλλων ὀστέων Ἰνδικοῦ θηρίου.

Clemens Alexandrinus Theol., Paedagogus (0555: 002) "Clément d'Alexandrie. Le pédagogue, 3 vols.", Ed. Marrou, H.-I., Harl, M., Mondésert, C., Matray, C. Paris: Cerf, 1:1960; 2:1965; 3:1970; Sources chrétiennes 70, 108, 158. Book 2, chapter 2, subchapter 30, section 3, line 3

Εἰ μή τι καὶ τὸ ὕδωρ ἐποίσονται, ὡς οἱ βασιλεῖς οἱ ἀνόητοι [Χόασπις ποταμὸς οὕτω λεγόμενος τῆς Ἰνδικῆς, οὗ κάλλιστον ὕδωρ εἰς πόσιν] τὸ Χοάσπειον, καθάπερ καὶ τοὺς φίλους, οὕτω δὲ καὶ τὸ ὕδωρ ἐπαγόμενοι.

Clemens Alexandrinus Theol., Paedagogus Book 2, chapter 3, subchapter 37, section 2, line 3

10. http://en.wikipedia.org/wiki/Clemens_Alexandrinus

5.11. CLEMENS ALEXANDRINUS

Ἡ ἐπὶ τὴν μοῖραν τοῦ κρέως Ἰνδικὸν σίδηρον χαλκευτέον, καθάπερ συμμαχικὸν τι παρακαλοῦντας;

Clemens Alexandrinus Theol., Paedagogus Book 2, chapter 10bis, subchapter 107, section 3, line 4

Εἰ δὲ συμπεριφέρεσθαι χρή, ὀλίγον ἐνδοτέον αὐταῖς μαλακωτέροις χρῆσθαι τοῖς ὑφάσμασιν μόνον τὰς μεμωρημένας λεπτοურγίας καὶ τὰς ἐν ταῖς ὑφαῖς περιέργους πλοκάς ἐκποδὼν μεθιστάντας, νῆμα χρυσοῦ καὶ σῆρας Ἰνδικούς καὶ τοὺς περιέργους βόμβυκας χαίρειν ἑώντας.

Clemens Alexandrinus Theol., Paedagogus Book 3, chapter 2, subchapter 4, section 2, line 6

Αἱ δὲ, τὴν ἐπιφάνειαν καλλωπιζόμεναι καὶ τὰ βάθη χερσούμεναι, λελήθασιν σφᾶς αὐτὰς κατὰ τοὺς Αἰγυπτίῳ κοσμοῦσαι ναοὺς· προπύλαια παρ' αὐτοῖς καὶ προτεμενίσματα ἐξήσκηται, ἄλση τε καὶ ὀργάδες, κίοσιν τε παμπόλλοις ἐστεφάνωνται αἱ αὐλαί· τοῖχοι δὲ ἀποστίλβουσι ξενικοῖς λίθοις καὶ γραφῆς ἐντέχνου [οἷς] ἐνδεῖ οὐδὲ ἐν· χρυσῷ δὲ καὶ ἀργύρῳ καὶ ἡλέκτρῳ παραστίλβουσιν οἱ ναοί, καὶ τοῖς ἀπὸ Ἰνδίας καὶ Αἰθιοπίας πεποικιλμένοι μαρμαίρουσι λιθιδίοις, τὰ δὲ ἄδυστα χρυσοπάστοις ἐπισκιάζεται πέπλοις· ἀλλ' ἦν παρεισέλθης <εἰς> τὸ βάθος τοῦ περιβόλου σπεύδων ἐπὶ τὴν θέαν τοῦ κρείττονος, ζητήσης <δὲ> τὸ ἄγαλμα τὸ ἔνοικον τοῦ νεώ, παστοφόρος [δὲ] ἢ τις ἄλλος τῶν ἱεροποιούντων περὶ τὸ τέμενος σεμνὸν δεδωρκώς, παιᾶνα τῇ Αἰγυπτίῳ ἄδων γλώττῃ, ὀλίγον ἐπαναστείλας τοῦ καταπετάσματος, ὡς δείξω τὸν θεόν, πλατύν ἡμῖν ἐνδίδωσι γέλωτα τοῦ σεβάσματος.

Clemens Alexandrinus Theol., Paedagogus Book 3, chapter 2, subchapter 10, section 1, line 7

Τράπεζα πλήρης καὶ κύλικες ἐπάλληλοι ἱκαναὶ πληρῶσαι τὴν λαιμαργίαν· τοῖς δὲ φιλοχρύσοις καὶ φιλοπορφύροις καὶ φιλολίθοις οὔτε ὁ ὑπὲρ γῆς καὶ ὑπὸ γῆν χρυσὸς αὐτάρκης οὔτε ἡ Τυρίων θάλαττα οὔτε μὴν ὁ φόρτος ὁ ἀπ' Ἰνδῶν καὶ Αἰθιόπων, ἀλλ' οὐδὲ ὁ Πακτωλὸς ὁ ῥέων τὸν πλοῦτον.

Clemens Alexandrinus Theol., Paedagogus Book 3, chapter 4, subchapter 30, section 1, line 1

Ἀλλ' αἶ γε ἀστειότεραι τούτων ὄρνεις Ἰνδικούς καὶ ταῶνας Μηδικούς ἐκτρέφουσιν καὶ συνανακλίνονται τοῖς φοξοῖς παίζουσαι, σικίννοις τέρασι γανύμεναι· καὶ τὸν μὲν Θερσίτην ἀκούουσαι γελῶσιν, αὐταὶ δὲ πολυτιμήτους ὠνούμεναι Θερσίτας οὐκ ἐπ' ἀνδράσιν ὁμοζύγοις, ἀλλ' ἐπ' ἐκείνοις αὐχοῦσιν, ἃ δὴ ἄχθος ἐστὶ γῆς· καὶ χήραν μὲν παρρηῶσι σωφρονούσαν Μελιταίου πολλῶ διαφέρουσαν κυνιδίου, καὶ πρεσβύτην παραβλέπτουσι δίκαιον, εὐπρεπές· τερὸν, οἶμαι, τέρατος ἀργυρωνήτου· παιδίον δὲ οὐδὲ προσίενται ὀρφανὸν αἱ τοὺς ψιττακοὺς καὶ τοὺς χαρδριοὺς

Clemens Alexandrinus Theol., Paedagogus Book 3, chapter 4, subchapter 30, section 4, line 4

Αἱ δὲ ἔμπαλιν ἀπαιδευσίαν προτετιμῆκασιν σωφροσύνης, τὰς ἑαυτῶν οὐσίας ἀπολιθοῦσαι εἰς τοὺς μαργαρίτας καὶ τὰς σμαράγδους τὰς Ἰνδικάς· ναὶ μὴν καὶ εἰς τὰς ἐξητήλους βαφὰς καὶ εἰς τὰ ἀργυρώνητα ἀνδράποδα σπαθῶσι καὶ διαρρίπτουσι τὰ χρήματα, δίκην ὀρνίθων

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

κεκορεσμένων τὰ τοῦ βίου σκαλεύουσαι κόπρια.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata (0555: 004) “Clemens Alexandrinus, vols. 2, 3rd edn. and 3, 2nd edn.”, Ed. Stählin, O., Früchtel, L., Treu, U. Berlin: Akademie-Verlag, 2:1960; 3:1970; Die griechischen christlichen Schriftsteller 52(15), 17. Book 1, chapter 15, section 71, subsection 4, line 5

προέστησαν δ' αὐτῆς Αἰγυπτίων τε οἱ προφῆται καὶ Ἀσσυρίων οἱ Χαλδαῖοι καὶ Γαλατῶν οἱ Δρυῖδαι καὶ Σαμαναῖοι Βάκ- τρων καὶ Κελτῶν οἱ φιλοσοφῆσαντες καὶ Περσῶν οἱ Μάγοι (οἱ μα- γεία καὶ τοῦ σωτῆρος προεμήνυσαν τὴν γένεσιν, ἀστέρος αὐτοῖς καθη- γουμένου εἰς τὴν Ἰουδαίαν ἀφικνούμενοι γῆν) 1 Ἰνδῶν τε οἱ γυμνοσο- φισταί, ἄλλοι γε φιλόσοφοι βάρβαροι.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 1, chapter 15, section 71, subsection 6, line 1

εἰσὶ δὲ τῶν Ἰνδῶν οἱ τοῖς Βούττα πειθόμενοι παραγγέλμασιν.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 1, chapter 15, section 72, subsection 5, line 3

φανερῶτατα δὲ Μεγασθένης ὁ συγγραφεὺς ὁ Σελεύκῳ τῷ Νικάτορι συμβεβιωκῶς ἐν τῇ τρίτῃ τῶν Ἰνδικῶν ᾧδε γράφει· «ἅπαντα μέντοι τὰ περὶ φύσεως εἰρημένα παρὰ τοῖς ἀρχαίοις λέγεται καὶ παρὰ τοῖς ἔξω τῆς Ἑλλάδος φιλοσοφοῦσι, τὰ μὲν παρ' Ἰνδοῖς ὑπὸ τῶν Βραχμάνων, τὰ δὲ ἐν τῇ Συρίᾳ ὑπὸ τῶν καλουμένων Ἰουδαίων.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 2, chapter 20, section 125, subsection 1, line 1

Καλῶς ὁ Ζήνων ἐπὶ τῶν Ἰνδῶν ἔλεγεν ἕνα Ἰνδὸν παροπτώμε- νον ἐθέλειν <ἂν> ἰδεῖν ἢ πάσας τὰς περὶ πόνου ἀποδείξεις μαθεῖν.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 3, chapter 7, section 60, subsection 2, line 4

Βραχμᾶναι γοῦν οὔτε ἔμψυχον ἐσθίουσιν οὔτε οἶνον πίνου- σιν· ἀλλ' οἱ μὲν αὐτῶν καθ' ἐκάστην ἡμέραν ὥς ἡμεῖς τὴν τροφήν προσίενται, ἔνιοι δ' αὐτῶν διὰ τριῶν ἡμερῶν, ὥς φησιν Ἀλέξανδρος ὁ Πολυῖστωρ ἐν τοῖς Ἰνδικοῖς· καταφρονοῦσι δὲ θανάτου καὶ παρ' οὐδὲν ἡγοῦνται τὸ ζῆν· πείθονται γὰρ εἶναι παλιγγενεσίαν, θεοὺς δὲ σέβουσιν Ἡρακλέα καὶ Πᾶνα.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 3, chapter 7, section 60, subsection 3, line 1

οἱ καλούμενοι δὲ Σεμνοὶ τῶν Ἰνδῶν γυμνοὶ διαιτῶνται τὸν πάντα βίον· οὗτοι τὴν ἀλήθειαν ἀσκοῦσι καὶ περὶ τῶν μελλόντων προμηνύουσι καὶ σέβουσι τινα πυραμίδα, ὑφ' ἣν ὅστέα τινὸς θεοῦ νομίζουσιν ἀποκεῖσθαι.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 4, chapter 4, section 17, subsection 3, line 3

οὐ γὰρ τὸν χαρακτήρα σφῶζουσι τοῦ μαρτυρίου τοῦ πιστοῦ, τὸν ὄντως θεὸν μὴ γνωρίσαντες, θανάτῳ δὲ ἑαυτοὺς ἐπιδιδόασιν κενῶ, καθάπερ καὶ οἱ τῶν Ἰνδῶν γυμνοσο- φισταί ματαίῳ πυρί.

5.12. EUTROPIUS / PAEANII TRANSLATIO

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 4, chapter 7, section 50, subsection 1, line 1

εἴη δ' ἂν ὁ τοιοῦτος ὁ κολλώμενος τῷ ἀγαθῷ κατὰ τὸν ἀπόστολον, ἀποστρυγὼν τὸ πονηρόν, ἀγάπην ἔχων ἀνυπόκριτον· »ὁ γὰρ ἀγαπῶν τὸν ἕτερον νόμον πεπλήρωκεν·» εἰ δὲ «ὁ θεὸς τῆς ἐλπίδος» οὗτός ἐστιν ὃ μαρτυροῦμεν, ὥσπερ οὖν ἐστὶ, τὴν ἐλπίδα ἡμῶν ὁμολογοῦμεν εἰς τὴν ἐλπίδα σπεύδοντες· οἱ δὲ «μεστοὶ τῆς ἀγαθωσύνης πεπληρωμένοι», φησί, «πάσης τῆς γνώσεως.» Ἰνδῶν οἱ φιλόσοφοι Ἀλεξάνδρῳ λέγουσι τῷ Μακεδόνι· «σώματα μὲν μετὰξεις ἐκ τόπου εἰς τόπον, ψυχὰς δ' ἡμετέρας οὐκ ἀναγκάσεις ποιεῖν ἃ μὴ βουλόμεθα.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 6, chapter 4, section 38, subsection 1, line 1

Καὶ τὰ μὲν Αἰγυπτίων ὡς ἐν βραχεῖ φάναι τοιαῦτα· Ἰνδῶν δὲ ἡ φιλοσοφία καὶ αὐτῶν διαβεβόηται.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 6, chapter 4, section 38, subsection 2, line 1

Ἀλέξανδρος γοῦν ὁ Μακεδὼν δέκα λαβὼν Ἰνδῶν γυμνοσοφιστὰς τοὺς δοκοῦντας ἀρίστους εἶναι καὶ βραχυλογωτάτους προβλήματα αὐτοῖς προὔθηκε, τὸν μὴ ἀποκρινόμενον εὐστόχως ἀνελεῖν ἀπειλήσας, ἕνα <δὲ> τὸν πρεσβύτατον αὐτῶν ἐπικρίνειν κελεύσας.

Clemens Alexandrinus Theol., Stromata Book 6, chapter 7, section 57, subsection 3, line 5

Κλεάνθης μὲν γὰρ Ζήνωνα ἐπιγρά- φεται καὶ Θεόφραστος Ἀριστοτέλη Μητροδωρὸς τε Ἐπίκουρον καὶ Πλάτων Σωκράτην· ἀλλὰ καὶ ἐπὶ Πυθαγόραν ἔλθω καὶ Φερεκύδην καὶ Θά- λητα καὶ τοὺς πρώτους σοφούς, ἵσταμαι τὸν τούτων διδάσκα- λον ζητῶν καὶ Αἰγυπτίους εἴπης καὶ Ἰνδοὺς καὶ Βαβυλωνίους καὶ τοὺς Μάγους αὐτούς, οὐ παύσομαι τὸν τούτων διδάσκαλον ἀπαιτῶν, ἀνάγω δέ σε καὶ ἐπὶ τὴν πρώτην γένεσιν ἀνθρώπων, κάκειθεν ἄρ- χομαι ζητεῖν, τίς ὁ διδάσκαλος;

5.12 Eutropius / Paeanii translatio

Flavius Eutropius was an Ancient Roman historian who flourished in the latter half of the 4th century. He held the office of secretary (magister memoriae) at Constantinople, accompanied the Emperor Julian (361–363) on his expedition against the Persians (363), and was alive during the reign of Valens (364–378), to whom he dedicates his *Breviarium historiae Romanae* and where his history ends.

The *Breviarium historiae Romanae* is a complete compendium, in ten books, of Roman history from the foundation of the city to the accession of Valens.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

It was compiled with considerable care from the best accessible authorities, and is written generally with impartiality, and in a clear and simple style. Although the Latin in some instances differs from that of the purest models, the work was for a long time a favorite elementary school-book. Its independent value is small, but it sometimes fills a gap left by the more authoritative records. For the early parts of his work, Eutropius depended upon an epitome of Livy; for the later parts, he used the now lost Enmannsche Kaisergeschichte. The Breviarium was enlarged and continued down to the time of Justinian by Paulus Diaconus; the work of the latter was in turn enlarged by Landolfus Sagax (c. 1000), and taken down to the time of the emperor Leo the Armenian (813–820) in the Historia Miscella.

Of the Greek translations by Paeanius (around 380) and Capito Lycius (6th century), the version of the former is extant in an almost complete state. The best edition of Eutropius is by H. Droysen (1879), containing the Greek version and the enlarged editions of Paulus Diaconus and Landolfus. There are numerous English editions and translations.

Paeanius was a late Roman Empire historian, author of a translation into Greek language of the Latin Breviarium historiae Romanae, the historical work of Eutropius.

The Breviarium was completed by Eutropius within 369: Paeanius' translation appeared before 380. The Breviarium was a compendium of ancient Roman history, used both as a textbook in schools and as a fast course on Roman history for the higher social classes (it was dedicated to Emperor Valens): Paeanius' translation allowed Greek-speaking people to have a graceful version of this compendium. (From Wikipedia¹¹)

Eutropius Hist., Breviarium ab urbe condita (Paeanii translatio) (2236: 001) “Παιανίου μετάφρασις εἰς τὴν τοῦ Εὐτροπίου Ῥωμαϊκὴν ἱστορίαν”, Ed. Lambros, S.P., 1912; Νέος Ἑλληνομνημῶν 9. Book 7, chapter 10, line 1

Πρὸς αὐτὸν καὶ Ἰνδοὶ πρεσβεῖαν ἔστειλαν, οὕτω πρότερον τὴν Ῥωμαϊκὴν βασιλείαν οὐδὲ ἀκοῇ δεδεγμένοι.

Eutropius Hist., Breviarium ab urbe condita (Paeanii translatio) Book 8, chapter 3, line 9

Μεσσηνίους τε μάχῃ νικήσας κτῆμά τε καὶ τούτους αὐτῷ ποιησάμενος, ἄχρις αὐτῶν ἐχώρησεν Ἰνδῶν καὶ τῆς Ἑρυθρᾶς κα- λουμένης θαλάσσης.

11. http://en.wikipedia.org/wiki/Eutropius_%28historian%29

5.13. LONGUS

Eutropius Hist., Breviarium ab urbe condita (Paeanii translatio) Book 8, chapter 3, line 14

Πρῶτος καὶ τὴν Ἀραβίαν ἐπαρχίαν ἐποίησε στόλον τε ἐγκατέστησε κατὰ τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν, ὥστε αὐτῷ καὶ διὰ θαλάττης ἐξεῖναι πολιορκεῖν Ἰνδοὺς.

5.13 Longus

Longus, sometimes Longos (Greek: Λόγγος), was the author of an ancient Greek novel or romance, Daphnis and Chloe. Very little is known of his life, and it is assumed that he lived on the isle of Lesbos (setting for Daphnis and Chloe) during the 2nd century AD

It has been suggested[by whom?] that the name Longus is merely a misinterpretation of the last word of Daphnis and Chloe's title *Λεσβιακῶν ἐρωτικῶν λόγοι* ("story of a Lesbian romance", "Lesbian" for "from Lesbos island") in the Florentine manuscript; Seiler[citation needed] also observes that the best manuscript begins and ends with *λόγου* (not *λόγγου*) *ποιμενικῶν*. If his name was really Longus, he was probably a freedman of some Roman family which bore that name as a cognomen. (From Wikipedia¹²)

Longus Scr. Erot., Daphnis et Chloe (0561: 001) "Longus. Pastorales (Daphnis et Chloé)", Ed. Dalmeyda, G. Paris: Les Belles Lettres, 1934, Repr. 1971. Book 4, chapter 3, section 2, line 3

Εἶχε δὲ καὶ ἔνδοθεν ὁ νεὸς Διονυσιακὰς γραφάς· Σεμέλην τίκτουσαν, Ἀριάδνην καθεύδουσαν, Λυκοῦργον δεδεμένον, Πενθέα διαιρούμενον· ἐπῆσαν καὶ Ἰνδοὶ νικῶμενοι καὶ Τυρρηνοὶ μεταμορφούμενοι· πανταχοῦ Σάτυροι <πατοῦντες>, πανταχοῦ Βάκχαι χρεεύουσai· οὐδὲ ὁ Πὰν ἡμέλητο· ἐκαθέζετο δὲ καὶ αὐτὸς συρίζων ἐπὶ πέτρας, ὅμοιος ἐνδιδόντι κοινὸν μέλος καὶ τοῖς πατοῦσι καὶ ταῖς χρεευούσαις.

5.14 Pseudo-Apollodorus

The Bibliotheca (Greek: Βιβλιοθήκη, Bibliothēkē, "library") is an ancient Greek compendium of myths and heroic legends, arranged in three books.

12. <http://en.wikipedia.org/wiki/Longus>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

It was known traditionally as the Library of Apollodorus, but the attribution is now regarded as false. The Bibliotheca has been called "the most valuable mythographical work that has come down from ancient times".[1] An epigram recorded by Photius expressed its purpose:

It has the following not ungraceful epigram: 'Draw your knowledge of the past from me and read the ancient tales of learned lore. Look neither at the page of Homer, nor of elegy, nor tragic muse, nor epic strain. Seek not the vaunted verse of the cycle; but look in me and you will find in me all that the world contains'.[2]

The brief and unadorned accounts of myth in the Bibliotheca have led some commentators to suggest that even its complete sections are an epitome of a lost work.

Pseudo-Apollodorus

A certain "Apollodorus" is indicated as author on some surviving manuscripts (Diller 1983). This Apollodorus has been mistakenly identified with Apollodorus of Athens (born c. 180 BC), a student of Aristarchus of Samothrace, mainly as it is known—from references in the minor scholia on Homer—that Apollodorus of Athens did leave a similar comprehensive repertory on mythology, in the form of a verse chronicle. The text that we[who?] possess, however, cites a Roman author: Castor the Annalist, a contemporary of Cicero in the 1st century BC. The mistaken attribution was made by scholars from Photius onwards.[citation needed] Since for chronological reasons Apollodorus of Athens could not have written the book, the author of the Bibliotheca is conventionally called the "Pseudo-Apollodorus" by those wishing to be scrupulously correct. Traditional references simply instance "the Library and Epitome".

One of his many sources was the Tragodoumena (Subjects of Tragedies) a 4th-century B.C. analysis of the myths in Greek tragedies by Asclepiades of Tragilus,[3] the first known Greek mythographic compilation.[4] (From Wikipedia¹³)

Pseudo-Apollodorus Myth., Bibliotheca (sub nomine Apollodori) (0548: 001) "Apollodori bibliotheca. Pediasimi libellus de duodecim Herculis laboribus", Ed. Wagner, R. Leipzig: Teubner, 1894; Mythographi Graeci 1. Chapter 1, section 147, line 6

ἀλλ' οὗτος μὲν πολλῶν κρατήσας βαρβάρων τὴν ὑφ' ἑαυτὸν χώραν ἄπασαν Μηδῖαν ἐκάλεσε, καὶ στρατεύο- μενος ἐπὶ Ἴνδου ἀπέθανε· Μήδεια δὲ εἰς Κόλχους ἦλθεν ἄγνωστος, καὶ

13. <http://en.wikipedia.org/wiki/Pseudo-Apollodorus>

5.15. *PERIPLUS MARIS ERYTHRAEI*

καταλαβοῦσα Αἰήτην ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ Πέρσου τῆς βασιλείας ἐστερημένον, κτείνασα τοῦτον τῷ πατρὶ τὴν βασιλείαν ἀποκατέστησεν.

Pseudo-Apollodorus Myth., Bibliotheca (sub nomine Apollodori) Chapter 3, section 34, line 1

καὶ τὸ μὲν πρῶτον Πρωτεὺς αὐτὸν ὑπο-δέχεται βασιλεὺς Αἰγυπτίων, αὐθις δὲ εἰς Κύβελα τῆς Φρυγίας ἀφικνεῖται, κακεῖ καθαρθεὶς ὑπὸ Ῥέας καὶ τὰς τελετὰς ἐκμαθὼν, καὶ λαβὼν παρ' ἐκείνης τὴν στολήν, [ἐπὶ Ἰνδοῦς] διὰ τῆς Θράκης ἠπείγετο.

Pseudo-Apollodorus Myth., Bibliotheca (sub nomine Apollodori) Chapter 3, section 36, line 1

διελθὼν δὲ Θράκην [καὶ τὴν Ἰνδικὴν ἅπασαν, στήλας ἐκεῖ στήσας] ἦκεν εἰς Θήβας, καὶ τὰς γυναικάς ἠνάγκασε καταλιπούσας τὰς οἰκίας βακχεύειν ἐν τῷ Κιθαιρῶνι.

5.15 *Periplus Maris Erythraei*

The Periplus of the Erythraean Sea or Periplus of the Red Sea (Greek: *Περίπλους τῆς Ἐρυθρᾶς Θαλάσσης*, Latin: *Periplus Maris Erythraei*) is a Greco-Roman periplus, written in Greek, describing navigation and trading opportunities from Roman Egyptian ports like Berenice along the coast of the Red Sea, and others along Northeast Africa and the Indian subcontinent. The text has been ascribed to different dates between the 1st and 3rd centuries AD, but a mid-1st century date is now the most commonly accepted. Although the author is unknown, it is clearly a firsthand description by someone familiar with the area and is nearly unique in providing accurate insights into what the ancient world knew about the lands around the Indian Ocean.

Although Erythraean Sea (Greek: *Ἐρυθρά Θάλασσα*) literally means "Red Sea", to the Greeks it included the Indian Ocean and the Persian Gulf.

Overview 17th century map depicting the locations of the Periplus of the Erythraean Sea.

The work consists of 66 chapters, most of them about the length of a long paragraph in English. For instance, the short Chapter 9 reads in its entirety:

"From Malao (Berbera) it is two courses to the mart of Moundou, where ships anchor more safely by an island lying very close to the land. The imports to this are as aforesaid [Chapter 8 mentions iron, gold, silver, drinking

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

cups, etc.], and from it likewise are exported the same goods [Chapter 8 mentions myrrh, douaka, makeir, and slaves], and fragrant gum called mokrotou (cf. Sanskrit makaranda). The inhabitants who trade here are more peaceful.”

In many cases, the description of places is sufficiently accurate to identify their present locations; for others, there is considerable debate. For instance, a "Rhapta" is mentioned as the farthest market down the African coast of "Azania", but there are at least five locations matching the description, ranging from Tanga to south of the Rufiji River delta. The description of the Indian coast mentions the Ganges River clearly, yet after that is somewhat garbled, describing China as a "great inland city Thina" that is a source of raw silk.

The Periplus says that a direct sailing route from the Red Sea to India across the open ocean was discovered by Hippalus (1st century BC).

Many trade goods are mentioned in the Periplus, but some of the words naming trade goods are seen nowhere else in ancient literature, and so we can only guess as to what they might be. For example, one trade good mentioned is "lakkos chromatinos". The name lakkos appears nowhere else in ancient Greek or Roman literature. The name re-surfaces in late medieval Latin as lacca, borrowed from medieval Arabic lakk in turn borrowed from Sanskrit lakh, meaning lac i.e. a red-colored resin native to India used as a lacquer and used also as a red colorant.[1] Some other named trade goods remain obscure.

The Periplus text derives from a Byzantine 10th-century manuscript in minuscule hand, contained in the collections of the University Library Heidelberg (CPG 398: 40v-54v), and a copy of it dating from the 14th or 15th century in the British Museum (B.M. Add 19391 9r-12r). In the 10th-century manuscript, the text is attributed to Arrian, probably for no deeper reason than that the manuscript was adjacent to the Periplus Ponti Euxini written by him. The Periplus was edited by Sigmund Gelen (Zikmund Hruby z Jeleni of Prague)[2] and first published in a modern edition by Hieronymus Froben in 1533. This edition was corrupt and full of errors but served for later editions for three centuries until the rediscovery of the 10th century Heidelberg manuscript which was taken to Rome during the Thirty Years War (1618–1648), then to Paris under Napoleon, and finally returned to Heidelberg in 1816.[3] Date/Authorship

One historical analysis, published by Schoff in 1912, narrowed the date of the

5.15. *PERIPLUS MARIS ERYTHRAEI*

text to 60 A. D.[4] Though narrowing the date down, from 1912, to a single year roughly 2000 years earlier might be considered remarkable by modern standards, a date of 60 A. D. nevertheless remains in perfect agreement with present day estimates of in the middle of the 1st century. Schoff additionally provides an historical analysis as to the text's original authorship[5] and arrives at the conclusion that the author must have been a "Greek in Egypt, a Roman subject,"[6] and by Schoff's calculations this would be during the time of Tiberius Claudius Balbilus (who coincidentally also was an Egyptian Greek).

John Hill maintains that the "Periplus can now be confidently dated to between 40 and 70 CE and, probably, between CE 40 and 50." [7]

Schoff continues by noting that the author could not have been "a highly educated man" as "is evident from his frequent confusion of Greek and Latin words and his clumsy and sometimes ungrammatical constructions." [8] Because of "the absence of any account of the journey up the Nile and across the desert from Coptos," [8] Schoff prefers to pinpoint the author's residence to "Berenice rather than Alexandria." [8] Though Schoff is unclear about which "Berenice" he is referring to and several possibilities exist for "Berenice", it is actually Berenice Troglodytica which is documented, discussed at length and vividly described within the periplus text itself.[9]

One peculiarity noted by Schoff while translating from the original Greek version is that "the text is so vague and uncertain that [the author] seems rather to be quoting from someone else, unless indeed much of this part of the work has been lost in copying." [8] Opone (Somalia) Main article: Hafun

Ras Hafun in northern Somalia is believed to be the location of the ancient trade center of Opone. Ancient Egyptian, Roman and Persian Gulf pottery has been recovered from the site by an archaeological team from the University of Michigan. Opone is in the thirteenth entry of the Periplus of the Erythraean Sea, which in part states:

"And then, after sailing four hundred stadia along a promontory, toward which place the current also draws you, there is another market-town called Opone, into which the same things are imported as those already mentioned, and in it the greatest quantity of cinnamon is produced, (the arebo and moto), and slaves of the better sort, which are brought to Egypt in increasing numbers; and a great quantity of tortoiseshell, better than that found elsewhere." —Periplus of the Erythraean Sea, Chap.13[10]

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

In ancient times, Opone operated as a port of call for merchants from Phoenicia, Egypt, Greece, Persia, Yemen, Nabataea, Azania, the Roman Empire and elsewhere, as it possessed a strategic location along the coastal route from Azania to the Red Sea. Merchants from as far afield as Indonesia and Malaysia passed through Opone, trading spices, silks and other goods, before departing south for Azania or north to Yemen or Egypt on the trade routes that spanned the length of the Indian Ocean's rim. As early as 50 AD, Opone was well-known as a center for the cinnamon trade, along with the trading of cloves and other spices, ivory, exotic animal skins and incense. Malao (Somalia) Main article: Berbera

The ancient port city of Malao, situated in present-day Berbera in north-western Somalia, is also mentioned in the Periplus:

"After Avalites there is another market-town, better than this, called Malao, distant a sail of about eight hundred stadia. The anchorage is an open roadstead, sheltered by a spit running out from the east. Here the natives are more peaceable. There are imported into this place the things already mentioned, and many tunics, cloaks from Arsinoe, dressed and dyed; drinking-cups, sheets of soft copper in small quantity, iron, and gold and silver coin, not much. There are exported from these places myrrh, a little frankincense, (that known as far-side), the harder cinnamon, duaca, Indian copal and macir, which are imported into Arabia; and slaves, but rarely." —Periplus of the Erythraean Sea, Chap.8[10]

Aksum Empire (Eritrea and Ethiopia) Main article: Kingdom of Aksum
Coins of king Endybis, 227-235 AD. British Museum. The left one reads in Greek "AXWMITW BACIAEYC", "King of Axum". The right one reads in Greek: ENΔΥΒΙΚ ΒΑCΙΑETC, "King Endybis".

Aksum is mentioned in the Periplus as an important market place for ivory, which was exported throughout the ancient world:

"From that place to the city of the people called Auxumites there is a five days' journey more; to that place all the ivory is brought from the country beyond the Nile through the district called Cyeneum, and thence to Adulis." —Periplus of the Erythraean Sea, Chap.4

According to the Periplus, the ruler of Aksum in the 1st century AD was Zoscales, who, besides ruling in Aksum also held under his sway two harbours on the Red Sea: Adulis (near Massawa) and Avalites (Assab). He is also said to have been familiar with Greek literature:

5.15. *PERIPLUS MARIS ERYTHRAEI*

"These places, from the Calf-Eaters to the other Berber country, are governed by Zoscales; who is miserly in his ways and always striving for more, but otherwise upright, and acquainted with Greek literature." —Periplus of the Erythraean Sea, Chap.5[10]

Himyarite kingdom and Saba (Arabia) Main article: Himyarite Kingdom
Main article: Sheba Coin of the Himyarite Kingdom, southern coast of the Arabian Peninsula, in which stopped ships between Egypt and India passed. This is an imitation of a coin of Augustus. 1st Century AD.

Ships from Himyar regularly traveled the East African coast. The Periplus of the Erythraean Sea describes the trading empire of Himyar and Saba, regrouped under a single ruler Charibael (Karab Il Watar Yuhan'em II), who is said to have been on friendly terms with Rome:

"23. And after nine days more there is Saphar, the metropolis, in which lives Charibael, lawful king of two tribes, the Homerites and those living next to them, called the Sabaites; through continual embassies and gifts, he is a friend of the Emperors." —Periplus of the Erythraean Sea, Paragraph 23.[10]

Frankincense kingdom (Hadramaut)

The Frankincense kingdom is described further east along the southern coast of the Arabian Peninsula, with the harbour of Cana (South Arabic Qana, modern Bir Ali in Hadramaut). The ruler of this kingdom is named Eleazus, or Eleazar, thought to correspond to King Iliazz Yalit I:

"27. After Eudaemon Arabia there is a continuous length of coast, and a bay extending two thousand stadia or more, along which there are Nomads and Fish-Eaters living in villages; just beyond the cape projecting from this bay there is another market-town by the shore, Cana, of the Kingdom of Eleazus, the Frankincense Country; and facing it there are two desert islands, one called Island of Birds, the other Dome Island, one hundred and twenty stadia from Cana. Inland from this place lies the metropolis Sabbathath, in which the King lives. All the frankincense produced in the country is brought by camels to that place to be stored, and to Cana on rafts held up by inflated skins after the manner of the country, and in boats. And this place has a trade also with the far-side ports, with Barygaza and Scythia and Omana and the neighboring coast of Persia." —Periplus of the Erythraean Sea, Chap 27

Rhapta (Tanzania - or Mozambique?)

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Recent research by the Tanzanian archaeologist Felix Chami has uncovered extensive remains of Roman trade items near the mouth of the Rufiji River and the nearby Mafia island, and makes a strong case that the ancient port of Rhapta was situated on the banks of the Rufiji River just south of Dar es Salaam.

The Periplus informs us that:

"Two runs beyond this island [Menuthias = Zanzibar?] comes the very last port of trade on the coast of Azania, called Rhapta ["sewn"], a name derived from the aforementioned sewn boats, where there are great quantities of ivory and tortoise shell." [11]

Chami summarizes the evidence for Rhapta's location as follows:

"The actual location of the Azanian capital, Rhapta, remains unknown. However, archaeological indicators reported above suggest that it was located on the coast of Tanzania, in the region of the Rufiji River and Mafia Island. It is in this region where the concentration of Panchaea/Azanian period settlements has been discovered. If the island of Menuthias mentioned in the Periplus was Zanzibar, a short voyage south would land one in the Rufiji region. The 2nd century geographer, Ptolemy, locates Rhapta at latitude 8° south, which is the exact latitude of the Rufiji Delta and Mafia Island. The metropolis was on the mainland about one degree west of the coast near a large river and a bay with the same name. While the river should be regarded as the modern Rufiji River, the bay should definitely be identified with the calm waters between the island of Mafia and the Rufiji area. The peninsula east of Rhapta would have been the northern tip of Mafia Island. The southern part of the bay is protected from the deep sea by numerous deltaic small islets separated from Mafia Island by shallow and narrow channels. To the north the bay is open to the sea and any sailor entering the waters from that direction would feel as if he were entering a bay. Even today the residents identify these waters as a bay, referring to it as a 'female sea', as opposed to the more violent open sea on the other side of the island of Mafia." [12]

In recent years, Felix Chami has found archaeological evidence for extensive Roman trade on Mafia Island and, not far away, on the mainland, near the mouth of the Rufiji River, which he dated to the first few centuries CE. Furthermore, J. Innes Miller points out that Roman coins have been found on Pemba island, just north of Rhapta. [13]

Nevertheless, Carl Peters has argued that Rhapta was near modern-day Quelimane in Mozambique [14], citing the fact that (according to the Periplus)

5.15. *PERIPLUS MARIS ERYTHRAEI*

the coastline there ran down towards the southwest. Peters also suggests that the description of the "Pyralaoi" (i.e., the "Fire people") - "situated at the entry to the [Mozambique] Channel" - indicates that they were the inhabitants of the volcanic Comoro Islands. He also maintains that Menuthias (with its abundance of rivers and crocodiles) cannot have been Zanzibar; i.e., Madagascar seems more likely.

Interestingly, the Periplus informs us that Rhapta, was under the firm control of a governor appointed by Arabian king of Musa,[disambiguation needed] taxes were collected, and it was serviced by "merchant craft that they staff mostly with Arab skippers and agents who, through continual intercourse and intermarriage, are familiar with the area and its language." [11]

The Periplus explicitly states that Azania (which included Rhapta) was subject to Charibaël, the king of both the Sabaeans and Homerites in the southwest corner of Arabia. The kingdom is known to have been a Roman ally at this period. Charibaël is stated in the Periplus to be "a friend of the (Roman) emperors, thanks to continuous embassies and gifts" and, therefore, Azania could fairly be described as a vassal or dependency of Rome, just as Zesan is described in the 3rd century Chinese history, the *Weilüe*. [15] [16] Barygaza (India) Main article: Bharuch

Trade with the Indian harbour of Barygaza is described extensively in the Periplus. Nahapana, ruler of the Indo-Scythian Western Satraps is mentioned under the name Nambanus, [17] as ruler of the area around Barigaza:

41. "Beyond the gulf of Baraca is that of Barygaza and the coast of the country of Ariaca, which is the beginning of the Kingdom of Nambanus and of all India. That part of it lying inland and adjoining Scythia is called Abiria, but the coast is called Syrastrène. It is a fertile country, yielding wheat and rice and sesame oil and clarified butter, cotton and the Indian cloths made therefrom, of the coarser sorts. Very many cattle are pastured there, and the men are of great stature and black in color. The metropolis of this country is Minnagara, from which much cotton cloth is brought down to Barygaza." —Periplus of the Erythraean Sea, Chap. 41 [10]

Under the Western Satraps, Barigaza was one of the main centers of Roman trade with India. The Periplus describes the many goods exchanged:

49. There are imported into this market-town (Barigaza), wine, Italian preferred, also Laodicea[disambiguation needed]n and Arabian; copper, tin, and lead; coral and topaz; thin clothing and inferior sorts of all kinds; bright-colored girdles a cubit wide; storax, sweet clover, flint glass, realgar, anti-

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

mony, gold and silver coin, on which there is a profit when exchanged for the money of the country; and ointment, but not very costly and not much. And for the King there are brought into those places very costly vessels of silver, singing boys, beautiful maidens for the harem, fine wines, thin clothing of the finest weaves, and the choicest ointments. There are exported from these places spikenard, costus, bdellium, ivory, agate and carnelian, lycium, cotton cloth of all kinds, silk cloth, mallow cloth, yarn, long pepper and such other things as are brought here from the various market-towns. Those bound for this market-town from Egypt make the voyage favorably about the month of July, that is Epiphi.” —Periplus of the Erythraean Sea, Chapter 49.[18]

Goods were also brought down in quantity from Ujjain, the capital of the Western Satraps:

48. Inland from this place and to the east, is the city called Ozene, formerly a royal capital; from this place are brought down all things needed for the welfare of the country about Barygaza, and many things for our trade : agate and carnelian, Indian muslins and mallow cloth, and much ordinary cloth. —Periplus of the Erythraean Sea, Chapter 48.[18]

Early Chera, Chola, and early Pandyan kingdoms (India) See also: Chera Dynasty, Early Pandyan Kingdom, Muziris, and Economy of ancient Tamil country

The lost port city of Muziris (Near present day Cochin) in the Chera kingdom, as well as the Early Pandyan Kingdom are mentioned in the Periplus as major centers of trade, pepper and other spices, metal work and semiprecious stones, between Damirica and the Roman Empire.

According to the Periplus, numerous Greek seamen managed an intense trade with Muziris:

Then come Naura (Kannur) and Tyndis, the first markets of Damirica or Limyrike, and then Muziris and Nelcynda, which are now of leading importance. Tyndis is of the Kingdom of Cerobothra; it is a village in plain sight by the sea. Muziris, of the same kingdom, abounds in ships sent there with cargoes from Arabia, and by the Greeks; it is located on a river (River Periyar), distant from Tyndis by river and sea five hundred stadia, and up the river from the shore twenty stadia. Nelcynda is distant from Muziris by river and sea about five hundred stadia, and is of another Kingdom, the Pandian. This place also is situated on a river, about one hundred and twenty stadia from the sea....” —The Periplus of the Erythraean Sea, 53-54

5.15. *PERIPLUS MARIS ERYTHRAEI*

Damirica or Limyrike is Tamilakkam (Tamil தமிலகம் – the “Tamil country”). Further, this area served as a hub for trade with the interior, in the Gangetic plain:

Besides this there are ex-ported great quantities of fine pearls, ivory, silk cloth, spikenard from the Ganges, malabathrum from the places in the interior, transparent stones of all kinds, diamonds and sapphires, and tortoise-shell; that from Chryse Island, and that taken among the islands along the coast of Damirica (Limyrike). They make the voyage to this place in a favorable season who set out from Egypt about the month of July, that is Epiphi. —The Periplus of the Erythraean Sea, 56

Remains of the Indo-Greek kingdom The Periplus explains that coins of the Indo-Greek king Menander I were current in Barigaza.

The Periplus describes numerous Greek buildings and fortifications in Barigaza, although mistakenly attributing them to Alexander the Great, who never went this far south. If true, this account would relate to the remains of the southern expansion of the Indo-Greeks into Gujarat:

”The metropolis of this country is Minnagara, from which much cotton cloth is brought down to Barygaza. In these places there remain even to the present time signs of the expedition of Alexander, such as ancient shrines, walls of forts and great wells.” —Periplus, Chap. 41

The Periplus further testifies to the circulation of Indo-Greek coinage in the region:

”To the present day ancient drachmae are current in Barygaza, coming from this country, bearing inscriptions in Greek letters, and the devices of those who reigned after Alexander, Apollodorus [sic] and Menander.” —Periplus Chap. 47[10]

The Greek city of Alexandria Bucephalous on the Jhelum River is mentioned in the Periplus, as well as in the Roman Peutinger Table:

”The country inland of Barigaza is inhabited by numerous tribes, such as the Arattii, the Arachosii, the Gandaraei and the people of Poclais, in which is Bucephalus Alexandria” —Periplus of the Erythraean Sea, 47[10]

(From Wikipedia¹⁴)

14. http://en.wikipedia.org/wiki/Periplus_Maris_Erythraei

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei (0071: 001) “Geographi Graeci minores, vol. 1”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1855, Repr. 1965. Section 6, line 18

Ὅμοίως δὲ καὶ ἀπὸ τῶν ἔσω τόπων τῆς Ἀραβικῆς σίδηρος Ἰνδικὸς καὶ στόμωμα καὶ ὀθόνιον Ἰνδικὸν τὸ πλατύτερον, ἢ λεγομένη μοναχὴ, καὶ σαγματογῆναι καὶ περιζώματα καὶ καυνάκαι καὶ μολόχιναι καὶ σινδόνες ὀλίγαι καὶ λάκκος χρωμάτινος.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 17, line 9

Ἐκφέρεται δὲ ἀπὸ τῶν τόπων ἐλέφας πλείστος (ἥσσαν δὲ τοῦ Ἀδουλιτι-κοῦ) καὶ ἑινόκερος καὶ χελώνη διάφορος μετὰ τὴν Ἰνδικὴν καὶ ναύπλιος ὀλίγος.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 26, line 9

Εὐδαίμων δ' ἐπεκλήθη, πρότερον οὖσα πόλις, ὅτε, μήπω ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς εἰς τὴν Αἰγύπτου ἐρχομένων μηδὲ ἀπὸ [τῆς] Αἰγύπτου τολμών-των εἰς τοὺς ἔσω τόπους διαίρειν, ἀλλ' ἄχρι ταύτης παραγινομένων, τοὺς παρ' ἀμφοτέρων φόρτους ἀπεδέ-χετο, ὥσπερ Ἀλεξάνδρεια καὶ τῶν ἔξωθεν καὶ τῶν ἀπὸ τῆς Αἰγύπτου φερομένων ἀποδέχεται.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 30, line 15

Οἱ δ' ἐνοικοῦντες αὐτὴν ὀλίγοι κατὰ μίαν πλευρὰν τῆς νήσου τὴν πρὸς ἀπαρκτίαν οἰκοῦσι, καθ' ὃ μέρος ἀποβλέπει τὴν ἡπειρον· εἰσὶ δὲ ἐπίξενοι καὶ ἐπίμικτοι Ἀράβων τε καὶ Ἰνδῶν καὶ ἔτι Ἑλλήνων τῶν πρὸς ἐργασίαν ἐκπλεόντων.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 30, line 24

Γίνεται δὲ ἐν αὐτῇ καὶ κιννάβαρι τὸ λεγόμενον Ἰνδικόν, ἀπὸ τῶν δένδρων ὡς δάκρυ συναγόμενον.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 31, line 6

Συνεχρήσαντο δὲ αὐτῇ καὶ ἀπὸ Μούζα τινὲς καὶ τῶν ἐκπλεόντων ἀπὸ Λιμυρικῆς καὶ Βαρυγάζων ὅσοι κατὰ τύχην εἰς αὐτὴν ἐπιβάλλοντες ὄρυζαν τε καὶ σῖτον καὶ ὀθόνην Ἰνδικὴν ἀντικαταλλασσόμενοι καὶ σώματα θηλυκὰ διὰ σπά-νιν ἐκεῖ προχωροῦντα, χελώνην ἀντεφορτίζοντο πλεί-στην· νῦν δὲ ὑπὸ τῶν βασιλέων ἡ νῆσος ἐκμεμίσθωται καὶ παραφυλάσσεται.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 36, line 12

Εἰς-φέρεται δὲ ἀπὸ ἐκατέρων τῶν ἐμπορίων εἷς τε Βαρύ-γαζα καὶ εἰς Ἀραβίαν πινικόν, πολὺ μὲν, χεῖρον δὲ τοῦ Ἰνδικοῦ, καὶ πορφύρα καὶ ἱματισμὸς ἐντόπιος καὶ οἶνος καὶ φοῖνιξ πολὺς καὶ χρυσὸς καὶ σώματα.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 39, line 10

5.15. PERIPLUS MARIS ERYTHRAEI

Ἀντιφορτίζεται δὲ κόστος, βδέλλα, λύκιον, νάρδος καὶ καλλεανὸς λίθος καὶ σάπφειρος καὶ Σηρικὰ δέρματα καὶ ὀθόνιον καὶ νῆμα Σηρικὸν καὶ Ἰνδικὸν μέλαν.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 39, line 11

Ἀνάγονται δὲ καὶ αὐτοὶ οἱ πλείοντες μετὰ τῶν Ἰνδικῶν * περὶ τὸν Ἰούλιον μῆνα, ὅς ἐστιν Ἐπιφί· δυσεπίβολος μὲν, ἐπιφορώτερος δὲ ἐκείνων καὶ συντομώτερος ὁ πλοῦς.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 41, line 3

Μετὰ δὲ τὸν Βαράκην εὐθύς ἐστιν ὁ Βαρυγάζων κόλπος καὶ ἡ ἥπειρος τῆς Ἀριακῆς χώρας, τῆς Μαι- βάρου βασιλείας ἀρχὴ καὶ τῆς ὅλης Ἰνδικῆς οὖσα.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 41, line 7

Πολυ- φόρος δὲ ἡ χώρα σίτου καὶ ὀρύζης καὶ ἐλαίου σπασμί- νου καὶ βουτύρου καὶ καρ- πάσου καὶ τῶν ἐξ αὐτῆς Ἰνδι- κῶν ὀθονίων τῶν χυδαίων· βουκόλια δὲ ἐν αὐτῇ πλείστα καὶ ἄνδρες ὑπερμεγέθεις τῷ σώματι καὶ μέλανες τῇ χροιά.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 45, line 1

Πᾶσα μὲν ἡ Ἰνδικὴ χώρα ποταμοὺς ἔχει πλεί- στους, ἀμπώτεις τε καὶ πλήμας μεγίστας, συναυξομέ- νας ὑπὸ τὴν ἀνατολὴν καὶ τὴν πανσέληνον ἄχρι τριῶν ἡμερῶν, καὶ τοῖς μεταξὺ καταστήμασι τῆς σελήνης ἐλασσουμένας, πολὺ δὲ μᾶλλον ἢ κατὰ Βαρυγάζων, ὥστε αἰφνίδιον τὸν τε βυθὸν ὀραῖσθαι, καὶ ** τινὰ μέρη τῆς ἡπείρου, ποτὲ δὲ ξηρὰ τὰ πρὸ μικροῦ πλωϊζόμενα, τοὺς τε ποταμοὺς ὑπὸ τὴν εἰσβολὴν τῆς πλήμης, τοῦ πελάγους ὅλου συνωθουμένου, σφοδρότερον ἄνω φέρε- σθαι τοῦ κατὰ φύσιν ρεύματος ἐπὶ πλείστους σταδίους.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 47, line 8

Καὶ Ἀλέξανδρος ὁρμηθεὶς ἀπὸ τῶν μερῶν τούτων ἄχρι τοῦ Γάγγους διῆλθε, καταλιπὼν τὴν τε Λιμυρικὴν καὶ τὰ νότια τῆς Ἰνδικῆς· ἀφ' οὗ μέχρι νῦν ἐν Βαρυ- γάζοις παλαιαὶ προχω- ροῦσι δραχμαί, γράμμασιν Ἑλ- ληνικοῖς ἐγκεχαραγμένα ἐπίσημα τῶν μετ' Ἀλέξαν- δρον βεβασιλευκότων Ἀπολλοδότου καὶ Μενάνδρου.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 48, line 5

Ἐνὶ δὲ αὐτῇ καὶ ἐξ ἀνατολῆς πόλις λεγομένη Ὀζήνη, ἐν ἣ καὶ τὰ βασίλεια πρότερον ἦν· ἀφ' ἧς πάντα τὰ πρὸς εὐθηνίαν τῆς χώρας εἰς Βαρυγάλα κα- ταφέρεται καὶ τὰ πρὸς ἐμπορίαν τὴν ἡμετέραν, ὀνυχίνη λιθία καὶ μουρρίνη καὶ σινδόνες Ἰνδικαὶ καὶ μολόχιναι καὶ ἱκανὸν χυδαῖον ὀθόνιον.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 57, line 7

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Τοῦτον δὲ ὅλον τὸν εἰρημένον περίπλου ἀπὸ Κανῆς καὶ τῆς Εὐδαίμονος Ἀραβίας οἱ μὲν * μικροτέροις πλοίοις περικολπίζοντες ἔπλεον, πρῶτος δὲ Ἴππαλος κυβερνήτης, κατανοήσας τὴν θέσιν τῶν ἐμπορίων καὶ τὸ σχῆμα τῆς θαλάσσης, τὸν διὰ πελάγους ἐξεῦρε πλοῦν, ἀφ' οὗ καὶ τοπικῶς ἐκ τοῦ ὠκεανοῦ φυσάντων, κατὰ τὸν καιρὸν τῶν παρ' ἡμῖν, ἐτησίαν ἐν τῷ Ἰνδικῷ πελάγει ὁ λιβόνοτος φαίνεται [Ἴππαλος] προσονομάζεσθαι [[ἀπὸ τῆς προσηγορίας τοῦ πρώτως ἐξευρηκότος τὸν διάπλου]].

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 63, line 6

Ποταμὸς δέ ἐστι περὶ αὐτὴν ὁ Γάγγης λεγόμενος, καὶ αὐτὸς μέγιστος τῶν κατὰ τὴν Ἰνδικήν, ἀπόβασιν τε καὶ ἀνάβασιν τὴν αὐτὴν ἔχων τῷ Νείλῳ, καθ' ὃν καὶ ἐμπόριόν ἐστιν ὁμώνυμον τῷ ποταμῷ, ὁ Γάγγης, δι' οὗ φέρεται τό τε μαλαβάθρον καὶ ἡ Γαγγητικὴ νάρδος καὶ πινικὸν καὶ σινδόνες αἱ διαφορώταται, αἱ Γαγγητικαὶ λεγόμεναι.

Periplus Maris Erythraei, Anonymi (Arriani, ut fertur) periplus maris Erythraei Section 65, line 20

Ἐνθεν τὰ τρία μέρη τοῦ μαλαβάθρου γίνεσθαι καὶ τότε φέρεται εἰς τὴν Ἰνδικὴν ὑπὸ τῶν κατ' ἐργαζομένων αὐτά.

5.16 Strabo

Strabo[1] (play /'streibou/; Greek: Στράβων Strabōn; 64/63 BCE – ca. 24 CE), was a Greek geographer, philosopher and historian. (From Wikipedia¹⁵)

Strabo Geogr., Geographica (0099: 001) “Strabonis geographica, 3 vols.”, Ed. Meineke, A. Leipzig: Teubner, 1877, Repr. 1969. Book Cap, chapter 1, section 15, line 1

ΙΕ Τὸ πεντεκαίδεκατον περιέχει Ἰνδὴν καὶ Περσίδα.

Strabo Geogr., Geographica Book Cap, chapter 1, section 16, line 4

Ις Τὸ ἐκκαίδεκατον περιέχει τὴν Ἀσσυρίων χώραν, ἐν ἣ Βαβυλῶν καὶ Νίσιβις, πόλεις μέγιστα, καὶ τὴν Ἀδιαβηνὴν καὶ Μεσοποταμίαν, Συρίαν πᾶσαν, Φοινίκην, Παλαιστίνην, Ἀραβίαν πᾶσαν καὶ ὅσα τῆς Ἰνδικῆς τῇ Ἀραβίᾳ συνάπτει, καὶ τὴν Σαρακηνῶν, ἣν Σκηνηίτιν (leg. Σκηνίτιν) καλεῖ, καὶ πᾶσαν τὴν παρακειμένην τῇ τε νεκρᾷ θαλάσσει καὶ τῇ ἐρυθρᾷ.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 1, section 8, line 7

τὸ μὲν γὰρ ἑωθινὸν πλευρόν, τὸ κατὰ τοὺς Ἰνδοὺς, καὶ τὸ ἐσπέριον, τὸ κατὰ τοὺς Ἰβηρας καὶ τοὺς Μαυρουσίους, περιπλεῖται πᾶν ἐπὶ πολὺ τοῦ τε νοτίου μέρους καὶ τοῦ βορείου· τὸ

15. <http://en.wikipedia.org/wiki/Strabo>

5.16. STRABO

δὲ λειπόμενον ἄπλουν ἡμῖν μέχρι νῦν τῷ μὴ συμμιῆσαι μηδένας ἀλλήλοις τῶν ἀντιπεριπλεόντων οὐ πολὺ, εἴ τις συντίθῃσιν ἐκ τῶν παραλλήλων διαστημάτων τῶν ἐφικτῶν ἡμῖν.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 1, section 13, line 15

ὁμοίως δὲ καὶ τὸ παρ' Ἰνδοῖς οἰκεῖν ἢ παρ' Ἰβηρσιν· ὧν τοὺς μὲν ἐφόους μάλιστα τοὺς δὲ ἐσπερίους, τρόπον δὲ τινα καὶ ἀντίποδας ἀλλήλοις ἴσμεν.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 1, section 16, line 52

ὥστ' οὐκ ἂν εἴη θαυμαστὸν οὐδ' εἰ ἄλλος μὲν Ἰνδοῖς προσήκοι χωρογράφος, ἄλλος δὲ Αἰθίοψιν, ἄλλος δὲ Ἑλλήσι καὶ Ῥωμαίοις.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 1, section 16, line 54

τί γὰρ ἂν προσήκοι τῷ παρ' Ἰνδοῖς γεωγράφῳ καὶ τὰ κατὰ Βοιωτοὺς οὕτω φράζειν ὡς Ὅμηρος "οἴθ' Ἰρὴν ἐνέμοντο καὶ Αὐλίδας πετρῆ- εσσαν Σχοῖνόν τε Σκῶλόν τε;

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 1, section 16, line 57

ἡμῖν δὲ προσήκει, τὰ δὲ παρ' Ἰνδοῖς οὕτω καὶ τὰ καθ' ἕκαστα οὐκέτι· οὐδὲ γὰρ ἡ χρεία ἐπάγεται· μέτρον δ' αὕτη μάλιστα τῆς τοιαύτης ἐμπειρίας.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 2, section 28, line 5

Μηνύει δὲ καὶ Ἐφορος τὴν παλαιὰν περὶ τῆς Αἰθιοπίας δόξαν, ὅς φησιν ἐν τῷ περὶ τῆς Εὐρώπης λόγῳ, τῶν περὶ τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν τόπων εἰς τέτταρα μέρη διηρημένων, τὸ πρὸς τὸν ἀπηνιώτην Ἰνδοὺς ἔχειν, πρὸς νότον δὲ Αἰθίοπας, πρὸς δύσιν δὲ Κελτούς, πρὸς δὲ βορρᾶν ἄνεμον Σκύθας.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 2, section 31, line 22

οἱ μὲν δὴ πλεῖσαι φήσαντες εἰς τὴν Αἰθιοπίαν οἱ μὲν περίπλουν τῶν διὰ Γαδείρων μέχρι τῆς Ἰνδικῆς εἰσάγουσιν, ἅμα καὶ τὸν χρόνον τῇ πλάνῃ συνοικεῖ- οῦντες, ὃν φησιν ὅτι ὀγδοάτῳ ἔτει ἦλθον, οἱ δὲ διὰ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ κατὰ τὸν Ἀράβιον κόλπον, οἱ δὲ διὰ τῶν διωρύγων τινός.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 2, section 32, line 11

νὴ Δία, ἀλλ' ἡ Ἀραβία προσῆν καὶ τὰ μέχρι τῆς Ἰνδικῆς· τούτων δ' ἡ μὲν εὐδαίμων κέκληται μόνη τῶν ἀπασῶν, τὴν δὲ, εἰ καὶ μὴ ὀνομαστὶ καλοῦσιν, οὕτως ὑπολαμβάνουσι καὶ ἱστοροῦσιν ὡς εὐδαιμονεστάτην.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 2, section 32, line 15

τὴν μὲν οὖν Ἰνδικὴν οὐκ οἶδεν Ὅμηρος (εἰδὼς δὲ ἐμέμνη- το ἄν), τὴν δ' Ἀραβίαν, ἣν εὐδαίμονα προσαγορεύ- ουσιν οἱ νῦν, τότε δ' οὐκ ἦν πλουσία, ἀλλὰ καὶ αὐτὴ ἄπορος καὶ ἡ πολλὴ αὐτῆς σκηνιτῶν ἀνδρῶν· ὀλίγη δ' ἡ ἀρωματοφόρος, δι' ἣν καὶ τοῦτο τοῦνομα εὔρετο ἡ χώρα διὰ τὸ καὶ τὸν φόρτον εἶναι τὸν τοιοῦτον ἐν τοῖς παρ' ἡμῖν σπάνιον καὶ τίμιον.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 2, section 35, line 39

Θεόπομπος δὲ ἐξομολογεῖται φήσας ὅτι καὶ μύθους ἐν ταῖς ἱστορίαις ἔρει, κρεῖττον ἢ ὡς Ἡρόδοτος καὶ Κτησίας καὶ Ἑλλάνικος καὶ οἱ τὰ Ἰνδικὰ συγγρά- φαντες.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 4, section 5, line 5

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ὅτι μὲν γὰρ πλέον ἢ διπλάσιον τὸ γινώριμον μῆκός ἐστι τοῦ γινώριμου πλάτους, ὁμολογούσι καὶ οἱ ὕστερον καὶ τῶν παλαιῶν οἱ χαριέστατοι· λέγω δὲ τὸ ἀπὸ τῶν ἄκρων τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰβηρίας, τοῦ ἀπ' Αἰθιοπῶν ἕως τοῦ κατὰ Ἰέρνην κύκλου.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 4, section 5, line 10

φησὶ δ' οὖν τὸ μὲν τῆς Ἰνδικῆς μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὸ στενώτατον σταδίων μυρίων ἑξακισχιλίων (τὸ γὰρ ἐπὶ τὰ ἀκρωτήρια τεῖνον τρισχιλίοις εἶναι μείζον), τὸ δὲ ἔνθεν ἐπὶ Κασπίους πύλας μυρίων τετρακισχιλίων, εἴτ' ἐπὶ τὸν Εὐφράτην μυρίων, ἐπὶ δὲ τὸν Νεῖλον ἀπὸ τοῦ Εὐφράτου πεντακισχιλίων, ἄλλους δὲ χιλίους καὶ τριακοσίους μέχρι Κανωβικοῦ στόματος, εἴτα μέχρι τῆς Καρχηδόνος μυρίους τρισχιλίους πεντακοσίους, εἴτα μέχρι σπηλῶν ὀκτακισχιλίους τοῦλάχιστον· ὑπεραίρειν δὲ τῶν ἐπτά

μυριά-

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 4, section 6, line 8

.. ὥς οἱ μαθηματικοὶ φασί, κύκλον συνάπτειν, συμβάλλουσιν αὐτὴν ἑαυτῇ, ὥστ' εἰ μὴ τὸ μέγεθος τοῦ Ἀτλαντικοῦ πελάγους ἐκάλυψε, καὶν πλεῖν ἡμᾶς ἐκ τῆς Ἰβηρίας εἰς τὴν Ἰνδικὴν διὰ τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου, τὸ λοιπὸν μέρος παρὰ τὸ λεχθὲν διάστημα ὑπὲρ τὸ τρίτον μέρος ὃν τοῦ ὅλου κύκλου· εἴπερ ὁ δι' Ἀθηνῶν ἐλάττων ἐστὶν εἴκοσι μυριάδων, ὅπου πεποιημέθα τὸν εἰρημένον σταδιασμὸν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς εἰς τὴν Ἰβηρίαν.

Strabo Geogr., Geographica Book 1, chapter 4, section 9, line 8

πολλοὺς γὰρ καὶ τῶν Ἑλλήνων εἶναι κακοὺς καὶ τῶν βαρβάρων ἀστείους, καθάπερ Ἰνδοὺς καὶ Ἀριανούς, εἴτι δὲ Ῥωμαίους καὶ Καρχηδονίους οὕτω θαυμαστώως πολιτευομένους.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 1, line 7

Ἐν δὲ τῷ τρίτῳ τῶν γεωγραφικῶν καθιστάμενος τὸν τῆς οἰκουμένης πίνακα γραμμῇ τινι διαιρεῖ δίχῃ ἀπὸ δύσεως ἐπ' ἀνατολὴν παραλλήλῃ τῇ ἰσημερινῇ γραμμῇ, πέρατα δ' αὐτῆς τίθησι πρὸς δύσει μὲν τὰς Ἡρακλείους στήλας, ἐπ' ἀνατολῇ δὲ τὰ ἄκρα καὶ ἔσχατα ὅρη τῶν ἀφορίζοντων ὁρῶν τὴν πρὸς ἄρκτον τῆς Ἰνδικῆς πλευράν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 1, line 16

μέχρι μὲν δὲ δεῦρο διὰ τῆς θαλάττης φησὶν εἶναι τὴν λεχθεῖσαν γραμμὴν καὶ τῶν παρακειμένων ἡπείρων (καὶ γὰρ αὐτὴν ὅλην τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν οὕτως ἐπὶ μῆκος τετασθαι μέχρι τῆς Κιλικίας), εἴτα ἐπ' εὐθείας πως ἐκβάλλεσθαι παρ' ὅλην τὴν ὀρεινὴν τοῦ Ταύρου μέχρι τῆς Ἰνδικῆς· τὸν γὰρ Ταῦρον ἐπ' εὐθείας τῇ ἀπὸ σπηλῶν θαλάττῃ τεταμένον δίχῃ τὴν Ἀσίαν διαιρεῖν ὅλην ἐπὶ μῆκος, τὸ μὲν αὐτῆς μέρος βόρειον ποιοῦντα τὸ δὲ νότιον, ὥστ' ὁμοίως καὶ αὐτὸν ἐπὶ τοῦ δι' Ἀθηνῶν ἰδρῦσθαι παραλλήλου καὶ τὴν ἀπὸ σπηλῶν μέχρι δεῦρο θάλατταν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 2, line 4

Ταῦτα δ' εἰπὼν οἶεται δεῖν διορθῶσαι τὸν ἄρχαῖον γεωγραφικὸν πίνακα· πολὺ γὰρ ἐπὶ τὰς ἄρκτους παραλλάττειν τὰ ἐωθινὰ μέρη τῶν ὁρῶν κατ' αὐτόν, συνεπισπᾶσθαι δὲ καὶ τὴν Ἰνδικὴν ἀρκτικωτέραν ἢ δεῖ γινομένην.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 2, line 6

5.16. STRABO

πίστιν δὲ τούτου φέρει μίαν μὲν ταύ- την, ὅτι τὰ τῆς Ἰνδικῆς ἄκρα τὰ μεσημβρινώτατα ὁμο- λογοῦσι πολλοὶ τοῖς κατὰ Μερόην ἀνταίρειν τόποις, ἀπὸ τε τῶν ἀέρων καὶ τῶν οὐρα- νίων τεκμαιρόμενοι, ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὰ βορειότατα τῆς Ἰνδικῆς τὰ πρὸς τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι Πατροκλῆς, ὁ μάλιστα πιστεύε- σθαι δίκαιος διὰ τε τὸ ἀξίωμα καὶ διὰ τὸ μὴ ιδιώτης εἶναι τῶν γεωγραφικῶν, φησὶ σταδίους μυρίους καὶ πεντακισχιλίους· ἀλλὰ μὴν καὶ τὸ ἀπὸ Μερόης ἐπὶ τὸν δι' Ἀθηνῶν παράλληλον τοσοῦτόν πῶς ἐστίν ὥστε τῆς Ἰνδικῆς τὰ προσάρκτια μέρη συνάπτοντα τοῖς

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 2, line 15

την, ὅτι τὰ τῆς Ἰνδικῆς ἄκρα τὰ μεσημβρινώτατα ὁμο- λογοῦσι πολλοὶ τοῖς κατὰ Με- ρόην ἀνταίρειν τόποις, ἀπὸ τε τῶν ἀέρων καὶ τῶν οὐρανίων τεκμαιρόμενοι, ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὰ βορειότατα τῆς Ἰνδικῆς τὰ πρὸς τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι Πατροκλῆς, ὁ μάλιστα πιστεύε- σθαι δίκαιος διὰ τε τὸ ἀξίωμα καὶ διὰ τὸ μὴ ιδιώτης εἶναι τῶν γεωγραφικῶν, φησὶ σταδίους μυρίους καὶ πεντακισχιλίους· ἀλλὰ μὴν καὶ τὸ ἀπὸ Μερόης ἐπὶ τὸν δι' Ἀθηνῶν παράλληλον τοσοῦτόν πῶς ἐστίν ὥστε τῆς Ἰνδικῆς τὰ προσάρκτια μέρη συνάπτοντα τοῖς Καυκασίοις ὄρεσιν εἰς τοῦτον τελευτᾶν τὸν κύκλον.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 3, line 14

ἀπὸ δὲ Μερόης ἐπὶ τὸν Ἑλ- λήσποντον οὐ πλείους εἰσὶ τῶν μυρίων καὶ ὀκτακισχι- λίων σταδίων, ὅσοι καὶ ἀπὸ τοῦ μεσημβρινοῦ πλευροῦ τῆς Ἰνδικῆς πρὸς τὰ περὶ τοὺς Βακτρίους μέρη, πρὸς- τεθέντων τρισχιλίων τοῖς μυρίοις καὶ πεντακισχι- λίοις, ὧν οἱ μὲν τοῦ πλάτους ἦσαν τῶν ὁρῶν οἱ δὲ τῆς Ἰνδικῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 5, line 5

τίνες οὖν ἦσαν οἱ φάσκοντες τὰ μεσημβρινὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς ἀνταίρειν τοῖς κατὰ Μερόην;

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 7, line 4

Ἔτι φησὶν ὁ Ἱππαρχος ἐν τῷ δευτέρῳ ὑπομνήματι αὐτὸν τὸν Ἑρατοσθένη διαβάλλειν τὴν τοῦ Πατρο- κλέους πίστιν ἐκ τῆς πρὸς Μεγασθένη διαφωνίας περὶ τοῦ μήκους τῆς Ἰνδικῆς τοῦ κατὰ τὸ βόρειον πλευρόν, τοῦ μὲν Μεγασθένους λέγοντος σταδίων μυρίων ἑξακισ- χιλίων, τοῦ δὲ Πατροκλέους χιλίοις λείπειν φαμένου· ἀπὸ γάρ τινος ἀναγραφῆς σταθμῶν ὀρμηθέντα τοῖς μὲν ἀπιστεῖν διὰ τὴν διαφωνίαν, ἐκείνη δὲ προσέχειν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 7, line 13

εἰ οὖν διὰ τὴν διαφωνίαν ἐνταῦθα ἄπιστος ὁ Πατροκλῆς, καίτοι παρὰ χιλίους σταδίους τῆς διαφορᾶς οὔσης, πόσω χρὴ μᾶλλον ἀπιστεῖν ἐν οἷς παρὰ ὀκτακισχιλίους ἢ διαφορά ἐστι, πρὸς δύο καὶ ταῦτα ἄνδρας συμφω- νοῦντας ἀλλήλοις, τῶν μὲν λεγόντων τὸ τῆς Ἰνδικῆς πλάτος δισμυρίων σταδίων, τοῦ δὲ μυρίων καὶ δις- χιλίων;

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 9, line 1

Ἄπαντες μὲν τοίνυν οἱ περὶ τῆς Ἰνδικῆς γράψαν- τες ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ψευδολόγοι γεγονάσι, καθ' ὑπερ- βολὴν δὲ Δημάχως, τὰ δὲ δεύτερα λέγει Μεγασθένης, Ὀνησίκριτος δὲ καὶ Νέαρχος καὶ ἄλλοι τοιοῦτοι παρα- ψελλίζοντες ἤδη.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 11, line 15

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ὥστ' οὐδ' ἐκεῖνο εὖ λέγει τό “ἐπειδὴ οὐκ ἔχομεν λέγειν οὐθ' ἡμέρας με- “γίστης πρὸς τὴν βραχυτάτην λόγον οὔτε γνώμονος “πρὸς σκιὰν ἐπὶ τῇ παρωρείᾳ τῇ ἀπὸ Κιλικίας μέχρι “Ἰνδῶν, οὐδ' εἰ ἐπὶ παραλλήλου γραμμῆς ἐστὶν ἡ λό- “ξωσις ἔχομεν εἰπεῖν, ἀλλ' ἐὰν ἀδιόρθωτον, λοξὴν φυ- “λάξαντες, ὡς οἱ ἀρχαῖοι πίνακες παρέχουσι.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 12, line 3

ὅρα γάρ, εἰ τοῦτο μὲν μὴ κινοίη τις τὸ τὰ ἄκρα τῆς Ἰν- δικῆς τὰ μεσημβρινὰ ἀνταίρειν τοῖς κατὰ Μερόην, μηδὲ τὸ διάστημα τὸ ἀπὸ Μερόης ἐπὶ τὸ στόμα τὸ κατὰ τὸ Βυζάντιον, ὅτι ἐστὶ περὶ μυρίου σταδίου καὶ ὀκτα- κισχιλίου, ποιοίη δὲ τρισμυρίων τὸ ἀπὸ τῶν μεσημ- βρινῶν Ἰνδῶν μέχρι τῶν ὀρῶν, ὅσα ἂν συμβαίη ἄτοπα.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 14, line 4

αὕτη δ' ἐστὶν ἡ περὶ τὴν Ταπροβάνην· ἡ δὲ Ταπροβάνη πεπίστευται σφόδρα ὅτι τῆς Ἰνδικῆς πρόκειται πελαγία μεγάλη νῆσος πρὸς νότον, μηκύνε- ται δὲ ἐπὶ τὴν Αἰθιοπίαν πλέον ἢ πεντακισχιλίους σταδίους, ὡς φασιν, ἐξ ἧς καὶ ἐλέφαντα κομίζεσθαι πολὺν εἰς τὰ τῶν Ἰνδῶν ἐμπορία καὶ χελώνεια καὶ ἄλ- λων φόρτον.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 14, line 11

ταύτη δὲ τῇ νήσῳ πλάτος προστεθὲν τὸ ἀνάλογον τῷ μήκει καὶ διάγραμμα τὸ ἐπ' αὐτὴν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς τῶν μὲν τρισχιλίων σταδίων οὐκ ἂν ἔλαττον ποιήσῃε διάστημα, ὅσον ἦν τὸ ἀπὸ τοῦ ὅρου τῆς οἰ- κουμένης εἰς Μερόην, εἴπερ μέλλει τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδι- κῆς ἀνταίρειν τῇ Μερόη· πιθανώτερον δ' ἐστὶ καὶ πλείους τῶν τρισχιλίων τιθέναι.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 14, line 22

τίς ἂν οὐκ θαρρήσῃε ταῦτα λέγειν, ἀκούων καὶ τῶν πάλαι καὶ τῶν νῦν τὴν εὐκρασίαν καὶ τὴν εὐ- καρπίαν λεγόντων πρῶτον μὲν τὴν τῶν προσβόρων Ἰνδῶν, ἔπειτα δὲ καὶ τὴν ἐν τῇ Ὑρκανίᾳ καὶ τῇ Ἀρίᾳ καὶ ἐφεξῆς τῇ τε Μαργιανῇ καὶ τῇ Βακτριανῇ;

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 14, line 26

ἅπασαι γὰρ αὗται προσεχεῖς μὲν εἰσι τῇ βορείῳ πλευρᾷ τοῦ Ταύρου, καὶ ἡ γε Βακτριανὴ καὶ πλησιάζει τῇ εἰς Ἰν- δοὺς ὑπερθέσει, τοσαύτη δ' εὐδαιμονία κέχρηται ὥστε πάμπολύ τι ἀπέχειν τῆς ἀοικήτου.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 15, line 14

καὶ τὸν Ὡξον δὲ τὸν ὀρίζοντα τὴν Βακτριανὴν ἀπὸ τῆς Σογδιανῆς οὕτω φασὶν εὖπλουν εἶναι ὥστε τὸν Ἰνδικὸν φόρτον ὑπερκομισθέντα εἰς αὐτὸν ῥαδίως εἰς τὴν Ὑρκανίαν κατὰγεσθαι καὶ τοὺς ἐφεξῆς τόπους μέχρι τοῦ Πόντου διὰ τῶν ποταμῶν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 17, line 22

ἔσται δὲ Βάκτρα καὶ τοῦ στόματος τῆς Κασπίας θαλάττης εἴτε Ὑρκανίας πάμπολύ τι ἀρκτικώτερα, ὅπερ τοῦ μυχοῦ τῆς Κασπίας καὶ τῶν Ἀρμενιακῶν καὶ Μηδικῶν ὀρῶν διέχει περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους, καὶ δοκεῖ αὐτῆς τῆς παραλίας μέχρι τῆς Ἰνδικῆς ἀρκτικώτερον εἶναι σημεῖον καὶ περί- πλουν ἔχειν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς δυνατόν, ὡς φησιν ὁ τῶν τόπων ἡγησάμενος τούτων Πατροκλῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 19, line 3

5.16. STRABO

Πάλιν δ' ἐκείνου τὸν Δηίμαχον ἰδιώτην ἐνδείξα- σθαι βουλομένου καὶ ἄπειρον τῶν τοιού- των· οἶσθαι γὰρ τὴν Ἰνδικὴν μεταξὺ κεῖσθαι τῆς τε φθινοπωρινῆς ἰσημερίας καὶ τῶν τροπῶν τῶν χειμερινῶν, Μεγασθέ- νει τε ἀντιλέγειν φήσαντι ἐν τοῖς νοτίοις μέρεσι τῆς Ἰνδικῆς τὰς τε ἄρκτους ἀποκρύπτεσθαι καὶ τὰς σκιάς ἀντιπίπτειν· μηδέτερον γὰρ τούτων μηδαμοῦ τῆς Ἰν- δικῆς συμβαίνειν· ταῦτα δὲ φάσκοντος ἀμαθῶς λέγε- σθαι· τό τε γὰρ τὴν φθινοπωρινὴν τῆς ἐαρινῆς δια- φέρειν οἶσθαι κατὰ τὴν διάστασιν τὴν πρὸς τὰς τρο- πὰς ἀμαθές, τοῦ τε κύκλου τοῦ αὐτοῦ ὄντος καὶ τῆς ἀνατολῆς· τοῦ τε διαστήματος τοῦ ἐπὶ τῆς γῆς

τροπι-

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 19, line 13

ἰσημερίας καὶ τῶν τροπῶν τῶν χειμερινῶν, Μεγασθέ- νει τε ἀντιλέγειν φήσαντι ἐν τοῖς νο- τίοις μέρεσι τῆς Ἰνδικῆς τὰς τε ἄρκτους ἀποκρύπτεσθαι καὶ τὰς σκιάς ἀντιπίπτειν· μηδέτερον γὰρ τούτων μηδαμοῦ τῆς Ἰν- δικῆς συμβαίνειν· ταῦτα δὲ φάσκοντος ἀμαθῶς λέγε- σθαι· τό τε γὰρ τὴν φθινοπωρινὴν τῆς ἐαρινῆς δια- φέρειν οἶσθαι κατὰ τὴν διάστασιν τὴν πρὸς τὰς τρο- πὰς ἀμαθές, τοῦ τε κύκλου τοῦ αὐτοῦ ὄντος καὶ τῆς ἀνατολῆς· τοῦ τε διαστήματος τοῦ ἐπὶ τῆς γῆς τροπι- κοῦ ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ, ὃν μεταξὺ τίθησι τὴν Ἰνδι- κὴν ἐκεῖνος, δειχθέντος ἐν τῇ ἀναμετρήσει πολὺ ἐλάτ- τονος τῶν δισμυρίων σταδίων, συμβῆναι ἂν καὶ κατ' αὐτὸν ἐκεῖνον, ὅπερ αὐτὸς νομίζει, οὐχ ὁ ἐκεῖνος· δυεῖν μὲν γὰρ ἢ καὶ τριῶν μυριάδων οὔσαν τὴν Ἰνδι- κὴν οὐδὲ πεσεῖν μεταξὺ τοσούτου διαστήματος, ὅσων δ' αὐτὸς εἴρηκε, πεσεῖν ἂν· τῆς δ' αὐτῆς ἀγνοίας εἶναι καὶ τὸ μηδαμοῦ τῆς Ἰνδικῆς ἀποκρύπτεσθαι φάσκειν τὰς ἄρ- κτους μηδὲ τὰς σκιάς ἀντιπίπτειν, ὅτε γε καὶ πεντα- κισχιλίους προελθόντι ἀπ' Ἀλεξανδρείας εὐθύς

συμ-

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 19, line 17

δικῆς συμβαίνειν· ταῦτα δὲ φάσκοντος ἀμαθῶς λέγε- σθαι· τό τε γὰρ τὴν φθινοπωρινὴν τῆς ἐαρινῆς δια- φέρειν οἶσθαι κατὰ τὴν διάστασιν τὴν πρὸς τὰς τρο- πὰς ἀμαθές, τοῦ τε κύκλου τοῦ αὐτοῦ ὄντος καὶ τῆς ἀνατολῆς· τοῦ τε διαστήματος τοῦ ἐπὶ τῆς γῆς τροπι- κοῦ ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ, ὃν μεταξὺ τίθησι τὴν Ἰνδι- κὴν ἐκεῖνος, δειχθέντος ἐν τῇ ἀναμετρήσει πολὺ ἐλάτ- τονος τῶν δισμυρίων σταδίων, συμβῆναι ἂν καὶ κατ' αὐτὸν ἐκεῖνον, ὅπερ αὐτὸς νομίζει, οὐχ ὁ ἐκεῖνος· δυεῖν μὲν γὰρ ἢ καὶ τριῶν μυριάδων οὔσαν τὴν Ἰνδικὴν οὐδὲ πεσεῖν μεταξὺ τοσούτου διαστήματος, ὅσων δ' αὐτὸς εἴρηκε, πεσεῖν ἂν· τῆς δ' αὐτῆς ἀγνοίας εἶναι καὶ τὸ μηδαμοῦ τῆς Ἰνδικῆς ἀποκρύπτεσθαι φάσκειν τὰς ἄρ- κτους μηδὲ τὰς σκιάς ἀντιπίπτειν, ὅτε γε καὶ πεντα- κισχιλίους προελθόντι ἀπ' Ἀλεξανδρείας εὐθύς συμ- βαίνειν ἄρχεται· ταῦτα δὲ εἰπόντος, εὐθύνει πάλιν οὐκ εὖ ὁ Ἰππαρχος, πρῶτον ἀντὶ τοῦ χειμερινοῦ τρο- πικοῦ τὸν θερινὸν δεξάμενος, εἴτ' οὐκ οἰόμενος δεῖν μάρτυρι χρῆσθαι τῶν μαθηματικῶν ἀναστρολογητῶ

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 19, line 20

πὰς ἀμαθές, τοῦ τε κύκλου τοῦ αὐτοῦ ὄντος καὶ τῆς ἀνατολῆς· τοῦ τε διαστήματος τοῦ ἐπὶ τῆς γῆς τροπι- κοῦ ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ, ὃν μεταξὺ τίθησι τὴν Ἰνδι- κὴν ἐκεῖνος, δειχθέντος ἐν τῇ ἀναμετρήσει πολὺ ἐλάτ- τονος τῶν δισμυρίων σταδίων, συμβῆναι ἂν καὶ κατ' αὐτὸν ἐκεῖνον, ὅπερ αὐτὸς νομίζει, οὐχ ὁ ἐκεῖνος· δυεῖν μὲν γὰρ ἢ καὶ τριῶν μυριάδων οὔσαν τὴν Ἰνδικὴν οὐδὲ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

πεσεῖν μεταξύ τoσούτου διαστήματος, ὅσων δ' αὐτὸς εἶρηκε, πεσεῖν ἄν· τῆς δ' αὐτῆς ἀγνοίας εἶναι καὶ τὸ μηδαμοῦ τῆς Ἰνδικῆς ἀποκρύπτεσθαι φάσκειν τὰς ἄρ- κτους μὴδὲ τὰς σκιάς ἀντιτίπτειν, ὅτε γε καὶ πεντα- κισχιλίους προελθόντι ἀπ' Ἀλεξανδρείας εὐθὺς συμ- βαίνειν ἄρχεται· ταῦτα δὴ εἰπόντος, εὐθύνει πάλιν οὐκ εὖ ὁ Ἱππαρχος, πρῶτον ἀντὶ τοῦ χειμερινοῦ τρο- πικοῦ τὸν θερινὸν δεξάμενος, εἴτ' οὐκ οἰόμενος δεῖν μάρτυρι χρῆσθαι τῶν μαθηματικῶν ἀναστρολογητῶ ἀνθρώπων, ὥσπερ τοῦ Ἐρατοσθένους προηγουμένως τὴν ἐκείνου μαρτυρίαν ἐγκρίνοντος, ἀλλ' οὐ κοινῶ τινι ἔθει χρωμένον πρὸς τοὺς ματαιολογοῦντας.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 20, line 2

Νυνὶ μὲν οὖν ὑποθέμενοι τὰ νοτιώτατα τῆς Ἰν- δικῆς ἀνταίρειν τοῖς κατὰ Μερόην, ὅπερ εἰρήκασιν πολ- λοὶ καὶ πεπιστεύκασιν, ἐπεδείξαμεν τὰ συμβαίνοντα ἄτοπα.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 20, line 18

τὸ μὲν οὖν κατὰ Μερόην κλίμα Φίλωνά τε τὸν συγγρά- ψαντα τὸν εἰς Αἰθιοπίαν πλοῦν ἱστορεῖν, ὅτι πρὸ πέντε καὶ τετταράκοντα ἡμερῶν τῆς θερινῆς τροπῆς κατὰ κορυφὴν γίνεται ὁ ἥλιος, λέγειν δὲ καὶ τοὺς λό- γους τοῦ γνώμονος πρὸς τε τὰς τροπικὰς σκιάς καὶ τὰς ἰσημερινάς, αὐτὸν τε Ἐρατοσθένη συμφωνεῖν ἐγγιστα τῷ Φίλωνι, τὸ δ' ἐν τῇ Ἰνδικῇ κλίμα μὴδὲνα ἱστορεῖν, μὴδ' αὐτὸν Ἐρατοσθένη.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 20, line 22

εἰ δὲ δὴ καὶ αἱ ἄρκτοι ἐκεῖ ἀμφοτέραι, ὥς οἶεται, ἀποκρύπτονται, πιστεύων τοῖς περὶ Νέαρχον, μὴ δυνατόν εἶναι ἐπὶ ταύτῃ παραλλή- λου κείσθαι τὴν τε Μερόην καὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 20, line 25

εἰ μὲν τοίνυν περὶ τῶν ἄρκτων ἀμφοτέρων ὅτι ἀπο- κρύπτονται συναποφαίνεται τοῖς εἰποῦσιν Ἐρατοσθέ- νης, πῶς περὶ τοῦ ἐν τῇ Ἰνδικῇ κλίματος οὐδεὶς ἀπο- φαίνεται, οὐδ' αὐτὸς Ἐρατοσθένης;

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 20, line 29

οὐ συναποφαίνεται δὲ γε, ἀλλὰ τοῦ Δημάχου φήσαντος μηδαμοῦ τῆς Ἰνδικῆς μὴτ' ἀπο- κρύπτεσθαι τὰς ἄρκτους μὴτ' ἀντιτίπτειν τὰς σκιάς, ἅπερ ὑπέληφεν ὁ Μεγασθένης, ἀπειρίαν αὐ- τοῦ καταγιγνώσκει, τὸ συμπεπλεγμένον νομίζων ψεύ- δος, ἐν ᾧ ὁμολογουμένως καὶ κατ' αὐτὸν τὸν Ἱππαρ- χον τό γε μὴ ἀντιτίπτειν τὰς σκιάς ψεύδους ἐμπέπλε- κται.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 20, line 36

καὶ γὰρ εἰ μὴ τῇ Μερόῃ ἀνταίρει, τῆς γε Συή- νης νοτιώτερα εἶναι τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς συγχωρῶν φαίνεται.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 22, line 11

καὶ δὴ τοῦ νοτίου μέρους πρῶτην εἰπὼν σφραγίδα τὴν Ἰνδικήν, δευτέραν δὲ τὴν Ἀριανήν, ἐχούσας τι εὐπε- ρίγραφον, ἴσχυσεν ἀμφοτέρων ἀποδοῦναι καὶ μῆκος καὶ πλάτος, τρόπον δὲ τινα καὶ σχῆμα, ὥς ἂν γεωμε- τρικός.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 22, line 14

5.16. STRABO

τὴν μὲν γὰρ Ἰνδικὴν ῥομβοειδῆ φησι διὰ τὸ τῶν πλευρῶν τὰς μὲν θαλάττη κλύεσθαι τῇ τε νοτίῳ καὶ τῇ ἑώῃ, μὴ πάνυ κολπώδεις ἦοντας ποιούσαις, τὰς δὲ λοιπὰς τὴν μὲν τῷ ὄρει τὴν δὲ τῷ ποταμῷ, κἀνταῦθα τοῦ εὐθυγράμμου σχήματος ὑπὸ τι σωζομένου· τὴν δ' Ἀριανὴν ὄρων τὰς γε τρεῖς πλευρὰς ἔχουσιν εὐφυ- εῖς πρὸς τὸ ἀποτελέσαι παραλληλόγραμμον σχῆμα, τὴν δ' ἐσπέριον οὐκ ἔχων σημεῖοις ἀφορίσαι διὰ τὸ ἐπαλ- λάττειν ἀλλήλοις τὰ ἔθνη, γραμμῇ τινι ὁμῶς δηλοῖ τῇ

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 22, line 26

ἐσπέριον μὲν οὖν καλεῖ τοῦτο τὸ πλευρόν, ἑῶν δὲ τὸ παρὰ τὸν Ἰνδόν, παράλληλα δ' οὐ λέγει· οὐδὲ τὰ λοι- πά, τὸ τε τῷ ὄρει γραφόμενον καὶ τὸ τῇ θαλάττῃ, ἀλλὰ μόνον τὸ μὲν βόρειον τὸ δὲ νότιον.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 27, line 5

βουλόμενος γὰρ βεβαιοῦν τὸ ἐξ ἀρχῆς, ὅτι οὐ μεταθε- τέον τὴν Ἰνδικὴν ἐπὶ τὰ νοτιώτερα, ὥσπερ Ἐρατοσθέ- νης ἀξιῶ, σαφές ἂν γενέσθαι τοῦτο μάλιστα φησιν ἐξ ὧν αὐτὸς ἐκεῖνος προ- φέρεται· τὴν γὰρ τρίτην μερίδα κατὰ τὴν βόρειον πλευρὰν εἰπόντα ἀφορίζεσθαι ὑπὸ τῆς ἀπὸ Κασπίων πυλῶν ἐπὶ τὸν Εὐφράτην γραμμῆς σταδίων μυρίων οὔσης, μετὰ ταῦτα ἐπιφέρειν ὅτι τὸ νότιον πλευρόν τὸ ἀπὸ Βαβυλῶνος εἰς τοὺς ὄρους τῆς Καρμανίας μικρῷ πλείονων ἐστὶν ἢ ἐνα- κισχιλίων, τὸ δὲ πρὸς δύοσι πλευρόν ἀπὸ Θαψακου παρὰ τὸν Εὐφρά- τιν ἐστὶν εἰς Βαβυλῶνα τετρακισχίλιοι ὀκτακόσιοι

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 31, line 3

καὶ τοῦ νοτίου μέ- ρους ἢ μὲν Ἰνδικὴ περιώριστα πολλοῖς· καὶ γὰρ ὄρει καὶ ποταμῷ καὶ θαλάττῃ καὶ ἐνὶ ὀνόματι ὡς ἐνὸς ἑ- θνους· ὥστε καὶ τετράπλευρος ὀρθῶς λέγεται καὶ ῥομ- βοειδής.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 31, line 31

οὐδὲ γὰρ ὑπὸ μεγέθους ἀπηναγκάσθαι λέγοι ἂν· καὶ γὰρ τὸ μέχρι θαλάττης οὐ μὴν πῶ ἂν ἐξισάζοιτο τῇ Ἰνδικῇ, ἀλλ' οὐδὲ τῇ Ἀριανῇ, προσλαβὼν καὶ τὸ μέχρι τῶν ὄρων τῆς εὐδαί- μονος Ἀραβίας καὶ τῆς Αἰγύπτου· ὥστε πολὺ κρεῖττον ἦν μέχρι δεῦρο προελθεῖν, τῆς τρίτης εἰπόντα σφρα- γίδος τοσαύτη προσθήκη τῇ μέχρι τῆς Συριακῆς θα- λάττης τὸ μὲν νότιον πλευρόν οὐκ ὥσπερ ἐκεῖνος εἶπεν ἔχον, οὐδ' ἐπ' εὐθείας, ἀλλ' ἀπὸ τῆς Καρμανίας εὐ- θὺς τὴν δεξιὰν παραλίαν εἰσπλέοντι τὸν Περσικὸν κόλπον μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Εὐφράτου, καὶ μετὰ

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 34, line 38

παραλλήλου δυσμικωτέραν ἔχειν τὴν κοινὴν τομὴν τῆς κοινῆς τομῆς τοῦ αὐτοῦ παραλλήλου καὶ τῆς ἀπὸ Κας- πίων πυλῶν καθηκούσης εὐθείας ἐπὶ τοὺς ὄρους τοὺς τῆς Καρμανίας καὶ τῆς Περσίδος πλείοσι τῶν τετρα- κισχιλίων καὶ τετρακοσίων· σχεδὸν δὲ τι πρὸς τὴν διὰ Κασπίων πυλῶν μεσημβρινὴν γραμμὴν ἡμίσειαν ὀρθῆς ποιεῖν γωνίαν τὴν διὰ Κασπίων πυλῶν καὶ τῶν ὄρων τῆς τε Καρμανίας καὶ τῆς Περσίδος, καὶ νεύειν αὐτὴν ἐπὶ τὰ μέσα τῆς τε μεσημβρίας καὶ τῆς ἰσημερινῆς ἀνα- τολῆς· ταύτῃ δ' εἶναι παράλληλον τὸν Ἰνδὸν ποτα- μόν, ὥστε καὶ τοῦτον ἀπὸ τῶν ὄρων οὐκ ἐπὶ μεσημ- βρίαν ξεῖν, ὡς φησιν Ἐρατοσθένης, ἀλλὰ μεταξύ ταύ- τῃς καὶ τῆς ἰσημερινῆς ἀνατολῆς, καθάπερ ἐν τοῖς ἀρχαίοις πίναξι καταγέγραπται.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 34, line 47

τίς δὲ τῷ Ἰνδῷ παράλληλον τὴν ἀπὸ Κασπίων πυλῶν ἐπὶ τοὺς ὄρους τῆς Καρμανίας;

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 1, section 34, line 51

χωρὶς δὲ τούτων κακείνος εἴρηκεν, ὅτι ῥομβοειδὲς ἐστὶ τὸ σχῆμα τῆς Ἰνδικῆς· καὶ καθάπερ ἡ ἐωθινὴ πλευρὰ παρέσπασται πολὺ πρὸς ἑω, καὶ μάλιστα τῷ ἐσχάτῳ ἀκρωτηρίῳ, ὃ καὶ πρὸς μεσημβρίαν προπίπτει πλεον παρὰ τὴν ἄλλην ἥονα, οὕτω καὶ ἡ παρὰ τὸν Ἰν- δὸν πλευρά.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 4, line 12

τυχεῖν δὴ τινὰ Ἰνδὸν κομισθέντα ὡς τὸν βα- σιλέα ὑπὸ τῶν φυλάκων τοῦ Ἀραβίου μυχοῦ, λεγόν- των εὐρεῖν ἡμίθανῃ καταχθέντα μόνον ἐν νηί, τίς δ' εἶη καὶ πόθεν ἀγνοεῖν μὴ συνιέντας τὴν διάλεκτον· τὸν δὲ παραδοῦναι τοῖς διδάξουσιν ἐλληνίζειν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 4, line 17

ἔκμα- θόντα δὲ διηγῆσασθαι διότι ἐκ τῆς Ἰνδικῆς πλέων πε- ριπέσοι πλάνη καὶ σωθείη δεῦρο τοὺς σύμπλους ἀπο- βαλὼν λιμῶ· ὑποληφθέντα δὲ ὑποσχέσθαι τὸν εἰς Ἰν- δοὺς πλοῦν ἡγήσασθαι τοῖς ὑπὸ τοῦ βασιλέως προχει- ρισθεῖσι· τούτων δὲ γενέσθαι τὸν Εὐδόξον.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 4, line 60

καὶ πρῶτον μὲν εἰς Δικαιάρχειαν, εἴτ' εἰς Μασσαλίαν ἐλθεῖν καὶ τὴν ἐξῆς παραλίαν μέχρι Γαδείρων, πανταχοῦ δὲ διακωδωνίζοντα ταῦτα καὶ χρηματιζόμενον κατασκευάσασθαι πλοῖον μέγα καὶ ἐφόλκια δύο λέμβοις ληστρικοῖς ὅμοια, ἐμβιβάσαι τε μουσικὰ παιδισκάρια καὶ ἰατροὺς καὶ ἄλλους τεχνίτας, ἔπειτα πλεῖν ἐπὶ τὴν Ἰνδικὴν μετέωρον ζεφύροις συνε- χέσι.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 4, line 72

ἀφέντα δὴ τὸν ἐπὶ Ἰνδοὺς πλοῦν ἀναστρέφειν· ἐν δὲ τῷ παρά- πλῳ νῆσον εὐνδρον καὶ εὐδενδρον ἐρήμην ἰδόντα ση- μειώσασθαι· σωθέντα δὲ εἰς τὴν Μαυρουσίαν, διαθέ- μενον τοὺς λέμβους πεζῇ κομισθῆναι πρὸς τὸν Βόγον καὶ συμβουλευεῖν αὐτῷ τὴν ναυστολίαν ἐπανελεσθαι ταύτην, ἰσχύσαι δ' εἰς τὰναντία τοὺς φίλους ὑποτεί- νοντας φόβον μὴ συμβῇ τὴν χώραν εὐεπιβούλευτον γε- νέσθαι, δειχθείσης παρόδου τοῖς ἔξωθεν ἐπιστρατεῦειν ἐθέλουσιν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 5, line 14

τίς γὰρ ἡ πιθανότης πρῶτον μὲν τῆς κατὰ τὸν Ἰνδὸν περιπετείας;

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 5, line 19

ὁ γὰρ Ἀράβιος κόλπος ποταμοῦ δίκην στενός ἐστι καὶ μακρὸς [πεντακισχιλίους] ἐπὶ μυ- ρίοις ποὺ σταδίους μέχρι τοῦ στόματος, καὶ τούτου στενοῦ παντάπασι νόντος· οὐκ εἰκὸς δ' οὐτ' ἔξω ποὺ τὸν πλοῦν ἔχοντας εἰς τὸν κόλπον παρωσθῆναι τοὺς Ἰνδοὺς κατὰ πλάνην (τὰ γὰρ στενὰ ἀπὸ τοῦ στόματος δηλώσειν ἔμελλε τὴν πλάνην), οὐτ' εἰς τὸν κόλπον ἐπίτηδες καταχθεῖσιν ἔτι πλάνης ἢν πρόφασις καὶ ἀνέ- μων ἀστάτων.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 5, line 31

ὁ δὲ δὴ σπονδοφόρος καὶ θεωρὸς τῶν Κυζικηνῶν πῶς ἀφείς τὴν πόλιν εἰς Ἰνδοὺς ἔπλει;

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 6, line 18

ὑπονοεῖ δὲ τὸ τῆς οἰκουμένης μῆκος ἐπτά ποὺ μυριάδων σταδίων ὑπάρχον ἡμισυ εἶναι τοῦ ὅλου κύκλου καθ' ὃν εἴλη- πται, ὥστε (φησὶν) ἀπὸ τῆς δύσεως εὐρὴ πλέων ἐν το- σαύταις

5.16. STRABO

μυριάσιν ἔλθοι ἂν εἰς Ἰνδοὺς.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 7, line 22

ὁ δὲ συγχεῖ ταῦτα· ἐπαινῶν δὲ τὴν τοιαύτην διαίρεσιν τῶν ἡπείρων, οἷα νῦν ἐστὶ, παραδείγματι χρῆται τῷ τοῦ Ἰνδοῦ τῶν Αἰθιοπῶν διαφέρειν τῶν ἐν τῇ Λιβύῃ· εὐερνεστέρους γὰρ εἶναι καὶ ἥττον ἐφεσθαι τῇ ξηρασίᾳ τοῦ περιέχοντος· διὸ καὶ Ὅμηρον πάντας λέγοντα Αἰθίοπας δίχᾳ διελεῖν “οἱ μὲν δυσομένους Ὑπερίονος, οἱ δ’ ἀνιόντος,” Κράτητα δ’ εἰσάγοντα τὴν ἐτέραν οἰκουμένην, ἣν οὐκ οἶδεν Ὅμηρος, δουλεύειν ὑποθέσει· καὶ ἔδει (Φησί) μεταγράφειν οὕτως “ἡμὲν ἀπερχομένου Ὑπερίονος,” οἷον ἀπὸ τοῦ μεσημβρινοῦ περικλίνοντος.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 3, section 8, line 5

ἐπειθ’ Ὅμηρος οὐ διὰ τοῦτο διαιρεῖ τοὺς Αἰθιοπας, ὅτι τοὺς Ἰνδοὺς ἤδει τοιοῦτους τινὰς τοῖς σώμασιν (οὐδὲ γὰρ ἀρχὴν εἶδεναι τοὺς Ἰνδοὺς εἰκὸς Ὅμηρον, ὅπου γε οὐδ’ ὁ Εὐεργέτης κατὰ τὸν Εὐδόξειον μῦθον ἤδει τὰ κατὰ τὴν Ἰνδικήν, οὐδὲ τὸν πλοῦν τὸν ἐπ’ αὐτήν), ἀλλὰ μᾶλλον κατὰ τὴν λεχθεῖσαν ὑφ’ ἡμῶν πρότερον διαίρεσιν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 1, line 13

αὐτὸ γὰρ τὸ εἰς ἐπίπεδον γράφειν ἐπιφάνειαν μίαν καὶ τὴν αὐτὴν τὰ τε Ἰβηρικὰ καὶ τὰ Ἰνδικὰ καὶ τὰ μέσα τοῦ- των, καὶ μηδὲν ἥττον δύσεις καὶ ἀνατολὰς ἀφορίζειν καὶ μεσουρανήσεις ὥς ἂν κοινὰς πᾶσι, τῷ μὲν προε- πινοήσαντι τὴν τοῦ οὐρανοῦ διάθεσιν τε καὶ κίνησιν καὶ λαβόντι, ὅτι σφαιρική μὲν ἐστὶν ἡ κατ’ ἀλήθειαν τῆς γῆς ἐπιφάνεια, πλάττεται δὲ νῦν ἐπίπεδος πρὸς τὴν ὄψιν, γεωγραφικὴν ἔχει τὴν παράδοσιν, τῷ δ’ ἄλ- λως, οὐ γεωγραφικὴν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 9, line 11

ρυσθένους διαστήματι τὸ ἀπὸ Βορυσθένους ἐπὶ τὰς ἄρκτους τῶν τετρακισχιλίων σταδίων διάστημα, γίνε- ται τὸ πᾶν μύριοι δισχίλιοι ἐπτακόσιοι στάδιοι, τὸ δ’ ἀπὸ τῆς Ῥοδίας ἐπὶ τὸ νότιον πέρας ἐστὶ τῆς οἰκουμέ- νης μύριοι ἑξακισχίλιοι ἑξακόσιοι, ὥστε τὸ σύμπαν πλάτος τῆς οἰκουμένης εἴη ἂν ἑλαττον τῶν τρισμυρίων ἀπὸ νότου πρὸς ἄρκτον· τὸ δὲ γε μῆκος περὶ ἑπτὰ μυ- ριάδας λέγεται, τοῦτο δ’ ἐστὶν ἀπὸ δύσεως ἐπὶ τὰς ἀνατολὰς τὸ ἀπὸ τῶν ἄκρων τῆς Ἰβηρίας ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς, τὸ μὲν ὁδοῖς τὸ δὲ ταῖς ναυτιλίαις ἀναμε- μετρημένον.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 12, line 14

ἀπήγγελλται δ’ ἡμῖν καὶ ὑπὸ τῶν τὰ Παρθικὰ συγγραψάντων, τῶν περὶ Ἀπολλόδαρον τὸν Ἀρτεμιτηνόν, ἃ πολλῶν ἐκεῖ- νοι μᾶλλον ἀφώρισαν, τὰ περὶ τὴν Ὑρκανίαν καὶ τὴν Βακτρι- ανήν· τῶν τε Ῥωμαίων καὶ εἰς τὴν εὐδαίμονα Ἀραβίαν ἐμβαλόντων μετὰ στρατιᾶς νεωστί, ἧς ἡγεῖτο ἀνὴρ φίλος ἡμῖν καὶ ἐταῖρος Αἴλιος Γάλλος, καὶ τῶν ἐκ τῆς Ἀλεξανδρείας ἐμπόρων στόλοις ἤδη πλεόντων διὰ τοῦ Νείλου καὶ τοῦ Ἀραβίου κόλπου μέχρι τῆς Ἰνδικῆς, πολὺ μᾶλλον καὶ ταῦτα ἔγνωσται τοῖς νῦν ἢ τοῖς πρὸ ἡμῶν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 12, line 19

ὅτε γοῦν Γάλλος ἐπῆρχε τῆς Αἰγύ- πτου, συνόντες αὐτῷ καὶ συναναβάντες μέχρι Συήνης καὶ τῶν Αἰθιοπικῶν ὄρων ἱστοροῦμεν, ὅτι καὶ ἑκατὸν καὶ εἴκοσι νῆες πλέοιεν ἐκ Μιῶς ὄρμου πρὸς τὴν Ἰν- δικήν, πρότερον ἐπὶ τῶν Πτολεμαϊκῶν βασιλείων ὀλί- γων παντάπασι θαρρύντων πλεῖν καὶ τὸν Ἰνδικὸν ἐμπορεύεσθαι φόρτον.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 14, line 10

Ἔστι δὴ τι χλαμυδοειδὲς σχῆμα τῆς γῆς τῆς οἴκου- μένης, οὗ τὸ μὲν πλάτος ὑπογράφει τὸ μέγιστον ἢ διὰ τοῦ Νείλου γραμμή, λαβοῦσα τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τοῦ διὰ τῆς Κινναμωμοφόρου παραλλήλου καὶ τῆς τῶν Αἰ- γυπτίων τῶν φυγάδων νήσου μέχρι τοῦ διὰ τῆς Ἰέρ- νης παραλλήλου, τὸ δὲ μῆκος ἢ ταύτη πρὸς ὀρθὰς ἀπὸ τῆς ἐσπέρας διὰ στηλῶν καὶ τοῦ Σικελικοῦ πορθμοῦ μέχρι τῆς Ῥοδίας καὶ τοῦ Ἰσικοῦ κόλπου, παρὰ τὸν Ταῦρον ἰοῦσα τὸν διεζωκότα τὴν Ἀσίαν καὶ καταστρέ- φοντα ἐπὶ τὴν ἑῴαν θάλατταν μεταξὺ Ἰνδῶν καὶ τῶν ὑπὲρ τῆς Βακτριανῆς Σκυθῶν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 14, line 31

τῆς τε γὰρ Ἰνδικῆς νοτιωτέραν πολὺ τὴν Ταπρο- βάνην καλουμένην νῆσον ἀποφαίνουσιν, οἰκουμένην ἔτι καὶ ἀνταΐρουσαν τῇ τῶν Αἰγυπτίων νήσῳ καὶ τῇ τὸ κινάμωμον φερούσῃ γῇ· τὴν γὰρ κρᾶσιν τῶν ἀέ- ρων παραπλησίαν εἶναι· τῆς τε μετὰ τοὺς Ἰνδοὺς Σκυ- θίας τῆς ὑστάτης ἀρκτικώτερά ἐστι τὰ κατὰ τὸ στόμα τῆς Ὑγκανίας θαλάττης καὶ ἔτι μᾶλλον τὰ κατὰ τὴν Ἰέρνην.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 31, line 5

διαιρουμένης γὰρ αὐτῆς ὑπὸ ὅρους τοῦ Ταύρου δίχα διατείνοντος ἀπὸ τῶν ἄκρων τῆς Παμ- φυλίας ἐπὶ τὴν ἑῴαν θάλατταν κατ' Ἰνδοὺς καὶ τοὺς ταύτη Σκύθας, τὸ μὲν πρὸς τὰς ἄρκτους νενευκὸς τῆς ἠπείρου μέρος καλοῦσιν οἱ Ἕλληνες ἐντὸς τοῦ Ταύρου, τὸ δὲ πρὸς μεσημβρίαν ἐκτὸς· τὰ δὲ συνεχῇ τῇ Μαιώτιδι καὶ τῷ Τανάιδι μέρη τὰ ἐντὸς τοῦ Ταύρου ἐστί.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 31, line 16

ἔπειτα ἐντὸς τοῦ Ταύρου τὰ ὑπὲρ τῆς Ὑγκα- νίας μέχρι πρὸς τὴν κατὰ Ἰνδοὺς καὶ Σκύθας τοὺς πρὸς τὴν αὐτὴν θάλατταν καὶ τὸ Ἰμάιον ὅρος.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 31, line 24

ταῦτα δ' ἔχουσι τὰ μὲν οἱ Μαιῶται καὶ οἱ μεταξὺ τῆς Ὑγκα- νίας καὶ τοῦ Πόντου μέχρι τοῦ Καυκάσου καὶ Ἰβήρων καὶ Ἀλβανῶν, Σαυρομάται καὶ Σκύθαι καὶ Ἀχαιοὶ καὶ Ζυγοὶ καὶ Ἠνίοχοι, τὰ δ' ὑπὲρ τῆς Ὑγκανίας θαλάτ- της Σκύθαι καὶ Ὑγκανοὶ καὶ Παρθυαῖοι καὶ Βάκτριοι καὶ Σογδιανοὶ καὶ τᾶλλα τὰ ὑπερκείμενα μέρη τῶν Ἰνδῶν πρὸς ἄρκτον.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 32, line 5

πρώτη δ' ἐστὶ τούτων ἡ Ἰνδική, ἔθνος μέγι- στον τῶν πάντων καὶ εὐδαιμονέστατον, τελευ- τῶν πρὸς τε τὴν ἑῴαν θάλατταν καὶ τὴν νοτίαν τῆς Ἀτλαντικῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 32, line 8

ἐν δὲ τῇ νοτίᾳ ταύτῃ θαλάττῃ πρόκειται τῆς Ἰνδικῆς νῆσος οὐκ ἐλάττων τῆς Βρεττανικῆς ἢ Ταπροβάνη· μετὰ δὲ τὴν Ἰνδικὴν ἐπὶ τὰ ἐσπέρια νεύουσιν, ἐν δεξιᾷ δ' ἔχουσι τὰ ὅρη χώρα ἐστὶ συχνή, φαύλως οἰκουμένη διὰ λυπρότητα ὑπ' ἀνθρώπων τελέως βαρβάρων οὐχ ὁμοειθῶν· καλοῦσι δ' Ἀριανούς, ἀπὸ τῶν ὁρῶν δια- τείνοντας μέχρι Γεδρωσίας καὶ Καρμανίας.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 36, line 7

Τοῖς δὲ κατὰ Μερόην καὶ Πτολεμαΐδα τὴν ἐν τῇ Τρωγλοδυτικῇ ἢ μεγίστῃ ἡμέρᾳ ὥρῶν ἰσημερινῶν ἐστὶ τρισκαίδεκα· ἐστὶ δ' αὕτη ἡ οἰκησις μέση πῶς τοῦ τε ἰσημερινοῦ καὶ τοῦ δι'

5.16. STRABO

Ἀλεξάνδρειας παρὰ χιλίους καὶ ὀκτακοσίους τοὺς πλεονάζοντας πρὸς τῷ ἰσημε- ρινῷ· διήκει δ' ὁ διὰ Μερόης παράλληλος τῇ μὲν δι' ἀγνωρίστων μερῶν, τῇ δὲ διὰ τῶν ἄκρων τῆς Ἰνδικῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 36, line 16

ὁ δὲ διὰ Συήνης παράλληλος τῇ μὲν διὰ τῆς τῶν Ἰχθυοφάγων τῶν κατὰ τὴν Γεδρωσίαν καὶ τῆς Ἰνδικῆς διήκει, τῇ δὲ διὰ τῶν νοτιωτέρων Κυ- ρήνης πεντακισχιλίοις σταδίοις παρὰ μικρόν.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 38, line 15

διήκει δ' ὁ παράλληλος οὗτος τῇ μὲν διὰ Κυρήνης καὶ τῶν νοτιωτέρων Καρχηδόνος ἐνακο- σίοις σταδίοις μέχρι Μαυρουσίας μέσης, τῇ δὲ δι' Αἰ- γύπτου καὶ Κοίλης Συρίας καὶ τῆς ἄνω Συρίας καὶ Βαβυλωνίας καὶ Σουσιάδος Περσίδος Καρμανίας Γε- δρωσίας τῆς ἄνω μέχρι τῆς Ἰνδικῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 2, chapter 5, section 39, line 14

.. · διήκει δ' ὁ παράλληλος οὗτος κατ' Ἐρατοσθένη διὰ Καρίας Λυκαονίας Καταονίας Μηδίας Κασπίων πυ- λῶν Ἰνδῶν τῶν κατὰ Καύκασον.

Strabo Geogr., Geographica Book 3, chapter 4, section 1, line 15

ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸν Ἴβηρα ἄλλους τοσούτους σχεδὸν τι (ταύτην δ' ἔχειν Ἑθητανούς), ἐν- τὸς δὲ τοῦ Ἴβηρος μέχρι Πυρήνης καὶ τῶν Πομπηίου ἀναθημάτων χιλίους καὶ ἑξακοσίους· οἰκεῖν δὲ Ἑθη- τανῶν τε ὀλίγους καὶ λοιπὸν τοὺς προσαγορευομένους Ἰνδικῆτας μεμερισμένους τέτραχα.

Strabo Geogr., Geographica Book 3, chapter 4, section 8, line 14

δίπολις δ' ἐστὶ τείχει διωρισμένη, πρότερον τῶν Ἰνδι- κητῶν τινὰς προσοίκους ἔχουσα, οἱ καὶ περ ἰδίᾳ πολί- τευόμενοι κοινὸν ὅμως περίβολον ἔχειν ἐβούλοντο πρὸς τοὺς Ἕλληνας ἀσφαλείας χάριν, τῷ χρόνῳ δ' εἰς ταὐτὸ πολίτευμα συνῆλθον μικτόν τι ἐκ τε βαρβάρων καὶ Ἑλ- ληνικῶν νομίμων, ὅπερ καὶ ἐπ' ἄλλων πολλῶν συνέβη.

Strabo Geogr., Geographica Book 3, chapter 5, section 5, line 64

Ἀλέξανδρος δὲ τῆς Ἰνδικῆς στρατείας ὄρια βωμούς ἐθετο ἐν τοῖς τόποις εἰς οὓς ὑστάτους ἀφίκετο τῶν πρὸς ταῖς ἀνατο- λαῖς Ἰνδῶν, μιμούμενος τὸν Ἡρακλέα καὶ τὸν Διόνυ- σον.

Strabo Geogr., Geographica Book 3, chapter 5, section 6, line 5

οὐδὲ ἐν τῇ Ἰνδικῇ στήλας φασὶν ὅρα- θῆναι κειμένας οὐθ' Ἡρακλέους οὔτε Διονύσου· καὶ λεγομένων μέντοι καὶ δεικνυμένων τόπων τινῶν οἱ Μακεδόνες ἐπίστευον τούτους εἶναι στήλας, ἐν οἷς τι σημεῖον εὕρισκον ἢ τῶν περὶ τὸν Διόνυσον ἱστορου- μένων ἢ τῶν περὶ τὸν Ἡρακλέα.

Strabo Geogr., Geographica Book 3, chapter 5, section 6, line 39

τὸ δὲ ἐπ' αὐτάς ἀναφέρειν τὰς ἐν τῷ Ἡρακλείῳ στήλας τῷ ἐνθάδε ἦττον εὐλογον, ὥς ἐμοὶ φαίνεται· οὐ γὰρ ἐμ- πόρων ἀλλ' ἡγεμόνων μᾶλλον ἀρξάντων τοῦ ὀνόμα- τος τούτου, κρατῆσαι πιθανὸν τὴν δόξαν, καθάπερ καὶ ἐπὶ τῶν Ἰνδικῶν στηλῶν.

Strabo Geogr., Geographica Book 5, chapter 2, section 6, line 38

τοῦτό τε δὴ παράδοξον ἢ νῆσος ἔχει καὶ τὸ τὰ ὀρύγματα ἀναπληροῦσθαι πάλιν τῷ χρόνῳ τὰ μεταλλευθέντα, καθάπερ τοὺς πλαταμῶνάς φασι τοὺς ἐν Ῥόδῳ καὶ τὴν ἐν Πάρῳ πέτρην τὴν μάρμαρον καὶ τὰς ἐν Ἰνδοῖς ἄλας, ἃς φησι Κλείταρχος.

Strabo Geogr., Geographica Book 7, chapter 3, section 8, line 9

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

πλήρεις δὲ καὶ αἱ Περσικαὶ ἐπιστολαὶ τῆς ἀπλότητος ἧς λέγω, καὶ τὰ ὑπὸ τῶν Αἰγυπτίων καὶ Βαβυλωνίων καὶ Ἰνδῶν ἀπο- μνημονεύμενα.

Strabo Geogr., Geographica Book 10, chapter 3, section 17, line 13

οἱ τ' ἐπιμεληθέντες τῆς ἀρχαίας μουσικῆς Θρᾶκες λέγονται, Ὀρφεύς τε καὶ Μουσαῖος καὶ Θάμυ- ρις, καὶ τῷ Εὐμόλπῳ δὲ τοῦνομα ἐνθένδε, καὶ οἱ τῷ Διονύσῳ τὴν Ἀσίαν ὅλην καθιερώσαντες μέχρι τῆς Ἰνδικῆς ἐκείθεν καὶ τὴν πολλὴν μουσικὴν μεταφέρου- σι· καὶ ὁ μὲν τίς φησιν “κιθάραν Ἀσιᾶτιν ῥάσσω,” ὁ δὲ τοὺς αὐλοὺς Βερεκυντίους καλεῖ καὶ Φρυγίους· καὶ τῶν ὀργάνων ἓνια βαρβάρως ὠνόμασται νάβλας καὶ σαμβύκη καὶ βάρβιτος καὶ μαγάδις καὶ ἄλλα πλείω.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 1, section 3, line 4

Πλάτος μὲν οὖν ἔχει τὸ ὅρος πολλαχοῦ καὶ τρισχι- λίων σταδίων, μῆκος δ' ὅσον καὶ τὸ τῆς Ἀσίας, τετ- τάρων που μυριάδων καὶ πεντακισχιλίων, ἀπὸ τῆς Ῥοδίων περαίας ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς καὶ Σκυθίας πρὸς τὰς ἀνατολάς.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 1, section 7, line 3

Δεύτερον δ' ἂν εἴη μέρος τὸ ὑπὲρ τῆς Ἰρκανίας θαλάττης, ἣν [καὶ] Κασπίαν καλοῦμεν, μέχρι τῶν κατ' Ἰνδοῦς Σκυθῶν.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 1, section 7, line 11

τῶν δὲ ἄλλων τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου τὴν τε Ἰνδικὴν τίθεμεν καὶ τὴν Ἀριανὴν μέχρι τῶν ἐθνῶν τῶν καθηκόντων πρὸς τε τὴν κατὰ Πέρσας θάλατταν καὶ τὸν Ἀράβιον κόλπον καὶ τὸν Νεῖλον καὶ πρὸς τὸ Αἰγύπτιον πέλαγος καὶ τὸ Ἰσικόν.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 5, section 5, line 4

Καὶ τὰ πρὸς τὸ ἐνδοξὸν θρυληθέντα οὐκ ἀνωμο- λόγηται παρὰ πάντων, οἱ δὲ πλάσαντες ἦσαν οἱ κολα- κείας μᾶλλον ἢ ἀληθείας φροντίζοντες· οἷον τὸ τὸν Καύκασον μετενεγκεῖν εἰς τὰ Ἰνδικὰ ὄρη καὶ τὴν πλη- σιάζουσαν ἐκείνοις ἑφάν θάλατταν ἀπὸ τῶν ὑπερκει- μένων τῆς Κολχίδος καὶ τοῦ Εὐξείνου ὁρῶν· ταῦτα γὰρ οἱ Ἕλληνες καὶ Καύκασον ὠνόμαζον, διέχοντα τῆς Ἰνδικῆς πλείους ἢ τρισμυρίους σταδίους, καὶ ἐνταῦθα ἐμύθευσαν τὰ περὶ Προμηθεά καὶ τὸν δεσμὸν αὐτοῦ· ταῦτα γὰρ τὰ ὕστατα πρὸς ἑὼ ἐγνώριζον οἱ τότε.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 5, section 5, line 11

ἡ δὲ ἐπὶ Ἰνδοῦς στρατεία Διονύσου καὶ Ἡρακλέους ὅστε- ρογενῆ τὴν μυθοποιίαν ἐμφαίνει, ἅτε τοῦ Ἡρακλέ- ους καὶ τὸν Προμηθεά λῦσαι λεγομένου χιλιάσιν ἐτῶν ὕστερον.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 5, section 5, line 15

καὶ ἦν μὲν ἐνδοξότερον τὸ τὸν Ἀλέξανδρον μέχρι τῶν Ἰνδικῶν ὁρῶν καταστρέψασθαι τὴν Ἀσίαν ἢ μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ Εὐξείνου καὶ τοῦ Καυκάσου· ἀλλ' ἡ δόξα τοῦ ὅρους καὶ τοῦνομα καὶ τὸ τοὺς περὶ Ἰάσονα δοκεῖν μακροτάτην στρατείαν τελέσαι τὴν μέ- χρι τῶν πλησίων Καυκάσου καὶ τὸν Προμηθεά πα- ραδεδόνθαι δεδεμένον ἐπὶ τοῖς ἐσχάτοις τῆς γῆς ἐν τῷ Καυκάσῳ.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 5, section 5, line 22

.. χαριεῖσθαι τι τῷ βασιλεῖ ὑπέλαβον τοῦνομα τοῦ ὅρους μετενέγκαντες εἰς τὴν Ἰνδικήν.

5.16. STRABO

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 5, section 8, line 11

Ἀβέακος μὲν οὖν ὁ τῶν Σιράκων βασιλεὺς, ἥνικα Φαρνάκης τὸν Βόσπορον εἶχε, δύο μυριάδας ἱππέων ἔστειλε, Σπαδίνης δ' ὁ τῶν Ἀόρσων καὶ * εἴκοσιν, οἱ δὲ ἄνω Ἀόρσοι καὶ πλείονας· καὶ γὰρ ἐπεκράτουν πλείονος γῆς καὶ σχεδὸν τι τῆς Κασπίων παραλίας τῆς πλείστης ἦρχον, ὥστε καὶ ἐνε- πορεύοντο καμήλοις τὸν Ἰνδικὸν φόρτον καὶ τὸν Βα- βυλώνιον παρά τε Ἀρμενίων καὶ Μήδων διαδεχόμε- νοι· ἐχρυσόφορον δὲ διὰ τὴν εὐπορίαν.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 6, section 2, line 6

Εἰσπλέοντι δ' ἐν δεξιᾷ μὲν τοῖς Εὐρωπαίοις οἱ συνεχεῖς Σκύθαι νέμονται καὶ Σαρμάται οἱ μεταξὺ τοῦ Τανάιδος καὶ τῆς θαλάττης ταύτης, νομάδες οἱ πλεί- ους, περὶ ὧν εἰρήκαμεν· ἐν ἀριστερᾷ δ' οἱ πρὸς ἑω Σκύθαι, νομάδες καὶ οὗτοι, μέχρι τῆς ἐώας θαλάττης καὶ τῆς Ἰνδικῆς παρατείνοντες.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 7, section 2, line 24

φησὶ δ' Ἀριστόβουλος ὑλώδη οὔσαν τὴν Ἰρκανίαν δρῦν ἔχειν, πεύκην δὲ καὶ ἐλάτην καὶ πίτυν μὴ φύειν, τὴν δ' Ἰνδικὴν πλη- θύνειν τούτοις.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 7, section 3, line 6

Ἀριστόβουλος δὲ καὶ μέγιστον ἀποφαίνει τὸν Ὠξὸν τῶν ἐωραμένων ὑφ' ἑαυτοῦ κατὰ τὴν Ἀσίαν πλην τῶν Ἰνδικῶν· φησὶ δὲ καὶ εὐπλουν εἶναι καὶ οὗτος καὶ Ἐρατοσθένης παρὰ Πατροκλέους λαβών, καὶ πολλὰ τῶν Ἰνδικῶν φορτίων κατὰγειν εἰς τὴν Ἰρκανίαν θάλατταν, ἐντεῦθεν δ' εἰς τὴν Ἀλβα- νίαν περαιοῦσθαι καὶ διὰ τοῦ Κύρου καὶ τῶν ἐξῆς τό- πων εἰς τὸν Εὐξείνιον καταφέρεισθαι.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 7, section 4, line 17

Πολύκλειτος δὲ καὶ πίστεις προφέρεται περὶ τοῦ λίμνην εἶναι τὴν θάλατταν ταύ- την, ὅφεις τε γὰρ ἐκτρέφειν καὶ ὑπόγλυκιν εἶναι τὸ ὕδωρ· ὅτι δὲ καὶ οὐχ ἑτέρα τῆς Μαιώτιδος ἐστὶ, τεκμαι- ρόμενος ἐκ τοῦ τὸν Τάναϊν εἰς αὐτὴν ἐμβάλλειν· ἐκ γὰρ τῶν αὐτῶν ὁρῶν τῶν Ἰνδικῶν ἐξ ὧν ὁ τε Ὠχὸς καὶ ὁ Ὠξὸς καὶ ἄλλοι πλείους φέρεται καὶ ὁ Ἰαξάρτης ἐκδίδωσιν τε ὁμοίως ἐκείνοις εἰς τὸ Κάσπιον πέλαγος πάντων ἀρκτικώτατος.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 7, section 4, line 27

Ἐρατοσθένης δὲ φησὶ καὶ ἐν τῇ Ἰνδικῇ φύεσθαι ἐλάτην καὶ ἐντεῦθεν ναυπηγήσασθαι τὸν στόλον Ἀλέξανδρον· πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα τοιαῦτα συγ- κρούειν Ἐρατοσθένης πειράται, ἡμῖν δ' ἀποχρώντως εἰρήσθω περὶ αὐτῶν.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 8, section 1, line 2

Ἀπὸ δὲ τῆς Ἰρκανίας θαλάττης προϊόντι ἐπὶ τὴν ἑω δεξιᾷ μὲν ἐστὶ τὰ ὄρη μέχρι τῆς Ἰνδικῆς θαλάττης παρατείνοντα, ἅπερ οἱ Ἕλληνες ὀνομάζουσι Ταῦρον, ἀρξάμενα ἀπὸ τῆς Παμφυ- λίας καὶ τῆς Κιλικίας καὶ μέχρι δεῦρο προϊόντα ἀπὸ τῆς ἐσπέρας συνεχῇ καὶ τυγχάνοντα ἄλλων καὶ ἄλλων ὀνομάτων.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 8, section 8, line 10

φησὶ δ' Ἐρατοσθένης τοὺς Ἀραχωτοὺς καὶ Μας- σαγέτας τοῖς Βακτρίοις παρακεῖσθαι * πρὸς δύσιν παρὰ τὸν Ὠξὸν, καὶ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανούς τοῖς ὅλοις ἐδάφεσιν ἀντικεῖσθαι τῇ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Ἰνδικῇ, Βακτρίους δ' ἐπ' ὀλίγον· τὸ γὰρ πλεόν τῷ Παροπαμισῶ παρακεῖσθαι· δι- εἶργειν δὲ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανούς τὸν Ἰαξάρτην, καὶ Σογδιανούς δὲ καὶ Βακτριανούς τὸν Ὠξόν, μεταξὺ δὲ Ὑρκανῶν καὶ Ἀρίων Ταπύρους οἰκεῖν· κύκλῳ δὲ περὶ τὴν θάλατταν μετὰ τοὺς Ὑρκανοὺς Ἀμάρδους τε καὶ Ἀναριάκας καὶ Καδουσίου καὶ Ἀλβανούς καὶ Κασπίους καὶ Οὐιτίους, τάχα δὲ καὶ ἑτέρους μέχρι Σκυθῶν, ἐπὶ θάτερα δὲ μέρη τῶν Ὑρκανῶν Δέρβικας, τοὺς δὲ Καδουσίου συμψαύειν Μήδων καὶ Ματιανῶν

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 8, section 9, line 10

λέγει δὲ καὶ οὕτω τὰ διαστήματα ἀπὸ Κασπίων πυλῶν εἰς Ἰνδούς· εἰς μὲν Ἑκατόμυλον χιλίους ἑνακοσίους ἐξήκοντά φασιν, εἰς δ' Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Ἀρίοις τετρακισχιλίους πεντακοσίους τριάκοντα, εἴτ' εἰς Προφθασίαν τὴν ἐν Δραγγῇ χιλίους ἑξακοσίους, οἱ δὲ πεντακοσίους, εἴτ' εἰς Ἀραχωτοὺς τὴν πόλιν τετρακισχιλίους ἑκατὸν εἴκο- σιν, εἴτ' εἰς Ὀρτόσπανα ἐπὶ τὴν ἐκ Βάκτρων τρίοδον διςχιλίους, εἴτ' εἰς τὰ ὅρια τῆς Ἰνδικῆς χιλίους· ὁμοῦ μύριοι πεντακισχίλιοι τριακόσιοι.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 8, section 9, line 20

ἐπ' εὐθείας δὲ τῷ διαστήματι τούτῳ τὸ συνεχές δεῖ νοεῖν, τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ μέχρι τῆς ἐφ' ἁλᾶττης μῆκος τῆς Ἰνδικῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 10, section 1, line 14

συντελής δ' ἦν αὕτη καὶ ἡ Δραγγιανὴ μέχρι Καρμανίας, τὸ μὲν πλεόν τοῖς νο- τίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπεπτωκυῖα, ἔχουσα μέντοι τινὰ τῶν μερῶν καὶ τοῖς ἀρκτικοῖς πλησιάζοντα τοῖς κατὰ τὴν Ἀρίαν· καὶ ἡ Ἀραχωσία δὲ οὐ πολὺ ἄπωθεν ἐστί, καὶ αὕτη τοῖς νοτίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπε- πτωκυῖα καὶ μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τεταμένη, μέ- ρος οὕσα τῆς Ἀριανῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 11, section 1, line 6

τοσοῦτον δὲ ἰσχυσαν οἱ ἀποστήσαντες Ἕλληνες αὐτὴν διὰ τὴν ἀρετὴν τῆς χώρας ὥστε τῆς τε Ἀριανῆς ἐπεκράτουν καὶ τῶν Ἰνδῶν, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος ὁ Ἀρταμιτη- νός, καὶ πλείω ἔθνη κατεστρέψαντο ἢ Ἀλέξανδρος, καὶ μάλιστα Μένανδρος (εἰ γε καὶ τὸν Ὑπαννὶν διέβη πρὸς ἑω καὶ μέχρι τοῦ Ἰμάου προῆλθε) τὰ μὲν αὐτὸς τὰ δὲ Δημήτριος ὁ Εὐθυδήμου υἱὸς τοῦ Βακτρίων βα- σιλέως· οὐ μόνον δὲ τὴν Παταληνὴν κατέσχον ἀλλὰ καὶ τῆς ἄλλης παραλίης τὴν τε Σαραόστου καλουμέ- νην καὶ τὴν Σιγέρδιδος βασιλείαν.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 11, section 6, line 13

οὐχ ὁμολογοῦσι δ' ὅτι περιέπλευσαν τινες ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὴν Ὑρ- κανίαν· ὅτι δὲ δυνατόν, Πατροκλῆς εἶρηκε.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 11, section 7, line 2

Λέγεται δὲ διότι τοῦ Ταύρου τὸ τελευταῖον, ὃ καλοῦσιν Ἰμαῖον, τῇ Ἰνδικῇ θαλάττῃ ξυ- νάπτον, οὐδὲν οὔτε προὔχει πρὸς ἑω τῆς Ἰνδικῆς μᾶλλον οὔτ' εἰσέχει· παρίοντι δ' εἰς τὸ βόρειον πλευρὸν αἰεὶ τι τοῦ μή- κους ὑφαίρει καὶ τοῦ πλάτους ἢ θάλαττα, ὥστ' ἀπο- φαίνειν μύου- ρον πρὸς ἑω τὴν νῦν ὑπογραφομένην μερίδα τῆς Ἀσίας, ἣν ὁ Ταῦρος ἀπολαμβάνει πρὸς τὸν ὠκεανὸν τὸν πληροῦντα τὸ Κάσπιον πέλαγος.

Strabo Geogr., Geographica Book 11, chapter 11, section 7, line 15

5.16. STRABO

εἴρηται γὰρ ὅτι περὶ τετρακισμυρίους σταδίους ἐστὶ τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰσικοῦ κόλπου μέχρι τῆς ἑώας θαλάττης τῆς κατὰ Ἰνδούς, ἐπὶ δ' Ἰσὸν ἀπὸ τῶν ἐσπερίων ἄκρων τῶν κατὰ στήλας ἄλλοι τρισμύριοι· ἐστὶ δὲ ὁ μυχὸς τοῦ Ἰσικοῦ κόλπου μικρόν ἢ οὐδὲν Ἀμισοῦ ἑωθινώτερος, τὸ δὲ ἀπὸ Ἀμισοῦ ἐπὶ τὴν Ἵρκανίαν γῆν περὶ μυρίους ἐστὶ σταδίους, παράλληλον δὲ τῷ ἀπὸ τοῦ Ἰσσοῦ λε- χθέντι ἐπὶ τοὺς Ἰνδούς.

Strabo Geogr., Geographica Book 14, chapter 2, section 29, line 36

τὰ δ' ἐπ' εὐθείας τούτοις μέχρι τῆς Ἰνδικῆς τὰ αὐτὰ κεῖται καὶ παρὰ τῷ Ἀρτεμιδώρῳ ἅπερ καὶ παρὰ τῷ Ἑρατο- σθένει.

Strabo Geogr., Geographica Book 14, chapter 5, section 11, line 22

διὰ δὲ τούτ' αὐτὸ καὶ τὴν ἐκ τῆς Ῥοδίας γραμμὴν, ἣν μέχρι τοῦ Κύνου κα- τηγάγομεν, τὴν αὐτὴν ἀποφαίνομεν τῇ μέχρι Ἰσσοῦ, οὐδὲν παρὰ τούτο ποιοῦμενοι, καὶ τὸν Ταῦρόν φαμεν διήκειν ἐπ' εὐθείας τῇδε τῇ γραμμῇ μέχρι τῆς Ἰνδικῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 1, line 3

Τὰ περιλειπόμενα τῆς Ἀσίας ἐστὶ τὰ ἐκτὸς τοῦ Ταύρου, πλὴν Κιλικίας καὶ Παμφυλίας καὶ Λυκίας, τὰ ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς μέχρι Νείλου μεταξὺ τοῦ Ταύρου καὶ τῆς ἑξω θαλάττης τῆς νοτίου κείμενα.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 1, line 6

μετὰ δὲ τὴν Ἀσίαν ἡ Λιβύη ἐστὶ, περὶ ἧς ἐροῦμεν ὕστερον, νῦν δ' ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἀρκτέον· πρώτη γὰρ ἔκκειται πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς καὶ μεγίστη.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 3, line 7

Ἀπολλόδαμος γοῦν ὁ τὰ Παρθικὰ ποιήσας, μεμνημένος καὶ τῶν τὴν Βακτρία- νὴν ἀπο- στησάντων Ἑλλήνων παρὰ τῶν Συριακῶν βα- σιλέων τῶν ἀπὸ Σελεύκου τοῦ Νικάτορος, φησὶ μὲν αὐτοὺς αὐξηθέντας ἐπιθέσθαι καὶ τῇ Ἰνδικῇ· οὐδὲν δὲ προσανακαλύπτει * τῶν πρότερον ἐγνωσμένων, ἀλλὰ καὶ ἐναντιολογεῖ πλείω τῆς Ἰνδικῆς ἐκείνους ἢ Μακεδό- νας καταστρέψα- σθαι λέγων· Εὐκρατίδαν γοῦν πόλεις χιλίας ὕφ' ἑαυτῷ ἔχειν· ἐκεῖνοι δὲ γε αὐτὰ τὰ μεταξὺ ἔθνη τοῦ τε Ἰδάσπου καὶ τοῦ Ἰπάνιος τὸν ἀριθμὸν ἐννέα, πόλεις τε σχεῖν πεντακισχιλίας, ὧν μηδεμίαν εἶναι Κῶ τῆς Μεροπίδος ἐλάττω· ταύτην δὲ πᾶσαν τὴν χώραν καταστρεφάμενον Ἀλέξανδρον παραδοῦναι Πάρω.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 4, line 2

Καὶ οἱ νῦν δὲ ἐξ Αἰγύπτου πλέοντες ἐμπορικοὶ τῷ Νείλῳ καὶ τῷ Ἀραβίῳ κόλπῳ μέχρι τῆς Ἰνδικῆς σπάνιοι μὲν καὶ περιπεπλεύκασιν μέχρι τοῦ Γάγγου, καὶ οὗτοι δ' ἰδιῶται καὶ οὐδὲν πρὸς ἱστορίαν τῶν τό-πων χρήσιμοι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 4, line 8

κάκειθεν δὲ ἀφ' ἐνὸς τόπου καὶ παρ' ἐνὸς βασιλέως, Πανδίωνος κατ' ἄλλους Πάρω, ἦκεν ὡς Καίσαρα τὸν Σεβαστὸν δῶρα καὶ πρεσβεῖα καὶ ὁ κατακαύσας ἑαυτὸν Ἀθήνησι σοφιστῆς Ἰνδός, καθάπερ καὶ ὁ Κάλανος Ἀλεξάνδρῳ τὴν τοιαύτην θέαν ἐπι- δειξάμενος.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 5, line 7

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Φησὶ γοῦν Νέαρχος φιλονεικῆσαι αὐτὸν διὰ τῆς Γεδρωσίας ἀγαγεῖν τὴν στρατιάν, πεπυ-
σμένον διότι καὶ Σεμίραμις ἐστράτευσεν ἐπὶ Ἰνδοὺς καὶ Κύρος· ἀλλ' ἡ μὲν ἀνέ- στρεψε φεύγουσα
μετὰ εἴκοσιν ἀνθρώπων, ἐκεῖνος δὲ μεθ' ἑπτά· ὥς σεμνὸν τὸ ἐκείνων τοσαῦτα παθόντων αὐτὸν
καὶ στρατόπεδον διασῶσαι μετὰ νίκης διὰ τῶν αὐτῶν ἐθνῶν τε καὶ τόπων.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 6, line 2

Ἐκεῖνος μὲν δὴ ἐπίστευσεν· ἡμῖν δὲ τίς ἂν δικαία γένοιτο πίστις περὶ τῶν Ἰνδικῶν ἐκ τῆς
τοιαύτης στρα- τείας τοῦ Κύρου ἢ τῆς Σεμιράμιδος;

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 6, line 5

συναποφαίνεται δὲ πως καὶ Μεγασθένης τῷ λόγῳ τούτῳ κελεύων ἀπι- στεῖν ταῖς ἀρχαίαις
περὶ Ἰνδῶν ἱστορίαις· οὔτε γὰρ παρ' Ἰνδῶν ἔξω σταλῆναί ποτε στρατιάν, οὔτ' ἐπελθεῖν ἔξωθεν
καὶ κρατῆσαι πλὴν τῆς μεθ' Ἡρακλέους καὶ Διονύσου καὶ τῆς νῦν μετὰ Μακεδόνων.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 6, line 16

μέχρι μὲν δὴ δεῦρο καὶ Τεάρκωνα ἀφικέσθαι, ἐκείνον δὲ καὶ ἐκ τῆς Ἰβηρίας εἰς τὴν Θρά-
κην καὶ τὸν Πόντον ἀγαγεῖν τὴν στρατιάν· Ἰδάνθυρ- σον δὲ τὸν Σκύθην ἐπιδραμεῖν τῆς Ἀσίας
μέχρι Αἰγύ- πτου· τῆς δὲ Ἰνδικῆς μηδὲνα τούτων ἀφασθαι· καὶ Σεμίραμιν δ' ἀποθανεῖν πρὸ
τῆς ἐπιχειρήσεως· Πέρ- σας δὲ μισθοφόρους μὲν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς μεταπέμψασθαι Ἰδράκας, ἐκεῖ
δὲ μὴ στρατεῦσαι, ἀλλ' ἐγγὺς ἐλθεῖν μόνον ἥνικα Κύρος ἤλαυνεν ἐπὶ Μασσαγέτας.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 8, line 11

προσωνόμασαν καὶ πόλιν παρ' αὐτοῖς Νῦσαν Διονύ- σου κτίσμα, καὶ ὅρος τὸ ὑπὲρ τῆς
πόλεως Μηρόν, αἰ- τιασάμενοι καὶ τὸν αὐτόθι κισσὸν καὶ ἄμπελον, οὐδὲ ταύτην τελεσίκαρπον·
ἀπορρεῖ γὰρ ὁ βότρυς πρὶν περκάσαι διὰ τοὺς ὄμβρους τοὺς ἄδην· Διονύσου δ' ἀπογόνους τοὺς
Συδράκας ἀπὸ τῆς ἀμπέλου τῆς παρ' αὐτοῖς καὶ τῶν πολυτελῶν ἐξόδων, βακχικῶς τὰς τε
ἐκστρατείας ποιουμένων τῶν βασιλέων καὶ τὰς ἄλλας ἐξόδους μετὰ τυμπανισμοῦ καὶ εὐανθοῦς
στολῆς· ὅπερ ἐπιπολάζει καὶ παρὰ τοῖς ἄλλοις Ἰνδοῖς.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 8, line 12

Ἄορνον δὲ τινα πέτραν, ἥς τὰς ρίζας ὁ Ἰνδὸς ὑπορρεῖ πλησίον τῶν πηγῶν, Ἀλεξάνδρου κατὰ
μίαν προσβολὴν ἐλόντος, σεμνύνοντες ἔφασαν τὸν Ἡρακλέα τρεῖς μὲν προσβα- λεῖν τῇ πέτρᾳ
ταύτῃ τρεῖς δ' ἀποκρουσθῆναι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 9, line 8

Ὅτι δ' ἐστὶ πλάσματα ταῦτα τῶν κολακευόντων Ἀλέξανδρον πρῶτον μὲν ἐκ τοῦ μὴ ὁμολο-
γεῖν ἀλλή- λοις τοὺς συγγραφέας δῆλον, ἀλλὰ τοὺς μὲν λέγειν τοὺς δὲ μὴδ' ἀπλῶς μεμνησθαι·
οὐ γὰρ εἰκὸς τὰ οὐ- τως ἐνδοξα καὶ τύφου πλήρη μὴ πεπύσθαι, ἢ πεπύ- σθαι μὲν μὴ ἄξια δὲ
μνήμης ὑπολαβεῖν, καὶ ταῦτα τοὺς πιστοτάτους αὐτῶν· ἔπειτα ἐκ τοῦ μὴδὲ τοὺς με- ταξύ,
δι' ὧν ἐχρῆν τὴν ἐς Ἰνδοὺς ἀφίξιν γενέσθαι τοῖς περὶ τὸν Διόνυσον καὶ τὸν Ἡρακλέα, μηδὲν ἔχειν
τεκμήριον δεικνύναι τῆς ἐκείνων ὁδοῦ διὰ τῆς σφετέ- ρας γῆς.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 10, line 9

μάλιστα δ' ἐκ τῆς διαίτης ἐδόκει τῆς τότε πιστότατα εἶναι τὰ ὑπὸ τοῦ Ἐρατοσθένους ἐν
τῷ τρίτῳ τῶν γεωγραφικῶν ἐκτεθέντα κεφαλαιωδῶς περὶ τῆς τότε νομιζομένης Ἰνδικῆς, ἥνικα

5.16. STRABO

Ἀλέξανδρος ἐπῆλθε· καὶ ἦν ὁ Ἰνδὸς ὄριον ταύτης τε καὶ τῆς Ἀρια- νῆς ἣν ἐφεξῆς πρὸς τῇ ἐσπέρᾳ κειμένην Πέρσαι κα- τεῖχον· ὕστερον γὰρ δὴ καὶ τῆς Ἀριανῆς πολλὴν ἔσχον οἱ Ἰνδοὶ λαβόντες παρὰ τῶν Μακεδόνων.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 11, line 1

Τὴν Ἰνδικὴν περιώρικεν ἀπὸ μὲν τῶν ἄρκτων τοῦ Ταύρου τὰ ἔσχατα ἀπὸ τῆς Ἀριανῆς μέχρι τῆς ἐώας θαλάττης, ἅπερ οἱ ἐπιχώριοι κατὰ μέρος Παρο- πάμισόν τε καὶ Ἡμωδὸν καὶ Ἰμαον καὶ ἄλλα ὀνομάζου- σι, Μακεδόνες δὲ Καύκασον· ἀπὸ δὲ τῆς ἐσπέρας ὁ Ἰνδὸς ποταμός· τὸ δὲ νότιον καὶ τὸ προσεῶν πλευ- ρόν, πολὺ μείζω τῶν ἐτέρων ὄντα, προπέπτωκεν εἰς τὸ Ἀτλαντικὸν πέλαγος, καὶ γίνεται ῥομβοειδὲς τὸ τῆς χώρας σχῆμα τῶν μειζόνων πλευρῶν ἐκατέρου πλεο- νεκτοῦντος παρὰ τὸ ἀπεναντίον πλευρὸν καὶ

τρισχι-

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 11, line 16

τῆς μὲν οὖν ἐσπερίου πλευρᾶς ἀπὸ τῶν Καυκασίων ὄρων ἐπὶ τὴν νότιον θάλατταν σταδίοι μάλιστα λέγονται μύριοι τρισχίλιοι παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν μέχρι τῶν ἐκβολῶν αὐτοῦ, ὥστ' ἀπεναντίον ἡ ἐωθινὴ προσλαβοῦσα τοὺς τῆς ἄκρας τρισχιλίους ἔσται μυρίων καὶ ἑξακισχιλίων σταδίων.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 11, line 34

τούτῳ δὴ πάλιν τῷ διαστήματι προσθετὲν τὸ τῆς ἄκρας διάστημα τὸ προπίπτον ἐπὶ πλεόν πρὸς τὰς ἀνατολάς, οἱ τρισχίλιοι σταδίοι ποιήσουσι τὸ μέγιστον μῆκος· ἔστι δὲ τοῦτο τὸ ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ παρὰ τὴν ἐξῆς ἡὸνα μέχρι τῆς λεχθείσης ἄκρας καὶ τῶν ἀνατολικῶν αὐτῆς τερμόνων· οἰκοῦσι δ' ἐνταῦθα οἱ Κωνιακοὶ καλούμενοι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 12, line 3

Ἐκ δὲ τούτων πάρεστιν ὁρᾶν ὅσον διαφέρουσιν αἱ τῶν ἄλλων ἀποφάσεις, Κτησίου μὲν οὐκ ἐλάττω τῆς ἄλλης Ἀσίας τὴν Ἰνδικὴν λέγοντος, Ὀνησικρίτου δὲ τρίτον μέρος τῆς οἰκουμένης, Νεάρχου δὲ μηνῶν ὁδὸν τεττάρων τὴν διὰ τοῦ πεδίου, Μεγασθένους δὲ καὶ Δημάχου μετριάσαντων μᾶλλον· ὑπὲρ γὰρ δισμου- ρίους τιθέασι σταδίους τὸ ἀπὸ τῆς νοτίου θαλάττης ἐπὶ τὸν Καύκασον, Δημάχος δ' ὑπὲρ τοὺς τρισμυρί- ους κατ' ἐνίους τόπους· πρὸς οὓς ἐν τοῖς πρώ- τοις λό- γοις εἴρηται, νῦν δὲ τοσοῦτον εἰπεῖν ἱκανόν, ὅτι καὶ ταῦτα συνηγορεῖ τοῖς αἰτουμένοις συγγνώμην, ἐάν τι περὶ τῶν Ἰνδικῶν λέγοντες μὴ δισχυρίζονται.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 12, line 12

τῆς ἄλλης Ἀσίας τὴν Ἰνδικὴν λέγοντος, Ὀνησικρίτου δὲ τρίτον μέρος τῆς οἰκουμένης, Νεάρ- χου δὲ μηνῶν ὁδὸν τεττάρων τὴν διὰ τοῦ πεδίου, Μεγασθένους δὲ καὶ Δημάχου μετριάσαντων μᾶλλον· ὑπὲρ γὰρ δισμου- ρίους τιθέασι σταδίους τὸ ἀπὸ τῆς νοτίου θαλάττης ἐπὶ τὸν Καύκα- сон, Δημάχος δ' ὑπὲρ τοὺς τρισμυρί- ους κατ' ἐνίους τόπους· πρὸς οὓς ἐν τοῖς πρώτοις λό- γοις εἴρηται, νῦν δὲ τοσοῦτον εἰπεῖν ἱκανόν, ὅτι καὶ ταῦτα συνηγορεῖ τοῖς αἰτουμένοις συγγνώμην, ἐάν τι περὶ τῶν Ἰνδικῶν λέγοντες μὴ δισχυρίζονται.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 13, line 1

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Ἄπαντα δ' ἐστὶ κατάρρυτος ποταμοῖς ἡ Ἰνδική, τοῖς μὲν εἰς δύο τοὺς μεγίστους συρρηγνυμένοις τὸν τε Ἰνδὸν καὶ τὸν Γάγγην, τοῖς δὲ κατ' ἴδια στόματα ἐκδιδούσιν εἰς τὴν θάλατταν· ἅπαντες δ' ἀπὸ τοῦ Καυκάσου τὴν ἀρχὴν ἔχουσι καὶ φέρονται μὲν ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν τὸ πρῶτον, εἴθ' οἱ μὲν μένουσιν ἐπὶ τῆς αὐ- τῆς φορᾶς καὶ μάλιστα οἱ εἰς τὸν Ἰνδὸν συμβάλλοντες, οἱ δ' ἐπιστρέφονται πρὸς ἑω, καθάπερ καὶ ὁ Γάγγης ποταμός.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 13, line 13

οὗτος μὲν οὖν καταβάς ἐκ τῆς ὀρεινῆς, ἐπει- δὲν ἄφεται τῶν πεδίων ἐπιστρέψας πρὸς ἑω καὶ ῥυεῖς παρὰ τὰ Παλίβοθρα μεγίστην πόλιν πρόεισιν ἐπὶ τὴν ταύτη θάλατταν καὶ μίαν ἐκβολὴν ποιεῖται, μέγιστος ὢν τῶν κατὰ τὴν Ἰνδικὴν ποταμῶν· ὁ δὲ Ἰνδὸς δυσὶ στόμασιν εἰς τὴν μεσημβρινὴν ἐκπίπτει θάλατταν, ἐμ- περιλαμβάνων τὴν Παταληνὴν καλουμένην χώραν παραπλησίαν τῇ κατ' Αἴγυπτον Δέλτα.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 13, line 19

ἐκ δὲ τῆς ἀνα- θυμιάσεως τῶν τοσούτων ποταμῶν καὶ ἐκ τῶν ἐτησί- ων, ὡς Ἐρατοσθένης φησί, βρέχεται τοῖς θερινοῖς ὁμ- βροῖς ἡ Ἰνδική, καὶ λιμνάζει τὰ πεδία· ἐν μὲν οὖν τοῦ- τοις τοῖς ὁμβροῖς λῖνον σπείρεται καὶ κέγχρος, πρὸς τούτοις σήσαμον ὄρυζα βόσμορον· τοῖς δὲ χειμερινοῖς καιροῖς πυροὶ κριθαὶ ὄσπρια καὶ ἄλλοι καρποὶ ἐδώδι- μοι, ὧν ἡμεῖς ἄπειροι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 13, line 24

.. τὰ αὐτὰ φύεται καὶ ἐν τῇ Ἰνδικῇ, καὶ τῶν ἐν τοῖς ποταμοῖς πλὴν ἵππου ποταμίου τὰ ἄλλα φέρουσι καὶ οἱ Ἰνδικοί· Ὀνησίκριτος δὲ καὶ τοὺς ἵππους γίνεσθαι φησι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 14, line 2

Τὴν δὲ Ταπροβάνην πελαγίαν εἶναι φασὶ νῆσον ἀπέχουσαν τῶν νοτιωτάτων τῆς Ἰνδικῆς τῶν κατὰ τοὺς Κωνιακοὺς πρὸς μεσημβρίαν ἡμερῶν ἑπτὰ πλοῦν, μῆ- κος μὲν ὡς πεντακισχι- λίων σταδίων ἐπὶ τὴν Αἰθιοπίαν· ἔχειν δὲ καὶ ἐλέφαντας.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 15, line 10

εἶναι δὲ καὶ ἄλλας νήσους αὐτῆς μεταξὺ καὶ τῆς Ἰνδικῆς, νοτιωτάτην δ' ἐκεῖ- νην.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 17, line 12

κατανοη- θῆναι δὲ ταῦτα καὶ ὑφ' ἑαυτοῦ καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων φη- σίν, ὥρμηκόντων μὲν εἰς τὴν Ἰνδικὴν ἀπὸ Παροπαμι- σαδῶν, μετὰ δὲ δυσμᾶς πληιάδων, καὶ διατριφάντων κατὰ τὴν ὀρεινὴν ἐν τε τῇ Ἰπασίων καὶ τῇ Ἀσσακα- νοῦ γῇ τὸν χειμῶνα, τοῦ δ' ἔαρος ἀρχομένου καταβε- βηκόντων εἰς τὰ πεδία καὶ πόλιν Τάξιλα εὐμεγέθη, ἐν- τεῦθεν δ' ἐπὶ Ἰδάσπην καὶ τὴν Πάρου χώραν· τοῦ μὲν οὖν χειμῶνος ὕδωρ οὐκ ἰδεῖν ἀλλὰ χιόνας μόνον· ἐν δὲ τοῖς Ταξίλοις πρῶτον ὑσθῆναι, καὶ ἐπειδὴ κατα- βᾶσιν ἐπὶ τὸν Ἰδάσπην καὶ νικήσασιν Πῶρον ὁδὸς ἦν

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 19, line 4

Τὴν δ' ὁμοιότητα τῆς χώρας ταύτης πρὸς τε τὴν Αἴγυπτον καὶ τὴν Αἰθιοπίαν καὶ πάλιν τὴν ἐναντιό- τητα παραθεῖς ὁ Ἀριστόβουλος, διότι τῇ Νείλῳ μὲν ἐκ τῶν νοτίων ὁμβρῶν ἐστὶν ἡ πλήρωσις τοῖς Ἰνδικοῖς δὲ ποταμοῖς ἀπὸ τῶν ἀρκτικῶν, ζητεῖ πῶς οἱ μεταξὺ τόποι οὐ κατομ- βροῦνται· οὔτε γὰρ ἡ Θηβαῖς μέχρι Σύννης καὶ τῶν ἐγγύς Μερόης οὔτε τῆς Ἰνδικῆς τὰ ἀπὸ τῆς Παταληνῆς μέχρι τοῦ Ἰδάσπου· τὴν δ' ὑπὲρ ταῦτα τὰ μέρη χώραν ἐν ἧ καὶ ὁμβροὶ καὶ

5.16. STRABO

νιφετοί, πα- ραπλησίως ἔφη γεωργεῖσθαι τῇ ἄλλῃ τῇ ἔξω τῆς Ἰνδι- κῆς χώρα· ποτίζεσθαι γὰρ ἐκ τῶν ὀμβρῶν καὶ χιόνων.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 19, line 17

πεμφθεὶς γοῦν ἐπὶ τινὰ χρεῖαν ἰδεῖν φησιν ἐρημωθεῖσαν χώραν πλειόνων ἢ χιλίων πόλεων σὺν κάμαις, ἐκλιπόντος τοῦ Ἰνδοῦ τὸ οἰκεῖον ῥεῖθρον ἐκ- τραπομένου δ' εἰς τὸ ἕτερον ἐν ἀριστερᾷ κοιλοτέρῳ πολὺ, καὶ οἶον καταρράξαντος, ὥς τὴν ἀπολειφθεῖσαν ἐν δεξιᾷ χώραν μηκέτι ποτί- ζεσθαι ταῖς ὑπερχύσεσι, μετεωροτέραν οὔσαν οὐ τοῦ ῥεῖθρου τοῦ καινοῦ μό- νον ἀλλὰ καὶ τῶν ὑπερχύσεων.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 20, line 7

Μεγασθένης δὲ τὴν εὐδαι- μονίαν τῆς Ἰνδικῆς ἐπισημαίνεται τῷ δίκαρπον εἶναι καὶ δίφορον· καθάπερ καὶ Ἑρατοσθένης ἔφη, τὸν μὲν εἰπὼν σπῆρον χειμερινὸν τὸν δὲ θερινόν, καὶ ὀμβρον ὁμοίως· οὐδὲν γὰρ ἔτος εὐρίσκεσθαι φησι πρὸς ἀμφο- τέρους καιροὺς ἄνομβρον· ὥστ' εὐετηρίαν ἐκ τούτου συμβαίνειν ἀφόρου μηδέποτε τῆς γῆς οὔσης· τοὺς τε ξυλίνους καρποὺς γεννᾶσθαι πολλοὺς καὶ τὰς ῥίζας τῶν φυτῶν καὶ μάλιστα τῶν μεγάλων καλάμων, γλυ- κείας καὶ φύσει καὶ ἐφήσει χλιαυομένου τοῦ ὕδατος τοῖς ἡλίοις τοῦ τ' ἐκπίπτοντος ἐκ Διὸς καὶ τοῦ

ποτα-

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 21, line 1

Πολλὰ γὰρ δὴ δένδρα παρὰδοξα ἡ Ἰνδικὴ τρέφει, ὧν ἐστὶ καὶ τὸ κάτω νεύοντας ἔχον τοὺς κλάδους τὰ δὲ φύλλα ἀσπίδος οὐκ ἐλάττω.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 21, line 5

Ὀνησίκριτος δὲ καὶ περι- εργότερον τὰ ἐν τῇ Μουσικανοῦ διεξιὼν, ἃ φησι νο- τιώτατα εἶναι τῆς Ἰνδικῆς, διηγεῖται μεγάλα δένδρα τινά, ὧν τοὺς κλάδους αὐξηθέντας ἐπὶ πήχεις καὶ δώ- δεκα, ἔπειτα τὴν λοιπὴν αὐξήσιν καταφερῇ λαμβάνειν ὡς ἂν κατακαμπτομένους, ἕως ἂν ἄψωνται τῆς γῆς· ἔπειτα κατὰ γῆς διαδοθέντας ῥιζοῦσθαι ὁμοίως ταῖς κατῳρυξίν, εἴτ' ἀναδοθέντας στελεχοῦσθαι· ἐξ οὗ πά- λιν ὁμοίως τῇ αὐξήσει κατακαμφθέντας ἄλλην κατῳ- ρυγα ποιεῖν, εἴτ' ἄλλην, καὶ οὕτως ἐφεξῆς, ὥστ' ἀφ' ἐνὸς δένδρου σκιάδιον γίνεσθαι μακρὸν πολυστύλῳ σκηνῇ ὅμοιον.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 22, line 3

Ἐν δὲ τῇ Μουσικανοῦ καὶ σῖτον αὐτοφυῆ λέγει πυρῷ παραπλήσιον καὶ ἄμπελον, ὥστ' οἰνοφορεῖν τῶν ἄλλων ἄοινον λεγόντων τὴν Ἰνδικήν· ὥστε μὴδ' αὐ- λὸν εἶναι κατὰ τὸν Ἀνάχαρ- σιν μὴδ' ἄλλο τῶν μουσι- κῶν ὀργάνων μὴδὲν πλὴν κυμβάλων καὶ τυμπάνων καὶ κροτάλων ἃ τοὺς θαυματοποιοὺς κεκτῆσθαι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 22, line 14

ἔχειν δὲ καὶ κιννάμωμον καὶ νάρδον καὶ τὰ ἄλλα ἀρώματα τὴν νό- τιον γῆν τὴν Ἰνδικήν ὁμοίως ὥσπερ τὴν Ἀραβίαν καὶ τὴν Αἰθιοπίαν ἔχουσάν τι ἐμφερὰς ἐκείναις κατὰ τοὺς ἡλίους· διαφέρειν δὲ τῷ πλεονασμῷ τῶν ὑδάτων ὥστ' ἐνικμον εἶναι τὸν ἀέρα καὶ τροφιμώτερον παρὰ τοῦτο καὶ γόνιμον μᾶλλον, ὥς δ' αὐτῶς καὶ τὴν γῆν καὶ τὸ ὕδωρ, ἥ δὲ καὶ μείζω τὰ τε χερσαῖα τῶν ζώων καὶ τὰ καθ' ὕδατος τὰ ἐν Ἰνδοῖς τῶν παρ' ἄλλοις εὐρίσκεσθαι.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 23, line 6

ὅσῳ δέ γε φησὶ τὸ μὲν τοῦ Νείλου ὕδωρ δι' εὐθείας ἔπεισι πολλήν χώραν καὶ στε- νήν καὶ μεταβάλλει πολλὰ κλίματα καὶ πολλοὺς ἀέρας, τὰ δ' Ἰνδικὰ ῥεύματα ἐς πεδία ἀναχεῖται μείζω καὶ πλατύτερα ἐνδιατρίβοντα πολὺν χρόνον τοῖς αὐτοῖς κλίμασι, τοσῶδε ἐκεῖνα τούτου τροφικώτερα, διότι καὶ τὰ κήτη μείζω τε καὶ πλείω· καὶ ἐκ τῶν νεφῶν δὲ ἐφθὸν ἤδη χεῖσθαι τὸ ὕδωρ.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 24, line 22

βελτίους δὲ οἱ τὸν ἥλιον αἰτιώμενοι καὶ τὴν ἐξ αὐτοῦ ἐπικάουσιν κατ' ἐπίλειψιν σφοδρὰν τῆς ἐπιπολῆς ἰκμάδος· καθ' ὃ καὶ τοὺς Ἰν- δούς μὴ οὐλοτριχεῖν φαμεν, μηδ' οὕτως ἀπεφεισμέ- νως ἐπικεκαῦσθαι τὴν χθόνα, ὅτι ὑγροῦ κοινωνοῦσιν ἀέρος.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 25, line 6

Νέαρχος δὲ τὸ ζητούμενον πρότερον ἐπὶ τοῦ Νείλου πόθεν ἢ πλήρωσις αὐτοῦ, δι- δάσκειν ἔφη τοὺς Ἰνδικοὺς ποταμοὺς ὅτι ἐκ τῶν θερι- νῶν ὄμβρων συμβαίνει· Ἀλέξανδρον δ' ἐν μὲν τῷ Ἰθάσπῃ κροκοδείλους ἰδόντα, ἐν δὲ τῷ Ἀκεσίνῃ κυά- μους Αἰγυπτίους, εὐρηκέναι δόξαι τὰς τοῦ Νείλου πη- γὰς, καὶ παρασκευάζεσθαι στόλον εἰς τὴν Αἴγυπτον ὡς τῷ ποταμῷ τούτῳ μέχρι ἐκεῖσε πλευσόμενον· μι- κρόν δ' ὕστερον γινῶναι διότι οὐ δύναται ὁ ἥλιπσις· “μέσσω γάρ μεγάλοι ποταμοὶ καὶ δεινὰ ῥέεθρα, Ὡκεα- “νὸς μὲν πρῶτον,” εἰς ὃν ἐκδιδόασιν οἱ Ἰνδικοὶ πάντες ποταμοί, ἔπειτα ἡ Ἀριανὴ καὶ ὁ Περσικὸς κόλπος καὶ

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 25, line 14

πρότερον ἐπὶ τοῦ Νείλου πόθεν ἢ πλήρωσις αὐτοῦ, δι- δάσκειν ἔφη τοὺς Ἰνδικοὺς ποταμοὺς ὅτι ἐκ τῶν θερι- νῶν ὄμβρων συμβαίνει· Ἀλέξανδρον δ' ἐν μὲν τῷ Ἰθάσπῃ κροκοδείλους ἰδόντα, ἐν δὲ τῷ Ἀκεσίνῃ κυά- μους Αἰγυπτίους, εὐρηκέναι δόξαι τὰς τοῦ Νείλου πη- γὰς, καὶ πα- ρασκευάζεσθαι στόλον εἰς τὴν Αἴγυπτον ὡς τῷ ποταμῷ τούτῳ μέχρι ἐκεῖσε πλευσόμενον· μι- κρόν δ' ὕστερον γινῶναι διότι οὐ δύναται ὁ ἥλιπσις· “μέσσω γάρ μεγάλοι ποταμοὶ καὶ δεινὰ ῥέεθρα, Ὡκεα- “νὸς μὲν πρῶτον,” εἰς ὃν ἐκδιδόασιν οἱ Ἰνδικοὶ πάντες ποταμοί, ἔπειτα ἡ Ἀριανὴ καὶ ὁ Περσικὸς κόλπος καὶ ὁ Ἀράβιος καὶ αὐτὴ ἡ Ἀραβία καὶ ἡ Τρωγλοδυτικὴ.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 26, line 6

ὁ δὲ Νεῖλος καὶ οἱ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν πλεονέκτημά τι ἔχουσι παρὰ τοὺς ἄλλους διὰ τὸ τὴν χώραν ἀοίκητον εἶναι χωρὶς αὐτῶν, πλωτὴν ἅμα καὶ γεωργήσιμον οὔσαν, καὶ μήτ' ἐφοδεύε- σθαι δυναμένην ἄλλως μήτ' οἰκεῖσθαι τὸ παράπαν.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 26, line 11

τοὺς μὲν οὖν εἰς τὸν Ἰνδὸν καταφερομένους ἱστοροῦμεν τοὺς ἀξίους μνήμης καὶ τὰς χώρας, δι' ὧν ἡ φορὰ, τῶν δ' ἄλλων ἐστὶν ἄγνοια πλείων ἢ γνώσις.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 26, line 17

ἦκε μὲν οὖν τῆς Ἰνδικῆς πλησίον δι' Ἀριανῶν, ἀφείδ' αὐτὴν ἐν δεξιᾷ ὑπερέβη τὸν Παροπά- μισον εἰς τὰ προσάρκτια μέρη καὶ τὴν Βακτρι- ανήν· καταστρεφάμενος δὲ τὰ κεῖ πάντα ὅσα ἦν ὑπὸ Πέρσαις καὶ ἔτι πλείω, τότε ἤδη καὶ τῆς Ἰνδικῆς ὥρε- χθη, λεγόντων μὲν περὶ αὐτῆς πολλῶν οὐ σαφῶς δέ.

5.16. STRABO

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 26, line 24

ἀνέστρεψε δ' οὖν ὑπερθεῖς τὰ αὐτὰ ὄρη κατ' ἄλλας ὁδοὺς ἐπιτομωτέρας ἐν ἀριστερᾷ ἔχων τὴν Ἰνδικήν, εἴτ' ἐπέστρεφεν εὐθύς ἐπ' αὐτήν καὶ τοὺς ὄρους τοὺς ἐσπερίους αὐτῆς καὶ τὸν Κώφην ποταμὸν καὶ τὸν Χο- ἄσπην, ὃς εἰς τὸν Κώφην ἐμβάλλει ποταμὸν κατὰ Πλημύριον πόλιν, ξυεῖς παρὰ * Γώρυδι ἄλλην πόλιν, καὶ διεξιὼν τήν τε Βανδοβηνήν καὶ τὴν Γανδαρίτιν.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 27, line 1

Ἦν δὲ μετὰ τὸν Κώφην ὁ Ἰνδός, εἴθ' ὁ Ἰδάσπης, εἴθ' ὁ Ἀκεσίνης καὶ ὁ Ἰάρωτις, ὕστατος δ' ὁ Ἰπάνιος.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 27, line 8

ταῦτ' οὖν ἐγένετο γνώριμα ἡμῖν τῶν ἐωθινῶν τῆς Ἰν- δικῆς μερῶν, ὅσα ἐντὸς τοῦ Ἰπάνιος, καὶ εἰ τινα πρὸς- ιστόρησαν οἱ μετ' ἐκείνους περαιτέρω τοῦ Ἰπάνιος προελθόντες μέχρι τοῦ Γάγγου καὶ Παλιβόθρων.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 27, line 11

μετὰ μὲν οὖν τὸν Κώφην ὁ Ἰνδός ῥεῖ· τὰ δὲ μετὰ τούτων τῶν δυεῖν ποταμῶν ἔχουσιν Ἀστακηνοὶ τε καὶ Μασια- νοὶ καὶ Νυσαῖοι καὶ Ἰπάσιοι· εἴθ' ἡ Ἀσσακανοῦ, ὅπου Μασόγα πόλις, τὸ βασιλείον τῆς χώρας.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 27, line 15

ἤδη δὲ πρὸς τῷ Ἰνδῷ πάλιν ἄλλη πόλις Πευκολαῖτις, πρὸς ἣ ζεύγμα γεννηθὲν ἐπεραίωσε τὴν στρατιάν.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 28, line 1

Μεταξὺ δὲ τοῦ Ἰνδοῦ καὶ τοῦ Ἰδάσπου Τάξιλα ἔστι πόλις μεγάλη καὶ εὐνομωτάτη, καὶ ἡ περικειμένη χώρα συχνὴ καὶ σφόδρα εὐδαίμων, ἤδη συνάπτουσα καὶ τοῖς πεδίοις.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 28, line 9

ἐδέξαντό τε δὴ φιланθρώπως τὸν Ἀλέξανδρον οἱ ἄνθρωποι καὶ ὁ βασιλεὺς αὐτῶν Ταξι- λης· ἔτυχόν τε πλειόνων ἢ αὐτοὶ παρέσχον, ὥστε φθο- νεῖν τοὺς Μακεδόνας καὶ λέγειν ὡς οὐκ εἶχεν, ὡς εἰ- κεν, Ἀλέξανδρος οὓς εὐεργετήσῃ πρὶν ἢ διέβῃ τὸν Ἰν- δόν.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 30, line 16

τατον ἱστορεῖται τὸ περὶ τοῦ κάλλους ὅτι τιμᾶται δια- φερόντως, ὡς ἵππων καὶ κυνῶν· βασιλέα τε γὰρ τὸν κάλλιστον αἰρεῖσθαι φησιν Ὀνησίκριτος, γενόμενόν τε παιδίον μετὰ δίμηνον κρίνεσθαι δημοσίᾳ πότερον ἔχει τὴν ἐννομον μορφήν καὶ τοῦ ζῆν ἀξίαν ἢ οὐ, κρι- θέντα δ' ὑπὸ τοῦ ἀποδειχθέντος ἄρχοντος ζῆν ἢ θα- νατοῦσθαι· βάπτεσθαι τε πολλοῖς εὐανθεστάτοις χρώ- μασι τοὺς πώγωνας αὐτοῦ τούτου χάριν καλλωπιζο- μένους· τοῦτο δὲ καὶ ἄλλους ποιεῖν ἐπιμελῶς συχνούς τῶν Ἰνδῶν (καὶ γὰρ δὴ φέρειν τὴν χώραν χρώας θαν- μαστάς) καὶ θριξὶ καὶ ἐσθῆσι· τοὺς δ' ἄνθρώπους τὰ ἄλλα μὲν εὐτελεῖς εἶναι φιλοκόσμους δέ.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 30, line 27

φασὶ δ' ἐν τῇ Σωπεΐθους χώρᾳ ὀρυκτῶν ἀλῶν ὅρος εἶναι ἀρκεῖν δυνάμενον ὅλη τῇ Ἰνδικῇ· καὶ χρυσεῖα δὲ καὶ ἀργυρεῖα οὐ πολὺ ἄπω- θεν ἐν ἄλλοις ὄρεσιν ἱστορεῖται καλὰ, ὡς ἐδήλωσε Γόργος ὁ μεταλλευτής.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 30, line 29

οἱ δ' Ἰνδοὶ μεταλλείας καὶ χω- νείας ἀπείρως ἔχοντες οὐδ' ὧν εὐποροῦσιν ἴσασιν, ἀλλ' ἀπλού- στερον μεταχειρίζονται τὸ πρᾶγμα.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 32, line 8

πάντες δ' οἱ λεχθέντες ποταμοὶ συμβάλλουσιν εἰς ἓνα τὸν Ἰν- δόν, ὕστατος δ' ὁ Ἵπανις· πεντεκαίδεκα δὲ τοὺς σύμ- παντας συρρεῖν φασὶ τοὺς γε ἀξιολόγους· πληρωθεὶς δ' ἐκ πάντων ὥστε καὶ ἐφ' ἑκατὸν σταδίου, ὡς οἱ μὴ μετριάζοντές φασιν, εὐρύνεσθαι κατὰ τινὰς τόπους, ὡς δ' οἱ μετρίωτεροι, πεντήκοντα τὸ πλεῖστον ἐλάχι- στον δὲ ἑπτὰ, ἔπειτα δυοὶ στόμασιν εἰς τὴν νοτίαν ἐκ- δίδωσι θάλατταν καὶ τὴν Παταληνὴν προσαγορευομέ- νην ποιεῖ νῆσον.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 33, line 4

Ἡ μὲν οὖν μεταξὺ τοῦ Ἵπάνιος καὶ τοῦ Ἰδάσπου λέγεται ἐννέα ἔχειν ἔθνη, πόλεις δὲ εἰς πεντακισχίλιας οὐκ ἐλάττους Κῶ τῆς Μεροπίδος· δοκεῖ δὲ πρὸς ὑπερ- βολὴν εἰρησθαι τὸ πλῆθος· ἡ δὲ μεταξὺ τοῦ Ἰνδοῦ καὶ τοῦ Ἰδάσπου εἴρηται σχεδὸν τι ὑφ' ὧν οἰκεῖται τῶν ἀξίων μνήμης.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 33, line 14

πρὸς αὐτῇ δ' ἤδη τῇ Παταληνῇ τὴν τε τοῦ Μουσικανοῦ λέγουσι καὶ τὴν Σάβου, τὰ Σινδόμανα, καὶ ἔτι τὴν Πορτικανοῦ καὶ ἄλ- λων ὧν ἐκράτησεν ἀπάντων Ἀλέξανδρος, τὴν τοῦ Ἰνδοῦ παροικούντων ποταμίαν, ὑστάτης δὲ τῆς Παταληνῆς ἦν ὁ Ἰνδὸς ποιεῖ σχισθεὶς εἰς δύο προχοάς.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 34, line 8

λέγει δὲ καὶ περὶ τῆς Μουσικανοῦ χώρας ἐπὶ πλεον ἐγκωμιάζων αὐτήν, ὧν τινὰ κοινὰ καὶ ἄλλοις Ἰνδοῖς ἰστόρηται, ὡς τὸ μακρόβιον ὥστε καὶ τριάκοντα ἐπὶ τοῖς ἑκατὸν προσλαμβάνειν (καὶ γὰρ τοὺς Σῆρας ἔτι τούτων μακροβιωτέρους τινὲς φασὶ) καὶ τὸ λιτόβιον καὶ τὸ ὑγιεινόν, καίπερ τῆς χώρας ἀφθονίαν ἀπάντων ἐχούσης.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 35, line 8

ὅτι μὲν γὰρ μέγιστος τῶν μνημονευομέ- νων κατὰ τὰς τρεῖς ἡπείρους καὶ μετ' αὐτὸν ὁ Ἰνδός, τρίτος δὲ καὶ τέταρτος ὁ Ἰστρος καὶ ὁ Νεῖλος, ἱκανῶς συμφωνεῖται· τὰ καθ' ἕκαστα δ' ἄλλοι ἄλλως περὶ αὐτοῦ λέγουσιν, οἱ μὲν τριάκοντα σταδίων τοῦλάχιστον πλάτος οἱ δὲ καὶ τριῶν, Μεγασθένης δέ, ὅταν ἡ μέτριος, καὶ εἰς ἑκατὸν εὐρύνεσθαι, βάθος δὲ εἴκοσιν ὀργυιῶν τοῦλάχιστον.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 39, line 1

Φησὶ δὴ τὸ τῶν Ἰνδῶν πλῆθος εἰς ἑπτὰ μέρη διη- ρῆσθαι, καὶ πρώτους μὲν τοὺς φιλοσόφους εἶναι κατὰ τιμὴν, ἐλαχίστους δὲ κατ' ἀριθμόν· χρῆσθαι δ' αὐτοῖς ἰδίᾳ μὲν ἐκάστω τοὺς θύοντας ἢ τοὺς ἐναγίζοντας, κοινῇ δὲ τοὺς βασιλείας κατὰ τὴν μεγάλην λεγομένην σύνοδον, καθ' ἣν τοῦ νέου ἔτους ἅπαντες οἱ φιλόσοφοι τῷ βασιλεῖ συνελθόντες ἐπὶ θύρας ὅ τι ἂν αὐτῶν ἑκα- στος συντάξῃ τῶν χρησίμων ἢ τηρήσῃ πρὸς εὐετηρίαν καρπῶν τε καὶ ζώων καὶ περὶ πολιτείας, προσφέρει τοῦτ' εἰς τὸ μέσον· ὃς δ' ἂν τρεῖς ἐφευσμένος ἀλῶ,

νό-

5.16. STRABO

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 44, line 4

Μεγασθένης δὲ περὶ τῶν μυρμήκων οὕτω φησὶν ὅτι ἐν Δέρδαις, ἔθνη με- γάλῳ τῶν προσε- φῶν καὶ ὀρειῶν Ἰνδῶν, ὁροπέδιον εἶη τρισχιλίων πῶς τὸν κύκλον σταδίων· ὑποκειμένων δὲ τούτῳ χρυσωρυχείων οἱ μεταλλεύοντες εἶεν μύρμη- κες, θηρία ἀλωπέκων οὐκ ἐλάττω, τάχος ὑπερ- φυῆς ἔχοντα καὶ ζῶντα ἀπὸ θήρας· ὀρύττει δὲ χειμῶνι τὴν γῆν, σωρεύει τε πρὸς τοῖς στομίοις, καθάπερ οἱ ἀσφά- λακες· ψῆγμα δ' ἐστὶ χρυσοῦ μικρᾶς ἐφήσεως δεόμε- νον· τοῦθ' ὑποζυγί- οις μετῴσιν οἱ πλησιόχωροι λά- θρα· φανερώς γὰρ διαμάχονται καὶ διώκουσι φεύγον- τας, καταλαβόντες δὲ διαχρῶνται καὶ αὐτοὺς καὶ τὰ

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 45, line 28

οὐδὲν δὲ τούτων οὕτως ὀχλεῖν ὥς τὰ λεπτὰ ὀφείδια οὐ μείζω σπιθαμιαίων· εὕρισκε- σθαι γὰρ ἐν σκηναῖς, ἐν σκεύεσιν, ἐν θριγγοῖς ἐγχε- κρυμμένα· τοὺς δὲ πληγέντας αἰμορροεῖν ἐκ παντὸς πόρου μετὰ ἐπωδυνίας, ἔπειτα ἀποθνήσκειν, εἰ μὴ βοηθήσει τις εὐθύς· τὴν δὲ βοήθειαν ἑσθίαν εἶναι διὰ τὴν ἀρετὴν τῶν Ἰνδικῶν ῥιζῶν καὶ φαρμάκων.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 45, line 30

κρο- κοδείλους τε οὔτε πολλοὺς οὔτε βλαπτικούς ἀνθρώ- πων ἐν τῷ Ἰνδῷ φησιν εὕρισκασθαι, καὶ τὰ ἄλλα δὲ ζῶα τὰ πλεῖστα τὰ αὐτὰ ἅπερ ἐν τῷ Νείλῳ γεννᾶσθαι πλὴν ἵππου ποταμίου· Ὀνησίκριτος δὲ καὶ τοῦτόν φησι γεννᾶσθαι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 45, line 36

τῶν δ' ἐκ θαλάττης φησὶν ὁ Ἀριστόβουλος εἰς μὲν τὸν Νεῖλον ἀνατρέχειν μηδὲν ἔξω θρίσσης καὶ κεστρέως καὶ δελφίνος διὰ τοὺς κροκοδείλους, ἐν δὲ τῷ Ἰνδῷ πλῆθος· τῶν δὲ καρίδων τὰς μὲν μικρὰς μέχρι * ὄρους ἀναθεῖν, τὰς δὲ μεγάλας μέχρι τῶν συμβολῶν τοῦ τε Ἰνδοῦ καὶ τοῦ Ἀκεσίνου.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 53, line 1

Εὐτελεῖς δὲ κατὰ τὴν δίαίταν Ἰνδοὶ πάντες, μᾶλ- λον δ' ἐν ταῖς στρατείαις· οὐδ' ὄχλῳ περιττῷ χαίρουσι, διόπερ εὐκοσμοῦσι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 54, line 21

δούλοις δὲ οὗτος μὲν φησι μηδὲνα Ἰνδῶν χρῆσθαι, Ὀνησίκριτος δὲ τῶν ἐν τῇ Μουσικανοῦ τοῦτ' ἴδιον ἀποφαίνει καὶ ὥς κατόρ- θωμά γε· καθάπερ καὶ ἄλλα πολλὰ λέγει τῆς χώρας ταύτης κατορθώματα ὥς εὐνομωτάτης.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 67, line 1

Τὴν δὲ φιλοτεχνίαν τῶν Ἰνδῶν ἐμφανίζων σπόγ- γους φησὶν ἰδόντας παρὰ τοῖς Μακεδόσι μιμῆσασθαι, τρίχας καὶ σχοινία λεπτὰ καὶ ἀρπεδόνας διαρράφαντας εἰς ἔρια, καὶ μετὰ τὸ πιλῆσαι τὰ μὲν ἐξεκλύσαντας τὰ δὲ βάψαντας χροιαῖς· στλεγγιδοποιούς τε καὶ ληκυθο- ποι- οὺς ταχὺ γενέσθαι πολλούς· ἐπιστολὰς δὲ γράφειν ἐν σινδόσι λίαν κεκροτημέναις, τῶν ἄλλων γράμμασιν αὐτοὺς μὴ χρῆσθαι φαιμένων· χαλκῷ δὲ χρῆσθαι χυ- τῷ, τῷ δ' ἐλατῷ μή· τὴν δ' αἰτίαν οὐκ εἶπε, καίτοι τὴν ἀτοπίαν εἰπὼν τὴν παρακολουθοῦσαν, ὅτι

θραύ-

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 67, line 12

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

τῶν δὲ περὶ τῆς Ἰνδικῆς λεγομένων καὶ τοῦτ' ἐστίν, ὅτι ἀντὶ τοῦ προσκυνεῖν προσεύχεσθαι τοῖς βασιλεῦσι καὶ πᾶσι τοῖς ἐν ἐξουσίᾳ καὶ ὑπεροχῇ νόμος.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 68, line 7

Τῆς δ' ἀνομολογίας τῶν συγγραφέων ἔστω παρά-δειγμα καὶ ὁ περὶ τοῦ Καλάνου λόγος· ὅτι μὲν γὰρ συν-ῆλθεν Ἀλεξάνδρῳ καὶ ἀπέθανεν ἐκὼν παρ' αὐτῷ διὰ πυρὸς ὁμολογοῦσι· τὸν δὲ τρόπον οὐ τὸν αὐτόν φα-σιν οὐδὲ κατὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας, ἀλλ' οἱ μὲν οὕτως εἰ-ρήκασιν· συνακολουθῆσαι γὰρ ὡς ἐγκωμιαστὴν τοῦ βασιλέως ἔξω τῶν τῆς Ἰνδικῆς ὄρων παρὰ τὸ κοινὸν ἔθος τῶν ἐκεῖ φιλοσόφων· ἐκείνους γὰρ τοῖς αὐτόθι συνεῖναι βασιλεῦσιν ὑφηγουμένους τὰ περὶ τοὺς θεοὺς, ὡς τοὺς μάγους τοῖς Πέρσαις.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 68, line 34

πυρώδεις εἰς· πῦρ ὠθουμένους· οἷος ἦν καὶ ὁ Κάλανος, ἀκόλαστος ἄνθρωπος καὶ ταῖς Ἀλεξάνδρου τραπέζαις δεδουλωμένος· τοῦτον μὲν οὖν ψέγεσθαι, τὸν δὲ Μάνδανιν ἐπαινεῖσθαι, ὃς τῶν τοῦ Ἀλεξάνδρου ἀγγέ-λων καλούντων πρὸς τὸν Διὸς υἱὸν πειθομένῳ τε δῶ-ρα ἔσεσθαι ὑπισχνουμένων ἀπειθοῦντι δὲ κόλασιν μὴτ' ἐκείνῳ φαίη Διὸς υἱὸν ὃν γε ἄρχειν μὴδὲ πολλο-στοῦ μέρους τῆς γῆς, μὴτε αὐτῷ δεῖν τῶν παρ' ἐκεί-νου δωρεῶν ὧν οὐδεὶς κόρος, μὴτε δὲ ἀπειλῆς εἶναι φόβον ᾧ ζῶντι μὲν ἀρκοῦσα εἴη τροφὸς ἡ Ἰνδική, ἀπο-θανὼν δὲ ἀπαλλάξαιτο τῆς τετρα-χωμένης ὑπὸ γήρως σαρκός, μεταστὰς εἰς βελτίῳ καὶ καθαρώτερον βίον· ὥστ' ἐπαινεῖσαι τὸν Ἀλέξανδρον καὶ συγχωρῆσαι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 69, line 2

Λέγεται δὲ καὶ ταῦτα παρὰ τῶν συγγραφέων, ὅτι σέβονται μὲν τὸν ὀμβριον Δία Ἰνδοὶ καὶ τὸν Γάγγην ποταμὸν καὶ τοὺς ἐγχωρίους δαίμονας.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 69, line 13

τῶν τε μυρμήκων τινὰς καὶ πτερωτοὺς λέγουσι τῶν χρυσαυρύχων· ψήγματα τε χρυσοῦ καταφέρειν τοὺς ποταμούς, καθάπερ τοὺς Ἰβηρικοὺς· ἐν δὲ ταῖς κατὰ τὰς ἐορτάς πομπαῖς πολλοὶ μὲν ἐλέφαντες πέμπονται χρυσῷ κεκοσμημένοι καὶ ἀργύρῳ, πολλὰ δὲ τέθριππα καὶ βοῦκα ζεύγη· εἴθ' ἡ στρατιὰ κεκοσμημένη· καὶ χρυσώματα δὲ τῶν μεγά-λων λεβήτων καὶ κρατήρων ὀργυιαίων· καὶ τοῦ Ἰνδι-κοῦ χαλκοῦ τράπεζαί τε καὶ θρόνοι καὶ ἐκπώματα καὶ λουτήρες, λιθοκόλλητα τὰ πλεῖστα σμαράγδοις καὶ βη-ρύλλοις καὶ ἀνθράξιν Ἰνδικοῖς· καὶ ἐσθῆς δὲ ποικίλη χρυσόπαστος, καὶ βόνασοι καὶ παρδάλεις καὶ λέοντες τιθασοὶ καὶ τῶν ποικίλων ὀρνέων καὶ εὐφθόγων πλῆ-θος.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 69, line 16

καὶ πτερωτοὺς λέγουσι τῶν χρυσαυρύχων· ψήγματα τε χρυσοῦ καταφέρειν τοὺς ποταμούς, καθάπερ τοὺς Ἰβηρικοὺς· ἐν δὲ ταῖς κατὰ τὰς ἐορτάς πομπαῖς πολλοὶ μὲν ἐλέφαντες πέμπονται χρυσῷ κεκοσμημένοι καὶ ἀργύρῳ, πολλὰ δὲ τέθριππα καὶ βοῦκα ζεύγη· εἴθ' ἡ στρατιὰ κεκοσμημένη· καὶ χρυσώματα δὲ τῶν μεγά-λων λεβήτων καὶ κρατήρων ὀργυιαίων· καὶ τοῦ Ἰνδι-κοῦ χαλκοῦ τράπεζαί τε καὶ θρόνοι καὶ ἐκπώματα καὶ λουτήρες, λιθοκόλλητα τὰ πλεῖστα σμαράγδοις καὶ βη-ρύλλοις καὶ ἀνθράξιν Ἰνδικοῖς· καὶ ἐσθῆς δὲ ποικίλη χρυσόπαστος,

5.16. STRABO

καὶ βόνασοι καὶ παρδάλεις καὶ λέοντες τιθασοὶ καὶ τῶν ποικίλων ὀρνέων καὶ εὐφθόγγων πλη-
θος.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 71, line 3

τοὺς δὲ πολιτικούς σινδονίτας κατὰ πόλιν ζῆν ἢ καὶ κατ' ἀγρούς, καθημμένους νεβρίδας ἢ
δορκάδων δοράς· ὡς δ' εἶπεν, Ἰνδοὺς ἐσθῆτι λευκῇ χρῆσθαι καὶ σινδόσι λευκαῖς καὶ καρπάσοις,
ὑπεναντίως τοῖς εἰποῦσιν εὐανθέστατα αὐτοὺς ἀμπέχεσθαι φορήματα· κομᾶν δὲ καὶ πωγω-
νοτροφεῖν πάντας, ἀναπλεκομέ- νους δὲ μιτροῦσθαι τὰς κόμας.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 73, line 2

Φησὶ γὰρ οὗτος ἐν Ἀντιοχείᾳ τῇ ἐπὶ Δάφνῃ πα- ρατυχεῖν τοῖς Ἰνδῶν πρέσβεσιν ἀφιγμένοις
παρὰ Καί- σαρα τὸν Σεβαστόν· οὓς ἐκ μὲν τῆς ἐπιστολῆς πλείους δηλοῦσθαι, σωθῆναι δὲ
τρεῖς μόνους, οὓς ἰδεῖν φησι, τοὺς δ' ἄλλους ὑπὸ μήκους τῶν ὁδῶν διαφθαρῆναι τὸ πλεον· τὴν δ'
ἐπιστολὴν ἐλληνίζει ἐν διφθέρα γε- γραμμένην, δηλοῦσαν ὅτι Πῶρος εἶη ὁ γράψας, ἔξα- κοσίων
δὲ ἄρχων βασιλέων ὅμως περὶ πολλοῦ ποιοῖτο φίλος εἶναι Καίσαρι, καὶ ἔτοιμος εἶη δίοδόν τε
παρέ- χειν ὅπῃ βούλεται καὶ συμπράττειν ὅσα καλῶς ἔχει.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 1, section 73, line 25

συνῆν δέ, ὡς φησι, καὶ ὁ Ἀθήνησι κατακαύσας ἑαυτὸν· ποιεῖν δὲ τοῦτο τοὺς μὲν ἐπὶ κα-
κοπραγία ζητοῦντας ἀπαλλαγὴν τῶν παρόντων, τοὺς δ' ἐπ' εὐπραγία, καθάπερ τοῦ- τον·
ἅπαντα γὰρ κατὰ γνώμην πράξαντα μέχρι νῦν ἀπιέναι δεῖν, μή τι τῶν ἀβουλήτων χρονίζοντι
συμπέ- σοι· καὶ δὴ καὶ γελῶντα ἀλέσθαι γυμνὸν λίπ' ἄλη- λιμμένον ἐν περιζώματι ἐπὶ τὴν
πυράν· ἐπιγεγράφθαι δὲ τῷ τάφῳ “Ζαρμανοχηγὰς Ἰνδὸς ἀπὸ Βαργόσης κατὰ “τὰ πάτρια
Ἰνδῶν ἔθη ἑαυτὸν ἀπαθανατίσας κεῖται.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 1, line 1

Μετὰ δὲ τὴν Ἰνδικὴν ἐστὶν ἡ Ἀριανή, μερὶς πρώτη τῆς ὑπὸ Πέρσαις τῆς μετὰ τὸν Ἰνδὸν
ποταμὸν καὶ τῶν ἄνω σατραπειῶν τῶν ἐκτὸς τοῦ Ταύρου, τὰ μὲν νότια καὶ τὰ ἀρκτικά
μέρη τῇ αὐτῇ θαλάττῃ καὶ τοῖς αὐτοῖς ὅρεσιν ἀφοριζομένη οἷσπερ καὶ ἡ Ἰνδική, καὶ τῷ αὐτῷ
ποταμῷ τῷ Ἰνδῷ, μέσον ἔχουσα αὐτὸν ἑαυ- τῆς τε καὶ τῆς Ἰνδικῆς, ἐντεῦθεν δὲ πρὸς τὴν ἐσπέραν
ἐκτεινομένη μέχρι τῆς ἀπὸ Κασπίων πυλῶν εἰς Καρ- μανίαν γραφομένης γραμμῆς, ὥστε εἶναι
τετράπλευ- ρον τὸ σχῆμα.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 1, line 11

τὸ μὲν οὖν νότιον πλευρὸν ἀπὸ τῶν ἐκβολῶν ἄρχεται τοῦ Ἰνδοῦ καὶ τῆς Παταληνῆς, τε-
λευτᾷ δὲ πρὸς Καρμανίαν καὶ τοῦ Περσικοῦ κόλπου τὸ στόμα, ἄκραν ἔχον ἐκκειμένην ἱκανῶς
πρὸς νότον· εἴτα εἰς τὸν κόλπον λαμβάνει καμπὴν ὡς ἐπὶ τὴν Περ- σίδα.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 1, line 18

οἰκοῦσι δὲ Ἀρβιες πρῶτον, ὁμώνυμοι τῷ πο- ταμῷ Ἀρβει τῷ ὀρίζοντι αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ἐξῆς
Ὠριτῶν, ὅσον χιλίων σταδίων ἔχοντες παραλίαν, ὡς φησι Νέ- αρχος· Ἰνδῶν δ' ἐστὶ μερὶς καὶ
αὕτη· εἴτ' Ὠρίται ἔθνος αὐτόνομον· τούτων δ' ὁ παράπλους χιλίων ὀκτακο- σίων, ὁ δὲ τῶν ἐξῆς
Ἰχθυοφάγων ἐπτακισχίλιοι τετρα- κόσιοι, ὁ δὲ τῶν Καρμανίων τρισχίλιοι ἐπτακόσιοι μέ- χρι
Περσίδος· ὥσθ' οἱ σύμπαντες μύριοι τρισχίλιοι ἐννακόσιοι.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 3, line 1

Ἵπέρκειται δὲ τούτων ἡ Γεδρωσία, τῆς μὲν Ἰνδι- κῆς ἥττον ἔμπυρος τῆς δ' ἄλλης Ἀσίας μαῖλλον, καὶ τοῖς καρποῖς καὶ τοῖς ὕδασι ἐνδεὴς πλὴν θέρους, οὐ πολὺ ἀμείνων τῆς τῶν Ἰχθυοφάγων· ἀρωματοφόρος δὲ νάρδου μάλιστα καὶ σμύρνης, ὥστε τὴν Ἀλεξάν- δρου στρατιὰν ὀδεύουσιν ἀντὶ ὀρόφου καὶ στρωμάτων τούτοις χρῆσθαι, εὐωδιαζομένην ἅμα καὶ ὑγιεινότε- ρον τὸν ἀέρα ἔχουσιν παρὰ τοῦτο· γενέσθαι δ' αὐ- τοῖς θέρους τὴν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς ἀφοδὸν ἐπίτηδες συν- ἔβη· τότε γὰρ ὀμβροὺς ἔχειν τὴν Γεδρωσίαν καὶ

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 5, line 17

φασὶ δὲ φι- λονεικῆσαι τὸν Ἀλέξανδρον καίπερ εἰδὸτα τὰς ἀπο- ρίας πρὸς τὴν κατέχουσιν δόξαν, ὡς Σεμίραμις μὲν ἐξ Ἰνδῶν φεύγουσα σωθεῖν μετὰ ἀνδρῶν ὡς εἴκοσι, Κῦρος δὲ ἐπτά, εἰ δύναίτο αὐτὸς τοσοῦτο στράτευμα διασῶσαι διὰ τῆς αὐτῆς χώρας, νικῶν καὶ ταῦτα.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 8, line 9

ὀρίζεσθαι μὲν γάρ φησι τὴν Ἀριανὴν ἐκ μὲν τῶν πρὸς ἑω τῷ Ἰνδῷ, πρὸς νότον δὲ τῇ μεγάλῃ θαλάττῃ, πρὸς ἄρκτον δὲ τῷ Παροπαμισῷ καὶ τοῖς ἐξῆς ὅρεσι μέχρι Κασπίων πυλῶν, τὰ δὲ πρὸς ἐσπέραν τοῖς αὐτοῖς ὅροις οἷς ἡ μὲν Παρθυνὴ πρὸς Μηδίαν ἢ δὲ Καρμανία πρὸς τὴν Παραιτακηνὴν καὶ Περσίδα διώριστα· πλά- τος δὲ τῆς χώρας τὸ τοῦ Ἰνδοῦ μῆκος τὸ ἀπὸ τοῦ Πα- ροπαμισοῦ μέχρι τῶν ἐκβολῶν μῦριοι καὶ δισχίλιοι στάδιοι (οἱ δὲ τρισχίλιους φασί)· μῆκος δὲ ἀπὸ Κα- σπίων πυλῶν, ὡς ἐν τοῖς Ἀσιατικοῖς σταθμοῖς ἀναγέ- γραπται, διττόν.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 8, line 25

μέχρι μὲν Ἀλεξανδρείας τῆς ἐν Ἀρίοις ἀπὸ Κασπίων πυλῶν διὰ τῆς Παρθυαίας μία καὶ ἡ αὐτὴ ὁδός· εἴθ' ἡ μὲν ἐπ' εὐθείας διὰ τῆς Βακτριανῆς καὶ τῆς ὑπερβάσεως τοῦ ὄρους εἰς Ὀρτόσπανα ἐπὶ τὴν ἐκ Βάκτρων τρίοδον ἣτις ἐστὶν ἐν τοῖς Παροπαμισά- δαις· ἡ δ' ἐκτρέπεται μικρὸν ἀπὸ τῆς Ἀρίας πρὸς νό- τον εἰς Προφθασίαν τῆς Δραγγιανῆς· εἶτα πάλιν ἡ λοιπὴ μέχρι τῶν ὄρων τῆς Ἰνδικῆς καὶ τοῦ Ἰνδοῦ· ὥστε μακροτέρα ἐστὶν αὕτη ἢ διὰ τῶν Δραγγῶν καὶ Ἀραχω- τῶν, σταδίων μυρίων πεντακισχιλίων τριακοσίων ἢ πᾶσα.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 9, line 2

Ἡ δὲ τάξις τῶν ἐθνῶν τοιαύτη· παρὰ μὲν τὸν Ἰν- δὸν οἱ Παροπαμισάδαι, ὧν ὑπέρκειται ὁ Παροπαμισὸς ὄρος, εἴτ' Ἀραχωτοὶ πρὸς νότον, εἴτ' ἐφεξῆς πρὸς νότον Γεδρωσηνοὶ σὺν τοῖς ἄλλοις τοῖς τὴν παραλίαν ἔχου- σιν· ἅπασι δὲ παρὰ τὰ πλάτη τῶν χωρίων παράκειται ὁ Ἰνδός.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 9, line 6

* τούτων δ' ἐκ μέρους τῶν παρὰ τὸν Ἰνδὸν ἔχουσιν τινὰ Ἰνδοὶ πρότερον ὄντα Περσῶν, ἀ ἀφείλετο μὲν ὁ Ἀλέξανδρος τῶν Ἀριανῶν καὶ κατοικίας ἰδίας συνεστήσατο, ἔδωκε δὲ Σέλευκος ὁ Νικάτωρ Σανδρο- κόττῳ, συνθέμενος ἐπιγαμίαν καὶ ἀντιλαβὼν ἐλέφαν- τας πεντακοσίους.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 10, line 20

ἔστι δὲ τὰ μεσημβρινὰ μὲν τοῦ ὄρους τοῦ Παροπαμισοῦ Ἰνδικὰ τε καὶ Ἀριανὰ· τὰ δὲ προς- ἄρκτια τὰ μὲν πρὸς ἐσπέραν Βάκτρια .

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 10, line 23

5.16. STRABO

διαχειμάσας δ' αὐτόθι ὑπερδέξιον ἔχων τὴν Ἰνδικὴν καὶ πόλιν κτίσας ὑπερήκρυσεν εἰς τὴν Βακτριανὴν διὰ ψιλῶν ὁδῶν πλὴν τερμίνθου θα- μνώδους ὀλίγης, ἀπορούμενος καὶ τροφῆς ὥστε ταῖς τῶν κτηνῶν σαρκὶ χρῆσθαι, καὶ ταύταις ὡμαῖς διὰ τὴν ἀξυλίαν· πρὸς δὲ τὴν ὠμοσιτίαν πεπτικὸν ἦν αὐτοῖς τὸ σίλφιον πολὺ πεφυκός.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 11, line 1

Περὶ ταῦτα δὲ που τὰ μέρη τῆς ὁμόρου τῇ Ἰνδικῇ καὶ τὴν Χααρηνὴν εἶναι συμβαίνει· ἔστι δὲ τῶν ὑπὸ τοῖς Παρθυαίοις αὕτη προσεχεστάτη τῇ Ἰνδικῇ· διέχει δὲ τῆς * Ἀριανῆς δι' Ἀραχωτῶν καὶ τῆς λεχθείσης ὀρει- νῆς σταδίου μυρίου * ἑνακισχιλίους.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 13, line 1

Λέγουσι μὲν οὖν καὶ οἱ νῦν πλείοντες εἰς Ἰνδοὺς μεγέθη θηρίων καὶ ἐπιφανείας, ἀλλ' οὔτε ἀθρόων οὔτ' ἐπιφερομένων πολλάκις, ἀλλ' ἀποσοβηθέντα τῇ κραυγῇ καὶ τῇ σάλπιγγι ἀπαλλάττεσθαι.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 2, section 14, line 2

Ἡ δὲ Καρμανία τελευταία μὲν ἐστὶ τῆς ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ παραλίας, ἀρκτικωτέρα δ' ἐστὶ πολὺ τῆς τοῦ Ἰν- δοῦ ἐκβολῆς· τὸ μέντοι πρῶτον αὐτῆς ἄκρον ἔκκειται πρὸς νότον εἰς τὴν μεγάλην θάλατταν, ποιήσασα δὲ τὸ στόμα τοῦ Περσικοῦ κόλπου πρὸς τὴν ἀπὸ τῆς εὐδαί- μονος Ἀραβίας ἄκραν ἐν ἀπόψει οὔσαν, κάμπτεται πρὸς τὸν Περσικὸν κόλπον ἕως ἂν συνάψῃ τῇ Περ- σίδι· πολλὴ δὲ καὶ τῇ μεσογαίᾳ ἐστὶν ἐκτεινομένη μεταξὺ τῆς Γεδρωσίας καὶ τῆς Περσίδος, παραλλάτ- τουσα πλέον τῆς Γεδρωσίας πρὸς τὴν ἄρκτον.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 3, section 7, line 19

ἀλλ' ὁ ἐκτοπισμὸς τῆς Ἀλεξάνδρου στρα- τιᾶς εἰς Βάκτρα καὶ Ἰνδοὺς πολλὰ τε ἄλλα νεωτερισθῆ- ναι παρεσκεύασε, καὶ δὴ καὶ τοῦθ' ἐν τῶν νεωτερι- σθέντων ὑπῆρξεν.

Strabo Geogr., Geographica Book 15, chapter 3, section 11, line 13

ἡ μὲν δὲ μεσόγαια τοιαύ- τη· ἡ δὲ παραλία τεναγώδης ἐστὶ καὶ ἀλίμενος· διὰ τοῦτο γοῦν καὶ φησὶν ὁ Νέαρχος μηδὲ καθοδηγῶν ἐπι- χωρίων τυγχάνειν ἡνίκα τῷ στόλῳ παρέπλει πρὸς τὴν Βαβυλωνίαν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς, ὅτι προσόρμους οὐκ εἶχεν, οὐδ' ἀνθρώπων εὐπορεῖν οἷός τ' ἦν τῶν ἡγησομένων κατ' ἐμπειρίαν.

Strabo Geogr., Geographica Book 16, chapter 1, section 9, line 3

Διαρρεῖται δ' ὑπὸ πλείονων μὲν ποταμῶν ἡ χώρα, μεγίστων δὲ τοῦ τε Εὐφράτου καὶ τοῦ Τίγριος· μετὰ γὰρ τοὺς Ἰνδικοὺς οὗτοι λέγονται δευτερεύειν κατὰ τὰ νότια μέρη τῆς Ἀσίας οἱ ποταμοί· ἔχουσι δ' ἀνά- πλους ὁ μὲν ἐπὶ τὴν Ὠπιν καὶ τὴν νῦν Σελεύκειαν (ἡ δὲ Ὠπὶς κώμη ἐμπόριον τῶν κύκλῳ τόπων) ὁ δ' ἐπὶ Βαβυλῶνα πλείονων ἢ τρισχιλίων σταδίων.

Strabo Geogr., Geographica Book 16, chapter 2, section 39, line 11

θείας ἔχει, παρά γε τοῖς ἀνθρώποις ἐπεπίστευτο καὶ ἐνενόμιστο, καὶ διὰ τοῦτο καὶ οἱ μάντεις ἐτιμῶντο ὥστε καὶ βασιλείας ἀξιούσθαι, ὡς τὰ παρὰ τῶν θεῶν ἡμῖν ἐκφέροντες πα- ραγγέλματα καὶ ἐπανορθώματα καὶ ζῶντες καὶ ἀποθανόντες· τοιοῦτος δὲ ὁ Ἀμφιάρεως καὶ ὁ Τροφώνιος καὶ [ὁ] Ὀρφεὺς καὶ ὁ Μουσαῖος καὶ ὁ παρὰ τοῖς Γέταις θεός, τὸ μὲν παλαιὸν Ζάμολξις Πυ- θαγόρειός τις, καθ' ἡμᾶς δὲ ὁ τῷ Βυρεβίστῃ θεσπίζων Δεκαίνεος· παρὰ δὲ τοῖς

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Βοσπορηνοῖς Ἀχαῖκαρος, παρὰ δὲ τοῖς Ἰνδοῖς οἱ γυμνοσοφισταί, παρὰ δὲ τοῖς Πέρσαις οἱ μάγοι καὶ νεκρομάντεις καὶ ἔτι οἱ λεγόμε- νοι λεκανομάντεις καὶ ὑδρομάντεις, παρὰ δὲ τοῖς Ἀσσυ- ρίοις οἱ Χαλδαῖοι, παρὰ δὲ τοῖς Ῥωμαίοις οἱ Τυρρηני- κοὶ οἰωνοσκόποι.

Strabo Geogr., Geographica Book 16, chapter 4, section 2, line 21

τὰ δ' ἔσχατα πρὸς νότον καὶ ἀνταίροντα τῇ Αἰθιοπία βρέχεται τε θερينوῖς ὄμβροις καὶ δισπορεῖται παραπλησίως τῇ Ἰν- δικῇ, ποταμούς δ' ἔχει καταναλισκομένους εἰς πεδία καὶ λίμνας, εὐκαρπία δ' ἐστὶν ἢ τε ἄλλη καὶ μελιτουρ- γεῖα δαψιλῇ, βοσκημάτων τε ἀφθονία πλὴν ἵππων καὶ ἡμιόνων καὶ ὑῶν, ὄρνεά τε παντοῖα πλὴν χηνῶν καὶ ἀλεκτορίδων.

Strabo Geogr., Geographica Book 16, chapter 4, section 9, line 11

μετὰ δὲ τὴν Ἐλαίαν αἱ Δημητρίου σκοπιαὶ καὶ βαμοὶ Κόνωνος· ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ κα- λάμων Ἰνδικῶν φύεται πλῆθος· καλεῖται δὲ ἡ χώρα Κορακίου· ἦν δὲ τις ἐν βάθει Ἐνδέρα γυ- μνητῶν ἀνθρώπων κατοικία, τόξοις χρωμένων καλα- μίνους καὶ πεφυρακτωμένοις οἰστοῖς· ἀπὸ δένδρων δὲ τοξεύουσι τὰ θηρία τὸ πλεόν, ἔστι δ' ὅτε καὶ ἀπὸ γῆς· πολὺ δ' ἐστὶ παρ' αὐτοῖς πλῆθος τῶν ἀγρίων βοῶν· ἀπὸ δὲ τῆς τούτων καὶ τῶν ἄλλων θηρίων κρεοφαγίας ζῶσιν, ἐπὶ δὲ μηδὲν θηρεύσωσι, τὰ ξηρὰ δέρματα ἐπ' ἀνθρακίᾳς ὀπτῶντες ἀρκούνται τῇ τοιαύτῃ τροφῇ.

Strabo Geogr., Geographica Book 16, chapter 4, section 10, line 5

Ἔτι δ' ὑπὲρ τούτων ὡς πρὸς μεσημβρίαν οἱ κυνα- μολγοί, ὑπὸ δὲ τῶν ἐντοπίων ἀγριοὶ καλούμενοι, κα- τάκομοι, καταπώγωνες, κύνας ἐκτρέφοντες εὐμεγέθεις, οἷς θηρεύουσι τοὺς ἐπερχομένους ἐκ τῆς πλησιοχώρου βόας Ἰνδικούς, εἴθ' ὑπὸ θηρίων ἐξελαυνομένους εἴτε σπᾶνει νομῆς· ἢ δ' ἐφοδος αὐτῶν ἀπὸ θεριῶν τρο- πῶν μέχρι μέσου χειμῶνος.

Strabo Geogr., Geographica Book 16, chapter 4, section 16, line 24

καὶ δρακόντων δ' εἶ- ρηκε μεγέθη τριάκοντα πηχῶν ὁ Ἀρτεμίδωρος ἐλέφαν- τας καὶ ταύ- ρους χειρουμένων, μετριάσας ταύτῃ γε· οἱ γὰρ Ἰνδικοὶ μυθωδέστεροι καὶ οἱ Λιβυκοί, οἷς γε καὶ πόα ἐπιπεφυκέναι λέγεται.

Strabo Geogr., Geographica Book 16, chapter 4, section 24, line 21

ἐκ μὲν οὖν τῆς Λευκῆς κόμης εἰς Πέ- τραν, ἐντεῦθεν δ' εἰς Ῥινοκόλουρα τῆς πρὸς Αἰγύπτῳ Φοινίκης τὰ φορτία κομίζεται ἀντεῦθεν εἰς τοὺς ἄλ- λους, νυνὶ δὲ τὸ πλεόν εἰς τὴν Ἀλεξάνδρειαν τῷ Νεί- λῳ· κατὰγεται δ' ἐκ τῆς Ἀραβίας καὶ τῆς Ἰνδικῆς εἰς Μυδὸς ὄρμον· εἴθ' ὑπέρθεσις εἰς Κοπτὸν τῆς Θηβαΐ-δος καμήλοις ἐν διώρυγι τοῦ Νείλου κειμένην· [εἴτ'] εἰς Ἀλεξάνδρειαν.

Strabo Geogr., Geographica Book 16, chapter 4, section 25, line 4

Τὴν μὲν οὖν ἀρωματοφόρον διαιροῦσιν εἰς τέττα- ρας μερίδας, ὥσπερ εἰρήκαμεν· τῶν ἀρωμάτων δὲ λί- βανον μὲν καὶ σμύρναν ἐκ δένδρων γίνεσθαί φασι, κα- σίαν δὲ καὶ ἐκ θάμνων· τινὲς δὲ τὴν πλείω ἐξ Ἰνδῶν εἶναι, τοῦ δὲ λιβάνου βέλτιστον τὸν πρὸς τῇ Περσίδι.

Strabo Geogr., Geographica Book 16, chapter 4, section 27, line 37

τῆς δὲ τῶν Ἀράβων εὐδαιμονίας καὶ Ἀλέξανδρον ἂν τις ποιή- σαιτο μάρτυρα τὸν διανοη- θέντα, ὡς φασι, καὶ βασι- λειον αὐτὴν ποιήσασθαι μετὰ τὴν ἐξ Ἰνδῶν ἐπάνοδον.

Strabo Geogr., Geographica Book 17, chapter 1, section 13, line 19

5.16. STRABO

ὅπου οὖν ὁ κάκιστα καὶ ῥαθυμότατα τὴν βασιλείαν διοικῶν το- σαῦτα προσωδεύετο, τί χρὴ νομίσαι τὰ νῦν διὰ τοσαύ- της ἐπιμελείας οἰκονομούμενα καὶ τῶν Ἰνδικῶν ἐμπο- ριῶν καὶ τῶν Τρωγλοδυτικῶν ἐπηνυξημένων ἐπὶ τοσοῦ- τον;

Strabo Geogr., Geographica Book 17, chapter 1, section 13, line 24

πρότερον μὲν γε οὐδ' εἴκοσι πλοῖα ἐθάρρει τὸν Ἀράβιον κόλπον διαπερᾶν ὥστε ἔξω τῶν στενῶν ὑπερ- κύπτειν, νῦν δὲ καὶ στόλοι μεγάλοι στέλλονται μέχρι τῆς Ἰνδικῆς καὶ τῶν ἄκρων τῶν Αἰθιοπικῶν, ἐξ ὧν ὁ πολυτιμότετος κομίζεται φόρτος εἰς τὴν Αἴγυπτον, κἀντεῦθεν πάλιν εἰς τοὺς ἄλλους ἐκπέμπεται τόπους, ὥστε τὰ τέλη διπλάσια συνάγεται τὰ μὲν εἰσαγωγικά· τὰ δὲ ἐξαγωγικά· τῶν δὲ βαρυτίμων βαρέα καὶ τὰ τέλη.

Strabo Geogr., Geographica Book 17, chapter 1, section 45, line 8

ἐφάνη δὴ τῇ πείρᾳ πολὺ τὸ χρήσιμον, καὶ νῦν ὁ Ἰνδικὸς φόρτος ἅπας καὶ ὁ Ἀράβιος καὶ τοῦ Αἰθιοπικοῦ ὁ τῷ Ἀραβίῳ κόλπῳ κατακομιζόμενος εἰς Κοπτὸν φέρεται, καὶ τοῦτ' ἔστιν ἐμπόριον τῶν τοιούτων φορτίων.

Strabo Geogr., Geographica Book 17, chapter 1, section 46, line 32

ὑπὲρ δὲ τοῦ Μεμνονίου θῆκαι βασιλέων ἐν σπη- λαίοις λατομῆται περὶ τετταράκοντα, θαυμαστῶς κα- τεσκευασμένοι καὶ θέας ἄξιοι· ἐν δὲ ταῖς Θήβαις ἐπὶ τινων ὀβελίσκων ἀνα- γραφαὶ δηλοῦσαι τὸν πλοῦτον τῶν τότε βασιλέων καὶ τὴν ἐπικράτειαν, ὡς μέχρι Σκυ- θῶν καὶ Βακτριῶν καὶ Ἰνδῶν καὶ τῆς νῦν Ἰωνίας δια- τεínaσαν, καὶ φόρων πλῆθος καὶ στρατιᾶς περὶ ἑκατὸν μυριάδας.

Strabo Geogr., Geographica Book 17, chapter 2, section 4, line 4

Τοῖς δ' Αἰγυπτιακοῖς καὶ ταῦτα προσθετέον ὅσα ἰδιάζοντα, οἷον ὁ Αἰγύπτιος λεγόμενος κύαμος ἐξ οὗ τὸ κιβώριον, καὶ ἡ βύβλος· ἐνταῦθα γὰρ καὶ παρ' Ἰν- δοῖς μόνον· ἡ δὲ περσέα ἐνταῦθα μόνον καὶ παρ' Αἰ- θίοφι, δένδρον μέγα, καρπὸν ἔχον γλυκὺν καὶ μέγαν, καὶ ἡ συκάμινος ἡ ἐκφέρουσα τὸν λεγόμενον καρπὸν συκόμορον· σύκῳ γὰρ ὅμοιον· ἄτιμον δ' ἐστὶ κατὰ τὴν γεῦσιν· γίνεται δὲ καὶ τὸ κόρσιον καὶ ὅμοιον τι πετέρει τράγῃμα, μικρῷ αὐτοῦ μεῖζον.

Strabo Geogr., Geographica Book 17, chapter 3, section 5, line 15

Βόγον δὲ τὸν βα- σιλέα τῶν Μαυρουσίων ἀναβάντα ἐπὶ τοὺς ἐσπερίους Αἰθίοπας κατα- πέμψαι τῇ γυναικὶ δῶρα καλάμους τοῖς Ἰνδικοῖς ὁμοίους, ὧν ἕκαστον γόνυ χορίνικας χωροῦν ὀκτώ· καὶ ἀσπαράγων δ' ἐμφερῇ μεγέθει.

Strabo Geogr., Geographica Book 17, chapter 3, section 7, line 33

τοὺς δὲ Φαρουσίους ἐνιοί φασιν Ἰνδοὺς εἶναι τοὺς συγ- κατελθόντας Ἡρακλεῖ δεῦρο.

Strabo Geogr., Geographica Book 17, chapter 3, section 10, line 23

ὥς δὲ λέγεται πρὸς τὴν οἰκουμένην ὅλην καὶ τὰς ἐσχατίας τὰς τοιαύτας, οἷα καὶ ἡ Ἰνδικὴ καὶ ἡ Ἰβηρία, λέγοι ἂν εἰ ἄρα τὴν τοιαύτην ἀπόφασιν.

Strabo Geogr., Geographica Book 17, chapter 3, section 24, line 21

τῆς δὲ μεσογαίας καὶ τῆς ἐν βάθει τὴν μὲν ἔχουσιν αὐτοί, τὴν δὲ Παρθυαῖοι καὶ οἱ ὑπὲρ τούτων βάρβαροι, πρὸς τε ταῖς ἀνατολαῖς καὶ ταῖς ἄρ- κτοις Ἰνδοὶ καὶ Βάκτριοι καὶ Σκύθαι,

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

εἴτ' Ἀραβες καὶ Αἰθίοπες· προστίθεται δὲ αἰεὶ τι παρ' ἐκείνων αὐτοῖς.

Strabo Geogr., Fragmenta (0099: 003) “FGrH #91”. Volume-Jacoby'-F 2a,91,F, fragment 3, line 2

STRABON II 1, 9: ἅπαντες μὲν τοίνυν οἱ περὶ τῆς Ἰνδικῆς γράφοντες ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ ψευδολόγοι γεγονόασιν, καθ' ὑπερβολὴν δὲ Δημάχος (III)· τὰ δὲ δεύτερα λέγει Μεγασθένης (III)· Ὀνησίκριτος (134 T 11) δὲ καὶ Νέαρχος (133 T 14) καὶ ἄλλοι τοιοῦτοι παραφελλίζοντες ἤδη.

5.17 Manetho

Manetho (play /'mæniθου/; Ancient Greek: Μανέθων, Manethōn, or Μανέθως, Manethōs) was an Egyptian historian and priest from Sebennytos (ancient Egyptian: Tjebnutjer) who lived during the Ptolemaic era, approximately during the 3rd century BC. While some historians maintain that Manetho was from Rome and composed his work c. 200 C.E. [1]

Manetho wrote the Aegyptiaca (History of Egypt). His work is of great interest to Egyptologists, and is often used as evidence for the chronology of the reigns of pharaohs. The earliest and only surviving reference to Manetho's Aegyptiaca is that of the Jewish historian Josephus in his work "Against Apion". (From Wikipedia¹⁶)

Manetho Astrol., Apotelesmatica (2583: 001) “Poetae bucolici et didactici”, Ed. Koechly, A. Paris: Didot, 1862.

Manetho Astrol., Apotelesmatica Book 4, line 149

ἦν δὲ Σεληναίης ἐλικοδρόμος ἄστατος ἀστήρ Ἑρμείαν σύμφωνον ἔχει κατὰ κόσμου ἀταρπόν, καὶ μούνη Κυθήρεια συνῆ καλῶ Φαέθοντι, ῥεκτῆρας χρυσοῖο καὶ Ἰνδογενοῦς ἐλέφαντος ἐργασίους δείκνυσι, καὶ ἐν πραπίδεσιν ἀρίστους ἔσσεσθαι, θριγκῶν τε καὶ εὐτοίχων κανονισμῶν κοσμήτας, μάλα τοι πεπονημένα τεχνάζοντας.

Manetho Astrol., Apotelesmatica Book 1, line 297

εἰ δὲ Σεληναίης ἐλικώπιδος ἄστατος ἀστήρ Ἑρμείαν σύμφωνον ἔχει κατὰ κόσμου ἀταρπόν, καὶ μούνη Κυθήρεια συνῆ καλῶ Φαέθοντι, ῥεκτῆρας χρυσοῖο καὶ Ἰνδογενοῦς ἐλέφαντος ἐργασίους ῥέζει καὶ ζωγραφίης μεδέοντας, εὐφυνέας θριγκῶν τε καὶ εὐτυχέας κανονισμῶν κοσμήτας, μάλα τοι πεπονημένα τεχνάζοντας.

16. <http://en.wikipedia.org/wiki/Manetho>

5.18. EUSEBIUS

5.18 Eusebius

Eusebius (c. AD 263 – 339) (also called Eusebius of Caesarea and Eusebius Pamphili) was a Roman historian, exegete and Christian polemicist. He became the Bishop of Caesarea in Palestine about the year 314. Together with Pamphilus, he was a scholar of the Biblical canon. He wrote Demonstrations of the Gospel, Preparations for the Gospel, and On Discrepancies between the Gospels, studies of the Biblical text. As "Father of Church History" he produced the Ecclesiastical History, On the Life of Pamphilus, the Chronicle and On the Martyrs. (From Wikipedia¹⁷)

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica (2018: 001) "Eusebius Werke, Band 8: Die Praeparatio evangelica", Ed. Mras, K. Berlin: Akademie-Verlag, 43.1:1954; 43.2:1956; Die griechischen christlichen Schriftsteller 43.1 & 43.2. Book 2, chapter 1, section 14, line 1

κτίσαι δὲ καὶ πόλεις οὐκ ὀλίγας ἐν Ἰνδοῖς.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 2, chapter 2, section 5, line 1

στρατεῦσαι δὲ εἰς τὴν Ἰνδικὴν τριετὴ χρόνῳ.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 6, chapter 10, section 14, line 1

παρὰ Ἰνδοῖς καὶ Βάκτροις εἰσὶ χιλιάδες πολλὰ τῶν λεγομένων Βραχμάνων, οἵτινες κατὰ παράδοσιν τῶν προγόνων καὶ νόμων οὔτε φονεύουσιν οὔτε ξόανα σέβονται, οὐκ ἐμψύχου γεύονται, οὐ μεθύσκονται ποτε, οἶνου καὶ σίκερος μὴ γευόμενοι, οὐ κακία τινὶ κοινωνοῦσι προσέχοντες τῷ θεῷ, τῶν ἄλλων Ἰνδῶν φονευόντων καὶ ἐταιρεινόντων καὶ μεθυσκομένων καὶ σεβομένων ξόανα καὶ πάντα σχεδὸν καθ' εἰμαρμένην φερομένων.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 6, chapter 10, section 15, line 2

ἔστι δὲ ἐν τῷ αὐτῷ κλίματι τῆς Ἰνδίας φυλὴ τις Ἰνδῶν, οἵτινες τοὺς ἐμπίπτοντας ξένους ἀγρεύοντες καὶ θύοντες ἐσθίουσι· καὶ οὔτε οἱ ἀγαθοποιοὶ τῶν ἀστέρων κεκωλύκασιν αὐτοὺς μὴ μισοφονεῖν καὶ μὴ ἀθεμιτολογαμεῖν οὔτε οἱ κακοποιοὶ ἠνάγκασαν τοὺς Βραχμᾶνας κακοῦργεῖν.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 6, chapter 10, section 33, line 1

οἱ Μῆδοι πάντες τοῖς μετὰ σπουδῆς τρεφομένοις κυσὶ τοὺς νεκροὺς ἔτι ἐμπνέοντας παραβάλλουσι, καὶ οὐ πάντες σὺν τῇ μὴνῃ τὸν Ἄρεα ἐφ' ἡμερινῆς γενέσεως ἐν Καρκίνῳ ὑπὸ γῆν

17. <http://en.wikipedia.org/wiki/Eusebius>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ἔχουσιν. Ἰνδοὶ τοὺς νεκροὺς καίουσι, μεθ' ὧν συγκαίουσιν ἐκούσας τὰς γυναῖκας, καὶ οὐ δῆπου πᾶσαι αἱ καιόμεναι ζῶσαι Ἰνδῶν γυναῖκες ἔχουσιν ὑπὸ γῆν ἐπὶ νυκτε- ρινῆς γενέσεως σὺν Ἄρει τὸν ἥλιον ἐν Λέοντι ὁρίοις Ἄρεος.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 6, chapter 10, section 33, line 3

Ἰνδοὶ τοὺς νεκροὺς καίουσι, μεθ' ὧν συγκαίουσιν ἐκούσας τὰς γυναῖκας, καὶ οὐ δῆπου πᾶσαι αἱ καιόμεναι ζῶσαι Ἰνδῶν γυναῖκες ἔχουσιν ὑπὸ γῆν ἐπὶ νυκτε- ρινῆς γενέσεως σὺν Ἄρει τὸν ἥλιον ἐν Λέοντι ὁρίοις Ἄρεος.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 6, chapter 10, section 35, line 5

παντὶ ἔθνει καὶ πάσῃ ἡμέρᾳ καὶ παντὶ τ<ρ>όπῳ τῆς γενέσεως γεννῶν- ται ἄνθρωποι· κρατεῖ δὲ ἐν ἐκάστη μοίρᾳ τῶν ἀνθρώπων νόμος καὶ ἔθος διὰ τὸ αὐτεξούσιον τοῦ ἀνθρώπου· καὶ οὐκ ἀναγκάζει ἡ γένεσις τοὺς Σῆρας μὴ θέλοντας φονεῦν ἢ τοὺς Βραχμᾶνας κρεοφαγεῖν ἢ τοὺς Πέρσας ἀθεμίτως μὴ γαμεῖν ἢ τοὺς Ἰνδοὺς μὴ καίεσθαι ἢ τοὺς Μήδους μὴ ἐσθίεσθαι ὑπὸ κυ- νῶν ἢ τοὺς Πάρθους μὴ πολυγαμεῖν ἢ τὰς ἐν τῇ Μεσοποταμίᾳ γυναῖκας μὴ σωφρονεῖν ἢ τοὺς Ἕλληνας μὴ γυμνάζεσθαι γυμνοῖς τοῖς σώμασιν ἢ τοὺς Ῥω- μαίους μὴ κρατεῖν ἢ τοὺς Γάλλους μὴ γαμεῖσθαι ἢ τὰ ἄλλα βάρβαρα ἔθνη ταῖς ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων λεγομέναις Μούσαις κοινωνεῖν· ἀλλ', ὡς προεῖπον, ἕκαστον ἔθνος καὶ ἕκαστος τῶν ἀνθρώπων χρήται τῇ ἑαυτοῦ ἐλευθερίᾳ ὡς βούλεται καὶ ὅτε βούλεται, καὶ δουλεύει τῇ γενέσει καὶ τῇ φύσει δι' ἣν περὶ- κείται σάρκα, πῇ μὲν ὡς βούλεται, πῇ δὲ ὡς μὴ βούλεται.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 6, chapter 10, section 38, line 2

μνημονεύειν τε ὀφείλετε ὧν προεῖπον, ὅτι καὶ ἐν ἐνὶ κλίματι καὶ ἐν μιᾷ χώρᾳ τῶν Ἰνδῶν εἰσιν ἀνθρωποφάγοι Ἰνδοὶ καὶ εἰσιν οἱ ἐμφύχων ἀπεχόμενοι· καὶ ὅτι οἱ Μαγουσαῖοι οὐκ ἐν Περσίδι μόνῃ τὰς θυγατέρας γα- μοῦσιν, ἀλλὰ καὶ ἐν παντὶ ἔθνει, ὅπου ἂν οἰκήσωσι, τοὺς τῶν προγόνων φυ- λάσσοντες νόμους καὶ τῶν μυστηρίων αὐτῶν τὰς τελετάς.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 9, chapter 5, section 5,6, line 3

<Ε>κεῖνος τοίνυν τὸ μὲν γένος ἦν Ἰουδαῖος, ἐκ τῆς Κοίλης Συρίας, οὗτοι δ' εἰσὶν ἀπόγονοι τῶν ἐν Ἰνδοῖς φιλοσόφων· καλοῦνται δέ, ὡς φασιν, οἱ φιλόσοφοι παρὰ μὲν Ἰνδοῖς Καλανοί, παρὰ δὲ Σύροις Ἰουδαῖοι, τοῦνομα λαβόντες ἀπὸ τοῦ τόπου.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 9, chapter 6, section 5, line 2

Ἔτι πρὸς τούτοις ἐξῆς ὑποβὰς τὰδε φησί· “Φανερώτατα δὲ Μεγασθένης ὁ συγγραφεὺς ὁ Σελεύκῳ τῷ Νικάνορι συμ- βεβιωκῶς ἐν τῇ τρίτῃ τῶν Ἰνδικῶν ᾧδε γράφει· “Ἀπαντα μέντοι τὰ περὶ φύ- σεως εἰρημένα παρὰ τοῖς ἀρχαίοις λέγεται καὶ παρὰ τοῖς ἔξω τῆς Ἑλλάδος φιλοσοφοῦσι, τὰ μὲν παρ' Ἰνδοῖς ὑπὸ τῶν Βραχμάνων, τὰ δὲ ἐν Συρίᾳ ὑπὸ τῶν καλουμένων Ἰουδαίων.

5.18. EUSEBIUS

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 10, chapter 4, section 15, line 4

ἀλλὰ γὰρ ὁ δηλούμενος τὰ παρ' ἐκάστοις σοφὰ πολυπραγμονῶν ἐπῆλθε Βαβυλῶνα καὶ Αἴγυπτον καὶ πᾶσαν τὴν Περσῶν, τοῖς τε μάγοις καὶ τοῖς ἱερεῦσι μαθη- τευόμενος, ἀκηκοέναι τε πρὸς τούτοις Βραχμάνων ἱστορήται (Ἰνδῶν δὲ εἰσιν οὗτοι φιλόσοφοι) καὶ παρ' ὧν μὲν ἀστρο- λογίαν, παρ' ὧν δὲ γεωμετρίαν ἀριθμητικὴν τε παρ' ἐτέρων καὶ μουσικὴν καὶ ἄλλα παρ' ἄλλων συλλεξά- μενος, μόνον παρὰ τῶν σοφῶν Ἑλλήνων ἔσχεν οὐδέν, πενία σοφίας καὶ ἀπο- ρία συνοικούντων· ἔμπαλιν δ' οὖν τῶν ἔξωθεν αὐτῷ πεπορισμένων αἴτιος αὐτὸς τῆς μαθήσεως κατέστη τοῖς Ἑλλήσιν.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 10, chapter 9, section 10, line 6

τοσαῦτα δὲ ἀπὸ τοῦ δηλωθέντος ἔτους τῆς Κέκροπος βασι- λείας τὸν ἀνωτέρω χρόνον ἀπα- ριθμούμενος ἐπὶ Νίνον ἤξει τὸν Ἀσσύριον, ὃν πρῶτόν φασιν ἀπάσης τῆς Ἀσίας πλὴν Ἰνδῶν κεκρατηκέναι· οὗ Νίνος ἐπώνυ- μος πόλις, ἡ Νινευὴ παρ' Ἑβραίοις ὠνόμασται, καθ' ὃν Ζω- ροάστρης ὁ μάγος Βακτρίων ἐβασίλευσε.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 11, chapter 3, section 8, line 2

φησὶ δ' Ἀριστόξενος ὁ μουσι- κὸς Ἰνδῶν εἶναι τὸν λόγον τοῦτον.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 11, chapter 3, section 8, line 4

Ἀθήνησι γὰρ ἐντυχεῖν Σωκράτει τῶν ἀνδρῶν ἐκείνων ἓνα τινὰ κάπειτα αὐτοῦ πυνθάνεσθαι τί ποιῶν φιλοσοφοίη· τοῦ δὲ εἰπόντος ὅτι ζητῶν περὶ τοῦ ἀνθρωπείου βίου, καταγελάσαι τὸν Ἰνδόν, λέγοντα μὴ δύνασθαι τίνα τὰ ἀνθρώπεια κατιδεῖν ἀγνοοῦντά γε τὰ θεῖα.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 13, chapter 3, section 26, line 4

8καὶ ἄλλα τοιαῦτα πολλὰ μὴ ἡμῖν ψευδέσθωσαν· μὴδ' αὖ ὑπὸ τούτων ἀναπειθόμεναι αἱ μητέρες τὰ παιδιά ἐκδειματούντων, λέγουσαι τοὺς μύθους κακῶς, ὡς ἄρα θεοὶ τινες περιέρχον- ται νύκτωρ πολλοῖς ζῷοις καὶ παντοδαποῖς ἰνδαλλόμενοι, ἵνα μὴ ἅμα μὲν εἰς θεοὺς βλασφη- μῶσιν, ἅμα δὲ τοὺς παῖδας ἀπεργάζωνται δειλοτέρους.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Praeparatio evangelica Book 13, chapter 3, section 43, line 5

εἰ δὲ πῃ τὸν τοῦ θεοῦ λόγον εἰσάγουσιν ἐν εἴδει καὶ σχήματι ἀνθρωπείῳ παρα- φαινόμενον, λεκτέον ὡς οὐ κατὰ τοὺς Ἑλλήνων μύθους ὁμοίως Πρωτεῖ καὶ Θέτιδι καὶ Ἥρᾳ οὐδ' ὡς οἱ θεοὶ οἱ 8“περιερχόμενοι νύκτωρ πολλοῖς ζῷοις καὶ παντοδαποῖς ἰνδαλλόμενοι” καὶ τὸν τοῦ θεοῦ λόγον ἀνθρώποις πεφνηό- τα εἰσάγουσιν οἱ Ἑβραίων λόγοι, ἀλλ' ὡς αὐτὸς ὁ Πλάτων δεῖν ποτὲ φησιν ἐπὶ φίλων εὐεργεσία, 8“ὅταν διὰ μανίαν ἢ τίνα ἄνοϊαν κακὸν τι ἐπιχειρῶσι πράττειν, τότε ἀποτροπῆς ἕνεκα ὡς φάρμακον χρήσιμον γενέσθαι” τὴν τοῦ θεοῦ εἰς ἀνθρώπους πάροδον.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Eusebius Scr. Eccl., Theol., *Historia ecclesiastica* (2018: 002) “Eusèbe de Césarée. Histoire ecclésiastique, 3 vols.”, Ed. Bardy, G. Paris: Cerf, 1:1952; 2:1955; 3:1958, Repr. 3:1967; Sources chrétiennes 31, 41, 55. Book 5, chapter 10, section 2, line 4

τοσαύτην δ' οὖν φασιν αὐτὸν ἐκθυμοτάτῃ διαθέσει προθυμίαν περὶ τὸν θεῖον λόγον ἐνδείξασθαι, ὡς καὶ κήρυκα τοῦ κατὰ Χριστὸν εὐαγγελίου τοῖς ἐπ' ἀνατολῆς ἔθνεσιν ἀναδειχθῆναι, μέχρι καὶ τῆς Ἰνδῶν στείλᾶμενον γῆς.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., *Historia ecclesiastica* Book 5, chapter 10, section 3, line 2

ἦσαν γάρ, ἦσαν εἰς ἔτι τότε πλείους εὐαγγελιστὰι τοῦ λόγου, ἔνθεον ζῆλον ἀποστολικοῦ μιμήματος συνεισφέρειν ἐπ' αὐξήσει καὶ οἰκοδομῇ τοῦ θείου λόγου προμηθεύμενοι· ὧν εἷς γενόμενος καὶ ὁ Πάνταινος, καὶ εἰς Ἰνδοὺς ἐλθεῖν λέγεται, ἔνθα λόγος εὐρεῖν αὐτὸν προφθάσαν τὴν αὐτοῦ παρουσίαν τὸ κατὰ Ματθαῖον εὐαγγέλιον παρὰ τισιν αὐτόθι τὸν Χριστὸν ἐπεγνωκόσιν, οἷς Βαρθολομαῖον τῶν ἀποστόλων ἕνα κηρύξαι αὐτοῖς τε Ἑβραίων γράμμασι τὴν τοῦ Ματθαίου καταλεῖψαι γραφὴν, ἣν καὶ σφύζεσθαι εἰς τὸν δηλούμενον χρόνον.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., *De martyribus Palaestinae* (recensio brevior) (2018: 003) “Eusèbe de Césarée. Histoire ecclésiastique, vol. 3”, Ed. Bardy, G. Paris: Cerf, 1958, Repr. 1967; Sources chrétiennes 55. Chapter 6, section 2, line 4

ἔθους τὸ πρὶν ὄντος ἐπὶ βασιλέων, εἰ καὶ ἄλλοτε, τὰς φιλοτίμους θέας πλείους τοῖς θεαταῖς ἐμπαρέχειν θυμηδίας καινῶν καὶ ξένων τὰ τε συνήθη παραλλαττόντων θαυμάτων, ζῶν ἔσθ' ὅπῃ τῶν ἐξ Ἰνδίας ἢ Αἰθιοπίας ἢ καὶ ἄλλοθεν εἰσκομιζομένων ἢ καὶ ἀνδρῶν ἐντέχνους τισὶ σωμασκήαις παραδόξους ψυχαγωγίας τοῖς ὁρῶσιν ἐνδεικνυμένων, πάντως που καὶ τότε, οἷα βασιλέως τὰς θέας παρέχοντος, πλείον τι καὶ παράδοξον χρῆν ὑπάρχειν ταῖς φιλοτιμίαις.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., *Demonstratio evangelica* (2018: 005) “Eusebius Werke, Band 6: Die Demonstratio evangelica”, Ed. Heikel, I.A. Leipzig: Hinrichs, 1913; Die griechischen christlichen Schriftsteller 23. Book 1, chapter 2, section 13, line 8

τῆς τε γὰρ κατὰ σάρκα συγγενείας τίς ἦν πρὸς τὸν Ἀβραάμ συγγένεια Σκύθαις, φέρε εἰπεῖν, ἢ Αἰγυπτίοις ἢ Αἰθίοψιν ἢ Ἰνδοῖς ἢ Βρετταν- νοῖς ἢ Ἰσπανοῖς;

Eusebius Scr. Eccl., Theol., *Demonstratio evangelica* Book 3, chapter 4, section 45, line 8

ἔστω γὰρ ἐπὶ τῆς οἰκείας γῆς καλινδουμένους ἀγροί- κους ἀνδρας πλανᾶν καὶ πλανᾶσθαι, καὶ μὴ ἐφ' ἡσυχίας βάλλεσθαι τὸ πρᾶγμα· κηρύττειν δ' εἰς πάντας τὸ τοῦ Ἰησοῦ ὄνομα, καὶ τὰς παραδόξους πράξεις αὐτοῦ κατὰ τε ἀγροὺς καὶ κατὰ πόλιν διδάσκειν, καὶ τοὺς μὲν αὐτῶν τὴν Ῥωμαίων ἀρχὴν καὶ αὐτὴν τε τὴν βασιλικωτάτην πόλιν νεύμασθαι, τοὺς δὲ τὴν Περσῶν, τοὺς δὲ τὴν Ἀρμενίων, ἑτέρους δὲ τὸ Πάρθων ἔθνος, καὶ αὐτὰ πάλιν τὸ Σκυθῶν, τινὰς δὲ ἤδη καὶ ἐπ' αὐτὰ τῆς οἰκουμένης ἐλθεῖν τὰ ἅκρα, ἐπὶ τε τὴν Ἰνδῶν φθάσαι χώραν, καὶ ἑτέρους ὑπὲρ τὸν Ὀκεανὸν παρελθεῖν ἐπὶ τὰς καλουμένας Βρεττανικὰς νήσους, ταῦτα οὐκ ἔτ' ἔγωγε ἡγοῦμαι κατὰ ἀνθρώπον εἶναι, μὴ τί γε κατὰ εὐτελεῖς καὶ ἰδιώτας, πολλοῦ δὲ κατὰ πλάνους καὶ γόητας.

5.18. EUSEBIUS

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Demonstratio evangelica Book 3, chapter 7, section 11, line 2

Πέρσας δὲ καὶ Ἀρμενίους, καὶ Χαλδαίους, καὶ Σκύθας, καὶ Ἰνδούς, καὶ εἴ τινα βαρβάρων γένοιτο ἔθνη, πῶς πείσομεν τῶν μὲν πατρίων θεῶν ἀφίστασθαι, ἓνα δὲ τὸν πάντων δημιουργὸν σέβειν;

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Onomasticon (2018: 011) “Eusebius Werke, Band 3.1: Das Onomastikon”, Ed. Klostermann, E. Leipzig: Hinrichs, 1904; Die griechischen christlichen Schriftsteller 11.1. Page 6, line 19

Αἰλάμ (Gen. 14, 1). ἐν ἐσχάτοις ἐστὶ <Παλαιστίνης> παρακειμένη τῇ πρὸς μεσημβρίαν ἐρήμῳ καὶ τῇ πρὸς αὐτὴν ἐρυθρᾷ θαλάσῃ, πλωτὴ οὖσα τοῖς τε ἀπ’ Αἰγύπτου περῶσι καὶ τοῖς ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Onomasticon Page 80, line 24

χώρα πρὸς ἀνατολάς, <ἦν> προῖων ἐκ παρα-δείσου Φισὼν κυκλοῖ, ὁ παρ’ Ἑλλησι Γάγγης, «ἐπὶ τὴν Ἰνδικὴν φερό-μενος».

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Onomasticon Page 82, line 2

καὶ ἐνὸς δὲ τῶν ἀπογόνων Νῶε ἦν ὄνομα Εὐειλάτ, ὃν σὺν τοῖς ἀδελφοῖς Ἰώσιππος «ἀπὸ Κωφῆνος ποταμοῦ τῆς Ἰνδικῆς καὶ τῆς πρὸς <αὐτῇ> Σηρίας» κατοικῆσαι ἱστορεῖ.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Onomasticon Page 102, line 1

ἄλλοι δὲ τὴν Ἰνδιάν ὑπε-τύπωσαν.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Onomasticon Page 124, line 3

Μανασσῇ (Gen 10, 30). χώρα τῆς Ἰνδικῆς, ἣν κατέκνησαν οἱ υἱοὶ Ἰεκτὰν υἱοῦ Ἐβέρ.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Onomasticon Page 150, line 14

Σωφειρά (Gen 10, 30). «ὄρος ἀνατολῶν» πρὸς τῇ Ἰνδικῇ, παρ’ ᾧ κατέκνησαν υἱοὶ Ἰεκτὰν υἱοῦ Ἐβέρ, οὓς φησιν Ἰώσιππος «ἀπὸ Κωφῆνος ποταμοῦ τῆς τε Ἰνδικῆς καὶ τῆς πρὸς αὐτῇ Σηρίας» κα-τασχεῖν.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Onomasticon Page 160, line 20

ὄρος ἀνατολῶν ἐν τῇ Ἰνδικῇ.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Onomasticon Page 166, line 9

ἐστὶν δὲ ποταμὸς ὃν Ἕλληνες Γάγγην ὀνομάζουσιν· ἐκ μὲν τοῦ παραδείσου προῖων, ἐπὶ δὲ «τὴν Ἰνδικὴν φερόμενος ἐκδίδωσιν εἰς τὸ πέλαγος».

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Onomasticon Page 176, line 15

ἦν δὲ καὶ ἐνὸς τῶν ἀπογόνων Ἐβέρ ὄνομα Οὐφείρ, οὗ <τούς> υἱοὺς «ἀπὸ Κωφῆνος ποταμοῦ τῆς Ἰνδικῆς καὶ τῆς πρὸς αὐτῇ Σηρίας» κατοικῆσαι Ἰώσιππος ἱστορεῖ, ἀφ’ οὗ καὶ τὴν χώραν εἰκότως τῆς προσηγορίας τυχεῖν.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem (2018: 017) “Flavii Philostrati opera, vol. 1”, Ed. Kayser, C.L. Leipzig: Teubner, 1870, Repr. 1964. Page 382, line 9

τὴν ἀπὸ Περ-σίδος ἐπ’ Ἰνδούς πορείαν ἄγει παραλαβὼν αὐτὸν ὁ λόγος.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 382, line 27

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ἐπὶ τούτοις ὁ Φιλόστρατος ὁ τάληθές τιμᾶν πρὸς τοῦ Φιλαλήθους μεμαρτυρημένος, ὅρα τῆς ἀληθείας ὅποια δείγματα παρίστησι· γενόμενον παρ' Ἰνδοῖς τὸν Ἀπολλώνιον παραστήσασθαί φησιν ἑρμηνέα καὶ δι' αὐτοῦ προσδιαλέγεσθαι Φραώτη, τοῦτο δ' εἶναι τῷ βασιλεῖ τῶν Ἰνδῶν ὄνομα, καὶ ὁ μικρῷ πρόσθεν κατ' αὐτὸν πασσῶν γλωσσῶν συνεῖς νῦν αὖ κατὰ τὸν αὐ- τὸν ἑρμηνέως δεῖται.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 383, line 6

καὶ μεταξὺ ὁ μὲν τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς καὶ ταῦτα βάρβαρος ὢν τὴν φύσιν τὸν ἑρ- μηνέα ἐκποδὼν μεταστησάμενος Ἑλλάδι χρῆται πρὸς αὐτὸν τῇ ὁμιλίᾳ παιδείαν καὶ πολυμάθειαν ἐνδει- κνύμενος, ὁ δὲ οὐδ' ὥς, ὅτι δὴ καὶ αὐτὸς τῆς παρ' αὐτοῖς οὐκ ἀμαθῶς ἔχει φωνῆς δέον ἐπεφιλοτιμή- σατο, ἀλλὰ καὶ λαλοῦντος Ἑλλάδι γλώσση τοῦ Ἰν- δοῦ ἐκπλήττεται, ἧ φησιν ὁ Φιλόστρατος ἀκόλουθα, ὡς ἔοικεν, ἑαυτῷ γράφων.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 383, line 22

οὐδὲ γὰρ ἐς διδασκάλους γε, οἶμαι, ἀναφέρεις, ἐπεὶ μηδὲ εἶναι Ἰνδοῖς (εἰκὸς) διδασκάλους τούτου.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 383, line 27

εἶτα καὶ τισι τοῦ Ἰνδοῦ δικάζοντος περὶ θησαυροῦ φωραθέντος ἐν ἀγρῷ, πόττερα τῷ πρια- μένῳ ἢ τῷ τὸ χωρίον ἀποδο- μένῳ δέοι νεῖμαι τοῦτον, ὁ πάντα φιλόσοφος καὶ θεοὺς κεχαρισμένος ἐρωτηθεὶς ἐπικρίνει τῷ πρια- μένῳ, λογισμὸν δὴ αὐτοῖς ῥήμασιν ἐπειπὼν “ὥς οὐκ ἂν οἱ θεοὶ τὸν μὲν ἀφείλοντο καὶ τὴν γῆν, εἰ μὴ φαῦλος ἦν, τῷ δ' αὖ καὶ τὰ ὑπὸ γῆν δοῦναι, εἰ μὴ βελτίων ἦν τοῦ ἀποδομένου.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 387, line 7

ἐπὶ τοιούτῳ δὴ τῷ συμποσίῳ κατὰ τὸν αὐτὸν Φιλόστρα- τον βασιλεὺς ἐγχαριάζων Ἰνδοῖς εἰσάγεται συμπίνων τοῖς φιλοσόφοις, τοῦτον δὲ ἐνυβρίζει καὶ ἐμπαρ- οινεῖν φιλοσοφία μεθύ- σκεσθαι τε παρ' αὐτοῖς καὶ ἀντιπαρεξάγειν Ἡλίῳ καὶ ἀλαζονεύεσθαι ἱστορεῖ, καὶ πάλιν τὸν Ἀπολλώνιον δι' ἑρμηνέως τὰ παρὰ τούτου μαρτάνει καὶ αὖ πάλιν πρὸς αὐτὸν διαλέ- γεσθαι ὑπερμηνεύοντος τοῦ Ἰάρχα· καὶ πῶς οὐ θαν- μάζειν ἄξιον, ὅπως τὸν οὕτως ὑβριστὴν καὶ ἀτοπῶ- τατον παροινεῖν καὶ μεθύσκεσθαι παρὰ τηλικούτοις εἰκὸς ἦν, ὃν οὐδὲ παρεῖναι ἄξιον ἐν φιλοσόφων μὴ

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 389, line 12

ταῦτα δὲ νῦν εἰπὼν ὁ τάληθές τιμᾶν παρὰ τῷ Φι- λαλήθει νενομισμένος μεθ' ἑτέρα τῆς γραφῆς, ὡς ἂν δὴ γοητεῖαν τῶν Βραχμάνων καταγνοὺς καὶ ταύ- της ἐλεύθερον καταστήσας τὸν Ἀπολλώνιον φροντί- σας ἐπιφέρει φάσκων κατὰ λέξιν· “Ἰδὼν δὲ παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς τοὺς τρίποδας καὶ τοὺς οἰνοχόους καὶ ὅσα αὐτόματα ἐσφοιτᾶν εἶπον, οὐθ', ὅπως σοφίζονται αὐτά, ἦρετο, οὔτε ἐδεήθη μαθεῖν, ἀλλ' ἐπήνει μὲν, ζηλοῦν δὲ οὐκ ἤξιον.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 390, line 2

ἐπανελθόντα φησὶν ἀπὸ τῆς Ἰνδῶν χώρας ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα κοινωνόν τῶν θεῶν πρὸς αὐτῶν τῶν θεῶν ἀνακεκηρῦχθαι, οἱ καὶ τοὺς κάμνοντας ὡς αὐτὸν ἐφ' ὑγείᾳ παρέπεμπον, καὶ δῆτα ὡς

5.18. EUSEBIUS

ἐξ Ἀράβων καὶ μάγων καὶ Ἰνδῶν παρὰ- δοξόν τινα καὶ θεῖον ἡμῖν αὐτὸν ἀγαγὼν παραδόξων ἐντεῦθεν ἀφηγημάτων κατάρχεται.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 390, line 12

καίτοι ἂν τις εἴποι εὐλόγως, ὅτι δὴ εἰ θειοτέρας ἢ κατ' ἀνθρώπον φύσεως ἦν, πάλαι, ἀλλ' οὐ νῦν ἔδει, πρὸ τῆς δὲ ἐτέρων μεταλήψεως τῶν θαυμασίων κατάρχεσθαι, περιττὴ δ' ἂν καὶ ἡ ἐξ Ἀράβων αὐτῷ μάγων τε καὶ Ἰνδῶν διὰ σπουδῆς ἐπεχειρεῖτο πολυμαθία, εἰ δὴ τις κατὰ τὴν δοθεῖσαν ὑπῆρξεν ὑπόθεσιν· ἀλλ' οὐ- τὸς γε κατὰ τὸν φιλαλήθη συγγραφέα νῦν δὴ πάρεστι μετὰ τοσούτους διδασκάλους τὴν σοφίαν ἐνεπιδει- κνύμενος, καὶ πρῶτα μὲν οἷα ἐξ Ἀράβων καὶ τῆς παρ' αὐτοῖς οἰωνιστικῆς ὁρμώμενος τὸν στρουθόν, ὃ τι καὶ βούλοιτο τοὺς ἐτέρους ἐπὶ τροφὴν παρακα- λῶν ἐφερμηνεύει τοῖς παροῦσιν, εἴτα δὲ λοιμοῦ (ἐν Ἐφέσῳ) προαισθόμενος προμαντεύεται τοῖς πολίταις.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 392, line 24

εἰ μὴ ἄρα, ἐπεὶ δὴ νεκροῖς ὁμιλῶν εἰσῆκται, ἐπὶ τὸ ψυχρότερον μεταποιεῖ τὰς πεύσεις ὁ συγγραφεύς, ὥς ἂν ὑπεκλύσειε τὴν ὑπόνοιαν τοῦ πέρα τῶν προς- ηκόντων αὐτὸν περιεργάσθαι δοκεῖν, καὶ γὰρ δὴ καὶ ἀπολογούμενον αὐτὸν ὑπογράφει, ὅτι μὴ κατὰ νεκρομαντείαν ὁ τρόπος αὐτῷ τῆς φανείσης ὀψεως γένοιτο, “οὔτε γὰρ βόθρον” εἶπεν “Ὀδυσσεύς ὄρυ- ξάμενος, οὐδ' ἀρνῶν αἵμασι ψυχαγωγήσας, ἐς διά- λεξιν τοῦ Ἀχιλλέως ἦλθον, ἀλλ' εὐξάμενος ὅποσα τοῖς ἥρωσιν Ἰνδοὶ φασὶ δεῖν εὐξασθαι.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 392, line 26

καὶ ταῦτα νῦν πρὸς τὸν ἐταῖρον ἀποσεμνύνεται ὁ μηδὲν μα- θεῖν παρ' Ἰνδῶν, μηδὲ ζηλῶσαι τὴν παρ' αὐτοῖς σο- φίαν πρὸς τοῦ συγγραφέως μεμαρτυρημένος.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 395, line 6

δαιμονία κινήσει προέλεγε καὶ ὅτι τοῖς γόητα ἡγου- μένοις τὸν ἄνδρα οὐχ ὑγιαίνει ὁ λόγος, δηλοῖ μὲν καὶ τὰ εἰρημένα, σκεφώμεθα δὲ κάκεῖνα· οἱ γόητες, ἡγουῖμαι δὲ αὐτοὺς ἐγὼ κακο- δαιμονεστάτους ἀνθρώ- πων, οἱ μὲν ἐς βασάνους εἰδώλων χωροῦντες, οἱ δ' ἐς θυσίας βαρβάρους, οἱ δὲ ἐς τὸ ἐπᾶσαι τι ἢ ἀλεῖψαι μεταποιεῖν φασὶ τὰ εἰμαρμένα, ὁ δὲ εἶπετο μὲν τοῖς ἐκ Μοιρῶν καὶ προέλεγεν, ὡς ἀνάγκη ἔσεσθαι αὐτά, προέλεγε δὲ οὐ γοητεύων, ἀλλ' ἐξ ὧν οἱ θεοὶ ἐφαι- νον, ἰδὼν δὲ παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς τοὺς τρίποδας καὶ τοὺς οἰνοχόους καὶ ὅσα αὐτόματα ἐσφοιτᾶν εἶπον, οὐθ' ὅπως σοφίζονται αὐτὰ ἤρετο, οὔτε ἐδεήθη μα- θεῖν, ἀλλ' ἐπήνει μὲν, ζηλοῦν δὲ οὐκ ἠξίου.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 395, line 10

ταῦτα δὲ λέγων δηλὸς ἐστὶ τοὺς περιβοήτους Ἰνδῶν φιλο- σόφους γόητας ἀποφαίνων.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 395, line 22

εἰς- ἥκται δὴ οὖν παρ' οἷς φησι γυμνοῖς Αἰγυπτίων, ῥή- μασιν αὐτοῖς ταῦτα φάσκων· “οὐκ ἀπεικὸς τε πα- θεῖν μοι δοκῶ φιλοσοφίας ἡττηθεὶς εὖ κεκοσμημένης, ἣν ἐς τὸ πρόσφορον Ἰνδοὶ στείλαντες ἐφ' ὑψηλῆς τε καὶ θείας μηχανῆς ἐκκυκλοῦσιν.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 395, line 29

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

καὶ Δομετιανῷ δὲ εἰσῆκται λέγων “καὶ τίς πρὸς Ἰάρχαν σοὶ πόλεμος ἢ πρὸς Φραώτην τοὺς Ἰνδούς;

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 396, line 16

τοῦτο γὰρ αὐτὸς ἑαυτὸν ὁ Ἀπολλώνιος γεγονέναι τὴν ψυ- χὴν ἐν ταῖς πρὸς τὸν Ἰνδὸν ὁμιλίαις μικρῷ πρόσθεν ἡμῖν δεδήλωκε.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 407, line 17

δὴ γόητα αὐτὸν ὑπειλήφασιν αὐτὰ δὴ ταῦτα θαν- μάξει λέγων Ἐμπεδοκλέα μὲν καὶ Πυθαγόραν καὶ Δημόκριτον τοῖς αὐτοῖς μάγοις ὠμιληκότας οὕτω ὑπῆχθαι τέχνη, Πλάτωνα τε παρὰ τῶν ἐν Αἰγύπτῳ ἱερέων τε καὶ προφητῶν πολλὰ παρειληφότα καὶ ταῦτα τοῖς ἰδίοις ἀναμίξαντα λόγοις οὐδαμῶς δόξαι τισὶ μαγεύειν, τουτονὶ δὲ οὕτω γιγνώσκεισθαι παρ’ ἀνθρώ- πους, ὅτι δὴ ἀπὸ τῆς ἀληθινῆς ὁρμῶτο σο- φίας, μάγον δὲ αὐτὸν πάλαι τε καὶ εἰσέτι νῦν νενο- μίσθαι τῷ μάγοις Βαβυλωνίων Ἰνδῶν τε Βραχυᾶσι καὶ τοῖς Αἰγυπτίων Γυμνοῖς ὠμιληκέναι.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 409, line 18

καὶ ἔμπαλιν τίνι λόγῳ Πυθαγόραν σεμνολογῶν θαυμαστὸν ἐπιγράφη διδάσκαλον, καὶ Μοιρῶν παίγνιον, ἀλλ’ οὐκ ἐραστὴν ὄντα φιλοσο- φίας οὐκ ἀπολείπεις ἐπαινῶν, Φραώτης δὲ καὶ Ἰάρ- χας (οἱ) 1 Ἰνδῶν φιλόσοφοι τί μᾶλλον παρὰ σοὶ θεῶν ἀπηνέγκαντο δόξαν μηδὲν τι παιδείας ἴδιον, μηδ’ ἀρετῆς ἀπενεγκάμενοι κλέος;

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 410, line 2

τί δὲ καί, εἰ αὐτῷ σοὶ πέπρωτο θείῳ ὄντι τὴν φύσιν ὑπερᾶραι βασιλέων δόξης, εἰς διδα- σκάλων ἐφοίτας καὶ φιλοσόφων Ἀραβίους τε καὶ Βα- βυλωνίων μάγους καὶ σοφοὺς Ἰνδῶν ἐπολυπραγμό- νεις;

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Contra Hieroclem Page 410, line 31

οὐκ οὐν θαυμάσιος οὔτε τῆς πρώτης γενέσεως καὶ τροφῆς, οὔτε τῆς ἐγκυκλίου παιδείας, οὔτε τῆς ἐν ἀκμῇ σώφρονος ἀγωγῆς, οὔτ’ ἀσκήσεως τῆς ἐν φι- λοσοφία, ἣν δ’ ἄρα τις Μοιρῶν ἀνάγκη καὶ εἰς Βα- βυλωνίους ἐλαύνουσα, ὠθούμενος δ’ ὥσπερ καὶ τοῖς Ἰνδῶν ὠμίλεις σοφοῖς, καὶ ἐπὶ τοὺς Αἰγυπτίων δὲ Γυμνοὺς οὐχ ἡ προαίρεσις, οὐδ’ ὁ φιλοσοφίας πόθος, Μοῖρα δὲ ἦγεν ἄγχουσα καὶ ἐπὶ τὰ Γάδεια καὶ τὰς Ἡρακλείους στήλας ἐῶν τε καὶ ἐσπέριον Ὠκεανὸν ἀλᾶσθαι καὶ αὐταῖς ἀτράκτοις εἰς μάτην ἐξεβιάζετο περιστρέφεσθαι.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Commentarius in Isaiam (2018: 019) “Eusebius Werke, Band 9: Der Jesajakommentar”, Ed. Ziegler, J. Berlin: Akademie-Verlag, 1975; Die griechischen christlichen Schriftsteller. Book 1, section 63, line 112

Ἰστοροῦνται γοῦν τινες αὐτῶν μέχρι καὶ τῆς Περσῶν καὶ Ἰνδῶν διεληλυθέναι χώρας. 2 Ἐπεὶ δὲ ἐδόκουν κατὰ τοὺς χρόνους τοῦ προφήτου <Ἰδουμαῖοι> καὶ Ἀμμα- νῖται καὶ <Μωαβῖται> τὰ περὶ τὴν Ἰουδαίαν Ἀραβικὰ ἔθνη, πολέμια καὶ ἐχθρὰ τυγχάνειν τοῦ παρὰ Ἰουδαίοις τιμω- μένου θεοῦ διὰ τὴν ἔκτοπον αὐτῶν εἰδωλο- λατρίαν εἰκότως τούτων αὐτῶν ὀνομαστί μνήμην ὁ λόγος ἐποιήσατο, ὡς καὶ αὐτῶν παραδεξομένων τὴν ὑπὸ τῶν ἀποστόλων κηρυχθησομένην θεοσεβειαν. 3 διό φησι· <καὶ ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν καὶ ἐπὶ Μωαβ τὰς χεῖρας ἐπιβα- λοῦσι, καὶ τοὺς υἱοὺς δὲ Ἀμμὼν ὑπακούσεσθαι> τῷ κηρύγματι προ- φητεύει.

5.18. EUSEBIUS

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Vita Constantini (2018: 020) “Eusebius Werke, Band 1.1: Über das Leben des Kaisers Konstantin”, Ed. Winkelmann, F. Berlin: Akademie-Verlag, 1975; Die griechischen christlichen Schriftsteller. Book Pin, chapter 4, section 50, line 1

Γάμοι Κωνσταντίου υἱοῦ αὐτοῦ καίσαρος. Ἰνδῶν πρεσβεία καὶ δῶρα.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Vita Constantini Book 1, chapter 8, section 4, line 2

ἡμέροις γέ τοι καὶ σώφροσι θεοσεβείας παραγ- γέλμασι τὸν αὐτοῦ φραζάμενος στρατόν, ἐπῆλθε μὲν τὴν Βρεττανῶν καὶ τοὺς ἐν αὐτῷ οἰκοῦντας ὠκεανῷ τῷ κατὰ δύοντα ἥλιον περι- οριζομένῳ, τό τε Σκυθικὸν ἐπηγάγετο πᾶν, ὑπ’ αὐτῇ ἄρκτῳ μυρίοις βαρβάρων ἐξαλλάτ- τουσιν γένεσι τεμνόμενον, ἥδη δὲ καὶ μεσημβρίας ἐπ’ ἔσχατα τὴν ἀρχὴν ἐκτείνας εἰς αὐτοὺς Βλέμμυάς τε καὶ Αἰθίοπας, οὐδὲ τῶν πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ἄλλοτρίαν ἐποιεῖτο τὴν κτῆσιν, ἐπ’ αὐτὰ δὲ τὰ τῆς ὅλης οἰκουμένης τέρματα, Ἰνδῶν μέχρι τῶν ἐξωτάτω τῶν τε ἐν κύκλῳ περι- οίκων τοῦ παντὸς τῆς γῆς τῷ βίῳ στοιχείου, φωτὸς εὐσεβείας ἀκτίσιν ἐκλάμπων, ἅπαντας εἶχεν ὑπηκόους, τοπάρχας ἐθνάρχας σατράπας βασιλείας παντοίων βαρβάρων ἐθνῶν ἐθελοντὶ ἀσπαζομένους καὶ χαίροντας τοῖς τε παρ’ αὐτῶν ξενίοις τε καὶ δώροις διαπρεσβευομένους καὶ τὴν πρὸς αὐτὸν γνώσιν τε καὶ φιλίαν περὶ πλείστου ποιουμένους, ὥστε καὶ γραφαῖς εἰκόνων αὐτὸν παρ’ αὐτοῖς τιμᾶν ἀνδριάντων τε ἀναθήμασι, μόνον τε αὐτοκρατόρων παρὰ τοῖς πᾶσι Κωνσταντῖνον γνωρίζεσθαι τε καὶ βοᾶσθαι.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Vita Constantini Book 4, chapter 7, section 1, line 9

Συνεχεῖς γοῦν ἅπανταχόθεν οἱ διαπρεσβευόμενοι δῶρα τὰ παρ’ αὐτοῖς πο- λυτελεῖ διακόμι- ζον, ὥς καὶ αὐτοὺς ποτε παρατυχόντας ἡμᾶς πρὸ τῆς αὐλείου τῶν βασιλείων πυλῶν στοιχη- δὸν ἐν τάξει περίβλεπτα σχήματα βαρβάρων ἐστῶτα θεάσασθαι, οἷς ἕξαλλος μὲν ἡ στολή, διαλλάττων δ’ ὁ τῶν σχημάτων τρόπος, κόμη τε κεφαλῆς καὶ γενείου πάμπλου διεστῶσα, βλοσυρῶν τε ἦν προσώπων βάμβαρος καὶ καταπληκτικὴ τις ὄψις, σωμάτων θ’ ἡλικίας ὑπερ- βάλλοντα μεγέθη· καὶ οἷς μὲν ἐρυθραίνετο τὰ πρόσωπα, οἷς δὲ λευκότερα χιόνος ἦν, οἷς δ’ ἐβέ- νου καὶ πύττης μελάντερα, οἱ δὲ μέσης μετεῖχον κράσεως, ἐπεὶ καὶ Βλεμμύων γένη Ἰνδῶν τε καὶ Αἰθίοπων, οἱ διχθὰ δεδαίεται ἔσχατοι ἀνδρῶν, τῇ τῶν εἰρημένων ἐθεωρεῖτο ἰστορία.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Vita Constantini Book 4, chapter 50, section 1, line 1

Ἐν τούτῳ δὲ καὶ Ἰνδῶν τῶν πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον πρέσβεις ἀπῆντων δῶρα κομίζοντες, γένη δ’ ἦν παντοῖα ἐξαστραπτόντων πολυτελῶν λίθων ζῳά τε τῶν παρ’ ἡμῖν ἐγνωσμένων ἐναλλάττοντα τὴν φύσιν, ἃ δὴ προσήγον τῷ βασιλεῖ, τὴν εἰς αὐτὸν Ὤκεανὸν δηλοῦντες αὐτοῦ κράτησιν, καὶ ὥς οἱ τῆς Ἰνδῶν χώρας καθηγεμόνες εἰκόνων γραφαῖς ἀνδριάντων τ’ αὐτὸν ἀναθήμασι τιμῶντες αὐτοκράτορα καὶ βασιλέα γνωρίζειν ὠμολόγουν.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Vita Constantini Book 4, chapter 50, section 1, line 8

ἀρχομένῳ μὲν οὖν τῆς βασιλείας αὐτῷ οἱ πρὸς ἥλιον δύοντα <ἐν> Ὤκεανῷ Βρεττανοὶ πρῶτοι καθυπετάττοντο, νῦν δ’ Ἰνδῶν οἱ τὴν πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον λαχόντες.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Constantini imperatoris oratio ad coetum sanctorum (2018: 021) “Eusebius Werke, Band 1: Über das Leben Constantins. Constantins Rede

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

an die heilige Versammlung. Tricennatsrede an Constantin”, Ed. Heikel, I.A. Leipzig: Hinrichs, 1902; Die griechischen christlichen Schriftsteller 7. Chapter 16, section 1, line 12

εἰρητο δὲ καὶ ὁ καιρὸς τῆς ἐνσωματώσεως, φανερά δ' ἦν καὶ ἡ αἰτία τῆς σαρκώσεως αὐτοῦ, ὅπως τὰ ἐκ τῆς ἀδικίας τε καὶ ἀκολασίας ἐκφύοντα γεννήματα, λυμαινόμενα τοῖς δικαίοις ἔργοις καὶ τρόποις, ἀναιρεθῇ, πᾶσα δὲ ἡ οἰκουμένη φρονήσεώς τε καὶ σωφροσύνης μετ- ἄσχοι, ἐπικρατήσαντος σχεδὸν ἐν ταῖς πάντων ψυχαῖς τοῦ θεσπιδος- θέντος ὑπὸ τοῦ σωτῆρος νόμου, καὶ θεοσεβείας μὲν ῥωσθείσης, δεισι- δαιμονίας δὲ ἐξαλειφθείσης, δι' ἣν οὐ μόνον ἀλόγων ζώων σφα- γαί, ἀλλὰ καὶ ἀνθρωπίνων ἱερευμάτων θυσίαι καὶ ἐναγῆ μιάσματα βαμῶν ἐπενοήθη, κατὰ τε Αἰγυπτίους καὶ Ἀσσυρίους νόμους χαλκηλάτοις ἢ καὶ πλαστοῖς ἰνδάλμασιν σφαγιαζόντων ψυχὰς δικαίας.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., De laudibus Constantini (2018: 022) “Eusebius Werke, vol. 1”, Ed. Heikel, I.A. Leipzig: Hinrichs, 1902; Die griechischen christlichen Schriftsteller 7. Chapter 6, section 21, line 8

θνητῶν δ' ὀφθαλμὸς οὐκ εἶδεν, οὐδὲ ἀκοή τις διέγνω, ἀλλ' οὐδὲ νοῦς σάρκα ἡμφιεσμένος οἷός τε ἂν εἴη διαθρῆσαι ἅ τοῖς εὐσεβείᾳ διακοσμησαμένοις προητοίμασται, ὥσπερ οὖν καὶ σοί, βασι- λεύ θεοσεβέστατε, ὃ μόνῳ τῶν ἐξ αἰῶνος ἐντεῦθεν ἦδη τὸν ἀνθρώ- πειον ἀποκαθᾶραι βίον αὐτὸς ὁ τῶν ὅλων παμβασιλεὺς θεὸς ἐδωρή- σατο, ὃ καὶ τὸ αὐτοῦ σωτήριον ἀνέδειξε σημεῖον, δι' οὗ τὸν θάνα- τον καταγωνισάμενος τὸν κατὰ τῶν ἐχθρῶν ἠγείρει θρίαμβον· ὃ δὲ νικητικὸν τρόποιον, δαιμόνων ἀποτρόπαιον, τοῖς τῆς πλάνης ἰνδάλ- μασιν ἀντιπαρατάξας τὰς κατὰ πάντων ἀθέων πολεμίων τε καὶ βαρβάρων ἥδη δὲ καὶ αὐτῶν δαιμόνων, ἄλλων τουτωνὶ βαρβάρων, ἦρατο νίκας.

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Generalis elementaria introductio (= Eclogae prophetae) (2018: 023) “Eusebii Pamphili episcopi Caesariensis eclogae prophetae”, Ed. Gaisford, T. Oxford: Oxford University Press, 1842. Page 111, line 12

Διότι ἐγὼ εἰμι ὡς πάνθηρ τῷ Ἐφραΐμ, καὶ ὡς λέων τῷ οἴκῳ Ἰούδα. Ἐπεὶ καὶ ἐν ἑτέρῳ τόπῳ τοῦ αὐτοῦ προφήτου ὁ Κύριος περὶ αὐτοῦ φησιν τὸ, καὶ ἔσομαι ὡς πάνθηρ, ἀναγκαῖον ἰδεῖν τὰ ἱστορούμενα [ἀ] περὶ τοῦ ζώου· καὶ δὴ ἀπὸ τοῦ πρώτου τῶν Διδύμου Φυσικῶν ταῦτα παραθετέον· Πάνθηρ τὸ ζῷον οὐ μόνον ἐστὶ κατὰ τὸ σῶμα εὐμορ- φον, καθάπερ ἀστερωπὸς, ἀλλ' ἐπεὶ πέφυκεν εὐπνους ὑπερβάλλει καὶ τῶν παρ' Ἰνδοῖς ἁρωμάτων ἐν εὐωδίᾳ· οὗτος ἕως οὗ οὐ πεπείνηκεν ἐν τῇ καταδύσει μένει, θέλων οἰκουρὸς τις εἶναι· ἐπ' ἂν δὲ τροφῆς ἐπιθυμήσῃ μεταλαβεῖν, προελθὼν βαδίζει μόνον· τὰ δ' ἄλλα θηρία ἀλίσκόμενα ὑπὸ τῆς εὐωδίας αὐτοῦ τῆς περὶ τὸ σῶμα ἀκολουθεῖ κη- λούμενα· ὁ δὲ πλάγιος τοῖς ὀφθαλμοῖς τὸ ἐπιτήδειον αὐτῷ θηρίον αἰρεθῆναι περιβλέπει καὶ ἐπιτηδήσας ἔχει. Τὰ μὲν δὴ περὶ τῆς φύσεως τοῦ ζώου τοιαῦτα· ὅπως δ' ἐπὶ τὴν τοῦ θείου λόγου δύναμιν καὶ τὴν ἐξ αὐτῆς

Eusebius Scr. Eccl., Theol., Commentaria in Psalmos (2018: 034); MPG 23–24. Volume 23, page 1101, line 11

5.19. PSEUDO-GALENUS

Πῶς δὲ ἀληθεύσει περὶ αὐτοῦ φάσκων ὁ Θεός, Θήσομαι αὐτὸν ὑψηλὸν παρὰ τοῖς βασι-
λεῦσι τῆς γῆς; Πότ' οὖν ὁ Δαυὶδ παρὰ Πέρσαις φέρε, ἢ Σκύθαις, ἢ Ἰνδοῖς, ἢ Αἰθίοφιν, ἢ Μαύροις,
ἢ Σπάνοις, ἢ Βρετανοῖς, ἢ παρὰ τοῖς λοιποῖς τῶν ἐθνῶν βασιλεῦσιν ὑψώθη;

5.19 Pseudo-Galenus

“” (From Wikipedia¹⁸)

Pseudo-Galenus Med., An animal sit quod est in utero (0530: 002) “Galenī qui fertur libellus Εἰ ζῶν τὸ κατὰ γαστρός”, Ed. Wagner, H., 1914; Diss. Marburg.

Pseudo-Galenus Med., Λέξεις βοτανῶν (0530: 003) “Anecdota Atheniensia et alia, vol. 2”, Ed. Delatte, A. Paris: Droz, 1939. Page 390, line 1

καρυόφυλλον τὸ ἐκ τῆς Ἰνδίας κομιζόμενον.

Pseudo-Galenus Med., Λέξεις βοτανῶν Page 390, line 19

λιμνεία σφραγὶς πηλὸς λίμνης Ἰνδικῆς.

Pseudo-Galenus Med., Λέξεις βοτανῶν Page 390, line 24

μαλάβαθρον ἥτοι φύλλον Ἰνδικόν.

Pseudo-Galenus Med., Λέξεις βοτανῶν Page 390, line 28

νάρδου Ἰνδικοῦ ἥτοι μαλάβαθρον.

Pseudo-Galenus Med., Λέξεις βοτανῶν Page 392, line 21

φύλλου Ἰνδικοῦ ἥτοι μα- λαβάθρου φύλλον.

Pseudo-Galenus Med., Introductio seu medicus (0530: 012) “Claudii Galeni opera omnia, vol. 14”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1827, Repr. 1965. Volume 14, page 760, line 6

προτρεπτικὰ δὲ ὅσα κινεῖ καὶ προ- τρέπει τὰ φάρμακα, ὡς μὲν ἀγαρικόν, ἔρις, ῥέον δὲ Ἰν- δικόν, στάχυς· ἐντεριώνην δὲ κολοκυνθίδος, τραγάκανθα· σκαμμωνίαν δὲ, ἀλόη, ἢ χυλὸς κράμβης, ἢ ῥόδων, ἢ σπέρ- ματα.

Pseudo-Galenus Med., De remediis parabilibus libri iii (0530: 029) “Claudii Galeni opera omnia, vol. 14”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1827, Repr. 1965. Volume 14, page 429, line 17

ἀλλυό- νιον Ἰνδικόν ἐν οἴῳ τριπτόν διακλυζέσθω καὶ ἴστησι τὴν κίνησιν.

Pseudo-Galenus Med., De succedaneis liber (0530: 031) “Claudii Galeni opera omnia, vol. 19”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1830, Repr. 1965. Volume 19, page 724, line 11

ἀντὶ ἀλόης Ἰνδικῆς, ἀλόης χλωρᾶς φύλλα, γλαύκιον, λύκιον ἢ κενταύριον.

Pseudo-Galenus Med., De succedaneis liber Volume 19, page 725, line 9

ἀντὶ Ἀρμενίου, μέλαν Ἰνδικόν.

18.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Pseudo-Galenus Med., De succedaneis liber Volume 19, page 733, line 10

ἀντὶ κροκομάγματος, ἀλόη Ἰνδική ἢ ἀγάλλοχον Ἰνδικόν.

Pseudo-Galenus Med., De succedaneis liber Volume 19, page 735, line 16

ἀντὶ μαλαβάθρου, κασσία σφαιρίτης ἢ ναρδοστάχυς ἢ τρά- κτυλος ἢ νάρδος Ἰνδική.

Pseudo-Galenus Med., De succedaneis liber Volume 19, page 737, line 9

ἀντὶ νάρδου ἀγρίας, νάρδος Ἰνδική.

Pseudo-Galenus Med., De succedaneis liber Volume 19, page 737, line 10

ἀντὶ νάρδου Ἰνδικῆς, νάρδος Κελτική.

Pseudo-Galenus Med., De theriaca ad Pamphilianum (0530: 032) “Claudii Galeni opera omnia, vol. 14”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1827, Repr. 1965. Volume 14, page 306, line 14

νάρδου Ἰνδικῆς, μαλαβάθρου φύλλων, ἀνὰ ¶ * ιστ', σμύρ- νης, κρόκου, ἀνὰ ¶ ιβ'.

Pseudo-Galenus Med., De theriaca ad Pamphilianum Volume 14, page 308, line 12

δικτάμνου Κρητικοῦ, σχοίνου ἄνθους, λιβάνου ἄρξενος, τερ- μινθίνης Χίας, κασσίας σύριγ- γος μελαίνης, νάρδου Ἰνδικῆς, ἀνὰ ¶ στ'.

Pseudo-Galenus Med., De historia philosophica (0530: 042) “Doxographi Graeci”, Ed. Diels, H. Berlin: Reimer, 1879, Repr. 1965. Section 3, line 44

ὅσπερ <Θεόφραστον> προσεστήσατο τῆς κατ' αὐτὸν αἰρέσεως καὶ τὸν <Στράτωνα> προή- γαγεν εἰς ἰδίον τινα χαρακτῆρα φυσιολογίας *** [εἰσὶ δὲ τῶν γεννικωτέρων φιλοσόφων Ἰνδικες δύο, τινὲς μὲν Ἰταλιῶται, ὧν <Πυθαγόρας> εὐρετὴς γεγέννηται, καὶ ὁ κατὰ τὴν Ἑλαίαν ἀκμάσας] *** ταύτης δὲ λέγεται κατάρξαι <Ξενοφάνης> ὁ Κολοφώνιος ἀπορητικῆς μᾶλλον ἢ δογματικῆς τοῖς πολλοῖς εἶναι δοκούσης.

Pseudo-Galenus Med., De optima secta ad Thrasybulum liber (0530: 043) “Claudii Galeni opera omnia, vol. 1”, Ed. Kühn, C.G. Leipzig: Knobloch, 1821, Repr. 1964. Volume 1, page 178, line 10

ἡμῖν μὲν γὰρ παρὰ φύσιν, τοῖς Ἰνδοῖς δὲ κατὰ φύσιν.

5.20 Theophilus of Antioch

Theophilus, Patriarch of Antioch,[1] succeeded Eros c. 169, and was suc- ceeded by Maximus I c. 183, according to Henry Fynes Clinton,[2] but these dates are only approximations. His death probably occurred between 183 and 185.[3]

We gather from his writings (the only remaining being his apology to Au- tolycus) that he was born a pagan, not far from the Tigris and Euphrates,

5.21. BASIL OF CAESAREA

and was led to embrace Christianity by studying the Holy Scriptures, especially the prophetic books.[4] He makes no reference to his office in his existing writings, nor is any other fact in his life recorded. Eusebius, however, speaks of the zeal which he and the other chief shepherds displayed in driving away the heretics who were attacking Christ's flock, with special mention of his work against Marcion.[5] He made contributions to the departments of Christian literature, polemics, exegetics, and apologetics. William Sanday[6] describes him as "one of the precursors of that group of writers who, from Irenaeus to Cyprian, not only break the obscurity which rests on the earliest history of the Church, but alike in the East and in the West carry it to the front in literary eminence, and distance all their heathen contemporaries".

he one undoubted extant work of Theophilus, the 7th Bishop of Antioch (c. 169–c. 183), is his *Apology to Autolycus* (*Apologia ad Autolyicum*), a series of books defending Christianity written to a pagan friend. (From Wikipedia¹⁹)

Theophilus Apol., *Ad Autolyicum* (1725: 001) "Theophilus of Antioch. *Ad Autolyicum*", Ed. Grant, R.M. Oxford: Clarendon Press, 1970. Book 3, section 5, line 10
ἔτι δὲ καὶ παρὰ Ἰνδοῖς μυθεύει κατεσθίεσθαι τοὺς πατέρας ὑπὸ τῶν ἰδίων τέκνων.

5.21 Basil of Caesarea

Basil of Caesarea, also called Saint Basil the Great, (329 or 330[5] – January 1, 379) (Greek: Ἅγιος Βασίλειος ὁ Μέγας) was the Greek bishop of Caesarea Mazaca in Cappadocia, Asia Minor (modern-day Turkey). He was an influential theologian who supported the Nicene Creed and opposed the heresies of the early Christian church, fighting against both Arianism and the followers of Apollinaris of Laodicea. His ability to balance his theological convictions with his political connections made Basil a powerful advocate for the Nicene position.

In addition to his work as a theologian, Basil was known for his care of the poor and underprivileged. Basil established guidelines for monastic life

19. http://en.wikipedia.org/wiki/Theophilus_of_Antioch

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

which focus on community life, liturgical prayer, and manual labour. Together with Pachomius he is remembered as a father of communal monasticism in Eastern Christianity. He is considered a saint by the traditions of both Eastern and Western Christianity. (From Wikipedia²⁰)

Basilus Scr. Eccl., Homilia in pentecosten (2800: 012); MPG 52. Volume 52, page 811, line 54

Ὡς τῶν παραδόξων θαυμάτων! ἀπόστολος ἐλά-λει, καὶ Ἰνδὸς ἐδιδάσκετο· Ἑβραῖος ἐφθέγγετο, καὶ βάρβαρος ἐπαιδεύετο· ἡ χάρις ἐξηχεῖτο, καὶ ἀκοή τὸν λόγον ἐδέχετο· Γότθοι τὴν φωνὴν ἐπεγίνωσκον, καὶ Αἰθίοπες τὴν γλῶτταν ἐγνώριζον· Πέρσαι τοῦ λαλοῦντος ἐθαύμαζον, καὶ ἔθνη βάρβαρα ὑπὸ μιᾶς ἠρδεύετο γλώττης.

Basilus Scr. Eccl., De vita et miraculis sanctae Theclae libri ii [Sp.] Book 1, section 22, line 22

Καὶ εἴ τις ἔγνω τὸν ἐκ Τυανέων τῶν Καππαδοκῶν Ἀπολλώνιον παρὰ τοῖς τὸν ἐκείνου βίον ἀναγεγραφόσιν – ἵνα ἐκ τῶν πάνυ πολλῶν τὸ περιφανέστερον εἴπωμεν – , ἔγνω πού πάντως καὶ τῆς κατὰ τὴν γοητείας τοῦ ἀνδρὸς τέχνης τὰ μιστὰ καὶ δυσαγῆ ἀποτελέσματα, θεαγωγίας τέ τινος καὶ ψυχαγωγίας καὶ δαιμόνων ἐπικλήσεις καὶ λανθανούσας ἀνοσιουργίας· ὡς καὶ παρὰ τῶν ἐν Αἰθίοφι καὶ Ἰνδοῖς Γυμνοσοφιστῶν μήτε εἰσδεχθῆναι σπουδαίως, ἀλλὰ γὰρ καὶ θᾶπτον ἀποπεμφθῆναι, ὡς οὐκ εὐαγὴς οὐδὲ ὅσιος ἀνθρώπος, οὐδὲ φιλόσοφος ἀληθῶς, πολὺ δὲ τοῦ κατὰ τὴν γοητείας μιάσματος ἔχων.

5.22 <Perictione>

Perictione or Periktione (Greek: Περικτιόνη; 5th century BC) was the mother of the Greek philosopher Plato.

Two spurious works attributed to Perictione have survived in fragments. These are *On the Harmony of Women* and *On Wisdom*. The works do not date from the same time, and are usually assigned to a Perictione I and a Perictione II.[4] Both works belong to the pseudonymous Pythagorean literature. *On the Harmony of Women*, concerns the duties of a woman to her husband, her marriage, and to her parents; it is written in Ionic Greek, and probably dates to the late 4th or 3rd century BC.[5] *On Wisdom* offers a philosophical definition of wisdom; it is written in Doric Greek, and probably dates to the 3rd or 2nd century BC.[5] (From Wikipedia²¹)

20. http://en.wikipedia.org/wiki/Basil_of_Caesarea

21. <http://en.wikipedia.org/wiki/Perictione>

5.23. POLYBIUS

<Perictione> Phil., Fragmenta (1572: 001) “The Pythagorean texts of the Hellenistic period”, Ed. Thesleff, H. Åbo: Åbo Akademi, 1965. Page 143, line 22

ὥστ' οὔτε χρυσὸν ἀμφιθῆσεται ἢ λίθον Ἰνδικὸν ἢ χώρης ἐόντα ἄλλης, οὐδὲ πλέζεται πολυτε-
χνήσι τρίχας, οὐδ' ἀλείφεται Ἀραβίης ὀσμῆς ἐμπνέοντα, οὐδὲ χρίσεται πρόσωπον λευκαίνουσα
ἢ ἐρυθραί- νουσα τοῦτο ἢ μελαίνουσα ὀφρύας τε καὶ ὀφθαλμούς καὶ τὴν πολλὴν τρίχα βαφαῖσι
τεχνωμένη, οὐδὲ λούσεται θαμινά.

5.23 Polybius

“” (From Wikipedia²²)

Polybius Hist., Historiae (0543: 001) “Polybii historiae, vols. 1–4”, Ed. Büttner-Wobst, T. Leipzig: Teubner, 1:1905; 2:1889; 3:1893; 4:1904, Repr. 1:1962; 2–3:1965; 4:1967. Book 1, chapter 40, section 15, line 2

θηρία δὲ σὺν αὐ- τοῖς μὲν Ἰνδοῖς ἔλαβε δέκα, τῶν δὲ λοιπῶν τοὺς Ἰνδοὺς ἀπερριφόντων μετὰ
τὴν μάχην περιελασάμε- νος ἐκυρίευσεν πάντων.

Polybius Hist., Historiae Book 3, chapter 46, section 7, line 1

τῶν δὲ θηρίων εἰθισμένων τοῖς Ἰνδοῖς μέχρι μὲν πρὸς τὸ ὑγρὸν αἰεὶ πειθαρχεῖν, εἰς δὲ τὸ ὕδωρ
ἐμβαίνειν οὐδαμῶς ἔτι τολμώντων, ἦγον διὰ τοῦ χώματος δύο προθέμενοι θηλείας, πειθαρχούν-
των αὐταῖς τῶν θηρίων.

Polybius Hist., Historiae Book 3, chapter 46, section 11, line 3

καὶ τοιοῦτῳ δὴ τρόπῳ προσαρμοζομένων αἰεὶ σχε- διῶν δυεῖν, τὰ πλείστα τῶν θηρίων ἐπὶ
τούτων διεκομισθῆ, τινὰ δὲ κατὰ μέσον τὸν πόρον ἀπέρ- ριψεν εἰς τὸν ποταμὸν αὐτὰ διὰ τὸν
φόβον. ὧν τοὺς μὲν Ἰνδοὺς ἀπολέσθαι συνέβη πάντας, τοὺς δ' ἐλέφαντας διασωθῆναι.

Polybius Hist., Historiae Book 5, chapter 84, section 6, line 4

τὰ δὲ πλείστα τῶν τοῦ Πτολεμαίου θηρίων ἀπέδει- λία τὴν μάχην, ὅπερ ἔθος ἐστὶ ποιεῖν
τοῖς Λιβυκοῖς ἐλέφασιν· τὴν γὰρ ὁσμὴν καὶ φωνὴν οὐ μένουσιν, ἀλλὰ καὶ καταπεπληγμένοι τὸ
μέγεθος καὶ τὴν δύ- ναμιν, ὥς γ' ἐμοὶ δοκεῖ, φεύγουσιν εὐθέως ἐξ ἀπο- στήματος τοὺς Ἰνδικούς
ἐλέφαντας· ὁ καὶ τότε συνέβη γενέσθαι.

Polybius Hist., Historiae Book 11, chapter 1, section 12, line 3

τῶν δὲ θηρίων τὰ μὲν ἕξ ἅμα τοῖς ἀνδράσιν ἔπεσε, τὰ δὲ τέτταρα διωσάμενα τὰς τάξεις
ὑστερον ἐάλω μεμονωμένα καὶ ψιλὰ τῶν Ἰνδῶν.

Polybius Hist., Historiae Book 11, chapter 34, section 11, line 2

ὑπερβαλὼν δὲ τὸν Καύ- κασον καὶ κατὰρας εἰς τὴν Ἰνδικήν, τὴν τε φιλίαν ἀνενώσατο τὴν
πρὸς τὸν Σοφαγασήνον τὸν βασιλέα τῶν Ἰνδῶν, καὶ λαβὼν ἐλέφαντας, ὥστε γενέσθαι τοὺς
ἅπαντας εἰς ἑκατὸν καὶ πεντήκοντ', ἔτι δὲ σιτομετρήσας πάλιν ἐνταῦθα τὴν δύναμιν, αὐτὸς

22.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

μὲν ἀνέλευξε μετὰ τῆς στρατιᾶς, Ἀνδροσθένην δὲ τὸν Κυζικηνὸν ἐπὶ τῆς ἀνακομιδῆς ἀπέλιπε τῆς γάλης τῆς ὁμολογηθείσης αὐτῷ παρὰ τοῦ βασιλέως.

Polybius Hist., Historiae Book 34, chapter 13, section 1, line 1

δε ασια.

Τὰ δ' ἐπ' εὐθείας τούτοις μέχρι τῆς Ἰνδικῆς τὰ αὐτὰ κεῖται καὶ παρὰ τῷ Ἀρτεμιδώρῳ, ἅπερ καὶ παρὰ τῷ Ἐρατοσθένει.

5.24 Diogenes Laertius

Diogenes Laertius (play /daɪˈbdʒiːniːz leɪˈɜːfəs/; Greek: Διογένης Λαέρτιος, Diogenēs Laertios; fl. c. 3rd century AD) was a biographer of the Greek philosophers. Nothing is known about his life, but his surviving Lives and Opinions of Eminent Philosophers is one of the principal surviving sources for the history of Greek philosophy. (From Wikipedia²³)

Diogenes Laertius Biogr., Vitae philosophorum (0004: 001) “Diogenis Laertii vitae philosophorum, 2 vols.”, Ed. Long, H.S. Oxford: Clarendon Press, 1964, Repr. 1966. Book 1, section 1, line 3

γεγενῆσθαι γὰρ παρὰ μὲν Πέρσαις Μάγους, παρὰ δὲ Βαβυλωνίοις ἢ Ἀσσυρίοις Χαλδαίους, καὶ γυμνοσοφιστὰς παρ' Ἰνδοῖς, παρὰ τε Κελτοῖς καὶ Γαλάταις τοὺς καλουμένους Δρυΐδας καὶ Σεμνο- θεούς, καθά φησιν Ἀριστοτέλης ἐν τῷ Μαγικῷ (Rose 35) καὶ Σωτίων ἐν τῷ εἰκοστῷ τρίτῳ τῆς Διαδοχῆς.

Diogenes Laertius Biogr., Vitae philosophorum Book 9, section 35, line 8

τοῖς τε γυμνοσοφισταῖς φασὶ τινες συμμιῖξαι αὐτὸν ἐν Ἰνδίᾳ καὶ εἰς Αἰθιοπίαν ἐλθεῖν.

Diogenes Laertius Biogr., Vitae philosophorum Book 9, section 61, line 5

<ΠΤΡΩΝ>

Πύρρων Ἡλείος Πλειστάρχου μὲν ἦν υἱός, καθὰ καὶ Διοκλῆς ἱστορεῖ· ὥς φησι δ' Ἀπολλόδωρος ἐν Χρονικοῖς (FGrH 244 F 39), πρότερον ἦν ζωγράφος, καὶ ἤκουσε Βρύσανος τοῦ Στίλπωνος, ὥς Ἀλέξανδρος ἐν Διαδοχαῖς (FGrH 273 F 92), εἶτ' Ἀναξάρχου, ξυνακολουθῶν πανταχοῦ, ὥς καὶ τοῖς γυμνοσοφισταῖς ἐν Ἰνδίᾳ συμμιῖξαι καὶ τοῖς Μάγοις.

Diogenes Laertius Biogr., Vitae philosophorum Book 9, section 63, line 3

τοῦτο δὲ ποιεῖν ἀκού- σαντα Ἰνδοῦ τινος ὀνειδίζοντος Ἀναξάρχῳ ὥς οὐκ ἂν ἕτερόν τινα διδάξαι οὗτος ἀγαθόν, αὐτὸς αὐλὰς βασιλικὰς θεραπεύων.

Diogenes Laertius Biogr., Vitae philosophorum Book 9, section 65, line 6

23. http://en.wikipedia.org/wiki/Diogenes_Laertius

5.25. JUBA II REX MAURETANIAE

καὶ πάλιν ἐν τοῖς Ἰνδαλμοῖς (PPF 9 B 67. 1 – 2, 5)· τοῦτό μοι, ὦ Πύρρων, ἰμείρεται ἥτορ ἀκοῦσαι, πῶς ποτ' ἀνὴρ ὅτ' ἄγεις ῥᾶστα μεθ' ἡσυχίης μοῦνος ἐν ἀνθρώποισι θεοῦ τρόπον ἡγεμονεύων.

Diogenes Laertius Biogr., Vitae philosophorum Book 9, section 105, line 7

καὶ ἐν τοῖς Ἰνδαλμοῖς οὕτω λέγει (PPF 9 B 69), ἀλλὰ τὸ φαινόμενον πάντῃ σθένει οὐπερ ἂν ἔλθῃ.

5.25 Juba II Rex Mauretaniae

Who is this?

Juba II Rex Mauretaniae <Hist.>, Fragmenta (1452: 003) “FHG 3”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 30, line 8

Σελεύκου τε τοῦ Νικάνορος κτῆμα ἄδει Ἰνδὸν ἐλέφαντα, καὶ μέντοι καὶ διαβιῶναι τοῦτον μέχρι τῆς τῶν Ἀντιόχων ἐπικρατείας φησίν.

Juba II Rex Mauretaniae <Hist.>, Fragmenta Fragment 66, line 1

.. iuba in aethiopia gigni tradit in litoribus amnis, quem Nilum vocamus, et inde nomen trahere. Aelian. N. A. XV, 8: Ἀριστος ἄρα ὁ Ἰνδικὸς (μάρ- γαρος) γίνεται, καὶ ὁ τῆς θαλάττης τῆς Ἐρυθρᾶς.

Juba II Rex Mauretaniae <Hist.>, Fragmenta Fragment 66, line 8

Γίνεσθαι δέ φησιν Ἰόβας καὶ ἐν τῷ κατὰ Βόσπορον πορθμῷ, καὶ τοῦ Βρεττανικοῦ ἡττάσθαι αὐτόν, τῷ δὲ Ἰνδῷ καὶ τῷ Ἐρυθραίῳ μηδὲ τὴν ἀρχὴν ἀντικρίνεσθαι.

Juba II Rex Mauretaniae <Hist.>, Fragmenta Fragment 66, line 9

Ὁ δὲ ἐν Ἰνδία χερσαῖος οὐ λέγεται φύσιν ἔχειν ἰδίαν, ἀλλὰ ἀπογέννημα εἶναι χρυστάλλου, οὐ τοῦ ἐκ τῶν παγετῶν συνισταμένου, ἀλλὰ τοῦ ὀρυκτοῦ.

Juba II Rex Mauretaniae <Hist.>, Fragmenta Fragment 87, line 3

. οἱ δὲ Δεύνυσον, ἐπεὶ δὴ βασιλεὺς ἐγένετο Νύσσης· δεῦνον δὲ τὸν βασι- λέα λέγουσιν οἱ Ἰνδοί, ὡς Ἰόβας.

5.26 Diophantus

Diophantus of Alexandria (Ancient Greek: Διόφαντος ὁ Ἀλεξανδρεύς. b. between A.D. 200 and 214, d. between 284 and 298 at age 84), sometimes called “the father of algebra”, though this is greatly disputed [1], was an Alexandrian Greek mathematician[2][3][4][5] and the author of a series of books called Arithmetica. These texts deal with solving algebraic equations,

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

many of which are now lost. In studying *Arithmetica*, Pierre de Fermat concluded that a certain equation considered by Diophantus had no solutions, and noted without elaboration that he had found "a truly marvelous proof of this proposition," now referred to as Fermat's Last Theorem. This led to tremendous advances in number theory, and the study of Diophantine equations ("Diophantine geometry") and of Diophantine approximations remain important areas of mathematical research. Diophantus was the first Greek mathematician who recognized fractions as numbers; thus he allowed positive rational numbers for the coefficients and solutions. In modern use, Diophantine equations are usually algebraic equations with integer coefficients, for which integer solutions are sought. Diophantus also made advances in mathematical notation. (From Wikipedia²⁴)

Diophantus Math., Fragmentum [Sp.] (e cod. Paris. suppl. gr. 387, fol. 181r) (2039: 003) "Diophanti Alexandrini opera omnia, vol. 2", Ed. Tannery, P. Leipzig: Teubner, 1895, Repr. 1974. Volume 2, page 3, line 7

καὶ ἡ μὲν μία ἔχει οὕτως· ἀπόγραφαι τοιοῦτον ἀριθμὸν κατὰ τὴν τάξιν τῆς <Ἰνδικῆς> μεθόδου· εἶτα ἄρξαι ἀπὸ δεξιῶν ἐπὶ ἀριστερά, καθ' ἕκαστον δὲ στοιχεῖον λέγε· γίνεται· οὐ γίνεται· γίνεται· οὐ γίνεται· ἕως ἂν τελειωθῶσι τὰ στοιχεῖα, καὶ εἰ μὲν τύχη τὸ τελευταῖον ὑπὸ τὸ γίνε-ται, ἄρξαι τοῦ μερισμοῦ ἐκεῖθεν· εἰ δὲ ὑπὸ τὸ οὐ γίνεται, καταλιπὼν τὸ τελευταῖον στοιχεῖον ἄρξαι τοῦ μερισμοῦ ἀπὸ τοῦ μετ' αὐτὸ στοιχείου τοῦ πρὸς τὰ δεξιά, ἐν ᾧ δηλονότι φθάνει τὸ γίνε-ται.

5.27 Diogenianus

gation, search

Diogenianus was a Greek grammarian from Heraclea in Pontus (or in Caria) who flourished during the reign of Hadrian.[1] He was the author of an alphabetical lexicon, chiefly of poetical words, abridged from the great lexicon (Περὶ γλωσσῶν) of Pamphilus of Alexandria (AD 50) and other similar works. It was also known by the title *Περίεργος πένητες* (for the use of "industrious poor students"). It formed the basis of the lexicon, or rather glossary, of Hesychius of Alexandria, which is described in the preface as a new edition of the work of Diogenianus. We still possess a collection of proverbs under

24. <http://en.wikipedia.org/wiki/Diophantus>

5.28. POLYAENUS

his name, probably an abridgment of the collection made by himself from his lexicon (ed. by Ernst von Leutsch and Friedrich Wilhelm Schneidewin in *Paroemiographi Graeci*, 1. 1839). Diogenianus was also the author of an Anthologion of epigrams about rivers, lakes, cliffs, mountains and mountain-tops (Επιγραμμάτων ανθολόγιον περί ποταμῶν λιμνῶν κρηνῶν ορέων ακρωρείων) (Anthology of epigramse etc.); and of a list (with map) of all the towns in the world.

Erasmus attributed the origins of this Latin parable to Diogenianus — *pis-cem natare docem* (teach fish how to swim).[2] (From Wikipedia²⁵)

Diogenianus Gramm., *Paroemiae* (epitome operis sub nomine Diogeniani) (e cod. Vindob. 133) (0097: 002) “Corpus paroemiographorum Graecorum, vol. 2”, Ed. von Leutsch, E.L. Göttingen: Vandenhoeck & Ruprecht, 1851, Repr. 1958. Centuria 2, section 20, line 6

Γύγης γὰρ βουκόλος ἂν γῆς ὑπὸ σεισμοῦ ῥαγεί- σης νεκρὸν εὐρὼν φοροῦντα δακτύλιον καὶ τοῦτον περιελό- μενος φύσιν ἔχοντα ὥστε κατὰ τὰς στροφὰς τῆς σφενδόνης ὀρᾶσθαι καὶ μὴ ὅταν βούληται, εἶχε παρ’ ἑαυτῷ· μεθ’ οὗ καὶ κτείνας τὸν πρὸ αὐτοῦ ἐβασίλευεν Ἰνδῶν.

Diogenianus Gramm., *Paroemiae* (epitome operis sub nomine Diogeniani) (e cod. Vindob. 133) Centuria 3, section 95, line 1

<Ψιττακὸς † Ἰνδέστιος:> ἐπὶ τῶν μιμουμένων τινάς· τοιοῦτον γὰρ τὸ ὄρνειον ὥστε ἀνθρω- πίνην προῖεσθαι φωνήν.

5.28 Polyaeus

Polyaenus or Polyenus (play /ˌpɒliːˈnəs/;[1] see ae (æ) vs. e; Greek: Πολύαινος, Poluainos, “many proverbs”) was a 2nd century Macedonian author, known best for his *Stratagems in War* (in Greek, *Στρατηγήματα*), which has been preserved. The *Suda*[2] calls him a rhetorician, and Polyaeus himself writes that he was accustomed to plead causes before the emperor.[3] He dedicated *Stratagems in War* to Marcus Aurelius (161–180) and Verus (161–169), while they were engaged in the Parthian war (162–165), about 163 CE, at which time he was too old to accompany them in their campaigns.[4] (From Wikipedia²⁶)

25. <http://en.wikipedia.org/wiki/Diogenianus>

26. <http://en.wikipedia.org/wiki/Polyaenus>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Polyaenus Rhet., Strategemata (0616: 001) “Polyaeni strategematon libri viii”, Ed. Woelfflin, E., Melber, J. Leipzig: Teubner, 1887, Repr. 1970. Book 1, chapter 1, section 1, line 1

Διόνυσος ἐπ’ Ἰνδοὺς ἐλαύνων, ἵνα δέχοντο αἱ πόλεις αὐτόν, ὅπλοις μὲν φανεροῖς τὴν στρατιὰν οὐχ’ ὥπλισεν, ἐσθῆσι δὲ λεπταῖς καὶ νεβρίσι· δόρατα ἦν κισσῷ πεπυκασμένα· ὁ θύρσος εἶχεν αἰχμήν· κυμβάλοις καὶ τυμπάνοις ἐσήμαινεν ἀντὶ σάλπιγγος καὶ οἴνου τοὺς πολεμίους γεύων εἰς ὄρχησιν ἔτρεπεν καὶ ὅσα ἄλλα Βακχικὰ ὄργια.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 1, chapter 1, section 1, line 8

πάντα δὲ ἦν Διονύσου στρατηγήματα, οἷς Ἰνδοὺς καὶ τὴν ἄλλην Ἀσίαν ἐχειρώσατο.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 1, chapter 1, section 2, line 1

Διόνυσος ἐν Ἰνδικῇ τῆς στρατιᾶς οὐ φερούσης τὸ φλογῶδες τοῦ ἀέρος κατελάβετο τρικόρυφον ὄρος τῆς Ἰνδικῆς.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 1, chapter 1, section 3, line 1

Διόνυσος Ἰνδοὺς ἐλὼν αὐτοὺς τε Ἰνδοὺς καὶ Ἀμαζόνιας ἄγων συμμάχους εἰς τὴν Βακτρίαν ἐνέ- βαλεν· ὀρίζει δὲ τὴν Βακτρίαν ποταμὸς Σαράγγης.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 1, chapter 3, section 4, line 1

Ἡρακλῆς ἐν Ἰνδικῇ θυγατέρα ἐποίησατο, ἦν ἐκά- λεσε Πανδαίην.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 1, chapter 3, section 4, line 2

ταύτη νείμας μοῖραν τῆς Ἰνδικῆς πρὸς μεσημβρίαν καθήκουσαν εἰς θάλασσαν διένειμε τοὺς ἀρχομένους εἰς κόμας τξέ’ προστάξας καθ’ ἐκά- στην ἡμέραν μίαν κόμην ἀποφέρειν τὸν βασιλείον φόρον, ἵνα τοὺς ἤδη δόντας ἔχοι συμμάχους ἢ βασι- λεύουσα κατανοοῦσα αἰετοὺς δοῦναι ὀφείλοντας.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 9, line 1

Ἀλέξανδρος ἦν ἐν Ἰνδοῖς καὶ τὸν Ὑδάσπην ποτα- μὸν διαβαίνειν ἔμελλεν· Πῶρος Ἰνδῶν βασιλεὺς ἐπέ- κεινα τοῦ ποταμοῦ παρετάσσετο, καὶ διαβαίνειν ἀδύ- νατον ἦν.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 9, line 8

τοῦτο ἐγίνετο πολλάκις καὶ ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας, ὥστε οἱ μὲν Ἰνδοὶ κατεγέλασαν τῆς δειλίας τῶν πολεμίων καὶ συμπαραθέοντες ἐπαύσαντο, ὥς οὐκ ἂν ποτε διαβῆναι τολμησάντων, οἱ τοσάκις οὐκ ἐθάρρησαν.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 9, line 13

Ἀλέξανδρος δὲ ὀξύτατῳ δρόμῳ παρὰ τὰς ὄχθας ἀναδραμὼν, ἐπι- βὰς πλοίων καὶ ζευ- γμάτων καὶ διφθερῶν χόρτου πε- πληρωμένων διέβη τὸν ποταμὸν ἑξαπατήσας Ἰνδοὺς τῷ τῆς διαβάσεως ἀνεπίστῳ.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 10, line 1

Ἀλέξανδρος κατέστρεψε τὴν Ἰνδῶν.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 10, line 3

5.28. POLYAENUS

τῶν δὲ στρα- τιωτῶν ἐφελκομένων λάφυρα Περσικὰ καὶ πλοῦτον ὑπέρογκον ἐπὶ τῶν ἀμαξῶν καὶ τὴν πρὸς Ἰνδοὺς μά- χην οὐκ ἀναγκαίαν ἡγουμένων τοσαῦτα δὴ κεκτημέ- νων, πρῶτας ὑπέπρησε τὰς βασιλικὰς ἀμάξας, εἶτα τὰς τῶν ἄλλων.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 20, line 1

Ἀλέξανδρος χωρίῳ τῆς Ἰνδικῆς ἐχυρῷ προσεκά- θητο· φοβηθέντες Ἰνδοὶ συνέθεντο μεθ' ὅπλων ἐξελ- θεῖν.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 20, line 5

Ἀλέξανδρος ἐπῆγε τὴν δύ- ναμιν τῶν Ἰνδῶν ἐπιβοωμένων τὰς συνθήκας.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 21, line 16

ὁπότε οὖν οἱ τοῦ λαιοῦ μέρους τὴν δεξιὰν οὐρα- γίαν ἰδόντες ἀλαλάξαντες προσῆγον, ὁμοίως δὲ καὶ οἱ ἀπὸ τοῦ δεξιοῦ ἐφ' ἡνίαν στρέφοντες ἐπῆγον τοῖς Ἰνδοῖς· οἱ δὲ συγκλεισθῆναι φοβηθέντες ὥρμησαν ὁμοῦ πάντες ἐπὶ τὴν στενὴν ἔξοδον, ὥστε οἱ μὲν ὑπὸ τῶν Μακεδόνων ἀνηροῦντο, οἱ δὲ πλείους ὑπ' ἀλλήλων καταπατούμενοι διεφθείροντο.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 22, line 21

ἐν τούτῳ φθάνουσιν οἱ περὶ τὸν Ἀλέ- ξανδρον ἱππεῖς ἐκπεριελθόντες καὶ κατὰ νότου συνε- λάσαντες τοὺς Ἰνδοὺς τελεωτάτην νίκην ἀνείλονται (μεθ' ἣν βασιλεὺς Ἰνδικῆς Ἀλέξανδρος ἦν).

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 24, line 6

ἐν γοῦν Βάκτροις καὶ Ὑρκανίοις καὶ Ἰνδοῖς δικάζων εἶχε τὴν σκηνὴν ὧδε πεποιημέ- νην.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 30, line 1

Ἀλέξανδρος Καθαίους, μοῖραν Ἰνδῶν ἐξ ἀπονοίας ἀντιστάσαν ἡβηδὸν ἔκτεινε καὶ πόλιν αὐτῶν Σάγγαλα τὴν καρτερωτάτην κατέσκαψεν.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 30, line 3

διῆκε τοὺς Ἰνδοὺς φήμη πονηρὰ ὡς Ἀλέξανδρου φονικῶς καὶ βαρ- βαρικῶς πολεμοῦντος.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 30, line 6

ὁ δὲ μεταβάλλειν τὴν δόξαν βουλόμενος ἄλλην πόλιν (διὰ) τῆς Ἰνδικῆς ἐλὼν, ὁμή- ρους λαβὼν, σπεισάμενος ἐπὶ τρίτην πόλιν ἦλθεν εὐ- μεγέθη καὶ πολυάνθρωπον, τάξας πρὸ τῆς φάλαγγος τοὺς ὁμήρους, γέροντας, παῖδας, γυναῖκας.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 3, section 30, line 13

αὐτίκα ἡ φήμη δια- δραμοῦσα ἔπεισεν Ἰνδοὺς ἐκόντας Ἀλέξανδρον δέχεσθαι.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 6, section 3, line 7

Ἀντίγονος τοῦ λοιποῦ προσέταξε τοῖς Ἰνδοῖς τρέφειν ὕς μετὰ τῶν ἐλεφάντων, ἵνα τὴν ὄψιν αὐτῶν καὶ τὴν κραυγὴν τὰ θηρία φέρειν ἐθίζοιτο.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 4, chapter 21, section 1, line 2

Περσεὺς Ῥωμαίων ἐλέφαντας ἀγόντων τοὺς μὲν ἐκ Λιβύης, τοὺς δὲ Ἰνδοὺς παρὰ Ἀντιόχου Συρίας βασιλέως, ἵνα μὴ καινὸν καὶ φοβερὸν τοῖς ἵπποις τὸ θηρίον φανείη, προσέταξε τοῖς χειροτέχναις εἰδῶλα ξύλινα κατασκευάζειν ἐλεφάντων ἰδεάν καὶ χροάν ἔχοντα.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 6, chapter 50, section t, line 1

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Ἀλεξάνδρου ἐν Βαβυλῶνι τελευτήσαντος εἰς Ἑφεσον ὑπὸ Περδίκου κατεπέμφθη κριθι-
σόμενος κατὰ τοὺς νόμους· Ἀναξαγόρας δὲ καὶ Κόδρος διάραντες εἰς Ἀθήνας ἐσώθησαν, τὴν δὲ
Ἀλεξάνδρου τελευτὴν ἀκούσαντες εἰς Ἑφεσον ἐπανελθόντες καὶ τὸν ἀδελφὸν Διόδωρον ἀνέσωσαν.
ΠΙΝΔ*ΑΡΟΣ.

Polyaenus Rhet., Strategemata Book 8, chapter 50, section 1, line 27

καὶ ἐπὶ τοσοῦτον ἔπεισαν τοὺς ὑπηκόους, ἐφ' ὅσον μεταπεμφθεὶς ὑπ' αὐτῶν Πτολεμαῖος
ἤκεν ὁ πατήρ τῆς ἀνηρημένης καὶ διαπέμ-
πων ἀπὸ τῆς προσηγορίας τοῦ πεφονευμένου παιδὸς
καὶ τῆς ἀνηρημένης Βερενίκης ὡς ἔτι ζώντων ἐπιστολὰς ἀπὸ τοῦ Ταύρου μέχρι τῆς Ἰνδικῆς
χωρὶς πολέμου καὶ μάχης ἐκράτησε τῷ στρατηγῇματι τῆς Παναρίστης χρῆσάμενος.

5.29 Dionysius Periegetes

Dionysius Periegetes (Διονύσιος ὁ Περιηγητής, literally Dionysius the Voyager or Traveller, often Latinized to Dionysius Periegeta) was the author of a description of the habitable world in Greek hexameter verse written in a terse and elegant style. His lifedates, and indeed his origins, are not known, but he is believed to have been from Alexandria and to have flourished around the time of Hadrian (r. 117–138 CE), though some put him as late as the end of the 3rd century.

The work enjoyed popularity in ancient times as a schoolbook. It was translated into Latin by Rufus Festus Avienus, and by the grammarian Priscian. There is a commentary by Eustathius of Thessalonica. (From Wikipedia²⁷)

Dionysius Perieg., Orbis descriptio (0084: 001) “Dionysios von Alexandria. Das Lied von der Welt”, Ed. Brodersen, K. Hildesheim: Olms, 1994. Line 37

εἷς μὲν ἑὼν, πολλῇσι δ' ἐπωνυμίῃσιν ἀρηρώς· ἦτοι μὲν Λοκροῖο παρ' ἐσχατιὴν ζεφύροιο
Ἄτλας Ἑσπέριος κικλήσκειται, αὐτὰρ ὑπερθεὶς πρὸς βορέην, ἵνα παῖδες ἀρειμανέων Ἀριμα-
σπῶν, πόντον μιν καλέουσι πεπηγότα τε Κρόνιον τε· ἄλλοι δ' αὖ καὶ νεκρὸν ἐφήμισαν εἵνεκ'
ἀφαιρουῦ ἡελίου· βράδιον γὰρ ὑπεῖρ ἄλλα τήνδε φαίνειν, αἰεὶ δὲ σκιερῇσι παχύνεται ἐν νεφέλῃ-
σιν· αὐτὰρ ὅθι πρῶτιστα φαίνεται ἀνθρώποισιν, ἥῃον καλέουσι καὶ Ἰνδικὸν οἶδμα θαλάσσης·
ἄγχι δ' Ἐρυθραῖόν τε καὶ Αἰθίοπιον καλέουσιν πρὸς νότον ἔνθα τε πολλὸς ἀοικήτου χθονὸς ἀγ-
κὼν ἐκτέταται, μαλεροῖσι κεκαυμένος ἡελίοισιν.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 578

27. http://en.wikipedia.org/wiki/Dionysius_Periegetes

5.29. DIONYSIUS PERIEGETES

οὐχ οὕτω Θρήϊκος ἐπ' ἡόσιν Ἀψύνθοιο Βιστονίδες καλέουσιν ἐρίβρομον Εἰραφιώτην, οὐδ' οὕτω σὺν παισὶ μελανδίνην ἀνὰ Γάγγην Ἴνδοι κῶμον ἄγουσιν ἐρίβρεμέτη Διονύσῳ, ὥς κεῖνον κατὰ χῶρον ἀνευάζουσι γυναῖκες.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 625

σχῆμα δέ τοι Ἀσίης ῥυσμὸς πέλει ἀμφοτεράων ἠπείρων, ἐτέρωθεν ἀλίγκιον εἶδεϊ κώνου, ἐλκόμενον κατὰ βαιὸν ἐπ' ἀντολῆς μυχὰ πάσης, ἔνθα τε καὶ στήλαι Θηβαιγενέος Διονύσου ἐστᾶσιν, πυμάτοιο παρὰ ῥόον Ὠκεανοῖο, Ἴνδων ὑστατίοισιν ἐν οὖρεσιν, ἔνθα τε Γάγγης λευκὸν ὕδωρ Νυσαῖον ἐπὶ πλαταμῶνα κυλίνδει.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 639

μέσσα γε μὴν πάσης Ἀσίης ὄρος ἀμφιβέβηκεν, ἀρξάμενον γαίης Παμφυλίδος ἄχρι καὶ Ἴνδων, ἄλλοτε μὲν λοξὸν τε καὶ ἀγκύλον, ἄλλοτε δ' αὖτε ἴχνεσιν ὀρθότατον· Ταῦρον δέ ἐκικλήσκουσιν, οὐνεκα ταυροφανές τε καὶ ὀρθόκραιρον ὀδεύει, οὖρεσιν ἐκταδίοισι πολυσχιδὲς ἔνθα καὶ ἔνθα.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 701

τῷ δ' ἐνὶ ναιετάουσιν ἑωθινὸν ἔθνος Ἰβήρων, οἳ ποτε Πυρρήνηθεν ἐπ' ἀντολὴν ἀφίκοντο, ἀνδράσιν Ἰρκανίοισιν ἀπεχθέα δῆριν ἔχοντες, καὶ Καμαριτάων φύλον μέγα, τοί ποτε Βάκχον Ἴνδων ἐκ πολέμοιο δεδεγμένοι ἐξείνισσαν καὶ μετὰ Ληνάων ἱερὸν χορὸν ἐστήσαντο, ζώματα καὶ νεβρίδας ἐπὶ στήθεσσι βαλόντες, εὐοῖ Βάκχε λέγοντες· ὁ δὲ φρεσὶ φίλατο δαίμων κείνων ἀνθρώπων γενεὴν καὶ ἦθεα γαίης.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 890

οἶσθα γάρ, ἐν πρώτοισιν ἐμεῦ εἰπόντος ἀκούσας, πᾶσαν ἕως Ἴνδων Ἀσίην ὄρος ἀνδιχα τέμνειν.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 893

κεῖνό τοι ἐν πλευροῖσι βορειότερον τελείοιτο, Νεῖλος δ' ἐσπέριον πλευρὸν πέλοι· αὐτὰρ ἔῳν Ἰνδικὸς Ὠκεανός· νότιον δ' ἄλδς οἶδματ' Ἐρυθρῆς.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 1074

χωρὶς μὲν Κόρος ἐστὶ μέγας, χωρὶς δὲ Χοάσπης, ἔλκων Ἴνδὸν ὕδωρ, παρὰ τε ῥείων χθόνα Σούσων.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 1088

τῶν δὲ πρὸς ἀντολὴν Γεδρωσῶν ἔλκεται γαῖα, γείτων Ὠκεανοῦ μεγακῆτεος, οἷσι πρὸς αὐγὰς Ἴνδὸν πὰρ ποταμὸν νότιοι Σκύθαι ἐνναίουσιν, ὅς ῥά τ' Ἐρυθραίης κατεναντίον εἰσι θαλάσσης, λαβρότατος ῥόον ὠκὺν ἐπὶ νότον ὀρθὸν ἐλαύνων, ἀρξάμενος τὰ πρῶτ' ἀπὸ Καυκάσου ἠνεμόεντος.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 1107

πρὸς δ' αὐγὰς Ἴνδων ἐρατὴ παραπέπταται αἶα, πασάων πυμάτη, παρὰ χείλεσιν Ὠκεανοῖο, ἣν ῥά τ' ἀνερχόμενος μακάρων ἐπὶ ἔργα καὶ ἀνδρῶν ἥελιος πρῶτησιν ἐπιφλέγει ἀκτί-νεσσιν.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 1132

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ἦτοι μὲν πισύρεσσιν ἐπὶ πλευρῇσιν ἄρηρε πάσῃσιν λοξῇσιν, ἀλιγκίῃ εἰδὲ ῥόμβου· ἀλλὰ τοι ἐσπερίοις μὲν ὁμούριος ὕδασιν Ἰνδὸς γαῖαν ἀποτμήγει, νότιον δ' ἄλός οἶδματ' Ἐρυθρῆς, Γάγγης δ' εἰς αὐγὰς, ὁ δὲ Καύκασος ἐς δύσιν ἄρκτων.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 1137

καὶ τὴν μὲν πολλοὶ τε καὶ ὀλβιοὶ ἄνδρες ἔχουσιν, οὐχ ἅμα ναιετάοντες ὁμώνυμοι, ἀλλὰ διαμφὶς κεκριμένοι, ποταμοῦ μὲν ἀπειρεσίου πέλας Ἰνδοῦ Δαρδανέες, τόθι λοξὸν ἀπὸ σκοπέλων Ἀκεσίνην συρόμενον δέχεται πλωτὸς νῆεσσιν Ἰθάσπης.

Dionysius Perieg., Orbis descriptio Line 1161

αὐτὸς δ' ὅππότε φῦλα κελαινῶν ὤλεσεν Ἰνδῶν, Ἡμωδῶν ὁρέων ἐπεβήσατο, τῶν ὑπὸ πέζαν ἔλκεται ἡψίοιο μέγας ῥόος Ὠκεανοῖο.

Dionysius Perieg., Ixeuticon sive De aucupio (paraphrasis) (olim sub auctore Eutecnio) (0084: 003) "Dionysii ixeuticon seu de aucupio libri tres in epitomen metro solutam redacti", Ed. Garzya, A. Leipzig: Teubner, 1963. Chapter 1, section 32, line 1

Ἀκήκοα δέ, ὡς παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς ὄρνις εἴη γονέων ἄτερ καὶ μίξεως χωρὶς ὑφιστάμενος, φοινῖξ ὄνομα, καὶ βιοῦν φασιν ἐπὶ πλεῖστον καὶ μετὰ πάσης ἀφοβίας αὐτόν, ὡς οὔτε τόξοις, οὔτε λίθοις, οὔτε καλάμοις ἢ πάγαις τῶν ἀνδρῶν τι κατ' αὐτοῦ ποιεῖν πειρωμένων.

5.30 <Damigeron Magus>

Who is this?

<Damigeron Magus>, De lapidibus (e codd. Vat. gr. 578 + Ambros. 95 sup.) (2655: 002) "Ein unedierter Tractat περὶ λίθων", Ed. Mesk, J., 1897; Wiener Studien. Page 319, line 3

οὗτος ὁ λίθος γεν- νᾶται ἐν Ἰνδία, ὅπου ὁ Φισῶν ποταμὸς ἐκ τοῦ παραδείσου ἔρχεται· οὗτος ὅρασιν ἔχει ὁμοίαν τῇ χλόῃ τῆς γῆς καὶ ὁ μὲν πρασώδης οὗτος καλεῖται νερωνιανός· ὁ δὲ παρὰ τοῦτον ὑποχλωριάζων λέγεται σμάρα- γδος ὑακτορίζων· ἐὰν δὲ ἡ ὑπόχλωρος, ἀσπραιοῖδης ἔλαττον τούτου, λέγεται τακτώριος.

<Damigeron Magus>, De lapidibus (e codd. Vat. gr. 578 + Ambros. 95 sup.) Page 319, line 26

γίνεται δὲ ἐν τῇ Ἰνδικῇ, ὅπου καὶ ὁ προγεγραμμένος.

<Damigeron Magus>, De lapidibus (e codd. Vat. gr. 578 + Ambros. 95 sup.) Page 320, line 18

Λίθος ὀνυχίτης· οὗτος ἐν τῇ Ἰνδικῇ γίνεται λευκὰς ζώνας πλείστας ἔχων ἐν ἑαυτῷ ἀερίζου- σας.

5.31 Favorinus

5.32. CHRYSERMUS OF ALEXANDRIA

Jump to: navigation, search

Favorinus of Arelate (ca. 80–160 AD) was a Roman sophist and philosopher who flourished during the reign of Hadrian.

He was of Gaulish ancestry, born in Arelate (Arles). He is described as a hermaphrodite (*ἀνδρόθηλς*) by birth. He received an exquisite education, first in Gallia Narbonensis and then in Rome, and at an early age began his lifelong travels through Greece, Italy and the East. His extensive knowledge, combined with great oratorical powers, raised him to eminence both in Athens and in Rome. With Plutarch, with Herodes Atticus, to whom he bequeathed his library at Rome, with Demetrius the Cynic, Cornelius Fronto, Aulus Gellius, and with Hadrian himself, he lived on intimate terms; his great rival, whom he violently attacked in his later years, was Polemon of Smyrna. (From Wikipedia²⁸)

Favorinus Phil., Rhet., Fragmenta (1377: 003) “Favorino di Arelate. Opere”, Ed. Barigazzi, A. Florence: Monnier, 1966. Fragment 85, line 1

Steph. Byz. *Ἀραχωτοί· πόλις Ἰνδικῆς, ἀπὸ Ἀραχώτου ποταμοῦ ῥέοντος ἀπὸ τοῦ Καυκάσου, ὡς Φαβωρίνος καὶ Στράβων ἐνδεκάτη.*

5.32 Chrysermus of Alexandria

(IDélos 1525). C. lived in about 150–120 BC; administrative official, ‘relative of king Ptolemy’, exegete (i.e. head of the civil service in Alexandria), director of the museum and *ἐπὶ τῶν ἱατρῶν*, a title that is often understood to mean the person responsible for all Egyptian doctors, which in turn led to the conclusion that there was a state organization of doctors. Kudlien is of the opinion that the title refers to the person responsible for the person in char... (From Brill’s New Pauly²⁹)

[Chrysermus] Hist., Fragmenta (2195: 002) “FGH 4”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment t4, line 1

28. <http://en.wikipedia.org/wiki/Favorinus>

29. <http://referenceworks.brillonline.com/entries/brill-s-new-pauly/chrysermus-of-alexandria-e233990?s.num=12>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Φωραθέντος δὲ τούτου, Ἀγησίλαος ὁ πατήρ μέχρι τοῦ ναοῦ τῆς Χαλκιοίκου συνεδίωξεν Ἀθηναῖς, καὶ τὰς θύρας τοῦ τεμένους πλίνθω φράξας, λιμῶ ἀπέκτεινεν· ἡ δὲ μήτηρ καὶ ἄταφον ἔρριψεν· ὡς Χρύσερμος ἐν δευτέρῳ Ἱστορικῶν. INΔ*IKΑ.

[Chrysermus] Hist., Fragmenta Fragment 4, line 9

– Κατορύσσουσι δὲ κατ’ ἐνιαυτὸν γραῦν κατάκριτον, παρὰ τὸν ὄνομαζόμενον λόφον Θηρόγονον· ἅμα γὰρ τὴν πρεσβυτίην ἐρπετῶν πλῆθος ἐκ τῆς ἀκρωρείας ἐξέρχεται, καὶ τὰ περιϊπτάμενα τῶν ἀλόγων ζώων κατεσθίει· καθὼς Χρύσερμος ἐν π’ (ἡ?) Ἰνδικῶν.

5.33 Athenaeus Mechanicus

Athenaeus Mechanicus is the author of a book on siegecraft, *On Machines* (Ancient Greek: *Περὶ μηχανημάτων*). He is identified by modern scholars with Athenaeus of Seleucia, a member of the Peripatetic school active in the mid-to-late 1st century BC, at Rome and elsewhere.[1][2]

The treatise is addressed to Marcus Claudius Marcellus, and thus will have been composed before Marcellus’ death in 23 BC (and possibly at a time when its addressee was preparing to go out on campaign).[1] It describes a number of siege engines. Among the earlier mechanics cited as sources by Athenaeus are Agesistratus, Diades of Pella, and Philo of Byzantium. Whitehead and Blyth analyze the treatise into a preface, a section on “good practice,” a section on “bad practice,” a section on Athenaeus’ own innovations, and an epilogue “emphasizing preparation for war as a deterrent, and defending Athenaeus’ own record against unnamed critics.”[2] The work is technical but not without signs of Athenaeus’ philosophical culture: “He comes across as a philosopher, and he expounds about time and opportunity, but also claims to be enough of a technical expert to devise new machines, and to describe old ones accurately.”[1] Much of Athenaeus’ work (9.4-27.6) is closely parallel to Vitruvius, *De architectura* 10.13-16, a fact probably to be explained by the two authors’ shared reliance on a common source.[6] (From Wikipedia³⁰)

Athenaeus Mech., *De machinis* (1204: 001) “Griechische Poliorketiker, vol. 1”, Ed. Schneider, R. Berlin: Weidmann, 1912; *Abhandlungen der königlichen Gesellschaft der Wissenschaften zu Göttingen, Philol.–hist. Kl., N.F.* 12, no. 5. Section 5, line 8

30. http://en.wikipedia.org/wiki/Athenaeus_Mechanicus

5.34. OPPIAN OF APAMEA

Ὅθεν οὐ κακῶς δόξειεν ἂν πρὸς αὐτοὺς εἰρηκέναι Κάλανος ὁ Ἰνδός· Ἑλλήνων δὲ φιλοσόφοις οὐκ ἔξ- ομοιούμεθα, παρ' οἷς ὑπὲρ μικρῶν πραγμάτων πολλοὶ λόγοι ἀναλίσκονται· ἡμεῖς δέ, φησὶν, ὑπὲρ τῶν μεγίστων ἐλάχιστα εἰώ- θαμεν παραγγέλλειν, ὅπως εὐμνημόνευτα πᾶσιν ᾗ.

5.34 Oppian of Apamea

Oppian or Oppianus (Ancient Greek: Ὀππιανός) was the name of the authors of two (or three) didactic poems in Greek hexameters, formerly identified, but now generally regarded[citation needed] as two different persons: Oppian of Corycus (or Anazarbus) in Cilicia; and Oppian of Apamea (or Pella) in Syria.

Oppian of Apamea (or Pella) in Syria. His extant poem on hunting (Cynegetica) is dedicated to the emperor Caracalla, so that it must have been written after 211. It consists of about 2150 lines, and is divided into four books, the last of which, seems incomplete. The author evidently knew the Halieutica, and perhaps intended his poem as a supplement. Like his namesake, he shows considerable knowledge of his subject and close observation of nature; but in style and poetical merit he is inferior to him. His versification also is less correct. The improbability of there having been two poets of the same name, writing on subjects so closely akin and such near contemporaries, may perhaps be explained by assuming that the real name of the author of the Cynegetica was not Oppian, but that he has been confused with his predecessor. In any case, it seems clear that the two were not identical.

A third poem on bird-catching (Ixeutika), also formerly attributed to an Oppian, is lost; a paraphrase in Greek prose by a certain Eutecnus is extant. The author is probably one Dionysius, who is mentioned by the Suda as the author of a treatise on stones (Lithiaca). (From Wikipedia³¹)

Oppianus Epic., Cynegetica (0024: 001) "Oppian, Colluthus, Tryphiodorus", Ed. Mair, A.W. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1928, Repr. 1963. Book 3, line 259

Ἔστι δ' εὐκρήμνοις ἐπὶ τέρμασιν Αἰθιοπῆων ἱππάγρων πολὺ φῦλον, ἀκαχμένον ἰοφόροις
δοιοῖς χαυλιόδοις· ποδῶν γε μὲν οὐ μίαν ὄπλῃν, χηλὴν δ' αὖ φορέουσι διπλῇν, ἰκέλην ἐλάφοισι·

31. <http://en.wikipedia.org/wiki/Oppian>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

χαίτη δ' αὐχενίη μεσάτην ῥάχιν ἀμφιβιβῶσα οὐρὴν ἐς νεάτην μετανίσσεται· οὐδὲ βροτείην δουλοσύνην ἔτλη ποθ' ὑπερφίαλον γένος αἰνόν· ἀλλ' εἰ καὶ ποθ' ἔλοιεν εὐστρέπτοισι βρόχοισιν ἵππαγρον δολίοισι λόχοις μελανόχροες Ἰνδοί, οὔτε βορὴν ἐθέλει μετὰ χεῖλεσιν αἶψα πάσασθαι οὔτε πιεῖν, ὁλοὸς δὲ φέρειν ζυγὸν ἔπλετο δοῦλον.

Oppianus Epic., Cynegetica Book 4, line 165

οὐ τοῖον Γάγγαο ῥόος πρόσθ' ἡελίοιο Ἰνδὸν ὑπὲρ δάπεδον Μαρυανδέα λαὸν ἀμείβων μυκά-
ται βρύχημα πελώριον, ὅππότε κρημνῶν ἐκπροθορῶν ἐκάλυψε μέλαν δέμας αἰγιαλοῖο· ὅστε
καὶ εὐρύτατός περ ἔων καὶ τ' εἴκοσιν ἄλλοις κυρτοῦται ποταμοῖσι κορυσσόμενος λάβρον ὕδωρ·
οἶον ἐπισμαραγεῖ δρῖος ἄσπετον ἠδὲ χαράδραι βρυχηθμοῖς ὁλοοῖσιν, ἐπιβρέμεται δ' ὅλος αἰθήρ.

5.35 *Physiologus*

Allegorical stories about animals.

The *Physiologus* is a didactic text written or compiled in Greek by an unknown author, in Alexandria; its composition has been traditionally dated to the 2nd century AD by readers who saw parallels with writings of Clement of Alexandria, who is asserted to have known the text, though Alan Scott[1] has made a case for a date at the end of the third or in the 4th century. The *Physiologus* consists of descriptions of animals, birds, and fantastic creatures, sometimes stones and plants, provided with moral content. Each animal is described, and an anecdote follows, from which the moral and symbolic qualities of the animal are derived. Manuscripts are often, but not always, given illustrations, often lavish.

The story is told of the lion whose cubs are born dead and receive life when the old lion breathes upon them, and of the phoenix which burns itself to death and rises on the third day from the ashes; both are taken as types of Christ. The unicorn also which only permits itself to be captured in the lap of a pure virgin is a type of the Incarnation; the pelican that sheds its own blood in order to sprinkle its dead young, so that they may live again, is a type of the salvation of mankind by the death of Christ on the Cross.

Some allegories set forth the deceptive enticements of the Devil and his defeat by Christ; others present qualities as examples to be imitated or avoided. (From Wikipedia³²)

32. <http://en.wikipedia.org/wiki/Physiologus>

5.36. CORNELIUS ALEXANDER POLYHISTOR

Physiologus, Physiologus (redactio prima) (2654: 001) “Physiologus”, Ed. Sbordone, F. Rome: Dante Alighieri–Albrighi, Segati, 1936, Repr. 1976. Section 7, line 4

Ἔστι πετεινὸν ἐν τῇ Ἰνδία, φοῖνιξ λεγόμενον· κατὰ πεντακόσια ἔτη εἰσέρχεται εἰς τὰ ξύλα τοῦ Λιβάνου, καὶ γεμίζει τὰς πτέρυγας αὐτοῦ ἄρωμάτων, καὶ σημαίνει τῷ ἱερεῖ τῆς Ἡλιουπόλεως τῷ μηνὶ τῷ νέφ, τῷ Νησάν ἢ τῷ Ἀδάρ, τουτέστι τῷ Φαμενώθ ἢ τῷ Φαρμουθί.

Physiologus, Physiologus (redactio prima) Section 19, line 6

Ἐὰν οὖν ἔγκυος γένηται, πορεύεται ἐν τῇ Ἰνδία καὶ λαμβάνει τὸν εὐτόχιον λίθον.

Physiologus, Physiologus (redactio prima) Section 34, line 1

Ἔστι δένδρον ἐν τῇ Ἰνδικῇ περιδέξιον καλούμενον, ὃ δὲ καρπὸς αὐτοῦ γλυκύτατός ἐστι καὶ χρηστός σφόδρα.

Physiologus, Physiologus (redactio prima) Section 44b, line 1

Ἐν δὲ τῇ Ἰνδία ἦν ἡ παρούσα πῖνα φυτευτὴ ἐν τῷ βυθῷ τῆς θαλάσσης ὑστερουμένῳ <ω> γλυκαίων ὑδάτων· τὸ <ν> Δαιμάϊον μῆνα ὑδατοφορᾷ ἐν Ἰνδία, καὶ δεομένη ἡ πῖνα γλυκαίου ὕδατος, ἐξέρχεται ἄνω τῆς θαλάσσης, καὶ βροντᾷ καὶ <α>στράπτει καὶ βρέχει, καὶ ἡ πῖνα δέχεται τὴν βοὴν τῆς βροντῆς καὶ τὸ πῦρ <τὸ> φλογ<ίζον> τῆς ἀστραπῆς καὶ τὴν στάξιν τοῦ ὕδατος, εὐθὺς δὲ πάλιν πορεύεται εἰς τὰ ἴδια.

Physiologus, Physiologus (redactio prima) Section 46, line t

Περὶ λίθου ἰνδικοῦ.

Physiologus, Physiologus (redactio prima) Section 46, line 1

Ἔστι λίθος ἰνδικός, [ὀνόματι βατράχιος], τοιαύτην φύσιν ἔχων· ἐὰν ἄνθρωπος ὑδρωπικός τυγχάνῃ, οἱ τεχνῖται ἰατροὶ ζητοῦσι τὸν λίθον ἐκεῖ- νον, καὶ δεσμεύουσιν αὐτὸν τῷ ὑδρωπικῷ ὥρας τρεῖς, καὶ ὅλα τὰ ὕδατα συμπίνει τοῦ ὑδρωπικοῦ ὁ λίθος.

Physiologus, Physiologus (redactio prima) Section 46, line 14

Καλῶς οὖν ὁ Φυσιολόγος ἐλέξε περὶ τοῦ ἰνδικοῦ λίθου.

5.36 Cornelius Alexander Polyhistor

Lucius Cornelius Alexander Polyhistor (Ancient Greek: Ἀλέξανδρος ὁ Πολυῖστωρ; flourished in the first half of the 1st century B.C.; also called Alexander of Miletus) was a Greek scholar who was enslaved by the Romans during the Mithridatic War and taken to Rome as a tutor. After his release, he continued to live in Italy as a Roman citizen. He was so productive a writer that he earned the surname polyhistor. The majority of his writings are now lost, but the fragments that remain shed valuable light on antiquarian and eastern Mediterranean subjects.[1] Among his works were historical and geographical accounts of nearly all the countries of the ancient world,

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

and the book Upon the Jews (Ancient Greek: *Περὶ Ἰουδαίων*) which excerpted many works which might otherwise be unknown. (From Wikipedia³³)

Cornelius Alexander Polyhist., Fragmenta (0697: 003) “FHG 3”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 2, line 3

Agathias II, 25: *Πρώτοι μὲν γὰρ, ὧν ἀκοῇ ἴσμεν, Ἀσσύριοι λέγονται ἅπασαν τὴν Ἀσίαν χειρώσασθαι, πλὴν Ἰνδῶν τῶν ὑπὲρ Γάγγην ποταμὸν ἰδρυμένων.*

Cornelius Alexander Polyhist., Fragmenta Fragment t95-97, line 1

... Ἀλέξανδρος ἐν τῷ Περὶ Κύπρου· «Τὴν δὲ Γορδῖαν ἀποδοῦναι Χυ- τρείοις· καὶ πάλιν· «Εὐρυνόην τῶν Χυτρίων βασιλεὺς ἐγήμεν.» INΔ*¹KA.

Cornelius Alexander Polyhist., Fragmenta Fragment 95, line 6

Clemens Alex. Strom. III, 7: *Βραχυᾶναι γοῦν οὔτε ἐμψυχον ἐσθίου- σιν οὔτε οἶνον πίνου- σιν, ἀλλ' οἱ μὲν αὐτῶν καθ' ἐκά- στην ἡμέραν ὡς ἡμεῖς τὴν τροφὴν προσίενται· ἐνιοὶ δ' αὐτῶν διὰ τριῶν ἡμερῶν, ὡς φησιν Ἀλέξανδρος ὁ Πολυῖστωρ ἐν τοῖς Ἰνδικαῖς.*

Cornelius Alexander Polyhist., Fragmenta Fragment 96-97, line 1

Stephan. Byz.: <Τοπάζιος>, νῆσος Ἰνδική.

Cornelius Alexander Polyhist., Fragmenta Fragment 146, line 4

Idem IX, 61, de Pyrrhone: *Ἦκουσε Βρύσωνος τοῦ Στίλπωνος, ὡς Ἀλέξανδρος ἐν Διαδοχαῖς, εἶτ' Ἄνα- ξάρχῳ ξυνακολουθῶν πανταχοῦ, ὡς καὶ τοῖς Γυμνο- σοφισταῖς ἐν Ἰνδία συμμῖξαι καὶ τοῖς Μάγροις.*

5.37 Julius Pollux

Julius Pollux (*Ἰούλιος Πολυδεύκης*, Ioulios Poludeukes) (2nd century) was a Greek[1] or Egyptian[2] grammarian and sophist from Alexandria who taught at Athens, where he was appointed professor of rhetoric at the Academy by the emperor Commodus—on account of his melodious voice, according to Philostratus' *Lives of the Sophists*. Nothing of his rhetorical works has survived except some of their titles (in the *Suda*). Pollux was the author of the *Onomasticon*, a Greek thesaurus or dictionary of Attic synonyms and phrases, arranged not alphabetically but according to subject-matter, in ten books. It supplies in passing much rare and valuable information on many points of classical antiquity—objects in daily life, the theater, politics—and quotes numerous fragments of lost works. Pollux was probably the person satirized by Lucian as a worthless and ignorant person who gains

33. http://en.wikipedia.org/wiki/Cornelius_Alexander

5.37. JULIUS POLLUX

a reputation as an orator by sheer effrontery, and pilloried in his *Lexiphanes*, a satire upon the affectation of obscure and obsolete words. A first Latin translation, published at Venice in 1502, made Julius Pollux more available to Renaissance antiquaries and scholars, and anatomists, who adopted obscure Greek words for parts of the body. Julius Pollux was invaluable for William Smith's *Dictionary of Greek and Roman Antiquities*, 1842, etc. (From Wikipedia³⁴)

Julius Pollux Gramm., *Onomasticon* (0542: 001) "Pollucis onomasticon, 2 vols.", Ed. Bethe, E. Leipzig: Teubner, 9.1:1900; 9.2:1931, Repr. 1967; *Lexicographi Graeci* 9.1–9.2. Book 1, section 213, line 4

παρὰφυλακτέον δὲ ὅτι ὁ Ξενοφῶν (R Eq I 15) οἶεται τὸν ἵππον ἀστραγάλους ἔχειν, Ἀριστοτέλους (Hist An I p 499 20) τοῦ περὶ ταῦτα δεινοῦ φάσκοντος μηδὲν τῶν μωνύχων ἔχειν ἀστραγάλους, μηδὲ τὸν ὄνον, μόνον δὲ τὸν Ἰνδικόν, ὃ καὶ κέρας ἐκ τοῦ μετώπου ἐκπεφυκέναι λέγει.

Julius Pollux Gramm., *Onomasticon* Book 4, section 142, line 4

τὰ δ' ἐκ- σκευὰ πρόσωπα Ἀκταίων ἐστὶ κερασφόρος, ἢ Φινεύς τυφλός, ἢ Θάμυρις τὸν μὲν ἔχων γλαυκὸν ὀφθαλμὸν τὸν δὲ μέλανα, ἢ Ἄργος πολυόφθαλμος, ἢ Εὐίππη ἢ Χείρωνος ὑπαλλαττομένη εἰς ἵππον παρ' Εὐριπίδῃ, ἢ Τυρῶ πελιδνὴ τὰς παρειὰς παρὰ Σοφοκλεῖ – τοῦτο δ' ὑπὸ τῆς μητρυιᾶς Σιδηροῦς πληγαῖς πέπονθεν – ἢ Ἀχιλλεύς ἐπὶ Πατρόκλῳ ἄκομος, ἢ Ἀμυμώνη, ἢ ποταμὸς ἢ ὄρος, ἢ Γοργώ, ἢ Δίκη ἢ Θάνατος ἢ Ἐρινὺς ἢ Λύσσα ἢ Οἶστρος ἢ Ἰβρις, ἢ Κένταυρος ἢ Τιτάν ἢ Γίγας ἢ Ἰνδὸς ἢ Τρίτων, τάχα δὲ καὶ Πόλις καὶ †Πρίαμος καὶ Πειθὼ καὶ Μοῦσαι καὶ Ὀραι καὶ Μιθάκου Νύμφαι καὶ Πλειάδες καὶ Ἀπάτη καὶ Μέθη καὶ Ὀκνος καὶ Φθόνος.

Julius Pollux Gramm., *Onomasticon* Book 5, section 37, line 3

γενναῖαι κύνες Λάκαιναι, Ἀρκάδες, Ἀργολίδες, Λοκρίδες, Κελτικαί, Ἰβηρικαί, Καρῖναι, Κρήσσαι, Μολοττικαί, Ἑρετρικαί, Ἰρκα- ναί, Ἰνδικαί.

Julius Pollux Gramm., *Onomasticon* Book 5, section 38, line 4

Ἀριστοτέλης (Hist Anim VIII p 607 3) δὲ τὰς Ἰνδι- κὰς κυνὸς καὶ τίγριδος λέγει τρίτην γενεάν· τὰς γὰρ προτέρας δύο ζῶα γίνεσθαι θηριώδη.

Julius Pollux Gramm., *Onomasticon* Book 5, section 38, line 7

Νίκανδρος δ' ὁ Κολοφώνιος (frg 97 Schn) τοὺς Ἰνδικοὺς κύνας ἀπογόνους εἶναι φησι τῶν Ἀκταίωνος κυνῶν, αἱ μετὰ τὴν λύτταν σωφρονήσασαι, διαβᾶσαι τὸν Εὐφράτην ἐπλανή- θησαν εἰς Ἰνδοὺς· ὥσπερ καὶ τὰς Χαονίδας καὶ Μολοττίδας ἀπο- γόνους εἶναι φησι κυνὸς, ὃν Ἡφαιστος ἐκ χαλκοῦ Δημονησίου χαλκευσάμενος, ψυχὴν ἐνθείς, δῶρον ἔδωκε Διὶ κακχεῖνος Εὐρώπῃ, αὕτη δὲ Μίνω καὶ Μίνως Πρόκριδι καὶ Πρόκρις Κεφάλῳ.

Julius Pollux Gramm., *Onomasticon* Book 5, section 41, line 7

34. http://en.wikipedia.org/wiki/Julius_Pollux

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

οἱ δὲ κυναμολγοὶ κύνας εἰσὶ περὶ τὰ ἔλη τὰ μεσημβρινά, γάλα δὲ βοῶν ποιοῦνται τὴν τροφήν, καὶ τοὺς ἐπιόντας τοῦ θέρους τῷ ἔθνει βοῦς Ἰνδικούς καταγωνίζονται, ὡς ἱστορεῖ Κτησίας (frg 62 C. Müller).

Julius Pollux Gramm., Onomasticon Book 5, section 42, line 8

ἔνδοξος δὲ καὶ ὁ Ἑπειρωτικὸς Κέρβερος, καὶ ὁ Ἀλέξανδρου Περί- τας, τὸ θρέμμα τὸ Ἰνδικόν· ἐκράτει δ' οὗτος λέοντος, ἑκατὸν μυνῶν ἐωνημένος, καὶ ἀποθανόντι αὐτῷ πόλιν φησὶ Θεόπομπος (FHG I 334) Ἀλέξανδρον ἐποικίσαι.

Julius Pollux Gramm., Onomasticon Book 5, section 43, line 2

λέγουσι δὲ τοὺς γενναιοτέρους τῶν Ἰνδικῶν ἄλλο μὲν θηρίον ἀπαξιοῦν μεταθεῖν, λέοντι δ' ὡς ἀξιωμαχῶ προσαγωνίζεσθαι μόνῳ, ἔχεσθαι τ' ὁδᾶξ ἐμφύντας, ὥστε καὶ ἄλῳ τὸ θηρίον, πολλὰ πράγματα τοὺς κυνηγούς ἔχειν ὡς ἀποσπάσαι τοῦ θηρίου τοὺς κύνας.

Julius Pollux Gramm., Onomasticon Book 5, section 43, line 6

τὸν δ' Ἀλέξανδρον ἐπὶ πείρᾳ λαβόντα παρὰ Σωπεΐθους τοιοῦτους κύνας ἐν Ἰνδοῖς, πολλὰ θηρίων εἶδη παρα- βαλεῖν τινὶ τῶν κυνῶν· τὸν δ' ἐκταθέντα κατὰ γῆς ἀτρεμεῖν ὡς οὐδὲν πρὸς αὐτὸν οὔσαν τὴν θήραν τὴν ἄτιμον.

Julius Pollux Gramm., Onomasticon Book 7, section 75, line 1

καὶ μὴν καὶ τὰ βύσσινά, καὶ ἡ βύσσος λίνου τι εἶδος παρ' Ἰνδοῖς.

5.38 Thessalus of Tralles

Jump to: navigation, search

Thessalus of Tralles (fl. circa 70-95 AD) was a famous Roman physician and early adherent to the Methodic school of medicine.[1] He lived in Rome,[2] where he was the court physician of Emperor Nero. It was here that he died and was buried, and his tomb was to be seen on the Via Appia.[3]

He was from Tralles in Lydia. He was the son of a weaver, and followed the same employment himself in his youth.[3] This, however, he soon gave up, and, though he had a poor general education, he embraced the medical profession, by which he acquired for a time a great reputation, and amassed a large fortune. He adopted the principles of the Methodic school, but modified and developed them. He appears to have exalted himself at the expense to his predecessors;[2] asserting that none of them had contributed to the advance of medical science,[3] and boasting that he himself could teach the art of healing in six months. Galen frequently mentions him, but always in terms of contempt,[4] and is often abusive towards him.

5.38. THESSALUS OF TRALLES

He supported a method of treatment that he named metasyncrisis.[5] His object was, in obstinate chronic cases, where other remedies failed, to attempt a thorough change in the fundamental constitution of the organism (syncrisis). He began by the application, for three days, of strong vegetable remedies, both internally and externally, together with which, a strict regimen and emetics were applied. This was the preparation to a system of fasting, which concluded with a course of restoratives.[6]

Interestingly, Thessalus regarded the chicory plant to be an herb of the sun.[7] He wrote several medical works, of which only the titles and a few sentences remain.[6] (From Wikipedia³⁵)

Thessalus Astrol., Med., De virtutibus herbarum (e cod. Paris. gr. 2502 + Vindob. med. gr. 23) (1004: 001) “Thessalos von Tralles”, Ed. Friedrich, H.–V. Meisenheim am Glan: Hain, 1968; Beiträge zur klassischen Philologie 28. Book 1, chapter 12, section 3, line 7

δ', λυκίου Ἰνδικοῦ ἄρ.

Thessalus Astrol., Med., De virtutibus herbarum (e cod. Paris. gr. 2502 + Vindob. med. gr. 23) Book 1, chapter 12, section 4, line 5

ιβ', λυκίου <Ἰνδικοῦ> ἄρ.

Thessalus Astrol., Med., De virtutibus herbarum (e cod. Paris. gr. 2502 + Vindob. med. gr. 23) Book 2, chapter 6, section 8, line 3

λυκίου Ἰνδικοῦ ἄρ.

Thessalus Astrol., Med., De virtutibus herbarum (e cod. Monac. 542) (1004: 003) “Thessalos von Tralles”, Ed. Friedrich, H.–V. Meisenheim am Glan: Hain, 1968; Beiträge zur klassischen Philologie 28. Book 1, chapter 4, section 5, line 4

ς', νάρ- δου Ἰνδικῆς ἄρ.

Thessalus Astrol., Med., De virtutibus herbarum (e cod. Monac. 542) Book 1, chapter 9, section 3, line 3

ἐὰν δὲ μετὰ ῥοδίνου μίξης τὸν χυλὸν καὶ ἀλείψῃς σου τὰς ὀφείας, ἡδέως ὑπὸ πάντων θεάθησιν· ἐὰν δὲ μετὰ μέλιτος καὶ λυκίου Ἰνδικοῦ καὶ ὄξους δριμυντάτου καὶ τοῦ χυλοῦ δῶς γυναικὶ ἐπιχρίσασθαι, λαμπρυνεῖ τὰς ὀφείας καὶ τετανω- τέρας ποιήσῃ.

Thessalus Astrol., Med., De virtutibus herbarum (e cod. Monac. 542) Book 1, chapter 9, section 6, line 6

ιβ', λυκίου Ἰνδικοῦ ἄρ.

Thessalus Astrol., Med., De virtutibus herbarum (e cod. Monac. 542) Book 1, chapter 9, section 7, line 2

35. http://en.wikipedia.org/wiki/Thessalus_of_Tralles

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ἐὰν δὲ μετὰ μέλιτος καὶ λυκίου Ἰνδικοῦ καὶ τοῦ χυλοῦ ἴσον ἴσω μίξης καὶ τὸν καυλὸν τοῦ μορίου περιχρίσης, ἐτοιμότε- ρος ἔσῃ πρὸς συνουσίαν καὶ τῇ πλησιαζομένη ἡδονὴν ἀπεργά- σῃ.
Thessalus Astrol., Med., De virtutibus herbarum (e cod. Monac. 542) Book 1, chapter 11, section 4, line 5
β' [B], λυκίου Ἰνδικοῦ δρ.

5.39 Xenophon of Ephesus

arch

Xenophon of Ephesus (fl. 2nd century–3rd century CE?) was a Greek writer. His surviving work is the Ephesian Tale of Anthia and Habrocomes, one of the earliest novels as well as one of the sources for Shakespeare's Romeo and Juliet.

He is not to be confused with the earlier and more famous Athenian soldier and historian, Xenophon. (From Wikipedia³⁶)

Xenophon Scr. Erot., Ephesiaca (0641: 001) “Xénophon d’Éphèse. Les Éphésiaques ou le roman d’Habrocomès et d’Anthia”, Ed. Dalmeyda, G. Paris: Les Belles Lettres, 1926, Repr. 1962. Book 3, chapter 11, section 2, line 2

Ἔρχεται δὴ τις εἰς Ἀλεξάνδρειαν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς τῶν ἐκεῖ βασιλέων κατὰ θέαν τῆς πόλεως καὶ κατὰ χρεῖαν ἐμπορίας, Ψάμμης τὸ ὄνομα.

Xenophon Scr. Erot., Ephesiaca Book 4, chapter 1, section 5, line 2

Ἐνταῦθα ἔγνωσαν ληστεύειν· πολὺ γὰρ πλῆθος ἐμπόρων τὸ διδοεῦον ἦν τῶν τε ἐπ’ Αἰθιοπίαν καὶ τῶν ἐπὶ Ἰνδικὴν φοιτῶντων· ἦν δὲ αὐτοῖς καὶ τὸ ληστήριον ἀνθρώπων πεντακοσίων.

Xenophon Scr. Erot., Ephesiaca Book 4, chapter 3, section 3, line 5

Ἡ δὲ ὡς Ἀλεξάν- δρειαν παρελθοῦσα ἐγένετο ἐν Μέμφει, ἠύχετο τῇ Ἰσιδι σταῖσα πρὸ τοῦ ἱεροῦ «ὦ μεγίστη θεῶν, μέχρι μὲν νῦν ἀγνὴ μένω νομιζομένη σή, καὶ γάμον ἄχραντον Ἀβροκόμη τηρῶ· τοῦντεῦθεν δὲ ἐπὶ Ἰνδοὺς ἔρχομαι, μακρὰν μὲν τῆς Ἐφεσίων γῆς, μακρὰν δὲ τῶν Ἀβροκόμου λειψάνων.

5.40 Pausanias

36. http://en.wikipedia.org/wiki/Xenophon_of_Ephesus

5.41. PHILO MECH.

Pausanias (play /pɔːˈseɪniəs/; Ancient Greek: Παισανίας Pausanías) was a Greek traveler and geographer of the 2nd century AD, who lived in the times of Hadrian, Antoninus Pius and Marcus Aurelius. He is famous for his Description of Greece (Ἑλλάδος περιήγησις), a lengthy work that describes ancient Greece from firsthand observations, and is a crucial link between classical literature and modern archaeology. This is how Andrew Stewart assesses him:[1] (From Wikipedia³⁷)

Pausanias Attic., Ἀττικῶν ὀνομάτων συναγωγή (1569: 001) “Untersuchungen zu den attizistischen Lexika”, Ed. Erbse, H. Berlin: Akademie-Verlag, 1950; Abhandlungen der deutschen Akademie der Wissenschaften zu Berlin, Philosoph.-hist. Kl.. Alphabetic letter kappa, entry 25*, line 1

<Κερκίται>· ἔθνος Ἰνδικόν, ὃ χρῆται μικρῷ πηδαλίῳ τῷ καλουμένῳ κερκέτῃ· <οὔτος δὲ> μηχανήμα σιδηροῦν, ὃ ἐξαρτᾶται τῆς νέως, ὅταν ᾗ ἄνεμος, πρὸς τὸ ἀντέχειν <ὡς ὁ δελφίς>.

5.41 Philo Mech.

Right Philo? “” (From Wikipedia³⁸)

Philo Mech., Parasceuastica et poliorcetica (1599: 002) “Exzerpte aus Philons Mechanik B. VII und VIII”, Ed. Diels, H., Schramm, E. Berlin: Reimer, 1920; Abhandlungen der preussischen Akademie der Wissenschaften, Philosoph.-hist. Kl., no. 12. Thevenot page 89, line 43

(48) συμφέρει δὲ καὶ κηπία ἐν ταῖς ἰδίαις οἰκίαις καὶ ἐν ταῖς ἀκροπόλεσιν καὶ ἐν τε τοῖς <ἄλσεσι καὶ> τεμένεσι τῶν θεῶν κα- τασκευάζειν ὑγείας ἐνεκεν καὶ ἐὰν τις συμβαίνει πολιορκία· φυτευ- θεισῶν γὰρ συκεῶν καὶ φοινίκων, ἐὰν ἡ πόλις φέρῃ, καὶ σπαρείσῃ τῆς Ἰνδικῆς καὶ Ἑλληνικῆς κο- λοκύνθης καὶ ἄρων καὶ κράμβης καὶ θρίδακος καὶ τῶν ἄλλων λαχάνων οὐ μικρὰν παρέχεται ἐπικουρίαν.

5.42 Philostratus Major

“” (From Wikipedia³⁹)

Philostratus Major Soph., Imagines (1600: 001) “Philostrati maioris imagines”, Ed. Benndorf, O., Schenkl, K. Leipzig: Teubner, 1893. Book 1, chapter 28, section 5, line 7

37. <http://en.wikipedia.org/wiki/Pausanias>

38.

39.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

γράφει δὴ Λοκρίδας Λακαίνας Ἰνδικὰς Κρητικὰς, τὰς μὲν ἀγεράχους καὶ ὑλακτούσας,
** τὰς δὲ ἐννοούσας, αἱ δὲ μεθέπουσι καὶ σεσήρασι κατὰ τοῦ ἔχους.

Philostratus Major Soph., Images Book 1, chapter 29, section 1, line 2

ΠΕΡΣΕΥΣ

Ἄλλ' οὐκ Ἐρυθρά γε αὕτη θάλασσα οὐδ' Ἰνδοὶ ταῦτα, Αἰθίοπες δὲ καὶ ἀνὴρ Ἕλλην ἐν
Αἰθιο- πία.

Philostratus Major Soph., Images Book 2, chapter 12, section t, line 1

ταῦτα αἱ Νύμφαι πανσυδί, σὺ δὲ κατὰ δῆ- μους αὐτὰς ὄρα· τὰ μὲν γὰρ τῶν Ναϊδῶν εἶδη
– ἐξάνι- δας ἀπορραίνουσιν αὐταὶ τῆς κόμης – ὁ δὲ περὶ ταῖς Βουκόλοις αὐχμὸς οὐδὲν φαυλότερος
τῆς δρόσου, αἱ δὲ Ἀνθοῦσαι τὰς χαίτας ἐκπεφύκασιν ὑακινθίνους ὁμοίως ἄνθεσιν. ΠΙΝΔ*ΑΡΟΣ

Οἶμαι θαυμά σοι εἶναι τὰς μελίττας οὕτω γλίσχρους γεγραμμένας, ὧν γε καὶ προνομαία
δῆλη καὶ πόδες καὶ πτερὰ καὶ τὸ χρῶμα τῆς στολῆς οὐκ ἀτακτοῦσιν, ἴσα τῇ φύσει διαποικι-
λούσης αὐτὰ τῆς γραφῆς.

5.43 Pseudo-Dioscorides

“” (From Wikipedia⁴⁰)

Date for pseudographia?

Pseudo-Dioscorides Med., De lapidibus (1118: 003) “Les lapidaires de l’antiquité et
du Moyen Age, vol. 2.1”, Ed. Ruelle, C.É. Paris: Leroux, 1898. Section 1, line 3

ΠΕΡΙ ΛΙΘΩΝ

<Λιθάργυρος>· Ἀγαρηνοὶ <μάρτικ>· ἡ μὲν ἐκ μολιβδίτιδος ἄμμου γεννᾶται χωνευομένη
ἄχρι τελείας ἐκπυρώσεως, ἡ δὲ ἐξ ἀργύρου, εἴτε ἐκ μολίβδου· γίνεται δὲ ἐν Ἀττικῇ καὶ Ἰνδία
καὶ Σικελία καὶ Ἰσπανία.

Pseudo-Dioscorides Med., De lapidibus Section 14, line 1

<Λίθος ἱερακίτης> καὶ ἰνδικὸς περιεπτόμενος μηρῷ δεξιῷ τὰς αἰμορροΐδας ἀναξηραίνου-
σιν, ὥς καὶ ἡμεῖς ἐπειράθημεν· ὁ δὲ Διογένης ἐν τῷ περὶ λίθων οὕτω φησίν· Ἱερακίτης λίθος
ὑπόχλωρος μὲν ἐστὶ καὶ πρὸς τὸ μέλαν ἐπικλίνει· δύναμιν δὲ ἔχει ἀναξηραντικὴν αἰμορροΐδων.

Pseudo-Dioscorides Med., De lapidibus Section 15, line 1

<Λίθος ἰνδικός> τὴν μὲν χροῖαν ἐστὶν ὑπόπυρρος· τριβόμενος δὲ πορφυροῦν ἀνίησι χυλόν· καὶ
μετ' ἀκράτου οἴνου πινόμενος αἰμοσπτυϊκοὺς ὠφελεῖ· καὶ αἱμορ- ροΐδας ἀναξηραίνει.

5.44 Evagrius Scholasticus

40.

5.44. EVAGRIUS SCHOLASTICUS

Evagrius Scholasticus (Greek: Εὐάγριος Σχολαστικός) was a Syrian scholar and intellectual living in the 6th century AD, and an aide to the patriarch Gregory of Antioch.[1] His surviving work, *Ecclesiastical History*, comprises a six-volume collection concerning the Church's history from the First Council of Ephesus (431) to Maurice's reign during his life.

Evagrius's only surviving work, *Ecclesiastical History*, addresses the history of the Eastern Roman Empire from the official beginning of the Nestorian controversy at the First Council of Ephesus in 431 to the time in which he was writing, 593. The book's contents focus mainly on religious matters, describing the events surrounding notable bishops and holy men.

The editio princeps was published in 1544 under the name of Robertus Stephanus (better known as Robert Estienne). John Christopherson, bishop of Chichester, made a Latin translation of the *Ecclesiastical History*, which was published after his death in 1570. Translations into English appeared much later: the first was by Edward Walford, which was published at London in 1846; Michael Whitby's translation was published in 2001 by Liverpool University Press as part of their "Texts in Translation Series."

Some historians, particularly Pauline Allen, allege that Evagrius's Chalcedonian theological stance directly influenced his selection of information, in order to defend Chalcedonian-aligned political agents against negative reputation.[10] Whitby, however, emphasizes the legal scholar's acceptance and inclusion of information written by other historians who adopted opposing stances, when he discerned that their accounts were reliable.[11] For example, Evagrius Scholasticus relies heavily on Zachariah's textual study of history even though he was a monophysite, occasionally omitting minor facets of his work that explicitly promote his theology, but largely considering him to be dependable. Allen also reasons that Evagrius built on Zachariah's work because his was the only comprehensive historical account of events taking place from Theodoret of Cyrus's time till his own era. Unfortunately, however, Zachariah's original manuscripts have been lost.[12]

Evagrius is much less critical of the Emperor Justinian and his wife Theodora, in comparison with Procopius, who described the two as physically manifest demons. Because of regional affiliations Evagrius depicts the emperor in a more sympathetic light, praising his moderate approach to justice and his restraint towards excessive persecution, yet still decrying his heresy and displays of wealth. Evagrius's ambivalence to Justinian is especially evident when he describes him as a virtuous man yet blind to impending defeat

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

in his self-initiated war with Persia.[13] Chesnut also comments on how the Roman historian and scholar endues his “Ecclesiastical History” with a dramatic style, using themes from classical Greek tragedies to characterize Justinian’s life, particularly Fortune’s grand fluctuations.[14]

Evagrius builds upon the documents written by Zachariah, Symeon Stylites the Elder, Eustathius of Epiphania, John Malalas, Zosimus, and Procopius of Caesarea.[15]

“The Ecclesiastical History” is considered an important and relatively authoritative account of the timeline it traces, since Evagrius draws on other scholars’ material, explicitly acknowledging his sources. He meticulously organizes information taken from other written historical works in order to validate his account more effectively than other theological scholars of his time, thus diminishing confusion for future historian’s interested in studying his work.[16] However, historians acknowledge that there are serious logical errors inherent in Evagrius’s surviving work, which is common for its epoch, namely the problematic chronological sequencing and skimming over of undeniably notable events such as major wars and other secular events. When the scholar mentions important occasions in his own life, lack of chronological labeling is especially evident - which can provide complications to those analyzing his book.[17] (From Wikipedia⁴¹)

Evagrius Scholasticus Scr. Eccl., *Historia ecclesiastica* (2733: 001) “The ecclesiastical history of Evagrius with the scholia”, Ed. Bidez, J., Parmentier, L. London: Methuen, 1898, Repr. 1979. Page 135, line 10

Καὶ ὁ ἕτερος δὲ Λογγίνος τὸ πολὺ τῆς τυραννίδος συνέχων, ὁ ἐπὶ κλην Σελινούντιος, καὶ Ἰνδῆς σὺν αὐτῷ, πρὸς Ἰωάννου τοῦ ἐπὶ κλην Κυρτοῦ στέλλονται τῷ Ἀναστασίῳ ζωγρίαι· ὁ μάλιστα τὸν τε βασιλέα τοὺς τε Βυζαντίους τεθεράπευκε, θριάμβου δίκην ἀνὰ τὰς λεωφόρους τῆς πόλεως ἀνὰ τε τὴν ἵπποδρομίαν Λογγίνου τε καὶ Ἰνδοῦ περιενεχθέντων, καὶ τῶν ἐκ σιδήρου πεποιημένων ἀλύσεων ἀνὰ τοὺς αὐ- χένας καὶ τὰς χεῖρας περιβεβλημένων.

Evagrius Scholasticus Scr. Eccl., *Historia ecclesiastica* Page 222, line 15

Ἡ δέ γε ἀμπεχόνην χρυσόπαστον, ἀλουργίδι καὶ λίθοις Ἰνδῶν κεκοσμημένην, στεφάνους τε χρυσῷ πολλῷ καὶ ταῖς ἐκ λίθων ποικιλίαις τε καὶ διαυγείαις τιμαλφεστάτους, ἅ- παντὰς τε τοὺς ἐν ἀξιώσεσι περὶ τὴν αὐλήν καὶ στρατείας ἐναριθμούς, κηρούς τε γαμηλίους ἐξάπτον- τας μεγαλο- πρεπῶς τε ἐσταλμένους καὶ ἐξ ὧν γνωρίζοιντο, καὶ τὴν νυμφαγωγὸν πανηγυρὶν ἀννυμνοῦντας· ὥστε τῆς πομπῆς ἐκείνης μὴδὲν τῶν ἐν ἀνθρώποις σεμνοπρεπέστερον ἢ εὐδαιμονέ- στερον γενέσθαι πῶποτε.

41. http://en.wikipedia.org/wiki/Evagrius_Scholasticus

5.45 Porphyrius

Porphyry of Tyre (Greek: Πορφύριος, Porphyrios, AD 234–c. 305) was a Neoplatonic philosopher who was born in Tyre.[1] He edited and published the *Enneads*, the only collection of the work of his teacher Plotinus. He also wrote many works himself on a wide variety of topics.[2] His *Isagoge*, or *Introduction*, is an introduction to logic and philosophy,[3] and in Latin translation it was the standard textbook on logic throughout the Middle Ages.[4] In addition, through several of his works, most notably *Philosophy from Oracles* and *Against the Christians*, he was involved in a controversy with a number of early Christians,[5] and his commentary on Euclid's *Elements* was used as a source by Pappus of Alexandria.[6] (From Wikipedia⁴²)

Porphyrius Phil., *Vita Plotini* (2034: 001) “Plotini opera, vol. 1”, Ed. Henry, P., Schwyzer, H.–R. Leiden: Brill, 1951.

Porphyrius Phil., *Vita Plotini* Section 3, line 17

Καὶ ἀπ’ ἐκεῖ- νης τῆς ἡμέρας συνεχῶς τῷ Ἀμμωνίῳ παραμένοντα τοσαύ- την ἔξιν ἐν φιλοσοφίᾳ κτήσασθαι, ὡς καὶ τῆς παρὰ τοῖς Πέρσαις ἐπιτηδευομένης πείραν λαβεῖν σπεῦσαι καὶ τῆς παρ’ Ἰνδοῖς κατορθουμένης.

Porphyrius Phil., *De abstinence* (2034: 003) “Porphyrii philosophi Platonici opuscula selecta, 2nd edn.”, Ed. Nauck, A. Leipzig: Teubner, 1886, Repr. 1963. Book 3, section 3, line 18

οὐδὲ γὰρ τῆς Ἰνδῶν οἱ Ἕλληνες οὐδὲ τῆς Σκυθῶν ἢ Θρακῶν ἢ Σύρων οἱ ἐν τῇ Ἀττικῇ τραφέντες· ἀλλ’ ἴσα κλαγγῇ γεράνων ὁ τῶν ἐτέρων τοῖς ἐτέροις ἦχος προσπίπτει.

Porphyrius Phil., *De abstinence* Book 3, section 4, line 28

ἢ δ’ Ἰνδικὴ ὕαινα, ἣν κοροκότταν οἱ ἐπιχώ- ριοι καλοῦσι, καὶ ἄνευ διδασκάλου οὕτω φθέγγεται ἀνθρωπικῶς, ὡς καὶ ἐπιφοιτᾶν ταῖς οἰκίαις καὶ καλεῖν ὃν <ἄν> ἴδῃ εὐχέριωτον αὐτῇ, καὶ μιμεῖται γε τοῦ φιλ- τάτου καὶ ᾧ ἂν πάντως ὑπακούσειεν ὁ κληθεὶς τὸ φθέγμα· ὡς καί περ εἰδότες τοὺς Ἰνδοὺς διὰ τῆς ὁμοιό- τητος ἐξαπατᾶσθαι καὶ ἀναλίσκεσθαι ἐξιόντας τε καὶ πρὸς τὸ φθέγμα ὑπακούοντας.

Porphyrius Phil., *De abstinence* Book 4, section 17, line 1

ἀλλ’ οὗτοι μὲν δίκας καὶ παρὰ θεοῖς καὶ παρ’ ἀνθρώποις ὧν ἀμαρτάνουσιν ἐκτίνοντες αὐτῇ πρῶτον τῇ τοιαύτῃ διαθέσει ἱκανὴν τιμωρίαν διδῶσιν· ἡμεῖς δ’ ἔτι τῶν ἀλλοφύλων ἐθνῶν ἐνὸς μνημονεύσαντες ἐνδόξου τε καὶ δικαίου περὶ τε τὰ θεῖα πεπιστευμένου εὐσεβοῦς, ἐπ’ ἄλλα

42. [http://en.wikipedia.org/wiki/Porphyry_\(philosopher\)](http://en.wikipedia.org/wiki/Porphyry_(philosopher))

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

μεταβησόμεθα. Ἰνδῶν γὰρ τῆς πολιτείας εἰς πολλὰ νενεμημένης, ἔστι τι γένος παρ' αὐτοῖς τὸ τῶν θεοσόφων, οὓς γυμνοσοφιστὰς καλεῖν εἰώθασιν Ἕλληνες.

Porphyrus Phil., De abstinentia Book 4, section 17, line 12

ἔχει δὲ τὰ κατ' αὐτοὺς τοῦτον τὸν τρόπον, ὡς Βαρδῆσάνης ἀνὴρ Βαβυλώνιος ἐπὶ τῶν πατέρων ἡμῶν γεγονώς καὶ ἐντυχὼν τοῖς περὶ Δάνδαμιν πεπεμμένοις Ἰνδοῖς πρὸς τὸν Καίσαρα ἀνέγραψεν.

Porphyrus Phil., De abstinentia Book 4, section 17, line 16

πάντες γὰρ Βραχμᾶνες ἐνός εἰσι γένους· ἐξ ἐνός γὰρ πατρός καὶ μιᾶς μητρός πάντες κατὰγονσιν· Σαμαναῖοι δὲ οὐκ εἰσὶ τοῦ αὐτοῦ γένους, ἀλλ' ἐκ παντὸς τοῦ τῶν Ἰνδῶν ἔθνους, ὡς ἔφαμεν, συνειλεγμένοι· οὔτε δὲ βασιλεύεται Βραχμᾶν οὔτε συντελεῖ τι τοῖς ἄλλοις.

Porphyrus Phil., In Platonis Timaeum commentaria (fragmenta) (2034: 009) “Porphyrus in Platonis Timaeum commentariorum fragmenta”, Ed. Sodano, A.R. Naples: n.p., 1964. Book 2, fragment 28, line 22

δαίοις ἢ εὐχὴ μάλιστα προσήκει, διότι συναφὴ πρὸς τὸ θεῖον ἐστὶ, τῷ δὲ ὁμοίῳ τὸ ὅμοιον συνάπτεσθαι φιλεῖ, τοῖς δὲ θεοῖς ὁ σπουδαῖος ὁμοιότατος, καὶ διότι ἐν <φρουρᾷ> ὄντες οἱ τῆς ἀρετῆς ἀντεχόμενοι καὶ ὑπὸ τοῦ σώματος ὡς δεσμωτηρίου συνειλημμένοι δεῖσθαι τῶν θεῶν ὀφείλουσι περὶ τῆς ἐντεῦθεν μεταστάσεως, καὶ ὅτι ὡς παῖδας πατέρων ἀποσπασθέντας εὐχεσθαι προσήκει περὶ τῆς πρὸς τοὺς ἀληθινούς ἡμῶν πατέρας, τοὺς θεούς, ἐπανόδου, καὶ ὅτι ἀπάτορες τινες ἄρα καὶ ἀμήτορες εἰκόασιν εἶναι οἱ μὴ ἀξιοῦντες εὐχεσθαι μηδὲ ἐπιστρέφειν εἰς τοὺς κρείττους, καὶ ὅτι καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν οἱ σοφία διανεγκόντες περὶ εὐχᾶς ἐσπούδασαν, Ἰνδῶν μὲν Βραχμᾶνες, Μάγοι δὲ Περσῶν, Ἑλλήνων δὲ οἱ θεολογικώτατοι, οἱ καὶ τελετὰς κατεστήσαντο καὶ μυστήρια· Χαλδαῖοι δὲ καὶ τὸ ἄλλο θεῖον ἐθεράπευσαν καὶ αὐτὴν τὴν ἀρετὴν τῶν θεῶν θεὸν εἰπόντες ἐσέφθησαν, πολλοὺ δέοντες διὰ τὴν ἀρετὴν ὑπερφρονεῖν τῆς ἱερᾶς θρησκείας· καὶ ἐπὶ πᾶσι τούτοις, ὅτι μέρος ὄντας τοῦ παντός δεῖσθαι προσήκει τοῦ παντός· παντὶ γὰρ ἢ πρὸς τὸ ὅλον ἐπιστροφὴ παρέχεται τὴν σωτηρίαν· εἴτε οὖν ἀρετὴν ἔχεις, παρακλητέον σοι τὸ τὴν ὅλην ἀρετὴν προειληφός· τὸ γὰρ πᾶν ἀγαθὸν αἰτίον ἐστὶ καὶ σοὶ τοῦ ἀγαθοῦ τοῦ σοὶ προσήκοντος· εἴτε σωματικόν τι ζητεῖς ἀγαθόν, ἐστὶν ἢ παντὸς σώματος ἐν τῷ κόσμῳ

συ-

Porphyrus Phil., Quaestionum Homericarum ad Iliadem pertinentium reliquiae (2034: 014) “Porphyrus quaestionum Homericarum ad Iliadem pertinentium reliquiae, fasc. 1 & 2”, Ed. Schrader, H. Leipzig: Teubner, 1:1880; 2:1882. Iliad book 1, section 340, line 11

αὐτὸς δὲ ὁ βασιλεὺς οὐ μεταπέμπεται Νέστορα σκοπούμενον περὶ τῶν συμφερόντων ἀλλ' αὐτὸς ἅπεισιν· <ἦδε δὲ οἱ κατὰ θυμὸν ἀρίστη φαίνεται βουλή, Νέστορ' ἐπὶ πρῶτον Νηληϊὸν ἐλθέμεν ἀνδρῶν> (K 17). παρ' Ἰνδοῖς τε τοὺς Βραχμᾶνας, οἵπερ εἰσὶ παρ' αὐτοῖς οἱ φιλόσοφοι, λόγος τοὺς βασιλεῖς ἀπαντῶντας προσκυνεῖν.

5.46. HARPOCRATION

5.46 Harpocraton

Valerius Harpocraton (Ancient Greek: Οὐαλέριος or Βαλέριος Ἀρποκρατίων) was a Greek grammarian of Alexandria, probably working in the 2nd century CE. He is possibly the Harpocraton mentioned by Julius Capitolinus (Life of Verus, 2) as the Greek tutor of Lucius Verus (2nd century AD); some authorities place him much later, on the ground that he borrowed from Athenaeus. His Lexicon of the Ten Orators, which has come down to us in an incomplete form, contains, in more or less alphabetical order, notes on well-known events and persons mentioned by the orators, and explanations of legal and commercial expressions. As nearly all the lexicons to the Greek orators have been lost, Harpocraton's work is especially valuable. Amongst his authorities were the writers of Atthides (histories of Attica), the grammarian Didymus Chalcenterus, Dionysius of Halicarnassus, and the lexicographer Dionysius, son of Tryphon. The book also contains contributions to the history of Attic oratory and Greek literature generally. His Collection of Florid Expressions, a sort of anthology or chrestomathy attributed to him by the Suda, is lost, but elements of it survive in later lexica. A series of articles in the margin of a Cambridge manuscript of the Lexicon forms the basis of the Lexicon rhetoricum Cantabrigiense by Peter Paul Dobree. (From Wikipedia⁴³)

Harpocraton Gramm., Lexicon in decem oratores Atticos (1389: 001)
“Harpocratonis lexicon in decem oratores Atticos, vol. 1”, Ed. Dindorf, W. Oxford: Oxford University Press, 1853, Repr. 1969. Page 103, line 9

εἴη δ' ἂν σκευδός τι πρὸς τὸ κρατῆρας ἢ λέβητας ἢ τι τούτων οὐκ ἀλλότριον ἐπικεῖσθαι ἐπιτήδειον, ὥς Καλλιζενός τε ἐν δ' περὶ Ἀλεξανδρείας ὑποσημαίνει καὶ Δαῖμαχος ὁ Πλαταιεύς ἐν β' περὶ Ἰνδικῆς.

5.47 Alexander of Aphrodisias

Check this is the right Alexander

Alexander of Aphrodisias (Ancient Greek: Ἀλέξανδρος ὁ Ἀφροδισιεύς; fl. 200 AD) was a Peripatetic philosopher and the most celebrated of the Ancient

43. <http://en.wikipedia.org/wiki/Harpocraton>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Greek commentators on the writings of Aristotle. He was a native of Aphrodisias in Caria, and lived and taught in Athens at the beginning of the 3rd century, where he held a position as head of the Peripatetic school. He wrote many commentaries on the works of Aristotle, and still extant are those on the Prior Analytics, Topics, Meteorology, Sense and Sensibilia, and Metaphysics. Several original treatises also survive, and include a work On Fate, in which he argues against the Stoic doctrine of necessity; and one On the Soul. His commentaries on Aristotle were considered so useful that he was styled, by way of pre-eminence, "the commentator" (ὁ ἐξηγητής). (From Wikipedia⁴⁴)

Alexander Phil., Problemata (lib. 1–2) [Sp.] (0732: 002) "Physici et medici Graeci minores, vol. 1", Ed. Ideler, J.L. Berlin: Reimer, 1841, Repr. 1963. Book 2, section 60, line 40

ὁμοίως δὲ καὶ ἐπὶ τῶν πέντε αἰσθήσεων εὐρίσκομεν ἐπὶ τινῶν μίαν μᾶλλον ἐπιτεταμένην· οἷον ἐν κυνὶ μὲν τὴν ὀσφρητικὴν· ἐν δὲ ἀετῷ τὴν ὀπτικὴν, ἐν δὲ τῷ λεγομένῳ πρωτογένεστῃ Ἰνδικῷ ζῳῷ ὄντι τὴν γευστικὴν, ἐν δὲ ὄφεσι καὶ τισιν ὀρνέοις τὴν ἀπτικὴν· κατὰ δὲ τοὺς χήνας τὴν ἀκουστικὴν.

Alexander Phil., In Aristotelis metaphysica commentaria (0732: 004) "Alexandri Aphrodisiensis in Aristotelis metaphysica commentaria", Ed. Hayduck, M. Berlin: Reimer, 1891; Commentaria in Aristotelem Graeca 1. Page 379, line 31

πλείω γὰρ οὗτοι ταῦτα πάθη ἔχουσιν ὥς ἐπὶ τὸ πλεῖστον τῶν καθ' ἃ διαφέρουσιν ἀλλήλων, οἷον Γερμανὸς Γερμανῷ καὶ Ἰνδὸς Ἰνδῷ.

Alexander Phil., In Aristotelis metaphysica commentaria Page 697, line 9

καὶ διὰ τοῦτο, φησί, καὶ τὴν αἴσθησιν καὶ τὴν ἐγγήγορσιν καὶ τὴν νόησιν ἡδιστα φαμεν, ὅτι ἐνέργειαι τινες οὔσαι ἰνδάλματά τινα καὶ σκιαί εἰσιν τῆς ἥν ἐνεργοῦμεν ἐνεργείας καὶ ἥν ζῶμεν ζῶν, ὅταν ὁ ἡμέτερος νοῦς γένηται πως τὰ νοητά.

Alexander Phil., In Aristotelis meteorologicorum libros commentaria (0732: 008) "Alexandri Aphrodisiensis in Aristotelis meteorologicorum libros commentaria", Ed. Hayduck, M. Berlin: Reimer, 1899; Commentaria in Aristotelem Graeca 3.2. Page 57, line 15

ῥεῖν δὲ φησι καὶ τὸν Ἰνδὸν ἐξ αὐτοῦ, μέγιστον ὄντα ποταμὸν ἀπάντων.

Alexander Phil., In Aristotelis meteorologicorum libros commentaria Page 105, line 20

τὸ γὰρ ἀπὸ Ἡρακλείων στηλῶν μέχρι τῆς Ἰνδικῆς, ὃ ἐστὶ κατὰ μῆκος καὶ γνωρίμως πᾶν οἰκούμενον (εἰσὶ δὲ αἱ μὲν Ἡράκλειαι στῆλαι πρὸς δυσμαῖς, ἡ δ' Ἰνδικὴ πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς) τοῦ ἐξ Αἰθιοπίας, ἡ ἐστὶν ἐσχάτη οἰκουμένη πρὸς τῷ θερινῷ τροπικῷ καὶ τῇ μεσημβρίᾳ, πρὸς

44. http://en.wikipedia.org/wiki/Alexander_of_Aphrodisias

5.48. PSEUDO-SOSTHENES

τὴν Μαιῶτιν καὶ τοὺς ἐσχάτους τῆς Σκυθίας τό- πους, οἳ εἰσι πρὸς τῇ ἄρκτῳ, ἐγγυὲς διπλάσιόν ἐστιν· οὕτως γὰρ ἔχειν φησὶν αὐτὰ πρὸς ἄλληλα μεγέθους, ὥς πέντε πρὸς τρία, τοῦ τε πλοῦ καὶ τῶν ὁδῶν συναριθμουμένων τε καὶ συντιθεμένων.

Alexander Phil., In Aristotelis meteorologicorum libros commentaria Page 105, line 29

καίτοι τὸ μὲν ἐπὶ πλά- τος πᾶν τὸ οἰκούμενον εἴληπται μέχρι τῶν ἀοικήτων ἐφ' ἑκάτερα προδή- λως, τὰ δ' ἐφ' ἑκάτερα τῶν κατὰ τὸ μῆκος οἰκουμένων ἐπὶ τε Ἡρακλείας στήλας καὶ ἐπὶ τὴν Ἰνδικὴν τῷ ὑπὸ θαλάσσης διαλαμβάνεσθαι, οὐ τῷ ἀοίκητα εἶναι οὐ φαίνεται συνείροντα, ὥς πᾶσαν ἐν κύκλῳ φαίνεσθαι περιρικουμένην.

Alexander Phil., Problemata (lib. 3–4) [Sp.] (0732: 017) “Alexandri Aphrodisiensis quae feruntur problematorum liber iii et iiiii”, Ed. Usener, H., 1859; Programm Gymnasium Joachimsthal. Book 3, section 2, line 5

Τὸ δὲ σάκχαρον παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς οὕτω λεγόμενον μέλιτός ἐστι πῆξις, τοῦ ἡλίου τὴν ἐν τῷ αἰέρι δρόσον πηγνύοντος ἐπὶ τὸ γλυκύ, ὥσπερ καὶ ἐν τῷ ὄρει τῷ Λιβάνῳ καλουμένῳ γίγνεται τοιοῦτον· ἐστὶ δὲ ὅμοιον χόνδρῳ ἁλάτος, λευκὸν εὐθρυπτον γλυκύ.

5.48 Pseudo-Sosthenes

Sosthenes (Greek, “safe in strength”) was the chief ruler of the synagogue at Corinth, who, according to the New Testament, was seized and beaten by the mob in the presence of Gallio, the Roman governor, when he refused to proceed against Paul at the instigation of the Jews (Acts 18:12-17). The motives of this assault against Sosthenes (an assault made by the Greeks according to Acts 18:17) are not recorded.

Some identify him with one whom Paul calls “Sosthenes our brother,” a convert to the faith and co-author of the First Epistle to the Corinthians (1 Corinthians 1:1-2). It is not clear whether this identification is tenable. It has also been alleged that Sosthenes is a later name of Crispus, who is mentioned in Acts 18:8 and 1 Corinthians 1:14. [1]

He is listed among the Seventy Disciples. (From Wikipedia⁴⁵)

[Sosthenes] Hist., Fragmenta (2568: 002) “FHG 4”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1851. Fragment 1, line 9

45. <http://en.wikipedia.org/wiki/Sosthenes>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Ζεὺς δὲ ἐρωτικὴν ἐπιθυμίαν ἐκ Λύκτου, πό- λεως Κρητικῆς, Ἀργὴν νύμφην ἀρπάσας, ἀπὴ- νεγκεν εἰς ὄρος τῆς Αἰγύπτου, Ἀργίλλον καλούμενον· καὶ ἐγέννη- σεν ἐξ αὐτῆς υἱόν, καλούμενον Διόνυσον· ὃς ἀκμάσας εἰς τιμὴν τῆς μητρὸς τὸν λόφον Ἀργίλλον μετωνόμασε· στρατολογήσας δὲ Πᾶνας καὶ Σατύρους, ἰδίοις σκή- πτροις Ἰνδοὺς ὑπέταξε· νικήσας δὲ καὶ Ἰβηρίαν, Πᾶνα κατέλιπεν ἐπιμελητὴν τῶν τόπων· ὃς τὴν χώραν ἀπ’ αὐτοῦ Πανίαν μετωνόμασεν· ἣν οἱ μετα- γενέστεροι πα- ραλώγως Σπανίαν προσηγόρευσαν· καθὼς ἱστορεῖ Σω- σθένης ἐν ἰγ’ Ἰβηρικῶν.

5.49 Dionysius Halicarnassensis

Dionysius of Halicarnassus (Ancient Greek: Διονύσιος Ἀλεξάνδρου Ἀλικαρνασσεύς, Dionysios son of Aléxandros, of Halikarnassós, c. 60 BC–after 7 BC) was a Greek historian and teacher of rhetoric, who flourished during the reign of Caesar Augustus. His literary style was Atticistic — imitating Classical Attic Greek in its prime.

His great work, entitled *Ῥωμαϊκὴ Ἀρχαιολογία* (Rhōmaikē archaiologia, Roman Antiquities), embraced the history of Rome from the mythical period to the beginning of the First Punic War. It was divided into twenty books, of which the first nine remain entire, the tenth and eleventh are nearly complete, and the remaining books exist in fragments in the excerpts of Constantine Porphyrogenitus and an epitome discovered by Angelo Mai in a Milan manuscript. The first three books of Appian, and Plutarch’s *Life of Camillus* also embody much of Dionysius.

His chief object was to reconcile the Greeks to the rule of Rome, by dilating upon the good qualities of their conquerors and also by arguing, using more ancient sources, that the Romans were genuine descendants (book 1,11) of the older Greeks.[2] According to him, history is philosophy teaching by examples, and this idea he has carried out from the point of view of the Greek rhetorician. But he has carefully consulted the best authorities, and his work and that of Livy are the only connected and detailed extant accounts of early Roman history. (From Wikipedia⁴⁶)

Dionysius Halicarnassensis Hist., Rhet., *Antiquitates Romanae* (0081: 001) “Dionysii Halicarnasei antiquitatum Romanarum quae supersunt, 4 vols.”, Ed. Jacoby, K. Leipzig:

46. http://en.wikipedia.org/wiki/Dionysius_Halicarnassensis

5.50. APOLLONIUS PHIL.

Teubner, 1:1885; 2:1888; 3:1891; 4:1905, Repr. 1967. Book 7, chapter 70, section 4, line 6

μάλιστα δὲ τοῦτο πεπόνθασιν οἱ βάρβαροι διὰ πολλὰς αἰτίας, ἃς οὐ καιρὸς ἐν τῷ παρόντι λέγειν, καὶ χρόνος οὐθεὶς μέχρι τοῦ παρόντος ἀπομαθεῖν ἢ παρανομήσαι τι περὶ τοὺς ὀργισμοὺς τῶν θεῶν ἔπεισεν οὔτ' Αἰγυπτίους οὔτε Λίβυας οὔτε Κελτοὺς οὔτε Σκύθας οὔτ' Ἰνδοὺς οὔτ' ἄλλο βάρβαρον ἔθνος οὐδὲν ἀπλῶς· εἰ μὴ τινες ὑφ' ἐτέρων ἐξουσία ποτὲ γενόμενοι τὰ τῶν κρατησάντων ἡναγκάσθησαν ἐπιτηδεύματα μεταλαβεῖν.

Dionysius Halicarnassensis Hist., Rhet., Antiquitates Romanae Book 20, chapter 12, section 3, line 6

Vales. Ambr. Ἀναβάντων δὲ τῶν σὺν τῷ Πύρρῳ μετὰ τῶν ἐλεφάντων αἰσθήσιν οἱ Ῥωμαῖοι λαβόντες σκυμνίον ἐλέφαντος τιτρώσκουσιν, ὃ πολλὴν ἀκοσμίαν τοῖς Ἑλλησιν ἐνεποίησε καὶ φυγὴν· οἱ δὲ Ῥωμαῖοι δύο μὲν ἐλεφάντας ἀποκτείνουσιν, ὁκτῶ δὲ κατακλείσαντες εἰς χωρίον ἀνέξοδον παραδόντων τῶν ἐπ' αὐτοῖς Ἰνδῶν ζῶντας παραλαμβάνουσι, τῶν δὲ στρατιωτῶν πολὺν φόνον ἐργάζονται.

5.50 Apollonius Phil.

See Philostratus' *Life of Apollonius*.⁴⁷

Apollonius of Tyana (Ancient Greek: Ἀπολλώνιος ὁ Τυανεύς; ca. 15?–ca. 100? CE[2]) was a Greek Neopythagorean philosopher from the town of Tyana in the Roman province of Cappadocia in Asia Minor. Little is known about him with certainty. Being a 1st-century orator and philosopher around the time of Christ, he was compared with Jesus of Nazareth by Christians in the 4th century[3] and by various popular writers in modern times.

Apollonius was born into a respected and wealthy Greek family,[4][5] his dates however are uncertain. His primary biographer, Philostratus the Elder (c.170–247 CE) places him c. 3 BCE to 97 CE.[6] Others agree that he was roughly a contemporary of Jesus of Nazareth. Charles P. Eells[7] states that his date of birth was three years before Jesus, whose date of birth is also uncertain. However, Philostratus, in his *Life of Apollonius of Tyana*, places him staying in the court of King Vardanes I of Parthia for a while, who ruled between c.40–47 CE. Apollonius began a five year silence at about the age of 20, and after the completion of this silence travelled to Mesopotamia and

47. http://en.wikipedia.org/wiki/Life_of_Apollonius_of_Tyana

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Iran. Philostratus also mentions emperors Nero, Vespasian, Titus, Domitian, and Nerva at various points throughout Apollonius' life. Given this information, a timeline of roughly the years 15–98 CE can be established for his adult life.

Philostratus devoted two and a half of the eight books of his *Life of Apollonius* (1.19–3.58) to the description of a journey of his hero to India. According to Philostratus' *Life*, en route to the Far East, Apollonius reached Hierapolis Bambyce (Manbij) in Syria (not Nineveh, as some scholars believed), where he met Damis, a native of that city who became his lifelong companion. Pythagoras, whom the Neo-Pythagoreans regarded as an exemplary sage, was believed to have travelled to India. Hence such a feat made Apollonius look like a good Pythagorean who spared no pains in his efforts to discover the sources of oriental piety and wisdom. As some details in Philostratus' account of the Indian adventure seem incompatible with known facts, modern scholars are inclined to dismiss the whole story as a fanciful fabrication, but not all of them rule out the possibility that the Tyanean actually did visit India.[23]

What seemed to be independent evidence showing that Apollonius was known in India has now been proved to be forged. In two Sanskrit texts quoted by Sanskritist Vidhushekhara Bhattacharya in 1943[24] he appears as "Apalūnya", in one of them together with Damis (called "Damīśa"), it is claimed that Apollonius and Damis were Western yogis, who later on were converted to the correct Advaita philosophy.[25] Some have believed that these Indian sources derived their information from a Sanskrit translation of Philostratus' work (which would have been a most uncommon and amazing occurrence), or even considered the possibility that it was really an independent confirmation of the historicity of the journey to India.[26] Only in 1995 were the passages in the Sanskrit texts proven to be interpolations by a modern (late 19th century) forger.[27] (From Wikipedia⁴⁸)

Apollonius Phil., *Apollonii epistulae* [Dub.] (0619: 003) "Flavii Philostrati opera, vol. 1", Ed. Kayser, C.L. Leipzig: Teubner, 1870, Repr. 1964. Epistle 59, line 2

Βασιλεὺς Βαβυλωνίων Γάρμος Νεο- γύνῃ Ἰνδῶν βασιλεῖ.

Apollonius Phil., *Apollonii epistulae* [Dub.] Epistle 59, line 4

Εἰ μὴ περίεργος ἦς, οὐκ ἂν ἦς ἐν τοῖς ἀλλοτρίοις πράγμασι δίκαιος, οὐδὲ ἂν ἀρχῶν ἐν Ἰνδοῖς ἐδίκαζες Βαβυλωνίοις.

48. http://en.wikipedia.org/wiki/Apollonius_of_Tyana

5.51. AMMONIUS SACCAS

5.51 Ammonius Saccas

Ammonius Saccas (3rd century AD) (Ancient Greek: Ἀμμώνιος Σακκάς) was a Greek philosopher from Alexandria who was often referred to as one of the founders of Neoplatonism. He is mainly known as the teacher of Plotinus, whom he taught for eleven years from 232 to 243. He was undoubtedly the biggest influence on Plotinus in his development of Neoplatonism, although little is known about his own philosophical views. Later Christian writers stated that Ammonius was a Christian, but it is now generally assumed that there was a different Ammonius of Alexandria who wrote biblical texts. (From Wikipedia⁴⁹)

Ammonius Phil., In Aristotelis librum de interpretatione commentarius (4016: 003)
“Ammonius in Aristotelis de interpretatione commentarius”, Ed. Busse, A. Berlin: Reimer, 1897; Commentaria in Aristotelem Graeca 4.5. Page 30, line 33

τῶν οὖν τοιούτων φωνῶν χωρίζει τὸ ὄνομα προστεθὲν τὸ <κατὰ συνθήκην,> ταῦτ' ὅν σημαῖνον τῷ θέσει· συνέθεντο γὰρ πρὸς ἀλλήλους Ἕλληνες μὲν τοῖςδε τοῖς ὀνόμασι τὰ πράγματα καλεῖν, Ἰνδοὶ δὲ ἑτέροις καὶ Αἰγύπτιοι ἄλλοις, καὶ οἱ αὐτοὶ τὰ αὐτὰ ποτὲ μὲν ἄλλοις ποτὲ δὲ ἑτέροις.

5.52 Agathemerus

Agathemerus (Greek: Ἀγαθήμερος) was a Greek geographer who during the Roman Greece period published a small two-part geographical work titled A Sketch of Geography in Epitome (τῆς γεωγραφίας ὑποτυπώσεις ἐν ἐπιτομῇ), addressed to his pupil Philon. The son of Orthon, Agathemerus is speculated to have lived in the 3rd century. Although much is not known about Agathemerus historically, he lived after Ptolemy, whom he often quotes, and before the formation of Constantinople on the site of Byzantium by Constantine the Great in 328 AD as he mentions only the old city Byzantium. From his speaking of Albion ἐν ᾗ στρατόπεδα ἱδρύονται, it has been thought that he wrote not very long after the erection of the wall of Severus. This is probably true, but the language is scarcely definite enough to establish the point.[1]

49. http://en.wikipedia.org/wiki/Ammonius_Saccas

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Agathemerus's work consists chiefly of extracts from Ptolemy, Artemidorus Ephesius and other earlier writers. In his work, he gives a short account of the various forms assigned to the Earth by previous geographers. He calculated the distances between land masses and seas, and then laid down important distances on the inhabited part of the Earth using the stadiametric method. (From Wikipedia⁵⁰)

Agathemerus Geogr., Geographiae informatio (0090: 001) "Geographi Graeci minores, vol. 2", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1861, Repr. 1965. Section 2, line 12

Πρῶτος δὲ Δημόκριτος, πολῦπειρος ἀνὴρ, συνείδεν, ὅτι προμήκης ἐστὶν ἡ γῆ, ἡμίολιον τὸ μῆκος τοῦ πλάτους ἔχουσα· συνήνεσε τούτῳ καὶ Δικαίαρχος ὁ Περιπατητικός· Εὐ- δοξος δὲ τὸ μῆκος διπλοῦν τοῦ πλάτους, ὁ δὲ Ἑρατο- σθένης πλεῖον τοῦ διπλοῦ· Κράτης δὲ ὡς ἡμικύκλιον, Ἴππαρχος δὲ τραπεζοειδῆ, ἄλλοι οὐροειδῆ, Ποσειδώνιος δὲ ὁ Στωϊκὸς σφενδονοειδῆ καὶ μεσόπλα- τον ἀπὸ νότου εἰς βορρᾶν, στενὴν [δὲ] πρὸς ἑω καὶ δύσιν, τὰ πρὸς εὐ- ρον δ' ὅμως πλατύτερα [τὰ] πρὸς τὴν Ἰνδικήν.

Agathemerus Geogr., Geographiae informatio Section 7, line 8

Ἔθνη δὲ οἰκεῖν τὰ πέρατα κατ' ἀπηλιώτην Βακτριανούς, κατ' εὐρον Ἰνδούς, κατὰ Φοίνικα Ἐρυθρὰν θάλασσαν καὶ Αἰθιοπίαν, κατὰ νότον τὴν ὑπὲρ Αἴγυπτον Αἰθιοπίαν, κατὰ λευκό- νοτον τοὺς ὑπὲρ Σύρτεις Γαράμαντας, κατὰ Λίβα Αἰθίοπας δυσμικοὺς [τοὺς] ὑπὲρ Μαύρους, κατὰ ξέφυρον Στήλας καὶ ἀρχὰς Λιβύης καὶ Εὐρώπης, κατ' ἀργέστην Ἰβηρίαν τὴν νῦν Ἰσπα- νίαν, κατὰ δὲ Θρασκίαν [Κελτούς καὶ τὰ ὅμορα, κατὰ δ' ἀπαρκτίαν] τοὺς ὑπὲρ Θράκην Σκύθας, κατὰ δὲ βορρᾶν Πόντον, Μαιῶτιν, Σαρμάτας· κατὰ καικίαν Κασπίαν θάλασσαν καὶ Σάκας.

Agathemerus Geogr., Geographiae informatio Section 15, line 5

Μῆκος δὲ τῆς οἰκουμένης ἀπὸ Γάγγου εἰς τὰ Γάδειρα σταδίων μυριάδων 5' καὶ ἡφμέ', οὕτως· ἀπὸ μὲν Γάγγου ποταμοῦ ἕως Μυριάνδρου τῆς ἐν Ἰσικῷ κόλπῳ σταδίων μυριάδων 8' καὶ 25' οὕτως· ἀπὸ Γάγγου ἐπὶ ἐκβολὰς Ἰνδοῦ ποταμοῦ σταδίων μυρίων 25' ἀπὸ Ἰνδοῦ ἕως Κασπίων πυλῶν μυρίων 25'· ἐπὶ τὸν Εὐφράτην σταδίων μυρίων 1'· εἰς Μυριάνδρον στα- δίων τοε'.

5.53 Celsus

Celsus (Greek: Κέλσος) was a 2nd century Greek philosopher and opponent of Early Christianity. He is known for his literary work, The True Word (Account, Doctrine or Discourse) (Λόγος Ἀληθής), written about by Origen.

50. <http://en.wikipedia.org/wiki/Agathemerus>

5.53. CELSUS

This work, c. 177[1] is the earliest known comprehensive attack on Christianity.

According to Origen, Celsus was the author of an anti-Christian work titled The True Word. This work was lost, but we have Origen's account of it in his writings.[2] It was during the reign of Philip the Arab that Origen received this work for rebuttal.[3] Origen's refutation of The True Word contained its text, interwoven with Origen's replies. Origen's work has survived and thereby preserved Celsus' work with it.[4]

Celsus seems to have been interested in Ancient Egyptian religion,[5] and he seemed to know of Jewish logos-theology, both of which suggest The True Word was composed in Alexandria.[6] Celsus wrote at a time when Christianity was being actively persecuted[7] and when there seems to have been more than one emperor.[8][9][10][11][12]

As an anti-Christian Greek philosopher, Celsus mounted an attack on Christianity. Celsus wrote that Jesus's father was a Roman soldier named Panthera. The views of Celsus drew responses from Origen who considered it a fabricated story.[13][14] Raymond E. Brown states that the story of Pantera is a fanciful explanation of the birth of Jesus which includes very little historical evidence - Brown's analysis does not presuppose the doctrine of the "virgin birth," but cites the lack of historical evidence for Celsus' assertion.[15] In addition, Celsus addressed the miracles of Jesus, holding that "Jesus performed His miracles by sorcery (γοητεία)":[16][17][18] (From Wikipedia⁵¹)

Celsus Phil., Ἀληθὲς λόγος (1248: 001) "Der Ἀληθὲς λόγος des Kelsos", Ed. Bader, R. Stuttgart: Kohlhammer, 1940; Tübinger Beiträge zur Altertumswissenschaft 33. Chapter 1, section 14c, line 6

ὄρα οὖν εὐθέως τὸ φίλαυτον τοῦ τοῖσδε μὲν τισι πιστεύ-
οντος ὡς σοφοῖς ἔθνεσι, τῶνδε δὲ
καταγινώσκοντος ὡς πάντη ἀνοή-
των. ἄκουε γὰρ λέγοντος τοῦ Κέλσου ὅτι ἔστιν ἀρχαῖος
ἄνωθεν λόγος, περὶ ὃν δὴ αἰεὶ καὶ τὰ ἔθνη τὰ σοφώτατα καὶ πόλεις καὶ ἄνδρες σοφοὶ κατεγέγοντο.
καὶ οὐκ ἐβουλήθη ἔθνος σοφώτατον εἰπεῖν κἂν παραπλησίως Αἰγυπτίοις καὶ Ἀσσυρίοις καὶ
Ἰνδοῖς καὶ Πέρσαις καὶ Ὀδρύσαις καὶ Σαμόθραξι καὶ Ἐλευσινίοις τοὺς Ἰουδαίους.

Celsus Phil., Ἀληθὲς λόγος Chapter 1, section 24, line 6

Μετὰ ταῦτά φησιν, ὅτι οἱ αἰπόλοι καὶ ποιμένες ἓνα ἐνόμισαν θεὸν εἶτε Ὑψιστον εἶτ' Ἀδω-
ναῖον εἶτ' Οὐράνιον εἶτε Σαβαώθ εἶτε καὶ ὅπῃ καὶ ὅπως χαίρουσιν ὀνομάζοντες τόνδε τὸν κό-
σμον· καὶ πλεῖον οὐδὲν ἔγνωσαν. καὶ ἐν τοῖς ἑξῆς δέ φησι μὴδὲν διαφέρειν τῷ παρ' Ἑλληνι
φερομένῳ ὀνόματι τὸν ἐπὶ πᾶσι θεὸν καλεῖν Δία ἢ τῷ δεῖνα, φέρ' εἰπεῖν, παρ' Ἰνδοῖς ἢ τῷ δεῖνα

51. <http://en.wikipedia.org/wiki/Celsus>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

παρ' Αἰγυπτίοις. Ἰδωμεν δὲ τίνα τρόπον συκοφαντεῖ Ἰουδαίους ὁ πάντ' ἐπαγγελλόμενος εἰδέναι Κέλσος λέγων αὐτοὺς σέβειν ἀγγέλους καὶ γοητεία προσκεῖσθαι, ἧς ὁ Μωϋσῆς αὐτοῖς γέγονεν ἐξηγητής. ἐπαγγέλλεται δὲ διδάξειν ἐξῆς, πῶς καὶ Ἰουδαῖοι ὑπὸ ἀμαθίας ἐσφάλησαν ἐξαπατῶμενοι. ἐπαγγελλόμενος δ' ὁ Κέλσος ὕστερον διδάξειν τὰ περὶ Ἰουδαίων πρῶτον ποιῆται τὸν λόγον περὶ τοῦ σωτῆρος ἡμῶν ὡς γενομένου ἡγεμόνος τῇ καθὼ Χριστιανοὶ ἐσμεν γενέσει ἡμῶν καὶ φησιν αὐτὸν πρὸ πάνυ ὀλίγων ἐτῶν τῆς διδασκαλίας ταύτης καθηγήσασθαι

Celsus Phil., Ἀληθῆς λόγος Chapter 5, section 34, line 23

Σκύθαις γε μὴν καὶ ἀνθρώπους δαίνυσθαι καλόν· Ἰνδῶν δὲ εἰσιν οἱ καὶ τοὺς πατέρας ἐσθίνοντες ὅσια δρᾶν νομίζουσι.

Celsus Phil., Ἀληθῆς λόγος Chapter 5, section 34, line 35

Δαρείος δὲ μετὰ ταῦτα καλέσας Ἰνδῶν τοὺς καλεομένους Καλατίας, οἱ τοὺς γονέας κατεσθίουσιν, εἶρετο παρέοντων τῶν Ἑλλήνων καὶ δι' ἑρμηνέος μανθανόντων τὰ λεγόμενα, ἐπὶ τίνι χρήματι δεξιάατ' ἂν τελευτῶντας τοὺς πατέρας κατακαίειν πυρί· οἱ δὲ ἀμβώσαντες μέγα εὐφημέειν μιν ἐκέλευον.

Celsus Phil., Ἀληθῆς λόγος Chapter 6, section 80, line 9

.. ἔνθεον ἔθνος εἶναι τῷ Κέλσῳ δοκοῦσιν, ἀλλὰ καὶ Ἰνδοί, ὧν τινες ἐν τοῖς προειρημένοις ἔλεγε καὶ ἀνθρωπείων γεγεῦσθαι σαρκῶν.

5.54 Ephraem Syrus

Ephrem the Syrian (Syriac: ܐܦܪܗܡ ܣܝܪܝܐ, ܡܪܝܬܐ ܡܪܝܬܐ Mār Efrēm Sûryāyâ;[1] Greek: Ἐφραίμ ὁ Σύρος; Latin: Ephraem Syrus; ca. 306 – 373) was a Syriac deacon and a prolific Syriac-language hymnographer and theologian of the 4th century.[2][3][4][5] His works are hailed by Christians throughout the world and many denominations venerate him as a saint. He has been declared a Doctor of the Church in Roman Catholicism. He is especially beloved in the Syriac Orthodox Church. (From Wikipedia⁵²)

Ephraem Syrus Theol., Sermo asceticus (4138: 005) “Ὁσίου Ἐφραίμ τοῦ Σύρου ἔργα, vol. 1”, Ed. Phrantzoles, Konstantinos G. Thessalonica: Το περιβόλι της Παναγίας, 1988, Repr. 1995. Page 130, line 2

Θαυμαστόν γάρ ἦν τὸ πρᾶγμα, ἀδελφοί, θεωροῦντες τὰ ἄγρια ζῶα συναγόμενα εἰς ἐν-
ἐλέ- φαντας μὲν ἀπὸ Ἰνδικῆς καὶ Περσίδος ἐρχομένους· λέοντας καὶ παρδάλεις μετὰ προβά-
των καὶ αἰγῶν μιγάδας, καὶ μηδὲν ἀδικοῦντας· ἐρπετὰ τε καὶ πετεινὰ ἄνευ τινὸς διώκοντος
ἐρχόμενα καὶ κύκλῳ τῆς κιβωτοῦ αὐλιζόμενα· καὶ ταῦτα ἐπὶ ἡμέρας ἱκανάς· αὐτὸν τε τὸν

52. http://en.wikipedia.org/wiki/Ephraem_Syrus

5.55. AELIUS HERODIANUS

Νῶε μετὰ σπουδῆς κατασκευάζειν τὴν κιβωτόν, καὶ ἐμβοῶντα αὐτοῖς, μετανοεῖτε, καὶ οὐκ ἡνείχοντο.

Ephraem Syrus Theol., De recordatione mortis et de uirtute ac de diuitiis (4138: 062) “Ὁσίου Ἐφραίμ τοῦ Σύρου ἔργα, vol. 4”, Ed. Phrantzoles, Konstantinos G. Thessalonica: Το περιβόλι της Παναγίας, 1992. Page 251, line 14

Τίς ἀνακληθήσεται ἐπὶ ταῖς ἀργυρενδέτοις κλίναις καὶ τῶν ἐξ Ἰνδικῆς ἐχόντων τὸν ἀπαρτισμόν;

Ephraem Syrus Theol., Sermo in Ionam prophetam et de paenitentia Niniuitarum (4138: 153) “Ὁσίου Ἐφραίμ τοῦ Σύρου ἔργα, vol. 7”, Ed. Phrantzoles, Konstantinos G. Thessalonica: Το περιβόλι της Παναγίας, 1998. Page 319, line 8

Ὡς Ἰνδοὶ ἐφαίνοντο ἐκ τῶν μελλόντων κακῶν.

5.55 Aelius Herodianus

Aelius Herodianus (Latin; Greek Αἴλιος Ἡρωδιανός) or Herodian (fl. 2nd c. CE) was one of the most celebrated grammarians of Greco-Roman antiquity. He is usually known as Herodian except when there is a danger of confusion with the historian also named Herodian.

He was the son of Apollonius Dyscolus and was born in Alexandria. From there he seems to have moved to Rome, where he gained the favour of the emperor Marcus Aurelius, to whom he dedicated a work on prosody. (From Wikipedia⁵³)

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica (0087: 001) “Grammatici Graeci, vol. 3.1”, Ed. Lentz, A. Leipzig: Teubner, 1867, Repr. 1965. Part+volume 3,1, page 13, line 12

<Ἀπιντάν> υἱὸς Μακεδόνης καὶ ἔθνος Μακεδονίας. <Βραχυμάν> 20 Ἰνδικὸν ἔθνος σοφώτατον, οὗς καὶ Βράχμας καλοῦσιν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 19, line 1

Τὰ εἰς <ων> παραληγόμενα <α> μακρῶ βαρύνεται, <Ἄων> ἔθνος Βοιωτίας, <Δάων> ἔθνος τῆς Ἰνδικῆς ἀπὸ Δάονος, <Χάων> ἔθνος Ἡπείρου.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 43, line 9

53. http://en.wikipedia.org/wiki/Aelius_Herodianus

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Τὰ εἰς <εξ> ὀνόματα βαρύνεται, <Λέλεξ, Βέρεξ> ἔθνος μεταξὺ Ἰν- δίας καὶ Αἰθιοπίας ὡς Τιμοκράτης ὁ Ἀδραμυττηνός, <ἐπίτεξ, ἀγχίτεξ, πιτυτάλεξ> καὶ εἴ τι ὅμοιον.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 52, line 3

Βαρύνεται δὲ τὰ εἰς <ας> καθαρὸν, <Νικίας, Λυσίας, Ἀρχίας, Λοξίας, Γορ- γίας, Ἐρυξίας, δρακοντίας, ὀνοματίας, κοππατίας, ταρα- ξίας, κοχλίας, τραυματίας, Παπίας, Ὠπίας> ἔθνος Ἰνδικόν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 52, line 4

Ἐκαταῖος Ἀσία «ἐν δὲ αὐτοῖσι οἰκέουσι ἄνθρωποι παρὰ τὸν Ἰνδὸν πο- ταμὸν Ὠπίαι, ἐν δὲ τεῖχος βασιλήϊον.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 52, line 6

μέχρι τούτου Ὠπίαι, ἀπὸ δὲ τούτων ἐρημὴ μέχρις Ἰνδῶν».

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 52, line 12

<Καλατίας> γένος Ἰνδικόν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 53, line 23

<Σάλγας> ποταμὸς τῆς Μαυριτανίας, <Βησσύγας> ποταμὸς τῆς Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 54, line 22

* Τὰ εἰς <κας> βαρύνονται, <Πελέκας, Περδίκκας, Κώκας, Κρίκας> ποταμὸς, <Σάκας, Λάκας, Πολύκκας> ποταμὸς Μακεδονίας, <Ματάκας> ὄνομα εὐνούχου, <Ἰνδύκας, Κοτύ- κας> βασιλεὺς Παφλαγο- νίας.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 60, line 6

Τὰ εἰς <βης> δισύλλαβα παραληγόμενα φωνήεντι βαρύνεται <Λάβης, λέβης, Κέβης, Κάβης, Χάβης, Σίβης>20, Ἰνδικὸν ἔθνος, <Βύβης> πό- λεις κατὰ Πευκετίους καὶ τὸ ἐθνικὸν οἱ Βύβαι ὁμοφώνως ὡς Λοκροὶ καὶ Δελφοί.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 62, line 5

Στράβων ιζ' (p. 802), «καὶ Λύκων πόλις καὶ Μένδης, ὅπου τὸν Πᾶνα τιμῶσι καὶ τὸν τράγον» <Πάνδης> καὶ <Σίνδης> ἔθνη Ἰνδικά, <Ἐσδης> ἔθνος Ἰβηρικόν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 62, line 24

<Κέλτης>· οὕτως γὰρ Στράβων φησὶ τοὺς Κελτούς. <Κώφης>20 Ἰνδικὸς ποταμὸς, ὡς Στράβων «Χοάσπης εἰς τὸν Κώφην ἐμ- βάλλει» (p. 697) καὶ πάλιν «μετὰ τὸν Κώφην ὁ Ἰνδός,

5.55. AELIUS HERODIANUS

εἶτα ὁ Ὑδά- σπης, εἶτα ὁ Ἀκεσίνης καὶ Ὑστατος ὁ Ὑπανις» (ibid.).

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 62, line 25

<Κώφης>20 Ἰνδικὸς ποταμός, ὡς Στράβων «Χοάσπης εἰς τὸν Κώφην ἐμ- βάλλει» (p. 697) καὶ πάλιν «μετὰ τὸν Κώφην ὁ Ἰνδός, εἶτα ὁ Ὑδά- σπης, εἶτα ὁ Ἀκεσίνης καὶ Ὑστατος ὁ Ὑπανις» (ibid.).

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 66, line 18

τὸ μὲν <α> οἷον <Ἰλιάδης, Μενoitιιάδης, Πυλάδης, Ἀλκιβιάδης· Μιλτιάδης, Δημάδης> ἐκ τοῦ Δημεά- δης· <Ἀργεάδης> ὁ Ἀργεῖος· <Δειράδης>, ἀφ' οὗ δῆμος Δειράδες, <Δολογκιάδης> οἱ Δόλογχοι ἔθνος Θυράκης· <Ἐνδυμινιάδης> οἱ Ἐπειοί, <Ἡλιάδης> ὁ Ἡλεῖος, <Βερενικιάδης> ὁ Βερενικεύς, <Παρο- πανισσάδης> οἱ Παροπανίσσῳ ὄρει Ἰνδικῆς παροικοῦντες.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 68, line 33

<Ὑδάρκης> ἔθνος Ἰνδικόν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 69, line 2

<Ὁξυδράκης> ἔθνος Ἰνδικόν, ἀφ' ὧν σώσας Ἀλέξανδρον Πτολεμαῖος σωτήρ ἐκλήθη· οἱ δὲ ψεῦδος τὸ περὶ τῶν Ὁξυδρακῶν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 71, line 19

Ἔτι τὰ εἰς <αρης>, εἰ μὴ ἐπίθετα εἶη, <Κυαξάρης, Παντάρης, Σωχάρης, Τυνδάρης, Ἀφάρης, Ἀμφιάρης, Καβάρης> ὄνομα ποταμοῦ, <Γανδάρης>20 Ἰνδῶν ἔθνος.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 72, line 17

<Σαρ- μάτης> ἔθνος Σκυθικόν, <Σαυρομάτης> ἔθνος Ἰνδικόν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 75, line 3

<Ἀρα- χώτης> ποταμὸς Ἰνδικός, ὃς καὶ Ἀραχωτός.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 76, line 10

<ἑδρίτης, Ὠρίτης> ἔθνος Ἰνδῶν αὐτόνομον.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 76, line 11

Στράβων πεντεκαίδεκάτῃ (p. 720) «τῷ ὀρίζοντι αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ἐξῆς Ὠριτῶν· Ἰνδῶν δὲ ἐστὶ καὶ αὕτη μερίς, ἔθνος αὐτόνομον».

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 76, line 13

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

καὶ Ἀπολλόδωρος δευτέρῳ «ἔπειτα Ὠρίτας τε καὶ Γεδρώσιους, ὧν τοὺς μὲν Ἰνδοὺς ὡς ἐνοικοῦντας πέ- τραν .

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 76, line 26

<Ἀρματίτης> ἔθνικὸν Ἀρμάτων πόλεως πλη- θυντικῶς Ἰνδικῆς ὡς τοῦ ἔρμα <έρματίτης>· ἔστι καὶ πόλις Ἀρματίτης.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 76, line 32

<Ὀρβίτης> ἔθνος Ἰνδικόν, ὡς Ἀπολλόδωρος δευτέρῳ, περὶ Ἀλεξάνδρειαν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 86, line 23

* Τὰ εἰς <βις> δυσύλλαβα ὀξύνεται ἢ βαρύνεται· καὶ ὀξύνεται μὲν τὰ παράνυμα οἷον <λαβίς> παρὰ τὸ λαβή καὶ ἐπιθετικά οἷον <Λεσβίς> καὶ ἐκτείνοντα τὸ <ι> οἷον <βαλβίς>· τὰ δὲ μὴ οὕτως ἔχοντα βαρύνεται, <ἱβις, Ἄρβις> ποταμὸς Ἰνδικῆς καὶ ἔθνος· λέγεται δὲ καὶ Ἄραβις.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 98, line 7

τὸ δὲ <Σάραπις> νῆσος ἐν Ἰνδικῷ κόλπῳ βαρύνεται.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 121, line 3

<Ἰαλύσιος, ἑτώσιος, Ῥώσιος, Ἀραχώσιος, Περκώ- σιος, Κριθώσιος, Γεδρώσιος> ἔθνος Ἰνδικόν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 128, line 5

Τὰ εἰς <ος> καθαρὸν ὑπὲρ δύο συλλαβὰς τῷ <ω> μετὰ <ι> προσγεγραμ- μένου παρα- ληγόμενα προπερισπᾶται, <πατρῶος, ἡρῶος> καὶ <Ἡρῶος, ἡῶος, Ἀχελῶος> ποταμὸς Ἀκαρ- νανίας ἀπὸ Ἀχελῷου ἐλθόντος ἐκ Θετ- ταλίας μετὰ Ἀλκμαίωνος καὶ τὸ ἔθνικὸν ὁμοφώνως, <αἰδῶος, Μι- νῶος, Ἐλβῶος, Σαρδῶος, Πυθῶος, Ληθῶος, Ἰνδῶος, Γελῶος> ὁ οἰκῶν Γέλαν πόλιν Σικελίας ἴσως ἀπὸ τοῦ γέλωος.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 130, line 14

<Δυρβαῖος> ἔθνος καθήκον εἰς Βάκτρος καὶ τὴν Ἰνδι- κήν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 130, line 16

Κτησίας ἐν Περσικῶν ἰ' «χώρη δὲ πρὸς αὐτὸν πρόσκειται Δυρβαῖοι, πρὸς τὴν Βακτρίην καὶ Ἰνδικὴν κατατείνοντες.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 141, line 15

5.55. AELIUS HERODIANUS

τὸ δὲ <Σύναργος> πόλις Φοινίκης καὶ <Σάλαργος> ἔθνος Ἰταλίας – ἔστι δὲ καὶ ἕτερον ἔθνος Ἰνδικόν – διπλασιαζόμενον ἔχει τὸ <γ>.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 142, line 27

σεση- μείωται τὸ <Ἰνδός> ποταμὸς καὶ ἔθνικόν καὶ <Ὀρδός> ἔθνος Μακεδονίας.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 143, line 26

Τὰ εἰς <ζος> πάντα βαρύνεται, <ὄζος, ῥοῖζος, Γάζος> πόλις Ἰν- δική, <Τόπαζος> νῆσος Ἰνδική καὶ λίθος ὁμώνυμος τῇ νήσῳ.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 167, line 18

Τὰ εἰς <μος> προσηγορικὰ ἔχοντα τὴν πρὸ τέλους συλλαβὴν εἰς <λ> καταλήγουσαν ὀξύνεται, <ὀφθαλμός, τιλμός, ψαλμός, παλμός, ἰνδαλμός>.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 181, line 8

ὀξύνονται δὲ ταῦτα· <Τυρσηνός, Ἀβυδηνός, Ἀσσακηνός> ἔθνος Ἰνδικόν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 192, line 5

ἔστι καὶ Τύρος τῆς Λακωνικῆς καὶ νῆσος πρὸς τῇ Ἐρυθρᾷ θαλάσῃ, ἣν Ἀρτεμίδωρος Τύλον διὰ τοῦ <λ> καλεῖ, ἔστι καὶ πόλις Ἰνδίας καὶ Λυδίας καὶ Πισιδίας.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 198, line 18

Κάσπειρος> πόλις Πάρθων προσεχῆς τῇ Ἰνδικῇ καὶ τὸ ἔθνικόν ὁμοφώνως.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 212, line 30

<Παροπάνισσος> πόλις καὶ ὄρος Ἰνδικῆς, ἀφ' οὗ Παροπανισσάδαί οἱ οἰκοῦντες.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 221, line 29

<Ἀραχωτός> ποταμὸς Ἰνδικῆς ῥέων ἀπὸ Καυκάσου, ὡς Φαβωρίνος καὶ Στράβων ἐνδεκάτη (p. 513).

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 221, line 30

καὶ ἀπ' αὐτοῦ Ἀραχωτοὶ πόλις Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 228, line 7

ἔστι καὶ ἄλλη τῆς Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 241, line 19

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

<Μωριεῖς> ἔθνος Ἰνδικὸν ἐν ξυλίνοις οἰκοῦντες οἴκοις, ὡς Εὐφορίων.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 248, line 8

Τὰ εἰς <α> μακρὸν καὶ εἰς <η> τῶν εἰς <ους> περισπωμένων περισπᾶται ἀργυροῦς <ἀρ-
γυρᾶ>, ἔστι δὲ καὶ μητρόπολις τῆς ἐν Ἰνδικῇ Ταπροβάνης νήσου.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 252, line 28

* Τὰ εἰς <δα> βαρύνεται, <Σίνδα> πόλις πρὸς τῷ μεγάλῳ κόλπῳ τῆς Ἰνδικῆς, <Πέδα>
πόλις Αὐσονική, <Σίβδα> πόλις Καρίας, <Γάδδα> χωρίον Ἀραβίας.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 255, line 9

καὶ <Βουκεφάλα> πόλις Ἰνδικῆς, ἣν ἔκτισεν Ἀλέξανδρος «ἐπ' ἀμφοτέραις ταῖς ὀχθαῖς τοῦ
Ἰδάσπου ποταμοῦ πόλεις ὤκισε, Νίκαιαν – Βουκεφά- λαν δὲ ἐνθα διαβάντος καὶ μαχομένου
ἀπέθανεν αὐτοῦ ὁ ἵππος Βουκε- φάλας λεγόμενος».

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 256, line 30

<Σώλιμνα> πόλις Ἰνδίας.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 257, line 27

<Κάρμανα> νῆσος τῆς Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 257, line 29

<Μάργανα> πόλις τῆς Ἰν- δικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 258, line 8

<Κάρμιννα> νῆσος Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 259, line 20

* Τὰ εἰς <αρα> ὑπὲρ δύο συλλαβὰς παροξύνεται, <Κυπάρα> κρήνη Σικελίας, ἣ καὶ Ἀρέ-
θουσα ἐλέγετο, <Βατεράρα> πόλις Λιγύων. <Ἰνδάρρα> Σικανῶν πόλις.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 264, line 2

<Παναίουρα> πόλις Ἰνδικῇ περὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμόν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 264, line 9

<Βαλβέρουρα>· οὕτως τινὲς Ἰνδικὴν πόλιν Ἰβηρίας φασίν, μεθ' ᾧ καὶ <δίφουρα> ἢ γέ-
φυρα.

5.55. AELIUS HERODIANUS

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 266, line 25

<Νῦσα> πόλεις πολλαί, ἐν Ἐλικῶνι, ἐν Θράκῃ, ἐν Καρίᾳ, ἐν Ἀραβίᾳ, ἐν Αἰγύπτῳ, ἐν Νάξῳ, ἐν Ἰνδοῖς, ἐπὶ τοῦ Καυκά- σου ὄρους, ἐν Εὐβοίᾳ.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 268, line 19

ἔστι καὶ νῆσος μία τῶν Κυκλάδων καὶ τρίτη Ἰνδι- κῆς, ἣν ἀναγράφει Φίλων καὶ Δημοδά- μας ὁ Μιλήσιος – καὶ ἐκ τῆς ἐπὶ <ἑπισσα> παρ' Ἑκαταίῳ.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 271, line 1

* Τὰ εἰς <τα> δυσύλλαβα σπάνια ὄντα βαρύνεται, <Γέντα> πόλις Ἰν- δικῆ τῆς ἐκτὸς Γάγγου.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 272, line 5

τετάρτη ἐν Ἰνδοῖς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 272, line 32

<Κάθαια> πόλις Ἰνδικῆ.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 274, line 14

τετάρτη πόλις Ὠριτῶν, ἔθνους Ἰχθυοφάγων, κατὰ τὸν περίπλου τῆς Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 274, line 15

πέμπτη ἐν τῇ Ὠπιανῇ, κατὰ τὴν Ἰνδικήν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 274, line 15

ἕκτη πάλιν Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 274, line 16

ἑβδόμη ἐν Ἀρίοις, ἔθνη Παρθυαίων κατὰ τὴν Ἰνδικήν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 274, line 19

τεῖς- σαρεσκαιδεκάτη παρὰ Σωριανοῖς, Ἰνδικῶ ἔθνη.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 274, line 20

πεντεκαιδεκάτη παρὰ τοῖς Ἀραχῶτοις, ὁμοροῦσα τῇ Ἰνδικῇ.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 277, line 33

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

<Βουκεφάλεια> πόλις ἐπὶ τῷ Βουκε- φάλῳ ἵππῳ, ἣν ἔκτισεν Ἀλέξανδρος ἐν Ἰνδία παρὰ τὸν Ὑδάσπην ποταμόν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 277, line 34

<Γήρεια> πόλις Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 278, line 20

ἰα΄ μεταξὺ Σκυθίας καὶ Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 279, line 35

<Σάνεια> πόλις Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 287, line 5

<Ἀετία>· οὕτως ἐκλήθη ἡ Αἴγυπτος ἀπὸ τινος Ἰνδοῦ Ἀετοῦ.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 288, line 6

<Γεδρωσία> χώρα Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 297, line 10

<Δαρσανία> πόλις Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 297, line 14

<Καρμανία> χώρα τῆς Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 306, line 20

<Ροδόη> πόλις Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 316, line 14

Πολύβιος γ΄. <Ἰνδική> πόλις Ἰβηρίας πλησίον Πυρήνης.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 321, line 9

<Πατάλη> πόλις Ἰνδική, ἣ καὶ Πάταλα λέγεται, <Πετάλη, Μυράλη.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 328, line 24

<Ρωγάνη> πόλις ἐν τῇ Ἰνδικῇ.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 328, line 25

<Ταπροβάνη> νῆσος μεγίστη ἐν τῇ Ἰνδικῇ θαλάσῃ.

5.55. AELIUS HERODIANUS

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 333, line 5

τὸ δὲ <Παταλήνη> νῆσος Ἰνδικὴ ὀξύνεται, τινὲς δὲ καὶ βαρυτόνως Παταλήνην ὡς Πιρήνην ἀναγινώσκουσιν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 341, line 28

ἔστι καὶ ἄλλη χειρρόνησος τῆς Ἰνδικῆς <Χρυσῇ> καλου-μένη.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 345, line 9

<Ἀργάντη> πόλις Ἰνδίας, ὡς Ἑκαταῖος.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 346, line 27

τὸ δὲ <Μαράχῃ> πόλις Ἰνδικὴ κύριόν ἐστιν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 352, line 29

ἔστι καὶ Ἄρματα πόλις πληθυντικῶς Ἰνδικῆς – <αἶμα, βῆμα, ἔημα, χρῆμα, σῆμα>, ὅθεν <Κυνόσσημα> τόπος Λιβύης.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 361, line 30

<Σεσίνδιον> πόλις Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 368, line 4

ἔστι καὶ Βυζάντιον ἕτερον ἐν τῇ Ἰνδικῇ.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 379, line 14

* Τὰ εἰς <γον> καὶ <δον> οὐδέτερα κύρια ὑπὲρ δύο συλλαβὰς προπαρ- ὀξύνεται, <Βήσσυγα> ἐμπόριον τῆς Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 380, line 11

τὸ δὲ <Ἡμωδόν> ὄρος Ἰνδι- κὸν ὀξύνεται, τινὲς δὲ προπαροξυτόνως Ἡμωδον λέγουσιν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 380, line 22

* Τὰ εἰς <κον> κύρια βαρύνεται, <Μάλακα> πόλις Καππαδοκίας ἢ νῦν Καισάρεια, <Μάσσακα> πόλις Ἰνδῶν, Ἀρριανὸς ἐν Ἰνδικοῖς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica
Part+volume 3,1, page 381, line 13

ἔστι καὶ Ἰνδικῆς.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 381, line 14

<Πάταλα> πόλις Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 381, line 33

<Τάξιλα> πόλις Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 388, line 6

<Παλίμβοθρα> πόλις Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., De prosodia catholica Part+volume 3,1, page 398, line 1

<Σήρ> ἔθνος Ἰνδικόν, ὅθεν σηρικὰ τὰ πολυτελῆ ἱμάτια.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ παθῶν (0087: 009) “Grammatici Graeci, vol. 3.2”, Ed. Lentz, A. Leipzig: Teubner, 1870, Repr. 1965. Part+volume 3,2, page 331, line 1

τοῦ <ι> τραπέντος εἰς <ε> γίνεται Δεόνυσος (οὕτω γὰρ Σάμιοι προφέρουσι) καὶ συναίρεσει Δεύνυσος ὡς Θεόδωτος Θεύδος· ἔνιοι δὲ φασιν, ὅτι ἐπειδὴ ἐβασίλευσε Νύσης· κατὰ δὲ τὴν Ἰνδῶν φωνὴν δεῦνος ὁ βασιλεύς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ παθῶν Part+volume 3,2, page 354, line 4

σημαίνει δὲ τὸ ἄγαλμα ἢ ὁμοίωμα οἶον «δείκηλα προΐαλλον» (Apoll. Rhod. IV 1672) καὶ «δείκελον Ἰφιγόνης» παρὰ Παρθενίῳ· ὥσπερ παρὰ τὸ πέμπω πέμ- πελος (σημαίνει δὲ τὸν πολλῶν ἐνιαυτῶν ὄντα), οὕτω καὶ ἀπὸ τοῦ δείκω τὸ δεικνύω γίνεται δείκελος καὶ ἐκτάσει τοῦ <ε> εἰς <η> δείκηλον τὸ Ἰνδαλμα.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ ὀρθογραφίας (0087: 011) “Grammatici Graeci, vol. 3.2”, Ed. Lentz, A. Leipzig: Teubner, 1870, Repr. 1965. Part+volume 3,2, page 444, line 18

Τὰ διὰ τοῦ <ινδος> εἴτε δισύλλαβα εἴτε ὑπὲρ δύο συλλαβὰς διὰ τοῦ <ι> γράφεται οἶον Ἰνδός, Ἀλινδος, Ἰσινδος πόλις Μακεδονίας, Ἄριν-δος ὄνομα ποταμοῦ.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ ὀρθογραφίας Part+volume 3,2, page 492, line 28

ἔνιοι φασίν, ὅτι, ἐπειδὴ ἐβασίλευσε Νύσης, δεῦνον δὲ τὸν βασιλέα λέγουσιν οἱ Ἰνδοί, ὡς Ἰόβας.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ ὀρθογραφίας Part+volume 3,2, page 592, line 20

<Τόπαζος> νῆσος Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ κλίσεως ὀνομάτων (0087: 013) “Grammatici Graeci, vol. 3.2”, Ed. Lentz, A. Leipzig: Teubner, 1870, Repr. 1965. Part+volume 3,2, page 652, line 13

5.56. ARCHIGENES

Τὰ εἰς <κας> λήγοντα ἅπαντα ἰσοσυλλάβως κλίνεται, οἷον Πελέκας Πελέκα, Κώκας Κώκα, Κρίκας Κρίκα (ἔστι δὲ ὄνομα ποταμοῦ), Σάκας Σάκα, Πολύκκας Πολύκκα (ἔστι δὲ ποταμός Μακεδονίας), Ματάκας Ματάκα (ἔστι δὲ ὄνομα εὐνούχου] 1, Ἰνδύκας Ἰνδύκα, Κοτύκας Κοτύκα (ἔστι δὲ ὄνομα βασιλέως Παφλαγονίας).

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ κλίσεως ὀνομάτων Part+volume 3,2, page 653, line 15

σεσημείωται τὸ Βάμβλας Βάμβλα ἰσοσυλ- λάβως κλινόμενον, ἔστι δὲ ὄνομα βασιλέως Ἰνδῶν.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ παρωνύμων (0087: 026) "Grammatici Graeci, vol. 3.2", Ed. Lentz, A. Leipzig: Teubner, 1870, Repr. 1965. Part+volume 3,2, page 872, line 23

Ἀργάντη πόλις Ἰνδίας.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ παρωνύμων Part+volume 3,2, page 872, line 24

τὸ ἐθνικὸν ἔδει <Ἀργανταῖος>, ἀλλὰ ὁ τύπος τῶν Ἰνδῶν ἢ <Ἀργαντηνός ἢ Ἀργαντίτης>.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ παρωνύμων Part+volume 3,2, page 881, line 26

Τόπαλος νῆσος Ἰνδική.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Περὶ παρωνύμων Part+volume 3,2, page 892, line 2

ἔστι καὶ Ἄρματα πόλις πληθυντικῶς Ἰνδικῆς.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Partitiones (= Ἐπιμερισμοί) [Sp.?] (e codd. Paris. 2543 + 2570) Page 170, line 16

Τὰ εἰς ἰξ βαρύτονα, μὴ Δωρικῶς τρεπόμενα εἰς α, διὰ τοῦ ἰῶτα γράφονται· οἷον· πέρδιξ· φοῖνιξ· κώδιξ· Ἰνδιξ· καὶ τὰ ὅμοια.

Aelius Herodianus et Pseudo-Herodianus Gramm., Rhet., Partitiones (= Ἐπιμερισμοί) [Sp.?] (e codd. Paris. 2543 + 2570) Page 229, line 4

Τὰ εἰς ὦν λήγοντα ὀξύτονα θηλυκὰ, διὰ τοῦ ο μικροῦ κλίνονται· οἷον· τρυγῶν, τρυγόνος· ἀηδόνος· Γοργόνος· σταγόνος· λαγόνος· σιαγόνος· χόνος· θηλαμόνος· ἀμαζόνος· Χαλκηδόνος· Χαρχηδόνος· καὶ Ὀλοσσόνος· Ἰνδικτιῶνος δὲ μέγα.

5.56 Archigenes

Archigenes (Ἀρχιγένης), an eminent ancient Greek physician, who lived in the 1st and 2nd centuries.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

He was the most celebrated of the sect of the Eclectici, and was a native of Apamea in Syria; he practised at Rome in the time of Trajan, 98-117, where he enjoyed a very high reputation for his professional skill. He is, however, reprobated as having been fond of introducing new and obscure terms into the science, and having attempted to give to medical writings a dialectic form, which produced rather the appearance than the reality of accuracy. Archigenes published a treatise on the pulse, on which Galen wrote a Commentary; it appears to have contained a number of minute and subtle distinctions, many of which have no real existence, and were for the most part the result rather of a preconceived hypothesis than of actual observation; and the same remark may be applied to an arrangement which he proposed of fevers.

He, however, not only enjoyed a considerable degree of the public confidence during his lifetime, but left behind him a number of disciples, who for many years maintained a respectable rank in their profession. The name of the father of Archigenes was Philippus; he was a pupil of Agathinus, whose life he once saved; and he died at the age either of sixty-three or eighty-three.[1]

The titles of several of his works are preserved, of which, however, nothing but a few fragments remain; some of these have been preserved by other ancient authors, and some are still in manuscript in the King's Library at Paris.[2] By some writers he is considered to have belonged to the sect of the Pneumatici.[3]

He is mentioned several times by Juvenal, in his Satires.[4] (From Wikipedia⁵⁴)

Archigenes Med., Fragmenta (0661: 001) "Frammenti medicinali di Archigene", Ed. Brescia, C. Naples: Libreria Scientifica Editrice, 1955. Page 17, line 18

ἔστι δὲ ἡ σύνθεσις τοῦ κύφους αὕτη· λίτου γαλάτου ¶ <γ> ἐλενίου ¶ <ς> ἀσπαλάθου
φλοιοῦ ¶ <ζ> εἰζῆς ἀσφοδέλου ¶ <δ> βράθυος ¶ <ς> ἀρκευθίδος φλέγρια <ρ> βδέλλης πετραϊκῆς
¶ <ζ> ἰσχάδων λιπαρῶν ἀτέγκτων ¶ <β> ἀμμωνιακοῦ ¶ <γ> ὀνύχου Ἰνδικοῦ σπέρματος
πηγάνου ἀγρίου κόστου ἀνὰ ¶ <ς> καρύων κο.

Archigenes Med., Fragmenta Page 19, line 28

βαλαυστίων ταρ' <α> μάκερος ταρ' <α> ¶ ὀμφακίου ταρ' <α> ὑοσκυάμου σπέρματος
ταρ' <α> κέρατος ἐλαφείου ταρ' ¶ ὀπίου ταρ' <β> βάτου ἁώρου καρποῦ ταρ' <α> μύρτου
μέλανος ταρ' <α> σμύρνης τρωγλ<οδ>ύτιδος ταρ' ¶ λυκίου Ἰνδικοῦ ταρ' ¶ κοραλίου ταρ' <α>
σιδίων ταρ' ¶ κρόκου ταρ' <α> σχοι- νάνθης ταρ' ¶ ῥόδων ξηρῶν ταρ' ¶ Λημνίας σφραγίδος

54. <http://en.wikipedia.org/wiki/Archigenes>

5.57. HERODIAN

ταρ' <α> ἄρνογλώσσου χυλοῦ ταρ' <α> ἀκακίας ταρ' <α> λαδάνου ταρ' <α> μαράθρου σπόρου ἀνίσου ἀνὰ ταρ' & στυπτηρίας λιβάνου ἀνὰ ταρ' <α> ῥοῦ μαγειρικοῦ ταρ' & γῆς Σαμίας ταρ' & κοιλίας περιστερᾶς ταρ' & κοιλίας ἀλεκτρυόνος ἀσταφίδων ἄνευ τῶν γιγάρτων ῥόδων ἀνὰ ταρ' τ' & κόμμεος ταρ' <α> χαλκίτεως κισσήρεως ὀπτῆς ἀνὰ ταρ' & χυλοῦ ὑποκιστίδος ταρ' <α> λαγωῦ πιτύας ταρ' .

Archigenes Med., Fragmenta inedita (0661: 002) “Frammenti inediti di Archigene”, Ed. Calabrò, G.L., 1961; Bollettino del comitato per la preparazione della edizione nazionale dei classici greci e latini 9. Page 70, line 13

ἡ κυφοειδὴς καὶ πρὸς τὰ ἐν θώρακι πάντα· σταφίδων σαρκὸς & <κε>, κρόκου & <α>, καλάμου Ἰνδικοῦ & <β>, βδελλίου & <β>, κινναμώμου & <α>, κασίας & <γ>, σχοίνου ἄνθους & <β>, σμύρνης & <δ>, τερεβινθίνης & <δ>, ἀσπαλάθου ξινήματος & <β>, ναρδοστάχους & <γ>, μέλιτος & <ις>, οἴνου τὸ ἄρκοῦν, γλυκέος τὸ αὐτάρκες.

Archigenes Med., Fragmenta inedita Page 70, line 25

Ἄλλη κυφοειδὴς Ἀνδρομάχου ποιεῖ καὶ πρὸς βῆχας καὶ ἀναγωγὰς ὑγρῶν κρόκου, κινναμώμου, σμύρνης ἀνὰ & <α>, βδελλίου & <δ>, ἀσπαλάθου τετράβολον, σχοίνου ἄνθους & <γ>, καλάμου Ἰνδικοῦ & <β>, κασίας & <α>, ναρδοστάχους & <α>, τερεβινθίνης & <ις>, μέλιτος κατὰ κοτύλης C, σταφίδων λιπαρῶν & <ρξ> τὰς σάρκας κεκαθαρμένας, οἴνου παλαιοῦ στύφοντος τὸ ἄρκοῦν εἰς τὸ βρέξαι τὴν σταφίδα καὶ τὸ βδέλλιον καὶ τὴν σμύρνην.

5.57 Herodian

Herodian or Herodianus of Syria (ca. 170–240) was a minor Roman civil servant who wrote a colourful history in Greek titled History of the Empire from the Death of Marcus in eight books covering the years 180 to 238. His work is not entirely reliable although his relatively unbiased account of Elagabalus is more useful than that of Cassius Dio. He was a Greek (perhaps from Antioch) who appears to have lived for a considerable period of time in Rome, but possibly without holding any public office. From his extant work, we gather that he was still living at an advanced age during the reign of Gordianus III, who ascended the throne in 238. Beyond this, nothing is known of his life. (From Wikipedia⁵⁵)

Herodianus Hist., Ab excessu divi Marci (0015: 001) “Herodiani ab excessu divi Marci libri octo”, Ed. Stavenhagen, K. Leipzig: Teubner, 1922, Repr. 1967. Book 1, chapter 15, section 5, line 1

55. <http://en.wikipedia.org/wiki/Herodian>.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

τότε γούν εἶδομεν ὅσα ἐν γρα- φαῖς ἐθαυμάζομεν· ἀπό τε γάρ Ἰνδῶν καὶ Αἰθιοπῶν, εἴ τι πρότερον ἄγνωστον ἦν, μεσημβρίας τε καὶ τῆς ἀρκ- τῶας γῆς ζῶα πάντα φονεύων Ῥωμαίοις ἐδείξε.

On marksmanship and dissolution of an emperor: “From India and Ethiopia, from lands to the north and to the south, any animals hitherto unknown he displayed to the Romans and then dispatched them. On one occasion he shot arrows with crescent-shaped heads at Moroccan ostriches, birds that move with great speed, both because of their swiftness afoot and the sail-like nature of their wings.”⁵⁶

5.58 Arrian of Nicomedia

5.58.1 About Arrian

Arrian of Nicomedia (/ˈæriən/; Latin: Lucius Flavius Arrianus Xenophon; Greek: Ἀρριανός c. AD 86 – 160) was a Roman (ethnic Greek)[3] historian, public servant, military commander and philosopher of the 2nd-century Roman period. As with other authors of the Second Sophistic, Arrian wrote primarily in Attic (Indica is in Herodotus’ Ionic dialect, his philosophical works in Koine Greek). (From Wikipedia)

On *Anabasis Alexandri*:

Anabasis Alexandri (Greek: Ἀλεξάνδρου ἀνάβασις *Alexándrou anábasis*), the Campaigns of Alexander by Arrian, is the most important source on Alexander the Great. The Greek term *anabasis* referred to an expedition from a coastline into the interior of a country. The term *katabasis* referred to a trip from the interior to the coast. So a more literal translation would be *The Expedition of Alexander*. This work on Alexander is one of the few surviving complete accounts of the Macedonian conqueror’s expedition. Arrian was able to use sources which are now lost, such as the contemporary works by Callisthenes (the nephew of Alexander’s tutor Aristotle), Onesicritus, Nearchus, and Aristobulus, and the slightly later work of Cleitarchus. Most important of all, Arrian had the biography of Alexander by Ptolemy,

56. http://www.tertullian.org/fathers/herodian_01_book1.htm.

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

one of Alexander's leading generals and possibly his half-brother. It is primarily a military history; it has little to say about Alexander's personal life, his role in Greek politics or the reasons why the campaign against Persia was launched in the first place. (From Wikipedia)

5.58.2 *Historia Indica*

Text: Flavius Arrianus Hist., Phil., Historia Indica (0074: 002) "Flavii Arriani quae exstant omnia, vol. 2", Ed. Roos, A.G., Wirth, G. Leipzig: Teubner, 1968 (1st edn. corr.).

ΙΝΔΙΚΗ

1.1.1 Τὰ ἔξω Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὰ πρὸς ἐσπέρην ἔστε ἐπὶ ποταμὸν Κωφῆνα Ἀστακηνοὶ καὶ Ἀσσακηνοί, ἔθνεα Ἰνδικά, 1.2.1 ἐποικέουσιν, ἀλλ' οὔτε μεγάλοι τὰ σώματα, καθάπερ οἱ ἐντὸς τοῦ Ἰνδοῦ ὥκισμένοι, οὔτε ἀγαθοὶ ὡσαύτως τὸν θυμὸν οὐδὲ μέλανες ὡσαύτως τοῖς πολλοῖς Ἰνδοῖσιν. 1.3.1 οὗτοι πάσαι μὲν Ἀσσυρίοις ὑπήκοοι ἦσαν, ἔπειτα Μήδοισιν, ἐπὶ δὲ Μήδοισι Περσέων ἤκουον, καὶ φόρους ἀπέφερον Κύρῳ τῷ Καμβύσου ἐκ τῆς γῆς σφῶν, οὗς 1.4.1 ἔταξε Κύρος. Νυσαῖοι δὲ οὐκ Ἰνδικὸν γένος ἐστίν, ἀλλὰ τῶν ἅμα Διονύσῳ ἐλθόντων ἐς τὴν γῆν τὴν Ἰνδῶν, τυχὸν μὲν [καὶ] Ἑλλήνων, ὅσοι ἀπόμενοι αὐτῶν ἐγένοντο ἐν τοῖς πολέμοις οὕστινας πρὸς Ἰνδοὺς Διόνυσος 1.5.1 ἐπολέμησε, τυχὸν δὲ καὶ τῶν ἐπιχωρίων τοὺς ἐθέλοντας τοῖς Ἑλλήσι συνώκισε, τὴν τε χώραν Νυσαῖν ὠνόμασεν ἀπὸ τῆς τροφῆς τῆς Νύσης Διόνυσος καὶ τὴν πόλιν 1.6.1 αὐτὴν Νῦσαν. καὶ τὸ ὅρος τὸ πρὸς τῇ πόλει, ὅτου ἐν τῇσιν ὑπάρχεισιν ὥκισται ἡ Νῦσα, Μηρὸς κληίζεται ἐπὶ 1.7.1 τῇ συμφορῇ ἣτινι ἐχρήσατο εὐθύς γενόμενος. ταῦτα μὲν οἱ ποιεῖται ἐπὶ Διονύσῳ ἐποίησαν, καὶ ἐξηγεῖσθαι αὐτὰ 1.8.1 ὅσοι λόγιοι Ἑλλήνων ἢ βαρβάρων· ἐν Ἀσσακηνοῖσι δὲ Μάσσακα, πόλις μεγάλη, ἵναπερ καὶ τὸ κράτος τῆς γῆς ἐστὶ τῆς Ἀσσακίης· καὶ ἄλλη πόλις Πευκελαῖτις, μεγάλη καὶ αὕτη, οὐ μακρὰν τοῦ Ἰνδοῦ. ταῦτα μὲν ἔξω τοῦ 1.8.5 Ἰνδοῦ ποταμοῦ ὥκισται πρὸς ἐσπέρην ἔστε ἐπὶ τὸν 2.1.1 Κωφῆνα· τὰ δὲ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ πρὸς ἔω, τοῦτό μοι ἔστω ἡ Ἰνδῶν γῆ καὶ Ἰνδοὶ οὗτοι ἔστωσαν. ὅροι δὲ τῆς Ἰνδῶν γῆς πρὸς μὲν βορέου ἀνέμου ὁ 2.2.1 Ταῦρος τὸ ὅρος. καλεῖται δὲ οὐ Ταῦρος ἐπὶ ἐν τῇ γῇ ταύτῃ, ἀλλὰ ἄρχεται μὲν ἀπὸ θαλάσσης ὁ Ταῦρος τῆς κατὰ Παμφύλους τε καὶ Λυκίην καὶ Κίλικας παρατείνει τε ἔστω τὴν πρὸς ἔω θάλασσαν, τέμνων τὴν Ἀσίην πᾶσαν, 2.3.1 ἄλλο δὲ ἄλλη καλεῖται τὸ ὅρος, τῇ μὲν Παραπάμισος, τῇ δὲ Ἡμωδός, ἄλλη δὲ Ἴμαον κληίζεται, καὶ τυχὸν ἄλλα 2.4.1 καὶ ἄλλα ἔχει ὀνόματα. Μακεδόνες δὲ οἱ ξὺν Ἀλεξάνδρῳ στρατεύσαντες Καύκασον αὐτὸ ἐκάλεον, ἄλλον τοῦτον Καύκασον, οὐ τὸν Σκυθικόν, ὡς καὶ [τὸν] ἐπέκεινα τοῦ 2.5.1 Καυκάσου λόγον κατέχειν ὅτι ἦλθεν Ἀλέξανδρος. τὰ πρὸς ἐσπέρην δὲ τῆς Ἰνδῶν γῆς ὁ ποταμὸς ὁ Ἰνδὸς ἀπείργει ἔστω ἐπὶ τὴν μεγάλην θάλασσαν, ἵναπερ αὐτὸς κατὰ δύο στόματα ἐκδιδοί, οὐ συνεχῆ ἀλλήλοισι τὰ 2.5.5 στόματα, κατὰπερ τὰ πέντε τοῦ Ἰστροῦ ἐστὶ συνεχῆ, 2.6.1 ἀλλ' ὡς τὰ τοῦ Νείλου, ὑπ' ὧν τὸ Δέλτα ποιεῖται τὸ Αἰγύπτιον, ὧδ' ἐτι καὶ τῆς Ἰνδῶν γῆς Δέλτα ποιεῖ ὁ Ἰνδὸς ποταμός, οὐ μείον τοῦ Αἰγυπτίου, καὶ τοῦτο 2.7.1 Πάταλα

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

τῇ Ἰνδῶν γλώσση καλεῖται. τὸ δὲ πρὸς νότου τε ἀνέμου καὶ μεσημβρίας αὐτὴ ἡ μεγάλη θάλασσα ἀπείργει τὴν Ἰνδῶν γῆν, καὶ τὰ πρὸς ἑὸν ἡ αὐτὴ θά- 2.8.1 λασσα ἀπείργει. τὰ μὲν πρὸς μεσημβρίας κατὰ Πάταλά τε καὶ τοῦ Ἰνδοῦ τὰς ἐκβολὰς ὥφθη πρὸς τε Ἀλεξάνδρου καὶ Μακεδόνων καὶ πολλῶν Ἑλλήνων· τὰ δὲ πρὸς ἑὸν Ἀλέξανδρος μὲν οὐκ ἐπῆλθε τὰ [δὲ] πρὸσω ποταμοῦ 2.9.1 Ὑφάσιος, ὀλίγοι δὲ ἀνέγραψαν τὰ μέχρι ποταμοῦ Γάγγεω καὶ ἵνα τοῦ Γάγγεω αἱ ἐκβολαὶ καὶ πόλεις Παλίμ- 3.1.1 βοθρα μεγίστη Ἰνδῶν πρὸς τῶν Γάγγη. ἔμοι δὲ <Ἑρα- τοσθένης> ὁ Κυρηναῖος πιστότερος ἄλλου ἔστω, ὅτι γῆς 3.2.1 περιόδου πέρι ἔμελεν Ἑρατοσθένη. οὗτος ἀπὸ τοῦ ὄρεος τοῦ Ταύρου, ἵνα τοῦ Ἰνδοῦ αἱ πηγαί, παρ' αὐτὸν <τόν> Ἰνδὸν ποταμὸν ἰόντι ἔστε ἐπὶ τὴν μεγάλην θάλασσαν καὶ τοῦ Ἰνδοῦ τὰς ἐκβολὰς μυρίους σταδίου καὶ τρισχι- 3.3.1 λίους τὴν πλευρὴν λέγει ἐπέχειν τῆς γῆς τῆς Ἰνδῶν. ταυ- τησὶ δὲ ἀντίτορον πλευρὴν ποιεῖ τὴν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ ὄρεος παρὰ τὴν ἑῶν θάλασσαν, οὐκέτι ταύτῃ τῇ πλευρῇ ἴσσην, ἀλλὰ ἄκρην γὰρ ἀνέχειν ἐπὶ μέγα εἰσω εἰς τὸ πέ- 3.3.5 λαγος, ἐς τρισχιλίους σταδίους μάλιστα ἀνατείνουσιν τὴν ἄκρην· εἴη ἂν ὧν αὐτῷ ἡ πλευρὴ τῆς Ἰνδῶν γῆς <ῆ> πρὸς ἑὸν μυρίους καὶ ἑξακισχιλίους σταδίους ἐπέχουσα. 3.4.1 τοῦτο μὲν αὐτῷ πλάτος τῆς Ἰνδῶν γῆς συμβαίνει, μῆκος δὲ τὸ ἀπ' ἐσπέρης ἐπὶ ἑὸν ἔστε μὲν ἐπὶ πόλιν Παλίμ- βοθρα μεμετρημένον σχοίνοισι λέγει ἀναγράφειν καὶ – εἶναι γὰρ ὁδὸν βασιλῆην – τοῦτο ἐπέχειν ἐς μυ- 3.4.5 ρίους σταδίους· τὰ δὲ ἐπέκεινα οὐκέτι ὡσαύτως ἀτρεκέα· 3.5.1 φήμας δὲ ὅσοι ἀνέγραψαν, ζὺν τῇ ἄκρῃ τῇ ἀνεχούσῃ ἐς τὸ πέλαγος ἐς μυρίους σταδίους μάλιστα ἐπέχειν λέγου- σιν· εἶναι δὲ ἂν ὧν τὸ μῆκος τῆς Ἰνδῶν γῆς σταδίων 3.6.1 μάλιστα δισμυρίων. <Κτησίης> δὲ ὁ Κνίδιος τὴν Ἰνδῶν γῆν ἴσσην τῇ ἄλλῃ Ἀσίῃ λέγει, οὐδὲν λέγων, οὐδὲ <Ὀνη- σίκριτος>, τρίτην μοῖραν τῆς πάσης γῆς. <Νέαρχος> δὲ μνηῶν τεσσάρων ὁδὸν τὴν δι' αὐτοῦ τοῦ πεδίου τῆς 3.7.1 Ἰνδῶν γῆς. <Μεγασθένης> δὲ τὸ ἀπὸ ἀνατολῶν ἐς ἐσπέ- ρην πλάτος ἐστὶ τῆς Ἰνδῶν γῆς ὅ τι περ οἱ ἄλλοι μῆκος ποιοῦσι· καὶ λέγει <Μεγασθένης> μυρίων καὶ ἑξακισχι- 3.8.1 λίων σταδίων εἶναι ἵναπερ τὸ βραχύτατον αὐτοῦ. τὸ δὲ ἀπὸ ἄρκτου πρὸς μεσημβρίην, τοῦτο δὲ αὐτῷ μῆκος γί- νεται, καὶ ἐπέχει <σταδίους> τριηκοσίους καὶ δισχιλίους καὶ δισμυρίους ἵναπερ τὸ στενότατον αὐτοῦ. 3.9.1 ποταμοὶ δὲ τοσοῦδε εἰσὶν ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ ὅσοι οὐδὲ ἐν τῇ πάσῃ Ἀσίῃ. μέγιστοι μὲν ὁ Γάγγης τε καὶ ὁ Ἰν- δός, ὅτου καὶ ἡ γῆ ἐπάνυμος, ἄμφω τοῦ τε Νείλου τοῦ Αἰγυπτίου καὶ τοῦ Ἰστροῦ τοῦ Σκυθικοῦ, καὶ εἰ ἐς 3.10.1 ταὐτὸ συνέλθοι αὐτοῖσι τὸ ὕδωρ, μέζονες. δοκέειν δὲ

ἔμοιγε, καὶ ὁ Ἀκεσίνης μέζων ἐστὶ τοῦ τε Ἰστροῦ καὶ τοῦ Νείλου, ἵναπερ παραλαβὼν ἅμα τὸν τε Ὑδάσπεα καὶ τὸν Ὑδραῶτα καὶ τὸν Ὑφασιν ἐμβάλλει ἐς τὸν Ἰνδόν, ὡς 3.10.5 καὶ τριάκοντα αὐτῷ στάδια τὸ πλάτος ταύτῃ εἶναι· καὶ τυχὸν καὶ ἄλλοι πολλοὶ μέζονες ποταμοὶ ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ ῥέουσιν. 4.1.1 ἀλλὰ οὐ μοι ἀτρεκέες ὑπὲρ τῶν ἐπέκεινα Ὑφάσιος ποταμοῦ ἰσχυρίσασθαι, ὅτι οὐ πρόσω τοῦ Ὑφάσιος ἦλθεν 4.2.1 Ἀλέξανδρος. αὐτοῖν δὲ τοῖν μεγίστοις ποταμοῖν τοῦ τε Γάγγεω καὶ τοῦ Ἰνδοῦ τὸν Γάγγεα μεγέθει πολὺ τι ὑπερφέρειν <Μεγασθένης> ἀνέγραψε, καὶ ὅσοι ἄλλοι 4.3.1 μνήμην τοῦ Γάγγεω ἔχουσιν· αὐτὸν τε γὰρ μέγαν ἀνίς- χειν ἐκ τῶν πηγέων, δέχεσθαι τε ἐς ἐωυτὸν τὸν τε Καϊνὰν ποταμὸν καὶ τὸν Ἑρρινοβόαν καὶ τὸν Κοσσό- ανον, πάντας πλωτούς, ἔτι δὲ Σῶνόν τε ποταμὸν καὶ 4.4.1 Σιττόκατιν καὶ Σολόματιν, καὶ τούτους πλωτούς, ἐπὶ δὲ Κονδοχάτην τε καὶ Σάμβον καὶ Μάγωνα καὶ Ἀγό-

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

ρανιν καὶ Ὠμαλιν. ἐμβάλλουσι δὲ ἐς αὐτὸν Κομμινά- σης τε μέγας ποταμὸς καὶ Κάκουθις καὶ Ἀνδάματις ἐξ 4.5.1 ἔθνεος Ἰνδικοῦ τοῦ Μαδυανδινῶν ῥέων, καὶ ἐπὶ τού- τοισιν Ἄμυστις παρὰ πόλιν Καταδούπην, καὶ Ὀξύμαγισ ἐπὶ <τοῖσι> Παζάλαις καλουμένοισι· καὶ Ἐρέννεσις ἐν 4.6.1 Μάθαις, ἔθνη Ἰνδικῶ, συμβάλλει τῷ Γάγγῃ. τού- των λέγει <Μεγασθένης> οὐδένα εἶναι τοῦ Μαϊάνδρου 4.7.1 ἀποδέοντα, ἵνα περ ναυσίπορος ὁ Μαϊάνδρος. εἶναι ὦν τὸ εὖρος τῷ Γάγγῃ, ἔνθα περ αὐτὸς ἐωυτοῦ στεινότατος, ἐς ἑκατὸν σταδίους· πολλαχῇ δὲ καὶ λιμνάζειν, ὡς μὴ ἀποπτον εἶναι τὴν πέρην χώραν, ἵνα περ χθαμαλὴ τέ 4.8.1 ἐστὶ καὶ οὐδαμῇ γηλόφοισιν ἀνεστηκυῖα. τῷ δὲ Ἰνδῷ ἐς ταῦτόν ἔρχεται. Ὑδραώτης μὲν ἐν Καμβισθόλοις, παρει- ληφῶς τόν τε Ὑφασιν ἐν Ἀστρύβαις καὶ τὸν Σαράγγην ἐκ Κηκαίων καὶ τὸν Σύδρον ἐξ Ἀττακηνῶν <ῥέοντα>, ἐς 4.9.1 Ἀκεσίνην ἐμβάλλει. Ὑδάσπης δὲ ἐν Συδράκαις ἄγων ἅμα οἱ τὸν Σίναρον ἐν Ἀρίσπησιν ἐς τὸν Ἀκεσίνην ἐκ- 4.10.1 διδοὶ καὶ οὗτος. ὁ δὲ Ἀκεσίνης ἐν Μαλλοῖς ζυμβάλλει τῷ Ἰνδῷ· καὶ Τούταπος δὲ μέγας ποταμὸς ἐς τὸν Ἀκε- σίνην ἐκδιδόι. τούτων ὁ Ἀκεσίνης ἐμ- πλησθεὶς καὶ τῇ ἐπικλήσει ἐκνικήσας αὐτὸς τῷ ἐωυτοῦ ἤδη ὀνόματι ἐς- 4.11.1 βάλλει ἐς τὸν Ἰνδόν. Κωφὴν δὲ ἐν Πευκελαΐτιδι, ἅμα οἱ ἄγων Μαλάμαντόν τε καὶ Σόαστον καὶ Γαροϊάν, ἐκ- 4.12.1 διδοὶ ἐς τὸν Ἰνδόν. καθύπερθε δὲ τουτέων Πάρεννος καὶ Σάπαρνος, οὐ πολὺ διέχοντες, ἐμβάλλουσιν ἐς τὸν Ἰνδόν. Σόανος δὲ ἐκ τῆς ὀρεινῆς τῆς Ἀβισσαρέων ἔρη- μος ἄλλου ποταμοῦ ἐκδιδόι ἐς αὐτόν. καὶ τουτέων τοὺς 4.13.1 πολλοὺς <Μεγασθένης> λέγει ὅτι πλωτοὶ εἰσιν. οὐκ οὖν ἀπιστίαν χρὴ ἔχειν ὑπὲρ τε τοῦ Ἰνδοῦ καὶ τοῦ Γάγγεω μὴδὲ συμβλητοὺς εἶναι αὐτοῖσι τόν τε Ἰστρον καὶ τοῦ Νείλου 4.14.1 τὸ ὕδωρ. ἐς μὲν γε τὸν Νεῖλον οὐδένα ποταμὸν ἐκδι- δόντα ἴσμεν, ἀλλ' ἀπ' αὐτοῦ διώρυχας τετμημένας κατὰ 4.15.1 τὴν χώραν τὴν Αἰγυπτίην· ὁ δὲ Ἰστρος ὀλίγος μὲν ἀνίσχει ἀπὸ τῶν πηγέων, δέχεται δὲ πολλοὺς ποταμούς, ἀλλὰ οὔτε πλήθει ἴσους τοῖς Ἰνδῶν ποταμοῖσιν, οἱ ἐς τὸν Ἰνδόν καὶ τὸν Γάγγην ἐκδιδούσιν, πλωτοὺς δὲ 4.15.5 δὴ καὶ κάρτα ὀλίγους, ὦν τοὺς μὲν αὐτὸς ἰδὼν οἶδα, τὸν 4.16.1 Ἐνον τε καὶ τὸν Σάον. Ἐνος μὲν ἐν μεθορίῳ τῆς Νω- ρικῶν καὶ Ραιτῶν γῆς μίγνυται τῷ Ἰστρῷ, ὁ δὲ Σάος κατὰ Παίονας. ὁ δὲ χῶρος, ἵνα περ συμβάλλουσιν οἱ πο- ταμοί, Ταυροῦνος καλεῖται. ὅστις δὲ καὶ ἄλλον οἶδε 4.16.5 ναυσίπορον τῶν ἐς τὸν Ἰστρον ἐκδιδόντων, ἀλλὰ οὐ πολλοὺς που οἶδε. 5.1.1 τὸ δὲ αἶτιον ὅστις ἐθέλει φράζειν τοῦ πλήθεός τε καὶ μεγέθεος τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν, φραζέτω· ἐμοὶ δὲ καὶ 5.2.1 ταῦτα ὡς ἀκοὴ ἀναγεγράφθω. ἐπεὶ καὶ ἄλλων πολλῶν ποταμῶν οὐνόματα <Μεγασθένης> ἀνέγραψεν, οἱ ἔξω τοῦ Γάγγεω τε καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἐκδιδούσιν ἐς τὸν ἐφ' ὃν τε καὶ μεσημβρινὸν τὸν ἔξω πόντον, ὥστε τοὺς πάντας 5.2.5 ὀκτὼ καὶ πενήκοντα λέγει ὅτι εἰσὶν Ἰνδοὶ ποταμοί, 5.3.1 ναυσίποροι πάντες. ἀλλ' οὐδὲ <Μεγασθένης> πολλὴν δοκεῖ μοι ἐπελθεῖν τῆς Ἰνδῶν χώρας, πλήν γε <δὴ> ὅτι πλεῖνα ἢ οἱ ξὺν Ἀλεξάνδρῳ τῷ Φιλίππου ἐπελθόντες· συγγενέσθαι γὰρ Σανδροκόττῳ λέγει, τῷ μεγίστῳ βασιλεῖ 5.4.1 Ἰνδῶν, καὶ Πώρου ἔτι τούτῳ μείζονι. οὗτος ὦν ὁ <Μεγα- σθένης> λέγει, οὔτε Ἰνδοὺς ἐπιστρατεῦσαι οὐδαμοῖσιν ἀν- 5.5.1 θρώποισιν, οὔτε Ἰνδοῖσιν ἄλλους ἀνθρώ- πους, ἀλλὰ Σέσωστρον μὲν τὸν Αἰγύπτιον, τῆς Ἀσίας καταστρεψά- μενον τὴν πολλήν, ἔσπε ἐπὶ τὴν Εὐρώπην σὺν στρατιῇ 5.6.1 ἐλάσαντα ὀπίσω ἀπονοστήσαι, Ἰδάνθυρσον δὲ τὸν Σκύ- θεα ἐκ Σκυθίας ὀρμηθέντα πολλὰ μὲν τῆς Ἀσίης ἔθνεα καταστρέψασθαι, ἐπελθεῖν δὲ καὶ τὴν Αἰγυπτίων γῆν 5.7.1 κρατέοντα. Σεμίραμιν δὲ τὴν Ἀσσυρίην ἐπιχειρεῖν μὲν στέλλεσθαι εἰς

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Ἰνδούς, ἀποθανεῖν δὲ πρὶν τέλος ἐπιθεῖναι τοῖς βουλευμασιν. ἀλλὰ Ἀλέξανδρον γὰρ στρατεῦσαι ἐπ' 5.8.1 Ἰνδούς μούνον. καὶ πρὸ Ἀλεξάνδρου Διονύσου μὲν περί πολλός λόγος κατέχει ὡς καὶ τούτου στρατεύσαντος ἐς Ἰνδούς καὶ καταστρεφάμενου Ἰνδούς, Ἡρακλέος δὲ περί 5.9.1 οὐ πολλός. Διονύσου μὲν γε καὶ Νῦσα πόλις μνήμα οὐ φαῦλον τῆς στρατηλασίης, καὶ ὁ Μηρὸς τὸ ὄρος, καὶ ὁ κισσὸς ὅτι ἐν τῷ ὄρει τούτῳ φύεται, καὶ αὐτοὶ οἱ Ἰνδοὶ ὑπὸ τυμπάνων τε καὶ κυμβάλων στελλόμενοι ἐς τὰς 5.9.5 μάχας, καὶ ἐσθῆς αὐτοῖσι κατάστικτος εἶσθα, κατὰ περ

τοῦ Διονύσου τοῖσι βάκχοισιν· Ἡρακλέος δὲ οὐ πολλὰ ὑπομνήματα. ἀλλὰ τὴν Ἀορνὸν γὰρ πέτρην, ἥντινα Ἀλέξανδρος βίῃ ἐχειρώσατο, ὅτι Ἡρακλῆς οὐ δυνατὸς ἐγένετο ἐξελεῖν, Μακεδονικὸν δοκέει μοί τι κόμπασμα, 5.10.5 κατὰ περ ὧν καὶ τὸν Παραπάμισον Καύκασον ἐκάλεον Μακεδόνες, οὐδὲν τι προσήκοντα τούτον τῷ Καυκάσῳ. 5.11.1 καὶ τι καὶ ἄντρον ἐπιφρασθέντες ἐν Παραπαμισάδαισι, τούτο ἔφασαν ἐκεῖνο εἶναι τοῦ Προμηθέως τοῦ Τιτηνὸς τὸ ἄντρον, ἐν ὧν ἐκρέματο ἐπὶ τῇ κλοπῇ τοῦ πυρός. 5.12.1 καὶ δὴ καὶ ἐν Σίβαισιν, Ἰνδικῶ γένει, ὅτι δορὰς ἀμπε-χομένους εἶδον τοὺς Σίβας, ἀπὸ τῆς Ἡρακλέους στρα-τηλασίης ἔφασκον τοὺς ὑπολειφθέντας εἶναι τοὺς Σίβας· καὶ γὰρ καὶ σκυτάλην φορέουσιν τε οἱ Σίβαι καὶ τῆσι 5.12.5 βουσὶν αὐτῶν ῥόπαλον ἐπικέκαυται, καὶ τούτο ἐς μνήμην 5.13.1 ἀνέφερον τοῦ ῥοπάλου τοῦ Ἡρακλέους. εἰ δὲ τῷ πιστὰ ταῦτα, ἄλλος ἂν οὗτος Ἡρακλῆς εἴη, οὐχ ὁ Θηβαῖος ἢ ὁ Τύριος [οὗτος] ἢ ὁ Αἰγύπτιος, ἢ τις καὶ κατὰ τὴν ἄνω χώραν οὐ πόρρω τῆς Ἰνδῶν γῆς ὠκισμένος μέγας 5.13.5 βασιλεύς. 6.1.1 ταῦτα μὲν μοι ἐκβολὴ ἔστω τοῦ λόγου ἐς τὸ μὴ πιστὰ φαίνεσθαι ὅσα ὑπὲρ τῶν ἐπέκεινα τοῦ Ἰφάσιος πο-ταμοῦ Ἰνδῶν μετεξέτεροι ἀνέγραψαν· (ἔστε γὰρ ἐπὶ τὸν Ἰφασιν οἱ τῆς Ἀλεξάνδρου στρατηλασίης μετασχόντες 6.2.1 οὐ πάντῃ ἀπιστοὶ εἰσιν)· ἐπεὶ καὶ τόδε λέγει <Μεγα-σθένης> ὑπὲρ ποταμοῦ Ἰνδικοῦ, Σίλαν μὲν εἶναι οἱ ὄνομα, ῥέειν δὲ ἀπὸ κρήνης ἐπωνύμου τοῦ ποταμοῦ διὰ τῆς χώρας τῆς Σιλαίων, καὶ τούτων ἐπωνύμων τοῦ πο-6.3.1 ταμοῦ τε καὶ τῆς κρήνης, τὸ δὲ ὕδωρ παρέχεσθαι τοι-όνδε. οὐδὲν εἶναι ὧν ἀντέχει τὸ ὕδωρ, <καὶ> οὔτε τι νήχεσθαι ἐπ' αὐτοῦ οὔτε τι ἐπιπλεῖν, ἀλλὰ πάντα γὰρ ἐς βυσσὸν δύνειν· οὕτω τι ἀμενηνότερον πάντων εἶναι 6.3.5 τὸ ὕδωρ ἐκεῖνο καὶ ἡρωειδέστερον. 6.4.1 ἔεται δὲ ἡ Ἰνδῶν γῆ τοῦ θέρεος, μάλιστα μὲν τὰ ὄρεα, Παραπάμισός τε καὶ ὁ Ἡμωδὸς καὶ τὸ Ἰμαϊκὸν ὄρος, καὶ ἀπὸ τούτων μεγάλοι καὶ θολεροὶ οἱ ποταμοὶ ῥέουσιν. 6.5.1 ἔεται δὲ τοῦ θέρους καὶ τὰ πεδία τῶν Ἰνδῶν, ὥστε λιμνάζει τὰ πολλὰ αὐτέων. καὶ ἔφυγεν ἡ Ἀλεξάνδρου στρατιὴ ἀπὸ τοῦ Ἀχεσίνου ποταμοῦ μέσου θέρεος, ὑπερ-6.6.1 βαλόντος τοῦ ὕδατος ἐς τὰ πεδία. ὥστε ἀπὸ τῶνδε ἔξεστι τεκμηριοῦσθαι καὶ τοῦ Νείλου τὸ πάθημα τοῦτο, ὅτι εἰκὸς [εἶναι] ἕσθαι τὰ Αἰθιοπῶν ὄρεα τοῦ θέρεος, καὶ ἀπ' ἐκείνων ἐμπιπλάμενον τὸν Νεῖλον ὑπερβάλλειν ὑπὲρ 6.7.1 τὰς ὄχθας ἐς τὴν γῆν τὴν Αἰγυπτίην. θολερὸς ὦν καὶ οὗτος ῥέει ἐν τῇδε τῇ ᾠρῃ, ὡς οὔτε ἂν ἀπὸ χιόνος τηκο-μένης ἔρρεεν, οὔτε εἰ πρὸς τῶν ᾠρῃ θέρεος πνεόντων ἐτησίαν ἀνέμων ἀνεχόπτετό οἱ τὸ ὕδωρ· ἄλλως τε οὐδὲ 6.8.1 χιονόβλητα εἴη ἂν τὰ Αἰθιοπῶν ὄρεα ὑπὸ καύματος. ἕσθαι δὲ κατὰ περ τὰ Ἰνδῶν οὐκ ἔξω ἐστὶ τοῦ εἰκότος, ἐπεὶ καὶ τᾶλλα <ἡ> Ἰνδῶν γῆ οὐκ ἀπέοικε τῆς Αἰθιοπίας καὶ οἱ ποταμοὶ οἱ Ἰνδοὶ ὁμοίως τῷ Νείλῳ τῷ Αἰθιοπικῷ τε 6.8.5 καὶ Αἰγυπτίῳ κροκοδείλους τε φέρουσιν, ἔστιν δὲ οἱ αὐτῶν καὶ ἰχθύας καὶ ἄλλα κήτεια ὅσα ὁ Νεῖλος πλήν

ἵππου τοῦ ποταμίου, – <Ὀνησίκριτος> δὲ καὶ τοὺς 6.9.1 ἵππους τοὺς ποταμίους λέγει ὅτι φέρουσι – τῶν τε ἀν-θρώπων αἱ ἰδέαι οὐ πάντῃ ἀπάδουσιν αἱ Ἰνδῶν τε καὶ Αἰθίοπων. οἱ μὲν πρὸς νότου ἀνέμου Ἰνδοὶ τοῖς Αἰθίοφι μᾶλλον τι εἰκόασι μέλανές τε ἰδέσθαι εἰσὶ καὶ ἡ κόμη 6.9.5 αὐτοῖς μέλαινα, πλὴν γε δὴ ὅτι σιμοὶ οὐχ ὡσαύτως οὐδὲ οὐλόκρανοι ὡς Αἰθίοπες. οἱ δὲ βορειότεροι τούτων κατ' Αἰγυπτίους μάλιστα ἀν εἶεν τὰ σώματα. 7.1.1 ἔθνεα δὲ Ἰνδικὰ εἴκοσι καὶ ἑκατὸν τὰ ἅπαντα λέγει <Μεγασθένης>, δυοῖν δέοντα. καὶ πολλὰ μὲν εἶναι ἔθνεα Ἰνδικὰ καὶ αὐτὸς συμφέρομαι <Μεγασθένης>, τὸ δὲ ἀτρεκές οὐκ ἔχω εἰκόσαι ὅπως ἐκμαθὼν ἀνέγραψεν, οὐδὲ 7.1.5 πολλοστὸν μέρος τῆς Ἰνδῶν γῆς ἐπελθὼν, οὐδὲ ἐπιμι- 7.2.1 ξίης πᾶσι τοῖς γένεσιν εὐούσης ἐς ἀλλήλους. πάλαι μὲν δὴ νομάδας εἶναι Ἰνδοὺς, καθάπερ Σκυθῶν τοὺς οὐκ ἀροτῆρας, οἱ ἐπὶ τῇσιν ἀμάξῃσι πλανώμενοι ἄλλοτε ἄλ- λην τῆς Σκυθίας ἀμείβουσιν, οὔτε πόληας οἰκούντες οὔτε 7.3.1 ἰερὰ θεῶν σέβοντες. οὕτω μὴδὲ Ἰνδοῖσι πόληας εἶναι μὴδὲ ἰερὰ θεῶν δεδομημένα, ἀλλ' ἀμπίσχεσθαι μὲν δο- ρὰς θηρίων ὅσων κατακάνοιεν, σιτέεσθαι δὲ τῶν δέν- δρέων τὸν φλοιόν. καλέεσθαι δὲ τὰ δένδρεα ταῦτα τῇ 7.3.5 Ἰνδῶν φωνῇ τάλα, καὶ φύεσθαι ἐπ' αὐτῶν, καθάπερ τῶν 7.4.1 φοινίκων ἐπὶ τῇσι κορυφῇσιν, οἷα περ τολύπας. σιτέεσθαι δὲ καὶ τῶν θηρίων ὅσα ἐλοῖεν ὡμοφαγέοντας, πρὶν γε 7.5.1 δὴ Διόνυσον ἐλθεῖν ἐς τὴν χώραν τῶν Ἰνδῶν. Διόνυσον δὲ ἐλθόντα, ὡς καρτερός ἐγένετο Ἰνδῶν, πόληας τε οἰκίσαι καὶ νόμους θέσθαι τῇσι πόλεσιν, οἶνου τε δο- τῆρα Ἰνδοῖς γενέσθαι καθάπερ Ἑλλήσι, καὶ σπεῖρειν δι- 7.6.1 δάξαι τὴν γῆν διδόντα αὐτὸν σπέρματα, ἢ οὐκ ἐλάσαντος ταύτῃ Τριπτολέμου, ὅτε περ ἐκ Δήμητρος ἐστάλη σπεί- ρειν τὴν γῆν πᾶσαν, ἢ πρὸ Τριπτολέμου τις οὗτος Διό- νυσος ἐπελθὼν τὴν Ἰνδῶν γῆν σπέρματά σφισιν 7.7.1 ἔδωκε καρποῦ τοῦ ἡμέρου. βόας τε ὑπ' ἄροτρον ζεύξαι Διόνυσον πρῶτον καὶ ἀροτῆρας ἀντὶ νομάδων ποιῆσαι Ἰνδῶν τοὺς πολλοὺς καὶ ὅπλιστα ὅπλοισι τοῖσιν ἀρηίοισι. 7.8.1 καὶ θεοὺς σέβειν ὅτι ἐδίδαξε Διόνυσος ἄλλους τε καὶ μάλιστα δὴ ἑαυτὸν κυμβαλίζοντας καὶ τυμπανίζοντας· καὶ ὄρχησιν δὲ ἐκδιδάξαι τὴν σατυρικὴν, τὸν κόρδακα

παρ' Ἑλλήσι καλούμενον, καὶ κομᾶν [Ἰνδοὺς] τῷ θεῷ μιτρηφορέειν τε ἀναδείξαι καὶ μύ- ρων ἀλοιφὰς ἐκδιδάξαι, ὥστε καὶ εἰς Ἀλέξανδρον ἔτι ὑπὸ κυμβάλων τε καὶ τυμπάνων ἐς τὰς μάχας Ἰνδοὶ καθίσταντο. 8.1.1 ἀπιόντα δὲ ἐκ τῆς Ἰνδῶν γῆς, ὡς οἱ ταῦτα κεκοσμέατο, καταστήσαι βασιλέα τῆς χώρας Σπατέμβαν, τῶν ἐταίρων ἕνα τὸν βακχιδέστατον· τελευ- τήσαντος δὲ Σπατέμβαν τὴν βασιλικὴν ἐκδέξασθαι Βουδύαν τὸν τούτου παῖδα. 8.2.1 καὶ τὸν μὲν πεντήκοντα καὶ δύο ἔτεα βασιλεῦσαι Ἰνδῶν, τὸν πατέρα, τὸν δὲ παῖδα εἴκοσιν ἔτεα. καὶ τούτου 8.3.1 παῖδα ἐκδέξασθαι τὴν βασιλικὴν Κραδεύαν, καὶ τὸ ἀπὸ τοῦδε τὸ πολὺ μὲν κατὰ γένος ἀμείβειν τὴν βασιλικὴν, παῖδα παρὰ πατρός ἐκδεχόμενον· εἰ δὲ ἐκλείποι τὸ γένος, οὕτω δὴ ἀριστίνδην καθίστασθαι Ἰνδοῖσι βασιλέας. 8.4.1 Ἡρακλέα δέ, ὄντινα ἐς Ἰνδοὺς ἀφικέσθαι λόγος κατέχει, 8.5.1 παρ' αὐτοῖσιν Ἰνδοῖσι γηγενέα λέγεσθαι. τούτον τὸν Ἡρακλέα μάλιστα πρὸς Σουρασηνῶν γεραίρεσθαι, Ἰν- δικοῦ ἔθνεος, ἵνα δύο πόλεις μεγάλαι, Μέθορά τε καὶ Κλει- σόβορα· καὶ ποταμὸς Ἰωμάνης πλωτὸς διαρρεῖ τὴν 8.6.1 χώραν αὐτῶν· τὴν σκευὴν δὲ οὗτος ὁ Ἡρακλῆς ἦντινα ἐφόρει <Μεγασθένης> λέγει ὅτι ὁμοίην τῷ Θηβαίῳ Ἡρακλεῖ, ὡς αὐτοὶ Ἰνδοὶ ἀπηγέονται. καὶ τούτῳ ἄρσε- νας μὲν παῖδας πολλοὺς κάρτα γενέσθαι ἐν τῇ Ἰνδῶν 8.6.5 γῇ – πολλῇσι γὰρ δὴ γυναῖξιν ἐς γάμον ἐλθεῖν καὶ τούτον τὸν Ἡρακλέα – , θυγατέρα δὲ μου-

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

νογενήην. 8.7.1 οὐνομα δὲ εἶναι τῇ παιδί Πανδαίην, καὶ τὴν χώραν, ἵνα τε ἐγένετο καὶ ἥστινος ἐπέτρεψεν αὐτῇ ἄρχειν Ἡρακλῆς, Πανδαίην <καλεῖσθαι> τῆς παιδὸς ἐπώνυμον. καὶ ταύτη ἐλέφαντας μὲν γενέσθαι ἐκ τοῦ πατρὸς ἐς 8.7.5 πεντακοσίους, ἵππων δὲ ἐς τετρακισχίλιν, πεζῶν δὲ ἐς 8.8.1 τὰς τρεῖς καὶ δέκα μυριάδας. καὶ τάδε μετεξέτεροι Ἰνδῶν περὶ Ἡρακλέους λέγουσιν, ἐπελθόντα αὐτὸν πᾶσαν γῆν καὶ θάλασσαν καὶ καθήραντα ὅτι περ κακόν, καινὸν 8.9.1 εἶδος ἐξευρεῖν ἐν τῇ θαλάσῃ κόσμου γυναικίῳ, ὄντινα καὶ εἰς τοῦτο ἔτι οἱ τε ἐξ Ἰνδῶν τῆς χώρας τὰ ἀγώνιμα παρ' ἡμέας ἀγινέοντες σπουδῇ ὠνεόμενοι ἐκκομίζουσι, καὶ Ἑλλήνων δὲ πάλαι καὶ Ῥωμαίων νῦν ὅσοι πολυ- 8.9.5 κτέανσι καὶ εὐδαίμονες μέζονι ἔτι σπουδῇ ὠνεύονται, τὸν μαργαρίτην δὴ τὸν θαλάσσιον οὕτω τῇ Ἰνδῶν 8.10.1 γλώσῃ καλεόμενον. τὸν γὰρ Ἡρακλέα, ὡς καλόν οἱ ἐφάνη τὸ φόρημα, ἐκ πάσης τῆς θαλάσσης ἐς τὴν Ἰνδῶν γῆν συναγινέειν τὸν μαργαρίτην δὴ τοῦτον, τῇ θυγατρὶ 8.11.1 τῇ ἑωυτοῦ εἶναι κόσμον. καὶ λέγει <Μεγασθένης>, θηρεύεσθαι τὴν κόγχην αὐτοῦ δικτύοις, νέμεσθαι δ' ἐν τῇ θαλάσῃ κατὰ ταῦτο πολλὰς κόγχας, κατὰπερ τὰς μελίσσας. καὶ εἶναι γὰρ καὶ τοῖσι μαργαρίτησι βασιλέα 8.12.1 ἢ βασιλίσσαν, ὡς τῇσι μελίσσησι. καὶ ὅστις μὲν ἐκείνον κατ' ἐπιτυχίην συλλάβοι, τοῦτον δὲ εὐπετέως περιβάλλειν καὶ τὸ ἄλλο σμῆνος τῶν μαργαριτῶν· εἰ δὲ διαφύγοι σφᾶς ὁ βασιλεὺς, τούτῳ δὲ οὐκέτι θηρατοὺς εἶναι τοὺς 8.12.5 ἄλλους. τοὺς ἐλόντας δὲ περιορᾶν κατασαπῆναί σφισι 8.13.1 τὴν σάρκα, τῷ δὲ ὁστέῳ ἐς κόσμον χρῆσθαι. καὶ εἶναι γὰρ καὶ παρ' Ἰνδοῖσι τὸν μαργαρίτην τριστάσιον κατὰ τιμὴν πρὸς χρυσίον τὸ ἀπεφθον, καὶ τοῦτο ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ ὀρυσσόμενον. 9.1.1 ἐν δὲ τῇ χώρῃ ταύτῃ, ἵνα ἐβασίλευσεν ἡ θυγάτηρ τοῦ Ἡρακλέος, τὰς μὲν γυναικάς ἐπταέτεας εἰσάσας ἐς ὥρην γάμου ἰέναι, τοὺς δὲ ἄνδρας τεσσαράκοντα ἔτεα 9.2.1 τὰ πλεῖστα βιώσκεσθαι. καὶ ὑπὲρ τοῦτου λεγόμενον λόγον εἶναι παρὰ Ἰνδοῖσιν. Ἡρακλέα, ὀψιγόνου οἱ γε- νομένης τῆς παιδὸς, ἐπεὶ τε δὴ ἐγγὺς ἔμαθεν ἑαυτῷ εἶσσαν τὴν τελευταίην, οὐκ ἔχοντα ὅτῳ ἀνδρὶ ἐκδῶ τὴν 9.2.5 παιδα ἑωυτοῦ ἐπαξίῳ, αὐτὸν μιγῆναι τῇ παιδί ἐπταετεί εἰσῶσῃ, ὡς γένος ἐξ οὗ τε κα- κείνης ὑπολείπεσθαι Ἰνδῶν 9.3.1 βασιλέας. ποιῆσαι ὦν αὐτὴν Ἡρακλέα ὥραϊν γάμου· καὶ ἐκ τοῦδε ἅπαν τὸ γένος τοῦτο ὅτου ἡ Πανδαίη 9.4.1 ἐπῆρξε, ταῦτόν τοῦτο γέρας ἔχειν παρὰ Ἡρακλέος. ἐμοὶ δὲ δοκεῖ, εἴπερ ὦν τὰ ἐς τοσόνδε ἄτοπα Ἡρακλῆς οἷός τε ἦν ἐξεργάζεσθαι, καὶ αὐτὸν ἀποφῆναι μακροβιώτερον, 9.5.1 ὡς ὥραϊν μιγῆναι τῇ παιδί. ἀλλὰ γὰρ εἰ ταῦτα ὑπὲρ τῆς ὥρης τῶν ταύτῃ παίδων ἀτρεκέα ἐστίν, ἐς ταῦτόν φέρειν δοκεῖ ἔμοιγε ἐς ὅτι περ καὶ <τὰ> ὑπὲρ τῶν ἀνδρῶν τῆς ἡλικίης ὅτι τεσσαρακοντούτεες ἀποθνήσκουσιν οἱ πρε- 9.6.1 σβύτατοι αὐτῶν. οἷς γὰρ τό τε γῆρας τοσῶδε ταχύτερον ἐπέρχεται καὶ ὁ θάνατος ὁμοῦ τῷ γήρῳ, πάν- τως που καὶ 9.7.1 ἡ ἀκμὴ πρὸς λόγον τοῦ τέλεος ταχυτέρη ἐπανθῆει. ὥστε τριακοντούτεες μὲν ὠμογέροντες ἂν που εἶεν αὐτοῖσιν οἱ ἄνδρες, εἴκοσι δὲ ἔτεα γεγονότες οἱ ἔξω ἡβης νεηνί- σκοι, ἡ δὲ ἀκροτάτῃ ἡβῃ ἀμφὶ τὰ πεντεκαίδεκα ἔτεα· καὶ 9.7.5 τῇσι γυναιξὶν ὥρῃ τοῦ γάμου κατὰ λόγον ἂν οὕτω ἐς 9.8.1 τὰ ἐπτὰ ἔτεα συμβαίνοι. καὶ γὰρ τοὺς καρπούς ἐν ταύτῃ τῇ χώρῃ πεπαίνεσθαι τε ταχύτερον [μὲν] τῆς ἄλλης αὐτὸς οὗτος <Μεγασθένης> ἀνέγραψεν καὶ φθίνειν τα- χύτερον. 9.9.1 ἀπὸ μὲν δὴ Διονύσου βασιλέας ἡρίθμεον Ἰνδοὶ ἐς Σανδρόκοττον τρεῖς καὶ πεντήκοντα καὶ ἑκατόν, ἔτεα δὲ δύο καὶ τεσσαράκοντα καὶ ἑξακισχίλια· ἐν δὲ τούτοις τρεῖς

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

τὸ πᾶν εἰς ἐλευθερίην ***, τὴν δὲ καὶ ἐς τριακό- 9.10.1 σια, τὴν δὲ εἴκοσιν τε ἐτέων καὶ ἑκατόν. πρεσβύτερόν τε Διόνυσον Ἡρακλέος δέκα καὶ πέντε γενεῇσιν Ἰνδοὶ λέγουσιν· ἄλλον δὲ οὐδένα ἐμβαλεῖν ἐς γῆν τὴν Ἰνδῶν

ἐπὶ πολέμῳ, οὐδὲ Κῦρον τὸν Καμβύσεω, καίτοι ἐπὶ 9.10.5 Σκύθας ἐλάσαντα καὶ τᾶλλα πολυπραγμονέστατον δὴ τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν βασιλέων γενόμενον τὸν Κῦρον. 9.11.1 ἀλλὰ Ἀλέξανδρον γὰρ ἐλθεῖν τε καὶ κρατῆσαι [πάντων] τοῖς ὅπλοις ὅσους γε δὴ ἐπῆλθε· καὶ ἂν καὶ πάντων κρα- 9.12.1 τῆσαι, εἰ ἡ στρατιὴ ἤθελεν. οὐ μὲν δὴ οὐδὲ Ἰνδῶν τινὰ ἔξω τῆς οἰκείης σταλῆναι ἐπὶ πολέμῳ διὰ δικαιοσύνην. 10.1.1 λέγεται δὲ καὶ τάδε, μνημεῖα ὅτι Ἰνδοὶ τοῖς τελευ- τήσασιν οὐ ποιεῖουσιν, ἀλλὰ τὰς ἀρετὰς γὰρ τῶν ἀνδρῶν ἱκανὰς ἐς μνήμην τίθενται τοῖσιν ἀποθανούσι καὶ τὰς 10.2.1 ᾧδὰς αἱ αὐτοῖσιν ἐπάδονται. πόλεων δὲ καὶ ἀριθμὸν οὐκ εἶναι ἂν ἀτρεκέες ἀναγράψαι τῶν Ἰνδικῶν ὑπὸ πλήθεος· ἀλλὰ γὰρ ὅσαι παραποτάμια αὐτέων ἢ παραθαλάσσιαι, 10.3.1 ταύτας μὲν ξυλῖνας ποιεῖσθαι· οὐ γὰρ ἂν ἐκ πλίνθου ποιεομένης διαρκέσαι ἐπὶ χρόνον τοῦ τε ὕδατος ἕνεκα τοῦ ἐξ οὐρανοῦ καὶ ὅτι οἱ ποταμοὶ αὐτοῖσιν ὑπερβάλ- λοντες ὑπὲρ τὰς ὄχθας ἐμπιμπλάσι τοῦ ὕδατος τὰ πεδία. 10.4.1 ὅσαι δὲ ἐν ὑπερδεξιῶν τε καὶ μετεώροις τόποισι καὶ τούτοις φιλοῖσιν ὠκισμένοι εἰσὶ, ταύτας δὲ ἐκ πλίνθου 10.5.1 τε καὶ πηλοῦ ποιεῖσθαι. μεγίστην δὲ πόλιν Ἰνδοῖσιν εἶναι <τὴν> Παλίμβοθρα καλεομένην, ἐν τῇ Πρασιῶν γῇ, ἵνα αἱ συμβολαὶ εἰσὶ τοῦ τε Ἐρανοβοῶτα ποταμοῦ καὶ τοῦ Γάγγεω· τοῦ μὲν Γάγγεω, τοῦ μεγίστου ποταμῶν· 10.5.5 ὁ δὲ Ἐρανοβοῶτας τρίτος μὲν ἂν εἴη τῶν Ἰνδῶν ποτα- μῶν, μέζων δὲ τῶν ἄλλῃ καὶ οὗτος, ἀλλὰ ξυγχαῖρει αὐτὸς τῷ Γάγγει, ἐπειδὴν ἐμβάλλῃ ἐς αὐτὸν τὸ ὕδωρ. 10.6.1 καὶ λέγει <Μεγασθένης> μῆκος μὲν ἐπέχει τὴν πόλιν καθ' ἑκατέρην τὴν πλευρὴν, ἵνα περ μακροτάτῃ αὐτῇ ἐωυτῆς ὠκισται, ἐς ὀγδοήκοντα σταδίους, τὸ δὲ πλάτος 10.7.1 ἐς πεντεκαίδεκα. τάφρον δὲ περιβεβλησθαι τῇ πόλει τὸ εὖρος ἐξάπλεθρον, τὸ δὲ βάθος τριήκοντα πήχεων· πύρ- γους δὲ ἐβδομήκοντα καὶ πενταχοσίους ἔχειν τὸ τεῖχος 10.8.1 καὶ πύλας τέσσαρας καὶ ἐξήκοντα. εἶναι δὲ καὶ τὸδε μέγα ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, πάντας Ἰνδοὺς εἶναι ἐλευθέρους, 10.9.1 οὐδὲ τινὰ δοῦλον εἶναι Ἰνδόν. τοῦτο μὲν Λακεδαιμονίῳ- σιν ἐς ταὐτὸ συμβαίνει καὶ Ἰνδοῖσι. Λακεδαιμονίοις μὲν γε οἱ εἰλωτες δούλοι εἰσιν καὶ τὰ δούλων ἐργάζονται, Ἰνδοῖσι δὲ οὐδὲ ἄλλος δούλος ἐστὶ, μήτι γε Ἰνδῶν τις. 11.1.1 νενέμνεται δὲ οἱ πάντες Ἰνδοὶ ἐς ἐπτὰ μάλιστα γένεα. ἐν μὲν αὐτοῖσιν οἱ σοφισταὶ εἰσὶ, πλήθει μὲν μείους τῶν 11.2.1 ἄλλων, δόξῃ δὲ καὶ τιμῇ γεραρότατοι· οὔτε γὰρ τι τῷ σώματι ἐργάζεσθαι ἀναγκαίῃ σφιν προσκέαται οὔτε τι ἀποφέρειν ἅφ' ὅτων πονέουσιν ἐς τὸ κοινόν. οὐδὲ τι ἄλλο ἀνάγκης ἀπλῶς ἐπεῖναι τοῖς σοφιστῇσιν, ὅτι μὴ 11.2.5 θύειν τὰς θυσίας τοῖσι θεοῖσιν ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ <τῶν> 11.3.1 Ἰνδῶν· καὶ ὅστις δὲ ἰδίᾳ θύει, ἐξηγητὴς αὐτῷ τῆς θυ- σίης τῶν τις σοφιστῶν τούτων γίνεται, ὥς οὐκ ἂν ἄλλως 11.4.1 κεχαρισμένα τοῖς θεοῖς θύσαντας. εἰσὶ δὲ καὶ μαντικῆς οὔτοι μοῦνοι Ἰνδῶν δαήμονες, οὐδὲ ἐφῆται ἄλλῳ μαν- 11.5.1 τεύεσθαι ὅτι μὴ σοφιστῇ ἀνδρὶ. μαντεύονται δὲ ὅσα ὑπὲρ τῶν ὠρέων τοῦ ἔτεος καὶ εἴ τις ἐς τὸ κοινὸν συμ- φερὴ καταλαμβάνει· τὰ ἰδία <δὲ> ἐκάστοισιν οὐ σφιν μέλει μαντεύεσθαι, ὥς οὐκ ἐξικνεομένης τῆς μαντικῆς 11.5.5 ἐς τὰ μικρότερα ἢ ὥς οὐκ ἄξιον <δὲ> ἐπὶ τούτοις πο- 11.6.1 νέεσθαι. ὅστις δὲ ἀμάρτοι ἐς τρις μαντευσάμενος, τούτῳ δὲ ἄλλο μὲν κακὸν γίνεσθαι οὐδέν, σιωπᾶν δὲ εἶναι ἐπά- ναγκες τοῦ λοιποῦ· καὶ οὐκ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ἔστιν ὅστις ἐξαναγκάσει τὸν ἄνδρα τοῦτον φωνῆσαι, ὅτου ἡ σιωπὴ κατακέκριται. 11.7.1 οὗτοι γυμνοὶ διαιτῶνται οἱ σοφισταί, τοῦ μὲν χειμῶνος ὑπαίθριοι ἐν τῷ ἡλίῳ, τοῦ δὲ θέρους, ἐπὶ ὃ ἡλῖος κατ- ἔχει, ἐν τοῖς λειμῶσι καὶ τοῖσιν ἔλεσιν ὑπὸ δένδρεσι μεγάλοισιν, ὧν τὴν σκίην <Νέαρχος> λέγει ἐς πέντε πλέ- 11.7.5 θρα ἐν κύκλῳ ἐξικνέσθαι, καὶ ἂν καὶ μυρίους ἀνθρώ- πους ὑπὸ ἐνὶ δένδρεϊ σκιάζεσθαι· τηλικαῦτα εἶναι ταῦτα 11.8.1 τὰ δένδρεα. σιτέονται δὲ <τὰ> ὠραία καὶ τὸν φλοιὸν τῶν δένδρων, γλυκύν τε ὄντα τὸν φλοιὸν καὶ τρόφιμον οὐ μείον ἢ περ αἱ βάλανοι τῶν φοινίκων. 11.9.1 δεύτεροι δ' ἐπὶ τούτοισιν οἱ γεωργοὶ εἰσιν, οὗτοι πλή- θει πλείστοι Ἰνδῶν ἐόντες. καὶ τούτοισιν οὔτε ὅπλα ἐστὶν ἀρήγια οὔτε μέλει τὰ πολεμῆια ἔργα, ἀλλὰ τὴν χώραν οὗτοι ἐργάζονται, καὶ τοὺς φόρους τοῖς τε βασι- 11.9.5 λεῦσι καὶ τῇσι πόλεσιν, ὅσαι αὐτόνομοι, οὗτοι ἀποφέ- 11.10.1 ρουσι. καὶ εἰ πόλεμος ἐς ἀλλήλους τοῖσιν Ἰνδοῖσι τύχοι, τῶν ἐργαζομένων τὴν γῆν οὐ θέμις σφιν ἄπτεσθαι οὐδὲ αὐτὴν τὴν γῆν τέμνειν, ἀλλὰ οἱ μὲν πολεμοῦσι καὶ κα- τακαίνουσιν ἀλλήλους ὅπως τύχοιεν, οἱ δὲ πλησίον 11.10.5 αὐτῶν κατ' ἡσυχίαν ἀρουσὶν ἢ τρυγῶσιν ἢ κλαδῶσιν ἢ θερίζουσιν. 11.11.1 τρίτοι δὲ εἰσιν Ἰνδοῖσιν οἱ νομέες, οἱ ποιμένες τε καὶ βουκόλοι. καὶ οὗτοι οὔτε κατὰ πόληας οὔτε ἐν τῇσι κώμησιν οἰκέουσι νομάδες τέ εἰσι καὶ ἀνὰ τὰ ὄρεα βιο- τεύουσι. φόρον δὲ καὶ οὗτοι ἀπὸ τῶν κτηνέων ἀποφέρουσι, 11.11.5 καὶ θηρεύουσιν οὗτοι ἀνὰ τὴν χώραν ὄρνιθας τε καὶ ἄγρια θηρία. 12.1.1 τέταρτον δὲ ἐστὶ τὸ δημιουργικὸν τε καὶ καπηλικὸν γένος. καὶ οὗτοι λειτουργοὶ εἰσι καὶ φόρον ἀποφέρου- σιν ἀπὸ τῶν ἔργων τῶν σφετέρων, πλήν γε δὴ ὅσοι τὰ ἀρήγια ὅπλα ποιεῖουσιν· οὗτοι δὲ καὶ μισθὸν ἐκ τοῦ κοι- 12.1.5 νοῦ προσλαμβάνουσιν. ἐν δὲ τούτῳ τῷ γένει οἱ τε ναυ- πηγοὶ καὶ οἱ ναῦται εἰσιν, ὅσοι κατὰ τοὺς ποταμούς

πλώουσι. 12.2.1 πέμπτον δὲ γένος ἐστὶν Ἰνδοῖσιν οἱ πολεμισταί, πλήθει μὲν δεύτερον μετὰ τοὺς γεωργούς, πλείστη δὲ ἐλευθερίῃ τε καὶ εὐθυμίῃ ἐπιχρεόμενον. καὶ οὗτοι ἄς- 12.3.1 κη- τὰ μόνων τῶν πολεμικῶν ἔργων εἰσὶν· τὰ δὲ ὅπλα ἄλλοι αὐτοῖς ποιεῖουσιν καὶ ἵππους ἄλλοι παρέχουσι καὶ διακονοῦσιν ἐπὶ στρατοπέδῳ ἄλλοι, οἱ τοὺς τε ἵππους αὐτοῖς θεραπέουσι καὶ τὰ ὅπλα ἐκκαθαίρουσι καὶ τοὺς 12.3.5 ἐλέφαντας ἄγουσι καὶ τὰ ἄρματα κοσμέουσι τε καὶ ἡνιο- 12.4.1 χεύουσιν. αὐτοὶ δέ, ἔστ' ἂν μὲν πολεμῇν δέη, πολεμοῦ- σιν, εἰρήνης δὲ γενομένης εὐθυμέονται· καὶ σφιν μισθὸς ἐκ τοῦ κοινοῦ τοσούδε ἔρχεται ὥς καὶ ἄλλους τρέφειν ἀπ' αὐτοῦ εὐμαρέως. 12.5.1 ἕκτοι δὲ εἰσιν Ἰνδοῖσιν οἱ ἐπίσκοποι καλεόμενοι. οὗτοι ἐφορῶσι τὰ γινόμενα κατὰ τε τὴν χώραν καὶ κατὰ τὰς πόληας, καὶ ταῦτα ἀναγγέλλουσι τῷ βασιλεῖ, ἵνα περ βα- σιλεύονται Ἰνδοί, ἢ τοῖς τέλεσιν, ἵνα περ αὐτόνομοί εἰσι. 12.5.5 καὶ τούτοις οὐ θέμις ψεῦδος ἀγγεῖλαι οὐδέν, οὐδέ τις Ἰνδῶν αἰτίην ἔσχε ψεύσασθαι. 12.6.1 ἑβδομοὶ δὲ εἰσιν οἱ ὑπὲρ τῶν κοινῶν βουλευόμενοι ὁμοῦ τῷ βασιλεῖ ἢ κατὰ πόληας ὅσοι αὐτόνομοι σὺν 12.7.1 τῇσιν ἀρχῇσι. πλήθει μὲν ὀλίγον τὸ γένος τοῦτο ἐστὶ, σοφίῃ δὲ καὶ δικαιοσύνῃ ἐκ πάντων προκεκριμένον. ἔνθεν οἱ τε ἄρχοντες αὐτοῖσιν ἐπιλέγονται καὶ ὅσοι νο- μάρχαι καὶ ὑπαρχοὶ καὶ θησαυροφύλακες τε καὶ στρα- 12.7.5 τοφύλακες, ναύαρχοί τε καὶ ταμίαι καὶ τῶν κατὰ γεωρ- γίην ἔργων ἐπιστάται. 12.8.1 γαμέειν δὲ ἐξ ἑτέρου γένους οὐ θέμις, οἷον τοῖσι γεωργοῖσιν ἐκ τοῦ δημιουργι- κοῦ ἢ ἔμπαλιν. οὐδὲ δύο τέχνας ἐπιτηδεύειν τὸν αὐτὸν οὐδὲ τοῦτο θέμις, οὐδὲ ἀμείβειν ἐξ ἑτέρου

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

γένεος εἰς ἕτερον, οἷον γεωργικὸν ἐκ 12.9.1 νομέως γενέσθαι ἢ νομέα ἐκ δημιουργικοῦ. μούνον σφισιν ἀνεῖται σοφιστὴν ἐκ παντὸς γένεος γενέσθαι, ὅτι οὐ μαλθακὰ τοῖσι σοφιστῆσιν εἰσι τὰ πρήγματα ἀλλὰ πάντων ταλαιπωρότατα. 13.1.1 θηῶσι δὲ Ἴνδοι τὰ μὲν ἄλλα ἄγρια θηρία κατὰπερ καὶ Ἕλληνες, ἡ δὲ τῶν ἐλεφάντων σφιν θήρα οὐδέν τι ἄλλη ἔοικεν, ὅτι καὶ ταῦτα τὰ θηρία οὐδαμοῖσιν ἄλλοις 13.2.1 θηρίοις ἐπέοικεν. ἀλλὰ τόπον γὰρ ἐπιλεξάμενοι ἄπεδον καὶ καυματώδεα ἐν κύκλῳ τάφρον ὀρύσσουσιν, ὅσον μεγάλῳ στρατοπέδῳ ἐπαυλίσασθαι. τῆς δὲ τάφρου τὸ εὖρος ἐς πέντε ὀργυῖας ποιεῖνται, βάθος τε ἐς τέσσαρας. 13.3.1 τὸν δὲ χοῦν ὄντινα ἐκβάλλουσιν ἐκ τοῦ ὀρύγματος, ἐπὶ τὰ χεῖλα ἐκάτερα τῆς τάφρου ἐπιφορήσαντες ἀντὶ τεί- 13.4.1 χεος διαχρέονται, αὐτοὶ δὲ ὑπὸ τῷ χώματι τῷ ἐπὶ τοῦ χείλεος τοῦ ἔξω τῆς τάφρου σκηνάς σφιν ὀρυκτὰς ποίον- ται, καὶ διὰ τούτων ὁπὰς ὑπολείπονται, δι' ὧν φῶς τε αὐτοῖσιν εἰσέρχεται καὶ τὰ θηρία προσάγοντα καὶ ἐσε- 13.5.1 λαύνοντα ἐς τὸ ἔρκος σκέπτονται. ἐν- ταῦθα ἐντὸς τοῦ ἔρκους καταστήσαντες τῶν τινος θηλέων τρεῖς ἢ τέσ- σαρ, ὅσαι μάλιστα τὸν θυμὸν χειροθέες, μίαν εἰσο- δὸν ἀπολιμπάνουσι κατὰ τὴν τάφρον, γεφυρώσαντες τὴν 13.5.5 τάφρον· καὶ ταύτῃ χοῦν τε καὶ πόαν πολλὴν ἐπιφέρουσι τοῦ μὴ ἀρίδην εἶναι τοῖσι θηρίοις τὴν γέφυραν, μὴ 13.6.1 τινὰ δόλον οἰσθῶσιν. αὐτοὶ μὲν οὖν ἐκποδῶν σφᾶς <πο>έουσι κατὰ τῶν σκηνῶν τῶν ὑπὸ τῇ τάφρῳ δεδυ- κότες, οἱ δὲ ἄγριοι ἐλέφαντες ἡμέρης μὲν οὐ πελάζουσιν τοῖσιν οἰκουμένοις, νύκτωρ δὲ πλανῶνται τε πάντῃ καὶ 13.6.5 ἀγελῶν νέμονται τῷ μεγί- στῳ καὶ γενναιοτάτῳ σφῶν 13.7.1 ἐπόμενοι, κατὰπερ αἱ βόες τοῖσι ταύροις. ἐπεὰν ὧν τῷ ἔρκει πελάσῃ, τὴν τε φωνὴν ἀκούοντες τῶν θηλέων καὶ τῇ ὁσμῇ αἰσθόμενοι, δρόμῳ ἵενται ὡς ἐπὶ τὸν χώρον τὸν πεφραγμένον· ἐκπεριελθόντες δὲ τῆς τάφρου τὰ 13.7.5 χεῖλα εὐτ' ἂν τῇ γεφύρῃ ἐπιτύχωσιν, κατὰ ταύτην ἐς 13.8.1 τὸ ἔρκος ὠθέονται. οἱ δὲ ἄνθρωποι αἰσθόμενοι τὴν ἔσο- δὸν τῶν ἐλεφάντων τῶν ἀγρίων, οἳ μὲν αὐτῶν τὴν γέ- φυραν ὀξέως ἀφείλον, οἳ δὲ ἐπὶ τὰς πέλας κάμας ἀπο- δραμόντες ἀγγέλλουσι τοὺς ἐλέφαντας ὅτι ἐν τῷ ἔρκει 13.9.1 ἔχονται· οἳ δὲ ἀκούσαντες ἐπιβαίνουσι τῶν κρατίστων τε τὸν θυμὸν καὶ [τῶν] χειροθεστάτων ἐλεφάντων, ἐπι- βάντες δὲ ἐλαύνουσιν ὡς ἐπὶ τὸ ἔρκος, ἐλάσαντες δὲ οὐκ αὐτίκα μάχης ἀπτονται, ἀλλ' ἐῷσι γὰρ λιμῷ τε ταλαι- 13.9.5 πωρηθῆναι τοὺς ἀγρίους ἐλέφαντας καὶ ὑπὸ τῷ δίφει 13.10.1 δουλωθῆναι. εὐτ' ἂν δὲ σφισι κακῶς ἔχειν δοκῶσι, τήνικα ἄτα ἐπιστήσαντες αὐτὴς τὴν γέφυραν ἐλαύνουσι τε ὡς ἐς τὸ ἔρκος, καὶ τὰ μὲν πρῶτα μάχῃ ἴσταται κρα- τερὴ τοῖσιν ἡμέροισι τῶν ἐλεφάντων πρὸς τοὺς ἄλλω- 13.10.5 κότας· ἔπειτα κρατέονται μὲν κατὰ τὸ εἶκος οἱ ἄγριοι 13.11.1 ὑπὸ τε τῇ ἀθυμίῃ καὶ τῷ λιμῷ ταλαιπωρούμενοι. οἳ δὲ ἀπὸ τῶν ἐλεφάντων κατα- βάντες παρήμενοις ἤδη τοῖ- σιν ἀγρίοις τοὺς πόδας ἄκρους συνδέουσιν, ἔπειτα ἐγκελεύονται τοῖσιν ἡμέροισι πληγαῖς σφᾶς κολάζειν 13.11.5 πολλὰς, ἔστ' ἂν ἐκεῖνοι ταλαιπωρούμενοι ἐς γῆν πέ- σωσι. παραστάντες δὲ βρόχους περιβάλλουσιν αὐτοῖσι κατὰ τοὺς αὐχένους, καὶ αὐτοὶ ἐπιβαίνουσι κειμένοις. 13.12.1 τοῦ δὲ μὴ ἀποσεῖσθαι τοὺς ἀμβάτας μηδὲ τι ἄλλο ἀτά- σθα- λον ἐργάζεσθαι, τὸν τράχηλον αὐτοῖσιν ἐν κύκλῳ μαχαίρῳ ὀξεῖ ἐπιτέμνουσι, καὶ τὸν βρόχον κατὰ τὴν τομὴν περιδέουσιν, ὡς ἀτρέμα ἔχειν τὴν κεφαλὴν τε καὶ 13.13.1 τὸν τράχηλον ὑπὸ τοῦ ἔλκεος. εἰ γὰρ περιστρέφοντο

ὑπὸ ἀτασθαλίας, τρίβεται αὐτοῖσι τὸ ἔλκος ὑπὸ τῷ κάλῳ. οὕτω μὲν ὧν ἀτρέμα ἴσχυσι

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

καὶ αὐτοὶ γνωσιμαχέοντες ἤδη 14.1.1 ἄγονται κατὰ τὸν δεσμὸν πρὸς τῶν ἡμέρων. ὅσοι δὲ νήπιοι αὐτῶν ἢ διὰ κακότητα οὐκ ἄξιοι ἐκτῆσθαι, τού- 14.2.1 τοὺς ἐῷσιν ἀπαλλάττεσθαι ἐς τὰ σφέτερα ἦθεα. ἀγ<αγ>όν- τες δὲ εἰς τὰς κώμας τοὺς ἀλόντας τοῦ τε χλωροῦ καλὰ- 14.3.1 μου καὶ τῆς πόας τὰ πρῶτα ἐμφαγεῖν ἔδοσαν, οἱ δὲ ὑπὸ ἀθυμίας οὐκ ἐθέλουσιν οὐδὲν σιτέεσθαι, τοὺς δὲ περι- στάμενοι οἱ Ἰνδοὶ ὠδαῖσι τε καὶ τυμπάνοις καὶ κυμβά- λουσιν ἐν κύκλῳ κρούοντες τε καὶ ἐπάδοντες κατευνά- 14.4.1 λουσι. θυμόσοφον γὰρ εἶπερ τι ἄλλο θηρίον ὁ ἐλέφας, καί τινες ἤδη αὐτῶν τοὺς ἀμβάτας σφῶν ἐν πολέμῳ ἀποθανόντας ἄραντες αὐτοὶ ἐξήνεγκαν ἐς ταφὴν, οἱ δὲ καὶ ὑπερήσπισαν κειμένους, οἱ δὲ καὶ πεσόντων προε- 14.4.5 κινδύνευσαν, ὁ δὲ τις πρὸς ὄργην ἀποκτείνας τὸν ἀμ- 14.5.1 βάτην ὑπὸ μετανόῃς τε καὶ ἀθυμίας ἀπέθανεν. εἶδον δὲ ἔγωγε καὶ κυμβαλίζοντα ἤδη ἐλέφαντα καὶ ἄλλους ὀρχεομένους, κυμβαλοῖν τῷ κυμβαλίζοντι πρὸς τοῖν σκελοῖν τοῖν ἐμπροσθεν προσηρτημένοι, καὶ πρὸς τῇ 14.6.1 προβοσκίδι καλεομένη ἄλλου κυμβάλου· ὁ δὲ ἐν μέρει τῇ προβοσκίδι ἔκρουε τὸ κύμβαλον ἐν ῥυθμῷ πρὸς ἑκα- τέροι τοῖν σκελοῖν, οἱ δὲ ὀρχεόμενοι ἐν κύκλῳ τε ἐχό- ρευον, καὶ ἐπαίροντες τε καὶ ἐπικάμπτοντες τὰ ἐμπρο- 14.6.5 σθεν σκέλεα ἐν τῷ μέρει ἐν ῥυθμῷ καὶ οὗτοι ἔβαινον, 14.7.1 καθότι ὁ κυμβαλίζων σφίσιν ὑφηγέετο. βαίνεται δὲ ἐλέφας ἥρος ὥρη, κατὰπερ βοῦς ἢ ἵππος, ἐπεὰν τῆσι θηλέσιν αἱ παρὰ τοῖσι κροτάφοις ἀναπνοαὶ ἀνοιχθεῖ- σαι ἐκπνέωσιν. κύει δὲ τοὺς ἐλαχίστους μὲν ἑκατάδεκα 14.7.5 μῆνας, τοὺς πλείστους δὲ ὀκτωκαίδεκα. τίκτει δὲ ἕν, κατὰπερ ἵππος, καὶ τοῦτο ἐκτρέφει τῷ γάλακτι ἐς ἔτος 14.8.1 ὄγδοον. ζῶσι δὲ ἐλεφάντων οἱ πλείστα ἔτη ζῶντες ἐς διηκόσια, πολλοὶ δὲ νόσῳ προτελευτῶσιν αὐτῶν· γῆρα 14.9.1 δὲ ἐς τόσον ἔρχονται. καὶ ἔστιν αὐτοῖσι τῶν μὲν ὀφθαλ- μῶν ἰάμα τὸ βόειον γάλα ἐγχέμενον, πρὸς δὲ τὰς ἄλλας νόσους ὁ μέλας οἶνος πινόμενος, ἐπὶ δὲ τοῖσιν ἔλκεσι τὰ ὕεια κρέα ὀπτώμενα καὶ καταπλασσόμενα· ταῦτα παρ' 14.9.5 Ἰνδοῖσιν ἔστιν αὐτοῖσι ἰάματα. 15.1.1 τοῦ δὲ ἐλέφαντος τὴν τίγριν πολλὸν τι ἀλκιμωτέραν Ἰνδοὶ ἄγουσι. τίγριος δὲ δαρήν μὲν ἰδεῖν λέγει <Νέαρ- χος>, αὐτὴν δὲ τίγριν οὐκ ἰδεῖν· ἀλλὰ τοὺς Ἰνδοὺς γὰρ ἀπηγέεσθαι, τίγριν εἶναι μέγεθος μὲν ἡλίκον τὸν μέγι- 15.1.5 στον ἵππον, τὴν δὲ ὠκύτητα καὶ ἀλκὴν οἷν οὐδενὶ ἄλλῳ 15.2.1 εἰκάσαι· τίγριν γὰρ ἐπεὰν ὁμοῦ ἔλθῃ ἐλέφαντι, ἐπιπη- δᾶν τε ἐπὶ τὴν κεφαλὴν τοῦ ἐλέφαντος καὶ ἄγχειν 15.3.1 εὐπετέως. ταύτας δὲ, ἄστινας καὶ ἡμεῖς ὀρέομεν καὶ τίγριας καλέομεν, θῶας εἶναι αἰόλους καὶ μέζοντας ἥπερ 15.4.1 τοὺς ἄλλους θῶας. ἐπεὶ καὶ ὑπὲρ τῶν μυρμήκων λέγει <Νέαρχος> μύρμηκα μὲν αὐτὸς οὐκ ἰδεῖν, ὁποῖον δὲ τινα μετεξέτεροι διέγραψαν γίνεσθαι ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, δαράς δὲ καὶ τούτων ἰδεῖν πολλὰς ἐς τὸ στρατόπεδον κατακο- 15.5.1 μισθείσας τὸ Μακεδονικόν. <Μεγασθένης> δὲ καὶ ἀτρε- κέα εἶναι ὑπὲρ τῶν μυρμήκων τὸν λόγον ἱστορεῖ τού- τους εἶναι τοὺς τὸν χρυσὸν ὀρύσσοντας, οὐκ αὐτοῦ τοῦ χρυσοῦ ἕνεκα, ἀλλὰ φύσι γὰρ κατὰ τῆς γῆς ὀρύσσουσιν, 15.5.5 ἵνα φωλεύσαιεν, κατὰπερ οἱ ἡμέτεροι οἱ σμικροὶ μύρμηκες 15.6.1 ὀλίγον τῆς γῆς ὀρύσσουσιν. ἐκείνους δὲ – εἶναι γὰρ ἀλωπεκέων μέζοντας – πρὸς λόγον τοῦ μεγέθους σφῶν καὶ τὴν γῆν ὀρύσσειν· τὴν δὲ γῆν χρυσῆν εἶναι, καὶ 15.7.1 ἀπὸ ταύτης γίνεσθαι Ἰνδοῖσι τὸν χρυσόν. ἀλλὰ <Μεγα- σθένης> τε ἀκοὴν ἀπηγέεται, καὶ ἐγὼ ὅτι οὐδὲν τούτου ἀτρεκέστερον ἀναγράψαι ἔχω, ἀπτήμι ἐκὼν τὸν ὑπὲρ 15.8.1 τῶν μυρμήκων λόγον. σιττακοὺς δὲ <Νέαρχος> μὲν ὡς δὴ τι θαῦμα ἀπηγέεται ὅτι γίνονται ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ, καὶ ὁποῖος ὄρνις ἐστὶν ὁ σιττακός, καὶ ὅπως φωνὴν ἰεῖ 15.9.1

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

ἀνθρωπίνην. ἐγὼ δὲ ὅτι αὐτός τε πολλοὺς ὁπώπεια καὶ ἄλλους ἐπισταμένους ἦδεα τὸν ὄρνιθα, οὐδὲν ὡς <ὑπέρ> ἀτόπου δῆθεν ἀπηγήσομαι· οὐδὲ ὑπὲρ τῶν πιθήκων τοῦ μεγέθους, ἢ ὅτι καλοὶ παρ' Ἰνδοῖς πίθηκοί εἰσιν, 15.9.5 οὐδὲ ὅπως θηρῶνται ἐρέω. καὶ γὰρ ταῦτα γνώριμα ἐρῶ, 15.10.1 πλὴν γε δὴ ὅτι καλοὶ που πίθηκοί εἰσιν. καὶ ὄφιας δὲ λέγει <Νέαρχος> θηρευθῆναι αἰόλους μὲν καὶ ταχέας, μέγαθος δέ, ὃν μὲν λέγει ἐλεῖν Πείθωνα τὸν Ἀντιγέ- νεος, πῆχρων ὡς ἐκκαίδεκα. αὐτοὺς δὲ τοὺς Ἰνδοὺς πολὺ 15.10.5 μείζονας τούτων λέγειν εἶναι τοὺς μεγίστους ὄφιας. 15.11.1 ὅσοι δὲ ἱπτροὶ Ἑλλήνες, τούτοιςιν οὐδὲν ἄκος ἐξεύρητο ὅστις ὑπὸ ὄφειας δηχθεῖν Ἰνδικοῦ· ἀλλ' αὐτοὶ γὰρ οἱ Ἰνδοὶ ἰῶντο τοὺς πληγέντας. καὶ ἐπὶ τῷδε <Νέαρχος> λέγει <ὅτι> συλληλεγμένους ἀμφ' αὐτὸν εἶχεν Ἀλέξανδρος 15.11.5 Ἰνδῶν ὅσοι ἱπτρικὴν σοφώτατοι, καὶ κεκῆρυκτο ἀνὰ τὸ στρατόπεδον, ὅστις δηχθεῖν, ἐπὶ τὴν σκηνὴν φοιτᾶν τὴν 15.12.1 βασιλείας. οἱ δὲ αὐτοὶ οὗτοι καὶ τῶν ἄλλων νούσων τε καὶ παθέων ἱπτροὶ ἦσαν. οὐ πολλὰ δὲ ἐν Ἰνδοῖσι πάθεα γίνεται, ὅτι αἱ ὥραι σύμμετροί εἰσιν αὐτόθι· εἰ δέ τι μείζον καταλαμβάνοι, τοῖσι σοφιστῆσιν ἀνεκοινοῦντο· 15.12.5 καὶ ἐκείνοι οὐκ ἄνευ θεοῦ ἐδόκεον ἵσθαι ὃ τι περ ἰήσιμον.

16.1.1 ἐσθῆτι δὲ Ἰνδοὶ λινὴν χρέονται, κατὰ περ λέγει <Νέ- αρχος>, λίνου τοῦ ἀπὸ τῶν δενδρέων, ὑπὲρ ὅτων μοι ἤδη λέλεκται. τὸ δὲ λίνον τοῦτο ἢ λαμπρότερον τὴν χροίην ἐστὶν ἄλλου λίνου παντός, ἢ μέλανες αὐτοὶ ἐόν- 16.2.1 τες λαμπρότερον τὸ λίνον φαίνεσθαι ποιεῖουσιν. ἔστι δὲ κιθῶν λίνεος αὐτοῖς ἔστε ἐπὶ μέσσην τὴν κνήμην, εἶμα δὲ τὸ μὲν περὶ τοῖσιν ὤμοισι περιβεβλη- μένον, τὸ δὲ περὶ 16.3.1 τῆσι κεφαλῇσιν εἰλιγμένον. καὶ ἐνώτια Ἰνδοὶ φορέου- σιν ἐλέφαντος ὅσοι κάρτα εὐδαίμονες· οὐ γὰρ πάντες 16.4.1 Ἰνδοὶ φορέουσι. τοὺς δὲ πῶγωνας λέγει <Νέαρχος> ὅτι βάπτονται Ἰνδοί, χροίην δὲ ἄλλην καὶ ἄλλην <βάπτον- ται>, οἱ μὲν ὡς λευκοὺς φαίνε- σθαι οἶους λευκοτάτους, οἱ δὲ κυανέους, τοῖς δὲ φοινικέους εἶναι, τοῖς δὲ καὶ 16.5.1 πορφυρέους, ἄλλοις πρασοειδέας· καὶ σκιαδία ὅτι προ- βάλλονται τοῦ θέρους ὅσοι οὐκ ἡμελημένοι Ἰνδῶν. ὑπο- δῆματα δὲ λευκοῦ δέρματος φορέουσι, περιττώς καὶ ταῦτα ἡσκημένα· καὶ τὰ ἴχνη τῶν ὑποδημάτων αὐτοῖσι 16.5.5 ποικίλα καὶ ὑψηλά, τοῦ μέζονας φαίνεσθαι. 16.6.1 ὀπλίσιος δὲ τῆς Ἰνδῶν οὐκ αὐτὸς εἰς τρόπος ἀλλ' οἱ μὲν πεζοὶ αὐτοῖσι τόξον τε ἔχουσι, ισόμηκες τῷ φο- ρέοντι τὸ τόξον, καὶ τοῦτο κάτω ἐπὶ τὴν γῆν θέντες καὶ τῷ ποδὶ τῷ ἀριστερῷ ἀντιβάντες, οὕτως ἐκτοξεύουσι, 16.7.1 τὴν νευρὴν ἐπὶ μέγα ὀπίσω ἀπαγαγόντες· ὁ γὰρ οἷστος αὐτοῖσιν ὀλίγον ἀποδέων τριπλήχεος, οὐδὲ τι ἀντέχει τοξευθὲν πρὸς Ἰνδοῦ ἀνδρὸς τοξικοῦ, οὔτε ἀσπίς οὔτε 16.8.1 θώρηξ οὔτε <εἰ> τι <τὸ κάρτα> καρτερόν ἐγένετο. ἐν δὲ τῇσιν ἀριστερῇσι πέλται εἰσὶν αὐτοῖσιν ὤμοβοίαι, στεί- νότεραι μὲν ἢ κατὰ τοὺς φορέοντας, μήκει δὲ οὐ πολλὸν 16.9.1 ἀποδέουσαι. τοῖσι δὲ ἄκοντες ἀντὶ τόξων εἰσὶ. μάχαιραν δὲ πάντες φορέουσι, πλατεῖν δὲ καὶ τὸ μήκος οὐ μείω τριπλήχεος· καὶ ταύτην, ἐπεὰν συστάδην καταστῇ αὐτοῖ- σιν ἡ μάχη – τὸ δὲ οὐκ εὐμα- ρέως Ἰνδοῖσιν ἐς ἀλλή- 16.9.5 λους γίνεται – ἀμφοῖν τοῖν χεροῖν καταφέρουσιν ἐς 16.10.1 τὴν πληγὴν, τοῦ καρτερὴν τὴν πληγὴν γενέσθαι. οἱ δὲ ἵππεις ἀκόντια δύο αὐτοῖσιν ἔχουσιν, οἷα τὰ σαύνια ἀκόντια, καὶ πέλτην [τὴν] μικροτέραν τῶν πελῶν. οἱ δὲ ἵπποι αὐτοῖσιν οὐ σεσαγμένοι εἰσὶν, οὐδὲ χαλινοῦνται 16.10.5 τοῖσιν Ἑλληνικοῖσι χαλινοῖσιν ἢ τοῖσι Κελτικοῖσιν ἐμ- 16.11.1 φερέως, ἀλλὰ περὶ ἄκρῳ τῷ στόματι τοῦ ἵππου ἐν κύκλῳ ἔχουσι δερμα ὤμοβοῖον ξάπτων περιηρτημένον, καὶ ἐν τούτῳ χάλκεα κέντρα ἢ σιδήρεα, οὐ κάρτα ὀξέα, ἔσω ἐστραμμένα·

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

τοῖσι δὲ πλουσίοισιν ἐλεφάντινα κέντρα 16.11.5 ἐστίν. ἐν δὲ τῷ στόματι σίδηρον αὐτοῖσιν οἱ ἵπποι ἔχουσιν, οἷόν περ ὀβελόν, ἐνθεν ἐξηρητημένοι εἰσὶν αὐτοῖσιν 16.12.1 οἱ ῥυτῆρες· ἐπεὰν ὧν ἐπαγάγωσι τὸν ῥυτῆρα, ὃ τε ὀβελός

κρατεῖ τὸν ἵππον, καὶ τὰ κέντρα, οἷα δὴ ἐξ αὐτοῦ ἡρητημένα, κεντέοντα οὐκ ἔα ἄλλο τι ἢ πείθεσθαι τῷ ῥυτῆρι. 17.1.1 τὰ δὲ σώματα ἰσχυροὶ τέ εἰσιν Ἰνδοὶ καὶ εὐμήκεες, καὶ κοῦφοι πολλόν τι ὑπὲρ τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους. ὀχήματα δὲ τοῖς μὲν πολλοῖς Ἰνδῶν κάμηλοι εἰσιν καὶ ἵπποι 17.2.1 καὶ ὄνοι, τοῖς δὲ εὐδαίμοσιν ἐλέφαντες. βασιλικὸν γὰρ ὄχημα ἐλέφας παρ' Ἰνδοῖς ἐστί, δεύτερον δὲ τιμῇ ἐπὶ τούτῳ τὰ τέθριππα, τρίτον δὲ αἱ κάμηλοι. τὸ δὲ ἐφ' 17.3.1 ἐνὸς ἵππου ὀχεῖσθαι ἄτιμον. αἱ γυναῖκες δὲ αὐτοῖσιν, ὅσαι κάρτα σώφρονες, ἐπὶ μὲν ἄλλῳ μισθῷ οὐκ ἂν τι διαμάρτοιεν, ἐλέφαντα δὲ λαβοῦσα γυνὴ μίσγεται τῷ δόντι· οὐδὲ αἰσχρὸν Ἰνδοὶ ἄγουσι τὸ ἐπὶ ἐλέφαντι μι- 17.3.5 γῆναι, ἀλλὰ καὶ σεμνὸν δοκεῖ τῇσι γυναιξὶν ἀξίην τὸ 17.4.1 κάλλος φανῆναι ἐλέφαντος. γαμέουσι δὲ οὔτε τι διδόντες οὔτε λαμβάνοντες, ἀλλὰ ὅσαι ἤδη ὠραῖαι γάμου, ταύτας οἱ πατέρες προάγοντες ἐς τὸ ἐμφανὲς καθιστᾷσιν ἐκλέ- ξασθαι τῷ νικήσαντι πάλην ἢ πύξῃ ἢ δρόμον ἢ κατ' 17.5.1 ἄλλην τινὰ ἀνδρείαν προκριθέντι. σιτοφάγοι δὲ καὶ ἀροτῆρες Ἰνδοὶ εἰσιν, ὅσοι γε μὴ ὄρειοι αὐτῶν· οὗτοι δὲ τὰ θήρεα κρέα σιτέονται. 17.6.1 ταῦτά μοι ἀπόχρη δεδηλωσθαι ὑπὲρ Ἰνδῶν, ὅσα γνω- ριμώτατα <Νέαρχος> τε καὶ <Μεγασθένης>, δοκίμῳ ἄνδρι, 17.7.1 ἀνεγγραψάτην, ἐπεὶ οὐδὲ ἡ ὑπόθεσίς μοι τῆς συγ- γραφῆς τὰ Ἰνδῶν νόμιμα ἀναγράψαι ἦν, ἀλλ' ὅπως γὰρ παρεκομίσθη Ἀλέξανδρῳ ἐς Πέρσας ἐξ Ἰνδῶν ὁ στόλος· ταῦτα δὲ ἐκβολή μοι ἔστω τοῦ λόγου. 18.1.1 Ἀλέξανδρος γὰρ, ἐπεὶ οἱ πα- ρεσκεύαστο τὸ ναυτι- κὸν ἐπὶ τοῦ Ὑδάσπεω τῇσιν ὀχθήσιν, ἐπιλεγόμενος ὅσοι τε Φοινίκων καὶ ὅσοι Κύπριοι ἢ Αἰγύπτιοι εἶποντο ἐν τῇ ἄνω στρατηλασίῃ, ἐκ τούτων ἐπλήρου τὰς νέας, ὑπη- 18.1.5 ρεσίας τε αὐτῇσι καὶ ἐρέτας ἐπιλεγόμενος ὅσοι τῶν θα- 18.2.1 λασσίων ἔργων δαήμονες. ἦσαν δὲ καὶ νησιῶται ἄνδρες οὐκ ὀλίγοι ἐν τῇ στρατιῇ οἷς ταῦτα ἔμελε, καὶ Ἴωνες 18.3.1 καὶ Ἑλλησπόντιοι. τριήραρχοι δὲ αὐτῷ ἐπεστάθησαν ἐκ Μακεδόνων μὲν Ἡφαιστίων τε Ἀμύντορος καὶ Λεόννατος ὁ Εὐνού καὶ Λυσίμαχος ὁ Ἀγαθοκλέους καὶ Ἀσκληπιό- δωρος ὁ Τιμάνδρου καὶ Ἄρχων ὁ Κλεινίου καὶ Δημό- 18.3.5 νικος ὁ Ἀθηναίου καὶ Ἀρχίας ὁ Ἀναξιδότου καὶ Ὀφέ- λας Σειληνοῦ καὶ Τιμάνθης Παντιάδου. οὗτοι μὲν Πελ- 18.4.1 λαῖοι· ἐκ δὲ Ἀμφιπόλεως ἦγον οἷδε· [ἐκ Κρήτης] Νέαρ- χος Ἀνδροτίμου, ὃς τὰ ἀμφὶ τῷ παράπλῳ ἀνέγραψε, καὶ Λαομέδων Λαρίχου, καὶ Ἀνδροσθένης Καλλιστράτου· 18.5.1 ἐκ δὲ Ὀρεστίδος Κράτερός τε ὁ Ἀλέξανδρου καὶ Περ- δίκκας ὁ Ὀρόντεω· Ἑορδαῖοι δὲ Πτολεμαῖός τε ὁ Λάγου καὶ Ἀριστόνους ὁ Πεισαίου. ἐκ Πύδνης δὲ Μήτρων τε ὁ 18.6.1 Ἐπιχάρμου καὶ Νικαρχίδης ὁ Σίμου. ἐπὶ δὲ Ἄτταλός τε ὁ Ἀνδρομένεος Τυμφαῖος καὶ Πευκέστας Ἀλέξανδρου Μιζεύς καὶ Πείθων Κρατεῦς Ἀλκομενεὺς καὶ Λεόν- νατος Ἀντιπάτρου Αἰγαῖος καὶ Πάνταυχος Νικολάου 18.6.5 Ἀλωρίτης καὶ Μυλ- λέας Ζωΐλου Βεροιαῖος. οὗτοι μὲν οἱ 18.7.1 σύμπαντες Μακεδόνες· Ἑλλήνων δὲ Μήδιος μὲν Ὁξυ- θέμιδος Λαρισαῖος, Εὐμένης δὲ Ἰερωνύμου ἐκ Καρδίας, Κριτόβουλος δὲ Πλάτωνος Κῶος, καὶ Θόας Μηνοδώρου 18.8.1 καὶ Μαϊάνδρος Μανδρογένεος Μάγνητες, Ἄνδρων δὲ Καβήλεω Τήσιος. Κυπρίων δὲ Νικοκλῆς Πασικράτης Σόλιος καὶ Νιθάφων Πνυταγόρεω Σαλαμίνιος. ἦν δὲ καὶ Πέρσης αὐτῷ τριήραρχος, Βαγώας ὁ Φαρνούχεος. 18.9.1 τῆς δὲ αὐτοῦ Ἀλεξάνδρου

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

νεώς κυβερνήτης ἦν Ὀνησί- κριτος Ἀστυपालαιεύς, γραμματεὺς δὲ τοῦ στόλου παντὸς 18.10.1 Εὐαγόρας Εὐκλέωνος Κορίνθιος. ναύαρχος δὲ αὐτοῖσιν ἐπεστάθη Νέαρχος Ἀνδροτίμου, τὸ γένος μὲν Κρής 18.11.1 Νέαρχος, ὥκει δὲ ἐν Ἀμφιπόλει τῇ ἐπὶ Στρυμόνι. ὥς δὲ ταῦτα ἐκεκόσμητο Ἀλεξάνδρῳ, ἔθνε τοῖς θεοῖσιν ὅσοι τε πάτριοι ἢ μαντευτοὶ αὐτῷ καὶ Ποσειδῶνι καὶ Ἀμφι- τρίτῃ καὶ Νηρηίοι καὶ αὐτῷ τῷ Ὀκεανῷ, καὶ τῷ Ὑδάσπῃ 18.11.5 ποταμῷ, ἀπ' οὗ ὥρμᾶτο, καὶ τῷ Ἀκεσίνῃ, ἐς ὅντινα ἐκδίδοι ὁ Ὑδάσπης, καὶ τῷ Ἰνδῷ, ἐς ὅντινα ἄμφω ἐκδι- 18.12.1 δοῦσιν· ἀγωνέες τε αὐτῷ μουσικοὶ καὶ γυμνικοὶ ἐποιεύντο, καὶ ἱερεῖα τῇ στρατιῇ πάσῃ κατὰ τέλεα ἐδίδοτο. 19.1.1 ὥς δὲ πάντα ἐξήρτυτο αὐτῷ ἐς ἀναγωγὴν, Κράτερον μὲν τὰ ἐπὶ θάτερα τοῦ Ὑδάσπεω ἵνα σὺν στρατιῇ [πεζῇ] ἐκέλευσε πεζικῇ τε καὶ ἵππικῇ· ἐς τὸ ἐπὶ θάτερα <δὲ> Ἡφαιστίων αὐτῷ παρεπορεύετο σὺν ἄλλῃ στρατιῇ πλεί- 19.1.5 ονι ἔτι τῆς Κρατέρῳ συντε- ταγμένης. καὶ τοὺς ἐλέφαν- τας Ἡφαιστίων αὐτῷ ἤγεν, ὄντας ἐς διακοσίους. αὐτὸς 19.2.1 δὲ τοὺς τε ὑπασπιστὰς καλεομένους ἅμα οἱ ἤγε καὶ τοὺς τοξότας πάντας καὶ τῶν ἱππέων τοὺς ἐταίρους καλεομέ- 19.3.1 νους, τοὺς πάντας ἐς ὀκτακισχιλίους. τοῖσι μὲν δὴ ἄμφι Κράτερον καὶ Ἡφαιστίωνα ἐτέτακτο ἵνα προπορευθέντες 19.4.1 ὑπομένοιν τὸν στόλον. Φίλιππον δέ, ὃς αὐτῷ σατράπης τῆς χώρας ταύτης ἦν, ἐπὶ τοῦ Ἀκεσίνου ποταμοῦ τὰς 19.5.1 ὄχθας πέμπει, ἅμα στρατιῇ πολλῇ καὶ τοῦτον· ἥδη γὰρ καὶ δώδεκα μυριάδες αὐτῷ μάχιμοι εἶποντο σὺν οἷς ἀπὸ θαλάσσης τε αὐτὸς ἀνήγαγε καὶ αὐτῆς οἱ ἐπὶ συλλογὴν αὐτῷ στρατιᾶς πεμφθέντες ἦκον ἔχοντες, παντοῖα ἔθνεα 19.5.5 βαρβαρικά ἅμα οἱ ἄγοντι καὶ πᾶσαν ἰδέην ὠπλισμένα. 19.6.1 αὐτὸς δὲ ἄρας ταῖς ναυσὶ κατέπλει κατὰ τὸν Ὑδάσπεα ἔσπε ἐπὶ τοῦ Ἀκεσίνου τε καὶ τοῦ Ὑδάσπεω τὰς συμβο- 19.7.1 λὰς. νῆες δὲ αἱ σύμπασαι αὐτῷ ὀκτακόσiai ἦσαν, αἱ τε μακραὶ καὶ ὅσα στρογγύλα πλοῖα καὶ ἄλλαι ἱππαγωγοί

καὶ σιτία ἅμα τῇ στρατιῇ ἄγουσαι. ὅπως μὲν δὴ κατὰ τοὺς ποταμούς κατέπλευσεν αὐτῷ ὁ στόλος, καὶ ὅσα ἐν τῷ παράπλῳ ἔθνεα κατεστρέψατο, καὶ ὅπως διὰ κινδύνου αὐτὸς ἐν Μαλλοῖς ἦκε, καὶ τὸ τρώμα ὃ ἐτρώθη ἐν Μαλ- 19.8.5 λοῖς, καὶ Πευκέστας τε καὶ Λεόννατος ὅπως ὑπερήσπισαν αὐτὸν πεσόντα, πάντα ταῦτα λέλεκται μοι ἥδη ἐν τῇ 19.9.1 ἄλλῃ τῇ Ἀττικῇ ξυγγραφῇ. ὁ δὲ λόγος ὃδε τοῦ παρά- πλου μοι ἀφήγησίς ἐστιν, ὃν Νέαρχος σὺν τῷ στόλῳ παρέπλευσεν ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ τῶν ἐκβολέων ὀρμηθεὶς κατὰ τὴν θάλασσαν τὴν μεγάλην ἔσπε ἐπὶ τὸν κόλπον 19.9.5 τὸν Περσικόν, ἣν δὴ Ἐρυθρὴν θάλασσαν μετεξέτεροι καλέουσι. 20.1.1 <Νέαρχος> δὲ λέλεκται ὑπὲρ τούτων ὃδε ὁ λόγος. πό- θον μὲν εἶναι Ἀλεξάνδρῳ ἐκπεριπλῶσαι τὴν θάλασσαν 20.2.1 τὴν ἀπὸ Ἰνδῶν ἔσπε ἐπὶ τὴν Περσικὴν, ὁκνέειν δὲ αὐτὸν τοῦ τε πλόου τὸ μῆκος καὶ μὴ τινι ἄρα χώρῃ ἐρήμῳ ἐγκύρσαντες ἢ ὄρμων ἀπόρῳ ἢ οὐ ζυμμέτρως ἐχούσῃ τῶν ὠραίων, οὕτω δὲ διαφθαρῇ αὐτῷ ὁ στόλος, καὶ οὐ 20.2.5 φαύλῃ κηλὶς αὕτη τοῖς ἔργοισιν αὐτοῦ τοῖσι μέγαλοισιν ἐπιγενομένη τὴν πᾶσαν εὐτυχίην αὐτῷ ἀφανίσῃ· ἀλλὰ ἐκνικῆσαι γὰρ αὐτῷ τὴν ἐπιθυμίην τοῦ καινόν τι αἰεὶ 20.3.1 καὶ ἄτοπον ἐργάζεσθαι. ἀπόρως δὲ ἔχειν ὅντινα οὐκ ἀδύνατόν τε ἐς τὰ ἐπινοούμενα ἐπιλέξαιτο καὶ ἅμα τῶν ἐν νῇ ἀνδρῶν, ὥς καὶ [τῶν] τοιοῦτον στόλον στελλο- μένων, ἀφελεῖν τὸ δαῖμα τοῦ δὴ ἡμελημένως αὐτοὺς ἐς 20.4.1 προὔπτον κίνδυνον ἐκπέμπεσθαι. λέγει δὲ ὁ <Νέαρχος> ἐωυτῷ ξυνοῦσθαι τὸν Ἀλέξανδρον ὅντινα προχειρίσθαι ἐξηγέσθαι τοῦ στόλου. ὥς δὲ ἄλλου καὶ ἄλλου ἐς μνή- μνην ἰόντα τοὺς μὲν ὥς οὐκ ἐθέλοντας

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

κινδυνεύειν ὑπὲρ 20.4.5 οὐ ἀπολέγειν, τοὺς δὲ ὡς μαλακοὺς τὸν θυμόν, τοὺς δὲ ὡς πόθῳ τῆς οἰκῆς κατεχομένους, τοῖς δὲ ἄλλοι 20.5.1 ἄλλο ἐπικαλέοντα, τότε δὲ αὐτὸν ὑποστάντα εἰπεῖν ὅτι “ὦ βασιλεῦ, ἐγὼ τοι ὑποδέκομαι ἐξηγήσεσθαι τοῦ στό- λου, καὶ εἰ τὰ ἀπὸ τοῦ θεοῦ ξυνεπιλαμβάνοι, περιάξω τοι σφᾶς τὰς νέας καὶ τοὺς ἀνθρώπους ἔστω ἐπὶ τὴν 20.5.5 Περσίδα γῆν, εἰ δὴ πλωτός τέ ἐστιν ὁ ταύτη πόντος καὶ 20.6.1 τὸ ἔργον οὐκ ἄπορον γνώμη ἀνθρωπινή.” Ἀλέξανδρον δὲ λόγῳ μὲν οὐ φάναι ἐθέλειν ἐς τοσὴνδε ταλαιπωρίην καὶ τοσόνδε κίνδυνον τῶν τινα ἑαυτοῦ φίλων ἐμβάλλειν, αὐτὸν δὲ ταύτῃ δὴ καὶ μᾶλλον οὐκ ἀνιέναι ἀλλὰ λιπαρεῖν. 20.7.1 οὕτω δὲ ἀγαπήσας τε Ἀλέξανδρον τοῦ Νεάρχου τὴν προθυμίην, καὶ ἐπιστήσας αὐτὸν ἄρχειν τοῦ στόλου 20.8.1 παντός. καὶ τότε δὲ ἔτι μᾶλλον τῆς στρατιῆς ὅτι περ ἐπὶ τῷ παράπλῳ τῷδε ἐτάσσετο καὶ τὰς ὑπηρεσίας ἴλεω ἔχειν τὴν γνώμην, ὅτι δὲ Νεάρχον γε οὐποτε ἂν Ἀλέ- ξανδρος προήκατο ἐς κίνδυνον καταφανέα, εἰ μὴ σφι 20.9.1 σωθήσεσθαι ἔμελλεν. λαμπρότης τε πολλὴ τῇ παρασκευῇ ἐποῦσα καὶ κόσμος τῶν νεῶν καὶ σπουδαὶ τῶν τριηράρ- χων ἀμφὶ τὰς ὑπηρεσίας τε καὶ τὰ πληρώματα ἐκπρε- πέες καὶ τοὺς πάντ’ ἤδη παλαι κατοκνέοντας ἐς ξώμην 20.9.5 ἅμα καὶ ἐλπίδας χρηστοτέρας ὑπὲρ τοῦ παντός ἔργου 20.10.1 ἐπηκτότα ἦν. πολὺ δὲ δὴ συνεπιλαβέσθαι ἐς εὐθυμίην τῇ στρατιῇ τὸ δὲ αὐτὸν Ἀλέξανδρον ὀρμηθέντα κατὰ τοῦ Ἰνδοῦ τὰ στόματα ἀμφότερα ἐκπλῶσαι ἐς τὸν πόν- τον σφάγια τε τῷ Ποσειδῶνι ἐντεμεῖν καὶ ὅσοι ἄλλοι 20.10.5 θεοὶ θαλάσσιοι, καὶ δῶρα μεγαλοπρεπέα τῇ θαλάσῃ 20.11.1 χαρίσασθαι. τῇ τε ἄλλῃ τῇ Ἀλεξάνδρου παραλόγῳ εὐτυ- χίῃ πεποιθότας οὐδὲν ὅτι οὐ τολμητόν τε ἐκείνῳ καὶ ἔρκτον ἡγέεσθαι. 21.1.1 ὡς δὲ τὰ ἐτήσια πνεύματα ἐκοιμήθη, ἃ δὲ τοῦ θέρους τὴν ὥρην πᾶσαν κατέχει ἐκ τοῦ πελάγεος ἐπιπνέοντα ἐπὶ τὴν γῆν καὶ ταύτῃ ἄπορον τὸν πλοῦν ποίοντα, τότε δὲ ὠρμῶντο ἐπὶ ἄρχοντος Ἀθήνησι Κηφισοδώρου, εἰκάδι 21.1.5 τοῦ Βοηδρομιῶνος μηνός, καθότι Ἀθηναῖοι ἄγουσιν, ὡς δὲ Μακεδόνες τε καὶ Ἀσιανοὶ ἦγον <μηνός Ὑπερ- βερεταίου, ἔτος> τὸ ἐνδέκατον βασιλεύοντος Ἀλεξάνδρου. 21.2.1 θύει δὲ καὶ Νεάρχος πρὸ τῆς ἀναγωγῆς Διὶ Σωτῆρι καὶ ἀγῶνα ποιεῖ καὶ οὗτος γυμνικόν. ἄραντες δὲ ἀπὸ τοῦ ναυστάθμου τῇ πρώτῃ ἡμέρῃ κατὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ὀρμίζονται πρὸς διώρυχιν μεγάλην, καὶ μένουσιν αὐτοῦ 21.2.5 δύο ἡμέρας. Στοῦρα δὲ ὄνομα ἦν τῷ χώρῳ· στάδιοι ἀπὸ 21.3.1 τοῦ ναυστάθμου ἐς ἑκατόν. τῇ τρίτῃ δὲ ἄραντες ἔπλεον ἔστω ἐπὶ διώρυχα ἄλλην σταδίους τριάκοντα, ἀλμυρὴν ἤδη ταύτην τὴν διώρυχα· ἀνῆει γάρ ἡ θάλασσα ἐς αὐτήν, μάλιστα μὲν ἐν τῇσι πλημμυρίσιν, ὑπέμενε δὲ 21.3.5 καὶ ἐν τῇ<σιν> ἀμπώτεσι τὸ ὕδωρ μεμιγμένον τῷ πο- 21.4.1 ταμῷ· Καύμανα δὲ ὄνομα ἦν τῷ χώρῳ. ἐνθὲνδε εἴκοσι σταδίους καταπλώσαντες ἐς Κορέεσιν ὀρμίζονται ἔτι 21.5.1 κατὰ τὸν ποταμὸν. ἐνθὲνδε ὀρμηθέντες ἔπλεον οὐκ ἐπὶ πολλόν· ἔρμα γὰρ ἐφάνη αὐτοῖσι κατὰ τὴν ἐκβολὴν τὴν ταύτη τοῦ Ἰνδοῦ καὶ τὰ κύματα ἐρρόχθαι πρὸς τῇ ἡϊόνι, 21.6.1 καὶ ἡ ἡϊὼν αὕτη τραχεῖα ἦν. ἀλλὰ ἵνα περ μαλθακὸν ἦν τοῦ ἔρματος, ταύτῃ διώρυχα ποιήσαντες ἐπὶ σταδίους πέντε, διῆγον τὰς νέας, ἐπεὶ δὲ ἡ πλήμμυρα ἐπῆλθεν ἡ 21.7.1 ἐκ τοῦ πόντου. ἐκπεριπλώσαντες δὲ σταδίους πεντήκοντα καὶ ἑκατόν ὀρμίζονται ἐς Κρώκαλα νῆσον ἀμμώδεα καὶ μένουσιν αὐτοῦ τὴν ἄλλην ἡμέραν. προσοικέει δὲ ταύτῃ 21.8.1 ἔθνος Ἰνδικόν, οἱ Ἀράβιες καλεόμενοι, ὧν καὶ ἐν τῇ μέλῳι ξυγγραφῇ μνήμην ἔσχον, καὶ ὅτι εἰσὶν ἐπώνυμοι ποταμοῦ Ἀράβιος, ὃς διὰ τῆς γῆς αὐτῶν ῥέων ἐκδιδόι ἐς θάλασσαν, ὀρίζων τούτων τε

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

τὴν χώραν καὶ τὴν

Ὀρειτέων. ἐκ δὲ Κρωκάλων ἐν δεξιᾷ μὲν ἔχοντες ὄρος τὸ καλεόμενον αὐτοῖσιν Εἶρον, ἐν ἀρι-
στερᾷ δὲ νῆσον ἀλιτενέα ἔπλεον· ἡ δὲ νῆσος παρατεταμένη τῇ ἡϊόνι 21.10.1 κόλπον στεινὸν
ποιεῖ. διεκπλεύσαντες δὲ ταύτην ὁρμίζονται ἐν λιμένι εὐόρμῳ. ὅτι δὲ μέγας τε καὶ καλὸς ὁ
λιμὴν, Νεάρχῳ ἔδοξεν ἐπονομάζειν αὐτὸν Ἀλεξάνδρου 21.11.1 λιμένα. νῆσος δὲ ἐστὶν ἐπὶ τῷ
στόματι τοῦ λιμένος ὅσον σταδίου δύο ἀπέχουσα· Βίβακτα ὄνομα τῇ νήσῳ, ὁ δὲ χώρος ἅπας
Σάγγαδα. ἡ δὲ νῆσος καὶ τὸν λιμένα, προ- 21.12.1 κειμένη πρὸ τοῦ πελάγεος, αὐτὴ ἐποί-
εεν. ἐνταῦθα πνεύματα μεγάλα ἐκ τοῦ πόντου ἔπνεε καὶ συνεχέα, καὶ Νεάρχος δείσας τῶν
βαρβάρων μή τινες συνταχθέντες ἐφ' ἀρπαγὴν τοῦ στρατοπέδου τραποίατο, ἐκτειχίζει τὸν
21.13.1 χώρον λιθίνῳ τείχει. τέσσαρες δὲ καὶ εἴκοσι ἡμέραι τῇ μονῇ ἐγένοντο. καὶ λέγει ὅτι
μύας τε ἐθήρων τοὺς θα- λασσίους οἱ στρατιῶται, καὶ ὄστρεα δὲ καὶ τοὺς σωλή- νας καλε-
ομένους, ἄτοπα τὸ μέγεθος, ὡς τοῖσιν ἐν τῇδε 21.13.5 τῇ ἡμετέρῃ θαλάσῃ συμβαλέειν· καὶ
ὑδωρ ὅτι ἀλμυρὸν ἐπίνετο. 22.1.1 ἅμα τε ὁ ἄνεμος ἐπαύσατο καὶ οἱ ἀνήγοντο. καὶ πε- ραιω-
θέντες σταδίου ἐς ἐξήκοντα ὁρμίζονται πρὸς αἰ- γιᾶ φαιμάδεϊ· νῆσος δὲ ἐπὶ τῷ αἰγιαλῷ
ἐρήμη. 22.2.1 ταύτην δὲ πρόβλημα ποιησάμενοι ὠρμίσθησαν· Δόμαι οὖνομα τῇ νήσῳ. ὑδωρ
δὲ οὐκ ἦν ἐν τῷ αἰγιαλῷ, ἀλλὰ προελθόντες ἐς τὴν μεσογαίην ὅσον εἴκοσι σταδίου ἐπὶ- 22.3.1
τυγχάνουσιν ὑδατι καλῷ. τῇ δὲ ὑστεραίῃ ἐς νύκτα αὐ- τοῖς ὁ πλόος ἐγένετο ἐς Σάραγγα
σταδίου τριακοσίους, καὶ ὁρμίζονται πρὸς αἰγιαλῷ, καὶ ὑδωρ ἦν ἀπὸ τοῦ 22.4.1 αἰγιαλοῦ
ὅσον ὀκτὼ σταδίου. ἐνθένδε πλώσαντες ὁρ- μίζονται ἐν Σακάλοισι, τόπῳ ἐρήμῳ. καὶ διεκπλώ-
σαντες σκοπέλους δύο, οὕτω τι ἀλλήλοις πελάζοντας, ὥστε τοὺς ταρσοὺς τῶν νεῶν ἀπτεσθαι
ἐνθεν καὶ ἐνθεν τῶν πε- 22.4.5 τρέων, καθορμίζονται ἐν Μοροντοβάροις, σταδίου διελ- 22.5.1
θόντες ἐς τριακοσίους· ὁ δὲ λιμὴν μέγας καὶ εὐκυκλος καὶ βαθὺς καὶ ἄκλυστος, ὁ δὲ ἔσπλους
ἐς αὐτὸν στενός. τοῦτον τῇ γλώσῃ τῇ ἐπιχωρίῃ Γυναικῶν λιμένα ἔκα- 22.6.1 λεον, ὅτι γυνή
τοῦ χώρου τούτου πρώτη ἐπήρξεν. ὡς δὲ διὰ τῶν σκοπέλων διεξέπλεον, κύμασι τε μεγάλοις ἐν-
έκυρσαν καὶ τῇ θαλάσῃ ἐρώδει. ἀλλὰ ἐκπεριπλῶσαι 22.7.1 γὰρ ὑπὲρ τοὺς σκοπέλους μέγα
ἔργον ἐφαίνετο. ἐς δὲ τὴν ὑστεραίην ἔπλεον νῆσον ἐν ἀριστερᾷ ἔχοντες πρὸ τοῦ πελάγεος οὕτω τι
τῷ αἰγιαλῷ συναφέα ὥστε εἰ- κάσαι ἂν διώρυχα εἶναι τὸ μέσον τοῦ τε αἰγιαλοῦ καὶ 22.7.5
τῆς νήσου· στάδιοι οἱ πάντες ἐβδομήκοντα τοῦ διέκπλου. καὶ ἐπὶ τε τοῦ αἰγιαλοῦ δένδρεα ἦν
πολλὰ καὶ δασέα, 22.8.1 καὶ ἡ νῆσος ὕλη παντοίη σύσκιος. ὑπὸ δὲ τὴν ἑὼ ἔπλεον ἔξω τῆς νήσου
κατὰ ῥηχὴν στενὴν· ἔτι γὰρ ἡ ἀνάπωτις κατεῖχε. πλώσαντες δὲ ἐς ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίου
ὁρμίζονται ἐν τῷ στόματι τοῦ Ἀράβιος ποταμοῦ· καὶ 22.8.5 λιμὴν μέγας καὶ καλὸς πρὸς τῷ
στόματι, ὑδωρ δὲ οὐκ ἦν πότιμον· τοῦ γὰρ Ἀράβιος αἱ ἐκβολαὶ ἀναμειγμέναι 22.9.1 τῷ
πόντῳ ἦσαν. ἀλλὰ τεσσαράκοντα σταδίου ἐς τὸ ἄνω προχωρήσαντες λάκκῳ ἐπιτυγχάνουσι,
καὶ ἐνθεν ὑδρεῦ- 22.10.1 σάμενοι ὀπίσω ἀπενόστησαν. νῆσος δὲ ἐπὶ τῷ λιμένι ὑψηλὴ καὶ ῥημος,
καὶ περὶ ταύτην ὄστρεων τε καὶ ἰχθύων παντοδαπῶν θήρα. μέχρι μὲν τοῦδε Ἀράβιες, ἔσχατοι
Ἰνδῶν ταύτῃ ὠκισμένοι, τὰ δὲ ἀπὸ τοῦδε 22.10.5 Ὀρεῖται ἐπεῖχον. 23.1.1 ὁρμηθέντες δὲ ἐκ τῶν
ἐκβολῶν τοῦ Ἀράβιος παρέ- πλεον τῶν Ὀρειτέων τὴν χώραν. καὶ ὁρμίζονται ἐν Πα- γάλοισι,
πλώσαντες σταδίου ἐς διακοσίους, πρὸς ῥηχί. ἀλλὰ ἀγκύρῃσι γὰρ ἐπήβολος ἦν ὁ χώρος. τὰ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

μὲν οὖν 23.1.5 πληρώματα ἀπεσάλευον ἐν τῇσι νηυσίν, οἱ δὲ ἐφ' ὕδαρ 23.2.1 ἐκβάντες ὑδρεύοντο. τῇ δ' ὑστεραίῃ ἀναχθέντες ἅμα ἡμέρη καὶ πλώσαντες σταδίους ἐς τριάκοντα καὶ τετρακοσίους κατὰγονται ἐσπέριοι ἐς Κάβανα, καὶ ὀρμίζονται πρὸς αἰγιαλῷ ἐρήμῳ. καὶ ἐνταῦθα ἐρηχίη τραχείη ἦν, καὶ 23.3.1 ἐπὶ τῷδε μετεώρους τὰς νέας ὠρμίσαντο. κατὰ τοῦτον τὸν πλόν πνεῦμα ὑπολαμβάνει τὰς νέας μέγα ἐκ πόντου, καὶ νέες δύο μακραὶ διαφθείρονται ἐν τῷ πλώῳ, καὶ κέρκυρος· οἱ δὲ ἄνθρωποι σῶζονται ἀπονηξάμενοι, 23.4.1 ὅτι οὐ πόρρω τῆς γῆς ὁ πλὸς ἐγένετο. ἀμφὶ δὲ μέσας νύκτας ἀναχθέντες πλέουσιν ἔστε ἐπὶ Κώκαλα, <ᾧ> τοῦ αἰγιαλοῦ, ἔνθεν ὠρμήθησαν, ἀπεῖχε σταδίους διακοσίους· καὶ αἱ μὲν νῆες σαλεύουσαι ὠρμεον, τὰ πληρώματα δὲ 23.4.5 ἐκβιβάσας Νεάρχος πρὸς τῇ γῇ ἠύλισθη, ὅτι ἐπὶ πολλὸν τεταλαιπώρηκότες ἐν τῇ θαλάσῃ ἀναπαύσασθαι ἐπόθεον· στρατόπεδον δὲ περιβάλετο τῶν βαρβάρων τῆς 23.5.1 φυλακῆς ἕνεκα. ἐν τούτῳ τῷ χώρῳ Λεόννατος, ὅτῳ τὰ Ὀρειτῶν ἐξ Ἀλεξάνδρου ἐπετέτραπτο, μάχῃ μεγάλῃ νικᾷ Ὀρείταις τε καὶ ὅσοι Ὀρείταις συνεπέλαβον τοῦ ἔργου. καὶ κτείνει αὐτῶν ἑξακισχιλίους, καὶ τοὺς ἡγεμόνας πάντας· τῶν δὲ σὺν Λεοννάτῳ ἵππεῖς μὲν ἀποθνήσκουσι πεντεκαίδεκα, τῶν δὲ πεζῶν ἄλλοι τε οὐ πολλοὶ καὶ Ἀπολλοφάνης ὁ Γαδρωσίων σατράπης. ταῦτα μὲν δὴ ἐν τῇ ἄλλῃ ξυγγραφῇ ἀναγέγραπται, καὶ ὅπως Λεόννατος ἐπὶ τῷδε ἐστεφανώθη πρὸς Ἀλεξάνδρου χρυσῷ στεφάνῳ 23.7.1 ἐν Μακεδόσιν. ἐνταῦθα σίτος ἦν νενημένος κατὰ πρὸς ταγμα Ἀλεξάνδρου ἐς ἐπισιτισμὸν τῷ στρατῷ, καὶ ἐμ- 23.8.1 βάλλονται σιτία ἡμερέων δέκα ἐς τὰς νέας. καὶ τῶν

νεῶν ὅσαι πεπονήκεσαν κατὰ τὸν πλόν μέχρι τοῦδε ἐπεσκεύασαν, καὶ τῶν ναυτέων ὅσοι ἐν τῷ ἔργῳ βλακύνειν ἐφαίνοντο Νεάρχῳ, τούτους μὲν περὶ ἄγειν Λεον- 23.8.5 νάτῳ ἔδωκεν, αὐτὸς δὲ ἀπὸ τῶν σὺν Λεοννάτῳ στρατιωτῶν συμπληροῖ τὸ ναυτικόν. 24.1.1 ἐνθὲνδε ὀρμηθέντες ἔπλεον ἀκραί, καὶ διελθόντες σταδίους ἐς πεντακοσίους ὠρμίζοντο πρὸς ποταμῷ χειμάρρῳ· Τόμηρος ὄνομα ἦν τῷ ποταμῷ. καὶ λίμνη ἦν ἐπὶ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ ποταμοῦ, τὰ δὲ βράχια τὰ πρὸς τῷ αἰγιαλῷ ἐπώκειον ἄνθρωποι ἐν καλύβαις πνιγνῆραῖς. καὶ οὗτοι ὡς προσπλέοντας εἶδον, ἐθάμβησάν τε καὶ 24.2.5 παρατείναντες σφᾶς παρὰ τὸν αἰγιαλὸν ἐτάχθησαν ὡς 24.3.1 ἀπομαχόμενοι πρὸς τοὺς ἐκβαίνοντας. λόγχα δὲ ἐφόρεον παχέας, μέγεθος ὡς ἑξαπλήχας· ἀκωκὴ δὲ οὐκ ἐπὶ σιδηρῇ, ἀλλὰ τὸ ὄξυ αὐτῇσι πεφυρακτωμένον ταὐτὸ 24.4.1 ἐποίεε. πλῆθος δὲ ἦσαν ὡς ἑξακόσιοι. καὶ τούτους Νεάρχος ὡς ὑπομένοντάς τε καὶ παρατεταγμένους κατεῖδε, τὰς μὲν νέας ἀνακωχεῖν κελεύει ἐντὸς βέλους, ὡς τὰ τοξεύματα ἐς τὴν γῆν ἀπ' αὐτῶν ἐκνεῖσθαι· αἱ γὰρ 24.4.5 τῶν βαρβάρων λόγχοι παχέαι φαινόμεναι ἀγχεμάχοι μὲν, 24.5.1 ἄφοβοι δὲ ἐς τὸ ἐσακοντίζεσθαι ἦσαν. αὐτὸς δὲ τῶν στρατιωτῶν ὅσοι αὐτοὶ τε κουφότατοι καὶ κουφότατα ὅπλισμένοι τοῦ τε νεῖν δαημονέστατοι, τούτους δὲ ἐκνήξασθαι 24.6.1 κελεύει ἀπὸ ξυνηθήματος. πρόσταγμα δὲ σφισιν ἦν, ὅπως τις ἐκνηξάμενος σταίῃ ἐν τῷ ὕδατι, προσμένειν τὸν παραστάτην οἱ ἐσόμενον, μηδὲ <ἐμ>βάλλειν πρόσθεν ἐς τοὺς βαρβάρους, πρὶν ἐπὶ τριῶν ἐς βάθος ταχθῆναι τὴν 24.6.5 φάλαγγα, τότε <δὲ> δρόμῳ ἥδη ἰέναι ἐπαλαλάξαντας. 24.7.1 ἅμα δὲ ἐρρίπτουν ἑαυτοὺς οἱ ἐπὶ τῷδε τεταγμένοι ἐκ τῶν νεῶν ἐς τὸν πόντον, καὶ ἐνήχοντο ὀξέως, καὶ ἴσταντο ἐν κόσμῳ, καὶ φάλαγγα ἐκ σφῶν ποιησάμενοι δρόμῳ ἐπήεσαν αὐτοὶ τε ἀλαλάζοντες τῷ Ἐνναλίῳ καὶ οἱ ἐπὶ 24.7.5 τῶν νεῶν ξυνεπήχεον,

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

τοξεύματά τε καὶ ἀπὸ μηχανῶν 24.8.1 βέλεα ἐφέροντο ἐς τοὺς βαρβάρους. οἱ δὲ τὴν τε λαμ-
πρότητα τῶν ὅπλων ἐκπλαγέντες καὶ τῆς ἐφόδου τὴν ὀξύτητα καὶ πρὸς τῶν τοξευμάτων τε
καὶ τῶν ἄλλων βελῶν βαλλόμενοι, οἷα δὴ ἡμίγυμνοι ἄνθρωποι, οὐδὲ 24.8.5 ὀλίγον ἐς ἀλλήν
τραπέντες ἐγκλίνουσι. καὶ οἱ μὲν αὐτοῦ 24.9.1 φεύγοντες ἀποθνήσκουσιν, οἱ δὲ καὶ ἀλίσκον-
ται· ἔστι δὲ οἱ καὶ διέφυγον ἐς τὰ ὄρεα. ἦσαν δὲ οἱ ἀλόντες τά τε ἄλλα σώματα δασέες καὶ
τὰς κεφαλὰς, καὶ τοὺς ὄνυ-
χας θηριώδεις· τοῖς γὰρ δὴ ὄνυξιν ὅσα σιδήρῳ διαχρᾶ- 24.9.5 σθαι
ἐλέγοντο καὶ τοὺς ἰχθύας τούτοις παρασχίζοντες κατεργάζεσθαι καὶ τῶν ξύλων ὅσα μαλα-
κώτερα. τὰ δὲ ἄλλα τοῖς λίθοις τοῖσιν ὀξέσιν ἔκοπτον· σίδηρος γὰρ αὐτοῖσιν οὐκ ἦν. ἐσθῆτα
δὲ ἐφόρεον δέρματα θήρεια, οἱ δὲ καὶ ἰχθύων τῶν μεγάλων [τε] τὰ παχέα. 25.1.1 ἐνταῦθα
νεωλοῦσι τὰς νέας, καὶ ὅσαι πεπονηκυῖαι αὐτῶν ἐπισκευάζουσι. τῇ δὲ ἑκτῇ ἡμέρῃ ἐστέλλοντο,
καὶ πλώσαντες σταδίους ἐς τριακοσίους ἀφικνέονται ἐς χῶ- ρον, ὃς δὴ ἔσχατος ἦν τῆς Ὀρει-
τῶν γῆς. Μάλανα τῷ 25.2.1 χῶρῳ ὄνομα. Ὀρεῖται δὲ ὅσοι ἄνω ἀπὸ θαλάσσης οἰκέου-
σιν, ἐσταλμένοι μὲν κατὰ περ Ἰνδοί εἰσι, καὶ τὰ ἐς πό- λεμον ὡσαύτως παραρτέονται· γλῶσσα δὲ
ἄλλη αὐτοῖσι 25.3.1 καὶ ἄλλα νόμαια. μῆκος τοῦ παράπλου παρὰ μὲν χώρην τὴν Ἀραβίων
ἐς χίλιους μάλιστα σταδίους, ἐνθεν περ ὠρμήθησαν, παρὰ δὲ τὴν Ὀρειτῶν γῆν ἐξακόσιοι καὶ
25.4.1 χίλιοι. παραπλεόντων δὲ τὴν Ἰνδῶν γῆν (τὸ ἐντεῦθεν γὰρ οὐκέτι Ἰνδοί εἰσι) λέγει <Νέ-
αρχος> ὅτι αἱ σκιαὶ 25.5.1 αὐτοῖσιν οὐ ταῦτό ἐποίεον· ἀλλὰ ὅπου μὲν ἐπὶ πολὺ τοῦ πόντου ὡς
πρὸς μεσημβρίαν προχωρήσειαν, αἱ δὲ καὶ αὐταὶ [αἱ σκιαὶ] πρὸς μεσημβρίην τετραμμέναι
ἐφαίνοντο· ὁπότε δὲ τὸ μέσον τῆς ἡμέρης ἐπέχει ὁ ἥλιος, ἤδη δὲ 25.6.1 καὶ ἔρημα σκιῆς πάντα
ὤφθη αὐτοῖσι. τῶν τε ἀστέρων ὅσους πρόσθεν μετεώρους κατεώρων, οἱ μὲν ἀφανέες πάντη
ἦσαν, οἱ δὲ πρὸς αὐτῇ τῇ γῇ ἐφαίνοντο, καταδύ- νοντές τε καὶ αὐτίκα ἀνατέλλοντες οἱ πάλαι
ἀειφανέες. 25.7.1 καὶ ταῦτα οὐκ ἀπεικότα δοκεῖ μοι ἀναγράψαι Νέαρχος· ἐπεὶ καὶ ἐν Συήνῃ
τῇ Αἰγυπτίῃ, ἐπεὰν τροπὰς ἄγῃ θέ- ρεος ὥρῃ ὁ ἥλιος, φρέαρ ἀποδεδειγμένον ἐστί, καὶ τοῦτο
ἄσκιον ἐν μεσημβρίῃ φαίνεται· ἐν Μερῷ δὲ πάντα 25.8.1 ἄσκια τῇ αὐτῇ ὥρῃ. εἰκὸς ὦν καὶ ἐν
Ἰνδοῖσιν, ἅτε πρὸς μεσημβρίην ὠκισμένοι, τὰ αὐτὰ δὴ πάθεα ἐπέχειν, καὶ μάλιστα δὴ κατὰ
τὸν πόντον τὸν Ἰνδικόν, ὅσῳ μᾶλλον αὐτοῖσιν ἢ θάλασσα πρὸς μεσημβρίην κέκλιται. ταῦτα
25.8.5 μὲν δὴ ὥδε ἐχέτω. 26.1.1 ἐπὶ δὲ Ὀρείτῃσι κατὰ μὲν μεσογαίην Γαδρώσιοι ἐπεῖ- χον, ὦν
τὴν χώρην χαλεπῶς διεξῆλθεν ἅμα τῇ στρατιῇ Ἀλέξανδρος, καὶ κακὰ τοσαῦτα ἔπαθεν, ὅσα
οὐδὲ τὰ σύμπαντα τῆς συμπάσης στρατηλασίης. ταῦτά μοι ἐν τῇ 26.2.1 μέλῳ συγγραφῇ
ἀναγέγραπται. κάτω δὲ Γαδρωσίων παρὰ τὴν θάλασσαν αὐτὴν οἱ ἰχθυοφάγοι καλεόμενοι
οἰκοῦσι· παρὰ τούτων τὴν γῆν ἔπλεον. τῇ μὲν πρώτῃ ἡμέρῃ περὶ τὴν δευτέραν φυλακὴν ἀνα-
χθέντες καταί- 26.2.5 ρουσιν εἰς Βαγίσαρα· σταδίοι τοῦ παράπλου ἐξακόσιοι. 26.3.1 λιμὴν
τε ἐνὶ αὐτόθι εὖορμος, καὶ κόμη Πάσιρα, ἀπέ- χουσα ἀπὸ θαλάσσης ἐξήκοντα σταδίους, καὶ
οἱ πρόσοι- 26.4.1 κοὶ αὐτῆς Πασιρέες. ἐς δὲ τὴν ὑστεραίαν πρωῒτερον τῆς ὥρης ἀναχθέντες
περιπλέουσιν ἄκρην ἐπὶ πολὺ τε ἀνέ- χουσαν ἐς τὸν πόντον καὶ αὐτὴν ὑψηλὴν καὶ κρημνώ-

δεα. φρέατα δὲ ὀρύξαντες, ὕδωρ [οὐκ] ὀλίγον καὶ πο- νηρὸν ἀρυσάμενοι ταύτῃ μὲν τῇ
ἡμέρᾳ ἐπὶ ἀγκυρέων 26.6.1 ὤρμεον, ὅτι ἐρήχῃ κατὰ τὸν αἰγιαλὸν ἀνεῖχεν· ἐς δὲ τὴν ὑστεραίην
καταίρουσιν ἐς Κόλτα, σταδίους ἐλθόντες διακοσίους. ἐνθένδε ἔωθεν πλεύσαντες σταδίους ἐξακο-

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

σίους ἐν Καλίμοισιν ὁρμίζονται. κώμη πρὸς τῷ αἰγιαλῷ, 26.6.5 φοίνικες δὲ περὶ αὐτὴν ὀλίγοι πεφύκεσαν, καὶ βάλανοι ἐπ' αὐτοῖσι χλωραὶ ἐπῆσαν. καὶ νῆσος ὡς ἑκατὸν στα- δίους ἀπὸ τοῦ αἰγιαλοῦ ἀπέχουσα, Καρνίνη ὄνομα. 26.7.1 ἐνταῦθα ξένια Νεάρχῳ προσφέρουσιν οἱ κωμη- ται πρό- βατα καὶ ἰχθύας· καὶ τῶν προβάτων τὰ κρέα λέγει ὅτι ἦν ἰχθυώδεα, ἴσα τοῖς τῶν ὀρνίθων τῶν πελαγίων, ὅτι καὶ αὐτὰ ἰχθύων σιτέεσται· πόα γὰρ οὐκ ἔνι ἐν τῇ χώρῃ. 26.8.1 ἀλλὰ τῇ ὑστεραίῃ πλεύσαντες ἐς σταδίους διακοσίους ὁρμίζονται πρὸς αἰγιαλῷ καὶ κώμῃ ἀπὸ θαλάσσης ἐς σταδίους τριάκοντα ἀπεχούσῃ· ἡ μὲν κώμη Κύσα ἑκα- 26.9.1 λέετο, Καρβίς δὲ τῷ αἰγιαλῷ ὄνομα ἦν. ἐνταῦθα πλοίοις ἐπιτυγχάνουσι σμικροῖσιν, οἷα ἀλιέων εἶναι πλοῖα οὐκ εὐδαίμωνων· αὐτοὺς δὲ οὐ καταλαμβάνουσιν, ἀλλ' ἔφυγον γὰρ καθορμιζόμενας κατιδόντες τὰς νέας. σῆτος 26.9.5 τε αὐτόθι οὐκ ἐνῆν, καὶ ἐπιλελοίπει τὴν στρατιὴν ὁ πολλός· ἀλλὰ αἶγας ἐμβαλλόμενοι ἐς τὰς νέας, οὕτω δὴ 26.10.1 ἀπέπλεον. καὶ περιπλώσαντες ἄκρην ὑψηλὴν ὅσον πεν- τήκοντα καὶ ἑκατὸν σταδίους ἀνέχουσαν ἐς τὸν πόντον, κατὰγονται ἐν λιμένι ἀκλύστῳ. καὶ ὕδωρ αὐτόθι ἦν, καὶ ἀλιέες ᾤκεον· Μόσαρνα ὄνομα ἦν τῷ λιμένι. 27.1.1 ἐνθένδε καὶ ἡγεμῶν τοῦ πλοῦ λέγει <Νεάρχος> ὅτι συνέπλωσεν αὐτοῖσιν, Ὑδράκης ὄνομα, Γαδρώσιος· ὑπέστη δὲ Ὑδράκης καταστήσειν αὐτοὺς μέχρι Καρμα- νίης. τὸ δὲ ἀπὸ τοῦδε οὐκέτι χαλεπὰ ἦν, ἀλλὰ μαλλόν 27.2.1 τιτ' ὀνομαζόμενα, ἔστε ἐπὶ τὸν κόλπον τὸν Περσικόν. ἐκ δὲ Μοσάρνων νυκτὸς ἐπάραντες πλώουσι σταδίους ἑπτα- κοσίους καὶ πεντήκοντα ἐς Βάλαμον αἰγιαλόν· ἐνθένδε ἐς Βάρνα κώμην σταδίους τετρακοσίους, ἵνα φοίνικες τε 27.2.5 πολλοὶ ἐνῆσαν καὶ κῆπος, καὶ ἐν τῷ κήπῳ μύρριναι ἔπε- φύκεσαν καὶ ἄλλα ἄνθεα, ἀφ' ὅτων στεφανώματα τοῖσι κωμήτησιν ἐπλέκοντο· ἐνταῦθα πρῶτον δένδρεά τε εἶδον ἡμεῖς, καὶ ἀνθρώπους οὐ πάντη θηριώδεις ἐποικέ- οντας. 27.3.1 ἐνθένδε ἐς διακοσίους σταδίους περιπλώσαντες κατὰ- ρουσιν ἐς Δενδρόβουσα, καὶ αἱ νέες ἐπ' ἀγκυρέων ἐσά- 27.4.1 λευσαν. ἐνθένδε ἀμφὶ μέσας νύκτας ἄραντες ἐς Κώφαντα λιμένα ἀπίκοντο, τετρακοσίους μάλιστα σταδίους διεκ- 27.5.1 πλώσαντες· ἐνταῦθα ἀλιέες τε ᾤκεον, καὶ πλοῖα αὐτοῖσιν ἦν μικρὰ καὶ πονηρά· καὶ ταῖς κώπαις οὐ κατὰ σκαλμὸν ἤρεσσον ὡς ὁ Ἑλλήνων νόμος, ἀλλ' ὥσπερ ἐντ' ποταμῷ τὸ ὕδωρ ἐπιβάλλοντες ἐνθεν καὶ ἐνθεν, κατὰπερ οἱ σκά- 27.5.5 πτοντες τὴν γῆν. ὕδωρ δὲ πολὺ τε ἦν ἐν τῷ λιμένι καὶ 27.6.1 καθαρόν. περὶ δὲ πρῶτην φυλακὴν ἄραντες καταΐρουσιν ἐς Κίζιζα, ἐς ὀκτακοσίους σταδίους διεκπλώσαντες, ἵνα αἰγιαλός τε ἔρημος ἦν καὶ ῥαχίη. αὐτόθι ὦν ἐπ' ἀγκυ- 27.7.1 ρέων ὤρμεον, κατὰ ναῦν τε ἐδειπνοποιέοντο. ἐνθένδε διεκπλώσαντες σταδίους πεντακοσίους ἀπίκοντο ἐς τινα πόλιν μικρὴν, οἰκειομένην ἐπὶ γηλόφου οὐ πόρρω τοῦ 27.8.1 αἰγιαλοῦ. καὶ Νεάρχος ἐπιφρασθεὶς ὅτι σπεί- ρεσθαι τὴν χώραν εἰκός, λέγει πρὸς Ἀρχίν, ὃς ἦν Ἀναξιδότου μὲν παῖς, Πελλαῖος, συνέπλει δὲ Νεάρχῳ, τῶν ἐν αἰνῇ ὦν Μακεδόνων – πρὸς τοῦτον λέγει ὅτι καταληπτέον σφίσιν 27.9.1 εἶη τὸ χωρίον· ἐκόντας τε γὰρ οὐκ ἂν οἴεσθαι δοῦναι τῇ στρατιῇ σιτία, βίη τε οὐχ οἷόν τε εἶναι ἐξαιρέειν, πο- λιορκίης δὲ καὶ τριβῆς δεήσειν, σφᾶς δὲ ἐπιλελοιπέναι τὰ σιτία. ὅτι δὲ ἡ γῆ σιτο- φόρος, τῇ καλλάμῃ τεκμηριοῦ- 27.9.5 σθαι, ἥντινα οὐ πόρρω τοῦ αἰγιαλοῦ ἀφεώρων βαθύνει. 27.10.1 ταῦτα ἐπεὶ σφίσιν ἐδόκεε, τὰς μὲν ἄλλας νέας κελεύει παραρτέεσθαι ὡς ἐς πλόν, καὶ ὁ Ἀρχίης αὐτῷ ἐξήρτυε τὰ ἐς τὸν πλόν· αὐτὸς δὲ ὑπολειφθεὶς μετὰ μιῆς νεῶς ἐπὶ θεῶν δῆθεν

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

τῆς πόλιος ἦει. 28.1.1 προσάγοντι δὲ αὐτῶ πρὸς τὰ τείχεα φιλίως ξένια ἔφε- ρον ἐκ τῆς πόλιος θύνους τε ἐν κριβάνοισιν ὀπτούς – οὗτοι γὰρ ἔσχατοι τῶν Ἰχθυοφάγων οἰκέοντες πρῶτοι ἐν αὐτοῖσιν ὤφθησαν οὐκ ὠμοφαγέοντες – καὶ πέμ- 28.2.1 ματα ὀλίγα καὶ βαλάνους τῶν φοι- νίκων. ὁ δὲ ταῦτα μὲν ἀσμένως δέκεσθαι ἔφη, ἐθέλειν δὲ θεήσασθαι τὴν πόλιν· 28.3.1 οἱ δὲ εἰὼν παρελθεῖν. ὥς δὲ εἶσω πυλῶν παρήλθε, δύο μὲν τῶν τοξοτῶν κατέχειν κελεύει τὴν πυλίδα, αὐτὸς δὲ μετὰ δύο ἄλλων καὶ τοῦ ἑρμηνέως ἐπὶ τὸ τεῖχος τὸ ταύτῃ ἀνελθὼν ἐσήμηνε τοῖς ἀμφὶ τὸν Ἀρχίν ὅπως συνέκειτο. 28.3.5 συνέκειτο γὰρ τὸν μὲν σημήναι, τὸν δὲ συμβαλόντα ποι- 28.4.1 εῖν τὸ τεταγμένον. ἰδόντες δὲ τὸ σημήνιον οἱ Μακεδόνες ἐπώκελλόν τε κατὰ τάχος τὰς νέας καὶ ἐξεπήδων σπουδῇ ἐς τὴν θάλασσαν, οἱ δὲ βάρβαροι ἐκπλαγέντες τοῖς γινο- 28.5.1 μένοις ἐπὶ τὰ ὅπλα ἔθρον. ὁ δὲ ἑρμηνεύς ὁ σὺν Νεάρχῳ ἐκήρυσσε σῆτον δίδοναι τῇ στρατιῇ, εἰ σώαν ἐθέλουσιν ἔχειν τὴν πόλιν· οἱ δὲ ἡρνοῦντο εἶναι σφίσι, καὶ ἅμα προσέβαλλον τῷ τείχει. ἀλλὰ ἀνέστελλον αὐτούς οἱ το- 28.5.5 ξόται οἱ ἀμφὶ τὸν Νεάρχον, ἐξ ὑπερδεξίου τοξεύοντες. 28.6.1 ὥς δὲ ἔμαθον ἐχομένην τε ἤδη καὶ ὅσον οὐπω ἀνδρα- ποδισθησομένην σφίσι τὴν πόλιν, τότε δὲ δὴ ἐδέοντο τοῦ Νεάρχου τὸν μὲν σῆτον ὅσπερ ἦν αὐτοῖσι λαβόντα 28.7.1 ἀπάγειν, τὴν πόλιν δὲ μὴ διαφθεῖραι. Νεάρχος δὲ τὸν μὲν Ἀρχίν κελεύει καταλαβεῖν τὰς πύλας καὶ τὸ κατ' αὐτὰς τεῖχος, αὐτὸς δὲ συμπέμπει τοὺς κατοφρομένους τὸν

σῆτον εἰ ἀδόλως δεικνύουσιν. οἱ δὲ τὸ μὲν ἀπὸ τῶν ἰχθύων τῶν ὀπτῶν ἀλληλεσμένον ἄλευρον πολὺ ἐδεί- κνυσαν, πυρούς δὲ καὶ κριθὰς ὀλίγας· καὶ γὰρ καὶ ἐτύγ- χανον σίτῳ μὲν τῷ ἀπὸ τῶν ἰχθύων, τοῖσι δὲ ἄρτοισιν 28.9.1 ὅσα ὄψω διαχρεόμενοι. ὥς δὲ τὰ ὄντα ἐπεδείκνυνον, οὕτω δὴ ἐκ τῶν παρόντων ἐπισιτισάμενοι ἀνήγοντο, καὶ ὁρμί- ζονται πρὸς ἄκρην, ἥντινα οἱ ἐπιχώριοι ἱρὴν Ἥλιου ἦγον· οὖνομα τῇ ἄκρῃ Βάγεια. 29.1.1 ἐνθένδε ἀμφὶ μέσας νύκτας ἄραντες διεκ- πλώουσι στα- δίους ἐς χιλίους ἐς Τάλμενα λιμένα εὐορμον. ἐνθένδε ἐς Κανασίδα πόλιν ἐρήμην σταδίους ἐς τετρακοσίους, ἵνα τινὶ φρέατι ὀρυκτῶ ἐπιτυγχάνουσι, καὶ φοίνικες 29.1.5 ἄγριοι ἐπεφύκεσαν. τούτων τοὺς ἐγκεφάλους κόπτοντες 29.2.1 ἐσιτέοντο· σῆτος γὰρ ἐπελελοίπει τὴν στρατιήν. καὶ κακῶς ἦδη ὑπὸ λιμοῦ ἔχοντες ἔπλεον τὴν τε ἡμέρην καὶ 29.3.1 τὴν νύκτα, καὶ ὁρμίζονται πρὸς αἰγιαλῷ ἐρήμῳ. Νέ- αρχος δὲ καταδείσας μὴ ἄρα ἐς τὴν γῆν ἐκβάντες ἀπο- λίποιεν τὰς νέας ὑπὸ ἀθυμίας, ἐπὶ τῷδε μετεώρους ἔσχε 29.4.1 τὰς νέας ἐπ' ἀγκυρέων. ἐνθένδε ἀναχθέντες ἐς Κανάτην ὁρμίζονται, σταδίους ὡς ἐπτακοσίους καὶ πεντήκοντα διεκπλώσαντες. ἔστι δὲ καὶ αἰγιαλὸς ἐνταῦθα καὶ διώ- 29.5.1 ρυχες βραχεῖαι. ἐνθένδε σταδίους ὀκτακοσίους πλώσαν- τες ἐν Ταοῖσιν ὁρμίζονται, κῶμαι δὲ μικραὶ καὶ πονηραὶ ἐπῆσαν. καὶ οἱ μὲν ἄνθρωποι ἐκλείπουσι τὰ οἰκία, αὐτοὶ δὲ σίτῳ τινὶ ὀλίγῳ ἐπιτυγχάνουσι, καὶ βαλάνοις ἐκ φοι- 29.5.5 νίκων. καὶ καμήλους ἐπτὰ ὅσαι ἐγκατελήφθησαν κατα- 29.6.1 κόψαντες, ἀπὸ τούτων τὰ κρέα ἐσιτέοντο. ὑπὸ δὲ τὴν ἑω ἀναχθέντες σταδίους τριακοσίους πλώουσι, καὶ καθ- ὁρμίζονται ἐς Δαργάσειρα· ἐνθα νομάδες τινὲς ἄνθρωποι 29.7.1 ὤκεον. ἐνθένδε ἄραντες τὴν τε νύκτα καὶ τὴν ἡμέρην οὐδέν τι ἐλινύοντες ἔπλεον, ἀλλὰ διελθόντες γὰρ σταδίους χιλίους τε καὶ ἑκατὸν ἐξέ- πλωσαν τὸ ἔθνος τῶν Ἰχθυο- φάγων, πολλὰ κακὰ ταύτῃ παθόντες ἀπορίῃ τῶν ἀναγ- 29.8.1 καίων. ὁρμίζονται δὲ οὐ πρὸς τῇ γῇ – ῥηχὴν γὰρ ἦν ἐπὶ πολλὸν ἀνέχουσα – , ἀλλὰ μετέωροι ἐπ' ἀγκυρέων· μῆκος τοῦ παράπλου τῶν Ἰχθυοφάγων τῆς χώρας ὀλίγῳ πλεῦνες στάδιοι μύριοι.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

29.9.1 οὗτοι οἱ ἰχθυοφάγοι σιτέονται, κατ' ὅτι περ καὶ κληίζονται, ἰχθύας, ὀλίγοι μὲν αὐτῶν ἀλιεύοντες τοὺς ἰχθύας – ὀλίγοις γὰρ καὶ πλοῖα ἐπὶ τῷδε πεποιήται καὶ τέχνη ἐξεύρηται ἐπὶ τῇ θήρῃ τῶν ἰχθύων – , τὸ 29.10.1 πολὺ δὲ ἡ ἀνάπωτις αὐτοῖσι παρέχει. οἱ δὲ δίκτυα ἐπὶ τῷδε πεποιήνται, μέγαθος καὶ ἐς δύο σταδίους τὰ πολλὰ αὐτῶν. πλέκουσι δὲ αὐτὰ ἐκ τοῦ φλοιοῦ τῶν φοινίκων, 29.11.1 στρέφοντες τὸν φλοιὸν ὥσπερ λίνον. ἐπεὰν δὲ ἡ θά- λασσα ὑπο- νοστήσῃ καὶ γῆ ὑπολείφθῃ, ἵνα μὲν ξηρὴ ἡ γῆ ὑπολείπεται, ἐρήμη τὸ πολὺ ἐστὶν ἰχθύων· ἐνθα δὲ βαθέα ἐστίν, ὑπολείπεται τι τοῦ ὕδατος καὶ ἐν τῷδε 29.11.5 κάρτα πολλοὶ ἰχθύες, οἱ μὲν πολλοὶ σμικροὶ αὐτῶν, οἱ δὲ καὶ μέζονες· τούτοις περιβάλλοντες τὰ δίκτυα αἱ- 29.12.1 ρέουσι. σιτέονται δὲ ὠμούς μὲν, ὅπως ἀνειρύουσιν ἐκ τοῦ ὕδατος, τοὺς ἀπαλωτάτους αὐτῶν· τοὺς δὲ μέζονας τε καὶ σκληροτέρους ὑπὸ ἡλίῳ αὐαίνοντες, εὖτ' ἂν ἀφαινανθῶσι, καταλοῦντες ἄλευρα ἀπ' αὐτῶν ποιεῖνται 29.12.5 καὶ ἄρτους, οἱ δὲ μάζας ἐκ τούτων τῶν ἀλεύρων πές- 29.13.1 σουσι. καὶ τὰ βοσκήματα αὐτοῖσι τοὺς ἰχθύας ξηροὺς σιτέονται· ἡ γὰρ χώρα ἐρήμος λειμῶνων οὐδὲ ποίην 29.14.1 φέρει. θηρεύουσι δὲ καὶ καράβους πολλαχῇ καὶ ὄστρεα καὶ τὰ κογχύλια· ἄλλες δὲ αὐτόματοι γίνονται ἐν τῇ 29.15.1 χώρῃ· ἀπὸ τούτων ἔλαιον ποιεῖουσιν. οἱ μὲν δὲ αὐτῶν ἐρήμους τόπους οἰκέουσιν ἄδενδρόν τε τὴν χώραν καὶ ἄφορον καρπῶν ἡμέραν, τούτοις ἀπὸ τῶν ἰχθύων ἡ πᾶσα δαίτα πεποιήται· ὀλίγοι δὲ αὐτῶν σπείρουσιν ὅσον 29.15.5 τῆς χώρας, καὶ τούτῳ κατὰπερ ὄψῳ χρῶνται πρὸς τοὺς 29.16.1 ἰχθύας· ὁ γὰρ σίτος αὐτοῖσιν εἰσὶν οἱ ἰχθύες. οἰκία δὲ πεποιήνται οἱ μὲν εὐδαιμονέστατοι αὐτῶν ὅσα κήτεια ἐκ- βάλλει ἡ θάλασσα τούτων τὰ ὅσῃ ἐπιλεγόμενοι <καὶ> τούτοις ἀντὶ ξύλων χρεόμενοι, καὶ θύρας τὰ ὅσῃ 29.16.5 ὅσα πλατέα αὐτῶν ἀλίσκεται ἀπὸ τούτων ποιεῖνται· τοῖσι δὲ πολλοῖς καὶ πενεστέροις ἀπὸ τῶν ἀκανθῶν τῶν ἰχθύων τὰ οἰκία ποιεῖται. 30.1.1 Κήτεια δὲ μεγάλα ἐν τῇ ἔξω θαλάσσῃ βόσκεται, καὶ 30.2.1 ἰχθύες πολὺ μέζονες ἢ ἐν τῇδε τῇ εἴσω. καὶ λέγει <Νέ- αρχος>, ὅποτε ἀπὸ Κυζῶν παρέπλεον, ὑπὸ τὴν ἑω ὁφ- θῆναι ὕδωρ ἄνω ἀναφυσώμενον τῆς θαλάσσης οἷά περ 30.3.1 ἐκ πρηστήρων βία ἀναφερόμενον, ἐκπλαγέντας δὲ σφᾶς πυκνάνεσθαι τῶν κατηγεο- μένων τοῦ πλόου ὅτι εἶη καὶ ἀπ' ὅτου τὸ πάθημα· τοὺς δὲ ὑποκρίνασθαι ὅτι κήτεια ταῦτα φερόμενα κατὰ τὸν πόντον ἀναφυσᾷ ἐς τὸ ἄνω 30.3.5 τὸ ὕδωρ. καὶ τοῖσι ναύτησιν ἐκπλαγεῖσιν ἐκ τῶν χειρῶν 30.4.1 τὰ ἐρετμὰ ἐκπεσεῖν, αὐτὸς δὲ ἐπιὼν παρακαλεῖν τε καὶ θαρσύνειν, καὶ κατ' οὐστίνας παραπλέων ἐγένετο, ἐς μέτωπόν τε κελεῦσαι καταστήσαι ὡς ἐπὶ ναυμαχίῃ τὰς νέας, καὶ ἐπαλαλάζοντας ὁμοῦ τῷ ῥοθίῳ πυκνὴν τε καὶ 30.5.1 ξὺν κτύπῳ πολλῷ τὴν εἰρεσίην ποιεῖσθαι. οὕτως ἀνα- θαρσύναντας ὁμοῦ δὴ πλέειν ἀπὸ ξυνθήματος. ὡς δὲ ἐπέλαζον ἤδη τοῖσι θηρίοισιν, ἐνταῦθα αὐτοὺς μὲν ὅσον αἱ κεφαλαὶ αὐτοῖσιν ἐχώρειν ἐπαλαλάξαι, τὰς δὲ σάλ- 30.5.5 πιγγας σημῆναι, καὶ τὸν κτύπον ἀπὸ τῆς εἰρεσίης ὡς 30.6.1 ἐπὶ μῆκιστον κατασχεῖν. οὕτω δὲ ὁρώμενα ἤδη κατὰ τὰς

πρώρας τῶν νεῶν τὰ κήτεια ἐς βυθὸν δύναι ἐκπλαγέντα, καὶ οὐ πολλῷ ὕστερον κατὰ τὰς πρύμνας ἀναδύντα ἀνα- σχεῖν καὶ τῆς θαλάσσης αὐτῆς ἀναφυσῆσαι ἐπὶ μέγα. 30.7.1 ἐνθεν κρότον τε ἐπὶ τῇ παραλόγῳ σωτηρίᾳ γενέσθαι τῶν ναυτῶν, καὶ αἶνον ἐς τὸν Νέαρχον τῆς τε τόλμης 30.8.1 καὶ τῆς σοφίης. τούτων μετεξέτερα τῶν κητέων ἐποκέλ- λειν πολλαχοῦ τῆς χώρας, ἐπειδὴ ἀνάπωτις κατάσχη, ἐν τοῖσι βράχεσιν ἐχόμενα, τὰ δὲ καὶ ὑπὸ χειμῶνων σκλη-

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

ρῶν ἐς τὴν χέρσον ἐξωθέεσθαι, καὶ οὕτω δὴ καὶ τὰ ση- 30.8.5 πόμενα ἀπόλλυσθαι τε καὶ τὰς
 σάρκας αὐτοῖσι περι- ρρεούσας ὑπολείπειν τὰ ὅστέα χρῆσθαι τοῖσιν ἀνθρώποι- 30.9.1 σιν ἐς τὰ
 οἰκία. εἶναι ὧν τὰ μὲν ἐν τῇσι πλευρῇσιν αὐτῶν ὅστέα δοκοῦς τοῖσιν οἰκήμασιν ὅσα μεγάλα, τὰ
 δὲ μι- κρότερα στρωτῆρας· τὰ δὲ ἐν τῇσι σιαγόσι, ταῦτα δὲ εἶναι τὰ θύρετρα, οἷα δὴ πολλῶν
 καὶ εἰς εἴκοσι καὶ 30.9.5 πέντε ὀργυῖας ἀνηκόντων τὸ μέγεθος. 31.1.1 εὖτε δὲ παρέπλεον τὴν
 χώραν τῶν Ἰχθυοφάγων, λόγον ἀκούουσι περὶ νήσου τινός, ἣ κεῖται μὲν ἀπέχουσα τῆς ταύτης
 ἡπείρου σταδίους ἐς ἑκατόν, ἐρήμη δὲ ἐστὶν οἰκη- 31.2.1 τῶν. ταύτην ἱρὴν Ἡλίου ἔλεγον
 εἶναι οἱ ἐπιχώριοι καὶ Νόσαλα καλέεσθαι, οὐδὲ τινα ἀνθρώπων καταίρειν ἐθέλιν ἐς αὐτήν·
 ὅστις δ' ἂν ἀπειρήνῃ προσχῇ, γίνεσθαι 31.3.1 ἀφανέα. ἀλλὰ λέγει <Νέαρχος> κέρκυρον σφι
 ἓνα πλῆ- ρωμα ἔχοντα Αἰγυπτίων οὐ πόρρω τῆς νήσου ταύτης γενέσθαι ἀφανέα, καὶ ὑπὲρ
 τούτου τοὺς ἡγεμόνας τοῦ πλόου ἰσχυρίζεσθαι ὅτι ἄρα κατάραντες ὑπ' ἀγνοίης εἰς 31.4.1 τὴν
 νῆσον γένοιντο ἀφανέες. Νέαρχος δὲ πέμπει κύκλῳ περὶ τὴν νῆσον τριηκόντορον, κελεύσας μὴ
 κατασχεῖν μὲν ἐς τὴν νῆσον, ἐμβοᾶν δὲ τοῖς ἀνθρώποις ὡς μάλιστα ἐν χρῶ παραπλέοντας, καὶ
 τὸν κυβερνήτην ὀνομάζοντα καὶ 31.5.1 ὅτου ἄλλου οὐκ ἀφανὲς τὸ οὐνομα. ὡς δὲ οὐδένα ὑπα-
 κούειν, τότε δὲ αὐτὸς λέγει πλεῦσαι ἐς τὴν νῆσον καὶ κατασχεῖν δὴ προσαναγκάσαι τοὺς ναύτας
 οὐκ ἐθέλον- τας, καὶ ἐκβῆναι αὐτὸς καὶ ἐλέγχει κενὸν μῦθον ἔόντα 31.6.1 τὸν περὶ τῆς νήσου
 λόγον. ἀκοῦσαι δὲ καὶ ἄλλον λόγον ὑπὲρ τῆς νήσου ταύτης λεγόμενον, οἰκῆσαι τὴν νῆσον ταύτην
 μίαν τῶν Νηρηίδων· τὸ δὲ οὐνομα οὐ λέγεσθαι τῆς Νηρηίδος. ταύτη δὲ ὅστις πελάσειε τῇ νήσῳ,
 τούτῳ 31.6.5 συγγίνεσθαι μὲν, ἰχθὺν δὲ αὐτὸν ἐξ ἀνθρώπου ποιέου- 31.7.1 σαν ἐμβάλλειν ἐς
 τὸν πόντον. Ἥλιον δὲ ἀχθεσθέντα τῇ Νηρηίδι κελεύειν μετοικιζέσθαι αὐτὴν ἐκ τῆς νήσου· τὴν
 δὲ ὁμολογεῖν μὲν ὅτι ἐξοικισθήσεται, δεῖσθαι δὲ οἱ τὸ πάθημα <παυθῆναι>. καὶ τὸν Ἥλιον
 ὑποδέξασθαι, 31.8.1 τοὺς δὲ δὴ ἀνθρώπους οὐστίνας [ἂν] ἰχθύας ἐξ ἀνθρώ- πων πεποιήκει
 κατελεήσαντα ἀνθρώπους αὐθις ἐξ ἰχθύων ποιῆσαι, καὶ ἀπὸ τούτων τῶν Ἰχθυοφάγων τὸ
 γένος καὶ 31.9.1 εἰς Ἀλέξανδρον κατελθεῖν. καὶ ταῦτα ὅτι ψεύδεα ἐξελέγ- χει Νέαρχος, οὐκ
 ἐπαινῶ αὐτὸν ἔγωγε τῆς σχολῆς τε καὶ σοφίης, οὔτε κάρτα χαλεπὰ ἐξελεγχθῆναι ἔόντα, ταλαί-
 πωρόν τε ὃν γιγνώσκων τοὺς παλαιούς λόγους ἐπιλεγό- 31.9.5 μενον ἐξελέγχειν ὄντας ψευδέας.
 32.1.1 ὑπὲρ τοὺς Ἰχθυοφάγους Γαδρώσιοι ἐς τὸ ἄνω οἰκέουσι γῆν πονηρὴν καὶ ψαμμώδεα,
 ἔνθεν καὶ τὰ πολλὰ κακὰ ἢ στρατιῇ τε Ἀλεξάνδρῳ ἔπαθεν καὶ αὐτὸς Ἀλέξανδρος, 32.2.1 ὡς
 μοι ἦδη ἐν τῷ ἄλλῳ λόγῳ ἀπήγηται. ὡς δὲ ἐς τὴν Καρμανίνην ἀπὸ τῶν Ἰχθυοφάγων κατῆρεν ὁ
 στρατός, ἐνταῦθα ἵνα πρῶτον τῆς Καρμανίνης ὠρμίσαντο, ἐπ' ἀγ- κυρέων ἐσάλευσαν, ὅτι ἐν χεῖρ
 παρετέτατο ἐς τὸ πέλαγος 32.3.1 τρηχεῖν. ἐνθένδε οὐκέτι ὡσαύτως πρὸς ἡλίου δυομένου ἐπλῶον,
 ἀλλὰ τὸ μεταξὺ δύσιός τε ἡλίου καὶ τῆς ἄρκτου 32.4.1 οὕτω μᾶλλον τι αἱ πρῶραι αὐτοῖσιν
 ἐπέιχον, καὶ οὕτω ἡ Καρμανὴ τῶν Ἰχθυοφάγων τῆς γῆς καὶ τῶν Ὠρειτῶν εὐδενδροτέρη τε
 καὶ εὐκαρποτέρη ἐστὶ καὶ ποιῶδης μᾶλ- 32.5.1 λόν τι καὶ ἔνυδρος. ὀρμίζονται δὲ ἐν Βάδει
 χώρῳ τῆς Καρμανίνης οἰκουμένῳ, δένδρεά τε πολλὰ ἡμέρα πεφυ- κότα ἔχοντι πλὴν ἐλαίης,
 καὶ ἀμπέλους ἀγαθὰς, καὶ σι- 32.6.1 τοφόρῳ. ἐνθένδε ὀρμηθέντες καὶ διεκπλώσαντες στα-
 δίους ὀκτακοσίους πρὸς αἰγιαλῷ ὀρμίζονται ἐρήμῳ, καὶ καθορῶσιν ἄκρην μακρὴν ἀνέχουσιν
 ἐπὶ πολλὸν ἐς τὸ πέλαγος· ἀπέχειν δὲ ἐφαίνετο ἡ ἄκρη πλόον ὡς ἡμέρης. 32.7.1 καὶ οἱ τῶν

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

χώρων ἐκείνων δαήμονες τῆς Ἀραβίης ἔλεγον τὴν ἀνίσχουσιν αὐτὴν ἄκρην, καλέεσθαι <δὲ> Μά- κετα· ἔνθεν τὰ κιννάμωμά τε καὶ ἄλλα τοιουτότροπα ἐς 32.8.1 Ἀσσυρίους ἀγινέεσθαι. καὶ ἀπὸ τοῦ αἰγιαλοῦ τούτου, ἵνα περ ὁ στόλος ἐσάλευε, καὶ τῆς ἄκρης, ἥντινα καταν- τικρὺ ἀφείρων ἀνέχουσιν ἐς τὸ πέλαγος, ὁ κόλπος – ἐμοί τε δοκεῖ καὶ Νεάρχῳ ὡσαύτως ἐδόκεεν – ἐς τὸ 32.9.1 εἶσω ἀναχεῖται, ὅπερ εἰκὸς ἢ Ἐρυθρὴ θάλασσα. αὐτὴν τὴν ἄκρην ὡς κατεῖδον, Ὀνησίκριτος μὲν ἐπέχοντας ἐπ’ αὐτὴν πλέειν ἐκέλευεν, ὡς μὴ κατὰ τὸν κόλπον ἐλα- 32.10.1 στρέοντας ταλαιπωρέεσθαι. Νεάρχος δὲ ὑποκρίνεται νήπιον εἶναι Ὀνησίκριτον, εἰ ἀγνοεῖ ἐπ’ ὅτῳ ἐστάλη 32.11.1 πρὸς Ἀλεξάνδρου ὁ στόλος. οὐ γὰρ ὅτι ἀπορίη ἦν περὶ διασωθῆναι πάντα αὐτῷ τὸν στρατόν, ἐπὶ τῷδε ἄρα ἐκ- πέμψαι τὰς νέας, ἀλλὰ ἐθέλοντα αἰγιαλούς τε τοὺς κατὰ τὸν παράπλου κατασκέψασθαι καὶ ὅρμους καὶ νησίδας, 32.11.5 καὶ ὅστις κόλπος ἐσέχοι ἐκπεριπλῶσαι τοῦτον, καὶ πό- λιας ὅσαι ἐπιθαλάσσιαι, καὶ εἴ τις ἔγκαρπος γῆ καὶ εἴ 32.12.1 τις ἐρήμη. σφᾶς ὧν οὐ χρῆναι ἀφανίσαι τὸ ἔργον, πρὸς τέρματι ἤδη ἐόντας τῶν πόνων, ἄλλως τε οὐδὲ ἀπόρως

ἔτι τῶν ἀναγκαίων ἐν τῷ παράπλῳ ἔχοντας. δεδιέναι τε, ὅτι ἡ ἄκρη ἐς μεσημβρίην ἀνέχει, μὴ ἐρήμῳ τε τῇ 32.13.1 αὐτῇ γῇ καὶ ἀνύδρῳ καὶ φλογώδει ἐγκύρσειαν. ταῦτα ἐνίκα, καὶ μοι δοκεῖ περιφανέως σῶσαι τὴν στρατιὴν τῇδε τῇ βουλῇ Νεάρχος· τὴν γὰρ δὴ ἄκρην ἐκείνην καὶ τὴν πρὸς αὐτῇ χώραν πᾶσαν ἐρήμην τε εἶναι λόγος κατ- 32.13.5 ἔχει καὶ ὕδατος ἀπορίη ἔχεται. 33.1.1 ἀλλὰ ἐπλῶν γὰρ ἀπὸ τοῦ αἰγιαλοῦ ἄραντες τῇ γῇ προσεχέες, καὶ πλώσαντες σταδίου ὡς ἐπτακοσίους ἐν ἄλλῳ αἰγιαλῷ ὠρμίσαντο· Νεόπτανα ὄνομα τῷ αἰγιαλῷ. 33.2.1 καὶ αὐθις ὑπὸ τὴν ἑὴ ἀνήγοντο, καὶ πλεύσαντες στα- δίους ἑκατὸν ὁρμίζονται κατὰ ποταμὸν Ἄναμιν· ὁ δὲ χώρος Ἀρμόξεια ἐκαλέετο. δαφιλέα δὲ ἤδη καὶ πάμφορα 33.3.1 <τὰ> αὐτῇ ἦν, πλὴν ἐλαῖαι οὐ πεφύκεσαν. ἐνταῦθα ἐκ- βαίνουσί τε ἐκ τῶν νεῶν καὶ ἀπὸ τῶν πολλῶν πόνων ἄσμενοι ἀνεπαύοντο, μεμνημένοι ὅσα κακὰ κατὰ τὴν θάλασσαν πεπονθότες ἦσαν καὶ πρὸς τῇ γῇ τῶν Ἰχθυο- 33.3.5 φάγων, τὴν τε ἐρημίην τῆς χώρας καὶ τοὺς ἀνθρώπους ὅπως θηριώδεις καὶ τὰς σφῶν ἀπορίας ἐπιλεγόμενοι. 33.4.1 καὶ τινες αὐτῶν ἀπὸ θαλάσσης ἐς τὸ πρόσω ἀνήλθον, ἀποσκεδασθέντες τῆς στρατιῆς κατὰ ζήτησιν ἄλλος ἄλλου. 33.5.1 ἐνταῦθα ἀνθρωπὸς σφισιν ὤφθη χλαμύδα τε φορῶν Ἑλληνικὴν καὶ τὰ ἄλλα ὡς Ἕλληνας ἐσκευασμένος, καὶ φωνὴν Ἑλλάδα ἐφώνεε. τοῦτον οἱ πρῶτοι ἰδόντες δα- κρύσαι ἔλεγον· οὕτω τι παράλογόν σφισι φανῆναι ἐκ 33.5.5 τῶν τοσῶνδε κακῶν Ἑλλήνας μὲν ἀνθρώπον ἰδεῖν, Ἑλ- 33.6.1 λάδος δὲ φωνῆς ἀκοῦσαι. ἐπηρώτων τε ὅπόθεν ἦκοι καὶ ὅστις ὦν· ὁ δὲ ἀπὸ τοῦ στρατοπέδου τοῦ Ἀλεξάνδρου ἀποσκεδασθῆναι ἔλεγε, καὶ εἶναι οὐ πόρρω τὸ στρατό- 33.7.1 πεδον καὶ αὐτὸν Ἀλέξανδρον. τοῦτον τὸν ἀνθρώπον βοῶντές τε καὶ κροτέοντες ἀνάγουσι παρὰ τὸν Νεάρχον· καὶ Νεάρχῳ πάντα ἔφρασε, καὶ ὅτι πέντε ἡμερῶν ὁδὸν ἀπέχει τὸ στρατόπεδον καὶ ὁ βασιλεὺς ἀπὸ τῆς θαλάσσης- 33.8.1 σης. τὸν τε ὑπαρχον τῆς χώρας ταύτης δείξειν ἔφη Νε- ἀρχῳ, καὶ ἔδειξε· καὶ μετὰ τούτου Νεάρχος γνώμην 33.9.1 ποιεῖται, ὅπως ἀναβήσεται πρὸς βασιλέα. τότε μὲν δὴ ἐπὶ τὰς νέας ἀπῆλθον· ὑπὸ δὲ τὴν ἑὴ τὰς νέας ἐνεῶλ- κεεν, ἐπισκευῆς τε εἵνεκα, ὅσαι αὐτῶν κατὰ τὸν πλοῦν πεπονήκεσαν, καὶ ἅμα ὅτι ἐν τῷ χώρῳ τούτῳ ὑπολείπε- 33.10.1 σθαί οἱ ἐδόκεε τὸν πολλὸν στρατόν. χάρακά τε ὧν περι- βάλλεται διπλοῦν περὶ τῷ ναυστάθμῳ, καὶ τεῖχος

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

γῆινον καὶ τάφρον βαθεῖν, ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τῆς ὀχθῆς ἀρξά-μενος ἔσπε ἐπὶ τὸν αἰγιαλόν, ἵνα αἱ νέες αὐτῷ ἀνειν- 33.10.5 σμέναι ἦσαν. 34.1.1 ἐν ᾧ δὲ ὁ Νέαρχος ταῦτα ἐκόσμεε, τῆς χώρας ὁ ὕπαρ-χος πεπυσμένος ὅπως ἐν μεγάλῃ φροντίδι ἔχοι Ἀλέξαν-δρος τὰ ἀμφὶ τὸν στόλον τοῦτον, μέγα δὲ τι ἀγαθὸν ἐξ Ἀλεξάνδρου ἂν ἐγνώ πείσεσθαι, εἰ πρῶτός οἱ ἀπαγγεῖ- 34.1.5 λειε τοῦ στρατοῦ τὴν σωτηρίην καὶ τὸν Νέαρχον ὅτι οὐ 34.2.1 πολλῷ ὕστερον ἀφίξεται ἐς ὅφιν τὴν βασιλείας. οὕτω δὲ τὴν βραχυτάτην ἐλάσας ἀπαγγέλλει Ἀλεξάνδρῳ ὅτι Νέαρχος οὗτος προσάγει ἀπὸ τῶν νεῶν. τότε μὲν δὲ καίπερ ἀπιστέων τῷ λόγῳ Ἀλέξανδρος ἀλλὰ ἐχάρη γε 34.3.1 κατὰ τὸ εἰκὸς τῇ ἀγγελίῃ· ὡς δὲ ἡμέρη τε ἄλλη ἐξ ἄλλης ἐγίνετο, καὶ ξυντιθέντι αὐτῷ τῆς ἀγγελίης τὸν χρόνον 34.4.1 οὐκέτι πιστὰ τὰ ἐξηγγελμένα ἐφαίνετο, πεμπόμενοί τε ἄλλοι ἐπ' ἄλλοισιν ὡς ἐπὶ κομιδῇ τοῦ Νέαρχου οἱ μὲν τινες ὀλίγον τῆς ὁδοῦ προελθόντες καὶ οὐδενὶ ἐγκύρ-σαντες κενοὶ ἐπανήσαν, οἱ δὲ καὶ πορρωτέρω ἐλθόντες 34.4.5 καὶ διαμαρτόντες τῶν ἀμφὶ τὸν Νέαρχον οὐδὲ αὐτοὶ 34.5.1 ἐπανήσαν, ἐνταῦθα δὲ τὸν μὲν ἄνθρωπον ἐκείνον, ὡς κενὰ τε ἀγγεῖλαντα καὶ λυπηρότερα οἱ τὰ πρήγματα ποιήσαντα τῇ ματαίῃ εὐφροσύνῃ, συλλαβεῖν κελεύει Ἀλέξανδρος, αὐτὸς δὲ τῇ τε ὀφει καὶ τῇ γνώμῃ δῆλος 34.6.1 ἦν μεγάλῳ ἄχει βεβλημένος. ἐν τούτῳ δὲ τῶν τινες κατὰ ζήτησιν τοῦ Νέαρχου ἐσταλμένων ἵππους τε ἐπὶ κομιδῇ αὐτῶν καὶ ἀπήνας δὲ ἄγοντες ἐντυγχάνουσι κατὰ τὴν ὁδὸν αὐτῷ τε Νέαρχῳ καὶ τῷ Ἀρχίῃ καὶ πέντε ἢ ἕξ ἅμα 34.7.1 αὐτοῖσιν· μετὰ τοσούτων γὰρ ἀνήει. καὶ ἐντυχόντες οὔτε αὐτὸν ἐγνώρισαν οὔτε τὸν Ἀρχίην – οὕτω τοι κάρτα ἄλλοιοι ἐφάνησαν, κομώοντες τε καὶ ῥυπώοντες καὶ με-στοὶ ἄλλης καὶ ῥικνοὶ τὰ σώματα καὶ ὠχροὶ ὑπὸ ἀγρυ- 34.8.1 πνίης τε καὶ τῆς ἄλλης τάλαιπωρίας – ἀλλὰ ἐρομένοις γὰρ αὐτοῖς ἵνα περ εἴη Ἀλέξανδρος, ὑποκρινάμενοι τὸν 34.9.1 χρόνον οἱ δὲ παρήλαυνον. Ἀρχίης δὲ ἐπιφρασθεὶς λέγει πρὸς Νέαρχον “ὦ Νέαρχε, τούτους τοὺς ἀνθρώπους δι' ἐρημίας ἐλαύνειν τὴν αὐτὴν ἡμῖν ὁδὸν οὐκ ἐπ' ἄλλῳ τινὶ συντίθιμι [ἦ] ὅτι μὴ κατὰ ζήτησιν τὴν ἡμετέραν ἀπε- 34.10.1 σταλμένους. ὅτι δὲ οὐ γινώσκουσιν ἡμέας, οὐκ ἐν θώματι ποιεόμαι· οὕτω γάρ τι ἔχομεν κακῶς ὡς ἄγνων-στοὶ εἶναι. φράσωμεν αὐτοῖσιν οἵτινες εἴμεν, καὶ αὐτοὺς 34.11.1 ἐρώμεθα καθότι ταύτῃ ἐλαύνουσιν.” ἔδοξε τῷ Νέαρχῳ ἐναίσιμα λέγειν· καὶ ἤροντο ὅσοι ἐλαύνουσιν· οἱ δὲ ὑποκρίνονται ὅτι κατὰ ζήτησιν Νέαρχου τε καὶ τοῦ στρα- 34.12.1 τοῦ τοῦ ναυτικοῦ. ὁ δὲ “οὗτος” ἔφη “ἐγὼ εἰμι Νέαρ-χος, καὶ Ἀρχίας οὗτος. ἀλλ' ἄγετε ἡμέας· ἡμεῖς δὲ τὰ ὑπὲρ τῆς στρατιῆς Ἀλεξάνδρῳ ἀπηγησόμεθα.” 35.1.1 ἀναλαβόντες <ῶν> αὐτοὺς ἐπὶ τὰς ἀπήνας ὀπίσω ἤλαυνον. καὶ τινες αὐτῶν τούτων ὑποφθάσαι ἐβελή-σαντες τὴν ἀγγελίην, προδραμόντες λέγουσιν Ἀλεξάνδρῳ ὅτι “οὗτός τοι Νέαρχος, καὶ σὺν αὐτῷ Ἀρχίης καὶ πέντε

35.1.5 ἄλλοι κομίζονται παρὰ σέ,” ὑπὲρ δὲ τοῦ στρατοῦ παντὸς 35.2.1 οὐδὲν εἶχον ὑποκρίνασθαι. τοῦτο ἐκεῖνο συνθεὶς Ἀλέ-ξανδρος, τοὺς μὲν παραλόγως ἀποσωθῆναι, τὴν στρα-τιὴν δὲ πᾶσαν διεφθάρθαι αὐτῷ, οὐ τοσόνδε τοῦ Νε-άρχου τε καὶ τοῦ Ἀρχίου τῇ σωτηρίῃ ἔχαιρεν, ὅσον 35.3.1 ἐλύπει αὐτὸν ἀπολομένη ἢ στρατιὴ πᾶσα. οὕτω πάντα ταῦτα εἶρητο, καὶ ὁ Νέαρχος τε καὶ ὁ Ἀρχίης προσῆ-γον. τοὺς δὲ μόγις καὶ χαλεπῶς ἐπέγνων Ἀλέξανδρος, ὅτι τε κομώοντας καὶ κακῶς ἐσταλμένους καθεώρα, 35.3.5 ταύτῃ μᾶλλον τι βεβαιότερον αὐτῷ τὸ ἄχος ὑπὲρ τῆς 35.4.1 στρατιῆς τῆς ναυτικῆς ἐγίνετο. ὁ δὲ τὴν δεξιὰν τῷ Νέαρχῳ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ἐμβαλὼν καὶ ἀπαγαγὼν μόνον αὐτὸν ἀπὸ τῶν ἐταίρων τε καὶ τῶν ὑπασπιστῶν, πολλὸν ἐπὶ χρόνον 35.5.1 ἐδάκρυεν· ὃς δὲ ἀνενεγκὼν “ἀλλὰ ὅτι σύ γε ἡμῖν ἔπαν- ἦκεις σῶος” ἔφη “καὶ Ἀρχίης οὗτος, ἔχοι ἂν ἔμοιγε ὡς ἐπὶ συμφορῇ τῇ ἀπάσῃ μετρίως· αἱ δέ τοι νέες καὶ ἡ 35.6.1 στρατιὴ κοίῳ τινὶ τρόπῳ διεφθάρησαν;” ὃ δὲ ὑπολαβὼν “ὦ βασιλεῦ,” ἔφη “καὶ αἱ νέες τοι σῶαί εἰσι καὶ ὁ στρατός· ἡμεῖς δὲ οὗτοι ἄγγελοι τῆς σωτηρίας αὐτῶν 35.7.1 ἦκομεν.” ἔτι μᾶλλον ἐδάκρυεν Ἀλέξανδρος, καθότι ἀνέλ- πιστός οἱ ἡ σωτηρίη τοῦ στρατοῦ ἐφαίνετο, καὶ ὅπου ὁρμέ- ουσιν αἱ νέες ἀνηρώτα. ὃ δὲ “αὗται” ἔφη “ἐν τῷ στόματι τοῦ Ἀνάμιδος ποταμοῦ ἀνειρυσμέναι ἐπισκευά- 35.8.1 ζονται.” Ἀλέξανδρος δὲ τὸν τε Δία τὸν Ἑλλήνων καὶ τὸν Ἀμμωνα τὸν Λι- βύων ἐπόμενυσιν, ἢ μὴν μειζόνως ἐπὶ τῇδε τῇ ἀγγελίῃ χαίρειν ἢ ὅτι τὴν Ἀσίην πᾶσαν ἐκτημένους ἔρχεται. καὶ γὰρ καὶ τὸ ἄχος οἱ ἐπὶ τῇ ἀπω- 35.8.5 λείῃ τῆς στρατιῆς ἀντίρροπον γενέσθαι τῇ ἄλλῃ πάσῃ εὐτυχίῃ. 36.1.1 ὁ δὲ ὑπαρχος τῆς χώρας, ὄντινα συνεilhφει Ἀλέξαν- δρος ἐπὶ τῆς ἀγγελίης τῇ ματαιιότητι, παρόντα κατιδὼν 36.2.1 τὸν Νέαρχον, πίπτει τε αὐτῷ πρὸς τὰ γόνατα, καὶ “οὗτός τοι” ἔφη “ἐγὼ εἰμι, ὃς ἀπήγγειλα Ἀλεξάνδρῳ ὅτι σῶος ἦκετε· ὁρᾷς ὅπως διάκειμαι.” οὕτω δὲ δεῖται Ἀλεξάνδρου Νέαρχος ἀφεῖναι τὸν ἄνδρα, καὶ ἀφίεται. 36.3.1 Ἀλέξανδρος δὲ σωτήρια τοῦ στρατοῦ ἔθυε Διὶ Σωτῆρι καὶ Ἡρακλεῖ καὶ Ἀπόλλωνι Ἀλεξικάκῳ καὶ Ποσειδῶνι τε καὶ ὅσοι ἄλλοι θαλάσσιοι θεοί, καὶ ἀγῶνα ἐποίεε γυμνικόν τε καὶ μουσικόν, καὶ πομπὴν ἔπεμπε· καὶ 36.3.5 Νέαρχος ἐν πρώτοισιν ἐπόμενους ταινίησί τε καὶ ἄνθεσι 36.4.1 πρὸς τῆς στρατιῆς βαλλόμενος. ὡς δὲ ταῦτά οἱ τέλος εἶχε, λέγει πρὸς Νέαρχον “ἐγὼ σε, ὦ Νέαρχε, οὐκέτι θέλω τὸ πρόσω οὐτ’ οὖν κινδυνεύειν οὔτε ταλαιπωρέε- σθαι, ἀλλὰ ἄλλος γὰρ τοῦ ναυτικοῦ ἐξηγήσεται τὸ ἀπὸ 36.5.1 τοῦδε ἔσπε καταστήσαι αὐτὸ ἐς Σοῦσα.” Νέαρχος δὲ ὑπολαβὼν λέγει “ὦ βασιλεῦ, ἐγὼ μὲν τοι πάντα πείθε- σθαι ἐθέλω τε καὶ ἀναγκαίῃ μοί ἐστιν. ἀλλὰ εἰ δὴ τι καὶ σὺ ἐμοὶ χαρίζεσθαι ἐθέλεις, μὴ ποιήσης ὧδε, ἀλλὰ 36.5.5 με ἔασον ἐξηγήσασθαι ἐς ἅπαν τοῦ στρατοῦ, ἔσπε σοι 36.6.1 σῶας καταστήσω ἐς Σοῦσα τὰς νέας, μηδὲ τὰ μὲν χα- λεπὰ αὐτοῦ τε καὶ ἄπορα ἐμοὶ ἐπιτετραμμένα ἐκ σοῦ ἔστω, τὰ δὲ εὐπετέα τε καὶ κλέους ἤδη ἐτοίμου ἐχόμενα, 36.7.1 ταῦτα δὲ ἀφαιρεθέντα ἄλλῳ ἐς χεῖρας διδόσθω.” ἔτι λέγοντα παύει αὐτὸν Ἀλέξανδρος, καὶ χάριν προσωμο- λόγει εἰδέναι. οὕτω δὲ καταπέμπτει αὐτόν, στρατιὴν δούς 36.8.1 ἐς παραπομπὴν ὡς διὰ φιλίας ἰόντι ὀλίγην. τῷ δὲ οὐδὲ τὰ τῆς ὁδοῦ τῆς ἐπὶ θάλασσαν ἔξω πόνου ἐγένετο, ἀλλὰ συλλεγεγμένοι γὰρ οἱ κύκλῳ βάρβαροι τὰ ἐρυμνὰ τῆς χώρας τῆς Καρμανίης κατεῖχον, ὅτι καὶ ὁ σατράπης 36.8.5 αὐτοῖσι τετελευτήκει κατὰ πρόσταξιν Ἀλεξάνδρου, ὃ δὲ νεωστὶ καθεστηκὼς Τληπόλεμος οὐπω βέβαιον τὸ κράτος 36.9.1 εἶχε. καὶ δις ὧν καὶ τρίς τῇ αὐτῇ ἡμέρῃ ἄλλοισι καὶ ἄλλοισι τῶν βαρβάρων ἐπιφαι- νομένοισιν ἐς χεῖρας ἦσαν, καὶ οὕτως οὐδὲν τι ἐλινύσαντες μόλις καὶ χαλεπῶς ἐπὶ θάλασσαν ἀπεσώθησαν. ἐνταῦθα θύει Νέαρχος Διὶ 36.9.5 Σωτῆρι καὶ ἀγῶνα ποιῇ γυμνικόν. 37.1.1 ὡς δὲ αὐτῷ τὰ θεῖα ἐν κόσμῳ πεποιήτο, οὕτω δὲ ἀνή- γοντο. παραπλώσαντες δὲ νῆσον ἐρήμην τε καὶ τραχεῖν ἐν ἄλλῃ νήσῳ ὁρμίζονται, μεγάλη ταύτη καὶ οἰκουμένη, πλώσαντες σταδίους τριηκοσίους ἐνθενπερ ὠρμήθησαν. 37.2.1 καὶ ἡ μὲν ἐρήμη νῆσος Ὀργάνα ἐκαλέετο, ἐς ἣν δὲ ὠρ- μίσθησαν Ὀάρακτα, ἄμπελοί τε ἐν αὐτῇ ἐπεφύκεσαν καὶ φοίνικες, καὶ σιτοφόρος <ἦν>· τὸ δὲ

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

μῆκος [ἦν] τῆς νῆ- σου στάδιοι ὀκτακόσιοι. καὶ ὁ ὑπαρχος τῆς νήσου Μα- 37.2.5 ζήνης συνέπλει αὐτοῖσι μέχρι Σούσων ἐθελοντῆς ἡγε- 37.3.1 μὼν τοῦ πλόου. ἐν ταύτῃ τῇ νήσῳ ἔλεγον καὶ τοῦ πρώτου δυναστεύσαντος τῆς χώρας ταύτης δείκνυσθαι τὸν τάφον· ὄνομα δὲ αὐτῷ Ἐρυθρὴν εἶ- ναι, ἀπ' ὅτου καὶ τὴν ἐπω- νυμῖν τῇ θαλάσῃ ταύτῃ εἶναι Ἐρυθρὴν καλέεσθαι. 37.4.1 ἐνθὲνδε ἐκ τῆς νήσου ἄραντες ἔπλεον· καὶ τῆς νήσου αὐτῆς παραπλώσαντες ὅσον διακοσίους σταδίους ὀρμί- ζονται ἐν αὐτῇ αὐθις, καὶ καθορῶσιν ἄλλην νῆσον, ἀπέ- χουσαν τῆς μεγάλης ταύτης τεσσαράκοντα μάλιστα στα- 37.5.1 δίους. Ποσειδῶνος ἱρὴ ἐλέγετο εἶναι καὶ ἄβατος. ὑπὸ δὲ τὴν ἑὼ ἀνήγοντο, καὶ καταλαμβάνει αὐτοὺς ἀνάπρωτις οὕτω τι καρτερή, ὥστε τρεῖς τῶν νεῶν ἐποκείλασαι ἐν τῷ ξηρῷ ἐσχέθησαν, αἱ δὲ ἄλλαι χαλεπῶς διεκπλώουσai 37.6.1 τὰς ξηχίας ἐς τὰ βάθρα ἀπεσώθησαν. αἱ δὲ ἐποκείλασαι τῆς πλημμυρίδος ἐπιγενομένης αὐθις ἐξέπλωσαν τε καὶ 37.7.1 δευτεραῖαι κατήγοντο ἵνα περ ὁ πᾶς στόλος. ὀρμίζονται

δὲ ἐς νῆσον ἄλλην, διέχουσαν τῆς ἡπείρου ὅσον τριακο- 37.8.1 σίους σταδίους, πλώσαντες τετρακοσίους. ἐντεῦθεν ὑπὸ τὴν ἑὼ ἔπλεον, νῆσον ἐρήμην ἐν ἀριστερᾷ παραμείβον- τες· ὄνομα δὲ τῇ νήσῳ Πύλωρα. καὶ ὀρμίζον<ται> πρὸς Ἰδωδῶνῃ, πολιχνίῳ σμικρῷ καὶ πάντων ἀπόρῳ ὅτι μὴ 37.8.5 ὕδατος καὶ ἰχθύων· ἰχθυοφάγοι γὰρ καὶ οὗτοι ὑπ' ἀναγ- 37.9.1 καίης ἦσαν, ὅτι πονηρὰν γῆν νέμονται. ἐνθὲνδε ὕδρευ- σάμενοι καταίρουσιν ἐς Ταρσίην ἄκρην ἀνατείνου- σαν 37.10.1 ἐς τὸ πέλαγος, πλώσαντες σταδίους τριακοσίους. ἐνθεν ἐς Καταίνην, νῆσον ἐρήμην, ἀλιτενεά· αὕτη ἱερὴ Ἑρμῆ καὶ Ἀφροδίτης ἐλέγετο· στάδιοι τοῦ πλόου τριηκόσιοι. 37.11.1 ἐς ταύτην ὅσα ἔτη ἀφίεται ἐκ τῶν περιοίκων πρόβατα καὶ αἰγες ἰρὰ τῷ Ἑρμῇ καὶ τῇ Ἀφροδίτῃ, καὶ ταῦτα ἀπηργισμένα ἦν ὅρᾱν ὑπὸ χρόνου τε καὶ ἐρημίας. 38.1.1 μέχρι τοῦδε Καρμανίη· τὰ δὲ ἀπὸ τοῦδε Πέρσαι ἔχουσι. μῆκος τοῦ πλόου παρὰ τὴν Καρμανίην χώραν στάδιοι τρις- χίλιοι καὶ ἐπτακόσιοι. ζώουσι δὲ κατὰ περ Πέρσαι, ὅτι καὶ ὁμοροὶ εἰσι Πέρσησι, καὶ τὰ ἐς τὸν πό- 38.2.1 λεμον ὡσαύτως κοσμέονται. ἐνθὲνδε ἄραντες ἐκ τῆς νήσου τῆς ἱρῆς παρὰ τὴν Περσίδα ἤδη ἔπλεον, καὶ κατὰ- γονται ἐς Ἰλάν χῶρον, ἵνα λιμὴν πρὸς νήσου σμικρῆς καὶ ἐρή- μης γίνεταί· οὕνομα τῇ νήσῳ Καϊκάνδρος, ὁ δὲ 38.3.1 πλόος στάδιοι τετρακόσιοι. ὑπὸ δὲ τὴν ἑὼ ἐς ἄλλην νῆσον πλεύσαντες ὀρμίζονται οἰκουμένην, ἵνα καὶ μαρ- γαρίτην θηρᾶσθαι λέγει <Νέαρχος> κατὰ περ ἐν τῇ Ἰν- δῶν θαλάσῃ. ταύτης τῆς νήσου τὴν ἄκρην παραπλώ- 38.3.5 σαντες σταδίους ὡς τεσσαράκοντα, ἐνταῦθα ὠρμίσθησαν. 38.4.1 ἐνθὲνδε πρὸς ὄρει ὀρμίζονται ὑψηλῷ – Ὡχος ὄνομα τῷ 38.5.1 ὄρει – ἐν λιμένι εὐόρμῳ, καὶ ἀλιεῖς αὐτοῦ ᾤκεον. καὶ ἐνθεν πλώσαντες σταδίους τετρακοσίους τε καὶ πεντή- κοντα ὀρμίζονται ἐν Ἀποστάνοισι· καὶ πλοῖα πολλὰ αὐ- τόθι ὠρμεε, κώμη τε ἐπὶν ἀπέχουσα ἀπὸ θαλάσσης στα- 38.6.1 δίους ἐξήκοντα. νυκτὸς δὲ ἐπάραντες ἐνθεν ἐσπλώουσιν ἐς κόλπον συνοικεόμενον πολλῇσι κώμησι. στάδιοι τοῦ πλόου τετρακόσιοι· ὀρμίζονται δὲ πρὸς ὑπαρείην. ταύτῃ φοινικῆς τε πολλοὶ ἐπεφύκεσαν καὶ ὅσα ἄλλα ἀκρόδρυα 38.7.1 ἐν τῇ Ἑλλάδι γῇ φύεται. ἐνθεν ἄραντες ἐς Γώγανα παραπλέουσι σταδίους μάλιστα ἐς ἑξακοσίους ἐς χώραν οἰκουμένην· ὀρμίζονται δὲ τοῦ ποταμοῦ τοῦ χειμάρρου – ὄνομα δὲ Ἀρεῶν – ἐν τῇσιν ἐκβολῇσιν. ἐνταῦθα 38.7.5 χαλεπῶς ὀρμίζονται· στεινὸς γὰρ ἦν ὁ ἐσπλους κατὰ τὸ στόμα, ὅτι βράχεα τὰ κύκλῳ αὐτοῦ ἢ ἀνάπρωτις ἐποίεε. 38.8.1 καὶ ἐνθεν

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

αὐτὸν ἐν στόματι ἄλλου ποταμοῦ ὁρμίζονται, διεκπλώσαντες σταδίους ἐς ὀκτακοσίους· Σιτακὸς ὄνομα τῷ ποταμῷ ἦν· οὐδὲ ἐν τούτῳ εὐμαρέως ὁρμίζονται, καὶ ὁ πλόος ἅπας οὗτος ὁ παρὰ τὴν Περσίδα βράχεια τε 38.9.1 ἦσαν καὶ ῥηχίαι καὶ τενάγεια. ἐνταῦθα σῖτον καταλαμ- βάνουσι πολὺν ξυγκεκομισμένον κατὰ πρόσταξιν βασι- λέως, ὡς σφίσιν εἶναι ἐπισιτίσασθαι· ἐνταῦθα ἔμειναν ἡμέρας τὰς πάσας μίαν καὶ εἴκοσι, καὶ τὰς ναῦς ἀνείρυν- 38.9.5 σάμενοι, ὅσαι μὲν πε- πονήκεσαν ἐπεσκεύαζον, τὰς δὲ ἄλλας ἐθεράπευον. 39.1.1 ἐνθένδε ὁρμηθέντες εἰς Ἴερατιν πόλιν ἀφίκοντο, ἐς χώρον οἰκούμενον. ἐπτακόσιοι καὶ πεντήκοντα στάδιοι ὁ πλόος· ὥρμισθησαν δὲ ἐν διώρυγῃ ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ 39.2.1 ἐμβεβλημένη ἐς θάλασσαν, ἥ ὄνομα ἦν Ἡράτειμις. ἅμα δὲ ἡλίῳ ἀνίσχοντι παραπλεύουσιν ἐς ποταμὸν χειμάρρουν, ὄνομα Πάδαργον, ὁ δὲ χώρος χειρρόνησος ἅπας. καὶ ἐν αὐτῷ κῆποι τε πολλοὶ καὶ ἀκρόδῳρα παντοῖα ἐφύετο· 39.3.1 ὄνομα τῷ χώρῳ Μεσαμβρίη. ἐκ Μεσαμβρίας δὲ ὁρμη- θέντες καὶ διεκπλώσαντες σταδίους μάλιστα ἐς διακο- σίους ἐς Ταόκην ὁρμίζονται ἐπὶ ποταμῷ Γράνιδι. καὶ ἀπὸ τούτου ἐς τὸ ἄνω <τὰ> Περσῶν βασι- λεια ἦν, ἀπέ- 39.3.5 χοντα τοῦ ποταμοῦ τῶν ἐκβολέων σταδίους ἐς διακο- 39.4.1 σίους. κατὰ τοῦτον τὸν παράπλου λέγει <Νέαρχος> ὀφθῆναι κῆτος ἐκβεβλημένον ἐς τὴν ἡίονα, καὶ τοῦτο προσπλώσαντάς τινας τῶν ναυτῶν ἐκμετρήσαι καὶ φάναι 39.5.1 εἶναι πῆχων πεντήκοντα· δέρμα δὲ αὐτῷ εἶναι φολι- δωτόν, οὕτω τι ἐς βάθος ἦκον ὡς καὶ ἐπὶ πῆχυν ἐπέχειν, ὅσπρεϊά τε καὶ λοπάδας καὶ φυκία πολλὰ ἔχειν ἐπιπεφυ- κότα. καὶ δελφίνας λέγει ὅτι καθορᾶν ἦν πολλοὺς ἀμφὶ 39.5.5 τῷ κῆτει, καὶ τῶν ἐν τῇ ἔσω θαλάσῃ μείζονας τοὺς δελ- 39.6.1 φίνας. ἐνθένδε ὁρμηθέντες κατὰγονται ἐς Ῥώγονιν πο- ταμὸν χειμάρρουν ἐν λιμένι εὐόρμῳ· μῆκος τοῦ παρά- 39.7.1 πλου στάδιοι διακόσιοι. ἐνθένδε τετρακοσίους σταδίους διεκπλώσαντες αὐλίζονται ἐν ποταμῷ χειμάρρῳ· Βρίζανα τῷ ποταμῷ ὄνομα. ἐνταῦθα χαλεπῶς ὥρμισαντο, ὅτι ῥηχίη ἦν καὶ βράχεια, καὶ χοιράδες ἐκ τοῦ πόντου ἀνεί- 39.8.1 χον. ἀλλ' ὅτε ἡ πλήμμυρα ἐπῆει, τότε ὥρμισαντο· ὑπο- νοστήσαντος δὲ τοῦ ὕδατος, ἐπὶ ξηρῷ ὑπελείφθησαν αἱ νῆες. ἐπεὶ δὲ ἡ πλημ- μυρίς ἐν τάξει ἀμείβουσα ἐπῆλθε, 39.9.1 τότε δὴ ἐκπλώσαντες ὁρμίζονται ἐπὶ ποταμῷ· ὄνομα δὲ τῷ ποταμῷ Ἄροσις, μέγιστος τῶν ποταμῶν, ὡς λέγει <Νέαρχος>, ὅσοι ἐν τῷ παράπλῳ τῷδε ἐμβάλλουσιν ἐς τὸν ἔξω πόντον. 40.1.1 μέχρι τοῦδε Πέρσαι οἰκέουσι, τὰ δὲ ἀπὸ τούτων Σού- σιοι. Σουσίων δὲ ἔθνος αὐτόνομον κατύπερθε προσοι- κέει· Οὕξιοι καλοῦνται, ὑπὲρ ὧν λέλεκταί μοι ἐν τῇ ἄλλῃ συγγραφῇ ὅτι λησταί εἰσι. μῆκος τοῦ παράπλου 40.1.5 τῆς Περσίδος χώρας στάδιοι τετρακόσιοι καὶ τετρακίς-

χίλιοι. τὴν δὲ Περσίδα γῆν τρίχα νενεμῆσθαι τῶν ὠρέων λόγος κατέχει. τὸ μὲν αὐτῆς πρὸς τῇ Ἐρυθρῇ θαλάσῃ οἰκεόμενον ἀμμῶδες τε εἶναι καὶ ἄκαρπον ὑπὸ 40.3.1 καύματος, τὸ δὲ ἐπὶ τῷδε ὡς πρὸς ἄρκτον τε καὶ βο- ρρὴν ἄνεμον ἰόντων καλῶς κεκραῖσθαι τῶν ὠρέων, καὶ τὴν χώραν ποιῶδεά τε εἶναι καὶ λειμῶνας ὑδρηλοῦς, καὶ ἄμπελον πολλὴν φέρειν καὶ ὅσοι ἄλλοι καρποὶ πλὴν 40.4.1 ἐλαίης, παραδείσοις τε παντοίοις τεθηλέναι καὶ ποτα- μοῖσι καθαροῖσι διαρρέεσθαι καὶ λίμνησι, καὶ ὄρνισιν ὀκόσοισιν ἀμφὶ ποταμούς τε καὶ λίμνας ἐστὶ τὰ ἡθεα ἵπποισι τε ἀγαθὴν εἶναι καὶ τοῖσιν ἄλλοισιν ὑποζυγίοις 40.5.1 νέμεσθαι, καὶ ὑλῶδεά τε πολ- λαχὴ καὶ πολὺθηρον. τὴν δὲ πρόσω ἔτι ἐπ' ἄρκτον ἰόντων χειμερινὴν τε καὶ νιφε- τώδεα ***,

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

ὥστε πρέσβεις τινὰς ἐκ τοῦ Εὐξείνου πόν- του λέγει <Νέαρχος> κάρτα ὀλίγην ὁδὸν διελθόν-
 τας ἐν- 40.5.5 τυχεῖν κατ' ὁδὸν ἰόντι τῆς Περσίδος καὶ θῶμα γενέσθαι Ἀλεξάνδρῳ καὶ εἰπεῖν
 Ἀλεξάνδρῳ τῆς ὁδοῦ τὴν βραχὺ- 40.6.1 τητα. Σουσίους δὲ πρόσσοικοι ὅτι εἰσὶν Οὐξιοὶ λέλεκταί
 μοι, κατὰπερ Μάρδοι μὲν Πέρσαισι προσεχέες οἰκέουσι, 40.7.1 λησταὶ καὶ οὗτοι, Κοσσαῖοι δὲ
 Μήδοισι. καὶ ταῦτα πάντα τὰ ἔθνεα ἡμέρωσεν Ἀλέξανδρος, χειμῶνος ὥρῃ ἐπιπεσὼν αὐτοῖσιν,
 ὅτε ἄβατον σφῶν τὴν χώραν ἦγον. 40.8.1 καὶ πόλῃας ἐπέκτισε τοῦ μὴ νομάδας ἔτι εἶναι ἀλλὰ
 ἀροτῆρας καὶ γῆς ἐργάτας, καὶ ἔχειν ὑπὲρ ὅτων δειμαί- νοντες μὴ κακὰ ἀλλήλους ἐργάσον-
 ται. ἐνθένδε τὴν Σου- 40.9.1 σίῳν γῆν παρήμειβεν ὁ στρατός. καὶ ταῦτα οὐκέτι ὡσαύ- τως
 ἀτρεκέως λέγει <Νέαρχος> ὅτι ἔστιν οἱ ἐκφράσαι, πλὴν γε δὴ τοὺς ὅρμους τε καὶ τὸ μῆκος τοῦ
 πλόου. 40.10.1 τὴν χώραν γὰρ τεναγῶδέα τε εἶναι τὴν πολλὴν καὶ ῥῆ- χίῃσιν ἐπὶ μέγα ἐς τὸν
 πόντον ἐσέχουσιν καὶ ταύτῃ σφαλερὴν ἐγκαθορμίζεσθαι. πελαγίοισιν ὧν σφίσι τὴν 40.11.1
 κομιδὴν τὸ πολὺ γίνεσθαι. ὀρμηθῆναι μὲν δὴ ἐκ τοῦ ποταμοῦ τῶν ἐκβολῶν, ἵναπερ νηύλισθη-
 σαν ἐπὶ τοῖσιν οὖροις τῆς Περσίδος, ὕδωρ δὲ ἐμβαλέσθαι καὶ πέντε ἡμερέων. οὐκ ἔφασκον γὰρ
 εἶναι ὕδωρ οἱ καθηγεμόνες 40.11.5 τοῦ πλόου. 41.1.1 σταδίους δὲ πεντακοσίους κομισθέντες
 ὀρμίζονται ἐπὶ στόματι λίμνης ἰχθυώδους, ἣ οὖνομα Κατάδερβις. καὶ νησὶς ἐπὶ τῷ στόματι.
 Μαργάστανα τῇ νησὶδι οὐ- 41.2.1 νομα. ἐνθένδε ὑπὸ τὴν ἑὴ ἐκπλώσαντες κατὰ βράχεα
 ἐκομίζοντο ἐπὶ μιᾷς νεῶς. πασσάλοις δὲ ἐνθεν καὶ ἐν- θεν πεπηγόσιν ἀπεδηλοῦτο τὰ βράχεα,
 κατὰπερ ἐν τῷ μεσσηγύς Λευκάδος τε νήσου ἰσθμῷ καὶ Ἀκαρνανίης 41.2.5 ἀποδεδείκται ση-
 μεῖα τοῖσι ναυτιλλομένοις τοῦ μὴ ἐπο- 41.3.1 κέλλειν ἐν τοῖσι βράχεσι τὰς νέας. ἀλλὰ τὰ
 μὲν κατὰ Λευκάδα ψαμμώδεα ὄντα καὶ τοῖσιν ἐποκείλασι ταχέϊαν τὴν ὑπονόστησιν ἐνδιδοῖ.
 κεῖθι δὲ πηλός ἐστιν ἐφ' ἐκά- τερα τοῦ πλεομένου βαθὺς καὶ ἰλυώδης, ὥστε οὐδεμιᾷ 41.4.1
 μηχανῇ ἐποκείλασιν ἦν ἀποσωθῆναι. οἳ τε γὰρ κοντοὶ κατὰ τοῦ πηλοῦ δύνοντες αὐτοὶ οὐδὲν
 τι ἐπωφέλουν, ἀνθρώπῳ τε ἐκβῆναι τοῦ ἀπῶσαι τὰς νέας ἐς τὰ πλεό- μενα ἄπορον ἐγίνετο.
 ἔδυνον γὰρ κατὰ τοῦ πηλοῦ ἔστε 41.5.1 ἐπὶ τὰ στήθεα. οὕτω δὲ χαλεπῶς διεκπλώσαντες
 στα- δίους ἑξακοσίους κατὰ ναῦν ἕκαστοι ὀρμισθέντες ἐνταῦ- 41.6.1 θα δείπνου ἐμνήσθησαν.
 τὴν νύκτα δὲ ἤδη κατὰ βάθεα ἔπλεον καὶ τὴν ἐφεξῆς ἡμέρην ἔστε ἐπὶ βουλυτόν. καὶ ἦλθον
 σταδίους ἑνακοσίους, καὶ καθωρμίσθησαν ἐπὶ τοῦ στόματος τοῦ Εὐφράτου πρὸς κώμη τινὶ
 τῆς Βαβυ- 41.7.1 λωνίης χώρας – ὄνομα δὲ αὐτῇ Διρίδωτις – , ἵνα λι- βανωτόν τε ἀπὸ τῆς
 Γερραίης γῆς οἱ ἔμποροι ἀγινέουσι 41.8.1 καὶ τὰ ἄλλα ὅσα θυμὴματα ἡ Ἀράβων γῆ φέρει.
 ἀπὸ δὲ τοῦ στόματος τοῦ Εὐφράτου ἔστε Βαβυλῶνα πλοῦν λέγει <Νέαρχος> σταδίους εἶναι
 ἐς τρισχιλίους καὶ τρια- κοσίους. 42.1.1 ἐνταῦθα ἀγγέλλεται Ἀλέξανδρον ἐπὶ Σούσων στέλ-
 λεσθαι. ἐνθεν καὶ αὐτοὶ τὸ ὀπίσω ἔπλεον, ὡς κατὰ τὸν Πασιτίγριν ποταμὸν ἀναπλώσαντες
 συμμίξαι Ἀλεξάν- 42.2.1 δρῳ. ἔπλεον δὲ τὸ ἔμπαλιν ἐν ἀριστερᾷ τὴν γῆν τὴν Σουσίδα ἔχοντες,
 καὶ παραπλέουσι λίμνην, ἐς ἣν ὁ Τί- 42.3.1 γρης ἐσβάλλει ποταμός, ὃς ῥέων ἐξ Ἀρμενίης παρὰ
 πό- λιν Νίνον, πάλαι ποτὲ μεγάλην καὶ εὐδαίμονα, τὴν μέ- σην ἑωυτοῦ τε καὶ τοῦ Εὐφράτου
 ποταμοῦ γῆν Με- 42.4.1 σοποταμίνην ἐπὶ τῷδε κληρίζεσθαι ποιεῖ. ἀπὸ δὲ τῆς λίμνης ἐς αὐτὸν
 τὸν ποταμὸν ἀνάπλους στάδιοι ἑξακόσιοι, ἵνα καὶ κώμη τῆς Σουσίδος, ἣν καλέουσιν Ἀγινιν-
 αὕτη δὲ ἀπέχει Σούσων σταδίους ἐς πεντακοσίους. μῆκος τοῦ 42.4.5 παράπλου τῆς Σουσίαν

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

γῆς ἔστε ἐπὶ <τὸ> στόμα τοῦ 42.5.1 Πασιτίγριδος ποταμοῦ στάδιοι δισχίλιοι. ἐνθένδε κατὰ τὸν Πασιτίγριν ἄνω ἀνέπλεον διὰ χώρας οἰκουμένης καὶ εὐδαίμονος. ἀναπλώσαντες δὲ σταδίους ὡς πεντή- κοντα καὶ ἑκατὸν αὐτοῦ ὀρμίζονται, προσμένοντες οὕς- 42.5.5 τινας ἐστάλκει Νέαρχος σκευομένους ἵνα ὁ βασιλεὺς 42.6.1 εἴη. αὐτὸς δὲ ἔθνε θεοῖς τοῖς σωτῆρσι, καὶ ἀγῶνα ἐποίεε, 42.7.1 καὶ ἡ στρατιὴ ἡ ναυτικὴ πᾶσα ἐν εὐθυμίῃσιν ἦν. ὡς δὲ προσάγων ἤδη Ἀλέξανδρος ἠγγέλλετο, ἔπλεον ἤδη αὐθις ἐς τὸ ἄνω κατὰ τὸν ποταμόν· καὶ πρὸς τῇ σχεδὴ ὀρμίζονται, ἐφ' ἣ τὸ στράτευμα διαβιβάσειν ἔμελλεν Ἀλέ- 42.8.1 ξάνδρος ἐς Σοῦσα. ἐνταῦθα ἀνεμίχθη ὁ στρατός, καὶ θυσίαι πρὸς Ἀλεξάνδρου ἐθύοντο ἐπὶ τῶν νεῶν τε καὶ τῶν ἀνθρώπων τῇ σωτηρίῃ, καὶ ἀγῶνες ἐποίεοντο·

καὶ Νέαρχος ὅποι παραφανείη τῆς στρατιῆς, ἀνθεσί τε 42.9.1 καὶ ταινίῃσιν ἐβάλλετο. ἐνθα καὶ χρυσῷ στεφάνῳ στεφά- νοῦνται ἐξ Ἀλεξάνδρου Νέαρχός τε καὶ Λεόννατος, Νέ- αρχος μὲν ἐπὶ τοῦ ναυτικοῦ τῇ σωτηρίῃ, Λεόννατος δὲ ἐπὶ τῇ νίκῃ, ἣν Ὡρεΐτας τε ἐνίκησε καὶ τοὺς Ὡρεΐταις 42.10.1 προσοικέοντας βαρβάρους. οὕτω μὲν ἀπεσώθη Ἀλεξάν- δρος ἐκ τοῦ Ἰνδοῦ τῶν ἐκβολέων ὀρμηθεὶς ὁ στρατός. 43.1.1 τὰ δὲ ἐν δεξιᾷ τῆς Ἐρυθρῆς θαλάσσης ὑπὲρ τὴν Βαβυλωνίην Ἀραβίην ἡ πολλή ἐστι, καὶ ταύτης τὰ μὲν κατ- ἥκει ἔστε ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν κατὰ Φοινίκην τε καὶ τὴν Παλαιστίνην Συρίην, πρὸς δυομένου δὲ ἡλίου ὡς 43.1.5 ἐπὶ τὴν εἴσω θάλασσαν Αἰγύπτιοι τῇ Ἀραβίῃ ὁμοῦρ- 43.2.1 οῦσι. κατὰ δὲ Αἰγύπτον εἰσέχων ἐκ τῆς μεγάλης θαλάσ- σης κόλπος δῆλον ποιεῖ ὅτι ἐνεκά γε τοῦ σύρρουν εἶναι τὴν ἔξω θάλασσαν περίπλους ἂν ἦν ἐκ Βαβυλῶνος ἐς τὸν κόλπον τοῦτον <τὸν> ἐπέχοντα ὡς ἐπ' Αἰγύπτον. 43.3.1 ἀλλὰ γὰρ οὐ τις παρέπλωσε ταύτη οὐδαμῶν ἀνθρώπων ὑπὸ καύματος καὶ ἐρημίας, εἰ μὴ τινές γε πελάγιοι κο- 43.4.1 μιζόμενοι. ἀλλὰ οἱ ἀπ' Αἰγύπτου γὰρ ἐς Σοῦσα ἀποσω- θέντες τῆς στρατιῆς τῆς Καμβύσεω καὶ οἱ παρὰ Πτολε- μαίου τοῦ Λάγου παρὰ Σέλευκον τὸν Νικάτορα στα- 43.5.1 λέντες ἐς Βαβυλῶνα διὰ τῆς Ἀραβίης χώρας ἰσθμὸν τινα διαπορευθέντες ἐν ἡμέρησιν ὀκτῶ ταῖς πάσαις ἀνδρὸν καὶ ἐρήμην χώραν ἐπῆλθον ἐπὶ καμήλων σπουδῇ ἐλαύνοντες ὕδωρ τε σφιν ἐπὶ τῶν καμήλων φέροντες καὶ νυ- 43.5.5 κτοπορέοντες· τὰς γὰρ ἡμέρας ὑπαίθριοι ἀνέχεσθαι διὰ 43.6.1 καῦμα ἀδύνατοι ἦσαν. τοσούτου δεῖ τὰ γε ἐπέκεινα ταύτης τῆς χώρας, ἥντινα ἰσθμὸν ἀπεφαίνομεν ἐκ τοῦ κόλπου τοῦ Ἀραβίου κατήκοντα ἐς τὴν Ἐρυθρὰν θά- λασσαν, οἰκεόμενα εἶναι, ὁπότε τὰ πρὸς ἄρκτον μᾶλλον 43.7.1 αὐτῶν ἀνέχοντα ἔρημά τέ ἐστι καὶ φαρμῶδεα. ἀλλὰ γὰρ ἀπὸ τοῦ Ἀραβίου κόλπου τοῦ κατ' Αἰγύπτον ὀρμηθέντες ἄνθρωποι ἐκπεριπλώσαντες τὴν πολλὴν Ἀραβίην ἐλθεῖν ἐς τὴν κατὰ Σοῦσά τε καὶ Πέρσας θάλασσαν, ἐς τοσόνδε 43.7.5 ἄρα παραπλώσαντες τῆς Ἀραβίης ἐς ὅσον σφίσι τὸ ὕδωρ ἐπήρκεσε τὸ ἐμβληθὲν ἐς τὰς νέας, ἔπειτα ὀπίσω 43.8.1 ἀπενόστησαν. ἐκ βαβυλῶνός τε οὕστινας ἔστειλεν Ἀλέ- ξάνδρος ὡς ἐπὶ μήκιστον πλέοντας ἐν δεξιᾷ τῆς Ἐρυ- θρῆς θαλάσσης γινῶναι τοὺς ταύτη χώρους, οὗτοι νη- 43.9.1 σους μὲν τινας κατεσκέψαντο ἐν τῷ παράπλῳ κειμένας, 43.9.1 καὶ πού καὶ τῆς ἡπείρου τῆς Ἀραβίης προσέσχον, τὴν δὲ ἄκρην, ἥντινα καταντικρὺ τῆς Καρμανίης ἀνέχουσιν λέ- γει φανῆναι σφίσι <Νέαρχος>, οὐκ ἔστιν ὅστις ὑπερβα- 43.10.1 λὼν ἐπικάμψαι ἐς τὸ ἐπὶ θάτερα δυνατὸς ἐγένετο. δοκέω δὲ ὡς εἴπερ πλωτὰ τε ἦν καὶ βαδιστὰ <τὰ> ταύτη, ὑπ' Ἀλεξάνδρου ἂν τῆς πολυπραγμοσύνης ἐξελέγετο πλω- 43.11.1 τὰ τε καὶ βαδιστὰ ἐόντα. καὶ Ἄνων

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

δὲ ὁ Λίβυς ἐκ Καρ- χηδόνας ὀρμηθεὶς ὑπὲρ μὲν Ἡρακλείας στήλας ἐξέπλω- σεν ἐς τὸν ἕξω πόντον, ἐν ἀριστερᾷ τὴν Λιβύην γῆν ἔχων, καὶ ἔσπε μὲν πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ὁ πλόος αὐτῶ 43.12.1 ἐγένετο τὰς πάσας πέντε καὶ τριάκοντα ἡμέρας· ὥς δὲ δὴ ἐς μεσημβρίην ἐξετράπετο, πολλῇσιν ἀμηχανίῃσιν ἐνετύγχανεν ὕδατος τε ἀπορίῃ καὶ καύματι ἐπιφλέγοντι 43.13.1 καὶ ῥύαξι πυρὸς ἐς τὸν πόντον ἐμβάλλουσιν. ἀλλ' ἡ Κυρήνη γὰρ τῆς Λιβύης ἐν τοῖς ἐρημοτέροις πεπολισμένη ποιῶδης τέ ἐστι καὶ μαλθακὴ καὶ εὐνδρος καὶ ἄλσέα καὶ λειμῶνες, καὶ καρπῶν παντοίων καὶ κτηνέων πᾶμφορὸς 43.13.5 <ἐστι> ἔσπε ἐπὶ τοῦ σιλφίου τὰς ἐκφύσεις· ὑπὲρ δὲ τὸ σίλφιον τὰ ἄνω αὐτῆς ἔρημα καὶ ψαμμώδεια. 43.14.1 οὗτός μοι ὁ λόγος ἀναγεγράφθω, φέρων καὶ αὐτὸς ἐς Ἀλέξανδρον τὸν Φιλίππου, τὸν Μακεδόνα.

5.58.2.1 English translation

Text: Arrian: Anabasis Alexandri: Book VIII (Indica) Tr. E. Iliff Robson (1933)⁵⁷

I. ALL the territory that lies west of the river Indus up to the river Cophen is inhabited by Astaceni and Assaceni, Indian tribes. But they are not, like the Indians dwelling within the river Indus, tall of stature, nor similarly brave in spirit, nor as black as the greater part of the Indians. These long ago were subject to the Assyrians; then to the Medes, and so they became subject to the Persians; and they paid tribute to Cyrus son of Cambyses from their territory, as Cyrus commanded. The Nysaeans are not an Indian race; but part of those who came with Dionysus to India; possibly even of those Greeks who became past service in the wars which Dionysus waged with Indians; possibly also volunteers of the neighbouring tribes whom Dionysus settled there together with the Greeks, calling the country Nysaea from the mountain Nysa, and the city itself Nysa. And the mountain near the city, on whose foothills Nysa is built, is called Merus because of the incident at Dionysus' birth. All this the poets sang about Dionysus; and I leave it to the narrators of Greek or Eastern history to recount them. Among the Assaceni is Massaca, a great city, where resides the chief authority of the Assacian land; and another city Peucela, this also a great city, not far from the Indus. These places then are inhabited on this side of the Indus towards the west, as far as the river Cophen.

II. But the parts from the Indus eastward, these I shall call India, and its inhabitants Indians. The boundary of the land of India towards the north is Mount Taurus. It is not still called Taurus in this land; but Taurus begins from the sea over against Pamphylia and Lycia and Cilicia; and reaches as far as the Eastern Ocean, running right across Asia. But the mountain has different names in different places; in one, Parapamisus, in another Hemodus; elsewhere it is called Imaon, and perhaps has all sorts of other names; but

57. From <http://www.fordham.edu/halsall/ancient/arrian-bookVIII-India.asp> which got it from <http://www.und.ac.za/und/classics/india/arrian.htm>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

the Macedonians who fought with Alexander called it Caucasus; another Caucasus, that is, not the Scythian; so that the story ran that Alexander came even to the far side of the Caucasus. The western part of India is bounded by the river Indus right down to the ocean, where the river runs out by two mouths, not joined together as are the five mouths of the Ister; but like those of the Nile, by which the Egyptian delta is formed; thus also the Indian delta is formed by the river Indus, not less than the Egyptian; and this in the Indian tongue is called Pattala. Towards the south this ocean bounds the land of India, and eastward the sea itself is the boundary. The southern part near Pattala and the mouths of the Indus were surveyed by Alexander and Macedonians, and many Greeks; as for the eastern part, Alexander did not traverse this beyond the river Hyphasis. A few historians have described the parts which are this side of the Ganges and where are the mouths of the Ganges and the city of Palimbothra, the greatest Indian city on the Ganges.

III. I hope I may be allowed to regard Eratosthenes of Cyrene as worthy of special credit, since he was a student of Geography. He states that beginning with Mount Taurus, where are the springs of the river Indus, along the Indus to the Ocean, and to the mouths of the Indus, the side of India is thirteen thousand stades in length. The opposite side to this one, that from the same mountain to the Eastern Ocean, he does not reckon as merely equal to the former side, since it has a promontory running well into the sea; the promontory stretching to about three thousand stades. So then he would make this side of India, to the eastward, a total length of sixteen thousand stades. This he gives, then, as the breadth of India. Its length, however, from west to east, up to the city of Palimbothra, he states that he gives as measured by reed-measurements; for there is a royal road; and this extends to ten thousand stades; beyond that, the information is not so certain. Those, however, who have followed common talk say that including the promontory, which runs into the sea, India extends over about ten thousand stades; but farther north its length is about twenty thousand stades. But Ctesias of Cnidus affirms that the land of India is equal in size to the rest of Asia, which is absurd; and Onesicritus is absurd, who says that India is a third of the entire world; Nearchus, for his part, states that the journey through the actual plain of India is a four months' journey. Megasthenes would have the breadth of India that from east to west which others call its length; and he says that it is of sixteen thousand stades, at its shortest stretch. From north to south, then, becomes for him its length, and it extends twenty-two thousand three hundred stades, to its narrowest point. The Indian rivers are greater than any others in Asia; greatest are the Ganges and the Indus, whence the land gets its name; each of these is greater than the Nile of Egypt and the Scythian Ister, even were these put together; my own idea is that even the Acesines is greater than the Ister and the Nile, where the Acesines having taken in the Hydaspes, Hydraotes, and Hyphasis, runs into the Indus,

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

so that its breadth there becomes thirty stades. Possibly also other greater rivers run through the land of India.

IV. As for the yonder side of the Hyphasis, I cannot speak with confidence, since Alexander did not proceed beyond the Hyphasis. But of these two greatest rivers, the Ganges and the Indus, Megasthenes wrote that the Ganges is much greater than the Indus, and so do all others who mention the Ganges; for (they say) the Ganges is already large as it comes from its springs, and receives as tributaries the river Cainas and the Erannoboas and the Cossoanus, all navigable; also the river Sonus and the Sittocatis and the Solomatis, these likewise navigable. Then besides there are the Condochates and the Sambus and Magon and Agoranis and Omalis; and also there run into it the Commenases, a great river, and the Cacuthis and Andomatis, flowing from the Indian tribe of the Mandiadae; after them the Amystis by the city Catadupas, and the Oxymagis at the place called Pazalae, and the Errenysis among the Mathae, an Indian tribe, also meet the Ganges. Megasthenes says that of these none is inferior to the Maeander, where the Maeander is navigable. The breadth therefore of the Ganges, where it is at its narrowest, runs to a hundred stades; often it spreads into lakes, so that the opposite side cannot be seen, where it is low and has no projections of hills. It is the same with the Indus; the Hydraotes, in the territory of the Cambistholians, receives the Hyphasis in that of the Astrybae, and the Saranges from the Cecians, and the Neydrus from the Attacenians, and flows, with these, into the Acesines. The Hydaspes also among the Oxydracae receives the Sinarus among the Arispae and it too flows out into the Acesines. The Acesines among the Mallians joins the Indus; and the Tutapus, a large river, flows into the Acesines. All these rivers swell the Acesines, and proudly retaining its own name it flows into the Indus. The Cophen, in the Peucelaetis, taking with it the Malantus, the Soastus, and the Garroegas, joins the Indus. Above these the Parenus and Saparnus, not far from one another, flow into the Indus. The Soanus, from the mountains of the Abissareans, without any tributary, flows into it. Most of these Megasthenes reports to be navigable. It should not then be incredible that neither Nile nor Ister can be even compared with Indus or Ganges in volume of water. For we know of no tributary to the Nile; rather from it canals have been cut through the land of Egypt. As for the Ister, it emerges from its springs a meagre stream, but receives many tributaries; yet not equal in number to the Indian tributaries which flow into Indus or Ganges; and very few of these are navigable; I myself have only noticed the Enus and the Saus. The Enus on the line between Norica and Rhaetia joins the Ister, the Saus in Paeonia. The country where the rivers join is called Taurunus. If anybody is aware of other navigable rivers which form tributaries to the Ister, he certainly does not know many.

V. I hope that anyone who desires to explain the cause of the number and size of the Indian rivers will do so; and that my remarks may be regarded as set down on hearsay

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

only. For Megasthenes has recorded names of many other rivers, which beyond the Ganges and the Indus run into the eastern and southern outer ocean; so that he states the number of Indian rivers in all to be fifty-eight, and these all navigable. But not even Megasthenes, so far as I can see, travelled over any large part of India; yet a good deal more than the followers of Alexander son of Philip did. For he states that he met Sandracottus, the greatest of the Indian kings, and Porus, even greater than he was. This Megasthenes says, moreover, that the Indians waged war on no men, nor other men on the Indians, but on the other hand that Sesostris the Egyptian, after subduing the most part of Asia, and after invading Europe with an army, yet returned back; and Indathyrus the Scythian who started from Scythia subdued many tribes of Asia, and invaded Egypt victoriously; but Semiramis the Assyrian queen tried to invade India, but died before she could carry out her purposes; it was in fact Alexander only who actually invaded India. Before Alexander, too, there is a considerable tradition about Dionysus as having also invaded India, and having subdued the Indians; about Heracles there is not much tradition. As for Dionysus, the city of Nysa is no mean memorial of his expedition, and also Mount Merus, and the growth of ivy on this mountain then the habit of the Indians themselves setting out to battle with the sound of drums and cymbals; and their dappled costume, like that worn by the bacchanals, of Dionysus. But of Heracles the memorials are slight. Yet the story of the rock Aornos, which Alexander forced, namely, that Heracles could not capture it, I am inclined to think a Macedonian boast; just as the Macedonians called Parapamisus by the name of Caucasus, though it has nothing to do with Caucasus. And besides, learning that there was a cave among the Parapamisadae, they said that this was the cave of Prometheus the Titan, in which he was crucified for his theft of the fire. Among the Sibae, too, an Indian tribe, having noticed them clad with skins they used to assert that they were relics of Heracles' expedition. What is more, as the Sibae carried a club, and they brand their cattle with a club, they referred this too to some memory of Heracles' club. If anyone believes this, at least it must be some other Heracles, not he of Thebes, but either of Tyre or of Egypt, or some great king of the higher inhabited country near India.

VI. This then must be regarded as a digression, so that too much credence may not be given to the stories which certain persons have related about the Indians beyond the Hyphasis; for those who served under Alexander are reasonably trustworthy up to the Hyphasis. For Megasthenes tells us this also about an Indian river; its name is Silas, it flows from a spring of the same name as the river through the territory of the Sileans, the people also named both from river and spring; its water has the following peculiarity; nothing is supported by it, nothing can swim in it or float upon it, but everything goes straight to the bottom; so far is this water thinner and more aery than any other. In the summer there is rain through India; especially on the mountains, Parapamisus and

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

Hemodus and the Imaus, and from them the rivers run great and turbulent. The plains of India also receive rain in summer, and much part of them becomes swamp; in fact Alexander's army retired from the river Acesines in midsummer, when the river had overflowed on to the plains; from these, therefore, one can gauge the flooding of the Nile, since probably the mountains of Ethiopia receive rain in summer, and from them the Nile is swollen and overflows its banks on to the land of Egypt the Nile therefore also runs turbid this time of the year, as it probably would not be from melting snow; nor yet if its stream was dammed up by the seasonal winds which blow during the summer; and besides, the mountains of Ethiopia are probably not snowcovered, on account of the heat. But that they receive rain as India does is not outside the bounds of probability; since in other respects India is not unlike Ethiopia, and the Indian rivers have crocodiles like the Ethiopian and Egyptian Nile; and some of the Indian rivers have fish and other large water animals like those of the Nile, save the river-horse: though Onesicritus states that they do have the river-horse also. The appearance of the inhabitants, too, is not so far different in India and Ethiopia; the southern Indians resemble the Ethiopians a good deal, and, are black of countenance, and their hair black also, only they are not as snub-nosed or so woolly-haired as the Ethiopians; but the northern Indians are most like the Egyptians in appearance.

VII. Megasthenes states that there are one hundred and eighteen Indian tribes. That there are many, I agree with Megasthenes; but I cannot conjecture how he learnt and recorded the exact number, when he never visited any great part of India, and since these different races have not much intercourse one with another. The Indians, he says, were originally nomads, as are the non-agricultural Scythians, who wandering in their waggons inhabit now one and now another part of Scythia; not dwelling in cities and not reverencing any temples of the gods; just so the Indians also had no cities and built no temples; but were clothed with the skins of animals slain in the chase, and for food ate the bark of trees; these trees were called in the Indian tongue Tala, and there grew upon them, just as on the tops of palm trees, what look like clews of wool. They also used as food what game they had captured, eating it raw, before, at least, Dionysus came into India. But when Dionysus had come, and become master of India, he founded cities, and gave laws for these cities, and became to the Indians the bestower of wine, as to the Greeks, and taught them to sow their land, giving them seed. It may be that Triptolemus, when he was sent out by Demeter to sow the entire earth, did not come this way; or perhaps before Triptolemus this Dionysus whoever he was came to India and gave the Indians seeds of domesticated plants; then Dionysus first yoked oxen to the plough and made most of the Indians agriculturists instead of wanderers, and armed them also with the arms of warfare. Further, Dionysus taught them to reverence other gods, but especially, of course, himself, with clashing of cymbals and beating of drums

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

and dancing in the Satyric fashion, the dance called among Greeks the 'cordax'; and taught them to wear long hair in honour of the god, and instructed them in the wearing of the conical cap and the anointings with perfumes; so that the Indians came out even against Alexander to battle with the sound of cymbals and drums.

VIII. When departing from India, after making all these arrangements, he made Spatembas king of the land, one of his Companions, being most expert in Bacchic rites; when Spatembas died, Budyas his son reigned in his stead; the father was King of India fifty-two years, and the son twenty years; and his son, again, came to the throne, one Cradeuas; and his descendants for the most part received the kingdom in succession, son succeeding father; if the succession failed, then the kings were appointed for some pre-eminence. But Heracles, whom tradition states to have arrived as far as India, was called by the Indians themselves 'Indigenous.' This Heracles was chiefly honoured by the Surasenians, an Indian tribe, among whom are two great cities, Methora and Cleisobora, and the navigable river Iobares flows through their territory. Megasthenes also says that the garb which this Heracles wore was like that of the Theban Heracles, as also the Indians themselves record; he also had many sons in his country, for this Heracles too wedded many wives; he had only one daughter, called Pandaea; as also the country in which she was born, and to rule which Heracles educated her, was called Pandaea after the girl; here she possessed five hundred elephants given by her father, four thousand horsemen, and as many as a hundred and thirty thousand foot-soldiers. This also some writers relate about Heracles; he traversed all the earth and sea, and when he had rid the earth of evil monsters he found in the sea a jewel much affected by women. And thus, even to our day, those who bring exports from India to our country purchase these jewels at great price and export them, and all Greeks in old time, and Romans now who are rich and prosperous, are more eager to buy the sea pearl, as it is called in the Indian tongue for that Heracles, the jewel appearing to him charming, collected from all the sea to India this kind of pearl, to adorn his daughter. And Megasthenes says that this oyster is taken with nets; that it is a native of the sea, many oysters being together, like bees; and that the pearl oysters have a king or queen, as bees do. Should anyone by chance capture the king, he can easily surround the rest of the oysters; but should the king slip through, then the others cannot be taken; and of those that are taken, the Indians let their flesh rot, but use the skeleton as an ornament. For among the Indians this pearl sometimes is worth three times its weight in solid gold, which is itself dug up in India.

IX. In this country where Heracles' daughter was queen, the girls are marriageable at seven years, and the men do not live longer than forty years. About this there is a story among the Indians, that Heracles, to whom when in mature years this daughter was born, realizing that his own end was near, and knowing of no worthy husband to whom he might bestow his daughter, himself became her husband when she was seven, so that

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

Indian kings, their children, were left behind. Heracles made her then marriageable, and hence all the royal race of Pandaea arose, with the same privilege from Heracles. But I think, even if Heracles was able to accomplish anything so absurd, he could have lengthened his own life, so as to mate with the girl when of maturer years. But really if this about the age of the girls in this district is true, it seems to me to tend the same way as the men's age, since the oldest of them die at forty years. For when old age comes on so much sooner and death with age, maturity will reasonably be earlier, in proportion to the end; so that at thirty the men might be on the threshold of old age, and at twenty, men in their prime, and manhood at about fifteen, so that the women might reasonably be marriageable at seven. For that the fruits ripen earlier in this country than elsewhere, and perish earlier, this Megasthenes himself tells us. From Dionysus to Sandracottus the Indians counted a hundred and fifty-three kings, over six thousand and forty-two years, and during this time thrice [Movements were made] for liberty . . . this for three hundred years; the other for a hundred and twenty years; the Indians say that Dionysus was fifteen generations earlier than Heracles; but no one else ever invaded India, not even Cyrus son of Cambyses, though he made an expedition against the Scythians, and in all other ways was the most energetic of the kings in Asia; but Alexander came and conquered by force of arms all the countries he entered; and would have conquered the whole world had his army been willing. But no Indian ever went outside his own country on a warlike expedition, so righteous were they.

X. This also is related; that Indians do not put up memorials to the dead; but they regard their virtues as sufficient memorials for the departed, and the songs which they sing at their funerals. As for the cities of India, one could not record their number accurately by reason of their multitude; but those of them which are near rivers or near the sea, they build of wood; for if they were built of brick, they could not last long because of the rain, and also because their rivers overflow their banks and fill the plains with water. But such cities as are built on high and lofty places, they make of brick and clay. The greatest of the Indian cities is called Palimbothra, in the district of the Prasians, at the confluence of the Erannoboas and the Ganges; the Ganges, greatest of all rivers; the Erannoboas may be the third of the Indian rivers, itself greater than the rivers of other countries; but it yields precedence to the Ganges, when it pours into it its tributary stream. And Megasthenes says that the length of the city along either side, where it is longest, reaches to eighty stades its breadth to fifteen; and a ditch has been dug round the city, six plethra in breadth, thirty cubits high; and on the wall are five hundred and seventy towers, and sixty-four gates. This also is remarkable in India, that all Indians are free, and no Indian at all is a slave. In this the Indians agree with the Lacedaemonians. Yet the Lacedaemonians have Helots for slaves, who perform the duties of slaves; but the Indians have no slaves at all, much less is any Indian a slave.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

XI. The Indians generally are divided into seven castes. Those called the wise men are less in number than the rest, but chiefest in honour and regard. For they are under no necessity to do any bodily labour; nor to contribute from the results of their work to the common store; in fact, no sort of constraint whatever rests upon these wise men, save to offer the sacrifices to the gods on behalf of the people of India. Then whenever anyone sacrifices privately, one of these wise men acts as instructor of the sacrifice, since otherwise the sacrifice would not have proved acceptable to the gods. These Indians also are alone expert in prophecy, and none, save one of the wise men, is allowed to prophesy. And they prophesy about the seasons of the year, or of any impending public calamity: but they do not trouble to prophesy on private matters to individuals, either because their prophecy does not condescend to smaller things, or because it is undignified for them to trouble about such things. And when one has thrice made an error in his prophecy, he does not suffer any harm, except that he must for ever hold his peace; and no one will ever persuade such a one to prophesy on whom this silence has been enjoined. These wise men spend their time naked, during the winter in the open air and sunshine, but in summer, when the sun is strong, in the meadows and the marsh lands under great trees; their shade Nearchus computes to reach five plethra all round, and ten thousand men could take shade under one tree; so great are these trees. They eat fruits in their season, and the bark of the trees; this is sweet and nutritious as much as are the dates of the palm. Then next to these come the farmers, these being the most numerous class of Indians; they have no use for warlike arms or warlike deeds, but they till the land; and they pay the taxes to the kings and to the cities, such as are self-governing; and if there is internal war among the Indians, they may not touch these workers, and not even devastate the land itself; but some are making war and slaying all comers, and others close by are peacefully ploughing or gathering the fruits or shaking down apples or harvesting. The third class of Indians are the herdsman, pasturers of sheep and cattle, and these dwell neither by cities nor in the villages. They are nomads and get their living on the hillsides, and they pay taxes from their animals; they hunt also birds and wild game in the country.

XII The fourth class is of artisans and shopkeepers; these are workers, and pay tribute from their works, save such as make weapons of war; these are paid by the community. In this class are the shipwrights and sailors, who navigate the rivers. The fifth class of Indians is the soldiers' class, next after the farmers in number; these have the greatest freedom and the most spirit. They practise military pursuits only. Their weapons others forge for them, and again others provide horses; others too serve in the camps, those who groom their horses and polish their weapons, guide the elephants, and keep in order and drive the chariots. They themselves, when there is need of war, go to war, but in time of peace they make merry; and they receive so much pay from the community that

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

they can easily from their pay support others. The sixth class of Indians are those called overlookers. They oversee everything that goes on in the country or in the cities; and this they report to the King, where the Indians are governed by kings, or to the authorities, where they are independent. To these it is illegal to make any false report; nor was any Indian ever accused of such falsification. The seventh class is those who deliberate about the community together with the King, or, in such cities as are self-governing, with the authorities. In number this class is small, but in wisdom and uprightness it bears the palm from all others; from this class are selected their governors, district governors, and deputies, custodians of the treasures, officers of army and navy, financial officers, and overseers of agricultural works. To marry out of any class is unlawful – as, for instance, into the farmer class from the artisans, or the other way; nor must the same man practise two pursuits; nor change from one class into another, as to turn farmer from shepherd, or shepherd from artisan. It is only permitted to join the wise men out of any class; for their business is not an easy one, but of all most laborious.

XIII. Most wild animals which the Greeks hunt the Indians hunt also, but these have a way of hunting elephants unlike all other kinds of hunting, just as these animals are unlike other animals. It is this they choose a place that is level and open to the sun's heat, and dig a ditch in a circle, wide enough for a great army to camp within it. They dig the ditch five fathoms broad, and four deep. The earth which they throw out of the ditch they heap on either side of the ditch, and so use it as a wall; then they make shelters for themselves, dug out of the wall on the outside of the ditch, and leave small windows in them; through these the light comes in, and also they watch the animals coming in and charging into the enclosure. Then within the enclosure they leave some three or four of the females, those that are tamest, and leave only one entrance by the ditch, making a bridge over it; and here they heap much earth and grass so that the animals cannot distinguish the bridge, and so suspect any guile. The hunters then keep themselves out of the way, hiding under the shelters dug in the ditch. Now the wild elephants do not approach inhabited places by daylight, but at night they wander all about and feed in herds, following the largest and finest of their number, as cows do the bulls. And when they approach the ditch and hear the trumpeting of the females and perceive them by their scent, they rush to the walled enclosure; and when, working round the outside edge of the ditch, they find the bridge, they push across it into the enclosure. Then the hunters, perceiving the entry of the wild elephants, some smartly remove the bridge, others hurrying to the neighbouring villages report that the elephants are caught in the enclosure; and the inhabitants on hearing the news mount the most spirited, and at the same time most disciplined elephants, and then drive them towards the enclosure, and when they have driven them thither they do not at once join battle, but allow the wild elephants to grow distressed by hunger and to be tamed by thirst. But when they think

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

they are sufficiently distressed, then they erect the bridge again, and enter the enclosure; and at first there is a fierce battle between the tamed elephants and the captives, and then, as one would expect, the wild elephants are tamed, distressed as they are by a sinking of their spirits and by hunger. Then the riders dismounting from the tamed elephants tie together the feet of the now languid wild ones; then they order the tamed elephants to punish the rest by repeated blows, till in their distress they fall to earth; then they come near them and throw nooses round their necks; and climb on them as they lie there. And that they may not toss their drivers nor do them any injury, they make an incision in their necks with a sharp knife, all round, and bind their noose round the wound, so that by reason of the sore they keep their heads and necks still. For were they to turn round to do mischief, the wound beneath the rope chafes them. And so they keep quiet, and perceiving that they are conquered, they are led off by the tamed elephants by the rope.

XIV. Such elephants as are not yet full grown or from some defect are not worth the acquiring, they allow to depart to their own lair, Then they lead off their captives to the villages and first of all give them green shoots and grass to eat; but they, from want of heart, are not willing to eat anything; so the Indians range themselves about them and with songs and drums and cymbals, beating and singing, lull them to sleep. For if there is an intelligent animal, it is the elephant. Some of them have been known, when their drivers have perished in battle, to have caught them up and carried them to burial; others have stood over them and protected them. Others, when they have fallen, have actively fought for them; one, indeed, who in a passion slew his driver, died from remorse and grief. I myself have seen an elephant clanging the cymbals, and others dancing; two cymbals were fastened to the player's forelegs, and one on his trunk, and he rhythmically beat with his trunk the cymbal on either leg in turn; the dancers danced in circle, and raising and bending their forelegs in turn moved also rhythmically, as the player with the cymbals marked the time for them. The elephants mate in spring, as do oxen and horses, when certain pores about the temples of the females open and exhale; the female bears its offspring sixteen months at the least, eighteen at most; it has one foal, as does a mare; and this it suckles till its eighth year. The longest-lived elephants survive to two hundred years; but many die before that by disease; but as far as mere age goes, they reach this age. If their eyes are affected, cow's milk injected cures them; for their other sicknesses a draught of dark wine, and for their wounds swine's flesh roast, and laid on the spot, are good. These are the Indian remedies for them.

XV. The Indians regard the tiger as much stronger than the elephant. Nearchus writes that he had seen a tiger's skin, but no tiger; the Indians record that the tiger is in size as great as the largest horse, and its swiftness and strength without parallel, for a tiger, when it meets an elephant, leaps on to the head and easily throttles it. Those, however,

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

which we see and call tigers are dappled jackals, but larger than ordinary jackals. Nay, about ants also Nearchus says that he himself saw no ant, of the sort which some writers have described as native of India; he saw, however, several of their skins brought into the Macedonian camp. Megasthenes, however confirms the accounts given about these ants; that ants do dig up gold, not indeed for the gold, but as they naturally burrow, that they may make holes, just as our small ants excavate a small amount of earth; but these, which are bigger than foxes, dig up earth also proportionate to their size; the earth is auriferous, and thus the Indians get their gold. Megasthenes, however, merely quotes hearsay, and as I have no certainty to write on the subject, I readily dismiss this subject of ants. But Nearchus describes, as something miraculous, parrots, as being found in India, and describes the parrot, and how it utters a human voice. But I having seen several, and knowing others acquainted with this bird, shall not dilate on them as anything remarkable; nor yet upon the size of the apes, nor the beauty of some Indian apes, and the method of capture. For I should only say what everyone knows, except perhaps that apes are anywhere beautiful. And further Nearchus says that snakes are hunted there, dappled and swift; and that which he states Peithon son of Antigones to have caught, was upwards of sixteen cubits; but the Indians (he proceeds) state that the largest snakes are much larger than this. No Greek physicians have discovered a remedy against Indian snake-bite; but the Indians themselves used to cure those who were struck. And Nearchus adds that Alexander had gathered about him Indians very skilled in physic, and orders were sent round the camp that anyone bitten by a snake was to report at the royal pavilion. But there are not many illnesses in India, since the seasons are more temperate than with us. If anyone is seriously ill, they would inform their wise men, and they were thought to use the divine help to cure what could be cured.

XVI. The Indians wear linen garments, as Nearchus says, the linen coming from the trees of which I have already made mention. This linen is either brighter than the whiteness of other linen, or the people's own blackness makes it appear unusually bright. They have a linen tunic to the middle of the calf, and for outer garments, one thrown round about their shoulders, and one wound round their heads. They wear ivory earrings, that is, the rich Indians; the common people do not use them. Nearchus writes that they dye their beards various colours; some therefore have these as white-looking as possible, others dark, others crimson, others purple, others grass-green. The more dignified Indians use sunshades against the summer heat. They have slippers of white skin, and these too made neatly; and the soles of their sandals are of different colours, and also high, so that the wearers seem taller. Indian war equipment differs; the infantry have a bow, of the height of the owner; this they poise on the ground, and set their left foot against it, and shoot thus; drawing the bowstring a very long way back; for their arrows are little short of three cubits, and nothing can stand against an arrow shot by an

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Indian archer, neither shield nor breastplate nor any strong armour. In their left hands they carry small shields of untanned hide, narrower than their bearers, but not much shorter. Some have javelins in place of bows. All carry a broad scimitar, its length not under three cubits; and this, when they have a hand-to-hand fight – and Indians do not readily fight so among themselves – they bring down with both hands in smiting, so that the stroke may be an effective one. Their horsemen have two javelins, like lances, and a small shield smaller than the infantry's. The horses have no saddles, nor do they use Greek bits nor any like the Celtic bits, but round the end of the horses' mouths they have an untanned stitched rein fitted; in this they have fitted, on the inner side, bronze or iron spikes, but rather blunted; the rich people have ivory spikes; within the mouth of the horses is a bit, like a spit, to either end of which the reins are attached. Then when they tighten the reins this bit masters the horse, and the spikes, being attached thereto, prick the horse and compel it to obey the rein.

XVII. The Indians in shape are thin and tall and much lighter in movement than the rest of mankind. They usually ride on camels, horses, and asses; the richer men on elephants. For the elephant in India is a royal mount; then next in dignity is a four-horse chariot, and camels come third; to ride on a single horse is low. Their women, such as are of great modesty, can be seduced by no other gift, but yield themselves to anyone who gives an elephant; and the Indians think it no disgrace to yield thus on the gift of an elephant, but rather it seems honourable for a woman that her beauty should be valued at an elephant. They marry neither giving anything nor receiving anything; such girls as are marriageable their fathers bring out and allow anyone who proves victorious in wrestling or boxing or running or shows pre-eminence in any other manly pursuit to choose among them. The Indians eat meal and till the ground, except the mountaineers; but these eat the flesh of game. This must be enough for a description of the Indians, being the most notable things which Nearchus and Megasthenes, men of credit, have recorded about them. But as the main subject of this my history was not to write an account of the Indian customs but the way in which Alexander's navy reached Persia from India, this must all be accounted a digression.

XVIII. For Alexander, when his fleet was made ready on the banks of the Hydaspes, collected together all the Phoenicians and all the Cyprians and Egyptians who had followed the northern expedition. From these he manned his ships, picking out as crews and rowers for them any who were skilled in seafaring. There were also a good many islanders in the army, who understood these things, and Ionians and Hellespontines. As commanders of triremes were appointed, from the Macedonians, Hephaestion son of Amyntor, and Leonnatus son of Eunous, Lysimachus son of Agathocles, and Asclepiodorus son of Timander, and Archon son of Cleinias, and Demonicus son of Athenaëus, Archias son of Anaxidotus, Ophellias son of Seilenus, Timanthes son of Pantiades; all

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

these were of Pella. From Amphipolis these were appointed officers: Nearchus son of Androtimus, who wrote the account of the voyage; and Laomedon son of Larichus, and Androsthenes son of Callistratus; and from Orestis. Craterus son of Alexander, and Perdicas son of Orontes. Of Eordaea, Ptolemaeus son of Lagos and Aristonous son of Peisaeus; from Pydna, Metron son of Epicharmus and Nicarchides son of Simus. Then besides, Attalus son of Andromenes, of Stympha Peucestas son of Alexander, from Mieza; Peithon son of Crateuas, of Alcomenae; Leonnatus son of Antipater, of Aegae; Pantauchus son of Nicolaus, of Aloris; Mylles son of Zoilus, of Beroea; all these being Macedonians. Of Greeks, Medius son of Oxynthemis, of Larisa; Eumenes son of Hieronymus, from Cardia; Critobulus, son of Plato, of Cos; Thoas son of Menodorus, and Maeander, son of Mandrogenes, of Magnesia; Andron son of Cabeleus, of Teos; of Cyprians, Nicocles son of Pasicrates, of Soh; and Nithaphon son of Pnytagoras, of Salamis. Alexander appointed also a Persian trierarch, Bagoas son of Pharnuces; but of Alexander's own ship the helmsman was Onesicritus of Astypalaea; and the accountant of the whole fleet was Euagoras son of Eucleon, of Corinth. As admiral was appointed Nearchus, son of Androtimus, Cretan by race, and he lived. in Amphipolis on the Strymon. And when Alexander had made all these dispositions, he sacrificed to the gods, both the gods of his race and all of whom the prophets had warned him, and to Poseidon and Amphitrite and the Nereids and to Ocean himself and to the river Hydaspes, whence he started, and to the Acesines, into which the Hydaspes runs, and to the Indus, into which both run; and he instituted contests of art and of athletics, and victims for sacrifice were given to all the army, according to their detachments.

XIX. Then when he had made all ready for starting the voyage, Alexander ordered Craterus to march by the one side of the Hydaspes with his army, cavalry and infantry alike; Hephaestion had already started along the other, with another army even bigger than that under Craterus. Hephaestion took with him the elephants, up to the number of two hundred. Alexander himself took with him all the peltasts, as they are called, and all the archers, and of the cavalry, those called 'Companions'; in all, eight thousand. But Craterus and Hephaestion, with their forces, were ordered to march ahead and await the fleet. But he sent Philip, whom he had made satrap of this country, to the banks of the river Acesines, Philip also with a considerable force; for by this time a hundred and twenty thousand men of fighting age were following him, together with those whom he himself had brought from the sea-coast; and with those also whom his officers, sent to recruit forces, had brought back; so that he now led all sorts of Oriental tribes, and armed in every sort of fashion. Then he himself loosing his ships sailed down the Hydaspes to the meeting-place of Acesines and Hydaspes. His whole fleet of ships was eighteen hundred, both ships of war and merchantmen, and horse transports besides and others bringing provisions together with the troops. And how his fleet descended the rivers,

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

and the tribes he conquered on the descent, and how he endangered himself among the Mallians, and the wound he there received, then the way in which Peucestas and Leonnatus defended him as he lay there – all this I have related already in my other history, written in the Attic dialect. This my present work, however, is a story of the voyage, which Nearchus successfully undertook with his fleet starting from the mouths of the Indus by the Ocean to the Persian Gulf, which some call the Red Sea.

XX. On this Nearchus writes thus: Alexander had a vehement desire to sail the sea which stretches from India to Persia; but he disliked the length of the voyage and feared lest, meeting with some country desert or without roadsteads, or not properly provided with the fruits of the earth, his whole fleet might be destroyed; and this, being no small blot on his great achievements, might wreck all his happiness; but yet his desire to do something unusual and strange won the day; still, he was in doubt whom he should choose, as equal to his designs; and also as the right man to encourage the personnel of the fleet, – sent as they were on an expedition of this kind, so that they should not feel that they were being sent blindly to manifest dangers. And Nearchus says that Alexander discussed with him whom he should select to be admiral of this fleet; but as mention was made of one and another, and as Alexander rejected some, as not willing to risk themselves for his sake, others as chicken-hearted, others as consumed by desire for home, and finding some objection to each; then Nearchus himself spoke and pledged himself thus : 'O King, I undertake to lead your fleet! And may God help the emprise! I will bring your ships and men safe to Persia, if this sea is so much as navigable and the undertaking not above human powers.' Alexander, however, replied that he would not allow one of his friends to run such risks and endure such distress; yet Nearchus, did not slacken in his request, but besought Alexander earnestly; till at length Alexander accepted Nearchus' willing spirit, and appointed him admiral of the entire fleet, on which the part of the army which was detailed to sail on this voyage and the crews felt easier in mind, being sure that Alexander would never have exposed Nearchus to obvious danger unless they also were to come through safe. Then the splendour of the whole preparations and the smart equipment of the ships, and the outstanding enthusiasm of the commanders of the triremes about the different services and the crews had uplifted even those who a short while ago were hesitating, both to bravery and to higher hopes about the whole affair; and besides it contributed not a little to the general good spirits of the force that Alexander himself had started down the Indus and had explored both outlets, even into the Ocean, and had offered victims to Poseidon, and all the other sea gods, and gave splendid gifts to the sea. Then trusting as they did in Alexander's generally remarkable good fortune, they felt that there was nothing that he might not dare, and nothing that he could not carry through.

XXI. Now when the trade winds had sunk to rest, which continue blowing from

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

the Ocean to the land all the summer season, and hence render the voyage impossible, they put to sea, in the archonship at Athens of Cephisodorus, on the twentieth day of the month Boedromion, as the Athenians reckon it; but as the Macedonians and Asians counted it, it was ... the eleventh year of Alexander's reign. Nearchus also sacrificed, before weighing anchor, to Zeus the Saviour, and he too held an athletic contest. Then moving out from their roadstead, they anchored on the first day in the Indus river near a great canal, and remained there two days; the district was called Stura; it was about a hundred stades from the roadstead. Then on the third day they started forth and sailed to another canal, thirty stades' distance, and this canal was already-salt; for the sea came up into it, especially at full tides, and then at the ebb the water remained there, mingled with the river water. This place was called Caumara. Thence they sailed twenty stades and anchored at Coreestis, still on the river. Thence they started again and sailed not so very far, for they saw a reef at this outlet of the river Indus, and the waves were breaking violently on the shore, and the shore itself was very rough. But where there was a softer part of the reef, they dug a channel, five stades long, and brought the ships down it, when the flood tide came up from the sea. Then sailing round, to a distance of a hundred and fifty stades, they anchored at a sandy island called Crocala, and stayed there through the next day; and there lives here an Indian race called Arabeans, of whom I made mention in my larger history; and that they have their name from the river Arabis, which runs through their country and finds its outlet in the sea, forming the boundary between this country and that of the Oreitans. From Crocala, keeping on the right hand the hill they call Irus, they sailed on, with a low-lying island on their left; and the island running parallel with the shore makes a narrow bay. Then when they had sailed through this, they anchored in a harbour with good anchorage; and as Ne'archus considered the harbour a large and fine one, he called it Alexander's Haven. At the heads of the harbour there lies an island, about two stades away, called Bibacta; the neighbouring region, however, is called Sangada. This island, forming a barrier to the sea, of itself makes a harbour. There constant strong winds were blowing off the ocean. Nearchus therefore, fearing lest some of the natives might collect to plunder the camp, surrounded the place with a stone wall. He stayed there thirty-three days; and through that time, he says, the soldiers hunted for mussels, oysters, and razor-fish, as they are called; they were all of unusual size. much larger than those of our seas. They also drank briny water.

XXII. On the wind falling, they weighed anchor; and after sailing sixty stades they moored off a sandy shore; there was a desert island near the shore. They used this, therefore, as a breakwater and moored there: the island was called Domai. On the shore there was no water, but after advancing some twenty stades inland they found good water. Next day they sailed up to nightfall to Saranga, some three hundred stades, and moored off the beach, and water was found about eight stades from the beach. Thence

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

they sailed and moored at Sacala, a desert spot. Then making their way through two rocks, so close together that the oar-blades of the ships touched the rocks to port and starboard, they moored at Morontobara, after sailing some three hundred stades. The harbour is spacious, circular, deep, and calm, but its entrance is narrow. They called it, in the natives' language, 'The Ladies' Pool,' since a lady was the first sovereign of this district. When they had got safe through the rocks, they met great waves, and the sea running strong; and moreover it seemed very hazardous to sail seaward of the cliffs. For the next day, however, they sailed with an island on their port beam, so as to break the sea, so close indeed to the beach that one would have conjectured that it was a channel cut between the island and the coast. The entire passage was of some seventy stades. On the beach were many thick trees, and the island was wholly covered with shady forest. About dawn, they sailed outside the island, by a narrow and turbulent passage; for the tide was still falling. And when they had sailed some hundred and twenty stades they anchored in the mouth of the river Arabis. There was a fine large harbour by its mouth; but there was no drinking water; for the mouths of the Arabis were mixed with seawater. However, after penetrating forty stades inland they found a water-hole, and after drawing water thence they returned back again. By the harbour was a high island, desert, and round it one could get oysters and all kinds of fish. Up to this the country of the Arabeans extends; they are the last Indians settled in this direction; from here on the territory, of the Oreitans begins.

XXIII. Leaving the outlets of the Arabis they coasted along the territory of the Oreitans, and anchored at Pagala, after a voyage of two hundred stades, near a breaking sea; but they were able all the same to cast anchor. The crews rode out the seas in their vessels, though a few went in search of water, and procured it. Next day they sailed at dawn, and after making four hundred and thirty stades they put in towards evening at Cabana, and moored on a desert shore. There too was a heavy surf, and so they anchored their vessels well out to sea. It was on this part of the voyage that a heavy squall from seaward caught the fleet, and two warships were lost on the passage, and one galley; the men swam off and got to safety, as they were sailing quite near the land. But about midnight they weighed anchor and sailed as far as Cocala, which was about two hundred stades from the beach off which they had anchored. The ships kept the open sea and anchored, but Nearchus disembarked the crews and bivouacked on shore; after all these toils and dangers in the sea, they desired to rest awhile. The camp was entrenched, to keep off the natives. Here Leonnatus, who had been in charge of operations against the Oreitans, beat in a great battle the Oreitans, along with others who had joined their enterprise. He slew some six thousand of them, including all the higher officers; of the cavalry with Leonnatus, fifteen fell, and of his infantry, among a few others, Apollophanes satrap of Gadrosia. This I have related in my other history, and also how Leonnatus was crowned

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

by Alexander for this exploit with a golden coronet before the Macedonians. There provision of corn had been gathered ready, by Alexander's orders, to victual the host; and they took on board ten days' rations. The ships which had suffered in the passage so far they repaired; and whatever troops Nearchus thought were inclined to malingering he handed over to Leonnatus, but he himself recruited his fleet from Leonnatus' soldiery.

XXIV. Thence they set sail and progressed with a favouring wind; and after a passage of five hundred stades they anchored by a torrent, which was called Tomerus. There was a lagoon at the mouths of the river, and the depressions near the bank were inhabited by natives in stifling cabins. These seeing the convoy sailing up were astounded, and lining along the shore stood ready to repel any who should attempt a landing. They carried thick spears, about six cubits long; these had no iron tip, but the same result was obtained by hardening the point with fire. They were in number about six hundred. Nearchus observed these evidently standing firm and drawn up in order, and ordered the ships to hold back within range, so that their missiles might reach the shore; for the natives' spears, which looked stalwart, were good for close fighting, but had no terrors against a volley. Then Nearchus took the lightest and lightest-armed troops, such as were also the best swimmers, and bade them swim off as soon as the word was given. Their orders were that, as soon as any swimmer found bottom, he should await his mate, and not attack the natives till they had their formation three deep; but then they were to raise their battle cry and charge at the double. On the word, those detailed for this service dived from the ships into the sea, and swam smartly, and took up their formation in orderly manner, and having made a phalanx, charged, raising, for their part, their battle cry to the God of War, and those on shipboard raised the cry along with them; and arrows and missiles from the engines were hurled against the natives. They, astounded at the flash of the armour, and the swiftness of the charge, and attacked by showers of arrows and missiles, half naked as they were, never stopped to resist but gave way. Some were killed in flight; others were captured; but some escaped into the hills. Those captured were hairy, not only their heads but the rest of their bodies; their nails were rather like beasts' claws; they used their nails (according to report) as if they were iron tools; with these they tore asunder their fishes, and even the less solid kinds of wood; everything else they cleft with sharp stones; for iron they did not possess. For clothing they wore skins of animals, some even the thick skins of the larger fishes.

XXV. Here the crews beached their ships and repaired such as had suffered. On the sixth day from this they set sail, and after voyaging about three hundred stades they came to a country which was the last point in the territory of the Oreitans: the district was called Malana. Such Oreitans as live inland, away from the sea, dress as the Indians do, and equip themselves similarly for warfare; but their dialect and customs differ. The length of the coasting voyage along the territory of the Arabeis was about a thousand,

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

stades from the point of departure; the length of the Oreitan coast sixteen hundred. As they sailed along the land of India for thence onward the natives are no longer Indians –Nearchus states that their shadows were not cast in the same way; but where they were making for the high seas and steering a southerly course, their shadows appeared to fall southerly too; but whenever the sun was at midday, then everything seemed shadowless. Then such of the stars as they had seen hitherto in the sky, some were completely hidden, others showed themselves low down towards the earth; those they had seen continually before were now observed both setting, and then at once rising again. I think this tale of Nearchus' is likely; since in Syene of Egypt, when the sun is at the summer solstice, people show a well where at midday one sees no shade; and in Meroe, at the same season, no shadows are cast. So it seems reasonable that in India too, since they are far southward, the same natural phenomena may occur, and especially in the Indian Ocean, just because it particularly runs southward. But here I must leave this subject.

XXVI. Next to the Oreitans, more inland, dwelt the Gadrosians, whose country Alexander and his army had much pains in traversing; indeed they suffered more than during all the rest of his expedition: all this I have related in my larger history. Below the Gadrosians, as you follow the actual coast, dwell the people called the Fish-eaters. The fleet sailed past their country. On the first day they unmoored about the second watch, and put in at Bagisara; a distance along the coast of about six hundred stades. There is a safe harbour there, and a village called Pasira, some sixty stades from the sea; the natives about it are called Pasireans. The next day they weighed anchor earlier than usual and sailed round a promontory which ran far seaward, and was high, and precipitous. Then they dug wells; and obtained only a little water, and that poor and for that day they rode at anchor, because there was heavy surf on the beach. Next day they put in at Colta after a voyage of two hundred stades. Thence they departed at dawn, and after voyaging six hundred stades anchored at Calyba. A village is on the shore, a few date-palms grew near it, and there were dates, still green, upon them. About a hundred stades from the beach is an island called Carnine. There the villagers brought gifts to Nearchus, sheep and fishes; the mutton, he says, had a fishy taste, like the flesh of the sea-birds, since even the sheep feed on fish; for there is no grass in the place. However, on the next day they sailed two hundred stades and moored off a beach, and a village about thirty stades from the sea; it was called Cissa, an Carbis was the name of the strip of coast. There they found a few boats, the sort which poor fishermen might use; but the fishermen themselves they did not find, for they had run away as soon as they saw the ships anchoring. There was no corn there, and the army had spent most of its store; but they caught and embarked there some goats, and so sailed away. Rounding a tall cape running some hundred and fifty stades into the sea, they put in at a calm harbour; there was water there, and fishermen dwelt near; the harbour was called Mosarna.

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

XXVII. Nearchus tells us that from this point a pilot sailed with them, a Gadrosian called Hydraces. He had promised to take them as far as Carmania; from thence on the navigation was not difficult, but the districts were better known, up to the Persian Gulf. From Mosarna they sailed at night, seven hundred and fifty stades, to the beach of Balomus. Thence again to Barna, a village, four hundred stades, where there were many date-palms and a garden; and in the garden grew myrtles and abundant flowers, of which wreaths were woven by the natives. There for the first time they saw garden-trees, and men dwelling there not entirely like animals. Thence they coasted a further two hundred stades and reached Dendrobosa and the ships kept the roadstead at anchor. Thence about midnight they sailed and came to a harbour Cophas, after a voyage of about four hundred stades; here dwelt fishermen, with small and feeble boats; and they did not row with their oars on a rowlock, as the Greeks do, but as you do in a river, propelling the water on this side or that like labourers digging the soil. At the harbour was abundant pure water. About the first watch they weighed anchor and arrived at Cyiza, after a passage of eight hundred stades, where there was a desert beach and a heavy surf. Here, therefore, they anchored, and each ship took its own meal. Thence they voyaged five hundred stades and arrived at a small town built near the shore on a hill. Nearchus, who imagined that the district must be tilled, told Archias of Pella, son of Anaxidotus, who was sailing with Nearchus, and was a notable Macedonian, that they must surprise the town, since he had no hope that the natives would give the army provisions of their good-will; while he could not capture the town by force, but this would require a siege and much delay; while they in the meanwhile were short of provisions. But that the land did produce corn he could gather from the straw which they saw lying deep near the beach. When they had come to this resolve, Nearchus bade the fleet in general to get ready as if to go to sea; and Archias, in his place, made all ready for the voyage; but Nearchus himself was left behind with a single ship and went off as if to have a look at the town.

XXVIII. As Nearchus approached the walls, the natives brought him, in a friendly way, gifts from the city; tunny-fish baked in earthen pans; for there dwell the westernmost of the Fish-eating tribes, and were the first whom the Greeks had seen cooking their food; and they brought also a few cakes and dates from the palms. Nearchus said that he accepted these gratefully; and desired to visit the town, and they permitted him to enter. But as soon as he passed inside the gates, he bade two of the archers to occupy the postern, while he and two others, and the interpreter, mounted the wall on this side and signalled to Archias and his men as had been arranged: that Nearchus should signal, and Archias understand and do what had been ordered. On seeing the signal the Macedonians beached their ships with all speed; they leapt in haste into the sea, while the natives, astounded at this manoeuvre, ran to their arms. The interpreter with Nearchus cried out that they should give corn to the army, if they wanted to save their city; and

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

the natives replied that they had none, and at the same time attacked the wall. But the archers with Nearchus shooting from above easily held them up. When, however, the natives saw that their town was already occupied and almost on the way to be enslaved, they begged Nearchus to take what corn they had and retire, but not to destroy the town. Nearchus, however, bade Archias to seize the gates and the neighbouring wall; but he sent with the natives some soldiers to see whether they would without any trick reveal their corn. They showed freely their flour, ground down from the dried fish; but only a small quantity of corn and barley. In fact they used as flour what they got from the fish; and loaves of corn flour they used as a delicacy. When, however, they had shown all they had, the Greeks provisioned themselves from what was there, and put to sea, anchoring by a headland which the inhabitants regarded as sacred to the Sun: the headland was called Bageia.

XXIX. Thence, weighing anchor about midnight, they voyaged another thousand stades to Talmena, a harbour giving good anchorage. Thence they went to Canasis, a deserted town, four hundred stades farther; here they found a well sunk; and near by were growing wild date-palms. They cut out the hearts of these and ate them; for the army had run short of food. In fact they were now really distressed by hunger, and sailed on therefore by day and night, and anchored off a desolate shore. But Nearchus, afraid that they would disembark and leave their ships from faint-heartedness, purposely kept the ships in the open roadstead. They sailed thence and anchored at Canate, after a voyage of seven hundred and fifty stades. Here there are a beach and shallow channels. Thence they sailed eight hundred stades, anchoring at Troea; there were small and poverty-stricken villages on the coast. The inhabitants deserted their huts and the Greeks found there a small quantity of corn, and dates from the palms. They slaughtered seven camels which had been left there, and ate the flesh of them. About daybreak they weighed anchor and sailed three hundred stades, and anchored at Dagaseira; there some wandering tribe dwelt. Sailing thence they sailed without stop all night and day, and after a voyage of eleven hundred stades they got past the country of the Fish-eaters, where they had been much distressed by want of food. They did not moor near shore, for there was a long line of surf, but at anchor, in the open. The length of the voyage along the coast of the Fish-eaters is a little above ten thousand stades. These Fish-eaters live on fish; and hence their name; only a few of them fish, for only a few have proper boats and have any skill in the art of catching fish; but for the most part it is the receding tide which provides their catch. Some have made nets also for this kind of fishing; most of them about two stades in length. They make the nets from the bark of the date-palm, twisting the bark like twine. And when the sea recedes and the earth is left, where the earth remains dry it has no fish, as a rule; but where there are hollows, some of the water remains, and in this a large number of fish, mostly small, but some large ones too. They throw their

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

nets over these and so catch them. They eat them raw, just as they take them from the water, that is, the more tender kinds; the larger ones, which are tougher, they dry in the sun till they are quite sere and then pound them and make a flour and bread of them; others even make cakes of this flour. Even their flocks are fed on the fish, dried; for the country has no meadows and produces no grass. They collect also in many places crabs and oysters and shell-fish. There are natural salts in the country; from these they make oil. Those of them who inhabit the desert parts of their country, treeless as it is and with no cultivated parts, find all their sustenance in the fishing but a few of them sow part of their district, using the corn as a relish to the fish, for the fish form their bread. The richest among them have built huts; they collect the bones of any large fish which the sea casts up, and use them in place of beams. Doors they make from any flat bones which they can pick up. But the greater part of them, and the poorer sort, have huts made from the fishes' backbones.

XXX. Large whales live in the outer ocean, and fishes much larger than those in our inland sea. Nearchus states that when they left Cyiza, about daybreak they saw water being blown upwards from the sea as it might be shot upwards by the force of a waterspout. They were astonished, and asked the pilots of the convoy what it might be and how it was caused; they replied that these whales as they rove about the ocean spout up the water to a great height; the sailors, however, were so startled that the oars fell from their hands. Nearchus went and encouraged and cheered them, and whenever he sailed past any vessel, he signalled them to turn the ship's bow on towards the whales as if to give them battle; and raising their battle cry with the sound of the surge to row with rapid strokes and with a great deal of noise. So they all took heart of grace and sailed together according to signal. But when they actually were nearing the monsters, then they shouted with all the power of their throats, and the bugles blared, and the rowers made the utmost splashings with their oars. So the whales, now visible at the bows of the ships, were scared, and dived into the depths; then not long afterwards they came up astern and spouted the sea-water on high. Thereupon joyful applause welcomed this unexpected salvation, and much praise was showered on Nearchus for his courage and prudence. Some of these whales go ashore at different parts of the coast; and when the ebb comes, they are caught in the shallows; and some even were cast ashore high and dry; thus they would perish and decay, and their flesh rotting off them would leave the bones convenient to be used by the natives for their huts. Moreover, the bones in their ribs served for the larger beams for their dwellings; and the smaller for rafters; the jawbones were the doorposts, since many of these whales reached a length of five-and-twenty fathoms.

XXXI. While they were coasting along the territory of the Fish-eaters, they heard a rumour about an island,' which lies some little distance from the mainland in this

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

direction, about a hundred stades, but is uninhabited. The natives said that it was sacred to the Sun and was called Nosala, and that no human being ever of his own will put in there; but that anyone who ignorantly touched there at once disappeared. Nearchus, however, says that one of his galleys with an Egyptian crew was lost with all hands not far from this island, and that the pilots stoutly averred about it that they had touched ignorantly on the island and so had disappeared. But Nearchus sent a thirty-oar to sail round the island, with orders not to put in, but that the crew should shout loudly, while coasting round as near as they dared; and should call on the lost helmsman by name, or any of the crew whose name they knew. As no one answered, he tells us that he himself sailed up to the island, and compelled his unwilling crew to put in; then he went ashore and exploded this island fairy-tale. They heard also another current story about this island, that one of the Nereids dwelt there; but the name of this Nereid was not told. She showed much friendliness to any sailor who approached the island; but then turned him into a fish and threw him into the sea. The Sun then became irritated with the Nereid, and bade her leave the island; and she agreed to remove thence, but begged that the spell on her be removed; the Sun consented; and such human beings as she had turned into fishes he pitied, and turned them again from fishes into human beings, and hence arose the people called Fish-eaters, and so they descended to Alexander's day. Nearchus shows that all this is mere legend; but I have no commendation for his pains and his scholarship; the stories are easy enough to demolish; and I regard it as tedious to relate these old tales and then prove them all false.

XXXII. Beyond these Fish-eaters the Gadrosians inhabit the interior, a poor and sandy territory; this was where Alexander's army and Alexander himself suffered so seriously, as I have already related in my other book. But when the fleet, leaving the Fish-eaters, put in at Carmania, they anchored in the open, at the point where they first touched Carmania; since there was a long and rough line of surf parallel with the coast. From there they sailed no further due west, but took a new course and steered with their bows pointing between north and west. Carmania is better wooded than the country of the Fish-eaters, and bears more fruits; it has more grass, and is well watered. They moored at an inhabited place called Badis, in Carmania; with many cultivated trees growing, except the olive tree, and good vines; it also produced corn. Thence they set out and voyaged eight hundred stades, and moored off a desert shore; and they sighted a long cape jutting out far into the ocean; it seemed as if the headland itself was a day's sail away. Those who had knowledge of the district said that this promontory belonged to Arabia, and was called Maceta; and that thence the Assyrians imported cinnamon and other spices. From this beach of which the fleet anchored in the open roadstead, and the promontory, which they sighted opposite them, running out into the sea, the bay (this is my opinion, and Nearchus held the same) runs back into the interior, and would

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

seem to be the Red Sea. When they sighted this cape, Onesicritus bade them take their course from it and sail direct to it, in order not to have the trouble of coasting round the bay. Nearchus, however, replied that Onesicritus was a fool, if he was ignorant of Alexander's purpose in despatching the expedition. It was not because he was unequal to the bringing all his force safely through on foot that he had despatched the fleet; but he desired to reconnoitre the coasts that lay on the line of the voyage, the roadsteads, the islets; to explore thoroughly any bay which appeared, and to learn of any cities which lay on the sea-coast; and to find out what land was fruitful, and what was desert. They must therefore not spoil Alexander's undertaking, especially when they were almost at the close of their toils, and were, moreover, no longer in any difficulty about provisions on their coasting cruise. His own fear was, since the cape ran a long way southward, that they would find the land there waterless and sun-scorched. This view prevailed; and I think that Nearchus evidently saved the expeditionary force by this decision; for it is generally held that this cape and the country about it are entirely desert and quite denuded of water.

XXXIII. They sailed then, leaving this part of the shore, hugging the land; and after voyaging some seven hundred stades they anchored off another beach, called Neoptana. Then at dawn they moved off seaward, and after traversing a hundred stades, they moored by the river Anamis; the district was called Harmozeia. All here was friendly, and produced fruit of all sorts, except that olives did not grow there. There they disembarked, and had a welcome rest from their long toils, remembering the miseries they had endured by sea and on the coast of the Fish-eaters; recounting one to another the desolate character of the country, the almost bestial nature of the inhabitants, and their own distresses. Some of them advanced some distance inland, breaking away from the main force, some in pursuit of this, and some of that. There a man appeared to them, wearing a Greek cloak, and dressed otherwise in the Greek fashion, and speaking Greek also. Those who first sighted him said that they burst into tears, so strange did it seem after all these miseries to see a Greek, and to hear Greek spoken. They asked whence he came, who he was; and he said that he had become separated from Alexander's camp, and that the camp, and Alexander himself, were not very far distant. Shouting aloud and clapping their hands they brought this man to Nearchus; and he told Nearchus everything, and that the camp and the King himself were distant five days' journey from the coast. He also promised to show Nearchus, the governor of this district and did so; and Nearchus took counsel with him how to march inland to meet the King. For the moment indeed he returned to the ship; but at dawn he had the ships drawn up on shore, to repair any which had been damaged on the voyage; and also because he had determined to leave the greater part of his force behind here. So he had a double stockade built round the ships' station, and a mud wall with a deep trench, beginning from the bank of the river

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

and going on to the beach, where his ships had been dragged ashore.

XXXIV. While Nearchus was busied with these arrangements, the governor of the country, who had been told that Alexander felt the deepest concern about this expedition, took for granted that he would receive some great reward from Alexander if he should be the first to tell him of the safety of the expeditionary force, and that Nearchus would presently appear before the King. So then he hastened by the shortest route and told Alexander: 'See, here is Nearchus coming from the ships.' On this Alexander, though not believing what was told him, yet, as he naturally would be, was pleased by the news itself. But when day succeeded day, and Alexander, reckoning the time when he received the good news, could not any longer believe it, when, moreover, relay sent after relay, to escort Nearchus, either went a part of the route, and meeting no one, came back unsuccessful, or went on further, and missing Nearchus' party, did not themselves return at all, then Alexander bade the man be arrested for spreading a false tale and making things all the worse by this false happiness; and Alexander showed both by his looks and his mind that he was wounded with a very poignant grief. Meanwhile, however, some of those sent to search for Nearchus, who had horses to convey him, and chariots, did meet on the way Nearchus and Archias, and five or six others; that was the number of the party which came inland with him. On this meeting they recognized neither Nearchus nor Archias – so altered did they appear; with their hair long, unwashed, covered with brine, wizened, pale from sleeplessness and all their other distresses; when, however, they asked where Alexander might be, the search party gave reply as to the locality and passed on. Archias, however, had a happy thought, and said to Nearchus: 'I suspect, Nearchus, that these persons who are traversing the same road as ours through this desert country have been sent for the express purpose of finding us; as for their failure to recognize us, I do not wonder at that; we are in such a sorry plight as to be unrecognizable. Let us tell them who we are and ask them why they come hither.' Nearchus approved; they did ask whither the party was going; and they replied: 'To look for Nearchus and his naval force.' Whereupon, 'Here am I, Nearchus,' said he, 'and here is Archias. Do you lead on; we will make a full report to Alexander about the expeditionary force.'

XXXV. The soldiers took them up in their cars and drove back again. Some of them, anxious to be beforehand with the good news, ran forward and told Alexander: 'Here is Nearchus; and with him Archias and five besides, coming to your presence.' They could not, however, answer any questions about the fleet. Alexander thereupon became possessed of the idea that these few had been miraculously saved, but that his whole army had perished; and did not so much rejoice at the safe arrival of Nearchus and Archias, as he was bitterly pained by the loss of all his force. Hardly had the soldiers told this much, when Nearchus and Archias approached; Alexander could only with great difficulty recognize them; and seeing them as he did long-haired and ill-clad, his grief

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

for the whole fleet and its personnel received even greater surety. Giving his right hand to Nearchus and leading him aside from the Companions and the bodyguard, for a long time he wept; but at length recovering himself he said: 'That you come back safe to us, and Archias here, the entire disaster is tempered to me; but how perished the fleet and the force?' 'Sir,' he replied, 'your ships and men are safe; we are come to tell with our own lips of their safety.' On this Alexander wept the more, since the safety of the force had seemed too good to be true; and then he enquired where the ships were anchored. Nearchus replied: 'They are all drawn up at the mouth of the river Anamis, and are undergoing a refit.' Alexander then called to witness Zeus of the Greeks and the Libyan, Ammon that in good truth he rejoiced more at this news than because he had conquered all Asia since the grief he had felt at the supposed loss of the fleet cancelled all his other good fortune.

XXXVI. The governor of the province, however, whom Alexander had arrested for his false tidings, seeing Nearchus there on the spot, fell at his feet:

'Here,' he said, 'am I, who reported your safe arrival to Alexander; you see in what plight I now am.' So Nearchus begged Alexander to let him go, and he was let off. Alexander then sacrificed thank-offerings for the safety of his host, to Zeus the Saviour, Heracles, Apollo the Averter of Evil, Poseidon and all the gods of the sea; and he held a contest of art and of athletics, and also a procession; Nearchus was in the front row in the procession, and the troops showered on him ribbons and flowers. At the end of the procession Alexander said to Nearchus: 'I will not let you, Nearchus, run risks or suffer distresses again like those of the past; some other admiral shall henceforth command the navy till he brings it into Susa.' Nearchus, however, broke in and said: 'King, I will obey you in all things, as is my bounden duty; but should you desire to do me a gracious favour, do not this thing, but let me be the admiral of your fleet right up to the end, till I bring your ships safe to Susa. Let it not be said that you entrusted me with the difficult and desperate work, but the easy task which leads to ready fame was taken away and put into another's hands.' Alexander checked his speaking further and thanked him warmly to boot; and so he sent him back a signal giving him a force as escort, but a small one, as he was going through friendly territory. Yet his journey to the sea was not untroubled; the natives of the country round about were in possession of the strong places of Carmania, since their satrap had been put to death by Alexander's orders, and his successor appointed, Tlepolemus, had not established his authority. Twice then or even thrice on the one day the party came into conflict with different bodies of natives who kept coming up, and thus without losing any time they only just managed to get safe to the sea-coast. Then Nearchus sacrificed to Zeus the Saviour and held an athletic meeting.

XXXVII. When therefore Nearchus had thus duly performed all his religious duties,

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

they weighed anchor. Coasting along a rough and desert island, they anchored off another island, a large one, and inhabited; this was after a voyage of three hundred stades, from their point of departure. The desert island was called Organa, and that off which they moored Oaracta. Vines grew on it and date-palms; and it produced corn; the length of the island was eight hundred stades. The governor of the island, Mazenes, sailed with them as far as Susa as a volunteer pilot. They said that in this island the tomb of the first chief of this territory was shown; his name was Erythres, and hence came the name of the sea. Thence they weighed anchor and sailed onward, and when they had coasted about two hundred stades along this same island they anchored off it once more and sighted another island, about forty stades from this large one. It was said to be sacred to Poseidon, and not to be trod by foot of man. About dawn they put out to sea, and were met by so violent an ebb that three of the ships ran ashore and were held hard and fast on dry land, and the rest only just sailed through the surf and got safe into deep water. The ships, however, which ran aground were floated off when next flood came, and arrived next day where the main fleet was. They moored at another island, about three hundred stades from the mainland, after a voyage of four hundred stades. Thence they sailed about dawn, and passed on their port side a desert island; its name was Pylora. Then they anchored at Sisidona, a desolate little township, with nothing but water and fish; for the natives here were fish-eaters whether they would or not, because they dwelt in so desolate a territory. Thence they got water, and reached Cape Tarsias, which runs right out into the sea, after a voyage of three hundred stades. Thence they made for Cataea, a desert island, and low-lying; this was said to be sacred to Hermes and Aphrodite; the voyage was of three hundred stades. Every year the natives round about send sheep and goats as sacred to Hermes and Aphrodite, and one could see them, now quite wild from lapse of time and want of handling.

XXXVIII. So far extends Carmania; beyond this is Persia. The length of the voyage along the Carmanian coast is three thousand seven hundred stades. The natives' way of life is like that of the Persians, to whom they are also neighbours; and they wear the same military equipment. The Greeks moved on thence, from the sacred island, and were already coasting along Persian territory; they put in at a place called Eas, where a harbour is formed by a small desert island, which is called Cecandrus; the voyage thither is four hundred stades. At daybreak they sailed to another island, an inhabited one, and anchored there; here, according to Nearchus, there is pearl fishing, as in the Indian Ocean. They sailed along the point of this island, a distance of forty stades, and there moored. Next they anchored off a tall hill, called Ochus, in a safe harbour; fishermen dwelt on its banks. Thence they sailed four hundred and fifty stades, and anchored off Apostana; many boats were anchored there, and there was a village near, about sixty stades from the sea. They weighed anchor at night and sailed thence to a gulf, with a

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

good many villages settled round about. This was a voyage of four hundred stades; and they anchored below a mountain, on which grew many date-palms and other fruit trees such as flourish in Greece. Thence they un-moored and sailed along to Gogana, about six hundred stades, to an inhabited district; and they anchored off the torrent, called Areon, just at its outlet. The anchorage there was uncomfortable; the entrance was narrow, just at the mouth, since the ebb tide caused shallows in all the neighbourhood of the outlet. After this they anchored again, at another river-mouth, after a voyage of about eight hundred stades. This river was called Sitacus. Even here, however, they did not find a pleasant anchorage; in fact this whole voyage along Persia was shallows, surf, and lagoons. There they found a great supply of corn; brought together there by the King's orders, for their provisioning; there they abode twenty-one days in all; they drew up the ships, and repaired those that had suffered, and the others too they put in order.

XXXIX. Thence they started and reached the city of Hieratis, a populous place. The voyage was of seven hundred and fifty stades; and they anchored in a channel running from the river to the sea and called Heratemis. At sunrise they sailed along the coast to a torrent called Padagrus; the entire district forms a peninsula. There were many gardens, and all sorts of fruit trees were growing there; the name of the place was Mesambria. From Mesambria they sailed and after a voyage of about two hundred stades anchored at Taoce on the river Granis. Inland from here was a Persian royal residence, about two hundred stades from the mouth of the river. On this voyage, Nearchus says, a great whale was seen, stranded on the shore, and some of the sailors sailed past it and measured it, and said it was of ninety cubits' length. Its hide was scaly, and so thick that it was a cubit in depth; and it had many oysters, limpets, and seaweeds growing on it. Nearchus also says that they could see many dolphins round the whale, and these larger than the Mediterranean dolphins. Going on hence, they put in at the torrent Rogonis, in a good harbour; the length of this voyage was two hundred stades. Thence again they sailed four hundred stades and bivouacked on the side of a torrent; its name was Brizana. Then they found difficult anchorage; there were surf, and shallows, and reefs showing above the sea. But when the flood tide came in, they were able to anchor; when, however, the tide retired again, the ships were left high and dry. Then when the flood duly returned, they sailed out, and anchored in a river called Oroatis, greatest, according to Nearchus, of all the rivers which on this coast run into the Ocean.

XL. The Persians dwell up to this point and the Susians next to them. Above the Susians lives another independent tribe; these are called Uxians, and in my earlier history I have described them as brigands. The length of the voyage along the Persian coast was four thousand four hundred stades. The Persian land is divided, they say, into three climatic zones. The part which lies by the Red Sea is sandy and sterile, owing to the heat. Then the next zone, northward, has a temperate climate; the country is grassy and

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

has lush meadows and many

vines and all other fruits except the olive; it is rich with all sorts of gardens, has pure rivers running through, and also lakes, and is good both for all sorts of birds which frequent rivers and lakes, and for horses, and also pastures the other domestic animals, and is well wooded, and has plenty of game. The next zone, still going northward, is wintry and snowy, Nearchus. tells us of some envoys from the Black Sea who after quite a short journey met Alexander traversing Persia and caused him no small astonishment; and they explained to Alexander how short the journey was. I have explained that the Uxians are neighbours to the Susians, as the Mardians they also are brigands live next the Persians, and the Cossaeans come next to the Medes. All these tribes Alexander reduced, coming upon them in winter-time, when they thought their country unapproachable. He also founded cities so that they should no longer be nomads but cultivators, and tillers of the ground, and so having a stake in the country might be deterred from raiding one another. From here the convoy passed along the Susian territory. About this part of the voyage Nearchus says he cannot speak with accurate detail, except about the roadsteads and the length of the voyage. This is because the country is for the most part marshy and ruins out well into the sea, with breakers, and is very hard to get good anchorage in. So their voyage was mostly in the open sea. They sailed out, therefore from the mouths of the river, where they had encamped, just on the Persian border, taking on board water for five days; for the pilots said that they would meet no fresh water.

XLI. Then after traversing five hundred stades they anchored in the mouth of a lake, full of fish, called Cataderbis: at the mouth was a small island called Margastana. Thence about daybreak they sailed out and passed the shallows in columns of single ships; the shallows were marked on either side by poles driven down, just as in the strait between the island Leucas and Acarnania signposts have been set up for navigators so that the ships should not ground on the shallows. However, the shallows round Leucas are sandy and render it easy for those aground to get off; but here it is mud on both sides of the channel, both deep and tenacious; once aground there, they could not possibly get off. For the punt-poles sank into the mud and gave them no help, and it proved impossible for the crews to disembark and push the ships off, for they sank up to their breasts in the ooze. Thus then they sailed out with great difficulty and traversed six hundred stades, each crew abiding by its ship; and then they took thought for supper. During the night, however, they were fortunate in reaching deep sailing water and next day also, up to the evening; they sailed nine hundred stades, and anchored in the mouth of the Euphrates near a village of Babylonia, called Didotis; here the merchants gather together frankincense from the neighbouring country and all other sweet-smelling spices which Arabia produces. From the mouth of the Euphrates to Babylon Nearchus says it is a voyage of three thousand three hundred stades.

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

XLII. There they heard that Alexander was departing towards Susa. They therefore sailed back, in order to sail up the Pasitigris and meet Alexander. So they sailed back, with the land of Susia on their left, and they went along the lake into which the Tigris runs. It flows from Armenia past the city of Ninus, which once was a great and rich city, and so makes the region between itself and the Euphrates; that is why it is called 'Between the Rivers.' The voyage from the lake up to the river itself is six hundred stades, and there is a village of Susia called Aginis; this village is five hundred stades from Susa. The length of the voyage along Susian territory to the mouth of the Pasitigris is two thousand stades. From there they sailed up the Pasitigris through inhabited and prosperous country. Then they had sailed up about a hundred and fifty stades they moored there, waiting for the scouts whom Nearchus had sent to see where the King was. He himself sacrificed to the Saviour gods, and held an athletic meeting, and the whole naval force made merry. And when news was brought that Alexander was now approaching they sailed again up the river; and they moored near the pontoon bridge on which Alexander intended to take his army over to Susa. There the two forces met; Alexander offered sacrifices for his ships and men, come safe back again, and games were held; and whenever Nearchus appeared in the camp, the troops pelted him with ribbons and flowers. There also Nearchus and Leonnatus were crowned by Alexander with a golden crown; Nearchus for the safe conveying of the ships, Leonnatus for the victory he had achieved among the Oreitans and the natives who dwelt next to them. Thus then Alexander received safe back his navy, which had started from the mouths of the Indus.

XLIII. On the right side of the Red Sea beyond Babylonia is the chief part of Arabia, and of this a part comes down to the sea of Phoenicia and Palestinian Syria, but on the west, up to the Mediterranean, the Egyptians are upon the Arabian borders. Along Egypt a gulf running in from the Great Sea makes it clear that by reason of the gulf's joining with the High Seas one might sail round from Babylon into this gulf which runs into Egypt. Yet, in point of fact, no one has yet sailed round this way by reason of the heat and the desert nature of the coasts, only a few people who sailed over the open sea. But those of the army of Cambyses who came safe from Egypt to Susa and those troops who were sent from Ptolemy Lagus to Seleucus Nicator at Babylon through Arabia crossed an isthmus in a period of eight days and passed through a waterless and desert country, riding fast upon camels, carrying water for themselves on their camels, and travelling by night; for during the day they could not come out of shelter by reason of the heat. So far is the region on the other side of this stretch of land, which we have demonstrated to be an isthmus from the Arabian gulf running into the Red Sea, from being inhabited, that its northern parts are quite desert and sandy. Yet from the Arabian gulf which runs along Egypt people have started, and have circumnavigated the greater part of Arabia hoping to reach the sea nearest to Susa and Persia, and thus have sailed so far round the

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Arabian coast as the amount of fresh water taken aboard their vessels have permitted, and then have returned home again. And those whom Alexander sent from Babylon, in order that, sailing as far as they could on the right of the Red Sea, they might reconnoitre the country on this side, these explorers sighted certain islands lying on their course, and very possibly put in at the mainland of Arabia. But the cape which Nearchus says his party sighted running out into the sea opposite Carmania no one has ever been able to round, and thus turn inwards towards the far side. I am inclined to think that had this been navigable, and had there been any passage, it would have been proved navigable, and a passage found, by the indefatigable energy of Alexander. Moreover, Hanno the Libyan started out from Carthage and passed the pillars of Heracles and sailed into the outer Ocean, with Libya on his port side, and he sailed on towards the east, five-and-thirty days all told. But when at last he turned southward, he fell in with every sort of difficulty, want of water, blazing heat, and fiery streams running into the sea. But Cyrene, lying in the more desert parts of Africa, is grassy and fertile and well-watered; it bears all sorts of fruits and animals, right up to the region where the silphium grows; beyond this silphium belt its upper parts are bare and sandy. Here this my history shall cease, which, as well as my other, deals with Alexander of Macedon son of Philip.

5.58.3 Indian selections from *Anabasis Alexandri*

Text: Flavius Arrianus Hist., Phil., *Alexandri anabasis* (0074: 001) “Flavii Arriani quae exstant omnia, vol. 1”, Ed. Roos, A.G., Wirth, G. Leipzig: Teubner, 1967 (1st edn. corr.). Book 3, chapter 8, section 3, line 1

Βεβοηθήκεσαν γὰρ Δαρείῳ Ἰνδῶν τε ὅσοι Βακτρίοις ὄμοροι καὶ αὐτοὶ Βάκτριοι καὶ Σογδιανοί· τούτων μὲν πάντων ἡγεῖτο Βῆσσος ὁ τῆς Βακτρῶν χώρας σατράπης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., *Alexandri anabasis* Book 3, chapter 8, section 4, line 2

Βαρσαέ<ν>της δὲ Ἀραχωτῶν σατράπης Ἀραχωτούς τε ἤγε καὶ τοὺς ὀρείους Ἰνδοὺς καλουμένους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., *Alexandri anabasis* Book 3, chapter 8, section 6, line 6

ἐλέγετο δὲ ἡ πᾶσα στρατιὰ ἡ Δαρείου ἱππεῖς μὲν ἐς τε-τρακισμυρίους, πεζοὶ δὲ ἐς ἑκατὸν μυριάδας, καὶ ἄρματα δρεπανηφόρα διακόσια, ἐλέφαντες δὲ οὐ πολλοί, ἀλλὰ ἐς πεντεκαίδεκα μάλιστα Ἰνδοῖς τοῖς ἐπὶ τὰδε τοῦ Ἰνδοῦ ἦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., *Alexandri anabasis* Book 3, chapter 11, section 5, line

3

κατὰ τὸ μέσον δέ, ἵνα ἦν βασιλεὺς Δαρεῖος, οἱ τε συγγενεῖς οἱ βασιλέως ἐτετάχατο καὶ οἱ μηλοφόροι Πέρσαι καὶ Ἰνδοὶ καὶ Κᾶρες οἱ ἀνάσπαστοι καλούμενοι καὶ οἱ Μάρδοι τοξόται· Οὕξιοι δὲ καὶ Βαβυλώνιοι καὶ οἱ πρὸς τῇ ἐρυθρᾷ θαλάσῃ καὶ Σιττακηνοὶ εἰς βάθος ἐπιτεταγμένοι ἦσαν.

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 13, section 1, line 3

Ὡς δὲ ὁμοῦ ἤδη τὰ στρατόπεδα ἐγίγνετο, ὥφθη Δαρεῖός τε καὶ οἱ ἀμφ' αὐτόν, οἳ τε μηλοφόροι Πέρ-σαι καὶ Ἰνδοὶ καὶ Ἀλβανοὶ καὶ Κᾶρες οἱ ἀνάσπαστοι καὶ οἱ Μάρδοι τοξόται, κατ' αὐτόν Ἀλέξανδρον τεταγ- μένοι καὶ τὴν ἵλην τὴν βασιλικήν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 14, section 5, line 2

καὶ ταύτῃ παραρραγείσης αὐτοῖς τῆς τάξεως κατὰ τὸ διέχον διεκπαίουσι τῶν τε Ἰνδῶν τινες καὶ τῆς Περ-σικῆς ἵππου ὡς ἐπὶ τὰ σκευοφόρα τῶν Μακεδόνων· καὶ τὸ ἔργον ἐκεῖ καρτερόν ἐγίγνετο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 15, section 1, line 8

καὶ πρῶτα μὲν τοῖς φεύγουσι τῶν πολεμίων ἱππεῦσι, τοῖς τε Παρθυαίοις καὶ τῶν Ἰνδῶν ἔστιν οἷς καὶ Πέρσαις τοῖς πλείστοις καὶ κρατίστοις ἐμβάλλει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 25, section 8, line 6

Βαρσαέντης δέ, ὃς τότε κατεῖχε τὴν χώραν, εἷς ὢν τῶν ξυνεπιθεμένων Δαρεῖω ἐν τῇ φυγῇ, προσιόντα Ἀλέξανδρον μαθὼν ἐς Ἰνδοὺς τοὺς ἐπὶ τὰδε τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἔφυγε.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 25, section 8, line 8

ξυλλαβόντες δὲ αὐτόν οἱ Ἰνδοὶ παρ' Ἀλέξανδρον ἀπέστειλαν, καὶ ἀπο- θνήσκει πρὸς Ἀλέ-ξανδρου τῆς ἐς Δαρεῖον ἀδικίας ἔνεκα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 28, section 1, line 5

ἐπῆλθε δὲ καὶ τῶν Ἰνδῶν τοὺς προσχώρους Ἀραχώταις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 3, chapter 29, section 2, line 5

ὁ δὲ Ὄξος ῥέει μὲν ἐκ τοῦ ὄρους τοῦ Καυκάσου, ἔστι δὲ ποταμῶν μέγιστος τῶν ἐν τῇ Ἀσίᾳ, ὅσους γε δὴ Ἀλέ-ανδρος καὶ οἱ ξὺν Ἀλέξανδρῳ ἐπῆλθον, πλὴν τῶν Ἰν-δῶν ποταμῶν· οἱ δὲ Ἰνδοὶ πάντων ποταμῶν μέγιστοί εἰσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 15, section 6, line 2

αὐτῷ δὲ τὰ Ἰνδῶν ἔφη ἐν τῷ τότε μέλειν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 3, line 2

Ἐκ Βάκτρων δὲ ἐξήκοντος ἤδη τοῦ ἥρος ἀναλαβὼν τὴν στρατιὰν προὐχώρει ὡς ἐπ' Ἰνδοὺς, Ἀμύνταν ἀπολιπὼν ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Βακτρίων καὶ ξὺν αὐτῷ ἱππέας μὲν τρισχιλίους καὶ πεντακοσίους, πεζοὺς δὲ μυρίους.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 6, line 4

ἀφ- ικόμενος δὲ ἐς Νίκαιαν πόλιν καὶ τῇ Ἀθηνᾷ θύσας προὔχῳ ὡς ἐπὶ τὸν Κωφῆνα, προπέμψας κήρυκα ὡς Ταξίλην τε καὶ τοὺς ἐπὶ τὰδε τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ, κελεύσας ἀπαντᾶν ὅπως ἂν ἐκάστοις προχωρῇ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 6, line 7

καὶ Ταξίλης τε καὶ οἱ ἄλλοι ὑπαρχοὶ ἀπὸ τῶν, δῶρα τὰ μέγιστα παρ' Ἰνδοῖς νομιζόμενα κομίζοντες, καὶ τοὺς ἐλέφαντας δώσειν ἔφασκον τοὺς παρὰ σφίσιν ὄντας, ἀριθμὸν ἐς πέντε καὶ εἴκοσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 7, line 3

Ἐνθα δὲ διελὼν τὴν στρατιὰν Ἡφαιστίωνα μὲν καὶ Περδίκκαν ἐκπέμπει ἐς τὴν Πευκελαῶτιν χώραν ὡς ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμόν, ἔχοντας τὴν τε Γοργίου τάξιν καὶ Κλείτου καὶ Μελεάγρου καὶ τῶν ἐταίρων ἱππέων τοὺς ἡμίσεας καὶ τοὺς μισθοφόρους ἱππέας ξύμπαντας, προστάξας τὰ τε κατὰ τὴν ὁδὸν χωρία ἢ βίᾳ ἐξαιρεῖν ἢ ὁμολογίᾳ παρίστασθαι καὶ ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμόν ἀφικόμενους παρασκευάζειν ὅσα ἐς τὴν διάβασιν τοῦ ποταμοῦ ξύμφορα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 22, section 8, line 2

καὶ οὗτοι ὡς ἀφίκοντο πρὸς τὸν Ἰνδὸν ποταμόν, ἔπρασσον ὅσα ἐξ Ἀλεξάνδρου ἦν τεταγμένα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 24, section 3, line 1

Τὸν δὲ ἡγεμόνα αὐτὸν τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν Πτολεμαῖος ὁ Λάγου πρὸς τινὶ ἡδὴ γηλόφῳ ὄντα κατιδὼν καὶ τῶν ὑπασπιστῶν ἔστιν οὐς ἀμφ' αὐτὸν ξὺν πολὺ ἐλάττωσιν αὐτὸς ὦν ὁμῶς ἐδίωκεν ἔτι ἐκ τοῦ ἵππου· ὡς δὲ χαλεπὸς ὁ γήλοφος τῷ ἵππῳ ἀναδραμεῖν ἦν, τοῦτον μὲν αὐτοῦ καταλείπει παραδούς τινι τῶν ὑπασπιστῶν ἄγειν, αὐτὸς δὲ ὡς εἶχε πεζὸς τῷ Ἰνδῷ εἶπετο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 24, section 4, line 3

καὶ ὁ μὲν Ἰνδὸς τοῦ Πτολεμαίου διὰ τοῦ θώρακος παίει ἐκ χειρὸς ἐς τὸ στῆθος ξυστῶ μακρῷ, καὶ ὁ θώραξ ἔσχε τὴν πληγὴν· Πτολεμαῖος δὲ τὸν μηρὸν διαμπαξ βαλὼν τοῦ Ἰνδοῦ καταβάλλει τε καὶ σκυλεύει αὐτόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 24, section 5, line 8

καὶ οὗτοι ἐπιγενόμενοι μόγις ἐξέωσαν τοὺς Ἰνδοὺς ἐς τὰ ὄρη καὶ τοῦ νεκροῦ ἐκράτησαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 25, section 3, line 3

καὶ γίγνεται καὶ τούτοις μάχη καρτερὰ τοῦ χωρίου τῇ χαλεπότητι καὶ ὅτι οὐ κατὰ τοὺς ἄλλους τοὺς ταύτῃ βαρβάρους οἱ Ἰνδοί, ἀλλὰ πολὺ δὴ τι ἀλκιμώτατοι τῶν προσχώρων εἰσίν.

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 26, section 1, line 4

ὥς δὲ προσῆγεν ἤδη τοῖς τείχεσι, θαρρήσαντες οἱ βάρβαροι τοῖς μισθοφόροις τοῖς ἐκ τῶν πρόσω Ἰνδῶν, ἦσαν γὰρ οὗτοι ἐς ἑπτα- κισχιλίους, ὡς στρατοπεδευομένους εἶδον τοὺς Μακεδόνας, δρόμῳ ἐπ' αὐτοὺς ἦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 26, section 4, line 4

οἱ δὲ Ἰνδοὶ τῷ τε παραλόγῳ ἐκπλαγέντες καὶ ἅμα ἐν χερσὶ γεγενημένης τῆς μάχης ἐγκλί- ναντες ἔφευγον ἐς τὴν πόλιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 26, section 5, line 4

ἐπαγαγὼν δὲ τὰς μηχανὰς τῇ ὑστεραίᾳ τῶν μὲν τειχῶν τι εὐμαρῶς κατέσεισε, βιαζομέ- νους δὲ ταύτῃ τοὺς Μακεδόνας ἢ παρέρρηκτο τοῦ τείχους οὐκ ἀτόλμως οἱ Ἰνδοὶ ἡμύνοντο, ὥστε ταύτῃ μὲν τῇ ἡμέρᾳ ἀνεκαλέσατο τὴν στρατιάν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 26, section 5, line 9

τῇ δὲ ὑστεραίᾳ τῶν τε Μακεδόνων αὐτῶν ἢ προσβολὴ καρτερωτέρα ἐγίγνετο καὶ πύργος ἐπήχθη ξύλινος τοῖς τείχεσιν, ὅθεν ἐκ- τοξεύοντες οἱ τοξόται καὶ βέλη ἀπὸ μηχανῶν ἀφίεμένα ἀνέστελλεν ἐπὶ πολὺ τοὺς Ἰνδοὺς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 27, section 2, line 1

Καὶ οἱ Ἰνδοί, ἕως μὲν αὐτοῖς ὁ ἡγεμὼν τοῦ χωρίου περιῆν, ἀπεμάχοντο καρτερῶς· ὥς δὲ βέλει ἀπὸ μηχανῆς τυπεῖς ἀποθνήσκει ἐκεῖνος, αὐτῶν τε οἱ μὲν τινες πεπτωκότες ἐν τῇ ξυνεχεῖ πολιορκίᾳ, οἱ πολλοὶ δὲ τραυματῖαι τε καὶ ἀπόμαχοι ἦσαν, ἐπεκρη- κεύοντο πρὸς Ἀλέξανδρον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 27, section 3, line 3

τῷ δὲ ἀσμένῳ γίνεται ἄνδρας ἀγαθοὺς διασῶσαι· καὶ συμβαίνει ἐπὶ τῷδε Ἀλέξανδρος τοῖς μισθοφόροις Ἰνδοῖς ὡς καταταχθέντας ἐς τὴν ἄλλην στρατιάν ζῆν αὐτῷ στρατεύεσθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 27, section 3, line 9

νυκτὸς δὲ ἐπενόουν δρασμῶ διαχρησάμενοι ἐς τὰ σφέτερα ἦθη ἀπαναστῆναι οὐκ ἐθέλοντες ἐναντία αἵρεσθαι τοῖς ἄλλοις Ἰνδοῖς ὅπλα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 27, section 4, line 3

καὶ ταῦτα ὡς ἐξηγγέλθη Ἀλέξανδρῳ, περιστήσας τῆς νυκτὸς τῷ γηλόφῳ τὴν στρατιάν παῖσαν κατα- κόπτει τοὺς Ἰνδοὺς ἐν μέσῳ ἀπολαβόν, τὴν τε πόλιν αἶρεῖ κατὰ κράτος ἐρημω- θεῖσαν τῶν προμαχομένων, καὶ τὴν μητέρα τὴν Ἀσσακάνου καὶ τὴν παῖδα ἔλαβεν.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 28, section 2, line 1

εἰ μὲν δὴ καὶ ἐς Ἰνδοὺς ἀφίκετο ὁ Ἡρακλῆς ὁ Θηβαῖος ἢ ὁ Τύριος ἢ ὁ Αἰγύπτιος ἐς οὐδέτερα ἔχω ἰσχυρίσασθαι· μᾶλλον δὲ δοκῶ ὅτι οὐκ ἀφίκετο, ἀλλὰ πάντα γὰρ ὅσα χαλεπὰ οἱ ἄνθρωποι ἐς τοσόνδε ἄρα αὖξουσιν αὐτῶν τὴν χαλεπότητα, ὥς καὶ τῷ Ἡρακλεῖ ἂν ἄπορα γενέσθαι μυθεύειν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 28, section 5, line 4

καὶ οἱ ἀμφὶ Ἡρασιώνᾳ τε καὶ Περδίκκᾳ αὐτῷ ἄλλην πόλιν ἐκτειχίσαντες, Ὀροβάτις ὄνομα τῇ πόλει ἦν, καὶ Φρουρὰν καταλιπόντες ὥς ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ἦσαν· ὥς δὲ ἀφίκοντο, ἔπρασσον ἤδη ὅσα ἐς τὸ ζεῦξαι τὸν Ἰνδὸν ὑπὸ Ἀλεξάνδρου ἐτέτακτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 28, section 6, line 2

Ἀλέξανδρος δὲ τῆς μὲν χώρας τῆς ἐπὶ τάδε τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ σατράπην κατέστησε Νικάνορα τῶν ἐταίρων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 28, section 6, line 3

αὐτὸς δὲ τὰ μὲν πρῶτα ὥς ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ἦγε, καὶ πόλιν τε Πευκελαῶτιν οὐ πόρρω τοῦ Ἰνδοῦ ὠκισμένην ὁμολογία παρεστήσατο καὶ ἐν αὐτῇ Φρουρὰν καταστήσας τῶν Μακεδόνων καὶ Φίλιππον ἐπὶ τῇ Φρουρᾷ ἡγεμόνα, ὁ δὲ καὶ ἄλλα προσηγάγετο μικρὰ πολίσματα πρὸς τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ ὠκισμένα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 29, section 3, line 5

ὥς δὲ Ἀλεξάνδρῳ ἄπορον τὴν προσβολὴν κατέμαθον οἱ βάρβαροι, ἀναστρέψαντες τοῖς ἀμφὶ Πτολεμαῖον αὐτοὶ προσέβαλλον· καὶ γίγνεται αὐτῶν τε καὶ τῶν Μακεδόνων μάχη καρτερά, τῶν μὲν διασπάσαι τὸν χάρακα σπουδὴν ποιουμένων, τῶν Ἰνδῶν, Πτολεμαίου δὲ διαφυλάξαι τὸ χωρίον· καὶ μείον σχόντες οἱ βάρβαροι ἐν τῷ ἀκροβολισμῷ νυκτὸς ἐπιγενομένης ἀπ-εχώρησαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 29, section 4, line 1

Ἀλέξανδρος δὲ τῶν Ἰνδῶν τινὰ τῶν αὐτομόλων πιστὸν τε ἄλλως καὶ τῶν χωρίων δαήμονα ἐπιλέξας· μενος πέμπει παρὰ Πτολεμαῖον τῆς νυκτὸς, γράμματα φέροντα τὸν Ἰνδόν, ἵνα ἐνεγέγραπτο, ἐπειδὴ αὐτὸς προσβάλλῃ τῇ πέτρᾳ, τὸν δὲ ἐπιέναι τοῖς βαρβαροῖς κατὰ τὸ ὅρος μηδὲ ἀγαπᾶν ἐν φυλακῇ ἔχοντα τὸ χωρίον, ὥς ἀμφοτέρωθεν βαλλομένους τοὺς Ἰνδοὺς ἀμφιβόλους γίγνεσθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 29, section 6, line 2

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

ἔσπε μὲν γὰρ ἐπὶ μεσημβρίαν ξυνειστήκει καρτερὰ μάχη τοῖς τε Ἰνδοῖς καὶ τοῖς Μακεδόσιν, τῶν μὲν ἐκβιαζομένων ἐς τὴν πρόσβασιν, τῶν δὲ βαλλόντων ἀνιόντας· ὥς δὲ οὐκ ἀνέεσαν οἱ Μακεδόνες, ἄλλοι ἐπ' ἄλλοις ἐπιόντες, οἱ δὲ πρόσθεν ἀναπαυόμενοι, μόγις δὴ ἀμφὶ δέϊλῃν ἐκράτησαν τῆς παρόδου καὶ ξυνέμιζαν τοῖς ξὺν Πτολεμαίῳ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 1, line 3

ἐς δὲ τὴν ὑστεραίαν οἱ τε σφεν- δονῆται σφενδονῶντες ἐς τοὺς Ἰνδοὺς ἐκ τοῦ ἤδη κεχωσμένου καὶ ἀπὸ τῶν μηχανῶν βέλη ἀφιέμενα ἀνέστελλε τῶν Ἰνδῶν τὰς ἐκδρομὰς τὰς ἐπὶ τοὺς χωννύοντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 2, line 1

Οἱ δὲ Ἰνδοὶ πρὸς τε τὴν ἀδιήγητον τόλμαν τῶν ἐς τὸν γήλοφον βιασαμένων Μακεδόνων ἐκπλαγέντες καὶ τὸ χῶμα ξυνάπτον ἤδη ὄρωντες, τοῦ μὲν ἀπο- μάχεσθαι ἔτι ἀπείχοντο, πέμψαντες δὲ κήρυκας σφῶν παρὰ Ἀλέξανδρον ἐθέλειν ἔφασκον ἐνδοῦναι τὴν πέτραν, εἰ σφισι σπένδοιτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 4, line 8

εἵχετό τε Ἀλέξανδρῳ ἡ πέτρα ἡ τῷ Ἡρακλεῖ ἄπορος γενομένη καὶ ἔθνευ ἐπ' αὐτῇ Ἀλέξανδρος καὶ κατεσκεύασε φρούριον, παραδούς Σισικόττῳ ἐπιμελεῖσθαι τῆς φρουρᾶς, ὃς ἐξ Ἰνδῶν μὲν πάλαι νητομολήκει ἐς Βάκτρα παρὰ Βῆσσον, Ἀλέξ- ἀνδρου δὲ κατασχόντος τὴν χώραν τὴν Βακτρίαν ξυνεστράτευνε τε αὐτῷ καὶ πιστὸς ἐς τὰ μάλιστα ἐφαίνετο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 7, line 1

Αὐτὸς δὲ ὥς ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ἦδη ἦγε, καὶ ἡ στρατιὰ αὐτῷ ὠδοποίει τὸ πρόσω ἰοῦσα ἄπορα ἄλλως ὄντα τὰ ταύτῃ χωρία.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 7, line 5

ἐνταῦθα ξυλλαμβάνει ὀλίγους τῶν βαρβάρων, καὶ παρὰ τούτων ἔμαθεν, ὅτι οἱ μὲν ἐν τῇ χώρᾳ Ἰνδοὶ παρὰ Ἀβισάρῃ ἀποπεφευγότες εἶεν, τοὺς δὲ ἐλέφαντας ὅτι αὐτοῦ κατέλιπον νέμεσθαι πρὸς τῷ ποταμῷ τῷ Ἰνδῷ· καὶ τούτους ἡγήσασθαι οἱ τὴν ὁδὸν ἐκέλευσεν ὥς ἐπὶ τοὺς ἐλέφαντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 8, line 2

εἰσὶ δὲ Ἰνδῶν πολλοὶ κυνηγέται τῶν ἐλεφάντων, καὶ τούτους σπουδῇ ἀμφ' αὐτὸν εἶχεν Ἀλέξανδρος, καὶ τότε ἐθήρα ξὺν τούτοις τοὺς ἐλέφαντας· καὶ δύο μὲν αὐτῶν ἀπόλλυνται κατὰ κρημνοῦ σφᾶς ῥίψαντες ἐν τῇ διώξει, οἱ δὲ ἄλλοι ξυλληφθέντες ἔφερόν τε τοὺς ἀμβάτας καὶ τῇ στρατιᾷ ξυνετάσσοντο.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 4, chapter 30, section 9, line 4

καὶ αὐταὶ κατὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν ἤγοντο ὡς ἐπὶ τὴν γέφυραν, ἦντινα Ἡφαιστίων καὶ Περδίκκας αὐτῶ ἐξ- ωκοδομηκότες πάλαι ἦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 1, line 2
ARPIANOT AΛEΞANΔPOY ANABASEΩS BIBAIION ΠEMITTON

Ἐν δὲ τῇ χώρᾳ ταύτῃ, ἦντινα μεταξύ τοῦ τε Κωφῆνος καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἐπῆλθεν Ἀλέξαν- δρος, καὶ Νῦσαν πόλιν ὤκισθαι λέγουσι· τὸ δὲ κτίσμα εἶναι Διονύσου· Διόνυσον δὲ κτίσαι τὴν Νῦσαν ἐπεὶ τε Ἰνδοὺς ἐχειρώσατο, ὅστις δὴ οὗτος ὁ Διόνυσος καὶ ὁπότε ἢ ὅθεν ἐπ' Ἰνδοὺς ἐστράτευσεν· οὐ γὰρ ἔχω συμβαλεῖν εἰ ὁ Θηβαῖος Διόνυσος [ὅς] ἐκ Θηβῶν ἢ ἐκ Τρωάλου τοῦ Λυδίου ὁρμηθεὶς ἐπὶ Ἰνδοὺς ἦκε στρατιὰν ἄγων, τοσαῦτα μὲν ἔθνη μάχῃ καὶ ἄγνωστα τοῖς τότε Ἑλλήσιν ἐπελθόν, οὐδὲν δὲ αὐτῶν ἄλλο ὅτι μὴ τὸ Ἰνδῶν βία χειρωσάμενος· πλὴν γε δὴ ὅτι οὐκ

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 2, line 3
AΛEΞANΔPOY ANABASEΩS BIBAIION ΠEMITTON

Ἐν δὲ τῇ χώρᾳ ταύτῃ, ἦντινα μεταξύ τοῦ τε Κωφῆνος καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἐπῆλθεν Ἀλέξαν- δρος, καὶ Νῦσαν πόλιν ὤκισθαι λέγουσι· τὸ δὲ κτίσμα εἶναι Διονύσου· Διόνυσον δὲ κτίσαι τὴν Νῦσαν ἐπεὶ τε Ἰνδοὺς ἐχειρώσατο, ὅστις δὴ οὗτος ὁ Διόνυσος καὶ ὁπότε ἢ ὅθεν ἐπ' Ἰνδοὺς ἐστράτευσεν· οὐ γὰρ ἔχω συμβαλεῖν εἰ ὁ Θηβαῖος Διόνυσος [ὅς] ἐκ Θηβῶν ἢ ἐκ Τρωάλου τοῦ Λυδίου ὁρμηθεὶς ἐπὶ Ἰνδοὺς ἦκε στρατιὰν ἄγων, τοσαῦτα μὲν ἔθνη μάχῃ καὶ ἄγνωστα τοῖς τότε Ἑλλήσιν ἐπελθόν, οὐδὲν δὲ αὐτῶν ἄλλο ὅτι μὴ τὸ Ἰνδῶν βία χειρωσάμενος· πλὴν γε δὴ ὅτι οὐκ ἀκριβῆ ἐξεταστὴν χρὴ εἶναι τῶν ὑπὲρ τοῦ θείου ἐκ παλαιοῦ μεμυθυμένων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 2, line 6

Κωφῆνος καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἐπῆλθεν Ἀλέξαν- δρος, καὶ Νῦσαν πόλιν ὤκισθαι λέγουσι· τὸ δὲ κτίσμα εἶναι Διονύσου· Διόνυσον δὲ κτίσαι τὴν Νῦσαν ἐπεὶ τε Ἰνδοὺς ἐχειρώσατο, ὅστις δὴ οὗτος ὁ Διόνυσος καὶ ὁπότε ἢ ὅθεν ἐπ' Ἰνδοὺς ἐστράτευσεν· οὐ γὰρ ἔχω συμβαλεῖν εἰ ὁ Θηβαῖος Διόνυσος [ὅς] ἐκ Θηβῶν ἢ ἐκ Τρωάλου τοῦ Λυδίου ὁρμηθεὶς ἐπὶ Ἰνδοὺς ἦκε στρατιὰν ἄγων, τοσαῦτα μὲν ἔθνη μάχῃ καὶ ἄγνωστα τοῖς τότε Ἑλλήσιν ἐπελθόν, οὐδὲν δὲ αὐτῶν ἄλλο ὅτι μὴ τὸ Ἰνδῶν βία χειρωσάμενος· πλὴν γε δὴ ὅτι οὐκ ἀκριβῆ ἐξεταστὴν χρὴ εἶναι τῶν ὑπὲρ τοῦ θείου ἐκ παλαιοῦ μεμυθυμένων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 5, line 3

Διόνυσος γὰρ ἐπειδὴ χειρωσάμενος τὸ Ἰνδῶν ἔθνος ἐπὶ θάλασσαν ὀπίσω κατήει τὴν Ἑλλη- νικήν, ἐκ τῶν ἀπο- μάχων στρατιωτῶν, οἳ δὴ αὐτῶ καὶ βάκχοι ἦσαν, κτίζει τὴν πόλιν τήνδε μνημόσυνον τῆς αὐτοῦ πλάνης τε καὶ νίκης τοῖς ἔπειτα ἐσόμενον, καθάπερ οὖν καὶ σὺ αὐτὸς Ἀλεξάνδρειάν τε ἐκτίσας τὴν πρὸς Καυκάσῳ ὄρει καὶ ἄλλην Ἀλεξάνδρειαν ἐν τῇ Αἰγυπτίῳ γῇ, καὶ ἄλλας πολλὰς τὰς μὲν ἐκτικας ἤδη, τὰς δὲ καὶ κτίσεις ἀνὰ χρόνον, οἷα δὴ πλείονα Διονύσου ἔργα ἀποδείξάμενος.

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 1, section 6, line 9
καὶ ἐκ τούτου ἔλευ- θέραν τε οἰκοῦμεν τὴν Νῦσαν καὶ αὐτοὶ αὐτόνομοι καὶ ἐν κόσμῳ
πολιτεύοντες· τῆς δὲ ἐκ Διονύσου οἰκίσεως καὶ τῷδε σοι γενέσθω τεκμήριον· κίττος γὰρ οὐκ
ἄλλη τῆς Ἰνδῶν γῆς φυόμενος παρ' ἡμῖν φύεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 2, section 6, line 3
καὶ τοὺς Μακεδόνας ἡδέως τὸν κισσὸν ἰδόντας, οἷα δὲ διὰ μακροῦ ὀφθέντα (οὐ γὰρ εἶναι
ἐν τῇ Ἰνδῶν χώρα κισσόν, οὐδὲ ἵνα περ αὐτοῖς ἄμπελοι ἦσαν) στεφάνους σπουδῇ ἀπ' αὐτοῦ
ποιεῖσθαι, ὥς καὶ στεφανώσασθαι εἶχον, ἐφυμνοῦντας τὸν Διόνυσόν τε καὶ τὰς ἐπωνυμίας τοῦ
θεοῦ ἀνα- καλοῦντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 3, section 3, line 3
τὸν δὲ Καύκασον τὸ ὅρος ἐκ τοῦ Πόντου ἐς τὰ πρὸς ἑω μέρη τῆς γῆς καὶ τὴν Παραπα-
μισαδῶν χώραν ὥς ἐπὶ Ἰνδοὺς μετὰγειν τῷ λόγῳ τοὺς Μακε- δόνας, Παραπάμισον ὄντα τὸ
ὅρος αὐτοὺς καλοῦντας Καύκασον τῆς Ἀλεξάνδρου ἕνεκα δόξης, ὥς ὑπὲρ τὸν Καύκασον ἄρα
ἐλθόντα Ἀλέξανδρον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 3, section 4, line 2
ἐν τε αὐτῇ τῇ Ἰνδῶν γῇ βοῦς ἰδόντας ἐγκεκαυμένας ῥόπαλον τεκ- μηριουῖσθαι ἐπὶ τῷδε,
ὅτι Ἡρακλῆς ἐς Ἰνδοὺς ἀφίκετο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 3, section 5, line 1
Ἀλέξανδρος δὲ ὥς ἀφίκετο ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμόν, καταλαμβάνει γέφυρὰν τε ἐπ' αὐτῷ
πεποιημένην πρὸς Ἡφαιστίωνος καὶ πλοῖα πολλὰ μὲν σμικρότερα, δύο δὲ τριακοντόρους, καὶ
παρὰ Ταξίλου τοῦ Ἰνδοῦ δῶρα ἦκοντα ἀργυρίου μὲν τάλαντα ἐς διακόσια, ἱερεῖα δὲ βοῦς μὲν
τρισχιλίας, πρόβατα δὲ ὑπὲρ μύρια, ἐλέφαν- τας δὲ ἐς τριάκοντα· καὶ ἵπποις δὲ ἑπτακόσιοι
αὐτῷ Ἰνδῶν ἐς ξυμμαχίαν παρὰ Ταξίλου ἦκον· καὶ τὴν πόλιν Τάξιλα, τὴν μεγίστην μεταξὺ
Ἰνδοῦ τε ποταμοῦ καὶ Ὑδάσπου, ὅτι αὐτῷ Ταξίλης ἐνδίδωσιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 1, line 1
Ὁ δὲ Ἰνδὸς ποταμὸς ὅτι μέγιστος ποταμῶν ἐστὶ τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν τε καὶ τὴν Εὐρώπην,
πλὴν Γάγγου, καὶ τούτου Ἰνδοῦ ποταμοῦ, καὶ ὅτι αἱ πηγαὶ εἰσὶν αὐτῷ ἐπὶ τὰδε τοῦ ὄρους τοῦ
Παραπαμίσου ἢ Καυκάσου, καὶ ὅτι ἐκδίδωσιν ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν τὴν κατὰ Ἰνδοὺς ὥς
ἐπὶ νότον ἄνεμον, καὶ ὅτι δίστομός ἐστιν ὁ Ἰνδὸς καὶ αἱ ἐκβολαὶ αὐτοῦ ἀμφοτέραι τεναγώδεις,
καθάπερ αἱ πέντε τοῦ Ἰστροῦ, καὶ ὅτι Δέλτα ποιεῖ καὶ αὐτὸς ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ τῷ Αἰγυπτίῳ
Δέλτα παραπλήσιον καὶ τοῦτο Πάταλα καλεῖται τῇ

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 1, line 11
τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν τε καὶ τὴν Εὐρώπην, πλὴν Γάγγου, καὶ τούτου Ἰνδοῦ ποταμοῦ, καὶ
ὅτι αἱ πηγαὶ εἰσὶν αὐτῷ ἐπὶ τὰδε τοῦ ὄρους τοῦ Παραπαμίσου ἢ Καυκάσου, καὶ ὅτι ἐκδίδωσιν
ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν τὴν κατὰ Ἰνδοὺς ὥς ἐπὶ νότον ἄνεμον, καὶ ὅτι δίστομός ἐστιν ὁ
Ἰνδὸς καὶ αἱ ἐκβολαὶ αὐτοῦ ἀμφοτέραι τεναγώδεις, καθάπερ αἱ πέντε τοῦ Ἰστροῦ, καὶ ὅτι
Δέλτα ποιεῖ καὶ αὐτὸς ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ τῷ Αἰγυπτίῳ Δέλτα παραπλήσιον καὶ τοῦτο Πάταλα

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

καλεῖται τῇ Ἰνδῶν φωνῇ, ταῦτα μὲν ὑπὲρ τοῦ Ἰνδοῦ τὰ μάλιστα οὐκ ἀμφίλογα καὶ ἐμοὶ ἀναγεγράφθω.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 2, line 3
ἐπεὶ καὶ ὁ Ὑδάσπης καὶ Ἀκεσίνης καὶ Ὑδραώτης καὶ Ὑφασις, καὶ οὗτοι Ἰνδοὶ ποταμοὶ ὄντες, τῶν μὲν ἄλλων τῶν Ἀσιανῶν ποταμῶν πολὺ τι κατὰ μέγεθος ὑπερφέρουσι, τοῦ Ἰνδοῦ δὲ μείονες εἰσιν καὶ πολὺ δὴ μείονες, ὅπου καὶ αὐτὸς ὁ Ἰνδὸς τοῦ Γάγγου.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 2, line 8
Κτησίας μὲν δὴ, εἰ δὴ τῷ ἱκανὸς καὶ Κτησίας ἐς τεκμηρίωσιν, ἵνα μὲν στενότατος αὐτὸς αὐτοῦ ὁ Ἰνδὸς ἐστί, τεσσαράκοντα σταδίους <λέγει> ὅτι διέχουσιν αὐτῷ αἱ ὄχθαι, ἵνα δὲ πλατύτατος, καὶ ἑκατόν· τὸ πολὺ δὲ εἶναι αὐτοῦ τὸ μέσον τούτοις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 3, line 1
Τούτων τὸν ποταμὸν τὸν Ἰνδὸν ὑπὸ τὴν ἑω διέβαινε ξὺν τῇ στρατιᾷ Ἀλέξανδρος ἐς τῶν Ἰνδῶν τὴν γῆν· ὑπὲρ ὧν ἐγὼ οὔτε οἴσισι νόμοις διαχωρῶνται ἐν τῇδε τῇ συγγραφῇ ἀνεγγραφα, οὔτε ζῶα εἰ δὴ τινα ἄτοπα ἢ χώρα αὐτοῖς ἐκφέρει, οὔτε ἰχθύας ἢ κήτη ὅσα ἢ οἶα ὁ Ἰνδὸς ἢ ὁ Ὑδάσπης ἢ ὁ Γάγγης ἢ οἱ ἄλλοι Ἰνδῶν ποταμοὶ φέρουσιν, οὐδὲ τοὺς μύρμηκας τοὺς τὸν χρυσὸν σφισιν ἐργαζομένους, οὐδὲ τοὺς γρυῦπας τοὺς φύλακας, οὐδὲ ὅσα ἄλλα ἐφ' ἡδονῇ μᾶλλον τι πεποιήται ἢ ἐς ἀφήγησιν τῶν ὄντων, ὡς τά γε κατ'

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 4, line 4
ἀλλὰ Ἀλέξανδρος γὰρ καὶ οἱ ξὺν τούτῳ στρατεύσαντες τὰ πολλὰ ἐξήλεγξαν, ὅσα γε μὴ καὶ αὐτῶν ἔστιν οἱ ἐφεύσαντο· ἀχρύσους τε εἶναι Ἰνδοὺς ἐξήλεγξαν, ὅσους γε δὴ Ἀλέξανδρος ξὺν τῇ στρατιᾷ ἐπῆλθε, πολλοὺς δὲ ἐπῆλθε, καὶ ἥκιστα χλιδῶντας κατὰ τὴν δίαίταν, ἀλλὰ μεγάλους μὲν τὰ σώματα, οἷους μεγίστους τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν, πεντα- πῆχεις τοὺς πολλοὺς ἢ ὀλίγον ἀποδέοντας, καὶ μελαν- τέρους τῶν ἄλλων ἀνθρώπων, πλὴν Αἰθίοπων, καὶ τὰ πολέμια πολὺ τι γενναιοτάτους τῶν γε δὴ τότε ἐποίκων τῆς Ἀσίας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 4, section 5, line 5
τὸ γὰρ Περσῶν τῶν πάλαι, ξὺν οἷς ὀρμηθεὶς Κῦρος ὁ Καμβύσου Μήδους τε τὴν ἀρχὴν τῆς Ἀσίας ἀφείλετο καὶ ἄλλα ἔθνη τὰ μὲν κατεστρέφατο, τὰ δὲ προσχωρήσαντά οἱ ἐκόντα κατέσχευε, οὐκ ἔχω ἀτρεκῶς ὥς γε δὴ πρὸς τὰ Ἰνδῶν ξυμβαλεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 5, section 1, line 1
Ἀλλὰ ὑπὲρ Ἰνδῶν ἰδίᾳ μοι γεγράφεται ὅσα πιστό- τατα ἐς ἀφήγησιν οἱ τε ξὺν Ἀλεξάνδρῳ στρατεύσαντες καὶ ὁ ἐκπεριπλεύσας τῆς μεγάλης θαλάσσης τὸ κατ' Ἰνδοὺς Νέαρχος, ἐπὶ δὲ ὅσα Μεγασθένης τε καὶ Ἑρατοσθένης, δοκίμῳ ἄνδρῳ, ξυνεγραψάτην, καὶ νόμιμα ἅττα Ἰνδοῖς ἐστί καὶ εἰ δὴ τινα ἄτοπα ζῶα αὐτόθι φύεται καὶ τὸν παράπλου αὐτὸν τῆς ἑξω θαλάσσης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 5, section 4, line 2
ὁ δὲ Καύκασον ἐκάλουν οἱ Ἀλεξάνδρῳ ξυστρατεύσαντες Μακεδόνες, ὡς μὲν λέγεται τὰ Ἀλεξάνδρου αὖξοντες, ὅτι δὴ καὶ ἐπέκεινα ἄρα τοῦ Καυκάσου κρατῶν τοῖς ὅπλοις ἦλθεν Ἀλέξανδρος· τυχόν δὲ καὶ ξυνεχῆς τυγχάνει ὃν τοῦτο τὸ ὄρος τῷ ἄλλῳ τῷ Σκυθικῷ Καυκάσῳ, καθάπερ οὖν αὐτῷ τούτῳ ὁ Ταῦρος· καὶ ἐμοὶ αὐτῷ πρότερόν ποτε ἐπὶ τῷδε λέλεκται Καύκα-

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

σος τὸ ὄρος τοῦτο καὶ ὕστερον τῷδε τῷ ὀνόματι κλη- θήσεται· τὸν δὲ Καύκασον τοῦτον καθήκειν ἔστε ἐπὶ <τὴν> μεγάλην τὴν πρὸς ἑω τε καὶ Ἰνδοὺς θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 5, section 5, line 2

τοὺς οὖν ποταμούς, ὅσοι κατὰ τὴν Ἀσίαν λόγου ἄξιοι, ἐκ τοῦ Ταύρου τε καὶ τοῦ Καυκάσου ἀνίσχοντες τοὺς μὲν ὡς ἐπ' ἄρκτον τετραμμένον ἔχειν τὸ ὕδωρ, καὶ τούτων τοὺς μὲν ἐς τὴν λίμνην ἐκδιδόναι τὴν Μαιῶτιν, τοὺς δὲ ἐς τὴν Ἰρκανίαν καλουμένην θάλασσαν, καὶ ταύτην κόλπον οὖσαν τῆς μεγάλης θαλάσσης, τοὺς δὲ ὡς ἐπὶ νότον ἄνεμον τὸν Εὐφράτην τε εἶναι καὶ τὸν Τίγρητα καὶ τὸν Ἰνδόν τε καὶ τὸν Ὑδάσπην καὶ Ἀχεσίην καὶ Ὑδραώτην καὶ Ὑφασιν καὶ ὅσοι ἐν μέσῳ τούτων τε καὶ τοῦ Γάγγου ποταμοῦ ἐς θάλασσαν καὶ οὗτοι ἐσβάλλουσιν ἢ εἰς τενάγην ἀναχε- ὀμενοι ἀφανίζονται, καθάπερ ὁ Εὐφράτης ποταμὸς ἀφανίζεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 2, line 3

τῆς δὲ ὡς ἐπὶ νότον Ἀσίας τετραχῇ αὖ τεμνομένης μεγίστην μὲν μοῖραν τὴν Ἰνδῶν γῆν ποιεῖ Ἐρατοσθένους τε καὶ Μεγασθένης, ὃς ξυνήν μὲν Σιβυρτίῳ τῷ σατράπῃ τῆς Ἀραχωσίας, πολλάκις δὲ λέγει ἀφικέσθαι παρὰ Σανδράκοττον τὸν Ἰνδῶν βασιλέα, ἐλαχίστην δὲ ὅσπην ὁ Εὐφράτης ποταμὸς ἀπείργει ὡς πρὸς τὴν ἐντὸς τὴν ἡμετέραν θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 2, line 9

δύο δὲ αἱ μεταξὺ Εὐφράτου τε ποταμοῦ καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἀπειργόμεναι αἱ δύο ξυντεθεῖσαι μόλις ἄξιαι τῇ Ἰνδῶν γῇ ξυμβαλεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 3, line 2

ἀπείργεσθαι δὲ τὴν Ἰνδῶν χώραν πρὸς μὲν ἑω τε καὶ ἀπηνιότῃν ἄνεμον ἔστε ἐπὶ μεσημ- βρίαν τῇ μεγάλῃ θαλάσσει· τὸ πρὸς βορρᾶν δὲ αὐτῆς ἀπείργειν τὸν Καύκασον τὸ ὄρος ἔστε ἐπὶ τοῦ Ταύρου τὴν ξυμβολήν· τὴν δὲ ὡς πρὸς ἐσπέραν τε καὶ ἄνεμον Ἰάπυγα ἔστε ἐπὶ τὴν μεγάλην θάλασσαν ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς ἀποτεμένεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 6, line 6

εἰ δὴ οὖν εἰς τε ποταμὸς παρ' ἐκάστοις καὶ οὐ μεγάλοι οὗτοι ποταμοὶ ἱκανοὶ γῆν πολλὴν ποιῆσαι ἐς θάλασσαν προχεόμενοι, ὅποτε ἰλὺν καταφέροιεν καὶ πηλὸν ἐκ τῶν ἄνω τόπων ἐν- θενπερ αὐτοῖς αἱ πηγαὶ εἰσιν, οὐδὲ ὑπὲρ τῆς Ἰνδῶν ἄρα χώρας ἐς ἀπιστίαν ἰέναι ἄξιον, ὅπως πεδίον τε ἢ πολλὴ ἐστὶ καὶ ἐκ τῶν ποταμῶν τὸ πεδίον ἔχει προσκεχωσμένον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 7, line 4

Ἑρμον μὲν γὰρ καὶ Κάϋστρον καὶ Κάϊκόν τε καὶ Μαίανδρον ἢ ὅσοι πολλοὶ ποταμοὶ τῆς Ἀσίας ἐς τήνδε τὴν ἐντὸς θάλασσαν ἐκδιδοῦσιν οὐδὲ σύμπαντας ξυντεθέντας ἐνὶ τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν ἄξιον ξυμβαλεῖν πλήθους ἕνεκα τοῦ ὕδατος, μὴ ὅτι τῷ Γάγγῃ τῷ μεγίστῳ, ὅτῳ οὔτε <τὸ> τοῦ Νείλου ὕδωρ τοῦ Αἰγυπτίου οὔτε ὁ Ἰστρος ὁ κατὰ τὴν Εὐρώπην ῥέων ἄξιοι ξυμβαλεῖν, ἀλλ' οὐδὲ τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ ἐκεῖνοί γε πάντες ξυμμιχθέντες ἐς ἴσον ἔρχονται, ὃς μέγας τε εὐθύς ἀπὸ τῶν πηγῶν ἀνίσχει καὶ πεντε- καίδεκα ποταμοὺς πάντας τῶν Ἀσιανῶν μείζοντας παρα- λαβὼν καὶ τῇ ἐπωνυμίᾳ κρατήσας οὕτως ἐκδιδοῖ ἐς θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 6, section 8, line 6

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ταῦτά μοι ἐν τῷ παρόντι περὶ Ἰνδῶν τῆς χώρας λελέχθω· τὰ δὲ ἄλλα ἀποκείσθω ἐς τὴν Ἰνδικὴν ζυγγραφὴν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 7, section 1, line 1

Τὸ δὲ ζεύγμα τὸ ἐπὶ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ὅπως μὲν ἐποιήθη Ἀλέξανδρῳ οὔτε Ἀριστόβουλος οὔτε Πτολεμαῖος, οἷς μάλιστα ἐγὼ ἔπομαι, λέγουσιν· οὐδὲ αὐτὸς ἔχω ἀτρεκῶς εἰκάσαι, πότερα πλοίοις ἐξεύχθη ὁ πόρος, καθάπερ οὖν ὁ Ἑλλησποντός τε πρὸς Ξέρξου καὶ ὁ Βόσπορος τε καὶ ὁ Ἰστρος πρὸς Δαρείου, ἢ γέφυρα κατὰ τοῦ ποταμοῦ διηνεκῆς ἐποιήθη αὐτῷ· δοκεῖ δ' ἔμοιγε πλοίοις μᾶλλον ζευχθῆναι· οὐ γὰρ ἂν δέξασθαι γέφυραν τὸ βάθος τοῦ ὕδατος, οὐδ' ἂν ἐν τοσῶδε χρόνῳ ἔργον οὕτως ἄτοπον ζυντελεσθῆναι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 1, line 2

Ῥωμαῖοις μὲν δὴ οὕτω ταῦτα ἐκ παλαιοῦ ἐπῆσκηται· Ἀλέξανδρῳ δὲ ὅπως ἐξεύχθη ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς οὐκ ἔχω εἰπεῖν, ὅτι μηδὲ οἱ συστρατεύσαντες αὐτῷ εἶπον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 2, line 2

ὡς δὲ διέβη πέραν τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ, καὶ ἐνταῦθα αὐτῷ θύει κατὰ νόμον Ἀλέξανδρος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 2, line 3

ἄρας δὲ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ ἐς Τάξιλα ἀφίκετο, πόλιν μεγάλην καὶ εὐδαίμονα, τὴν μεγίστην τῶν μεταξὺ Ἰνδοῦ τε ποταμοῦ καὶ Ὑδάσπου.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 2, line 7

καὶ ἐδέχετο αὐτὸν Ταξίλης ὁ ὑπαρχος τῆς πόλεως καὶ αὐτοὶ οἱ τῆδε Ἰνδοὶ φιλίως.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 3, line 3

ἦκον δὲ ἐνταῦθα παρ' αὐτὸν καὶ παρὰ Ἀβισάρου πρέσβεις τοῦ τῶν ὀρείων Ἰνδῶν βασιλέως ὅτε ἀδελφὸς τοῦ Ἀβισάρου καὶ ἄλλοι ζύν αὐτῷ οἱ δοκιμώτατοι, καὶ παρὰ Δοξάρεως νομάρχου ἄλλοι, δῶρα φέροντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 3, line 8

καὶ ἀποδείξας σατράπην τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν Φίλιππον τὸν Μαχάτα φρουρὰν τε ἀπολείπει ἐν Ταξίλοις καὶ τοὺς ἀπομάχους τῶν στρατιωτῶν διὰ νόσον· αὐτὸς δὲ ἦγεν ὡς ἐπὶ τὸν Ὑδάσπην ποταμόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 4, line 5

ταῦτα ὡς ἔγνω Ἀλέξανδρος, Κοῖνον μὲν τὸν Πολεμοκράτους πέμψας ὀπίσω ἐπὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμόν τὰ πλοῖα ὅσα παρ' εσκεύαστο αὐτῷ ἐπὶ τοῦ πόρου τοῦ Ἰνδοῦ ζυντεμόντα κελεύει φέρειν ὡς ἐπὶ τὸν Ὑδάσπην ποταμόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 8, section 5, line 8

αὐτὸς δὲ ἀναλαβὼν ἦν τε δύναμιν ἔχων ἦκεν ἐς Τάξιλα καὶ πεντακισχιλίους τῶν Ἰνδῶν, οὓς Ταξίλης τε καὶ οἱ ταύτῃ ὑπαρχοὶ ἦγον, ἦει ὡς ἐπὶ τὸν Ὑδάσπην ποταμόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 9, section 4, line 2

ἄλλως τε ἐν μὲν τῷ τότε οἱ ποταμοὶ πάντες οἱ Ἰνδικοὶ πολλοῦ τε ὕδατος καὶ θολεροῦ ἔρρεον καὶ ὀξέος τοῦ ξέυματος· ἦν γὰρ ὥρα ἔτους ἢ μετὰ τροπὰς μάλιστα <τάς> ἐν θέρει τρέπεται ὁ ἥλιος· ταύτῃ δὲ τῇ ὥρᾳ ὕδατά τε ἐξ οὐρανοῦ ἀθρόα τε καταφέρεται ἐς τὴν γῆν τὴν Ἰνδικὴν

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

καὶ αἱ χιόνες αἱ τοῦ Καυκάσου, ἔνθεν περ τῶν πολλῶν ποταμῶν αἱ πηγαὶ εἰσι, κατατηκόμεναι αὖξουσιν αὐτοῖς τὸ ὕδωρ ἐπὶ μέγα· χειμῶνος δὲ ἔμπαλιν ἴσχουσιν ὀλίγοι τε γίγνονται καὶ καθαροὶ ἰδεῖν καὶ ἔστιν ὅπου περάσιμοι, πλήν γε δὴ τοῦ

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 9, section 4, line 12

τῷ τότε οἱ ποταμοὶ πάντες οἱ Ἰνδικοὶ πολλοῦ τε ὕδατος καὶ θολεροῦ ἔρρεον καὶ ὀξέος τοῦ ρεύματος· ἦν γὰρ ὥρα ἔτους ἧ μετὰ τροπᾶς μάλιστα <τάς> ἐν θέρει τρέπεται ὁ ἥλιος· ταύτῃ δὲ τῇ ὥρᾳ ὕδατά τε ἐξ οὐρανοῦ ἄθρόα τε καταφέρεται ἐς τὴν γῆν τὴν Ἰνδικὴν καὶ αἱ χιόνες αἱ τοῦ Καυκάσου, ἔνθεν περ τῶν πολλῶν ποταμῶν αἱ πηγαὶ εἰσι, κατατηκόμεναι αὖξουσιν αὐτοῖς τὸ ὕδωρ ἐπὶ μέγα· χειμῶνος δὲ ἔμπαλιν ἴσχουσιν ὀλίγοι τε γίγνονται καὶ καθαροὶ ἰδεῖν καὶ ἔστιν ὅπου περάσιμοι, πλήν γε δὴ τοῦ Ἰνδοῦ καὶ Γάγγου καὶ τυχόν καὶ ἄλλου του· ἀλλ' ὅ γε Ὑδάσπης περατὸς γίνεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 11, section 3, line

8

καὶ Κρατερὸς ὑπελέλειπτο ἐπὶ στρατο- πίδου τὴν τε αὐτοῦ ἔχων ἱππαρχίαν καὶ τοὺς ἐξ Ἀραχωτῶν καὶ Παραπαμισαδῶν ἱππέας καὶ τῆς φάλαγ- γος τῶν Μακεδόνων τὴν τε Ἀλκέτου καὶ τὴν Πολυ- πέρχοντος τάξιν καὶ τοὺς νομάρχας τῶν ἐπὶ τάδε Ἰνδῶν καὶ τοὺς ἅμα τούτοις τοὺς πεντακισχιλίους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 12, section 1, line

7

ἐν μέσῳ δὲ τῆς νήσου τε καὶ τοῦ μεγάλου στρατοπέδου, ἵνα αὐτῷ Κρατερὸς ὑπελέλειπτο, Μελέαγρός τε καὶ Ἄτταλος καὶ Γοργίας ξὺν τοῖς μισθοφόροις ἱππεύσιν τε καὶ πεζοῖς ἐτετάχατο· καὶ τούτοις διαβαίνειν παρηγγέλλετο κατὰ μέρος, διελόντας τὸν στρατόν, ὅποτε ξυνεχομένους ἤδη ἐν τῇ μάχῃ τοὺς Ἰνδοὺς ἴδοιεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 14, section 2, line

6

γνώμην δὲ ἐπεποίητο, ὥς εἰ μὲν προσμύξειαν αὐτῷ οἱ ἀμφὶ τὸν Πῶρον ξὺν τῇ δυνάμει ἀπάσῃ, ἢ κρατήσιν αὐτῶν οὐ χαλεπῶς τῇ ἱππῳ προσβαλὼν ἢ ἀπομαχεῖσθαι γε ἔσται τοὺς πεζοὺς ἐν τῷ ἔργῳ ἐπιγενέσθαι· εἰ δὲ πρὸς τὴν τόλμαν τῆς διαβάσεως ἄτοπον γενομένην οἱ Ἰνδοὶ ἐκπλαγέντες φεύγοιεν, οὐ πόρρωθεν ἔξεσθαι αὐτῶν κατὰ τὴν φυγὴν, ὥς πλείονα ἐν τῇ ἀποχωρήσει τὸν φόνον γενόμενον ὀλίγον ἔτι ὑπολείπεσθαι αὐτῷ τὸ ἔργον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 14, section 3, line

6

Ἀριστόβουλος δὲ λέγει τὸν Πῶρου παῖδα φθάσαι ἀφικόμενον σὺν ἄρμασιν ὥς ἐξήκοντα πρὶν τὸ ὕστε- ρον ἐκ τῆς νήσου τῆς μικρᾶς περᾶσαι Ἀλέξανδρον· καὶ τοῦτον δυνηθῆναι ἂν εἶρξαι Ἀλέξανδρον τῆς διαβάσεως χαλεπῶς καὶ μηδενὸς εἴργοντος περαιω- θέντα, εἴπερ οὖν καταπηδήσαντες οἱ Ἰνδοὶ ἐκ τῶν ἁρμάτων προσέκειντο τοῖς πρώτοις τῶν ἐκβαιόντων· ἀλλὰ παραλλάξαι γὰρ ξὺν τοῖς ἁρμασι καὶ ἀκίνδυνον ποιῆσαι Ἀλεξάνδρῳ τὴν διάβασιν· καὶ ἐπὶ τούτους ἀφεῖναι Ἀλέξανδρον τοὺς ἱπποτοξότας, καὶ τραπῆναι αὐτοὺς οὐ χαλεπῶς, πληγὰς

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

λαμβάνοντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 14, section 4, line 2

οἱ δὲ καὶ μάχην λέγουσιν ἐν τῇ ἐκβάσει γενέσθαι τῶν Ἰνδῶν τῶν ξὺν τῷ παιδὶ τῷ Πῶρου ἀφιγμένων πρὸς Ἀλέξ- ανδρόν τε καὶ τοὺς ξὺν αὐτῷ ἱππέας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 15, section 2, line 1

ὥς δὲ κατέμαθεν ἀτρεκῶς τὸ πλῆθος τὸ τῶν Ἰνδῶν, ἐνταῦθα δὴ ὀξέως ἐπιτεσεῖν αὐτοῖς ξὺν τῇ ἁμφ' αὐτὸν ἵππῳ· τοὺς δὲ ἐγκλῖναι, ὥς Ἀλέξανδρόν τε αὐτὸν κατεῖδον καὶ τὸ στίφος ἁμφ' αὐτὸν τῶν ἱππέων οὐκ ἐπὶ μετώπου, ἀλλὰ κατ' ἴλας ἐμβεβληκός.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 16, section 1, line 2

Ἀλέξανδρος δὲ ὥς ἤδη καθεώρα τοὺς Ἰνδοὺς ἐκτασσομένους, ἐπέστησε τοὺς ἱππέας τοῦ πρόσω, ὡς ἀναλαμβάνειν τῶν πεζῶν τοὺς αἰὲ προσάγοντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 16, section 2, line 1

ὥς δὲ τὴν τάξιν κατεῖδε τῶν Ἰνδῶν, κατὰ μέσον μὲν, ἵνα οἱ ἐλέφαντες προεβέβληντο καὶ πυκνὴ ἢ φάλαγξ κατὰ τὰ διαλείποντα αὐτῶν ἐπετέτακτο, οὐκ ἔγνω προάγειν, αὐτὰ ἐκεῖνα ὀκνήσας ἅπερ ὁ Πῶρος τῷ λογισμῷ ξυθεῖς ταύτη ἔταξεν· ἀλλὰ αὐτὸς μὲν ἅτε ἱπποκρατῶν τὴν πολλὴν τῆς ἵππου ἀναλαβὼν ἐπὶ τὸ εὐώνυμον κέρας τῶν πολεμίων παρήλαυνεν, ὥς ταύτη ἐπιθησόμενος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 16, section 4, line 2

Ἦδη τε ἐντὸς βέλους ἐγίγνετο καὶ ἐφῆκεν ἐπὶ τὸ κέρας τὸ εὐώνυμον τῶν Ἰνδῶν τοὺς ἵππο- τοξότας, ὄντας ἐς χιλίους, ὥς ταράξαι τοὺς ταύτη ἐφεστηκότας τῶν πολεμίων τῇ πυκνότητί τε τῶν τοξευμάτων καὶ τῶν ἵππων τῇ ἐπελάσει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 1, line 1

Ἐν τούτῳ δὲ οἱ τε Ἰνδοὶ τοὺς ἱππέας πάντοθεν ξυναλίσαντες παρίππευον Ἀλεξάνδρῳ ἀντι- παρεξάγοντες τῇ ἐλάσει, καὶ οἱ περὶ Κοῖνον, ὥς παρήγγελτο, κατόπιν αὐτοῖς ἐπεφαίνοντο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 1, line 4

ταῦτα ξυνιδόντες οἱ Ἰνδοὶ ἁμφί- στομον ἠναγκάσθησαν ποιῆσαι τὴν τάξιν τῆς ἵππου, τὴν μὲν ὥς ἐπ' Ἀλέξανδρον τὴν πολλὴν τε καὶ κρατίστην, οἱ δὲ ἐπὶ Κοῖνόν τε καὶ τοὺς ἄμα τούτῳ ἐπέστρεφον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 2, line 2

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

τοῦτό τε οὖν εὐθὺς ἐτάραξε τὰς τάξεις τε καὶ τὰς γνώμας τῶν Ἰνδῶν καὶ Ἀλέξανδρος ἰδὼν τὸν καιρὸν ἐν αὐτῇ τῇ ἐπὶ θάτερα ἐπιστροφῇ τῆς ἵππου ἐπιτίθεται τοῖς καθ' αὐτόν, ὥστε οὐδὲ τὴν ἐμβολὴν ἐδέξαντο τῶν ἀμφ' Ἀλέξανδρον ἱππέων οἱ Ἰνδοί, ἀλλὰ κατη[r]άχθησαν ὥσπερ εἰς τεῖχος τι φίλιον τοὺς ἐλέφαντας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 3, line 9

καὶ ἦν τὸ ἔργον οὐδενὶ τῶν πρόσθεν ἀγώνων ὀικός· τὰ τε γὰρ θηρία ἐπεκθέοντα ἐς τὰς τάξεις τῶν πεζῶν, ὅπῃ ἐπιστρέφειν, ἐκεράϊζε καίπερ πυκνὴν οὔσαν τὴν τῶν Μακεδόνων φάλαγγα, καὶ οἱ ἱππεῖς οἱ τῶν Ἰνδῶν τοῖς πεζοῖς ἰδόντες ξυνεστηκὸς τὸ ἔργον ἐπιστρέψαντες αὐτοῖς καὶ αὐτοὶ ἐπήλαυνον τῇ ἵππῳ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 4, line 7

καὶ ἐν τούτῳ πᾶσα ἡ ἵππος Ἀλέξανδρῳ ἐς μίαν ἵλην ἤδη ξυνηγμένη, οὐκ ἐκ παρα- αγγέ- ματος, ἀλλὰ ἐν τῷ ἀγῶνι αὐτῷ ἐς τήνδε τὴν τάξιν καταστᾶσα, ὅπῃ προσπέσοι τῶν Ἰνδῶν ταῖς τάξεσι, ξὺν πολλῷ φόνῳ ἀπελύοντο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 6, line 7

ἀλλ' οἱ μὲν Μακεδόνες, ἅτε ἐν εὐρυχωρίᾳ τε καὶ κατὰ γνώμην τὴν σφῶν προσφερόμενοι τοῖς θηρίοις, ὅπῃ μὲν ἐπιφέροιντο εἶκον, ἀποστραφέντων δὲ εἶχοντο ἐσακοντίζοντες· οἱ δὲ Ἰνδοὶ ἐν αὐτοῖς ἀναστρεφόμενοι τὰ πλείω ἤδη πρὸς ἐκείνων ἐβλάπτοντο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 17, section 7, line 8

καὶ οὕτως οἱ μὲν ἱππεῖς τῶν Ἰνδῶν πλὴν ὀλίγων κατεκόπησαν ἐν τῷ ἔργῳ· ἐκό- πτοντο δὲ καὶ οἱ πεζοὶ πανταχόθεν ἤδη προσκειμένων σφίσι τῶν Μακεδόνων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 1, line 6

καὶ οὗτοι οὐ μείονα τὸν φόνον ἐν τῇ ἀποχωρήσει τῶν Ἰνδῶν ἐποίησαν, ἀκμηῆτες ἀντὶ κεκμη- κότων τῶν ἀμφ' Ἀλέξανδρον ἐπιγενόμενοι τῇ διώξει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 2, line 1

Ἀπέθανον δὲ τῶν Ἰνδῶν πεζοὶ μὲν ὀλίγον ἀπο- δέοντες τῶν δισμυρίων, ἱππεῖς δὲ ἐς τρισχι- λίους, τὰ δὲ ἄρματα ξύμπαντα κατεκόπη· καὶ Πώρου δύο παῖδες ἀπέθανον καὶ Σπιτάκης ὁ νομάρχης τῶν ταύτη Ἰνδῶν καὶ τῶν ἐλεφάντων καὶ ἁρμάτων οἱ ἡγεμόνες καὶ οἱ ἱππάρχαι καὶ οἱ στρατηγοὶ τῆς στρατιᾶς τῆς Πώρου ξύμπαντες .

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 5, line 1

Πῶρος δὲ μεγάλα ἔργα ἐν τῇ μάχῃ ἀποδείξάμενος μὴ ὅτι στρατηγοῦ, ἀλλὰ καὶ στρα- τιώτου γενναίου, ὥς τῶν τε ἱππέων τὸν φόνον κατεῖδε καὶ τῶν ἐλεφάντων τοὺς μὲν αὐτοῦ

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

πεπτωκότας, τοὺς δὲ ἐρήμους τῶν ἡγεμόνων λυπηροὺς πλανωμένους, τῶν δὲ πεζῶν αὐτῶ οἱ πλείους ἀπολώλεσαν, οὐχ ἥπερ Δαρεῖος ὁ μέγας βασιλεὺς ἐξάρχων τοῖς ἀμφ' αὐτὸν τῆς φυγῆς ἀπεχώρει, ἀλλὰ ἔστε γὰρ ὑπέμενέ τι τῶν Ἰνδῶν ἐν τῇ μάχῃ ξυνεστηκός, ἐς τοσόνδε ἀγωνισάμενος, τετρωμένος δὲ τὸν δεξιὸν ὤμον, ὃν δὴ γυμνὸν μόνον ἔχων ἐν τῇ μάχῃ ἀν- εστρέφετο (ἀπὸ γὰρ τοῦ ἄλλου σώματος ἦρκει αὐτῶ τὰ βέλη ὁ θώραξ περιττός ὢν κατὰ τε τὴν ἰσχὺν καὶ τὴν ἀρμονίαν, ὥς ὕστερον καταμαθεῖν θεωμένοις ἦν), τότε δὴ καὶ αὐτὸς ἀπεχώρει ἐπιστρέψας τὸν ἐλέφαντα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 6, line 4

πέμπει δὴ παρ' αὐτὸν πρῶτα μὲν Ταξίλην τὸν Ἰνδόν· καὶ Ταξίλης προς- ιππεύσας ἐφ' ὅσον οἱ ἀσφαλὲς ἐφαίνετο τῶ ἐλέφαντι ὃς ἔφερε τὸν Πῶρον ἐπιστῆσαι τε ἡξίου τὸ θηρίον, οὐ γὰρ εἶναι οἱ ἔτι φεύγειν, καὶ ἀκοῦσαι τῶν παρ' Ἀλεξάνδρου λόγων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 18, section 7, line 7

Ἀλέξανδρος δὲ οὐδὲ ἐπὶ τῷδε τῷ Πῶρῳ χαλεπὸς ἐγέ- νετο, ἀλλ' ἄλλους τε ἐν μέρει ἐπέμπε καὶ δὴ καὶ Μερόην ἄνδρα Ἰνδόν, ὅτι φίλον εἶναι ἐκ παλαιοῦ τῷ Πῶρῳ τὸν Μερόην ἔμαθεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 19, section 3, line 2

καὶ Ἀλέξανδρος τούτῳ ἔτι μᾶλλον τῷ λόγῳ ἡσθεῖς τὴν τε ἀρχὴν τῷ Πῶρῳ τῶν τε αὐτῶν Ἰνδῶν ἔδωκεν καὶ ἄλλην ἔτι χώραν πρὸς τῇ πάλαι οὔσῃ πλείονα τῆς πρόσθεν προσέθηκεν· καὶ οὕτως αὐτὸς τε βασιλικῶς κεχρημένος ἦν ἀνδρὶ ἀγαθῷ καὶ ἐκείνῳ ἐκ τούτου ἐς ἅπαντα πιστῶ ἐχρήσατο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 19, section 3, line 8

τοῦτο τὸ τέλος τῇ μάχῃ τῇ πρὸς Πῶρόν τε καὶ τοὺς ἐπέκεινα τοῦ Ὑδάσπου ποταμοῦ Ἰνδοὺς Ἀλεξάνδρῳ ἐγένετο ἐπ' ἄρχοντος Ἀθηναίους Ἡγήμονος μηνὸς Μουνυχιῶνος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 19, section 4, line 3

καὶ τὴν μὲν Νίκαιαν τῆς νίκης τῆς κατ' Ἰνδῶν ἐπώ- νυμον ὠνόμασε, τὴν δὲ Βουκεφάλαν ἐς τοῦ ἵππου τοῦ Βουκεφάλα τὴν μνήμην, ὃς ἀπέθανεν αὐτοῦ, οὐ βληθεὶς πρὸς οὐδενός, ἀλλὰ ὑπὸ καύματος τε καὶ ἡλικίας (ἦν γὰρ ἀμφὶ τὰ τριάκοντα ἔτη) καματηρὸς γενόμενος, πολλὰ δὲ πρόσθεν ξυγκαμῶν τε καὶ συγκινδυνεύσας Ἀλεξάνδρῳ, ἀναβαινόμενός τε πρὸς μόνου Ἀλεξάνδρου [ὁ Βουκεφάλας οὗτος], ὅτι τοὺς ἄλλους πάντας ἀπηξίου ἀμβάτας, καὶ μεγέθει μέγας καὶ τῷ θυμῷ γενναῖος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 20, section 2, line 5

Κρατερὸν μὲν δὴ ξὺν μέρει τῆς στρατιᾶς ὑπελείπετο τὰς πόλεις ἄστινας ταύτῃ ἐκτιζεν ἀναστήσοντά τε καὶ ἐκτειχοῦντά· αὐτὸς δὲ ἤλαυνεν ὥς ἐπὶ τοὺς προσχώρους τῇ Πῶρου ἀρχῇ

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

Ἰνδοῦς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 20, section 6, line 2

ἦκον δὲ καὶ παρὰ τῶν αὐτονόμων Ἰνδῶν πρέσβεις παρ' Ἀλέξανδρον καὶ παρὰ Πώρου ἄλλου του ὑπάρχου Ἰνδῶν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 20, section 8, line 3

τούτου τοῦ Ἀκεσίνου τὸ μέγεθος μόνου τῶν Ἰνδῶν ποταμῶν Πτολεμαῖος ὁ Λάγου ἀνέγραψεν· εἶναι γὰρ ἵνα ἐπέρασεν αὐτὸν Ἀλέξανδρος ἐπὶ τῶν πλοίων τε καὶ τῶν διφθερῶν ξὺν τῇ στρατιᾷ τὸ μὲν ῥεῦμα ὃξὺ τοῦ Ἀκεσίνου πέτραις μεγάλαις καὶ ὀξείαις, καθ' ὧν φερόμενον βία τὸ ὕδωρ κυμαίνεσθαι τε καὶ καχλάζειν, τὸ δὲ εὖρος σταδίου ἐπέχειν πεντεκαίδεκα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 20, section 10, line 3

εἴη ἂν οὖν ἐκ τοῦδε τοῦ λόγου ξυντιθέντι τεκμηριοῦσθαι, ὅτι οὐ πόρρω τοῦ ἀληθοῦς ἀναγέγραπται τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὸ μέγεθος, ὅσοις ἐς τεσσαράκοντα σταδίους δοκεῖ τοῦ Ἰνδοῦ εἶναι τὸ εὖρος, ἵνα μέσως ἔχει αὐτὸς αὐτοῦ ὁ Ἰνδός· ἵνα δὲ στενότητάς τε καὶ διὰ στενότητα βαθύτατος ἐς τοὺς πεντεκαίδεκα ξυνάγεσθαι· καὶ ταῦτα πολλαχῇ εἶναι τοῦ Ἰνδοῦ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 21, section 1, line 5

Περάσας δὲ τὸν ποταμὸν Κοῖνον μὲν ξὺν τῇ αὐτοῦ τάξει ἀπολείπει αὐτοῦ ἐπὶ τῇ ὄχθῃ προστάξας ἐπιμελεῖσθαι τῆς ὑπολελειμμένης στρατιᾶς τῆς διαβάσεως, οἱ τὸν τε σῆτον αὐτῶ τὸν ἐκ τῆς ἡδὴ ὑπηκόου τῶν Ἰνδῶν χώρας καὶ τὰ ἄλλα ἐπιτήδεια παρακομίζειν ἔμελλον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 21, section 2, line 2

Πῶρον δὲ ἐς τὰ αὐτοῦ ἦθη ἀποπέμπει, κελεύσας Ἰνδῶν τε τοὺς μαχμωτάτους ἐπιλεξάμενον καὶ εἴ τινας παρ' αὐτῶ ἔχει ἐλέφαντας, τούτους δὲ ἀναλαμβάνοντα[ς] ἵεναι παρ' αὐτόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 21, section 4, line 2

Ἐπὶ τοῦτον ἐλαύνων Ἀλέξανδρος ἀφικνεῖται ἐπὶ τὸν Ὑδραώτην ποταμόν, ἄλλον αὖ τοῦτον Ἰνδὸν ποταμόν, τὸ μὲν εὖρος οὐ μείονα τοῦ Ἀκεσίνου, ὃξύτητι δὲ τοῦ ῥοῦ μείονα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 21, section 5, line 7

ἐνταῦθα Ἡφαιστίωνα μὲν ἐκπέμπει δούς αὐτῶ μέρος τῆς στρατιᾶς, πεζῶν μὲν φάλαγγας δύο, ἱππέων δὲ τήν τε αὐτοῦ καὶ τήν Δημητρίου ἱππαρχίαν καὶ τῶν τοξοτῶν τοὺς ἡμίσεας, ἐς τήν Πώρου τοῦ ἀφεστηκότος χώραν, κελεύσας παραδιδόναι ταύτην Πώρῳ τῶ ἄλλῳ, καὶ εἰ δὴ τινα πρὸς ταῖς ὄχθαις τοῦ Ὑδραώτου ποταμοῦ αὐτόνομα ἔθνη Ἰνδῶν νέμεται, καὶ ταῦτα προσαγαγόμενον τῷ Πώρῳ ἄρχειν ἐγχειρίσαι.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 1, line 2

Ἐν τούτῳ δὲ ἐξαγγέλλεται Ἀλέξανδρῳ τῶν αὐτο- νόμων Ἰνδῶν ἄλλους τέ τινας καὶ τοὺς καλουμένους Καθαίους αὐτοὺς τε παρασκευάζεσθαι ὡς πρὸς μάχην, εἰ προσάγοι τῇ χώρᾳ αὐτῶν Ἀλέξανδρος, καὶ ὅσα ὁμορὰ σφισιν <ἔθνη> ὡσαύτως αὐτόνομα, καὶ ταῦτα παρα- κα- λεῖν ἐς τὸ ἔργον· εἶναι δὲ τὴν τε πόλιν ὀχυρὰν πρὸς ἣ ἐπενόουν ἀγωνίσασθαι, Σάργγαλα ἦν τῇ πόλει ὄνομα, καὶ αὐτοὶ οἱ Καθαῖοι εὐτολμότατοί τε καὶ τὰ πολέμια κράτιστοι ἐνομίζοντο, καὶ τούτοις κατὰ τὰ αὐτὰ Ὀξυδράκαι, ἄλλο Ἰνδῶν ἔθνος, καὶ Μαλλοί, ἄλλο καὶ τοῦτο· ἐπεὶ καὶ ὀλίγῳ πρόσθεν στρατεύσαντας ἐπ’

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 2, line 8

εἰ προσάγοι τῇ χώρᾳ αὐτῶν Ἀλέξανδρος, καὶ ὅσα ὁμορὰ σφισιν <ἔθνη> ὡσαύτως αὐτό- νομα, καὶ ταῦτα παρα- καλεῖν ἐς τὸ ἔργον· εἶναι δὲ τὴν τε πόλιν ὀχυρὰν πρὸς ἣ ἐπενόουν ἀγωνίσασθαι, Σάργγαλα ἦν τῇ πόλει ὄνομα, καὶ αὐτοὶ οἱ Καθαῖοι εὐτολμότατοί τε καὶ τὰ πολέμια κράτιστοι ἐνομίζοντο, καὶ τούτοις κατὰ τὰ αὐτὰ Ὀξυδράκαι, ἄλλο Ἰνδῶν ἔθνος, καὶ Μαλλοί, ἄλλο καὶ τοῦτο· ἐπεὶ καὶ ὀλίγῳ πρόσθεν στρατεύσαντας ἐπ’ αὐτοὺς Πῶρὸν τε καὶ Ἀν- ισάρην ζύν τε τῇ σφετέρᾳ δυνάμει καὶ πολλὰ ἄλλα ἔθνη τῶν αὐτονόμων Ἰνδῶν ἀναστήσαντας οὐδὲν πρᾶξαντας τῆς παρασκευῆς ἄξιον ξυνέβη ἀπελθεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 3, line 4

καὶ δευτεραῖος μὲν ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ὑδραῶτου πρὸς πόλιν ἦκεν ἡ ὄνομα Πίμπραμα· τὸ δὲ ἔθνος τοῦτο τῶν Ἰνδῶν Ἀδραῖσταί ἐκαλοῦντο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 5, line 6

Ἀλέξανδρος δὲ τό τε πλῆθος κατιδὼν τῶν βαρβάρων καὶ τοῦ χωρίου τὴν φύσιν, ὡς μάλιστα πρὸς τὰ παρόντα ἐν καιρῷ οἱ ἐφαίνετο παρετάσσετο· καὶ τοὺς μὲν ἵπποτοξότας εὐθὺς ὡς εἶχεν ἐκπέμπει ἐπ’ αὐτούς, ἀκροβολίζεσθαι κελεύσας παριπτεύοντας, ὡς μήτε ἐκδρομὴν τινα ποιήσασθαι τοὺς Ἰνδοὺς πρὶν ξυνταχθῆναι αὐτῷ τὴν στρατιὰν καὶ ὡς πληγὰς γίγνε- σθαι αὐτοῖς καὶ πρὸ τῆς μάχης ἐντὸς τοῦ ὀχυρώματος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 22, section 7, line 8

καὶ τούτων τοὺς μὲν ἱππέας ἐπὶ τὰ κέρατα διελὼν παρήγαγεν, ἀπὸ δὲ τῶν πεζῶν τῶν προσγενομένων πυκνοτέρην τὴν ζύγκλεισιν τῆς φά- λαγγος ποιήσας αὐτὸς ἀναλαβὼν τὴν ἵππον τὴν ἐπὶ τοῦ δεξιῦ τεταγμένην παρήγαγεν ἐπὶ τὰς κατὰ τὸ εὐώνυμον τῶν Ἰνδῶν ἀμάξας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 1, line 2

Ὡς δὲ ἐπὶ τὴν ἵππον προσαγαγοῦσαν οὐκ ἐξέδραμον οἱ Ἰνδοὶ ἔξω τῶν ἀμαξῶν, ἀλλ’ ἐπιβε- βηκότες αὐτῶν ἀφ’ ὑψηλοῦ ἠκροβολίζοντο, γνοὺς Ἀλέξανδρος ὅτι οὐκ εἴη τῶν ἱππέων τὸ ἔργον

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

καταπηδήσας ἀπὸ τοῦ ἵππου πεζὸς ἐπῆγε τῶν πεζῶν τὴν φάλαγγα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 2, line

3

καὶ ἀπὸ μὲν τῶν πρώτων ἀμαξῶν οὐ χαλεπῶς ἐβιάσαντο οἱ Μακε- δόνες τοὺς Ἰνδοὺς· πρὸ δὲ τῶν δευτέρων οἱ Ἰνδοὶ παραταξάμενοι ῥᾶον ἀπεμάχοντο, οἷα δὴ πυκνότεροί τε ἐφεστηκότες ἐλάττονι τῷ κύκλῳ καὶ τῶν Μακεδόνων οὐ κατ' εὐρυχωρίαν ὡσαύτως προσαγόντων σφίσιν, ἐν ᾧ τὰς τε πρώτας ἀμάξας ὑπέβηγον καὶ κατὰ τὰ δια- λείμματα αὐτῶν ὡς ἐκάστοις προὔχῳρει ἀτάκτως προσέβαλλον· ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τούτων ὁμῶς ἐξώσθησαν οἱ Ἰνδοὶ βιασθέντες πρὸς τῆς φάλαγγος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 3, line

1

τῶν πρώτων ἀμαξῶν οὐ χαλεπῶς ἐβιάσαντο οἱ Μακε- δόνες τοὺς Ἰνδοὺς· πρὸ δὲ τῶν δευτέρων οἱ Ἰνδοὶ παραταξάμενοι ῥᾶον ἀπεμάχοντο, οἷα δὴ πυκνότεροί τε ἐφεστηκότες ἐλάττονι τῷ κύκλῳ καὶ τῶν Μακεδόνων οὐ κατ' εὐρυχωρίαν ὡσαύτως προσαγόντων σφίσιν, ἐν ᾧ τὰς τε πρώτας ἀμάξας ὑπέβηγον καὶ κατὰ τὰ δια- λείμματα αὐτῶν ὡς ἐκάστοις προὔχῳρει ἀτάκτως προσέβαλλον· ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τούτων ὁμῶς ἐξώσθησαν οἱ Ἰνδοὶ βιασθέντες πρὸς τῆς φάλαγγος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 4, line

5

καὶ Ἀλέξανδρος ταύτην μὲν τὴν ἡμέραν περιεστρατοπέδευσε τοῖς πεζοῖς τὴν πόλιν ὅσα γε ἡδυνήθη αὐτῷ περιβαλεῖν ἢ φάλαγξ· ἐπὶ πολὺ γὰρ ἐπέχον τὸ τεῖχος τῷ στρατοπέδῳ κυκλώ- σασθαι οὐ δυνατόν ἐγένετο· κατὰ δὲ τὰ διαλείποντα αὐτοῦ, ἵνα καὶ λίμνη οὐ μακρὰν τοῦ τεύχους ἦν, τοὺς ἱππέας ἐπέταξεν ἐν κύκλῳ τῆς λίμνης, γνοὺς οὐ βαθεῖαν οὖσαν τὴν λίμνην καὶ ἅμα εἰκάσας ὅτι φοβεροὶ γενό- μενοι οἱ Ἰνδοὶ ἀπὸ τῆς προτέρας ἥττης ἀπολείψουσι τῆς νυκτὸς τὴν πόλιν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 23, section 6, line

7

αὐτομολήσαντες δὲ αὐτῷ τῶν ἐκ τῆς πόλεως τινες φράζουσιν, ὅτι ἐν νῷ ἔχοιεν αὐτῆς ἐκείνης τῆς νυκτὸς ἐκπίπτειν ἐκ τῆς πόλεως οἱ Ἰνδοὶ κατὰ τὴν λίμνην, ἵνα περ τὸ ἐκλιπὲς ἦν τοῦ χάρακος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 4, line

2

Ἐν τούτῳ δὲ καὶ Πῶρος ἀφίκετο τοὺς τε ὑπολοί- πους ἐλέφαντας ἅμα οἱ ἄγων καὶ τῶν Ἰνδῶν ἐς πεντα- κισχιλίους, αἱ τε μηχαναὶ Ἀλεξάνδρῳ συμπεπηγμέναι ἦσαν καὶ προσήγοντο ἤδη τῷ τείχει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 5, line

2

καὶ ἀποθνήσκουσι μὲν ἐν τῇ καταλήψει τῶν Ἰνδῶν ἐς μυρίους καὶ ἐπτακισχιλίους, ἐάλωσαν δὲ ὑπὲρ τὰς ἐπτὰ μυριάδας καὶ ἄρματα τρια- κόσια καὶ ἵπποι πεντακόσιοι.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 6, line 8

Θάλας δὲ ὡς νόμος αὐτῷ τοὺς τελευτήσαντας Εὐμενῇ τὸν γραμματέα ἐκπέμπει εἰς τὰς δύο πόλεις τὰς ξυναφεστῶσας τοῖς Σαγγάλοις δούς αὐτῷ τῶν ἱππέων εἰς τριακοσίους, φράσσοντα[ς] τοῖς ἔχουσι τὰς πόλεις τῶν τε Σαγγάλων τὴν ἄλωσιν καὶ ὅτι αὐτοῖς οὐδὲν ἔσται χαλεπὸν <ἐξ> Ἀλεξάνδρου ὑπομένουσιν τε καὶ δεχομένοις φιλίως Ἀλέξανδρον· οὐδὲ γὰρ οὐδὲ ἄλλοις τισὶ γενέσθαι τῶν αὐτονόμων Ἰνδῶν ὅσοι ἐκόντες σφᾶς ἐνέδοσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 8, line 4

ὥς δὲ ἀπέγνω διώκειν τοῦ πρόσω τοὺς φεύγοντας, ἐπανελθὼν εἰς τὰ Σάγγαλα τὴν πόλιν μὲν κατέσκαψε, τὴν χώραν δὲ τῶν Ἰνδῶν τοῖς πάλαι μὲν αὐτονόμοις, τότε δὲ ἐκουσίως προσχωρήσασι προσέθηκεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 24, section 8, line 9

καὶ Πῶρον μὲν ξὺν τῇ δυνάμει τῇ ἀμφ' αὐτὸν ἐκπέμπει ἐπὶ τὰς πόλεις αἱ προσκεχωρήκεσαν, φρουρὰς εἰσάγοντα εἰς αὐτάς, αὐτὸς δὲ ξὺν τῇ στρατιᾷ ἐπὶ τὸν Ἰφασιν ποταμὸν προὐχώρει, ὥς καὶ τοὺς ἐπέκεινα Ἰνδοὺς καταστρέφαιτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 25, section 2, line 1

Τὰ δὲ δὴ πέραν τοῦ Ἰφάσιος εὐδαίμονά τε τὴν χώραν εἶναι ἐξηγγέλλετο καὶ ἀνθρώπους ἀγαθοὺς μὲν γῆς ἐργάτας, γενναίους δὲ τὰ πολέμια καὶ εἰς τὰ ἴδια δὲ σφῶν ἐν κόσμῳ πολιτευόντας (πρὸς γὰρ τῶν ἀρίστων ἄρχεσθαι τοὺς πολλούς, τοὺς δὲ οὐδὲν ἔξω τοῦ ἐπικικοῦς ἐξηγεῖσθαι), πληθὺς τε ἐλεφάντων εἶναι τοῖς ταύτῃ ἀνθρώποις πολὺ τι ὑπὲρ τοὺς ἄλλους Ἰνδοὺς, καὶ μεγέθει μεγίστους καὶ ἀνδρείᾳ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 25, section 5, line 7

καὶ Αἴγυπτος ξὺν τῇ Λιβύῃ τῇ Ἑλληνικῇ καὶ Ἀραβίας ἔστιν ἃ καὶ Συρία ἢ τε κοίλη καὶ ἡ μέση τῶν ποταμῶν, καὶ Βαβυλὼν δὲ ἔχεται καὶ τὸ Σουσίῳν ἔθνος καὶ Πέρσαι καὶ Μῆδοι καὶ ὅσων Πέρσαι καὶ Μῆδοι ἐπῆρχον, καὶ ὅσων δὲ οὐκ ἦρχον, τὰ ὑπὲρ τὰς Κασπίας πύλας, τὰ ἐπέκεινα τοῦ Καυκάσου, ὁ Τάναϊς, τὰ πρόσω ἔτι τοῦ Τανάϊδος, Βακτριανοί, Ἰρκανιοί, ἡ θάλασσα ἡ Ἰρκανία, Σκύθας τε ἀνεστείλαμεν ἔστε ἐπὶ τὴν ἔρημον, ἐπὶ τούτοις μέντοι καὶ ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς διὰ τῆς ἡμετέρας ῥεῖ, ὁ Ὑδάσπης διὰ τῆς ἡμετέρας, ὁ Ἀχεσίνης, ὁ Ὑδραώτης, τί ὀκνεῖτε καὶ τὸν Ἰφασιν καὶ τὰ ἐπέκεινα τοῦ Ἰφάσιος γένη προσθεῖναι τῇ ἡμετέρᾳ Μακεδόνων τε ἀρχῇ;

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 26, section 2, line 3

καὶ ἐγὼ ἐπιδείξω Μακεδόσι τε καὶ τοῖς ξυμμάχοις τὸν μὲν Ἰνδικὸν κόλπον ξύρρουν ὄντα τῷ Περσικῷ, τὴν δὲ Ἰρκανίαν <θάλασσαν> τῷ Ἰνδικῷ· ἀπὸ δὲ τοῦ Περσικοῦ εἰς Λιβύην

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

περιπλευσθήσεται στόλῳ ἡμετέρῳ τὰ μέχρι Ἡρακλέους Σπηλῶν· ἀπὸ δὲ Σπηλῶν ἢ ἐντὸς Λιβύῃ πᾶσα ἡμετέρα γίγνεται καὶ ἡ Ἀσία δὴ οὕτω πᾶσα, καὶ ὅροι τῆς ταύτης ἀρχῆς οὕσπερ καὶ τῆς γῆς ὅρους ὁ θεὸς ἐποίησε.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 27, section 7, line 9

σύ δὲ νῦν μὴ ἄγειν ἄκοντας· οὐδὲ γὰρ ὁμοίοις ἔτι χρήσῃ ἐς τοὺς κινδύνους, οἷς τὸ ἐκούσιον ἐν τοῖς ἀγῶσιν ἀπέσται· ἐπανελθὼν δὲ αὐτός [τε], εἰ δοκεῖ, ἐς τὴν οἰκ<ε>ίαν καὶ τὴν μητέρα τὴν σαυτοῦ ἰδὼν καὶ τὰ τῶν Ἑλλήνων καταστησάμενος καὶ τὰς νίκας ταύτας τὰς πολλὰς καὶ μεγάλας ἐς τὸν πατρῶον οἶκον κομίσας οὕτω δὴ ἐξ ἀρχῆς ἄλλον στόλον στέλλεσθαι, εἰ μὲν βούλει, ἐπ' αὐτὰ ταῦτα τὰ πρὸς τὴν ἑὼ ὠκισμένα Ἰνδῶν γένη, εἰ δὲ βούλει, ἐς τὸν Εὐξείνιον πόντον, εἰ δέ, ἐπὶ Καρχηδόνα καὶ τὰ ἐπέκεινα Καρχηδονίων τῆς Λιβύης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 5, chapter 29, section 4, line 4

Ἐν τούτῳ δὲ ἀφίκοντο πρὸς αὐτὸν Ἀρσάκης τε ὁ τῆς ὁμόρου Ἀβισάρῃ χώρας ὑπαρχος καὶ ὁ ἀδελφὸς Ἀβισάρου καὶ οἱ ἄλλοι οἰκεῖοι, δῶρά τε κομίζοντες ἅ μέγιστα παρ' Ἰνδοῖς καὶ τοὺς παρ' Ἀβισάρου ἐλέφαντας, ἀριθμὸν ἐς τριάκοντα· Ἀβισάρην γὰρ νόσῳ ἀδύνατον γενέσθαι ἐλθεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 1, section 2, line 1

πρότερον μὲν γε ἐν τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ κροκοδείλους ἰδὼν, μόνῳ τῶν ἄλλων ποταμῶν πλην Νείλου, πρὸς δὲ ταῖς ὄχθαις τοῦ Ἀκεσίνου κυάμους πεφυκότας ὁποῖους ἡ γῆ ἐκφέρει ἢ Αἰγυπτία, καὶ [ὁ] ἀκούσας ὅτι ὁ Ἀκεσίνης ἐμβάλλει ἐς τὸν Ἰνδόν, ἔδοξεν ἐξευρῆ- κέναι τοῦ Νείλου τὰς ἀρχάς, ὥς τὸν Νεῖλον ἐνθένδε ποθὲν ἐξ Ἰνδῶν ἀνίσχοντα καὶ δι' ἐρήμου πολλῆς γῆς ῥέοντα καὶ ταύτῃ ἀπολλύοντα τὸν Ἰνδὸν τὸ ὄνομα, ἔπειτα, ὁπόθεν ἀρχεῖται διὰ τῆς οἰκουμένης χώρας ῥεῖν, Νεῖλον ἤδη πρὸς Αἰθιοπῶν τε τῶν ταύτῃ καὶ

Αἰγυ-

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 1, section 4, line 2

καὶ δὴ καὶ πρὸς Ὀλυμπιάδα γράφοντα ὑπὲρ τῶν Ἰνδῶν τῆς γῆς ἄλλα τε γράφαι καὶ ὅτι δοκοῖ αὐτῷ ἐξευρηκέναι τοῦ Νείλου τὰς πηγάς, μικροῖς δὴ τισι καὶ φαύλοις ὑπὲρ τῶν τηλικούτων τεκμαιρό- μενον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 1, section 5, line 2

ἐπεὶ μέντοι ἀτρεκέστερον ἐξήλεγξε τὰ ἀμφὶ τῷ ποταμῷ τῷ Ἰνδῷ, οὕτω δὴ μαθεῖν παρὰ τῶν ἐπι- χωρίων τὸν μὲν Ὑδάσπην τῷ Ἀκεσίνῃ, τὸν Ἀκεσίνην δὲ τῷ Ἰνδῷ τό τε ὕδωρ συμβάλλοντας καὶ τῷ ὀνόματι συγχωροῦντας, τὸν Ἰνδὸν δὲ ἐκδιδόντα ἤδη ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν, δίστομον τὸν Ἰνδὸν ὄντα, οὐδέ<ν> τι αὐτῷ προσῆκον τῆς γῆς τῆς Αἰγυπτίας· τηλικαῦτα δὲ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς τὴν μητέρα τοῦτο <τὸ> ἀμφὶ τῷ Νείλῳ γραφὲν ἀφελεῖν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 2, section 1, line 4

αὐτὸς δὲ ξυναγαγὼν τοὺς τε ἐταίρους καὶ ὅσοι Ἰνδῶν πρέσβεις παρ' αὐτὸν ἀφιγμένοι ἦσαν βασιλέα μὲν τῆς ἐαλωκυίας ἤδη Ἰνδῶν γῆς ἀπέδειξε Πῶρον, ἐπτά μὲν ἐθνῶν τῶν ξυμπάντων,

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

πόλεων δὲ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ὑπὲρ τὰς δισχιλίας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 2, section 3, line 2

Φιλίππῳ δὲ τῷ σατράπῃ τῆς ἐπέκεινα τοῦ Ἰνδοῦ ὡς ἐπὶ Βακτρίου γῆς διαλιπόντι τρεῖς ἡμέρας παρήγγελτο ἔπεσθαι ξὺν τοῖς ἄμφ' αὐτόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 1, line 9

καὶ ἐπιβὰς τῆς νεῶς ἀπὸ τῆς πρώρας ἐκ χρυσῆς φιάλης ἔσπενδεν ἐς τὸν ποταμόν, τὸν τε Ἀχεσίηνην ξυνεπικαλούμενος τῷ Ὑδάσπῃ, ὄντινα μέγιστον αὐτῶν ἄλλων ποταμῶν ὑμβάλλειν τῷ Ὑδάσπῃ ἐπέπυστο καὶ οὐ πόρρω αὐτῶν εἶναι τὰς ὑμ-βολὰς, καὶ τὸν Ἰνδόν, ἐς ὄντινα ὁ Ἀχεσίηνης ξὺν τῷ Ὑδάσπῃ ἐμβάλλει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 4, line 3

ἐνδιδόντων τὰς ἀρχὰς τε καὶ ἀναπαύλας τῇ εἰρεσίᾳ καὶ τῶν ἐρετῶν ὁπότε ἀθρόοι ἐμπίπτοντες τῷ ῥοθίῳ ἐπαλαλάξειαν· αἱ τε ὄχθαι, ὑψηλότεραι τῶν νεῶν πολλαχῇ οὔσαι, ἐς στενόν τε τὴν βοήν ξυνάγουσαι καὶ τῇ ξυναγωγῇ αὐτῇ ἐπὶ μέγα νύξημένην ἐς ἀλλήλας ἀντέπεμπον, καὶ που καὶ νάπαι ἐκατέρωθεν τοῦ ποταμοῦ τῇ τε ἐρημίᾳ καὶ τῇ ἀντιπέμφει τοῦ κτύπου καὶ αὗται ξυνεπελάμβανον· οἱ τε ἵπποι διαφαινόμενοι διὰ τῶν ἵππαγωγῶν πλοίων, οὐ πρόσθεν ἵπποι ἐπὶ νεῶν ὀφθέντες ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ (καὶ γὰρ καὶ τὸν Διονύσου ἐπ' Ἰνδοὺς στόλον οὐκ ἐμέμνητο γενέσθαι ναυτικόν), ἔκπληξιν παρεῖχον τοῖς θεωμένοις τῶν βαρβάρων, ὥστε οἱ μὲν αὐτόθεν τῇ ἀναγωγῇ παρα-γενόμενοι ἐπὶ πολὺ ἐφωμάρτουν, ἐς ὅσους δὲ τῶν ἤδη Ἀλεξάνδρῳ προσκεχωρηκότων Ἰνδῶν ἡ βοή τῶν ἐρετῶν ἢ ὁ κτύπος τῆς εἰρεσίας ἐξίκετο, καὶ οὗτοι ἐπὶ τῇ ὄχθῃ κατέθεον καὶ ξυνείποντο ἐπάδοντες βαρβα-ρικῶς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 4, line 4

καὶ τῶν ἐρετῶν ὁπότε ἀθρόοι ἐμπίπτοντες τῷ ῥοθίῳ ἐπαλαλάξειαν· αἱ τε ὄχθαι, ὑψηλότεραι τῶν νεῶν πολλαχῇ οὔσαι, ἐς στενόν τε τὴν βοήν ξυνάγουσαι καὶ τῇ ξυναγωγῇ αὐτῇ ἐπὶ μέγα νύξημένην ἐς ἀλλήλας ἀντέπεμπον, καὶ που καὶ νάπαι ἐκατέρωθεν τοῦ ποταμοῦ τῇ τε ἐρημίᾳ καὶ τῇ ἀντιπέμφει τοῦ κτύπου καὶ αὗται ξυνεπελάμβανον· οἱ τε ἵπποι διαφαινόμενοι διὰ τῶν ἵππαγωγῶν πλοίων, οὐ πρόσθεν ἵπποι ἐπὶ νεῶν ὀφθέντες ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ (καὶ γὰρ καὶ τὸν Διονύσου ἐπ' Ἰνδοὺς στόλον οὐκ ἐμέμνητο γενέσθαι ναυτικόν), ἔκπληξιν παρεῖχον τοῖς θεωμένοις τῶν βαρβάρων, ὥστε οἱ μὲν αὐτόθεν τῇ ἀναγωγῇ παρα-γενόμενοι ἐπὶ πολὺ ἐφωμάρτουν, ἐς ὅσους δὲ τῶν ἤδη Ἀλεξάνδρῳ προσκεχωρηκότων Ἰνδῶν ἡ βοή τῶν ἐρετῶν ἢ ὁ κτύπος τῆς εἰρεσίας ἐξίκετο, καὶ οὗτοι ἐπὶ τῇ ὄχθῃ κατέθεον καὶ ξυνείποντο ἐπάδοντες βαρβα-ρικῶς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 5, line 2

ἀντέπεμπον, καὶ που καὶ νάπαι ἐκατέρωθεν τοῦ ποταμοῦ τῇ τε ἐρημίᾳ καὶ τῇ ἀντιπέμφει τοῦ κτύπου καὶ αὗται ξυνεπελάμβανον· οἱ τε ἵπποι διαφαινόμενοι διὰ τῶν ἵππαγωγῶν πλοίων, οὐ πρόσθεν ἵπποι ἐπὶ νεῶν ὀφθέντες ἐν τῇ Ἰνδῶν γῇ (καὶ γὰρ καὶ τὸν Διονύσου ἐπ' Ἰνδοὺς στόλον οὐκ ἐμέμνητο γενέσθαι ναυτικόν), ἔκπληξιν παρεῖχον τοῖς θεωμένοις τῶν βαρβάρων, ὥστε οἱ μὲν αὐτόθεν τῇ ἀναγωγῇ παρα-γενόμενοι ἐπὶ πολὺ ἐφωμάρτουν, ἐς ὅσους δὲ τῶν ἤδη Ἀλεξάνδρῳ προσκεχωρηκότων Ἰνδῶν ἡ βοή τῶν ἐρετῶν ἢ ὁ κτύπος τῆς εἰρεσίας ἐξίκετο, καὶ οὗτοι ἐπὶ τῇ ὄχθῃ κατέθεον καὶ ξυνείποντο ἐπάδοντες βαρβα-ρικῶς.

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 3, section 5, line 5
 φιλωδοὶ γάρ, εἴπερ τινὲς ἄλλοι, Ἴνδοι καὶ φιλορχήμονες ἀπὸ Διονύσου ἔτι καὶ τῶν ἄμα
 Διονύσῳ βακχευσάντων κατὰ τὴν Ἰνδῶν γῆν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 4, section 2, line 5
 προσορμιζόμενος δὲ ὅπῃ τύχοι ταῖς ὄχθαις τοὺς προσοικούντας τῷ Ὑδάσπῃ Ἰνδοὺς τοὺς
 μὲν ἐνδιδόντας σφᾶς ὁμο- λογίαις παρελάμβανεν, ἥδη δὲ τινὰς καὶ ἐς ἄλλήν χωρήσαντας βία
 κατεστρέψατο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 4, section 3, line 3
 αὐτὸς δὲ ὡς ἐπὶ τὴν Μαλλῶν τε καὶ Ὀξυδρακῶν γῆν σπουδῇ ἔπλει, πλεί- στον τε καὶ
 μαχημωτάτους τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν πυνθανόμενος καὶ ὅτι ἐξηγγέλλοντο αὐτῷ παῖδας μὲν καὶ
 γυναῖκας ἀποτεθεῖσθαι εἰς τὰς ὀχυρωτάτας τῶν πόλεων, αὐτοὶ δὲ ἐγνωκέναι διὰ μάχης ἵεναι
 πρὸς αὐτόν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 6, section 1, line 5
 Αὐτὸς δὲ ἀναλαβὼν τοὺς ὑπασπιστάς τε καὶ τοὺς τοξότας καὶ τοὺς Ἀγριᾶνας καὶ τῶν
 πεζεταίρων καλου- μένων τὴν Πείθωνος τάξιν καὶ τοὺς ἵπποτοξότας τε πάντας καὶ τῶν ἱππέων
 τῶν ἐταίρων τοὺς ἡμίσεας διὰ γῆς ἀνύδρου ὡς ἐπὶ Μαλλοὺς ἦγεν, ἔθνος Ἰνδικὸν Ἰνδῶν τῶν
 αὐτονόμων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 6, section 4, line 5
 ὡς δὲ τάχιστα οἱ πεζοὶ ἀφίκοντο, Περδίκκαν μὲν τὴν τε αὐτοῦ ἱππαρχίαν ἔχοντα καὶ
 τὴν Κλείτου καὶ τοὺς Ἀγριᾶνας πρὸς ἄλλην πόλιν ἐκπέμπει τῶν Μαλλῶν, οἱ ξυμπεφευγότες
 ἦσαν πολλοὶ τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν, φυλάσσειν τοὺς ἐν τῇ πόλει κελεύ- σας, ἔργου δὲ μὴ ἔχεσθαι
 ἔστ' ἂν ἀφίκηται αὐτός, ὡς μὴδὲ ἀπὸ ταύτης τῆς πόλεως διαφυγόντας τινὰς αὐτῶν ἀγγέλους
 γενέσθαι τοῖς ἄλλοις βαρβάροις ὅτι προσάγει ἥδη Ἀλέξανδρος· αὐτὸς δὲ προσέβαλλεν τῷ τείχει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 7, section 6, line 3
 εἵχετό τε ἥδη ἡ ἄκρα, καὶ τῶν Ἰνδῶν οἱ μὲν τὰς οἰκίας ἐνεπύμπρασαν καὶ ἐν αὐταῖς ἐγκα-
 ταλαμβανόμενοι ἀπέθνησκον, οἱ πολλοὶ δὲ μαχόμενοι αὐτῶν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 8, section 4, line 4
 ἀλλὰ καὶ ταύτην ἐξέλι- πον οἱ Ἴνδοι ὡς προσάγοντα Ἀλέξανδρον ἔμαθον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 8, section 6, line 5
 ὡς δὲ κατεῖδον ἱππέας μόνους, ἐπι- στρέφαντες οἱ Ἴνδοι καρτερῶς ἐμάχοντο πλῆθος ὄντες
 ἐς πέντε μυριάδας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 8, section 7, line 1
 καὶ Ἀλέξανδρος ὡς τὴν τε φάλαγγα αὐτῶν πυκνὴν κατεῖδε καὶ αὐτῷ οἱ πεζοὶ ἀπῆσαν,
 προσβολὰς μὲν ἐποιεῖτο ἐς κύκλους παρικπεύων, ἐς χεῖρας δὲ οὐκ ἦει τοῖς Ἰνδοῖς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 8, section 7, line 5
 καὶ οἱ Ἴνδοι ὁμοῦ σφισι πάντων τῶν δεινῶν προσκειμένων ἀποστρέφαντες ἥδη προτροπάδην
 ἔφευγον ἐς πόλιν ὀχυρωτάτην τῶν πλησίον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 9, section 1, line 4

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

καὶ ἐν τούτῳ οὐ δεῖξά-μενοι οἱ Ἰνδοὶ τῶν Μακεδόνων τὴν ὁρμὴν τὰ μὲν τείχη τῆς πόλεως λείπουσιν, αὐτοὶ δὲ ἐς τὴν ἄκραν ξυνέφευγον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 9, section 4, line 3

ἤδη τε πρὸς τῇ ἐπάλξει τοῦ τείχους ὁ βασιλεὺς ἦν καὶ ἐρείσας ἐπ' αὐτῇ τὴν ἀσπίδα τοὺς μὲν ὥθει εἴσω τοῦ τείχους τῶν Ἰνδῶν, τοὺς δὲ καὶ αὐτοῦ τῷ ξίφει ἀποκτείνας γεγυμνώκει τὸ ταύτῃ τείχος· καὶ οἱ ὑπασπισταὶ ὑπέρφοβοι γενόμενοι ὑπὲρ τοῦ βασιλέως σπουδῇ ὠθούμενοι κατὰ τὴν αὐτὴν κλί-μακα συντρίβουσιν αὐτήν, ὥστε οἱ μὲν ἤδη ἀνιόντες αὐτῶν κάτω ἔπεσον, τοῖς δὲ ἄλλοις ἄπορον ἐποίησαν τὴν ἄνοδον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 9, section 5, line 3

Ἀλέξανδρος δὲ ὡς ἐπὶ τοῦ τείχους στὰς κύκλῳ τε ἀπὸ τῶν πλησίον πύργων ἐβάλλετο, οὐ γὰρ πελάσαι γε ἐτόλμα τις αὐτῷ τῶν Ἰνδῶν, καὶ ὑπὸ τῶν ἐκ τῆς πόλεως, οὐδὲ πόρρῳ τούτων γε ἐσακοντιζόντων (ἔτυχε γάρ τι καὶ προσκεχωσμένοιον ταύτῃ πρὸς τὸ τείχος), δῆλος μὲν ἦν Ἀλέξανδρος ὢν τῶν τε ὅπλων τῇ λαμ-πρότητι καὶ τῷ ἀτόπῳ τῆς τόλμης, ἔγνω δὲ ὅτι αὐτοῦ μὲν μένων κινδυνεύσει μηδὲν ὅ τι καὶ λόγου ἄξιον ἀποδεικνύμενος, καταπηδήσας δὲ εἴσω τοῦ τείχους τυχὸν μὲν αὐτῷ τούτῳ ἐκπλήξει τοὺς Ἰνδοὺς, εἰ δὲ μή, καὶ κινδυνεύειν δέοι, μεγάλα ἔργα καὶ τοῖς ἔπειτα πυθέσθαι ἄξια ἐργασάμενος οὐκ ἀσπουδαῖ

ἀποθανεῖ-

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 9, section 6, line 3

ἔνθα δὴ ἐρείσθεις πρὸς τῷ τείχει τοὺς μὲν τινὰς ἐς χεῖρας ἐλθόντας καὶ τὸν γε ἡγεμόνα τῶν Ἰνδῶν προσφερόμενόν οἱ θρασύτερον παίσας τῷ ξίφει ἀποκτείνει· ἄλλον δὲ πελάζοντα λίθῳ βαλὼν ἔσχε καὶ ἄλλον λίθῳ, τὸν δὲ ἐγγυτέρῳ προσάγοντα τῷ ξίφει αὖθις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 11, section 1, line

1

Ἐν τούτῳ δὲ οἱ μὲν ἐκτείνουν τοὺς Ἰνδοὺς, καὶ ἀπέκτεινάν γε πάντας οὐδὲ γυναῖκα ἢ παιῖδα ὑπ-ελείποντο, οἱ δὲ ἐξέφερον τὸν βασιλέα ἐπὶ τῆς ἀσπί-δος κακῶς ἔχοντα, οὐπὼ γιγνώσκοντες βιώσιμον ὄντα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 11, section 3, line

3

Αὐτίκα ἐν Ὁξυδράκαις τὸ πάθημα τοῦτο γενέσθαι Ἀλεξάνδρῳ ὁ πᾶς λόγος κατέχει· τὸ δὲ ἐν Μαλλοῖς ἔθνει αὐτονόμῳ Ἰνδικῷ ξυνέβη, καὶ ἡ τε πόλις Μαλλῶν ἦν καὶ οἱ βαλόντες Ἀλέξανδρον Μαλλοί, οἳ δὴ ἐγνώ-κεσαν μὲν συμμίζαντες τοῖς Ὁξυδράκαις οὕτω δια-γωνίζεσθαι, ἔφθη δὲ διὰ τῆς ἀνύδρου ἐπ' αὐτοὺς ἐλάσας πρὶν τινα ὠφέλειαν αὐτοῖς παρὰ τῶν Ὁξυδρα-κῶν γενέσθαι ἢ αὐτοὺς ἐκείνοις τι ἐπωφελῆσαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 13, section 3, line

10

οἱ δὲ ἐπέλαζον ἄλλος ἄλλοθεν, οἱ μὲν χειρῶν, οἱ δὲ γονάτων, οἱ δὲ τῆς ἐσθῆτος αὐτῆς ἀπτό-μενοι, οἱ δὲ καὶ ἰδεῖν ἐγγύθεν καὶ τι καὶ ἐπευφημήσαντες ἀπελθεῖν· οἱ δὲ ταινίαις ἐβαλλον, οἱ δὲ ἄνθεσιν, ὅσα ἐν τῷ τότε ἡ Ἰνδῶν γῆ παρῆχε.

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 1, line

6

Ἐν τούτῳ δὲ ἀφίκοντο παρὰ Ἀλέξανδρον τῶν Μαλλῶν τῶν ὑπολειπομένων πρέσβεις ἐνδι-
δόντες τὸ ἔθνος, καὶ παρὰ Ὀξύδρακῶν οἱ τε ἡγεμόνες τῶν πόλεων καὶ οἱ νομάρχαι αὐτοὶ καὶ
ἄλλοι ἅμα τούτοις ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα οἱ γνωριμώτατοι αὐτοκράτορες περὶ σπονδῶν δῶρά
τε ὅσα μέγιστα παρ' Ἰνδοῖς κομίζοντες καὶ τὸ ἔθνος καὶ οὗτοι ἐνδιδόντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 2, line

5

συγγνωστὰ δὲ ἁμαρτεῖν ἔφασαν οὐ πάλαι παρ' αὐτὸν πρεσβευσά-
μενοι· ἐπιθυμεῖν γάρ, ὥσπερ τινὲς ἄλλοι, ἔτι μᾶλλον αὐτοὶ ἐλευθερίας τε καὶ αὐτόνομοι εἶναι, ἥντινα ἐλευ-
θερίαν ἐξ ὅτου Διόνυσος ἐς Ἰνδοὺς ἤκε σῶαν σφίσιν εἶναι ἐς Ἀλέξανδρον· εἰ δὲ Ἀλεξάνδρῳ δοκοῦν ἐστίν, ὅτι
καὶ Ἀλέξανδρον ἀπὸ θεοῦ γενέσθαι λόγος κατέχει, σατράπην τε ἀναδέξασθαι, ὅντινα τάττοι
Ἀλέξανδρος, καὶ φόρους ἀποίσειν τοὺς Ἀλεξάνδρῳ δόξαντας· δίδοναι δὲ καὶ ὁμήρους ἐθέλειν ὅσους
ἂν αἰτῇ Ἀλέξανδρος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 3, line

4

ὁ δὲ χιλίους ἤτησε τοὺς κρατιστεύοντας τοῦ ἔθνους, οὓς, εἰ μὲν βούλοιτο, ἀντὶ ὁμήρων καθε-
ξείν, εἰ δὲ μή, ξυστρατεύοντας ἔξιν ἔστ' ἂν διαπολεμηθῇ αὐτῷ πρὸς τοὺς ἄλλους Ἰνδοὺς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 5, line

1

Ὡς δὲ ταῦτα αὐτῷ κεκόσμητο καὶ πλοῖα ἐπὶ τῇ διατριβῇ τῇ ἐκ τοῦ τραύματος πολλὰ
προσενεναυπή-
γητο, ἀναβιβάσας ἐς τὰς ναῦς τῶν μὲν ἐταίρων ἱππέας ἐπτακοσίους καὶ
χιλίους, τῶν ψιλῶν δὲ ὅσους περ καὶ πρότερον, πεζοὺς δὲ ἐς μυρίους, ὀλίγον μὲν τι τῷ Ὑδραῳτῇ
ποταμῷ κατέπλευσεν, ὥς δὲ συνέμιξεν ὁ Ὑδραῳτῆς τῷ Ἀκεσίνῃ, ὅτι ὁ Ἀκεσίνης κρατεῖ τοῦ
Ὑδραῳτου [ἐν] τῇ ἐπωνυμίᾳ, κατὰ τὸν Ἀκεσίνην αὐτῷ ἐπλει, ἔστω ἐπὶ τὴν ξυμβολὴν τοῦ Ἀκεσίνου
καὶ τοῦ Ἰνδοῦ ἦκεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 5, line

2

τέσσαρες γὰρ οὗτοι μεγάλοι ποταμοὶ καὶ ναυσίποροι οἱ τέσσαρες εἰς τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν
τὸ ὕδωρ ξυμβάλλουσιν, οὐ ξὺν τῇ σφετέρᾳ ἑκαστος ἐπω-
νυμία, ἀλλὰ ὁ Ὑδάσπης μὲν ἐς τὸν
Ἀκεσίνην ἐμβάλλει, ἐμβαλὼν δὲ τὸ πᾶν ὕδωρ Ἀκεσίνην παρέχεται καλού-
μενον· αὐτῆς δὲ ὁ Ἀκεσίνης οὗτος ξυμβάλλει τῷ Ὑδραῳτῇ, καὶ παραλαβὼν τοῦτον ἔτι Ἀκεσίνης ἐστί· καὶ
τὸν Ὑφασιν ἐπὶ τούτῳ ὁ Ἀκεσίνης παραλαβὼν τῷ αὐτοῦ δὴ ὀνόματι ἐς τὸν Ἰνδὸν ἐμβάλλει·
ξυμβαλὼν δὲ ξυγχαρεῖ δὴ τῷ Ἰνδῷ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 14, section 5, line

10

ἐνθεν δὲ ὁ Ἰνδὸς πρὶν ἐς τὸ Δέλτα σχισθῆναι οὐκ ἀπιστῶ ὅτι καὶ ἐς ἑκατὸν σταδίους ἔρχεται
καὶ ὑπὲρ τοὺς ἑκατὸν τυχόν, ἵνα περ λιμνάζει μᾶλλον.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 1, line 2

Ἐνταῦθα ἐπὶ ταῖς ξυμβολαῖς τοῦ Ἀκεσίνου καὶ Ἰνδοῦ προσέμενεν ἔστε ἀφίκετο αὐτῷ ξὺν τῇ στρατιᾷ Περδίκκας καταστρεψάμενος ἐν παρόδῳ τὸ Ἀβαστανῶν ἔθνος αὐτόνομον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 1, line 7

ἐν τούτῳ δὲ ἄλλαι τε προσγίγνονται Ἀλεξάνδρῳ τριακόντοροι καὶ πλοῖα στρογγύλα ἄλλα, ἃ δὲ ἐν Ξάθροις ἐναυπηγήθη αὐτῷ, καὶ <Σόγδοι> ἄλλο ἔθνος Ἰνδῶν αὐτόνομον προσεχώρησαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 1, line 8

καὶ παρὰ Ὀσσαδίων, καὶ τούτου γένους αὐτονόμου Ἰνδικοῦ, πρέσβεις ἦκον, ἐνδιδόντες καὶ οὗτοι τοὺς Ὀσσαδίους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 2, line 3

Φιλίππῳ μὲν δὴ τῆς σατραπείας ὅρους ἔταξε τὰς συμβολὰς τοῦ τε Ἀκεσί- νου καὶ Ἰνδοῦ καὶ ἀπολείπει ξὺν αὐτῷ τοὺς τε Θρᾷκας πάντας καὶ ἐκ τῶν τάξεων ὅσοι ἐς φυλακὴν τῆς χώρας ἱκανοὶ ἐφαίνοντο, πόλιν τε ἐνταῦθα κτίσαι ἐκέλευσεν ἐπ' αὐτῇ τῇ ξυμβολῇ τοῖν ποταμοῖν, ἐλπίσας μεγάλην τε ἔσεσθαι καὶ ἐπιφανῆ ἐς ἀνθρώπους, καὶ νεωσοίκους ποιηθῆναι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 4, line 3

Ἐνθα δὲ διαβιβάσας Κρατερὸν τε καὶ τῆς στρα- τιᾶς τὴν πολλὴν καὶ τοὺς ἐλέφαντας ἐπ' ἀριστερὰ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ, ὅτι εὐπορώτερά τε ταύτῃ τὰ παρὰ τὸν ποταμὸν στρατιᾷ βαρεῖα ἐφαίνετο καὶ τὰ ἔθνη τὰ προσοικούντα οὐ πάντῃ φίλια ἦν, αὐτὸς κατέπλει ἐς τῶν Σόγδων τὸ βασίλειον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 4, line 9

τῆς δὲ ἀπὸ τῶν ξυμβολῶν τοῦ τε Ἰνδοῦ καὶ Ἀκεσίνου χώρας ἔστε ἐπὶ θάλασσαν σατράπην ἀπέδειξε[ν Ὀξυάρτην καὶ] Πείθωνα ξὺν τῇ παραλίᾳ πάσῃ τῆς Ἰνδῶν γῆς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 5, line 4

Καὶ Κρατερὸν μὲν ἐκπέμπει αὖθις ξὺν τῇ στρατιᾷ [διὰ τῆς Ἀραχωτῶν καὶ Δραγγῶν γῆς], αὐτὸς δὲ κατέπλει ἐς τὴν Μουσικανοῦ ἐπικράτειαν, ἥντινα εὐδαιμονεστάτην τῆς Ἰνδῶν γῆς εἶναι ἐξηγγέλλετο, ὅτι οὐπῶ οὔτε ἀπνητῆκε αὐτῷ Μουσικανὸς ἐνδιδούς αὐτόν τε καὶ τὴν χώραν οὔτε πρέσβεις ἐπὶ φιλίᾳ ἐκπέμπει, οὐδέ τι οὔτε αὐτὸς ἐπεπόμφει ἃ δὲ μεγάλῃ βασιλεῖ εἰκός, οὔτε τι ἡτῆκε ἐξ Ἀλεξάνδρου.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 15, section 6, line 7

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

οὕτω δὴ ἐκπλαγείς κατὰ τάχος ἀπήντα Ἀλεξάνδρῳ, δῶρά τε τὰ πλείστου ἄξια παρ' Ἰνδοῖς κομίζων καὶ τοὺς ἐλέφαντας ξύμπαντας ἄγων καὶ τὸ ἔθνος τε καὶ αὐτὸν ἐνδιδούς καὶ ὁμολογῶν ἀδικεῖν, ὅπερ μέγιστον παρ' Ἀλεξάνδρῳ ἦν ἐς τὸ τυχεῖν ὧν τις δέοιτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 16, section 2, line 7

ὁ δὲ τὴν μὲν λείαν τῇ στρατιᾷ δίδωσι, τοὺς ἐλέφαντας δὲ ἅμα οἱ ἤγε· καὶ <αἱ> ἄλλαι δὲ πόλεις αὐτῷ αἱ ἐν τῇ αὐτῇ χώρᾳ ἐνεδίδοντο ἐπιόντι οὐδὲ τις ἐτρέπετο ἐς ἀλκὴν· οὕτω καὶ Ἰνδοὶ πάντες ἐδεδούλωντο ἥδη τῇ γνώμῃ πρὸς Ἀλεξάνδρου τε καὶ τῆς Ἀλεξάνδρου τύχης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 16, section 3, line 1

Ὁ δὲ ἐπὶ Σάμβον αὖ ἤγε τῶν ὀρείων Ἰνδῶν σατράπην ὑπ' αὐτοῦ κατασταθέντα, ὃς πεφευγέναι αὐτῷ ἐξηγγέλλετο ὅτι Μουσικανὸν ἀφειμένον πρὸς Ἀλεξάνδρου ἐπύθετο καὶ τῆς χώρας τῆς αὐτοῦ ἄρχοντα· τὰ γὰρ πρὸς Μουσικανὸν αὐτῷ πολέμια ἦν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 16, section 5, line 2

ὁ δὲ καὶ ἄλλην πόλιν ἐν τούτῳ ἀποστᾶσαν εἶλεν καὶ τῶν Βραχμάνων, οἳ δὴ σοφισταὶ τοῖς Ἰνδοῖς εἰσιν, ὅσοι αἴτιοι τῆς ἀποστάσεως ἐγένοντο ἀπέκτεινεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 16, section 5, line 4

ὑπὲρ ὧν ἐγὼ τῆς σοφίας, εἰ δὴ τίς ἐστιν, ἐν τῇ Ἰνδικῇ ξυγγραφῇ δηλώσω.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 17, section 2, line 7

ἀφίκετο δὲ αὐτῷ καὶ ὁ τῶν Πατάλων τῆς χώρας ἄρχων, ὃ δὴ τὸ Δέλτα ἔφην εἶναι τὸ πρὸς τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ἰνδοῦ ποιούμενον, μείζον ἔτι τοῦ Δέλτα τοῦ Αἰγυπτίου, καὶ οὗτος τὴν τε χώραν αὐτῷ ἐνεδίδου πᾶσαν καὶ αὐτόν τε καὶ τὰ αὐτοῦ ἐπέτρεψεν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 17, section 4, line 5

.... Ἡφαιστίων ἐπετάχθη, Πείθωνα δὲ τοὺς τε ἵππακοντιστὰς ἄγοντα καὶ τοὺς Ἀγριαῖνας ἐς τὴν ἐπέκεινα ὄχθην τοῦ Ἰνδοῦ διαβιβάσας, οὐχ ἥπερ Ἡφαιστίων τὴν στρατιὰν ἄγειν ἤμελλε, τὰς τε ἐκ- τετειχισμένας ἥδη πόλεις ξυνοικίσαι ἐκέλευσε καὶ εἰ δὴ τινα νεωτερίζοιτο πρὸς τῶν ταύτῃ Ἰνδῶν καὶ ταῦτα ἐς κόσμον καταστήσαντα ξυμβάλλειν οἱ ἐς τὰ Πάταλα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 18, section 2, line 1

Περὶ δὲ τοῖς Πατάλοις σχίζεται τοῦ Ἰνδοῦ τὸ ὕδωρ ἐς <δύο> ποταμούς μεγάλους, καὶ οὗτοι ἀμφό- τεροι σώζουσι τοῦ Ἰνδοῦ τὸ ὄνομα ἔστε ἐπὶ τὴν θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 18, section 4, line 2

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

οὐκ ἔχοντι δὲ αὐτῷ ἡγεμόνα τοῦ πλοῦ, ὅτι πεφεύγεσαν οἱ ταύτη Ἰνδοί, ἀπορώτερα τὰ τοῦ κατὰπλου ἦν· χειμῶν τε ἐπιγίγνεται ἐς τὴν ὑστεραίαν ἀπὸ τῆς ἀναγωγῆς καὶ ὁ ἄνεμος τῷ ῥόῳ πνέων ὑπεναντίος κοῖλόν τε ἐποίει τὸν ποταμὸν καὶ τὰ σκάφη διέσειεν, ὥστε ἐπὶ πόνῳ αὐτῷ αἱ πλεῖσται τῶν νεῶν, τῶν δὲ τριακοντόρων ἔστιν αἱ καὶ πάντῃ διελύθησαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 18, section 5, line 4

καὶ τῶν ψιλῶν τοὺς κουφοτάτους ἐκπέμψας ἐς τὴν προσωτέρω τῆς ὄχθης χώραν ξυλ- λαμβάνει τινὰς τῶν Ἰνδῶν, καὶ οὗτοι τὸ ἀπὸ τοῦδε ἐξηγοῦντο αὐτῷ τὸν πόρον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 19, section 5, line 1

αὐτὸς δὲ ὑπερβαλὼν τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὰς ἐκβολὰς ἐς τὸ πέλαγος ἀνέπλει, ὡς μὲν ἔλεγεν, ἀπιδεῖν εἰ ποῦ τις χώρα πλησίον ἀνίσχει ἐν τῷ πόντῳ, ἐμοὶ δὲ δοκεῖ, οὐχ ἡκιστα ὡς πεπλευκέναι τὴν μεγάλην τὴν ἔξω Ἰνδῶν θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 20, section 1, line 9

Ἡφαιστίων μὲν δὴ ἐτάχθη παρασκευάζειν τὰ πρὸς τὸν ἐκτειχισμὸν τε τοῦ ναυ- στάθμου καὶ τῶν νεωσοίκων τὴν κατασκευὴν· καὶ γὰρ καὶ ἐνταῦθα ἐπενόει στόλον ὑπολείπεσθαι νεῶν οὐκ ὀλίγων πρὸς τῇ πόλει τοῖς Πατάλοις, ἵνα περ ἐσχίζετο ὁ ποταμὸς ὁ Ἰνδός.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 20, section 2, line 1

Αὐτὸς δὲ κατὰ τὸ ἕτερον στόμα τοῦ Ἰνδοῦ κατ- ἔπλει αὖθις ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν, ὡς καταμαθεῖν, ὅπῃ εὐπωρότερα ἢ ἐκβολὴ τοῦ Ἰνδοῦ ἐς τὸν πόντον γίγνεται· ἀπέχει δὲ ἀλλήλων τὰ στόματα τοῦ ποταμοῦ τοῦ Ἰνδοῦ ἐς σταδίους μάλιστα ὀκτακοσίους καὶ χιλίους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 20, section 4, line 3

προσορμισθεὶς οὖν κατὰ τὴν λίμνην ἵνα περ οἱ καθηγεμόνες ἐξηγοῦντο, τῶν μὲν στρατιωτῶν τοὺς πολλοὺς καταλείπει σὺν Λεοννάτῳ αὐτοῦ καὶ τοὺς κερκούρους ξύμπαντας, αὐτὸς δὲ ταῖς τριακοντόροις τε καὶ ἡμιολίαις ὑπερβαλὼν τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἰνδοῦ καὶ προελθὼν καὶ ταύτῃ ἐς τὴν θάλασσαν εὐπωρότεραν τε κατέμαθεν τὴν ἐπὶ τάδε τοῦ Ἰνδοῦ ἐκβολὴν καὶ αὐτὸς προσορμισθεὶς τῷ αἰγιαλῷ καὶ τῶν ἱππέων τινὰς ἅμα οἱ ἔχων παρὰ θάλασσαν ἦει στα- θμοὺς τρεῖς, τὴν τε χώραν ὅποια τίς ἐστιν ἢ ἐν τῷ παράπλῳ ἐπισκεπτόμενος καὶ φρέατα ὀρύσσεσθαι κελεύων, ὅπως ἔχοιεν ὑδρεύεσθαι οἱ πλεόντες.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 21, section 3, line 11

ἐκεῖθεν δὲ ἀναλαβὼν τῶν ὑπασπι- στῶν τε καὶ τῶν τοξοτῶν τοὺς ἡμίσεας καὶ τῶν πεζε- ταίρων καλουμένων τὰς τάξεις καὶ τῆς ἵππου τῆς ἑταιρικῆς τό τε ἄγλημα καὶ ἵλην ἀφ' ἐκάστης ἱππαρχίας καὶ τοὺς ἱπποτοξότας ξύμπαντας ὡς ἐπὶ τὴν θάλασσαν ἐς ἀριστερὰ ἐτράπετο, ὕδατά τε ὀρύσσειν, ὡς κατὰ τὸν παράπλου ἀφθονὰ εἴη τῇ στρατιᾷ τῇ παραπλεύσει, καὶ

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

ἄμα ὡς τοῖς Ὀρεΐταις τοῖς ταύτῃ Ἰνδοῖς αὐτονόμοις ἐκ πολλοῦ οὖσιν ἄφνω ἐπιπесεῖν, ὅτι μηδὲν φίλιον αὐτοῖς ἐς αὐτόν τε καὶ τὴν στρατιὰν ἐπέπρακτο.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 24, section 2, line 5

οὐ μὴν ἀγνοήσαντα Ἀλέξανδρον τῆς ὁδοῦ τὴν χαλεπότητα ταύτῃ ἐλθεῖν, τοῦτο μὲν μόνος Νέαρχος λέγει ὧδε, ἀλλὰ ἀκούσαντα γὰρ ὅτι οὐπὼ τις πρόσθεν διελθὼν ταύτῃ ζὺν στρατιᾷ ἀπεσώθη, ὅτι μὴ Σεμίραμις ἐξ Ἰνδῶν ἔφυγε.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 24, section 3, line 2

ἐλθεῖν γὰρ δὴ καὶ Κῦρον ἐς τοὺς χώρους τούτους ὡς ἐσβαλοῦντα ἐς τὴν Ἰνδῶν γῆν, φθάσαι δὲ ὑπὸ τῆς ἐρημίας τε καὶ ἀπορίας τῆς ὁδοῦ ταύτης ἀπολέσαντα τὴν πολλὴν τῆς στρατιᾶς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 25, section 4, line 4

ἔεται γὰρ ἡ Γαδρωσίων γῆ ὑπ' ἀνέμων τῶν ἐτησίων, καθάπερ οὖν καὶ ἡ Ἰνδῶν γῆ, οὐ τὰ πεδία τῶν Γαδρωσίων, ἀλλὰ τὰ ὄρη, ἵναπερ προσ- φέρονταί τε αἱ νεφέλαι ἐκ τοῦ πνεύματος καὶ ἀνα- χέονται, οὐχ ὑπερβάλλουσαι τῶν ὀρῶν τὰς κορυφάς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 27, section 2, line 3

ἤδη τε ἐπὶ Καρμανίας προῦ- χώρει ὁ βασιλεὺς καὶ ἀγγέλλεται αὐτῷ Φίλιππον τὸν σατράπην τῆς Ἰνδῶν γῆς ἐπιβουλευθέντα πρὸς τῶν μισθοφόρων δόλῳ ἀποθανεῖν, τοὺς δὲ ἀποκτείναντας ὅτι οἱ σωματοφύλακες τοῦ Φιλίππου οἱ Μακεδόνες τοὺς μὲν ἐν αὐτῷ τῷ ἔργῳ, τοὺς δὲ καὶ ὕστερον λαβόντες ἀπέκτειναν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 27, section 2, line 8

ταῦτα δὲ ὡς ἔγνω, ἐκπέμπει γράμματα ἐς Ἰνδοὺς παρὰ Εὐδαμόν τε καὶ Ταξίλῃν ἐπιμελεῖσθαι τῆς χώρας τῆς πρόσθεν ὑπὸ Φιλίππῳ τεταγμένης ἔστ' ἂν αὐτὸς σατράπην ἐκπέμψῃ ἐπ' αὐτῆς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 28, section 2, line 2

Ἦδη δὲ τινες καὶ τοιάδε ἀνέγραψαν, οὐ πιστὰ ἐμοὶ λέγοντες, ὡς συζεύξας δύο ἄρμαμάξας κατακεῖ- μενος ζὺν τοῖς ἐταίροις καταυλούμενος τὴν διὰ Καρ- μανίας ἦγεν, ἡ στρατιὰ δὲ αὐτῷ ἐστεφανωμένη τε καὶ παίζουσα εἶπετο, προῦκειτο δὲ αὐτῇ σῖτά τε καὶ ὅσα ἄλλα ἐς τρυφὴν παρὰ τὰς ὁδοὺς συγκεκομισμένα πρὸς τῶν Καρμανίων, καὶ ταῦτα πρὸς μίμησιν τῆς Διονύσου βακχείας ἀπεικάσθη Ἀλεξάνδρῳ, ὅτι καὶ ὑπὲρ ἐκείνου λόγος ἐλέγετο καταστρεφόμενον Ἰνδοὺς Διόνυσον οὕτω τὴν πολλὴν τῆς Ἀσίας ἐπελθεῖν, καὶ Θρίαμβόν τε αὐτὸν ἐπικληθῆναι τὸν Διόνυσον καὶ τὰς ἐπὶ ταῖς νίκαις ταῖς ἐκ πολέμου πομπὰς ἐπὶ τῷ αὐτῷ τούτῳ θρίαμβους.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 28, section 3, line 3

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ἀλλὰ ἐκεῖνα ἤδη Ἀριστοβούλῳ ἐπόμενος ξυγγράφω, θῦσαι ἐν Καρμανία Ἀλέξανδρον χαρί-
στηρια τῆς κατ' Ἰνδῶν νίκης καὶ ὑπὲρ τῆς στρατιᾶς, ὅτι ἀπεσώθη ἐκ Γαδρωσίων, καὶ ἀγῶνα
διαθεῖναι μουσικόν τε καὶ γυμνικόν· καταλέξει δὲ καὶ Πευκέσταν ἐς τοὺς σωματοφύλακας,
ἤδη μὲν ἐγνωκότα σατράπην κατα- στήσαι τῆς Περσίδος, ἐθέλοντα δὲ πρὸ τῆς σατρα-
πείας μηδὲ ταύτης τῆς τιμῆς καὶ πίστεως ἀπείρατον εἶναι ἐπὶ τῷ ἐν Μαλλοῖς ἔργῳ· εἶναι δὲ αὐτῷ
ἐπτά εἰς τότε σωματοφύλακας, Λεονάτον Ἀντέου, Ἡφαι- στίωνα τὸν Ἀμύντορος, Λυσίμα-
χον Ἀγαθοκλέους, Ἀρι- στόνουν Πεισαίου, τούτους μὲν Πελλαίους, Περδίκκαν

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 28, section 6, line 4

τούτον μὲν δὴ καταπέμπει αὐθις ἐκπερι- πλεύσοντα ἔστε ἐπὶ τὴν Σουσιανῶν τε γῆν καὶ
τοῦ Τίγρητος ποταμοῦ τὰς ἐκβολὰς· ὅπως δὲ ἐπλεύσθη αὐτῷ τὰ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ
ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν Περσικὴν καὶ τὸ στόμα τοῦ Τίγρητος, ταῦτα ἰδίᾳ ἀναγράψω αὐτῷ
Νεάρχῳ ἐπόμενος, ὡς καὶ τήνδε εἶναι ὑπὲρ Ἀλεξάνδρου Ἑλληνικὴν τὴν συγγραφὴν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 6, chapter 29, section 2, line 3

ὡς δὲ ἐπὶ τοῖς ὅροις ἦν τῆς Περσίδος, Φρασαόρτην μὲν οὐ κατέλαβε σατραπεύοντα ἔτι
(νόσῳ γὰρ τε- τελευτηκῶς ἐτύγχανεν ἐν Ἰνδοῖς ἔτι Ἀλεξάνδρου ὄντος), Ὀρξίνης δὲ ἐπεμέλετο τῆς
Περσίδος, οὐ πρὸς Ἀλεξ- άνδρου κατασταθείς, ἀλλ' ὅτι οὐκ ἀπηξίωσεν αὐτὸν ἐν κόσμῳ Πέρσας
διαφυλάττειν Ἀλεξάνδρῳ οὐκ ὄντος ἄλλου ἄρχοντος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 1, section 2, line 1
ARRIANOT ALEXANDROT ANABASEOS BIBLION EBDOMON

Ὡς δὲ ἐς Πασαργάδας τε καὶ ἐς Περσέπολιν ἀφίκετο Ἀλέξανδρος, πόθος λαμβάνει αὐτὸν
κατα- πλεῦσαι κατὰ τὸν Εὐφράτην τε καὶ κατὰ τὸν Τίγρητα ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν Περ-
σικὴν καὶ τῶν τε ποταμῶν ἰδεῖν τὰς ἐκβολὰς τὰς ἐς τὸν πόντον, καθάπερ τοῦ Ἰνδοῦ, καὶ τὴν
ταύτην θάλασσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 1, section 5, line 2

καὶ ἐπὶ τῷδε ἐπαινῷ τοὺς σοφιστὰς τῶν Ἰνδῶν, ὧν λέγουσιν ἔστιν οὓς κατα- ληφθέντας ὑπ'
Ἀλεξάνδρου ὑπαιθρίους ἐν λειμῶνι, ἵνα περ αὐτοῖς διατριβαὶ ἦσαν, ἄλλο μὲν οὐδὲν ποιῆσαι πρὸς
τὴν ὄψιν αὐτοῦ τε καὶ τῆς στρατιᾶς, κρούειν δὲ τοῖς ποσὶ τὴν γῆν ἐφ' ἧς βεβηκότες ἦσαν.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 2, section 2, line 4

ἐπεὶ καὶ ἐς Τάξιλα αὐτῷ ἀφικομένῳ καὶ ἰδόντι τῶν σοφι- στῶν <τῶν> 2 Ἰνδῶν τοὺς γυμνοὺς
πόθος ἐγένετο ξυν- εἶναι τινα οἱ τῶν ἀνδρῶν τούτων, ὅτι τὴν καρτερίαν αὐτῶν ἐθαύμασε· καὶ
ὁ μὲν πρεσβύτατος τῶν σοφιστῶν, ὅτου ὀμιληταὶ οἱ ἄλλοι ἦσαν, Δάνδαμις ὄνομα, οὔτε αὐτὸς
ἔφη παρ' Ἀλεξάνδρον ἦξειν οὔτε τοὺς ἄλλους εἶα, ἀλλὰ ὑποκρίνασθαι γὰρ λέγεται ὡς Διὸς
υἱὸς καὶ αὐτὸς εἶη, εἴπερ οὖν καὶ Ἀλέξανδρος, καὶ ὅτι οὔτε δέοιτό του τῶν παρ' Ἀλεξάνδρου,
ἔχει <ν> γὰρ οἱ εὖ τὰ παρόντα, καὶ ἅμα ὁρᾷ τοὺς ξὺν αὐτῷ πλανωμένους τοσαύτην γῆν καὶ
θάλασσαν ἐπ' ἀγαθῷ οὐδενί, μηδὲ

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 2, section 4, line 1

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

οὐτ' οὖν ποθεῖν τι αὐτὸς ὅτου κύριος ἦν Ἀλέξανδρος δοῦναι, οὔτε αὖ δεδιέναι, ὅτου κρατοῖη ἐκεῖνος, ἔστιν οὗ εἶργεσθαι· ζῶντι μὲν γάρ οἱ τὴν Ἰνδῶν γῆν ἐξ- ἀρκεῖν φέρουσιν τὰ ὠραῖα, ἀποθανόντα δὲ ἀπαλ- λαγήσεσθαι οὐκ ἐπιεικοῦς ξυνοίκου τοῦ σώματος.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 3, section 3, line 5

αὐτῷ δὲ παρασκευασθῆναι μὲν ἵππων, ὅτι βαδίσαι ἀδυνάτως εἶχεν ὑπὸ τῆς νόσου· οὐ μὴν δυνηθῆναι γε οὐδὲ τοῦ ἵππου ἐπιβῆναι, ἀλλὰ ἐπὶ κλίνης γὰρ κομισθῆναι φερόμενον, ἐστεφανω- μένον τε τῷ Ἰνδῶν νόμῳ καὶ ἄδοντα τῇ Ἰνδῶν γλώσσῃ.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 3, section 3, line 6

οἱ δὲ Ἰνδοὶ λέγουσιν ὅτι ὕμνοι θεῶν ἦσαν καὶ αὐτῶν ἔπαινοι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 3, section 6, line 8

ταῦτα καὶ τοιαῦτα ὑπὲρ Καλάνου τοῦ Ἰνδοῦ ἱκανοὶ ἀναγεγράφασιν, οὐκ ἀχρεῖα πάντα ἐς ἀνθρώπους, ὅτῳ γινῶναι ἐπιμελές, [ὅτι] ὡς καρτερόν τέ ἐστι καὶ ἀνίκητον γνώμη ἀνθρω- πίνη ὃ τι περ ἐθέλοι ἐξεργάσασθαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 4, section 2, line 4

πολλὰ μὲν δὴ ἐπεπλημμέλητο ἐκ τῶν κατεχόντων τὰς χώρας ὅσαι δορίκτητοι πρὸς Ἀλε- ξάνδρου ἐγένοντο ἐς τε τὰ ἱερὰ καὶ τάφους καὶ αὐτοὺς τοὺς ὑπηκόους, ὅτι χρόνιος ὁ εἰς Ἰνδοὺς στόλος ἐγγένητο τῷ βασιλεῖ καὶ οὐ πιστὸν ἐφαίνετο ἀπονοστήσειν αὐτὸν ἐκ τοσῶνδε ἐθνῶν καὶ τοσῶνδε ἐλεφάντων, ὑπὲρ τὸν Ἰνδὸν τε καὶ Ὑδάσπην καὶ τὸν Ἀκεσίνην καὶ Ὑφρασιν φθειρόμενον.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 5, section 5, line 2

καὶ ἐστεφάνωσε χρυσοῖς στεφάνοις τοὺς ἀνδραγαθία διαπρέποντας, πρῶτον μὲν Πευκέ- σταν τὸν ὑπερασπίσαντα, ἔπειτα Λεοννάτον, καὶ τοῦτον ὑπερασπίσαντα, καὶ διὰ τοὺς ἐν Ἰνδοῖς κινδύ- νους καὶ τὴν ἐν Ὠροῖς νίκην γενομένην, ὅτι παραταξά- μενος σὺν τῇ ὑπολειφθείσῃ δυνάμει πρὸς τοὺς νεωτερί- ζοντας τῶν τε Ὠρειτῶν καὶ τῶν πλησίον τούτων ὠκισμένων τῇ τε μάχῃ ἐκράτησε καὶ τὰ ἄλλα καλῶς ἔδοξε τὰ ἐν Ὠροῖς κοσμήσαι.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 5, section 6, line 2

ἐπὶ τούτοις δὲ Νέαρχον ἐπὶ τῷ περίπλῳ τῷ ἐκ τῆς Ἰνδῶν γῆς κατὰ τὴν μεγά- λην θάλασ- σαν ἐστεφάνωσε· καὶ γὰρ καὶ οὗτος ἤδη ἀφιγμένος ἐς Σοῦσα ἦν· ἐπὶ τούτοις δὲ Ὀνησίκριτον τὸν κυβερνήτην τῆς νεῶς τῆς βασιλικῆς· ἔτι δὲ Ἡφαιστίωνα καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς σωματοφύ- λακας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 9, section 8, line 6

σατράπας τοὺς Δαρείου τὴν τε Ἰωνίαν πᾶσαν τῇ ὑμέτερᾳ ἀρχῇ προσέθηκα καὶ τὴν Αἰο- λίδα πᾶσαν καὶ Φρύγας ἀμφοτέρους καὶ Λυδοὺς, καὶ Μίλητον εἶλον πολιορκία· τὰ δὲ ἄλλα πάντα ἐκόντα προσχωρήσαντα λαβὼν ὑμῖν καρποῦσθαι ἔδωκα· καὶ τὰ ἐξ Αἰγύπτου καὶ Κυρήνης ἀγαθὰ, ὅσα ἀμαχεῖ ἐκτησάμην, ὑμῖν ἔρχεται, ἢ τε κοίλῃ Συρία καὶ ἡ Παλαιστίνη καὶ ἡ μέση τῶν ποταμῶν ὑμέτερον κτήμᾳ εἰσι, καὶ Βαβυλῶν καὶ Βάκτρα καὶ Σοῦσα ὑμέ- τερα, καὶ ὁ Λυδῶν πλούτος καὶ οἱ Περσῶν θησαυροὶ καὶ τὰ Ἰνδῶν ἀγαθὰ καὶ ἡ ἔξω θάλασσα ὑμέτερα· ὑμεῖς σατράπαι, ὑμεῖς στρατηγοί, ὑμεῖς ταξιάρχαι.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 10, section 6, line 6

βούλεσθε, ἅπιτε πάντες, καὶ ἀπελθόντες οἴκοι ἀπαγ- γείλατε ὅτι τὸν βασιλέα ὑμῶν Ἀλέξανδρον, νικῶντα μὲν Πέρσας καὶ Μήδους καὶ Βακτρίους καὶ Σάκας, καταστρεφόμενον δὲ Οὐξίους τε καὶ Ἀραχωτοὺς καὶ Δράγγας, κεκτημένον δὲ καὶ Παρθυαίους καὶ Χορας- μίους καὶ Ὑρκανίους ἔστε ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν Κασπίαν, ὑπερβάντα δὲ τὸν Καύκασον ὑπὲρ τὰς Κασπίας πύλας, καὶ περάσαντα Ὁξον τε ποταμὸν καὶ Τάναϊν, ἔτι δὲ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν, οὐδενὶ ἄλλῳ ὅτι μὴ Διονύσῳ περαθέντα, καὶ τὸν Ὑδάσπην καὶ τὸν Ἀκεσίνην καὶ τὸν Ὑδραώτην, καὶ τὸν Ὑφασιν δια- περάσαντα ἄν, εἰ μὴ ὑμεῖς ἀπωκνήσατε, καὶ ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν κατ' ἀμφοτέρα τοῦ Ἰνδοῦ τὰ στόματα ἐμβалλόντα, καὶ διὰ τῆς Γαδρωσίας τῆς ἐρήμου ἐλθόντα, ἥ οὐδεὶς πω πρόσθεν σὺν στρατιᾷ ἦλθε, καὶ Καρμανίαν ἐν παρόδῳ προσκτησάμενον καὶ τὴν Ὠρει- τῶν γῆν, περιπεπλευκότος δὲ ἤδη αὐτῷ τοῦ ναυτικοῦ τὴν ἀπ' Ἰνδῶν γῆς εἰς Πέρσας θάλασσαν, ὡς εἰς

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 10, section 7, line 3

Δράγγας, κεκτημένον δὲ καὶ Παρθυαίους καὶ Χορας- μίους καὶ Ὑρκανίους ἔστε ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν Κασπίαν, ὑπερβάντα δὲ τὸν Καύκασον ὑπὲρ τὰς Κασπίας πύλας, καὶ περάσαντα Ὁξον τε ποταμὸν καὶ Τάναϊν, ἔτι δὲ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν, οὐδενὶ ἄλλῳ ὅτι μὴ Διονύσῳ περαθέντα, καὶ τὸν Ὑδάσπην καὶ τὸν Ἀκεσίνην καὶ τὸν Ὑδραώτην, καὶ τὸν Ὑφασιν δια- περάσαντα ἄν, εἰ μὴ ὑμεῖς ἀπωκνήσατε, καὶ ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν κατ' ἀμφοτέρα τοῦ Ἰνδοῦ τὰ στόματα ἐμβаллόντα, καὶ διὰ τῆς Γαδρωσίας τῆς ἐρήμου ἐλθόντα, ἥ οὐδεὶς πω πρόσθεν σὺν στρατιᾷ ἦλθε, καὶ Καρμανίαν ἐν παρόδῳ προσκτησάμενον καὶ τὴν Ὠρει- τῶν γῆν, περιπεπλευκότος δὲ ἤδη αὐτῷ τοῦ ναυτικοῦ τὴν ἀπ' Ἰνδῶν γῆς εἰς Πέρσας θάλασσαν, ὡς εἰς Σοῦσα ἐπανηγάγετε, ἀπολιπόντες οἵχεσθε, παραδόντες φυλάσσειν τοῖς νενικημένοις βαρβάροις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 10, section 7, line 8

Τάναϊν, ἔτι δὲ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν, οὐδενὶ ἄλλῳ ὅτι μὴ Διονύσῳ περαθέντα, καὶ τὸν Ὑδάσπην καὶ τὸν Ἀκεσίνην καὶ τὸν Ὑδραώτην, καὶ τὸν Ὑφασιν δια- περάσαντα ἄν, εἰ μὴ ὑμεῖς ἀπωκνήσατε, καὶ ἐς τὴν μεγάλην θάλασσαν κατ' ἀμφοτέρα τοῦ Ἰνδοῦ τὰ στόματα ἐμβаллόντα, καὶ διὰ τῆς Γαδρωσίας τῆς ἐρήμου ἐλθόντα, ἥ οὐδεὶς πω πρόσθεν σὺν στρατιᾷ ἦλθε, καὶ Καρμανίαν ἐν παρόδῳ προσκτησάμενον καὶ τὴν Ὠρει- τῶν γῆν, περιπεπλευκότος δὲ ἤδη αὐτῷ τοῦ ναυτικοῦ τὴν ἀπ' Ἰνδῶν γῆς εἰς Πέρσας θάλασσαν, ὡς εἰς Σοῦσα ἐπανηγάγετε, ἀπολιπόντες οἵχεσθε, παραδόντες φυλάσσειν τοῖς νενικημένοις βαρβάροις.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 16, section 2, line 5

πόθος γὰρ εἶχεν αὐτὸν καὶ ταύτην ἐκμαθεῖν τὴν θάλασσαν τὴν Κασπίαν τε καὶ Ὑρκανίαν καλουμένην ποῖα τινὶ ξυμβάλλει θαλάσση, πότερα τῇ τοῦ πόντου τοῦ Εὐξείνου ἢ ἀπὸ τῆς ἐφ' αὐτῇ τῆς κατ' Ἰνδοῦς ἐκπεριερχομένη ἢ μεγάλη θάλασσα ἀναχεῖται εἰς κόλπον τὸν Ὑρκανίον,

5.58. ARRIAN OF NICOMEDIA

καθάπερ οὖν καὶ τὸν Περσικὸν ἐξεῦρε, τὴν Ἐρυθρὰν δὴ καλουμένην θάλασσαν, κόλπον οὖσαν τῆς μεγάλης θαλάσσης.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 16, section 3, line 6

οὐ γάρ πω ἐξεύρηντο αἱ ἀρχαὶ τῆς Κασπίας θαλάσσης, καίτοι ἐθνῶν τε αὐτὴν <περι>οικούντων οὐκ ὀλίγων καὶ ποταμῶν πλοῖμων ἐμβαλλόντων ἐς αὐτήν· ἐκ Βάκτρων μὲν Ὅξος, μέγιστος τῶν Ἀσιανῶν ποταμῶν, πλήν γε δὴ τῶν Ἰνδῶν, ἐξήσιν ἐς ταύτην τὴν θάλασσαν, διὰ Σκυθῶν δὲ Ἰαξάρτης· καὶ τὸν Ἀράξην δὲ τὸν ἐξ Ἀρμενίων ῥέοντα ἐς ταύτην ἐσβάλλειν ὁ πλείων λόγος κατέχει.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 18, section 1, line 5

Ἐπεὶ καὶ τοῖόνδε τινὰ λόγον Ἀριστόβουλος ἀνα- γέγραφεν, Ἀπολλόδωρον τὸν Ἀμφιπολί- την τῶν ἐταίρων τῶν Ἀλεξάνδρου, στρατηγὸν τῆς στρατιᾶς ἣν παρὰ Μαζαίῳ τῷ Βαβυλωνος σατράπῃ ἀπέλιπεν Ἀλέξανδρος, ἐπειδὴ συνέμιξεν ἐπανιόντι αὐτῷ ἐξ Ἰνδῶν, ὁρῶντα πικρῶς τιμωρούμενον τοὺς σατράπας ὅσοι ἐπ' ἄλλῃ καὶ ἄλλῃ χώρα τεταγμένοι ἦσαν, ἐπιστεῖλαι Πειθαγόρα τῷ ἀδελφῷ, μάντιν γὰρ εἶναι τὸν Πειθαγόραν τῆς ἀπὸ σπλάγχχων μαντείας, μαντεύσασθαι καὶ ὑπὲρ αὐτοῦ τῆς σωτηρίας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 18, section 6, line 1

καὶ μὲν δὴ καὶ ὑπὲρ Καλλάνου τοῦ σοφιστοῦ τοῦ Ἰνδοῦ τοῖόσδε τις ἀναγέγραπται λόγος, ὁπότε ἐπὶ τὴν πυρὰν ἦεν ἀποθανούμενος, τότε τοὺς μὲν ἄλλους ἐταίρους ἀσπάζεσθαι αὐτόν, Ἀλεξάνδρῳ δὲ οὐκ ἐθελῆσαι προς- ελθεῖν ἀσπασόμενον, ἀλλὰ φάναι γὰρ ὅτι ἐν Βαβυλῶνι αὐτῷ ἐντυχὼν ἀσπάζεται.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 19, section 1, line 5

Παρελθόντι δ' αὐτῷ ἐς Βαβυλῶνα πρεσβεῖαι παρὰ τῶν Ἑλλήνων ἐνέτυχον, ὑπὲρ ὅτων μὲν ἕκαστοι πρεσ- βευόμενοι οὐκ ἀναγέγραπται, δοκεῖν δ' ἔμοιγε αἱ πολλαὶ στεφανούντων τε αὐτὸν ἦσαν καὶ ἐπαινούντων ἐπὶ ταῖς νίκαις ταῖς τε ἄλλαις καὶ μάλιστα ταῖς Ἰνδι- καῖς, καὶ ὅτι σῶος ἐξ Ἰνδῶν ἐπανήκει χαίρειν φα- σκόντων.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 20, section 1, line 6

Λόγος δὲ κατέχει ὅτι ἤκουεν Ἀραβας δύο μόνον τιμαῖν θεούς, τὸν Οὐρανὸν τε καὶ τὸν Διόνυσον, τὸν μὲν Οὐρανὸν αὐτόν τε ὁρῶμενον καὶ τὰ ἄστρα ἐν οἷ ἔχοντα τά τε ἄλλα καὶ τὸν ἥλιον, ἀφ' ὅτου μεγίστη καὶ φανοτάτη ὠφέλεια ἐς πάντα ἦκει τὰ ἀνθρώπεια, Διόνυσον δὲ κατὰ δόξαν τῆς ἐς Ἰνδοὺς στρατιᾶς.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 20, section 1, line 10

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

οὐκ οὖν ἀπαξιοῦν καὶ αὐτὸν τρίτον ἂν νομισθῆναι πρὸς Ἀράβων θεόν, οὐ φαυλότερα ἔργα Διονύσου ἀποδειξάμενον, εἴπερ οὖν καὶ Ἀράβων κρατήσας ἐπι-τρέψειεν αὐτοῖς, καθάπερ Ἰνδοῖς, πολιτεῦειν κατὰ τὰ σφῶν νόμιμα.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 20, section 2, line 7

τῆς τε χώρας ἡ εὐδαιμονία ὑπεκίνει αὐτόν, ὅτι ἤκουεν ἐκ μὲν τῶν λιμνῶν τὴν κασίαν γίγνεσθαι αὐτοῖς, ἀπὸ δὲ τῶν δένδρων τὴν σμύρναν τε καὶ τὸν λιβανωτόν, ἐκ δὲ τῶν θάμνων τὸ κιννάμωμον τέμνεσθαι, οἱ λειμῶνες δὲ ὅτι νάρδον αὐτόματοι ἐκφέρουσι· τό <τε> μέγεθος τῆς χώρας, ὅτι οὐκ ἐλάττων ἢ παράλιος τῆς Ἀραβίας ἤπερ ἡ τῆς Ἰνδικῆς αὐτῷ ἐξηγγέλλετο, καὶ νῆσοι αὐτῇ προσκειῖσθαι πολλαί, καὶ λιμένες πανταχοῦ τῆς χώρας ἐνεῖναι, οἳ παρασχεῖν μὲν ὄρμους τῷ ναυτικῷ, παρασχεῖν δὲ καὶ πόλεις ἐνοικισθῆναι καὶ ταύτας γενέσθαι εὐδαίμονας.

Flavius Arrianus Hist., Phil., Alexandri anabasis Book 7, chapter 20, section 8, line 8

ἦν μὲν γὰρ αὐτῷ προστεταγμένοι περιπλεῦσαι τὴν χερρόνησον τὴν Ἀράβων πᾶσαν ἔσπε ἐπὶ τὸν κόλπον τὸν πρὸς Αἰγύπτῳ τὸν Ἀράβιον τὸν καθ' Ἡρώων πόλιν· οὐ μὲν ἐτόλμησέ γε τὸ πρόσω ἐλθεῖν, καίτοι ἐπὶ τὸ πολὺ παραπλεύσας τὴν Ἀράβων γῆν· ἀλλ' ἀναστρέψας γὰρ παρ' Ἀλέξανδρον ἐξήγγειλεν τὸ μέγεθος τε τῆς χερρονήσου θαυμαστόν τι εἶναι καὶ ὅσον οὐ πολὺ ἀποδέον τῆς Ἰνδῶν γῆς, ἄκραν τε ἀνέχειν ἐπὶ πολὺ τῆς μεγάλης θαλάσσης· ἦν δὲ καὶ τοὺς σὺν Νεάρχῳ ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς πλέοντας, πρὶν ἐπικαμῆσαι ἐς τὸν κόλπον τὸν Περσικόν, οὐ πόρρω ἀνατείνουσιν ἰδεῖν τε καὶ παρ' ὀλίγον ἐλθεῖν διαβαλεῖν ἐς αὐτήν, καὶ Ὀνησικρίτῳ τῷ κυβερνήτῃ ταύτῃ δοκοῦν· ἀλλὰ Νεάρχος λέγει ὅτι αὐτὸς διεκώλυσεν, ὥς ἐκπεριπλεύσας τὸν κόλπον τὸν Περσικόν ἔχοι ἀπαγγεῖλαι Ἀλεξάνδρῳ ἐφ' οἷσιν πρὸς αὐτοῦ ἐστάλη· οὐ γὰρ ἐπὶ τῷ πλεῦσαι τὴν μεγάλην θάλασσαν ἐστάλθαι, ἀλλ'

5.59 Nicolaus of Damascus

5.59.1 About

Nicolaus of Damascus (Greek: Νικόλαος Δαμασκηνός, Nikolāos Damaskēnos) was a Greek[1] historian and philosopher who lived during the Augustan age of the Roman Empire. His name is derived from that of his birthplace, Damascus. He was born around 64 BC.[2]

He was an intimate friend of Herod the Great, whom he survived by a number of years. He was also the tutor of the children of Antony and Cleopatra (born in 40 BC), according to Sophronius.[3] He went to Rome with Herod Archelaus.[4]

5.59. NICOLAUS OF DAMASCUS

His output was vast, but is nearly all lost. His chief work was a universal history in 144 books. He also wrote an autobiography, a life of Augustus, a life of Herod, some philosophical works, and some tragedies and comedies.⁵⁸ (from Wikipedia)

One of the most famous passages is his account of an embassy sent by an Indian king "named Pandion (Pandyan kingdom?) or, according to others, Porus" to Augustus around AD 13. He met with the embassy at Antioch. The embassy was bearing a diplomatic letter in Greek, and one of its members was a sramana who burnt himself alive in Athens to demonstrate his faith. The event made a sensation and was quoted by Strabo[13] and Dio Cassius.[14: 54.9] A tomb was made to the sramana, still visible in the time of Plutarch, which bore the mention "ΖΑΡΜΑΝΟΧΗΓΑΣ ΙΝΔΟΣ ΑΠΟ ΒΑΡΓΟΣΗΣ" ("The sramana master from Barygaza in India"): [Quotation of Strabo *Geographica* 15.1.72–73.] ... This accounts suggests that it may not have been impossible to encounter an Indian religious man in the Levant during the time of Jesus. (From Wikipedia)

5.59.2 Indian embassy to Augustus

Story preserved in Strabo.

(72) προσθείη δ' ἂν τις τούτοις καὶ τὰ παρὰ τοῦ Δαμασκηνοῦ Νικολάου.
(73) Φησὶ γὰρ οὗτος ἐν Ἀντιοχείᾳ τῇ ἐπὶ Δάφνῃ παρατυχεῖν τοῖς Ἰνδῶν πρέσβεσιν ἀφιγμένοις παρὰ Καίσαρα τὸν Σεβαστόν· οὓς ἐκ μὲν τῆς ἐπιστολῆς πλείους δηλοῦσθαι, σωθῆναι δὲ τρεῖς μόνους, οὓς ἰδεῖν φησι, τοὺς δ' ἄλλους ὑπὸ μήκους τῶν ὁδῶν διαφθαρῆναι τὸ πλέον· τὴν δ' ἐπιστολὴν ἐλληνίζειν ἐν διφθέρα γεγραμμένην, δηλοῦσαν ὅτι Πῶρος εἶη ὁ γράψας, ἑξακοσίων δὲ ἄρχων βασιλέων ὁμῶς περὶ πολ-
λοῦ ποιοῖτο φίλος εἶναι Καίσαρι, καὶ ἔτοιμος εἶη δίοδόν τε παρέχειν ὅπῃ βούλεται καὶ συμπράττειν ὅσα καλῶς ἔχει. ταῦτα μὲν ἔφη λέγειν τὴν ἐπιστολὴν, τὰ δὲ κομισθέντα δῶρα προσενεγκεῖν ὁκτὼ οἰκέτας γυμνοὺς, ἐν περιζώμασι καταπεπα-
σμένους ἀρώμασιν· εἶναι δὲ τὰ δῶρα τὸν τε ἑρμᾶν, ἀπὸ τῶν ὤμων ἀφηρημένον ἐκ νηπίου τοὺς βραχίονας, ὃν καὶ ἡμεῖς εἶδομεν, καὶ ἐχίδνας μεγάλας καὶ ὄφιν πηχῶν δέκα καὶ χελώνην ποταμίαν τρίπηχυν πέρδικά τε μείζω γυπός. συνῆν δέ, ὥς φησι, καὶ ὁ Ἀθήνησι κατακαύσας ἑαυτόν· ποιεῖν δὲ τοῦτο τοὺς μὲν ἐπὶ κακοπραγία

58. From Wikipedia.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

ζητοῦντας ἀπαλλαγὴν τῶν παρόντων, τοὺς δ' ἐπ' εὐπραγίᾳ, καθάπερ τοῦτον·
ἅπαντα γὰρ κατὰ γνώμην πράξαντα μέχρι νῦν ἀπιέναι δεῖν, μή τι τῶν ἀβουλή-
των χρονίζοντι συμπέσοι· καὶ δὴ καὶ γελῶντα ἀλέσθαι γυμνὸν λίπ' ἀλλημιμένον
ἐν περιζώματι ἐπὶ τὴν πυράν· ἐπιγεγράφθαι δὲ τῷ τάφῳ “Ζαρμανοχηγὰς Ἰν-
δὸς ἀπὸ Βαργόσης κατὰ τὰ πάτρια Ἰνδῶν ἔθνη ἑαυτὸν ἀπαθανατίσας κεῖται.”
(Strabo *Geographica* 15.1.72–73)

59

See also the Dio Cassius version of this (54.9).

5.60 Augustus

5.60.1 Res gestae

As published in the Loeb Classical Library, 1924.⁶⁰

5.60.1.1 Latin

(31) Ad me ex India regum legationes saepe missae sunt, nunquam antea visae 51
apud quemquam Romanorum ducem. § Nostram amicitiam petierunt 52 per legatos
Bastarnae Scythaeque et Sarmatarum qui sunt citra flumen 53 Tanaim et ultrá reges,
Albanorumque réx et Hibérorum et Medorum.

5.60.1.2 Greek

As published in the Loeb Classical Library, 1924.⁶¹ (31) Πρὸς ἐμὲ ἐξ Ἰνδίας βασιλέων
πρεσβεῖαι πολλάκις ἀπεστάλησαν, οὐδέποτε πρὸ τούτου χρόνου ὀφθεῖσαι παρὰ 18 Ῥωμαίων
ἡγεμόνι. § Τὴν ἡμετέραν φιλίαν ἠξίωσαν διὰ πρέσβεων § Βαστάρναι καὶ Σκύθαι καὶ Σαρμα-
τῶν οἱ ἐπιτάδε ὄντες τοῦ Τανάϊδος ποταμοῦ καὶ οἱ πέραν δὲ βασιλεῖς, καὶ Ἀλβανῶν δὲ καὶ
Ἰβήρων καὶ Μήδων βασιλεῖς.

5.60.1.3 English

(31) Embassies were often sent to me from the kings of India, a thing never seen
before in the camp of any general of the Romans. Our friendship was sought, through

59. Strabo text from Meineke (1877).

60. http://penelope.uchicago.edu/Thayer/E/Roman/Texts/Augustus/Res_Gestae/1*.html.

61. http://penelope.uchicago.edu/Thayer/E/Roman/Texts/Augustus/Res_Gestae/1*.html.

5.61. ARETAEUS OF CAPPADOCIA

ambassadors, by the Bastarnae and Scythians, and by the kings of the Sarmatians who live on either side of the river Tanais, and by the king of the Albani and of the Hiberi and of the Medes.

5.61 Aretaeus of Cappadocia

Aretaeus (Ἀρεταῖος), is one of the most celebrated of the ancient Greek physicians, of whose life, however, few particulars are known. There is some uncertainty regarding both his age and country, but it seems probable that he practised in the 1st century CE, during the reign of Nero or Vespasian. He is generally styled "the Cappadocian" (Καππαδόξ). (From Wikipedia.⁶²)

Aretaeus Med., De causis et signis acutorum morborum (lib. 2) (0719: 002) "Aretaeus, 2nd edn.", Ed. Hude, K. Berlin: Akademie-Verlag, 1958; Corpus medicorum Graecorum, vol. 2.

Aretaeus Med., De curatione acutorum morborum libri duo Book 2, chapter 10, section 4, line 4

τοιγαρῶν καὶ τοῖσι προσθέτοισι εὐώδεσι ἐς τὴν χώραν ἐπιβλητέον τῆς ὑστέρης, μύρον ὁκοῖον ἂν ἔῃ προσηνές, ἥδὲ ἄδηκτον τὴν ἀφὴν, νάρδον ἢ βάκχαρι τὸ Αἰγύπτιον ἢ τὸ διὰ τῶν φύλλων τοῦ μαλαβάθρου, τοῦ δένδρεος τοῦ Ἰνδικοῦ, ἢ κινάμωμον κοπὲν ζὺν τῶν εὐόσμων τινὶ λίπαι· ἐγχρῆειν δὲ τὰδε τοῖσι γυναικῆ-οῖσι χώροις.

5.62 Plutarch

This is pseudo-Plutarch? Cites Dercyllus – find info on him.

[Dercyllus] Hist., Fragmenta (2196: 002) "FHG 4", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 8, line 2

E LIBRO TERTIO.

Plutarch. De fluv. I, 4: Ἀλεξάνδρου τοῦ Μακε- δόνος μετὰ στρατεύματος εἰς Ἰνδίαν ἐλ- θόντος, καὶ τῶν ἐγχωρίων κρίσιν ἐχόντων ἀντιπολεμεῖν αὐτῷ, Πάρου τοῦ βασιλέως τῶν τόπων ἐλέφας αἰφνιδίως οἰστροπλήξ γενόμενος, ἐπὶ τὸν Ἥλιον λόφον ἀνέβη, καὶ ἀνθρωπίνῃ φωνῇ χρησάμενος εἶπεν· Δέσποτα βασιλεῦ, τὸ γένος ἀπὸ Γηγασίου κατὰγων, μηδὲν ἐξ ἐναντίας Ἀλεξάνδρου ποιήσης· Διὸς γάρ ἐστι Γηγάσιος.

62. http://en.wikipedia.org/wiki/Aretaeus_of_Cappadocia.

5.63 Appian

Appian of Alexandria (play /'æpiən/; Ancient Greek: Ἀππιανός Ἀλεξανδρεύς, Appianós Alexandreús; Latin: Appianus Alexandrinus; ca. AD 95 – ca. AD 165) was a Roman historian of Greek ethnicity who flourished during the reigns of Emperors of Rome Trajan, Hadrian, and Antoninus Pius. (From Wikipedia.⁶³)

Appianus Hist., Iberica (0551: 007) “Appiani historia Romana, vol. 1”, Ed. Viereck, P., Roos, A.G., Gabba, E. Leipzig: Teubner, 1939, Repr. 1962 (1st edn. corr.). Section 147, line 2

ὧδε μὲν τὸ στρατόπεδον καθίστατο τῷ Σκιπίωνι· Ἰνδὶβίλις δέ, τῶν συνθεμένων τις αὐτῶ
δυναστῶν, στα- σιαζούσης ἔτι τῆς Ῥωμαϊκῆς στρατιᾶς κατέδραμὲν τι τῆς ὑπὸ τῷ Σκιπίωνι
γῆς.

Appianus Hist., Iberica Section 156, line 1

καὶ Σκιπίων μὲν θαυμαζόμενος ἐθριάμβευεν, Ἰνδὶ- βίλις δ' οἰχομένου τοῦ Σκιπίωνος αὐθις
ἀφίστατο.

Appianus Hist., Annibaica (0551: 008) “Appiani historia Romana, vol. 1”, Ed. Viereck, P., Roos, A.G., Gabba, E. Leipzig: Teubner, 1939, Repr. 1962 (1st edn. corr.). Section 176, line 3

ὁ δ' ἐπιτηρήσας νύκτα ἀσέληνον καὶ χωρίον, ἐν ᾧ Φούλβιος ἐσπέρας τεῖχος μὲν οὐκ ἔφθανεν
ἐγείραι, τὰ- φρον δ' ὀρυζάμενος καὶ διαστήματα ἀντὶ πυλῶν κατα- λιπὼν καὶ τὸ χῶμα
προβαλὼν ἀντὶ τείχους ἡσύχαζεν, ἔς τε λόφον ὑπερκείμενον αὐτοῦ καρτερόν ἐπεμψε λα- θῶν
ἰππέας, οἷς εἴρητο ἡσυχάζειν, ἕως οἱ Ῥωμαῖοι τὸν λόφον ὡς ἔρημον ἀνδρῶν καταλαμβάνωσι,
τοῖς δ' ἐλέφασιν τοὺς Ἰνδοὺς ἐπιβήσας ἐκέλευσεν ἐς τὸ τοῦ Φουλβίου στρατόπεδον ἐσβιάζεσθαι
διὰ τε τῶν διαστημάτων καὶ διὰ τῶν χωμάτων, ὡς δύναιτο.

Appianus Hist., Libyca (0551: 009) “Appiani historia Romana, vol. 1”, Ed. Viereck, P., Roos, A.G., Gabba, E. Leipzig: Teubner, 1939, Repr. 1962 (1st edn. corr.). Section 324, line 5

αἴτιον δ' ἴσως ὁ τε χειμῶν οὐ πολὺ κρύος ἔχων, ὅφ' οὐ φθείρεται πάντα, καὶ τὸ θέρος οὐ
κατακαῖον ὥσπερ Αἰθιοπίας τε καὶ Ἰνδοῦς.

Appianus Hist., Syriaca (0551: 013) “Appiani historia Romana, vol. 1”, Ed. Viereck, P., Roos, A.G., Gabba, E. Leipzig: Teubner, 1939, Repr. 1962 (1st edn. corr.). Section 281, line 7

ἐφεδρεύων δὲ αἰεὶ τοῖς ἐγγύς ἔθνεσι καὶ δυνατὸς ὢν βιάσασθαι καὶ πιθανὸς προσαγαγέσθαι
ἤρξε Μεσοποταμίας καὶ Ἀρμενίας καὶ Καππαδοκίας τῆς Σελευκίδος λεγομένης καὶ Περσῶν

63. .

5.63. APPIAN

καὶ Παρθυαίων καὶ Βακτρίων καὶ Ἀράβων καὶ Ταπύρων καὶ τῆς Σογδιανῆς καὶ Ἀραχωσίας καὶ Ὑγκανίας καὶ ὅσα ἄλλα ὄμορα ἔθνη μέχρις Ἰνδοῦ ποταμοῦ Ἀλεξάνδρῳ γεγέννητο δορίληπτα, ὡς ὥρισθαι τῷδε μάλιστα μετὰ Ἀλέξανδρον τῆς Ἀσίας τὸ πλεόν· ἀπὸ γὰρ Φρυγίας ἐπὶ ποταμὸν Ἰνδὸν ἄνω πάντα Σελεύκῳ κατήκουε.

Appianus Hist., Syriaca Section 282, line 2

καὶ τὸν Ἰνδὸν περάσας ἐπολέμησεν Ἀνδροκόττῳ, βασιλεῖ τῶν περὶ αὐτὸν Ἰνδῶν, μέχρι φιλίαν αὐτῷ καὶ κῆδος συνέθετο.

Appianus Hist., Syriaca Section 288, line 1

Ἀλεξάνδρῳ γὰρ ἐξ Ἰνδῶν ἐς Βαβυλῶνα ἐπανελθόντι καὶ τὰς ἐν αὐτῇ τῇ Βαβυλωνίᾳ λίμνας ἐπὶ χρεία τοῦ τὸν Εὐφράτην τὴν Ἀσσυρίδα γῆν ἀρδεύειν περιπλέοντι ἄνεμος ἐμπεσὼν ἤρπασε τὸ διάδημα, καὶ φερόμενον ἐκρεμάσθη δόνακος ἐν τάφῳ τινὸς ἀρχαίου βασιλέως.

Appianus Hist., Syriaca Section 298, line 5

τὰς δὲ ἄλλας ἐκ τῆς Ἑλλάδος ἢ Μακεδονίας ὠνόμαζεν ἢ ἐπὶ ἔργοις ἑαυτοῦ τισιν ἢ ἐς τιμὴν Ἀλεξάνδρου τοῦ βασιλέως· ὅθεν ἐστὶν ἐν τῇ Συρίᾳ καὶ τοῖς ὑπὲρ αὐτὴν ἄνω βαρβάροις πολλὰ μὲν Ἑλληνικῶν, πολλὰ δὲ Μακεδονικῶν πολισμάτων ὀνόματα, Βέρροια, Ἐδεσσα, Πέρινθος, Μαρώνεια, Καλλίπολις, Ἀχαΐα, Πέλλα, Ὠρωπός, Ἀμφίπολις, Ἀρέθουσα, Ἀστακός, Τεγέα, Καλκίς, Λάρισσα, Ἡραία, Ἀπολλωνία, ἐν δὲ τῇ Παρθυνῇ Σώτειρα, Καλλιόπη, Χάρις, Ἐκατόμυλος, Ἀχαΐα, ἐν δὲ Ἰνδοῖς Ἀλεξανδρόπολις, ἐν δὲ Σκύθαις Ἀλεξανδρέσχατα.

Appianus Hist., Mithridatica (0551: 014) “Appiani historia Romana, vol. 1”, Ed. Viereck, P., Roos, A.G., Gabba, E. Leipzig: Teubner, 1939, Repr. 1962 (1st edn. corr.). Section 407, line 1

ἐνέπιπτε δὲ τοῖς μαχομένοις ἐπὶ τῷ παραλόγῳ τῆς ἀνακλήσεως θόρυβός τε καὶ ἀπορία, μή τι δεῖ· νὸν ἐτέρωθεν εἴη, μέχρι μαθόντες εὐθύς ἐν τῷ πεδίῳ τὸ σῶμα περιστάντο καὶ ἐθορύβουν, ὥς Τιμόθεος αὐτοῖς ὁ ἰατρός, ἐπισχὼν τὸ αἷμα, ἐπέδειξεν αὐτὸν ἐκ μετεώρου, οἷόν τι καὶ Μακεδόσιν ἐν Ἰνδοῖς, ὑπὲρ Ἀλεξάνδρου δεδιόσιν, ὁ Ἀλέξανδρος αὐτὸν ἐπὶ νεῷς θεραπευόμενον ἐπέδειξεν.

Appianus Hist., Bellum civile (0551: 017) “Appian’s Roman history, vols. 3–4 (ed. H. White)”, Ed. Viereck, P. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1913, Repr. 3:1964; 4:1961. Book 2, chapter 21, section 149, line 24

ἀπλώτου τε θαλάσσης ἐν Ἰνδοῖς ἀπετείρασε, καὶ ἐπὶ κλίμακα πρῶτος ἀνέβη καὶ ἐς πολέμιων τεῖχος ἐσήλατο μόνος καὶ τρισκαίδεκα τραύματα ὑπέστη.

Appianus Hist., Bellum civile Book 2, chapter 21, section 153, line 10

ἐπανιόντα γὰρ ἐξ Ἰνδῶν ἐς Βαβυλῶνα μετὰ τοῦ στρατοῦ καὶ πλησιάζοντα ἤδη παρέκάλουν οἱ Χαλδαῖοι τὴν εἴσοδον ἐπισχεῖν ἐν τῷ παρόντι.

Appianus Hist., Bellum civile Book 2, chapter 21, section 154, line 3

Ἐγένοντο δὲ καὶ ἐς ἐπιστήμην τῆς ἀρετῆς, τῆς τε πατρῴου καὶ Ἑλληνικῆς καὶ ξένης, φιλόκαλοι, τὰ μὲν Ἰνδῶν Ἀλέξανδρος ἐξετάζων τοὺς Βραχμᾶνας, οἱ δοκοῦσιν Ἰνδῶν εἶναι μετεωρο-

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

λόγοι τε καὶ σοφοὶ καθὰ Περσῶν οἱ Μάγοι, τὰ δὲ Αἰγυπτίων ὁ Καῖσαρ, ὅτε ἐν Αἰγύπτῳ γενόμενος καθίστατο Κλεοπάτραν.

Appianus Hist., Bellum civile Book 5, chapter 1, section 9, line 27

ἀπο- πλευσάσης δὲ τῆς Κλεοπάτρας ἐς τὰ οἰκεῖα, ὁ Ἀντώνιος ἔπεμπε τοὺς ἱππέας Πάμυρα πόλιν, οὐ μακρὰν οὖσαν ἀπὸ Εὐφράτου, διαρπάσαι, μικρὰ μὲν ἐπικαλῶν αὐτοῖς, ὅτι Ῥωμαίων καὶ Παρθυαίων ὄντες ἐφόριοι ἐς ἑκατέρους ἐπιδεξίως εἶχον (ἐμποροὶ γὰρ ὄντες κομίζουσι μὲν ἐκ Περσῶν τὰ Ἰνδικὰ ἢ Ἀράβια, διατίθενται δ' ἐν τῇ Ῥωμαίων), ἔργῳ δ' ἐπινοῶν τοὺς ἱππέας περι- ουσιάσαι.

5.64 Dio Cassius

5.64.1 About Dio Cassius

Lucius Cassius Dio Cocceianus[1][2] (Ancient Greek: Δίων ὁ Κάσσιος, c. AD 150 – 235,[3] known in English as Cassius Dio, Dio Cassius, or Dio (Dione. lib) was a Roman consul and a noted historian writing in Greek. Dio published a history of Rome in 80 volumes, beginning with the legendary arrival of Aeneas in Italy through the subsequent founding of Rome (753 BC), the formation of the Republic (509 BC), and the creation of the Empire (31 BC), up to AD 229; a period of about 1,400 years. Of the 80 books, written over 22 years, many survive into the modern age intact or as fragments, providing modern scholars with a detailed perspective on Roman history. (From Wikipedia)

5.64.2 On Indian embassies to Augustus (54.9.8)

Records same incident at Niclaus of Damascus (=Strabo *Geographica* 15.1.72–73).

(8) πάμπολλαι γὰρ δὴ πρεσβεῖαι πρὸς αὐτὸν ἀφίκοντο, καὶ οἱ Ἰνδοὶ προκηρυκυσάμενοι πρότερον φιλίαν τότε ἐσπείσαντο, δῶρα πέμψαντες ἄλλα τε καὶ τίγρεις, πρῶτον τότε τοῖς Ῥωμαίοις, νομίζω δ' ὅτι καὶ τοῖς Ἑλλησιν, ὀφθείσας. καὶ τι καὶ μειράκιόν οἱ ἄνευ ὤμων, οἶους τοὺς Ἑρμᾶς ὀρῶμεν, ἔδωκαν. (9) καὶ μέντοι τοιοῦτον ὃν ἐκεῖνο ἐς πάντα τοῖς ποσὶν ἅτε καὶ χερσὶν ἐχρήτο, τόξον τε αὐτοῖς ἐπέτεινε καὶ βέλη ἠφίει καὶ ἐσάλπιζεν, οὐκ οἶδ' ὅπως· γράφω γὰρ τὰ λεγόμενα. (10) εἷς δ' οὖν τῶν Ἰνδῶν Ζάρμαρος, εἴτε δὴ τοῦ τῶν σοφιστῶν γένους ᾧν, καὶ κατὰ τοῦτο

5.65. TESTAMENTUM SALOMONIS

ὑπὸ φιλοτιμίας, εἴτε καὶ ὑπὸ τοῦ γήρως κατὰ τὸν πατριον νόμον, εἴτε καὶ ἐς ἐπίδειξιν τοῦ τε Αὐγούστου καὶ τῶν Ἀθηναίων (καὶ γὰρ ἐκεῖσε ἦλθεν) ἀποθανεῖν ἐβελήσας ἐμυήθη τε τὰ τοῖν θεοῖν, τῶν μυστηρίων καίπερ οὐκ ἐν τῷ καθήκοντι καιρῷ, ὥς φασι, διὰ τὸν Αὐγούστον καὶ <αὐτὸν> μεμνημένον γενομένων, καὶ πυρὶ ἑαυτὸν ζῶντα ἐξέδωκεν.⁶⁴ (“(8) For a great many embassies came to him, and the people of India, who had already made overtures, now made a treaty of friendship, sending among other gifts tigers, which were then for the first time seen by the Romans, as also, I think by the Greeks. They also gave him a boy who had no shoulders or arms, like our statues of Hermes. (9) And yet, defective as he was, he could use his feet for everything, as if they were hands: with them he would stretch a bow, shoot missiles, and put a trumpet to his lips. How he did this I do not know; I merely state what is recorded. (10) One of the Indians, Zarmarus, for some reason wished to die, — either because, being of the caste of sages, he was on this account moved by ambition, or, in accordance with the traditional custom of the Indians, because of old age, or because he wished to make a display for the benefit of Augustus and the Athenians (for Augustus had reached Athens);— he was therefore initiated into the mysteries of the two goddesses, which were held out of season on account, they say, of Augustus, who also was an initiate, and he then threw himself alive into the fire.”⁶⁵)

5.65 Testamentum Salomonis

Note: Questionable entry. See text

The Testament of Solomon is an Old Testament pseudepigraphical work, the authorship of which is ascribed to King Solomon. The text is only found in Christian sources and is not in the Jewish Tanakh or other Jewish sources. It describes how Solomon was enabled to build the Temple by commanding demons by means of a magical ring entrusted to him by the Archangel Michael.

Despite the text's claim to have been a first-hand account of King Solomon's construction of the Temple of Jerusalem, its original publication dates sometime between the 1st and 5th centuries CE,[1] over a thousand years after King Solomon's death and the temple's completion.

64. Text from Boissvain (1895–1901).

65. From Thayer online from the old Loeb.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

The real author or authors of the text remain unknown. The text was originally written in Greek and contains numerous theological and magical themes ranging from Christianity and Judaism to Greek mythology and astrology that possibly hint at a Christian writer with a Greek background. (From Wikipedia)

5.65.0.1 Text

What is this? The keyword here is *ἰνδικτιόνος*.

Testamentum Salomonis, Conspectus titulorum (2679: 008) “The testament of Solomon”, Ed. McCown, C.C. Leipzig: Hinrichs, 1922. Page 99, line 12

ἐγγράφη παρ’ ἐμοῦ Ἰω(άννου) ἱατροῦ τοῦ αἰρο(?)· ἐν ἔτει ͵ϠϠλμθ’ (ἰνδικτιόνος) δ’ ἐν μηνὶ Δεκε(μ)βρίῳ ἰδ’.

5.66 Himerius

Himerius (ca. 315-386), Greek sophist and rhetorician. 24 of his orations have reached us complete, and fragments of 12 others.

Himerius was born at Prusa in Bithynia. He completed his education at Athens, whence he was summoned to Antioch in 362 by the emperor Julian to act as his private secretary. After the death of Julian in the following year Himerius returned to Athens, where he established a school of rhetoric, which he compared with that of Isocrates and the Delphic oracle, owing to the number of those who flocked from all parts of the world to hear him. Amongst his pupils were Gregory of Nazianzus and Basil the Great, bishop of Caesarea.

In recognition of his merits, civic rights and the membership of the Areopagus were conferred upon him. The death of his son Rufinus (his lament for whom, called the *Μονωδία*, is extant) and that of a favourite daughter greatly affected his health; in his later years he became blind and he died of epilepsy. Although a pagan, who had been initiated into the mysteries of Mithras by Julian, his works show no prejudice against the Christians.

Himerius is a typical representative of the later rhetorical schools. Photius (cod. 165, 243 Bekker) had read 71 speeches by him, of 36 of which he has given an epitome; 24 have come down to us complete and fragments of 12

5.66. HIMERIUS

others. They consist of epideictic or "display" speeches after the style of Aristides, the majority of them having been delivered on special occasions, such as the arrival of a new governor,[1] visits to different cities (Thessalonica, Constantinople), or the death of friends or well-known personages.

The Polemarchicus, like the Menexenus of Plato and the Epitaphios Logos of Hypereides, is a panegyric of those who had given their lives for their country; it is so called because it was originally the duty of the polemarch to arrange the funeral games in honour of those who had fallen in battle. Other declamations, only known from the excerpts in Photius, were imaginary orations put into the mouth of famous persons—Demosthenes advocating the recall of Aeschines from banishment, Hypereides supporting the policy of Demosthenes, Themistocles inveighing against the king of Persia, an orator unnamed attacking Epicurus for atheism before Julian at Constantinople.

Himerius is more of a poet than a rhetorician, and his declamations are valuable as giving prose versions or even the actual words of lost poems by Greek lyric writers. The prose poem on the marriage of his pupil Severus and his greeting to Basil at the beginning of spring are quite in the spirit of the old lyric. Himerius possesses vigour of language and descriptive powers, though his productions are spoilt by too frequent use of imagery, allegorical and metaphorical obscurities, mannerism and ostentatious learning. But they are valuable for the history and social conditions of the time, although lacking the sincerity characteristic of Libanius. (From Wikipedia⁶⁶)

Himerius Soph., *Declamationes et orationes* (2051: 001) "Himerii declamationes et orationes cum deperditarum fragmentis", Ed. Colonna, A. Rome: Polygraphica, 1951. Oration 2, line 125

.. Ὁ δῆμος ὁ τῶν Ἀθηναίων Αἰσχίνῃ γράφει τὴν κάθ- οδὸν, ὁ τὰς ἀπ' Ἰνδῶν φήμας ὡς ὅπλα καὶ μάχας φοβού- μενος .

Himerius Soph., *Declamationes et orationes* Oration 2, line 131

.. Κεῖται Βαβυλῶν, Δαρεῖος οἵχεται, Ἰνδοὺς ἀνήρηκε, Πέρσαι δουλεύουσι, μόναι λείπουσιν Ἀθῆναι τοῖς κατορθώ- μασιν, ὧν Πέρσαι τοσαυτάκις ἥσθοντο τῆς ἀρετῆς, ὅσάκις ἔδει μάχεσθαι.

Himerius Soph., *Declamationes et orationes* Oration 12, line 120

.. Ἀσία πᾶσα, οὐχ ἦν νῦν οὕτω προσαγορεύομεν, τὴν τῆς ὅλης ἐπωνυμίαν ἠπείρου τῷ μέρει μόνῳ τιθέμενοι, ἄρ- χεται μὲν ἀπ' Ἰνδῶν ἄνω, πρὸς μὲν ἑὼ καὶ ἄρκτον Ἐρυθρῷ κόλπῳ καὶ Φάσιδι, πρὸς δὲ μεσημβρίαν καὶ ἀπιόντα ἥλιον Αἰγύπτῳ τε καὶ τῷ Ἰονίῳ πελάγει πρὸς τὰς ἄλλας ἠπεί- ρους ἀποσχίζομένη καὶ λήγουσα· παρατείνει δὲ αὐτὴν ἐκ Προποντίδος εἰς

66. <http://en.wikipedia.org/wiki/Himerius>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Παμφυλίαν πλευρὰ παρήκουσα, ἣν Αἰγαῖος προσκλύζει σύμπασαν, ἐκ μιᾶς καὶ αὐτὸς ἀρχῆς τῇ πλευρᾷ ταύτῃ τικτόμενος .

Himerius Soph., Declamationes et orationes Oration 18, line 7

ἦλθεν ἐπ' Ἰνδούς ὁ Διόνυσος, γένος τὴν Διονύσου χάριν ἀρνούμενον· ἦν δὲ ὁ μὲν στρατὸς Βάκχαι καὶ Σάτυροι, τὰ δὲ ὅπλα, νεβρίδες καὶ θύρσοι.

Himerius Soph., Declamationes et orationes Oration 18, line 15

ἐπεὶ δὲ ἐν ὄροις Καπ- παδοκῶν ἦσαν ἀγόμενοι, σκηνοῦσι μὲν ἐπὶ τῷ χεῖλει τοῦ ποταμοῦ, ὧ καὶ δώσειν τὴν ἐπωνυμίαν ἤμελλον· δεῖσαν δὲ τοῖς νάμασι λούσασθαι, ἀμείβεται μὲν ὁ ποταμὸς καὶ τὸ ἀργυροῦν ὕδωρ Ἰνδοῖς ὀμιλῆσαν μελαίνεται· οἱ δὲ ὅπερ ἦσαν αὐτοί, τοῦτο καὶ εἶναι καὶ καλεῖσθαι τὸν ποταμὸν ἀπεργάζονται .

Himerius Soph., Declamationes et orationes Oration 48, line 160

τῆς ἀληθῶς θείας φύσεως τοῖς πειρωμένοις ἐπιδείκνυται· ἀρχικὴ τε νόμων ἐθέλει καὶ πόλεων γίνεσθαι, πημαίνει δὲ οὐδένα πώποτε· οὐ γὰρ θέμις θείαν ποτὲ φύσιν κακοῦ τινος ἀνθρώποις αἰτίαν γίνεσθαι, κρείττων τέ ἐστι φόβων καὶ βα- σιλεύει τῶν ἡδονῶν, καὶ καθαρὰ πάθους φαίνεται· σῶμα δὲ διαπλάττει πρὸς τὴν ἑαυτῆς φύσιν ἀρμόζουσα, ὅμμα μέ<λαν> ζητεῖ, πρόσωπον ἐμβριθές, μελῶν συμμετρίαν ἀληθῆ, ὃ δὲ κάλλος σοφῶν παῖδες ἐπονομάζουσιν, ἵνα καλὸν τε καὶ γεν- ναῖον ἐξ ἀμφοῖν τὸ σῶμα πῆξασα οἷον θεοῦ τινος εἰκόνα τοῖς ἀνθρώποις παρέχῃ ἰνδάλεσθαι.

Himerius Soph., Declamationes et orationes Oration 48, line 291

τὸν Διόνυσον φασὶν οἱ μῦθοι, πρὶν εἰς θεῶν φύσιν ἐλθεῖν, ἱερά τε δρῶντα καὶ βουλούμενόν τι πλεόν παρ' ἐκεῖνα μαθεῖν, οὕτως εἰς τε Αἴγυπτον καὶ τὸν Νεῖλον δραμεῖν, ἔτι δὲ παρ' Ἰνδούς τε καὶ Αἰθίοπας καὶ τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους ἅπαντας πολυ- πραγμονοῦντα τὴν φύσιν· ἐλθόντα δὲ ἐκεῖθεν εἰς Ἕλληνας ἀσμένως μὲν καὶ πᾶσιν ὀφθῆναι τοῖς Ἕλλησι καὶ τὰς ὑπ' αὐ- τῶν τιμὰς ἀποδέξασθαι· βουλούμενον δὲ Ἀθηναίους πρῶτοις τῶν ἑαυτοῦ δώρων ἀπάρξασθαι καὶ ἀγωγίμων, Ἀθήναζε ἐλθεῖν· τοὺς δὲ Ἀθηναίους – τυχεῖν γὰρ τότε πανηγυρί- ζοντας – δημοσίαν τε ἄγειν Διονύσῳ τὴν πανηγυρίαν καὶ τὸ ἐκ τούτου λοιπὸν ὡς θεῷ πομπεύειν τῷ Διονύσῳ ψη- φίσασθαι.

Himerius Soph., Declamationes et orationes Oration 61, line 18

συνεφέπτεται δὲ καὶ παῖς τοῦ πηδαλίου τῷ γέροντι, καὶ Ἰνδῷ τοξότη τῷ βέλους ὁ μαν- θάνων τὴν τέχνην ἔφηβος.

5.67 Oribasius

Oribasius or Oreibasius (Greek: Ὀρειβάσιος) (c. 320–400) was a Greek medical writer and the personal physician of the Roman emperor Julian the

5.67. ORIBASIUS

Apostate. He studied at Alexandria under physician Zeno of Cyprus[2] before joining Julian's retinue. He was involved in Julian's coronation in 361, and remained with the emperor until Julian's death in 363. In the wake of this event, Oribasius was banished to foreign courts for a time, but was later recalled by the emperor Valens.

Oribasius's major works, written at the behest of Julian, are two collections of excerpts from the writings of earlier medical scholars, a collection of excerpts from Galen and the *Collectiones*, a massive compilation of excerpts from other medical writers of the ancient world. The first of these works is entirely lost, and only 25 of the 70 (or 72) books of the *Collectiones* survive. The first five surviving books deal with food and drink.[1] This work preserves a number of excerpts from older writers whose writings have otherwise been lost, and has thus been valuable to modern scholars. The earliest known description of a string figure, presented as the surgical sling Plinthios Brokhos by Greek physician Heraklas, is among the preserved material.[2][3] (From Wikipedia⁶⁷)

Oribasius Med., *Collectiones medicae* (lib. 1–16, 24–25, 43–50) (0722: 001) “Oribasii collectionum medicarum reliquiae, vols. 1–4”, Ed. Raeder, J. Leipzig: Teubner, 6.1.1:1928; 6.1.2:1929; 6.2.1:1931; 6.2.2:1933; *Corpus medicorum Graecorum*, vols. 6.1.1–6.2.2. Book 2, chapter 58, section 88, line 2

λεπάδες βραχεΐαι εἰσιν, ἐν τισι μείζους, ὡς ὁστρέων δοκεῖν μὴ ἐναλλάττειν· μέγισται δ' ἐν Ἰνδικῇ, ὡς καὶ τὰ ἄλλα πάντα.

Oribasius Med., *Collectiones medicae* (lib. 1–16, 24–25, 43–50) Book 2, chapter 58, section 147, line 3

τάδε μὲν κυρίως καὶ συνήθως κλήζεται ταρίχη, καίτοι συγχῶν καὶ πολυτελῶν ἰχθύων κατὰ τὰς νήσους ἀλιζομένων· τρίγλαι γὰρ καὶ φάγροι σκληροὶ ἐκ τῆς Ἰνδικῆς κομιζόμενοί εἰσι μὲν κητώδεις, οὐκ ἐνάριθμοι δὲ τοῖς καθαριωτέροις θαλαπτῖοις.

Oribasius Med., *Collectiones medicae* (lib. 1–16, 24–25, 43–50) Book 8, chapter 25, section 22, line 1

Ῥόδων ἄνθους, ὅπου μήκωνος, ἀκακίας, κόμμεως, βαλαυστίου, ὑποκυστίδος χυλοῦ, τούτων ἐκάστου μέρη τρία, κηκίδος, ἀρνογλώσσου σπέρματος, τούτων ἐκατέρου ἀνὰ δύο μοῖραι, λυκίου Ἰνδικοῦ <έν>.

Oribasius Med., *Collectiones medicae* (lib. 1–16, 24–25, 43–50) Book 9, chapter 6, section 1, line 5

Ταῖς χώραις ἔνια μὲν ἀπὸ τῆς, ὡς ἂν εἴποι τις, κοσμικῆς θέσεως ὑπάρχει, τινὰ δ' ἀπὸ τῆς ἰδίας, τρίτα δ' ἀπὸ τῶν συμπτωμάτων· ἀπὸ μὲν τῆς κοσμικῆς θέσεως ψυχραῖς μὲν εἶναι ταῖς

67. <http://en.wikipedia.org/wiki/Oribasius>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

παρὰ τὸν Ἰστρον τε καὶ τὴν Μαιῶτιν λίμνην καί, καθόλου φάναι, ταῖς ἀρκτικάῖς, θερμαῖς δὲ ταῖς κατὰ τὴν Αἰθιοπίαν καὶ Ἰνδίαν καί, συνελόντι φάναι, ταῖς μεσημβριναῖς, εὐκράτοις δὲ ταῖς μέσαις τούτων.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter alpha*, section 2, line 1

<Ἀγάλοχον> ξύλον ἐστὶ φερόμενον ἐκ τῆς Ἰνδίας καὶ Ἀραβίας εἰκὸς θυεία· ἔστι μὲν οὖν εὐῶδες, παραστῦφον ἐν τῇ γέυσει μετὰ ποσῆς πικρίας, φλοῖον ἔχον δερματώδη καὶ ὑποποίκιλον.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter alpha*, section 32, line 6

γεννᾶται δ' ἐν Ἰνδία πλείστη, ἐξ ἧς καὶ τὸ πῖσμα κομίζεται· φύεται δὲ καὶ ἐν τῇ Ἀσίᾳ καὶ τισι παραθαλασσίοις τόποις καὶ νήσοις, ὡς ἐν Ἀνδρῶ.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter beta, section 7, line 5

<Βδέλλιον> δάκρυόν ἐστι δένδρου Ἀραβικοῦ· δόκιμον δ' αὐτοῦ τὸ τῇ γέυσει πικρὸν, διαυγές, ταυροκολλῶδες, λιπαρὸν διὰ βάθους καὶ εὐμάλακτον, ἀμιγές ξύλων καὶ ἑυπαρίας, εὐῶδες ἐν τῇ θυμιάσει, εἰκὸς ὄνυχι· ἔστι δὲ τι ἑυπαρὸν καὶ μέλαν, ἀδρόβωλον, παλαθῶδες, κομιζόμενον ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς· κομίζεται δὲ καὶ ἀπὸ τῆς Πετραίας, ῥητινῶδες, ὑποπέλιον, δευτερεῦον τῇ δυνάμει.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter epsilon, section 1, line 6

ἔστι δὲ τις καὶ Ἰνδική, ἔχουσα διαφύσεις λευκὰς καὶ κιρρὰς καὶ σπίλους ὁμοίως πυκνοῦς· πλὴν βελτίων ἢ πρώτη.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter kappa, section 2, line 1

<Κάλαμος ἀρωματικός> φύεται μὲν ἐν Ἰνδία, ἔστι δ' αὐτοῦ κάλλιστος ὁ κιρρός, πυκνογόνατος καὶ εἰς πολλοὺς σκινδαλμοὺς θραυόμενος, γέμων ἀραχνίων τὴν σύριγγα ὑπολεύκων, ἐν τε τῇ διαμασῇσει γλίσχρος, στυπτικός, ὑπόδριμς.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter kappa, section 6, line 2

<Καρδάμωμον> ἄριστον τὸ ἐκ τῆς Κομμαγηνῆς καὶ Ἀρμενίας καὶ Βοσπόρου κομιζόμενον· γεννᾶται δὲ καὶ ἐν Ἰνδία καὶ Ἀραβία.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter kappa, section 31, line 2

<Κόστος> διαφέρει ὁ Ἀραβικός, λευκὸς ὢν καὶ κοῦφος, πλείστην ἔχων καὶ ἡδεῖαν τὴν ὁσμὴν· δευτερεῖ δ' ὁ Ἰνδικός, ἀδρὸς ὢν καὶ μέλας καὶ κοῦφος ὡς νάρθηξ· τρίτος δ' ἐστὶν ὁ Συριακός, βαρὺς, τὴν χροάν πυξώδης, πληκτικός τῇ ὁσμῇ· ἄριστος δ' ἐστὶν ὁ πρόσφατος, λευκός, πλήρης, δι' ὅλου πυκνός, ξηρός, ἀτερηδόνιστος, ἄβρωμος, τῇ γέυσει δηκτικός καὶ πυρώδης.

5.67. ORIBASIOS

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter lambda, section 7, line 4

<Λιβανωτός> γεννᾶται μὲν ἐν Ἀραβίᾳ τῇ λιβανωτοφόρῳ καλου- μένη· πρωτεύει δ' ὁ ἄρρην καλούμενος, ἄτμητος λευκός τε καὶ θλα- σθεὶς ἔνδοθεν λιπαρὸς ἐπιθυμιαθεὶς τε ταχέως ἐκκαϊόμενος· ὁ δ' Ἴν- δικὸς ὑπόκιρρός ἐστι καὶ πελιδνὸς τὴν χρόαν.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter lambda, section 17, line 15

ἐστὶ δὲ κάλλιστον τὸ καϊόμενον λύκιον καὶ κατὰ τὴν σβέσιν τὸν καπνὸν ἐνερευθῇ ἔχον, ἔξωθεν μέλαν, διαιρεθὲν δὲ κιρρόν, ἄβρωμον, στῦφον μετὰ πικρίας, χρώματι κροκοειδές, οἷόν ἐστι τὸ Ἰνδικόν, διαφέρειν τοῦ λοιποῦ καὶ δυναμικώτερον.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 11, chapter mu, section 6, line 1

<Μάγκορον> εἶδος ἐστὶ μέλιτος πεπηγότος ἐν Ἰνδίᾳ καὶ τῇ εὐδαί- μονι Ἀραβίᾳ, εὕρισκό- μενον ἐπὶ τῶν καλάμων, ὅμοιον ἀλσὶ τῇ συστάσει καὶ θρυβόμενον ὑπὸ τοῖς ὁδοῦσιν ὥσπερ οἱ ἄλλες.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 12, chapter nu*, section 1, line 1

<Νάρδου> ἐστὶ δύο γένη· ἡ μὲν γάρ τις καλεῖται Ἰνδική, ἡ δὲ Συριακή, οὐχ ὅτι ἐν Συρίᾳ εὕρισκεται, ἀλλ' ὅτι τοῦ ὅρους ἐν ᾧ γεννᾶ- ται τὸ μὲν πρὸς Συρίαν τέτραπται, τὸ δὲ πρὸς Ἰνδοῦς.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 12, chapter nu*, section 1, line 7

τῆς δ' Ἰνδικῆς ἡ μὲν τις λέγεται Γαγγίτις ἀπὸ τινος ποταμοῦ παραρρέοντος, Γάγγου καλου- μένου, παρ' ᾧ φύεται, ἀσθενεστέρα κατὰ δύναμιν οὔσα διὰ τὸ ἔφυδρον τῶν τόπων καὶ ἐπιμνηκεστέρα πλείους τε ἔχουσα τοὺς στάχτας ἀπὸ τῆς αὐτῆς εἴζης καὶ πολυκόμους καὶ περιπεπλεγμένους, βρωμώδης κατὰ τὴν ὁσμήν.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 12, chapter nu*, section 5, line 1

<Νάσκαφον> (οἱ δὲ νάκαφθον) ἐκ τῆς Ἰνδικῆς κομίζεται.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 12, chapter omicron, section 6, line 2

<Ὀνυξ> πᾶμά ἐστὶ κογχυλίου ὅμοιον τῷ τῆς πορφύρας, εὕρισκό- μενον ἐν Ἰνδίᾳ ἐν ταῖς ναρδοφόροις λίμναις· διὸ καὶ ἀρωματίζει νεμομένων τῶν κογχυλίων τὴν νάρδον.

Oribasius Med., Collectiones medicae (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 12, chapter sigma, section 28, line 1

<Σκίγκος> ὁ μὲν τίς ἐστὶν Αἰγύπτιος, ὁ δ' Ἰνδικός, ἄλλος δ' ἐν τῇ Ἐρυθρᾷ γεννώμενος, ἕτερος δ' ἐν τῇ Ἀπολλωνίᾳ τῆς Μαυρουσιᾶδος εὕρισκεται.

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Oribasius Med., *Collectiones medicae* (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 13, chapter iota, section 1, line 1

γεννᾶται πλεῖστον ἐν Μήλῳ καὶ Λιπάρῳ. <Ἰνδικόν> τὸ μὲν αὐτομάτως γίνεται οἶονεῖ ἐκβρασμάτιον τῶν Ἰνδικῶν καλάμων, τὸ δὲ βαφικόν ἐστὶν ἐπανθισμὸς πορφύρας ἐπαιω-ρούμενος τοῖς χαλκείοις, ὃν ἀποσύραντες ξηραίνουσιν οἱ τεχνῖται.

Oribasius Med., *Collectiones medicae* (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 13, chapter iota, section 1, line 2

<Ἰνδικόν> τὸ μὲν αὐτομάτως γίνεται οἶονεῖ ἐκβρασμάτιον τῶν Ἰνδικῶν καλάμων, τὸ δὲ βαφικόν ἐστὶν ἐπανθισμὸς πορφύρας ἐπαιω-ρούμενος τοῖς χαλκείοις, ὃν ἀποσύραντες ξηραίνουσιν οἱ τεχνῖται.

Oribasius Med., *Collectiones medicae* (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 14, chapter 33, section 7, line 5

μὴ τοίνυν θαύμαζε, εἰ κάλαμοι ξηροὶ καὶ τρίχες εὐέκκαυτα μὲν ἐστίν, οὐ μὴν ἡμᾶς γε θερμαίνει πλησιάζοντα· τὴν ἀρχὴν γὰρ οὐδὲ μεταβάλλεται πρὸς τῆς ἐν ἡμῖν θερμασίας, ἵνα ἀντιθερμῇ, διὰ τὸ μὴ δύνασθαι καταθραυσθῆ-ναι χροαδῶς, ἐπεὶ ὁ γε κάλαμος ὁ ἐξ Ἰνδίας τῷ κόπτεσθαι τε καὶ διαττᾶσθαι χροαδῶς μᾶλλον τοῦ παρ' ἡμῖν ἐναργῶς φαίνεται θερμαίνων.

Oribasius Med., *Collectiones medicae* (lib. 1-16, 24-25, 43-50) Book 15, chapter 1:21, section 13, line 3

– Φοῦ ἢ ῥίζα νάρδω παρα-πλησία τὴν δυνάμιν ἐστίν, ἀλλ' εἰς μὲν τὰ πλεῖστα καταδεε-στέρα· προτρέπει δ' οὖρα τῆς Ἰνδικῆς καὶ Συριακῆς μᾶλλον, ὁμοίως δὲ τῇ Κελτικῇ.

Oribasius Med., *Eclogae medicamentorum* (0722: 003) “Oribasii collectionum medicarum reliquae, vol. 4”, Ed. Raeder, J. Leipzig: Teubner, 1933; *Corpus medicorum Graecorum*, vol. 6.2.2. Chapter 9, section 1, line 10

καδμείας [] <ις>, ψιμυθίου [] <ς>, καστορίου [] <ς>, νάρ-δου Ἰνδικῆς [] <δ>, στίμμεως [] <μ>, ἀλόης [] <ς>, κασσίας [] <δ>, λεπίδος [] <ε>, χαλκοῦ κεκαυμένου [] <ις>, ῥόδων ἀνθους [] <η>, λυκίου Ἰνδικοῦ [] <γ>, λί-θου σχιστοῦ [] <δ> [], κρόκου [] <ς>, μολύβδου κεκαυμένου καὶ πεπλυμένου [] <η>, ὀπίου δραχμαὶ <γ>, ἀκακίας [] <μ>, κόμμεως [] <μη>, ὕδαρ ὀμβριον-δε-δοκιμασμένον ἄραν.

Oribasius Med., *Eclogae medicamentorum* Chapter 15, section 1, line 3

Χαλκῖτιν λεάνας ἀνάλαβε ἐλλυχνίῳ δεδευμένῳ ὕδατι ἢ πριαπίσκῳ καὶ ἐντίθει τοῖς μυκτῆρσιν· ἢ ὡσὺ ὄστρακον καύσας μίσγε αὐτῷ κηκῖ-δος τὸ ἥμισυ καὶ ὡσαύτως χρῶ· ἢ λυκίῳ Ἰνδικῷ διάψα· ἢ ὀνίδα καύσας τὴν [αὐτὴν] σποδὸν ἐμφύσα· ἢ χυλίσας τὴν ὀνίδα ἐνσταζε τὸν χυλόν· ἢ μυλίτου λίθου ἐκ πυρᾶς σβεσθέντος ὄξει τὴν ἀτμίδα ὀσφραι-νέσθω.

Oribasius Med., *Eclogae medicamentorum* Chapter 54, section 15, line 8

> Νάρδος πινομένη στεγνοῖ κοιλίαν, σμύρνης καλῆς κυναιμαῖον μέγεθος στερεὸν καταπι-νόμενον, σπέρμα ἀγρίου λαπάθου ὕδατι ἐπιπασθέν, λα-γωῦ πυτίας τριώβολον σὺν ὕδατι, κέρατος ἐλαφείου κεκαυμένου καὶ πεπλυμένου κοχλιάρια <β> σὺν τραγακάνθῃ, ἢ αὐτὴ ἢ

5.67. ORIBASIUS

τραγάκανθα, ἢ ῥοῦς ἢ κηκίς ὀμφακίνη ἢ σίδια ἢ βάτου ῥίζων ἀφέψημα ἀποτριτωθέν ἢ λά-
δανον σὺν οἴνῳ αὐστηρῶ ἢ ἀκακίας χυλὸς ἢ ὑποκιστίδος ἢ λύκιον Ἰνδικὸν ἢ Σάμιος ἀστήρ ἢ
βαλαύστιον.

Oribasius Med., Eclogae medicamentorum Chapter 76, section 25, line 3

αἱ δ' ὀχθῶδεις ὑπεροχαὶ φλεγμαίνουσαι ἢ εἰλωμέναι καταχρίεσθωσαν λυκίῳ Ἰνδικῶ ἢ
γλαυκίῳ ἢ ἀλόῃ ἢ τῷ Ἀνδρωνεῖῳ τροχίσκῳ ἢ τοῖς ὁμοίοις.

Oribasius Med., Eclogae medicamentorum Chapter 87, section 2, line 1

– <Ἡ Ἰνδῇ.

Oribasius Med., Eclogae medicamentorum Chapter 87, section 10, line 17

δεῖ τοίνυν ἀπέχεσθαι τῆς ἀγωγῆς ταύτης ἐπὶ νευροτρώτων ἢ νευροθλάστων, θεραπεύειν δὲ
τρόπον ὃν ὁ <Γαλήνης> ἐξεύρεν οὐ- τως, ἐπιτιθέντα μὴ σκληρόν, ἀλλ' ὥσπερ ἔμμοτον ἀνιέμενον
φάρμακον, ὁποῖόν ἐστι τό τε ὑφ' ἡμῶν καλούμενον κίσσινον καὶ τὸ ἐμφερὲς αὐτῷ τὸ Γαλήνειον
καὶ τὸ μελάγχλωρον ἢ τε Ἰνδῇ καὶ ἡ Ἀθηνᾶ ἀνεθεῖσαι ἢ τι τῶν ὁμοίων, ἐπάνω τε ἔρια ἐλαίῳ
θερμῷ διάβροχα, θεραπεύειν δὲ δις τῆς ἡμέρας, ὀρθρου καὶ ἐσπέρας, καταιονοῦντα ἐλαίῳ θερμῷ
ῥέποντι ἐπὶ τὸ μετρίως θερμότερον· τὸ γὰρ χλιαρόν ἐμπλασσόμενον οὐκ ἐπιτρέπεται τοῖς σώμασι
διαπνεῖσθαι.

Oribasius Med., Eclogae medicamentorum Chapter 89, section 8, line 2

μετὰ δὲ ταῦτα τοῖς ξη- ραίνουσι χρηστέον, καθάπερ τῇ Ἰνδῇ καὶ τῇ Ἀθηνᾶ καὶ τῷ
μελαγχλῶ- ρῳ τροχίσκῳ· ἐπὶ τέλει δὲ κατουλοῦν ἢ τῷ διὰ καδμείας ἢ τῇ Ἰνδικῇ ἢ τῇ Ἀθηνᾶ.

Oribasius Med., Eclogae medicamentorum Chapter 89, section 17, line 1

καὶ τὰς ἐπὶ τραύματι δὲ φλεγμονάς, αἱ γίνονται νικηθέντων τῶν ἀφλεγμάντων φαρ-
μάκων, θεραπεύειν καταιονοῦντα μὲν ὕδατι θερμῷ ποτίμῳ ἢ ὑδρελαίῳ, αὐτῷ δὲ τῷ ἔλκει
τετραφάρμακον ἐπιτιθέντα, ἢ τὸ Μακεδονικὸν ἢ τὴν τοῦ Ἀζανίτου, ἀνιέμενας ῥοδίνῳ ἢ ἄλλῳ
τινὶ τῶν χαλαστικῶν ἐλαίων, ἄνωθεν δὲ καταπλάσσοντα δι' ὑδρελαίου καὶ πυρίνου ἀλεύρου
ἢ κρι- θίνου ἢ ἐξ ἀμφοῖν μικτοῦ, ἐν παρακμῇ δὲ τοῖς ξηραίνουσιν ὡς τῇ Ἰνδικῇ καὶ τῇ Ἀθηνᾶ,
καὶ τὰ λοιπὰ ἀκολουθῶς.

Oribasius Med., Eclogae medicamentorum Chapter 97, section 45, line 8

ἐπὶ δὲ τῶν κόλ- πους ἐχόντων, μετὰ τὴν ἀνακάθαρσιν, ἣν ἐπιγνωσόμεθα ἐκ τοῦ μηκέτι
πύον ἐπιφέρεισθαι, κομισάμενοι τοὺς τελαμῶνας, ἐγκλύσομεν πάντα τὸν κόλπον οἰνομέλιτι,
ἐνιέντες διὰ πασῶν τῶν διαιρέσεων, εἴτα κολ- λύρια ἐκ μέλιτος ἐφθοῦ πεποιημένα ἐνθήσομεν
αὐτοῖς ἐκπληροῦντες τὰς ὑποφοράς, ἄνωθεν τε σπλήνιον δυνάμεως παρακολλητικῆς ἐπιβα-
λοῦμεν· δύναται δὲ παρακολλᾶν ἢ τε βάρβαρος καὶ πᾶσαι αἱ δι' ἀσφάλτου καὶ ἡ Ἀθηνᾶ καὶ
ἡ δι' ἰτέων ἢ τε Ἰνδικῇ καὶ ἡ φαιά, καὶ μᾶλλον πασῶν ἢ τοῦ ἀλιέως, ἢ ἡμεῖς χρώμεθα· τοὺς δὲ
λεπτὰ ἔχον- τας τὰ ἐπικείμενα σώματα αἱ δι' ἁλῶν.

Oribasius Med., Eclogae medicamentorum Chapter 98, section 2, line 7

ἀνακαθαίρουσιν αἱ δι' ἁλῶν κηρωταὶ συντακεῖσαι, ἢ τε Ἰνδικῇ καὶ ὁ μελάγχλωρος τροχί-
σκος καὶ ἡ Ἀθηνᾶ καὶ αἱ χλωραὶ ἀνιέμεναι.

Oribasius Med., Eclogae medicamentorum Chapter 147, section 4, line 2

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

προποτίζειν δὲ βαλαύ-στιον μετ' ὀξυκράτου ἢ ὑποκιστίδος χυλὸν ἢ ἀκακίας ἢ λύκιον Ἰνδικὸν ἢ Σάμιον ἀστέρα ἢ ὀμφακα ξηρόν· πρῶτον δ' ἄμεινον σήσαμον ὀξυκράτῳ βρεχόμενον, ἄχρις οὗ τρυφερὸν γένηται, καὶ οὕτως ἐσθιόμενον· δυνατὸν δὲ καὶ ποτίζειν αὐτό.

Oribasius Med., Eclogae medicamentorum Chapter 147, section 11, line 1

ἐνεργοὶ δὲ πρὸς τοῦτο καὶ αἱ κολλητικαὶ πάσαι ἐμπλαστοὶ ἢ τε ἄρ-μονία καὶ ἡ Ἰκεσίου καὶ ἡ Ἀθηνᾶ καὶ ἡ δι' ἰτεῶν, καὶ ἡ μηλίνη καὶ ἡ Ἰνδή.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium (0722: 004) "Oribasii synopsis ad Eustathium et libri ad Eunapium", Ed. Raeder, J. Leipzig: Teubner, 1926, Repr. 1964; Corpus medicorum Graecorum, vol. 6.3. Book 2, chapter 56, section 22, line 3

– Κόστος καλλίων ἐστὶν ὁ Ἀραβικός, λευκὸς ὦν καὶ κοῦφος καὶ πλείστην ἔχων καὶ ἡδεῖαν τὴν ὁσμὴν· δευ-τερεύει δ' ὁ Ἰνδικός, <ἀδρὸς ὦν καὶ μέλας καὶ κοῦφος ὡς νάρθηξ>· τρίτος δ' ἐστὶν ὁ Συριακὸς βαρύς, τὴν χροῖαν ὦν πυξώδης, πληκτικὸς τῇ ὁσμῇ.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 2, chapter 56, section 67, line 1

– Θεῖον ἄριστον τὸ ἄπυρον καὶ λαμπυρίζον τῇ χροῖα, διαφανές τε καὶ ἄλιθον· τοῦ δὲ πεπυρωμένου τὸ χλωρόν καὶ εὐλίπες. – Ἰνδικὸν ἄριστόν ἐστι τὸ κυανοειδές τε καὶ ἐγχυλον λεῖον.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 3, chapter 67, section 1, line 4

Κηροῦ μναῖ <γ>, ἀμμωνιακοῦ μναῖ <β>, ῥητίνης φρυκτῆς μναῖ <α>, μελιώτου μναῖς ἡμισυ, προπόλεως, σμύρνης, στύρακος, νάρδου Κελτικῆς, κυτέρου Ἰνδικῆς, ἱρεως Ἰλλυρικῆς, καρδαμώμου, πάνακος ἀνὰ [] <κε>, κρόκου [] <κ>, κασίας, μαστίχης Χίας, ὀποβαλάμου, ἀμάμου ἀνὰ [] <ις>, οἴνου Ἰταλικοῦ εὐώδους ὅσον ἐξαρχεῖ, νάρδου Ἀσιανῆς ἀρωματικῆς [] <α>.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 3, chapter 138, section 1, line 2

Σποδίου [] <δ> (οἱ δὲ [] <α>), φλοιοῦ λιβάνου ὀβολόν, σμύρνης ὀβο-λόν, λεπίδος χαλκοῦ ὀβολόν, ἀκακίας, νάρδου Ἰνδικῆς, μηκωνίου πεφω-σμένου ἀνὰ ὀβολόν, κόμμεως [] <δ>, ὕδαρ ὀμβριον.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 3, chapter 139, section 1, line 3

Ἔστι δὲ τοιόνδε· χαλκοῦ κεκαυμένου καὶ πεπλυμένου ὀβολοὶ <δ>, κρόκου [] <α>, σμύρνης ὀβολοὶ <γ>, νάρδου Ἰνδικῆς ὀβολοὶ <β>, κινναμώμου ὀβολοὶ <β>, μήκωνος ὀβολοὶ <β>, πεπέρεως κόκκοι <ις>, κόμμεως ὀβολοὶ <γ>, οἴνου Χίου τὸ ἱκανόν.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 3, chapter 147, section 1, line 2

Στίμμεως [] <ις>, μολύβδου κεκαυμένου [] <η>, λεπίδος, κρόκου, ῥόδων ἄνθους, σμύρνης, νάρδου Ἰνδικῆς, λιβάνου ἄρρενος, πεπέρεως λευκοῦ ἀνὰ [] <α>, φοινίκων ὅστω <λ>.

5.67. ORIBASIIUS

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 3, chapter 158, section 1, line 4

Ῥόδων χλωρῶν χωρὶς τῶν λοβῶν [] <οβ>, καδμείας [] <κδ>, κρόκου [] <ς>, ὀπίου [] <γ>, στίμμεως [] <β>, χαλκοῦ [] <β>, νάρδου Ἰνδικῆς [] <α>, σμύρνης [] <γ>, κόμμεως [] <κδ>, ὕδωρ ὀμβριον.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 3, chapter 160, section 1, line 3

Καδμείας, χαλκοῦ, κρόκου, λεπίδος χαλκοῦ ἀνὰ [] <ιβ>, σμύρνης, λίθου αἱματίτου, ῥόδων ξηρῶν, νάρδου Ἰνδικῆς, ὀπίου ἀνὰ [] <δ>, πεπέρεως λευκοῦ κόκκοι <κ>, κόμμεως [] <ιβ>, οἶνου Χίου τὸ αὐτάρκες.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 3, chapter 174, section 1, line 5

Ἀνήσσου σπέρματος, <σελίνου σπέρματος, ἄμμεως σπέρματος>, σχίνου ἄνθους, στυπτηρίας σχιστῆς, ἴρεως, βησασᾶ, ὃ τινες ἄρμαλᾶ καλοῦσι, κινναμώμου, σμύρνης τρωγλίτιδος, ἀριστολοχίας μακρᾶς, κασίας, κροκο- μάγματος, ῥόδων ξηρῶν ἀνὰ [] <α>, κόστου, χελιδόνων νοσσιᾶς σποδοῦ προσφάτου ἀνὰ [] <γ>, κρόκου [] <α>, νάρδου Ἰνδικῆς, ἀμώμου ἀνὰ [] [], κηκίδας <η>.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 8, chapter 25, section 3, line 3
εὐώδη δ' αὐτὰ ποιῆσαι βουλόμενος μίξεις κυτέρου καὶ μελιώτου καὶ ῥόδων ξηρῶν καὶ σχίνου ἄνθους ἴρεώς τε καὶ στάχυος, νάρδου τε τῆς Ἰνδικῆς καὶ τῆς Κελτικῆς καὶ μαράθρου φύλλων καὶ ἀμώμου καὶ κόστου.

Oribasius Med., Synopsis ad Eustathium filium Book 9, chapter 10, section 24, line 1

– <Ἄλλο·> ῥόδων χλωρῶν τῶν φύλλων [] <ς>, γλυκυρρίζης [] <δ>, νάρδου Ἰνδικῆς [] <δ>.

Oribasius Med., Libri ad Eunapium (lib. 1–4) (0722: 005) “Oribasii synopsis ad Eustathium et libri ad Eunapium”, Ed. Raeder, J. Leipzig: Teubner, 1926, Repr. 1964; Corpus medicorum Graecorum, vol. 6.3. Book 2, chapter 1,lambda, section 31, line 1
τὸ δ' Ἰνδικὸν λύκιον ἰσχυρότερόν ἐστι πρὸς πάντα.

Oribasius Med., Libri ad Eunapium (lib. 1–4) Book 2, chapter 1,nu, section 3, line 1
γενναιο- τέρα δ' ἐστὶν ἡ Ἰνδική, μελαντέρα τῆς Συριακῆς οὔσα.

Oribasius Med., Libri ad Eunapium (lib. 1–4) Book 4, chapter 25, section 1, line 2
Καλλιβλέφαρον·

μάλιστα δὲ ποιεῖ νηπίοις καὶ τοῖς ἀπαλοσάρκοις· στίμμεως [] <ις>, μο- λύβδου [] <η>, κρόκου [ἀνὰ] [] <α>, ῥόδων ἄνθους, σμύρνης, νάρδου Ἰνδικῆς, πεπέρεως λευκοῦ, λιβάνου ἄρρενος ἀνὰ [] <α>, φοινίκων ὅστᾳ <λ>· πάντα βαλὼν εἰς ἄγγος κεραμεοῦν ὅπτα φιλοπόνως, εἶτα τρήψας ἐν θύᾳ ἐπίβαλε ὀποβαλσάμου κοχλιάρια <β>, καὶ ἀνακόψας <καὶ> ξηράνας χρω̄.

Oribasius Med., Libri ad Eunapium (lib. 1–4) Book 4, chapter 83, section 23, line 2

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

– <Ἄλλο> ῥόδων χλωρῶν τῶν φύλλων § <ς>, γλυ- κυρρίζης § <δ>, νάρδου Ἰνδικῆς § <δ>

5.68 Philumenus

Philumenus (Greek: Φιλούμενος), a Greek physician, mentioned by an anonymous writer as one of the most eminent members of his profession. Nothing is known of the events of his life, and with respect to his date, as the earliest author who quotes him is Oribasius,[1] it can only be said that he must have lived in or before the 4th century. It was thought that none of his work survived until 1907 when a manuscript of excerpts of his work *De venenatis animalibus eorumque remediis* (On poisonous animals and their remedies) was discovered in the Vatican library (codex Vaticanus gr. 284) by the German scholar Wellmann, who published an edition in 1908. [2]

Numerous fragments are preserved by Aëtius Amidenus. He is quoted also by Alexander of Tralles,[3] and Rhazes.[4] (From Wikipedia⁶⁸)

Philumenus Med., *De venenatis animalibus eorumque remediis* (0671: 001) “Philumeni de venenatis animalibus eorumque remediis”, Ed. Wellmann, M. Leipzig: Teubner, 1908; *Corpus medicorum Graecorum*, vol. 10.1.1. Chapter 10, section 1, line 6

δίδο-ται τοῦ φαρμάκου καρύου Ποντικῶ τοῦ μέγεθος, σκορπιοπλήκτοις μὲν μετ’ οἴνου αὐστηροῦ ἅπαξ τῆς ἡμέρας – εἰ δ’ ἐπιτείνῃ ἡ ὀδύνη, δίδου καὶ δῖς – , πρὸς δὲ λυσσοδήκτους δίδου με|θ’ ὕδατος ἡμέραν παρ’ ἡμέραν ἐπὶ ἡμέρας <μβ>, προσμίσγων τῷ φαρμάκῳ λύκιον Ἰνδικόν, τηρῶν καὶ τὰ ἔλκη ἀκατούλωτα.

Philumenus Med., *De venenatis animalibus eorumque remediis* Chapter 10, section 3, line 3

ἔστι δὲ καστορίου, ὁποῦ Κυρηναικοῦ, πεπέρεως ἀνὰ § <δ>, κόστου, νάρδου Ἰνδικῆς, κρόκ>ου, κεν- ταυρίου χυλοῦ ἀνὰ § <β>, μέλιτος ἀπέφθου κοτύλης ἡμισυ.

5.69 Cephalion

Roman historian of the time of Hadrian. Wrote a history of Assyria from the time of Ninus and Semiramis to that of Alexander the Great. It was

68. <http://en.wikipedia.org/wiki/Philumenus>

5.70. ATHANASIUS

written in the Ionic dialect, and was divided into nine books, called by the names of the Muses; and as in this he aped Herodotus, so he is reported to have aimed at resembling Homer by concealing his birthplace. Hadrian banished him to Sicily where this work was composed. (From Wikipedia⁶⁹)

Cephalion Hist., Rhet., Fragmenta (1249: 003) “FHG 3”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 1a, line 13

Μεθ' ὃν Βαβυλῶνα, φησὶν, ἡ Σεμί-
ραμις ἐτείχισε, τρόπον ὡς πολλοῖσι λέλεκται, Κτησία,
Δείνωνι], Ἡροδότῳ καὶ τοῖς μετ' αὐτούς· στρατεῖν τε αὐτῆς κατὰ τῶν Ἰνδῶν καὶ ἦτταν, καὶ
ὅτι τοὺς ἰδίους ἀνείλεν υἱοὺς καὶ ὑπὸ Νινύου τῶν παί-
δων ἐνὸς ἀνηρέθη, τοῦ διαδεξαμένου τὴν
ἀρχήν.

5.70 Athanasius

Athanasius of Alexandria (Greek: Ἀθανάσιος Ἀλεξανδρείας, Athanásios Alexandrías) (b. ca. 296–298 – d. 2 May 373), also referred to as St. Athanasius the Great, St. Athanasius I of Alexandria, St Athanasius the Confessor and (primarily in the Coptic Orthodox Church) St Athanasius the Apostolic, was the 20th bishop of Alexandria. His episcopate lasted 45 years (c. 8 June 328 – 2 May 373), of which over 17 were spent in five exiles ordered by four different Roman emperors. He is considered to be a renowned Christian theologian, a Church Father, the chief defender of Trinitarianism against Arianism, and a noted Egyptian leader of the fourth century.

He is remembered for his role in the conflict with Arius and Arianism. In 325, at the age of 27, Athanasius had a leading role against the Arians in the First Council of Nicaea. At the time, he was a deacon and personal secretary of the 19th Bishop of Alexandria, Alexander. Nicaea was convoked by Constantine I in May–August 325 to address the Arian position that Jesus of Nazareth is of a distinct substance from the Father.[1]

In June 328, at the age of 30, three years after Nicæa and upon the repose of Bishop Alexander, he became archbishop of Alexandria. He continued to lead the conflict against the Arians for the rest of his life and was engaged in theological and political struggles against the Emperors Constantine the Great and Constantius II and powerful and influential Arian churchmen, led

69. <http://en.wikipedia.org/wiki/Cephalion>

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

by Eusebius of Nicomedia and others. He was known as "Athanasius Contra Mundum". Within a few years of his departure, St. Gregory of Nazianzus called him the "Pillar of the Church". His writings were well regarded by all Church fathers who followed, in both the West and the East. His writings show a rich devotion to the Word-become-man, great pastoral concern, and profound interest in monasticism.

Athanasius is counted as one of the four great Eastern Doctors of the Church in the Roman Catholic Church[2] and in Eastern Orthodoxy, he is labeled the "Father of Orthodoxy". He is also celebrated by many Protestants, who label him "Father of The Canon". Athanasius is venerated as a Christian saint, whose feast day is 2 May in Western Christianity, 15 May in the Coptic Orthodox Church, and 18 January in the other Eastern Orthodox Churches. He is venerated by the Roman Catholic Church, Oriental and Eastern Orthodox churches, the Lutherans, and the Anglican Communion. (From Wikipedia⁷⁰)

5.70.1 Contra gentes

Athanasius Theol., *Contra gentes* (2035: 001) "Athanasius. *Contra gentes* and *de incarnatione*", Ed. Thomson, R.W. Oxford: Clarendon Press, 1971. Section 9, line 38

οἱ δὲ αὐτῶν, ὥσπερ φιλοτιμού-μενοι τοῖς χείροσιν, ἐτόλμησαν τοὺς παρ' αὐτῶν ἄρχοντας ἢ καὶ τοὺς τούτων παῖδας εἰς θεοὺς ἀναθεῖναι, ἢ διὰ τιμὴν τῶν ἀρξάντων ἢ διὰ φόβον τῆς αὐτῶν τυραννίδος· ὥς ὁ ἐν Κρήτῃ παρ' αὐτοῖς περιβόητος Ζεὺς, καὶ ἐν Ἀρκαδίᾳ Ἑρμῆς καὶ παρὰ μὲν Ἰνδοῖς Διόνυσος, παρὰ δὲ Αἰγυπτίοις Ἴσις, καὶ Ὅσιρις, καὶ Ὁρρος, καὶ ὁ νῦν Ἀδριανοῦ τοῦ Ῥωμαίων βασιλέως παιδικὸς Ἀντίνοος, ὃν καίπερ εἰδότες ἄνθρωπον, καὶ ἄνθρωπον οὐ σεμνόν, ἀλλ' ἀσελγείας ἔμπλεων, διὰ φόβον τοῦ προστάξαντος σέβουσιν.

Athanasius Theol., *Contra gentes* Section 23, line 14

ἀλλὰ καὶ Πελασγοὶ μὲν τοὺς ἐν Θράκῃ θεοὺς διαβάλλουσι· Θρᾶκες δὲ τοὺς παρὰ Θηβαίοις οὐ γινώσκουσιν. Ἰνδοὶ δὲ κατὰ Ἀράβων, καὶ Ἀραβες κατ' Αἰθιοπῶν, καὶ Αἰθίοπες κατ' αὐτῶν ἐν τοῖς εἰδώλοις διαφέρονται.

Athanasius Theol., *Contra gentes* Section 24, line 11

Λίβυες πρόβατον, ὃ καλοῦσιν Ἀμμωνα, θεὸν ἔχρουσι· καὶ τοῦτο πολλοῖς παρ' ἐτέρων εἰς θυσίαν σφάζεται. Ἰνδοὶ τὸν Διόνυσον θρησκεύουσι, συμβολικῶς οἶνον αὐτὸν ὀνομάζοντες· καὶ τοῦτον τοῖς ἄλλοις σπένδουσιν ἕτεροι.

70. <http://en.wikipedia.org/wiki/Athanasius>

5.70. ATHANASIUS

5.70.2 De incarnatione verbi

Athanasius Theol., De incarnatione verbi (2035: 002) “Sur l’incarnation du verbe”, Ed. Kannengiesser, C. Paris: Cerf, 1973; Sources chrétiennes 199. Chapter 28, section 3, line 4

Καὶ ὥσπερ τοῦ πυρὸς ἔχοντος κατὰ φύσιν τὸ καίειν, εἰ λέγοι τις εἶναι τι τὸ μὴ δειλιῶν αὐτοῦ τὴν καῦσιν, ἀλλὰ καὶ μᾶλλον ἀσθενὲς αὐτὸ δεικνύον, οἷον δὴ λέγεται τὸ παρὰ Ἰνδοῖς ἀμίαντον· εἴτα ὁ τῷ λεγομένῳ μὴ πιστεύων εἰ πείραν θελήσει λαβεῖν τοῦ λεγομένου, πάντως τὸ ἄκαυστον ἐνδυσάμενος καὶ προσβαλὼν πυρί, πιστοῦται λοιπὸν τὴν κατὰ τοῦ πυρὸς ἀσθένειαν· ἢ ὡς εἴ τις τὸν τύραννον δεδεμένον ἰδεῖν θελήσει, πάντως εἰς τὴν τοῦ νικήσαντος χώραν καὶ ἀρχὴν παρελθὼν, ὁρᾷ τὸν ἄλλοις φοβερὸν ἀσθενῆ γενόμενον· οὕτως εἴ τις ἐστὶν ἄπιστος, καὶ ἀκμὴν μετὰ τσαῦτα, καὶ μετὰ τοὺς τοσούτους

Athanasius Theol., De incarnatione verbi Chapter 47, section 4, line 4

Ὅτι πρὶν μὲν ἐπιδημῆσαι τὸν Λόγον, ἴσχυε καὶ ἐνήργει παρ’ Αἰγυπτίοις καὶ Χαλδαίοις καὶ Ἰνδοῖς αὕτη καὶ ἐξέπληττε τοὺς ὀρώντας· τῇ δὲ παρουσίᾳ τῆς ἀληθείας καὶ τῇ ἐπιφανείᾳ τοῦ Λόγου διηλέγχθη καὶ αὕτη, καὶ κατηργήθη παντελῶς.

Athanasius Theol., De incarnatione verbi Chapter 50, section 1, line 3

Πολλοὶ πρὸ τούτου γεγόνασιν βασιλεῖς καὶ τύραννοι γῆς, πολλοὶ παρὰ Χαλδαίοις ἱστοροῦνται καὶ παρ’ Αἰγυπτίοις καὶ Ἰνδοῖς γενόμενοι σοφοὶ καὶ μάγοι· τίς τούτων ποτέ, οὐ λέγω μετὰ θάνατον, ἀλλὰ καὶ ἔτι ζῶν ἠδυνήθη τοσούτον ἰσχύσαι, ὥστε τὴν σύμπασαν αὐτὸν γῆν πληρῶσαι τῆς αὐτοῦ διδασκαλίας, καὶ τοσούτον πλῆθος παιδεῦσαι ἀπὸ τῆς τῶν εἰδώλων δεισιδαιμονίας, ὅσους ὁ ἡμέτερος Σωτὴρ εἰς ἑαυτὸν ἀπὸ τῶν εἰδώλων μετῆ- νεγκεν;

Athanasius Theol., De synodis Arimini in Italia et Seleucia in Isauria (2035: 010) “Athanasius Werke, vol. 2.1”, Ed. Opitz, H.G. Berlin: De Gruyter, 1940. Chapter 25, section 1, line 2

Ἦσαν δὲ οἱ συνελθόντες ἐν τοῖς Ἑγκαινίοις ἐπίσκοποι ἐνενήκοντα, ὑπατεία Μαρκελλίνου καὶ Προβίνου, Ἰνδικτιῶνος ἰδ’, ἐκεῖ ὄντος Κωνσταντίου τοῦ ἀσεβεστάτου.

5.70.3 Epistula ad Afros episcopos

Athanasius Theol., Epistula ad Afros episcopos (2035: 049); MPG 26. Volume 26, page 1032, line 22

Ταύτην ἔγνωσαν καὶ Ἰνδοί, καὶ ὅσοι παρὰ τοῖς ἄλλοις βαρβάροις εἰσὶ Χριστιανοί.

5.70.4 Expositiones in Psalmos

Athanasius Theol., Expositiones in Psalmos (2035: 061); MPG 27. Volume 27, page 336, line 58

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

Λαοὺς δὲ ἐνταῦθα τὰς τῶν παρὰ Ἰνδοῖς ὀρνέων ἀγέλας φησὶν· αἱ καὶ τῶν Αἰγυπτίων κατῆσθιον τὰ σκηνώ- ματα ἐκριφέντα ἀπὸ τῆς θαλάσσης ἐν τῇ γῇ.

Athanasius Theol., Expositiones in Psalmos Volume 27, page 360, line 55

Ἐξέτεινε τὰ κλήματα αὐτῆς ἕως θαλάσσης. Κλήματα καὶ παραφυάδες τῆς ἀμπέλου τὸ πᾶν πλη- θος τοῦ λαοῦ φησιν, ὃ κατέσχεν ἀπὸ ποταμοῦ Εὐ- φράτου μέχρι θαλάσσης τῆς Ἰνδικῆς.

5.70.5 Quaestiones ad Antiochum ducem

Athanasius Theol., Quaestiones ad Antiochum ducem [Sp.] (2035: 077); MPG 28. Volume 28, page 628, line 36

Ὅθεν φασὶν ἱστορικοὶ τινες ἀκριβεῖς παῖδες, ὅτι τοῦ- του χάριν πάντα τὰ εὐώδη τῶν ἀρωμάτων περὶ τὰ ἀνατολικώτερα, ἡγουν τὰ Ἰνδικὰ μέρη, ὑπάρχουσιν ὡς πλησιόχωρα τυγ- χάνοντα τοῦ παραδείσου.

Athanasius Theol., Quaestiones ad Antiochum ducem [Sp.] Volume 28, page 633, line 38

Ἡ Θαρσίς πόλις ἐστὶ χώρας τῆς Ἰνδικῆς, ὡς ἐν τῇ τρίτῃ τῶν Βασιλειῶν μανθάνομεν.

Athanasius Theol., Quaestiones ad Antiochum ducem [Sp.] Volume 28, page 660, line 18

Οἷόν τι πολλάκις ὡς πνεύ- ματα ὁρῶσι τοὺς ὄμβρους τοὺς Ἰνδικούς πολλοὺς γινομένους, καὶ προλαμβάνουσιν ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ διὰ φαρμακειῶν ἢ ὄνειράτων, μεγάλην ἀνάβασιν τοῦ Νείλου ποταμοῦ μαντεύονται· καὶ ἄλλα δὲ τινα ὅμοια τούτοις διαπράττονται.

Athanasius Theol., Quaestiones ad Antiochum ducem [Sp.] Volume 28, page 676, line 34

Ὡς ἡ τῶν πραγμάτων φύσις μαρτυρεῖ καὶ διδάσκει, θεωροῦμεν, ὅτι τὸ μὲν θερμὸν στοιχεῖον ἐκ τῆς ἀνατολῆς τίκτεται· καὶ μαρτυροῦσι τὰ πάσης τῆς γῆς ἀνατολικώτερα Ἰνδικὰ σώματα ὑπὸ τῆς ἄκρας θερμῆς μέλανα γινόμενα.

5.70.6 Quaestiones in scripturam sacram

Athanasius Theol., Quaestiones in scripturam sacram [Sp.] (2035: 080); MPG 28. Volume 28, page 732, line 6

Μία ἐστὶ τῶν ὑδάτων ἡ φύσις καὶ συναγωγὴ· πληθυντικῶς δὲ τὰς συναγωγὰς ὠνόμασεν, ἐπεὶ δὴ ἄλλο μὲν τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος, ἄλλο δὲ τὸ Ποντικόν, καὶ τὸ Ἀτλαντικόν ἕτερον, καὶ ἄλλο μὲν ἡ Προποντίς, καὶ Αἰγαῖον ἕτερον, καὶ ἄλλος πάλιν ὁ Ἰώνιος κόλ- πος.

5.71 Aelius Aristides

5.71. AELIUS ARISTIDES

Aelius Aristides (AD 117 - 181) was a popular Greek orator, who lived during the Roman Empire. He is considered to be a prime example of the Second Sophistic, a group of showpiece orators who flourished from the reign of Nero until ca. 230 AD. His surname was Theodorus. He showed extraordinary talents even in his early youth, and devoted himself with remarkable zeal to the study of rhetoric, which appeared to him the worthiest occupation of a man, and along with it he cultivated poetry as an amusement. Besides the rhetorician Herodes Atticus, whom he heard at Athens, he also received instructions from Aristocles at Pergamum, from Polemon at Smyrna, and from the grammarian Alexander of Cotiaeum.[1] (From Wikipedia⁷¹)

Aelius Aristides Rhet., Διόνυσος (0284: 004) "Aristides, vol. 1", Ed. Dindorf, W. Leipzig: Reimer, 1829, Repr. 1964. Jebb page 30, line 6

καὶ οὐ πολὺ τοῦμμέσω τοῦ τε ἀγῶνος καὶ τῶν ἐπινικίων. Ἰνδοὺς δὲ καὶ Τυρρηνοὺς λέγουσιν ὡς κατεστρέψατο, αἰ- νιττόμενοι δοκεῖν ἐμοὶ διὰ μὲν τῶν Τυρρηνῶν τὰ πρὸς ἐσπέραν, διὰ δὲ τῶν ἐτέρων τὸν πρὸς ἑὸν τόπον τῆς γῆς ὡς ἀπάσης αὐτὸν ἄρχοντα.

Aelius Aristides Rhet., Παναθηναϊκός (0284: 013) "Aristides, vol. 1", Ed. Dindorf, W. Leipzig: Reimer, 1829, Repr. 1964. Jebb page 102, line 9

ἄλλας μὲν γὰρ χώρας ἐλέφαντες καὶ λέοντες κοσμοῦσι, τὰς δὲ ἵπποι κύνες, τὰς δὲ ἅ τοὺς παῖδας ἀκούοντας ἐκπλήττει· τὴν δὲ ὑμετέραν χώραν κοσμεῖ τῶν ἐπὶ γῆς τὸ κάλλιστον, οὐ κατὰ τοὺς ἐν Ἰνδοῖς μύρμηκας ὑποπτέρους ἄξιον εἰπεῖν.

Aelius Aristides Rhet., Παναθηναϊκός Jebb page 121, line 7

καὶ πρῶτοι δὴ τῶν εἰς ἐκεῖνον τὸν χρόνον Ἑλλήνων ἀναβάντες εἰς Σάρδεις στρα- τιᾷ κοινῇ πορθήσαντες ὥχοντο· τέως δὲ ἐν Βαβυλῶνος τάξει καὶ τῶν ἐν Ἰνδοῖς Ἑλληνες Σάρδεις ἐθαύμα- ζον· λα- βὼν δὲ ταύτην πρόφασιν Δαρεῖος ἡσυχίαν ἄγειν οὐκ ἠδύ- νατο, ἀλλ' ἐξήταξε τὴν ἀρχὴν καὶ τὰς δυνάμεις συνεκρό- τει, καὶ πᾶν μικρόν ἦν αὐτῷ.

Aelius Aristides Rhet., Πρώμης ἐγκώμιον (0284: 014) "Aristides, vol. 1", Ed. Dindorf, W. Leipzig: Reimer, 1829, Repr. 1964. Jebb page 200, line 30

φόρτους μὲν ἀπ' Ἰν- δῶν, εἰ βούλει δὲ, καὶ τῶν εὐδαιμόνων Ἀράβων, τοσού- τους ὅραν ἔξεστιν ὥστε εἰκάζειν γυμνὰ τὸ λοιπὸν τοῖς ἐκεῖ λελεῖσθαι τὰ δένδρα καὶ δεῦρο δεῖν ἐκείνους ἐλθεῖν, ἐάν του δέωνται, τῶν σφετέρων μεταιτήσοντας· ἐσθῆτας δὲ αὖ Βαβυλωνίους καὶ τοὺς ἐκ τῆς ἐπέκεινα βαρβάρου κόσμους πολὺ πλείους τε καὶ ῥᾶον εἰσαφικνουμένους ἢ εἰ ἐκ Νάξου ἢ Κύθνου Ἀθήναζε ἔδει κατᾶραι τῶν ἐκεῖ τι φέροντας.

Aelius Aristides Rhet., Πανηγυρικός ἐν Κυζίκῳ περὶ τοῦ ναοῦ (0284: 016) "Aristides, vol. 1", Ed. Dindorf, W. Leipzig: Reimer, 1829, Repr. 1964. Jebb page 242, line 29

71. http://en.wikipedia.org/wiki/Aelius_Aristides

CHAPTER 5. ROMAN EMPIRE, GREEK AND LATIN SOURCES

τοῦτο ὑπὲρ πᾶσαν μὲν Καυκάσου περίοδον, τοῦτο δ' ὑπὲρ Ἰνδοῦς ἀλισκομένους καὶ Κασπίας πύλας, τοῦτο ὑπὲρ πάντα τὰνθρώπεια, τοῦτο τοῖς καλλίστοις ἐστὶ νικῶντων καὶ ἃ προσήκει τῇ φύσει.

Aelius Aristides Rhet., Ἱεροὶ λόγοι γ' (0284: 025) "Aristides, vol. 1", Ed. Dindorf, W. Leipzig: Reimer, 1829, Repr. 1964. Jebb page 317, line 18

πρῶτον μὲν ἦν λέοντος ὀδόντα καῦσαι καὶ κόψαντα χρῆσθαι σμήγματι, δεύτερον δὲ ὁπῶ διακλύζειν τούτῳ δὴ τῶ χρέματι· μετὰ ταῦτα πέπερι, καὶ προσέθηκε θέρμης οὐνεκα· ἐφ' ἅπασι δὲ στάχυν Ἰνδικὸς, σμήγμα καὶ οὗτος.

Aelius Aristides Rhet., Ἱεροὶ λόγοι δ' (0284: 026) "Aristides, vol. 1", Ed. Dindorf, W. Leipzig: Reimer, 1829, Repr. 1964. Jebb page 325, line 6

οὗτος καὶ τὸ πρόβλημα ἦν ὁ προβαλὼν· καὶ ἦν γε τὸ πρόβλημα τοιόνδε· μέμνημαι γάρ, ἅτε καὶ πρῶτον λα- βὼν· Ἀλεξάνδρου, φησὶν, ἐν Ἰνδοῖς ὄντος συμβουλευεῖ Δημοσθένης ἐπιθέσθαι τοῖς πράγμασιν.

Aelius Aristides Rhet., Πρὸς Πλάτωνα περὶ ῥητορικῆς (0284: 045) "Aristides, vol. 2", Ed. Dindorf, W. Leipzig: Reimer, 1829, Repr. 1964. Jebb page 107, line 9

ὥσπερ γὰρ οἱ λέοντες καὶ ὅσα ἐντιμότερα τῶν ζῶων σπανιώτερα τῶν ἄλλων ἐστὶ τῇ φύσει, οὕτω καὶ κατ' ἀνθρώπους οὐδὲν οὕτω σπάνιον ὅσον ἄξιον προσειπεῖν ῥήτορα· εἷς δὲ ἀγαπητῶς καὶ δεύτερος ὥσπερ ὁ Ἰνδικὸς ὄρνις ἐν Αἰγυπτίοις ἡλίου περιόδοις φύεται.

Aelius Aristides Rhet., Αἰγύπτιος (0284: 048) "Aristides, vol. 2", Ed. Dindorf, W. Leipzig: Reimer, 1829, Repr. 1964. Jebb page 361, line 25

τὸ ἐν Συήνῃ μὲν καὶ Ἑλεφαντίνῃ ὀκτὼ καὶ εἴκοσιν αἰρεσθαι πήχεις, περὶ δ' αὖ τὸ Ἰνδικὸν καὶ Ἀράβιον ἐμπόριον τὴν Κόπτον ἕνα καὶ εἴκοσι, καὶ πάλιν τούτων ἀφαιρεῖν ἑπτὰ καὶ τέτταρας καὶ δέκα ἀγειν τοὺς κατὰ Μέμφιν γνωρίμους καὶ πρὸς οὓς Ἕλληνες ἤδη λογίζονται, κάτω δ' ἐν τοῖς ἔλεσιν εἰς ἑπτὰ καταβαίνειν, εἴτα δὴ ἤκουον.

5.72 Ptolemaeus VIII Euergetes II <Hist.>

Ptolemy VIII Euergetes II[^{note 1}] (Greek: Πτολεμαῖος Εὐεργέτης, Ptolemaios Euergetēs) (c. 182 BC – June 26, 116 BC), nicknamed Φύσκων, Physcon, was a king of the Ptolemaic dynasty in Egypt. ((Same guy?)From Wikipedia⁷²)

Ptolemaeus VIII Euergetes II <Hist.>, Fragmenta (1645: 003) "FHG 3", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 1, line 5

72. http://en.wikipedia.org/wiki/Ptolemy_VIII_Physcon

5.72. PTOLEMAEUS VIII EUERGETES II <HIST.>

E LIBRIS PRIMO ET QUINTO.

Athenaeus X: Πολυπότῃς δὲ ἦν καὶ Ἀν- τίοχος ὁ βασιλεὺς, ὁ κληθεὶς Ἐπιφανής, ὁ ὀμη-
ρεύσας παρὰ Ῥωμαίοις, ὃν ἱστορεῖ Πτολεμαῖος ὁ Εὐεργέτης ἐν τῷ πρώτῳ τῶν Ὑπομνημάτων
κὰν τῷ πέμπτῳ, φά- σκων αὐτὸν εἰς τοὺς Ἰνδικοὺς κάμους καὶ μέθας τρα- πέντα πολλὰ
ἀναλίσκειν.

Chapter 6

Late Antique

Contents

| | | |
|--------|--|----|
| 3.1 | Hellanicus of Mytilene | 7 |
| 3.2 | Hecataeus | 9 |
| 3.3 | Aeschylus | 10 |
| 3.4 | Democritus | 10 |
| 3.5 | Aristocrates | 11 |
| 3.6 | <i>Scholia In Aeschylum</i> | 12 |
| 3.7 | Hecataeus | 13 |
| 3.8 | Orphica, <i>Lithica kerygmata</i> | 14 |
| 3.9 | Herodotus | 14 |
| 3.9.1 | About Herodotus | 14 |
| 3.9.2 | Histories | 16 |
| 3.9.3 | νομὸς Ἰνδῶν | 22 |
| 0.0.1 | Law of the Indians | 23 |
| 3.10 | Ctesias of Cnidus | 30 |
| 3.10.1 | About Ctesias | 30 |
| 3.10.2 | Ἰνδ– appearing in testimonia and fragmenta | 30 |
| 3.11 | Ephippus Comic | 44 |
| 3.12 | Menander | 45 |
| 3.13 | Clearchus of Soli | 45 |

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

| | |
|--|----|
| 3.14 Eudoxus of Cnidus | 46 |
| 3.15 Aristoxenus | 47 |
| 3.16 Aristoteles et Corpus Aristotelicum | 47 |
| 3.17 Megasthenes | 52 |

6.1 Nonnus

Nonnus Epic., Dionysiaca (2045: 001) “Nonni Panopolitani Dionysiaca, 2 vols.”, Ed. Keydell, R. Berlin: Weidmann, 1959. Book p1, line 28

ἐς <δέκατον δὲ τέταρτον> ἔχε φρένα· κεῖθι κορύσσει δαιμονίνην στίχα πᾶσαν ἐς Ἴνδικὸν ἄρεα
Ῥεΐη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book p1, line 42

<εἰκοστὸν πρῶτιστον> ἔχει χόλον Ἐννοσιγαίου καὶ μῶθον Ἀμβροσίης ἐξηήνορα καὶ λόχον
Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book p1, line 45

<εἰκοστῷ τριτάτῳ> πεπερημένον Ἰνδὸν Ὑδάσπην καὶ κλόνον ὕδατόεντα καὶ αἰθαλόεντα
λιγαίνω.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book p1, line 47

<εἰκοστὸν> δὲ <τέταρτον> ἔχει γόνον ἄσπετον Ἰνδῶν κερκίδα θ' ἰστοπόνοιο καὶ ἡλακάτην
Ἀφροδίτης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 1, line 24

εἰ γὰρ ἐφερπύσσειε δράκων κυκλούμενος ὀλκῷ, μέλψω θεῖον ἄεθλον, ὅπως κισσῶδεϊ θύρῳ
φρικτὰ δρακοντοκόμων ἐδαΐζετο φῦλα Γιγάντων· εἰ δὲ λέων φρίζειεν ἐπαυχενίνην τρίχα σείων,
Βάκχον ἀνευάξω βλοσυρῆς ἐπὶ πήχεϊ Ῥεΐης μαζὸν ὑποκλέπτοντα λεοντοβότοιο θεαίνης· εἰ δὲ
θυελλήεντι μετάρσιος ἄλματι ταρσῶν πόρδαλις αἶψα πολυδαίδαλον εἶδος ἀμείβων, ὑμνήσω
Διὸς υἱά, πόθεν γένος ἔκτανεν Ἰνδῶν πορδαλίων ὀχέεσσι καθιππεύσας ἐλεφάντων· εἰ δέμας
ισάζοιτο τύπῳ σὺς, υἱά Θυώνης αἰέσω ποθέοντα συοκτόνον εὐγάμον Αὔρην, ὀψιγόνου τριτάτοιο
Κυβηλίδας μητέρα Βάκχου· εἰ δὲ πέλοι μιμηλὸν ὕδωρ, Διόνυσον αἰέσω κόλπον ἄλως δύνοντα
κορυσσομένοιο Λυκούργου· εἰ φυτὸν αἰθύσοιτο νόθον ψιθύρισμα τιταίνων, μνήσομαι Ἰκαρίοιο,
πόθεν παρὰ θυιάδι ληνῷ βότρυς ἀμιλλητῆρι ποδῶν ἐθλίβετο ταρσῷ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 1, line 196

οὐρανίου δὲ Δράκοντος ἐπεσκίρτησεν ἀκάνθη ἄρεα συρίζων· ὁ δὲ Κηφέος ἐγγύθι κούρης
ἀστράλαις παλάμῃσιν ἰσόζυγα κύκλον ἐλίξας δέσμιον Ἀνδρομέδην ἐτέρῳ σφηκώσατο δεσμῷ λο-
ξὸς ὑπὸ σπείρῃσιν· ὁ δὲ γλαγχῖνι κεραίῃς ἰσοτύπου Ταύριοιο δράκων κυκλοῦτο κεράσσης, οἰστρή-
σας ἐλικηδὸν ὑπὲρ βοέοιο μετώπου ἀντιτύπους Ὑάδας, κεραῆς Ἰνδαλμα Σελήνης, οἰγομέναις
γενέεσσιν· ὁμοπλεκέων δὲ δρακόντων ἰοβόλοι τελαμῶνες ἐμιτρώσαντο Βοώτην· καὶ θρασὺς

6.1. NONNUS

ἄλλος ὄρουσεν, ἰδὼν Ὀφιν ἄλλον Ὀλύμπου, πῆχυν ἐχιδνήεντα περισκαίρων Ὀφιούχου, καὶ στεφάνῳ στέφος ἄλλο περιπλέξας Ἀριάδνης, αὐχένα κυρτώσας, ἐλελίζετο γαστέρος ὀλκῶ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 1, line 280

θλιβομένη νεφέεσσι· Γιγαντείου δὲ καρήνου φρικτὸν ἀερσιλόφων αἰών βρύχημα λεόντων πόντιος ἰλυόεντι λέων ἐκαλύπτετο κόλπῳ· πᾶσα δὲ κητώεσσα φάλαγξ ἐστείνεται πόντου, Γηγενέος πλῆσαντος ὅλην ἄλλα μείζονα γαίης ἀκλύστοις λαγόνεσσιν ἐμυκήσαντο δὲ φῶκαι, καὶ βυθίῃ δελφίνες ἐνεκρύπτοντο θαλάσῃ· καὶ σκολιαῖς ἐλίκεσσι περίπλοκον ὀλκὸν ὑφαίνων πούλυπος αἰολόμητις ἐθήμονι πῆγνυτο πέτρῃ, καὶ μελέων ἵνδαλμα χαραδραῖή πέλε μορφή.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 3, line 280

Ζηνὸς ἀθηήτοιο, καὶ ἐς νομὸν ἦε κούρη ὀφθαλμοὺς τρομέουσα πολυγλήνοιο νομῆος· γυνὸβόρῳ δὲ μύωπι χαρασσομένη δέμας Ἰὼ Ἰονίης ἀλὸς οἶδμα κατέγραφε φοιτάδι χιλή· ἦλθε καὶ εἰς Αἴγυπτον, ἐμὸν ἔθρον, – ὃν πολιῆται Νεῖλον ἐφημίζαντο φερώνυμον, οὐνεκα γαίῃ εἰς ἔτος ἐξ ἔτεος πεφορημένος ὕγρὸς ἀκοίτης χεύματι πηλώνει νήν περιβάλλεται ἰλύν, – ἦλυθεν εἰς Αἴγυπτον, ὅπῃ βοέην μετὰ μορφὴν δαιμονίης ἵνδαλμα μεταλλάξασα κεραίης ἔσκε θεὰ φερέκαρπος· ἀναπτομένοιο δὲ καρποῦ Αἰγυπτίης Δήμητρος, ἐμῆς κεραελκέος Ἰοῦς, εὐδόμοις ὁμόφοιτος ἐλίσσεται ἀτμὸς ἀήταις.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 4, line 120

οὐ ποθέω στίλβουσαν Ἐρυθραῖν λίθον Ἰνδῶν, οὐ φυτὸν Ἑσπερίδων παγχρύσειον, οὐδέ μετέρπει Ἡλιάδων ἤλεκτρον, ὅσον μία νυκτὸς ὀμίχλη, τῇ ἐν Πεισινόῃν προσπτύζεται οὗτος ἀλήτης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 4, line 420

ἀμφὶ δὲ νεκρῷ θοῦρος Ἄρης βαρύμηνις ἀνέκραγε· χωρόμενου δὲ Κάδμος ἀμειβομένων μελέων ἐλικάδει μορφῇ ἄλλοφυῆς ἤμελλε παρ' Ἰλλυρίδος σφυρὰ γαίης ξεῖνον ἔχειν ἵνδαλμα δρακοντείοιο προσώπου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 5, line 170

ὑψιφανὴς πτερύγων πισύρων τετράζυγι κόσμῳ· τῇ μὲν ξανθὸς ἱάσπις ἐπέτρεχε, τῇ δὲ Σελήνης εἶχε λίθον πάνλευκον, ὃς εὐκεράοιο θεαίνης λειπομένης μινύθει καὶ ἀέξεται, ὅππότε Μῆνη ἀρτιφαῆς σέλας ὕγρὸν ἀποστίλβουσα κεραίης Ἡελίου γενετῆρος ἀμέλγεται αὐτόγονον πῦρ· ἄλλη μάργαρον εἶχε φασφόρον, οὗ χάριν αἴγλης γλαυκὸν Ἐρυθραῖης ἀμαρύσσεται οἶδμα θαλάσσης λαμπομένης· ἐτέρης δὲ μεσόμφαλος αἶθοπι κόσμῳ λεπτοφαῆς σέλας ὕγρὸν ἀπέπτυνεν Ἰνδὸς ἀχάτης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 5, line 202

πρώτῃ δ' Αὐτονόῃ γονίμων ἀνεπήλατο κόλπων μητέρος ἐννεάμηνον ἀναπτύξασα λοχείην πρωτοτόκοις ὠδῖσιν· ὁμογνήτῳ δὲ γενέθλι καλλιφυῆς Ἀθάμαντος ἀέξετο σύγγαμος Ἰνώ, μήτηρ δισσοτόκος· τριτάτῃ δ' ἀνέτελλεν Ἀγαυή, ἥ ποτε νυμφευθεῖσα Γιγαντείοις ὕμεναίοις εἶκελον υἱὰ λόχευσεν ὀδοντοφύτῳ παρακοίτῃ· καὶ Χαρίτων ἵνδαλμα ποθοβλήτοιο προσώπου Ζηνὶ φυλασσομένη Σεμέλῃ βλάστησε τετάρτῃ θυγατέρων, μούνη δὲ καὶ ὀπλοτέρῃ περ εἴουσι δῶκεν ἀνικήτοιο φύσις πρεσβία μορφῆς.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 5, line 302

ἀλλὰ οἱ οὐ χραίσμησε ποδῶν δρόμος, οὐδὲ φαρέτρη ἤρκεσεν, οὐ βελέων σκοπὸς ὄρθιος, οὐ δόλος ἄγρης· ἀλλὰ μιν ὤλεσε Μοῖρα, κυνοσπάδα νεβρόν ἀλήτην, Ἰνδῶν μετὰ δῆριν ἔτι πνείοντα κυδοιμοῦ, εὔτε τανυπρέμνοιο καθήμενος ὑπόθι φηγοῦ λουομένης ἐνόησεν ὅλον δέμας Ἰοχεαίρης, θηητὴρ δ' ἀκόρητος ἀθηήτοιο θεαίνης ἀγνὸν ἀνυμφεύτοιο δέμας διεμέτρεε κούρης ἀγχιφανῆς· καὶ τὸν μὲν ἀνείμονος εἶδος ἀνάσσης ὄμματι λαθριδίῳ δεδοκημένον † ὄμματι λοξῷ Νηϊᾶς ἀκρήδεμνος ἀπόπροθεν ἔδρακε Νύμφη, ταρβαλὴν δ' ὀλόλυξεν, ἣ δ' ἤγγειλεν ἀνάσση ἀνδρὸς ἐρωμανέος θράσος ἄγριον· ἡμιφανῆς δέ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 5, line 403

δύσμορον Αὐτονόην οὐ μέμφομαι· οἰχομένου γὰρ ὀφθαλμοὺς βροτέους οὐκ ἔδρακεν, οὐκ ἴδε μορφῆς ἀνδρομέης Ἰνδαλμα, καὶ οὐκ ἐνόησεν ἰούλων ἀνθεῖ πορφυρέῳ κεχαραγμένον ἀνθερεῶνα.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 6, line 187

ἔνθα λεοντείοιο λιπὼν Ἰνδαλμα προσώπου ὑφίλοφω χρεμετισμὸν ὁμοῖον ἔβρεμεν ἵππῳ ἄλζυγι, γαῦρον ὀδόντα μετοχμαλζοντι χαλινού, καὶ πολὺ λεύκαινε περιτρίβων γένυν ἀφρῶ· ἄλλοτε ῥοιζήεντα χέων συριγμὸν ὑπῆνης ἀμφιλαφῆς φολίδεσσι δράκων ἐλέλιχτο κεράστης, γλῶσσαν ἔχων προβλήτα κεχηνότος ἀνθερεῶνος, καὶ βλοσυρῷ Τιτήνος ἐπεσχίρτησε καρὴν ὄρμον ἐχιδνήεντα περίπλοκον αὐχένι δῆσας· καὶ δέμας ἐρπηστήρος ἀειδίνητον ἐάσας

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 6, line 215

ἀντολίην δ' ἔφλεξε, καὶ αἰθαλόεντι βελέμνῳ αἶθετο Βάκτριον οὔδας ἐώιον, ἀγχιπόροις δὲ κύμασιν Ἀσσυρίοισιν ἐδαίετο Κάσπιον ὕδωρ, Ἰνδῶοί τε τένοντες· Ἐρυθραίοιο δὲ κόλπου ἔμπυρα κυμαίνοντος Ἄραψ θερμαίνεται Νηρεὺς.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 7, line 98

τοῦτον ἀεθλεύσαντα μετὰ χθόνα σύνδρομον ἄστρον, Γηγενέων μετὰ δῆριν, ὁμοῦ μετὰ φύλοπιν Ἰνδῶν Ζηνὶ συναστράπτοντα δεδέξεται αἰόλος αἰθήρ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 7, line 164

καὶ τότε Τειρεσίαο δεδεγμένος ἐνθεον ὁμφὴν παῖδα πατὴρ πρόεηκεν ἐς ἠθάδα νειὸν Ἀθήνης Ζηνὶ θυηπολέουσιν ἀκοντιστῇρι κεραυνοῦ ταῦρον ὁμοκραίριοι φυῆς Ἰνδαλμα Λυαίου, καὶ τράγον ἐσσομένης σταφυλητόμον ἐχθρόν ὀπάρης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 9, line 27

καὶ μιν ἀχυτλώτοιο διαῖσσοντα λοχείης πήχεϊ κοῦρον ἄδακρυν ἐκούφισε σύγγονος Ἑρμῆς, καὶ βρέφος εὐκεράοιο φυῆς Ἰνδαλμα Σελήνης ὥπασε θυγατέρεσσι Λάμου ποταμησί Νύμφαις, παῖδα Διὸς κομέειν σταφυλητόμον· αἱ δὲ λαβοῦσαι Βάκχον ἐπηχύναντο, καὶ εἰς στόμα παιδὸς ἐκάστη ἀθλιβέων γλαγόεσαν ἀνέβλυεν ἱκμάδα μαλῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 9, line 149

ὑπόθεν ἀστήρικτος· ὁ δὲ δρόμον ἔφθασεν Ἥρης, πρωτογόνου δὲ Φάνητος ἀτέρμονα δύσατο μορφὴν· καὶ θεὸν ἄλομένην πρωτόσπορον εἶκαθεν Ἥρη ψευδομένης ἀκτῖνας ὑποπτήσουσα προσώπου, οὐδὲ νόθης ἐνόησε δολοπλόκον εἰκόνα μορφῆς· κουφοτέροις δὲ πόδεσσιν ὀρεϊάδα πέζαν ἀμείβων, χερσὶ περιπλεκέεσσι κερασφόρον υἱά κομίζων, μητρὶ Διὸς γενέταο λεοντοβότῳ πόρε

6.1. NONNUS

Ῥεῖη, καί τινα μῦθον ἔειπεν ἀριστῶδινι θεαίνῃ· “δέξο, θεά, νέον υἷα τεοῦ Διός, ὃς μόθον Ἰνδῶν ἀθλεύσας μετὰ γαῖαν ἐλεύσεται εἰς πόλον ἄστρον.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 9, line 190

καὶ χροὶ λαχρήεντας ἀνεχλαίνωσε χιτῶνας Εὐῖος ἀρτιτέλεστον ἔχων παιδῆιον ἥβην, δαι-
δαλέην ἐλάφοιο φέρων ὤμοισι καλύπτειν, αἰθερίων μιμηλὸν ἔχων τύπον αἰόλον ἄστρον· καὶ
Φρυγίης ὑπὸ πέζαν ἐς αὐλῖα λύγκας ἐλάσσας στικτοῖς πορδαλίεσσιν ἐὺν ἔξευξεν ἀπὴννῃ, οἷά τε
πατρῶων δαπέδων ἵνδαλμα γεραίρων· πολλάκι δ' ἀθανάτης ἐποχημένος ἄρματι Ῥεῖης, βαιῇ
χειρὶ φέρων ἀπαλόχροι κύκλα χαλινού, κραιπνὸν ἐπειγομένων ἀνεσεύρασεν ἄρμα λεόντων·
καὶ Διὸς ὑψιμέδοντος ἐνὶ φρεσὶ θάρσος ἀέξων δεξιτερὴν ἐτίττειν ἐπὶ στόμα λυσσάδος ἄρκτου,
σμερδαλαῖς γενύεσσιν ἀταρβέα δάκτυλα βάλλων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 10, line 18

Ταρταρίης δ' ὀφιδῶδες ἰδὼν ἵνδαλμα θεαίνης πάλλετο δειμαίνων ἐτερόχροα φάσματα μορ-
φῆς, ἀφρὸν ἀκοντίζων χιονώδεα, μάρτυρα λύσσης, ὀφθαλμοὺς μεθύοντας ἀπειλητῆρας ἐλίσ-
σων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 10, line 216

γινώσκω τεδὸν αἶμα, καὶ εἰ κρύπτειν μενεαίνει· Ἡελίω σε λόχευσε παρρυνηθεῖσα Σελήνη
Ναρκίσσῳ χαρίεντι πανεῖκελον· αἰθέριον γὰρ θέσκελον εἶδος ἔχεις, κεραῆς ἵνδαλμα Σελήνης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 11, line 310

ὦμοι, ὅτ' οὐκ Αἰδῆς πέλεν ἥπιος, οὐδ' ἐπὶ νεκρῷ δέχνυται ἀγλαὰ δῶρα βαθυπλούτοιο με-
τάλλου, Ἄμπελον ὄφρα θανόντα πάλιν ζώνοντα τελέσσω· ὦμοι, ὅτ' οὐκ Αἰδῆς ποτὲ πείθεται·
ἦν δ' ἐθελήσῃ, ὅλβον ὅλον στίλβοντα χαρίζομαι Ἡριδανοῖο δένδρεα συλήσας ποταμῆια, μαρ-
μαρέν δ' ἄξομαι ἀστράπτουσαν Ἐρυθραῖν λίθον Ἰνδῶν ἀφνειῆς τ' Ἀλύβης ὅλον ἄργυρον,
ἀντὶ δὲ νεκροῦ παιδὸς ἐμοῦ χρύσειον ὅλον Πακτωλὸν ὀπάσσω.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 12, line 308

ἀγριὰς ἠβώουσα πολυγνάμπτουσι ἐλίοις οἰνοτόκων βλάστησε φυτῶν εὐάμπελος ὕλη,
ὕγρὸν ἀναβλύζουσα βεβυσμένον ὄγκον ἐέρσης· καὶ πολὺς ὄρχατος ἦεν, ὅπη, στοιχηδὸν ἀνέρ-
πων, σείετο φοινίσσων ἐπὶ βότρυϊ βότρυς ἀλήτης· ὦν ὁ μὲν ἡμιτέλεστος ἐὰς ὠδῖνας ἀέξων
αἰόλα πορφύρων, ἐτερόχροι φαίνετο καρπῷ, ὃς δὲ φαληριῶν ἐπεπαίνετο σύγχροος ἀφρῷ, καὶ
πολὺς ὥθειεν ἄλλος ὁμόζυγα γείτονα γείτων ξανθοφυῆς, ἕτερος δὲ φυὴν ἰνδάλλετο πίσση περ-
κάζων ὅλον ἄνθος, ἀπ' οἰνοτόκων δὲ πετήλων σύμφυτον ἀγλαόκαρπον ὅλην ἐμέθυσεν ἐλαίην·
ἄλλου δ' ἀρτιχάρακτος ἐπέτρεχεν ὄμφακι καρπῷ βότρυς ἀργυφέοιο μέλας αὐτόσσυτος ἀήρ,
ὄγκῳ βοτρυόεντι φέρων σφριγώσαν ὀπώρη· καὶ πίτυν ἀγχιέλευθον ἔλιξ ἔσπεψεν ὀπώρης
συμφορτοῖς σκιδώσα περισκεπὲς ἔρνος ἰάμνοις, καὶ φρένα Πανὸς ἔτερπε· τινασσομένους δὲ Βο-
ρρῇ ἀκρεμόνας πελάσασα παρ' ἀμπελόεντι κορύμβῳ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 3

Ζεὺς δὲ πατὴρ προέηκεν ἐς αὐλῖα θέσκελα Ῥεῖης Ἴριν ἀπαγγέλλουσαν ἐγερσιμόθῳ Διο-
νύσῳ, ὄφρα δίκης ἀδίδακτον ὑπερφιάλων γένος Ἰνδῶν Ἀσίδος ἐξελάσειεν ἐὼ ποινήτορι θύρῳ,

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ναύμαχον ἀμήσας ποταμήιον υἷα κεράστην, Δηριάδην βασιλῆα, καὶ ἔθνεα πάντα διδάξῃ ὄρ-
για νυκτιχόρευτα καὶ οἶνοπα καρπὸν ὁπώρης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 20

καὶ τὴν μὲν Κορύβαντες ἀμειδεῖ νεύματι Ρεῖης θεσπεσίης ἀρέσαντο παρὰ κρητῆρι τρα-
πέλῃς· θαμβαλὴ δὲ πιούσα νεηγενέος χύσιν οἶνου τέρπετο βακχευθεῖσα· καρηβαρέουσα δὲ
δαίμων παιδὶ Διὸς παρεόντι Διὸς μυκήσατο βουλήν· “ἀλκῆεις Διόνυσε, τεὸς γενέτης σε κελεύει
εὔσεβίης ἀδίδακτον αἰστώσαι γένος Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 91

τοῖος ἐὼν ἔτι κοῦρος, ἔχων παιδῆιον ἥβην, ἀβροκόμης Ὑμέναιος ἐδύσατο φύλοπιν Ἰνδῶν,
δινεύων ἐκάτερθε παρηίδος ἥλικα χαίτην· καὶ οἱ ἐφωμάρτησαν ὁμήλυδες ἀσπιδιώται, οἳ τ'
Ἀσπληδόνος ἄστῳ, καὶ ὃν Χάρις οὐ ποτε λείπει Ὀρχομένον Μινύαο, χοροῖτυπον ἄλλος Ἐρώτων,
οἳ θ' Ὑρίην ἐνέμοντο, θεηδόχον οὔδας ἀρούρης, ξεινοδόκου μεθέπουσαν ἐπωνυμίην Ὑρίης, ἥχι
Γίγας ἀπέλεθρος ἀπειρογάμων ἀπὸ λέκτρων Ὠρίων τριπάτωρ ἀπὸ μητέρος ἄνθορε Γαίης,
εὔτε θεῶν τριγόνοισιν ἀεξηθεῖσα γενέθλαις

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 121

Βοιωτῶν τόσος ἦλθεν ἀμετρήτων στόλος ἀνδρῶν Ἰνδῶν ἐπὶ δῆριν ὁμαρτήσας Ὑμεναίῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 243

τοῖος ἀπὸ Κρήτης πρόμος ἦλυθεν· ἐρχομένῳ δὲ θερμότεραις ἀκτίσι χέων μαντήιον αἴγλην
Ἀστερίῳ σελάγιζεν ὁμώνυμος Ἄρεος ἀστήρ, νίκης ἐσσομένης πρωτάγγελος· ἀλλ' ἐνὶ χάρμῃ
νικήσας νόθον οἷστρον ἀήθεος ἔσχεν ἀρούρης νηλής· οὐ γὰρ ἔμελλεν ἰδεῖν μετὰ φύλοπιν Ἰνδῶν
πάτριον Ἰδαίης κορυθαίολον ἄντρον ἐρίπνης, ἀλλὰ βίον προβέβουλε λιπόπτολιν, ἀντὶ δὲ Δίκτης
Κνώσσιος ἐν Σκυθίῃ μετανάστιος ἔσκε πολίτης, καὶ πολὶὸν Μίνωα καὶ Ἀνδρογένειαν ἐάσας
ξεινοφόνων σοφὸς ἦλθεν ἐς ἔθνεα βάρβαρα Κόλχων Ἀστερίους τ' ἐκάλεσσε καὶ ὠπάσεν οὔνομα
λαοῖς Κρητικόν, οἷς ξένα θεσμὰ φύσις πόρε, παιδοκόμου δὲ πάτριον Ἀμνισοῖο ῥέον Κρηταῖον
ἐάσας αἰδομένοις στομάτεσσι νόθον πίε Φάσιδος ὕδωρ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 275

ἔνθεν Ἀρισταῖος βραδὺς ἦεν εἰς μόθον Ἰνδῶν, ὄψιμος εὐνήσας πρότερον χόλον, Ἀρκάδα πέ-
τρην, ἔνδιον Ἑρμείαο λιπὼν Κυλλήνιον ἔδρην· οὐ πῶ γὰρ προτέρῃ Μεροπηίδι νάσσατο νήσῳ, οὐ
πῶ δ' ἀτμὸν ἔπαυσε πυρώδεα διφάδος ὥρης Ζηνὸς ἀλεξικάκοιο φέρων φυσίζον αὔρην, οὐδὲ σιδη-
ροχίτων δεδοκήμενος ἀστέρως αἴγλην Σείριον αἰθαλόεντος ἀναστέλλων πυρετοῖο ἐννύχιος πρήνυε,
τὸν εἰσέτι διφάλεον πῦρ θερμὸν ἀκοντίζοντα δι' αἰθέρος αἶθοπι λαίμῳ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 372

κείνου μνηστὴν ἔχοντες ἐπεστρατῶντο μαχηταὶ μαρναμένου Βρομίοιο προασπιστῆρες ἐνυ-
οῦς, τικτομένης ναίοντες ἐδέθλια γείτονα Μήνης καὶ Διὸς Ἀσβύσταο μεσημβρίζοντας ἐναύλους,
μαντιπόλου κερόεντος, ὅπῃ ποτὲ πολλάκις Ἀμμων ἀρνειοῦ τριέλικτον ἔχων ἵνδαλμα κεραίης
ὁμφαίοις στομάτεσσιν ἐθέσπισεν Ἑσπέριος Ζεὺς· οἳ τε ῥέον Χρεμέταο καὶ οἳ παρὰ Κίνυφος
ὕδωρ ὥκεον ἀζαλὴς ψαμαθῶδεα πέζαν ἀρούρης, Αὐσχίσαι Βάκαλές τε συνήλυδες, οὓς πλέον
ἄλλων ἄρει τερπομένους Ζεφυρήσιος ἔτρεφεν ἀγκῶν.

6.1. NONNUS

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 418

τοῖσι κορυσσομένοισι σὺν εὐθύρῳ Διονύσῳ Ἡλέκτρης ἀνέτελλε δι' αἰθέρος ἔβδομος ἀστήρ
δεξιὸν ὑσμίνης σημήιον, ἀμφὶ δὲ νίκη Πληιάδων κελάδησε βοῆς ἀντίθροος ἡχώ γνωτῆς αἶμα φέ-
ροντι χαριζομένη Διονύσῳ, καὶ στρατιῇ πόρε θάρσος ὁμοίον· ἐρχομένων δὲ Ὠγυρος ἡγεμόνευεν
ἐς ἄρεα δεύτερος Ἄρης, Ὠγυρος ὑφικάρηνος, ἔχων ἵνδαλμα Γιγάντων· τοῦ μὲν ἦν ἀγναμπτον
ὅλον δέμας, ἐκ δὲ καρῆνου αὐχενίου τε τένοντος ὀπισθοκόμων ἐπὶ νώτων ἰσοφανεῖς πλοκαμῖδες
ἀκανθοφόροισιν ἐχίνοις ἔρρεον ἰξύος ἄχρι κατῆλυδες· εἶχε δὲ δειρὴν μηκεδανὴν, περίμετρον, ὁμοί-
ιον αὐχένι πέτρης, βάρβαρον ἦθος ἔχων πατρώιον· οὐδὲ τις αὐτοῦ φέρτερος ἄλλος ἵκανε· Ἐώιον
ἐς μόθον Ἰνδῶν νόσφι Διωνύσοιο· καὶ ὄρκιον ὤμοσε Νίκη· Ἰνδῶν χθόνα πᾶσαν ἐῷ δορὶ μοῦνος
ὀλέσσαι.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 425

καὶ στρατιῇ πόρε θάρσος ὁμοίον· ἐρχομένων δὲ Ὠγυρος ἡγεμόνευεν ἐς ἄρεα δεύτερος Ἄρης,
Ὠγυρος ὑφικάρηνος, ἔχων ἵνδαλμα Γιγάντων· τοῦ μὲν ἦν ἀγναμπτον ὅλον δέμας, ἐκ δὲ
καρῆνου αὐχενίου τε τένοντος ὀπισθοκόμων ἐπὶ νώτων ἰσοφανεῖς πλοκαμῖδες ἀκανθοφόροισιν
ἐχίνοις ἔρρεον ἰξύος ἄχρι κατῆλυδες· εἶχε δὲ δειρὴν μηκεδανὴν, περίμετρον, ὁμοίον αὐχένι πέτρης,
βάρβαρον ἦθος ἔχων πατρώιον· οὐδὲ τις αὐτοῦ φέρτερος ἄλλος ἵκανε· Ἐώιον ἐς μόθον Ἰνδῶν
νόσφι Διωνύσοιο· καὶ ὄρκιον ὤμοσε Νίκη· Ἰνδῶν χθόνα πᾶσαν ἐῷ δορὶ μοῦνος ὀλέσσαι.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 427

Ὠγυρος ἡγεμόνευεν ἐς ἄρεα δεύτερος Ἄρης, Ὠγυρος ὑφικάρηνος, ἔχων ἵνδαλμα Γιγάν-
των· τοῦ μὲν ἦν ἀγναμπτον ὅλον δέμας, ἐκ δὲ καρῆνου αὐχενίου τε τένοντος ὀπισθοκόμων ἐπὶ
νώτων ἰσοφανεῖς πλοκαμῖδες ἀκανθοφόροισιν ἐχίνοις ἔρρεον ἰξύος ἄχρι κατῆλυδες· εἶχε δὲ δειρὴν
μηκεδανὴν, περίμετρον, ὁμοίον αὐχένι πέτρης, βάρβαρον ἦθος ἔχων πατρώιον· οὐδὲ τις αὐτοῦ
φέρτερος ἄλλος ἵκανε· Ἐώιον ἐς μόθον Ἰνδῶν νόσφι Διωνύσοιο· καὶ ὄρκιον ὤμοσε Νίκη· Ἰνδῶν
χθόνα πᾶσαν ἐῷ δορὶ μοῦνος ὀλέσσαι.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 500

τοὺς δὲ λίγα κροτέοντας ὑπ' εὐρύθμῳ χθόνα ταρσῷ καὶ Στάβιος καὶ Στάμνος ἐπὶ κλόνον
ᾤπλισαν Ἰνδῶν· καὶ στρατὸν ὀρχιστῆρα περισκαίροντα δοκεῦν τοῖον ἔπος λέξειας, ὅτι πρόμος
ἡγεμονεύει εἰς χορόν, οὐκ ἐπὶ δῆριν, ἐνόπλιον ἄνδρα κομίζων· τοῖσι γὰρ ἐρχομένοισιν ἀνακρού-
ουσα χορεῖν Μυγδονὶς ἐγρεκύδοιμος ἐπὶ κλόνον ἔβρεμε φόρμιγξ, ἀντὶ χοροῦ πέμπουσα μόθου
λαοσσόον ἡχώ· καὶ πολέμων σάλπιγγες ἔσαν σύριγγες Ἐρώτων, καὶ δίδυμοι Βερέκυντες ὁμό-
ζυγες ἐκλαγον αὐλοί, καὶ κτύπον ἀμφιπλήγῃ βαρυσμαράγων ἀπὸ χειρῶν

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 13, line 549

Ἀστερίου δ' ἀπάνευθεν ἐοῦ γενέταο μολόντος ἀρτιθαλῆς Μίλητος ὁμόστολος ἵκετο Βάκχῳ
Καῦνον ἔχων συνάεθλον ἀδελφεόν, ὃς τότε Καρῶν λαὸν ἄγων ἔτι κοῦρος ἐδύσατο φύλοπιν Ἰνδῶν·
οὐ πῶ γὰρ δυσέρωτα δολοπλόκον ἔπλεκε μολπὴν γνωτῆς οἴστρον ἔχων ἀδαήμονος, οὐδὲ καὶ
αὐτὴν ἀντιτύπου φιλότητος ὁμοζήλων ἐπὶ λέκτρων Ζηνὶ συναπτομένην ἐμελίζετο σύγγονον
Ἥρην Λάτμιον ἀμφὶ βόαυλον ἀκοιμήτοιο νομῆος, ὀλβίζων ὑπ' ἔρωτι μεμηλότα γείτονι πέτρῃ

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

νυμφίον Ἐνδυμίωνα ποθοβλήτοιο Σελήνης· ἀλλ' ἔτι Βυβλὶς ἦν φιλοπάρθενος, ἀλλ' ἔτι θήρην
Καῦνος ὁμογνήτων ἐδιδάσκετο νῆις ἐρώτων·

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 36

καὶ φθονεροὶ Τελχῖνες ἐπήλυδες ἐς μόθον Ἰνδῶν ἐκ βυθίου κενεῶνος ἀολλίζοντο θαλάσσης· καὶ
δολιχῇ παλάμῃ δονέων περιμήκετον αἰχμὴν ἤλθε Λύκος, καὶ Σκέλμις ἐφέσπετο Δαμναμενῆι
πάτριον ἰθύνων Ποσιδήιον ἄρμα θαλάσσης, Τληπολέμου μετὰ γαῖαν ἀλιπλανέες μετανάσται,
δαίμονες ὑγρονόμοι μανιώδεις, οὓς πάρος αὐτοὶ πατρώης ἀέκοντας ἀποτμήξαντες ἀρούρης
Θοῖναξ σὺν Μακαρῇ καὶ ἀγλαὸς ἤλασεν Αὖγης, υἱέες Ἡελίοιο· διωκόμενοι δὲ τιθήνης

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 177

τοῖσι μὲν οὐατόεσσα φυῆς ἰνδάλλετο μορφή, ἱπτεῖν δ' ἀνέτελλε δι' ἰξύος ὄρθιος οὐρὴ ἰσχία
μαστίλουσα δασυστέρνοιο φορῆος, καὶ βοῆ βλάστησε κατὰ κροτάφοιο κεραίη, ὅμματα δ'
εὐρύνοντο τανυκράριοι μετώπου, καὶ σκολιὰ πλοκαμίδες ἀνέξηντο καρῆνων, γναθμοὶ δ' ἀρ-
γιδόντες ἐμηνύοντο γενείων, ξείνῃ δ' αὐτοτέλεστος ἀπ' ἰξύος εἰς πόδας ἄκρους ἀμφιλαφῆς
λασίοιο κατ' αὐχένος ἔρρεε χαίτη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 218

μηκεδανὸν ζώεσκον ἐπὶ χρόνον, αἱ μὲν ἐρίπνας γείτονες οἰονόμων ἐπιμηλίδες, αἱ δὲ λιποῦσαι
ἄλσεα δενδρήεντα καὶ ἀγριάδος ῥάχιν ὕλης, συμφύες Μελῖαι δρυὸς ἥλικος· αἱ τότε πᾶσαι ἐς
μόθον ἠπείγοντο συνήλυδες, αἱ μὲν ἐλοῦσαι τύμπανα χαλκεόνωτα, Κυβηλίδος ὄργανα Ῥεῖης,
αἱ δὲ κατηρεφῆες πλοκάμους ἐλικώδεϊ κισσῷ, ἄλλαι ἐμιτρώθησαν ἐχιδναίοισι κορύμβοις· χειρὶ
δὲ θύρσον ἄειρον ἀκαχμένον, αἷς τότε Λυδαὶ Μαινάδες ὠμάρτησαν ἀταρβέες ἐς μόθον Ἰνδῶν·
ῶν τότε Βασσαρίδες θιασώδεις ἴδμονι τέχῃ κρείσσονες ἠπείγοντο Διωνύσοιο τιθῆναι, Αἴγλη
Καλλιχόρη τε καὶ Εὐπετάλη καὶ Ἰώνη καὶ Καλύκη γελώσα Βρύουσα τε, σύννομος Ὀραιοί,
Σιλήνη τε Ῥόδη τε καὶ Ὠκυνόη καὶ Ἐρευνθὼ Ἀκρήτη τε Μέθη τε, καὶ ἔσπετο σύννομος Ἄρπη
Οἰνάνθη ῥόδεσσα καὶ ἀργυρόπεζα Λυκάστη, Στῆσιχόρη Προθόη τε· φιλομμειδῆς δὲ γεραῖη
οἰνοβαρὴς Τρυγίη πυμάτη κεκόρυστο καὶ αὐτή.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 272

καὶ θεὸς εὐόρπηκος ἐφήμενος ἄντυγι δίφρου Σαργαρίου παρὰ χεῦμα, περὶ Φρύγα κόλπον
ἀρούρης, λαϊνέης Νιόβης παρεμέτρεε πενθάδα πέτρην· καὶ λίθος Ἰνδὸν ὄμιλον ἐρίδμαίνοντα Λυ-
αίῳ δακρυόεις ὁρόων βροτέην πάλιν ἴαχε φωνήν· “μὴ μόθον ἐντύνητε θεημάχον, ἄφρονες Ἰνδοί,
παιδὶ Διός, μὴ Βάκχος ἀπειλείοντας ἐννῶ λαϊνέους τελέσειε καὶ ὑμέας, ὥς περ Ἀπόλλων, μυρο-
μένους τύπον ἴσον ἐμῇ πετρώδεϊ μορφῇ, μὴ ποταμοῦ παρὰ χεῦμα φεράννυμον Ἰνδὸν Ὀρόντην
γαμβρόν ἐσαθρήσητε δεδουπότα Δηριαδῆος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 278

Σαργαρίου παρὰ χεῦμα, περὶ Φρύγα κόλπον ἀρούρης, λαϊνέης Νιόβης παρεμέτρεε πεν-
θάδα πέτρην· καὶ λίθος Ἰνδὸν ὄμιλον ἐρίδμαίνοντα Λυαίῳ δακρυόεις ὁρόων βροτέην πάλιν ἴαχε
φωνήν· “μὴ μόθον ἐντύνητε θεημάχον, ἄφρονες Ἰνδοί, παιδὶ Διός, μὴ Βάκχος ἀπειλείοντας ἐννῶ
λαϊνέους τελέσειε καὶ ὑμέας, ὥς περ Ἀπόλλων, μυρομένους τύπον ἴσον ἐμῇ πετρώδεϊ μορφῇ, μὴ
ποταμοῦ παρὰ χεῦμα φεράννυμον Ἰνδὸν Ὀρόντην γαμβρόν ἐσαθρήσητε δεδουπότα Δηριαδῆος.

6.1. NONNUS

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 282

Ῥεῖη χωρόμενη δύναται πλέον Ἰοχεαίρης· Φοίβου φεύγετε Βάκχον ἀδελφεόν· αἰδέομαι γὰρ Ἰνδῶν κτεινομένων ἀλλότρια δάκρυα λείβειν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 294

φιλαγρύπῳ δὲ Λυαίῳ πάννυχος ἀστερόεντα πυρίτροχον ὀλκὸν ὑφαίνων οὐρανὸς ἐβρόντησεν, ἐπεὶ τότε μάρτυρι πυρσῷ νίκης Ἰνδοφόνιοι τέλος μαντεύσατο Ῥεῖη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 303

Ἥρῃ δ' ὠκυπέδιλος, εἰδομένη δέμας Ἰνδῶ, οὐλοκόμῳ Μελανῇ, μὴ οἶνοπα θύρσον ἀείρειν Ἀστράεντα κέλευε, δορυσσοὺν ὄρχαμον ἀνδρῶν, μηδὲ φιλακρήτων Σατύρων ἀλάλαγμα γεραίρειν, ἀλλὰ μάχην ἀσπονδὸν ἀναστήσαι Διονύσῳ· καὶ τίνα μῦθον εἶπε παραιφαμένη πρόμον Ἰνδῶν· “ἡδὺς ὁ δειμαίνων ἀπαλὴν στίχα θηλυτεράων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 323

καὶ στρατὸν ὥπλισε Βάκχος ἐς ἀντιπόρων στίχας Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 325

οὐδὲ λάθε ζοφόντα Κελαινέα θῆλυς ἐνὺ, ἀλλὰ θορῶν ἀκίχητος ὅλον στρατὸν ὥπλισεν Ἰνδῶν· καὶ θρασὺς Ἀστράεις, μενεδήιον οἷστρον ἀέξων, Ἀστακίδος κελάδοντα περὶ ῥέον ἴστατο λίμνης, δέγμενος ἀμπελόεντος ἐπηλυσίην Διονύσου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 331

ἀλλ' ὅτε δὴ διδύμης στρατιῆς ἐτερόζυγι λαῶ ἀμφοτέρων στίχα πᾶσαν ἐκόσμεον ἡγεμονῆες, κλαγγῇ μὲν ζοφόντες ἐπὶ κλόνον ἦιον Ἰνδοί, Θρηικίοις γεράνοισιν ἐοικότες, εὔτε φυγοῦσαι χεμερίην μᾶστιγα καὶ ἡερίου χύσιν ὄμβρου Πυγμαίων ἀγεληδὸν ἐπαῖσσουσι καρήνοισι Τηθύος ἀμφὶ ῥέεθρα, καὶ ὀξυόεντι γενεῖῳ οὐτιδανῆς ὀλέκουσι λιποσθενὲς αἶμα γενέθλης, ἱπτάμεναι νεφεληδὸν ὑπὲρ κέρας Ὠκεανοῖο· εἰς ἐνοπὴν δ' ἐτέρωθεν ἐβακχεύοντο μαχηταί, ἀκλινέες θεράποντες ἐγερσιμόθου Διονύσου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 387

π<ο>λλὴ δ' ἐνθα καὶ ἐν<θα παρ' Ἀστακίδος στόμα λίμν>η<ς Ἰνδῶν δ>εδάικτο γο<νὴ Κουρῇτι σιδήρῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 410

<καὶ πολὺς ἐσμ>ός ἐπιπτεν· ὅλη δ' ἐρυθαίνετο λύθρῳ <ὕγρῳ διψ>ᾶς ᾶ>ρουρα, καὶ Ἀστακίδος στόμα λίμνης <αἰμοβαφ>ὲς κελάρυζε, φόνῳ κεκερασμένον Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 14, line 417

.. <ὄχθαι ἐφοί>νισσοντο· πίων δὲ τις Ἰνδὸς ἀγῆνωρ <τοί>ην ἐκ στομάτων πολυθαμβέα ῥῆξατο φωνήν· “<ξ>ῆνον ἴδον καὶ ἄπιστον ἐγὼ ποτόν· ὡς γάλατος αἰγῶν ἄργυρον οὐ πέλε τοῦτο, καὶ οὐ μέλαν οἶα περ ὕδωρ, οὐδέ μιν οἶον ὅπως πολυτρήτοις ἐνὶ σίμβλοις βομβήεσσα μέλισσα λοχεύεται ἡδεῖ κηρῷ· ἀλλὰ νόον τέρπουσαν ἔχει καλλιπνοον ὁδμήν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 15, line 1

<᾽Ω>ς φα<μένου νεφεληδὸν ἐπέρρειον αἶθ>οπ<ες Ἰνδοὶ ἀ>μφὶ ῥέ<ον ποταμοῖο μελίπνοον· ὦν ὁ μ>έν <αὐτῶν> ἀγχιβαθ<ῆς στατὸν ἴχ>ο<ς ἐπ' ἰλύι δισσόν> ἐρεί<σας> ἡμιφανῆς ἔστηκε, καὶ

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ὀμ<φαλὸν ὕδατ>ι δεύω<ν>, κυρτὸς ἔσω ποταμοῖο κεκυφὸτα νῶτα τιταί<νων>, χερσὶ βαθυ-
νομένῃσι μελισταγές ἤφυσεν <ὔδωρ>· ὅς δὲ παρὰ προχοῇσι, κατάσχετος αἶθοπι δίψ<η>, πορ-
φυρέω προβλήτα γενειάδα κύματι βάπτων, στήθος ἐφαπλώσας ποταμῆϊδος ὑφὸθεν ὄχθης,
οἰγομένοις στομάτεσσιν ἀνήφυσεν ἱκμάδα Βά<κχου>·

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 15, line 26

ἔνθα τις ἀνὴρ Ἴνδὸς ἀμερσινόοιο μέθης δεδονημένος οἴστρω εἰς ἀγέλην ἦίξε, καὶ εὐπετάλῳ
παρὰ λόχη ταῦρον ἀπειλητῆρα μετήγαγε δέσμιον ἔλκων, διχθαδίων κεράων κεχαραγμένον
ἄκρον ἐρύσσας τολμηραῖς παλάμαις, διδυμάνος οἷα κεραίης ταυροφυῆ Διόνυσον <ὑπὸ ζυγὰ
δούλια σύρων· ἄλλος ἔχ>ων δασπλ<ῆτα σιδηρείης γένυν ἄρπης αἰγὸς ὄρε>σ<ιν>όμοιο διέθρισεν
ἀνθερεῶνα, θηγαλέῳ δρεπάνῳ δεδαῖγμένον, οἷα τε δειρὴν Πανό>ς <ἐν>κραίριοι ταμῶν γαμφώ-
νυχι χαλκῶ·

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 15, line 43

αἰγὸς ὄρε>σ<ιν>όμοιο διέθρισεν ἀνθερεῶνα, θηγαλέῳ δρεπάνῳ δεδαῖγμένον, οἷα τε δειρὴν
Πανό>ς <ἐν>κραίριοι ταμῶν γαμφώνυχι χαλκῶ· ἄλλος ἀπηλοῖησε βοῶν κεραελλέα φύτλην,
οἷα περ ἀμῶν Σατύρων ταυρώπ<ι>δα <μο>ρ<φή>ν, <ὅς δὲ τανυκράϊων ἐλάφ>ων ἐδίωκε
γεν<έ>θλην στικτῆς εἰσορόων πολυδαί<δα>λον εἶδος ὀ<π>ωπῆς, οἷα τε Βασσαρίδων ὀλέκω>ν στίχα·
<δαιδαλέαις γὰρ νεβρίσιν ἰσοτύποισι παρεπλά>γ<η>χ<η>σαν ὀπωπαί· καὶ φονίαις λιβάδε>σ<ιν>
ὄλον θάρηκα μαιίνων Ἴνδὸς ἀκοντιστῆ>ρι <μέ>λας ἐρυθαίνετο λύθρῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 15, line 75

ὄργια μιμήσαντο φερεσσακέων Κορυβάντων, ἵχνια δινεύοντες ἐνόπλιον ἀμφὶ χορεῖν· <καὶ
πα>λάμης ἐλικηδὸν ἀμοιβαίῃσιν ἐρωαῖς <ἀσπιδ>ες ἐκρούο<ντο> <κ>υβιστητῆρι σιδήρῳ· <ἄλλος>
ὀπιτεύω<ν> θιας>ώδεος ὄργια Μούσης <μιμηλῆ>ν Σατύ<ροι>σι συ>νεσκήρτησε χορεῖν· <καὶ τις
ἄ>ρασσο<μένης> αἰών κελάδημα βοεῖης <μ>εῖλιχον ἦθος ἔδεκτο, φιλοσμαράγῳ δὲ μενοινῇ <ἐ-
γ>εδανὴν ἀνέμοισιν ἐὼν ἔρριφε> φαρέτρην, <λύ>σσαν ἔχων· ἕτερος δὲ γυναιμανέω>ν πρόμο<σ>
Ἴνδῶν ἀπλεκέος πλοκαμῖδος ἐλὼν ὑψάυχενα Βάκχην, παρθενικὴν ἀδάμαστον ἀτάσθαλον εἰς
γάμον ἔλκων, σφίγγεν ὑπὲρ δαπέδοιο, τανυσσάμενος δὲ κονίῃ χερσὶν ἐρωμανέεσσιν ἀπεσφρη-
γίσσατο μίτρην, ἐλπίδι μαψι>δίῃ π<ε>φ>ορημέν<ος>· ἑξαπίνης γὰρ ὄρθιος εἶρπε δρ>άκων ὑπο-
κόλπ<ιος> ἱξυῖ γείτων, δυσμενέος δ' ἠι>ξε κατ' αὐχέν<ος>, ἀμφὶ δὲ δειρῇ οὐραίαις ἐλίκεσσ>ιν ἀνέ-
πλεκε <κ>υκλάδα μίτρην· ταρβαλέοις δὲ πόδες>σι φυ<γ>ὼν μελανόχροος ἀνὴρ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 15, line 87

ὄφ>ρα <μ>έν οἰνωθέντες ἐν οὖρεσιν ἔτ>ρ<ε>χον Ἴνδοί, τό>φρα <δὲ νήδυμος> Ἴπνος ἐὼν πτε-
ρόν οὐ>λο<ν> ἐλίξας ἀκλινέων σφαλεροῖσιν ἐπέχραεν ὄ>μμ<ασιν> Ἴνδῶν, εὐνάσε δ' οἴστρηθέντας
ἀμετρήτῳ ν>όον ο<ῖ>νῳ, Πα>σιθέης γε<νε>τῆ<ρι> χαρι<ζόμενος> Δι>ονύσῳ· <ῶ>ν ὁ μὲν ὕπτιος
εὐδεν ἄνω νεύον<τι> προσώ>π<ω> ὑ>πναλέῳ μυκτῆρι μεθυσφαλές <ἄσθμα> τιταίνων>, ὅς δὲ βα-
ρυνομένην κεφαλὴν <ἐ>πεθήκα>τ<ο> πέτρῳ>, νωθρὸς ἐνκροκάλῳ ποταμῆ<ίδι> κείμενος> ὄ<χ>θῃ>, ἡματίοις δ' ὀάριζε νοσπλαν<έ>εσσιν ὀνείροι>ς

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 15, line 121

6.1. NONNUS

κα>ὶ <δη>ους κνώ<σσην>τας ἰδ<ὼν> γελῶντι προσώπῳ Βάκχος ἀν>α<ξ> ἀγῶρευε, χέ>ων
<σημάντορα φωνήν>· “Ἴνδοφόνου θεράποντες ἀνικῆτου Διονύσου, νόσφ>ι <μόθου σφίγξαντες ἀολ-
λέας υἱέας Ἴνδῶν πάντας ἀναιμάκτῳ ζωγρήσατε δημοτῆτι· καὶ βριαρῶ γόνυ δρ>ῦ<λ>ον <ὑπο-
κλίν>ας Διονύσῳ <Ἴνδὸς ὑποδρήσειεν ἐμῇ> θιασώδῃ Ῥεῖη, <σείων οἶνοπα θύρσον, ἀπορρί>ψας
δὲ θύελλαις <ἀργυρέην κνημίδα πόδας σφ>ίγξειε κοθόρνοις, <καὶ κεφαλὴν> <σ>τέφειεν ἐμ>ῶ
<κ>ισσώδε<ῖ> δεσμῶ, γυμνώσας πλοκαμίδας ἀερσιλό>φου <τρυφαλείης,

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 15, line 142

<αὐχένι> δυσμ>ενέων ὁ<φιδεα δεσμὸν ἐλίξας εἴλκε> δρακοντεῖη πεπ<εδημένον ἀνέρα
σειρή, ἄλλ>ος ἐλὼν λασίης κεχα<λασμέν>ον ὀλκὸν ὑπὴν>ης <ἄ>νδ<ρ>α βαθυσμήριγγος
<ἀνείρ>υσεν ἀνθ<ερεῶ>νος· <καὶ τις> ἐὰς παλάμας τανύσας σκολιότ<ριχι> κ>όρση <ἀνέρα
δ>ουρί<κ>τητον ἀ>δέσμιον εἴλκεν ἐθείρης· <ἄλλος ὁ>μοπ<λέκτους> π>αλάμας περὶ νῶτα κα-
θά<ψας> <δήιον> εἰλικ<όεντι> λύγ>ων μιτρώσατ<ο> δε<σμ>ῶ <αὐχεν>ίῳ· τρ<ομερῶ> δὲ Μ>άρων
ἐλελί<ζετ>ο παλμῶ <ᾠμ>ῳ γηραλ<έω> βεβ>αρημένον Ἴνδ<ὸν> ἀείρ>ων· <ἄλ>λος ἀκοντιστῆρα
λαβὼν βεβημ<ένον> ὑπνῶ, <δεσμ>ῶ βοτρυνόεντι περίπλοκον αὐχένα <σύ>ρων, <στικ>τῶν
πορδαλίων ὑπὲρ ἄντυγα θήκατο δίφρων· <ἄλλου> κ>εκλιμένοιο φιλεΰιος ἐσμός ἀλήτης <χεῖρας>
ὁ>πισθοτόνους ἀλύτῳ σφηκώσατο δεσμῶ, <καὶ λο>φίης ἐπέβησεν ἀκαμπτοπόδων ἐλεφάντων·
καὶ πολὺς εὐκύκλοι λαβὼν τελαμῶνα βοεῖης Ἴνδον ἐπαμαδίῳ πεπεδημένον εἶχεν ἱμάντι.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 15, line 150

<δήιον> εἰλικ<όεντι> λύγ>ων μιτρώσατ<ο> δε<σμ>ῶ <αὐχεν>ίῳ· τρ<ομερῶ> δὲ Μ>άρων
ἐλελί<ζετ>ο παλμῶ <ᾠμ>ῳ γηραλ<έω> βεβ>αρημένον Ἴνδ<ὸν> ἀείρ>ων· <ἄλ>λος ἀκοντιστῆρα
λαβὼν βεβημ<ένον> ὑπνῶ, <δεσμ>ῶ βοτρυνόεντι περίπλοκον αὐχένα <σύ>ρων, <στικ>τῶν
πορδαλίων ὑπὲρ ἄντυγα θήκατο δίφρων· <ἄλλου> κ>εκλιμένοιο φιλεΰιος ἐσμός ἀλήτης <χεῖρας>
ὁ>πισθοτόνους ἀλύτῳ σφηκώσατο δεσμῶ, <καὶ λο>φίης ἐπέβησεν ἀκαμπτοπόδων ἐλεφάντων·
καὶ πολὺς εὐκύκλοι λαβὼν τελαμῶνα βοεῖης Ἴνδον ἐπαμαδίῳ πεπεδημένον εἶχεν ἱμάντι.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 15, line 153

καὶ τις ἀερτάζουσα καλαύροπα μηλοβοτῆρος Βασσαρίς, ἀφριώσα λαθίφρονι κύματι
λύσσης, Ἴνδον ἐρευνητῆρα βαθυπλούτοιο θαλάσσης τολμηρῇ παλάμῃ πολυκαμπέος εἴλκεν ἐθεί-
ρης δούλιον εἰς ζυγόδεσμον.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 16, line 121

ληιδίην δ' ὀπάσαιμι γονὴν μελανόχροον Ἴνδῶν παστάδος ὑμετέρης θαλαμηπόλον· ἀλλὰ τί
φύτλην κυανέην ὀνόμηναι τεῆς νυμφοστόλον εὐνῆς;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 16, line 138

εἰ δὲ μόθου λάχες οἶστρον, ἅτε κλυτότοξος Ἀμαζών, ἴξαι Ἴνδῶν ἐπὶ φύλοπιν, ὄφρα κεν
εἷης Πειθῶ νόσφι μόθοιο καί, ὁππότε δήρις, Ἀθήνη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 16, line 235

έννεπεν ἄγχι φυτοῖο· δι' εὐπετάλου δὲ κορύμβου φθογγῆς εἰσαΐουσα γυναιμανέος Διονύ-
σου ἀρχαίη Μελή φιλοκέρτομον ἴαχε φωνήν· “ἄλλοι μὲν, Διόνυσε, κυνοσσοὶ Ἰοχεαίρῃ ἐνθάδε

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

θηρεύουσι, σὺ δ' ἀγρώσσεις Ἀφροδίτῃ· ἡδὺς ὁ δειμαίνων ἀπαλόχρουν ἄζυγα κούρην· Βάκχος ὁ
τολμήεις ἰκέτης πέλε λάτρης Ἑρώτων· Ἰνδοφόνους παλάμῃσιν ἀνάλκιδα λίσσετο κούρην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 16, line 254

καὶ φλογερῷ Φαέθοντος ἱμασσομένης χρῶα πυρσῷ ἄβροχα διψαλῆς τερσαίνεταιο χεῖλεα
κούρης· καὶ δόλον ἀγνώσσουσα γυναιμανέος Διονύσου ξανθὸν ὕδωρ ἐνόησε φιλακρήτου ποτα-
μοῖο, καὶ πῖεν ἡδὺ ῥέεθρον, ὅθεν πῖον αἶθοπες Ἴνδοί· καὶ φρένα δινηθεῖσα μέθη βακχεύετο κούρη,
καὶ κεφαλὴν ἐλέλιξε μετήλυδα δίζυγι παλμῷ, καὶ διδύμην ἐδόκησεν ἰδεῖν πολυχανδέα λίμνην
ὄμματα δινεύουσα· βαρυνομένου δὲ καρήνου δέρκετο θηροβότου διπλούμενα νῶτα κολώνης·
καὶ τρομεροῖσι πόδεσσιν ὀλισθήσασα κονίη εἰς πτερὸν αὐτοκύλιστος ἐσύρετο γείτονος Ἵπνου·
καὶ γαμῖῳ βαρύγουνος ἐθέλγετο κώματι νύμφη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 16, line 405

καὶ πόλιν εὐλάιγγα φιλακρήτῳ παρὰ λίμνῃ τεῦξε θεὸς Νίκαιαν, ἐπάννυμον ἦν ἀπὸ νύμφης
Ἀστακίης ἐκάλεσσε καὶ Ἰνδοφόνον μετὰ νίκην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 2

Οὐδὲ φιλακρήτοιο μέθης πεπεδημένον ὕπνῳ ζωγρήσας ἀτίνακτον ἀνουτήτων γένος Ἰνδῶν
ληθαίοις Διόνυσος ἐπέτρεπε δῆριν ἀήταις· ἀλλὰ πάλιν Φρύγα θύρσον ἐκούφισεν· ὑφιλόφου γάρ
εἰς ἐνοπήν καλέοντος ἐπείγετο Δηριαδῆος, παιδὸς Ἀμαζονίης δολίην ἄμνηστον ἐάσας οἰνοβαρῇ
φιλότῃ καὶ ὑπναλέους ὕμεναίους.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 26

καὶ Βρομίῳ συνάεθλος ὅλος στρατὸς ἔρρεε Βάκχων, θάρσος ἔχων προτέραιο μόθου χάριν,
ὁππότε δισσῷ ἡδυμανῆς ἀσίδηρος ὁμόζυγι πῆχῃ μάργας ἔμφρονα νεκρὸν ἀναυδον, ἐνόπλιον
Ἰνδὸν αἰείρων, Σιληνὸς βαρύγουνος ἐχάζετο νωθρὸς ὀδίτης, ὁππότε κωμάζουσα ποδῶν διδυμάονι
ἐϋθμῷ Βακχιᾷς ἀκρήδεμνος ἐπεκροτάλιζε Μιμαλλῶν .

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 88

καλλείφας δὲ νομῆα καὶ ἀγριάδος ῥάχιν ὕλης εἰς ἐτέρην ἔσπευδεν ὀρειάδα φύλοπιν Ἰνδῶν·
καὶ Σατύρων ὁμόφοιτον ὀρίδρομον ἵχνος ἐπείγων ἀμφιπόλοις παλίνροσος ὁμίλει θυιάσι Βάκ-
χαις.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 96

διψῶν δὲ φόνιοι καὶ εὐθύρσοιο κυδοιμοῦ, Τυρσηνῆς βαρύδουπον ἔχων σάλπιγγα θαλάσσης,
πομπὸν Ἑνναλίοιο μέλος μυκήσατο κόχλῳ, λαὸν ἀολλίζων· βριαροὺς δ' ἐμέθυσε μαχητάς,
θερμοτέροις ἐς ἄρῃα νοήμασιν ἀνέρας ἔλκων Ἰνδῶν ὀλετήρας ἀβακχεύτοιο γενέθλης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 97

τοὺς μὲν ἀναξ Διόνυσος ἐκόσμεεν εἰς μόθον Ἰνδῶν· Ἀστράεις δ' ἀκίχῃτος ἰὼν ἠγγειλεν Ὀρόντῃ
Ἰνδῶν δοῦλα γένεθλα καὶ ἴαχε πενθάδι φωνῇ· “γαμβρὲ δοριθρασέος μενεδήιε Δηριαδῆος, κλυθι
καὶ εἰσαῖων μὴ χῶεο· καὶ σε διδάξω νίκην φαρμακόμεσαν ἀθωρήκτου Διονύσου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 114

αστράπτων σακέεσσιν, ἀκοντοφόρους δὲ δοκεύων Λυδὸς ἀνὴρ πολυίδρις ἐμοὺς ἐφρίξε μαχη-
τάς· ἴστατο δ' ἀπτολέμων Σατύρων πρόμος, οὐ δόρυ χάρμης χειρὶ φέρων, οὐ γυμνὸν ἔχων

6.1. NONNUS

ἔϊφος, οὐδ' ἐπὶ νευρῇ εἰς σκοπὸν ἰθυκέλευθον ὑπηνέμιον βέλος ἔλκων· ἀλλὰ κέρας βοὸς εἶχεν, ἐνὶ γλαφυρῇ δὲ κεραίῃ φάρμακον ὑγρὸν ἄειρε, καὶ ἀργυρέου ποταμοῖο εἰς προχοᾶς δολόεσσαν ὅλην κατέχευεν ἐέρσην ἰκμάδι φοινίξας γλυκερὸν ῥέον· ἐκ δὲ κυδοιμοῦ καύματι διψῶντες ὅσοι πῖον αἰθοπες Ἴνδοί, ἔμφρονα λύσσαν ἔχοντες ἀνεκρούσαντο χορείην· καὶ σφισι λοίγιος ὕπνος ἐπέχραεν, ἀκλινέες δὲ ἀσχετα βακχευθέντες ἐπευνάζοντο βοείαις· ἄλλοι δ' ἀστορέεσσι κατεκλίνοντο χαμῆναις νωθρὸν ἐπιτρέψαντες ἀκοιμήτῳ δέμας ὕπνω, Βάκχαις ἀδρανέεσσι ἐλώρια καὶ Διόνυσῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 132

ἀλλὰ ποτὸν πεφύλαξο, δορυσσόε, μὴ μετὰ νίκην κερδαλέην ἀσίδηρον ἀναιμάκτοιο Λυαίου ζωγρήσῃ δόλος ἄλλος ἐν ἄρεϊ λείφανον Ἴνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 136

ὄφρα μὲν Ἴνδὸν ὁμιλον ὀρίδρομος ὥπλισεν Ἄρης, τόφρα δὲ Βασσαρίδες πολυκαμπέος ὑφῶθι Ταύρου εἰς μόθον ἠπείγοντο, συνεστρατόωντο δὲ Βάκχοι ὅπλοφόροι καὶ Φῆρες ἀτευχές· οἱ μὲν ἐναύλων ξηζάμενοι κρηπῖδας ἐκούφισαν, οἱ δὲ κολώνης ὑψιτενῇ πρηῶνα· καὶ ἀρχομένοιο κυδοιμοῦ ἔχραον ἀντιβίοισι· πολυσχιδῆες δὲ χαράδραι Ἰνδῶσι ἐλικηδὸν ὀιστεύοντο καρήνοισι.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 150

καὶ ποσὶ λεπταλέοισιν ἐπισκαίροντες ἐρίπην Πᾶνες ἐθωρήσοντο μεμνηότες, ὧν ὁ μὲν αὐτῶν μάρφας εὐπαλάμῳ βεβημένον αὐχένα δεσμῷ δῆιον αἰγείῃσιν ἀνέσχισεν ἀνέρα χηλαῖς, σὺν βριαρῷ θώρηκι μέσον κενεῶνα χαράσσω· ὃς δὲ τανυπτόρθων κεράων εὐκαμπέσιν αἰχμαῖς ὀρθιον ἀρπάξας τετορημένον Ἴνδὸν ἀλήτην μεσσοπαγῇ κούφισεν, ἐς ἡρίας δὲ κελεύθους δισσαῖς ὑψιπότητον ἀνηκόντιζε κεραίαις, κύμβαχον αὐτοκύλιστον· ἀμαλλοφόροιο δὲ Δημοῦς ἄλλος ἐῖ παλάμῃ δονέων καλαμητόμον ἄρπην, ὡς στάχυν ὑσμίνης, ὡς δράγματα δημοτῆτος, δυσμενέων ἤμησε γονὰς γαμφώνυχι χαλκῷ, τεύχων κῶμον Ἄρηι θαλύσια καὶ Διόνυσῳ, τέμνων ἐχθρὰ κάρηνα· καὶ ὥρεγε μάρτυρι Βάκχῳ καμπύλον ἀνδρομέη πεπαλαγμένον ἄορ ἐέρση,

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 168

καὶ θρασὺς Ἰνδῶν στρατιὴν θάρσυνεν Ὀρόντης μῦθον ἀπειλητῆρα χέων ὑψήνορι φωνῇ· “δεῦτε, φίλοι, Σατύροισιν ἀναστήσωμεν ἐνὺ· ἄρεα μὴ τρομέοιτε φυγοπτολέμου Διόνυσου· μηδὲ τις ὑμείων πῖετ' ἄνθος ἔχρον ὕδαρ, μὴ γλυκερῆς δολόεντα μεμνηνὸτα φάρμακα πηγῆς, Ἰνδῶν αἰνομόρων δεδαῖγμένα χειρὶ Λυαίου μὴ μετὰ τόσσα κάρηνα καὶ ἡμέας ὕπνος ὀλέσση.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 186

ἀλλὰ μαχητὴν σφιγγόμενον βαρύνεσμον ἀνάλκιδα τοῦτον ἐρύσσω θηλυμανῇ Διόνυσον, ὁπάονα Δηριαδῆος· οὗτος ὁ θῆλυν ἔχων ἀπαλὸν χροᾶ, πάντας ἐάσας Ἰνδοὺς τοσσατίους ἐνὶ μάρναο μοῦνον Ὀρόντη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 190

σὰς προπόλους Ἰνδοῖσι γυναιμανέεσσι συνάψω ἐλκομένας ἐπὶ λέκτρα δορικτῆτων ὑμεναίων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 243

θηγαλέην Βρομίοιο μάτην ἤρασσε κεραῖν· οὐ γὰρ ἄναξ Διόνυσος ἀδηλήτοιο καρήνου ταυροφυῆ τύπον εἶχε † Σεληναίοιο μετώπου τεμνόμενον βουπλήγος ἀλοιητῆρι σιδήρῳ, ὡς κερδαῖς

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Ἀχελῷος αἰδέεται, οὐ ποτε κόψας Ἡρακλῆς κέρασ' εἶλε γαμοστόλος· ἀλλὰ Λυαῖος οὐράνιον μίμημα βοώπιδος εἶχε Σελήνης, δαιμονίης ἄρρηκτον ἔχων βλάστημα κεραΐης, ἀντιβίοις ἀτίνακτον· ὁ δὲ θρασὺς ἀντία Βάκχου ἡερίη βαρύδουπος ὁμοίος Ἴνδός ἀέλλη δεύτερον ἠκόντιζεν, ἀνεγνάμφθη δὲ οἱ αἰχμὴ νεβρίδος ἀφαμένη μολίβου τύπον.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 254

ἴστασο δηριῶν, καὶ γνώσεαι, οἷον ἀέξει ὄρχαμον ἀλκήεντα γέρων ἐμὸς Ἴνδός Ὑδάσπης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 274

τύφε κατὰ στέρνου πεφιδημένος· οὐτιδανῶ δὲ ἀνθεῖ βοτρυνέοντι τυπεῖς ἐσχίζετο θώρηξ· οὐδὲ καλυπτομένου χροὸς ἤψατο Βακχίας αἰχμὴ, οὐ δέμας ἄκρον ἀμυξε· σιδηρείου δὲ χιτῶνος ῥηγνυμένου βαρύδουπος ἐχάζετο γυμνός Ὀρόντης· Ἡῶν δ' ἐπὶ πέζαν ἑὰς ἐτίταινεν ὅπωπας ἀντιπόρῳ Φαέθοντι καὶ ὕστατίν φάτο φωνήν· “Ἡέλιε, φλογεροῖο δι' ἄρματος αἰθέρα τέμνων, γείτονα † καὶ κυθέην ὑπὲρ αὐλακα φέγγος ἰάλλων στῆσον ἐμοὶ σέο δίφρα, καὶ ἔννεπε Δηριαδῇ Ἴνδῶν δοῦλα γένεθλα καὶ αὐτοδάικτον Ὀρόντην καὶ θύρσους ὀλίγους ῥῆξήνορας, εἰπέ καὶ αὐτοῦ νίκην φαρμακόεσσαν ἀπειρομόθου Διονύσου, καὶ ῥέον οἰνωθέντα νοσφαλέος ποταμοῖο· εἰπέ δέ, πῶς ἀκάμαντα σιδηροφόρων στρατὸν Ἴνδῶν λεπταλέοις πετάλοισι διασχίζουσι γυναῖκες.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 278

Ἡῶν δ' ἐπὶ πέζαν ἑὰς ἐτίταινεν ὅπωπας ἀντιπόρῳ Φαέθοντι καὶ ὕστατίν φάτο φωνήν· “Ἡέλιε, φλογεροῖο δι' ἄρματος αἰθέρα τέμνων, γείτονα † καὶ κυθέην ὑπὲρ αὐλακα φέγγος ἰάλλων στῆσον ἐμοὶ σέο δίφρα, καὶ ἔννεπε Δηριαδῇ Ἴνδῶν δοῦλα γένεθλα καὶ αὐτοδάικτον Ὀρόντην καὶ θύρσους ὀλίγους ῥῆξήνορας, εἰπέ καὶ αὐτοῦ νίκην φαρμακόεσσαν ἀπειρομόθου Διονύσου, καὶ ῥέον οἰνωθέντα νοσφαλέος ποταμοῖο· εἰπέ δέ, πῶς ἀκάμαντα σιδηροφόρων στρατὸν Ἴνδῶν λεπταλέοις πετάλοισι διασχίζουσι γυναῖκες.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 284

οὐ πιθόμην Βρομίῳ θηλύφρονι· μάρτυρας ἔλκω ἥελιον καὶ γαῖαν ἀτέρμονα καὶ θεὸν Ἴνδῶν, ἀγνὸν ὕδωρ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 286

σὺ δὲ χαῖρε, καὶ ἴλαος ἔσσο κυδοιμῶ Ἴνδῶν μαρναμένων, καὶ ὀλωλότα θάψον Ὀρόντην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 314

τὸν μὲν ἐταρχύσαντο καὶ ἔστενον αἰλίνα Νύμφαι, Νύμφαι Ἀμαδρυάδες, χρυσῆς παρὰ πυθμένα Δάφνης ἀμφὶ ῥοᾶς ποταμοῖο, καὶ ἔγραφον ὑψόθι τύμβου· Βάκχον ἀτιμήσας στρατιῆς πρόμος ἐνθάδε κεῖται, αὐτοφόνῳ παλάμῃ δεδαῖγμένος Ἴνδός Ὀρόντης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 317

οὐδὲ μόθου τέλος ἦεν ἀτερπέος· ἡμιτελὴς γὰρ ἦεν ἀγὼν καὶ δῆρις ἀνήνυτος· ὑψιφανὴς δὲ Ἴνδός ἄρης ἀλάλαξε· παλιννόστω δὲ κυδοιμῶ Λυδὸν ἐρευγομένη μανιώδεος ὄγκον ἀπειλῆς Βακχίας εἰς μόθον ἄλλον ἐκάμασε θυιάς Ἐνυῶ, δῆιον ἀνδροφόνουσις ἀκοντίζουσα κορύμβοις, ἄρει βακχευθεῖσα· φιλοπτόρθου δὲ Λυαίου δυσμενέες δρυόεντι κατεκτείνοντο βελέμνῳ φοίνιον ἔλκος ἔχοντες· ἀθωρήκτοιο δὲ Βάκχης ἐγχεῖ βοτρυνέοντι δαΐζομένοιο σιδήρου Ἴνδοι χαλκοχίτωνες ἐθάμβεον ὃξεϊ κισσῶ στήθεα γυμνωθέντα νεούτατα· ῥήιτεροι γὰρ

6.1. NONNUS

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 331

ἄλλων δ' ἄλλος ἔην φόνος ἄσπετος, ὧν ὑπὸ λύθρῳ σχιζόμενοι πετάλοισιν ἐφοινίσσοντο χιτῶνες
μαρναμένων, ὅθι Ταῦρος· ἐκυκλώσαντο δὲ Βάκχαι ἀκλινέες στεφανηδὸν ὁμοζυγέων στίχας
Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 338

καὶ θρασὺς αὐλὸς ἔμελπε φόνου μέλος· ἐν δὲ κυδοιμοῖς Βάκχοι μὲν θεράποντες ἐλινόφору
Διονύσου τυπτόμενοι πελέκεσσι καὶ ἀμφιτόμοισι μαχαίραις πάντες ἔσαν πυργηδὸν ἀπήμονες·
αἰνόμεροι δὲ δυσμενέες λεπτοῖσι κατεκτείνοντο πετήλοισι· ἐξείης δ' ἐπέπηκτο τανυπτόρθοις ἐνὶ
δένδροις Ἰνδῶν πυκνὰ βέλεμνα, καὶ ἔγχεϊ νύσσετο πεύκη τηλεπύρῳ, βέβλητο πίτυς, τοξεύετο
δάφνη, Φοίβου δένδρον ἐοῦσα, καὶ αἰδομένοις ἐνὶ φύλλοις πεμπομένων ἐκάλυπτε τανυπτερύγων
νέφος ἰῶν, μή μιν ἴδῃ βελέεσσιν οἰστευθεῖσαν Ἀπόλλων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 347

καὶ γυμνῇ παλάμῃ σακέων δίχα, νόσφι σιδήρου, Βάκχῃ ῥόπτρα τίνασσε, καὶ ἤριπεν ἀσπι-
διώτης· τύμπανα δ' ἐσμαράγησε, καὶ ὠρχήσαντο μαχηταί· κύμβαλα δ' ἐκροτάλιζε, καὶ
αὐχένα κάμψε Λυαίῳ Ἰνδὸς ἀνὴρ ἰκέτης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 354

ἀθρήσας δὲ τάλαντα μάχης ἑτεραλλεῖ ἐρίπῃ νίκην Ἰνδοφόνιο προθεσπίζοντα Λυαίου Ἀστρά-
εις ἀκίχητος ἐχάζετο, πότμον ἀλύξας, ἐγχείην τανύφυλλον ὑποπτήσων Διονύσου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 376

μαρναμένων δὲ ἤδη βαρβαρόφωνος † ἐπαύσατο Ἰνδὶς ἐνυῶ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 380

καὶ πολέας ζώγρησαν ἀπὸ πτολέμοιο μαχητὰς Βασσαρίδες· πολλοὶ δὲ λελοιπότες οὔρεα
Ταύρου δυσμενέες νόστησαν ἐς Ἰνδῶν κλίμα γαίης ἐλπίσιν ἀπρήκτοισιν ἐς οἰκία Δηριαδῆος,
ἀμφιλαφεῖς ἐλατῆρες ἀμετροβίων ἐλεφάντων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 385

καὶ Βλέμυς οὐλοκάρηνος, Ἐρυθραίων πρόμος Ἰνδῶν, ἰεσείης κούφιζεν ἀναίμονα θαλλὸν
ἐλαίης, Ἰνδοφόνῳ γόνυ δοῦλον ὑποκλίνων Διονύσῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 17, line 390

καὶ θεός, ἀθρήσας κυρτούμενον ἀνέρα γαίῃ, χειρὶ λαβὼν ἄρθωσε, πολυγλώσσῳ δ' ἅμα λαῶ
κυανέων πόμπειεν Ἐρυθραίων ἐκάς Ἰνδῶν, κοιρανίην στυγέοντα καὶ ἠθεα Δηριαδῆος, Ἀρραβίης
ἐπὶ πέζαν, ὅπῃ παρὰ γείτονι πόντῳ ὀλβιον οὔδας ἔναιε καὶ οὐνομα δῶκε πολίταις· καὶ Βλέμυς
ᾠκὺς ἴκανεν ἐς ἐπταπόρου στόμα Νείλου, ἐσόμενος σκηπτοῦχος ὁμόχροος Αἰθιοπῶν· καὶ μιν
ἀειθερέος Μερῶς ὑπεδέξατο πυθμὴν, ὀφιγόνους Βλεμύεσσι προώνυμον ἡγεμονῆα.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 4

Ἦδη δὲ πετρέσσαι πολύστομος ἵπτατο Φῆμη Ἀσσυρίης στίχα πᾶσαν ὑποτροχόωσα πο-
λῶν, οὐνομα κηρύσσουσα κορυμβοφόρου Διονύσου καὶ θρασὺν Ἰνδὸν ἄρῃα καὶ ἀγλαόβοτρυν
ὁπώρην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 170

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ἀλλ' ὅτε δὴ ῥοδέοις ἀμαρύγμασιν ἄγγελος Ἡοῦς ἀκροφαῆς ἐχάραξε λιπόσκιον ὄρθρος
ὁμίχλην, εὐχαίτης τότε Βάκχος ἐώιος ἀνθόρεν εὐνῆς, ἐλπίδι νικαίῃ δεδονημένος· ἐννύχιος γὰρ
Ἰνδῶν ἐδάιζε γονὴν κισσῶδεϊ θύρῳ, ὑπναλῆς μεθέπων ἀπατήλιον εἰκόνα χάρμης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 176

καὶ κτύπον εἰσαῖων Σατύρων καὶ δοῦπον ἀκόντων φλοῖσβον ὀνειρείης ἀπεσεῖσατο δημοτῆτος,
ὑπνον ἀποσκεδάσας πολεμήιον· εἶχε δὲ θυμῷ μαντιπόλου φόβον ἄλλον ἀπειλητῆρος ὀνείρου·
μιμηλῆς γὰρ ὅπως μάχης ἴνδαλμα Λυκούργου ἐσσομένων προκέλευθον, ὅτι θρασὺς ἔνδοθι λό-
χης δύσμαχος ἐκ σκοπέλοις λέων λυσσῶδεϊ λαίμῳ Βάκχον ἔτι σκαίροντα καὶ οὐ φαύοντα
σιδήρου εἰς φόβον ἐπτοίησε, καὶ ἤλασεν ἄχρι θαλάσσης κρυπτόμενον πελάγεσσι, πεφυζότα
θηρὸς ἀπειλῇ· καὶ φόβον ἄλλον ὅπως, λέων θρασὺς ὅττι γυναικας θυρσοφόρους ἐδίωκε, κε-
χρηνός ἀνθερεῶνος, αἰμάσσω ὀνύχεσσι, χαρασσομένων δὲ γυναικῶν μύστιδος ἐκ παλάμης
ἐκυλίνδετο θύσθλα κονίη,

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 197

τοῖον ὄναρ Διόνυσος ἐσέδρακεν· ἐκ λεχέων δὲ ὄρθος ἐὼν ἐνδυνε φόνῳ πεπαλαγμένον Ἰνδῶν
χάλκεον ἀστερόεντα κατὰ στέρνοιο χιτῶνα, καὶ σκολιῷ μίτρωσε κόμην ὀφιώδεϊ δεσμῷ, καὶ
πόδας ἐσφῆκωσεν ἐρευθιόωντι κοθόρνῳ, χειρὶ δὲ θύρσον ἄειρε, φιλάνθεμον ἔγχος ἐνουῦς· καὶ
Σάτυρον κίκλησκεν ὀπάονα.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 221

καὶ Βρομίῳ πολύδωρος ἀναξ ἐφθέγγετο φωνήν· “μάρναό μοι, Διόνυσε, καὶ ἄξια ῥέξε
τοκῆος· δείξον, ὅτι Κρονίδαο φέρεις γένος· ἀρτιθαλῆς γὰρ Γηγενέας Τιτῆνας ἀπεστυφέλιξεν
Ὀλύμπου σὸς γενέτης ἔτι κοῦρος· ἐπείγεο καὶ σὺ κυδοιμῷ Γηγενέων ὑπέροπλον αἰστώσαι γένος
Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 235

ὠμοβόρους δὲ λέοντας ἐπὶ κλόνον Ἰνδὸν ἰμάσσω, μὴ τρομέοις ἐλέφαντας, ἐπεὶ τεὸς ὑψιμέδων
Ζεὺς Κάμπην ὑψικάρηνον ἀπηλοίησε κεραυνῷ, ἧς σκολιὸν πολύμορφον ὄλον δέμας· ἀλλοφυεῖς
γὰρ λοξὴν αὐτοέλικτον ἀνερρίπιζον ἐνυῶ χίλιοι ἐρηπυστήρες ἐχιδναίων ἀπὸ ταρσῶν ἰὸν ἐρευγο-
μένων δολιχόσκιον· ἀμφὶ δὲ δειρὴν ἦνθεε πεντήκοντα καρήατα ποικίλα θηρῶν· καὶ τὰ μὲν
ἐβρυχᾶτο λεοντείοισι καρήνοισι

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 267

γίνεο καὶ σὺ τοκῆι πανεῖκελος, ὄφρα καὶ αὐτὸν Γηγενέων ὀλετῆρα μετὰ Κρονίδην σὲ κα-
λέσσω, δῆιον ἀμήσαντα χαμαιγενέων στάχυν Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 271

σοὶ μόθος οὗτος ἔοικεν ὁμοίος· ἀρχέγονον γὰρ σὸς γενέτης Κρονίῳ προασπιστῆρα κυδοιμοῦ
ἡλιβάτοις μελέεσσι κεκασμένον υἱὸν ἀρούρης Ἰνδὸν ἀνεπρήνιξεν, ὅθεν γένος ἔλλαχον Ἰνδοί· Ἰνδῷ
σὸς γενέτης, σὺ δὲ μάρναο Δηριαδῆι.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 299

υἱὸν ἐγὼ Διὸς ἄλλον ἐμῷ ξείνισσα μελάθρῳ· χθιζὰ γὰρ εἰς ἐμὸν οἶκον εὐπτερος ἦλυθε Περσεύς
γείτονα Κωρυκίῳ διαυγέα Κύδνον ἐάσας, ὥς σὺ, φίλος, καὶ ἔφασκεν ἐπώνυμον ὠκέι ταρσῷ

6.1. NONNUS

ἀνδράσι παρ Κιλίκεσσι νεόκτιτον ἄστν χαράξαι· ἀλλ' ὁ μὲν ἥρταζεν ἀθηήτοιο Μεδούσης
Γοργόνης ἄκρα κάρηνα, σὺ δ' οἶνοπα καρπὸν αἰεῖεις, ἄγγελον εὐφροσύνης, βροτῆς ἐπίληθον
ἀνίης· Περσεὺς κῆτος ἔπεφνεν Ἐρυθραίῳ παρὰ πόντῳ, καὶ σὺ κατεπρήνιξας Ἐρυθραίων γένος
Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 300

κτεῖνε δὲ Δηριάδην, ὡς ἕκτανες Ἰνδὸν Ὀρόντην, κήτεος εἰναλίοιο κακώτερον· ἀχρυμένην μὲν
Περσεὺς Ἀνδρομέδην, σὺ δὲ ῥέο μείζονι νίκη πικρὰ βιαζομένην ἀδίκων ὑπὸ νεύμασιν Ἰνδῶν
Παρθένον ἀστερόεσσαν, ὅπως ἓνα κῶμον ἀνάψῃ Γοργοφόνῳ Περσῇ καὶ Ἰνδοφόνῳ Διονύσῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 312

ὡς εἰπὼν παλινόρσος ἐὼ νόστησε μελάθρῳ ἀβρὸς ἀναξ, Βρομίου ξεινηδόκος· εἰσαῖων δὲ φθεγ-
γομένου βασιλῆος ἑτέρπετο κέντορι μύθῳ θυρσομανῆς Διόνυσος, ἐβακχεύθη δὲ κυδοιμῷ οὔασι
θελγομένοισι μόθον πατρῶν ἀκούων· καὶ Κρονίδην νείκεσσε, καὶ ἤθελε μείζονα νίκην ἐσσομένην
τριτάτην, διδύμην μετὰ φύλοπιν Ἰνδῶν, ζῆλον ἔχων Κρονίδαο.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 18, line 366

ἐλπίδα δ' ἡμετέρην φθόνος ἥρπασεν· ὠϊσάμην γὰρ Ἰνδῶν μετὰ δῆριν ἅμα Σταφύλῳ βασι-
λῇ χερσὶν ἀεργάειν θαλαμηπόλον ἐσπέριον πῦρ, Βότρυος ἀγχεμάχοιο τελειομένων ὑμεναίων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 19, line 37

Βότρυν ἔχεις θεράποντα· διδασκέσθω δὲ χρείας καὶ τελετὰς καὶ θύσθλα καί, ἣν ἐθέλης,
μόθον Ἰνδῶν· καὶ μιν ἰδὼ γελῶντα φιλακρήτῳ παρὰ ληνῷ ποσσὶ περιθλίβοντα τεῆς ὠδῖνας
ὁπάρης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 19, line 146

ἰδμονας ὀρχηθμοῖο καλέσσατο μάρτυρι φωνῇ· “ὅς τις ἀεθλεύσει κυκλούμενος ἰδμοι ταρσῷ
νικήσας τροχαλοῖο ποδὸς κρίσιν, οὗτος ἐλέσθω καὶ χρύσειον κρητῆρα καὶ ἡδυπότου χύσιν οἶνου·
ὅς δὲ πέσῃ σφαλεροῖο ποδὸς δεδονημένος ὀλκῷ, ἥσσονα δ' ὀρχήσοιτο, καὶ ἥσσονα δῶρα δεχέσθω·
οὐ γὰρ ἐγὼ πάντεσσι ὁμοῖος· ἀθλοφόρῳ δὲ ἀνέρι νικήσαντι χοροῖτυπον ἀβρὸν ἀγῶνα οὐ
τρίποδα στίλβοντα καὶ οὐ ταχὺν ἵππον ὁπάσσω, οὐ δόρυ καὶ θῶρηκα φόνῳ πεπαλαγμένον
Ἰνδῶν, .

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 20, line 92

ἔστι καὶ εἰλαπίνη μετὰ φύλοπιν, ἔστι χορεύειν Ἰνδῶν μετὰ δῆριν ἔσω Σταφύλοιο μελά-
θρου· πηκτίδες † οὐ φαύουσιν ἐναλίην μετὰ νίκην· νόσφι πόνων οὐκ ἔστιν ἀνέμβατον αἰθέρα
ναίειν· οὐ πέλε ῥηιδίῃ μακάρων ὁδός· ἐξ ἀρετῆς δὲ ἀτραπὸς Οὐλύμποιο θεόσσυτος εἰς πόλον
ἔλκει.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 20, line 110

Σάτυροι δὲ δαφονήεσαν ἀπήνην πορδαλίων ἔξευξαν ἐπειγομένῳ Διονύσῳ· Σιληνοὶ δ' ἀλά-
λαζον· ἐμυκήσαντο δὲ Βάκχαι θυρσοφόροι· στρατιαὶ δὲ συνήλυδες εἰς μόθον Ἰνδῶν στοιχάδες
ἐρρώνοντο· καὶ ἔβρεμεν αὐλὸς Ἐννοῦς· κεκριμένας δὲ φάλαγγας ἐκόσμεον ἡγεμονῆες.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 20, line 283

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ἔμπλεον ἡδυπότοιο καὶ ἡθάδα ῥάβδον αἰείρων, εὔια δῶρα τίταινε φιλοσταφύλῳ Λυκοόργῳ·
ἄρτι δέμας κόσμησον ἀναιμάκτῳ σέο πέπλῳ, ἄρτι μέλος πλέξωμεν ἀθωρήκτοιο χορείης, καὶ
στρατὸς ἡρεμέων μενέτω παρὰ δάσκιον ὕλην, μὴ μόθον ἐντύνει γαληναίῳ βασιλῇ· ἀλλὰ,
βαλὼν πλοκάμοισι φίλον στέφος, ἔρχεο χαίρων εἰς δόμον ἀκλήιστον ἐτοιμοτάτου Λυκοόργου,
ἔρχεο καμάζων ἄτε νυμφίος· Ἴνδοφόνους δὲ θύρσους σείο φύλαξον ἀπειθεί Δηριάδῃ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 21, line 201

ὄφρα μὲν ἀμφεπε Βάκχος ἀλίτροφα δειπνα τραπέζης, τόφρα δὲ Καυκασίοιο δι' οὔρεος εἰς
πόλιν Ἴνδῶν οἶνοφύτου Βρομίοιο ποδὴνέμος ἵκετο κῆρυξ ταυροφυῆς, νόθον εἶδος ἔχων κεραελκεί
μορφῇ, ἀντίτυπον μίμημα Σεληναίῃσι κερααῖαις, αἰγὸς ὀρεσσινόμοιο περὶ χροῖ δέρμα συνάψας,
αὐχηνὴ κληῖδι καθειμένον ἐξ ἑνὸς ὤμου, δεξιτεροῦ πλευροῖο κατήγορον εἰς πτύχα μηροῦ, ἀμ-
φοτέρης ἐκάτερθε παρηίδος οὐατα σείων, ὥς ὄνος οὐατόεις, λάσιος δέμας· ἐκ μεσάτης δὲ ἰξύος
αὐτοέλικτος ἐσύρετο σύγγονος οὐρή.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 21, line 211

ἀμφὶ δέ μιν γελῶντες ἐπέρρεον αἰθοπες Ἴνδοί, εἰσόκεν ἐγγὺς ἵκανεν, ὅπῃ διδυμόλζυγι δίφρῳ
ἔζετο Δηριάδης περιμήκετος, ὄρχαμος ἀνδρῶν, ἡλιβάτων στατὸν ἵχνος ἀναστέλλων ἐλεφάντων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 21, line 225

καὶ πυρόεις σέο Βάκχος ἀκούεται, ὅττι τεκούσης ἐκ λαγόνων ἀνέτελλε Διοβλήτοιο Θυώνης·
καὶ πυρός ἐστιν ὕδωρ πολὺ φέρτερον· ἦν ἐβελήση, χεύματι παφλάζοντι πατήρ ἐμός, Ἴνδος
Ἰδάσπης, Ζηνὸς ἀποσβέσσειε πυρίπνοον ἄσθμα κεραυνοῦ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 21, line 234

καὶ βλοσυρῷ βασιλῇ τεθηπότα χεῖλεα λύσας ἀγγελίην Βρομίοιο ταχύδρομος ἔννεπε κῆ-
ρυξ· “Δηριάδῃ, σκηπτοῦχε, θεὸς Διόνυσος ἀνῶγει Ἴνδούς δεχνυμένους λαθικηδέος οἶνον ὀπάρης
σπένδειν ἀθανάτοισι, δίχα πτολέμων, δίχα μόχθων· εἰ δέ κε μὴ δέξαιντο, κορύσσεται, εἰσόκε
θύρσοις Βασσαρίδων γόνυ δοῦλον ὑποκλίνειεν Ἰδάσπης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 21, line 269

ταῦτα μολὼν ἀγόρευε φυγοπτολέμῳ Διονύσῳ· ἔρρε φυγῶν ἀκίχητος, ἕως ἔτι τόξον ἐρύκω,
ἔρρε φυγῶν ἐμὸν ἔγχος· ἐς ὑσμίνην δὲ κορύσσας ἡμιτελεῖς σέο θήρας ἀθωρήκτους τε γυναικάς
Δηριάδῃ πολέμιζε, καὶ Ἴνδῶν μετὰ νίκην σύνδρομον αὐερύσω σε δορικτήτῳ Διονύσῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 21, line 309

καὶ καλέσας Ῥαδαμᾶνας ἀλήμονας, οὓς ποτε γαίης Κρηταίης ἀέκοντας ἀπὸ χθονὸς ἤλασε
Μίνως Ἀρραβίης ἐπὶ πέζαν, ἐπέφραδε νεύματι Ῥεῖης πῆξαι νῆια δοῦρα θαλάσσιον εἰς μόθον
Ἴνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 21, line 317

ὄφρα μὲν εὐθύρσοιο μάχης ἠκούετο φωνὴ καὶ στρατὸς ἀγχικέλευθος ὀρεσσινόμου Διονύσου,
τόφρα δὲ Δηριάδης πυκινὸν λόχον ἵδρυσεν Ἴνδῶν, γαῖαν ἐς ἀντιπέραιαν ἐὼν στρατὸν ἄλζυγα
πέμπων, πᾶσαν ἐπιτρέψας δολομήχανον ἐλπίδα χάρμης Ἀρεῖ χαλκοχίτωνι· καὶ ἔπλεεν ὑπόθι
νηῶν λαὸς ἐρετμώσας πεπερημένον Ἴνδὸν Ἰδάσπην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 21, line 322

6.1. NONNUS

καὶ στρατιαῖς διδύμησι μερίζετο φύλοπις Ἰνδῶν ἀμφοτέρην παρὰ πέζαν ἀκοντοφόρου ποταμοῖο· Θουρεὺς μὲν Ζεφύροιο παρὰ σφυρά, Δηριάδης δὲ ἀντιπόρου σχεδὸν ἦλθε παρὰ πτερὸν αἵθοπος Εὐρου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 3

Ἄλλ' ὅτε δὴ πόρον ἶξον ἐκροκάλου ποταμοῖο Βάκχου πεζὸς ὄμιλος, ὅπη βαθυδίνει κόλπῳ πλωτὸν ὕδωρ, ἅτε Νεῖλος, ἐρεύγεται Ἰνδὸς Ὑδάσπης, δὴ τότε Βασσαρίδων ἐμελίζετο θῆλυς αἰοιδὴ Νυκτελίῳ Φρύγῃ κῶμον ἀνακρούουσα Λυαίῳ, καὶ λασίων Σατύρων χορὸς ἔβρεμε μύστιδι φωνῇ· γαῖα δὲ πᾶσα γέλασεν, ἐμυκήσαντο δὲ πέτραι, Νηιάδες δ' ὀλόλυξαν, ὑπὲρ ποταμοῖο δὲ Νύμφαι σιγαλέοις ἐλικηδὸν † ἐμυκήσαντο ῥεέθροις καὶ Σικελῆς ἐλίγαινον ὁμόζυγα ῥυθμὸν αἰοιδῆς, οἷον ἀνεκρούοντο μελιγλώσσων ἀπὸ λαιμῶν ὕμνοπόλοι Σειρήνες· ὅλη δ' ἐλελίζετο λόχη, Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 36

καὶ κύνας ὄρχηστῆρας ἐπηχύναντο λαγωαί· μηκεδανοὶ δὲ δράκοντες ἐβακχεύοντο χορείῃ ἵχνια λιχμώνοντες ἐχιδνοκόμου Διονύσου, αὐχένα δοχμώναντες, ἀνήρυγε δ' ἄλλος ἐπ' ἄλλῳ μειλίχιον σύριγμα γεγηθότος ἀνθερεῶνος· τερπομένου δὲ δράκοντος ἦν τότε ῥυθμὸς ἐχέφρων, καὶ δολιχῆς ἐλέλικτο περίπλοκος ὀλκὸς ἀκάνθης ποσσὶν ἀδεϊμάντοισι περισκαίρων Διονύσου· Ἰνδῶν δ' ἐλικηδὸν ἐπισκαίροντες ἐρίπτην τίγριδες ἐψιόωντο· πολὺς δὲ τις ἔνδοθι λόχμης ἐσμὸς ἀνεσκήρτησεν ὀρεσσινόμων ἐλεφάντων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 47

καὶ δονέων πλοκαμῖδα παρήγορον ἀνθερεῶνος σύννομος ἀντεχόρευε λέων βητάρμονι κάπρῳ· ἀνδρομέης δ' ὄρνιθες ἀνέκλαγον εἰκόνα μολπῆς μιμηλὴν ἀτέλεστον ὑποκλέπτοντες ἰωήν, νίκην Ἰνδοφόνιοι προθεσπίζοντες ἀγῶνος, .

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 63

καὶ τις ἐσαθρήσας ἐτερότροπα θαύματα Βάκχου, ὄμμα βαλὼν πυκνιοῖο δι' ἀκροτάτοιο κορύμβου, φύλλα περιστείλας, θηήτορα κύκλον ὅπωπ' ἴδεν μεθέηκεν, ὅσον περιδέρκεται ἀνὴρ ὄμμασι ποιητοῖσι διοπτρεύων τρυφαλείης, ἢ ὅποτε τραγικοῖο χοροῦ δεδαημένος ἀνὴρ, φρικτὸν ἔχων μύκημα τανυφθόγγων ἀπὸ λαιμῶν, ἐνδόμυχον τυκτοῖο δι' ὀμματος ὄμμα τιταίνει, ψευδαλέον βροτέοιο φέρων ἵνδαλμα προσώπου· ὥς ὁ γε θαύματα πάντα λαθὼν ὑπὸ δάσκιον ὕλην ἀπρὸ ἰδῆς ἐδόκευεν ὑποκλέπτοντι προσώπῳ· ἀντιβίοις δ' ἠγγελε· φόβῳ δ' ἐλελίζετο Θουρεὺς μεμφόμενος Μορρῇ καὶ ἄφρονι Δηριάδῃ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 68

ἔτρεμε δ' Ἰνδὸς ὄμιλος, ἀφειδήσας δὲ κυδοιμοῦ χάλκεα ταρβαλέων ἀπεσεύσατο τεύχεα χειρῶν, δένδρεα παπταίνων δεδονημένα θυιάδι ἐρίπῃ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 71

καὶ νῦ κεν Ἰνδὸς ὄμιλος ἐλὼν ἀπὸ γείτονος ὄχθης μάρτυρον ἱκεσίης γλαυκόχροα θαλλὸν ἐλαίης αὐχένα δοῦλον ἔκαμψεν ἀδηρίτῳ Διονύσῳ· ἀλλὰ μεταλλάξασα δέμας πολυμήχανος Ἥρη δυσμενέας θάρσυνε καὶ ἦπαφεν ὄρχαμον Ἰνδῶν, Θεσσαλίδων μάγον ὕμνον ἐφαφαμένη Διονύσῳ καὶ Κίρκης κυκεῶνα, θεοκλήτοις ἐπαοιδαῖς οἷά τε φαρμακτῆρος ἀφαρμάκτου ποταμοῖο.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 83

καὶ νῦ κεν ἀφράστοιο διαθρόσκοντες ἐναύλου δαινυμέναις στρατιῇσιν ἐπέχραον αἶθοπες Ἴνδοί· ἀλλὰ τις ἠνεμόεντος ὑπερκύψασα κορύμβου ἐκ λασίου κενεῶνος Ἀμαδρυὰς ἀνθορε Νύμφη· χειρὶ δὲ θύρσον ἔχουσα φυὴν ἰνδάλλετο Βάκχη, μιμηλὴν δρυόεντι πυκαζομένη τρίχα κισσῷ· δυσμενέων δ' ἐνέπουσα δόλον σημάτων· σιγῇ οὐασὶ βοτρυόεντος ἐπεψιθύριζε Λυαίου· “ἀμπελόεις Διόνυσε, φυτηκόμε κοίρανε καρπῶν, σὸν φυτὸν Ἀδρυάδεσσι χάριν καὶ κάλλος ὀπάσσει· Βασσαρὶς οὐ γενόμην, οὐ σύνδρομός εἰμι Λυαίου,

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 99

ἀμπελόεις Διόνυσε, φυτηκόμε κοίρανε καρπῶν, σὸν φυτὸν Ἀδρυάδεσσι χάριν καὶ κάλλος ὀπάσσει· Βασσαρὶς οὐ γενόμην, οὐ σύνδρομός εἰμι Λυαίου, μῶνον ἐμὴ παλάμη ψευδήμονα θύρσον αἰέρω· οὐ πέλον ἐκ Φρυγίης, σέο πατρίδος, οὐ χθόνα Λυδῶν ναιετάω παρὰ χεῦμα ξυψηφένος ποταμοῖο· ἐμὶ δὲ καλλιπέτληος Ἀμαδρυὰς, ἥχι μαχηταὶ δυσμενέες λοχώσιν, ἀφειδήσασα δὲ πάτρης ἔρυσσμαι ἐκ θανάτοιο τεὸν στρατὸν· ὑμετέροις γὰρ πιστὰ φέρω Σατύροισι, καὶ Ἰνδῶν περ εἴδω, ἀντὶ δὲ Δηριαδῆος ὁμοφρονέω Διονύσω· σοὶ γὰρ ὀφειλομένην ὀπάσω χάριν, ὅττι ῥέεθρων ὑγροτόκους ὠδῖνας, ὅτι δρύας αἰὲν ἀέξει ὀμβρηρῇ ῥαθάμιγγι πατῆρ τεὸς ὑέτιος Ζεὺς.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 107

ἀλλὰ, φίλος, μὴ σπεῦδε ῥόον ποταμοῖο περῆσαι, μὴ σοι ἐπιβρίσωσιν ἐν ὕδασι γεῖτονες Ἴνδοί· εἰς δρύας ὄμμα τίτταινε καὶ εὐπετάλω παρὰ λόχμῃ ἀπροιῖδῃ σκοπίαζε καλυπτομένων λόχον ἀνδρῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 113

σιγῇ ἐφ' ἡμέων, μὴ δῆλιος ἐγγυὲς ἀκούσῃ, μὴ κρυφίοις Ἰνδοῖσιν ἀπαγγεῖλειεν Ἰθάσπης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 122

αὐτὰρ ὁ σιγῇ μίσγετο Βασσαρίδεσσιν, Ἀμαδρυάδος δὲ θεαίνης εἶπεν εἰς προμάχοισιν ἐς οὐατα μῦθον ἐκάστου νεύμασι δενδύλλων, νοερῇ δ' ἐκέλευε σιωπῇ τεύχεσι θωρηχθέντας ἀνὰ δρύας εἰλαπινάζειν, καὶ κρυφίων ἀγόρευε δολορραφῶν δόλον Ἰνδῶν, μὴ σφιν ἐπιβρίσωσιν ἀθωρήκτοισι μαχηταί, εἰσέτι δαινυμένοισι κατὰ στρατὸν· οἱ δὲ Λυαίῳ κεκλωμένῳ πείθοντο, καὶ εἰς μῦθον ἦσαν ἐτοῖμοι σιγαλέον παρὰ δεῖπνον ἀκοντοφόροιο τραπέζης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 133

Ζεὺς δὲ πατὴρ δολόεντα μετατρέφας νόον Ἰνδῶν ἐσπερίην ἀνέκοψε μάχην μυκήτορι βόμβῳ, ὀμβρου παννυχίοιο χέων ἀπερείσιον ἡχώ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 140

ἀλλ' ὅτε χιονόπεζα χαραξαμένη ζόφον Ἡῶς ὄρθρον ἀμεργομένη δροσερῇ πορφύρετο πέτρῃ, ἄκρον ὑπερκύψαντες ἐγερσιμόθου σκέπας ὕλης δυσμενέες προὔτυψαν ἀολλέες· ἦρχε δὲ Θουρεύς, Ἰνδῶν πολέμοιο πέλωρ πρόμος, εἵκελος ὄρμην ἡλιβάτῳ Τυφῶνι καταῖσσαντι κεραυνοῦ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 144

καὶ στρατιαὶ πινυτοῖο δολόφρονι νεύματι Βάκχου ψευδαλέον φόβον εἶχον ἀταρβέες, ἐκ δὲ κυδοιμοῦ αὐτόματατο χάζοντο θελήμονες, εἰσόκεν Ἴνδοί ἐς πεδῖον προχέοντο λελοιπότες ἔνδια λόχμης.

6.1. NONNUS

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 164

καὶ θεὸς ἀσπήρικτος ὅλους ἐφόβησε μαχητὰς δυσμενέων, οὐ γυμνὸν ἔχων ξίφος, οὐ δόρυ πάλλων, ἀλλὰ μέσος προμάχων πεφορημένος εἴκελος αὐραὶς δεξιὸν ἐκ λαιοῖο κέρας κυκλώσατο χάρμης, θύρσον ἀκοντίζων δολιχόσκιον, ἀνθεῖ γαίης, ἔγχεϊ κισσῆεντι διασχίζων νέφος Ἴνδων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 217

ὥς δ' ὅτε ξίγαλέου σκιερὴν μετὰ χεῖματος ὥρην φαίνεται ἀσκεπέων νεφέων γυμνούμενος ἀήρ, φέγγεος εἰαρινοῖο δεδεγμένος αἶθριον αἶγλην· ὥς ὁ γε βακχεύων πυκινὰς στίχας ἄτρομος ἀνὴρ Ἴνδων σχιζομένων μεσάτην γυμνώσατο χάρμην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 250

οἱ δὲ βοῆς αἰόντες ἐπὶ κλόνον ἔρρεον Ἴνδοι· θαρσαλέοι δ' ἤψαντο παλιννόστοιο κυδοιμοῦ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 266

οὐ πῖσυνος σακέεσσι καὶ οὐ θώρηκι κυδοιμοῦ· ἀλλὰ ἐπατρώοις πεπυκασμένοι ἀντὶ σιδήρου ἀρρήκτοις νεφέεσσιν ὅλον πύργωσεν Ἀθήνη, οἷς πάρος ἀβρέκτοιο κατέσβεσεν αὐχμὸν ἀρούρης διψαλέην ἐπὶ γαῖαν ἄγων βιοτήσιον ὕδωρ Ζηνὸς ἐπομβρήσαντος, ἀμαλλοτόκοιο δὲ γαίης αὐλακες εὐώδινες ἐνυμφεύθησαν ἀρότρῳ· καὶ μέσος ἀντιβίων κυκλούμενος ἔνθεος ἀνὴρ τοὺς μὲν ἀπηλοῖσσε θεῶν δορί, τοὺς δὲ μαχαίρῃ, τοὺς δὲ λίθοις κραναοῖσι· πέδον δ' ἐρυθαίνετο λύθρῳ Ἴνδων κτεινομένων, καὶ ἀκαμπέος ἀνέρος αἰχμῇ κεῖτο πολυσπερέων νεκύων χύσις, ὧν ὁ μὲν αὐτῶν ἡμιθανὴς ἦσπαιρεν, ὁ δὲ χθόνα ποσσὶν ἀράσσωσιν ὕπτιος αὐτοκύλιστος ὀμίλεε γείτονι πότμῳ· καὶ δαπέδῳ στείνοντο, νέκυς δ' ἐπερείδετο νεκρῷ κεκλιμένῳ μετρηδόν, ἀπ' ἀρτιτόμοιο δὲ λαίμοῦ ψυχρὸν ἐρευθιόωντι δέμας θερμαίνεται λύθρῳ· καὶ φόνος ἀσπετος ἦεν, ἐπασσυτέρων δὲ πεσόντων Γαῖα κελαινώσασα κατάρρυτος αἵματος ὀλκῷ, υἱέας οἰκτείρουσα, χαραδραῖή φάτο φωνῇ·

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 279

καὶ δαπέδῳ στείνοντο, νέκυς δ' ἐπερείδετο νεκρῷ κεκλιμένῳ μετρηδόν, ἀπ' ἀρτιτόμοιο δὲ λαίμοῦ ψυχρὸν ἐρευθιόωντι δέμας θερμαίνεται λύθρῳ· καὶ φόνος ἀσπετος ἦεν, ἐπασσυτέρων δὲ πεσόντων Γαῖα κελαινώσασα κατάρρυτος αἵματος ὀλκῷ, υἱέας οἰκτείρουσα, χαραδραῖή φάτο φωνῇ· “υἱὲ Διὸς ζεῖδωρε μαιφόνε – καὶ γὰρ ἀνάσσεις ὄμβρου καρποτόκοιο καὶ αἱμαλέου νιφετοῖο –, ὄμβρῳ μὲν γονόεσσαν ὅλην ἐδῆνας ἀλὼν Ἑλλάδος, Ἰνδῶν δὲ κατέκλυσας αὐλακα λύθρῳ, ὁ πρὶν ἀμαλλοφόρος, θανατηφόρος· ἀγρονόμοις μὲν σὸς νιφετὸς στάχυν εὔρε, σὺ δὲ στρατὸν ἔθρισας Ἴνδων ἀνέρας ἀμῶων μετὰ λήιον· ἀμφοτέρων δὲ ἐκ Διὸς ὄμβρον ἄγεις, ἐξ Ἄρεος αἵματι νείφεις.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 281

ψυχρὸν ἐρευθιόωντι δέμας θερμαίνεται λύθρῳ· καὶ φόνος ἀσπετος ἦεν, ἐπασσυτέρων δὲ πεσόντων Γαῖα κελαινώσασα κατάρρυτος αἵματος ὀλκῷ, υἱέας οἰκτείρουσα, χαραδραῖή φάτο φωνῇ· “υἱὲ Διὸς ζεῖδωρε μαιφόνε – καὶ γὰρ ἀνάσσεις ὄμβρου καρποτόκοιο καὶ αἱμαλέου νιφετοῖο –, ὄμβρῳ μὲν γονόεσσαν ὅλην ἐδῆνας ἀλὼν Ἑλλάδος, Ἰνδῶν δὲ κατέκλυσας αὐλακα λύθρῳ, ὁ πρὶν ἀμαλλοφόρος, θανατηφόρος· ἀγρονόμοις μὲν σὸς νιφετὸς στάχυν εὔρε, σὺ δὲ στρατὸν ἔθρισας Ἰνδῶν ἀνέρας ἀμῶων μετὰ λήιον· ἀμφοτέρων δὲ ἐκ Διὸς ὄμβρον ἄγεις, ἐξ Ἄρεος αἵματι νείφεις.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 285

ἀλλὰ Κρονίων οὐρανόθεν κελάδησε, καὶ Αἰακὸν εἰς φόνον Ἴνδῶν βρονταίοις πατάγοισι Διὸς
προκαλίζετο σάλπιγγι.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 290

μάρνατο δ' εἰσέτι μᾶλλον ἀνώδυνος εἰς μέσον Ἴνδῶν Αἰακὸς ἀστήρικτος, ἐπεὶ βέλος ἤπτετο
μηροῦ λεπτὸς ὄνυξ ἄτε φωτός, ὅτε χρὸς ἄκρα χαράξει.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 305

δύμεναι, ἦχι πάροιθεν ἐκεύθετο· τὸν δὲ διώκων εἰς δρόμον ἠνιόχευε ποδῆνεμον ἵππον Ἐρεχθεύς·
ἀλλ' ὅτε τόσσον ἔμαρψεν, ὅσον προμάχοιο βαλόντος ἔγχεος ἵπταμένοιο τιταίνεται ὄρθιος ὄρμή,
δὴ τότε δὴ μετὰ νῶτα βαλὼν ἀντώπιος ἔστη πεζὸς ἀνὴρ ἵππῃα δεδεγμένος· αὐτὰρ ὁ κάμψας
ὀκλαδὸν ἐστήριξεν ἀριστερὸν ἵχνος ἀρούρη λοξὸς ἐπὶ πλευρῇσιν, ὀπισθοτόνοιο δὲ ταρσοῦ ἵχνιον
ἥρταζε μετάρσιον, ὄρθα τιταίνων δεξιτεροῦ ποδὸς ἄκρα πεπηγότα δάκτυλα γαίῃ, Ἴνδικὸν
ἐπταβόειον ἔχων σάκος, εἰκόνα πύργου, γυμνὸν ἔχων ξίφος ὀξύ· προῖσχύμενος δὲ προσώπου
ἀσπίδα χαλκεόνωτον ἐπέδραμεν Ἴνδὸς ἀγῆνωρ, ἢ θανέειν ἢ φῶτα βαλεῖν ἢ πῶλον ἐλάσσαι
ἄορι τολμήεντι· καὶ ὀμφαλόεντι σιδήρῳ δόχμιος ἀντικέλευθον ἀνακρούσας γένυν ἵππου πεζὸς
ἔων ἐτίναξεν ὑπέρτερον ἠνιοχῆα· καὶ νῦ κεν ἐς χθόνα ῥῖψεν ἀμήτορος ἀστὸν Ἀθήνης, ἀλλὰ μιν
ἔγχρ' εἰ νύξε παρ' ὀμφαλὸν ἄκρον Ἐρεχθεύς καὶ φονίῳ μέσον ἄνδρα πεπαρμένον ὀξεί χαλκῷ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 307

ἔγχεος ἵπταμένοιο τιταίνεται ὄρθιος ὄρμή, δὴ τότε δὴ μετὰ νῶτα βαλὼν ἀντώπιος ἔστη
πεζὸς ἀνὴρ ἵππῃα δεδεγμένος· αὐτὰρ ὁ κάμψας ὀκλαδὸν ἐστήριξεν ἀριστερὸν ἵχνος ἀρούρη
λοξὸς ἐπὶ πλευρῇσιν, ὀπισθοτόνοιο δὲ ταρσοῦ ἵχνιον ἥρταζε μετάρσιον, ὄρθα τιταίνων δεξιτεροῦ
ποδὸς ἄκρα πεπηγότα δάκτυλα γαίῃ, Ἴνδικὸν ἐπταβόειον ἔχων σάκος, εἰκόνα πύργου, γυμνὸν
ἔχων ξίφος ὀξύ· προῖσχύμενος δὲ προσώπου ἀσπίδα χαλκεόνωτον ἐπέδραμεν Ἴνδὸς ἀγῆνωρ, ἢ
θανέειν ἢ φῶτα βαλεῖν ἢ πῶλον ἐλάσσαι ἄορι τολμήεντι· καὶ ὀμφαλόεντι σιδήρῳ δόχμιος
ἀντικέλευθον ἀνακρούσας γένυν ἵππου πεζὸς ἔων ἐτίναξεν ὑπέρτερον ἠνιοχῆα· καὶ νῦ κεν ἐς
χθόνα ῥῖψεν ἀμήτορος ἀστὸν Ἀθήνης, ἀλλὰ μιν ἔγχρ' εἰ νύξε παρ' ὀμφαλὸν ἄκρον Ἐρεχθεύς καὶ
φονίῳ μέσον ἄνδρα πεπαρμένον ὀξεί χαλκῷ εἰς πέδον ἠκόντιζεν· ὁ δὲ στροφάδεσσιν ἐρωαῖς ἠερόθεν
προκάρηνος ἐπωλίσθησε κονίῃ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 344

ὥς δ' ὅτε χαλκείῳ τις ἐπ' ἄκμονι χαλκὸν ἐλαύνων ἀκαμάτῳ ῥαιστέῃρι πυρίβρομον ἦχον
ιάλλει, τύπτων γείτονα μύδρον, ἀποθρῶσκουσι δὲ πολλοὶ ἀλλόμενοι σπινθήρες ἀρασσομένοιο
σιδήρου, ἥερα θερμαίνοντες, ἀμοιβαίῃσι δὲ ῥίπαῖς ὅς μιν ἔην προκέλευθος, ὁ δὲ σχεδόν, ἄλλος
ὀρούσας ἄλλον ἔτι θρῶσκοντα κιχάνεται αἶθοπι παλμῷ· ὥς ὁ γε τοξέων στρατιὴν ἀντώπιον
Ἴνδῶν μαρναμένων ἐκέδασεν, ἀλωφῆτων ἀπὸ τόξων κτείνων ἄλλοθεν ἄλλον ἐπασσυτέροισι
βελέμενους.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 348

μεσσατῆς δὲ φάλαγγος ἀλευαμένης νέφος ἰὼν χῶρος ἐγυμνώθη, κεραῆς ἵνδαλμα Σελήνης,
ἀμφιφαῆς ὅτε βαιὸν ἀποστίλβουσα κεραῖς ἄκρα διαπλήσασα δῶα νεοφεγγέος αἴγλης κεκλι-

6.1. NONNUS

μέναις ἀκτῖσι μέσον κύκλοιο χαράσσει, δίζυγι κεκριμένῳ μαλακῷ πυρί, μεσσατίης δὲ γυμνὰ
χαρασσομένης ἔτι φαίνεται κύκλα Σελήνης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 22, line 394

ἄρκιον Ἴνδὸν ὄλεσσε τεὸν δόρυ· παύεο Νύμφαις δάκρυα Νηιάδεσσιν ἀδακρύτοισιν ἐγείρων·
Νηιάς ὑδατόεσσα καὶ ὑμετέρη πέλε μήτηρ· κούρη γὰρ ποταμοῖο τεὴν Αἴγιναν ἀκούω.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 12

οὐδ' ἐπὶ δὴν παρὰ θῖνα φερεσσακέος ποταμοῖο πληθύι τοσσατὴ φονίων κυκλούμενος Ἴνδῶν
Αἰακὸς εἰσέτι μῖμνεν, ἐπεὶ μογέοντι παρέστη Ἴνδοφόνος Διόνυσος ἀκαχμένα θύρσα τινάσσων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 21

εἰ δὲ τις ἀνὴρ νήχετο δαιδαλέης ὑπὲρ ἀσπίδος οἷδατα τέμνων, νηχομένου κεράϊζε μετὰ φρε-
νον· εἰ δὲ τις Ἴνδῶν ἡμιφανὴς πολέμιζεν ἐπ' ἰλύι ταρσὸν ἐρείσας, θύρσῳ στήθος ἔτυψεν ἢ αὐχένα,
κύματα τέμνων, δυόμενος· βυθίων γὰρ ἐπίστατο κόλπον ἐναύλων, ἔξ ὅτε μιν φεύγοντα μόθον
δασπλήτα Λυκούργου δώματι κυμαίνοντι γέρων ὑπεδέξατο Νηρέυς.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 52

καὶ τις εὖς ἐτάρους δεδοκημένος Ἴνδὸς ἀγνήνωρ τοὺς μὲν κτεινομένους δολιχῷ δορί, τοὺς
δὲ μαχαίρῃ, ἄλλον οἰστευθέντα χαραδρήεντι βελέμνῳ, τὸν δὲ πολυπλέκτῳ δεδαϊγμένον ὀξεί
θύρσῳ, Θουρέϊ νεκρὸν ὁμίλον ἐδείκνυν, ἀχνύμενος δὲ τίλλε κόμην, φλογερῷ δὲ χόλου βακχεύετο
πυρσῷ, σφίγγων καρχαρόδοντι μεμυκὸτα χεῖλεα δεσμῷ· καὶ ταχὺς αὐτοφόνον μιμούμενος Ἴν-
δὸν Ὀρόντην, βάρβαρον αἶμα φέρων καὶ βάρβαρον ἦθος ἀέζων, ἄορ ἐὼν γύμνωσεν, ἀπορρίψας
δὲ χιτῶνα,

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 117

Ἥρη δ' ὥς ἐνόησε δαῖκταμένων φόνον Ἴνδῶν, οὐρανόθεν πεπότητο, δι' ὑψιπόρου δὲ κελεύθου
ἄστατος ἡνεμόεντι κατέγραφεν ἥερα ταρσῷ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 120

Ἀντολὴς δ' ἐπέβαινε, καὶ ὥπλισεν Ἴνδὸν Ἰθάσπην φύλοπιν ὑδατόεσσαν ἀναστῆσαι Διο-
νύσῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 129

καὶ θεὸς ἡγεμόνευε, δι' οἷδατος ἡνιοχέων ἄρμασι χερσαίοισι νόθον πλόον, ὑγροπόρων δὲ
πορδαλίων ἀδιάντος ὄνυξ ἐχάραξεν Ἰθάσπην· καὶ στρατιαὶ πλόον εἶχον ἀκυμάντου ποταμοῖο,
ᾧ ὁ μὲν Ἴνδῶν σχεδὴν πολὺδεσμον ἐρέσσων, ἄμματι τεχνήεντι περίπλοκα δούρατα δῆσας.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 149

καὶ στρατὸς ἐγρεμόθων πρυλέων ἀκάτοιο χατίζων, ἀσκοῖς οἰδαλέοισι χέων ποιητὸν ἀήτην,
δέρματι φυσαλέῳ διεμέτρεεν Ἴνδὸν Ἰθάσπην, ἐνδομύχων δ' ἀνέμων ἐγκύμονες ἔπλεον ἀσκοί.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 188

οὐ ποτε τολμήεντες ἐμὸν ἔβον ἔπλεον Ἴνδοὶ ἄρμασιν ἡλιβάτοισι, καὶ οὐ πατρώιον ὕδωρ
Δηριάδης ἐχάραξεν ἐφ' περιμήκει δίφρῳ, ὑψιλόφων λοφιῇσιν ἐφεδρήσων ἐλεφάντων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 276

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Ἰδριάδων δὲ φάλαγγες ἀνάμπυκες ὠκέϊ ταρσῶ γυμναὶ κυματόεντος ἀπεπλάζοντο μελά-
θρου· καὶ τις ἀναινομένη φλογερὸν πατρώιον ὕδωρ Νηϊὰς ἀκρήδεμνος ἀήθεα δύσατο Γάγγην·
ἄλλη δ' Ἰνδὸν ἔναιεν ἐριβρεμέτην Ἀκεσίην ἀζαλέοις μελέεσσιν· ἀλωομένην δὲ Χοάσπης ἄλλην
οὐρεσίφοιτον ἀνάμπυκα Νηίδα Νύμφην παρθενικὴν ἀπέδιλον ἐδέξατο, Περσίδι γείτων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 23, line 319

Τηθύς, καὶ σύ, θάλασσα, κορύσσεο· ταυροφυῇ γὰρ Ζεὺς νόθον υἱὰ λόχευσεν, ἵνα ξύμπαντας
ὀλέσῃ καὶ ποταμούς καὶ φῶτας ἀμεμφέας· ἀμφοτέρων δὲ Ἰνδοὺς θύρσος ἔπεφνε καὶ ἔφλεγε
πυρσὸς Ἰδάσπην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 17

ἀλλὰ πόθος τεκέων με βιήσατο· Δηριάδῃ γὰρ υἱεὶ πιστὰ φέρων ξοθίων ἐλέλιζον ἀπειλήν,
Ἰνδοῖς κτεινομένοισι βοηθὸν οἶδμα κυλίνδων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 27

... Νηιάδες φεύγουσιν ἐμὸν ῥόον· ἀμφὶ δὲ πηγὰς ἡ μὲν ναιετάει διερὸν δόμον, ἡ δ' ἐνὶ λόχμῃς
σύννομος Ἀδρυάδεσσι φυτὸν μετὰ πόντον ἀμείβει, ἄλλη δ' Ἰνδὸν ἔχει μετανάστιος, ἡ δὲ φυγοῦσα
ποσσὶ κονιομένοισιν ἐδύσατο διψάδα πέτρην Καυκασίην, ἐτέρῃ δὲ μεταίξασα Χοάσπην ναίει
ξεῖνα ξέεθρα καὶ οὐκέτι πάτριον ὕδωρ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 70

ὄφρα μὲν εἰσέτι Βάκχος ἐπέπλεεν ὕγρον Ἰδάσπην, τόφρα δέ, θάρσος ἄρμος ἔχων περιμήκεα
μορφὴν, Δηριάδης ἐπὶ δῆριν ἐπώνυμον ὥπλισεν Ἰνδοὺς, στήσας ἀμφὶ ξέεθρον ἕως στίχας, ὄφρα
μαχηταὶ λαὸν ἐρητύσωσιν ἀνερχομένων ἐτι Βάκχων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 82

καὶ σφετέροισιν † ἰόντες ἀρηγόνες, ἄλλος ἐπ' ἄλλω, σὺν Διὶ πάντες ἵκοντο θεοὶ ναετῆρες
Ὀλύμπου ἄλματι πωτήντι· καὶ Αἰγίνης χάριν εὐνῆς αἰετὸς ἠώρητο τὸ δεύτερον ὑψιπέτης
Ζεὺς Ἀσωποῦ μετὰ χεῦμα, καὶ Αἰακὸν ἥεροφώτην φειδομένων ὀνύχων δεδραγμένος ἄρπαγι
ταρσῶ κουφίζων ἐκόμισσεν ἐς ἄρεα Δηριάδης Ἰνδῶν ἐπὶ πέζαν· ἀπ' εὐρυπόροιο δὲ κόλπου
υἱὸν Ἀρισταῖον γενέτης ἐσάωσεν Ἀπόλλων, φαιδρὸς ἀλεξικάκων πεφορημένος ἄρματι κύκνων,
μνηστὴν ἔχων θαλάμοιο λεοντοφόνου Κυρήνης· καὶ κρατέων ἕο παῖδα τανύπτερος ἥρπασεν
Ἑρμῆς, υἱέα Πηνελόπης, κεραελλέα Πᾶνα κομήτην· Οὐρανίη δ' Ἰμέναιον ἀνεζώγησεν ὀλέθρου
παιδὸς ἐοῦ γονόεντος ἐπώνυμον, ἡγίας δὲ ἀτραπιτοὺς ἐχάραξεν, ὁμοίος ἀστέρος ὀλκῶ, γνωτῶ
βοτρυνέντι χαριζομένη Διόνυσῳ·

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 96

καὶ κρατέων ἕο παῖδα τανύπτερος ἥρπασεν Ἑρμῆς, υἱέα Πηνελόπης, κεραελλέα Πᾶνα
κομήτην· Οὐρανίη δ' Ἰμέναιον ἀνεζώγησεν ὀλέθρου παιδὸς ἐοῦ γονόεντος ἐπώνυμον, ἡγίας δὲ
ἀτραπιτοὺς ἐχάραξεν, ὁμοίος ἀστέρος ὀλκῶ, γνωτῶ βοτρυνέντι χαριζομένη Διόνυσῳ· Καλλι-
όπη δ' Οἰάγρον ἐοῖς ἀνεκούφισεν ὤμοις· καὶ τεκέων Ἡφαιστος ἐὼν ἀλέγιξε Καβείρων, ἀμφο-
τέρους δ' ἥρπαξεν, ὁμοίος ὀξεί πυρσῶ· Ἀκταίη δ' ἐσάωσεν Ἑρεχθέα Παλλὰς Ἀθήνη, Ἰνδοφόνον
ναετῆρα θεοκρήπιδος Ἀθήνης· Νύμφας δ' Ἀδρυάδας ναέται ζώγησαν Ὀλύμπου πάντες, ὅσοις

6.1. NONNUS

μεμέληντο φίλαι δρύες, ἔξοχα δ' ἄλλων δαφναίας ἐσάωσε φανείς δαφναῖος Ἀπόλλων, καί σφιν ἅμα χραίσμησε συνέμπορος υἱεὶ μήτηρ, εἰσέτι κυδαίνουσα λεχώια δένδρεα Λητώ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 106

Βασσαρίδων δὲ φάλαγγα κορυμβοφόρους τε γυναικας ἐκ βυθίου ῥύσαντο πολυφλοίσβοιο κυδοιμοῦ θυγατέρες Κύδνοιο, φιλοζεφύρου ποταμοῖο, πλωτὸν ἐπιστάμεναι διερὸν δρόμον, ἃς ἐπὶ νίκη ἄρεος Ἰνδῶοιο πατήρ δωρήσατο Βάκχῳ, Νηιάδας πολέμοιο δαήμονας, ἃς ποτε χάριμην μαρνάμενος Κρονίῳ Κίλιξ ἐδίδαξε Τυφωεύς.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 123

ἄλλοι δ' ἦσαν ὅπισθεν, ἐπασσεύοντο δὲ πορθμῶ ἐξ ἐτέρης ἀνιόντες ἀθηήτοιο κελεύθου, ἦχι θεὸς πόμπευεν· ἐπεὶ πτερὸν ἡρέμα πάλλων αἰετὸς ἡγεμόνευε δι' ἥρος ἀντίτυπος Ζεὺς, φειδομένοις ὀνύχεσσι μετάρσιον νῖα κομίζων, Αἰακὸν ἡερίη πεφορημένον ὕψι κελεύθῳ. Ἰνδῶν δ' ἐχάρεον ἐπισκαίροντες ἐρίπνη, καὶ σκοπέλους ἐδίωκον, ἐναυλίζοντο δὲ λόχμῃς, καὶ κλισίας πῆξαντες † ἐς ἡρέμα δάσκιον ὕλην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 145

ἀχνύμενος δὲ Δηριάδῃ βασιλῇ δυσάγγελος ἵκετο Θουρεύς, δάκρυσιν ἀφθόγοισιν ἀπαγγέλλων φόνον Ἰνδῶν, καὶ μόγις ἐκ στομάτων ἀνενείκατο πενθάδα φωνήν· “Δηριάδῃ σκηπτοῦχε, θεηγενὲς ἔρνος Ἐνυοῦς, ἦομεν, ὥς ἐκέλευσας, ἐς ἀντιπέραιαν ἐρίπνην, εὔρομεν ἐν βήσσησιν ἐρημάδα γείτονα λόχμην· κεῖθι λόχον στήσαντες ἐμίνομεν, εἰσόκεν ἔλθῃ θυρσομανῆς Διόνυσος· ἐπερχομένοιο δὲ Βάκχου αὐλὸς ἐπεσμαράγησεν, ἀδελφῆτου δὲ βοείης τυπτομένης ἐκάτερθεν ἦν χαλκόκροτος ἡχώ καὶ καναχή σύριγγος· ὅλη δ' ἐλελίζετο λόχμη

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 159

καὶ θεός, ὃν καλέουσιν, ἀκαχμένα θύρσα τινάσσων, οὐτιδανοῖς πετάλοισιν οἰστεύων γένος Ἰνδῶν, κτεῖνε μὲν ἐν πεδίῳ στρατὸν ἄσπετον ὀξεί θύρσῳ βλήμενον, ἐν ῥοθίοις δὲ τὸ λείψανον ὥλεσεν Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 169

εἰ δὲ πόθος μεθέπει σε δυσαντήτοιο κυδοιμοῦ, σήμερον Ἰνδὸν ἔρυκε, καὶ αὔριον εἰς μόθον ἔλκεις.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 173

ὥς εἰπὼν παρέπεισεν ἀπειθέα Δηριάδῃ, οὐ χάριν ἀδρανίης πειθήμονα, δυομένῳ δὲ μεμφόμενον Φαέθοντι καὶ οὐκ εἰκόντα Λυαίῳ. Ἰνδῶν δὲ φάλαγγα μεταστήσας ποταμοῖο Δηριάδης ὑπέροπλος ἐχάζετο πενθάδι λύσση, ἐζόμενος λοφιῇσι παλιννόστων ἐλεφάντων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 176

Ἰνδῶν δὲ φάλαγγα μεταστήσας ποταμοῖο Δηριάδης ὑπέροπλος ἐχάζετο πενθάδι λύσση, ἐζόμενος λοφιῇσι παλιννόστων ἐλεφάντων. Ἰνδοὶ δ' ἔνθα καὶ ἔνθα σὺν ἡλιβάτῳ βασιλῇ εἰς πόλιν ἐρρώνοντο πεφυζότες, ἔνδοθι πύργων νίκην εἰσαΐοντες ἀρειμανέος Διόνυσου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 180

ἦδη δὲ στονέοσσα δι' ἄστεος ἵπτατο Φῆμη, σύγγονον ἀγγέλλουσα νεοσφαγέων φόνον Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 196

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

καί τις ἀμηχανέουσα δεδουπότος εὐνέτις Ἰνδοῦ, ἀγχιτόκους ὠδῖνας ἀναπλήσασα λοχείης
καὶ δεκάτης ὀρώσασα λεχώια κύκλα Σελήνης, ὕδρηλῶ πολὺδακρυς ἐπέστενεν ἀνδρὸς ὀλέθρῳ, καὶ
ποταμῶ κοτέουσα γοήμονα ῥήξατο φωνήν· “οὐ πίομαι πατρῶον ἐμὸν ποτε πικρὸν Ἰθάσπην·
οὐκέτι κεῖνα ῥέεθρα μετέρχομαι, οὐκέτι δειλὴ σείο νέκυν κρύψαντος ἐπιφάυσω ποταμοῖο, οὐ
μὰ σέ καὶ σέο φόρτον, ὃν ἔνδοθι γαστρὸς αἰείρω, οὐ μὰ σέ καὶ τὸν ἔρωτα, τὸν οὐ χρόνος οἶδε
μαραίνειν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 219

ἀμφὶ δὲ λόχμας Βάκχος ἐοῖς Σατύροισι καὶ Ἰνδοφόνοισι μαχηταῖς εἰλαπίνην ἔστησεν· ἔδαι-
τρέοντο δὲ ταῦροι, καὶ δαμάλαι στοιχηδὸν ἐμιστύλλοντο μαχαίρῃ θεινόμεναι πελέκεσσιν Ἑρ-
θραῖης τ’ ἀπὸ ποίμνης πυκνὰ δορικτήτων ἱερεύετο πάεα μῆλων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 337

ἀλλ’ ὅτε δὴ κόρος ἔσκε φιλακρήτοιο τραπέζης, οἶνον ἀναβλύζοντες ἐρημάδι κάππεσον εὐνῇ,
οἱ μὲν δαιδαλέης ἐπὶ νεβρίδος, οἱ δ’ ἐπὶ φύλλων πεπταμένων· ἕτεροι δὲ χυτῆς ἐφύπερθε κοινῆς
δέρμασιν αἰγείοισιν ἐπετρέψαντο χαμεύνην· ἄλλοι δ’ ἐγρεμόθοισιν ἐφωμίλησαν ὀνείροις χάλκεον
ἀπλώσαντες ἐνναλίῳ δέμας ὕπνω· ὧν ὁ μὲν Ἰνδὸν ἔβαλλε καθήμενον ὑψόθεν ἵππου, ἄλλος δ’
ἵππον ἔνυξε κατ’ αὐχένος, ὃς δὲ δαΐζων ἄορι πεζὸν ἔτυψεν, ὁ δ’ οὐτάσε Δηριάδῃ· ἄλλος δ’
ἡερόφοιτον ἐὼν βέλος ὑψόσε πέμπων ἡλιβάτους ἐλέφαντας ὀνειρεύῃ βάλεν ἰῶ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 24, line 346

πορδαλίῳ δὲ γένεθλα καὶ ἄγρια φῦλα λεόντων καὶ κύνες ἀγρευτῆρες ἐρημονόμου Διόνυ-
σου εἶχον ἀμοιβαίης φυλακῆς ἀγρυπνον ὁπωπὴν, πάννουχον ἐγρήσσοντες ὀρειάδος ἐνδοθεν ὕλης,
μὴ σφιν ἐπαΐξειε μελαρρίνων μόθος Ἰνδῶν· καὶ δαΐδες στοιχηδὸν ἐπαστράπτεσκον Ὀλύμπῳ,
Βακχιάδος λαμπτήρες ἀκοιμήτοιο χορείης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book p2, line 52

<εἰκοστὸν> λάχεν <ἕκτον> ἐπὶ κλοπὸν εἶδος Ἀθήνης καὶ πολὺν ἐγρεκύδοιμον ἀγρειομένων
στόλον Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book p2, line 78

ἐν δὲ <τρηκοστῷ ἐνάτῳ> μετὰ κύματα λεύσσεις Δηριάδην φεύγοντα πυριφλεγέων στόλον
Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book p2, line 79

<τεσσαρακοστὸν> ἔχει δεδαῖγμένον ὄρχαμον Ἰνδῶν, πῶς δὲ Τύρον Διόνυσος ἐδύσατο, πα-
τρίδα Κάδμου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 5

Μοῦσα, πάλιν πολέμιζε σοφὸν μόθον ἔμφορον θύρσῳ· οὐ πῶ γὰρ γόνυ δοῦλον ὑποκλίνων
Διόνυσῳ φύλοπιν ἐπταέτηρον Ἑώιος εὐνάσεν ἄρης· ἀλλὰ δρακοντείοιο τεθηπότες ἄκρα γενείου
Ἰνδῶν πλατάνοιο πάλιν κλάζουσι νεοσσοί, Βακχείου πολέμοιο προμάντιες.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 8

οὐ μὲν αἰείσω πρώτους ἔξ λυκάβαντας, ὅτε στρατὸς ἐνδοθὶ πύργων Ἰνδὸς ἔην· τελέσας δὲ
τύπον μιμηλὸν Ὀμήρου ὕστατον ὑμνήσω πολέμων ἔτος, ἐβδομάτης δὲ ὑσμίνην ἰσάριθμον ἐμῆς

6.1. NONNUS

στρουθοῖο χαράζω· Θήβη δ' ἔπταπύλῳ κεράσω μέλος, ὅττι καὶ αὐτὴ ἀμφ' ἐμὲ βακχευθεῖσα περιτρέχει, οἷα δὲ νύμφη μαζὸν ἐὼν γύμνωσε κατηφέος ὑφ' ὀθι πέπλου, μνησαμένη Πενθῆος· ἐποτρύνων δέ με μέλπειν πενθαλέην ἔο χεῖρα γέρων ᾠρεῖε Κιθαιρῶν αἰδόμενος, μὴ λέκτρον ἀθέσμιον ἢ βοήσω πατροφόνον πόσιν υἷα παρευνάζοντα τεκούσῃ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 22

ἀλλὰ πάλιν κτείνωμεν Ἐρυθραίων γένος Ἰνδῶν· οὐ ποτε γὰρ μόθον ἄλλον ὁμοῖον ἔδρακεν Αἰῶν Ἡῶν προὐ μόθοιο, καὶ οὐ μετὰ φύλοπιν Ἰνδῶν ἄλλην ὀφιτέλεστον ισόρροπον εἶδεν ἐννύ, οὐδὲ τόσος στρατὸς ἦλθεν ἐς Ἴλιον, οὐ στόλος ἀνδρῶν τηλίκος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 71

φρουρὸν ἀκοιμήτοιο μετῆλυδα κύκλον ὀπωπῆς Φορκίδος ἀλλοπρόσαλλον ἀμειβομένης πτερὸν Ἴπνου ἦνυσε θῆλυν ἄεθλον ἀθωρήκτοιο Μεδούσης· ἀλλὰ διατμήγων δῆϊων στίχα δίζυγι νίκη χερσαίου πολέμοιο καὶ ὑγροπόροιο κυδοιμοῦ λύθρῳ γαῖαν ἔδευσε, καὶ αἵματι κῦμα κεράσσας Νηρεΐδας φοινίξεν ἐρευθιόωντι ἐρέθρῳ, κτείνων βάρβαρα φύλα· πολὺς δ' ἐπὶ μητέρι Γαίῃ ὑφιλόφων ἀκάρηνος ἐτυμβεύθη στάχys Ἰνδῶν, πολλοὶ δ' ἐν πελάγεσσιν ὠλωότες ὅξει θύρσῳ αὐτόματοι πλωτῆρες ἐπορθμεύοντο θαλάσση, Ἰνδῶν νεκρὸς ὅμιλος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 74

ἦνυσε θῆλυν ἄεθλον ἀθωρήκτοιο Μεδούσης· ἀλλὰ διατμήγων δῆϊων στίχα δίζυγι νίκη χερσαίου πολέμοιο καὶ ὑγροπόροιο κυδοιμοῦ λύθρῳ γαῖαν ἔδευσε, καὶ αἵματι κῦμα κεράσσας Νηρεΐδας φοινίξεν ἐρευθιόωντι ἐρέθρῳ, κτείνων βάρβαρα φύλα· πολὺς δ' ἐπὶ μητέρι Γαίῃ ὑφιλόφων ἀκάρηνος ἐτυμβεύθη στάχys Ἰνδῶν, πολλοὶ δ' ἐν πελάγεσσιν ὠλωότες ὅξει θύρσῳ αὐτόματοι πλωτῆρες ἐπορθμεύοντο θαλάσση, Ἰνδῶν νεκρὸς ὅμιλος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 85

Βάκχου δ' Ἰνδοφόνου βριαροῦ πόνος οὐ μία Γοργῶ, οὐ λίθος ἡερόφοιτος ἀλίκτυπος ἢ Πολυδέκτης· ἀλλὰ δρακοντοκόμων καλάμην ἤμισε Γιγάντων Βάκχος ἀριστεύων ὀλίγῳ ξηξήνορι θύρσῳ, ὅππότε Πορφυρίωνι μαχήμονα κισσὸν ἰάλλων Ἐγκέλαδον στυφέλιξε καὶ ἤλασεν Ἀλκυονῆα αἰχμάζων πετάλοισιν· οἰστεύοντο δὲ θύρσοι Γηγενέων ὀλετῆρες, ἀοσσητῆρες Ὀλύμπου, χερσὶ δικηκοσίῃσιν ἔλιξ ὅτε λαὸς ἀρούρης θλίβων ἀστερέεσσαν ἴτυν πολυδεῖράδι κόρη

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 99

ἀλλὰ, φίλοι, κρίνωμεν· ἐν ἀντολίῃ μὲν ἀρούρη Ἰνδοφόνους ἰδρῶτας ὀπιπεύων Διονύσου Ἡέλιος θάμβησεν, ὑπὲρ δυτικοῖο δὲ κόλπου Ἑσπερίῃ Περσῇ τανύπτερον εἶδε Σελήνη, βαιὸν ἀεθλεύσαντα πόνον γαμφώνυχι χαλκῷ· καὶ Φαέθων ὅσον εὗχος ὑπέρτερον ἔλλαχε Μήνης, τόσσον ἐγὼ Περσῆος ἀρείονα Βάκχον ἐνίψω.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 168

Μίνως μὲν πτολίπορθος ἔῳ ποτε κάλλει γυμνῷ ὑσμίνης τέλος εὔρε, καὶ οὐ νίκησε σιδήρῳ, ἀλλὰ πόθῳ καὶ ἔρωτι· κορυσσομένου δὲ Λυαίου οὐ Πόθος ἐπρήνεν ἀκοντοφόρων μόθον Ἰνδῶν, οὐ Παφίη κεκέρυστο συναιχμάζουσα Λυαίῳ, κάλλει νικήσασα μόθου τέλος, οὐ μία κόρη οἰστρομανῆς χραισίμησεν ἐρασσαμένη Διονύσου, οὐ δόλος ἡμερόεις, οὐ βόστρυχα Δηριαδῆος, ἀλλὰ πολυσπερέων ποταμῶν ἐτερότροπος Ἰνδὸς νίκης εὗχος ἔχων παλιναυξέος.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 245

ἄθλα μὲν Ἡρακλῆος, ὃν ἦροσεν ἀθάνατος Ζεὺς Ἀλκμήνης τρισέληνον ἔχων παιδοσπῆρον
εὐνήν, οὐτιδανὸς πόνος ἦεν ὀρίτροφος· ἔργα δὲ Βάκχου ἢ Γίγας πολύπηχυς ἢ ὑψιλόφων πρόμος
Ἰνδῶν, οὐ κεμάς, οὐ βοέης ἀγέλης στίχες, οὐ λάσιος σῦς, οὐδὲ κύων, ἢ ταῦρος, ἢ αὐτόπρεμνος
ὀπώρη χρυσοφαής, ἢ κόπρος, ἢ ἄστατος ὄρνις ἀλήτης οὐτιδανὴν ἀσίδηρον ἔχων πτερόεσσαν ἀκω-
κὴν, ἢ γένυς ἱππεΐη ξεινοκτόνος, οὐ μία μίτρη Ἱππολύτης ἐλάχεια· Διωνύσοιο δὲ νίκη Δηριάδης
ἀπέλεθρος ἢ εἰκοσίπηχυς Ὀρόντης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 263

ἀλλὰ λιγαίνειν πνεῦσον ἐμοὶ τεδὸν ἄσθμα θεόσσυτον· ὑμετέρης γὰρ δεύομαι εὐεπίης, ὅτι
τῆλίκον ἄρεα μέλπων Ἰνδοφόνους ἰδρῶτας ἀμαλδύνω Διονύσου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 264

ἀλλὰ θεά με κόμιζε τὸ δεύτερον ἐς μόθον Ἰνδῶν, ἔμπνοον ἔγχος ἔχοντα καὶ ἀσπίδα πα-
τρὸς Ὀμήρου, μαρνάμενον Μορρηΐ καὶ ἄφρονι Δηριάδῃ σὺν Διὶ καὶ Βρομίῳ κεκορυθμένον·
ἐν δὲ κυδοιμοῖς Βακχιάδος σύριγγος ἀγέστρατον ἦχον ἀκούσω καὶ κτύπον οὐ λήγοντα σοφῆς
σάλπιγγος Ὀμήρου, ὅφρα κατακτείνω νοεῶν δορὶ λείψανον Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 271

ὥς ὁ μὲν Ἰνδῶοιο περὶ ῥάχιν εὐβοτον ὕλης ἔζετο Βάκχος ὄμιλος ἐρημάδος ἀστὸς ἐρίπνης,
ἀμβολίῃ πολέμοιο· φόβῳ δ' ἐλελίετο Γάγγης οἰκτείρων ἐὰ τέκνα· νεοφθιμένων δ' ἐπὶ πό-
τμῳ πᾶσα πόλις δεδόνητο· φιλοθρήνων δὲ γυναικῶν πενθαλέοις πατάγοισιν ἐπεσμαράγησαν
ἀγυιαί.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 299

ἦδη δ' ἀμπελόεσσα δι' ἄστεος ἔτρεχεν ὁδὴ καὶ λιγυροῖς ἀνέμοισιν ὅλας ἐμέθυσεν ἀγυιάς,
νίκην Ἰνδοφόνοιο προθεσπίζουσα Λυαίου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 304

ἐν δὲ κολώναις ἀσχαλῶν Διόνυσος ἐμέμφετο πολλάκις Ἥρη, ὅττι πάλιν φθονέουσα μάχην
ἀνεσεύρασεν Ἰνδῶν, νίκης δ' ἐλπίδα πᾶσαν ἀνερρίπιζον ἀῆται.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 322

Ῥεῖης θεσπεσίης ταχὺς ἄγγελος, ὅς ποτε χαλκῷ φοινίξας γονόεντα τελεσιγάμου στάχυν
ἦβης ῥῆψεν ἀνυμφεύτων φιλοτήσιον ὄγμον ἀρότρων, ἄρσενος ἀμνητοῖο θαλύσιον, αἵμαλέῃ δὲ
παιδογόνῳ ῥαθάμιγγι περιρραίνων πτύχα μηροῦ θερμὸν ἀλοιητῆρι δέμας θήλυνε σιδήρῳ· ὃς
τότε διφρεῦν Κυβελήϊδος ἄρμα θεαίνης ἄγγελος ἀσχαλῶντι παρήγορος ἦλθε Λυαίῳ· καὶ
μιν ἰδὼν Διόνυσος ἀνέδραμε, μὴ σχεδὸν ἔλθῃ Ῥεῖην πανδαμάτειραν ἄγων ἐπὶ φύλοπιν Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 328

στήσας δ' ἄγριον ἄρμα, δι' ἀντυγος ἠνία τείνας, καὶ ῥοδέης ἀχάρακτα γενειάδος ἄκρα
φαεῖνων Βάκχῳ μῦθον ἔλεξε, χέων ὀξεῖαν ἰωήν· “ἀμπελόεις Διόνυσε, Διὸς τέκος, ἔγγονε Ῥεῖης,
εἰπέ μοι εἰρομένῳ, πότε νόστιμος εἰς χθόνα Λυδῶν ἵξαι οὐλοκάρηνον ἀιστώσας γένος Ἰνδῶν;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 335

6.1. NONNUS

οὐ πω ληϊδίας κυανόχροας ἔδρακε Ρεῖη, οὐ πω σοὶ μετὰ δῆριν ὀρεσσαύλῳ παρὰ φάτνη
Μυγδονίων ἔσμηξε τεῶν ἰδρωῖτα λεόντων Πακτωλοῦ παρὰ χεῦμα ῥυηφενές· ἀλλὰ κυδοιμοῦ
ἄλφοφον ἀενάων ἐτέων στροφάλιγγα κυλίνδεις· οὐ πω θηροκόμῳ θεομήτορι σύμβολα νίκης
Ἰνδῶν ἐκόμισσας ἑώια φῦλα λεόντων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 341

οὐ πω μῦθος ἔληγε, καὶ ἴαχε Βάκχος ἀγῆνωρ· “σχέτλιοί εἰσι θεοί, ζηλήμονες· ἐν πολέμοις μὲν
εἰς μίαν ἡριγένειαν αἰστώσαι πόλιν Ἰνδῶν ἔγχρῃ κισσῆεντι δυνήσομαι· ἀλλὰ με νίκης μητρυιῆς
ἀέκοντα παραπλάζει φθόνος Ἥρης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 350

ἀλλὰ βαρυσμαράγων νεφέων κτύπον οὐράνιος Ζεὺς σήμερον εὐνήσειε, καὶ αὔριον Ἄρεα
δήσω, εἰσόκεν εὐπῆληκα διατμήξω στάχυν Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 25, line 367

θαρσύνεις πολέμιζε τὸ δεύτερον, ὅττι κυδοιμοῦ νίκην ὀφειτέλεστον ἐμὴ μαντεύσατο Ρεῖη· οὐ
γὰρ πρὶν πολέμου τέλος ἔσσεται, εἰσόκε χάρις ἔκτον ἀναπλήσωσιν ἔτος τετράζυγες Ὠραι·
οὕτω γὰρ Διὸς ὄμμα καὶ ἀτρέπτου λῖνα Μοίρης νεύμασιν Ἡραίοισιν ἐπέτρεπον· ἐσομένῳ δὲ
ἐβδομάτῳ λυκάβαντι διαρραίσεις πόλιν Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 29

οὐ ξείνος κατέπεφνεν ἀρειμανέων γένος Ἰνδῶν, ἀλλὰ μιν αὐτὸς ἔπεφνε πατὴρ τεός· ἐν
πολέμοις γὰρ σοὺς προμάχους φεύγοντας ἰδὼν ἐδάμασσε Γδάσπη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 48

πρῶτα μὲν ὠπλίζοντο κυβερνητῆρες ἐνουῦς, Ἀγραῖος Φλογίος τε, συνήλυδες ἡγεμονῆες, ἀρ-
τιτελές μετὰ σῆμα νεοφθιμένοιο τοκῆος, Εὐλαίου δύο τέκνα· συνεστρατόωντο δὲ λαοί, ὅσοι
Κῦρα νέμοντο καὶ Ἰνδῶν ποταμοῖο Βαίδιον Ὀμβηλοῖο παρὰ πλατὺ βάρβαρον ὕδωρ, καὶ Ῥο-
δόην εὐπυργον, ἀρειμανέων πέδον Ἰνδῶν, καὶ κραναὸν Προπάνισον, ὅσοι τ' ἔχον ἄντυγα νήσου
Γραιάων, ὅθι παῖδες ἐθήμονος ἀντὶ τεκούσης ἄρσενα μαζὸν ἔχουσι γαλακτοφόρου γενετῆρος,
χείλεσιν ἀκροτάτοισιν ὑποκλέπτοντες ἐέρσην· οἳ τε Σεσίνδιον αἰπύ, καὶ οἳ λινοερκέι κύκλῳ Γάζον
ἐπυργώσαντο λινοπλέκτοισι δομαίοις, ἀρραγές, εὐποίητον ἐκκλώστοιςι θεμέθλοις,

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 68

τοῖς δ' ἐπὶ θαρσύνοντες ἐπεστρατόωντο μαχηταί, Δάρδαι καὶ Πρασίων στρατιαί, καὶ φῦλα
Σαλαγγῶν χρυσοφόρων, οἷς πλοῦτος ὁμέστιος, οἷς θέμις αἰεὶ χέδροπα καρπὸν ἔδειν βιοτήσιον·
ἀντὶ δὲ σίτου κείνον ἀλετρεύουσι μύλης τροχρείδει κύκλῳ· καὶ σκολιοπλοκάμων Ζαβίων στί-
χες, οἷσιν ἐχέφρων Παλθάνωρ πρόμος ἦεν, ὃς ἔστυγε Δηριαδῆα ἥθεσιν εὐσεβέεσσιν ὁμοφρονέων
Διονύσῳ· τὸν μὲν ἀναξ Διόνυσος ἄγων μετὰ φύλοπιν Ἰνδῶν ἀλλοδαπὸν ναετῆρα λυροδμήτῳ
πόρε Θήβη· καὶ Δίρκη παρήμεμνε λιπὼν πατρώων Γδάσπην, Ἀονίου ποταμοῖο πίων Ἰσμήνιον
ὕδωρ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 78

τοῖς δ' ἐπὶ κυδιῶν στρατὸν ἄσπετον ὥπλισε Μορρεὺς Τιδνασίδης, γενετῆρι συνέμπορος, ὃς
τότε λυγρῷ γῆραϊ πένθος ἔχων κεκερασμένον ἤφατο χάρις, γηραλή παλάμη πολυδαίδαλον

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ἀσπίδα πάλλων καὶ πολιῶ λειμῶνι κατὰσκιον ἀνθερεῶνα αὐτόματον κήρυκα χρόνου δολιχοῖο
τινάσσων, υἱὸν ἔτι στενάχων μινυῶριον, Ἴνδον Ὀρόντην, Τίδνασος αἰολόδακρυς· ἀναξ δέ οἱ ἔσπετο
Μορρεὺς ὄρθιον ἔγχος ἔχων τιμήορον, ὅφρα δαμάσση λαὸν ὅλον Βρομίοιο, καὶ ἤθελε μούνος
ἐρίξειν Βάκχῳ γνωτοφόνῳ, καὶ ἀνούτατον υἱὰ Θυῶνης οὐτῆσαι μενέαινε κασιγνήτοιο φονῆα.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 84

καὶ σφισιν ὠμάρτησε πολυγλώσσων γένος Ἴνδῶν, οἳ τ' ἔχον Ἡελίοιο πόλιν, καλλίκτιτον
Αἶθρην, ἀννεφέλου δαπέδοιο θεμελίον, οἳ τ' ἔχον ἄμφω, Ἀθηνηῆς λασιῶνα καὶ Ὀρυκίης δο-
νακῆα, καὶ φλογερὴν Νήσαιαν ἀχειμάντους τε Μελαίνας, καὶ πέδον εὐδίνητον ἀλίστεφάνου
Παταληνῆς· τοῖς ἐπὶ Δυσσαίων πυκιναὶ στίχες, οἷσι καὶ αὐτῶν φρικτὰ δασυστέρνων ἐκορύσ-
σετο φῦλα Σαβείρων, τοῖσιν ἐπὶ κραδίῃ λάσαια τρίχες, ὧν χάριν αἰεὶ ψυχῆς θάρσος ἔχουσι καὶ
οὐ πτώσσουσιν ἐννύ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 141

Ἡερίης δὲ θεοῦδεός ἐργον ἀκούων Δηριάδης θάμβησε· περισσόνόοιο δὲ κούρης εἵκελον εἰδῶλῳ
γενέτην ἀνελύσατο δεσμῶν· φήμη δ' ἀμφιβόητος ἀκούετο, καὶ στρατὸς Ἴνδῶν μαζὸν ἀλεξικά-
κοιο δολοπλόκον ἤνεσε νύμφης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 157

καὶ στρατὸν ἀγκυλότοξον ἀολίσσας ἐπικούρων Ἀβράθους βραδὺς ἦλθε· νεοτμήτων δὲ
κομάων αἰδόμενος κεκόρυστο, χόλον καὶ πένθος ἀέξων βουκεράου βασιλῆος, ἐπεὶ νῦ οἱ ἄφρονι
λύσση Δηριάδης ὑπέροπλος ὅλην ἀπεκείρατο χαίτην, Ἴνδοις πικρὸν ὄνειδος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 220

τοῖς ἐπὶ θωρήσοντο Σίβαι καὶ λαὸς Ὑδάρκης, καὶ στρατὸς ἄλλος ἵκανε πόλιν Καρμι-
ναν ἐάσας· τῶν ἅμα Κύλλαρος ἦρχε καὶ Ἀστράεις, πρόμος Ἴνδῶν, Βρόγγγου δίζυγα τέκνα
τετιμένα Δηριαδῆι.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 225

καὶ στόλος ἄλλος ἵκανε τριηκοσίων ἀπὸ νήσων, αἱ τε περιστιχώσιν ἀμοιβάδες ἄλλυδις
ἄλλαι γεῖτονες ἀλλήλησιν, ὅπη περιμήκει πορθμῶ δίστομος Ἴνδὸς ἄγων μετανάστιον ἀγκύ-
λον ὕδωρ, ἐρπύζων κατὰ βαιὸν ἀπ' Ἰνδῶν δονακῆος λοξὸς ὑπὲρ δαπέδοιο παρ' Ἡφύου στόμα
πόντου, ἔρχεται αὐτοκύλιστος ὑπὲρ λόφον Αἰθιοπῆα· ἤχι θερειγενέων ὑδάτων ὑφούμενος ὀλκῶ
χεύμασιν αὐτογόνοις ἐπὶ πῆχεϊ πῆχυν ἀέξει· καὶ χθόνα πιαλέην ἀγκάζεται ὑγρὸς ἀκοίτης, τέρ-
πων ἱμαλέοισι φιλήμασι διφάδα νύμφην, οἷστρον ἔχων πολύπηχυν ἀμαλλοτόκων ὑμεναίων,
μέτρῳ ἀμοιβαίῳ παλιναυξέα χεύματα τίκτων

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 235

ἐρπύζων κατὰ βαιὸν ἀπ' Ἰνδῶν δονακῆος λοξὸς ὑπὲρ δαπέδοιο παρ' Ἡφύου στόμα πόντου,
ἔρχεται αὐτοκύλιστος ὑπὲρ λόφον Αἰθιοπῆα· ἤχι θερειγενέων ὑδάτων ὑφούμενος ὀλκῶ χεύμασιν
αὐτογόνοις ἐπὶ πῆχεϊ πῆχυν ἀέξει· καὶ χθόνα πιαλέην ἀγκάζεται ὑγρὸς ἀκοίτης, τέρπων
ἱμαλέοισι φιλήμασι διφάδα νύμφην, οἷστρον ἔχων πολύπηχυν ἀμαλλοτόκων ὑμεναίων, μέτρῳ
ἀμοιβαίῳ παλιναυξέα χεύματα τίκτων Νεῖλος ἐν Αἰγύπτῳ καὶ ἑώιος Ἴνδὸς ἀκούων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 246

6.1. NONNUS

τοῖα μὲν ἑπταπόροιο φατίζεται εἵνεκα Νείλου, Ἰνδῶου ποταμοῖο φέρειν γένος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 247

οἱ δὲ λιπόντες νήσων ἀγκύλα κύκλα καὶ ἔδρανα γείτονος Ἰνδοῦ ἄνδρες ἐθωρήσονται μαχή-
μονες, ὧν πρόμος ἀνὴρ Ῥίγβασος ἡγεμόνευεν, ἔχων ἵνδαλμα Γιγάντων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 281

μαντιπῶλον δ' ἐρέεινε θεηγόρον· εἰρομένῳ δὲ ἐσσομένων θέσπιζεν ἀφωνήτων στίχα παίδων,
εἰναλῆς ἵνδαλμα λιπογλώσσοιο γενέθλης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 304

τοῖς ἐπὶ θωρήχθησαν, ὅσοι λάχον ἀντυγα † σοιτης, μητέρα δεινρήεσαν ἀμετροβίων ἐλε-
φάντων, οἷς φύσις ὥπασε κύκλα διηκοσίαν ἐνιαυτῶν ζῶειν ἀνέαιοι χρόνου πολυκαμπεί νύσση,
ἢ τριηκοσίαν· καὶ βόσκεται ἄλλος ἐπ' ἄλλῳ, ἐκ ποδὸς ἀκροτάτου μελανόχροος ἄχρι καρήνου,
γναθμοῖς μηκεδανοῖσιν ἔχων προβλήτας ὀδόντας δίξυγας, ἀμητῆρι τύπῳ γαμφώνυχος ἄρπης,
θηγαλέῳ τμητῆρι, διαστείχων στίχα δένδρων ποσσὶ τανυκνήμοισιν, ἔχων ἵνδαλμα καμήλων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 310

.. καὶ λοφιὴν ἐπὶκυρτον, ἐῷ πολυχανδέϊ νώτῳ ἐσμὸν ἄγων νήριθμον ἐπασσυτέρων ἐλατή-
ρων, διενέων στατὸν ἵχνος ἀκαμπεί γούνατος ὀλκῷ, καὶ τύπον εὐρυμέτωπον ἐχιδναίοιο καρήνου,
αὐχένα βαιὸν ἔχων κυρτούμενον· εἶχε δὲ λεπτὸν ὄμμασιν ἰσοτύποισι συῶν ἵνδαλμα προσώπου,
ὑψιφανής, περίμετρος· ἐλισσομένου δὲ πορείῃ οὐατα μὲν λιπόσαρκα, παρήγορα γείτονα κόρη,
λεπταλέων ἀνέμων ὀλίγη ῥιπίζεται αὖρη· πυκνὰ δὲ μαστίζουσα δέμας νωμῆτορι παλμῷ λε-
πτοφυῆς ἐλάχεια τινάσσεται ἀστατος οὐρή.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 329

τοὺς μὲν ἀναξ Διόνυσος ἄγων μετὰ φύλοπιν Ἰνδῶν Καυκασίην παρὰ πέζαν Ἀμαζονίου πο-
ταμοῖο εἰς φόβον εὐπήληκας ἀνεπτοίησε γυναῖκας, ἡλιβάτων λοφιῇσιν ἐφειδρήσων ἐλεφάντων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 26, line 351

πάντων δ' ἡγεμόνευεν ἐς ἄρεα κοίρανος Ἰνδῶν, ὃν διερεῖ φιλότῃ πατὴρ ἔσπειρεν Ἰθάσπης,
Ἀστρίδος εὐώδινος ὀμιλήσας ὕμεναίοις, κούρης Ἡελίοιο.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 14

Φαέθων δὲ πυριτρεφῶν δρόμον ἵππων ἀνέων ἐτέων φλογόεις ἀνεσείρασε ποιμήν, γείτονος
εἰσαῖων κορυθαιόλον ἄρεος ἡχώ, καὶ στρατὸν αἰχμάζειν προκαλίζετο μάρτυρι πυρσῷ, θερμὸν
ἀκοντίζων ῥοδόεν βέλος· ἀμφὶ δὲ γαίῃ αἰμαλέης ξένον ὄμβρον ἀπ' ἰκμάδος ἕτιος Ζεὺς οὐρανόθεν
κατέχευε, φόνου πρωτάγγελον Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 17

καὶ φοναῖς λιβάδεσσιν ἐνναλίου νιφετοῖο δίψια κυανέης ἐρυθαίνετο νῶτα κονίης Ἰνδῶου
δαπέδοιο· νεοσμήκτου δὲ σιδήρου Ἡελίου σελάγιζε βολαῖς ἀντίρροπος αἶγλη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 19

φαινομένης δὲ φάλαγγας ἐπὶ κλόνον ὥπλισεν Ἰνδῶν Δηριάδης ὑπέροπλος, ἐποτρύνων δὲ μα-
χητὰς μῦθον ἀπειλητῆρος ἀνήρυγεν ἀνθερεῶνος· “δμῶες ἐμοί, μάρνασθε, πεποιθότες ἠθάδι Νίκη,
καὶ θρασὺν ὃν καλέουσι κερασφόρον νῖα Θυῶνης λάτρην ἰσοκραίροιο τελέσσατε Δηριάδης.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 35

καί τις ἀνὴρ Φρυγίῃθεν ὁμόστολος οἴνοπι Βάκχῳ Ἰνδῶν ποταμοῖο δέμας λούσειε ῥέεθροις,
ἀντὶ δὲ Σαγγαρίου καλέσει πατρῶν Ἰθάσπην· ἄλλος ἀνὴρ Ἀλύβηθεν ὁμαρτήσας Διονύσῳ
ἐνθάδε θηπεύσειε, καὶ ἀργυρέου ποταμοῖο χεύματα καλλείφας πῖετ' αὖ χρυσαυγέα Γάγγην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 46

χάζέο μοι, Διόνυσε, φυγῶν δόρυ Δηριάδης· ἔστι καὶ ἐνθάδε πόντος ἀπείριτος· ἀλλὰ θαλάσσης
Ἀρραβίης μετὰ κύμα καὶ ἡμετέρῃ σε δεχέσθω· εὐρύτερος βυθὸς οὗτος ἐρεύγεται ἄγριον
ὔδαρ, καὶ Σατύρους καὶ Βάκχον ἐπάρχιός ἐστι καλύφαι καὶ στίχα Βασσαρίδων· οὐ μείλιχος
ἐνθάδε Νηρεὺς, οὐ Θέτις Ἰνδῶν σε δεδέξεται, οὐδὲ σε κόλπῳ ξεινοδόκον μετὰ κύμα πάλιν
φεύγοντα σαώσει, αἰδομένη βαρύνδουπον ἐμὸν πατρῶν Ἰθάσπην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 82

καὶ πολέας Κρονίδαο δεδουπότας νῆας ἀκούω· Δάρδανος ἐκ Διὸς ἔσχε καὶ ὤλετο, καὶ θάνε
Μίνως, οὐδέ μιν ἐρρύσαντο Διὸς ταυρώπιδες εὐναί· εἰ δὲ θεμιστεύει καὶ ἐν Ἰδί, τίς φθόνος Ἰνδοῖς,
Αἰακὸς εἰ φθιμένοισι δικάζεται;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 90

μὴ χθονίους Κύκλωπας ὀλέσσετε· καὶ γὰρ ἐκείνων δεύομαι· Ἰνδῶν δὲ παρήμενος ἐσχα-
ρεῶν Βρόντης μὲν βαρύνδουπον ἐμοὶ σάλπιγγα τελέσσει βρονταίοις πατάγοισιν ἰσόκτυπον,
ὄφρα κεν εἴην Ζεὺς χθόνιος, Στερόπης δὲ νέην ἀντίρροπον αἶγλην ἀστεροπῇ τεύξει καὶ ἐνθάδε·
καὶ μιν ἐλίξω μαρνάμενος Σατύροισιν, ἵνα φρένα μᾶλλον ἀμύξῃ Δηριάδην κτυπέοντα καὶ
ἀστράπτοντα δοκεύων ζηλήμων Κρονίδης, πεφοβημένος ὄρχαμον Ἰνδῶν ὑψιγόνου φλογέοντος
ἀκοντιστῆρα κεραυνοῦ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 116

καὶ ναέτην † βαρύνδεσμον ἀπειρώδινος Ἀθήνης Ἡφαίστου πυρέοντος ἀπόσπορον αἶθοπι
πυρσῶ φλέξατε, τὸν καλέουσιν Ἐρεχθέα· καὶ γὰρ ἐκείνου αἶμα φέρει περίπυστον Ἐρεχθέος,
ὃν ποτε μαλῶ παρθενικὴ φυγόμενος ἀνέτρεφε Παλλὰς ἀμήτωρ, λάθριον ἀγρύπνῳ πεφυλα-
γμένον αἶθοπι λύχνῳ· μιμνέτω Ἰνδῶν κεκαλυμμένος αἶθοπι κίστῃ, καὶ κενεοῦ ζοφόμενος ἐν ἔρκει
παρθενεῶνος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 136

ὥς φαμένου βασιλῆος ἐπὶ κλόνον ἦιον Ἰνδοί, οἱ μὲν ὑπὲρ νώτοιο σιδηροφόρων ἐλεφάντων, οἱ
δὲ συνεστρατώνοντο θυελλοπόδων ὑπὲρ ἵππων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 144

καὶ μόθον ἐστήσαντο παρὰ στόμα γείτονος Ἰνδοῦ, ἐς πεδῖον προθέοντες.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 155

καὶ πισύρων ἀνέμων † φλογερῆς ἀντῶπιον Ἡοῦς † τέτραχα τεμνομένην στρατιὴν ἐστή-
σατο Βάκχων· πρῶτην μὲν βαθύδενδρα παρὰ σφυρὰ κυκλάδος Ἄρκτου, ἥχι πολυσπερέων
ποταμῶν πεφορημένον ὀλκῶ Καυκασίου σκοπέλοιο Διιπετὲς ἔρχεται ὔδαρ· τὴν ἐτέρην δὲ φά-
λαγγα συνήρμωσεν, ὅππῃ γαίης μεσσατῆς στεφανηδὸν ἐς ἐσπέριον κλίμα νεύων δίστομος
οὐρεσίφοιτος ἐὼν ῥέον Ἰνδὸς ἐλίσσει, κύμασιν ἀμφίζωντον ἐπιστέφας Παταληνὴν, τὴν αὐτὴν

6.1. NONNUS

παρὰ πέζαν, ὅπῃ περιμήκει πορθμῶ χεῦμα παλινδίνητον ἄγει βαρύδουπος Ἰθάσπης· καὶ τριτάτην κόσμησεν, ὅπῃ νοτίῳ παρὰ κόλπῳ κύματι πορφύροντι μεσημβριάς ἔλκεται ἄλμη· καὶ στρατιὴν εὐχαλκον ἀναξ ἔστησε τετάρτην ἀντολῆς ὑπὸ πέζαν, ὅθεν δονακῆα διαίνων στέλλεται εὐόδμοισι κατάρρυτος ὕδασι Γάγγης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 183

εἰ μὲν ἐμοὶ γόνυ δοῦλον ὑποκλίνειεν Ἰθάσπης μηδὲ πάλιν Βάκχοισι παλίνκοτον οἶδμα κορύσσει, ἔσσομαι εὐάντητος, ὅλον δὲ οἱ ἀγλαὸν ὕδωρ χεύμασι ληναίοισιν ἐς εὖιον οἶνον ἀμείψω, τεύχων λαρὰ ῥέεθρα, καὶ ἀγριάδος λόφον ὕλης μιτρώσω πετάλοισι καὶ ἀμπελόεντα τελέσω· εἰ δὲ πάλιν προχοῇσιν ἀλεξικάκοισιν ἀρήξει Ἰνδοῖς κτεινομένοισι καὶ νιέει Δηριαδῇ, ἀνδροφυῆς κερύεσσαν ἔχων ποταμνίδα μορφήν, χεῦμα γεφυρώσαντες ὑπερφιάλου ποταμοῖο ἵχνεσιν ἀβρέκτοισιν ὁδεύσατε δίψιον ὕδωρ, καὶ γυμνῇ ψαμάθῳ πατέων αὐχμηρὸν Ἰθάσπην πεζὸς ὄνυξ εὐίππος ἐπιξυσσεῖ κοινήν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 189

εἰ δὲ πολυπτοίητος ἀρειμανέων πρόμος Ἰνδῶν αἰθερίου Φαέθοντος ἀπόσπορός ἐστι γενέθλης καὶ Φαέθων πυρέεσσαν ἐμοὶ στήσειεν ἐννῶ, θυγατέρος κερύεσσαν ἐῆς ὠδῖνα γεραίρων, γνωτὸν ἐμοῦ Κρονίδαο πάλιν Φαεθοντίδι χάρμη πόντιον ὕδατόεντα πυρὸς σβεστῆρα κορύσσω· Θρινακίην δ' ἐπὶ νῆσον ἐλεύσομαι, ὅππῃ ποῖμαι καὶ βόες αἰθερίοιο πυραυγέος ἡνιοχῆος, Ἡελίου δὲ θύγατρα, δορικτήτην ἄτε κούρην, Λαμπετίνην ἀέκουσαν ἐπὶ ζυγὰ δούλια σύρω,

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 205

σπεύσατέ μοι καὶ κύκλα μελαρρῖοιο προσώπου Ἰνδῶν ληιδίων λευκαίνετε μύστιδι γύνῳ, καὶ θρασὺν ἀμπελόεντι περιπλεχθέντα κορύμβῳ .

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 209

.. νεβρίδα χαλκοχίτωνι καθάψατε Δηριαδῇ· καὶ Βρομίῳ γόνυ δοῦλον ὑποκλίνων μετὰ νίκην Ἰνδὸς ἀναξ ῥίψειν ἐὼν θώρηκα θυέλλαις, κρεῖσسونι λαχρήντι δέμας θώρηκι καλύπτων, καὶ πόδα πορφυρέοισι περισφίγγειε κοθόρνοις ἀργυρέας ἀνέμοισιν ἐὰς κνημίδας ἐάσας, καὶ μετὰ φοῖνια τόξα καὶ ἡθάδος ἔργα κυδοιμοῦ ὄργια νυκτιχόρευτα διδασκέσθω Διονύσου, βάρβαρα δινεύων ἐπιλήνια βόστρυχα χαίτης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 218

δυσμενέων δὲ κάρηνα κομίσσατε σύμβολα νίκης Τμῶλον ἐς ἡνεμόεντα, πεπαρμένα μάρτυρι θύρσῳ· πολλὰς δ' ἐκ πολέμοιο μεταστήσω στίχας Ἰνδῶν ζωγρήσας μετ' ἄρῃα, παρὰ προπύλαια δὲ Λυδῶν πῆξω μαινομένοιο κεράατα Δηριαδῆος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 240

καὶ τις ἐπ' ἀντιβίοισι μεμνηνὸτα τίγριν ἰμάσσων δίφρα διεπτοίησεν ὁμοζυγέων ἐλεφάντων· καὶ πολὺς κεκόρυστο Μάρων ἐλικῶδεῖ θαλλῷ, ἡμερίδων ὄρπηκι διασχίζων δέμας Ἰνδῶν μαρναμένων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 27, line 313

ὦ γένος ἄλλοπρόσαλλον Ὀλύμπιον· ἃ μέγα θαῦμα· ξείνῳ Δηριαδῇ παρίσταται Ἀργολὶς Ἥρῃ, Κεκροπίδας δὲ φάλαγγας ἀναίνεται Ἀτθίς Ἀθήνῃ, μητρὶ δὲ πιστὰ φέρων, ἐμὸν

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

υἷεα Βάκχον ἐάσσας καὶ στρατιὴν Θρήισαν ἐφespoμένην Διονύσῳ, ῥύεται Ἴνδὸν ὅμιλον ἐμὸς Θρηίκιος Ἄρης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 7

καὶ στρατιὴ κεκόρυστο πολύτροπος εἰς μόθον Ἰνδῶν σπερχομένων ἀγεληδόν· ὁ μὲν τα-
μεσίχροϊ κισσῷ κραιπνὸς ἐς ὑσμίνην πολυδαίδαλα δίφρα νομεύων πορδαλίῳν ἐπέβαινε, ὁ δὲ
φρίσσοντι λεπάδνῳ ζεῦξεν Ἐρυθραίων ὀρεσίδρομον ἄρμα λεόντων καὶ βλοσυρὴν ἴθυνη συνωρίδα,
κυανέας δὲ ἄλλος ἐριπτοίητος ἀκοντίων στίχας Ἰνδῶν ἀστεμφῆς ἀχάλινον ἐτέρπετο ταῦρον
ιμάσσων, καὶ τις ἀναΐξας Κυβελήϊδος εἰς ῥάχιν ἄρκτου ἔχραε δυσμενέεσσι, καὶ οἶνοπα θύρσον
ἐλίσσων

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 27

καὶ τις ὀρεσσινόμων Σατύρων, ἅτε πῶλον ἐλαύνων, ποσσὶ διχαζομένοισιν ὑπὲρ ῥάχιν ἦστο
λεαίνης. Ἴνδοι δ' ἀνταλάλαζον, ἀολλίζων δὲ μαχητὰς βάρβαρος ἐσμαράγησεν ἀγέστρατος
αὐλὸς ἐνυοῦς· στέμματα μὲν κορύθεσσιν, ἐπέκτυπε δ' αἰγίδι θώρηξ, ἔγχρεσι θύρσος † ἔθυσε, καὶ
ισάζοντο κοθόρνοις ἀντίτυποι κνημίδες.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 69

αὐτίκα δ' ἐκ κολεοῖο Κορύμβαστος ἄορ ἐρύσας αὐχένα Δεξιόχοιο κατεπρήνιξε μαχαίρῃ·
καὶ ταχὺς ἀσπαίροντι θορῶν περιδέδρομε νεκρῷ οἰστρομανῆς Κλυτίος, πρυλέων πρόμος· ὑψιλό-
φου δὲ κραιπνὸς ἐριπτοίητος ἀκόντισε Δηριάδης· ἀλλὰ δόρυ προμάχοιο παρακλιδὸν ἔτραπεν
Ἥρη, καὶ Κλυτίῳ κοτέουσα καὶ Ἰνδοφόνῳ Διονύσῳ· ἔμπης δ' οὐκ ἀφάμαρτε ταχὺς πρόμος·
ἀλλὰ τορήσας θηρὸς ἀμαιμακέτοιο πελώριον ἀνθερεῶνα ὀρθοπόδην ἐλέφαντα κατέκτανε Δηρι-
αδῆος· καὶ μογέων ὀδύνῃσιν ὅλην ἐτίναξεν ἀπήνην αὐχένι κυανέῳ περιδέξις ἡλίβατος θήρ· καὶ
γένυν αἰθύσσων σκολιὴν προβλήτα προσώπου αἰμοβαφῇ ζυγίων ἀνεσείρασε δεσμὰ λεπάδνων·
ἀλλὰ πολυκλήιστον ὑπὸ ζυγὸν ἄορι κάμφας αὐχενίων ἀνέκοψεν ὁμόζυγον ὀλκὸν ἱμάντων

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 86

ὑμέας εἰς Φρυγίην λήισσομαι, ἄσπεα δ' Ἰνδῶν δηώσει δόρυ τοῦτο, καὶ Ἰνδοφόνον μετὰ νίκην
Δηριάδην θεράποντα Διωνύσοιο τελέεσσω· παρθενικὴ δ' ἀνάεδνος ἐὼν λύσειε κορείην, δεχχυμένη
Σατύροιο δασυστέρνους ὑμεναίους, Ἰνδῇ Μυγδονίῳ μαινομένη σχεδὸν Ἑρμοῦ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 97

καὶ νέκυν ὀρχιστῆρα παλινδίνητον ἐάσσας Σιληνοὺς ἐφόβησε Κορύμβαστος, ἔξοχος Ἰνδῶν,
ἔξοχος ἠγορέην μετὰ Μορρέα καὶ βασιλῆα.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 176

καὶ βριαροὶ Κύκλωπες ἐκυκλώσαντο μαχητὰς, Ζηνὸς ἀοσσητῆρες· ὁμιχλήνεντι δὲ λαῶ Ἀρ-
γίλιπος σελάγιζε φεραυγέα δαλὸν αἰέρων, καὶ χθονίῳ κεκόρυστο πυριγλώχινι κεραυνῷ μαρ-
νάμενος δαΐδεσσι· καὶ ἔτρεμον αἰθοπες Ἴνδοι οὐρανίῳ πρηστῆρι τεθηπότες ἀντίτυπον πῦρ· καὶ
πυρροῖς πρόμος ἦεν· ἐπ' ἀντιβίων δὲ καρήνοις Γηγενέος σπινθῆρες ἐτοξεύοντο κεραυνοῦ· καὶ
μελίας νίκησε καὶ ἄσπετα φάσγανα Κύκλωφ, σείων θερμὰ βέλεμνα καὶ αἰθαλόεσσαν ἀκω-
κὴν, δαλὸν ἔχων ἅτε τόξα· καὶ ἄσπετον ἄλλον ἐπ' ἄλλῳ Ἰνδὸν οἰστευτῆρι κατέφλεγεν ἀνέρα
πυρσῷ.

6.1. NONNUS

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 183

Ζηνὸς ἀοοσητῆρες· ὀμιχλήεντι δὲ λαῶ Ἀργίλιπος σελάγιζε φεραυγέα δαλὸν αἶρων, καὶ χθονίῳ κεκόρυστο πυριγλώχινι κεραυνῷ μαρνάμενος δαΐδεσσι· καὶ ἔτρεμον αἵθοπες Ἴνδοι οὐρανίῳ πρηστῆρι τεθηπότες ἀντίτυπον πῦρ· καὶ πυροῖς πρόμος ἦεν· ἐπ' ἀντιβίων δὲ καρήνοισι Γηγενέος σπινθήρες ἐτοξεύοντο κεραυνοῦ· καὶ μελίας νίκησε καὶ ἄσπετα φάσγανα Κύκλωψ, σείων θερμὰ βέλεμνα καὶ αἰθαλόεσσαν ἀκωκὴν, δαλὸν ἔχων ἄτε τόξα· καὶ ἄσπετον ἄλλον ἐπ' ἄλλῳ Ἴνδον οἰστευτῆρι κατέφλεγεν ἀνέρα πυρσῷ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 221

ἀμφὶ δὲ μιν προχυθέντες ἐς ἄρματα κούφισαν Ἴνδοί, δειδιότες Κύκλωπα δυσειδέα, μὴ τινι ξίπῃ ὑφίτενῃ πάλιν ἄλλον ἐλὼν πρηῶνα κολώνης τρηχαλέῳ βασιλῆα κατακτείνειε βελέμνῳ, μῆκος ἔχων ἰσόμετρον ἀερσιλόφου Πολυφήμου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 229

καὶ βλοσυροῦ προμάχοιο μέσῳ σελάγιζε μετώπῳ μαρμαρυγὴ τροχόεσσα μονογλήνοιο προσώπου· καὶ βλοσυροῦ Κύκλωπος ὑποπτήσσοντες ὀπωπὴν θαμβαλέῳ δεδόνητο φόβῳ κυανόχροες Ἴνδοί, οὐρανόθεν δοκέοντες Ὀλυμπιάς ὅττι Σελήνη Γηγενέος Κύκλωπος ἐναντέλλουσα προσώπῳ πλησιφαῆς ἤστραπτε, προασπίζουσα Λυαίου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 244

... Εὐρύαλος κεκόρυστο· διατμήξας δὲ κυδοιμῷ ἐκ πεδίου φεύγοντα πολὺν στρατὸν ἄχρι θαλάσσης, κόλπῳ ἐς ἰχθυόεντα περικλείων στίχας Ἴνδῶν, δυσμενέας νίκησεν ἀκοντοφόρου διὰ πόντου, ὄρθιον εἰκοσίπηχυ δι' ὕδατος ἄορ ἐλίσσων· καὶ δολιχῷ βουπλῆγι ταμῶν ἀλιγείτονα πέτρην ξίψεν ἐπ' ἀντιβίοισιν· ἀτυμβεύτῳ δὲ πολλοὶ διχθαδῆς ἐνόησαν ἀλιβρέκτου λῖνα Μοίρης, ἄρεϊ χυματόεντι καὶ ὀκριόεντι βελέμνῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 261

καὶ μιν ἰδὼν Φλογίος κταμένων τιμήορος Ἴνδῶν τόξον ἐὼν κύκλωσε, καὶ ἠνεμόεν βέλος ἔλκων μεσσοφανῇ πτερόεντι βαλεῖν ἤμελλε βελέμνῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 299

εἰλιπόδην ἔστησε Μίμας εὐρυθμον ἐννώ, καὶ στρατὸν ἐπτοίησε, χοροῖτυπον ἄορ ἐλίσσων, σκαρθμὸν ἔχων ἀγέλαστον ἐνόπλιον ἴδμονι ταρσῷ, οἷον ὅτε Κρονίοισιν ἐπ' οὐάσι δοῦπον ἐργείρων Πύρριχος Ἰδαίοισι σάκος ξιφέεσσιν ἀράσσαν ψευδομένης ἀλάλαξε μέλος μενεδήιον Ἠχρῶς, Ζηνὸς ὑποκλέπτων παλιναυξέος ἔγκρυφον ἥβην· τοῖον ἔχων μιμηλὸν ἐνόπλιον ἄλμα χορείης χαλκοχίτων ἐλέλιξε Μίμας ἀνεμάδεα λόγχην· τέμνων δ' ἐχθρὰ κάρηνα, σιδήρεα λήια χάρμης, Ἴνδοφόνους πελέκεσσι καὶ ἀμφιπλῆγι μαχαίρῃ δυσμενέων ἐτίταινε θαλύσια μάρτυρι Βάκχῳ, ἀντὶ θυηπολῆς βοῆς καὶ ἐθήμονος οἴνου λαιβὴν αἵματόεσσαν ἐπισπένδων Διονύσῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 28, line 305

ὄξυφαῆς δ' Ἰδαῖος ἐδύσατο κῶμον Ἐννοῦς, ὀρχιστῆρ πολέμοιο πολύτροπον ἵχνος ἐλίσσων, ἄσχετος Ἴνδοφόνιοι μόθου δεδονημένος οἴστρῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 1

Ἥρη δ' ὥς ἐνόησε δαΐζομένων στίχας Ἴνδῶν, δύσμαχον ἔμβαλε θάρσος ἀγνήορι Δηριαδῇ.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 9

καὶ θρασὺς ἔπλετο μᾶλλον· ὀμηγερέες δὲ καὶ αὐτοὶ κεκλομένου βασιλῆος ἐπὶ κλόνον ἔρρεον Ἴνδοί.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 17

εὐχαίτης δ' Ὑμέναιος ἐμάρνατο φάσγανα σείων, Θεσσαλικῆς ἀκίχης ὑπὲρ ῥάχιν ἤμενος ἵππου, Ἴνδους κυανέους ῥόδοιδαι χειρὶ δαΐζων· ἀγλαΐη δ' ἥστραπτεν· ἴδοις δέ μιν εἰς μέσον Ἴνδων Φωσφόρον αἰγλήεντα δυσειδέϊ σύνδρομον ὄρφη· καὶ δῆιους ἐφόβησεν, ἐπεὶ νῦ οἱ εἵνεκα μορφῆς μαρναμένῳ Διόνυσος ἐνέπνεεν ἔνθεον ἀλκήν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 25

εἴ ποτε πῶλον ἔλαυνεν ἀπόσσυτον εἰς μόθον Ἴνδων, δαιδαλέων Διόνυσος ἐμάστιεν αὐχένα θηρῶν, ἵππῳ δ' ἄρμα πέλαζε παρ' ἡβητῆρι θαμίζων, κοῦρον ἔχων, ἅτε Φοῖβος Ἀτύμνιον· ἴστατο δ' αἰεὶ ἀγχιφανής, ἐρόεις δὲ καὶ ἄλκιμος εἶν ἐνὶ θεσμῷ ἡιθέω μενέαινε φανήμεναι· ἐν δὲ κυδοιμοῖς καὶ νεφέων ἔψαυε συναιχμαζών Ὑμεναίῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 50

ὥς φαμένου Βρομίῳ πολὺ πλεόν ἦφατο χάρμης ἱμερόεις Ὑμέναιος ἐκηβόλος, ᾧ ἔπι χαίρων οἰστρήεις Διόνυσος ἐδύσατο μᾶλλον ἐνὺ καὶ ζοφερὴν προθέλυμνον ὄλην ἐφόβησε γενέθλην· καὶ τις ἰδὼν Διόνυσον ἀφειδέϊ λαίλαπι χάρμης Ἰνδῶν ἀκόρητον οἰστευτῆρα καρῆνων τοῖον ἔπος κατέλεξε φιλοκτεάνῳ Μελανῆι· “τόξοτα, πῇ σέο τόξα καὶ ἡνεμόντες οἰστοί;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 125

εἰ θέμις εἰπεῖν, Ἥρη δερκομένη ζηλήμονι Βάκχον ὀπωπῇ καὶ νέον ἀμητῆρα μελαρρῖνοιο γενέθλης, ἡιθέω φθονέουσα καὶ ἱμείροντι Λυαίῳ ὦπλισε θυῶν Ἄρηα βαλεῖν Ὑμέναιον οἰστῶν, Ἰνδῶν μεθέποντα νόθην ἀγνωστον ὀπωπῆν, ὅφρα νόον δυσέρωτος ἀνιήσειε Λυαίου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 178

οὐδὲ μάχης Διόνυσος ἐλώφειεν· ἀλλὰ τορήσας μεσσοπαγῇ κούφιζε πεπαρμένον ἀνέρα θύρῳ ὄρθιον ὑψιτότητον, ἐν ἡερίῃ δὲ κελεύθῳ Ἰνδὸν ἐλαφρίζων ζηλήμονι δείκνυν Ἥρη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 222

ὄρεσσαύλων δὲ νομῶν Ἰνδῶν δεδάικτο γονὴ Κουρήτι σιδήρῳ· καὶ τις ἀνὴρ προκαρῆνος ἐπωλίσθησε κονίη, εἰσαΐων μύκημα βαρυγδούποιο βοείης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 236

ἔνθα μέλος πλέξασα καὶ Ἀρεῖ καὶ Διονύσῳ Εὐπετάλη κεκόρυστο, φιλοσταφύλῳ δὲ πετῆλῳ κέντορα κισσὸν ἔπεμπεν ἀλοιητῆρα σιδήρου, Ἰνδῶν δρυόεντι γονὴν ὀλέκουσα κορύμβῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 241

καὶ δῆιων κλονέουσα νέφος ἐξῆνορι θύρῳ Στησιχόρῃ φιλόβοτρυς ἐπεσκήρτησε κυδοιμῷ, κύμβαλα δινεύουσα βαρύβρομα δίζυγι χαλκῷ· οὐτόσον Ἡρακλῆς Στυμφαλίδας ἦλασε βόμβῳ χαλκὸν ἔχων βαρύδουπον, ὅσον στρατὸν ἦλασεν Ἰνδῶν Στησιχόρῃ κτυπέουσα χοροῦ πολεμήιον ἡχώ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 279

6.1. NONNUS

καί τις ἀμερσινόοιο κατάσχετος ἄλματι λύσσης Βασσαρίς Ἰνδὸν ἄρῃα μετέστιχε θυιάς ἐννώ, ἀμφὶ σέ, Λύδιε δαῖμον· ἀπὸ πλοκάμοιο δὲ Βάκχης ἀφλεγέος σελάγιζε κατ' αὐχένος αὐτόματον πῦρ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 296

ἀλλ' ὅτε δὴ πόρον ἶξον, ὅπῃ πεφορημένος ὀλκῶ λευκὸν ὕδωρ μεθύοντι ῥόῳ φοίνιξεν Ἰθάσπης, δὴ τότε Βάκχος ἄυσε βαρυσμαράγων ἀπὸ λαιμῶν, ὅππῃσον ἐννεάχιλος ἐπέβρεμεν ἐσμὸς ἐννοῦς φρικτὸν ὁμογλώσσων στομάτων θρόον· ἀσταθῆες δὲ ξανθὸν ἀλυσκάζοντες ἐπὶ ῥόον ὠκλασαν Ἰνδοί, ἄλλοι δ' ἐν πεδίῳ· στρατιῇ δ' ἐμερίζετο Βάκχου, δυσμενέας κτείνουσα καὶ ἐν δαπέδῳ καὶ Ἰθάσπῃ, δίψῃ καρχαλέῃ κεκαφνότας, ὅππῃτε γαίης ἡὼς μέσσον ἀνέσχε καὶ ἔτρεμε θερμὸς ὀδίτης αἰθοπὸς Ἡελίοιο μεσημβρίζουσαν ἰμάσθλην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 302

καὶ θεὸς ἀμπελόεις προκαλίζετο κοῖρανον Ἰνδῶν, μῦθον ἀπειλητῆρα χέων λυσσῶδεϊ λαιμῶ·
“τίς φόβος;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 304

εἰ ποταμοῖο φέρει γένος ὄρχαμος Ἰνδῶν, οὐρανόθεν λάχον αἶμα· χερεióτερος δὲ Λυαίου Δηριάδης ὑπέροπλος, ὅσον Διὸς ἐστὶν Ἰθάσπης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 29, line 324

τοῖσι δὲ μαρναμένοισιν ἐπήλυθεν Ἑσπερος ἀστήρ, λύων Ἰνδοφόνιοι θεμείλια δημοτήτος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 30, line 9

ὥς ἴδε Βάκχος Ἄρῃα λελοιπότα φύλοπιν Ἰνδῶν· ἄλλῳ δ' ἄλλος ἔριξε.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 30, line 229

καὶ φθονεροὶ Τελχῖνες ἐπεστρατόωντο κυδοιμῶ, ὅς μὲν ἔχων ἐλάττην περιμήκετον, ὅς δὲ κρανείης θάμνον ὄλον πρόρριζον, ὁ δὲ πρῆωνος ἀράξας ἄκρον ἀπηλόησε καὶ ἐς μῦθον ἦεν Ἰνδῶν λαῶν ἀκοντιστῆρα μεμνηότι πῆχέϊ σείων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 30, line 235

Ἥρῃ δ' ἄλλοπρόσαλλος ἐπιβρίζουσα Λυαίῳ δῶκε μένος καὶ θάρσος ἀγλήγορι Δηριάδῃ, καὶ οἱ ἀριστεύοντι σελασφόρον ὥπασεν αἶγλην εἰς φόβον ἀντιβίοισι· κορυσσομένου δὲ φορῆος ἀσπίδος Ἰνδάης ἀμαρύσσετο φοίνις αἶγλη, καὶ κυνέης σελάγιζεν ὑπὲρ λόφον ἀλλομένη φλόξ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 30, line 243

καὶ τότε θαρσέντες ἐπὶ κλόνον ἦιον Ἰνδοί, ὑσμίνην Βρομίοιο λελοιπότος· εἰσορόων δὲ Δηριάδης ἐδάϊζεν ἐπασσυντέρων στίχα Βάκχων ἐγχείῃν ἐκάτερθε παλινδίνητον ἐλίσσων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 30, line 261

ποῖον ἶδον κατὰ δῆριν ὀλωλότα κοῖρανον Ἰνδῶν;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 30, line 279

Αἰακὸς ἀπτοίητος ὁμοῖος οὐ πέλε Βάκχῳ, οὐ φύγε Δηριάδην, οὐκ ἔτρεμε φύλοπιν Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 30, line 285

ποίησ' Ὀρσιβόην λήισσαο δεσπότην Ἰνδῶν;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 30, line 288

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ιλήκοι Διὸς εὐχρος, ἀδελφεὸν οὐ σε καλέσσω Δηριάδην φεύγοντα καὶ ἀπτολέμων γένος Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 30, line 325

Εὖιος ἐπτοίησεν ὅλον στρατὸν Οὐατοκοίτην· καὶ Λύγον αἱματόεντος ἀπεστυφέλιξε κυδοι-
μοῦ ἀλκῆεις Ἰόβακχος· ἐφεδρήσσοντα δὲ δένδρῳ οὐτάσε Μειλανίωνα δολοπλόκον οἶνοπι θύρσῳ,
Βασσαρίδας κρυφίοισιν οἰστεύοντα βελέμοις· ἀλλὰ μιν ἐζώγησεν ἀπήμονα δύσμαχος Ἥρη,
ὅττι δόλῳ κεκόρυστο καὶ ἔχραε πολλάκι Βάκχαις κρυπταδίοις πολέμοισιν· αἰεὶ δὲ μιν ἔκρυφε
πέτρῃ ἢ φυτὸν ὑφικάρηνον ὑποκρυφθέντα πετήλοισι, ἀνέρας ἀφράστοισιν οἰστεύοντα βελέμοις.
Ἰνδοὶ δ' ἀνδροφόνοιο μετεσσεύοντο κυδοιμοῦ ἡνορέην τρομέοντες ἀνικήτου Διονύσου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 1

Ὡς ὁ μὲν Ἰνδῶοιο τυπείς ἴνγχι κυδοιμοῦ Βάκχος Ἐρυθραίης περιδέδρομε κόλπον ἀρούρης,
χρῦσα χιονέῃσι παρήσι βόστρυχα σείων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 6

Ἥρη δὲ φθονεροῖσιν ἀνοιδαίνουσα μερίμναις † ἵκελον ἀπειλητῆρι κατέγραφεν ἥρα ταρσῶ,
αὐτόθι παπταίνουσα πολυσπερέων στρατὸν Ἰνδῶν θύρσοις ἀνδροφόνοισιν ἀλοιθθέντα Λυαίου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 62

ἀλλὰ τεὰς θάρηξον Ἐρινύας οἶνοπι Βάκχῳ, μὴ βροτὸν ἀθρήσαιμι νόθον σκηπτουῆχον Ὀλύμ-
που, αἶδεο λισσομένην Διὸς εὐνέτιν, αἶδεο Δηῶ, αἶδεο † λισσομένην καθαρὴν Θέμιν, ὅφρα κεν Ἰνδοὶ
βαῖδον ἀναπνεύσωσι τινασσομένου Διονύσου· ἔσσο μοι ἀχρυσμένη τιμήορος, ὅττι Κρονίων Βάκχῳ
νέκταρ ὅπασσε καὶ Ἄρεϊ λύθρον ἐννοῦς.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 77

ἡ δὲ θυελλήεντι διαῖξασα πεδίλῳ τρίς μὲν ἀνῆρθη, τὸ δὲ τέτρατον ἵκετο Γάγγην· καὶ νέκυν
Ἰνδὸν ὁμίλον ἀμειδεί δειξε Μεγαίρῃ καὶ στρατιῆς ἰδρῶτα καὶ ἡνορέην Διονύσου· Ἰνδοφόνους δὲ
Μέγαιρα πόνους ὀρώσασα Λυαίου ζηλήμων ἐμέγηρε καὶ οὐρανὴς πλέον Ἥρης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 86

ἡ δὲ νόφ κεχάρητο· δρακοντοκόμῳ δὲ θεαίνῃ σαρδόνιον γελόωσα κατηφέα ξήξατο φωνήν·
“οὕτω ἀριστεύουσι νέοι βασιλῆες Ὀλύμπου, οὕτω ἀκοντίζουσι νόθοι Διός· ἐκ Σεμέλης δὲ Ζεὺς
ἓνα παῖδα λόχευσεν, ἵνα ξύμπαντας ὀλέσῃ Ἰνδοὺς μαιλιχίους καὶ ἀμεμφέας· ἀλλὰ δαείῃ Ζεὺς
ἄδικος καὶ Βάκχος, ὅσον σθένος ἐστὶ Μεγαίρης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 93

ὦ πόποι, οἷον ἄθεσμον ἔχει νόον ὑψιμέδων Ζεὺς· Τυρσηνοῖς ἀδίκους οὐ μάρναται, ὅττι μαθόν-
τες φώρια θεσμὰ βίαια κακοξείνων ἐπὶ νηῶν ἄρπαγες ἀλλοτρίων Σικελῇ πλώουσι θαλάσση·
οὐ κτάνε δυσσεβέων Δρυόπων γένος, οἷς βίος αἰχμαὶ καὶ φόνος· εὐσεβίῃ δὲ μεμηλότας ἔκτανεν
Ἰνδοὺς, οὓς τάχα πασιμέλουσα Θέμις μαιώσατο μαζῶ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 115

τὴν δὲ καλεσσαμένη φιλίῳ μαιλίξατο μύθῳ· “Ἴρις, ἀεξιφύτου Ζεφύρου χρυσόπτερε νύμφη,
εὐλοχε μήτερ Ἐρωτος, ἀελλήεντι πεδίλῳ σπεῦδε μολεῖν ζοφόντος ἐς Ἑσπέριον δόμον Ἴπνου·
δίξεο καὶ περὶ Λῆμνον ἀλίχτυπον· εἰ δὲ μιν εὐρῆς, λέξον, ἵνα Κρονίωνος ἀθελγέος ὄμματα θέλῃ
εἰς μίαν ἡριγένειαν, ὅπως Ἰνδοῖσιν ἀρήξω.

6.1. NONNUS

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 156

ἀλλὰ σύ μοι, φίλε κοῦρε, χολῶεο δίζυγι θεσμῶ μυστιπόλοις Σατύροισι καὶ ἀγρύπνῳ Δι-
ονύσῳ· δὸς χάριν ἀχνημένη σέο μητέρι, δὸς χάριν Ἥρῃ, καὶ Διὸς ὑφιμέδοντος ἀθελγέα θέλξον
ὀπωπὴν ἐς μίαν ἡριγένειαν, ὅπως Ἴνδοισιν ἀρήξῃ, οὓς Σάτυροι κλονέουσι καὶ εἰσέτι Βάκχος
ὀρίνει.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 173

Γηγενέων δ' ἐλέαιρε γονὴν μελανόχροον Ἴνδῶν· δὸς χάριν· ὑμετέρης γὰρ ὁμόχροές εἰσι τε-
κούσης· ξύεο κυανέους, κυανόπτερε· μηδὲ χαλέφης Γαῖαν ἐμοῦ γενετῆρος ὁμήλικα, τῆς ἀπο
μούνης πάντες ἀνεβλάστησαν, ὅσοι ναιετῆρες Ὀλύμπου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 188

εἰ δὲ σὺ ναιετάεις παρὰ Τηθύι Λευκάδα πέτρην, Δηριάδῃ χραίσμησον, ὃν ἤροσεν Ἴνδὸς
Ἵδάσπης· γείτονι πιστὰ φύλαξον, ἐπεὶ τεὸς ἡχέτα γείτων Ὀκεανὸς κελάδων προπάτωρ πέλε
Δηριαδῆος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 207

καὶ Παφίην μάστευεν· ὑπὲρ Λιβάνοιο δὲ μούνην Ἀσσυρίην ἐκίχσεν ἐρημαίην Ἀφροδίτην
ἐζομένην· Χάριτες γὰρ ἐς ἄνθεα ποικίλα κήπων εἰαρινὰι στέλλοντο, χορίτιδες Ὀρχομενοῖο, ἡ μὲν
ἀμεργομένη Κίλικα κρόκον, ἡ δὲ κομίζειν βάλσαμον ἰμεύρουσα καὶ Ἴνδῶν δονακῆος φυταλήν,
ἐτέρη δὲ ῥόδων εὐώδεα ποίην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 31, line 274

ἀλλὰ, θεά, χραίσμησον, ἐμῆς δ' ἐπίκουρον ἀνίης δὸς μοι κεστὸν ἱμάντα, τέην πανθελγέα
μίτρην, εἰς μίαν ἡριγένειαν, ὅπως Διὸς ὅμματα θέλξω, καὶ Διὸς ὑπνώοντος ἐμοῖς Ἴνδοισιν ἀρήξω·
δὸς χάριν ὀφιτέλεστον, ἐπεὶ κυανόχροες Ἴνδοι ξεινοδόκοι γεγάασιν Ἐρυθραίης Ἀφροδίτης, οἷς
κοτέων Διόνυσος ἐπέχραεν, οἷσι καὶ αὐτὸς θηλυμανὴς ἄστοργος ἐχώσατο παιδοτόκος Ζεὺς, καὶ
στεροπὴν ἐλέλιξε συναιχμάζων Διονύσῳ· δὸς μοι κεστὸν ἱμάντα βοηθόν, ᾧ ἔνι μούνῳ θέλγεις
εἰν ἐνὶ πάντα· καὶ ἄξιός εἰμι φορέσσαι, ὡς ζυγὴ γεγαυῖα καὶ ὡς συνάεθλος Ἑρώτων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 32, line 25

καὶ κεφαλῇ στέφος εἶχε παναίολον, ᾧ ἔνι πολλὰι λυχνίδες ἦσαν, Ἑρωτος ὁμόστολοι, ᾧ
ἀπο πέμπει φαιδρὰ τινασσομένων ἀμαρύγματα Κυπριδὴ φλόξ· εἶχε δὲ πέτρον ἐκεῖνον, ὃς
ἀνέρας εἰς πόθον ἔλκει, οὐνομα φαιδρὸν ἔχοντα ποθοβλήτοιο Σελήνης, καὶ λίθον ἰμεύρουσαν ἔρω-
τοτόκοιο σιδήρου, καὶ λίθον Ἴνδῶν φιλοτήσιον, ὅττι καὶ αὐτὴ ἐξ ὑδάτων βλάστησεν ὁμόγνιος
Ἀφρογενεῖς, κυανέην θ' ὑάκινθον, ἐράσμιον εἰσέτι Φοῖβῳ· ἀμφὶ δὲ οἱ πλοκάμοισιν ἐρωτίδα
δήσατο ποίην, ἣν φιλέει Κυθήρεια καὶ ὡς ῥόδον, ὡς ἀνεμώνην, καὶ φορέει μέλλουσα μιγήμεναι
υἱέι Μύρρης· καὶ λαγόνας στεφανηδὸν ἀθήει δήσατο κεστῷ· εἶχε δὲ ποικίλον εἶμα παλαιάτατον,
ᾧ χύτο νύμφης κρυπταδὴ φιλότῃ κασιγνήτων ὑμεναίων

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 32, line 45

ἧ ῥα πάλιν κοτέουσα κορύσσει οἶνοπι Βάκχῳ, καὶ ποθέεις Ἴνδοισιν ὑπερφιάλοισιν ἀρήξαι;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 32, line 49

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ἔννεπε· καὶ γελῶντι νόῳ πολυμήχανος Ἥρη ζηλομανὴς ἀγόρευε παραιφαιμένη παρακοίτην· “Ζεῦ πάτερ, ἄλλος ἔχει με φίλος δρόμος· οὐ γὰρ ἰκάνω ἄρεος Ἰνδάοιο καὶ Ἰνδοφόνου Διονύσου ἀλλοτρίας μεθέπουσα μεληδόνας, ἀντολὴς δὲ γείτονας Ἡελίοιο μετέρχομαι αἵθοπας αὐλὰς σπερχομένη· πτερόεις γὰρ Ἔρως παρὰ Τηθύος ὕδαρ Ὀκεανηιάδος Ῥοδόπης δεδονημένος οἴστρῳ συζυγίην ἀπέειπε· καὶ ἔπλετο κόσμος ἀλήτης, καὶ βίος ἀχρήστος ἀποικομένων ὑμεναίων· τοῦτον ἐγὼ καλέουσα παλίνδρομος ἐνθάδε βαίνω· οἶσθα γάρ, ὡς Ζυγίη κικλήσκομαι, ὅττι καὶ αὐτῆς παῖδες ἐμαὶ κρατέουσι τελεσσιγόνου τοκετοῖο.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 32, line 61

τοῖον ἔπος βοῶσαν ἀμείβετο θερμὸς ἀκοίτης· “νύμφα φίλη, λίπε δῆριν· ἐμὸς Διόνυσος ἀγῆνωρ ἀμῶν προθέλυμνον ἀβακχεύτων γένος Ἰνδῶν χαιρέτω· ἀμφοτέρους δὲ γαμήλια λέκτρα δεχέσθω· οὐ γὰρ ἐπιχθονίης ἀλόχου πόθος οὐδὲ θεαίνης θυμὸν ἐμὸν θελκτῆρι τόσον βακχεύσατο κεστῶ .

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 32, line 161

ὥς δ' ὅτε χειμερίων ῥοθίων μυκῶμενος ὀλκῶ ἄπλοος ἀντιπόροις βακχεύετο πόντος ἀέλλαις, κύμασιν ἡλιβάτοισι κατάρρυτον ἥερα νείφων, πρυμναίους δὲ κάλῳας ἀφειδέι κύματος ὀρμῇ λαίλαπες ἐρρήξαντο, καὶ ἀσθματι λαῖφος ἐλίξας ἰστὸν ἀνεχλαίνωσε κεκυφότα λάβρος ἀήτης λαίφεσιν ἀμφίζωστον, ἐδοχμάθη δὲ κεραίη, ναῦται δ' ἀσχαλῶντες ἐπέτρεπον ἐλπίδα πόντῳ· ὡς τότε Βάκχον ὄρινεν ὅλον στρατὸν Ἰνδικὸς ἄρης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 32, line 169

ἐνθα τις οὐ κατὰ κόσμον ἦν ἔρις, οὐ κλόνος ἀνδρῶν ἴσος ἦν, οὐ δῆρις ὁμοίος· ἀκάματος γὰρ νόστιμος ἐγρεκῦδοιμος ἐπέβρεμε χάλκεος Ἄρης, Μωδαίου προμάχοιο φέρων τύπον, ὃς πλεόν ἄλλων ὑσμίνης ἀκόρητος ἀτερπεί τέρπετο λύθρῳ, ᾧ πλεόν εἰλαπίνης φόνος εὐαδεν· ἐν δὲ βοείῃ, οἶά τε Γοργείων πλοκάμων ὀφιδέας ὀλκούς, γραπτὸν εὐσμήριγγος ἔχων ἵνδαλμα Μεδούσης Δηριάδῃ πέλεν ἴσος, ὁμόχρους· οὗ τότε μορφῆς ἐγχεδανῆς ἀγέλαστον ἔχων μίμημα προσώπου, καὶ σκολιὴν πλοκαμίδα φέρων καὶ σῆμα βοείης, αἰνομανὴς πεφόρητο μόθῳ λαοσσόος Ἄρης, καὶ προμάχους θάρσυνεν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 32, line 175

ὁμογλώσσῳ δ' ἀλαλητῶ Βάκχου μὴ παρεόντος ἀταρβέες ἔβρεμον Ἰνδοί, καὶ κτύπον ἔννε-
ἀχιλον ἐπέκτυπε λοίγιος Ἄρης, φοιταλέην συνάεθλον ἔχων Ἑριν· ἐν δὲ κυδοιμοῖς στήσε Φόβον καὶ Δεῖμον ὀπάονα Δηριάδῃος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 32, line 275

καὶ βλοσυροὶ Κύκλωπες ἀναιδέες εὐποδὶ ταρσῶ εἰς φόβον ἠπείγοντο τεθηπότες, οἷς ἅμα φεύγων Ἰνδῶν ἀδόνητος ἐλίμπανε Φαῦνος ἐνυῶ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 32, line 287

ἀπὸ σκοπέλοιο δὲ Νύμφαι Νηιάδες βυθίοισιν ἐνεκρύπτοντο μελάθροις· αἱ μὲν Ἰδασπιάδεσσιν ὁμήλυδες, αἱ δὲ φυγούσαι Ἰνδὸν ἐς ἀγχικέλευθον ἐναυλίζοντο ῥέεθροις, ἄλλαι Σιδριάδεσσιν ὁμόστολοι, αἱ δ' ἐνὶ Γάγγῃ λύθρον ἀπεσμήξαντο νεόσσυτον, ἃς τότε πολλὰς ἐρχομένας ἀγελή-

6.1. NONNUS

δὸν ἐς ὑδατόεντας ἐναύλους Νηιάς ἀργυρόπεζα φιλοξείνῳ πυλεῶνι δέξατο κυματόεντος ἐς αὐλία παρθενεῶνος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 8

καὶ Χάρις ὠκυπέδιλος Ἐρυθραίῳ παρὰ κήπῳ φυταλίῃν εὐοδμον ἀμεργομένη δονακῆων, ὄφρα πυριπνεύστων Παφίων ἐντοσθε λεβήτων Ἀσσυρίου μίξασα χυτὰς ὠδῖνας ἐλαίου ἀνθεσιν Ἰνδῶοισι μύρον τεύξειεν ἀνάσσει, ὅππότε παντοῖν δροσερὴν ἐδρέφατο ποίην, χῶρον ὅλον θηεῖτο· καὶ ἀγχιπύρῳ παρὰ λόχη λύσαν ἐοῦ γενετῆρος ὀπιπεύουσα Λυαίου ἀχρυμένη δάκρυσε, φιλοστόργῳ δὲ μενοιῇ πενθαλέοις ὀνύχεσσιν ἕως ἐχάραξε παρειάς· καὶ Σατύρους σκοπίαζεν ὑποπτήσσοντας ἐνῶ, Κωδῶνῃ δ' ἐνόησε μινυνθαδὴν τε Γιγαρτῶ κεκλιμένας ἐφύπερθεν ἀτυμβεύτοιο κονίης· Χαλκομέδην δ' ἐλέαιρε θυελλήεντι πεδίλῳ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 159

τοῦτ' ἔμε μᾶλλον ὄρινεν, ὅτι βροτοειδὲ μορφῇ Ἄρης ἐγρεκύδοιμος ἔχων συνάεθλον Ἐνῶ, ἀρχαίης φιλότῃτος ἀφειδήσας Ἀφροδίτης, νεύμασιν Ἡραίοισιν ἐθωρήχθη Διονύσῳ, Ἰνδῶν βασιλῆϊ σνέμπορος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 167

ἀλλὰ μολῶν ἀκίχῃτος ἑώιον εἰς κλίμα γαίης Ἰνδῶν παρὰ πέζαν, ὅπῃ θεράπαινα Λυαίου ἔστι τις ἐν Βάκχῃσιν, ὑπέρτερος ἥλικος ἥβης, οὐνομα Χαλκομέδην φιλοπάρθενος – εἰ δὲ κεν ἄμφοι Χαλκομέδην καὶ Κύπριν ἔσω Λιβάνοιο νοήσης, οὐ δύνασαι, φίλε κοῦρε, διακρίνειν Ἀφροδίτην – · κεῖθι μολῶν χραίσμῃσιν ἐρημονόμῳ Διονύσῳ, Μορρέα τοξεύσας ἐπὶ κάλλει Χαλκομεδείης· σείο δὲ τοξοσύνης γέρας ἄξιον ἐγγυαλίξω Λήμνιον εὐποίητον ἐγὼ στέφος, εἵκελον αἵγλαις Ἡελίου φλογεροῖο· σὺ δὲ γλυκὺν ἰὸν ἰάλλων

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 188

καὶ ταχὺς Ἰνδῶοιο μολῶν κατὰ μέσσον ὁμίλου τόξον ἐὼν στήριξεν ἐπ' αὐχένι Χαλκομεδείης· καὶ βέλος ἰθύνων ῥοδῆς περὶ κύκλα παρειῆς Μορρέος εἰς φρένα πέμψεν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 194

ἐρετμώσας δὲ πορείῃν νηχομένων πτερύγων ἐτερόζυγι σύνδρομος ὀλκῶ πατρώους ἀνέβαινεν ἐς ἀστερόεντας ὀχῆας, καλλείφας πυρόεντι πεπαρμένον Ἰνδὸν οἶστῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 201

ἡ δὲ δολοφρονέουσα παρήπαφεν ὄρχαμον Ἰνδῶν, οἷα περ ἱμείρουσα, πόθου δ' ἀπεμάξατο κοῦρη ψευδαλέον μίμημα· καὶ αἰθέρος ἤπτετο Μορρέος, ἐλπίδι μαφιδίῃ πεφορημένος· ἐν κραδίῃ γὰρ παρθενικὴν ἐδόκησεν ἔχειν βέλος ἴσον ἐρώτων, κοῦφος ἀνὴρ, ὅτι παῖδα σαόφρονα δίξετο θέλγειν κυανέοις μελέεσσι, καὶ οὐκ ἐμνήσατο μορφῆς.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 256

... εἰς Φρυγίῃν Διόνυσος ὅπασα τ' Δηριαδῇ δουλοσύνης ἐρύσειεν ὑπὸ ζυγόν, ἀντὶ δὲ πάτρης Μαιονίῃ πολυόλβος ἐὼν ναέτην με δεχέσθω· Τμῶλον ἔχειν ἐθέλω μετὰ Καύκασον· ἀρχέγονον δὲ Ἰνδὸν ἀπορρήφας ἐμὸν οὐνομα Λυδὸς ἀκούσω, αὐχένα δούλον Ἐρωτος ὑποκλίνων Διονύσῳ· Πακτωλὸς φερέτω με· τί μοι πατρώος Ὑδάσπης;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 269

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ἤδη γὰρ σκίοεντι θορῶν αὐτόχθονι παλμῷ ἄψοφος ἀννεφέλοιο μελαίνετο κῶνος ὁμίχλης, καὶ τρομερῇ ξύμπαντα μιῇ ξύνωσε σιωπῇ· οὐδὲ τις ἵχνος ἔπειγε δι' ἄστεος Ἰνδὸς ὁδίτης, οὐδὲ γυνὴ χερνῆτις ἐθήμονος ἥπτετο τέχνης, οὐδὲ οἱ ἐν παλάμησι φιληλακάτῳ παρὰ λύχῳ κύκλον ἐς αὐτοέλικτον ἰὼν ἀτρακτος ἀλήτης ἄστατος ὄρχηστῆρι τιταίνετο νήματος ὀλκῷ, ἀλλὰ κάρηβαρέουσα φιλαγρύπνῳ παρὰ λύχῳ εὔδε γυνὴ ταλαεργός· ὅφιν δὲ τις ἥσυχος ἔρπων κείτο πεσών, κεφαλῇ † δὲ λύων παλινάγρετον οὐρὴν γαστέρος ὑπναλῆς ἀνεσεύρασεν ὀλκὸν ἀκάνθης· καὶ τις ἀερσιπόδης ἐλέφας παρὰ γείτονι λόχμῃ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 307

οἶδα, πόθεν, Κυθήρεια, χολῶεαι νιάσιν Ἰνδῶν· γείτονας Ἡελίοιο τεοὶ κλονέουσιν οἰστοί· οὐ πῶ μνηστὶν ὄλεσσας ἐλεγχομένων σέο δεσμῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 33, line 363

γινεό μοι δολόεσσα φερέσβιος· αὐτοφόνος γὰρ αἶ κε θάνης ἀδίδακτος ἀνυμφεύτων ὑμεναίων, Βασσαρίδων στίχα πᾶσαν ἀνάρσιος Ἰνδὸς ὀλέσσει· ἀλλὰ μιν ἡπερόπευε, καὶ ἐκ θανάτοιο σώσεις σὴν στρατιὴν φύξηλιν ἱμασσομένου Διόνυσου, ψευδομένη Παφίης κενεὸν πόθον· εἰ δὲ σε Μορρεὺς εἰς εὐνὴν ἐρύσειεν ἀναινομένην ὑμεναίους, οὐ χατέεις ἐπὶ Κύπριν ἀρηγόνος· ὑμέτερης γὰρ φρουρὸν ἔχεις ἀπέλεθρον ὅφιν χραισιμήτορα μήτρης· ὑμέτερον δὲ δράκοντα λαβὼν μετὰ φύλοπιν Ἰνδῶν στηρίζει Διόνυσος ἐν ἀστεροφεγγεὶ κύκλῳ, ἄγγελον οὐ λήγοντα τεῆς ἀλύτῳ κορείης,

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 34, line 125

ἀλλ' ὅτε φοινίσσοντι σέλας πέμπουσα προσώπῳ ὑσμίνης προκέλευθος ἐκηβόλος ἄνθορεν Ἡώς, Ἰνδῶν ἐκόρυσε γονὴν λαοσσόος Ἄρης· καὶ τότε θωρηχθέντες ἐντροχάλων ἐπὶ δίφρων ἄρματι Δηριάδαο συνήλυδες ἔρρεον Ἰνδοί.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 34, line 162

ἔνθα διατμήξας Χαρίτων ἱνδαλμα προσώπου Βασσαρίδας ζώγρησεν ἀνάλκιδας ἑνδεκα Μορρεὺς, ἃς μετὰ Χαλκομέδην ἐκρίνατο· Μαιναλίδων δὲ χεῖρας ὀπισθοτόνους ἀλύτῳ σφηκώσατο δεσμῷ, καὶ στίχα λυσιέθειραν ἐπὶ ζυγὰ δούλια σύρων ληίδας ἀμφιπόλους ἐκυρῷ πόρε Δηριαδῇ, ἔδνον ἐῆς ἀλόχοιο τὸ δεύτερον, ἧς χάριν εὐνῆς νυμφοκόμον μόθον εἶχεν ἀερσιλόφῳ παρὰ Ταύρῳ, ὅππότε Δηριάδαο νέην βασιληίδα κούρην, ἥλικα Χειροβίην, ζυγίῳ σφηκώσατο δεσμῷ·

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 34, line 172

Βασσαρίδας ζώγρησεν ἀνάλκιδας ἑνδεκα Μορρεὺς, ἃς μετὰ Χαλκομέδην ἐκρίνατο· Μαιναλίδων δὲ χεῖρας ὀπισθοτόνους ἀλύτῳ σφηκώσατο δεσμῷ, καὶ στίχα λυσιέθειραν ἐπὶ ζυγὰ δούλια σύρων ληίδας ἀμφιπόλους ἐκυρῷ πόρε Δηριαδῇ, ἔδνον ἐῆς ἀλόχοιο τὸ δεύτερον, ἧς χάριν εὐνῆς νυμφοκόμον μόθον εἶχεν ἀερσιλόφῳ παρὰ Ταύρῳ, ὅππότε Δηριάδαο νέην βασιληίδα κούρην, ἥλικα Χειροβίην, ζυγίῳ σφηκώσατο δεσμῷ· οὐ γὰρ δῶρον ἔδεκτο γαμήλιον ὄρχαμος Ἰνδῶν παιδὸς ἐῆς, οὐ χρυσὸν ἀπέριτον, οὐ λίθον ἄλμης μαρμαρέην, ἀγέλας δὲ βοῶν καὶ πῶεα μῆλων Δηριάδης ἀπέειπε, καὶ ἐγρεμόθοισι μαχηταῖς θυγατέρων ἔζευξεν ἀδαροδόκους ὑμεναίους, γαμβρὸν ἔχων Μορρῆα καὶ ἐννεάπηχυν Ὀρόντην· καὶ διδύμοις προμάχοισιν ἐὼν νύμφευσεν

6.1. NONNUS

γενέθλην, Μορρεί Χειροβίην καὶ Πρωτονόειαν Ὀρόντη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 34, line 182

οὐ γὰρ ἐπιχθονίοισιν ὁμοίος ἔπλετο Μορρεὺς, ἀλλὰ Γίγαντείων μελέων ὑφ' αὐχενὶ μορφῇ Ἰνδῶν Γηγενέων μιμήσατο πάτριον ἀλκὴν, ἡλιβάτου Τυφῶνος ἔχων αὐτόχθονα φύτλην, εὖτε πυριτρεφέων Ἀρίμων παρὰ γείτονι πέτρῃ σύγγγονον ἠγορέην ἐπεδείκνυε μάρτυρι Κύνῳ, ἔδνα φέρων θαλάμων Κιλίκων ἰδρῶτας ἀέθλων, νυμφίος ἀκτῆμων, ἀρετῇ δ' ἐκτῆσατο νύμφην, ὅπ- ποτε Μορρηνοῖο γάμων μνηστῆρι σιδήρῳ Ἀσσυρίῃ γόνυ κάμψε, καὶ εἰς ζυγὰ Δηριαδῆος αὐχένα πετρήεντα Κίλιξ δοχμῶσατο Ταῦρος, καὶ θρασὺς ὤκλασε Κύνδος, ὅθεν Κιλίκων ἐνὶ γαίῃ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 34, line 198

ὥς φαμένον Μορρηὸς ἀμείβετο κοῖρανος Ἰνδῶν· “Χειροβίην ἀνάεδνον ἔχων, κορυθαίολε Μορ- ρεῦ, ἄξιά μοι πόρες ἔδνα φερεσσακέων ὑμεναίων, ἄστυα δουλώσας Κιλίκων ὑψηλὸν νίκη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 34, line 208

μοῦνον ἐμοὶ πεφύλαξο δορικτήτης πόθον εὐνῆς, μὴ σε γυναιμανέεσσιν ἴδω πανομοῖον Ἰνδοῖς· ὄμματα μὴ σκοπίαζε καὶ ἄργυρον αὐχένα Βάκχης, μὴ ποθέων τελέσειας ἐμὴν ζηλήμονα κούρην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 34, line 236

ὑπίπτεν δὲ αἱ μὲν ἐν γλυφάνοιο παρὰ προπύλαια μελάρθρου ἀγχιονίῳ θλίβοντο περίπλοκον αὐχένα δεσμῶ· ἄλλαις θερμὸν ὅπασσε μόνον πυρόεντι ξέεθρῳ· αἱ δὲ πεδοσκαφέεσσιν ἐτυμβεύ- οντο βερέθροισι φρειάτος ἐν γυάλοισιν, ὅπῃ βυθίαν ἀπὸ κόλπων χερσὶν ἀμοιβαίαις βεβημένον ἔλκεται ὕδωρ· καὶ τις ἔσω διεροῖο βαθυνομένου κενεῶνος ἡμιθανῆς ἀτίνακτος ἀμοιβαίῃ φάτο φωνῇ· “ἔκλυον, ὥς Ἰνδοῖσι θεὸς πέλε γαῖα καὶ ὕδωρ· οὐδὲ μάτην ποτὲ τοῦτο φατίζεται· ἀμ- φότεροι γὰρ εἰς ἐμὲ θωρήχθησαν ὁμόφρονες, εἰμὶ δὲ μέσση καὶ χθονίου θανάτοιο καὶ ὕδατόεντος ὀλέθρου, καὶ μόνον ἐγγυὺς ἔχω διδυμίζυγον· ἱλυοῖς γὰρ ξείνος δεσμὸς ἔχει με, καὶ οὐκέτι ταρσὸν αἶψα, ὕγρὰ δὲ ξιζώσασα πεπηγότα γούνατα πηλῶ ἴσταμαι ἀστυφέλικτος ἐγὼ Μοίρησιν ἐτοίμη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 34, line 328

δέξο με σοῖς Σατύροισιν ὁμόστολον· ἐν πολέμοις γὰρ Ἰνδοὶ ἀριστεύουσιν, ἕως ἔτι χεῖρα κορύσσω.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 2

Δηριάδης δ' ἀπέλεθρος ἐμάρνατο θυιάδι χάρμη, καὶ Βρομίου προπόλοισιν ἐπέχραε κοῖρανος Ἰνδῶν, πῇ μὲν ἀκοντίζων δολιχῶ δορί, πῇ δὲ δαΐζων ἄορι κωπήεντι, χαραδραίοις δὲ βελέμοις τοξεύων πεφόρητο καὶ ὀξυτέροισιν ὀιστοῖς.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 130

οὐκέτι Μαιονίης ἐπιβήσομαι· οὐδ' ἐνὶ παστῶ δέξομαι, ἣν ἐθέλης, μετὰ Μορρέα Βάκχον ἀκοίτην· ἔσσομαι Ἰνδῶν καὶ ἐγὼ, φίλος· ἀντὶ δὲ Λυδῆς κυδαίνω θυέεσσιν Ἐρυθραίην Ἀφροδίτην κρυπταδίῃ Μορρηὸς ὁμεινέτις· ἐν δὲ κυδοιμοῖς Ἰνδὸς ἀνὴρ ἐχέτω με συναιχμάλουσαν ἀκοίτη· εἰς σὲ γὰρ ἴσα βέλεμνα καὶ εἰς ἐμὲ διπλόα πέμπων Ἴμερος ἀμφοτέροισι μίαν ξύνωσεν ἀνάγκην, εἰς κραδίην Μορρῇ καὶ εἰς φρένα Χαλκομεδείῃ.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 151

κούρην Δηριαδῆος ἀναίνομαι· αὐτὸς ἐλάσσω ἐκ μεγάρων ἀέκουσαν ἐμὴν ζηλήμονα νύμφην· οὐκέτι Βασσαρίδεσσι κορύσσομαι, εἴ με κελεύεις, ἀλλὰ φίλοις ναέτησι μαχέσσομαι· Ἴνδὸν ὀλέσσω οἶνοπα θύρσον ἔχων, οὐ χάλκεον ἔγχος αἰείρων· ῥίψω δ' ἔντεα πάντα καὶ ἄνθεα λεπτὰ τινάξω, ὑμετέρῳ βασιλῇ συναιχμάζων Διονύσῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 190

ἄγχι δὲ πόντου καλλείφας ἀκόμιστον ἐπ' αἰγιαλοῖο χιτῶνα θαλπόμενος γλυκερῇσι μεληδόσι λούσατο Μορρεῦς, γυμνὸς ἑὼν· ψυχρῇ δὲ δέμας φαίδρυνε θαλάσση, θερμὸν ἔχων Παφίης ὀλίγον βέλος· ἐν δὲ ῥεέθροις Ἰνδῶν ἰκέτευεν Ἐρυθραῖν Ἀφροδίτην, εἰσαΐων, ὅτι Κύπρις ἀπόσπορος ἔστι θαλάσσης· λουσάμενος δ' ἀνέβαινε μέλας πάλιν· εἶχε δὲ μορφὴν, ὡς φύσις ἐβλάστησε, καὶ ἀνέρος οὐ δέμας ἄλμη, οὐ χροὴν μετὰμειψεν, ἐρευθαλέη περ ἑοῦσα.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 228

καὶ γὰρ ἀπ' Οὐλύμποιο θορῶν ὠκύπτερος Ἑρμῆς, ἀντίτυπον Βρομίοιο φέρων ἵνδαλμα προσώπου, Βακχεῖν ἐκάλεσεν ὅλην στίχα μύστιδι φωνῇ· δαιμονίην δὲ γυναῖκες ὅτ' ἔκλυον εὖιον ἡχώ, εἰς ἓνα χῶρον ἵκανον· ἀπὸ τριόδων δὲ κομίζων Μαιναλίδων ὅλον ἔθνος ἐς ἀγκύλα κύκλα κελεύθου ἤγαγεν ὠκυπέδιλος, ἕως σχεδὸν ἦε πύργων· καὶ φυλάκων στοιχηδὸν ἀκοιμήτοισιν ὅπωπαῖς νήδυμον ὕπνον ἔχευεν ἐῆ πανθηλγεί ῥάβδῳ φώριος Ἑρμείας, πρόμος ἔννυχος· ἔξαπίνης δὲ Ἰνδοῖς μὲν ζόφος ἦεν, ἀθηήτοισι δὲ Βάκχαις

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 268

ἔγρετο δὲ Ζεὺς Καυκάσου ἐν κορυφῇσιν ἀπορρίψας πτερὸν Ἴπνου· καὶ δόλον ἠπεροπῆα μαθὼν κακοεργέος Ἥρης Σιληνοῦς ἐδόκευε πεφυζότας, ἔδρακε Βάκχας σπερχομένας ἀγγελῆδὸν ἀπὸ τριόδων, ἀπὸ πύργων, καὶ Σατύρους κείροντα καὶ ἀμῶντα γυναῖκας Δηριάδην ἐνόησεν ὀπίσπερον, ὄρχαμον Ἰνδῶν, υἷα δ' ἐν δαπέδῳ κατακείμενον· ἀμφὶ δὲ νύμφαι ἐγγυὲς ἔσαν στεφανηδόν· ὁ δὲ στροφάλιγγι κονίης κεῖτο καρηβαρέων, ὀλιγοδρανὲς ἄσθμα τιταίνων, ἀφρὸν ἀκοντίζων χιονώδεα, μάρτυρα λύσεως.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 283

οὐδὲ καὶ αὐτὴ σὸν κότον ἐπρήνυνεν ἀτέρμονα νυμφιδίῃ φλόξ, λέκτρα διασκεδάσασα Διοβλήτοιο Θυώνης; Ἰνδοφόνῳ τέο μέχρ' ἐπιβρίξεις Διονύσῳ;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 297

δήσω σὰς παλάμας χρυσέῳ πάλιν ἡθάδι δεσμῷ· Ἄρεα δ' ἄρραγέεσσιν ἀλυκτοπέδῃσι πεδήσω καὶ μιν ἀναλθήτοισιν ὅλον πληγῇσιν ἱμάσσω, εἰς τροχὸν αὐτοκύλιστον ὁμόδρομον, οἷος ἀλήτης Τάνταλος ἡρόφοιτος ἢ Ἰξίῳ μετανάστης, εἰσόκε νικήσειεν ἐμὸς πάις υἷας Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 301

ἀλλὰ τεῷ Κρονίῳ χαρίζαι, αἶ' κεν ἐλάσσης λύσσαν ἐριπτοίητον ἱμασσομένου Διονύσου· μηδὲ λίπης κοτέοντα τεὸν πόσιν, ἀλλὰ μολοῦσα Ἰνδῶς ἀκίχητος ὑπὸ κλέτας εὐβοτον ὕλης Βάκχῳ μαζὸν ὄρεζον ἐμὴν μετὰ μητέρα Ῥεῖν, ὅφρα τελειότεροισιν εἰς στομάτεσσιν ἀφύσση σὴν ἱερὴν ῥαθάμιγγα προηγῆταιραν Οὐλύμπου, καὶ βατὸν αἰθέρα τεῦξον ἐπιχθονίῳ Διονύσῳ· ὑμετέρῳ δὲ γάλακτι δέμας χρίσασα Λυαίου σβέσσον ἀμερσινόοιο δυσειδέα λύματα νούσου.

6.1. NONNUS

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 352

Ἴσος ἐμῷ γενετῆρι φανήσομαι· ἐν πολέμοις γὰρ Γηγενέας Τιτῆνας ἐμὸς νίκησε Κρονίων,
νικήσω καὶ ἔγωγε χαμαιγενέων γένος Ἴνδων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 35, line 354

σήμερον ἀθρήσητε κορυμβοφόρον μετὰ νίκην Δηριάδην ἰκέτην βραδυπειθέα, καὶ χορὸν
Ἴνδων αὐχένα δοχμώσαντα γαλιναίῳ Διονύσῳ, καὶ ποταμὸν μεθέποντα μεθυσφαλὲς Εὖιον
ὔδωρ· ἀντιβίους δ' ὄψεσθε παρὰ κρητῆρι Λυαίου ξανθὸν ὔδωρ πίνοντας ἀπ' οἰνοπόρου ποτα-
μοῖο, καὶ θρασὺν Ἴνδον ἀνακτα κατὰσχετον οἶνοπι κισσῷ, ἰλλόμενον πετάλοισι καὶ ἀμπελόεντι
κορύμβω, εἴκελα δεσμὰ φέροντα, τὰ περ μετὰ κύματα λύσσης Νυσιάδες βοόωσι θεοῦδᾶες εἰς-
εἴτι νύμφαι, ἀλλῆς ἡμετέρης ἐπιμάρτυρες, ὅππότε κισσοῦ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 141

καὶ τότε λυσσῆεις παλινάγρετον ἄμφεπε χάρμην Δηριάδης βαρύμηνις, ἀπήμονας ὡς ἴδε
Βάκχας· καὶ μόθον ἀρτεμέοντος ὀπιπέων Διονύσου εἰς ἐνοπὴν οἷστροσε πεφυζότας ἡγεμονῆας·
καὶ ξυνὴν πρυλέεσσι καὶ ἱππῆεσσιν ἀπειλὴν βάρβαρον ἐσμαράγησε βαρυφθόγγων ἀπὸ λαι-
μῶν· “σήμερον ἢ Διόνυσον ἐγὼ πλοκαμῖδος ἐρύσσω, ἢ μόθος Βακχεῖος αἰστώσει γένος Ἴνδων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 157

θαρσαλέοι δὲ γένεσθε, καὶ Ἴνδῶν μετὰ χάρμην νίκην κυδιάνειραν αἰείσατε Δηριάδης, ὄφρα
τις ἐρρίγησι καὶ ὀφιγόνων στρατὸς ἀνδρῶν Ἴνδοις Γηγενέεσσιν ἀνικῆτοισιν ἐρίξειν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 174

θυρσομανῆς Διόνυσος ἐρημονόμων στίχα θηρῶν εἰς ἐνοπὴν βάκχευεν· ὀριτρεφέες δὲ μαχηταὶ
δαιμονίῃ βρυχηδὸν ἐβακχεύθησαν ἰμάσθλῃ· καὶ πολὺς ἐκ στομάτων ἐκορύσσετο μαινόμενος
θῆρ ὠμοβόρων τε δράκοντες ἀποπτύοντες ὀδόντων τηλεβόλους πόμπευον ἐς ἡέρα πίδακας ἰοῦ
χάσματι συρίζοντι μεμυκότες ἀνθερεῶνος, λοξὰ παρασκαίροντες· ἐς ἀντιβίους δὲ θορόντες αὐτό-
ματον σκοπὸν εἶχον ἐχιδνήεντες οἰστοί· καὶ σκολιαῖς ἐλίκεσσιν ἐμιτρώθη δέμας Ἴνδων ἰλλομένων,
βροτέους δὲ πόδας σφηκώσατο σειρὴ εἰς δρόμον αἰσσονταῖς.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 197

καὶ πολὺς ἐσμὸς ἐπιπτε, βαρυσμαράγων ἀπὸ λαιμῶν φρικτὸν ἐρημονόμων αἰών βρύχημα
λεόντων· καὶ τις ἐνικήθη τρομέων μυκήματα ταύρου, καὶ βοὸς εἰσορόων βλοσυρῆς γλωχίνα
κεραίης λοξὸν ἀκοντίζουσαν ἐς ἡέρα· φοιταλέος δὲ εἰς φόβον ἄλλος ὄρουσεν ὑποφρίσσω γένυν
ἄρκτου· θηρείαις δ' ἰαχῇσιν ὁμόκτυπος ἄλλος ἐπ' ἄλλῳ Πανὸς ἀνικῆτοιο κύων συνυλάκτεε
λαιμῷ, καὶ μόθον ὑλακόμωρον ἐδείδεσαν αἰθοπες Ἴνδοί.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 253

Βακχεῖς κατὰ μέσσον ἐμαίνετο δημοτῆτος· Βασσαρίδων δὲ φάλαγγα μετὰ κλόνον ἤθελεν
ἔλκειν εἰς εὐνὴν ἀνάεδνον ἀναγκαίων ὑμεναίων, καὶ κενεῇ πολέμιζεν ἐπ' ἐλπίδι, τηλικὸς ἀνὴρ,
οἷος ἦν θρασὺς Ὡτος ἀνέμβατον αἰθέρα βαίνων, ἀγνὸν ἀνυμφεύτου ποθέων λέχος Ἰοχεαίρης,
οἷος ἦν φιλέων καθαρῆς ὑμέναιον Ἀθήνης ὕφινεφῆς ἐς Ὀλυμπον ἀκοντίζων Ἐφιάλτης· Κολλή-
της πέλε τοῖος ὑπέρτερος, αἰθέρι γείτων, Γηγενέος προγόνοιο θεημάχον αἷμα κομίζων, Ἴνδοῦ

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

πρωτογόνοιο· καὶ ἄρκιος ἔπλετο μορφῇ δῆσαι θοῦρον Ἄρηα μεθ' υἱέας Ἴφιμεδείης· ἀλλὰ τόσον περ ἔοντα γυνὴ κτάνεν ὀξεί πέτρῳ, Βακχιάδος Χαρόπεια κυβερνήτειρα χορείης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 283

καὶ κοτέων ἐτάραιοι δεδουπότος ἀρχὸς Ἀβάντων Καρμίνων βασιλῆα κατεπρήνιξε Μελισσεύς, Κύλλαρον, ὀξυόεντι κατ' αὐχένος ἄορι τύφας, Λωγασίδην, ὃς μοῦνος, ἐπεὶ σοφὸς ἔσκε μαχητής, Δηριάδῃ μεμέλητο δοριθρασέων πλέον Ἰνδῶν .

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 373

καὶ τόσον Ἰνδὸν ἀνακτα, τὸν οὐ κτάνεν ἄσπετος αἰχμή, ἀμπελόεις νίκησεν ἔλιξ πρόμος· ἀμφιέπων δὲ ἡμερίδων ὄρπηκι κατάσχετον ἀνθερεῶνα πνίγετο Δηριάδης σκολιῷ τεθλιμμένος ὀλκῷ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 416

ἐπασχαλῶν δὲ κυδοιμῷ μαντοσύνης Διόνυσος ἔης ἐμνήσατο Ῥεῖης, ὅττι τέλος πολέμοιο φανήσεται, ὅπποτε Βάκχοι εἰναλίην Ἰνδοῖσιν ἀναστήσωσιν ἐνυῶ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 424

.. εἰς ἀγορὴν ἐκάλεσσε μελαρρίνων γένος Ἰνδῶν Δηριάδης σκηπτουῆχος· ἐπειγομένῳ δὲ πεδίλῳ λαὸν ἀολλίζων ἐτερόθροον ἦε κῆρυξ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 427

αὐτίκα δ' ἠγερέθοντο πολυσπερέων στίχες Ἰνδῶν, ἐζόμενοι στοιχηδὸν ἀμοιβαίων ἐπὶ βάρθρων· λαοῖς δ' ἀγρομένοισιν ἀναξ ἀγορήσατο Μορρεύς· “ἴστε, φίλοι, τάχα πάντες, ἃ περ κάμον ὑφ' ὀπί Ταύρου, εἰσέκε γαῖα Κίλισσα καὶ Ἀσσυρίων γένος ἀνδρῶν αὐχένα δοῦλον ἔκαμψεν ὑπὸ ζυγὰ Δηριάδος· ἴστε καί, ὅσσα τέλεσσα καταιχιμάζων Διονύσου, μαρνάμενος Σατύροισι καὶ ἀμνητῆρι σιδήρῳ τέμνων ἐχθρὰ κάρηνα βοοκραίριοι γενέθλης, ὅπποτε Βασσαρίδων πεπεδημένον ἐσμὸν ἐρύσσας

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 450

ἢ πότε λυσσῶων ὀρεσίδρομος ὑψίκερως Πὰν θηγαλέοις ὀνύχεσσι διατμήξει νέας Ἰνδῶν;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 36, line 464

ἀλλὰ, φίλοι, μάρνασθε πεποιοῦντες· ἀντιβίων δὲ μή τις ὑποπτήσσειεν ὀπιπεύων στίχα νηῶν Βακχιάδων· Ἰνδοὶ γὰρ ἐθήμονές εἰσι κυδοιμοῦ εἰναλίου, καὶ μᾶλλον ἀριστεύουσι θαλάσση ἢ χθονὶ δηριόωντες.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 37, line 1

Ὡς οἱ μὲν φιλότῃτι μεμηλότες ἐμφρονες Ἰνδοί, Βακχεῖν ἀνέμοισιν ἐπιτρέψαντες ἐνυῶ, ὁμῶς ἀκλαύτοις ἐταρχύσαντο θανόντας, οἷα βίου βροτέου γαῖηα δεσμὰ φυγόντας ψυχῆς πεμπομένης, ὅθεν ἤλυθε, κυκλάδι σειρῇ νύσσαν ἐς ἀρχαίην· στρατιὴ δ' ἀμπαύετο Βάκχου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 37, line 48

ἀμφὶ δὲ νεκρῷ Ἀστέριος Δικταῖος ἐπήγορον ἄορ ἐρύσσας Ἰνδοὺς κυανέους δυοκαίδεκα δειροτομήσας θῆκεν ἄλγων στεφανηδὸν ἐπασσυντέρῳ τινὶ κόσμῳ· ἐν δ' ἐτίθει μέλιτος καὶ ἀλείφατος ἀμφιφορῆας.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 37, line 102

6.1. NONNUS

καὶ τροχαλοὶ Κορύβαντες, ἐπεὶ λάχον ἔνδιον Ἴδης, τύμβον ἐτορνώσαντο· βαθυνομένων δὲ θεμέθλων νεκρὸν ἐταρχύσαντο πεδοσκαφέος διὰ κόλπου, Κρήτης γνήσιον αἶμα, μιῆς οἰκήτορα πάτρης, καὶ κόνιν ὀθνεῖν πυμάτην ἐπέχευαν Ὀφέλτη· καὶ τάφον αἰπυτέροισιν ἀνεστήσαντο δομαίοις, τοῖον ἐπιγράψαντες ἔπος νεοπενθέϊ τύμβῳ· ἑκρὸς Ἀρεστορίδης μινυῶριος ἐνθάδε κείται, Κνώσσιος, Ἰνδοφόνος, Βρομίου συνάεθλος, Ὀφέλτης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 37, line 115

ποικίλα δ' ἦεν ἄεθλα, λέβης, τρίπος, ἀσπίδες, ἵπποι, ἄργυρος, Ἰνδὰ μέταλλα, βόες, Πακτώλιος ἰλὺς.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 37, line 120

καὶ θεὸς ἱππῆεσσιν ἀέθλια θήκατο νίκης· πρῶτῳ μὲν θέτο τόξον Ἀμαζονίην τε φαρέτρην καὶ σάκος ἡμιτέλεστον Ἀρηιφίλην τε γυναῖκα, τὴν ποτε Θερμῶδοντος ἐπ' ὀφρύσι πελὸς ὀδεύων λουομένην ζώγρησε, καὶ ἤγαγεν εἰς πόλιν Ἰδῶν· δευτέρῳ ἵππον ἔθηκε Βορειάδι σύνδρομον αὖρη, ξανθοφυῆ, δολιχῆσι κατὰσκιον αὐχένα χαίταις, ἡμιτελὲς κύουσαν ἔτι βρέφος, ἧς ἔτι γαστήρ ἵππιον ὄγκον ἔχουσα γονῆς οἰδαίνετο φόρτῳ· καὶ τριτάτῳ θώρηκα, καὶ ἀσπίδα θῆκε τετάρτῳ· τὸν μὲν ἀριστοπόνος τεχνήσατο Λήμνιος ἄκμων ἀσκήσας χρυσέῳ δαιδάλματι, τῆς δ' ἐνὶ μέσσω ὀμφαλὸς ἀργυρέῳ τροχόεις ποικίλλετο κόσμῳ· πέμπτῳ δοιὰ τάλαντα, γέρας Πακτωλίδος ὄχθης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 37, line 486

αὐτὰρ ὁ πυγμαχίης χαροπῆς ἔστησεν ἀγῶνα· πρῶτῳ μὲν θέτο ταῦρον ἀπ' Ἰνδῶοιο βοαύλου δῶρον ἔχειν, ἑτέρῳ δὲ μελαρρίνων κτέρας Ἰδῶν βάρβαρον αἰολόνωτον ἄγων κατέθηκε βοεῖν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 37, line 545

ἐσσύμενος δὲ Ἰδῶν περιμέτρον ἀνῆρταζε βοεῖν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 37, line 751

καὶ φιλήν ἐπὶ δῆριν ἀκοντιστῆρας ἐπείγων Ἰνδικὰ Βάκχος ἄεθλα φέρων παρέθηκεν ἀγῶνι, διχθαδίην κνημίδα καὶ Ἰνδῶης λίθον ἄλμης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 37, line 778

ἐννεπεν· ἐργεμόθου δὲ λαβὼν πρεσβῆια νίκης Αἰακὸς αὐχῆεις χρυσέας κνημίδας αἶρων δῶκεν ἑὼ θεράποντι· καὶ ὕστερα δῶρα κομίζων Ἀστέριος κούφιζε δορικτήτην λίθον Ἰδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 38, line 10

Λῦτο δ' ἀγῶν· λαοὶ δὲ μετήιον ἔνδια λόχμης, καὶ σφετέραις κλισίῃσιν ὁμίλεον· ἀγρονόμοι δὲ Πᾶνες ἐναυλίζοντο χαραδραίοισι μελάθροισι, αὐτοπαγῇ ναίοντες ἐρημάδος ἄντρα λεαίνης ἐσπέραιοι· Σάτυροι δὲ δεδυκότες εἰς σπέος ἄρκτου θηγαλέοις ὀνύχεσσι καὶ οὐ τμητῆρι σιδήρῳ πετραίην ἐλάχειαν ἐκοιλαίνοντο χαμεύνην, εἰσόκεν ὄρθρος ἔλαμψε σελασφόρος, ἀρτιφανὲς δὲ ἀμφοτέροις ἀνέτελλε γαληναίης φάος Ἡοῦς, Ἰνδοῖς καὶ Σατύροισιν· ἐπεὶ τότε κυκλάδι νύσση Μυγδονίου πολέμοιο καὶ Ἰνδῶοιο κυδοιμοῦ ἀμβολίην ἐτάνυσεν ἑλὶξ χρόνος· οὐδὲ τις αὐτοῖς οὐ φόνος, οὐ τότε δῆρις· ἔκειτο δὲ τηλόθι χάρμης Βακχίας ἐξάεττος ἀραχνιώσα βοεῖν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 38, line 11

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

καὶ σφετέραις κλισίῃσιν ὁμίλειον· ἀγρονόμοι δὲ Πᾶνες ἐναυλίζοντο χαράδραίοισι μελάθροισι, αὐτοπαγὴ ναίοντες ἐρημάδος ἄντρα λεαίνης ἐσπέριοι· Σάτυροι δὲ δεδυκότες εἰς σπέος ἄρκτου θηγαλέοις ὀνύχεσσι καὶ οὐ τμητῇρι σιδήρῳ πετραίην ἐλάχειαν ἐκοιλαινόντο χαμεύνην, εἰσόκεν ὄρθρος ἔλαμψε σελασφόρος, ἀρτιφανὲς δὲ ἀμφοτέροις ἀνέτελλε γαλῆναιος φάος Ἡοῦς, Ἴνδοις καὶ Σατύροισιν· ἐπεὶ τότε κυκλάδι νύσση Μυγδονίου πολέμοιο καὶ Ἰνδῷοιο κυδοιμοῦ ἀμβολίην ἐτάνυσσεν ἑλιξ χρόνος· οὐδέ τις αὐτοῖς οὐ φόνος, οὐ τότε δῆρις· ἔκειτο δὲ τηλόθι χάρμης Βακχιάς ἐξαέτηρος ἀραχνιώσα βοεΐη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 38, line 48

καὶ Φρύγιον πολὺδριν ἀνείρετο μάντιν Ἐρεχθεύς, σύμβολα παπταίνων ὑπάτου Διός, εἰ πέλε χάρμης αἴσια δυσμενέεσσιν ἢ Ἰνδοφῶν Διονύσῳ, οὐτόσον ὑσμίνης ποθέων τέλος, ὅσπον ἀκοῦσαι μυστιπόλοισι ὄροισι μεμηλότα μῦθον Ὀλύμπου, καὶ στίχας ἀστραίων ἐλίκων καὶ κυκλάδα μῆνην, καὶ δύσιν ἡματίνην Φαεθοντίδος ἀμμορον αἴγλης κλεπτομένης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 38, line 80

καὶ τότε μουνωθέντι φιλοσκοπέλῳ Διονύσῳ σύγγονος οὐρανόθεν Διὸς ἄγγελος ἦλυθεν Ἑρμῆς, καὶ τινα μῦθον ἔειπε παρηγορέων ἐπὶ νίκη· “μὴ τρομέοις τόδε σῆμα, καὶ εἰ πέλεν ἡματὶ νύξ· τοῦτό σοι, ἄτρομε Βάκχε, πατὴρ ἀνέφηνε Κρονίων νίκης Ἰνδοφῶνιο προάγγελον· ἡελίῳ γὰρ δεῦτερον ἀστράπτοντι φεραιγέα Βάκχον εἰσκω, καὶ θρασὺν ὄρφναίῃ μελανόχροον Ἰνδὸν ὁμίχλῃ· αἰθέρι γὰρ τύπος οὗτος ὁμοίος· εὐφάεος δὲ ὡς ζόφος ἡμάλδυνε καλυπτομένης φάος Ἡοῦς, καὶ πάλιν ἀντέλλων πυριφεγγέος ὑφὸθι δίφρου Ἥλιος ζοφόμεσσαν ἀπτηκόντιζεν ὁμίχλην, οὕτω σὼν βλεφάρων μάλα τηλόθι καὶ σὺ τινάξας Ταρταρίης ζοφόμεσσαν Ἐρινύος ἀσκοπον ἀχλὺν ἀστράφεις κατ’ ἄρηα τὸ δεύτερον ὡς Ὑπερίων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 7

ὄφρα μὲν εἰσέτι Βάκχος ἀκοσμήτων χύσιν ἄστρον θάμβεε καὶ Φαέθοντα δεδουπότα, πῶς παρὰ Κελτοῖς Ἑσπερίῳ πυρίκαυτος ἐπωλίσθησε ξέεθρῳ, τόφρα δὲ νῆες ἵκανον ἐπήλυδες, αἱ ἐνὶ πόντῳ στοιχάδας ἰθύνοντες ἐς ἄρεα ναύμαχον Ἰνδῶν ἀκλύστῳ Ραδαμᾶνες ἐναυτίλλοντο θαλάσση, πόντον ἀμοιβαίῃσιν ἐπιρρήσοντες ἐρωαῖς ὑσμίνης ἐλατῆρες· ἐπειγομένῳ δὲ Λυαίῳ ὀλκάσιν ἀρτιτύποις ἐπεσύρισε πομπὸς ἀήτης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 21

καὶ στόλον ἀθρήσαντες ἀταρβέες ἔτρεμον Ἴνδοί, ἄρεα παπταίνοντες ἀλίκτυπον, ἄχρι καὶ αὐτοῦ γούνατα τολμήεντος ἐλύετο Δηριαδῆος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 25

ποιητῶ δὲ γέλῳτι γαλῆναιόιο προσώπου Ἰνδὸς ἀναξ ἐκέλευσε τριηκοσίῳ ἀπὸ νήσων τῆς ἐλεφαντοβότοιο παρὰ σφυρὰ δύσβατα γαίης λαὸν ἄγειν· καὶ κραιπνὸς ἐς ἀτραπὸν ἦιε κῆρυξ, ποσσὶ πολυγνάμπτουσιν ἀπὸ χθονὸς εἰς χθόνα βαίνων καὶ στόλος ὄξυς ἵκανε πολυσπερέων ἀπὸ νήσων κεκλωμένου βασιλῆος· ὁ δὲ θρασὺς αὐχένα τείνων, ὀλκάδας εὐπήληκας ἐς ἄρεα πόντιον ἔλκων, λαὸν ὅλον θάρσυνε, καὶ ὑφινὸφ φάτο φωνῇ· “ἄνερες, οὗς ἀτίταλλεν ἐμὸς μενέχαρμος Ὑδάσπης, ἄρτι πάλιν μάρνασθε πεποιθότες· αἰθόμενον δὲ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 45

6.1. NONNUS

εἰ γὰρ ἦν ῥόος οὗτος ἀπ' ἀλλοτρίου ποταμοῖο, μηδὲ πατὴρ ἐμὸς ἦεν ἀρήιος Ἰνδὸς Ἰθά-
σπης, καὶ κεν ἐγὼ τόδε χεῦμα χυτῆς ἐπλησα κονίης ὁδὴν βοτρύδεσσιν ἀμαλδύνων Διονύσου,
καὶ προχρὴν μεθύουσιν ἐμοῦ γενετῆρος ὀδεύων ποσσὶ κονιομένοισι διέτρεχον ἄβροχον ὕδωρ, οἷα
παρ' Ἀργείοισι φατίζεται, ὥς Ἐνοσίχθων ξηρὸν ὕδωρ ποίησε, καὶ αὐσταλέου ποταμοῖο Ἰναχίην
ἵππειος ὄνυξ ἐχάραξε κονίην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 80

καὶ προμάχοις Διόνυσος ἐκέλετο θυιάδι φωνῇ· “Ἄρεος ἄλκιμα τέκνα καὶ εὐθώρηκος Ἀθή-
νης, οἷς βίος ἔργα μόθοιο καὶ ἐλπίδες εἰσὶν ἀγῶνες, σπεύσατε καὶ κατὰ πόντον αἰστώσαι γένος
Ἰνδῶν, εἰναλίην τελέσαντες ἐπιχθονίην μετὰ νίκην.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 90

νόσφι φόβου μάρνασθε, Μιμαλλόνες· ὑγρομόθων γὰρ ἐλπίδες ἀντιβίων κενεαυχέες· εἰ δὲ
μογήσας φύλοπιν οὐκ ἐτέλεσεν ἐπὶ χθονὸς ὄρχαμος Ἰνδῶν, ἡλιβάτων λοφιῇσιν ἐφεδρήσων
ἐλεφάντων, ἀργινεφῆς, ἀκίχητος, ἀνούτατος, ἥρι γείτων .

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 97

.. οὐ μὲν ἐγὼ προμάχων ποτὲ δεύομαι, οὐδὲ καλέσσω ἄλλον ἀοσσητῆρα μετὰ Κρονίωνα
τοκῆα, ἡνίοχον πόντοιο καὶ αἰθέρος· ἦν δ' ἐθελήσω, γνωτὸν ἐμοῦ Κρονίδαο Ποσειδάωνα κορύσσω
Ἰνδῶν στίχα πᾶσαν ἀμαλδύνοντα τριαίνῃ· καὶ πρόμον εὐρυγένειον, ἀπόσπορον Ἐννοσιγαίου,
Γλαῦκον ἔχω συνάεθλον, ἐμῆς ἅτε γείτονα Θήβης, πόντιον Ἀοινῆς Ἀνθηδόνης ἀστὸν ἀρούρης·
Γλαῦκον ἔχω καὶ Φόρκυν· ἱμασσομένην δὲ θαλάσση ὀλκάδα Δηριάδαο κατακρύψει Μελικέρ-
της, κυδαίνων Διόνυσον ὁμόγνιον, οὐ ποτε μήτηρ νήπιον ἔτρεφε Βάκχον, ἐπεὶ πόρε ποντίας Ἰνῶ
ἐν γλάγος ἀμφοτέροισι, Παλαίμονι καὶ Διονύσῳ· μαντιπόλου δὲ γέροντος, ὃς ἡμετέρην ποτὲ
νίκην

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 118

ἀλλὰ σιωπῇ ἔκτοθεν εὐθύρσοιο καὶ Ἰνδάοιο κυδοιμοῦ μιμνέτω ἡρεμέων θρασὺς Αἰόλος, ἠθάδι
δεσμῷ ἀσκὸν ἐπισφίγγας ἀνεμῶδεα, μηδ' ἐνὶ πόντῳ ἄσθμασιν Ἰνδοφόνοισιν ἀριστεύσωσιν ἀ-
ταῖ· ἀλλὰ μόθον τελέσω νηοφθόρα θύρσα τιταίνων.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 134

τοῖσι δὲ μαρναμένοισιν ἦν κλόνος, ὥρτο δ' ἰὼν κεκλομένων· καὶ λαὸς ἐθήμονι μάρνατο
τέχῃ κυκλώσας στεφανηδὸν ὅλον στρατόν, ἐν δ' ἄρα μέσσω νηυσὶν ὁμοζυγέεσσιν ἐμιτρώθη
στόλος Ἰνδῶν εἰς λῖνον ἐργομένων νεπόδων τύπον· Αἰακίδαις δὲ Αἰακὸς ὑγρὸν ἄρῃα προθεσπίζων
Σαλαμῖνος ἀρχόμενος πολέμοιο θεοῦδ' ἐξήξατο φωνήν· “εἰ πάρος ἡμετέρην αἰὼν ἱκετήσιον ἤχῳ
ἀσπορον εὐρυάλωος ἀπήλασας αὐχμὸν ἀρούρης, διψαλέην ἐπὶ γαῖαν ἄγων βιοτήσιον ὕδωρ,
δὸς πάλιν ὀφειτέλεστον ἴσῃ χάριν, ὕετι Ζεῦ, ὕδατι κυδαίνων με καὶ ἐνθάδε· καὶ τις ἐνίφῃ νίκην
ἡμετέρην δεδοκήμενος· ὥς ἐνὶ γαίῃ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 146

ἄλλος ἀνὴρ λέξειεν Ἀχαιικός· εἰν ἐνὶ θεσμῷ Αἰακὸς Ἰνδοφόνος φυσίζοος· ἀμφότερον γάρ,
κείρων ἐχθρὰ κάρηνα καὶ αὐλακι καρπὸν ὀπάσσας χάρμα πόρεν Δήμητρι καὶ εὐφροσύνῃ
Διονύσῳ.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 163

πέμπε μοι αἰετὸν ὄρνιν ἐμῆς κήρυκα γενέθλης δεξιτερὸν προμάχοισι καὶ ὑμετέρῳ Διονύσῳ·
ἄλλος δ' ἀντιβίοισιν ἀριστερὸς ὄρνις ἰκέσθω· σύμβολα δ' ἀμφοτέροις ἑτερότροπα ταῦτα γέ-
νέσθω· τὸν μὲν ἐσαθρήσω πεφορημένον ἄρπαγι ταρσῷ θηγαλέων ὀνύχων κεχαραγμένον ὅξει
κέντρῳ νεκρὸν ὄφιν περίμετρον ἀεργάζοντα κεράστην, δυσμενέος κερδέντος ἀπαγγέλλοντα τε-
λευτήν· λαῶ δ' ἀντιβίων ἕτερος μελανόχροος ἔλθῃ κυανέαις πτερύγεσσι προθεσπίζων φόνον
Ἰνδῶν, αὐτόματον θανάτοιο φέρων τύπον· ἦν δ' ἐβελήσης, βρονταίοις πατάγοισιν ἐμὴν μαν-
τεύου νίκην, καὶ στεροπὴν Βρομίῳ λεχώϊα φέγγεα πέμπων υἷα σείῳ γέραιρε πάλιν πυρί,
δυσμενέων δὲ ὀλκάδας εὐπήληκας οἰστεύσωσι κεραυνοί.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 224

— — — καὶ διδύμαις στρατιῇσιν ἐπέκτυπε πόντιος ἄρης χερσαίην μετὰ δῆριν, ἀλιγροίζῳ δ'
ἀλαλητῷ ὀλκάσι Βακχείησιν ἐπέρρειον ὀλκάδες Ἰνδῶν· καὶ φόνος ἦν ἐκάτερθε, καὶ ἔξε κύματα
λύθρῳ, καὶ πολὺς ἀμφοτέρων στρατὸς ἦριπεν· ἀρτιχύτῳ δὲ αἵματι κυανέης ἐρυθαίνετο νῶτα
θαλάσσης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 252

— — — καὶ φονίαις λιβάδεσσιν ἐφοινίχθη Μελικέρτης· Λευκοθή δ' ὀλόλυξε, τιθηνήτειρα
Λυαίου, αὐχένα γαῦρον ἔχουσα, καὶ Ἰνδοφόνου περὶ νίκης ἀνθεὶ φυκίοεντι κόμην ἐστέφατο
Νύμφη· καὶ Θέτις ἀκρήδεμνος ὑπεκύψασα θαλάσσης χεῖρας ἐρεισαμένη καὶ Δωρίδι καὶ Παν-
οσπεῖ ἄσμενον ὄμμα τίταινεν ἐπ' εὐθύρῳ Διονύσῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 261

καὶ βυθίῃ Γαλάτεια θαλασσαίου διὰ κόλπου ἡμιφανὲς πεφόρητο διαξύουσα γαλήνην, καὶ
φονίου Κύκλωπος ἀλιπτοίητον ἐνὺ δερκομένη δεδονητο, φόβῳ δ' ἤμειφε παρειάς· ἔλπετο γὰρ
Πολύφημον ἰδεῖν κατὰ φύλοπιν Ἰνδῶν ἀντίᾳ Δηριάδαο συναιχμάζοντα Λυαίῳ· ταρβαλέῃ δ'
ἰκέτευε θαλασσαίην Ἀφροδίτην υἷα Ποσειδάωνος ἀριστεύοντα σαῶσαι, καὶ γενέτην φιλότιμον
ἐφ' υἷϊ Κυανοχαίτην μαρναμένου λιτάνευε προασπίζειν Πολυφήμου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 283

εἰς χρόνον ἑπταέτηρον ἔχεις πολύκυκλον ἀγῶνα, βόσκων ἀλλοπρόσαλλον ἀτέρμονος ἐλπίδα
χάρμης, ὅττι τεοῦ μεγάλῳ προασπιστῆρες ἀγῶνος πάντες ἐνὸς χατέουσιν ἀνικητοῦ Πολυφή-
μου· εἰ δὲ τεὴν ἐπὶ δῆριν ἐμὸς πάις ἴκετο Κύκλωψ, πατρῶν δ' ἐλέλιζεν ἐμῆς γλωχίνα τριαίνης,
καὶ κεν ὑπὲρ πεδίοιο συναιχμάζων Διονύσῳ στήθεα βουκεράοιο διέθλασε Δηριάδης, καὶ πολὺν
ἄλλον ὄμιλον ἐμῷ τριόδοντι δαΐζων εἰς μίαν ἡριγένειαν ὅλον γένος ἔκτανεν Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 386

— — — καὶ στόλον ἰθύνουσα μαχήμονα Δηριάδης ὑσμίνης Ἔρις ἦρχε· Διωνύσοιο δὲ νηῶν
Ἰνδοφόνῳ παλάμη κολπώσατο λαίφεα Νίκη.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 39, line 402

χάζετο δ' Ἰνδὸς ὄμιλος ἐπὶ χθόνα, πόντον ἐάσας· καὶ Φαέθων ἐγέλασεν, ὅτι προτέρους
μετὰ δεσμούς ἐκ πυρὸς Ἠφαίστοιο πάλιν φύγε ναύμαχος Ἄρης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 5

6.1. NONNUS

Οὐ δὲ Δίκην ἀλέεινε πανόψιον, οὐδὲ καὶ αὐτῆς ἀρραγέος κλωστήρος ἀκαμπέα νήματα Μοίρης· ἀλλὰ μιν ἀθρήσασα πεφυζότα Παλλὰς Ἀθήνη – ἔξετο γὰρ κατὰ πόντον ἐπὶ προβλήτος ἐρίπνης, ναῦμαχον εἰσπρόωσα κορυσσομένων μύθον Ἰνδῶν – ἐκ σκοπιῆς ἀνέπαλτο, καὶ ἄρσενά δύσατο μορφὴν· κλεφινόοις δ' ὁάροισι παρήπαφεν ὄρχαμον Ἰνδῶν, Μορρέος εἶδος ἔχουσα, χαριζομένη δὲ Λυαίῳ Δηριάδην ἀνέκοψε, καὶ ὡς ἀλέγουσα κυδοιμοῦ φρικτὸν ἀπερροίβδησεν ἔπος πολυμεμφεῖ φωνῇ· “φεύγεις, Δηριάδη;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 96

χροίνην δὲ θεοὶ μετὰ φύλοπιν Ἰνδῶν σὺν Διὶ παμμεδέοντι πάλιν νόστησαν Ὀλύμπῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 171

εἵπατε, Μοῖραι· τίς φθόνος Ἰνδῶν πόλιν ἔπραθε;

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 182

εἰς ἐμέ θωρήχθη καὶ ἐμὸς γάμος· ἡμετέρου γὰρ Μορρέος ἱμείροντος ἐσυλήθη πόλις Ἰνδῶν· πατὴρ ἐνοσφίσθη χάριν ἀνέρος· ἢ πρὶν ἀγῆνωρ καὶ θυγάτηρ βασιλῆος, ἐγὼ ποτε δεσπότης Ἰνδῶν, ἔσομαι ἀμφιπόλων καὶ ἐγὼ μία· καὶ τάχα δειλὴ δμῳδα Χαλκομέδειαν ἐμὴν δέσποιναν ἐνίψω.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 187

σήμερον Ἰνδὸν ἔδεθλον ἔχεις, ἀπατήλιε Μορρεῦ· αὔριον αὐτοκέλευστος ἐλεύσεαι εἰς χθόνα Λυδῶν, Χαλκομέδης διὰ κάλλος ὑποδρήσων Διονύσω.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 199

Δηριάδης τέθνηκεν· ἐσυλήθη πόλις Ἰνδῶν, ἀρραγὲς ἦριπε τείχος ἐμῆς χθονός· αἶθε καὶ αὐτὴν Βάκχος ἐλὼν ὀλέσῃ με σὺν ὀλλυμένῳ παρακοίτῃ, καὶ με λαβὼν ῥίψειν ἐς ὠκυρέεθρον Ἰθάσπην, γαῖαν ἀναινομένην· ἐχέτω δὲ με πενθερὸν ὕδωρ, Δηριάδην δ' ἐσίδω καὶ ἐν ὕδασι· μηδὲ νοήσω Πρωτονόην ἀέκουσαν ἐφειστομένην Διονύσω· μὴ ποτε Χειροβίης ἔτερον γόνον οἰκτρὸν ἀκούσω ἐλκομένης ἐς ἔρωτα δορικτήτων ὑμεναίων· μὴ πόσιν ἄλλον ἴδοιμι μετ' ἀνέρα Δηριάδῃα.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 217

Βάκχοι δ' ἐκροτάλιζον ἀπορρήφαντες ἐνὺν, τοῖον ἔπος βοόωντες ὁμογλώσσω ἀπὸ λαϊμῶν· “ἡράμεθα μέγα κῦδος· ἐπέφνομεν ὄρχαμον Ἰνδῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 235

παυσάμενος δὲ πόνοιο, καὶ ὕδατι γυῖα καθήρας, ὥπασε λισσομένοισι θεοῦδᾶ κοίραν Ἰνδοῖς, κρινάμενος Μωδαῖον· ἐπὶ ξυνῶ δὲ κυπέλλῳ Βάκχοις δαινυμένοισι μιῆς ἤψαντο τραπέζης ξανθὸν ὕδωρ πίνοντες ἀπ' οἰνοπόρου ποταμοῖο.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 252

ἀλλ' ὅτε λυσιπόνοιο παρήλυθε κῶμος ἐορτῆς, νίκης λήϊδα πᾶσαν ἐλὼν μετὰ φύλοπιν Ἰνδῶν ἀρχαίης Διόνυσος εἰς ἐμνήσατο πάτρης, λύσας ἐπταέτηρα θεμεῖλια δημοτῆτος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 256

καὶ δῆϊον ὅλον ὄλβον ἐληίζοντο μαχηταί, ὧν ὁ μὲν Ἰνδὸν ἰάσπιν, ὁ δὲ γραπτῆς ὑακίνθου Φοιβάδος εἶχε μέταλλα καὶ ἐγχλοα νῶτα μαράγδου· ἄλλος ἐκκρήπιδος ὑπὸ σκοπιῇσιν Ἰμαίου ὄρθιον ἶχνος ἔπειγε δορικτήτων ἐλεφάντων, ὅς δὲ παρ' Ἡμῶδοιο βαθυσπήλυγγι κολώνῃ ἤλασεν

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Ἰνδῶν μετανάστιον ἄρμα λεόντων κυδιῶν, ἕτερος δὲ κατ' αὐχένος ἄμμα πεδήσας Μυγδονίην
ἔσπευδεν ἐς ἥονα πόρδαλιν ἔλκειν· καὶ Σάτυρος πεφόρητο, φιλακρήτῳ δὲ πετήλῳ στικτὸν ἔχων
προκέλευθον ἐκώμασε τίγριν ἰμάσσων·

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 277

καὶ στρατιῇ Διόνυσος ἐδάσσατο λήϊδα χάρμης λαὸν ὅλον συνάεθλον ὑπότροπον οἴκαδε πέμ-
πων Ἰνδῶν μετὰ δῆριν· ἀπεσσεύοντο δὲ λαοὶ μάρμαρα κουφίζοντες ἐώια δῶρα θαλάσσης ὄρνέα
τ' αἰολόμορφα· παλιννόστῳ δὲ πορείῃ κῶμον ἀνευάζοντες ἀνικητῷ Διονύσῳ πάντες ἐβακχεύ-
οντο, πολυχμήτοιο λιπόντες μνηστὶν ὅλην πολέμοιο, Βορείადι σύνδρομον αὖρη σκιδναμένην· καὶ
ἕκαστος ἔχων ἀναθήματα νίκης ὄψιμον εἰς δόμον ἤλθε παλίνδρομος.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 292

αὐτὰρ ὁ μούνοις Βάκχος ἐοῖς Σατύροισι καὶ Ἰνδοφόνοις ἄμα Βάκχαις Καυκασίην μετὰ
δῆριν Ἀμαζονίου ποταμοῖο Ἀρραβίης ἐπέβαινε τὸ δεύτερον, ἥχι θαμίζων λαὸν ἀβακχεύτων
Ἀράβων ἐδίδαξεν ἀεῖρειν μυστιπόλους νάρθηκας· ἀεξιφύτοιο δὲ λόχμης Νύσια βοτρυόεντι κα-
τέσσεφεν οὔρεα καρπῷ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 40, line 441

ἀγνὸν ἀνυμφεύτοιο γένος χθονός, ὃν τότε μορφὴν αὐτομάτην ᾧδινεν ἀνήροτος ἄσπορος ἰλὺς·
οἱ πόλιν ἰσοτύπων δαπέδων αὐτόχθονι τέχνῃ πετραίοις ἀτίνακτον ἐπυργώσαντο θεμέθλοις, ὅπ-
ποτε πηγαίῃσι παρ' εὐύδροισι χαμεύναις ἡελίου πυρόεντος ἱμασσομένης χθονὸς ἀτμῷ τερψίνου
ληθαῖον ἀμεργόμενοι πτερὸν Ἵπνου εὐδὸν ὁμοῦ, κραδίῃ δὲ φιλόπολιν οἶστρον ἀέξων Γηγενέων
στατὸν ἶχνος ἐπηώρησα καρήνῳ, καὶ βροτέου σκιοειδὲς ἔχων ἵνδαλμα προσώπου θέσφατον ὁμ-
φήνεντος ἀνήρυγον ἀνθερεῶνος· ὕπνον ἀποσκεδάσαντες ἀεργέα, παῖδες ἀρούρης, τεύξατέ μοι
ξένον ἄρμα βατῆς ἀλός· ὀξυτόμοις δὲ κόψατέ μοι πελέκεσσι ῥάχιν πιτυώδεος ὕλης· τεύξατέ
μοι σοφὸν ἔργον· ὑπὸ σταμίνεσσι δὲ πυκνοῖς ἴκρια γομφώσαντες ἐπασσυντέρῳ τινὶ κόσμῳ συμ-
φερτὴν ἀτίνακτον ἀρηρότι δῆσατε δεσμῷ δίφρον ἀλός, σχεδὴν πρωτόπλοον, ἥ διὰ πόντου ὑμέας
ὀχλίξειε· καὶ ἀγκύλον ἄκρον ἀπ' ἄκρου

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 41, line 65

σύλῳγα μορφώσασα σοφὸν τόκον ἄσπορος ᾧδὺς ἔμπνοον ἐφύχωσε γονὴν ἐγκύμονι πηλῷ, οἷς
Φύσις εἶδος ὅπασσε τελεσφόρον· ἀρχεγόνου γὰρ Κέκροπος οὐ τύπον εἶχον, ὃς ἰοβόλῳ ποδὸς ὀκλῷ
γαῖαν ἐπιζύων ὀφιώδεϊ σύρετο ταρσῷ, νέρθε δράκων, καὶ ὑπερθεν ἀπ' ἰξύος ἄχρι καρήνου ἄλλο-
φυῆς ἀτέλεστος ἐφαίνετο δίχροος ἀνὴρ· οὐ τύπον ἄγχιον εἶχον Ἐρεχθεός, ὃν τέκε γαίης αὐλακι
νυμφεύσας γαμῖν Ἥφαιστος ἐέρσην· ἀλλὰ θεῶν ἵνδαλμα γονῆς αὐτόχθονι ἐξίχῃ πρωτοφανῆς
χρῦσειος ἐμαιώθη στάχυν ἀνδρῶν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 42, line 145

ᾧ μέγα θαῦμα, παρθένον ἔτρεμε Βάκχος, ὃν ἔτρεμε φῦλα Γιγάντων· Γηγενέων ὀλετήρα
φόβος νίκησεν Ἑρώτων· τοσσατίων δ' ἤμησεν ἀρειμανέων γένος Ἰνδῶν, καὶ μίαν ἡμερόεσσαν
ἀνάγκη δαίδει κούρην, δαίδει θηλυτέρην ἀπαλόχροον· ἐν δὲ κολώναις θηρονόμῳ νάρθηκι κατε-
πρήνυε λεόντων φρικαλέον μύκημα, καὶ ἔτρεμε θῆλυν ἀπειλήν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 42, line 239

6.1. NONNUS

ἔδνα δὲ σεῖο πόθοιο, τεῆς κειμήλια νύμφης, μὴ λίθον Ἰνδῶν, μὴ μάργαρα χειρὶ τινάξης, οἷα γυναιμανέοντι πέλει θέμις· εἰς Παφίην γὰρ ἀμφιέπεις τεὸν εἶδος ἐπάρκιον, εὐαφές δὲ κάλλεος ἰμείρουσι καὶ οὐ χρυσοῖο γυναῖκες.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 42, line 333

οὕτω καὶ Διόνυσος, ἔχων ἰνδάλματα μόχθων, μιμηλῶ πτερόεντα νόον πόμπευεν ὀνείρω, καὶ σκιεροῖσι γάμοισιν ὀμίλειεν.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 42, line 358

καὶ ποτε μουνωθεῖσαν Ἀδώνιδος ἄλγυγα κούρην ἀθρήσας σχεδὸν ἦλθε, καὶ ἀνδρομέης ἀπὸ μορφῆς εἶδος ἐὼν μετὰμειψε, καὶ ὡς θεὸς ἴστατο κούρη· καὶ οἱ ἐὼν γένος εἶπε καὶ οὐνομα, καὶ φόνον Ἰνδῶν, καὶ χορὸν ἀμπελόεντα, καὶ ἡδυπότου χύσιν οἴνου, ὅττι μιν ἀνδράσιν εὔρε· φιλοστόργῳ δὲ μενοινῇ θάρσος ἀναιδεῖη κεράσας ἀλλότριον αἰδοῦς τοῖν ποικιλόμυθον ὑποσσαινῶν φάτο φωνήν· “παρθένε, σὸν δὲ ἔρωτα καὶ οὐρανὸν οὐκέτι ναίω· σῶν πατέρων σπήλυγγες ἀρεῖονές εἰσιν Ὀλύμπου· πατρίδα σὴν φιλέω πλέον αἰθέρος· οὐ μενεαίνω σκηπτρα Διὸς γενετῆρος, ὅσον Βερόης ὑμεναίου· ἀμβροσίης σέο κάλλος ὑπέρτερον· αἰθερίου δὲ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 43, line 137

ἀλλὰ πάλιν μάρνασθε, Μιμαλλόνες, ἡθάδι νίκη θαρσαλέαι· κταμένων δὲ νεόρρυτον αἶμα Γιγάντων νεβρίς ἐμῇ μεθέπουσα μελαίνεται· εἰσέτι δ' αὐτὴ ἀντολή τρομέει με, καὶ εἰς πέδον αὐχένα κάμπτει Ἰνδὸς ἄρης, Βρομίῳ δὲ λιτήσια δάκρυα λείβων, δάκρυα κυματόεντα, γέρων ἔφριξεν Ὑδάσπης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 43, line 165

Αἰθίοπων δὲ φάλαγγας ἐρύσσατε καὶ στίχας Ἰνδῶν, λήϊδα Νηρεΐδεσσι, κακογλώσσοιο δὲ νύμφης Δωρίδι δούλια τέκνα κομίσσατε Κασσιεπείης, ποινὴν ὀψιτέλεστον· ἀμαιμακέτῳ δὲ ῥεέθρῳ Ὠκεανὸς πυρόεντα λελουμένον ἀστέρα Μαίρης, ληναίης προκέλευθον ἀκοιμήτοιο χορείης, Σείριον ἀμπελόεντα μεταστήσειεν Ὀλύμπου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 43, line 227

Πρωτεύς δ' Ἴσθμιον οἶδμα λιπῶν Παλληνίδος ἄλμης εἰναλίῳ θώρηκι κορύσσετο, δέρματι φώκης· ἀμφὶ δὲ μιν στεφανηδὸν ἐπέρρεον αἰθοπες Ἰνδοὶ Βάκχου κεκλομένοιο, καὶ οὐλοκόμων στίχες ἀνδρῶν φωκάων πολύμορφον ἐπηχύναντο νομῆα.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 43, line 243

δενδρώσας ἐὰ γυῖα, τινασσομένων δὲ πετῆλων ψευδαλέον ψιθύρισμα Βορειάδι σύρισην αὔρη· καὶ γραπταῖς φολίδεσσι κεκασμένα νῶτα χαράξας εἶρπε δράκων, μεσάτου δὲ πιεζομένου κε-νεῶνος σπεῖραν ἀνηώρησεν, ὑπ' ὀρχηστῆρι δὲ παλμῶ ἄκρα τιταινομένης ἐλελίζετο κυκλάδος οὐρῆς, καὶ κεφαλὴν ὠρθωσεν, ἀποπτύων δὲ γενείων ἰὸν ἀκοντιστῆρα κεχηνότι σύρισε λαίμῳ· καὶ δέμας ἀλλοπρόσαλλον ἔχων σκιοειδὲ μορφῇ φριξε λέων, σύτο κάπρος, ὕδωρ ῥέε· καὶ χορὸς Ἰνδῶν ὕγρον ἀπειλητῆρι ῥέον σφηκώσατο δεσμῶ χερσὶν ὀλισθηρήσιν ἔχων ἀπατήλιον ὕδωρ· κερ-δαλέος δὲ γέρων πολυδαίδαλον εἶδος ἀμείβων εἶχε Περικλυμένοιο πολύτροπα δαίδαλα μορφῆς, ὃν κτάνεν Ἡρακλῆς, ὅτε δάκτυλα δισσὰ συνάψας ψευδαλέον μίμημα νόθης ἔθραυσε μελίσσης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 43, line 445

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ἀπ' Ἀσσυρίοιο δὲ κόλπου ἀβροχίτων Διόνυσος ἀνήιεν εἰς χθόνα Λυδῶν Πακτωλοῦ παρὰ πέζαν, ὅπῃ χρυσαυγεί πηλῶ ἀφνειαῖς λιβάδεσσι μέλαν φοινίσσεται ὕδωρ· Μαιονίης δ' ἐπέβαινε, καὶ ἴστατο μητέρι· Ῥεῖη Ἰνδῶης ὀρέγων βασιλῆα δῶρα θαλάσσης.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 44, line 236

ἦδη δ' ἀμφὶ τένοντας Ἐρυθραίων δονακῶν κέκλιται ἔνθα καὶ ἔνθα, τεῆς αὐτάγγελος ἀλκῆς, Ἰνδῶν νεκρὸς ὄμιλος, ἀναινομένῳ δὲ ξέεθρῳ ἄφρονα Δηριάδῃα πατὴρ ἔκρυψεν Ὑδάσπης ἐγχεῖ κισσῇεντι τετυμμένον· αὐτὰρ ὁ φεύγων πατρώῳ βαρύνθοντι κατηφεί πίπτει ξέεθρῳ· Τυρσηνοὶ δὲδάσι τεδὸν σθένος, ὅπποτε νηῶν ὄρθιος ἰστὸς ἀμειπτο καὶ ἀμπελόεις πέλεν ὄρπηξ αὐτοτελής, τὸ δὲ λαῖφος ὑπὸ σκιεροῖσι πετῆλοις ἡμερίδων εὐβοτρὺς ἀνέζητο καλύπτρη, καὶ πρότονον σύριζον ἐχιδνήεντι κορύμβῳ

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 44, line 251

καὶ νέκυς ὑμετέρῳ βεβολημένος ὀξεί θύρῳ χεύμασιν Ἀσσυρίοισι καλύπτεται Ἰνδὸς Ὀρόντης, εἰσέτι δειμαίνων καὶ ἐν ὕδασι νύνομα Βάκχου.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 45, line 125

ἀλλὰ δόλῳ Διόνυσος ἐπὶ κλοπὸν εἶδος ἀμείφας Τυρσηνοὺς ἀπάφησε· νόθην δ' ὑπεδύσατο μορφήν, ἡμερόεις ἅτε κοῦρος ἔχων ἀχάρακτον ὑπήνην, αὐχένι κόσμον ἔχων χρυσήλατον· ἀμφὶ δὲ κόρσῃν στέμματος ἀστράπτοντος ἦν αὐτόσσυτος αἶγλη λυχνίδος ἀσβέστοιο, καὶ ἐγχλοα νῶτα μαράγδου, καὶ λίθος Ἰνδῶη χαροπῆς ἀμάρυγμα θαλάσσης· καὶ χροὶ δύσατο πέπλα φαάντερα κυκλάδος· Ἡοῦς ἄρτι χαρασσομένης, Τυρίη πεπαλαγμένα κόχλῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 46, line 71

μοῦνον ἐμῆς κύδαινε μελισσταγὲς ἄνθος ὁπῶρης· μὴ ποτὸν ἀμπελόεντος ἀτιμῆσης Διονύσου. Ἰνδοφόνῳ Βρομίῳ μὴ μάρναο, θηλυτέρῃ δέ, εἰ δύνασαι, πολέμιζε μῆϊ ξηζήνορι Βάκχῃ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 47, line 505

μὴ κισσῶ δρεπάνην ισάζετε· καὶ γὰρ ἀρείων Βάκχου θυρσοφόρου δρεπανηφόρος ἔπλετο Περσεύς· εἰ στρατὸν Ἰνδὸν ἔπεφεν, ἀέθλιον ἴσον ἐνὶ ψῷ Γοργοφόνῳ Περσῇ καὶ Ἰνδοφόνῳ Διονύσῳ.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 47, line 624

καὶ σὺ μέγα φρονέων δρεπανηφόρε παῦεο Περσεῦ· Γοργόνος οὐ μόθος οὗτος ὀλίζονος, οὐ μίανύμφη Ἀνδρομέδῃ βαρύδεσμος ἀέθλιον· ἀλλὰ Λυαίῳ δῆριν ἄγεις, ὃς Ζηνὸς ἔχει γένος, ὃ ποτε μούνῳ Ῥεῖη μαλὸν ὄρεξε φερέσβιον, ὃν ποτε πυρσῶ ἀστεροπῆς γαμῆς μαιώσατο μειλιχίῃ φλόξ, ὃν δύσις, ὃν θάμβησεν Ἑωσφόρος, ὃ στίχες Ἰνδῶν εἶκαθον, ὃν τρομέων καὶ Δηριάδης καὶ Ὀρόντης ἡλιβάτων ἀπέλεθρον ἔχων ἰνδαλμα Γιγάντων ἤριπεν, ὃ θρασὺς Ἄλπος ὑπῶκλασεν, υἱὸς ἀρούρης, ἀγχινεφὲς περίμετρον ἔχων δέμας, ὃ γόνυ κάμπτει λαὸς Ἄραψ, Σικελὸς δὲ μελίζεται εἰσέτι ναύτης Τυρσηνῶν νόθον εἶδος ἀλίδρομον, ὃν ποτε μορφήν ἀνδρομένην ἡμειψα μετάτροπον, ἀντὶ δὲ φωτῶν ἰχθύες ὀρχηστῆρες ἐπισκαίρουσι θαλάσση.

Nonnus Epic., Dionysiaca Book 48, line 9

καὶ δολίᾳς ἀνέφαινε λιτὰς παμμήτορι Γαίῃ, ἔργα Διὸς βοόωσα καὶ ἡγορέην Διονύσου Γηγενέων ὀλέσαντος ἀμετρήτων νέφος Ἰνδῶν· καὶ Σεμέλης ὅτε παῖδα φερέσβιος ἔκλυε μήτηρ Ἰνδῶην

6.2. ASCLEPIUS OF TRALLES

ταχύποτμον αἰστώσαντα γενέθλην, μνησαμένη τεκέων πλέον ἔστενεν· ἀμφὶ δὲ Βάκχῳ αὐτογόνων θώρηξεν † ὀρίδρῳμα φῦλα Γιγάντων, ὑψιλόφους ἑο παῖδας ἀνοιστρήσασα κυδοιμῶ· “παῖδες ἐμοί, μάρνασθε κορυμβοφόρῳ Διονύσῳ ἡλιβάτοις σκοπέλοισιν, ἐμῆς δ’ ὀλετῆρα γενέθλης Ἰνδοφόνον Διὸς υἱὰ κιχήσατε· μηδὲ νοήσω σὺν Διὶ κοιρανέοντα νόθον σκηπτοῦχον Ὀλύμπου.

Nonnus Epic., Paraphrasis sancti evangelii Joannei (fort. auctore Nonno alio) (2045: 002) “Paraphrasis s. evangelii Ioannei”, Ed. Scheindler, A. Leipzig: Teubner, 1881. Demonstratio 19, line 207

ἦλθε δὲ καὶ Νικόδημος, ὃς ἦλυθε νυκτὸς ὁδίτης εἰς μέγαρον Χριστοῦ φυλασσομένῳ ποδὶ βαίων, σμύρναν ἄγων θυόεσσαν, Ἐρυθραίοιο δὲ κόλπου Ἰνδῶν ἀλόην δονακοτρεφὲς ἔρνος ἀρούρης, λίτρας τὰς καλέουσι φατιζομένῳ τινὶ μέτρῳ ἄχρι μιῆς ζαθέης ἑκατοντάδος· ὦν ἅμα καρπῶ λεπταλέαις ὀθόνῃσιν ἐμιτρώσαντο θανόντος σῶμα πολυπλέκτων ἐλίκων εὐώδεϊ δεσμῶ, ὡς ἔθος Ἑβραίοις ἐπιτύμβια θεσμὰ φυλάσσειν.

6.2 Asclepius of Tralles

Asclepius of Tralles (Greek: Ἀσκληπιός; died c. 560-570) was a student of Ammonius Hermiae. Two works of his survive:

Commentary on Aristotle’s Metaphysics, books I-VII (In Aristotelis metaphysicorum libros A - Z (1 - 7) commentaria, ed. Michael Hayduck, Commentaria in Aristotelem Graeca, VI.2, Berlin: Reiner, 1888). Commentary on Nicomachus’ Introduction to Arithmetic (Leonardo Tarán, Asclepius of Tralles, Commentary to Nicomachus’ Introduction to Arithmetic, Transactions of the American Philosophical Society (n.s.), 59: 4. Philadelphia, 1969.

Both works seem to be notes on the lectures conducted by Ammonius. (From Wikipedia¹)

Asclepius Phil., In Aristotelis metaphysicorum libros A-Z commentaria (4018: 001) “Asclepii in Aristotelis metaphysicorum libros A-Z commentaria”, Ed. Hayduck, M. Berlin: Reimer, 1888; Commentaria in Aristotelem Graeca 6.2. Page 262, line 8

οὐκ ἄρα δυνατόν τὸ αὐτὸ εἶναι καὶ μὴ εἶναι, εἰ μή τι γε ὁμωνύμως, εἰ τύχοι· ὁ γὰρ ἡμῖν ἄνθρωπος καλούμενος παρὰ Ἰνδοῖς, εἰ τύχοι, καλείσθω μὴ ἄνθρωπος.

1. http://en.wikipedia.org/wiki/Asclepius_of_Tralles

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

6.3 Acta Philippi

The Greek Acts of Philip (Acta Philippi) is an unorthodox episodic apocryphal mid-to late fourth-century[1] narrative, originally in fifteen separate acts,[2] that gives an accounting of the miraculous acts performed by the Apostle Philip, with overtones of the heroic romance. Courtyard of the Xenophontos monastery on Mount Athos where the complete text of the Acts of Philip was discovered

Some of these episodes are identifiable as belonging to more closely related "cycles".[3] Two episodes recounting events of Philip's commission (3 and 8) have survived in both shorter and longer versions. There is no commission narrative in the surviving texts: Philip's authority rests on the prayers and benediction of Peter and John and is explicitly bolstered by a divine epiphany, in which the voice of Jesus urges "Hurry Philip! Behold, my angel is with you, do not neglect your task" and "Jesus is secretly walking with him".(ch. 3).

(From Wikipedia²)

Acta Philippi, Acta Philippi (2948: 001) "Acta apostolorum apocrypha, vol. 2.2", Ed. Bonnet, M. Leipzig: Mendelssohn, 1903, Repr. 1972. Section 32, line 5

Ἦν δὲ ἐκεῖ καὶ ὁ μακάριος Ἰωάννης, καὶ λέγει τῷ Φιλίππῳ· Ἀδελφέ μου καὶ συναπόστολε, εἰ καὶ μακρὰν ἔχεις τὴν ἀποδημίαν, γινώριζε ὅτι καὶ ὁ ἀδελφὸς Ἀνδρέας ἐπορεύθη εἰς τὴν Ἀχαίαν καὶ ὅλην τὴν Θράκην, καὶ ὁ Θωμᾶς εἰς τὴν Ἰνδικὴν καὶ εἰς τοὺς σαρκοφάγους παλαμναίους, καὶ ὁ Ματθαῖος εἰς τοὺς τραυλοδύτας καὶ ἀνηλεεῖς· ἡ γὰρ φύσις αὐτῶν ἐστὶν ἡγριωμένη· καὶ ὁ κύριος ἐστὶ μετ' αὐτῶν.

6.4 Calani Epistula (date ?)

? (3)

Calani Epistula, Epistula (0040: 001) "Epistolographi Graeci", Ed. Hercher, R. Paris: Didot, 1873, Repr. 1965. Line 2

2. http://en.wikipedia.org/wiki/Acts_of_Philip

3. <http://catalog.perseus.org/catalog/Atlg0040Calan>

6.5. CORPUS HERMETICUM

*Φίλοι πείθουσι χεῖρας καὶ ἀνάγκην προσφέρειν Ἰνδῶν φιλοσόφοις, οὐδ' ἐν ὕπνῳ ἑορακότες
ἡμέτερα ἔργα.*

6.5 Corpus Hermeticum

The Hermetica are Egyptian-Greek wisdom texts from the 2nd and 3rd centuries CE,[1] which are mostly presented as dialogues in which a teacher, generally identified as Hermes Trismegistus ("thrice-greatest Hermes"), enlightens a disciple. The texts form the basis of Hermeticism. They discuss the divine, the cosmos, mind, and nature. Some touch upon alchemy, astrology, and related concepts. (From Wikipedia⁴)

Corpus Hermeticum, Νοῦς πρὸς Ἑρμῆν (1286: 011) "Corpus Hermeticum, vol. 1", Ed. Nock, A.D., Festugière, A.-J. Paris: Les Belles Lettres, 1946, Repr. 1972. Section 19, line 2

*καὶ οὕτω νόησον ἀπὸ σεαυτοῦ, καὶ κέλευσόν σου τῇ ψυχῇ εἰς Ἰνδικὴν πορευθῆναι, καὶ ταχύ-
τερόν σου τῆς κελεύσεως ἐκεῖ ἔσται.*

6.6 Hippiatrica

The Hippiatrica (Greek: Ἱππιατρικά) is a Byzantine compilation of ancient Greek texts, mainly excerpts, dedicated to the care and healing of the horse.[1] The texts were probably compiled in the 5th or 6th century AD by an unknown editor.[1] Seven texts from Late Antiquity constitute the main sources of the Hippiatrica: the veterinary manuals of Apsyrus, Eumelus (a veterinary practitioner in Thebes, Greece[2]), Hierocles, Hippocrates, and Theomnestus, as well as the work of Pelagonius (originally a Latin text translated into Greek), and the chapter on horses from the agricultural compilation of Anatolius.[3] Although the aforementioned authors allude to their classical Greek veterinary predecessors (i.e. Xenophon and Simon of Athens), the roots of their tradition mainly lie in Hellenistic agricultural literature derived from Mago of Carthage.[3] In the 10th century

4. http://en.wikipedia.org/wiki/Corpus_Hermeticum

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

AD, two more sources from Late Antiquity were added to the Hippitrica: a work by Tiberius and an anonymous set of Prognoseis and iaseis (Greek: Πρόγνωσης και ιάσεις).[4] Content-wise, the sources in the Hippitrica provide no systematic exposition of veterinary art and emphasize practical treatment rather than on aetiology or medical theory.[5] However, the compilation contains a wide variety of literary forms and styles: proverbs, poetry, incantations, letters, instructions, prooimia, medical definitions, recipes, and reminiscences.[6] In the entire Hippitrica, the name of Cheiron, the Greek centaur associated with healing and linked with veterinary medicine, appears twice (as a deity) in the form of a rhetorical invocation and in the form of a spell; a remedy called a cheironeion (Greek: χειρώνειον) is named after the mythological figure.[7] Currently, the compilation is preserved in five recensions in twenty-two manuscripts (containing twenty-five copies) ranging in date from the 10th to the 16th century AD.[1] (From Wikipedia⁵)

Hippitrica, Hippitrica Berolinensia (0738: 001) “Corpus hippitricorum Graecorum, vol. 1”, Ed. Oder, E., Hoppe, K. Leipzig: Teubner, 1924, Repr. 1971. Chapter 4, section 14, line 3

Ἐκ τῶν ποδῶν ἀφαίμαξον τὸ ζῶον, εἴτα σμύρνης τρω- γλίτιδος γ<ο> δ', κρόκου γ<ο> ἔξ, κενταυρίου γράμματα δ', νάρ- δου στάχυος Ἰνδικῆς γ<ο> α', πεπέρεως λευκοῦ γ<ο> γ', σελίνου σπέρμου κοχλιάρια ε', μήκωνος γ<ο> α', προπόλεως γ<ο> α', μέ- λιτος ἔεστην ἕνα, καὶ νίτρου τὸ ἄρκοῦν | συμμίξας, καὶ ποιή- σας ὡς μέγεθος λεπτοκαρύου, καὶ λύσας ἐν ὕδατι χλιαρῷ ἐνὸς ἔεστου, δίδου τῷ κάμνοντι ζῷω.

Hippitrica, Hippitrica Berolinensia Chapter 11, section 2, line 3

Ἐὰν λευκωθῇ ὀφθαλμὸς ἀπὸ πληγῆς ἢ παρα|τρίψεως, σπησίας χρῆ ὄστρακον ἔεσαντα καὶ τρίψαντα μετὰ σμύρνης καὶ μέλιτος ὑποχρίειν· ἢ ἄλας ὀρυκτὸν ἢ Ἰνδικὸν λεάναντα μετὰ κρόκου καὶ μέλιτος ἠψημένον ὑποχρίειν· ἢ ψιμυθίου καὶ μέλιτος Ἀττικοῦ μίξαντα ὑποχρίειν· ἢ σταφυλίνου ἀγρίου τὸ ἄνθος καὶ ἀνεμώνης τρίψας, ἔνσταζε δις τῆς ἡμέρας.

Hippitrica, Hippitrica Berolinensia Chapter 22, section 16, line 1

Λυκίου Ἰνδικοῦ α' δ', ναρδοστάχυος α' δ', σμύρνης, στύ- ρακος, κρόκου, πεπέρεως λευκοῦ, ἀμάμου βότρυος, πεπέρεως μακροῦ ἀνὰ α' ε', κινναμώμου α' α', πάνακος α' α', ἀκόρου α' β', μέλιτος α' β', σελίνου σπέρματος α' α', κασίας δαφνίτι- δος α' β', λιβάνου ἄρρενικοῦ, καλάμου ἀρωματικοῦ, νάρδου Κελτικῆς ἀνὰ α' γ', ῥόδων ξηρῶν λίτραν μίαν, ἀννήσου, πε- τροσελίνου ἀνὰ ἔεστην ἕνα, κροκομάγαματος λίτραν μίαν, καὶ Λημνίας α' δ'.

Hippitrica, Hippitrica Berolinensia Chapter 45, section 1, line 8

εἰ δὲ μή, ὀποπάνακος ἢ σμύρνης ἢ σελίνου καρπὸν ἢ τὸ βρύον τὸ ἀπὸ τῶν Ἰνδῶν ἢ χελιδόνιον, ὃ τι ἂν τούτων σχῆς.

5. <http://en.wikipedia.org/wiki/Hippitrica>

6.6. HIPPIATRICA

Hippiatrica, Hippiatrica Berolinensia Chapter 129, section 28, line 1

> κασίας γ<ο> α', νάρδου Ἰνδικῆς γ<ο> δ', κρόκου, κόστου, ἱρεως Ἰλλυρικῆς, καρδαμώμου, πετροσελίνου, ἀργίου, πεπέρεως λευκοῦ, πρασίου, κενταυρίου, πάνακος, <Φοῦ Ποντικοῦ>, σχοινάνθης, ἀμώμου, ἐκάστου ἀνὰ γ<ο> α'.

Hippiatrica, Hippiatrica Berolinensia Chapter 130, section 173, line 2

> νάρδου Συριακῆς ἥτοι Ἰνδικῆς, κρόκου Σικελικοῦ, σμύρνης τρωγλίτιδος, σχοινάνθης, πεπέρεως μέλανος, πεπέ-ρεως λευκοῦ, κασίας μελαίνης, χαμαίδρυνος, νάρδου Κελτικῆς, κινναμώμου, κρομύων Ἰνδικῶν, ἀγαρικοῦ Ποντικοῦ, λιβάνου ἄρρενος, ἱρεως λευκῆς, καλαμίνθης, λασάρου Ποντικοῦ, γεν-τιανῆς, πετροσελίνου ξηροῦ, κασίας σύριγγος· πάντα ἐπ' ἴσης σταθμῶ τῷ δοκούντ' σοι κόψας καὶ σήσας χρῶ.

Hippiatrica, Appendices ad hippiatrica Berolinensia (0738: 002) "Corpus hippiatricorum Graecorum, vol. 1", Ed. Oder, E., Hoppe, K. Leipzig: Teubner, 1924, Repr. 1971. Appendix 8, line 30

μέλανος § α', ἐλενίου § α', ἐπιθύμου § α', εὐφορβίου § α', ἐρπύλου κόμεως § α', ἐρίφου αἵματος ξηροῦ § α', εὐζώμου σπέρματος § α', ἐλελισφάκ[τ]ου § α', ἐλέφαντος σπέρματος § α', ζαδάριον § α', ζιγγιβέρεως § α', ζάνης § α', ἡλιοτροπίου ῥίζης § α', ἡδυχρόου μαλάγματος § α', θύμου Κρητικοῦ § α', θείου ἀπύρου καθαροῦ § α', θλάσπεως § α', θέρμων § α', ἰσχάδων § α', ἱρεως Ἰλλυρικῆς § α', ἱρυγγίου § α', ἰξοῦ κεδρέας § α', κόστου § α', κενταυρίου § α', κόμιος § α', κρομύου Ἰνδικοῦ § α', κασίας ναρδίνης § α', καλά-μου ἀρωματικοῦ § α', κολοκύνθης Ἀλεξανδρινῆς § α', καλα-μίνθης ὀρεινῆς § α', κέρατος ἐλαφείου § α', καπάρεως ῥίζης Φλοιοῦ § α', καστορίου § α', κρόκου § α', κυκλαμίνου § α', καδμείας βοτρυϊτίδος § α', κασίας σύριγγος § α', καρδάμου § α', κινναμώμου § α', κρομύου σπέρ-ματος § α', καλάμου Συριακοῦ § α', κασίας ἀσμαλίτιδος οὐγκία α'.

Hippiatrica, Fragmenta Timothei Gazaei (0738: 005) "Corpus hippiatricorum Graecorum, vol. 2", Ed. Oder, E., Hoppe, K. Leipzig: Teubner, 1927, Repr. 1971. Section 2, line 2

<Ἄρ[ρ]αβες> δὲ οἱ πρὸς τῷ ὄρει τῆς Ἰνδικῆς εὐμεγέθεις, φοίνικες, ὡς ἐπίπαν εἰπεῖν, τὴν χροϊάν, ὑψαύχενες, τὴν προτομὴν σύμμετρον καὶ εὐρυθμον ἔχοντες, τὴν κεφαλὴν [καὶ] ἡνομένην σχεδὸν τῷ τοῦ ἵππεως μετώπῳ, κυδροὶ καὶ δυσγαργάλιστοι, πολὺ τὸ τῆς ἵπποφυφίας ἔχοντες ὑπερήφανον, ὅξεϊς σφόδρα, ποδώκεις, γόνατα ὑγροί, τῇ ὀρμῇ τοῦ δρόμου ὅλους ἑαυτοὺς ἐπιδιδόντες, πηδῶντες κούφως μᾶλλον ἢ τρέχοντες, γοργοὶ τὸ βλέμμα, τὴν ἴριν κεκραμένην καὶ ὑδαρεστέραν ἔχοντες, τοὺς κενεῶνας συνεσταλμένοι καὶ τὸ ἄλλο σῶμα ἰσχυροὶ καὶ οὐ κεχυμένοι, <τὴν> ῥάχιν κούλην ἔχοντες, πρὸς τὸ καῦμα μὴ ἀπαγορεύοντες, τῷ ἡλίῳ μᾶλλον χαίροντες,

Hippiatrica, Additamenta Londinensia ad hippiatrica Cantabrigiensia (0738: 007) "Corpus hippiatricorum Graecorum, vol. 2", Ed. Oder, E., Hoppe, K. Leipzig: Teubner, 1927, Repr. 1971. Section 18, line 3

α', λυκίου Ἰνδικοῦ ἔξαγ.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Hippiatrica, Additamenta Londinensia ad hippiatrica Cantabrigiensia Section 27, line 5

> Χαλκοῦ κεκαυμένου <γο> ζ', καδμείας κεκαυμένης πεπλυμένης, ναρδοστάχυνος, λίθου αίματίτου, λυκίου Ἰνδικοῦ, κρόκου ἀνὰ ἑξαγ.

Hippiatrica, Excerpta Lugdunensia (0738: 008) "Corpus hippiatricorum Graecorum, vol. 2", Ed. Oder, E., Hoppe, K. Leipzig: Teubner, 1927, Repr. 1971. Section 141, line 4

> Περιστερ(ε)ῶνος ὀρθοῦ τοῦ χυλοῦ ¶ ζ' καὶ τῆς εἴζης αὐτοῦ ξηρᾶς κεκομμένης καὶ σεσησμένης ¶ α', λίθου αίματί[ς]του ¶ δ', λυκίου Ἰνδικοῦ ¶ β', ὀποβαλσάμου ¶ β', χολῆς αἰγὸς θηλείας ¶ δ', μέλιτος ¶ γ'.

6.7 Cyril of Alexandria

Cyril of Alexandria (Greek: Κύριλλος Ἀλεξανδρείας; c. 376 – 444) was the Patriarch of Alexandria from 412 to 444. He was enthroned when the city was at the height of its influence and power within the Roman Empire. Cyril wrote extensively and was a leading protagonist in the Christological controversies of the later 4th and 5th centuries. He was a central figure in the First Council of Ephesus in 431, which led to the deposition of Nestorius as Patriarch of Constantinople.

Cyril was a scholarly archbishop and a prolific writer. In the early years of his active life in the Church he wrote several exegesis. Among these were: Commentaries on the Old Testament,[25] Thesaurus, Discourse Against Arians Commentary on St. John's Gospel,[26] and Dialogues on the Trinity. In 429 as the Christological controversies increased, his output of writings was that which his opponents could not match. His writings and his theology have remained central to tradition of the Fathers and to all Orthodox to this day. (From Wikipedia⁶)

Cyrrillus Theol., Commentarius in xii prophetas minores (4090: 001) "Sancti patris nostri Cyrilli archiepiscopi Alexandrini in xii prophetas, 2 vols.", Ed. Pusey, P.E. Oxford: Clarendon Press, 1868, Repr. 1965.

Cyrrillus Theol., Commentarius in xii prophetas minores Volume 1, page 328, line 19

6. http://en.wikipedia.org/wiki/Cyril_of_Alexandria

6.7. CYRILL OF ALEXANDRIA

ἐν μὲν γὰρ τοῖς νοτίοις μέρεσι τῆς Ἱερουσαλήμ βαθεῖα τις ἔρημος ἐξευρύνεται, τερματίζεται γεμὴν πρὸς ἡῶ τε καὶ νότον πελάγεσιν Ἰνδικοῖς· πρὸς δὲ αὐτὴν καὶ βορειότερα, τῇ Παλαιστινίων γείτονι θαλάσῃ, καὶ αὐτῇ δὲ προσκλυζούσῃ τῇ Αἰγυπτίων.

Cyrillus Theol., Commentarius in xii prophetas minores Volume 1, page 366, line 9

ΑΜΩΣ γέγονεν αἰπόλος ἀνὴρ, καὶ ποιμενικοῖς ἔθεσί τε καὶ νόμοις ἐντεθραμμένος· ἐποιεῖτο δὲ τὰς διατριβάς ἐν ἐρήμῳ τῇ πρὸς νότον τῆς Ἰουδαίων χώρας, ἥ μέχρις ὄρων διήκει θαλάσσης τῆς Ἰνδικῆς, καὶ εἰς τὴν Περσῶν ἐκτείνεται γῆν, μυρία δὲ ὅσα βαρβάρων αὐτὴν καταβόσκεται γένη, ἔχει δὲ λίαν ἐπιτηδεύως καὶ εἰς τὸ φέρβειν δύνασθαι τὰς οἰῶν ἀγέλας· εὐβοτος γὰρ καὶ πλατεῖα καὶ πολυειδεῖ τῇ πόρᾳ κατεστεμμένη.

Cyrillus Theol., Commentarius in xii prophetas minores Volume 1, page 558, line 15

ἔοικε δὲ διὰ τούτων ἡμῖν ὁ λόγος τὰ Ἰνδικὰ κατασημαίνειν ἔθνη· νοτιώτατοι γὰρ οἱ Ἰνδοὶ καὶ αἱ τούτων χώραι.

Cyrillus Theol., Commentarius in xii prophetas minores Volume 1, page 568, line 24

τινὲς μὲν οὖν οἰόνται πόλιν διὰ τούτου κατασημαίνεσθαι τὴν παρ' Αἰθίοψι καὶ Ἰνδοῖς, καὶ ἔστι μὲν ὁμολογουμένως παρ' ἐκεῖ- νοις Θαρσεῖς· ἡ γοῦν σύμπασα τῶν Ἰνδῶν διὰ τοῦ Θαρσεῖς σημαίνεται χώρα· πλὴν εἰς γε τὸ παρὸν οὐκ ἐκεῖνο οἶμαι βούλεσθαι δηλοῦν τὸν λόγον· ὅτι τοῖς ἀποπλεῖν ἐθέλου- σιν ἐπὶ τὰ Ἰνδῶν ἔθνη, γένοιτ' ἂν εἰκότως οὐ διὰ γε τῆς Ἰόπτης ὁ πλοῦς, ἀλλὰ διὰ θαλάσσης μᾶλλον τῆς Ἐρυθρᾶς, εἰ μὴ ἄρα τις οἶοιτο τυχὸν βεβουλήσθαι τὸν Προφῆτην διὰ Περσῶν τε καὶ Ἀσσυρίων εἰς Αἰθίοπας τοὺς ἐσωτάτω ποιεῖσθαι τὴν ἀποδρομὴν.

Cyrillus Theol., Commentarius in xii prophetas minores Volume 2, page 44, line 7

διήρπαζον τὸ ἀργύριον καὶ διήρπαζον τὸ χρυσίον· ταῦτα δὲ ἦν ἡ ὑπό- στασις· Καὶ οὐκ ἦν πέρας τοῦ κόσμου αὐτῶν, ἔοικε δὲ καὶ λίθους ἐν τούτοις ὀνομάζειν τὰς Ἰνδικὰς, ἐφ' αἷς δὴ μάλιστα βεβαρύνθαι φησὶν αὐτὴν, καίτοι καὶ ἐφ' ἑτέροις σκεύεσιν ἀθύμως διακειμένην.

Cyrillus Theol., Commentarius in xii prophetas minores Volume 2, page 142, line 7

οὗτοι δὲ ἦσαν οἱ τε πρὸς ἡῶ καὶ νότον Αἰθίοπες τὴν Ἰνδικὴν προσοι- κοῦντες θάλασσαν, καὶ μέντοι καὶ Μαδιναῖοι, καὶ αὐτοὶ τὴν ὁμορὸν οἰκοῦντες ἔρημον.

Cyrillus Theol., Commentarius in xii prophetas minores Volume 2, page 229, line 14

καὶ γοῦν ἐκκλησίαι πανταχοῦ, ποιμένες καὶ διδάσκαλοι, καθηγηταὶ καὶ μυσταγωγοὶ καὶ θεῖα θυσιαστήρια, θύεται δὲ νοητῶς ὁ ἀμνὸς παρὰ τῶν ἀγίων ἱερουργῶν καὶ παρ' Ἰνδοῖς καὶ Αἰθίοψι.

Cyrillus Theol., Commentarius in xii prophetas minores Volume 2, page 419, line 4

τερματίζεται γὰρ ἡ τῶν Ἰουδαίων χώρα θαλάσῃ τε τῇ πρὸς νότον καὶ Ἰνδικῇ, καὶ τῇ καλουμένῃ Μέσῃ τῶν ποταμῶν.

Cyrillus Theol., Fragmenta in sancti Pauli epistolam ad Hebraeos (4090: 006) "Sancti patris nostri Cyrilli archiepiscopi Alexandrini in D. Joannis evangelium, vol. 3", Ed. Pusey, P.E. Oxford: Clarendon Press, 1872, Repr. 1965. Page 396, line 1

καὶ τοῦτο ἰδὼν ὁ προφῆτης Δαυεὶδ ψάλλει που καὶ φησὶ πρὸς αὐτὸν περὶ τῶν ἐξ Ἰσραὴλ "Ἀμπελον ἐξ Αἰγύπτου μετῇ- ρας, ἐξέβαλες ἔθνη καὶ κατεφύτευσας αὐτήν." προσεπάγει δὲ

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

τούτοις, ποταμῷ Εὐφράτῃ καὶ μὴν καὶ θαλάσῃ τῇ πρὸς νότον καὶ Ἰνδικῇ τερματίζων τὴν Ἰουδαίων “Εξέτεινε τὰ “κλήματα αὐτῆς ἕως θαλάσσης καὶ ἕως ποταμῶν τὰς παρα- “φυάδας αὐτῆς.

Cyrillus Theol., De adoratione et cultu in spiritu et veritate Volume 68, page 484, line 12

λίθῳ γὰρ οἶμαι τῇ Ἰνδικῇ, τῷ ὑακινθίνῳ φημί, τὸ αἰθέριόν πως εἰκάζε- ται σῶμα, αὐγῇ τε καὶ σκότῳ συμμιγές, καὶ ἐν βάθει πως ἔχον τὸ ὑδαροειδές, ὑποτρέμουσάν τε καὶ εὐ- διάχυτον ὑποφαῖνον τὴν ὄψιν.

Cyrillus Theol., Expositio in Psalmos (4090: 100); MPG 69. Volume 69, page 1181, line 43

Σαββα πόλις τῆς Ἰνδίας, ἀφ’ ἧς ἦλθεν ἡ βασίλισσα Νότου πρὸς Σολομῶντα.

Cyrillus Theol., Commentarius in Isaiam prophetam (4090: 103); MPG 70. Volume 70, page 88, line 44

Οὐκοῦν ἡ τοῦτό φησιν ὁ προφητικὸς ἡμῖν ἐν τούτοις λόγος, ἡ ἐκεῖνό που τάχα· Πλείστοι γὰρ τῶν βεβα- σιλευκότων τοῦ Ἰσραὴλ, ναῦς εἶχον ἐμπορικὰς, τὰ[ς] ἐκ τῆς Ἰνδῶν χώρας τε καὶ γῆς ἀποφερούσας αὐτοῖς, καὶ τὰ[ς] ἐξ ἐτέρων χωρῶν καὶ πόλεων· ὅθεν αὐτοῖς καὶ ὁ πολὺς συναγῆγερτο πλοῦτος· ἐξ οὗ γεγονόνασι ὑψηλοὶ, κέδροις τε καὶ δρυσὶν ἐν ἴσῳ, ὄρεσί τε καὶ πύργοις.

Cyrillus Theol., Commentarius in Isaiam prophetam Volume 70, page 357, line 22

Ὀλιγανδρῇ- σιν τοίνυν φησὶν οὕτω τὴν Βαβυλωνίων, καὶ ἄπασαν δὲ τὴν Ἀσσυρίων χώραν, ὡς δυσευρέτους γενέσθαι τοὺς ζῶντας ἐν αὐτῇ, καὶ τοσαύτην τῶν περιλελειμ- μένων τὴν σπάνιν, ὅση καὶ λίθων Ἰνδικῶν, καὶ χρυ- σίου τοῦ δοκιμωτάτου.

Cyrillus Theol., Commentarius in Isaiam prophetam Volume 70, page 969, line 57

Αἰγύπτιοι τοί- νυν, καὶ τὰ τῶν Αἰθιοπῶν ἐμπορεῖα, τοῦτ’ ἐστίν, αἱ Θηβαίων πόλεις, αἷς εἰσι πρόσκοικοί τε καὶ ἀγχιτέρμο- νες οἱ καλούμενοι Σαβαῖμ, τοῦτ’ ἐστίν, τὰ τῶν Αἰθιο- πῶν, ἡγουν τῶν Ἰνδῶν ἔθνη (τάχα που τὴν κλησὶν λαχόντες ὡς ἀπὸ γε τῆς Σαβᾶ τῆς βασιλευσάσης κατὰ καιροὺς τῆς αὐτῶν χώρας τε καὶ γῆς), ἐκοπίασαν, φησί· τὸ δὲ, Ἐκοπίασαν, διχῇ νοητέον· ἡ γὰρ ἐκεῖνο βούλεται δηλοῦν, ὅτι κεκμήκασιν οὐ φορητῶς, κατὰ γε τὸν τοῦ πλανᾶσθαι καιρὸν ὡμῶ τυράννῳ κατεζευ- γμένοι τῷ Σατανᾷ, καὶ ταῖς τῶν δαιμονίων ἀγέλαις δουλεύοντες ἐξαιτοῦντι θυσίας, καὶ αὐτὰ τὰ αὐτῶν γεννήματα, υἱοὺς τέ φημι καὶ θυγατέρας· ἡγουν ὅτι πάλαι μὲν ἦσαν δεινοὶ καὶ ἄθραυστοι, καὶ οἶον

ὑπ-

Cyrillus Theol., Commentarius in Isaiam prophetam Volume 70, page 972, line 28

τὸ] Χριστοῦ παρα- τείνει σέβας, καὶ μέχρις αὐτῶν τῶν Σαβαῖμ, ἥτοι τῶν Ἰνδικῶν ἐθνῶν.

Cyrillus Theol., Commentarius in Isaiam prophetam Volume 70, page 1072, line 14

Διὰ γὰρ τοῦτο τὴν Ἐκκλησίαν ἱματισμῷ διαχρύσω καὶ πε- ποικιλμένῳ κατακοσμεῖν ἔθος τῇ θεοπνεύστῳ Γραφῇ· ὅνπερ γὰρ αἱ πολυειδεῖς καὶ πολυτελέστατοι τῶν λίθων, φημί δὴ τῶν Ἰνδικῶν, χρυσοῖς κανόσιν ἐνισχημέναι, θαυμαστόν τι καὶ ἀξιοθέατον ἐπιτελοῦσι κόσμημα·

6.8. ACTA THOMAE

οὕτω καὶ αἱ τῶν ἁγίων ψυχαὶ τοῖς ἐξ ἀρετῶν αὐχήμασιν ἐξωραϊσμέναι, φαιδρὸν ἀποστίλβουσι κάλλος τοῖς τῆς Θεότητος ὀφθαλμοῖς, ὥστε καὶ ἕκαστον εὐχαριστοῦντα τῷ Χριστῷ λέγειν· Ἀγαλλιά-σθω ἡ ψυχὴ μου ἐπὶ τῷ Κυρίῳ.

Cyrillus Theol., Commentarius in Isaiam prophetam Volume 70, page 1329, line 21

Γονιμωτάτη δὲ ἡ χώρα λιβανωτοῦ, χρυσοῦ τε καὶ λίθων τῶν Ἰνδικῶν.

Cyrillus Theol., Commentarius in Isaiam prophetam Volume 70, page 1332, line 40

Θαρ-σεῖς δὲ ἡ θεία Γραφὴ τὰς Ἰνδικὰς ὀνομάζει πλειστα-χοῦ· φασὶ δὲ εἶναι καὶ ἐν τῇ Κύπρῳ Θαρσεῖς πόλιν ὠνομασμένην.

Cyrillus Theol., Commentarius in Isaiam prophetam Volume 70, page 1332, line 43

Οὐκοῦν ἐπειδήπερ αἱ τε νῆσοι, φησί, καὶ οἱ ἐκ τῆς Ἰνδῶν ἤκοντες χώρας ἐμὲ ὑπέμειναν, τουτέστιν, ὑπέστησαν τὸν ἐπενεχθέντα αὐτοῖς παρ' ἐμοῦ ζυγόν, διὰ τοῦτο συρρέει πανταχόθεν ἡ τῶν πι-στευόντων πληθύς.

Cyrillus Theol., Commentarius in Isaiam prophetam Volume 70, page 1369, line 44

Ἐκάστην γὰρ ἁγίαν ψυχὴν, καὶ συλλήβδην τὴν Ἐκκλησίαν, τουτέστι, τὰ τῶν ἁγίων συστήματα, στεφάνῳ παρειαστέον ἐκ πολλῶν ἀνθρώπων συντεθει-μένῳ, ἡγουν διαδήματι βασιλικῷ, λίθοις Ἰνδικοῖς ἐκλάμποντι, καὶ πολυειδῶς ἔχοντι τὸ διαπρεπές· πλεῖστα δὲ ὅσα καὶ τὰ τῶν ἁγίων ἀνδραγαθήματα, καὶ οὐχ εἰς μᾶλλον τῶν αὐχημάτων ὁ τρόπος, πολὺς δὲ καὶ διάφορος.

6.8 Acta Thomae

The early 3rd-century text called Acts of Thomas is one of the New Testament apocrypha, portraying Christ as the "Heavenly Redeemer", independent of and beyond creation, who can free souls from the darkness of the world. References to the work by Epiphanius of Salamis show that it was in circulation in the 4th century. The complete versions that survive are Syriac and Greek. There are many surviving fragments of the text. Scholars detect from the Greek that its original was written in Syriac, which places the Acts of Thomas in Syria. The surviving Syriac manuscripts, however, have been edited to purge them of the most unorthodox overtly gnostic passages, so that the Greek versions reflect the earlier tradition.

Acts of Thomas is a series of episodic Acts (Latin *passio*) that occurred during the evangelistic mission of Judas Thomas ("Judas the Twin") to India. It ends with his martyrdom: he dies pierced with spears, having earned the ire of the monarch Misdaeus (Vasudeva I) because of his conversion of Mis-

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

daeus' wives and a relative, Charisius. He was imprisoned while converting Indian followers won through the performing of miracles.

Summary: The Acts of Thomas[1][2] connects Thomas, the apostle's Indian ministry with two kings, one in the north and the other in the south. According to one of the legends in the Acts, Thomas was at first reluctant to accept this mission, but the Lord appeared to him in a night vision and said, "Fear not, Thomas. Go away to India and proclaim the Word, for my grace shall be with you." But the Apostle still demurred, so the Lord overruled the stubborn disciple by ordering circumstances so compelling that he was forced to accompany an Indian merchant, Abbanes, to his native place in northwest India, where he found himself in the service of the Indo-Parthian king Gundaphorus. The apostle's ministry resulted in many conversions throughout the kingdom, including the king and his brother.[1]

According to the legend, Thomas was a skilled carpenter and was bidden to build a palace for the king. However, the Apostle decided to teach the king a lesson by devoting the royal grant to acts of charity and thereby laying up treasure for the heavenly abode. Although little is known of the immediate growth of the church, Bar-Daisan (154–223) reports that in his time there were Christian tribes in North India which claimed to have been converted by Thomas and to have books and relics to prove it.[2] But at least by the year of the establishment of the Second Persian Empire (226), there were bishops of the Church of the East in northwest India, Afghanistan and Baluchistan, with laymen and clergy alike engaging in missionary activity.[3]

The Acts of Thomas identifies his second mission in India with a kingdom ruled by King Mahadeva, one of the rulers of a 1st-century dynasty in southern India. It is most significant that, aside from a small remnant of the Church of the East in Kurdistan, the only other church to maintain a distinctive identity is the Mar Thoma or "Church of Thomas" congregations along the Malabar Coast of Kerala State in southwest India. According to the most ancient tradition of this church, Thomas evangelized this area and then crossed to the Coromandel Coast of southeast India, where, after carrying out a second mission, he died in Mylapore near Madras. Throughout the period under review, the church in India was under the jurisdiction of Edessa, which was then under the Mesopotamian patriarchate at Seleucia-Ctesiphon and later at Baghdad and Mosul. Historian Vincent A. Smith says, "It must be admitted that a personal visit of the Apostle Thomas to South India was easily feasible in the traditional belief that he came by way of Socotra, where an ancient Christian settlement undoubtedly existed. I am

6.8. ACTA THOMAE

now satisfied that the Christian church of South India is extremely ancient...".[4]

Although there was a lively trade between the Near East and India via Mesopotamia and the Persian Gulf, the most direct route to India in the 1st century was via Alexandria and the Red Sea, taking advantage of the Monsoon winds, which could carry ships directly to and from the Malabar coast. The discovery of large hoards of Roman coins of 1st-century Caesars and the remains of Roman trading posts testify to the frequency of that trade. In addition, thriving Jewish colonies were to be found at the various trading centers, thereby furnishing obvious bases for the apostolic witness.

Piecing together the various traditions, one may conclude that Thomas left northwest India when invasion threatened and traveled by vessel to the Malabar coast, possibly visiting southeast Arabia and Socotra en route and landing at the former flourishing port of Muziris on an island near Cochin (c. AD 51–52). From there he is said to have preached the gospel throughout the Malabar coast, though the various churches he founded were located mainly on the Periyar River and its tributaries and along the coast, where there were Jewish colonies. He reputedly preached to all classes of people and had about seventeen thousand converts, including members of the four principal castes. Later, stone crosses were erected at the places where churches were founded, and they became pilgrimage centres. In accordance with apostolic custom, Thomas ordained teachers and leaders or elders, who were reported to be the earliest ministry of the Malabar church. (From Wikipedia⁷)

Acta Thomae, Acta Thomae (2038: 001) "Acta apostolorum apocrypha, vol. 2.2", Ed. Bonnet, M. Leipzig: Mendelssohn, 1903, Repr. 1972. Section 1, line 9

κατὰ κλήρον οὖν ἔλαχεν ἡ Ἰνδία Ἰούδα Θωμᾶ τῷ καὶ Διδύμῳ· οὐκ ἐβούλετο δὲ ἀπελθεῖν, λέγων μὴ δύνασθαι μήτε χωρεῖν διὰ τὴν ἀσθένειαν τῆς σαρκός, καὶ ὅτι Ἄνθρωπος ὢν Ἑβραῖος πῶς δύναμαι πορευθῆναι ἐν τοῖς Ἰνδοῖς κηρύττειν τὴν ἀλήθειαν;

Acta Thomae, Acta Thomae Section 1, line 15

Καὶ ταῦτα αὐτοῦ διαλογιζομένου καὶ λέγοντος ὤφθη αὐτῷ ὁ σωτὴρ διὰ τῆς νυκτός, καὶ λέγει αὐτῷ· Μὴ φοβοῦ Θωμᾶ, ἀπελθε εἰς τὴν Ἰνδίαν καὶ κήρυξον ἐκεῖ τὸν λόγον· ἡ γὰρ χάρις μου ἐστὶν μετὰ σοῦ.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 1, line 18

Ὁ δὲ οὐκ ἐπείθετο, λέγων· Ὅπου βούλει με ἀποστείλαι ἀπόστειλον ἀλλαχοῦ· εἰς Ἰνδοὺς γὰρ οὐκ ἀπέρχομαι.

7. http://en.wikipedia.org/wiki/Acts_of_Thomas

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Acta Thomae, Acta Thomae Section 2, line 2

Καὶ ταῦτα αὐτοῦ λέγοντος καὶ ἐνθυμουμένου ἔτυχεν ἔμπορόν τινα εἶναι ἐκεῖ ἀπὸ τῆς Ἰνδίας ἐλθόντα ᾧ ὄνομα Ἀββάνης, ἀπὸ τοῦ βασιλέως Γουνδαφόρου ἀποσταλέντα καὶ ἐντολὴν παρ' αὐτοῦ εἰληφότα τέκτονα πριάμενον ἀγαγεῖν αὐτῷ.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 2, line 13

Καὶ ταῦτα εἰπὼν ὑπέ- δειξεν αὐτῷ τὸν Θωμᾶν ἀπὸ μακρόθεν, καὶ συνεφώνησεν μετ' αὐτοῦ τριῶν λιτρῶν ἀσήμου, καὶ ἔγραψεν ὠνὴν λέγων· Ἐγὼ Ἰησοῦς υἱὸς Ἰωσήφ τοῦ τέκτονος ὁμολογῶ πεπρακέναι ἐμὸν δούλον Ἰούδαν ὀνόματι σοὶ τῷ Ἀββάνῃ ἐμπόρῳ Γουνδα- φόρου τοῦ βασιλέως τῶν Ἰνδῶν.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 16, line 19

πολλοὶ δὲ καὶ τῶν ἀδελφῶν συνηθροίζοντο ἐκεῖ, ἕως ὅτε φήμης ἤκουσαν τοῦ ἀποστόλου, ὅτι ἐν ταῖς πόλεσιν τῆς Ἰνδίας κατήχθη καὶ ἐκεῖ διδάσκει.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 17, line 2

Ὅτε δὲ εἰσῆλθεν ὁ ἀπόστολος εἰς τὰς πόλεις τῆς Ἰν- δίας μετὰ Ἀββάνῃ τοῦ ἐμπόρου, ἀπῆλθεν ὁ Ἀββάνης εἰς ἀσπασμὸν Γουνδαφόρου τοῦ βασιλέως, προσανήνεγκεν δὲ αὐτῷ περὶ τοῦ τέκτονος ὃν μετ' αὐτοῦ ἤγαγεν.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 39, line 10

διαλεγόμενου τῷ πλήθει πῶλος ὀνάδος ἦλθεν καὶ ἔστη ἔμ- προσθεν αὐτοῦ, καὶ ἀνοίξας τὸ στόμα αὐτοῦ εἶπεν· Ὁ δίδυμος τοῦ Χριστοῦ, ὁ ἀπόστολος τοῦ ὑψίστου καὶ συμμύστης τοῦ λόγου τοῦ Χριστοῦ τοῦ ἀποκρύφου, ὁ δεχόμενος αὐτοῦ τὰ ἀπόκρυφα λόγια, ὁ συνεργὸς τοῦ υἱοῦ τοῦ θεοῦ, ὃς ἐλεύθερος ὢν γέγονας δούλος καὶ πραθεὶς πολλοὺς εἰς ἐλευθερίαν εἰσή- γαγες· ὁ συγγενὴς τοῦ μεγάλου γένους τοῦ τὸν ἐχθρὸν κατα- δικάσαντος καὶ τοὺς ἰδίους λυτρωσαμένου, ὁ πρόφασις τῆς ζωῆς πολλοῖς γενόμενος ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἰνδῶν· ἦλθες γὰρ πρὸς τοὺς πλανωμένους ἀνθρώπους, καὶ διὰ τῆς σῆς ἐπιφα- νείας καὶ τῶν λόγων σου τῶν θεϊκῶν νῦν ἐπιστρέφονται πρὸς τὸν ἀποστείλαντά σε θεὸν τῆς ἀληθείας· ἀνελθὼν ἐπικαθέ- σθητί μοι καὶ ἀναπάθῃ ἕως ἂν εἰς τὴν πόλιν εἰσέλθῃς.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 42, line 7

γυνὴ δὲ τις πάνν ὥραία αἰφνιδίως φωνὴν ἀφῆκε μεγίστην λέγουσα· Ἀπόστολε τοῦ νέου θεοῦ ὁ ἐλθὼν εἰς τὴν Ἰνδίαν, καὶ δούλε τοῦ ἀγίου ἐκείνου καὶ μόνου ἀγαθοῦ θεοῦ· διὰ σοῦ γὰρ οὗτος κηρύσσεται ὁ σωτὴρ τῶν ψυχῶν τῶν πρὸς αὐτὸν ἐρχομένων, καὶ διὰ σοῦ ἰατρεύεται τὰ σώματα τῶν ὑπὸ τοῦ ἐχθροῦ κολαζομένων, καὶ σὺ εἶ ὁ γεγονὼς πρόφασις τῆς ζωῆς πάντων τῶν ἐπ' αὐτὸν ἐπιστρέφόντων· κέλευσόν με ἀχθῆναι ἔμπροσθέν σου ἵνα σοὶ ἀφηγήσωμαι τὰ συμβάντα μοι καὶ τάχα ἐκ σοῦ γένηταί μοι ἐλπίς, καὶ οὗτοι δὲ οἱ παρεστῶτές σοι εὐέλπιδες γένωνται μᾶλλον εἰς τὸν θεὸν ὃν κηρύσσεις.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 62, line 2

Τοῦ δὲ ἀποστόλου Ἰούδα Θωμᾶ καταγγέλλοντος ἐν πάσῃ τῇ Ἰνδίᾳ τὸν λόγον τοῦ θεοῦ στρατηλάτης τις τοῦ βασιλέως Μισδαίου ἦλθεν πρὸς αὐτόν, καὶ ἔλεγεν αὐτῷ· Ἀκήκοα περὶ σοῦ ὅτι μισθὸν παρά τινος οὐ λαμβάνεις, ἀλλ' ὅπερ καὶ ἔχεις τοῖς δεομένοις παρέχεις· εἰ γὰρ

6.8. ACTA THOMAE

μισθούς ἐλάμβανες, ἀπέστειλα ἂν χρῆμα ἱκανόν, καὶ αὐτὸς ἐνθάδε οὐ παρεγενόμην· ὁ γὰρ βασιλεὺς ἐκτὸς ἐμοῦ οὐδὲν διαπράττεται· πολλὰ γὰρ ὑπάρχοντά μοί εἰσιν καὶ πλούσιός εἰμι, εἰς τῶν πλουτούντων ἐν τῇ Ἰνδία· καὶ οὐδ' ὅλως ἠδίκησά ποτέ τινα· τὸ δὲ ἐναντίον μοι συνέβη· γαμετὴν ἔχω, καὶ ἔσχον ἐξ αὐτῆς θυγατέρα, καὶ πάνυ διάκειμαι πρὸς αὐτήν, ὥς καὶ ἡ φύσις

Acta Thomae, Acta Thomae Section 101, line 8

Ὁ δὲ Χαρίσιος λέγει πρὸς τὸν βασιλέα· Καινὸν σοι ἔχω ὑφηγήσασθαι πρᾶγμα καὶ ἐρημίαν νέαν, ἣν Σιφῶρ ἤγαγεν ἐν τῇ Ἰνδία, ἄνδρα τινὰ Ἑβραῖον μάγον, ὃν ἔχει κα- θεζόμενον ἐν τῷ ἰδίῳ οἴκῳ, ὃς οὐκ ἀφίσταται αὐτοῦ· πολλοὶ δὲ εἰσιν οἱ εἰσιόντες πρὸς αὐτόν· οὗς καὶ διδάσκει νέον θεὸν καὶ νόμους νέους ἐντίθησιν αὐτοῖς τοὺς μὴ πῶ ἀκουσθέντας, λέγων· Ἀδύνατόν ἐστιν ὑμᾶς εἰς τὴν αἰώνιον ζωὴν εἰσελθεῖν ἢ ἐγὼ καταγγέλλω ὑμῖν, ἐὰν μὴ ἀπαλλαγῇτε ὑμεῖς τῶν ἰδίων γυναικῶν, ὁμοίως καὶ αἱ γυναῖκες τῶν ἰδίων ἀνδρῶν.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 108, line 10

προσευξάμενος δὲ καὶ καθεστείς ἤρξατο λέγειν ψαλμὸν τοιοῦτον· Ὅτε ἤμην βρέφος ἄλλαν ἐν τοῖς τοῦ πατρός μου βασιλείοις ἐν πλούτῳ καὶ τρυφῇ τῶν τροφῶν ἀναπαυόμενος, ἐξ Ἀνατολῆς τῆς πατρίδος ἡμῶν ἐφοδιάσαντές με οἱ γονεῖς ἀπέστειλάν με· ἀπὸ δὲ πλούτου τῶν θησαυρῶν τούτων φόρτον συνέθηκαν μέγαν τε καὶ ἐλαφρόν, ὅπως αὐτὸν μόνος βαστάσαι δύνηθῶ· χρυσὸς ἐστὶν ὁ φόρτος τῶν ἄνω, καὶ ἄσημος τῶν μεγάλων θησαυρῶν, καὶ λίθοι ἐξ Ἰνδῶν οἱ χαλκεδόνιοι, καὶ μαργαρίται ἐκ Κοσάνων· καὶ ὥπλισάν με τῷ ἀδάμαντι· καὶ ἐνέδυσάν με ἐσθῆτα διάλιθον χρυσοπάστον, ἣν ἐποίησαν στέργοντές με, καὶ στολὴν τὸ χρῶμα ξανθὴν πρὸς τὴν ἐμὴν ἡλικίαν.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 116, line 4

Λέγοντος δὲ τοῦ Χαρισίου ταῦτα μετὰ δακρύων ἐκαθέζετο ἡ Μυγδονία σιωπῶσα καὶ εἰς τὸ ἔδαφος ἀφορῶσα· ὁ δὲ αὐθις προσελθὼν εἶπεν· Κυρία μου ποθεινοτάτῃ Μυγ- δονία, ὑπομνήσθητι ὅτι σὲ ἐκ πάντων τῶν ἐν τῇ Ἰνδία γυ- ναικῶν ὥς καλλίστην ἐπελεξάμην καὶ ἔλαβον, δυνηθεῖς ἑτέρας πολλῶ σου καλλίῳ εἰς γάμον συνάψαι ἐμαυτῷ.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 116, line 8

μᾶλλον δὲ ψεύδομαι Μυγδονία· μὰ τοὺς γὰρ θεοὺς οὐκ ἂν ἔσται ἑτέραν κατὰ σὲ ἐν τῇ τῶν Ἰνδῶν εὐρεθῆναι χώρα· οὐαὶ δέ μοι διὰ παντός, ὅτι οὐδὲ λόγῳ ἀμείψασθαι θέλεις· ὕβριζε δέ μοι εἰ δοκεῖ σοι, ἵνα λόγον μόνον παρὰ σοῦ κατα- ξιωθῶ.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 117, line 26

μὴ οὖν ἀντὶ μηδενὸς θῆς τοὺς ἐμούς λόγους καὶ ποιήσης με ὄνειδος ἐν τοῖς Ἰνδοῖς.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 123, line 4

Ὁ δὲ Χαρίσιος ἅμα ἔωθεν πρὸς τὴν Μυγδονίαν ἤρχετο· εὗρεν δὲ αὐτὰς εὐχομένας καὶ λε- γούσας· Νέε θεὲ ὃς ἤλθες διὰ τοῦ ξένου εἰς ἡμᾶς ὦδε· θεὲ ἐναπόκρυφε τῆς τῶν ἐν Ἰνδία οἰκητόρων· ὁ θεὸς ὁ δέϊξας τὴν σὴν δόξαν διὰ τοῦ ἀποστόλου σου Θωμᾶ· ὁ θεὸς οὗ τῆς φήμης ἀκούσασαι εἰς σὲ ἐπιστεύσαμεν· ὁ θεὸς πρὸς ὃν ἤλθομεν σωθῆναι· ὁ θεὸς ὁ διὰ φιλανθρωπίαν καὶ οἰκτιρμῶν κατελθὼν πρὸς τὴν ἡμετέραν σμικρότητα· ὁ θεὸς ὁ ἐπιζητήσας ἡμᾶς ὅτε αὐτὸν ἠγνοοῦμεν· ὁ

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

θεός ὁ τὰ ὕψη ἔχων καὶ τὰ βάθη μὴ λανθάνων· σὺ ἀπόστρεψον τὴν μανίαν Χαρισίου ἀφ' ἡμῶν.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 134, line 7

Μισδαῖος δὲ ὁ βασιλεὺς ἀπολύσας Ἰούδαν δειπνήσας ἀπῆει οἴκαδε, διηγείτο δὲ τῇ γυναικὶ τὰ συμβεβηκότα τῷ οἰκείῳ αὐτῶν Χαρισίῳ λέγων· Ὁρα φησὶν τί γέγονεν ἐν τῷ ἀθλίῳ ἐκείνῳ· οἶδας δὲ καὶ αὐτὴ ὡς ἀδελφὴ μου Τερτία ὅτι οὐδὲν ἐστὶν ἀνδρὶ καλλίῳ τῆς γυναικὸς τῆς ἰδίας ἐφ' ἣν ἀναπέπαυται· συνέβη δὲ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ ἀπελθεῖν πρὸς τὸν φαρμακὸν ἐκεῖνον ὃν ἤκουσας τῇ Ἰνδῶν ἐπιδημήσαντα χώρα, τοῖς αὐτοῦ περιπεσεῖν φαρμάκοις καὶ τοῦ ἰδίου ἀνδρὸς δια- ζευχθῆναι· καὶ ἀπορεῖ ὁ πράξειεν.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 136, line 8

Ἡ δὲ Μυγδονία λέγει αὐτῇ· Ἐν τῷ οἴκῳ ἐστὶν Σιφόρου τοῦ στρατηλάτου· καὶ γὰρ αὐτὸς γέγονεν πρόφασις πᾶσιν τοῖς ἐν τῇ Ἰνδίᾳ σφζομένοις.

Acta Thomae, Acta Thomae Section 171, line 2

Ἐπληρώθησαν αἱ πράξεις Ἰούδα Θωμᾶ τοῦ ἀποστόλου ὃς ἔπραξεν εἰς τὴν Ἰνδῶν, πληρῶν τὸ πρόσταγμα τοῦ πέμψαντος αὐτόν· ὃ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων.

Acta Thomae, Carmen animae (De margarita) (cod. Rom. vallicellanus B 35) (2038: 002) “L’hymne de la perle des actes de Thomas”, Ed. Poirier, P.-H. Louvain-La-Neuve: Université Catholique de Louvain, 1981; Homo religiosus 8. Line 7

μου βασιλείοις ἐν πλούτῳ καὶ τρυφῇ τῶν τροφῶν ἀναπαυόμενος ἐξ Ἀνατολῆς τῆς πατρίδος ἡμῶν ἐφοδιάσαντές με οἱ γονεῖς ἀπέστειλάν με· ἀπὸ δὲ πλούτου τῶν θησαυρῶν τούτων φόρτον συνέθηκαν μέγαν τε καὶ ἐλαφρόν ὅπως αὐτόν μόνος βαστάσαι δυνηθῶ· χρυσός ἐστιν ὁ φόρτος τῶν ἄνω καὶ ἄσημος τῶν μεγάλων θησαυρῶν καὶ λίθοι ἐξ Ἰνδῶν οἱ χαλκεδόνιοι καὶ μαργαρίται ἐκ Κοσάνων· καὶ ὥπλισάν με τῷ ἀδάμαντι· καὶ <ἐξέδυσάν> με ἐσθῆτα διάλιθον χρυσόπαστον * ἣν ἐποίησαν στέργοντές με καὶ στολὴν τὸ χρῶμα ξανθὴν πρὸς τὴν ἐμὴν ἡλικίαν· σύμφωνα δὲ πρὸς ἐμὲ πεποιήκασιν ἐγκαταγράψαντες τῇ διανοίᾳ μου <τοῦ μὴ> ἐπιλαθέσθαι με· ἔφησάν τε· ἐὰν κατελθὼν εἰς Αἴγυπτον κομίσης ἐκεῖθεν τὸν ἕνα μαργαρίτην

Acta Thomae, Acta Thomae (recensio) (2038: 004) “Acta apostolorum apocrypha, vol. 2.2”, Ed. Bonnet, M. Leipzig: Mendelssohn, 1903, Repr. 1972. Section 16, line 14

μετὰ δὲ χρόνον ἤκουσαν περὶ τοῦ ἀποστόλου ὅτι ἐν Ἰνδίᾳ ἐστὶν καὶ διδάσκει· καὶ ἀπελθόντες ἐβαπτίσθησαν ἀμφοτέρω.

Acta Thomae, Acta Thomae (recensio) Section 16, line 17t

Πράξεις τοῦ ἁγίου ἀποστόλου Θωμᾶ ὅτε εἰσῆλθεν ἐν τῇ Ἰνδίᾳ καὶ τὸ ἐν οὐρανοῖς παλάτιον ὠκοδόμησεν.

Acta Thomae, Acta Thomae (recensio) Section 17, line 1

Ὅτε δὲ εἰσῆλθεν ὁ ἀπόστολος ἐν τῇ Ἰνδίᾳ μετὰ Ἀβ- βάνη τοῦ ἐμπόρου, εὐθέως ἀνήγαγεν τῷ βασιλεῖ περὶ τοῦ οἰκοδόμου· ὁ δὲ βασιλεὺς χαρᾶς πλησθεὶς ἐκέλευσεν εἰσελθεῖν τὸν Θωμᾶν.

6.9. PSEUDO-NONNUS

6.9 Pseudo-Nonnus

? (From Wikipedia⁸)

Pseudo-Nonnus, Scholia mythologica (3127: 001) “Pseudo-Nonniani in iv orationes Gregorii Nazianzeni commentarii”, Ed. Nimmo Smith, J. Turnhout: Brepols, 1992; Corpus Christianorum. Series Graeca 27. Oration 4, historia 74, line 3

Πᾶσα πόλις κατ’ ἐξαίρετόν τι εἶχεν ἰδίωμα, οἷον ἡ Θετταλῶν χώρα ἔσχε τοὺς ἵππους, ἡ Ἀθηναίων τὰ μέταλλα τοῦ ἀργύρου, ἡ Ἰνδία τὴν χρυσίδα ψάμμον, ὁμοίως καὶ ἡ Λακεδαιμόνων κύνες θηρευτικούς (ἐνθεν καὶ οἱ Λακωνικοὶ κύνες) καὶ γυναῖ- κας ἀνδρείας καὶ ἀπτοήτους.

6.10 Joannes Malalas

John Malalas or Ioannes Malalas (or Malelas) (Greek: Ἰωάννης Μαλάλας) (c. 491 – 578) was a Greek chronicler from Antioch. Malalas is probably a Syriac word for “rhetor”, “orator”; it is first applied to him by John of Damascus (the form Malelas is later, first appearing in Constantine VII).[1]

He wrote a Chronographia (Χρονογραφία) in 18 books, the beginning and the end of which are lost. In its present state it begins with the mythical history of Egypt and ends with the expedition to Roman Africa under the tribune Marcianus, Justinian’s nephew, in 563 (his editor Thurn believes it originally ended with Justinian’s death[4]); it is focused largely on Antioch and (in the later books) Constantinople. Except for the history of Justinian and his immediate predecessors, it possesses little historical value; the author, “relying on Eusebius of Caesarea and other compilers, confidently strung together myths, biblical stories, and real history.”[5] The eighteenth book, dealing with Justinian’s reign, is well acquainted with, and colored by, official propaganda. The writer is a supporter of Church and State, an upholder of monarchical principles. (However, the theory identifying him with the patriarch John Scholasticus is almost certainly incorrect.[6]) (From Wikipedia⁹)

8.

9. http://en.wikipedia.org/wiki/Joannes_Malalas

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia (2871: 001) “Ioannis Malalae chronographia”, Ed. Dindorf, L. Bonn: Weber, 1831; Corpus scriptorum historiae Byzantinae. Page 42, line 5

ὅστις καὶ πρὸς Πέρσας καὶ πρὸς Ἰνδοὺς καὶ εἰς πολλὰς χώρας ἀπῆλθε, καὶ πολεμῶν φαντασίας τινὰς θαυμάτων ἐδείκνυνεν, ἔχων καὶ στρατὸν μεθ’ αὐτοῦ πολύν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 127, line 10

Μετὰ δὲ ὀλίγας ἡμέρας ὁ Τιθὼν τις ὀνόματι ὑπὸ τοῦ Πριά-μου παρακληθεὶς παραγίνεται, ἄγων Ἰνδοὺς ἐφίππους καὶ πεζοὺς καὶ Φοίνικας μαχιμωτάτους μετ’ αὐτῶν καὶ τὸν βασιλέα αὐτῶν Πολυδάμαντα.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 127, line 14

καὶ διὰ ναυτικοῦ στόλου ἦλθον πολλοὶ Ἰνδοὶ καὶ οἱ αὐτῶν βασιλεῖς· ἐδιωκοῦντο δὲ τασσό-μενοι πάντες οἱ βασιλεῖς καὶ πᾶς ὁ στρατὸς ὑπὸ τοῦ δυνατοῦ Μέμνονος, βασιλέως Ἰδῶν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 128, line 14

καὶ πρὶν ἢ ἥλιον ἀνελθεῖν ἐξερχόμεθα οἱ Ἕλληνες ὀπλισάμενοι πάν-τες, ὁμοίως δὲ καὶ οἱ Τρῶες καὶ ὁ Μέμνων, βασιλεὺς Ἰδῶν, καὶ πάντα τὰ πλήθη αὐτῶν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 128, line 17

καὶ συμβολῆς γενομένης καὶ πολ-λῶν πεσόντων, ὁ ἐμὸς ἀδελφὸς Αἴας κελεύσας τοῖς βασιλεῦσι τῶν Ἑλλήνων τοὺς ἄλλους ἀμύνασθαι Ἰνδοὺς καὶ Τρῶας, ὁρμᾷ κατὰ τοῦ Μέμνονος, βασιλέως Ἰδῶν, τοῦ ἥρωος Ἀχιλλέως, τοῦ σοῦ γενέτου, ὅπισθεν συνεπισχύοντος τῷ Αἴαντι, ἐαυτὸν ἀποκρύ-πτων.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 154, line 5

καὶ ἀθημονῶν ἠβούλετο φυγεῖν ἐπὶ τὴν Ἰνδικὴν χώραν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 194, line 13

παρέλαβε δὲ καὶ πάντα τὰ Ἰνδικὰ μέρη καὶ τὰ βασίλεια αὐτῶν ὁ αὐτὸς Ἀλέξανδρος, λαβὼν καὶ Πῶρον τὸν βασιλέα Ἰδῶν αἰχμάλωτον· καὶ τὰ ἄλλα πάντα τὰ τῶν ἐθνῶν βασίλεια δίχα τῆς βασιλείας τῆς Κανδάκης τῆς χήρας τῆς βασι-λευούσης τῶν ἐνδοτέρων Ἰδῶν· ἥτις συνελάβετο τὸν αὐτὸν Ἀλέξανδρον τῷ τρόπῳ τούτῳ.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 429, line 14

Ἐν δὲ τοῖς χρόνοις τούτοις, ὡς προεῖπον, ἐβασίλευσεν ὁ θεο-τατος Ἰουστινιανός, τῶν δὲ Περσῶν βασιλεὺς Κωάδης ὁ Δα-ράσθενης, ὁ υἱὸς Περόζου, ἐν δὲ Ρώμῃ Ἀλλάριχος, ἐκγονὸς τοῦ Οὐαλεμεριακοῦ, τῆς δὲ Ἀφρικῆς ῥῆξ Γιλδέριχ ὁ ἐκγονὸς Γινζι-ρίχου, τῶν δὲ Ἰδῶν Αὐξουμιτῶν ἐβασίλευσεν Ἄνδας ὁ γεγονὼς χριστιανός, τῶν δὲ Ἰβήρων Σαμαναζός.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 433, line 3

Ἐν αὐτῷ δὲ τῷ χρόνῳ συνέβη Ἰνδοὺς πολεμῆσαι πρὸς ἐαυ-τούς οἱ ὀνομαζόμενοι Αὐξουμιτῆται καὶ οἱ Ὀμηρίται· ἡ δὲ αἰτία τοῦ πολέμου αὕτη.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 433, line 9

οἱ δὲ πραγμα-τευταὶ Ῥωμαίων διὰ τῶν Ὀμηριτῶν εἰσέρχονται εἰς τὴν Αὐξού-μην καὶ ἐπὶ τὰ ἐνδότερα βασίλεια τῶν Ἰδῶν.

6.10. JOANNES MALALAS

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 433, line 9

εἰσὶ γὰρ Ἰνδῶν καὶ Αἰθιοπῶν βασιλεία ἐπτὰ, τρία μὲν Ἰνδῶν, τέσσαρα δὲ Αἰ- θιοπῶν, τὰ πλησίον ὄντα τοῦ Ὠκεανοῦ ἐπὶ τὰ ἀνατολικά μέρη.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 434, line 10

Καὶ μετὰ τὴν νίκην ἔπεμψε συγκλητικούς αὐτοῦ δύο καὶ μετ' αὐτῶν διακοσίους ἐν Ἀλε- ξανδρείᾳ, δεόμενος τοῦ βασιλέως Ἰουστινιανοῦ ὥστε λαβεῖν αὐτὸν ἐπίσκοπον καὶ κληρικούς καὶ κατηχηθῆναι καὶ διδαχθῆναι τὰ χριστιανῶν μυστήρια καὶ φω-τισθῆναι καὶ πᾶσαν τὴν Ἰνδικὴν χώραν ὑπὸ Ῥωμαίους γενέσθαι.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 434, line 14

καὶ ἐπελέξαντο οἱ αὐ- τοὶ πρεσβευταὶ Ἰνδοὶ τὸν παραμονάριον τοῦ ἁγίου Ἰωάννου τοῦ ἐν Ἀλεξανδρείᾳ, ἄνδρα εὐλαβῆ, παρθένον, ὀνόματι Ἰωάννην, ὄντα ἐνιαυτῶν ὡς ἐξήκοντα δύο.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 434, line 18

καὶ λαβόντες τὸν ἐπίσκοπον καὶ τοὺς κληρικούς, οὓς αὐτὸς ἐπελέξατο, ἀπήγαγον εἰς τὴν Ἰνδικὴν χώραν πρὸς Ἄνδαν τὸν βασιλέα αὐτῶν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 434, line 22

ὁ δὲ Ἀρέθας φοβηθεὶς εἰσῆλθεν εἰς τὸ ἐνδότερον λίμιτον ἐπὶ τὰ Ἰνδικά.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 435, line 9

καὶ εὐθέως ἀπελθόντες Ἀρέθας ὁ φύλαρχος καὶ Γνούφας καὶ Νααμὰν καὶ Διονύσιος ὁ δούξ Φοινίκης καὶ Ἰωάννης ὁ τῆς Εὐφρατησίας καὶ Σεβαστιανὸς ὁ χιλιάρχος μετὰ τῆς στρατιω- τικῆς βοηθείας· καὶ μαθὼν Ἀλαμούνδαρος ὁ Σα- ρακηνὸς ἔφυγεν εἰς τὰ Ἰνδικὰ μέρη μεθ' ἧς εἶχε βοηθείας Σα- ρακηνικῆς.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 444, line 9

Ἐν δὲ τῷ αὐτῷ χρόνῳ ἀνεφάνη ἐν τοῖς Περσικοῖς μέρεσι δόγμα Μανιχαϊκόν· καὶ μαθὼν ὁ τῶν Περσῶν βασιλεὺς ἡγα- νάκτησεν· ὡσαύτως δὲ καὶ οἱ ἀρχιμάγοι τῶν Περσῶν· ἦσαν γὰρ ποιήσαντες οἱ αὐτοὶ Μανιχαῖοι καὶ ἐπίσκοπον, ὀνόματι Ἰν- δαράζαρ.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 447, line 12

ἔλαβε δὲ καὶ ὁ φύλαρχος Σαρακηνὸς ὁ τῶν Ῥωμαίων παιῖδαν ἐξ αὐτῶν χιλιάδας εἴκοσι παίδων καὶ κορασίων· οὓς- τινες λαβὼν αἰχμαλώτους ἐπώλησεν ἐν τοῖς Περσικοῖς καὶ Ἰνδικοῖς μέρεσιν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 457, line 3

Ὁ δὲ βασιλεὺς Ῥωμαίων ἀκούσας παρὰ τοῦ πατρικίου Ῥου- φίνου τὴν παρὰ Κωάδου, βασιλέως Περσῶν, παράβασιν, ποιήσας θείας κελεύσεις κατέπεμψε πρὸς τὸν βασιλέα τῶν Αὐξουμιτῶν· ὅστις βασιλεὺς Ἰνδῶν συμβολὴν ποιήσας μετὰ τοῦ βασιλέως τῶν Ἀμεριτῶν Ἰν- δῶν, κατὰ κράτος νικήσας παρέλαβε τὰ βασιλεία αὐτοῦ καὶ τὴν χώραν αὐτοῦ πᾶσαν, καὶ ἐποίησεν ἀντ' αὐτοῦ βα- σιλέα τῶν Ἀμεριτῶν Ἰνδῶν ἐκ τοῦ ἰδίου γένους Ἀγγάνην διὰ τὸ εἶναι καὶ τὸ τῶν Ἀμεριτῶν Ἰνδῶν βασιλεῖον ὑπ' αὐτόν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 457, line 9

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

καὶ ἀποπλεύσας ὁ πρεσβευτὴς Ῥωμαίων ἐπὶ Ἀλεξάνδρειαν διὰ τοῦ Νείλου ποταμοῦ καὶ τῆς Ἰνδικῆς θαλάσσης κατέφθασε τὰ Ἰνδικὰ μέρη.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 457, line 10

καὶ εἰσελθὼν παρὰ τῷ βασιλεῖ τῶν Ἰνδῶν, μετὰ χαρᾶς πολλῆς ἐξενίσθη ὁ βασιλεὺς Ἰνδῶν, ὅτι διὰ πολλῶν χρόνων ἤξιώ- θη μετὰ τοῦ βασιλέως Ῥωμαίων κτήσασθαι φιλίαν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 457, line 13

ὥς δὲ ἐξηγήσατο ὁ αὐτὸς πρεσβευτὴς, ὅτε ἐδέξατο αὐτὸν ὁ τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς, ὑφηγήσατο τὸ σχῆμα τῆς βασιλικῆς τῶν Ἰνδῶν κατα- στάσεως ὅτι γυμνὸς ὑπῆρχε καὶ κατὰ τοῦ ζώσματος εἰς τὰς ψύας αὐτοῦ λινόχρυσά ἱμάτια, κατὰ δὲ τῆς γαστρὸς καὶ τῶν ὤμων φορῶν σχαστὰς διὰ μαργαριτῶν καὶ κλαβία ἀνὰ πέντε καὶ χρυσᾶ ψέλια εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ, ἐν δὲ τῇ κεφαλῇ αὐτοῦ λινό- χρυσον φακιόλιν ἐσφενδονισμένον, ἔχον ἐξ ἀμφοτέρων τῶν μερῶν σειρὰς τέσσαρας, καὶμανιάκιν χρυσοῦν ἐν τῷ τραχήλῳ αὐτοῦ, καὶ ἴστατο ὑπεράνω τεσσάρων ἐλεφάντων ἐχόντων ζυγὸν καὶ τροχοὺς δ', καὶ ἐπάνω, ὥς ὄχημα ὑψηλὸν ἡμφιεσμένον χρυσεῖς

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 458, line 1

καὶ ἴστατο ἐπάνω ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰνδῶν βαστάζων σκουτάριον μικρὸν κεχρυσωμένον καὶ δύο λαγκίδια καὶ αὐτὰ κεχρυσωμένα κατέχων ἐν ταῖς χερσίν αὐτοῦ.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 458, line 7

Καὶ εἰσενεχθεὶς ὁ πρεσβευτὴς Ῥωμαίων, κλίνας τὸ γόνυ προσεκύνησε· καὶ ἐκέλευσεν ὁ βασιλεὺς Ἰνδῶν ἀναστῆναί με καὶ ἀναχθῆναι πρὸς αὐτόν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 458, line 15

λύσας δὲ καὶ ἀναγνοὺς δι' ἐρμηνέως τὰ γράμματα, εὔρε περιέχοντα ὥστε ὀπλίσασθαι αὐτόν κατὰ Κωάδου, βασιλέως Περσῶν, καὶ τὴν πλησιάζουσιν αὐτῷ χώραν ἀπολέσαι καὶ τοῦ λοιποῦ μηκέτι συν- ἀλλαγῆναι ποιῆσαι μετ' αὐτοῦ, ἀλλὰ δι' ἧς ὑπέταξε χάρας τῶν Ἀμεριτῶν Ἰνδῶν διὰ τοῦ Νείλου ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον ἐν Ἀλεξαν- δρείᾳ τὴν πραγματείαν ποιεῖσθαι.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 458, line 17

καὶ εὐθέως ὁ βασιλεὺς Ἰν- δῶν Ἐλεσβόας ἐπ' ὄψεσι τοῦ πρεσβευτοῦ Ῥωμαίων ἐκίνησε πόλεμον κατὰ Περσῶν, προπέμψας καὶ τοὺς ὑπ' αὐτόν Ἰνδοὺς Σαρακηνούς, ἐπῆλθε τῇ Περσικῇ χώρᾳ ὑπὲρ Ῥωμαίων, δηλώσας τῷ βασιλεῖ Περσῶν τοῦ δέξασθαι τὸν βασιλέα Ἰνδῶν πολεμοῦντα αὐτῷ καὶ ἐκπορθῆσαι πᾶσαν τὴν ὑπ' αὐτοῦ βασιλευομένην γῆν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 458, line 22

καὶ πάντων οὕτως προβάντων ὁ βασιλεὺς Ἰνδῶν κρατήσας τὴν κεφαλὴν τοῦ πρεσβευτοῦ Ῥωμαίων, δεδωκὼς εἰρήνης φίλημα, ἀπέλυσεν ἐν πολλῇ θεραπείᾳ.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 459, line 3

κατέπεμψε γὰρ καὶ σάκρας διὰ Ἰνδοῦ πρεσβευτοῦ καὶ δῶρα τῷ βασιλεῖ Ῥωμαίων.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 477, line 7

Ἐν αὐτῷ δὲ τῷ χρόνῳ καὶ πρεσβευτὴς Ἰνδῶν μετὰ δώρων κατεπέμφθη ἐν Κωνσταντινουπόλει.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 478, line 22

6.11. ALEXANDER ROMANCE

Ἐν αὐτῷ δὲ τῷ χρόνῳ ἔρριψε καὶ τὴν τρίτην ὑπατείαν ὁ αὐ- τὸς βασιλεὺς, ἀνακαλεσάμενος τοὺς πατρικίους Ὀλύβριον καὶ Πρόβον, ὄντας ἐν ἐξορίᾳ, δεδωκὼς αὐτοῖς πάντα τὰ ὑπάρχοντα αὐτῶν. Ἰνδικτιῶνος ιβ' παρελήφθη ὁ ἔξ Ἀφρικῆς μετὰ τῆς αὐτοῦ γυναικὸς ὑπὸ Βελισαρίου· καὶ εἰσηνέχθησαν ἐν Κωνσταντινουπό- λει.

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia Page 484, line 9

Ἰνδικτιῶνος ιγ' πρεσβευτῆς Ἰνδῶν κατεπέμφθη μετὰ καὶ ἐλέφαντος ἐν Κωνσταντινουπόλει.

Joannes Malalas Chronogr., Chronologica (fort. auctore anonymo excerptorum chronologicorum) (2871: 002) "Ioannis Malalae chronographia", Ed. Dindorf, L. Bonn: Weber, 1831; Corpus scriptorum historiae Byzantinae. Page 14, line 5

Μετὰ γοῦν τὴν σύγχυσιν καὶ τὴν τοῦ πύργου διάλυσιν μετα- στέλλονται οἱ τρεῖς υἱοὶ τοῦ Νῶε πάντας τοὺς ἐξ αὐτῶν γενομέ- νους, καὶ διδῶσιν αὐτοῖς ἐγγραφον τῶν τόπων τὴν κατα- νέμησιν, ἥνπερ ἐκ τοῦ πατρὸς Νῶε παρειλήφασιν, καὶ λαγχάνουσιν ἐκά- στω καὶ ταῖς ἐκάστου φυλαῖς καὶ πατριαῖς τόπον καὶ κλίματα καὶ χώρας καὶ νήσους καὶ ποταμούς κατὰ τὴν ὑπο- κειμένην ἔκθε- σιν, καὶ κατακληροῦνται τῷ μὲν πρωτοτόκῳ υἱῷ Νῶε Σὴμ ἀπὸ Περσίδος καὶ Βάκτρων ἕως Ἰνδικῆς καὶ Ῥινοκουρούρων τὰ πρὸς ἀνατολήν, τῷ δὲ Χάμ ἀπὸ Ῥινοκουρούρων ἕως Γαδείρων τὰ πρὸς νότον, τῷ δὲ Ἰάφεθ ἀπὸ Μηδίας ἕως Γαδείρων τὰ πρὸς βορρᾶν.

Joannes Malalas Chronogr., Chronologica (fort. auctore anonymo excerptorum chronologicorum) Page 14, line 11

Αἱ δὲ λαχοῦσαι χώραι τῷ μὲν Σὴμ εἰσὶν αὗται, Περσίς, Βακτριανή, Ὑρκανία, Βαβυλω- νία, Κορδυαία, Ἀσσυρία, Με- σοποταμία, Ἀραβία ἡ ἀρχαία, Ἑλυμαῖς, Ἰνδική, Ἀραβία ἡ εὐδαίμων, κοίλη Συρία, Κομμαγενή καὶ Φοινίκη πᾶσα καὶ πο- ταμὸς Εὐφράτης· τῷ δὲ Χάμ Αἴγυπτος, Αἰθιοπία ἡ βλέπουσα κατ' Ἰνδούς, ἑτέρα Αἰθιοπία, ὅθεν ἐκπορεύεται ὁ ποταμὸς τῶν Αἰθιόπων, ἐρυθρὰ βλέπουσα κατ' ἀνατολὰς, Θηβαῖς, Λιβύη ἡ παρεκτείνουσα μέχρι Κυρήνης, Μαρμαρῖς, Σურτίς, Λιβύη ἄλλη, Νουμιδία, Μασσυρίς, Μαυριτανία ἡ κατέναντι Γαδεί- ρων· ἐν δὲ τοῖς κατὰ βορρᾶν τὰ παρὰ θάλασσαν ἔχει Κιλικίαν, Παμφυλίαν, Πισιδίαν, Μυσίαν, Λυκαονίαν, Φρυγίαν, Κα- μαλίαν, Λυκίαν, Καρίαν, Λυδίαν, Μυσίαν ἄλλην, Τρώαδα,

Joannes Malalas Chronogr., Chronographia (eclogae e cod. Paris. gr. 1336) (2871: 003) "Anecdota Graeca e codd. manuscriptis bibliothecae regiae Parisiensis, vol. 2", Ed. Cramer, J.A. Oxford: Oxford University Press, 1839, Repr. 1967. Page 234, line 6

Ἐν δὲ τοῖς ἀνωτέρω χρόνοις ἐκ τοῦ γένους τοῦ Ἀρφαξὰδ ἀνε- φύει τίς Ἰνδὸς σοφὸς ἀνὴρ ἀστρονόμος, ὀνόματι Γανδουβάριος, ὅστις συνεγράψατο πρῶτος ἀστρονομίαν Ἰνδοῖς· ἐκ δὲ τῆς αὐτῆς φυλῆς τοῦ Σὴμ, τῆς κρατησάσης τὴν Ἀσσυρίαν καὶ τὴν Περ- σίδα, καὶ τὰ μέρη τῆς ἀνατολῆς, ἀνεφάνη ἀνθρώπος γίγας τὸ γένος, ὀνόματι Κρόνος, ἐπικληθεὶς ὑπὸ τοῦ ἰδίου πατρὸς Δόμνος, εἰς τὴν ἐπωνυμίαν τοῦ πλανήτου ἀστέρος Κρόνου.

6.11 Alexander romance

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Alexander romance is any of several collections of legends concerning the mythical exploits of Alexander the Great. The earliest version is in Greek, dating to the 3rd century. Several late manuscripts attribute the work to Alexander's court historian Callisthenes, but the historical figure died before Alexander and could not have written a full account of his life. The unknown author is still sometimes called Pseudo-Callisthenes. (From Wikipedia¹⁰)

Anonymi Historici (FGrH), *Alexandri historia* (e cod. Sabbaitico 29) (1139: 006) "FGrH #151". Volume-Jacoby'-F 2b,151,F, fragment 1, line 96

ἦσαν δὲ αὐτῶι καὶ ἐλέφαντες ἡγμένοι ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς, ὧν ἡ παρασκευὴ τοῦτον εἶχεν τὸν τρόπον· πύργοι ξύλινοι κατεσκευασμένοι ἐπετίθεντο τοῖς νώτοις αὐτῶν, ἀφ' ὧν ἄνδρες ἀπεμάχοντο ἐν ὅπλοις, ὡς συμβαίνειν τοὺς ἀντιπαρατασσόμενους διαφθεῖσθαι καὶ ὑπὸ τῶν ἀπομαχομένων ἀνδρῶν διαφθειρομένους καὶ ὑπὸ τῶν ἐλεφάντων πατουμένους.

Anonymi Historici (FGrH), *De historia Alexandri* (1139: 007) "FGrH #153". Volume-Jacoby'-T+F 2b,153,T, fragment 4, line 3

STRABON XI 5, 5: (Kleitarch. 137 F 16) καὶ τὰ πρὸς τὸ ἐνδοξὸν θρυληθέντα καὶ ἀμολόγηται παρὰ πάντων, οἳ γε πλάσαντες ἦσαν οἱ κολακείας μᾶλλον ἢ ἀληθείας φροντίζοντες· οἷον τὸ τὸν Καύκασον μετενεγκεῖν εἰς τὰ Ἰνδικὰ ὄρη καὶ τὴν πλησιάζουσαν ἐκείνοις ἐῷαν θάλατταν ἀπὸ τῶν ὑπερκειμένων τῆς Κολχίδος καὶ τοῦ Εὐξείνου ὄρων.

Anonymi Historici (FGrH), *De historia Alexandri* Volume-Jacoby'-T+F 2b,153,T, fragment 4, line 6

ταῦτα γὰρ οἱ Ἕλληνες [καὶ] Καύκασον ὠνόμαζον, διέχοντα τῆς Ἰνδικῆς πλείους ἢ τρισμυρίου σταδίου, καὶ ἐνταῦθα ἐμύθευσαν τὰ περὶ Προμηθεῖα καὶ τὸν δεσμὸν αὐτοῦ· ταῦτα γὰρ τὰ ὕστατα πρὸς ἑὼ ἐγνώριζον οἱ τότε.

Anonymi Historici (FGrH), *De historia Alexandri* Volume-Jacoby'-T+F 2b,153,T, fragment 4, line 8

ἡ δὲ ἐπὶ Ἰνδοῦ στρατεία Διονύσου καὶ Ἡρακλέους ὑστερογενὴ τὴν μυθοποιίαν ἐμφαίνει, ἅτε τοῦ Ἡρακλέους καὶ τὸν Προμηθεῖα λῦσαι λεγομένου χιλιάσιν ἐτῶν ὕστερον.

Anonymi Historici (FGrH), *De historia Alexandri* Volume-Jacoby'-T+F 2b,153,T, fragment 4, line 10

καὶ ἦν μὲν ἐνδοξότερον τὸ τὸν Ἀλέξανδρον μέχρι τῶν Ἰνδικῶν ὄρων καταστρέψασθαι τὴν Ἀσίαν ἢ μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ Εὐξείνου καὶ τοῦ Καυκάσου· ἀλλ' ἡ δόξα τοῦ ὄρους καὶ τοῦνομα καὶ τὸ τοὺς περὶ Ἰάσονα δοκεῖν μακροτάτην στρατείαν τελέσαι τὴν μέχρι τῶν πλησίων Καυκάσου καὶ τὸ τὸν Προμηθεῖα παραδεδοσθαι δεδεμένον ἐπὶ τοῖς ἐσχάτοις τῆς γῆς ἐν τῶι Καυκάσῳ, χαριεῖσθαι τι τῶι βασιλεῖ ὑπέλαβον, τοῦνομα τοῦ ὄρους μετενέγκαντες εἰς τὴν Ἰνδικήν.

Anonymi Historici (FGrH), *De historia Alexandri* Volume-Jacoby'-T+F 2b,153,F, fragment 2, line 6

10. http://en.wikipedia.org/wiki/Alexander_romance

6.12. JOANNES STOBÆUS

ὅτι μὲν γὰρ μέγιστος τῶν μνημονευομένων κατὰ τὰς τρεῖς ἡπείρους, καὶ μετ' αὐτὸν ὁ Ἰνδός, τρίτος δὲ καὶ τέταρτος ὁ Ἰστρος καὶ ὁ Νεῖλος, ἱκανῶς συμφωνεῖται· τὰ καθ' ἕκαστα δ' ἄλλοι ἄλλως περὶ αὐτοῦ λέγουσιν, οἱ μὲν τριάκοντα σταδίων τοῦλάχιστον πλάτος, οἱ δὲ καὶ ἑπτὰ τριῶν, Μεγασθένης (III) δέ, ὅταν ἦι μέτριος καὶ εἰς ἑκατὸν εὐρύνεσθαι, βάθος δὲ εἴκοσι ὀργυιῶν τοῦλάχιστον.

Anonymi Historici (FGrH), De historia Alexandri Volume-Jacoby'-T+F 2b,153,F, fragment 7, line 26

τὸ γὰρ αὐτ[ὸ] γέγρα[φ]α (?) καὶ ἐν το[.....] δὲ[.....] ἀρῖνδε καταλ[....]οις γυν[αι]κὸς [....]εν | [.....]α καὶ ἡ Στεροπὴ Ἀλέξανδρον αὐτόθ[.....] | ἀνέτειλε τῶν Φιλιππε[ί]ων υἱῶν σφω[.] | κεκληῖσθαι μάλλον [ἢ] εἶναι Ἀντίπ[α]τρος | [ποιεῖ αὐ]τὴν βασιλίδαν Ἀντίπατρος.

Anonymi Historici (FGrH), De historia Alexandri Volume-Jacoby'-T+F 2b,153,F, fragment 9, line 15

διαπορουμένοι δὲ τοῦ Ἀλεξάνδρου περὶ τοῦ<των> νοήσαντα τὸν Ἰνδὸν εἰπεῖν, ὅτι τοῖς ἀπόροις τῶν ἐρωτημάτων ἀπόρους εἶναι καὶ τὰς ἀποκρίσεις συμβαίνει.

Anonymi Historici (FGrH), De historia Alexandri Volume-Jacoby'-T+F 2b,153,F, fragment 15c, line 1

Σάνεια· πόλις Ἰνδική, ὡς Ἀδριανὸς Ἀλεξανδρειάδος <ξ>.

6.12 Joannes Stobaeus

Joannes Stobaeus (/dʒou'ænis stou'bi:əs/[1] Greek: Ἰωάννης ὁ Στοβαῖος; 5th-century CE), from Stobi in Macedonia, was the compiler of a valuable series of extracts from Greek authors. The work was originally divided into two volumes containing two books each. The two volumes became separated in the manuscript tradition, and the first volume became known as the Extracts (Eclogues) and the second volume became known as the Anthology (Florilegium). Modern editions now refer to both volumes as the Anthology. The Anthology contains extracts from hundreds of writers, especially poets, historians, orators, philosophers and physicians. The subjects covered range from natural philosophy, dialectics, and ethics, to politics, economics, and maxims of practical wisdom. The work preserves fragments of many authors and works who otherwise might be unknown today.

Books 1 and 2

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

The first two books ("Eclogues") consist for the most part of extracts conveying the views of earlier poets and prose writers on points of physics, dialectics, and ethics.[3] We learn from Photius that the first book was preceded by a dissertation on the advantages of philosophy, an account of the different schools of philosophy, and a collection of the opinions of ancient writers on geometry, music, and arithmetic.[3] The greater part of this introduction is lost. The close of it only, where arithmetic is spoken of, is still extant. The first book was divided into sixty chapters, the second into forty-six, of which the manuscripts preserve only the first nine.[3] Some of the missing parts of the second book (chapters 15, 31, 33, and 46) have, however, been recovered from a 14th-century gnomology.[5] His knowledge of physics — in the wide sense which the Greeks assigned to this term — is often untrustworthy.[2] Stobaeus betrays a tendency to confound the dogmas of the early Ionian philosophers, and he occasionally mixes up Platonism with Pythagoreanism.[2] For part of the first book and much of the second, it is clear that he depended on the (lost) works of the Peripatetic philosopher Aetius and the Stoic philosopher Arius Didymus.[2] Books 3 and 4

The third and fourth books ("Florilegium") are devoted to subjects of a moral, political, and economic kind, and maxims of practical wisdom.[3] The third book originally consisted of forty-two chapters, and the fourth of fifty-eight.[3] These two books, like the larger part of the second, treat of ethics; the third, of virtues and vices, in pairs; the fourth, of more general ethical and political subjects, frequently citing extracts to illustrate the pros and cons of a question in two successive chapters.[2] (From Wikipedia¹¹)

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium (2037: 001) "Ioannis Stobaei anthologium, 5 vols.", Ed. Wachsmuth, C., Hense, O. Berlin: Weidmann, 1–2:1884; 3:1894; 4:1909; 5:1912, Repr. 1958. Book 1, chapter 3, section 56, line 3

<Πορφυρίου ἐκ τοῦ Περί Στυγῆς> (ap. Holsten., opusc. Porph. p. 148). Ἰνδοὶ οἱ ἐπὶ τῆς βασιλείας τῆς Ἀντωνίνου, τοῦ ἐξ Ἑμίσων ἐν τῇ Συρίᾳ [ἀφικομένου] Βαρδισάνῃ τῷ ἐκ τῆς Μεσοποταμίας εἰς λόγους ἀφικομένοι, ἐξηγήσαντο, ὡς ὁ Βαρδισάνης ἀνέγραψεν, εἶναι τινα λίμνην ἔτι καὶ νῦν παρ' Ἰνδοῖς δοκιμαστήριον λεγομένην, εἰς ἣν, ἂν τις τῶν Ἰνδῶν αἰτίαν ἔχων τινὸς ἀμαρτίας ἀρνήται, <εἰσάγεται>.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 1, chapter 3, section 56, line 7

Ἰνδοὶ οἱ ἐπὶ τῆς βασιλείας τῆς Ἀντωνίνου, τοῦ ἐξ Ἑμίσων ἐν τῇ Συρίᾳ [ἀφικομένου] Βαρδισάνῃ τῷ ἐκ τῆς Μεσοποταμίας εἰς λόγους ἀφικομένοι, ἐξηγήσαντο, ὡς ὁ Βαρδισάνης ἀνέγραψεν,

11. http://en.wikipedia.org/wiki/Joannes_Stobaeus

6.12. JOANNES STOBAEUS

εἶναι τινα λίμνην ἔτι καὶ νῦν παρ' Ἰνδοῖς δοκιμαστήριον λεγομένην, εἰς ἣν, ἂν τις τῶν Ἰνδῶν αἰ-
τίαν ἔχων τινὸς ἁμαρτίας ἀρνῆται, <εἰσάγεται>.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 1, chapter 3, section 56, line 26

Ἐκουσίῳ τοίνυν ἁμαρ- τημάτων δοκιμαστήριον Ἰνδοὺς τοῦτ' ἔχειν τὸ ὕδωρ· ἀκου- σίων
δὲ ὁμοῦ καὶ ἔκουσίων καὶ ὅλως ὀρθοῦ βίου ἕτερον εἶναι, περὶ οὗ ὁ Βαρδισάνης τάδε γράφει·
θήσω γὰρ τὰ- κείνου κατὰ λέξιν· “Ἐλεγον δὲ καὶ σπηλαιον εἶναι αὐτό- ματον, μέγα, ἐν ὅρει
ὑψηλοτάτῳ σχεδὸν κατὰ μέσον τῆς γῆς, ἐν ᾧ σπηλαίῳ ἐστὶν ἀνδριάς, ὃν εἰκάζουσι πηχῶν δέκα
ἢ δώδεκα, ἐστὼς ὀρθός, ἔχων τὰς χεῖρας ἡπλωμένας ἐν τύπῳ σταυροῦ· καὶ τὸ μὲν δεξιὸν τῆς
ὀφείας αὐτοῦ ἐστὶν ἀνδρικόν, τὸ δ' εὐώνυμον θηλυκόν· ὁμοίως δὲ καὶ ὁ βραχίον ὁ δεξιὸς καὶ ὁ
δεξιὸς ποῦς καὶ ὅλον τὸ μέρος

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 1, chapter 3, section 56, line 86

Ἄ μὲν οὖν Ἰνδοὶ ἱστοροῦσι περὶ τοῦ παρ' αὐτοῖς δοκιμαστηρίου ὕδατος, ἔστι ταῦτα.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 1, chapter 40, section 1, line 122

Πρὸς γε μὴν ταῖς ἀνασχέσεσι τοῦ ἡλίου πάλιν εἰσρέων ὁ Ὡκεανός, τὸν Ἰν- δικόν τε καὶ
Περσικὸν διανοίξας κόλπον, ἀναφαίνει τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν διειληφώς.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 1, chapter 40, section 1, line 134

Ἐν τούτῳ γε μὴν νῆσοι μεγάλαι τυγχάνουσιν, αἱ [τε] δύο Βρετανικαὶ λεγό- μεναι [καὶ]
Ἄλβιον καὶ Τέρνη, τῶν προϊστορημένων μεί- ζους, ὑπὲρ Κελτοὺς κείμεναι· τούτων δὲ ἐλάττους
ἢ τε Ταπροβάνη πέραν Ἰνδῶν, λοξὴ πρὸς τὴν οἰκουμένην, καὶ ἡ Φοβέα [Εὐβοία] καλουμένη,
κατὰ τὸν Ἀράβιον κειμένη κόλπον.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 3, chapter 9, section 49, line 3

Ἐν Παιδαλίοις, Ἰνδικῶ ἔθνει, οὐχ ὁ θύων, ἀλλ' ὁ συνετώτατος τῶν παρόντων κατάρχεται
τῶν ἱερῶν.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 4, chapter 2, section 25, line 98

οἱ δὲ παῖδες παρ' αὐτοῖς ὥσπερ μάθημα τὸ ἀληθεύειν διδάσκονται. Παρ' Ἰνδοῖς ἂν τις
ἀποστερηθῇ δανείου ἢ παρα- καταθήκης, οὐκ ἔστι κρίσις, ἀλλ' αὐτὸν αἰτιᾶται ὁ πῖς- τεύσας.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 4, chapter 22d, section 102, line
21

ἐπεὶ δὲ οὐκ εὐδελόν ἐστιν ἄρτι γαμοῦντι, ὅποιαί δὲ τινες τοῖς τρόποις αἱ γυναῖκες ἀνα-
φανήσονται, Ἰνδοὶ οὕτω γαμοῦσι καὶ οἱ σοφοὶ αὐτῶν, καὶ οὐδεπώποτε ψευσθῆναι λέγονται.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 4, chapter 22d, section 102, line
23

ἐκεῖνοι τοίνυν οἱ Ἰνδοὶ οὐχ ὅπως πλούτῳ καὶ δόξῃ ἔγχευαν ἐνδ<όξ>ου ἀνδρὸς καὶ πλουσίου
θυγατέρα, ἀλλὰ αὐτὴν τὴν κόρην τὴν τε ὅφιν αὐτῆς καὶ τὸ κάλλος ἐπολυπραγμόνησαν, σοφία
δὲ τινι τοῦτ' ὅ γε, οὐκ ἀκολασία οὐδεμιᾶ, οὐδὲ κατὰ τὰ αὐτὰ ἡμῖν.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 4, chapter 22d, section 102, line
39

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

περὶ μὲν οὖν τῶν Ἰνδῶν οὗτος ὁ λόγος κρατεῖ, ὡς καταμαντεύονται περὶ τῶν γυναικῶν πόρρωθεν, ὅποιαί τινες ἔσονται.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 4, chapter 22d, section 102, line 45

οὐ γὰρ τοὺς καλοὺς καὶ τὰς καλὰς ἐγὼ προξενῶ, ἀλλ' ἐτέρως οὐκ ἔνι εἰπεῖν, ἐπόμενον τῷ Ἰνδῶν λόγῳ.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 4, chapter 28, section 19, line 36

ὥστ' οὔτε χρυσὸν ἀμφιθήσεται ἢ λίθον Ἰνδικὸν ἢ χώρης ἐόντα ἄλλης, οὐδὲ πλέξεται πολυτεχνίῃσι τρίχας, οὐδ' ἀλείφεται Ἀραβίης ὀσμῆς ἐμπνέοντα, οὐδὲ χρίσεται πρόσωπον λευκαίνουσα ἢ ἐρυθραῖ- νουσα τοῦτο ἢ μελαίνουσα ὀφρύας τε καὶ ὀφθαλμούς καὶ τὴν πολὴν τρίχα βαφαῖσι τεχνωμένη, οὐδὲ λούσεται θαμινά.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 4, chapter 36, section 22, line 1
Κλειτοφῶντος Ῥοδίου ἐν α' Ἰνδικῶν (Ibid. 25, 1. 3 l. c. p. 327).

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 4, chapter 36, section 22, line 3
Ἰνδὸς ποταμός ἐστι τῆς Ἰνδίας.

Joannes Stobaeus Anthologus, Anthologium Book 4, chapter 55, section 18, line 2

Τοῦ αὐτοῦ (fr. 143 M.). Ἰνδοὶ συγκατακαίουσιν, ὅταν τελευτήσωσι, τῶν γυναικῶν τὴν προσφιλεστάτην.

6.13 Syriani, Sopatri Et Marcellini Scholia (?)

? “” (From Wikipedia¹²)

Syriani, Sopatri Et Marcellini Scholia Ad Hermogenis Status, Scholia ad Hermogenis librum περὶ στάσεων (2047: 001) “Rhetores Graeci, vol. 4”, Ed. Walz, C. Stuttgart: Cotta, 1833, Repr. 1968. Volume 4, page 71, line 4

Εἴτα ἐπεὶ καὶ ἰατρῶν ἐστὶν ἐπὶ μέρους ζητήματα· οἷον τί μὲν τοῖς ἐν Ἰνδία συντελεῖ πρὸς υἱεῖαν, τί δὲ τοῖς ἐν Σκυθία, προσέθηκε τὸ ἐκ τῶν παρ' ἐκάστοις κειμένων· οὐ γὰρ ἐκ τούτων ἀμφισβητεῖ ὁ ἰατρός, ἀλλ' ὁ ῥήτωρ· εἰ δὲ πολλάκις καὶ ῥήτορες καθολικὰ μεταχειρίζονται, ὡς ὁ Δημοσθένης· οἷον οὐκ ἐστὶν ἐπιπορευόμενα καὶ ψευδόμενον δύναμιν βεβαίαν, κτήσασθαι· καὶ πάλιν πέρας γὰρ ἅπασιν ἀνθρώποις τοῦ βίου ὁ θάνατος· καὶ παρ' Αἰσχίνῃ· οὐδεὶς γὰρ πώποτε πλοῦτος πονηροῦ τρόπου περιεγένετο· εἶδέναι δὲ χρὴ, ὅτι αἱ καθόλου ἐργασίαι τοῦ ἐπὶ μέρους ἐγένοντο.

Syriani, Sopatri Et Marcellini Scholia Ad Hermogenis Status, Scholia ad Hermogenis librum περὶ στάσεων Volume 4, page 747, line 25

καὶ ἐπὶ ζητημάτων δὲ φανερόν τὸ τοιοῦτον· οἷον Ἀλεξάνδρου ἐν Ἰνδοῖς ὄντος συμβουλεύει Δημοσθένης ἀντιλαμβάνεσθαι τῶν πραγμάτων.

12.

6.14. FLAVIUS CLAUDIUS JULIANUS IMPERATOR

6.14 Flavius Claudius Julianus Imperator

Julian (Latin: Flavius Claudius Julianus Augustus, Greek: Φλάβιος Κλαύδιος Ἰουλιανός Αὐγουστος;[1] 331/332[2] – 26 June 363), also known as Julian the Apostate, as well as Julian the Philosopher, was Roman Emperor from 361 to 363 and a noted philosopher and Greek writer.[3] (From Wikipedia¹³)

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., Ἐγκώμιον εἰς τὸν αὐτοκράτορα Κωνστάντιον (2003: 001) “L’empereur Julien. Oeuvres complètes, vol. 1.1”, Ed. Bidez, J. Paris: Les Belles Lettres, 1932. Section 28, line 33

Ὁ δὲ μικρὰ μὲν ἐνόμιζεν εἶναι τὰ παρόντα καὶ πόνον οὐ πολὺν τῆς σῆς συνέσεως καὶ ῥώμης κρατῆσαι, τοὺς Ἰνδῶν δὲ ἐσκόπει πλούτους καὶ Περσῶν τὴν πολυ- τέλειαν· [καὶ] τοσοῦτον αὐτῷ περιῆν ἀνοίας καὶ θράσους ἐκ μικροῦ παντελῶς περὶ τοὺς κατασκόπους πλεονεκτήματος, οὓς ἀφυλάκτους ὅλη τῇ στρατιᾷ λοχήσας ἔκτεινεν.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., Περὶ τῶν τοῦ αὐτοκράτορος πράξεων ἢ περὶ βασιλείας (2003: 003) “L’empereur Julien. Oeuvres complètes, vol. 1.1”, Ed. Bidez, J. Paris: Les Belles Lettres, 1932. Section 1, line 43

τοῦ τῶν Ἑλλήνων βασιλέως εἶναι ἐθέλοντα, ὥστε ὁ μὲν ἠτίμαξε τοὺς ἀρίστους, σὺ δὲ οἶμαι καὶ τῶν φαύλων πολλοῖς τὴν συγγνώμην νέμεις, τὸν Πιττακὸν ἐπαινῶν τοῦ λόγου, ὃς τὴν συγγνώμην τῆς τιμωρίας προϋτίθει, αἰσχ- νοίμην <ἀν>, εἰ μὴ τοῦ Πηλέως φαινοίμην εὐγνω- μονέστερος καὶ ἐπαινοῖν εἰς δύναμιν τὰ προσόντα σοι, οὔτι φημί χρυσὸν καὶ ἀλουργῇ χλαῖναν, οὐδὲ μὰ Δία πέπλους παμποι- κίλους, <γυναικῶν ἔργα Σιδωνίων>, οὐδὲ ἵππων Νισαίων κάλλη καὶ χρυσοκολλήτων ἄρμάτων ἀστράπτουσιν αἴγλην, οὐδὲ τὴν Ἰνδῶν λίθον εὐανθῇ καὶ χαρί- εσσαν.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., Περὶ τῶν τοῦ αὐτοκράτορος πράξεων ἢ περὶ βασιλείας Section 11, line 11

Ταύτην δὲ τὴν πόλιν στρατὸς ἀμήχανος πλήθει Παρθυαίων ξὺν Ἰνδοῖς περιέσχευεν, ὁπηνίκα ἐπὶ τὸν τύραν- νον βαδίζειν προὔκειτο· καὶ ὅπερ Ἡρακλεῖ φασιν ἐπὶ τὸ Λερναῖον ἰόντι θηρίον συνενεχθῆναι, τὸν θαλάττιον καρ- κίνον, τοῦτο ἦν ὁ Παρθυαίων βασιλεὺς ἐκ τῆς ἠπείρου Τί- γρητα διαβάς καὶ ἐπιτειχίζων τὴν πόλιν χώμασιν· εἶτα εἰς ταῦτα δεχόμενος τὸν Μυγδόνιον, λίμνην ἀπέφηνε τὸ περὶ τῷ ἄστει χωρίον καὶ ὥσπερ νῆσον ἐν αὐτῇ συνεῖχε τὴν πόλιν, μικρὸν ὑπερχουσῶν καὶ ὑπερφαινομένων τῶν ἐπ’αὐτῇ.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., Περὶ τῶν τοῦ αὐτοκράτορος πράξεων ἢ περὶ βασιλείας Section 11, line 40

Ταῦτα δὲ ἐξ Ἰνδῶν εἶπετο, καὶ ἔφερεν ἐκ σιδήρου πύργους τοξοτῶν πλήρεις.

13. http://en.wikipedia.org/wiki/Julian_%28emperor%29

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., *Περὶ τῶν τοῦ αὐτοκράτορος πράξεων ἢ περὶ βασιλείας* Section 12, line 2

Ἐπειδὴ γὰρ οἱ Παρθυαῖοι κοσμηθέντες ὅπλοις αὐτοὶ τε καὶ ἵπποι ξὺν τοῖς Ἰνδικοῖς θηρίοις προσήγον τῷ τείχει, λαμπροὶ ταῖς ἐλπίσιν ὥς αὐτίκα μάλα διαρπασόμενοι, καὶ ἐδέδοτό σφιν τοῦ πρόσω χωρεῖν τὸ σημεῖον, ὠθοῦντο ξύμπαντες, αὐτὸς τις ἐθέλων πρῶτος ἐσαλέσθαι τὸ τεῖχος καὶ οἴχεσθαι φέρον τὸ ἐπ' αὐτῷ κλέος, εἶναί τε οὐδὲν ἐτόπαζον δέος· οὐδὲ γὰρ ὑπομενεῖν σφῶν τὴν ὁρμὴν τοὺς ἐνδον ἤξουσιν.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., *Περὶ τῶν τοῦ αὐτοκράτορος πράξεων ἢ περὶ βασιλείας* Section 13, line 38

Ἑλλήνων μὲν Αἴαντε καὶ οἱ Λαπίθαι καὶ Μενεσθεὺς τοῦ τείχους εἶξαν καὶ περιεῖδον τὰς πύλας συντριβομένας ὑφ' Ἑκτορος καὶ τῶν ἐπάλλεων ἐπιβεβηκότα τὸν Σαρπηδόνα· οἱ δὲ οὐδὲ διαρραγέντος αὐτομάτως τοῦ τείχους ἐνέδοσαν, ἀλλὰ ἐνίκων μαχόμενοι καὶ ἀπεκρούοντο Παρθυαίους ξὺν Ἰνδοῖς ἐπιστρατεύσαντας· εἶτα ὁ μὲν ἐπιβὰς τῶν νεῶν ἀπὸ τῶν ἰκρίων ὥσπερ ἐρύματος πεζὸς διαγωνίζεται, οἱ δὲ πρότερον ἀπὸ τῶν τειχῶν ἐναυμάχουν· τέλος δὲ οἱ μὲν τῶν ἐπάλλεων εἶξαν καὶ τῶν νεῶν, οἱ δὲ ἐνίκων ναυσὶ τε ἐπιόντας καὶ πελῆ τοὺς πολεμίους.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., *Περὶ τῶν τοῦ αὐτοκράτορος πράξεων ἢ περὶ βασιλείας* Section 18, line 7

Καὶ εἰ βούλεσθε τὸ κεφάλαιον ἀθρόως ἐλεῖν τοῦ λόγου, ὑπομνήσθητε τῆς τοῦ Μακεδόνα ἐπὶ τοὺς Ἰνδοὺς πορείας, οἱ τὴν πέτραν ἐκείνην κατῴκουν, ἐφ' ἣν οὐδὲ τῶν ὀρνίθων ἦν τοῖς κουφοτάτοις ἀναπτῆναι, ὅπως ἐάλω, καὶ οὐδὲν πλέον ἀκούειν ἐπιθυμήσετε, πλὴν τοσοῦτον μόνον, ὅτι Ἀλέξανδρος μὲν ἀπέβαλε πολλοὺς Μακεδόνας ἐξελὼν τὴν πέτραν, ὁ δὲ ἡμέτερος ἄρχων καὶ στρατηγὸς οὐδὲ χιλιάρχον ἀποβαλὼν ἢ λοχαγόν τινα, ἀλλ' οὐδὲ ὀπλίτην τῶν ἐκ καταλόγου, καθαρὰν καὶ ἄδακρυν περιεποιήσατο τὴν νίκην.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., *Περὶ τῶν τοῦ αὐτοκράτορος πράξεων ἢ περὶ βασιλείας* Section 24, line 11

Ταύτην δὲ τῇ ψυχῇ φασιν ἐμφύεσθαι καὶ αὐτὴν ἀποφαίνειν εὐδαίμονα καὶ βασιλικὴν καὶ ναὶ μὰ Δία πολιτικὴν καὶ στρατηγικὴν καὶ μεγαλόφρονα καὶ πλουσίαν γε ἀληθῶς, οὐ τὸ Κολοφώνιον ἔχουσαν χρυσίον, Οὐδ' ὅσα λαινὸς οὐδὸς ἀφήτορος ἐντὸς ἔργε Τὸ πρὶν ἐπ' εἰρήνης, ὅτε ἦν ὀρθὰ τὰ τῶν Ἑλλήνων πράγματα, οὐδὲ ἐσθῆτα πολυτελὴ καὶ ψήφους Ἰνδικὰς καὶ γῆς πλέθρων μυριάδας πάνυ πολλὰς, ἀλλὰ ὁ πάντων ἅμα τούτων καὶ κρεῖττον καὶ θεοφιλέστερον, ὁ καὶ ἐν ναυαγίαις ἐνεστί διασώσασθαι καὶ ἐν ἀγορᾷ καὶ ἐν δήμῳ καὶ ἐν οἰκίᾳ καὶ ἐπ' ἐρημίαις ἐν λησταῖς μέσοις καὶ ἀπὸ τυράννων βιαίων.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., *Ἐπὶ τῇ ἐξόδῳ τοῦ ἀγαθωτάτου Σαλουστίου παραμυθητικὸς εἰς αὐτόν* (2003: 004) “L’empereur Julien. Oeuvres complètes, vol. 1.1”, Ed. Bidez, J. Paris: Les Belles Lettres, 1932. Section 5, line 57

Ταῦτα ἐννοοῦντες, τούτοις στρεφόμενοι ταῖς εἰδώλοις, τυχὸν οὐκ ὀνείρων νυκτερινῶν ἰνδάλμασι προσέξομεν, οὐδὲ κενὰ καὶ μάταια προσβαλεῖ τῷ νῷ φαντάσματα πονηρῶς ὑπὸ τῆς τοῦ σώματος κράσεως αἰσθησις διακρίνει.

6.15. ASTERIUS OF AMASEA

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., Πρὸς Ἡράκλειον κυνικὸν περὶ τοῦ πῶς κυνιστέον καὶ εἰ πρέπει τῷ κυνὶ μύθους πλάττειν (2003: 007) “L’empereur Julien. Oeuvres complètes, vol. 2.1”, Ed. Rochefort, G. Paris: Les Belles Lettres, 1963. Section 2, line 6

Εἰ δέ, ὥσπερ ἱππεῖς ἐν Θράκῃ καὶ Θετταλίᾳ, τοξόται δὲ καὶ τὰ κουφότερα τῶν ὅπλων ἐν Ἰνδίᾳ καὶ Κρήτῃ καὶ Καρίᾳ, τῇ φύσει τῆς χώρας ἀκολουθούντων οἶμαι τῶν ἐπιτηδευμάτων, οὕτω τις ὑπολαμβάνει καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων πραγμάτων, ἐν οἷς ἕκαστα τιμᾶται, μάλιστα παρὰ τούτων αὐτὰ καὶ πρῶτον εὐρῆσθαι.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., Πρὸς Ἡράκλειον κυνικὸν περὶ τοῦ πῶς κυνιστέον καὶ εἰ πρέπει τῷ κυνὶ μύθους πλάττειν Section 16, line 9

Ἐπεὶ δὲ ἐδέδοκτο τῷ Διὶ κοινῇ πᾶσιν ἀνθρώποις ἐνδοῦναι ἀρχὴν καταστάσεως ἐτέρας καὶ μεταβαλεῖν αὐτοὺς ἐκ τοῦ νομαδικοῦ βίου πρὸς τὸν ἡμε- ρώτατον, ἐξ Ἰνδῶν ὁ Διόνυσος αὐτο- πτος ἐφαίνετο δαίμων, ἐπιφοιτῶν τὰς πόλεις, ἄγων μεθ’ ἑαυτοῦ στρατιὰν πολλὴν δαιμόνων τινα καὶ διδούς ἀνθρώποις κοινῇ μὲν ἅπασι σύμβολον τῆς ἐπιφανείας αὐτοῦ τὸ τῆς ἡμερίδος φυτόν, ὑφ’ οὗ μοι δοκοῦσιν, ἐξημερωθέντων αὐτοῖς τῶν περὶ τὸν βίον, Ἕλληνες τῆς ἐπωνυμίας αὐτοῦ ταύτης ἀξιώσας, μητέρα δὲ αὐτοῦ προσειπεῖν τὴν Σεμέλην διὰ τὴν πρόρ- ρησιν, ἄλλως τε καὶ τοῦ θεοῦ τιμῶντος αὐτὴν ἅτε πρῶτην ἱερόφαντιν τῆς ἐτι μελλούσης ἐπιφοιτήσεως.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., Συμπόσιον ἢ Κρόνια sive Caesares (2003: 010) “L’empereur Julien. Oeuvres complètes, vol. 2.2”, Ed. Lacombrade, C. Paris: Les Belles Lettres, 1964. Section 25, line 29

Ἐγὼ δὲ ἐν οὐδὲ ὅλοις ἐνιαυτοῖς δέκα πρὸς τούτοις καὶ Ἰνδῶν γέγονα κύριος.

Flavius Claudius Julianus Imperator Phil., Συμπόσιον ἢ Κρόνια sive Caesares Section 31, line 32

Ἄλλ’ ἡνίκα,» εἶπεν, «ἐν Ἰνδοῖς ἐτρώθης καὶ ὁ Πευκέστης ἔκειτο παρὰ σέ, σὺ δὲ ἐξήγου ψυχωρραγῶν τῆς πόλεως, ἄρα ἦττων ἦσθα τοῦ τρώσαντος, ἢ καὶ ἐκείνον ἡνίκα;

6.15 Asterius of Amasea

Saint Asterius of Amasea (c. 350 – c. 410 AD)[1] was made Bishop of Amasea between 380 and 390 AD, after having been a lawyer.[1][2] He was born in Cappadocia and probably died in Amasea in modern Turkey, then in Pontus. Significant portions of his lively sermons survive, which are especially interesting from the point of view of art history, and social life in his day. Asterius, Bishop of Amasea is not to be confused with the Arian polemicist, Asterius the Sophist.[2]

Asterius of Amasea was the younger contemporary of Amphilochius of Ico- nium and the three great Cappadocian Fathers.[2] Little is known about his

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

life, except that he was educated by a Scythian slave. Like Amphilochius, he had been a lawyer before becoming bishop between 380 and 390 AD, and he brought the skills of the professional rhetorician to his sermons.[3] Sixteen homilies and panegyrics on the martyrs still exist, showing familiarity with the classics, and containing an unusual concentration of details of everyday life in his time. One of them, Oration 4: *Adversus Kalendarum Festum* attacks the pagan customs and abuses of the New Years feast, denying everything that Libanius had said supporting it - see Lord of Misrule for extensive quotations. That sermon was preached on January 1, 400 AD, which provides the main evidence, with a reference in another to his great age, to the dating of his career.[4]

Texts

An English translation exists of five sermons by Asterius, which were published in 1904 in the US under the title "Ancient Sermons for Modern Times", and issued as a reprint in 2007. This is the main portion of his works to exist in English, and has been transcribed online.[2][12] Oration 11 has also been translated.[13]

Other sermons by Asterius of Amasea existed in the time of Photius, who referred to a further ten sermons not now known in *Bibliotheca codex 271*. [2] One of these lost sermons indicates that Asterius lived to a great age.[2]

Fourteen genuine sermons have been printed by Migne in the *Patrologia Graeca* 40, 155-480, with a Latin translation.[2] along with other sermons "by Asterius" that were written by Asterius the Sophist. Another two genuine sermons were discovered in manuscript at Mount Athos by M. Bauer. Those two were first printed by A. Bretz (TU 40.1, 1914). Eleven sermons have also been translated into German.[2] (From Wikipedia¹⁴)

Asterius Scr. Eccl., *Homiliae* 1-14 (2060: 001) "Asterius of Amasea. Homilies i-xiv", Ed. Datema, C. Leiden: Brill, 1970. Homily 1, chapter 5, section 3, line 6

Αὐξουσα γὰρ καθ' ἡμέραν ἐπὶ τὸ περιεργότερον ἡ τρυφή ἤδη καὶ τῶν ἐξ Ἰνδικῆς ἀρωμάτων παρεγγχεί τοῖς ὄψοις, καὶ μᾶλλον τῶν ἰατρῶν οἱ μυροπῶλαι τοῖς μαγείοις ὑπηρετοῦσιν.

6.16 Stephanus Med.

7th century? Don't confuse with Stephanus Phil. (also 7th c).

14. http://en.wikipedia.org/wiki/Asterius_of_Amasia

6.17. JOANNES PHILOPONUS

“” (From Wikipedia¹⁵)

Stephanus Med., Phil., Collyrium ophthalmicum (olim sub auctore Stephano Archiatro) (0724: 003) “Index lectionum in universitate litterarum Vratislaviensi per hiemem anni 1888–1889”, Ed. Studemund, W. Breslau: Breslau University Press, 1889. Page 13, line 7

ἀκαίρως γὰρ οὐδὲν ὀνίνησιν· ἀλλὰ καὶ ὀδύνῃν μεγάλην ἐργάζεται τῷ διατείνειν τοὺς χιτῶνας· χρεῖα οὖν ἐν ἀπόροις εὐρεῖν· καὶ διὰ τοῦτο πρῶτον μὲν τοῦ ὅλου σώματος πρόνοιαν ποιήσασθαι χρὴ ἥτοι δια (sic) φλεβοτομίας· ἢ καθάρσεως, ἢ δι’ ἀμφοτέρων εἰ δέοι· εἴτα τῆς κεφαλῆς· μετὰ δὲ ταύτης πρόνοιαν καὶ τὴν πρόσφορον δίαιταν χρήσασθαι τῷ τοιούτῳ φαρμάκῳ· (manus recens in margine adscriptit: Comp, id est Compositio) ἔστι δὲ ἡ σύνθεσις αὐτοῦ τοιάδε· πομφόλυγος πεπλυμένης ¶ <β>· ἀμύλου καλῶς πεπλυμένου προσφάτου καὶ ἀποίου ¶ <ε>· καδμίας κεκαυμένης (inc. fol. 323) καὶ πεπλυμένης ¶ <δ>· μολίβδου κεκαυμένου καὶ πεπλυμένου ¶ <γ>· ψιμμιθίου πεπλυμένου ¶ <α>· λίθου αἱματίτου ¶ <ζ>· ὀπίου ¶ <α> ¶· ῥόδων χυλοῦ ¶ <γ>· λιβάνου ¶ <α> ¶· κρόκου ¶ τὸ ¶· ἀλόης Ἰνδικῆς· ὡσαύτως σμύρνης ¶ <α> ¶· σαρκοκόλλης πεπλυμένης ¶ <η>· σάχαρος πεφωγμένου ¶ <γ>· τραγακάνθης ¶ <ι> <β>· ἀποβραχείσης ἐν χυλῷ τήλεως· ἔστι δὲ ὁ μὲν πεπλυμένος πομφόλυξ (sic)· ξηραίνων ἀδήκτως· εἴπέρ τι καὶ ἄλλως ἐστὶ· καὶ διὰ τοῦτο χρώμεθα αὐτῷ πρὸς τὰ λεπτὰ καὶ δριμύεα ρεύματα· ἔτι δὲ καὶ πρὸς ἔλκη πρὸς τούτοις ὁ πομφόλυξ ἔχει βραχὺ τί καὶ στυπτικὸν· ἢ δὲ ἀρίστη καδμία καυθεῖσα καὶ πλυθεῖσα ἀδηκτοτάτη γίνεται φάρμακον· ἔχει δὲ τι βραχὺ καὶ ῥυπτικὸν ἐάν τε μετὰ τὴν καύσιν (sic)· ἐάν τε καὶ χωρὶς ταύτης πλυθῇ.

6.17 Joannes Philoponus

Jump to: navigation, search

John Philoponus (play /fiˈlɒpənəs/; Ancient Greek: Ἰωάννης ὁ Φιλόπονος; 490 – 570) also known as John the Grammarian or John of Alexandria, was a Christian and Aristotelian commentator and the author of a considerable number of philosophical treatises and theological works. A rigorous, sometimes polemical writer and an original thinker who was controversial in his own time, John Philoponus broke from the Aristotelian-Neoplatonic tradition, questioning methodology and eventually leading to empiricism in the natural sciences.

15.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

He was posthumously condemned as a heretic by the Orthodox Church in 680-81 because of what was perceived of as a tritheistic interpretation of the Trinity. (From Wikipedia¹⁶)

Joannes Philoponus Phil., In Aristotelis meteorologicorum librum primum commentarium (4015: 005) “Ioannis Philoponi in Aristotelis meteorologicorum librum primum commentarium”, Ed. Hayduck, M. Berlin: Reimer, 1901; Commentaria in Aristotelem Graeca 14.1. Volume 14,1, page 17, line 33

λέγουσι δὲ καὶ Ἀλέξανδρον ἐξ Ἰνδῶν Ἀριστοτέλει γράψαι, ὡς ἑτέροι φασιν, ἐκ Βαβυλωνος ὡς καὶ οἱ ἐνταῦθα σοφοὶ σώματος ἑτέρου φασὶν εἶναι τὸν οὐρανόν.

Joannes Philoponus Phil., De opificio mundi (4015: 011) “Joannis Philoponi de opificio mundi libri vii”, Ed. Reichardt, W. Leipzig: Teubner, 1897. Page 89, line 14

– ἀλλ’ ἴστω ὡς οὐχ ἡ αὐτὴ παρὰ πᾶσιν οὔτε ἡμέρα ἐστὶν ἀπαραλλάκτως, οὔτε νύξ· ἡ γὰρ παρ’ ἡμῖν τρίτη φέρε τῆς ἡμέρας ὥρα παρ’ Ἰνδοῖς μὲν ἕκτη τυ- χὸν οὕσα τυγχάνει, τοῖς δὲ περὶ τὸν δυτικὸν ὠκεανὸν πρώτη φέρε, εἰ οὕτω τύχοι, καὶ ἄλλως παρ’ ἄλλοις· οὔτε γὰρ παρὰ πᾶσιν αἱ αὐταὶ εἰσιν ἀνατολαὶ καὶ δύ- σεις, ὡς ἐκ τῶν ἐκλείψεων ἡλίου τε καὶ σελήνης ὑπάρχει δῆλον, οὐ κατὰ τὴν αὐτὴν φαινομένων παρὰ πᾶσιν ὥραν.

Joannes Philoponus Phil., De opificio mundi Page 126, line 7

μεθόδῳ ληπτῇ τοῖς ἐθέλουσι τὰ περὶ αὐτοὺς τοὺς φωστήρας συμβαίνοντα προλέγοντες καὶ εἰς ἔργον ἐπ’ ὄψεσι πάντων δεικνύντες ἐκβαίνοντα, τὸν τε χρόνον καθ’ ὃν ἐκλείπειν ἄρχονται, τὸν τε μέσον καὶ τὸν ἔσχατον, ἐκ μέρους τε ποίου τῶν φωστήρων ἢ τοῦ φωτὸς αὐτῶν ἄρχεται κρύψις καὶ μέχρι τίνος πρόεισι, πόθεν τε ἀνακαθαίρεσθαι ἄρχονται καὶ ποῦ λήγουσι, καὶ διὰ τί μιᾶς οὐσῆς τῆς ἐκλείψεως μὴ τὸν αὐτὸν χρόνον ἐν ἐκάστῳ τόπῳ ἢ αὐτὴ γινομένη φαίνεται, ἀλλὰ παρ’ Ἰνδοῖς μὲν ἐνάτην ὥραν τυχόν, ἐν Αἰγύπτῳ δὲ πέμπτην φέρε ἢ ἀπλῶς ἐλάττονα, τοῖς δὲ περὶ τὸν δυτικὸν ὠκεανὸν τρίτην ἢ δευτέραν, εἰ οὕτως ἢ μέ- θοδος εὖροι, τοῖς δὲ ἐπὶ τὸ δυτικώτερον ἔτι πρώτην τυχόν ἢ ὑπὸ γῆν ἔτι τοῦ φωστήρος ὄντος, τῆς αἰτίας ἐκάστου τούτων τοῖς ἐθέλουσι μαθεῖν ληπτῆς οὐσῆς· οἱ οὖν ταῦτα καὶ τὰ τοιαῦτα δι’ ἐπιστήμης ἐγνωκότες καὶ αὐταῖς ὄψεσι τοῖς φαινόμενοις ἐπιστήσαντες, ὅταν ἐντύχωσιν τοῖς τοῦ καλοῦ Θεοδώρου ἢ τινος τῶν κατ’

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus (4015: 012) “Iohannis Philoponi de vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus”, Ed. Daly, L.W. Philadelphia: American Philosophical Society, 1983. Recensio a, alphabetic letter iota, entry 4, line 1

<Ἰέρων>· τὸ κύριον παροξύνεται, <ιέρων>· ὁ ἀνατεθημένος, ἡ μετοχὴ περισπᾶται. <Ἰν- δος>· ὁ ποταμὸς Ἰνδίας παροξύνεται, <Ἰνδός>· τὸ ἐθνικὸν ὀξύνεται.

16. http://en.wikipedia.org/wiki/Joannes_Philoponus

6.18. ANONYMI GEOGRAPHIAE EXPOSITIO COMPENDIARIA

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus Recensio a, alphabetic letter iota, entry 4, line 1

<Ἰνδος>· ὁ ποταμὸς Ἰνδίας παροξύνεται, <Ἰνδός>· τὸ ἐθνικὸν ὀξύνεται.

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus Recensio b, alphabetic letter iota, entry 9, line 1

<ἰωνία>· ὁ τόπος τῶν ἰων ὀξύνεται, <Ἰωνία>· ἡ κακία ἢ ἡ χώρα παροξύνεται. <Ἰνδος>· ὁ ποταμὸς Ἰνδίας παροξύνεται, <Ἰνδός>· τὸ ἐθνικὸν ὀξύνεται.

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus Recensio b, alphabetic letter iota, entry 9, line 1

<Ἰνδος>· ὁ ποταμὸς Ἰνδίας παροξύνεται, <Ἰνδός>· τὸ ἐθνικὸν ὀξύνεται.

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus Recensio c, alphabetic letter iota, entry 6, line 1

<Ἰων>· τὸ κύριον, <ἰών>· ὁ πορευόμενος, <ἰών>· ὁ τοῦ ἀνάμεστος. <Ἰνδος>· ὁ ποταμὸς Ἰνδίας, <Ἰνδός>· τὸ ἐθνικόν.

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus Recensio c, alphabetic letter iota, entry 6, line 1

<Ἰνδος>· ὁ ποταμὸς Ἰνδίας, <Ἰνδός>· τὸ ἐθνικόν.

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus Recensio d, alphabetic letter iota, entry 7, line 1

<ἰδε>· τὸ ῥῆμα τὸ προστακτικὸν τὸ σημαῖνον τὸ θεάσασθαι <ἰδού>· τὸ ἐπίρρημα. <Ἰνδος>· ὁ ποταμὸς Ἰνδίας, <Ἰνδός>· τὸ ἐθνικόν.

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus Recensio d, alphabetic letter iota, entry 7, line 1

<Ἰνδος>· ὁ ποταμὸς Ἰνδίας, <Ἰνδός>· τὸ ἐθνικόν.

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus Recensio e, alphabetic letter iota, entry 3, line 1

<Ἰέρων>· κύριον, <ἰερῶν>· τῶν πραγμάτων. <Ἰνδος>· ποταμὸς Ἰνδίας, <Ἰνδός>· ἐθνικόν.

Joannes Philoponus Phil., De vocabulis quae diversum significatum exhibent secundum differentiam accentus Recensio e, alphabetic letter iota, entry 3, line 1

<Ἰνδος>· ποταμὸς Ἰνδίας, <Ἰνδός>· ἐθνικόν.

6.18 Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria

Date? "" (From Wikipedia¹⁷)

17.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria (0092: 001) “Geographi Graeci minores, vol. 2”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1861, Repr. 1965. Section 1, line 5

Τοῦτο δέ ἐστι τὸ ἀπὸ Γάγγου ποτα-
μοῦ ἐκβολῆς, τοῦ ἐν Ἰνδοῖς ἐωθινωτάτου, ἐπὶ τὸ
δυτι- κώτατον τῆς ὅλης οἰκουμένης ἀκρωτήριον, ὃ καλεῖται μὲν Ἰερὸν, τῆς Λυσιτανίας δ' ἐστὶν
ἄκρον· τόδ' ἐστὶ τῶν Ἡρακλέους στηλῶν δυτικώτερον σταδίοις που τρισχιλίοις.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 19, line 10

Ταύτης δέ ἔχεται πρὸς ἀνατολὰς ἡ Σκυθία· αὕτη δέ περὶ μὲν τὰς ἀρχὰς οὐ σφόδρα
πλατύνεται, περὶ δέ τὰς ἀνατολὰς καὶ πάνυ· ὀλίγου γὰρ δεῖν συνάπτει τῇ Ἰνδικῇ.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 24, line 3

Τὴν δέ λοιπὴν τὴν μέχρι τῶν Θινῶν ἥπειρον ἅπασαν, πλείστην οὖσαν καὶ ὑπὸ πολλῶν ἐθνῶν
κατοι- κουμένην, Ἰνδοὶ κατανέμονται, ἀφορίζομένην πρὸς μὲν ἀνατολαῖς Σίναις, πρὸς δέ ταῖς
δύσεσι Γεδρωσίᾳ, πρὸς δέ ταῖς ἄρκτοις Παροπανισάδαις καὶ Ἀραχωσίᾳ, Σογδιανοῖς τε καὶ
Σάκαις, Σκυθία τε καὶ τῇ Ση- ρικῇ.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 25, line 2

Ἔστι δέ καὶ τῆς ἡπείρου ταύτης κατὰ μὲν τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος μεγίστη νῆσος, ἡ πάλαι μὲν
Σιμοῦνδα καλουμένη, νῦν δέ Σαλική, ἐν ἣ φασὶ πάντα γίνεσθαι τὰ πρὸς τὴν χρῆσιν τὴν βιω-
τικὴν, ἔχειν τε παντοῖα μέταλλα, καὶ τοὺς κατοικοῦντας αὐτὴν ἄνδρας μαλ-
λοῖς γυναικείοις ἀναδεῖσθαι τὰς κεφαλὰς· κατὰ δέ τὴν καθ' ἡμᾶς θάλασσαν ἡ Κύπρος.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 26, line 13

Τῶν δέ ἐν αὐ- ταῖς ἐθνῶν, τῆς μὲν Εὐρώπης μεγίστη ἐστὶν Ἰσπανία τε καὶ Ἰταλία, Γερ-
μανία τε καὶ Σαρματία, τῶν δέ ἐν τῇ Λιβύῃ ἡ τε Ἀφρική καὶ ἡ Αἴγυπτος, καὶ τῶν Ἀσιανῶν
παρὰ πάντα μὲν ἰδίως ἡ Ἰνδική, μεγίστη δέ καὶ Σκυθία Σηρικὴ τε καὶ ἡ Εὐδαίμων.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 28, line 5

Ἔστι δέ καὶ τῶν ὁρῶν μέγιστα, ἐν μὲν τῇ Ἀσίᾳ ὃ τ' Ἰμάϊος καὶ τὰ Ἡμῶδὰ καὶ τὰ
Καυκάσια· ταῦτα δέ καὶ τὰ Ῥίπαιά φασὶ παρὰ πάντα ὑψηλότατα εἶναι· μέγιστον δ' ὄρος
καὶ ὁ Παροπάνισος καὶ ὁ Ταῦρος, τῶν τε κατὰ τὴν Ἰνδικὴν τὰ πλείστα· τῶν δέ Λιβυκῶν
ὑψηλότατα μὲν ὃ τε μέγας Ἄτλας καὶ τὸ τῶν Θεῶν ὄχημα, μεγάλα δέ καὶ ἐπιμηκέστατα
τὰ Αἰθιοπικά· ἀρξάμενα γὰρ ἀπὸ τῆς μεθορίας τῆς κατ' Αἴγυπτον κάτεισιν ἐπὶ μεσημβρίαν
συνεκτεινόμενα τῇ τοῦ Νείλου πορείᾳ.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 29, line 3

6.19. PHILOSTORGIUS

Τῶν δὲ ἐν τῇ οἰκουμένῃ ποταμῶν μέγιστοι μὲν εἰσιν, ἐν μὲν τῇ Ἀσίᾳ πολλῶν ὄντων παρὰ πάντας ὃ τε Γάγγης καὶ ὁ Ἰνδός· οὗτοι γὰρ ἀρξάμενοι ἀπὸ τῶν βορειοτάτων τῆς οἰκουμένης, καὶ προσλαμβάνοντες σχεδὸν πάντας τοὺς ἀξιολόγους, ὅσοι διαρρέουσι τὴν ὅλην Ἰνδικὴν (εἰσὶ δὲ καὶ ὅσοι πλείστοι), ἐκδιδύασι ἐπὶ τὴν πρὸς νότον θάλασσαν.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 34, line 3

Ταύτης δὲ τῆς θαλάσσης ὑπέρκειται ἡ λοιπὴ ἢ παρὰ τὴν ἡπειρον· καὶ ἔστι μὲν αὐτῆς μέγιστον μὲν Ἰνδικὸν πέλαγος, ἐν ᾧ χερρόνησοι καὶ κόλποι πάνυ μεγάλοι, ὃ τε Θηριώδης καὶ ὁ Μέγας καὶ ὁ Γάγγη-τικός.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 35, line 1

Τοῦ δὲ Ἰνδικοῦ πελάγους ἔχεται τὸ Καρμάνιον, προῖδν ὡς ἐπὶ δύοσι, τούτου δὲ ἡ Ἐρυθρὰ θάλασσα, ὣν περὶ τὰς συμβολὰς καὶ τὸ τοῦ Περσικοῦ κόλπου στόμα κεῖται.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 43, line 1

Τῆς δὲ κατὰ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος Βραχείας θαλάσσης, ἐπεὶ περ αὕτη παρὰ τὰς ἄλλας ἐπὶ πλείστον πρὸς ἀνατολὰς καὶ δύοσις ἐκτείνεται, τὸ ἀπὸ Ἐσιναῦ ἐμπορίου τῆς Βαρβαρίας ἢ τῶν Ῥαπτῶν τῆς μητροπόλεως ἐπὶ Κοττίαριν ποταμὸν τῶν Σινῶν σταδίων μυριάδες εἴ καὶ ββ', μίλια δὲ βζ'· πλάτος δὲ τὸ ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Μεγάλου κόλπου ἐπὶ τὴν ἄγνωστον στάδια [μυρία] τρισχίλια, ἦτοι μίλια βαϛ[λ]γ'.

Anonymi Geographiae Expositio Compendiaria, Geographiae expositio compendiaria
Section 45, line 14

Τῶν δὲ λοιπῶν δύο κλιμάτων τὸ μὲν κατ' ἀνατολὰς Ἐῶν πέλαγος καὶ Ἰνδικὸς ὠκεανός, τὸ δὲ κατὰ τὴν δύσιν, ἀφ' οὗπερ ἢ καθ' ἡμᾶς θάλασσα πληροῦται, Ἐσπέριος ὠκεανός, καὶ κατ' ἐξοχὴν Ἀτλαντικὸν πρὸς-αγορεύεται πέλαγος.

6.19 Philostorgius

Philostorgius (Greek: Φιλοστόργιος; 368 – ca. 439) was an Anomoean Church historian of the 4th and 5th centuries. Anomoeanism questioned the Trinitarian account of the relationship between God the Father and Christ and was considered a heresy by the Orthodox Church, which adopted the term "homoousia" in the Nicene Creed. Very little information about his life is available. He was born in Borissus, Cappadocia to Eulampia and Carterius,[1] and later lived in Constantinople.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

He wrote a history of the Arian controversy titled History of the Church, of which only an epitome by Photius survives, as well as a treatise against Porphyry, which is lost.[2] (From Wikipedia¹⁸)

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) (2058: 001) “Philostorgius. Kirchengeschichte, 3rd edn.”, Ed. Winkelmann, F. (post J. Bidez) Berlin: Akademie-Verlag, 1981; Die griechischen christlichen Schriftsteller. Book 2, fragment 6, line 1

Ὅτι τοὺς ἐνδοτάτω Ἰνδοὺς, ὅσοι Χριστὸν ἔμαθον τιμᾶν ἐκ τῆς Βαρθολομαίου τοῦ ἀποστόλου διδασκαλίας, τὸ ἑτεροούσιον πρεσβεύειν ὁ δυσσεβὴς φησι.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 2, fragment 6, line 3

καὶ τὸν Θεόφιλον εἰσάγει τὸν Ἰνδὸν τὸ τοιοῦτον ἀσπαζόμενον φρόνημα, παραγενέσθαι τε εἰς αὐτοὺς καὶ τὴν αὐτῶν ἐκδιηγείσθαι δόξαν.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 2, fragment 6, line 5

τὸ δὲ τῶν Ἰνδῶν ἔθνος τοῦτο Σάβας μὲν πάλαι ἀπὸ τῆς Σαβᾶ μητροπόλεως, τὰ νῦν δὲ Ὀμηρίτας καλεῖσθαι.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 3, fragment 4, line 18

Ταύτης τῆς πρεσβείας ἐν τοῖς πρώτοις ἦν καὶ Θεόφιλος ὁ Ἰνδός.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 3, fragment 4, line 21

ὃς πάλαι μὲν, Κωνσταντίνου τοῦ πάλαι βασιλεύοντος, ἔτι τὴν ἡλικίαν νεώτατος, καθ' ὁμηρίαν πρὸς τῶν Διβηνῶν καλουμένων εἰς Ῥωμαίους ἐστάλη· Διβοῦς δ' ἐστὶν αὐτοῖς ἡ νῆσος χώρα, τῶν Ἰνδῶν δὲ καὶ οὗτοι φέρουσι τὸ ἐπώνυμον.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 3, fragment 5, line 5

κακείθεν εἰς τὴν ἄλλην ἀφίκετο Ἰνδικήν, καὶ πολλὰ τῶν παρ' αὐτοῖς οὐκ εὐαγῶς δρωμένων ἐπληρωθῶσατο.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 3, fragment 10, line 25

οὗτος, ὡς ἔστι συμβαλεῖν, ἑξορμῶν τοῦ Παραδείσου, πρὶν ἐπὶ τὸ οἰκούμενον φθάσαι καταδύμενος, ἔπειτα τὴν Ἰνδικὴν θάλατταν ὑπελθὼν ἔτι καὶ κύκλῳ γε αὐτὴν περιελιχθείς, ὡς εἰκάσαι (τίς γὰρ ἀνθρώπων ἀκριβώσσει τοῦτο;

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 3, fragment 11, line 32

18. <http://en.wikipedia.org/wiki/Philostorgius>

6.20. JOHN OF DAMASCUS

ὃν καὶ ὁ τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς Κωνσταντίῳ ἀπεστάλλει.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 3, fragment 15, line 72

ταῦτα δὲ κατ' ἐκείνους τοὺς καιροὺς Κωνσταντίου ἦν καθ' οὓς καὶ ὁ Θεόφιλος ἐκ τῶν Ἰνδῶν ἐπανελθὼν διῆγεν ἐν Ἀντιοχείᾳ.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 4, fragment 1, line 9

συναπῆει δ' αὐτῷ καὶ Θεόφιλος ὁ Ἰνδός.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 8, fragment 2, line 18

πρὸς δὲ τὴν ἐν τῇ κοίλῃ Συρία Ἀντι-όχειαν μετ' οὐ πολὺν χρόνον ἐθελοντῆς ἀφικνεῖται Θεόφιλος ὁ Ἰνδός, ἐφ' ᾧ τὸν Εὐζώϊον μὲν κατὰ τὸ προηγούμενον ἀναστῆσαι εἰς τέλος ἀγαγεῖν τὰ ὑπὲρ Ἀετίου ἐγνωσμένα· εἰ δὲ μή, αὐτός γε καθηγῆσθαι τοῦ ἐκεῖσε πλήθους ὅσον τὴν ἐκείνου γνώμην ἡσπάζετο.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 9, fragment 1, line 4

EK THΣ ENNATHΣ ΙΣΤΟΡΙΑΣ

Ὅτι τῷ Φιλοστοργίῳ ὁ ἑννατος λόγος Ἀετίου χειρῶν ὑπερφυῆ ἔργα Εὐνομίου τε καὶ Λεοντίου διαπλάττει· καὶ δὴ καὶ Κανδίδου καὶ Εὐαγρίου καὶ Ἀρριανοῦ καὶ Φλωρεντίου καὶ μάλιστα γε Θεοφίλου τοῦ Ἰνδοῦ, καὶ τινων ἄλλων οὓς ἡ αὐτὴ τῆς ἀσεβείας λύσσα θερμοτέρους ἐπεδείκνυ.

Philostorgius Scr. Eccl., Historia ecclesiastica (fragmenta ap. Photium) Book 9, fragment 18, line 7

τοῦ δὲ θᾶπτον τελειωθέντος, Ἰωάννην ἀντικαθιστῶσιν· καὶ σὺν αὐτῷ ἀπὸ Κωνσταντινουπόλεως αὐτός τε Εὐνόμιος καὶ Ἀρριανός καὶ Εὐφρόνιος ἐπὶ τὴν Ἐφῶν ἀφικνοῦνται, ὡς ἐκεῖσε τὸν τε Ἰουλιανὸν ἐκ τῆς Κιλικίας ἄξοντες καὶ Θεόφιλον τὸν Ἰνδὸν ἐν τῇ Ἀντιοχείᾳ καταληφόμενοι καὶ τὰ τῆς ἄλλης Ἐφῶας καταστησόμενοι.

6.20 John of Damascus

Saint John of Damascus (Greek: Ἰωάννης ὁ Δαμασκηνός Iōannēs ho Damaskēnos; Latin: Iohannes Damascenus; also known as John Damascene, Χρυσορρόας/Chrysorrhoas, "streaming with gold"—i.e., "the golden speaker") (c. 645 or 676 – 4 December 749; Arabic: يوحنا دماشق يوحنا دماشق Yuhannā Al Demashqi) was a Syrian monk and priest. Born and raised

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

in Damascus, he died at his monastery, Mar Saba, near Jerusalem.[1] (From Wikipedia¹⁹)

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Expositio fidei (2934: 004) “Die Schriften des Johannes von Damaskos, vol. 2”, Ed. Kotter, B. Berlin: De Gruyter, 1973; Patristische Texte und Studien 12. Section 23, line 28

Ἐντεῦθεν αἱ δύο θάλασσαι αἱ τὴν Αἴγυπτον περιέχουσαι (μέση γὰρ αὕτη τῶν δύο κεῖται θαλασσῶν) συνέστησαν, διάφορα πελάγη καὶ ὄρη καὶ νήσους καὶ ἀγκῶνας καὶ λιμένας ἔχουσαι καὶ κόλπους διαφόρους περιέχουσαι αἰγιαλούς τε καὶ ἀκτᾶς – αἰγιαλὸς μὲν γὰρ ὁ ψαμμῶδης λέγεται, ἀκτὴ δὲ ἡ πετρώδης καὶ ἀγχιβαθὴς ἥτοι ἡ εὐθέως ἐν τῇ ἀρχῇ βάθος ἔχουσα – , ὁμοίως καὶ ἡ κατὰ τὴν ἀνατολήν, ἥτις λέγεται Ἰνδική, καὶ ἡ βορεινή, ἥτις λέγεται Κασπία· καὶ αἱ λίμναι δὲ ἐντεῦθεν συνήχθησαν.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Expositio fidei Section 23, line 38

Ὅνομα τῷ ἐνὶ Φεισῶν», τουτέστι Γάγγης ὁ Ἰνδικός.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Expositio fidei Section 24b, line 24

Ἀσίας ἡπείρου μεγάλης ἐπαρχίαι μὴ, κανόνες ιβ· α' Βιθυνία Πόντου β' Ἀσία ἡ ἰδίως, πρὸς τῇ Ἐφέσῳ γ' Φρυγία μεγάλη δ' Λυκία ε' Γαλατία ς' Παφλαγονία ζ' Παμφυλία η' Καππαδοκία θ' Ἀρμενία μικρά ι' Κιλικία ια' Σαρματία ἡ ἐντὸς Ἀσίας ιβ' Κολχίς ιγ' Ἰβηρία ιδ' Ἀλβανία ιε' Ἀρμενία μεγάλη ις' Κύπρος νῆσος ιζ' Συρία κοίλη ιη' Συρία Φοινίκη ιθ' Συρία Παλαιστίνη κ' Ἀραβία Πετραία κα' Μεσοποταμία κβ' Ἀραβία ἔρημος κγ' Βαβυλωνία κδ' Ἀσσυρία κέ' Σουσιανή κς' Μηδία κζ' Περσίς κη' Παρθία κθ' Καρμανία ἔρημος λ' Καρμανία ἑτέρα λα' Ἀραβία εὐδαίμων λβ' Ἰρκανία λγ' Μαργιανή λδ' Βακτριανή λε' Σογδιανή λς' Σακῶν λζ' Σκυθία ἡ ἐντὸς Ἰμάου ὄρους λη' Σκυθία ἡ ἐκτὸς Ἰμάου ὄρους λθ' Σηρική μ' Ἀρεία μα' Παροπανισάδαι μβ' Δραγγιανή μγ' Ἀραχωσία μδ' Γεδρωσία με' Ἰνδική ἡ ἐντὸς Γάγγου τοῦ ποταμοῦ μ' 2' Ἰνδική ἡ ἐκτὸς Γάγγου τοῦ ποταμοῦ μζ' Σῖναι μη' Ταπροβάνη νῆσος.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Expositio fidei Section 24b, line 25

ἰδίως, πρὸς τῇ Ἐφέσῳ γ' Φρυγία μεγάλη δ' Λυκία ε' Γαλατία ς' Παφλαγονία ζ' Παμφυλία η' Καππαδοκία θ' Ἀρμενία μικρά ι' Κιλικία ια' Σαρματία ἡ ἐντὸς Ἀσίας ιβ' Κολχίς ιγ' Ἰβηρία ιδ' Ἀλβανία ιε' Ἀρμενία μεγάλη ις' Κύπρος νῆσος ιζ' Συρία κοίλη ιη' Συρία Φοινίκη ιθ' Συρία Παλαιστίνη κ' Ἀραβία Πετραία κα' Μεσοποταμία κβ' Ἀραβία ἔρημος κγ' Βαβυλωνία κδ' Ἀσσυρία κέ' Σουσιανή κς' Μηδία κζ' Περσίς κη' Παρθία κθ' Καρμανία ἔρημος λ' Καρμανία ἑτέρα λα' Ἀραβία εὐδαίμων λβ' Ἰρκανία λγ' Μαργιανή λδ' Βακτριανή λε' Σογδιανή λς' Σακῶν λζ' Σκυθία ἡ ἐντὸς Ἰμάου ὄρους λη' Σκυθία ἡ ἐκτὸς Ἰμάου ὄρους λθ' Σηρική μ' Ἀρεία μα' Παροπανισάδαι μβ' Δραγγιανή μγ' Ἀραχωσία μδ' Γεδρωσία με' Ἰνδική ἡ ἐντὸς Γάγγου τοῦ ποταμοῦ μ' 2' Ἰνδική ἡ ἐκτὸς Γάγγου τοῦ ποταμοῦ μζ' Σῖναι μη' Ταπροβάνη νῆσος.

19. http://en.wikipedia.org/wiki/John_of_Damascus

6.20. JOHN OF DAMASCUS

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Expositio fidei Section 24b, line 31

Ἔθνη δὲ οἰκεῖ τὰ πέρατα· κατ' ἀπηλιώτην Βακτριανοί, κατ' εὖρον Ἰνδοί, κατὰ Φοίνικα Ἐρυθρὰ θάλασσα καὶ Αἰθιοπία, κατὰ λευκόνοτον οἱ ὑπὲρ Σύρτιν Γεράμαντες, κατὰ λίβα Αἰθίοπες καὶ δυσμικοὶ Ὑπέρμαυροι, κατὰ ξέφυρον Στῆλαι καὶ ἀρχαὶ Λιβύης καὶ Εὐρώπης, κατὰ ἀργέστην Ἰβηρία ἢ νῦν Ἰσπανία, κατὰ δὲ θρασκίαν Κελτοὶ καὶ τὰ ὄμορα, κατὰ ἀπαρκτίαν οἱ ὑπὲρ Θράκην Σκύθαι, κατὰ βορρᾶν Πόντος Μαιῶτις καὶ Σαρμάται, κατὰ καικίαν Κασπία θάλασσα καὶ Σάκες.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., De sacris jejuniis (2934: 021); MPG 95. Volume 95, page 73, line 33

Τὸ μέντοι ἅγιον Πάσχα τῆς ἐνδεκάτης Ἰνδικτίωνος σὺν Θεῷ ἐπιτελοῦμεν· κατὰ μὲν Αἰγυπτίους, μηνὸς Φαρμουθὶ εἰκάδι πέμπτη· κατὰ δὲ Ῥωμαίους, μηνὸς Ἀπριλλίου εἰκάδι, πρὸ δεκαδύο καλανδῶν Μαΐων· ἀρχόμενοι τῆς νηστείας τῶν ἑπτὰ ἐβδομάδων ἐξ αὐτῆς δευτέρας ἡμέρας, κατὰ μὲν Αἰγυπτίους, ὀγδόῃ τοῦ Φανεμῶθ μηνός· κατὰ δὲ Ῥωμαῖους Μαρτίου τρίτῃ.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Epistula ad Theophilum imperatorem de sanctis et venerandis imaginibus [Sp.] (2934: 050); MPG 95. Volume 95, page 376, line 50

Καὶ μὲν δὴ τούτων πλείονα καὶ θρήνων ἄξια, «δι' ἃ ἦλθεν ἡ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τὸν λαὸν τῆς ἀπειθείας,» ὡς ἀνωτέρω δεδήλωται, καὶ πᾶσιν ἡμῖν πρόδηλα γεγονόασιν· λιμοὶ, λοιμοὶ, σεισμοὶ, καταποντισμοὶ, θάνατοι ἐξαίσιτοι, πόλεμοι ἐμφύλιοι, ἐθνῶν ἐπαναστάσεις, ἐμπρησμοὶ ἐκκλησιῶν, ἐρημώσεις χωρῶν καὶ πόλεων, αἰχμη- αλωσίαι λαῶν ὡσεὶ πρόβατα εἰς σφαγὴν πορευόμενα, μέχρις Αἰθιοπῶν, καὶ Ἰνδῶν, καὶ εἰς Ἀνατολὰς γῆς δοῦλοι καὶ αἰχμάλωτοι, νεάνιδες καὶ παρθέναι, πρεσβύτεροι μετὰ τῶν νεωτέρων· καὶ πᾶσα ἡλικία ἄρδην συντετελέσται.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Commentarii in epistulas Pauli [Dub.] (2934: 053); MPG 95. Volume 95, page 681, line 31

Τουτέστι, τοσαῦται γλῶσσαι, τοσαῦται φωναί, Σκυθῶν, Θρακῶν, Ῥωμαίων, Περσῶν, Μαύρων, Ἰνδῶν, Αἰγυπτίων, ἐτέρων μυρίων ἐθνῶν.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Sermo in annuntiationem Mariae [Sp.] (2934: 057); MPG 96. Volume 96, page 657, line 46

Χαῖρε, ὅτι πολλοὶ τῶν φιλοχρίστων βασιλίδων λιθολαμπεῖς διὰ σὲ στεφάνους, καὶ χρυσονήμους ἀλουργίδας, ἀράχνης εὐτελέστερα ἐλογίσαντο, Χαῖρε, ὅτι πολλοὶ τῶν εὐγενῶν Ἰνδικοὺς διὰ σὲ καὶ χρυσταλλίζοντας λίθους περιεφρόνησαν.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Vita Barlaam et Joasaph [Sp.] (2934: 066) "[St. John Damascene]. Barlaam and Joasaph", Ed. Woodward, G.R., Mattingly, H. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1914, Repr. 1983. Page 2, line t3

ΒΑΡΛΑΑΜ ΚΑΙ ΙΩΑΣΑΦ ΙΣΤΟΡΙΑ ΨΥΧΩΦΕΛΗΣ ΕΚ ΤΗΣ ΕΝΔΟΤΕΡΑΣ ΤΩΝ ΑΙΘΙΟΠΩΝ ΧΩΡΑΣ, ΤΗΣ ΙΝΔ*ΩΝ ΛΕΓΟΜΕΝΗΣ, ΠΡΟΣ ΤΗΝ ΑΓΙΑΝ ΠΟΛΙΝ ΜΕΤΕΝΕΧΘΕΙΣΑ ΔΙΑ ΙΩΑΝΝΟΥ ΜΟΝΑΧΟΥ, ΑΝΔΡΟΣ ΤΙΜΙΟΥ ΚΑΙ ΕΝΑ-

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

PETΟΥ ΜΟΝΗΣ ΤΟΥ ΑΓΙΟΥ ΣΑΒΑ· ΕΝ ΗΙ Ο ΒΙΟΣ ΒΑΡΛΑΑΜ ΚΑΙ ΙΩΑΣΑΦ ΤΩΝ ΑΟΙΔΙΜΩΝ ΚΑΙ ΜΑΚΑΡΙΩΝ.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Vita Barlaam et Joasaph [Sp.] Page 4, line 27

τούτῳ οὖν ἐγὼ στοιχῶν τῷ κανόνι, ἄλλως δὲ καὶ τὸν ἐπηρτημένον τῷ δούλῳ κίνδυνον ὑφω-
ρώμενος, ὅς, λαβὼν παρὰ τοῦ δεσπότη- του τὸ τάλαντον, εἰς γῆν ἐκεῖνο κατάρρυξε καὶ τὸ δοθὲν
πρὸς ἐργασίαν ἐκρύψεν ἀπραγμάτευτον, ἐξήγησιν ψυχωφελῇ ἕως ἐμοῦ καταντήσασαν οὐ- δα-
μῶς σιωπήσομαι· ἦν περ μοι ἀφηγήσαντο ἄνδρες εὐλαβεῖς τῆς ἐνδοτέρας τῶν Αἰθιόπων χώρας,
οὕστινας Ἰνδοὺς οἶδεν ὁ λόγος καλεῖν, ἐξ ὑπομνη- μάτων ταύτην ἀψευδῶν μεταφράσαντες, ἔχει
δὲ οὕτως.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Vita Barlaam et Joasaph [Sp.] Page 6, line 1

Ἰ Ἡ τῶν Ἰνδῶν λεγομένη χώρα πόρρω μὲν διὰ- κείται τῆς Αἰγύπτου, μεγάλη οὖσα καὶ
πολυ- ἄνθρωπος· περικλύζεται δὲ θαλάσσαις καὶ ναυσι- πόροις πελάγεσι τῷ κατ' Αἴγυπτον
μέρει· ἐκ δὲ τῆς ἡπείρου προσεγγίζει τοῖς ὀρίοις Περσίδος, ἥτις πάλαι μὲν τῷ τῆς εἰδωλομανίας
ἐμελαίνετο ζόφῳ, εἰς ἄκρον ἐκβεβαρβαρωμένη καὶ ταῖς ἀθέ- σμοις ἐκδεδιτημένη τῶν πράξεων.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Vita Barlaam et Joasaph [Sp.] Page 8, line 7

ἔθνη φωτίσαι τοὺς ἐν σκότει τῆς ἀγνοίας καθη- μένους, καὶ βαπτίζειν αὐτοὺς εἰς τὸ ὄνομα
τοῦ Πατρὸς καὶ τοῦ Υἱοῦ καὶ τοῦ Ἁγίου Πνεύματος, ὡς ἐντεύθεν τοὺς μὲν αὐτῶν τὰς ἐώας
λήξεις, τοὺς δὲ τὰς ἐσπερίους λαχόντας περιέρχεσθαι, βόρειά τε καὶ νότια διαθέειν κλίματα, τὸ
προστεταγμένον αὐτοῖς πληροῦντας, διάγγελμα τότε καὶ ὁ ἱερώ- τατος Θωμᾶς, εἰς ὑπάρχων
τῆς δωδεκαρίθμου φάλαγγος τῶν μαθητῶν τοῦ Χριστοῦ, πρὸς τὴν τῶν Ἰνδῶν ἐξεπέμπετο,
κηρύττων αὐτοῖς τὸ σω- τήριον κήρυγμα.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Vita Barlaam et Joasaph [Sp.] Page 8, line 22

Ἐπεὶ δὲ καὶ ἐν Αἰγύπτῳ ἤρξατο μοναστήρια συνίστασθαι καὶ τὰ τῶν μοναχῶν ἀθροί-
ζεσθαι πλήθη, καὶ τῆς ἐκείνων ἀρετῆς καὶ ἀγγελομιμήτου διαγωγῆς ἡ φήμη τὰ πέρατα
διελάμβανε τῆς οἰκουμένης, καὶ εἰς Ἰνδοὺς ἦκε, πρὸς τὸν ὅμοιον ζῆλον καὶ τούτους διήγειρεν, ὡς
πολλοὺς αὐτῶν, πάντα καταλιπόντας, καταλαβεῖν τὰς ἐρήμους καὶ ἐν σώματι θνητῷ τὴν
πολιτείαν ἀνειληφέναι τῶν ἀσωμάτων.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Vita Barlaam et Joasaph [Sp.] Page 14, line 4

Ἢ Τῆς τοιαύτης οὖν σκοτομήνης τὴν τῶν Ἰνδῶν καταλαβούσης, καὶ τῶν μὲν πιστῶν πάν-
τοθεν ἐλαυνομένων, τῶν δὲ τῆς ἀσεβείας ὑπασπιστῶν κρατυνομένων, αἵμασί τε καὶ κνίσαις
τῶν θυσιῶν καὶ αὐτοῦ δὴ τοῦ ἀέρος μολυνομένου, εἰς τῶν τοῦ βασιλέως, ἀρχισατράπης τὴν
ἄξιαν, ψυχῆς παρα- στήματι, μεγέθει τε καὶ κάλλει, καὶ πᾶσιν ἄλλοις, οἷς ὥρα σώματος
καὶ γενναιότης ψυχῆς ἀνδρείας χαρακτηρίζεσθαι πέφυκε, τῶν ἄλλων ἐτύγχανε διαφέρων.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Vita Barlaam et Joasaph [Sp.] Page 62, line 13

6.21. CHRONICON PASCHALE

καί, ἀμείψας τὸ ἑαυτοῦ σχῆμα, ἱμάτιά τε κοσμικὰ ἀμφιασάμενος, καὶ νηὶς ἐπιβάς, ἀφίκετο εἰς τὰ τῶν Ἰνδῶν βασίλεια, καὶ ἐμπόρου ὑποδύς προσωπεῖον, τὴν πόλιν καταλαμβάνει, ἔνθα δὴ ὁ τοῦ βασιλέως υἱὸς τὸ παλάτιον εἶχε.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Vita Barlaam et Joasaph [Sp.] Page 388, line 4

ὡσαύτως δὲ καὶ τοὺς μύστας καὶ νεωκόρους τῶν εἰδώλων καὶ σοφοὺς τῶν Χαλδαίων καὶ Ἰνδῶν, τοὺς κατὰ πᾶσαν τὴν ὑπ' αὐτὸν ἀρχὴν ὄντας, συνεκαλέσατο, καὶ τινὰς οἰωνοσκόπους καὶ γόητας καὶ μάντις, ὅπως ἂν Χριστιανῶν περιγένοιτο.

Joannes Damascenus Scr. Eccl., Theol., Vita Barlaam et Joasaph [Sp.] Page 606, line 22

Προστάγματι δὲ τινος φοβερωτάτου κατ' ὄναρ κραταιῶς ἐπισκῆπτοντος πεισθείς, ὁ τοῦτον κηδεύσας ἀναχωρητὴς τὰ βασίλεια καταλαμ- βάνει Ἰνδῶν, καὶ τῷ βασιλεῖ Βαραχίᾳ προσελθὼν πάντα αὐτῷ δῆλα τὰ περὶ τοῦ Βαρλαάμ καὶ τοῦ μακαρίου τούτου τίθησιν Ἰωάσαφ.

6.21 Chronicon Paschale

Jump to: navigation, search

Chronicon Paschale ("the Paschal Chronicle, also Chronicum Alexandrinum or Constantinopolitanum, or Fasti Siculi) is the conventional name of a 7th-century Greek Christian chronicle of the world. Its name comes from its system of chronology based on the Christian paschal cycle; its Greek author named it "Epitome of the ages from Adam the first man to the 20th year of the reign of the most August Heraclius."

The Chronicon Paschale follows earlier chronicles. For the years 600 to 627 the author writes as a contemporary historian - that is, through the last years of emperor Maurice, the reign of Phocas, and the first seventeen years of the reign of Heraclius. (From Wikipedia²⁰)

Chronicon Paschale, Chronicon paschale (2371: 001) "Chronicon paschale, vol. 1", Ed. Dindorf, L.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 48, line 14

20. http://en.wikipedia.org/wiki/Chronicon_Paschale

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

αἱ δὲ χώραι αὐτῶν εἰσι κατὰ τὰς φυλάς αὐτῶν αὐται· ἡ Λυχνίτις, Μηδία, Ἀδριακή, ἀφ' ἧς τὸ Ἀδριακὸν πέλαγος, Ἀλβανία, Γαλλία, Ἀμαζονίς, Ἰταλία, Ἀρμενία μικρά τε καὶ μεγάλη, Θουσκηνή, Καππαδοκία, Λυσι-τανία, Παφλαγονία, Μεσσαλία, Γαλατία, Κελτίς, Κολχίς, Σπανογαλλία, Ἰνδική, Ἰβηρία, Ἀχαΐα, Σπανία ἡ μεγάλη, Βο-σπορηνή, Μαιῶτις, Δέξις, Σαρματίς, Ταυριαννίς, Βασταρ-νίς, Σκυθία, Θράκη, Μακεδονία, Δελματία, Κολχίς, Θεττα-λίς, Λοκρίς, Βοιωτία, Αἰτωλία, Ἀττική, Ἀχαΐα, Πελοπόννη-σος, Ἀκαρνία, Ἡπειρῶ-τις, Ἰλλυρίς.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 49, line 14

Οὗτος Μεσραεὶμ ὁ Αἰγύπτιος μετέπειτα ἐπὶ τὰ ἀνατολικά μέρη οἰκήσας οἰκήτωρ γίνεται Βάκτρων, τὴν ἐσωτέραν Περσίδος λέγει Ἄσσα τῶν μεγάλων Ἰνδῶν.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 52, line 13

τὰ δὲ ὀνόματα τῶν χωρῶν τοῦ Χάμ ἐστι ταῦ-τα· Αἴγυπτος σὺν τοῖς περὶ αὐτὴν πᾶσιν, Αἰθιοπία ἡ βλέπουσα κατὰ Ἰνδούς, καὶ ἑτέρα Αἰθιοπία, ὅθεν ἐκπορεύεται ὁ τῶν Αἰθιό-πων ποταμὸς ὁ καλούμενος Νεῖλος ὁ καὶ Γήων, Θηβαῖς, Λι-βύη ἡ παρεκτείνουσα μέχρι Κυρήνης, Μαρμαρῖς καὶ τὰ περὶ αὐ-τὴν πάντα, Σύρτις ἔχουσα ἔθνη τρία, Νασαμῶνας, Μάκας, Ταυταμαίους, Λιβύη ἑτέρα ἡ ἀπὸ Λέπτεως παρεκτείνουσα μέ-χρις Ἡρακλεωτικῶν στηλῶν κατέναντι Γαδεΐρων.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 53, line 18

Εἶτα πάλιν Ἐπιφάνιος, Τῷ δὲ Σῆμ πρώτῳ υἱῷ τοῦ Νῶε ὑπέπεσεν ὁ κληρὸς ὁ ἀπὸ Περσίδος καὶ Βάκτρων ἕως Ἰνδικῆς.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 54, line 21

Ἐλμωδάδ, ἐξ οὗ οἱ Ἰνδοί.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 55, line 13

πάν-των δὲ τῶν υἱῶν τοῦ Σῆμ ἡ κατοικία ἐστὶν ἀπὸ Βάκτρων ἕως Ῥινοκορούρων τῆς ὀριζού-σης Συρίαν καὶ Αἴγυπτον καὶ τὴν ἐρυ-θρὰν θάλασσαν ἀπὸ στόματος τοῦ κατὰ Ἀρσενόϊτην τῆς Ἰνδικῆς.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 55, line 18

Ταῦτα δὲ εἰσιν τὰ ἐξ αὐτοῦ γενόμενα ἔθνη· α' Ἑβραῖοι οἱ καὶ Ἰουδαῖοι, β' Πέρσαι, γ' Ἀσσύριοι δεύτεροι, δ' Αἰλυμαῖοι, ε' Χαλδαῖοι, ς' Ἀραμοσσυνοί, ζ' Ἀραβες οἱ δεύτεροι, η' Μῆδοι, θ' Ὑρκανοί, ι' Μακαρδοί, ια' Κοσσαῖοι, ιβ' Σκύθαι, ιγ' Σα-λαθιαῖοι, ιδ' Γυμνοσοφισταί, ιε' Παῖονες, ις' Ἰνδοὶ πρώτοι, ιζ' Πάρθοι, ιη' Ἀραβες ἀρχαῖοι, ιθ' Καρμήλιοι, κ' Βακτριανοί, κα' Ἀξῆριανοί, κβ' Ἰνδοὶ δεύτεροι, κγ' Γερμανοί, κδ' Κεδρούσιοι, κε' Γασφρηνοί, κς' Ἑρμαῖοι.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 56, line 2

Οἱ δὲ ἐπιστάμενοι αὐτῶν γράμματα Ἑβραῖοι οἱ καὶ Ἰουδαῖοι, Πέρσαι, Μῆδοι, Χαλδαῖοι, Ἰνδοί, Ἀσσύριοι.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 56, line 4

Ἔστι δὲ ἡ κατοικία τῶν υἱῶν Σῆμ παρεκτείνουσα κατὰ μῆ-κος μὲν ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἕως Ῥινοκορούρων, πλάτος δὲ ἀπὸ Περ-σίδος καὶ Βάκτρων ἕως τῆς Αἰθιοπίας καὶ τῆς Κιλικίας.

6.22. CHORICIUS OF GAZA

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 56, line 9

Τὰ δὲ ὀνόματα τῶν χωρῶν τῶν υἱῶν τοῦ Σήμ, πρωτοτόκου υἱοῦ Νῶε, ἐστὶν ταῦτα· α' Περ-
σίς, β' Βακτριανή, γ' Ὑγκανία, δ' Βαβυλωνία, ε' Κορδυαία, ς' Ἀσσυρία, ζ' Μεσοποταμία,
η' Ἰνδική, [ς' Ἑλυμαῖς, ζ' Ἀραβία ἡ ἀρχαία] θ' Ἀραβία ἡ εὐδαί- μων;

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 56, line 19

Τὰ δὲ ἔθνη ἃ διέσπειρε κύριος ὁ θεὸς ἐπὶ τῆς γῆς μετὰ τὸν κατακλυσμὸν ἐν ταῖς ἡμέραις
Φαλὲγ καὶ Ἰεκτὰν τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ ἐν τῇ πυργοδοίᾳ, ὅτε συνεχύθησαν αἱ γλῶσσαι αὐτῶν,
ἐστὶν ταῦτα· α' Ἑβραῖοι οἱ καὶ Ἰουδαῖοι, β' Ἀσσύριοι, γ' Χαλ- δαῖοι, δ' Μῆδοι, ε' Πέρσαι,
ς' Ἀραβες πρῶτοι καὶ Ἀραβες δεύτεροι, ζ' Μαδναῖοι, η' Μαδναῖοι δεύτεροι, θ' Ταῖανοί, ι'
Ἀλαμοσυνοί, ια' Σαρακηνοί, ιβ' Μάγοι, ιγ' Κάσπιοι, ιδ' Ἀλβα- νοί, ιε' Ἰνδοὶ πρῶτοι, Ἰνδοὶ
δεύτεροι, ις' Αἰθίοπες πρῶτοι, Αἰ- θίοπες δεύτεροι, ιζ' Αἰγύπτιοι καὶ Θηβαῖοι, ιη' Λίβυες πρῶ-
τοι, Λίβυες δεύτεροι, ιθ' Χετταῖοι, κ' Χαναναῖοι, κα' Φε- ρεζαῖοι, κβ' Εὐαῖοι, κγ' Ἀμορῆαῖοι,
κδ' Γεργεσαῖοι, κε' Ἰεβουσαῖοι, κς' Ἰδουμαῖοι, κζ' Σαρμάται, κη' Φοίνικες, κθ' Σύροι, λ'
Κίλικες, λα' Καππάδοκες, λβ' Ἀρμένιοι, λγ' Ἰβηρες, λδ' Βεβρανοί, λε' Σκύθες, λς' Κόλχοι,
λζ' Σάννιοι, λη' Βοσποριανοί, λθ' Ἀσια- νοί, μ' Ἰσαυροὶ, μα' Λυκάονες, μβ' Πισίδαι, μγ'
Γαλάται, μδ' Παφλαγόνες, μέ' Φρύγες, μς' Ἕλληνες οἱ καὶ Ἀχαιοί, μζ' Θετταλοί, μη'
Μακεδόνες, μθ' Θράκες, ν' Μυσοί, να' Βέσσοι,

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 61, line 17

ποτα- μοὶ γάρ εἰσιν ὀνομαστοὶ μ'· α' Ἰνδὸς ὁ καὶ Φεισῶν, β' Νεῖλος ὁ καὶ Γήων, γ' Τί-
γρις, δ' Εὐφράτης, ε' Ἰορδάνης, ς' Κηφισός, ζ' Τάναῖς, η' Ἰσμηνός, θ' Ἐρύμανθος, ι' Ἄλυσ, ια'
Ἀσωπός, ιβ' Θερμῶδων, ιγ' Ἐρασινός, ιδ' Ρεῖος, ιε' Ἀλφειός, ις' Βορυ- σθένης, ιζ' Ταῦρος, ιη'
Εὐρώτας, ιθ' Μαίανδρος, κ' Εἰρμός, κα' Ἀξίος, κβ' Πύραμος, κγ' Βοῖος, κδ' Ἐβρος, κε' Σα-
γάριος, κς' Ἀχελῷος, κζ' Πηνειός, κη' Εὐήνος, κθ' Σπερχειός, λ' Κάϋ- στρος, λα' Σιμόεις, λβ'
Σκάμανδρος, λγ' Στρυμῶν, λδ' Παρ- θένιος, λε' Ἰστρος, λς' Βαῖτις, λζ' Ρῆνος, λη' Ροδανός,
λθ'

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 64, line 11

Περὶ ἀστρονομίας

Ἐν τοῖς χρόνοις τῆς πυργοδοσίας ἐκ τοῦ γένους – τοῦ Ἀρφα- ξὰδ ἀνὴρ τις Ἰνδὸς ἀνεφάνη
σοφὸς ἀστρονόμος, ὀνόματι Ἀν- δουβάριος, ὃς καὶ συνεγράψατο πρῶτος Ἰνδοῖς ἀστρονομίαν.

Chronicon Paschale, Chronicon paschale Page 268, line 8

ὁ δὲ αὐτὸς καὶ ἄλλας βασιλείας περιεῖλεν Ἀσίας, Κα- ρίας, Λυκίας, Ἰνδῶν πρὸς βορρῆαν
καὶ Σακῶν καὶ Σκυθῶν.

6.22 Choricius of Gaza

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Choricius, of Gaza (Greek: *Χορίκιος*), Greek sophist and rhetorician, flourished in the time of Anastasius I (AD 491-518).

He was the pupil of Procopius of Gaza, who must be distinguished from Procopius of Caesarea, the historian. A number of his declamations and descriptive treatises have been preserved. The declamations, which are in many cases accompanied by explanatory commentaries, chiefly consist of panegyrics, funeral orations and the stock themes of the rhetorical schools. The wedding speeches, wishing prosperity to the bride and bridegroom, strike out a new line.

Choricius was also the author of descriptions of works of art after the manner of Philostratus. The moral maxims, which were a constant feature of his writings, were largely drawn upon by Macanus Chrysocephalus, metropolitan of Philadelphia (middle of the 14th century), in his *Rodonia* (rose-garden), a voluminous collection of ethical sayings.

The style of Choricius is praised by Photius as pure and elegant, but he is censured for lack of naturalness. A special feature of his style is the persistent avoidance of hiatus, peculiar to what is called the school of Gaza. (From Wikipedia²¹)

Choricius Rhet., Soph., Opera (4094: 001) “Choricii Gazaei opera”, Ed. Foerster, R., Richtsteig, E. Leipzig: Teubner, 1929. Oration-declamation-dialexis 3, section 2, paragraph 67, line 3

σκοπεῖτε γάρ· νῆσός ἐστιν ὄνομα μὲν Ἰοτάβη, τὸ δὲ ἔργον αὐτῆς ὑποδοχὴ φορ-
τίων τῶν Ἰνδικῶν, ὧν μέγας φόρος τὰ τέλη.

Choricius Rhet., Soph., Opera Oration-declamation-dialexis 10, section 1, paragraph 6, line 5

οὕτω γὰρ Ἀχιλλέα τε μᾶλλον κοσμήσει καὶ σφαλερωτέραν ἀπο-
δείξει τὴν Τροίαν τοῦ σώζειν εἰωθότος ἀνηρημένου μηδὲ τῶν ἀρτίως ἐλθόντων τῇ Τροίᾳ συμμαχῶν Αἰθίοπων, Ἰνδῶν,
Ἀμαζόνων εἰς ἐπικουρίαν ἀποχρῆν δεικνυμένων.

Choricius Rhet., Soph., Opera Oration-declamation-dialexis 10, section 2, paragraph 24, line 1

Πρὸς τούτῳ μοι καὶ Ἰνδοὺς καὶ Αἰθίοπας λέγε· τὸ γὰρ αὐτό μοι κατὰ πάντων εἰπεῖν
ὑπάρξει δικαίως, εἴπερ καὶ Αἰθίοπες καὶ Ἰνδοὶ πάρεισιν ἐγνωκότες, ὥς ἦν Ἑκτωρ ἡμῖν εὖ μάλα
συγχεροτημένος τὰ τοῦ πολέμου καὶ δύναμιν ἡσκημένος ἀξίαν θαυμάσαι δεινὸς μὲν ἀθυ-
μοῦντα στρατὸν ἀγαθῶν ἐλπίδων πληρῶσαι, εὖ δὲ παρασχὼν καὶ ταῖς ὁλκάσιν αὐταῖς φλόγα
προσάγειν.

21. <http://en.wikipedia.org/wiki/Choricius>

6.23. EUTECNIUS

Choricius Rhet., Soph., Opera Oration-declamation-dialexis 12, section 1, paragraph 6, line 4

ἀλλὰ περιττὸς ὁ Φθιώτης τῇ Τροίᾳ δειχθήσεται συλλαμ-
βανόντων αὐτῇ τῶν Ὀλυμπίων
τῷ περὶ τὴν Ἑκτορος ἀτιμίαν ἐλέω καὶ πολλῆς ἄρτι παραγενομένης ἐπικουρίας Αἰθιοπῶν,
Ἰνδῶν, Ἀμαζόνων.

Choricius Rhet., Soph., Opera Oration-declamation-dialexis 12, section 2, paragraph 28, line 1

Εἶεν· τὴν δὲ τῶν Ἰνδῶν ἐπικουρίαν, τὴν δὲ τῶν Αἰθιοπῶν προσθήκην ποῦ χοροῦ τάξομεν;

6.23 Eutecnius

(Εὐτέκνιος; Eutéknios). The famous Cod. Vindobonensis med. gr. 1 (late 5th cent. AD) with the herbal of Pedanius Dioscorides also contains prose paraphrases on Nicander's Thēriaká and Alexiphármaka [4; 2; 5]. A remark in a manuscript attributes them to a 'rhetor' (σοφιστής; sophistēs) by the name of E., who is to be dated sometime between the 3rd and 5th cents. AD [3. 34-37]; without any solid proof, the following anonymous paraphrases are also attributed to the same E.: ... (From Brill's New Pauly²²)

Eutecnius Soph., Paraphrasis in Nicandri theriaca (0752: 001) "Eutecnii paraphrasis in Nicandri theriaca", Ed. Gualandri, I. Milan: Istituto Editoriale Cisalpino, 1968. Page 67, line 15

<Καὶ> μὴν καὶ ἡ Ἰνδῶν ὅποσα γῆ καὶ ὁ Χοάσπης ποταμὸς ἀρώματα φέρει σὺν ταύταις
μύγνυε, καὶ πιστακίων ἀκρέμονας (ταῖς σμικραῖς ἀμυγδάλαις ὁ τῶν πιστακίων πως παρέοικε
καρπός)· καυκαλίδες τε καὶ μύρτα καὶ ἄρμινθος ἡ βοτάνη καὶ μάραθρον χλωρόν· ἔτι μὲν τοῖσδε
παρέστω σοι καὶ ἐρύσιμος βοτάνη καὶ τῶν ἀγρίων ἐρεβίνθων ὁ καρπὸς βαλλέσθω σὺν αὐτοῖς
τοῖς κλάδοις (ὁδμὴν δὲ βαρεῖαν ὁ ἀγριος οὗτος ἐρεβίνθος ἔχει, καὶ ἐστὶν ἐπαχθής) σισύμβριόν τε
δὴ καὶ τοῦτο ἐπειδὰν ἐν τῇ ὥρᾳ τοῦ ἀνθους γένηται· ὠφελιμότατον γὰρ τοῖς

Eutecnius Soph., Paraphrasis in Oppiani cynegetica (fort. auctore Eutecnio) (0752: 003) "Die Paraphrase des Euteknios zu Oppians Kynēgetika", Ed. Tüselmann, O. Berlin: Weidmann, 1900; Abhandlungen der königlichen Gesellschaft der Wissenschaften zu Göttingen, Philol.-hist. Kl., N.F. 4.1. Page 25, line 4

Ἄλλ' ἔμαθον οὐκ εἰς μακρὰν τῆς ἐταιρείας τὸ ἀσύμφορον καὶ πικρῶς τῆς συνηθείας ἀπώ-
ναντο, ἀντὶ φίλων καὶ συνήθων ἀλλήλοις καταστάντες ἐχθροὶ καὶ ἐπίβουλοι· κυνηγῶν γὰρ

22. <http://referenceworks.brillonline.com/entries/brill-s-new-pauly/eutecnius-e407140?s.num=0>

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ἐπιφροσύναις καὶ μηχανήμασι δόρκοι τε περδίκων ψευδέσιν ἐάλωσαν ἀπατηθέντες ἰνδάλμασι καὶ δόρκων ἔμπαλιν πέρδικες.

Eutecnius Soph., Paraphrasis in Oppiani cynegetica (fort. auctore Eutecnio) Page 39, line 26

Οὐδὲ Γάγγη τῷ παρ' Ἰνδοῖς ποταμῷ τοσοῦτον βρύχημα, ὅς ἐξ ἀποτόμων καταρρέων πετρῶν ἐστὶ μὲν <καὶ> καθ' αὐτὸν πολὺς, μείζων δὲ γίνεται ποταμῶν ἐπιμιγνυμένων ἄλλων καὶ συνεισβαλόντων ἐκείνῳ τὰ ρεύματα, ὑφ' ὧν εἰς τὸ μετέωρον κυρτούμενος πλάτει μὲν καὶ μεγέθει χώρας καλύπτει τὰς παραιγιαλίτιδας· οὕτως ὁ θῆρ ἐπιβρέμεται τῷ φοβερῷ τοῦ βρυχήματος, καὶ ἀπὸ τῶν ὁρέων ἦχον προκαλούμενος ὥρμηται κατὰ τῶν ἀνδρῶν σαρκῶν ἀνθρωπείων ἐμφορηθῆναι διψῶν· οἱ δὲ ὑπομένουσι τὴν ὀρμὴν ἐστῶτες ἀμεταστρεφεῖς καὶ ἀτίνακτοι.

6.24 Mantissa Proverbiorum

Mantissa Proverbiorum, Mantissa proverbiorum (0200: 001) “Corpus paroemiographorum Graecorum, vol. 2”, Ed. von Leutsch, E.L. Göttingen: Vandenhoeck & Ruprecht, 1851, Repr. 1958. Centuria 2, section 11, line 3 ὁ δὲ ποηφάγος ζῶν ἐστὶν ἐν Ἰνδοῖς.

6.25 Marcian of Heraclea

Marcian of Heraclea (Marcianus Heracleensis) was a minor Greek geographer of Late Antiquity (fl. ca. 4th century). His surviving works are:

Periplus maris externi, ed. Müller (1855), 515-562. Menippi periplus maris interni (epitome Marciani), ed. Müller (1855), 563-572. Artemidori geographia (epitome Marciani), ed. Müller (1855), 574-576. (From Wikipedia²³)

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri (4003: 001) “Geographi Graeci minores, vol. 1”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1855, Repr. 1965. Book 1, section A, line 6

Τῶν δεξιῶν μερῶν τοῦ τε Ἀραβίου κόλπου καὶ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης καὶ τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους περίπλους.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section A, line 8

23. http://en.wikipedia.org/wiki/Marcianus_Heracleensis

6.25. MARCIAN OF HERACLEA

Τῶν ἀριστερῶν μερῶν τοῦ τε Ἀραβίου κόλπου καὶ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης καὶ τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους περίπλους.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section A, line 16

Γεδρωσίας περίπλους. Ἰνδικῆς τῆς ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ καὶ τῶν ἐν αὐτῇ κόλπων καὶ νήσων περίπλους.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section A, line 20

Τοῦ Γαγγητικοῦ κόλπου περίπλους. Ἰνδικῆς τῆς ἐκτὸς Γάγγου ποταμοῦ καὶ τῶν ἐν αὐτῇ κόλπων περίπλους.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 1, line 27

τάτου Πτολομαίου ἐκ τε τῆς Πρωταγόρου τῶν σταδίων ἀναμετρήσεως, ἣν τοῖς οἰκείοις τῆς γεωγραφίας βιβλίοις προστέθεικεν, ἔτι μὴν καὶ ἐτέρων πλείστων ἀρχαίων ἀνδρῶν, τὸν περίπλου ἀναγράψαι προειλόμεθα ἐν βιβλίοις δυσὶ, τὸν μὲν ἑῶν καὶ μεσημβρινὸν ὠκεανὸν ἐν τῷ προτέρῳ βιβλίῳ, τὸν δ' ἐσπέριον καὶ τὸν ἀρκτῶν ἐν τῷ δευτέρῳ, ἅμα ταῖς ἐν αὐτοῖς κεκείμεναις μεγίσταις νήσοις, τῇ τε Ταπροβάνῃ καλουμένῃ, τῇ Παλαισιμούνδου λεγομένη πρότερον, καὶ ταῖς Πρεττανικαῖς ἀμφοτέραις νήσοις· ὧν τὴν μὲν πρώτην κατὰ [τὸ] μεσαίτατον τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους κεῖσθαι συνέστηκε, τὰς δ' ἐτέρας δύο ἐν τῷ ἀρκτῷ ὠκεανῷ.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 6, line 4

Τῶν δὲ τριῶν θαλασσῶν τῷ μεγέθει τυγχάνει πρώτη μὲν ἡ κατὰ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος· δευτέρα δὲ ἡ καθ' ἡμᾶς ἡ μεταξὺ Λιβύης καὶ Εὐρώπης, ἀρχομένη μὲν ἀπὸ Γαδείρων ἥτοι τοῦ Ἡρακλείου πορθμοῦ, δῆκουσα δὲ μέχρι τῆς Ἀσίας· τρίτη δὲ ἡ Ἰρκανία.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 6, line 10

Μέγεθος δὲ τῆς οἰκουμένης, τὸ μὲν ἀπὸ ἀνατολῆς ἐπὶ δυσὶν ἀναμεμέτρηται σταδίων Μ ζ', ἡφμέ· τοῦτο δὲ ἐστὶ τὸ ἀπὸ Γάγγου ποταμοῦ ἐκβολῶν, τοῦ ἐν Ἰνδοῖς ἀνατολικωτάτου ποταμοῦ, ἐπὶ τὸ δυτικώτατον τῆς ὅλης οἰκουμένης ἀκρωτήριον, ὃ καλεῖται μὲν Ἰερὸν ἄκρον, τῆς δὲ Ἰβηρίας ἐστὶ τῶν Λυσιτανῶν ἔθνος.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 10, line 4

Τῶν μὲν οὖν ἀριστερῶν τῆς Ἀσίας μερῶν, τουτ' ἐστὶ τῆς τε Ἀραβίας τῆς Εὐδαίμονος καὶ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης καὶ μετ' ἐκείνην τοῦ Περσικοῦ κόλπου καὶ τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους παντὸς ἄχρι τοῦ Σινῶν (τοῦ) ἔθνους καὶ τοῦ πέρατος τῆς ἐγνωσμένης γῆς τὸν ἀκριβέστατον ποιησόμεθα περίπλου καὶ τὴν τῶν σταδίων ἀναμέτρησιν.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 10, line 18

Τούτων μὲν γὰρ τῶν δεξιῶν μερῶν ἐπιδρομὴ ἐστὶν ἡ τῆς ἀναμετρήσεως πεποιήμεθα σαφῆ, μιᾶς ἕνεκα τῆς θέσεως τῆς τε γῆς καὶ τῆς θαλάσσης, ἥνπερ ἔχει πρὸς τὰς ἀντιπέρα τῆς Ἀσίας χώρας, τουτέστι τῶν τε Ἀράβων καὶ τῶν Ἰνδῶν καὶ τῶν ἄλλων ἐθνῶν· τῶν δὲ ἀριστερῶν μερῶν μετὰ τῆς προειρημένης ἐπαγγελίας τὸν περίπλου σπουδῇ ἐποιησάμεθα.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 11T, line 2

ΤΩΝ ΔΕΞΙΩΝ ΜΕΡΩΝ ΤΟΥ ΤΕ ΑΡΑΒΙΟΥ ΚΟΛΠΟΥ ΚΑΙ ΤΗΣ ΕΡΥΘΡΑΣ ΘΑΛΑΣΣΗΣ ΚΑΙ ΤΟΥ ΙΝΔΙΚΟΥ ΠΕΛΑΓΟΥΣ ΠΕΡΙΠΛΟΥΣ.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 12, line 3

Ἐκπλεύσαντι δὲ τὸν κόλπον καὶ τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν, ἡρέμα πως μετὰ τὸν κόλπον κατὰ τὸ ἄκρω- τήριον στενουμένην, ἐκδέχεται τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος ἀναπεπταμένον ἐπὶ πολὺ καὶ τῷ μὲν μήκει διῆκον πρὸς τὴν ἑῷ καὶ τὰς ἀνατολάς τοῦ ἡλίου μέχρι Σινῶν τοῦ ἔθνους, ὅπερ ἐπὶ τέλει τῆς οἰκουμένης τυγχάνει κείμε- νον κατὰ τὴν πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς ἄγνωστον γῆν, τῷ δὲ πλάτει πρὸς μεσημβρίαν ἀναχόμενον ἐπὶ πλείστον, μέχρι τῆς ἐτέρας ἀγνώστου γῆς τῆς κατὰ τὴν μεσημ- βρίαν ὑπαρχούσης, καθ' ἣν καὶ ἡ Πρασῶδης καλου- μένη διατείνει θάλασσα παρ' ὅλην τὴν μεσημβρινήν

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 12, line 12

ἀναπεπταμένον ἐπὶ πολὺ καὶ τῷ μὲν μήκει διῆκον πρὸς τὴν ἑῷ καὶ τὰς ἀνατολάς τοῦ ἡλίου μέχρι Σινῶν τοῦ ἔθνους, ὅπερ ἐπὶ τέλει τῆς οἰκουμένης τυγχάνει κείμε- νον κατὰ τὴν πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς ἄγνωστον γῆν, τῷ δὲ πλάτει πρὸς μεσημβρίαν ἀναχόμενον ἐπὶ πλείστον, μέχρι τῆς ἐτέρας ἀγνώστου γῆς τῆς κατὰ τὴν μεσημ- βρίαν ὑπαρχούσης, καθ' ἣν καὶ ἡ Πρασῶδης καλου- μένη διατείνει θάλασσα παρ' ὅλην τὴν μεσημβρινήν ἄγνωστον γῆν μέχρι τῆς ἑῷ, τοῦ μὲν Ἰνδικοῦ πελάγους ὑπάρχουσα, ταύτην δὲ διὰ τὴν χροῖαν λαχούσα τὴν προσηγορίαν.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 14, line 3

Καὶ ἡ μὲν ὅλη θέσις καὶ περιγραφὴ τῶν δεξιῶν μερῶν τοῦ τε Ἀραβίου κόλπου καὶ τῆς Ἐρυθρᾶς θα- λάσσης καὶ προσέτιγε τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους τοῦ πρὸς τὴν μεσημβρίαν ἀποκλίνοντος, τοῦτον ἔχει τὸν τρόπον· τὰ δὲ κατὰ μέρος οὕτω πως ἔχει· [Λεῖπει τὰ κατὰ μέρος.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 15T, line 2

ΤΩΝ ΑΡΙΣΤΕΡΩΝ ΜΕΡΩΝ ΤΟΥ ΤΕ ΑΡΑΒΙΟΥ ΚΟΛΠΟΥ ΚΑΙ ΤΗΣ ΕΡΥΘΡΑΣ ΘΑΛΑΣΣΗΣ ΚΑΙ ΤΟΥ ΙΝΔ*ΙΚΟΥ ΠΕΛΑΓΟΥΣ ΠΑΝΤΟΣ ΠΕΡΙΠΛΟΥΣ.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 15, line 15

Ἐν τούτῳ δὲ τῷ μέρει τῆς θα- λάσσης καὶ τὸ τῶν Ὀμηριτῶν ἔθνος τυγχάνει τῆς τῶν Ἀράβων ὑπάρχον γῆς, μέχρι τῆς ἀρχῆς τοῦ Ἰνδικοῦ διῆκον πελάγους.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 15, line 17

Μετὰ δὲ τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν ἐξῆς ἐστὶ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 16, line 3

Ἐκπλεύσαντι δὲ τὸν κόλπον καὶ πρὸς τὴν ἑῷ τὸν πλοῦν ποιούμενῳ ἀριστεράν τε ὁμοίως τὴν ἡπειρον ἔχοντι, ἐκδέχεται πάλιν τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος, ᾧ τὸ λει- πόμενον τῆς Καρμανίας ἔθνος παροικεῖ.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 16, line 6

Καὶ μετὰ τοῦτο τὸ τῆς Γεδρωσίας ἔθνος κείμενον τυγχάνει· ἐξῆς δὲ τούτων ἐστὶν ἡ Ἰνδικὴ ἢ ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ κει- μένη, ἥς κατὰ τὸ μεσαίτατον τῆς ἡπείρου νῆσος κατ- ἀντικρὺ κεῖται μεγίστη Ταπροβάνη καλουμένη.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 16, line 9

Μετὰ δὲ ταύτην ἡ ἐτέρα ἐστὶν Ἰνδικὴ ἢ ἐκτὸς Γάγγου ποτα- μοῦ, ὅρου τυγχάνοντος ἑκατέρων τῶν Ἰνδικῶν γαιῶν.

6.25. MARCIAN OF HERACLEA

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 16, line 11

Ἐν δὲ τῇ ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικῇ ἡ Χρυσὴ καλουμένη χερσόνησός ἐστι· μεθ' ἣν ὁ καλούμενος Μέγας κόλπος· οὗ κατὰ τὸ μεσαίτατον οἱ ὄροι τῆς ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδι- κῆς καὶ τῶν Σινῶν εἰσιν.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 17, line 4

Καὶ ἡ μὲν ὅλη τῶν τόπων θέσις καὶ περιγραφὴ τῶν ἀριστερῶν τῆς Ἀσίας μερῶν, τοῦ τε Ἀραβίου κόλ- που καὶ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης καὶ προσέτιγε τοῦ Περσικοῦ κόλπου καὶ τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους παντός, τοῦτον ἔχει τὸν τρόπον· τὰ δὲ κατὰ μέρος οὕτω πως ἔχει.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 17, line 6

Ἡ Εὐδαίμων Ἀραβία περιορίζεται ἀπὸ μὲν ἄρκτων ταῖς πλευραῖς τῆς τε Πετραίας Ἀρα- βίας καὶ ἔτι τῆς Ἐρήμου Ἀραβίας καὶ τῷ νοτίῳ μέρει τοῦ Περ- σικοῦ κόλπου μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ Τίγριδος ποταμοῦ, [ἀπὸ δὲ ἀνατολῶν μέρει τε τοῦ Περσικοῦ κόλπου] καὶ μέρει τῆς Ἰνδικῆς θαλάσσης, ἀπὸ δὲ μεσημβρίας τῇ Ἐρυθρᾷ θαλάσση, [ἀπὸ δὲ δύσεως τῷ Ἀραβίῳ κόλπῳ].

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 17, line 10

Προπέ- πτωκε πρὸς τὴν μεσημβρίαν εἰς τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν καὶ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος ἐπὶ πλείστον, καὶ ὥσπερ χερ- σόνησος μεγίστη πλατυτάτῳ ἰσθμῷ προσεχομένη πε- ριρρεῖται τῇ θαλάσση.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 18, line 16

<Χαδραμωτῖται>, ἔθνος περὶ τὸν Ἰνδικὸν κόλπον, τῷ Πρίονι παροικοῦντες ποταμῷ, ὥς φησι Μαρκιανὸς ἐν τῷ Περίπλῳ αὐτοῦ.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 18, line 19

<Ἀσκιται>, ἔθνος παροικοῦν τὸν Ἰνδικὸν κόλπον καὶ ἐπὶ ἀσκῶν πλέον, ὥς Μαρκιανὸς ἐν τῷ Περίπλῳ αὐτοῦ. »Παροικεῖ αὐτὸν ἔθνος καὶ αὐτὸ καλούμενον Σαχαλιτῶν· ἔτι μὴν καὶ Ἀσκιτῶν ἕτερον ἔθνος [ἐπὶ ἀσκῶν πλέον]».

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 26, line 2

Ἡ Καρμανία μέρει μὲν τινι κατὰ τὸν Περσι- κὸν κεῖται κόλπον, μέρει δὲ παρὰ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος [τὸ] μετὰ τὸν κόλπον τὸν Περσικόν.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 26, line 10

Περιορίζεται δὲ ἀπὸ μὲν ἄρκτων τῇ ἐρήμῳ Καρμανία, ἀπὸ δὲ δύ- σεως τῇ προρρηθείσῃ Περσίδι καὶ τῷ προειρημένῳ Βα- γράδα ποταμῷ καὶ ἔτι τῷ λειπομένῳ μέρει τοῦ Περ- σικοῦ κόλπου, (διὰ τὸ πρὸς δύσιν ὄρεᾶν αὐτὸν) καλουμένῳ Καρμανικῷ· ἀπὸ δὲ ἀνατολῶν Γεδρωσία τῷ ἔθνει παρὰ τὰ Παρσικὰ ὄρη· ἀπὸ δὲ μεσημβρίας μετὰ τὰ στενὰ τοῦ Περσικοῦ κόλπου τῷ Ἰνδικῷ πελάγει.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 28, line 2

Μετὰ δὲ τὴν Κάρπελλαν ἄκραν] ἐκδέχεται τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος πρὸς ἀνατολὰς ἐκτεινόμε- νον· ᾧ τὸ λειπόμενον μέρος τῆς Καρμανίας παρήκει μέχρι Μου- σαρναίων γῆς.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 30, line 7

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Οἱ πάντες ἀπὸ τοῦ Καρπέλλης ἀκρωτηρίου μέχρι Μουσάρνων πόλεως τοῦ περίπλου τῆς Καρμανίας τῆς παρὰ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος στάδιοι 𐀓𐀗𐀚𐀓.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 31, line 4

Ἡ Γεδρωσία περιρίζεται ἀπὸ μὲν ἄρκτων τῇ Δραγγιανῇ καὶ τῇ Ἀραχωσία, ἀπὸ δὲ δύσεως τῇ προει- ρημένη Καρμανία μέχρι θαλάσσης, ἀπὸ δὲ ἀνατολῶν τῷ τῆς Ἰνδικῆς μέ- ρει τῷ παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν μέχρι τοῦ πρὸς τῇ μνημονευθείσῃ Ἀραχωσία ὀρίου, ἀπὸ δὲ μεσημβρίας τῷ Ἰνδικῷ πελάγει.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 32, line 12

Ἐντεῦθεν ἄρχεται ἡ Παταλινὴ χώρα, ἥς τὸ πλεῖστον ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς τοῖς στόμασιν ἐμπε- ρεῖληφε· καὶ αὐ- τὴν δὲ τὴν μητρόπολιν καλουμένην Πάταλα μετὰ τὸ γ' στόμα τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ὥσπερ νῆσον κεῖσθαι συμ- βέβηκε, καὶ ἑτέρας πόλεις πλείστας.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 34T, line 1

Οἱ πάντες ἀπὸ Μουσάρνων πό- λεως εἰς Ῥίξανα τῆς τῶν Γεδρωσίων παραλίας στά- διοι 𐀓𐀗𐀚𐀓. INΔ*IKHΣ THΣ ENTOΣ ΓΑΓΓΟΥ ΠΟΤΑΜΟΥ, KAI TΩN EN ATTHI KOΛ- ΠΩN KAI NHΣΩN ΠEPIΠΛOYΣ.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 34, line 1

Ἡ ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ Ἰνδικὴ περιρίζεται ἀπὸ μὲν ἄρκτων τῷ Ἰμάῳ ὅρει παρὰ τοὺς ὑπερκειμέ- νους αὐτοῦ Σογδιανούς καὶ Σάκας, ἀπὸ δὲ δύσεως πρὸς μὲν τῇ θαλάσσει τῇ προειρημένη Γεδρωσία, κατὰ δὲ τὴν μεσόγειον τῇ Ἀραχωσία καὶ ἀνωτέρω τοῖς Παροπани- σάδαις, ἀπὸ δὲ ἀνατολῶν τῷ Γάγγῃ ποταμῷ, ἀπὸ δὲ μεσημβρίας τῷ Ἰνδικῷ πελάγει.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 34, line 12

Καὶ ἡ μὲν ὅλη πε- ριγραφὴ τοιαύτη· [τὰ δὲ κατὰ μέρος οὕτως ἔχει·] [Λεῖπει τὰ κατὰ μέρος] Ὅ δὲ πᾶς περίπλους ἀπὸ τοῦ Ναυστάθμου λιμένος μέ- χρι τοῦ Κῶρυ ἀκρωτηρίου τοῦ μέρους τοῦ προειρημέ- νου τῆς ἐντὸς Γάγγου Ἰνδικῆς σταδίων 𐀓𐀗𐀚𐀓 𐀓𐀗𐀚𐀓.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 35, line 1

Τῷ ἀκρωτηρίῳ τῆς Ἰνδικῆς τῷ καλουμένῳ Κῶρυ ἀντίκειται τὸ τῆς Ταπροβάνης νήσου ἀκρωτήριον τὸ καλούμενον Βόρειον.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 35F, line 2N

[Μάργανα, πόλις τῆς Ἰνδικῆς.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 36, line 12

Πάλιν δὲ ἐπανήξομεν ἐπὶ τὸν παράπλου τῆς ἐντὸς Γάγγου Ἰνδικῆς.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 37, line 5

Ἀπὸ τοῦ Ἀφετηρίου τούτου ἐκδέχεται ὁ Γάγγη- τικὸς καλούμενος κόλπος μέγιστος ὧν σφόδρα, οὗ κατὰ τὸν μυχὸν ὁ Γάγγης ἐξίησι ποταμὸς, πέντε στόμασι τὴν ἐκβολὴν ποιούμενος, ὃν ἔφαμεν ὄριον εἶναι τῆς ἐντὸς Γάγγου Ἰνδικῆς καὶ τῆς ἐκτός.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 38, line 1

[Λεῖπει τὰ κατὰ μέρος] Ἔστι δὲ τῆς ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ Ἰνδικῆς τὸ μὲν μῆκος, ἢ μα- κροτάτη τυγχάνει, ἀπὸ τοῦ πέμπτου στόματος τοῦ Γάγγου ποταμοῦ λεγομένου Ἀντιβολῇ

6.25. MARCIAN OF HERACLEA

ἕως τοῦ Ναυστάθμου λιμένος, τοῦ ἐν τῷ Κάνθι κόλπῳ, σταδίων **¶¶α ¶**ησφ'· τὸ δὲ πλάτος, ἀπὸ τοῦ ἀκρωτηρίου τοῦ καλουμένου Ἀφετηρίου ἕως τῶν πηγῶν τοῦ Γάγγου ποταμοῦ, σταδίων **¶¶α¶γ**.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 39, line 7

Οἱ δὲ σύμπαντες ἀπὸ τοῦ Ναυστάθμου λιμένος ἕως τοῦ πέμπτου στόματος τοῦ Γάγγου ποταμοῦ, ὃ καλεῖται Ἀντιβολή, τοῦ περίπλου παντὸς τῆς ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ Ἰνδικῆς στάδιοι <**¶¶γ ¶**εχρέ'>.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 40, line 1

Ἡ Ἰνδικὴ ἡ ἐκτὸς Γάγγου ποταμοῦ περιορίζε-ται ἀπὸ μὲν ἄρκτων τοῖς μέρεσι τῆς Σκυθίας καὶ τῆς Σηρικῆς, ἀπὸ δὲ δύσεως αὐτῷ τῷ Γάγγῃ ποταμῷ, ἀπὸ δὲ ἀνατολῶν τοῖς Σίναις μέχρι τοῦ καλουμένου Μεγάλου κόλπου καὶ αὐτῷ τῷ κόλπῳ, ἀπὸ δὲ μεσημβρίας τῷ τε Ἰνδικῷ πελάγει καὶ μέρει τῆς Πρασώδους θαλάσσης, ἥτις ἀπὸ τῆς Μενουθιάδος νήσου ἀρξαμένη διατείνει κατὰ παράλληλον γραμμὴν μέχρι τῶν ἀντικειμένων μερῶν τῷ Μεγάλῳ κόλπῳ, καθὰ προειρήκαμεν.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 41, line 1

Ἔστι δὲ τῆς ἐκτὸς Γάγγου ποταμοῦ Ἰνδικῆς τὸ μὲν μήκος, ἧ μακροτάτη τυγχάνει, σταδίων **¶¶α ¶**αχ'· τὸ δὲ πλάτος, ἧ πλατυτάτη ἐστὶ, σταδίων **¶¶α¶θ**.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 42, line 4

Οἱ πάντες ἀπὸ τοῦ [Μεγάλου] ἀκρωτηρίου μέχρι τοῦ πρὸς Σίναις ὀρίου τοῦ περίπλου τοῦ μέρους τοῦ Μεγάλου κόλπου τοῦ παρὰ τὴν ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικὴν τυγχάνοντος στάδιοι **¶¶α¶βφν'**.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 42, line 8

Οἱ δὲ σύμπαντες ἀπὸ τοῦ πέμπτου στόματος τοῦ Γάγγου ποταμοῦ, ὃ καλεῖται Ἀντιβολή, μέχρι τῶν πρὸς τοὺς Σίναις τὸ ἔθ-νος ὄρων τοῦ περίπλου παντὸς τῆς παραλίας τῆς ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικῆς στάδιοι **¶¶δ¶ετν'**.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 43, line 3

Τὸ τῶν Σινῶν ἔθνος περιορίζεται ἀπὸ μὲν ἄρκ-των μέρει τῆς Σηρικῆς, ἀπὸ δὲ δύσεως τῇ ἐκτὸς Γάγγου ποταμοῦ Ἰνδικῇ κατὰ τὸ προειρημένον ἐν τῷ Μεγάλῳ κόλπῳ ὄριον, ἀπὸ δὲ ἀνατολῶν ἀγνώστῳ γῇ, ἀπὸ δὲ μεσημβρίας τῇ τε μεσημβρινῇ θαλάττῃ καὶ τῇ μεσημβρινῇ ἀγνώστῳ γῇ.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 44, line 6

Δύο γὰρ ἀγνώστους ὑπονοεῖν χρὴ γὰς, τὴν τε παρὰ τὴν ἀνατο-λὴν διήκουσαν, ἧ πα-ροικεῖν εἰρήκαμεν τοὺς Σίναις, καὶ τὴν παρὰ τὴν μεσημβρίαν, ἥτις διήκει παρὰ πᾶσαν τὴν Ἰνδικὴν θάλασσαν ἥτοι τὴν Πρασώδῃ καλουμένην, μέρος οὖσαν τῆς Ἰνδικῆς θαλάσσης, ὥστε συνάπτουσιν ἑκατέρας τὰς ἀγνώστους γὰς καθάπερ τινὰ γωνίαν ἀπο-τελεῖν περὶ τὸν τῶν Σινῶν κόλπον.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 48, line 2

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Οἱ πάντες ἀπὸ τοῦ ἐν τῷ Μεγάλῳ κόλπῳ τῶν Σινῶν ὀρίου τοῦ ὄντος πρὸς τῇ Ἰνδικῇ τῇ ἐκτὸς Γάγγου ποταμοῦ ἐπὶ Κοττιάριος ποταμοῦ ἐκβολὰς τοῦ περίπλου παντὸς τῆς τῶν Σινῶν παραλίας στάδιοι 𐀀𐀁𐀂𐀃βχγ'.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 50, line 4

Καὶ τὸν μὲν ὅλον περίπλου καὶ περιγραφὴν τῆς παραθαλασσίας χώρας τοῦ τῆς Ἀσίας μέρους, τοῦ τε Ἀραβίου κόλπου καὶ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης καὶ ἔτι τοῦ Περσικοῦ κόλπου καὶ τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους, τοῦ- τον ἔχειν τὸν τρόπον συμβέβηκε· τὸ δὲ σύμπαν ἐστὶ διάστημα, τῶν κόλπων ἀπάντων περιπλεομένων ἀπὸ τοῦ Αἰλανίτου μυχοῦ ἕως Κοττιάριος ποταμοῦ ἐκβολῶν τοῦ ἐν τῷ κόλπῳ Σινῶν τυγχάνοντος, σταδίων 𐀀𐀁𐀂𐀃 𐀀𐀁𐀂 𐀀𐀃σφ'.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 51, line 6

Ἀπὸ δὲ τῶν στενῶν τοῦ Ἀραβίου κόλπου τοῦ περί- πλου τῆς τε Ἐρυθρᾶς θαλάσσης καὶ μέρους τοῦ Ἰνδι- κοῦ πελάγους στάδιοι 𐀀𐀁β 𐀀𐀁φλ'.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 51, line 18

Ἀπὸ δὲ τῶν προρρηθέντων ὄρων τῆς Γεδρωσίας καὶ ἔτι τοῦ πρώτου καὶ δυσμικωτάτου στόματος τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τοῦ λεγομένου Σάγαπα, μέχρι τοῦ πέμπτου στόματος τοῦ Γάγγου ποταμοῦ, ὃ καλεῖται Ἀντιβολή, τῆς παραλίας τῆς ἐντὸς Γάγγου ποταμοῦ Ἰνδικῆς στάδιοι 𐀀𐀁γ 𐀀𐀁χρ'.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 51, line 26

Ἀπὸ δὲ τοῦ πέμπτου στόματος τοῦ Γάγγου ποταμοῦ, ὃ καλεῖται Ἀντιβολή, μέχρι τῶν ὄρων τῶν πρὸς τοὺς Σίνας, οἵτινες ἐν τῷ μεσαιτάτῳ τοῦ καλουμένου Μεγά- λου κόλπου τυγ- χάνουσι, τῆς ἐκτὸς Γάγγου ποταμοῦ Ἰνδικῆς στάδιοι 𐀀𐀁δ 𐀀𐀁ετν'.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 1, section 52, line 3

Τέλος τοίνυν ἐνθάδε τοῦ πρώτου βιβλίου ποιησό- μεθα, παντὸς μὲν τοῦ Ἀραβίου κόλπου, πάσης δὲ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης, οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ τοῦ Ἰνδικοῦ πε- λάγους τῶν τε δεξιῶν μερῶν, ἔτι μὴν καὶ τῶν ἀριστε- ρῶν, ὅσα τῇ τῶν ἀνθρώπων ἐπιμελείᾳ καὶ φιλομαθείᾳ γέγονεν ἐφικτὰ, μέχρι τῆς ἀγνώστου γῆς καθ' ἑκατέρας τὰς ἡπείρους, τῆς τε ἐώας καὶ τῆς μεσημβρινῆς, τὸν περίπλου ἀναγράψαντες.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 2, section 2, line 14

γράφου, ὃν νομίζομεν τῆς καθ' ἡμᾶς θαλάσσης ἐπιμε- λέστατον ἐν τοῖς τῆς γεωγραφίας τὸν περίπλου πε- ποιῆσθαι· τῆς δὲ ἔξω θαλάσσης, ἣτις ὠκεανὸς παρὰ τῶν πλείστων καλεῖται, εἰ καὶ μετρίως τινῶν μερῶν ὁ προειρημένος ἐμνημόνευσεν Ἀρτεμίδωρος, ἀλλ' ὅμως τὸν ἀκριβέ- στατον ταύτης περίπλου ἐκ τῆς τοῦ θειοτά- του Πτολομαίου γεωγραφίας καὶ προσέτιγε τοῦ Πρω- ταγόρου καὶ ἐτέρων παλαιῶν ἀνδρῶν ἐξελόντες, τοῦ μὲν Ἀραβίου κόλπου καὶ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης ἐκα- τέρων τῶν ἡπείρων καὶ ἔτι γε τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους παντὸς μέχρι τῆς ἐώας καὶ τῆς ἀγνώστου γῆς μετὰ τῆς ἐνδεχομένης ἀκολουθίας ἐν τῷ προτέρῳ βιβλίῳ διεξ- ἤλθομεν· νυνὶ δὲ τὰ περὶ τὸν ἐσπέριον ὠκεανὸν ἐπε- λευσόμεθα.

Marcianus Geogr., Periplus maris exteri Book 2, section 46, line 6

6.26. AËTIUS

Ὡςπερ δὲ ἐν τῷ προτέρῳ βιβλίῳ τῶν μὲν παρὰ τὴν Λιβύην δεξιῶν μερῶν τοῦ Ἀραβίου κόλπου καὶ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης καὶ τοῦ Ἰνδικοῦ ὠκεανοῦ τοῦ πρὸς τὴν μεσημβρίαν ὁρῶντος τὸν περίπλουν ἐπὶ κεφαλαίων ἐποιησάμεθα, σαφηνείας ἕνεκα διὰ μακροῦ τὸν τῶν σταδίων ἀριθμὸν ἀποδόντες, τῶν δὲ παρὰ τὴν Ἀσίαν ἀριστερῶν ἀπάντων μερῶν μέχρι Σινῶν τοῦ ἔθνους καὶ τῆς ἀγνώστου γῆς ἀκριβῆ τὸν περίπλουν ἀνεγράψαμεν, τῶν διαστημάτων ἀπάντων τοὺς σταδίους σημάναντες· οὕτω κἀνταῦθα τῶν δεξιῶν μερῶν τοῦ ὠκεανοῦ τοῦ παρὰ τὴν Εὐρώπην ὄντος ἀπὸ τῶν Ἡρακλείων στηλῶν μέχρι τῆς ἀγνώστου γῆς καὶ τοῦ παρ' αὐτὴν περατουμένου Σαρματικοῦ

Marcianus Geogr., Menippi periplus maris interni (epitome Marciani) (4003: 002)
"Geographi Graeci minores, vol. 1", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1855, Repr. 1965.
Section 2, line 14

Οἱ γὰρ δὴ δοκοῦντες ταῦτα μετὰ λόγων ἐξητακέναι, Τιμοσθένης ὁ Ῥοδῖός ἐστιν, ἀρχικυβερνήτης τοῦ δευτέρου Πτολεμαίου γεγονώς, καὶ μετ' ἐκεῖνον Ἐρατοσθένης, ὃν Βῆτα ἐκάλεσαν οἱ τοῦ Μουσείου προστάντες, πρὸς δὲ τούτοις Πυθέας τε ὁ Μασσαλιώτης καὶ Ἰσίδωρος ὁ Χαρακηνὸς καὶ Σώσανδρος ὁ κυβερνήτης, τὰ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν γράφας, Σιμμέας τε ὁ τῆς οἰκουμένης ἐνθεὶς τὸν περίπλουν· ἐτι μὲν Ἀπελλᾶς ὁ Κυρηναῖος καὶ Εὐθυμένης ὁ Μασσαλιώτης καὶ Φιλέας ὁ Ἀθηναῖος καὶ Ἀνδροσθένης ὁ Θάσιος καὶ Κλέων ὁ Σικελιώτης, Εὐδόξος τε ὁ Ῥοδῖος καὶ Ἄνων ὁ Καρχηδόνιος, οἱ μὲν μερῶν τινῶν, οἱ δὲ τῆς ἐντὸς πάσης θαλάττης, οἱ δὲ τῆς ἐκτὸς περίπλουν ἀναγράφαντες· οὐ μὲν ἀλλὰ καὶ Σκύλαξ ὁ Καρυανδεὺς καὶ Βωτθαῖος· οὗτοι δὲ ἐκάτεροι διὰ τῶν ἡμερησίων πλῶν, οὐ διὰ τῶν σταδίων τὰ διαστήματα τῆς θαλάσσης ἐδήλωσαν.

6.26 Aëtius

Aëtius of Amida (Greek: Ἀέτιος Ἀμιδηνός, Latin: Aëtius Amidenus) (fl. mid-5th century to mid-6th century) was a Byzantine physician and medical writer,[1] particularly distinguished by the extent of his erudition.[2] Historians are not agreed about his exact date. He is placed by some writers as early as the 4th century; but it is plain from his own work that he did not write till the very end of the 5th or the beginning of the 6th, as he refers not only to Patriarch Cyril of Alexandria, who died 444,[3] but also to Petrus archiater, who could be identified with the physician of Theodoric the Great,[4] whom he defines a contemporary. He is himself quoted by Alexander of Tralles,[5] who lived probably in the middle of the 6th century. He was probably a Christian,[citation needed] which may account

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

perhaps for his being confounded with Aëtius of Antioch, a famous Arian who lived in the time of the Emperor Julian.

Aëtius seems to be the first Greek medical writer among the Christians who gives any specimen of the spells and charms so much in vogue with the Egyptians, such as that of Saint Blaise in removing a bone which sticks in the throat,[8] and another in relation to a fistula.[9]

The division of his work *Sixteen Books on Medicine* (Βιβλία Ιατρικά Εκαίδεκα) into four tetrabibli was not made by himself, but (as Fabricius observes) was the invention of some modern translator, as his way of quoting his own work is according to the numerical series of the books. Although his work does not contain much original matter, and is heavily indebted to Galen and Oribasius,[10] it is nevertheless one of the most valuable medical remains of antiquity, as being a very judicious compilation from the writings of many authors, many from the Alexandrian Library, whose works have been long since lost.[11]

In the manuscript for book 8.13, the word *ἀκμή* (acme) is written as *ἀκνή*, the origin of the modern word *acne*. [12] (From Wikipedia²⁴)

Aëtius Med., *Iatricorum liber i* (0718: 001) “Aëtii Amideni libri medicinales i–iv”, Ed. Olivieri, A. Leipzig: Teubner, 1935; *Corpus medicorum Graecorum*, vol. 8.1. Chapter 131, line 39

στάχους λι κιναμώνου λι καρυοφύλλων λι ἀμώνου λι σχινάνθων λι καλάμου ἀρωματικοῦ
λι ξυλαλόης λι καρύων μυριστικῶν λι καχρύου λι ξανθο- καρύων λι μάκερ λι γαλαγγά λι
βαλσάμου λι καρποβαλσάμου λι ξυλο- βαλσάμου λι μυροβαλάνου λι φύλλου ἰνδικοῦ λι
κασίας λι ξηροκαρυο- φύλλου λι πεπέρως μακροῦ λι πεπέρως λευκοῦ λι πεπέρως κοινοῦ λι
ἄσαρ χαλδαικοῦ λι κελτικοῦ λι θυμιάματος λι σμύρνης τρωγλίτιδος λι κόστου λι μόσχου λι
ἄμπαρ λι γομφίτου λαδάνου λι τερεβίνθης λι οἶνου εὐώδους τὸ ἄρκοῦν.

Aëtius Med., *Iatricorum liber i* Chapter 132, line 4

Ἐσκεύασα ταύτην ἐν Ἀλεξανδρείᾳ καὶ ἐστὶ πάνυ καλλίστη· ἀσπαλάθου ¶ 5' ξυλοβαλ-
σάμου ¶ <θ> κυτέρων ¶ <δ> ἐλενίου ¶ 5' ἱρεως ¶ 5' καλάμου γρ <ιη> σχοίνου ἄνθους ¶ <β> 5
στύρακος λιπαροῦ ¶ <β> κάρνα ἰνδικὰ <β> φύλλου γρ <ιη> ναρδοστάχους ¶ <α> καρυοφύλ-
λου ¶ <α> 5 ἀρνάβω ¶ <α> 5 ἀμώνου ¶ γ' κασίας ¶ <β> κόστου ¶ <α> σμύρνης ¶ <α> ὕπνου
¶ <γ> ξυλοκασίας ¶ <γ> ἐλαίου/ξε9 <ι>.

Aëtius Med., *Iatricorum liber i* Chapter 261, line 11

τὸ δὲ ἰνδικὸν εἰς ἅπαντα χρησιμώτερον.

Aëtius Med., *Iatricorum liber i* Chapter 265, line 1

24. http://en.wikipedia.org/wiki/Aëtius_of_Amida

6.26. AËTIUS

Μάκερ φλοιός ἐστὶν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς κομιζόμενος· στύφει δὲ μετὰ βραχείας δριμύτητος.

Aëtius Med., Iatricorum liber i Chapter 289, line 8

σύγκειται δὲ ἐκ τε στυφούσης αὐτάρκως οὐσίας καὶ δριμείας θερμῆς οὐ πολλῆς καὶ τινος ὑποπίκρου βραχείας· ὅθεν καὶ πρὸς ἥπαρ καὶ στομάχον εὐλόγως ἀρ- μόττει πινομένη τε καὶ ἔξωθεν ἐπιτιθεμένη καὶ οὖρα κινεῖ καὶ δῆξεις ἰᾶται στομάχου καὶ τὰ κατὰ τὴν γαστέρα καὶ τὰ ἔντερα ρεύματα ξη- ραίνει καὶ πρὸς τούτοις ἔτι τὰ κατὰ τὴν κεφαλὴν καὶ τὸν θώρακα· ἰσχυροτέρα δὲ ἢ Ἰνδική, μελαντέρα τῆς Συριακῆς ὑπάρχουσα.

Aëtius Med., Iatricorum liber ii (0718: 002) “Aëtii Amideni libri medicinales i–iv”, Ed. Olivieri, A. Leipzig: Teubner, 1935; Corpus medicorum Graecorum, vol. 8.1. Chapter 30, line 1

Ὁ δὲ ἱερακίτης καὶ ὁ Ἰνδικὸς τὰς αἱμορροΐδας ἀναξη- ραίνουνσι περιεπτόμενοι δέξιῳ μηνῶ, ὧν καὶ ἡμεῖς ἐπειράθημεν.

Aëtius Med., Iatricorum liber ii Chapter 30, line 9

ὁ δὲ Ἰνδικὸς τὴν μὲν χρόαν ἐστὶν ὑπόπυρρος· ἀνέει δὲ τριβόμενος πορ- φυροειδῆ χυλόν, οὔτε πυκνὸς ἐστὶν οὔτε καρτερός καὶ δύναται μετ’ οἶνου πινόμενος ἀκράτου αἱμοπτυκτοὺς ὠφελεῖν.

Aëtius Med., Iatricorum liber iii (0718: 003) “Aëtii Amideni libri medicinales i–iv”, Ed. Olivieri, A. Leipzig: Teubner, 1935; Corpus medicorum Graecorum, vol. 8.1.

Aëtius Med., Iatricorum liber iv (0718: 004) “Aëtii Amideni libri medicinales i–iv”, Ed. Olivieri, A. Leipzig: Teubner, 1935; Corpus medicorum Graecorum, vol. 8.1. Chapter 10, line 1

Λύκιον ἰνδικὸν μάλιστα, εἰ δὲ μή γε, τὸ παταρικὸν ἀνέσας μετὰ γάλακτος, ἐπίχρει τὰ ἄνω βλέφαρα σὺν ταῖς ὀφρύσιν· ἐνίοτε δὲ καὶ αὐτοῖς τοῖς ὀφθαλμοῖς ἐνσταλὲς ἐξυδαρώσας αὐτὸ τῷ γάλακτι.

Aëtius Med., Iatricorum liber vi (0718: 006) “Aëtii Amideni libri medicinales v–viii”, Ed. Olivieri, A. Berlin: Akademie-Verlag, 1950; Corpus medicorum Graecorum, vol. 8.2. Chapter 24, line 90

σαγαπηνοῦ [β] <β> ὀπίου Θηβαικοῦ [β] <β> κρόκου γρ’ <α> ς λυκίου Ἰνδικοῦ γρ’ <α> ς σαρκὸς καρῶν μὴ πάνυ παλαιῶν [μ] <μ>, ἀναλαμβάνει καὶ δίδου [α] <α> σὺν ὕδατι ὀμβρίῳ θερμῷ εἰς νύκτα, μετὰ τὴν ἀκμὴν τοῦ πυρετοῦ, ὥστε ἔωθεν μὲν τῆς διὰ καρκίνων, εἰς ἐσπέραν δὲ τῆς διὰ καρῶν.

Aëtius Med., Iatricorum liber vi Chapter 24, line 117

ὠφελίμως δὲ δίδεται καὶ τῆς ἀγρίας συκῆς ὁ φλοιὸς τῶν ῥάβδων ξηραίνόμενος καὶ κοπτόμε- νος καὶ ποτιζό- μενος σὺν ὕδατι καὶ τὸ λύκιον τὸ Ἰνδικὸν καὶ τὸ ἀψίνθιον καὶ τὸ σκόρδιον καὶ τὸ μικρὸν κενταύριον ἀριστολοχία ἀρτεμισία χαμαῖδρυς βρυωνίας ῥίζα πόλιον λάσαρ καρκίνων ποταμίων ἀφέψημα ἀνήθου πολλοῦ συνεφομένου.

Aëtius Med., Iatricorum liber vi Chapter 65, line 17

μεγάλας ἐχόντων τὰς τρίχας ἀρμόττειν, οἷόν ἐστι τὸ κεκαυμένον νί- τρον καὶ ὁ ἀφρός τοῦ νίτρου καὶ τὸ ἀφρόνιτρον καὶ τὰ καλλάϊνα ὄστρακα καὶ τὰ τῶν κεραμίδων καὶ τὰ

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

τοῦ κλιβάνου ὅστρακα κίσσηρις ἄκαυστός τε καὶ κεκαυμένη κηρύκων τε καὶ πορφυρῶν καὶ τῶν λοιπῶν ὁστρέων ὅστρακα κεκαυμένα (τὸ δὲ τῆς σηπίας καὶ ἄκαυστον) ἄλκυ- ὀνιά τε καὶ στρουθίου ῥίζαι, οἳ τε ἐλλέβοροι καὶ ἡ τῆς βρυωνίας ῥίζα καὶ ἡ τοῦ δρακοντίου καὶ ἀριστολοχίας καὶ πάνακος ῥίζα καὶ κάχρυ καὶ τὰ τοιαῦτα· εὐώδη δὲ αὐτὰ ποιῆσαι βουλόμενος μίξεις κυπέρου καὶ μελιώτου καὶ ῥόδων ξηρῶν καὶ σχοίνου ἄνθους καὶ ἱρεως καὶ μελισσοφύλλου, τοῖς δὲ πλουσίοις καὶ νάρδου Κελτικῆς καὶ Ἰνδικῆς καὶ ἀμώμου καὶ φύλλου <μαλαβάθρου> καὶ σμύρνης καὶ κόστου· λεπτύνει δὲ τρίχας καὶ τέφρα κληματίνη καὶ συκίνη καὶ τιθυμαλλίνη παρατρι- βομένη λεία ἐν βαλανείῳ καὶ ἡ ἀπὸ τῶν κεκαυμένων γιγάρτων τέφρα στυπτηρία σχιστὴ κόστρος κυνεία ξηρά.

Aëtius Med., Iatricorum liber vi Chapter 91, line 64

καδμίας τρίς κεκαυμένης καὶ οἶνῳ σβεσθείσης, μολυβδαίνης μολύβδου κεκαυμένου λιθαργύρου ναρδοστάχους λιβάνου κυπαρίσσου φύλλων βράθυος κη- κίδων λυκίου Ἰνδικοῦ κόμμεως ἀνά **β** <δ> ψιμυθίου γλαυκίου μίλτου φύλλου βαλαυστίων σχοίνου ἄνθους σιδίω ἀλόης ἀκακίας ἀνά Γρ <η> ῥόδων φύλλων ῥόδων ἄνθους ἀνά Γρ <ς>, κόψας σήσας λειώσας ὅξει ἀνα- λάμβανε τροχίσκους καὶ χρῶ μετ' οἶνου ἢ ἐφήματος.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii (0718: 007) “Aëtii Amideni libri medicinales v–viii”, Ed. Olivieri, A. Berlin: Akademie-Verlag, 1950; Corpus medicorum Graecorum, vol. 8.2. Chapter 40, line 27

ῥυπτικὸν δὲ τι καὶ τὸ καλούμενον Ἀρμένιον ἔχει, ᾧ χρῶνται οἱ ζω- γράφοι, καὶ τὸ μέλαν τὸ Ἰνδικόν καὶ διὰ τοῦτο τοῖς ἀφλεγμάντοις ἔλκεσιν ἀλύτως ὀμιλεῖ· μικτῆς δὲ πῶς ἐστὶ δυνάμεως ἡ ἀλόη, καθάπερ τὸ ῥόδον· ἔχει μὲν γάρ τι πικρόν, ᾧ ῥύπτειν πέφυκεν· ἔχει δὲ τι καὶ στυπτικόν, ᾧ συνάγει τε καὶ συνουλοῖ τὰ ἔλκη.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 41, line 56

κοχλιῶν κεκαυμένων **β** <γ> χαλκοῦ κεκαυμένου **β** <δ> λεπίδος χαλκοῦ **β** <ς> λεπίδος στομώματος σιδήρου **β** <ιβ> ἰοῦ **β** <ς> στυπτηρίας σχιστῆς **β** <ς> λίθου σχιστοῦ **β** <α> ἀλόης **β** <α> ὀμφακίου ξηροῦ **β** <β> λυκίου Ἰνδικοῦ **β** <δ> χαλκίτεως **β** <γ> σμύρνης **β** <γ> λιβάνου **β** <γ> φλοιοῦ λιβάνου **β** <α> κρόκου **β** <β> κροκομάγματος **β** <β> ναρδοστάχους **β** <γ> κυτίνων **β** <β> κόμμεως **β** <η>, λείου ὕδατι καὶ ἀνάπλασσε κολλύρια καὶ χρῶ σὺν ὕδατι· καὶ ξηρίον δὲ εἰ βούλει ποιῆσαι, λεάνας τὸ κολλύ- ριον χρῶ ξηρῶ.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 80, line 26

ἀπλᾶ δὲ ἐστὶ ποιοῦντα πρὸς τοὺς πτίλους καὶ τὰ περι- βεβρωμένα βλέφαρα ἀμόργη ἡ ψη- μένη, λυκίον Ἰνδικόν, Ἀρμένιον, ᾧ χρῶνται οἱ ζωγράφοι· σὺν ὕδατι γὰρ ἐγχρίόμενον ἐκδαπανᾷ τὴν κακο- χυμίαν καὶ αὖξει τὰς κατὰ φύσιν τρίχας· ἰὸς σιδήρου ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας ἐν ἡλίῳ λειωθεὶς μετ' οἶνου καὶ σμύρνης καὶ ἀναπλασθεὶς εἰς κολλύριον· σπῶδιον ἀναληφθὲν κρομμύου χυλῶ.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 99, line 5

ἀλόης λυκίου Ἰνδικοῦ ῥόδων χλωρῶν κρόκου ὀπίου σμύρνης, ἐκάστου τὸ ἴσον οἶνῳ λεάνας, ἀνάπλαττε τροχίσκους καὶ ξήραινεν ἐν σκιᾷ.

6.26. AËTIUS

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 101, line 47

αἰγὸς θηλείας χολήν [] <η> λυκίου Ἰνδικοῦ [] <π> πεπέρεως [] <δ> περιστερεῶνος ὀρθοῦ
χυλὸν [] <ις> καὶ ξηροῦ [] <η> μέλιτος Ἀττικοῦ [] <ς>, κόψας σήσας λεπτοτάτῳ κοσκίνῳ τὸ
πέπερι κάπειτα λειο- τριβήσας ἐν θυίᾳ ἐπὶ πολὺ ἐπίβαλλε τὸν ξηρὸν χυλὸν καὶ συλλείου· εἴτα
τὸν ὑγρὸν χυλὸν, ἔπειτα λυκίον καὶ ὅταν λεία γένηται, ἐπίβαλλε τὸ μέλι καὶ οὕτως τὴν χολήν
καὶ ἐνώσας ἀναλαμβάνανε καὶ χρῶ.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 101, line 126

περιστερεῶνος ὀρθοῦ χυλὸν λυκίου Ἰνδικοῦ ἴσα τουτέστι ἀνὰ [] <α> ἐκάστου, μέλιτος τὸ
ἴσον.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 102, line 22

γλαυκίων [] <μη> σαρκο- κόλλης [] <ις> κρόκου [] <η> ὀπίου λυκίου Ἰνδικοῦ ἀνὰ [] <δ>
ῥόδων χυλοῦ [] <δ> μανδραγόρου χυλοῦ [] <δ> ὑοσκυάμου χυλοῦ κωνείου χυλοῦ ἀνὰ [] <δ>
τραγακάνθης [] <ις> κόμμεως [] <η>· ἀναλαμβάνεται μελιώτου ἀφεψήματι· συντίθεται
δὲ τὸν τρόπον τοῦτον· λαβὼν μελιώτων λίτραν μίαν καὶ ὕδατος ὀμβρίου/ξ <ς>, ἔψεται εἰς
τρίτον καὶ διηθήσας τὸ ὑγρὸν πρὸς τὴν τοῦ φαρμάκου σκευασίαν.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 102, line 28

χυλοῦ πολυγόνου [] <ς> λυκίου Ἰνδικοῦ [] <ς> ἀλόης σμύρνης λιβάνου ἀνὰ [] <δ> ὀπίου []
<γ> ἀκακίας μελαίνης πρωτείας [] <ιβ> οἴνου παλαιοῦ καὶ εὐώδους τὸ ἀρκοῦν.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 103, line 16

τοιαῦτα δὲ ἐστὶ κρόκος καὶ σμύρνα καὶ λυκίον Ἰνδικὸν καστό- ριὸν τε καὶ λιβανωτός, ἃ
ἄνευ τοῦ στύφειν πέττει ἅμα καὶ διαφορεῖ.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 104, line 93

καδμίας χαλκοῦ ὀπίου ἀνὰ [] <α> ς κρόκου [] <δ> ἀλόης [] <κ> λυκίου Ἰνδικοῦ [] <β>
ἀκακίας [] <β> σμύρνης [] <δ> τραγακάνθης [] <α> κόμμεως [] <ς>, ὕδωρ.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 104, line 97

καδμίας [] <η> ναρ- δοστάχους [] <α> ς χαλκοῦ [] <α> ς κρόκου σμύρνης ὀπίου ἀνὰ [] <δ>
μᾶλλον δὲ [] δύο ἀλόης [] <η> λυκίου Ἰνδικοῦ [] <β> ἀκακίας [] <κ> κόμμεως [] <κ>, ὕδωρ.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 112, line 33

καδμίας [] <ιγ> χαλκοῦ κεκαυμένου [] <ε> λίθου σχιστοῦ [] <γ> λίθου αἱματίτου κασσίας
ἀνὰ [] <α> πεπέρεως κόκκους <κα> κρόκου [] <β> ναρδοστάχους [] <γ> φύλλου [] <α> ς
λυκίου Ἰνδικοῦ ὀπίου ἀνὰ [] <α> ἀλόης ἀκακίας κινῆς ἀνὰ [] <β> σμύρνης [] <δ> κόμμεως []
<ς>, λείου οἴνῳ Χίῳ ἢ ἐτέρῳ αὐστηρῷ παλαιῷ, χρῶ ὡς ἐνεργεστάτῳ, καὶ πρὸς ὑποπύους καὶ
τραχώματα ἐν ἀρχαῖς μετ' ὡοῦ, εἴτα ὕδατι· ἔστι δὲ ὑπὲρ τὴν ὑπόσχεσιν ἡ ἐνέργεια.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 112, line 86

ἔχει δὲ οὕτως· κυτίνων, ῥοᾶς ἄνθους τοῦ εἰκότος τῷ τῆς ἀνεμώνης ἄνθει [] <κε> ἀκακίας
ξανθῆς [] <λε> γλαυκίων [] <ις> ἀλόης [] <ε> σμύρνης τρωγλίτιδος [] <γ> μέλανος Ἰνδικοῦ []
<ζ> φύλλου [] <α> ὀμφακίου ξηροῦ [] <γ> κόμμεως [] <β> ὀποβαλσάμου, πρὸς τὰς ἀνα-
λήψεις [] <ε>, οἴνῳ αὐστηρῷ παλαιῷ λείου.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 114, line 138

καδμίας [] <ις> ιού [] <δ> μέλανος Ἰνδικού [] <ις> πεπέρεως λευκοῦ [] <η> ὁποῦ Μηδικοῦ ὀποβαλσάμου ἀνὰ [] <δ> κόμμεως [] <ιβ>· ἡ χρῆσις μεθ' ὕδατος, ἡ κρᾶσις πρὸς τὰς διαθέσεις.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 114, line 140

Ἄλλο Ἰνδικὸν βασι- λικὸν ἐπιγραφόμενον· ποιεῖ πρὸς ἀρχὰς ὑποχύσεως καὶ πᾶσαν ἀμβλυωπίαν καὶ οὐλὰς ἀποσμήχει.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 114, line 143

καδμίας κεκαυμένης πεπλυμένης [] <ις> μέλανος Ἰνδικού [] <ς> ψιμμυθίου [] <δ> πεπέρεως λευκοῦ [] <ς> χολῆς υἰάνης τὸ ὅλον, ὅσον ἔχει, σκάρων ἰχθύων χολὰς <ι> περδίκων χολὰς <δ> ὀπίου [] <α> ὀποβαλσάμου ὀποπάνακος σαγαπηνοῦ ἀνὰ [] <β> κόμμεως [] <α>.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 117, line 5

καδμίας [] <ιβ> χαλκοῦ κεκαυμένου [] <η> στίμμεως [] <η> ψιμ- μυθίου καστορίου νάρδου Συριακῆς ἀνὰ [] <δ> ἀλόης [] <α> ς φύλλου κρόκου χαλκίτεως ὀπτῆς χαλκάνθου λυκίου Ἰνδικοῦ ὀπίου ἀνὰ [] <α> σμύρνης [] <β> ἀκακίας [] <κ> κόμμεως <κ>, ὕδωρ.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 117, line 19

καδμίας πεπλυμένης στίμμεως πεπλυμένου ἀκακίας κόμμεως ἀνὰ [] <β> ῥόδων ξηρῶν κεκαθαρμένων [] <ιβ> χαλκοῦ κεκαυμένου πεπλυμένου σμύρνης τρωγλίτιδος ἀνὰ [] <η> καστορίου λυκίου Ἰνδικοῦ κρόκου φύλλου ναρδοστάχους χαλκίτεως ὀπτῆς ψιμμυ- θίου γλαυκίων ἐρείκης καρποῦ ὀπίου κηκίδων ὀμφακίων ἀνὰ [] <β>, ὕδωρ· χρῶ ἐν ἀρχαῖς μὲν μετ' ὡοῦ ἐγχυματίζων, ἐν παρακμαῖς δὲ ὕδατι ἐγχρίων καθ' ὑποβολήν.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 117, line 32

ἔχει δὲ οὕτως· καδμίας πεπλυμένης [] <ις> ψιμμυθίου πεπλυμένου καστορίου ἀλόης ἀνὰ [] <ς> νάρδου Ἰνδικῆς κασσίας ἀνὰ [] <δ> στίμμεως πεπλυμένου [] <μ> σμύρνης [] <θ> λεπίδος χαλκοῦ [] <ε> χαλκοῦ κεκαυμένου ὀπίου πεπλυ- μένου ἀνὰ [] <ις> ῥόδων [] <κ> λυκίου Ἰνδικοῦ ὀπίου ἀνὰ [] <γ> λίθου σχιστοῦ πεπλυμένου [] <δ> ς κρόκου [] <ς> μολύβδου κεκαυμένου πεπλυ- μένου [] <κ> ἀκακίας κόμμεως ἀνὰ [] <μ>, ὕδωρ.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 117, line 43

Κολλύριον τὸ ἰνδάριον.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 117, line 50

καδμίας πεπλυμένης [] <ις> χαλκοῦ κεκαυμένου πεπλυμένου [] <η> στίμμεως πεπλυμένου [] <ις> κρόκου [] <γ> καστορίου [] <δ> ιού [] <α> ἀλόης [] <δ> σμύρνης τρωγλίτιδος [] <γ> λυκίου Ἰνδικοῦ ὀπίου ἀνὰ [] <β> ἀκακίας κόμμεως ἀνὰ [] <κδ> ὕδωρ· ἡ χρῆσις δι' ὡοῦ, ἡ κρᾶσις παχυτέρα.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 117, line 62

ἔχει δὲ οὕτως· καδμίας [] <κ> στίμμεως πεπλυμένου [] <ις> ναρδοστάχους [] <γ> σμύρνης τρωγλίτιδος καστορίου χαλκοῦ κεκαυ- μένου ιού ἀνὰ [] <β> κρόκου [] <α> λεπίδος σιδήρου στομώματος [] <δ> ψιμμυθίου τὸ ἴσον πεπέρεως λυκίου Ἰνδικοῦ ὀπίου λιβάνου ὀποβαλ- σάμου κασσίας ἀνὰ [] <β> λίθου σχιστοῦ [] <δ> ιού σκώληκος [] <γ> χαλ- κάνθου [] <β> μαράθρου

6.26. AĒTIUS

χυλοῦ χολῆς αἰγείας ἀνὰ [] <δ> κόμμεως [] <κ>, οἶνῳ λείου Ἀμηναίῳ ἢ Φαλερινῳ ἢ ἐτέρῳ αὐστηρῶ παλαιῶ εὐώδει.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 117, line 68

καδμίας κεκαυμένης πεπλυμένης χαλκοῦ πεπλυμένου ἀνὰ [] <η> στίμμεως πεπλυμένου [] <κε> ῥόδων ξηρῶν ψιμμου- θίου χαλκίτεως κηκίδαν ἰοῦ κρόκου λυκίου Ἰνδικοῦ ἀλόης ναρ- δοστάχους σμύρνης τρωγλίτιδος ἐβένου ξινήματος καστορίου μέλανος Ἰνδικοῦ λιβάνου ὀπίου σαρκοκόλλης πομφόλυγος ἀνὰ [] <α> [κέρατος ἐλαφείου πεπλυμένου καὶ κεκαυμένου [] <α>] ἀκακίας κόμμεως ἀνὰ [] <κε>, ὕδωρ.

Aëtius Med., Iatricorum liber vii Chapter 117, line 88

λαμβάνει δὲ καδμίας [] <κδ> χαλκοῦ κεκαυμένου [] <ιβ> στίμμεως [] <μ> ψιμμουθίου [] <η> χαλκίτεως ὀπτῆς [] <δ> μίσους ὀπτοῦ [] <δ> ἐβένου ξινήματος [] <β> νάρδου Κελτικῆς φύλλου ναρδοστάχους κρόκου καστορίου λυκίου Ἰνδικοῦ ῥόδων ξηρῶν ἀνὰ [] <δ> ἀλόης σμύρνης ἀνὰ [] <η> ὀμφακίου ὀπίου ἀνὰ [] <β> ἀκακίας κόμμεως σκώληκος ἀνὰ [] <μ>.

Aëtius Med., Iatricorum liber viii (0718: 008) “Aëtii Amideni libri medicinales v–viii”, Ed. Olivieri, A. Berlin: Akademie–Verlag, 1950; Corpus medicorum Graecorum, vol. 8.2. Chapter 25, line 30

τὰ δὲ γεγυμνωμένα οὐλα σαρκοῖ τοῦτο· ῥόδων σπέρματος μὴ παλαιοῦ μέρη <β> καλάμου ἀρωματικοῦ ἢ Ἰνδικοῦ μέρος <α>, ξηρῶ λείῳ προσάπτου.

Aëtius Med., Iatricorum liber viii Chapter 31, line 40

ἐνίστε δὲ τῶν λευκῶν ἐλαιῶν τεθλασμένων καὶ ἐκπιεσθέντων τὸν χυλὸν μετὰ πηγάνου χυλοῦ καὶ μέλιτος μίξαντες παρατρίβομεν τοὺς ὀδόντας, ἔπειτα παραπάσσομεν νάρδῳ Ἰνδικῇ μετὰ στυπτηρίας στρογγύλης ἴσοις καὶ ἅλατος τὸ διπλοῦν.

Aëtius Med., Iatricorum liber viii Chapter 37, line 48

ἀστραγάλους προβατίους καύσας, λείους χρῶ· καλῶς ποιῶσι καὶ κήρυκες πληρῶ- θέντες ἀλσὶ καὶ καυθέντες καὶ κίσσηρις ὀπτῇ οἶνῳ σβεσθεῖσα, σηπίας ὄστρακα καέντα κεκαυμένοι μύακες κοχλίας χερσαῖος καεῖς σὺν μέλιτι· ἐκάστω δὲ τούτων εὐωδίας χάριν μίγνυται ἱρεως Ἰλλυρικῆς βραχὺ ἢ σχίνου ἄνθους ἢ καλάμου Ἰνδικοῦ ἢ ναρδοστάχους.

Aëtius Med., Iatricorum liber viii Chapter 47, line 15

εἰ δὲ πολυτελέστερον ἐθέλεις ποιῆσαι τὸ φάρ- μακον ἢ πλουσίους σκευάζων ἐμβάλλεις κασ- σίας φλοιὸν νάρδον Ἰνδικὴν ἢ Κελτικὴν ἢ μαλαβάθρου φύλλα· μετὰ δὲ τὴν ἀρχήν, ὅταν στῇ τὸ ἐπιρρέον, μόνον ἀρκεῖ τὸ διὰ μόρων τοῦ κρόκου τι καὶ τῆς σμύρνης προσειληφὸς εἰς τὸ πέψαι τὴν φλεγμονήν.

Aëtius Med., Iatricorum liber ix (0718: 009) “Ἀετίου Ἀμιδηνοῦ λόγος ἑνατος”, Ed. Zervos, S., 1911; Athena 23. Chapter 31, line 159

Ἔστι δὲ οὐκ ὀλίγον κὰν τῇ Ἰνδικῇ νάρδῳ τὸ πεπτικὸν τῶν ψυχρῶν διαθέσεων· ὥσπερ δὲ τῶν ἀρωματικῶν τὴν νάρδον ἐνέβαλλεν ὁ Φίλων, οὕτως οἱ μετ’ αὐτὸν ἄλλος ἄλλο προσέ- θεσαν, σχίνου ἄνθος, κασίαν, ἁμωμόν τε καὶ κόστον· ὥσπερ δ’ αὖ πάλιν ὁ Φίλων τὸν κρόκον ἐνέβαλλεν πεπτικὸν φάρμακον καὶ χυμῶν καὶ διαθέσεων εὐπέπτων, οὕτως ἄλλοι σμύρνης τε

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

καὶ καστορίου ἔμι- ξαν· οἱ πλεῖστοι δὲ αὐτῶν καλῶς ποιοῦντες, καὶ τὰ συνήθη ἡμῖν σπέρματα [παρέμιξαν], λέγω δὴ σελίνου τὸ σπέρμα καὶ κυμίνου, ἀνή- σου τε καὶ δαύκου καὶ πετροσελίνου καὶ ὅσα τοιαῦτα, ὥστε παρα- μυθήσασθαι τὴν ἀηδίαν τῶν πικρῶν φαρμάκων, εἰς ἀνάδοσιν τε καὶ

Aëtius Med., Iatricorum liber xi (0718: 011) “Oeuvres de Rufus d’Éphèse”, Ed. Daremberg, C., Ruelle, C.É. Paris: Imprimerie Nationale, 1879, Repr. 1963. Chapter 11, line 63

Τοῦ Πρεσβύτου τοῦ Ἰνδοῦ πρὸς λιθιῶντας, φασὶ δὲ τινες, καὶ τῶν ἔξωθεν λίθων δύνασθαι θρυβεῖν, ὡς τὸ πρὸ αὐτοῦ· Ἀκόρου, φοῦ, ὑπερικοῦ ἀνὰ ͵ζʹ, πράσου σπέρματος ͵ιβʹ, ναρδου- στάχους ͵ιʹ, κασίας, λινοσπέρμου, κυπέρου ἀνὰ ͵κεʹ· μέλιτι ἀναλαμβάναν· ἡ δόσις κυάμου μέγεθος.

Aëtius Med., Iatricorum liber xi Chapter 29, line 94

Παραλαμβάνεσθω δὲ καὶ τὰ διὰ στόματος διδόμενα, τῆς μὲν δυσουρίας ἐπειγούσης, μή- κωνος λευκῆς πεφωγμένης σπέρμα λεῖον· ἐμπάσσεται δὲ ὅσον ͵αʹ εἰς κυάθους δʹ ἀφεψήματος σχοίνου ἄνθους ἢ καλάμου Ἰνδικοῦ, ἢ γλυκυρρίζης· βιαιότερα δὲ ἐστὶ τούτων μῆλον, φοῦ, ἄκορον, δαῦ- κος.

Aëtius Med., Iatricorum liber xii (0718: 012) “Ἀετίου λόγος δωδέκατος”, Ed. Kostomiris, G.A. Paris: Klincksieck, 1892. Chapter 33, line 18

οἱ δὲ βάρβαροι Ἰνδοὶ κόπτοντες καὶ σήθοντες τὰ ξηρὰ φύλλα τῆς κύπρου ἀποτιθέασιν, ἐπὶ δὲ τῆς χρείας ὕδατι ζέοντι φυρῶντες καὶ προσραίνοντες ὄξους ὀλίγον ἢ ῥοῦ μαγειρικοῦ ἀφέψημα ἐπιτιθέασιν τῷ φλεγμαίνοντι τόπῳ, ἄνωθεν ἐπιτι- θέντες φύλλα κίκεως ἢ καρπάσου, εἰ δὲ μή, κράμβης.

Aëtius Med., Iatricorum liber xii Chapter 53, line 35

Ἐλαίου κικίνου, ἐλαίου τηλίνου, μανδραγόρου χυλοῦ ἀνὰ ͵λβʹ, ἀρτεμισίας χυλοῦ, λα- πάθου χυλοῦ ἀνὰ ͵κδʹ, πιτυϊνῆς, τερεβινθίνης, στέατος χηνείου ἀνὰ ͵μῆʹ, βάτου χυλοῦ ͵ιςʹ, βουτύρου νεαροῦ ͵μῆʹ, λυκίου Ἰνδικοῦ ͵κδʹ, αἵματος τραγείου ξηροῦ ͵ιςʹ, κιττοῦ δακρύου ͵λβʹ, χαλβάνης ͵μῆʹ, ὀποπάνακος ͵λβʹ.

Aëtius Med., Iatricorum liber xii Chapter 68, line 44

Παραδόξως δὲ ποιεῖ ἐπ’ αὐτῶν καὶ τὸ μέγα ξηρίον, ὃ ἀσκληπιὸν ὀνομάζουσι καὶ τὸ Ἰνδὸν ξηρίον, ἐμπασσόμενον αὐτοῖς τοῖς ὀδυνωμένοις τόποις ἐν τῷ λουτρῷ· πάνυ καλόν.

Aëtius Med., Iatricorum liber xv (0718: 015) “Ἀετίου Ἀμιδηνοῦ λόγος δέκατος πέμ- πτος”, Ed. Zervos, S., 1909; Athena 21. Chapter 13, line 141

Ἐλκυσματος, ἐλαίου γλυκέος ἀνὰ δραχμὰς β, πίσης, κηροῦ, κο- λοφωνίας ἀνὰ οὐγγίας, ιστ, συμφύτου ῥίζης κεκομμένης λεπτοτάτης καὶ σεσησμένης οὐγγίας β, αἵματος δρακοντίου οὐγγίας β, ὕδατος θαλασσίου οὐγγίας κ. Ἐψε τὴν λιθάργυρον, τὸ ἔλαιον καὶ τὸ θα- λάσσιον ὕδωρ μέχρις ἀμολύντου, εἴτα τήξας τὰ τηκτὰ καὶ διηθήσας ἐπὶ βαλλε τοῖς ἐψηθεῖσι· καὶ ἄρας ἀπὸ τοῦ πυρὸς ἐπίπασσε τὸ δρα- κόντιον καὶ σύμφυτον, καὶ ἐνώσας καὶ ψύξας καὶ μαλάξας

6.27. ANONYMI DE ASTROLOGIA DIALOGUS

ἀνάπλας- σε μαζία καὶ χρῶ· συνάγεται δὲ τὸ δρακόντιον αἷμα ἐν τῇ Ἰνδικῇ χώρᾳ ἐκ τῆς δρακοντίου βοτάνης.

Aëtius Med., Iatricorum liber xvi (0718: 016) “Gynaekologie des Aëtios”, Ed. Zervos, S. Leipzig: Fock, 1901. Chapter 118, line 8

Δεῖ οὖν ἐπὶ τούτων τοῖς στύφουσι προσαντλεῖν καὶ προσθέτοις χρῆσθαι τοῖς ἐπὶ δακτυλίου προει- ρημένοις, μάλιστα δὲ σιδήροις μετὰ βουτύρου ἢ λυκίῳ ἰνδικῷ μετὰ ὑσσώπου, καὶ τοῖς ὁμοίοις ἐπὶ τῶν <ἐν ἔδρᾳ παθῶν> προγεγραμ- μένοις.

Aëtius Med., Iatricorum liber xvi Chapter 121, line 8

ἐπὶ τούτων ἀρμόζει κάθαρσις δι’ <όνειου γάλακτος>, καὶ ἔμετοι ἀπὸ δείπνου, ἀφιδρώσεις ἐν βαλανείῳ καὶ ἐμβάσεις εἰς θερμὸν ὕδωρ, καὶ κλυσμός δι’ οἴνου θερμοῦ μετὰ νίτρου, ἢ τρυγὸς οἴνου κε- καυμένης· μετὰ δὲ ταῦτα θερμῷ ὕδατι καταχρεῖν τοὺς τόπους, ἢ λυκίῳ ἰνδικῷ, ἢ ἀμόργῃ, ἢ βουτύρῳ μετὰ θείου, ἢ κηρωτῇ μυρσι- νίνῃ μετὰ λιθαργύρου, ἢ στυπτηρίᾳ μετὰ μέλιτος, ἢ σιδήροις μετὰ μυρσίνης καὶ μέλιτος.

Aëtius Med., Iatricorum liber xvi Chapter 126, line 7

ὀποβαλσάμου γοα· ἐλαίου ἰνδικοῦ ἢ ἐτέρου γογ.

Aëtius Med., Iatricorum liber xvi Chapter 142, line 7

α. καλάμου ἰν- δικοῦ γοστ, ἥτοι οὐγ.

Aëtius Med., Iatricorum liber xvi Chapter 142, line 7

κάρνα ἰνδικὰ γ. σανδαράχης γράμματα ιστ.

Aëtius Med., Iatricorum liber xvi Chapter 150, line 1

ΘΥΜΙΑΜΑ ΡΟΔΑΤΟΝ ΤΟΥ ΕΜΒΟΛΑΡΧΟΥ.

Κασίας, σμύρνης, βδελλίου, ἀρναβῶ, καλάμου ἰνδικοῦ, σαρούα, καρποβαλσάμου, λαδά- νου λιπαροῦ, ὕπνου, φύλλων, ἀνὰ γογ.

Aëtius Med., Iatricorum liber xvi Chapter 151, line 2

καλάμου ἰνδικοῦ, ναρδοστάχυος, ὀνύχων μεγάλων, βδελλίου, καρ- ποβαλσάμου, κρόκου, κασίας, ἀνὰ γογ.

6.27 Anonymi De Astrologia Dialogus

” (From Wikipedia²⁵)

Anonymi De Astrologia Dialogus Astrol., De astrologia dialogus (= Hermippus) (fort. auctore Joanne Catrario) (4374: 001) “Anonymi christiani Hermippus De astrologia dialogus”, Ed. Kroll, W., Viereck, P. Leipzig: Teubner, 1895; Bibliotheca scriptorum Graecorum et Romanorum Teubneriana. Page 51, line 20

οὔτε γὰρ καρκίνον μὲν λέγουσιν Ἀρμενίας καὶ Ἀφρικῆς κυριεύειν οὔτ’ αὖ αἰγοκέρωτα Συρίας καὶ Ἰνδικῆς, ἔτι δὲ καὶ Θράκης εὖ φρονῶν ἂν τις πιστεύσειεν.

25.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Anonymi De Astrologia Dialogus Astrol., De astrologia dialogus (= Hermippus) (fort. auctore Joanne Catrario) Page 51, line 26

ἢ πῶς τὸ αὐτὸ καὶ ἐν ζῳδίων Ἰνδικῆς ἅμα καὶ Θράκης ἐφέξει τὴν ἐφορείαν;

Anonymi De Astrologia Dialogus Astrol., De astrologia dialogus (= Hermippus) (fort. auctore Joanne Catrario) Page 52, line 3

οὔτε γὰρ ταύτου κλίματος εἰσιν οὔτε ὑπὸ τὸν αὐτὸν παράλληλον πίπτουσιν, εἴ γε Θράκη μὲν τοῦ ἰσημερινοῦ τὸ μέσον ἀπόστημα πέντε καὶ τεσσαράκοντα μοίρας ἀφίσταται, Ἰνδικὴ δὲ τὸ μέγιστον πεντεκαίδεκα.

6.28 Timotheus of Gaza

Timotheus of Gaza (sometimes referred to as Timothy of Gaza) was a Greek grammarian active during the reign of Anastasius, i.e. 491-518. He is the author of a book on animals[1] which may have been the source of the Arabic Nu'ut al-Hayawan.[2] (From Wikipedia²⁶)

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) (2449: 003) “Excerpta ex Timothei Gazaei libris de animalibus”, Ed. Haupt, M., 1869; Hermes 3. Section 5, line 28

ἐὰν δὲ ἄρσιν ἢ, ἢ δὲ κύων θήλεια, τίκεται Λακωνικὸς κύων, ὥσπερ συγγινομέ- νων κυνὸς καὶ τίγριδος τίκεται ὁ Ἰνδικὸς κύων.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 14, line 3

ὅτι ὁ Ἰνδικὸς πάνθηρ μύρου ὄζων διὰ τῆς εὐωδίας τὰ θηρία ἐφελκόμενος ἐπὶ τὸν ἴδιον ἄγει φωλεὸν καὶ κατεσθίει.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 24, line 2

ὅτι ἡ καμηλοπάρ- δαλις ζῷον ἐστὶν Ἰνδικόν· γίνεται δὲ ἀπὸ ἐπιμιξίας ζῳῶν ἑτερογενῶν.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 24, line 4

ὅτι διὰ Γάζης παρῆλθε τις ἀνὴρ ἀπὸ τῶν Ἰνδικῶν, Ἀελίσιος δὲ τὸ γένος, ἄγων δύο καμηλο- παρδάλεις καὶ ἐλέ- φαντα τῷ βασιλεῖ Ἀναστασίῳ.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 24, line 8

26. http://en.wikipedia.org/wiki/Timotheus_of_Gaza

6.29. SALAMINIUS HERMIAS SOZOMENUS

τοῦτο ἐθεάθη καὶ ἐφ' ἡμῶν· τῷ γὰρ βασιλεῖ τῷ Μονομάχῳ καὶ ἄμφω ταυτὶ τὰ ζῷα προσαχθέντα ἐξ Ἰνδίας ὡς θαῦμα ἐπὶ τοῦ τῆς Κων-σταντινουπόλεως θεάτρου ἐκάστοτε τῷ λαῷ ἐπεδείκνυντο.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 25, line 15

τούτους δὲ γοητεύοντες οἱ Ἰνδοὶ κοιμίζουσι καὶ ἀναιροῦσι καὶ ἀφαιροῦνται τοὺς λίθους· πολλάκις δὲ καὶ ὑπ' αὐτῶν εἰς τοὺς φωλεοὺς ἔλκονται οἱ θηρευταὶ καὶ ἀπόλλυνται.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 25, line 19

ὅτι οἱ Ἰνδοὶ ἐσθίοντες τὴν τῶν δρακόντων καρδίαν ἢ τὸ ἥπαρ νοοῦσι τί τὰ ἄλογα ζῷα φθέγγονται.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 31, line 14

ὅτι εἰσὶ σύες μονώνυχες καὶ ὄνος Ἰνδικὸς μονώνυξ καὶ κερατώδης· τὸ δὲ κέρας αὐτοῦ ποιεῖ θεραπείαν καὶ μόνῳ ἀποφέρεται τῷ βασιλεῖ.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 32, line 6

ὅτι ἐν μεσημβρίᾳ πλέον τῶν ἄλλων ζῴων ὀδεύουσι καὶ πρὸς ἀστέρας ἐν νυκτὶ τὰς ὁδοὺς γινώσκουσιν· ὅθεν ἐπ' αὐταῖς οἱ Ἰνδοὶ τὴν χρυσίτιν κόνιν τῶν Ἰνδικῶν μυρμῆκων κλέπτουσι πρὸς ἀνατολὰς ὀδεύοντες.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 32, line 9

ὅτι τῶν μυρμῆκων ἐν τῷ καύματι ἐν τοῖς φωλεοῖς δια-τριβόντων κλέπτουσι οἱ Ἰνδοὶ τὴν αὐτῶν χρυσόκονιν.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 45, line 8

ὅτι παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς βόες λέγονται, ἐρχόμενοι δὲ παρὰ τὸν Νεῖλον ἐνοκέρωτες.

Timotheus Gramm., Excerpta ex libris de animalibus (e cod. Paris. gr. 2422) Section 51, line 13

ὅτι οὗτοι παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς τρυγῶσι τὰ πεπέρια, τέχνη ἀπατῶμενοι καὶ μιμήσει.

6.29 Salaminus Hermias Sozomenus

Salminius Hermias Sozomenus[1] (Σωζομενός) (c. 400 – c. 450) was a historian of the Christian Church.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Sozomen's second work continues approximately where his first work left off. He wrote it in Constantinople, around the years 440 to 443 and dedicated it to Emperor Theodosius II.

The work is structured into nine books, roughly arranged along the reigns of Roman Emperors:

Book I: from the conversion of Constantine I until the Council of Nicea (312-325) Book II: from the Council of Nicea to Constantine's death (325-337) Book III: from the death of Constantine I to the death of Constans I (337-350) Book IV: from the death of Constans I to the death of Constantius II (350-361) Book V: from the death of Constantius I to the death of Julian the Apostate (361-363) Book VI: from the death of Julian to the death of Valens (363-375) Book VII: from the death of Valens to the death of Theodosius I (375-395) Book VIII: from the death of Theodosius I to the death of Arcadius (375-408). Book IX: from the death of Arcadius to the accession of Valentinian III (408-25).

Book IX is incomplete. In his dedication of the work, he states that he intended cover up to the 17th consulate of Theodosius II, that is, to 439. The extant history ends about 425. Scholars disagree on why the end is missing. Albert Guldenpenning supposed that Sozomen himself suppressed the end of his work because in it he mentioned the Empress Aelia Eudocia, who later fell into disgrace through her supposed adultery. However, it appears that Nicephorus, Theophanes, and Theodorus Lector did read the end of Sozomen's work, according to their own histories later. Therefore most scholars believe that the work did actually come down to that year, and that consequently it has reached us only in a damaged condition. (From Wikipedia²⁷)

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., *Historia ecclesiastica* (2048: 001) "Sozomenus. Kirchengeschichte", Ed. Bidez, J., Hansen, G.C. Berlin: Akademie-Verlag, 1960; *Die griechischen christlichen Schriftsteller* 50. Book 2, chapter 24, section 1, line 2

Ἐπὶ δὲ τούτῳ τὸν χρόνον παρειλήφαμεν καὶ τοὺς ἐνδον τῶν καθ' ἡμᾶς Ἰνδῶν, ἀπειράτους μέιναντας τῶν Βαρθολομαίου κηρυγμάτων, μετασχεῖν τοῦ δόγματος ὑπὸ Φρουμεντίῳ, ἱερεῖ καὶ καθηγητῇ γενομένῳ παρ' αὐτοῖς τῶν ἱερῶν μαθημάτων.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., *Historia ecclesiastica* Book 2, chapter 24, section 1, line 5

27. http://en.wikipedia.org/wiki/Salaminius_Hermias_Sozomenus

6.29. SALAMINIUS HERMIAS SOZOMENUS

ἵνα δὲ γνοίημεν καὶ ἐν τῷ παραδόξῳ τοῦ συμβάντος περὶ τοὺς Ἰνδοὺς οὐκ ἐξ ἀνθρώπων, ὥς
τισι τερατολογεῖσθαι δοκεῖ, τὴν σύστασιν λαβεῖν τὸ τῶν Χριστιανῶν δόγμα, ἀναγκαῖον καὶ
τὴν αἰτίαν τῆς Φρουμεντίου χειροτονίας διεξελθεῖν· ἔχει δὲ ὧδε.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 2, chapter 24,
section 5, line 2

οὓς ζηλώσας Μερόπιός τις φι- λόσοφος Τύριος τῆς Φοινίκης παρεγένετο εἰς Ἰνδοὺς.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 2, chapter 24,
section 5, line 4

ἱστορήσας δὲ τῆς Ἰνδικῆς ὅσα γε αὐτῷ ἐξεγένετο, τῆς ἐπανόδου εἶχετο νηὸς ἐπιτυχῶν στελ-
λομένης εἰς Αἴγυπτον.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 2, chapter 24,
section 5, line 7

συμβὰν δὲ κατὰ χρεῖαν ὕδατος ἢ τῶν ἄλλων ἐπιτηδείων εἰς ὄρμον τινὰ προσσχεῖν τὴν ναῦν,
καταδραμόντες οἱ τῇδε Ἰνδοὶ κτείνουσι πάντας καὶ τὸν Μερόπιον· ἔτυχον γὰρ τότε λύσαντες
τὰς πρὸς Ῥωμαίους σπονδάς.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 2, chapter 24,
section 8, line 1

ἀντι- βολοῦσαν δὲ τὴν βασιλίδαν ἠδέσθησαν, καὶ τὰ βασίλεια καὶ τὴν ἡγεμονίαν Ἰνδῶν
διώκουν.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 2, chapter 24,
section 8, line 3

ὁ δὲ Φρουμέντιος θείαις ἴσως προτραπείς ἐπιφανείαις ἢ καὶ αὐτομάτως τοῦ θεοῦ κινουντος
ἐπυνθάνετο, εἴ τινες εἶεν Χριστιανοὶ παρ' Ἰνδοῖς ἢ Ῥωμαῖοι τῶν εἰσπλεόντων ἐμπόρων.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 2, chapter 24,
section 10, line 2

συντυχῶν δὲ Ἀθανασίῳ τῷ προῖστα- μένῳ τῆς Ἀλεξανδρέων ἐκκλησίας τὰ κατ' Ἰνδοὺς
διηγήσατο καὶ ὥς ἐπι- σκόπου δέοι αὐτοῖς τῶν αὐτόθι Χριστιανῶν ἐπιμελησομένου.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 2, chapter 24,
section 10, line 5

ὁ δὲ Ἀθα- νάσιος τοὺς ἐνδημοῦντας ἱερέας ἀγείρας ἐβουλεύσατο περὶ τούτου· καὶ χειρο-
τονεῖ αὐτὸν τῆς Ἰνδικῆς ἐπίσκοπον, λογισάμενος ἐπιτηδειότατον εἶναι τοῦ- τον καὶ ἱκανὸν πολ-
λὴν ποιῆσαι τὴν θρησκείαν, παρ' οἷς πρῶτος αὐτὸς ἔδειξε τὸ Χριστιανῶν ὄνομα καὶ σπέρμα
παρέσχετο τῆς τοῦ δόγματος μετουσίας.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 2, chapter 24,
section 11, line 1

ὁ δὲ Φρουμέντιος πάλιν εἰς Ἰνδοὺς ὑποστρέψας λέγεται τοσοῦτον εὐκλεῶς τὴν ἱερωσύνην με-
τελθεῖν, ὥς ἐπαινεθῆναι παρὰ πάντων τῶν αὐτοῦ πειρα- θέντων, οὐχ ἥττον ἢ τοὺς ἀποστόλους

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

θαυμάζουσι, καθότι καὶ ἐπισημό-
τατον αὐτὸν ὁ θεὸς ἀπέφηνε, πολλὰς καὶ παραδόξους ἰάσεις
καὶ σημεῖα καὶ τέρατα δι' αὐτοῦ δημιουργήσας.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 2, chapter 24,
section 11, line 5

ἡ μὲν δὴ παρ' Ἰνδοῖς ἱερωσύνη ταύτην ἔσχεν ἀρχήν.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 7, chapter 15,
section 6, line 6

προθυμότερους δὲ τοὺς ἐν τῷ Σεραπείῳ παρεσκεύαζεν εἶναι τὸ συνειδέναι σφίσιν ἃ τετολ-
μήκασιν, ἔπειτα δὲ καὶ Ὀλύμπιός τις ἐν φιλοσόφου σχήματι συνὼν αὐτοῖς καὶ πείθων χρῆναι
μὴ ἀμελεῖν τῶν πατρίων, ἀλλ' εἰ δέοι ὑπὲρ αὐτῶν θνήσκειν· καθαιρουμένων δὲ τῶν ξοάνων
ἀθυμοῦντας ὄρων συνεβούλευε μὴ ἐξίστασθαι τῆς θρησκείας, ὕλην φθαρτὴν καὶ ἰνδάλματα
λέγων εἶναι τὰ ἀγάλματα καὶ διὰ τοῦτο ἀφα- νισμὸν ὑπομένειν, δυνάμεις δὲ τινὰς ἐνοικῆσαι
αὐτοῖς καὶ εἰς οὐρανούς ἀπο- πτῆναι.

Salaminius Hermias Sozomenus Scr. Eccl., Historia ecclesiastica Book 7, chapter 26,
section 3, line 2

τὸ δὲ τὸν σίελον εἰς τὸ στόμα δεξάμενον αὐτίκα κατέπεσε· καὶ νεκρὸν κείμενον οὐ μεῖον τῶν
παρ' Ἰνδοῖς ἱστορουμένων ἐρπετῶν διεφάνη τὸ μέγεθος· ἀμέλει τοι, ὥς ἐπυθόμην, ὑπὸ ζεύγεσιν
ὀκτῶ εἰς τὸ πλησίον πεδίον ἐξεκλύσαντες αὐτὸ οἱ ἐπιχώριοι κατέκαυσαν, ὅπως μὴ διασαπείῃ τὸν
ἀέρα λυμῆνῃται καὶ λοιμώδῃ ποιήσῃ.

6.30 Papyri magicae

“” (From Wikipedia²⁸)

What dates for this?

Magica, Papyri magicae Preisendanz number 13, line 19

ἀπηρτίσθω δὲ ἡ τράπεζα τοῖς ἐπιθύμα-
σι τούτοις, συγγενικοῖς οὖσι τοῦ θεοῦ – ἐκ δὲ ταύ-
της τῆς βίβλου Ἑρμῆς κλέψας τὰ ἐπιθύματα ζ' προσεφώνησεν <ἐν> ἑαυτοῦ ἱεῖᾱ βύβλῳ
ἐπικαλουμένη Πτέρυγι – τοῦ μὲν Κρόνου στύραξ (ἔστιν γὰρ βαρὺς καὶ εὐώδης), τοῦ δὲ Διὸς
μαλάβαθρον, τοῦ δὲ Ἄρεως κόστος, τοῦ δὲ Ἡλίου λίβανον, τῆς δὲ Ἀφροδίτης νάρδος Ἰνδικός,
τοῦ δὲ Ἑρμοῦ κασία, τῆς δὲ Σελήνης ζμύρνα.

6.31 Procopius

28.

6.31. PROCOPIUS

Procopius of Caesarea (Latin: Procopius Caesarensis, Greek: Προκόπιος ὁ Καισαρεύς; c. AD 500 – c. AD 565) was a prominent Byzantine scholar from Palaestina Prima. Accompanying the general Belisarius in the wars of the Emperor Justinian I, he became the principal historian of the 6th century, writing the Wars of Justinian, the Buildings of Justinian and the celebrated Secret History. He is commonly held to be the last major historian of the ancient world. (From Wikipedia²⁹)

Procopius Hist., De bellis (4029: 001) “Procopii Caesariensis opera omnia, vols. 1–2”, Ed. Wirth, G. (post J. Haury) Leipzig: Teubner, 1:1962; 2:1963. Book 1, chapter 19, section 3, line 1

αὕτη δὲ ἡ θάλασσα ἐξ Ἰνδῶν ἀρχο- μένη ἐνταῦθα τελευτᾷ τῆς Ῥωμαίων ἀρχῆς.

Procopius Hist., De bellis Book 1, chapter 19, section 16, line 1

μεθ’ οὗς δὴ τὰ γένη τῶν Ἰνδῶν ἐστίν.

Procopius Hist., De bellis Book 1, chapter 19, section 23, line 1

Πλοῖα μέντοι ὅσα ἐν τε Ἰνδοῖς καὶ ἐν ταύτῃ τῇ θαλάσῃ ἐστίν, οὐ τρόπῳ τῷ αὐτῷ ὥπερ αἱ ἄλλαι νῆες πεποιήνται.

Procopius Hist., De bellis Book 1, chapter 19, section 25, line 1

αἴτιον δὲ οὐχ ὅπερ οἱ πολλοὶ οἴονται, πέτραι τινὲς ἐνταῦθα οὔσαι καὶ τὸν σίδηρον ἐφ’ ἑαυτὰς ἔλκουσαι (τεκμήριον δέ· ταῖς γὰρ Ῥωμαίων ναυσὶν ἐξ Αἰλᾶ πλεούσαις ἐς θάλασσαν τήνδε, καίπερ σιδήρῳ πολλῷ ἡρμοσμέναις, οὐποτε τοιοῦτον ξυνηέχθη παθεῖν), ἀλλ’ ὅτι οὔτε σίδηρον οὔτε ἄλλο τι τῶν ἐς ταῦτα ἐπιτηδείων Ἰνδοὶ ἢ Αἰθίοπες ἔχουσιν.

Procopius Hist., De bellis Book 1, chapter 20, section 9, line 6

Τότε δὲ Ἰουστινιανὸς [ὁ] βασιλεὺς ἐν μὲν Αἰθίοφι βασιλεύοντος Ἑλλησθεαίου, Ἑσιμιφαίου δὲ ἐν Ὀμηρί- ταις, πρεσβευτὴν Ἰουλιανὸν ἐπεμψεν, ἁξίων ἅμφω Ῥωμαίοις διὰ τὸ τῆς δόξης ὁμόγνωμον Πέρσαις πολε- μοῦσι ξυνάρασθαι, ὅπως Αἰθίοπες μὲν ὠνούμενοί τε τὴν μέταξαν ἐξ Ἰνδῶν ἀποδιδόμενοί τε αὐτὴν ἐς Ῥω- μαίους, αὐτοὶ μὲν κύριοι γένωνται χρημάτων μεγάλων, Ῥωμαίους δὲ τοῦτο ποιήσωσι κερδαίνειν μόνον, ὅτι δὴ οὐκέτι ἀναγκασθήσονται τὰ σφέτερα αὐτῶν χρή- ματα ἐς τοὺς πολεμίους μετενεγκεῖν (αὕτη δὲ ἐστίν ἡ μέταξα, ἐξ ἧς εἰώθασιν τὴν ἐσθῆτα ἐργάζεσθαι, ἣν πάλαι μὲν Ἕλληνες Μηδικὴν ἐκάλουν, τανῦν δὲ ση- ρικὴν ὀνομάζουσιν), Ὀμηρίται δὲ ὅπως Καῖσὸν τὸν φυγάδα φύλαρχον Μαδδηνοῖς καταστήσωνται καὶ στρατῷ μεγάλῳ αὐτῶν τε Ὀμηριτῶν καὶ Σαρακηνῶν τῶν

Μαδ-

Procopius Hist., De bellis Book 1, chapter 20, section 12, line 2

τοῖς τε γὰρ Αἰθίοφι τὴν μέταξαν ὠνεῖσθαι πρὸς τῶν Ἰνδῶν ἀδύνατα ἦν, ἐπεὶ αἰεὶ οἱ Περσῶν ἔμποροι πρὸς αὐτοῖς τοῖς ὅρμοις γινόμενοι, οὗ δὴ τὰ πρῶτα αἱ τῶν Ἰνδῶν νῆες καταΐρουσιν, ἅτε χώραν προσοικοῦντες τὴν ὁμο- ρον, ἅπαντα ὠνεῖσθαι τὰ φορτία εἰώθασιν, καὶ τοῖς Ὀμηρίταις

29. <http://en.wikipedia.org/wiki/Procopius>

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

χαλεπὸν ἔδοξεν εἶναι χώραν ἀμειψαμένοις ἔρημόν τε καὶ χρόνου πολλοῦ ὁδὸν κατατείνουσιν ἐπ' ἀνθρώπους πολλῶ μαχιμωτέρους ἵεναι.

Procopius Hist., De bellis Book 2, chapter 25, section 3, line 1

ἔκ τε γὰρ Ἰνδῶν καὶ τῶν πλησιοχώρων Ἰβήρων πάν- των τε ὡς εἰπεῖν τῶν ἐν Πέρσαις ἐθνῶν καὶ Ῥωμαίων τινῶν τὰ φορτία ἐσκομιζόμενοι ἐνταῦθα ἀλλήλοις ξυμ- βάλλουσι.

Procopius Hist., De bellis Book 7, chapter 35, section 23, line 2

Ἐν ᾧ δὲ ταῦτα ἐπράσσετο τῇδε ἡπέρ μοι εἴρηται, ἐν τούτῳ τῶν τις Βελισαρίου δορυφόρων, Ἰνδούλφ ὄνομα, βάρβαρος γένος, θυμοειδής τε καὶ δραστήριος, ὃς δὴ ἐν Ἰταλίᾳ λειφθεὶς ἔτυχε, Τουτίλα τε καὶ Γότ- θοις προσεχώρησεν οὐδενὶ λόγῳ.

Procopius Hist., De bellis Book 7, chapter 35, section 29, line 2

ἅπερ ἅπαντα Ἰν- δούλφ τε καὶ Γότθοι ἐλόντες κτείναντές τε τοὺς ἐν ποσὶν ἅπαντας καὶ τὰ χρήματα ληϊσάμενοι παρὰ Του- τίλαν ἦλθον.

Procopius Hist., De bellis Book 8, chapter 3, section 10, line 1

τὰ γὰρ ἐπιτηδεύματα μέχρι ἐς τοὺς ἀπογόνους παραπεμπόμενα τῶν προγε- γεννημένων τῆς φύσεως ἰνδαλμα γίνεται.

Procopius Hist., De bellis Book 8, chapter 17, section 1, line 2

ὑπὸ τοῦτον τὸν χρόνον τῶν τινες μοναχῶν ἐξ Ἰνδῶν ἦκοντες, γνόντες τε ὡς Ἰουστινιανῷ βασιλεῖ διὰ σπουδῆς εἶη μηκέτι πρὸς Περσῶν τὴν μέταξαν ἀνεῖσθαι Ῥωμαίους, ἐς βασιλέα γε- νόμενοι οὕτω δὴ τὰ ἀμφὶ τῇ μετᾶξῃ διοικήσεσθαι ὠμολόγουν, ὡς μηκέτι Ῥωμαῖοι ἐκ Περσῶν τῶν σφίσι πολεμίων ἢ ἄλλου του ἔθνους τὸ ἐμπόλημα τοῦτο ποιήσωνται· χρόνου γὰρ κατα- τριῖψαι μῆκος ἐν χώρᾳ ὑπὲρ Ἰνδῶν ἔθνη τὰ πολλὰ οὔση, ἡπερ Σηρίνδα ὀνομάζεται, ταύτῃ τε ἐς τὸ ἀκριβὲς ἐκμεμαθηκέναι ὁποῖα ποτὲ μηχανῇ γίνε- σθαι τὴν μέταξαν ἐν γῇ τῇ Ῥωμαίων δυνατὰ εἶη.

Procopius Hist., De bellis Book 8, chapter 23, section 2, line 1

τινὲς δὲ αὐτὸν Ἰνδούλφ ἐκάλουν.

Procopius Hist., De bellis Book 8, chapter 35, section 38, line 1

Γότθοι μὲν οὖν μετὰξὺ χίλιοι τοῦ στρατοπέδου ἑξαναστάντες ἐς Τικινόν τε πόλιν καὶ χω- ρία τὰ ὑπὲρ ποταμὸν Πάδον ἐχώρησαν, ὧν ἄλλοι τε ἡγοῦντο καὶ Ἰνδούλφ, οὔπερ πρότερον ἐπεμνήσθην.

Procopius Hist., Historia arcana (= Anecdota) (4029: 002) “Procopii Caesariensis opera omnia, vol. 3”, Ed. Wirth, G. (post J. Haury) Leipzig: Teubner, 1963. Chapter 17, section 34, line 3

Χρυσομαλλῶ δὲ αὕτη πάλαι μὲν ὀρχηστρὶς ἐγεγόνει καὶ αὐθις ἐταῖρα, τότε δὲ ξὺν ἐτέρᾳ Χρυσομαλλοῖ καὶ Ἰνδαροῖ ἐν Παλα- τίῳ τὴν δίαίταν εἶχεν.

Procopius Hist., De aedificiis (lib. 1–6) (4029: 003) “Procopii Caesariensis opera omnia, vol. 4”, Ed. Wirth, G. (post J. Haury) Leipzig: Teubner, 1964.

Procopius Hist., De aedificiis (lib. 1–6) Book 6, chapter 1, section 6, line 1

6.32. PROCLUS PHIL.

Νεῖλος μὲν ὁ ποταμὸς ἐξ Ἰνδῶν ἐπ' Αἰγύπτου φερό- μενος δίχα τέμνει τὴν ἐκείνη γῆν ἄχρι ἐς θάλασσαν.

6.32 Proclus Phil.

Proclus Lycaeus (play /'prɒkləs ,lar'si:əs/; 8 February 412 – 17 April 485 AD), called the Successor (Greek Πρόκλος ὁ Διάδοχος, Próklos ho Diádokhos), was a Greek Neoplatonist philosopher, one of the last major Classical philosophers (see Damascius). He set forth one of the most elaborate and fully developed systems of Neoplatonism. He stands near the end of the classical development of philosophy, and was very influential on Western medieval philosophy (Greek and Latin) as well as Islamic thought.

”Wherever there is number, there is beauty.”

Proclus, quoted by M. Kline, Mathematical Thought from Ancient to Modern Times (From Wikipedia³⁰)

Proclus Phil., In Platonis Cratylum commentaria (4036: 009) “Procli Diadochi in Platonis Cratylum commentaria”, Ed. Pasquali, G. Leipzig: Teubner, 1908. Section 71, line 77

μετέχουσιν δ' ἄλλως ἄλλοι καὶ τούτων, οἷον Αἰγύπτιοι κατὰ τὴν ἐπιχώριον φωνὴν τοιαῦτα παρὰ τῶν θεῶν ἔλαβον ὀνόματα, Χαλδαῖοι δὲ καὶ Ἰνδοὶ ἄλλως κατὰ τὴν οἰ- κείαν γλῶσσαν καὶ Ἕλληνες ὡσαύτως κατὰ τὴν σφετέραν διά- λεκτον.

Proclus Phil., In Platonis Timaeum commentaria Volume 1, page 208, line 18

φιλεῖ, τοῖς δὲ θεοῖς ὁ σπουδαῖος ὁμοιότατος, καὶ διότι <ἐν φρουρᾷ> ὄντες οἱ τῆς ἀρετῆς ἀντε- χόμενοι καὶ ὑπὸ τοῦ σώματος ὡς δεσμωτηρίου συνειλημμένοι δεῖσθαι τῶν θεῶν ὀφείλουσι περὶ τῆς ἐντεῦθεν μεταστάσεως, καὶ ὅτι ὡς παῖδας πατέρων ἀποσπασθέντας εὔχεσθαι προσήκει περὶ τῆς πρὸς τοὺς ἀληθινούς ἡμῶν πατέρας, τοὺς θεούς, ἐπανόδου, καὶ ὅτι ἀπάτορές τινες ἄρα καὶ ἀμήτορες εἰκάσιν εἶναι οἱ μὴ ἀξιοῦντες εὔχεσθαι μηδὲ ἐπιστρέφειν εἰς τοὺς κρείττοντας, καὶ ὅτι καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν οἱ σοφία διενεγκόντες περὶ εὐχὰς ἐσπούδασαν, Ἰνδῶν μὲν Βρα- χμᾶνες, Μάγοι δὲ Περσῶν, Ἑλλήνων δὲ οἱ θεολογικώτατοι, οἱ καὶ τελετὰς κατεστήσαντο καὶ μυστήρια. Χαλδαῖοι δὲ καὶ τὸ ἄλλο θεῖον ἐθεράπευσαν καὶ αὐτὴν τὴν ἀρετὴν τῶν θεῶν θεὸν εἰπόντες ἐσέφθησαν, πολ- λοῦ δέοντες διὰ τὴν ἀρετὴν ὑπερφρονεῖν τῆς ἱερᾶς θρησκείας. καὶ ἐπὶ πᾶσι τούτοις, ὅτι μέρος ὄντας τοῦ παντός δεῖσθαι προσήκει τοῦ παντός. παντὶ γὰρ ἢ πρὸς τὸ ὅλον ἐπιστροφὴ παρέχεται τὴν σωτηρίαν. εἴτε οὖν ἀρετὴν ἔχεις, παρακλητέον σοι τὸ τὴν ὅλην

30. <http://en.wikipedia.org/wiki/Proclus>

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

ἀρετὴν προειληφός· τὸ γὰρ πᾶν ἀγαθὸν αἰτίον ἐστὶ καὶ σοὶ τοῦ ἀγαθοῦ τοῦ σοὶ προσήκοντος·
εἴτε

6.33 Agathias Scholasticus

Agathias or Agathias Scholasticus (Ancient Greek: Ἀγαθίας σχολαστικός) c. AD 530[1]–582[1]/594), of Myrina (Mysia), an Aeolian city in western Asia Minor (now in Turkey), was a Greek poet and the principal historian of part of the reign of the Roman emperor Justinian I between 552 and 558. (From Wikipedia³¹)

Agathias Scholasticus Epigr., Hist., Historiae (4024: 001) “Agathiae Myrinaei historiarum libri quinque”, Ed. Keydell, R. Berlin: De Gruyter, 1967; Corpus fontium historiae Byzantinae 2. Series Berolinensis. Page 73, line 24

4 πρῶτοι μὲν γὰρ ὧν ἀκοῇ ἴσμεν Ἀσσύριοι λέγονται ἅπασαν τὴν Ἀσίαν χειρώσασθαι πλὴν Ἰνδῶν τῶν ὑπὲρ Γάγγην ποταμὸν ἰδρυμένων.

6.34 Olympiodorus the Younger

Olympiodorus the Younger (Greek: Ὀλύμπιόδωρος ὁ Νεώτερος)(c. 495–570) was a Neoplatonist philosopher, astrologer and teacher who lived in the early years of the Byzantine Empire, after Justinian’s Decree of 529 A.D. which closed Plato’s Academy in Athens and other pagan schools. Olympiodorus was the last pagan to maintain the Platonist tradition in Alexandria (see Alexandrian School); after his death the School passed into the hands of Christian Aristotelians, and was eventually moved to Constantinople.

Among the extant writings of Olympiodorus the Younger are a biography of Plato, commentaries on several dialogues of Plato and on Aristotle, and an introduction to Aristotelian philosophy. Olympiodorus also provides information on the work of the earlier Neoplatonist Iamblichus which is not found elsewhere. The surviving works are:

31. <http://en.wikipedia.org/wiki/Agathias>

6.34. OLYMPIODORUS THE YOUNGER

Commentary on Plato's Alcibiades
Commentary on Plato's Gorgias
Commentary on Plato's Phaedo
Life of Plato
Introduction (prolegomena) to Aristotle's logic
Commentary on the Aristotle's Meteorology
Commentary on the Aristotle's Categories

In addition, a Commentary by Olympiodorus is extant on Paulus Alexandrinus' Introduction to astrology (which was written in 378 AD). Although the manuscript of the Commentary is credited in two later versions to a Heliodorus, L.G. Westerink argues that it is actually the outline of a series of lectures given by Olympiodorus in Alexandria between May and July 564 AD. The Commentary is an informative expatiation of Paulus' tersely written text, elaborating on practices and sources. The Commentary also illuminates the developments in astrological theory in the 200 years after Paulus. (From Wikipedia³²)

Olympiodorus Phil., In Aristotelis meteora commentaria (4019: 003) "Olympiodori in Aristotelis meteora commentaria", Ed. Stüve, G. Berlin: Reimer, 1900; Commentaria in Aristotelem Graeca 12.2.

Olympiodorus Phil., In Aristotelis meteora commentaria Page 192, line 1n

<Τὸ γὰρ ἀφ' Ἡρακλείων στηλῶν μέχρι τῆς Ἰνδικῆς τοῦ ἐξ Αἰθιοπίας πρὸς τὴν Μαιῶτιν καὶ τοὺς ἐσχατεύοντας τῆς Σκυθίας τόπους πλέον ἢ πέντε πρὸς τρία τὸ μέγεθος.

Olympiodorus Phil., In Aristotelis meteora commentaria Page 192, line 6

καὶ τοῦ μὲν μήκους ἐπὶ δυσμᾶς τὰς Ἡρακλείους στήλας, πρὸς δὲ ἀνατολὰς τὴν ἐσχάτην Ἰνδιαν, παρ' οἷς ἐστὶν ἡ Ἐρυθρὰ θάλασσα.

Olympiodorus Phil., In Platonis Alcibiadem commentarii (4019: 004) "Olympiodorus. Commentary on the first Alcibiades of Plato", Ed. Westerink, L.G. Amsterdam: Hakkert, 1956, Repr. 1982. Section 10, line 9

δεύτερον ἡμῖν συμβάλλεται πρὸς τὴν γνῶσιν πάντων τῶν ὄντων· εἰ γὰρ γινώσκομεν τὴν ψυχὴν, γνωσόμεθα καὶ οὓς ἔχει λόγους ἐν αὐτῇ, πάντων δὲ τῶν ὄντων ἔχει τοὺς λόγους καὶ τοὺς τύπους ὡς ἰνδαλμα τούτων οὕσα· συμβάλλεται ἡμῖν ἄρα ἡ αὐτῆς γνῶσις καὶ πρὸς τὴν τῶν ὄντων πάντων.

Olympiodorus Phil., In Platonis Alcibiadem commentarii Section 164, line 7

οὐ μόνον δὲ οὗτοι τοιοῦτοι, ἀλλὰ καὶ Ἰνδοὶ ἔχονται τῷ πάθει τούτῳ.

Olympiodorus Phil., In Platonis Alcibiadem commentarii Section 165, line 22

ἱματίων> δὲ ἑλξείς> φησὶ δύο μέρη λέγων, διότι ποδήρεις χιτῶνας φοροῦσιν οἱ Πέρσαι (διὸ καὶ ἑλκεσίπεπλοι) καὶ Ἰνδοί, καθάπερ καὶ οἱ Ἴωνες.

32. http://en.wikipedia.org/wiki/Olympiodorus_the_Younger

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

6.35 Basilius

Is this Basil of Caesarea?

Basil of Caesarea, also called Saint Basil the Great, (329 or 330[5] – January 1, 379) (Greek: Ἅγιος Βασίλειος ὁ Μέγας) was the Greek bishop of Caesarea Mazaca in Cappadocia, Asia Minor (modern-day Turkey). He was an influential theologian who supported the Nicene Creed and opposed the heresies of the early Christian church, fighting against both Arianism and the followers of Apollinaris of Laodicea. His ability to balance his theological convictions with his political connections made Basil a powerful advocate for the Nicene position. (From Wikipedia³³)

Basilius Theol., Homiliae in hexaemeron (2040: 001) “Basile de Césarée. Homélie sur l’hexaéméron, 2nd edn.”, Ed. Giet, S. Paris: Cerf, 1968; Sources chrétiennes 26 bis. Homily 3, section 6, line 9

Ἐκ μὲν γε τῆς ἕω, ἀπὸ μὲν χειμερινῶν τροπῶν ὁ Ἰνδὸς ῥεῖ ποταμὸς ῥεῦμα πάντων ποταμῶν ὑδάτων πλείστον, ὡς οἱ τὰς περιόδους τῆς γῆς ἀναγράφοντες ἱστορήκασιν· ἀπὸ δὲ τῶν μέσων τῆς ἀνατολῆς ὁ τε Βάκτρος, καὶ ὁ Χοάσπης, καὶ ὁ Ἀράξης, ἀφ’ οὗ καὶ ὁ Τάναϊς ἀποσχιζόμενος εἰς τὴν Μαιῶτιν ἔξεισι λίμνην.

Basilius Theol., Homiliae in hexaemeron Homily 4, section 3, line 39

Ὅτι γὰρ ταπεινότερα τῆς ἐρυθρᾶς θαλάσσης ἡ Αἴγυπτος, ἔργῳ ἔπεισαν ἡμᾶς οἱ θελήσαντες ἀλλήλοις τὰ πελάγη συνάψαι, τό τε Αἰγύπτιον καὶ τὸ Ἰνδικόν, ἐν ᾧ ἡ ἐρυθρά ἐστι θάλασσα.

Basilius Theol., Homiliae in hexaemeron Homily 6, section 9, line 28

Σημεῖον δὲ, ὅτι καὶ Ἰνδοὶ καὶ Βρεττανοὶ τὸν ἴσον βλέπουσιν.

Basilius Theol., Homiliae in hexaemeron Homily 7, section 2, line 34

Ἄλλα γνωρίζουσιν οἱ τὴν Ἰνδικὴν ἀλιεύοντες θάλασσαν· ἄλλα, οἱ τὸν Αἰγύπτιον ἀγρεύοντες κόλπον· ἄλλα, νησιῶται· καὶ ἄλλα, Μαυρούσιοι.

Basilius Theol., Homiliae in hexaemeron Homily 8, section 8, line 16

Ὅποια καὶ περὶ τοῦ Ἰνδικοῦ σκώληκος ἱστορεῖται τοῦ κερασφόρου· ὃς εἰς κάμπην τὰ πρῶτα μεταβαλὼν, εἶτα προΐων βομβυλὶδὸς γίνεται, καὶ οὐδὲ ἐπὶ ταύτης ἴσταται τῆς μορφῆς, ἀλλὰ χαύνους καὶ πλατέσι πετάλοις ὑποπτέροῦται.

Basilius Theol., Epistulae (2040: 004) “Saint Basile. Lettres, 3 vols.”, Ed. Courtonne, Y. Paris: Les Belles Lettres, 1:1957; 2:1961; 3:1966. Epistle 1, section 1, line 32

33. http://en.wikipedia.org/wiki/Basil_of_Caesarea

6.36. THEODORETUS

Δοκῶ γάρ μοι, εἰ μὴ ὥσπερ τι θρέμμα θαλλῶ προδεικνυμένῳ ἐπόμενος ἀπηγόρευσα, ἐπέ-
κεινα ἂν σε καὶ Νύσης τῆς Ἰνδικῆς ἐλθεῖν ἀγόμενον, καί, εἴ τι ἔσχατον τῆς καθ' ἡμᾶς οἰκουμένης
χωρίον, καὶ τοῦτο ἐπιπλανη- θῆναι.

Basilius Theol., Enarratio in prophetam Isaiam [Dub.] (2040: 009) “San Basilio. Commento al profeta Isaia, 2 vols.”, Ed. Trevisan, P. Turin: Società Editrice Internazionale, 1939. Chapter 13, section 269, line 13

– “Ἐοικε δὲ χώραν τινὰ λέγειν ἐν τῷ ἔθνει τῷ Ἰνδικῷ τὴν Σουφεῖρ, περὶ ἣν οἱ πολυτίμητοι
τῶν λίθων πεφύκασιν γίνεσθαι.

6.36 Theodoretus

Theodoret of Cyrus or Cyrrhus (Greek: Θεοδώρητος Κύρρου; c. 393 – c. 457) was an influential author, theologian, and Christian bishop of Cyrrhus, Syria (423–457). He played a pivotal role in many early Byzantine church controversies that led to various ecumenical acts and schisms. He is considered blessed or a saint by the Eastern Orthodox Church.[1] (From Wikipedia³⁴)

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Graecarum affectionum curatio (4089: 001) “Théodoret de Cyr. Thérapeutique des maladies helléniques, 2 vols.”, Ed. Canivet, P. Paris: Cerf, 1958; Sources chrétiennes 57. Book 1, section 25, line 6

Εἰ δὲ ἄρα τοῦτό φατε, ὥς ἔξω μὲν τῆς Ἑλλάδος καὶ ἔφυσαν οἷδε οἱ ἄνδρες καὶ ἐτράφησαν, τὴν δὲ γε Ἑλληνικὴν ἡσκήθησαν γλῶτταν, πρῶτον μὲν ὁμολογεῖτε καὶ ἐν ἄλλοις ἔθνεσιν ἄνδρας γεγενῆσθαι σοφούς· καὶ γὰρ δὴ καὶ Ζάμολξιν τὸν Θρᾶκα καὶ Ἀνάχαρσιν τὸν Σκύθην ἐπὶ σοφία θαυμάζετε, καὶ τῶν Βραχμά- νων πολὺ παρ' ὑμῖν τὸ κλέος· Ἰνδοὶ δὲ οὗτοι, οὐχ Ἕλληνες.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Graecarum affectionum curatio Book 2, section 53, line 1

Εἴτα διδάσκει σαφῶς, ὥς οὐδὲν αὐτῷ τῶν ὁρωμένων προσέοικε, καὶ παντάπασι ἀπαγορεύει μηδεμίαν εἰκόνα πρὸς μίμησιν τινος τῶν ὁρωμένων κατασκευάσαι καὶ νομίσαι τοῦτο δείκνυον εἶναι καὶ ἰνδαλμα τοῦ ἀοράτου Θεοῦ.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Graecarum affectionum curatio Book 5, section 58, line 7

Καὶ γὰρ Ἀνάχαρσιν θαυμάζουσιν, ἄνδρα Σκύθην, οὐκ Ἀθηναῖον οὐδὲ Ἀργεῖον οὐδὲ γε Κορίνθιον οὐδὲ Τεγεάτην ἢ Σπαρτιάτην, καὶ τοὺς Βραχμᾶνας ὑπεράγανται, Ἰνδοὺς ὄντας, οὐ Δωριέας οὐδὲ Αἰολέας οὐδὲ γε Ἴωνας· ἐπαινοῦσι δὲ καὶ Αἰγυπτίους ὥς σοφωτάτους· πολλὰς γὰρ τοι καὶ παρὰ τούτων ἔμαθον ἐπιστήμας.

34. <http://en.wikipedia.org/wiki/Theodoretus>

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Graecarum affectionum curatio Book 5, section 66, line 7

Καὶ ἡ Ἑβραίων φωνὴ οὐ μόνον εἰς τὴν Ἑλλήνων μετεβλήθη, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν Ῥωμαίων καὶ Αἰγυπτίων καὶ Περσῶν καὶ Ἰνδῶν καὶ Ἀρμενίων καὶ Σκυθῶν καὶ Σαυροματῶν καὶ ξυλλήβδην εἰπεῖν εἰς ἀπάσας τὰς γλώττας, αἷς ἅπαντα τὰ ἔθνη κεχρημένα διατελεῖ.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Graecarum affectionum curatio Book 5, section 73, line 1

Τοὺς δὲ γε Ἰνδοὺς καὶ τούτων πολλῶ σοφωτέρους εἶναι φασιν.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Graecarum affectionum curatio Book 8, section 6, line 11

Ἦνίκα μὲν γὰρ μετὰ τῶν σωμάτων ἐπολιτεύοντο, νῦν μὲν παρὰ τούτους, νῦν δὲ παρ' ἐκείνους ἐφοίτων, καὶ ἄλλοτε μὲν Ῥωμαίοις, ἄλλοτε δὲ Ἰσπανοῖς ἢ Κελτοῖς διελέγοντο· ἐπειδὴ δὲ πρὸς ἐκείνους ἐξεδήμησαν, ὑφ' οὗ κατεπέμφθησαν, ἅπαντες αὐτῶν ἐνδελεχῶς ἀπολαύουσιν, οὐ μόνον Ῥωμαῖοι, καὶ ὅσοι γε τὸν τούτων ἀγαπῶσι ζυγὸν καὶ ὑπὸ τούτων ἰθύνονται, ἀλλὰ καὶ Πέρσαι καὶ Σκύθαι καὶ Μασσαγέται καὶ Σαυρομάται καὶ Ἰνδοὶ καὶ Αἰθίοπες, καὶ ξυλλήβδην εἰπεῖν ἅπαντα τῆς οἰκουμένης τὰ τέρματα.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Graecarum affectionum curatio Book 9, section 15, line 4

Καὶ οὐ μόνον Ῥωμαίους καὶ τοὺς ὑπὸ τούτοις τελούοντας, ἀλλὰ καὶ τὰ Σκυθικὰ καὶ τὰ Σαυροματικὰ ἔθνη καὶ Ἰνδοὺς καὶ Αἰθίοπας καὶ Πέρσας καὶ Σῆρας καὶ Ἰρκανοὺς καὶ Βακτριανοὺς καὶ Βρεττανοὺς καὶ Κίμβρους καὶ Γερμανοὺς καὶ ἀπαξιαπλῶς πᾶν ἔθνος καὶ γένος ἀνθρώπων δέξασθαι τοῦ σταυρωθέντος τοὺς νόμους ἀνέπεισαν, οὐχ ὅπλοις χρησάμενοι καὶ πολλαῖς μυριάσι λογάδων οὐδὲ τῇ τῆς Περσικῆς ἀμόνητος χρώμενοι βία, ἀλλὰ πείθοντες καὶ δεικνύντες ὀνησιφόρους τοὺς νόμους, καὶ οὐδὲ δίχα κινδύνων τοῦτο ποιοῦντες, ἀλλὰ πολλὰς μὲν κατὰ πόλιν ὑπομένοντες παροινίας, πολλὰς δὲ καὶ παρὰ τῶν τυχόντων δεχόμενοι μάστιγας καὶ στρεβλούμενοι καὶ καθειργνύμενοι καὶ πᾶσαν ἰδέαν

κολαστη-

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Eranistes (4089: 002) “Theodoret of Cyrus. Eranistes”, Ed. Ettlinger, G.H. Oxford: Clarendon Press, 1975. Page 64, line 31

Τὸν μέντοι ἄνθρωπον ἀπλῶς ἀκούσας, οὐκ εἰς τὸ ἄτομον ἀπερείδει τὸν νοῦν, ἀλλὰ καὶ τὸν Ἰνδὸν καὶ τὸν Σκύθην καὶ τὸν Μασσαγέτην καὶ ἀπαξιαπλῶς πᾶν γένος ἀνθρώπων λογίζεται.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Historia ecclesiastica (4089: 003) “Theodoret. Kirchengeschichte, 2nd edn.”, Ed. Parmentier, L., Scheidweiler, F. Berlin: Akademie-Verlag, 1954; Die griechischen christlichen Schriftsteller 44. Page 2, line 21

Περὶ τῆς Ἰνδῶν πίστεως.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Historia ecclesiastica Page 73, line 1

Παρὰ δὲ Ἰνδοῖς κατὰ τοῦτον ἀνέτειλε τὸν χρόνον τῆς θεοργωσίας τὸ φῶς.

6.36. THEODORETUS

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Historia ecclesiastica Page 73, line 7

τότε τις Τύριος τῆς θύραθεν φιλοσοφίας μετέχων, τὴν ἐσχάτην Ἰνδίαν ἱστορῆσαι ποθήσας, σὺν δύο μειρακίοις ἀδελφιδοῖς ἐξεδήμησεν· ὧν ἐπόθησε δὲ τυχάν, ναυ- τιλία χρώμενος ἐπανήει.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Historia ecclesiastica Page 74, line 5

ὁ δὲ Φρουμέντιος τὴν περὶ τὰ θεῖα σπουδὴν τῆς τῶν γεγεννηκότων προτετίμηκε θεᾶς καὶ τὴν Ἀλεξάνδρου κατα- λαβὼν πόλιν τὸν τῆς ἐκκλησίας ἐδίδαξε πρόεδρον, ὡς Ἰνδοὶ λίαν ποθοῦσι τὸ νοερὸν εἰσδέξασθαι φῶς.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Historia ecclesiastica Page 74, line 17

ἀποστολικάῃς γὰρ κεχρημένος θαυματουργίαις τοὺς ἀντιλέγειν τοῖς λόγοις πειραμένους ἐθήρευε, καὶ ἡ τερατουργία μαρ- τυροῦσα τοῖς λεγομένοις παμπόλλους καθ' ἐκάστην ἡμέραν ἐζώγει. Ἰνδῶν μὲν οὖν ὁ Φρουμέντιος πρὸς θεογνωσίαν ἐγένετο ποδηγός.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Historia religiosa (= Philotheus) (4089: 004) "Théodoret de Cyr. L'histoire des moines de Syrie, 2 vols.", Ed. Canivet, P., Leroy-Molinghen, A. Paris: Cerf, 1:1977; 2:1979; Sources chrétiennes 234, 257.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Epistulae: Collectio Patmensis (epistulae 1-52) (4089: 005) "Théodoret de Cyr. Correspondance I", Ed. Azéma, Y. Paris: Cerf, 1955; Sources chrétiennes 40. Epistle 18, line t

Διὰ τοι τοῦτο μικρὰν ἀναβολὴν ἐπαγγέλλω· ἐλπίζομεν γάρ, ὡς τὸ ζοφῶδες τοῦτο καὶ τε- τριγὸς νέφος ὁ φιλάνθρωπος ἡμῶν ὅτι τάχιστα διασκεδάσει δεσπότης. APEOBINΔ*ω ΣΤΡΑ- ΤΗΛΑΤΗ.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Epistulae: Collectio Patmensis (epistulae 1-52) Epistle 21, line t

Διὰ ταύτην τοίνυν τὴν ἱερὰν καὶ φιλάτην τῷ Θεῷ κεφαλὴν ἀπολαυσάτω τῆς ὑμετέρας κηδεμονίας καὶ σωθήτω τῇ πόλει τῇ ὑμετέρᾳ τὸ σχῆμα. APEOBINΔ*α ΠΑΤΡΙΚΙΩ.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Epistulae: Collectio Sirmondiana (epistulae 1-95) (4089: 006) "Théodoret de Cyr. Correspondance II", Ed. Azéma, Y. Paris: Cerf, 1964; Sources chrétiennes 98. Epistle 23, line t

Ἀνιωμαι δὲ μὴ πάντα ἐπαινῶν τὰ ὑμέτερα, ἀλλὰ τὸ κεφάλαιον τῶν ἀγαθῶν ἐλλείπον τοῖς ἐπαίνοις ὁρῶν· ὅπερ εἰ δοίη προσγενέσθαι Θεός, ἐν ἅπασιν τοῖς τῆς ἀρετῆς εἴδεσι κατὰ πάντων σχήσετε τὸ κράτος, τῶν τὴν αὐτὴν ὑμῖν βιοτὴν μετιόντων. APEOBINΔ*α ΠΑΤΡΙΚΙΩ.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Commentaria in Isaiam (4089: 008) "Théodoret de Cyr. Commentaire sur Isaïe, vols. 1-3", Ed. Guinot, J.-N. Paris: Cerf, 1:1980; 2:1982; 3:1984; Sources chrétiennes 276, 295, 315. Section 14, line 394

Εἶτα καθολικῶς· Ἐγένετο τὰ γλυπτὰ αὐτῶν εἰς θηρία καὶ κτήνη. Οὐ γὰρ μόνον ἀν- θρωπόμορφα κατεσκεύαζον εἰδῶλα ἀλλὰ καὶ θηρίοις καὶ κτήνεσιν εἰκότα· καὶ διαφερόντως Αἰγύπτιοι πιθήκων καὶ κυνῶν καὶ λεόντων καὶ προβάτων καὶ χροκοδύλων προσεκύνουν ἰνδάλ- ματα, Ἀχαρωνῖται δὲ καὶ μυίας εἶχον εἰκόνα, ἄλλοι δὲ νυκτερίδων προσεκύνουν εἰκασματα· καὶ τούτων ἐν τοῖς προοιμίοις ὁ προφητικὸς κατηγόρησε λόγος.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Commentaria in Isaiam Section 17, line 181

Ἀλλὰ τούτους καταλύσας ὁ δεσπότης Χριστὸς τὰ τούτων σκῦλα τοῖς ἀποστόλοις διένειμε, τοὺς μὲν Ῥωμαίων, τοὺς δὲ Αἰγυπτίων, τοὺς δὲ Ἰνδῶν διδασκάλους χειροτονήσας.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Quaestiones in Octateuchum (4089: 022) “Theodreti Cyrensis quaestiones in Octateuchum”, Ed. Fernández Marcos, N., Sáenz-Badillos, A. Madrid: Poliglota Matritense, 1979; Textos y Estudios «Cardenal Cisneros» 17.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Quaestiones in Octateuchum Page 15, line 17

πληθυντικῶς δὲ πάλιν τὰς «<συναγωγὰς>» ὠνόμασεν, ἐπεὶ δὲ ἄλλο μὲν τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος, ἄλλο δὲ τὸ Ποντικὸν καὶ τὸ Τυρρηνικὸν ἕτερον· καὶ ἄλλη μὲν ἡ Προποντίς, ἄλλος δὲ ὁ Ἑλλήσποντος, καὶ ὁ Αἰγαῖος ἕτερος καὶ ἄλλος πάλιν ὁ Ἰώνιος κόλπος.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Quaestiones in libros Regnorum et Paralipomenon (4089: 023); MPG 80. Volume 80, page 697, line 31

Σοφερὰ ποία ἐστίν;

Χώρα τις ἐστὶ τῆς Ἰνδίας, ἣν οἱ γεωγράφοι χρυσὴν ὀνομάζουσι γῆν.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Quaestiones in libros Regnorum et Paralipomenon Volume 80, page 697, line 36

Ἐντεῦθεν δὲ αὐτοὺς κεῖσθαι φασὶ τῆς θαλάσσης τῆς Ἰνδικῆς.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Quaestiones in libros Regnorum et Paralipomenon Volume 80, page 700, line 29

Ποία πόλις ἐστὶν ἡ Θαρσεῖς;

Ἐνταῦθα Ἰνδικὴν τινα χώραν ὠνόμασεν.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Quaestiones in libros Regnorum et Paralipomenon Volume 80, page 837, line 34

Καὶ ἤδη δὲ ἔφην, ὅτι πόλις ἦν αὕτη τῇ Ἰνδικῇ πελάγει παρακειμένη, Αἰθίοπας οἰκήτορας ἔχουσα.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in Psalmos (4089: 024); MPG 80. Volume 80, page 1204, line 3

Ὁ μὲν γὰρ ἔδραμε πρὸς Ἰνδοὺς, ὁ δὲ πρὸς Ἰσπανούς· καὶ ὁ μὲν τὴν Αἴγυπτον, ὁ δὲ τὴν Ἑλλάδα κατέλαβε· καὶ ἕτεροι μὲν τὴν Ἰουδαίαν ἐπιστεύθησαν ἄρδεν, ἕτεροι δὲ Συρίαν καὶ Κιλικίαν, ἄλλοι δὲ ἄλλων ἐθνῶν τὴν γεωργίαν ἐνεχειρίσθησαν.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in Psalmos Volume 80, page 1384, line 29

Τούτους δὲ τοῖς ἱεροῖς διένειμεν ἀποστόλοις· τὸν μὲν Ῥωμαίων, τὸν δὲ Ἑλλήνων διδάσκαλον προστησάμενος· καὶ τοὺς μὲν Ἰνδῶν, τοὺς δὲ Αἰγυπτίων κήρυκας ἀποφήνας.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in Psalmos Volume 80, page 1805, line 30

6.36. THEODORETUS

Τούτῳ πειθόμενοι τῷ νόμῳ, πᾶσαν γῆν καὶ θάλασσαν ἔδραμον, καὶ ὁ μὲν Ἰν-
δοὺς, ὁ δὲ Αἰθίοπας προσήγαγε τῷ Χριστῷ.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in Psalmos Volume 80, page 1916, line 27

Ἀτλαντικός γὰρ κόλπος, καὶ Ὠκεανός, καὶ Τυρρηνικός, καὶ Ἰό- νιος τε, καὶ Αἰγαῖος, καὶ Ἀραβικός, καὶ Ἰνδικός, καὶ Εὐξείνιος Πόντος, καὶ Προποντίς, καὶ Ἑλλήσπον-
τος, καὶ ἕτερα πελάγη πολλαπλάσια τῶν εἰρημέ- νων.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in Jeremiam Volume 81, page 736, line 37

Ἐμπόριον δὲ ἦν τοῦτο πά- λαι λαμπρόν, καὶ νῦν οἱ πρὸς Ἰνδοὺς ἀποπλέοντες ἐκεῖθεν ἀνά-
γονται.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in Ezechielem Volume 81, page 1036, line 36

Ἕλληνες μὲν γάρ, καὶ Ῥωμαῖοι, τὸν Ἄρηα κατὰ τὸ ἴδιον αὐτῶν τῆς σκευῆς ἐξοπλίζουσι
σχῆμα· Πέρσαι δὲ κατὰ τὸ σφέτερον· καὶ ἄλλως Ἰνδοὶ καὶ ἐτέρως Αἰθίοπες, ὡσαύτως δὲ καὶ
ἕκαστον τῶν ὀνο- μαζομένων ἐθνῶν.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in Ezechielem Volume 81, page 1084, line 13

Αἰθιοπικὰ τοίνυν ταῦτα καὶ Ἰνδικὰ ἔθνη· δηλοῖ δὲ καὶ τὰ ἐκεῖ-
θεν κομιζόμενα, λίθοι τίμιοι, καὶ χρυσίον, καὶ ἡδύ- σματα.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in Ezechielem Volume 81, page 1084, line 26

Σαβᾶ, καὶ Ἀσσοῦρ, καὶ Χαρμᾶν ἐμποροὶ σου· (κδ΄.) Φέροντες ἐμπορίαν ἐν Μαχαλίμ, καὶ
ἐν Γαλιμά· ὑάκινθον, καὶ ποικιλίαν, καὶ θησαυ- ροὺς ἐκλεκτοὺς ἐν μαγώζοις συγκειμένους,
καταδεδεμένους ἐν σχοινίοις καὶ ἐν κυπα- ρισσίνοις πλοίοις, ἐν αὐτοῖς ἡ ἐμπορία σου. – Σαβᾶ
ἔθνος Ἰνδικὸν ὀνομάζει· εὐρίσκομεν γὰρ καὶ ἐν τῇ τοῦ Σῆμ γενεαλογίᾳ τοῦτο τὸ ὄνομα· Ἀσσοῦρ
δὲ τὸν Ἀσσύριον· Χαρμᾶν δὲ τὴν λεγομένην Καρ- μαήνην.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in Ezechielem Volume 81, page 1204, line 48

Σαβὰ δὲ, ὡς ἤδη ἔφην, ἔθνος ἐστὶν Αἰθιοπικὸν καὶ Ἰνδικόν· ἡ δὲ Δαιδὰν πλησιόχωρος τῆς
Ἰδουμαίας· ἐστὶ δὲ καὶ ἄλλη Αἰ- θιοπική· Θαρσεῖς δὲ ἡ Καρχηδών.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in xii prophetas minores (4089: 029);
MPG 81.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in xii prophetas minores Volume 81,
page 1724, line 27

Τὴν δὲ Θαρ- σίς, τινὲς μὲν Ταρσὸν ἀπὸ τῆς τοῦ ὀνόματος συγγε- νείας ὑπέλαβον εἶναι,
τινὲς δὲ τὴν Ἰνδὴν οὕτως ἔφασαν ὀνομαῖσθαι· συνιδεῖν οὐκ ἐβλήσαντες, ὡς τῶν Ἀσσυρίων ἡ
βασιλεία τῆς Ἰνδῶν ἐστὶν ὁμοιος· ἔθος δὲ τοῖς φεύγουσι τὰ ἐῷα ἐπὶ τὴν ἐσπέραν χω-
ρεῖν, καὶ

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

τοῖς τὰ νότια δραπετεύουσιν ἐπὶ τὰ βόρεια τρέχειν· ἄλλως τε καὶ εἰς τὴν Ἰόππην κατῆλθε, πόλιν παραλίαν τῆς Παλαιστίνης, ἵνα ἐκεῖθεν ἀπάγῃ· ἐπὶκείται δὲ τῇ πρὸς ἐσπέραν κειμένη θαλάττῃ.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in xii prophetas minores Volume 81, page 1724, line 36

Διὰ τούτου δὲ τοῦ πελάγους οὐκ ἂν ναυτιλία τις χρώ- μενος εἰς Ἰνδίαν ἀπέλθοι· μεταξὺ γὰρ τῆς τε ἡμε- τέρας θαλάττης, καὶ τῆς Ἰνδικῆς, ἡπειρός ἐστι με- γίστη, ἡ μὲν οἰκουμένη, ἡ δὲ παντελῶς ἔρημος· καὶ ὅρη δὲ πλεῖστα καὶ μέγιστα, μεθ' ἃ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης ὁ κόλπος, ᾧ τὸ Ἰνδικὸν ἀναμέμικται πέ- λαγος.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in xii prophetas minores Volume 81, page 1725, line 5

Ἐξ ὧν ποδηγηθέντες, τὸν μακάριόν φαμεν Ἰωάν οὐκ εἰς Ἰνδίαν, ἀλλ' εἰς Καρχηδόνα ποιή- σασθαι τὴν φυγὴν.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in xiv epistulas sancti Pauli (4089: 030); MPG 82.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Interpretatio in xiv epistulas sancti Pauli Volume 82, page 337, line 44

Ἐδόθη γὰρ τοῦτο τοῖς κήρυξι διὰ τὰς διαφόρους τῶν ἀνθρώπων φωνάς· ἵνα πρὸς Ἰνδοὺς ἀφικνούμενοι, τῇ ἐκείνων χρώμενοι γλώττῃ, τὸ θεῖον προσφέρωσι κήρυγμα· καὶ Πέρσαις πάλιν διαλεγόμενοι, καὶ Σκύθαις, καὶ Ῥωμαίοις, καὶ Αἰ- γυπτίοις, ταῖς ἐκάστων κεχηρημένοι φωναῖς τὴν εὐ- αγγελικὴν διδασκαλίαν κηρύττωσι.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., Haereticarum fabularum compendium (4089: 031); MPG 83. Volume 83, page 381, line 1

Καὶ τὸν μὲν Ἀλδὰν Σύροις ἀπέστειλε κήρυκα, Ἰνδοῖς δὲ τὸν Θωμᾶν.

Theodoretus Scr. Eccl., Theol., De providentia orationes decem (4089: 032); MPG 83.

6.37 Paulus (med.)

Paul of Aegina or Paulus Aegineta (Aegina, 625?–690?) was a 7th-century Byzantine Greek physician best known for writing the medical encyclopedia Medical Compendium in Seven Books. For many years in the Byzantine Empire, this work contained the sum of all Western medical knowledge and was unrivaled in its accuracy and completeness.

6.37. PAULUS (MED.)

The Medical Compendium in Seven Books is a medical treatise written in Greek the 7th century CE by Paul of Aegina a.k.a. Paulus Aegineta. The title in Greek is Epitomes iatrikes biblio hepta.

Although Byzantine medicine drew largely on ancient Greek and Roman knowledge, however, his works also contained many new ideas as he was a teacher from Alexandria. For example, in several volumes Paul of Aegina talks about bone structure and fractures, as shown below: ... (From Wikipedia³⁵)

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem (0715: 001) “Paulus Aegineta, 2 vols.”, Ed. Heiberg, J.L. Leipzig: Teubner, 9.1:1921; 9.2:1924; Corpus medicorum Graecorum, vols. 9.1 & 9.2.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 2, chapter 53, section 1, line 10

Ἀρχιγένης δὲ φησιν· καὶ ὁ ἄλς ὁ Ἰνδικός, χροά μὲν καὶ συστάσει ὅμοιος τῷ κοινῷ ἀλί, γεύσει δὲ μελιτώδης, φα- κοῦ δὲ μέγεθος ἢ τό γε πλείστον κυάμου, διατρωχθεὶς σφόδρα καθυγραίνειν δύναται.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 3, chapter 22, section 16, line 7

στίμμεως ὁπτοῦ πεπλυμένου ¶ <α>, μολίβδου κεκαυμένου καὶ πεπλυμένου ¶ <δ>, κρόκου ¶ <δ>, νάρδου Ἰνδικῆς ¶ <γ>· λείοις χρῶ.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 3, chapter 24, section 8, line 7

χαλκίτιν λεάνας ἀνάλαβε δεδευμένῃ ὕδατι ἐλλυχνίῳ ἢ πριαπίσκῳ καὶ ἐντίθει τοῖς μυξω-
τῆρσιν ἢ ῥοῦ τὸ ὄστρακον καύσας μίσγε αὐτῷ καὶ κηκίδος τὸ ἥμισυ καὶ ὠσαύτως χρῶ, ἢ
λυκίῳ Ἰνδικῷ διάψα ἢ ὀνίδα καύσας ἐμφύσα τὴν σποδὸν ἢ χυλίσας τὴν ὀνίδα ἐνσταξε τὸν χυλόν,
ἢ μυλίτου λίθου σβεσθέντος ὅξει τὴν ἀτ- μίδα ὁσφραινέσθω, ἢ καὶ παρεμπλαστικῷ τούτῳ κέ-
χρησο· μάννης λιβά- νου μέρος <α>, ἀλόης μέρος ¶, ῥοῦ τῷ λευκῷ ἀναλάμβανε καὶ χρῶ δι'
ἐλλυχνιωτοῦ προστιθεὶς ἔξωθεν τῷ χρίσματι λαγωῦ τρίχας, ἢ τὴν κα- λουμένην λυχνίδα ἐνθες
τῷ μυκτῆρι, ἢ σικύαν κούφην κατὰ τοῦ κατ' εὐθὺ τοῦ αἱμορραγοῦντος μυκτῆρος ὑποχονδρίου
πρόσθες μεγάλην τε καὶ ἐπιμόνως, ἢ τὰ ὅσα στεργῶς ἐμφραττέτω, καὶ τὸ μέτωπον σπόγ-
γοις ἐξ ὕδατος ψυχροῦ καταβρεχέσθω, ἢ σικύαν ἰνίῳ κολλᾶν μεθ' αἰ- ματος ἀφαιρέσεως, ἔσθ'
ὅτε δὲ καὶ φλεβοτομεῖν, εἰ μὴδὲν κωλύει, καὶ

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 3, chapter 37, section 2, line 3

ψυκτικὸν δὲ καὶ τονωτικὸν πλαδῶντος στομάχου τοῦτο· ῥόδων χλωρῶν τῶν φύλλων ¶ <ς>,
γλυκυρίζης χυλοῦ ¶ <δ>, νάρδου Ἰνδικῆς ¶ <δ>· οἶνῳ γλυκεῖ ἀναλάμβανε καὶ ποιεῖ ὑπογλώτ-
τια.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 3, chapter 42, section 3, line 4

κάλλιστος δὲ καὶ οὗτος· ὀπίου, κρόκου, λυκίου Ἰνδικοῦ, ἀκακίας, ῥόδου, λιβάνου, κηκίδος,
ὑποκιστίδος, σιδίων, σμύρνης, ἀλόης ἴσα· ὕδατι δίδου τριώβολον.

35. http://en.wikipedia.org/wiki/Paul_of_Aegina.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 3, chapter 46, section 6, line 13

<δ>· ὀξύμελί τε δο- τέον αὐτοῖς ἀπλᾶ τε βοηθήματα, οἷον ἄσαρον, νάρδον Κελτικὴν ἢ Ἰνδικήν, σχοῖνον, πετροσέλινον· καὶ δεῖ ἐρεθίζειν τὴν γαστέρα διὰ τῆς ἀκαλήφης ἢ λινοζώστεως ἐσθιομένων ἐφθῶν.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 3, chapter 62, section 2, line 8

ἐνεργῶς δὲ πρὸς τοῦτο ποιοῦσι καὶ αἱ κολλητικαὶ τῶν ἐμπλάστων, οἷον ἄρμο- νία, Ἰκέσιος, Ἀθηνᾶ, μελίνη, Ἰνδικὴ καὶ αἱ παραπλήσιοι.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 4, chapter 1, section 7, line 5

αἱ δὲ ὀχθῶδεις ἐπαναστάσεις φλεγμαίνουσαι ἢ εἰλωμέναι καταχρίεσθωσαν λυκίῳ Ἰν- δικῷ ἢ γλαυκίῳ ἢ ἀλόῃ ἢ τῷ Ἀνδρωνίῳ τροχίσκῳ ἢ τῇ Πολυεΐδου σφραγίδι ἢ καταπλαστέσθωσαν χόνδρῳ μετὰ χυλοῦ πολυγόνου ἢ ἄρνο- γλώσσου ἢ ἐλξίνη λείᾳ.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 4, chapter 41, section 2, line 7

ἔτι δὲ πρὸς τὰ ῥυπαρὰ τῶν ἐλκῶν ἢ τε Αἰγυπτία ποιεῖ καὶ αἱ δι' ἄλῶν κηρωταὶ συντα- κεῖσαι ἢ τε Ἰνδικὴ καὶ ἢ Ἀθηνᾶ καὶ αἱ χλωραὶ ἀνιέμεναι τὸ τε διὰ κισήρεως καὶ τὰ δι' ὀρόβου ξηρὰ καὶ ὁ μελάγχλωρος τροχίσκος· ὁμοίως δὲ καὶ ὁ κριογενής.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 4, chapter 54, section 9, line 5

τινὲς δὲ καὶ πολυ- συνθέτοις ἐπὶ αὐτῶν εἰώθασι χρῆσθαι φαρμάκοις, ὅποιά ἐστι τὸ τε διὰ τῶν μεταλλικῶν καὶ αἱ βάρβαροι προσαγορευόμεναι τὸ τε κίσσινον καὶ τὸ διὰ τοῦ ἡριγέροντος καὶ τὸ μελάγχλωρον ἢ τε Ἰνδικὴ καὶ ἢ ἄρμο- νία καὶ ἢ Ἀθηνᾶ, ὧν τὰς συνθέσεις καὶ τὸν τῆς χρήσεως τρόπον κατὰ τὸ ἔβδομον εὐρήσεις βιβλίον.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 4, chapter 58, section 1, line 1

>

Ἐν Ἰνδικῇ καὶ τοῖς ἄνω τῆς Αἰγύπτου τόποις τὰ λεγόμενα δρα- κόντια συνίστανται, καθάπερ ἐλμινθῶδη τινὰ ζῶα, ἐν τοῖς μυώδεσι τῶν μορίων, οἷον βραχίοσι, μηροῖς, κνήμαις, ἐπὶ δὲ τῶν παιδίων καὶ πλευ- ροῖς, ὑπὸ τῷ δέρματι συνιστάμενα καὶ κινούμενα σαφῶς· εἴθ' ὅταν χρονίῃ, κατὰ τι πέρασ τοῦ δρακοντίου πυοῦται ὁ τόπος, καὶ τοῦ δέρματος ἀναστομουμένου ἔξω προέρχεται τοῦ δρακοντίου ἢ ἀρχή, ἐλκόμενον δὲ τὸ δρακόντιον ἀλγηδόνας ἐμποιεῖ, καὶ μάλιστα ὅταν ἀπορραγεῖ.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 3, section 1, line 7

Ἀγάλοχον ξύλον ἐστὶν Ἰνδικὸν παραπλήσιον θύα εὐῶδες, ὃ δια- μασώμενον πρὸς εὐωδίαν στόματος ποιεῖ· ἐστὶ δὲ καὶ θυμίαμα.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 3, section 10, line 87

Καρυόφυλλον οὐ πρὸς τοῦνομα καὶ τὴν οὐσίαν ἔχει, ἀλλ' ἐκ τῆς Ἰνδίας οἷον ἄνθη τινὰ δένδρου καρφοειδῆ μέλανα, ὅσον δακτύλου σύν- εγγυς τὸ μῆκος, φέρεται ἀρωματίζοντα καὶ δριμύα, ὑπόπικρα, θερμά τε καὶ ξηρὰ περὶ που τρίτης τάξεως· ἃ πολὺχρηστά ἐστὶν ἐν ὄφιοις τε καὶ ἐτέροις φαρμάκοις.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 3, section 11, line 120

6.37. PAULUS (MED.)

τὸν ἱερακίτην δὲ καὶ Ἰνδικὸν λίθον φασὶ περιεπτόμενον τὸ ἐκ τῶν αἰμορροΐδων ἰστᾶν αἷμα, τὸν δὲ σάπφειρον πινόμενον τοὺς ὑπὸ σκορπίου πληγέντας ὠφελεῖν καὶ τὸν ἀφροσέ- λινον τοὺς ἐπιλήπτους.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 3, section 11, line 153

Λύκιον ἐξ ἑτερογενῶν σύγκειται δυνάμεων, τῆς μὲν θερμῆς τε καὶ λεπτομεροῦς καὶ δια- φορητικῆς, τῆς δὲ γεώδους ψυχρᾶς καὶ ἡρέμα στυφούσης, ὥστε ξηραίνειν κατὰ τὴν δευτέραν ἀπόστασιν, κατὰ δὲ τὸ θερμαίνειν καὶ ψύχειν μέσον· διόπερ ὡς ῥυπτικῶ μὲν αὐτῷ χρῶνται ἐπὶ τῶν ἐπισκοτούντων ταῖς κόραις, ὡς δὲ στυπτικῶ ἐπὶ κοιλιακῶν τε καὶ δυσεντερικῶν καὶ τῶν κακοήθων ἐλκῶν, ἐπὶ δὲ φλεγμονῶν ὡς διαφοροῦντι· προτερεύει δὲ τὸ Ἰνδικόν.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 3, section 12, line 2

>

Μάκερ φλοιός ἐστιν ἐκ τῆς Ἰνδικῆς κομιζόμενος, ξηραίνων μὲν κατὰ τὴν τρίτην τάξιν, μέσος δὲ κατὰ θερμότητα καὶ ψῦξιν· ἔστι δὲ καὶ στυπτικὸς λεπτομερής· ὅθεν κοιλιακοῖς τε καὶ δυσεντερικοῖς ἀρμόττει.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 3, section 12, line 27

Μέλαν Ἰνδικόν, ὡς φησι Διοσκουρίδης, τῶν ψυχόντων ἐλαφρῶς ἐστὶ καὶ ῥυσοῦντων φλεγμο- νὰς καὶ οἰδήματα ἔλκη τε ἀνακαθαίροντων.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 3, section 13, line 2

>

Ναόκαφθον, οἱ δὲ νάκαφθον, Ἰνδικόν ἐστὶν ἄρωμα πρὸς μήτραν ἐστεγνωμένην ὑπατιμίζο- μενον.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 3, section 13, line 9

ἰσχυροτέρα δὲ ἐστὶν ἢ Ἰνδικὴ τῆς Συριακῆς καὶ μελαντέρα.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 3, section 15, line 36

Ὅνυχες πώματά εἰσι κογχυλίων Ἰνδικῶν, οἱ θυμιαθέντες ἐγγεί- ρουσι τὰς τε ὑστερικῶς πνιγομένας καὶ ἐπιληπτικούς, ποθέντες δὲ κοιλίαν ταράσσουσιν.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 11, section 2, line 4

>

Ἀσπαλάθου ῥίζης φλοιοῦ, καλάμου ἀρωματικοῦ, κόστου, ἀσάρου, ξυλοβαλσάμου, φοῦ, ἀμαράκου, μαστίχης ἀνὰ [] <ς>, σχοίνου ἄνθους [] <ιβ>, κιναμώμου [] <κδ>, ἀμώμου, κασ- σίας, ῥέου ἀνὰ [] <κ>, νάρδου Ἰνδικῆς, φύλλου ἀνὰ [] <ιβ>, σμύρνης [] <κδ>, κρόκου [] <ιβ>· οἷνῳ καλῶ ἀναλάμβανε καὶ ἀνάπλασσε τροχίσκους ὀποβαλσάμου παραπτόμενος.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 12, section 6, line 4

>

Ἀκακίας, κόμμεως, ῥόδων ἄνθους, βαλαυστίων, ὑποκιστίδος χυλοῦ, κηκίδων ἀνὰ [] <γ>, ῥόδων χλωρῶν χυλοῦ, ἀρνογλώσσου σπέρματος ἀνὰ [] <β>, λυκίου Ἰνδικοῦ [] <α>.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 14, section 10, line 7

>

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Ἀνίσου σπέρματος, σελίνου σπέρματος, σχοίνου ἄνθους, ἄμεως σπέρ-ματος, στυπτηρίας σχιστῆς, ἴρεως Ἰλλυρικῆς, βησσαῖα, ὃ τινες ἄρμαλὰ καλοῦσιν (ἔστι δὲ τὸ ἄγριον πῆγανον), κιναμάμου, σμύρνης τρωγλίτιδος, κρόκου, κηκίδος ἀνὰ [] <α>, ἀριστολοχίας μακρᾶς, κασσίας, κροκομάγματος, ῥόδων ξηρῶν ἀνὰ [] <β>, κόστου, χελιδόνων σποδοῦ προσφάτου ἀνὰ [] <γ>, νάρδου Ἰνδικῆς, ἀμώμου ἀνὰ [] []', μέλιτος τὸ ἄρκοῦν.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 16, section 12, line 3

>

Καδμίας ἀπαλῆς [] <κδ>, ψιμυθίου [] <ις>, ἰοῦ ξυστοῦ [] <ιβ>, στίμμεως [] <η>, στυπτηρίας σχιστῆς [] <γ>, χαλκίτεως κεκαυμένης [] <γ>, νάρδου Ἰνδικῆς [] <δ>, ὀμφακίου [] <β>, χαλκοῦ [] <α>, λεπίδος χαλκοῦ [] <η>, ἐρείκης καρ-ποῦ [] <ιγ>, ὀποῦ μήκωνος [] <κδ>, κρόκου [] <δ>, καστορίου [] <γ>, σμύρνης [] <ς>, λυκίου Ἰνδικοῦ, ἀκακίας, κόμμεως ἀνὰ [] <δ>, ῥόδων νεαρῶν [] <οβ>· οἶνω Φαλερινῶ ἢ Σουρεντινῶ ἢ Ἀμινναίῳ ἢ Χίῳ αὐστηρῶ λείου.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 16, section 24, line 6

>

Ἀκακίας, ναρδοστάχυνος, λιβάνου ἀνὰ [] <η>, χαλκοῦ κεκαυμένου καὶ πεπλυμένου, στίμμεως κεκαυμένου καὶ πεπλυμένου, ψιμυθίου κεκαυ-μένου καὶ πεπλυμένου, καδμίας ἀνὰ [] <ιβ>, σμύρνης, ὀπίου πεφωγμένου ἀνὰ [] <δ>, κρόκου [] <ε>, ἰοῦ ξυστοῦ [] <γ>, λίθου σχιστοῦ, λεπίδος ἐρυθρᾶς, λυκίου Ἰνδικοῦ, ὀμφακίου ἀνὰ [] <α>, καστορίου, ῥόδων ἄνθους ἀνὰ [] <β>, φοινικοβαλάνων [] <δ>, ὁμοίως τὰ ὅστ' αὐτῶν φοινίκων κεκαυμένα ἀριθμῶ <ε>, κόμμεως [] <ε>· ὕδωρ ὀμβριον, ἔστωσαν δὲ εἰς τὸ ὕδωρ ἐμβρεχόμενα τρία νυχθήμερα καλάμου ἀρωματικοῦ, ὑοσκυάμου σπέρματος, ῥόδων ξηρῶν ἀνὰ [] <δ>, φύλλου [] <α>.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 16, section 44, line 2

<Τὸ διὰ χυλοῦ μαράθρου.>

Καδμίας [] <ιζ>, μέλανος Ἰνδικοῦ [] <ις>, πεπέρεως μακροῦ [] <ιγ> καὶ λευκοῦ [] <ιβ>, ὀποῦ Κυρηναικοῦ [] <η>, ὀποβαλσάμου [] <ς>, ναρδοστάχυνος [] <ς>, σαγαπηνοῦ, ὀποπάνακος ἀνὰ [] <ε>, ὀπίου [] <δ>, εὐφορβίου [] <α>, κόμ-μεως [] <α>· λείου χυλῶ μαράθρου.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 16, section 46, line 2

>

Καδμίας [] <η>, ἰοῦ [] <β>, μέλανος Ἰνδικοῦ [] <η>, πεπέρεως λευκοῦ [] <δ>, ὀποῦ Μηδικοῦ [] <β>, ὀποβαλσάμου [] <β>, κόμμεως [] <ς>· ὕδωρ.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 16, section 48, line 3

>

Καδμίας [] <ις>, χαλκοῦ κεκαυμένου καὶ πεπλυμένου [] <ιδ>, ὀπίου, λυκίου Ἰνδικοῦ, μαλαβάθρου, νάρδου Ἰνδικῆς, κρόκου, ἀλόης ἀνὰ [] <β>, καστορίου [] <η>, σμύρνης [] <δ>, ἀκακίας, στίμμεως ἀνὰ [] <μ>· ὕδατι.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 16, section 50, line 4

>

6.38. NONNOSUS

Χαλκοῦ κεκαυμένου, καδμίας πλακίτιδος ἀνὰ [] <θ>, λίθου αἰματίτου πεπλυμένου [] <ς>, κρόκου, σμύρνης, ἀλόης, ἀμμωνιακοῦ θυμιάματος ἀνὰ [] <γ>, λυκίου Ἰνδικοῦ, ναρδοστάχυος ἀνὰ [] <α> []', πεπέρεως λευκοῦ κόκκους <ρν>, ἀκακίας κινρᾶς [] <θ>, κόμμεως [] <γ>· οἶνω Φαλερινῷ ἢ Ἀμινναίῳ λείου.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 17, section 56, line 1
<Ἡ Ἰνδὴ κολλητικὴ πρὸς νομάς τε καὶ αἰμοπτυϊκούς.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 18, section 4, line 3

>

Κηροῦ, τερεβινθίνης, βδελλίου, ἀμμωνιακοῦ θυμιάματος, καρδαμώ- μου, κυπέρου ἀνὰ μνᾶν <α>, ἀμάμου, νάρδου Ἰνδικῆς, κρόκου, σμύρνης, λιβάνου, ξυλοκιναμάμου ἀνὰ [] <κε>, ἐλαίου κυπρίνου κοτύλην <α>, οἶνου Ἰταλικοῦ ὅσον ἐξαρκεῖ· σκεύαζε καὶ χρῶ, ποτὲ μὲν ἀκράτῳ, ἔστι δ' ὅτε ἀνειμένῳ κηρωτῇ κυπρίνῃ.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 25, section 2, line 3
ἀντὶ ἀλόης Ἰνδικῆς ἀλόης χλωρᾶς φύλλα ἢ γλαυκίας ἢ κόπρος ἰβέως ἢ λύκιον ἢ κενταύριον.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 25, section 2, line 19
ἀντὶ ἀμυγδάλων πικρῶν ἀψίνθιον ἀντὶ ἀρμενίου μέλαν Ἰνδικόν.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 25, section 10, line 9
ἀντὶ κροκομάγματος ἀλὸν Ἰνδική.

Paulus Med., Epitomae medicae libri septem Book 7, chapter 25, section 12, line 1
ἀντὶ μαλαβάθρου κασσία ἢ νάρδος Ἰνδική.

6.38 Nonnosus

Late antique.

Author of a lost Greek report on the travels of a legation to the ruler of Kinda in central Arabia and then to Ethiopia and southern Arabia in the year AD 530/1, the existence of which is known only from the 'Library of Photius (cod. 3). Similar journeys had been undertaken by 502 by N.'s grandfather Euphrasius, and several in 524 and later by his father Abram. According to Photius, the report emphasised the courage of N. in hazardous situations and contained information on the r... (From New Pauly's)

Nonnosus Hist., Fragmenta (4393: 001) "FHG 4", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 1, line 6

Malalas Chron.: Ὁ δὲ βασιλεὺς Ῥωμαίων ἀκούσας παρὰ τοῦ πατρικίου Ρουφίνου τὴν παρὰ Κωάδου, βα- σιλέως Περσῶν, παράβασιν, ποιήσας θείας κελεύσεις κατέπεμψε πρὸς

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

τὸν βασιλέα τῶν Αὐξουμιτῶν· ὅστις βασιλεὺς Ἰνδῶν συμβολὴν ποιήσας μετὰ τοῦ βασιλέως τῶν Ἀμεριτῶν (***) Ἰνδῶν, κατὰ κράτος νικήσας παρέ- λαβε τὰ βασίλεια αὐτοῦ καὶ τὴν χώραν αὐτοῦ πᾶσαν, καὶ ἐποίησεν ἀντ' αὐτοῦ βασιλέα τῶν Ἀμεριτῶν Ἰνδῶν ἐκ τοῦ ἰδίου γένους Ἀγγάνην διὰ τὸ εἶναι καὶ τὸ τῶν Ἀμεριτῶν Ἰνδῶν βασίλειον ὑπ' αὐτόν.

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 11

Ὁ δὲ βασιλεὺς Ῥωμαίων ἀκούσας παρὰ τοῦ πατρικίου Ῥουφίνου τὴν παρὰ Κωάδου, βα- σιλέως Περσῶν, παράβασιν, ποιήσας θείας κελεύσεις κατέπεμψε πρὸς τὸν βασιλέα τῶν Αὐξουμιτῶν· ὅστις βασιλεὺς Ἰνδῶν συμβολὴν ποιήσας μετὰ τοῦ βασιλέως τῶν Ἀμεριτῶν (***) Ἰνδῶν, κατὰ κράτος νικήσας παρέ- λαβε τὰ βασίλεια αὐτοῦ καὶ τὴν χώραν αὐτοῦ πᾶσαν, καὶ ἐποίησεν ἀντ' αὐτοῦ βασιλέα τῶν Ἀμεριτῶν Ἰνδῶν ἐκ τοῦ ἰδίου γένους Ἀγγάνην διὰ τὸ εἶναι καὶ τὸ τῶν Ἀμεριτῶν Ἰνδῶν βασίλειον ὑπ' αὐτόν.

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 13

Καὶ ἀποπλεύ- σας ὁ πρεσβευτὴς Ῥωμαίων ἐπὶ Ἀλεξανδρείαν διὰ τοῦ Νείλου ποταμοῦ καὶ τῆς Ἰνδικῆς θαλάσσης κατέφθασε τὰ Ἰνδικὰ μέρη.

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 15

Καὶ εἰσελθὼν παρὰ τῷ βασιλεῖ τῶν Ἰνδῶν, μετὰ χαρᾶς πολλῆς ἐξενίσθη ὁ βασιλεὺς Ἰνδῶν, ὅτι διὰ πολλῶν χρόνων ἠξιώθη μετὰ τοῦ βασι- λέως Ῥωμαίων κτήσασθαι φιλίαν.

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 19

Ὡς δὲ ἐξηγήσα- το (*) ὁ αὐτὸς πρεσβευτὴς, ὅτε ἐδέξατο αὐτόν ὁ τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς, ὑφηγήσατο τὸ σχῆμα τῆς βασιλι- κῆς τῶν Ἰνδῶν καταστάσεως, ὅτι γυμνὸς ὑπῆρχε, καὶ κατὰ τοῦ ζώσματος εἰς τὰς ψύας αὐτοῦ λινόχρυσά ἱμάτια, κατὰ δὲ τῆς γαστροῦ καὶ τῶν ὤμων φορῶν σχιστάς διὰ μαργαριτῶν καὶ κλαβία ἀνὰ πέντε, καὶ χρυσὰ ψέλια εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ, ἐν δὲ τῇ κεφαλῇ αὐτοῦ λινόχρυσον φακιόλιον ἐσφενδονισμένον, ἔχον ἐξ ἀμφοτέρων τῶν μερῶν σειρὰς τέσσαρας, καὶμανιάκιν χρυσοῦν ἐν τῷ τραχήλῳ αὐτοῦ· καὶ ἴστατο ὑπεράνω

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 33

Καὶ ἴστατο ἐπάνω ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰνδῶν βαστάζων σκουτάριον μικρὸν κεχρυσωμένον καὶ δύο λαγκίδια καὶ αὐτὰ κεχρυσωμένα κατέχων ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ.

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 39

Καὶ εἰσενεχθεὶς ὁ πρεσβευτὴς Ῥωμαίων κλίνας τὸ γόνυ προσεκύνησε· καὶ ἐκέλευσεν ὁ βα- σιλεὺς Ἰνδῶν ἀναστῆναί με καὶ ἀναχθῆναι πρὸς αὐτόν.

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 50

Λύ- σας δὲ καὶ ἀναγνούς δι' ἐρμηνέως τὰ γράμματα, εὔρε περιέχοντα ὥστε ὀπλίσασθαι αὐτόν κατὰ Κωάδου, βα- σιλέως Περσῶν, καὶ τὴν πλησιάζουσιν αὐτῷ χώραν ἀπολέσαι καὶ τοῦ λοιποῦ μηκέτι συνάλλαγμα ποιῆσαι μετ' αὐτοῦ, ἀλλὰ δι' ἧς ὑπέταξε χώρας τῶν Ἀμεριτῶν Ἰνδῶν διὰ τοῦ Νείλου ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον ἐν Ἀλεξαν- δρείᾳ τὴν πραγματείαν ποιεῖσθαι.

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 52

Καὶ εὐθέως ὁ βασι- λεὺς Ἰνδῶν Ἐλεσβόας ἐπ' ὄφει τοῦ πρεσβευτοῦ Ῥωμαίων ἐκίνησε πόλεμον κατὰ Περσῶν, προπύμψας δὲ τοὺς ὑπ' αὐτόν Ἰνδοὺς Σαρακηνούς, ἐπῆλθε τῇ Περ-

6.39. EPIPHANIUS

σικῇ χώρᾳ ὑπὲρ Ῥωμαίων, δηλώσας τῷ βασιλεῖ Περσῶν τοῦ δέ- ξασθαι τὸν βασιλέα Ἰνδῶν πολεμοῦντα αὐτῷ καὶ ἐκ- πορθῆσαι πᾶσαν τὴν ὑπ' αὐτοῦ βασιλευομένην γῆν.

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 59

Καὶ πάντων οὕτως προβάδαντων, ὁ βασιλεὺς Ἰνδῶν κρατήσας τὴν κεφαλὴν τοῦ πρεσβευτοῦ Ῥωμαίων, δεδωκὼς εἰρή- νης φίλημα, ἀπέλυσεν ἐν πολλῇ θεραπείᾳ.

Nonnosus Hist., Fragmenta Fragment 1, line 62

Κατέπεμψε γὰρ καὶ σάκρας διὰ Ἰνδοῦ πρεσβευτοῦ καὶ δῶρα τῷ βασιλεῖ Ῥωμαίων.

6.39 Epiphanius

Which of the many Iphphanii is this?

(Ἀλλογενής; Allogenēs, the ‘different’). Name of Seth as son of Adam and Eve in Sethian Gnosticism (Epiphanius, Panarii libri 40,7,2). His seven sons are the Allogeneis (40,7,5). Books are also ascribed to him, which are likewise called Allogeneis (39,5,1; 40,2,2).

Graf, Fritz (Columbus, OH) Citation Graf, Fritz (Columbus, OH). ” Allogenes.” Brill’s New Pauly. Antiquity volumes edited by: Hubert Cancik and , Helmuth Schneider. Brill Online , 2012. Reference. 13 September 2012 <<http://referenceworks.brillonline.com/entries/brill-s-new-pauly/allogenes-e116140>> ³⁶ (From New Pauly’s)

What is “Ἰνδικτιῶνος”?

Epiphanius Scr. Eccl., Ancoratus (2021: 001) “Epiphanius, Band 1: Ancoratus und Panarion”, Ed. Holl, K. Leipzig: Hinrichs, 1915; Die griechischen christlichen Schriftsteller 25. Chapter 58, section 2, line 3

καὶ Φεισῶν μὲν ἐστὶν ὁ Γάγγης παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς καλούμενος καὶ Αἰθίοψιν, Ἕλληνες δὲ τοῦτον καλοῦσιν Ἰνδὸν ποταμόν.

Epiphanius Scr. Eccl., Ancoratus Chapter 60, section 5, line 7

τὸ ἔτος γὰρ τοῦτό ἐστιν ἐνενηκοστὸν Διοκλητιανοῦ, Οὐαλεντινιανοῦ καὶ Οὐάλεντος <ι>, Γρα- τιανοῦ δὲ ἔτος <ς>, ὑπατεία Γρατιανοῦ Αὐγούστου τὸ τρίτον καὶ Ἐκουπίου λαμπρο- τάτου, Ἰνδικτιῶνος <β>.

Epiphanius Scr. Eccl., Ancoratus Chapter 112, section 3, line 2

36. http://referenceworks.brillonline.com/entries/brill-s-new-pauly/allogenes-e116140?s.num=1&s.f.s2_parent=s.f.book.brill-s-new-pauly&s.q=epiphanius.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

καὶ διαμερίζει μὲν ὡς κληρονόμος τοῦ κόσμου καταστάς ὑπὸ τοῦ θεοῦ τοῖς τρισὶν υἱοῖς αὐτοῦ τὸν πάντα κόσμον, ὑπὸ κλήρους διελὼν καὶ ἐκάστην μερίδα κατὰ κλῆρον ἐκάστῳ ἀπονέμων· καὶ τῷ μὲν Σῆμ τῷ πρωτοτόκῳ ὑπέπεσεν ὁ κλῆρος ἀπὸ Περσίδος καὶ Βάκτρων ἕως Ἰνδικῆς <τὸ μῆκος, πλάτος δὲ ἀπὸ Ἰνδικῆς> ἕως τῆς χώρας Ῥινοκουρούρων· κεῖται δὲ αὕτη ἡ Ῥινοκουρούρων ἀνὰ μέσον Αἰγύπτου καὶ Παλαιστίνης, ἀντικρὺ τῆς ἐρυθρᾶς θαλάσσης.

Epiphanius Scr. Eccl., Ancoratus Chapter 113, section 2, line 2

τὰ δὲ ὀνόματα αὐτῶν ἐστὶ τάδε· Ἑλυμαῖοι Παῖονες Λαζόνες Κοσσαῖοι Γασφρηνοὶ [Παλαιστινιοὶ] Ἰνδοὶ Σύριοι Ἀραβες οἱ καὶ <Ταῖ>ανοὶ Ἀριανοὶ Μάρδοι Ὑρκανοὶ Μαγουσαῖοι Τρωγλοδύται Ἀσσύριοι Γερμανοὶ Λυδοὶ Μεσοποταμίται Ἑβραῖοι Κοιληνοὶ Βακτριανοὶ Ἀδιαβηνοὶ Καμήλιοι Σαρακηνοὶ Σκύθαι † Χίονες Γυμνο-σοφισταὶ Χαλδαῖοι Πάρθοι Ἑῆται Κορδυληνοὶ Μασσηνοὶ Φοίνικες Μαδινηαῖοι Κομμαγηνοὶ Δαρδάνιοι Ἑλαμασηνοὶ Κεδρούσιοι Ἑλαμίται Ἀρμένιοι Κίλικες [Αἰγύπτιοι] Καππάδοκες [Φοίνικες] Ποντικοὶ [Μαρμα-ρίδαι] † Βίονες [Κᾶρες] Χάλυβες [Ψυλλῖται] Λαζοὶ [Μοσσύνικοι] Ἰβηρες [Φρύγες].

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) (2021: 002) “Epiphanius, Bände 1–3: Ancoratus und Panarion”, Ed. Holl, K. Leipzig: Hinrichs, 1:1915; 2:1922; 3:1933; Die griechischen christlichen Schriftsteller 25, 31, 37. Volume 1, page 291, line 13

διὰ τοῦτο γὰρ ὁ ἱερεὺς προσετάγη ὑπ’ αὐτοῦ τοῦ νομοθετή-σαντος, φησὶν, ἔχειν κώδωνας, ἵν’ ὅταν εἰσέρχεται ἱερατεῦσαι, τὸν κτύπον ἀκούων κρύπτηται ὁ προσκυνούμενος, ἵνα μὴ φωραθῇ τὸ ἰνδαλτικὸν αὐτοῦ τῆς μορφῆς πρόσωπον.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 2, page 216, line 9

τὸν δὲ γάμον σαφῶς τοῦ διαβόλου ὀρίζονται· ἐμψυχα δὲ βδελύσσονται, ἀπαγορεύοντες οὐχ ἕνεκεν ἐγκρα-τείας οὔτε πολιτείας, ἀλλὰ κατὰ φόβον καὶ ἰνδαλμὸν τοῦ μὴ κατα-δικασθῆναι ἀπὸ τῆς τῶν ἐμψύχων μεταλήψεως.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 16, line 8

αἰεὶ δὲ στελλόμενος τὴν πορείαν ἐπὶ τὴν τῶν Ἰνδῶν χώραν πραγματείας χάριν πολλὴν ἐμπορίαν ἐποιεῖτο.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 17, line 4

ὅθεν πολλὰ κτησάμενος ἐν τῷ κόσμῳ καὶ διὰ τῆς Θηβαΐδος διωὼν, ὄρμοι γὰρ τῆς ἐρυθρᾶς θαλάσσης διάφοροι, ἐπὶ τὰ στόμια τῆς Ῥωμανίας διακεκριμένοι, ὁ μὲν εἰς ἐπὶ τὴν Αἰλῶν, ἥτις ἐστὶν ἐν τῇ θείᾳ γραφῇ Αἰλῶν· ἐνθα πού ἡ ναὺς Σολομῶντος διὰ τριῶν ἐτῶν ἐρχομένη ἔφερε χρυσὸν καὶ ὀδόντας ἐλεφαντίνους, ἀρώματά τε καὶ ταῶνας καὶ τὰ ἄλλα, ὁ δὲ ἕτερος ὄρμος ἐπὶ τὸ Κάστρον τοῦ Κλύσματος, ἄλλος δὲ ἀνωτάτῳ ἐπὶ τὴν Βερνίκην καλουμένην, δι’ ἧς Βερνίκης καλουμένης ἐπὶ τὴν Θηβαΐδα φέρονται, καὶ τὰ ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐρχόμενα εἶδη ἐκεῖσε τῇ Θηβαΐδι διαχύνεται ἢ ἐπὶ τὴν Ἀλεξανδρέων διὰ τοῦ Χρυσορρόα ποταμοῦ, Νείλου δὲ φημι, τοῦ καὶ Γεῶν ἐν ταῖς γραφαῖς λεγομένου, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τῶν Αἰγυπτίων γῆν καὶ ἐπὶ τὸ Πηλούσιον φέρεται· καὶ οὕτως εἰς τὰς ἄλλας πατρίδας διὰ θαλάσσης διερχόμενοι οἱ ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὴν Ῥωμανίαν ἐμπορεύονται.

6.39. EPIPHANIUS

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 17, line 8

διακεκριμένοι, ὁ μὲν εἰς ἐπὶ τὴν Αἰλᾶν, ἣτις ἐστὶν ἐν τῇ θείᾳ γραφῇ Αἰλῶν· ἐνθα που ἡ ναῦς Σολομῶντος διὰ τριῶν ἐτῶν ἐρχομένη ἔφερε χρυσὸν καὶ ὀδόντας ἐλεφαντίνους, ἀρώματά τε καὶ ταῶνας καὶ τὰ ἄλλα, ὁ δὲ ἕτερος ὅρμος ἐπὶ τὸ Κάστρον τοῦ Κλύσματος, ἄλλος δὲ ἀνωτάτω ἐπὶ τὴν Βερνίκην καλουμένην, δι' ἧς Βερνίκης καλουμένης ἐπὶ τὴν Θηβαΐδα φέρονται, καὶ τὰ ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐρχόμενα εἶδη ἐκεῖσε τῇ Θηβαΐδι διαχύνεται ἢ ἐπὶ τὴν Ἀλεξανδρέων διὰ τοῦ Χρυσορροῖα ποταμοῦ, Νείλου δὲ φημι, τοῦ καὶ Γεὼν ἐν ταῖς γραφαῖς λεγομένου, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τῶν Αἰγυπτίων γῆν καὶ ἐπὶ τὸ Πηλοῦσιον φέρεται· καὶ οὕτως εἰς τὰς ἄλλας πατρίδας διὰ θαλάσσης διερχόμενοι οἱ ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὴν Ῥω-μανίαν ἐμπορεύονται.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 17, line 17

ἐν ἀρχῇ τοίνυν οὗτος ὁ Σκυθιανὸς πλούτῳ πολλῷ ἐπαρ-θεὶς καὶ κτήμασιν ἡδυσμάτων καὶ τοῖς ἄλλοις τοῖς ἀπὸ τῆς Ἰνδίας καὶ ἐλθὼν περὶ τὴν Θηβαΐδα εἰς Ἰψηλὴν πόλιν οὕτω καλουμένην, εὐρὼν ἐκεῖ γύναιον ἐξωλέστατον καὶ κάλλει σώματος πρόοπτον ἐκπλήξάν τε αὐτοῦ τὴν ἀσυνεσίαν, ἀνελόμενός τε τοῦτο ἀπὸ τοῦ στέγους (ἔστηκε γὰρ ἡ τοιαύτη ἐν τῇ πολυκοίνῳ ἀσεμνότητι) ἐπεκαθέσθη τῷ γυναικίῳ καὶ ἐλευθερώσας αὐτὸ συνήφθη αὐτῷ πρὸς γάμον.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 19, line 18

ὥς δὲ οὐκ ἴσχυσε τι ἀνύσαι, ἀλλὰ τὸ ἥττον μᾶλλον ἀπηνέγκατο, ἐπετήδευσε δι' ὧν εἶχε μαγικῶν βιβλίων – καὶ γὰρ καὶ γόης ἦν, ἀπὸ τῆς τῶν Ἰνδῶν καὶ Αἰγυπτίων [καὶ] ἔθνομύθου σοφίας ἐμπορευσάμενος τὰ δεινὰ καὶ ὀλετήρια τῆς γοη-τείας – φαντασίαν τινά· ἐπὶ δώματος <γὰρ> ἀνελθὼν καὶ ἐπιτηδεύσας, ὅμως οὐδὲν ἰσχύσας, ἀλλὰ καταπεσὼν ἐκ τοῦ δώματος, τέλει τοῦ βίου ἐχρήσατο.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 32, line 22

καὶ τοῦ Τρύφωνος ἰνδαλλομένου, ἀποκριθέντος τε αὐτῷ πρὸς ἔπος ὧν ἤτησε κατὰ τὴν ἐκ θεοῦ δοθεῖσαν αὐτῷ σύνεσιν καὶ στροβήσαντος τὸν ἀπατεῶνα, ἡρέμα πως ἐν ᾧ ἑαυτῷ ἐνεδοί-αζεν, ἀνακύπτει ὁ Ἀρχέλαος ὥσπερ ἰσχυρὸς οἰκοδεσπότης τῶν ἰδίων ἐπιμελούμενος καὶ μετὰ παρρησίας ἐπελθὼν τῷ συλᾶν ἐπιχειροῦντι ἐνεβριμείτο.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 89, line 9

Τὰ δὲ ἄλλα λοιπὸν τῆς φλυαρίας, ὥς ἡ παρθένος φαίνεται τοῖς ἄρ-χουσι, ποτὲ μὲν εἰς ἀνδρὸς σχῆμα, ποτὲ δὲ εἰς θηλείας, τάχα τὸν ἔρμα-φρόδιτον τοῦ αὐτοῦ δαίμονος ἰνδαλλόμενος τὰ ἑαυτοῦ πάθη εἰσηγεῖται τῆς ἐπιθυμίας.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 103, line 22

εἰ δὲ πολεμούμενον τὸ φῶς διώκεται ὑπὸ τοῦ σκότους, ἄρα δυνατώτερόν ἐστι τοῦ φωτός τὸ σκότος, ἐπεὶ δὲ ἀποδιδράσκει ἀπὸ προσώπου τοῦ σκότους καὶ οὐχ ὑφίσταται στήναι ἰνδαλλόμενον διὰ τὸ δυνατώτερον σκότος.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 297, line 29

νῦν δὲ μετὰ τὴν ἐκείνων τελευτήν, ὅτε εἰς πλάτος ἐλήλακεν ἡ αὐτῶν κακοδοξία καὶ μετὰ παρρησίας τυγχάνουσι διὰ τὴν τῆς σαρκὸς δεξιάν, [καὶ] μηκέτι ἐμποδιζόμενοι κηρύττουσι

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

σαφῶς τὸ αὐτῶν ἐπιχείρημα, οὐκέτι οὔτε αἰδοῖ τινι κατεχόμενοι οὔτε ἰνδαλλόμενοι ἀπὸ τινος προστάγματος.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 509, line 26

10. Καὶ οὗτοι μὲν οἱ ἐξ Ἑλλήνων εἰς γινῶσιν ἡμῶν ἐληλύθασιν· ἄλλοι δὲ ὅσοι κατὰ τὴν βάρβαρον καὶ Ἑλλάδα Ῥωμα<ν>ίαν τε καὶ τὰ ἄλλα κλίματα τῆς οἰκουμένης· ἐβδομήκοντα δύο μὲν ἀηδεῖς φιλοσοφίαι ἐν τῇ τῶν Ἰνδῶν ἐμφέρονται φατρία, τῶν τε γυμνοσοφιστῶν, τῶν τε Βραχ- μάνων, ἐπαινετῶν τούτων μόνων, τῶν τε Ψευδοβραχμάνων, τῶν τε νεκυο- φάγων, τῶν τε αἰσχροποιῶν, τῶν τε ἀπηληγημένων· ὧν τὸ κατ' εἶδος λέγειν καὶ τὰ παρ' αὐτῶν μυσαρὰ γινόμενα περιττὸν ἡγησάμεθα καὶ οὐδὲ<ν> ἄξιον, διὰ τὴν πολλὴν ἐν τοῖς ἀνθρώποις φθοράν, κακίας τε καὶ * ἐργασίαν.

Epiphanius Scr. Eccl., Panarion (= Adversus haereses) Volume 3, page 512, line 20

ἐτέρων δὲ πάλιν μυστηρίων πολλῶν καὶ αἵρεσιαρχῶν καὶ σχισματοποιῶν † ὧν μὲν ἀρχηγοὶ παρὰ Πέρσαις Μαγουσαῖοι, παρὰ δὲ Αἰγυπτίοις προφῆται καλούμενοι, τῶν ἀδύτων τε καὶ ἱερῶν ἀρχηγοί, καὶ μάγων Βαβυλωνίων δὲ οἱ τε καλούμενοι Γαζαρη- νοί, σοφοί τε καὶ ἐπαιδοί, Ἰνδῶν δὲ οἱ Εὐίλεοι καλούμενοι καὶ Βραχ- μᾶνες, Ἑλλήνων <δὲ> ἱεροφάνται τε καὶ νεωκόροι, Κυνικῶν πλῆθος καὶ ἄλλων ἀμυθήτων φιλοσόφων ἀρχηγοί.

Epiphanius Scr. Eccl., De xii gemmis (2021: 004) “Les lapidaires de l’antiquité et du Moyen Age, vol. 2.1”, Ed. Ruelle, C.É. Paris: Leroux, 1898. Chapter 1, section 2, line 2

Λίθος <τοπάζιον,> ἐρυθρὸς τῷ εἶδει ὑπὲρ τὸν ἀνθρακα· γίνεται δὲ ἐν Τοπάζῃ, πόλει τῆς Ἰνδίας, ὑπὸ τῶν ἐκεῖσέ ποτε λίθους λατομοῦντων, ἐν καρδίᾳ ἐτέρου λίθου ὃν οἱ λατομοῦντες θεασάμενοι φαιδρόν, καὶ ὑποδείξαντες ἀλάβαστρόν τισιν ἀπέδοντο ὀλίγου τιμήματος.

Epiphanius Scr. Eccl., De xii gemmis Chapter 1, section 3, line 12

Φεισσῶν δὲ ἐστὶν ὁ παρὰ τοῖς Ἑλλήσιν Ἰνδὸς καλούμενος, παρὰ τοῖς βαρβάροις δὲ Γάγγης.

Epiphanius Scr. Eccl., De xii gemmis Chapter 1, section 5, line 4

Καὶ οὗτος δὲ λέγεται εἶναι ἐν τῇ Ἰνδίᾳ καὶ Αἰθιοπείᾳ.

Epiphanius Scr. Eccl., De xii gemmis Chapter 1, section 5, line 4

Διὸ τὸ τέμενος παρὰ Ἰνδοῖς φασιν εἶναι τοῦ Διονύσου τῆς ἀναβαθμοῦς ἔχον ἐκ σαπφείρου λίθου, εἰ καὶ τοῖς πολλοῖς ὑπάρχει ἄπιστον.

Epiphanius Scr. Eccl., De xii gemmis (fragmenta ap. Anastasium Sinaïtam, Quaestiones et responsiones) (2021: 005); MPG 89. Volume 89, page 588, line 14

Τοπάζιον ἐρυθρὸς μὲν ἐστὶν ὑπὲρ τὸν ἀνθρακα λίθον, γίνεται δὲ ἐν Τοπάζῃ πόλει τῆς Ἰνδικῆς.

Epiphanius Scr. Eccl., De xii gemmis (fragmenta ap. Anastasium Sinaïtam, Quaestiones et responsiones) Volume 89, page 588, line 24

Σμάρρα γδος χλωρὸς μὲν ἐστὶν, ἐν δὲ τοῖς ὄρεσι τοῖς Ἰνδικοῖς ὀρύγοντες οἱ βάρβαροι, κόπτουσιν αὐτόν.

Epiphanius Scr. Eccl., De xii gemmis (fragmenta ap. Anastasium Sinaïtam, Quaestiones et responsiones) Volume 89, page 588, line 37

Σάπφειρος πορφυρίζων μὲν ἐστὶ, γίνεται δὲ ἐν Αἰθιοπία καὶ Ἰνδία.

6.40. STEPHANUS GRAMM.

Epiphanius Scr. Eccl., Index apostolorum [Sp.] (2021: 023) “Prophetarum vitae fabulosae”, Ed. Schermann, T. Leipzig: Teubner, 1907. Page 110, line 8

Βαρθολομαῖος δὲ ὁ ἀπόστολος Ἰνδοῖς τοῖς καλουμένοις Εὐδαίμοσιν ἐκήρυξε τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Χριστοῦ καὶ τὸ κατὰ Ματθαῖον ἅγιον εὐαγγέλιον αὐτοῖς τῇ ἰδίᾳ διαλέκτῳ αὐτῶν συγγράφας ἐκοιμήθη δὲ ἐν Ἀλβανίᾳ πόλει τῆς μεγάλης Ἀρμενίας καὶ ἐκεῖ ἐτάφη.

Epiphanius Scr. Eccl., Index apostolorum [Sp.] Page 111, line 4

Θωμᾶς δὲ ὁ ἀπόστολος, καθὼς ἡ παράδοσις περιέχει, ἦν μὲν ἀπὸ τῆς Πανιάδος πόλεως τῆς Γαλιλαίας, Πάρθοις δὲ καὶ Μήδοις ἐκήρυξε τὸ εὐαγγέλιον τοῦ κυρίου, καὶ Πέρσαις δὲ καὶ Γερμανοῖς καὶ Ὑρκανοῖς [καὶ Ἰνδοῖς] καὶ Βάκτροις καὶ Μάγοις, ἐκοιμήθη ἐν πόλει Καλαμηνῇ τῆς Ἰνδικῆς.

Epiphanius Scr. Eccl., Index apostolorum [Sp.] Page 115, line 17

Ἔστιν οὖν ὁ πᾶς χρόνος, ἐξ οὗ ἐμαρτύρησε τριακόσια τριάκοντα ἔτη μέχρι τῆς παρουσίας ταύτης ὑπατίας, τετάρτης μὲν Ἀρκαδίου, τρίτης δὲ Ὀνωρίου τῶν δύο ἀδελφῶν αὐτοκρατόρων Αὐγούστων, ἐνάτης Ἰνδικτίωνος τῆς πεντεκαίδεκαετηρικής περιόδου μηνὸς Ἰουνίου εἰκοστῆς ἐνάτης ἡμέρας.

Epiphanius Scr. Eccl., De mensuris et ponderibus (2021: 033) “Τὸ ‘Περὶ μέτρων καὶ σταθμῶν’ ἔργον Ἐπιφανίου τοῦ Σαλαμῖνος”, Ed. Moutsoulas, E., 1973; Θεολογία 44. Line 271

Ἀκούομεν δὲ ἔτι πολὺ πλῆθος ἐν τῷ κόσμῳ ὑπάρχειν, παρὰ τε Αἰθίοφι καὶ Ἰνδοῖς, Πέρσαις τε καὶ Ἑλαμίταις καὶ Βαβυλωνίοις, Ἀσσυρίοις τε καὶ Χαλδαίοις, παρὰ Ῥωμαίοις τε καὶ Φοίνιξι, Σύροις τε καὶ τοῖς ἐν τῇ Ἑλλάδι Ῥωμαίοις οὕτω Ῥωμαίοις καλουμένοις ἀκμὴν ἀλλὰ Λατίνοις.

6.40 Stephanus Gramm.

Double-check that Stephanus Gramm. = Stephen of Byzantium (author of *Ethnica*).

Stephen of Byzantium, also known as Stephanus Byzantinus (Greek: Στέφανος Βυζάντιος; fl. 6th century AD), was the author of an important geographical dictionary entitled *Ethnica* (Ἐθνικά). Of the dictionary itself only meagre fragments survive, but we possess an epitome compiled by one Hermolaus (From Wikipedia³⁷)

Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) (4028: 001) “Stephan von Byzanz. Ethnika”, Ed. Meineke, A. Berlin: Reimer, 1849, Repr. 1958. Page 11, line 20

<Ἀγαθοῦ δαίμονος,> νῆσος ἐν τῇ Ἰνδικῇ θαλάσῃ.

37.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 44, line 19
ἐκλήθη καὶ Μύσρα ἡ χώρα ὑπὸ Φοινίκων, καὶ Ἀερία καὶ Ποταμίτις, καὶ Ἀετία ἀπὸ τινος
Ἰνδοῦ Ἀετοῦ.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 71, line 11
τετάρτη πόλις Ὠριτῶν, ἔθνους Ἰχθυο- φάγων, κατὰ τὸν περίπλου τῆς Ἰνδικῆς.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 71, line 12
πέμπτη ἐν τῇ Ὠπιανῇ, κατὰ τὴν Ἰνδικήν.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 71, line 12
ἕκτη πάλιν Ἰνδικῆς.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 71, line 13
ἐβδόμη ἐν Ἀρίοις, ἔθνη Παρθυαίων κατὰ τὴν Ἰνδικήν.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 71, line 18
τεσσαρεσκαιδε- κάτη παρὰ Σωριανοῖς, Ἰνδικῶ ἔθνη.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 71, line 19
πεντεκαδεκάτη παρὰ τοῖς Ἀραχωτοῖς, ὁμοροῦσα τῇ Ἰνδικῇ.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 101, line 4
καὶ τρίτη Ἰνδικῆς, ἣν ἀναγράφει Φίλων καὶ Δημοδάμας ὁ Μιλήσιος.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 108, line 3
<Ἀραβις,> ποταμὸς Ἰνδικῆς, ἐν αὐτονόμῳ χώρᾳ, περὶ ὃν οἰκοῦσιν Ἀραβῖται, ὡς ὠκεανῖται.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 110, line 13
<Ἀραχωτοί,> πόλις Ἰνδικῆς, ἀπὸ Ἀραχωτοῦ ποταμοῦ, ῥέοντος ἀπὸ τοῦ Καυκάσου, ὡς
Φαβωρίνος καὶ Στράβων ἐνδε- κάτη.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 111, line 8
<Ἀρβις,> ποταμὸς τῆς Ἰνδικῆς.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 111, line 21
<Ἀργάντη,> πόλις Ἰνδίας, ὡς Ἐκαταῖος.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 112, line 1
τὸ ἐθνικὸν ἔδει Ἀργανταῖος, ἀλλὰ ὁ τύπος τῶν Ἰνδῶν ἢ Ἀργαντηνός ἢ Ἀρ- γαντίτης.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 115, line 1
<Ἀργυρᾶ,> μητρόπολις [τῆς] ἐν Ἰνδικῇ Ταπροβάνης νήσου, ὃ ἐστὶ κριθῆς νήσου· καὶ γὰρ
εὐφωρῶτάτη ἐστὶ καὶ πλεῖστον ποιεῖ χρυσόν.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 122, line 14
ἐστὶ καὶ <Ἀρ- ματα> πόλις πληθυντικῶς Ἰνδικῆς.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 133, line 4
<Ἀσκῖται,> ἔθνος παροικοῦν τὸν Ἰνδικὸν κόλπον καὶ ἐπὶ ἀσκῶν πλέον, ὡς Μαρκιανὸς ἐν τῷ
περίπλῳ αὐτοῦ “παροικεῖ αὐτὸν ἔθνος καὶ αὐτὸ καλούμενον Σαχαλιτῶν.
- Stephanus Gramm., *Ethnica* (epitome) Page 135, line 20
<Ἀσσακηνοί,> ἔθνος Ἰνδικόν.

6.40. STEPHANUS GRAMM.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 157, line 5

τὰ εἰς <δος> δισύλλαβα ἔχοντα πρὸ τοῦ <δ> ἄφωνον βαρύνεται, εἰ μὴ ἐπιθετικά εἶη· Ἰνδός ὅμοιον τῷ ποταμῷ, τὸ λордός μυνδός ὁ ἄφωνος ὀξύνεται, ἀφ' οὗ τὸ “μυνδότεροι νεπόδων” παρὰ Καλλιμάχῳ.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 164, line 21

<Βέρεξ,> ἔθνος μεταξὺ Ἰνδίας καὶ Αἰθιοπίας, ὡς Τιμο- κράτης ὁ Ἀδραμυττηνός.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 168, line 5

<Βήσσυγα,> οὐδετέρως, ἐμπόριον τῆς Ἰνδικῆς, καὶ Βησσύ- γας ποταμός, καὶ Βησσυγῖται οἱ ἄνθρωποι, οὓς φασιν ἄν- θρωποφάγους.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 175, line 12

ἔστι καὶ Ἰνδικῆς <Βουκεφάλα,> ἣν ἔκτισεν Ἀλέξανδρος “ἐπ’ ἀμ- φοτέραις ταῖς ὀχθαῖς τοῦ Ὑδάσπου ποταμοῦ πόλεις ᾤκισε, Νίκαιαν Βουκεφάλαν δὲ ἐνθα διαβάντος καὶ μαχομένου ἀπέ- θανεν αὐτοῦ ὁ ἵππος Βουκεφάλας προσαγορευόμενος”.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 179, line 2

ἔστι καὶ ἄλλη τῆς Ἰνδικῆς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 181, line 14

<Βουκεφάλεια,> πόλις ἐπὶ τῷ Βουκεφάλῳ ἵππῳ, ἣν ἔκτισεν Ἀλέξανδρος ἐν Ἰνδία παρὰ τὸν Ὑδάσπην ποταμόν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 184, line 18

<Βραχμᾶνες,> Ἰνδικὸν ἔθνος σοφώτατον, οὓς καὶ <Βράχ- μας> καλοῦσιν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 190, line 10

ἔστι καὶ Βυζάντιον ἕτερον ἐν τῇ Ἰνδικῇ.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 191, line 1

<Βωλίγγαι,> ἔθνος Ἰνδικόν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 194, line 19

<Γάζος,> πόλις Ἰνδική, κατὰ Διονύσου πολεμήσασα μετὰ Δηριάδου, λινούν ἔχουσα τεῖχος, καθὰ [Διονύσιος] ἐν τρίτῃ Βασσαρικῶν Γήρειαν Ῥοδόην τε καὶ οἱ λινοτειχέα Γάζον τοῖόν μιν κλωστοῖο λινού πέρι τεῖχος ἔργει, ἀστυφελον δῆίοισι, καὶ εἰ παγχάλκεοι εἶεν, εὖρος μὲν μάλα δὴ τι διαμπερὲς ὀργυιῆσιν μετρητὸν πισύρεσσιν, ἀτὰρ μῆκός τε καὶ ἰθὺν ὅσσον ἀνὴρ δοιοῖσιν ἐν ἡελίοισιν ἀνύσσει, ἡῶθεν κνέφας ἄκρον ἐπείγόμενος ποσὶν οἶσιν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 198, line 13

<Γανδάραι,> Ἰνδῶν ἔθνος.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 200, line 15

<Γεδρωσία> χώρα καὶ <Γεδρώσιοι> ἔθνος Ἰνδικόν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 203, line 1

<Γέντα,> πόλις Ἰνδική τῆς ἐκτὸς Γάγγου.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 207, line 13

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

<Γήρεια,> πόλις Ἰνδική, τελοῦσα ὑπὸ Δηριάδῃ τῷ βα- σιλεῖ τῶν Ἰνδῶν πρὸς Διόνυσον πολεμοῦντι.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 216, line 13

ἔστι καὶ Ἰνδικῆς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 218, line 5

<Δάονες,> ἔθνος τῆς Ἰνδικῆς, ἀπὸ Δάονος.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 218, line 8

<Δάρδαι,> Ἰνδικὸν ἔθνος ὑπὸ Δηριάδῃ πολεμῆσαν Διο- νύσῳ, ὡς Διονύσιος ἐν γ' Βασσαρι- κῶν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 219, line 14

<Δαρσανία,> πόλις Ἰνδική, ἐν ἣ αὐθημερὸν ἱμάτιον ἱστουργοῦσι γυναῖκες, ὡς Διονύσιος Βασσαρικῶν τρίτῃ ἢ οἱ Δαρσανῖν ναῖον πόλιν εὐρυάγειαν, ἐνθα τε πέπλα γυναῖκες Ἀθηναίης ἰότητι αὐτῆμαρ κροκόωσιν ἐφ' ἱστοπόδων τανύουσαι, αὐτῆμαρ δ' ἐτάμοντο [καὶ ἐξ ἱστῶν] ἐρύσαντο.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 233, line 8

γ' τῆς Ἰνδικῆς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 242, line 8

<Δυρβαῖοι,> ἔθνος καθήκον εἰς Βάκτρον καὶ τὴν Ἰνδι- κήν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 242, line 10

Κτησίας ἐν Περσικῶν ι' "χώρῃ δὲ πρὸς αὐτὸν πρόσκει- ται Δυρβαῖοι, πρὸς τὴν Βακτρίην καὶ Ἰνδικὴν κατατείνοντες.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 259, line 1

<Ἐαρες,> ἔθνος Ἰνδικὸν τῶν μετὰ Δηριάδου Διονύσῳ πολεμησάντων.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 293, line 5

<Ζάβριοι,> ἔθνος Ἰνδικόν, πολεμῆσαν μετὰ Δηριάδου Διονύσῳ.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 303, line 19

ἰα' μεταξὺ Σκυθίας καὶ Ἰνδικῆς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 332, line 7

καὶ διὰ τοῦ <ι> Ἰνάχιον, καὶ Ἰναχίτης καὶ Ἰναχιεύς. <Ἰνδάρρα,> Σικανῶν πόλις.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 332, line 8

τὸ ἔθνικόν Ἰν- δαραῖος ὡς Ἰμεραῖος.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 332, line 10

τὸ ἔθνικόν Ἰνδικῆται.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 332, line 11

<Ἰνδός,> ποταμός, ἀφ' οὗ Ἰνδοί, ἀφ' οὗ Ἰνδικός καὶ Ἰνδική "καὶ Ἰνδικὸν οἶμα θαλάσσης".

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 332, line 12

λέγεται καὶ Ἰνδῶος.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 346, line 13

6.40. STEPHANUS GRAMM.

<Κάθαια,> πόλις Ἰνδική.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 347, line 24

<Καλατίαι,> γένος Ἰνδικόν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 360, line 3

<Καρμανία,> χώρα τῆς Ἰνδικῆς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 360, line 10

<Κάρμυνα,> νῆσος Ἰνδική.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 364, line 10

<Κάσπειρος,> πόλις Πάρθων προσεχῆς τῇ Ἰνδικῇ.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 364, line 15

καὶ πάλιν Κοσσαῖος γενεὴν Κασπειρόθεν, οἱ ῥά τε πάντων Ἰνδῶν ὅσοι ἔασιν ἀφάρτερα γούνατ' ἔχουσιν· ὅσον γάρ τ' ἐν ὄρεσιν ἀριστεύουσι λέοντες, ἢ ὅποσον δελφῖνες ἔσω ἀλὸς ἡχήεσσης, αἰετὸς εἰν ὄρνισι μεταπρέπει ἀγρομένοισιν, ἵπποι τε πλακόμεντος ἔσω πεδίῳοι θέοντες, τόσον ἐλαφρότατοισι περιπροφέρουσι πόδεσσιν Κάσπειροι μετὰ Φῦλα τὰ τ' ἀφθιτος ἔλλαχεν ἡώς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 365, line 19

<Κασσίτερα,> νῆσος ἐν τῷ ὠκεανῷ, τῇ Ἰνδικῇ προσεχῆς, ὡς Διονύσιος ἐν Βασσαρικοῖς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 430, line 9

<Μαλοί,> ἔθνος Ἰνδικόν, τῶν ἀνθεστηκότων τῷ Διονύσῳ μετὰ Δηριάδου, ὡς Διονύσιος Βασσαρικῶν γ'.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 432, line 9

<Μαράχη,> πόλις Ἰνδική.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 432, line 13

<Μάργανα,> πόλις τῆς Ἰνδικῆς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 436, line 4

<Μάσσακα,> πόλις Ἰνδῶν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 436, line 4

Ἀρριανὸς ἐν Ἰνδικοῖς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 466, line 16

<Μωριεῖς,> ἔθνος Ἰνδικόν, ἐν ξυλίνοις οἰκοῦντες οἴκοις, ὡς Εὐφορίων.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 474, line 20

τετάρτη ἐν Ἰνδοῖς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 479, line 9

ἐβδόμη ἐν Ἰνδοῖς.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 494, line 1

<Ὁξυδράκαι,> ἔθνος Ἰνδικόν, ἀφ' ὧν σώσας Ἀλέξανδρον Πτολεμαῖος σωτὴρ ἐκλήθη.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 494, line 14

<Ὀρβῖται,> ἔθνος Ἰνδικόν, ὡς Ἀπολλόδωρος δευτέρῳ, περὶ Ἀλεξάνδρειαν.

Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 497, line 6

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

- <Παλίμβοθρα,> πόλις Ἰνδική.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 499, line 4
<Παναίουρα,> πόλις Ἰνδική περὶ τὸν Ἰνδὸν ποταμόν.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 499, line 15
<Πάνδαι,> ἔθνος [Ἰνδικὸν κατὰ] Διονύσου μετὰ Δηριάδου στρατευσάμενον, καθὰ Διονύ-
σιος.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 507, line 1
<Παροπάνισσος,> πόλις ὅρος Ἰνδικῆς, ἀφ' οὗ Παροπα- νισσάδαι οἱ παροικοῦντες.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 510, line 11
<Πάταλα,> πόλις Ἰνδική.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 534, line 18
<Πράσιοι,> ἔθνος Ἰνδικὸν Διονύσῳ πολεμῆσαν.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 546, line 8
<Ροδόη,> πόλις Ἰνδική.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 548, line 8
<Ρωγάνη,> πόλις ἐν τῇ Ἰνδικῇ.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 550, line 11
ἔστι δὲ καὶ ἕτερον ἔθνος Ἰνδικόν.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 554, line 15
<Σάνεια,> πόλις Ἰνδική, ὡς Ἀδριανὸς Ἀλεξανδριάδος ἐβ- δόμῳ.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 556, line 5
<Σάραπιδες,> νῆσος ἐν τῇ Ἰνδικῇ κόλπῳ.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 558, line 12
<Σαυρομάται,> ἔθνος Ἰνδικόν.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 562, line 3
<Σεσίνδιον,> πόλις Ἰνδική.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 562, line 20
<Σῆρες,> ἔθνος Ἰνδικόν, ἀπροσμιγῆς ἀνθρώποις, ὡς Οὐ- ράνιος ἐν τρίτῳ Ἀραβικῶν.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 563, line 12
<Σίβαι,> Ἰνδικὸν ἔθνος, ἅμα Δηριάδῃ μαχεσάμενον Διο- νύσῳ, καθὰ φησι Διονύσιος.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 569, line 25
<Σίνδα,> πόλις πρὸς τῷ μεγάλῳ κόλπῳ τῆς Ἰνδικῆς, ἐν-θεν οἱ καλούμενοι Σίνδαι.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 596, line 19
<Σώλιμνα,> πόλις Ἰνδίας, ὡς Ἡρωδιανὸς ἐν ἐνδεκάτῳ.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 602, line 8
<Τάξιλα,> πόλις Ἰνδική.
Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 602, line 16
<Ταπροβάνη,> νῆσος μεγίστη ἐν τῇ Ἰνδικῇ θαλάσσει.

6.41. SCHOLIA IN DEMOSTHENEM

- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 624, line 12
καὶ ποταμὸς Ἰνδός.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 628, line 16
<Τόπαζος,> νῆσος Ἰνδική.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 643, line 7
ἐστὶ καὶ πόλις Ἰνδίας καὶ Λυδίας καὶ Πισιδίας.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 645, line 9
<Ἰδάρκαι,> ἔθνος Ἰνδικὸν ἀντιταξάμενον Διονύσῳ, ὡς Διονύσιος Βασσαρικῶν τρίτῳ.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 677, line 11
<Χαδραμωτῖται,> ἔθνος περὶ τὸν Ἰνδικὸν κόλπον, τῷ Πρίονι παροικοῦντες ποταμῷ, ὡς φησι Μαρκιανὸς ἐν τῷ περίπλῳ αὐτοῦ.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 697, line 10
ἐστὶ καὶ ἄλλη χερσὶν ῥόνησος τῆς Ἰνδικῆς, Μαρκιανὸς ἐν περίπλῳ “ἐν δὲ τῇ ἐκτὸς Γάγγου Ἰνδικῇ χρυσὴ καλουμένη χερρὸν ῥόνησος”.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 708, line 15
<Ὠπίαι,> ἔθνος Ἰνδικόν.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 708, line 16
Ἐκαταῖος Ἀσία “ἐν δὲ αὐτοῖσι οἰκεῖν ἀνθρώποι παρὰ τὸν Ἰνδὸν ποταμὸν Ὠπίαι, ἐν δὲ τεῖχος βασιλῆιον.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 708, line 18
μέχρι τούτου Ὠπίαι, ἀπὸ δὲ τούτων ἐρημὴ μέχρις Ἰνδῶν”.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 710, line 9
<Ὠρίται,> ἔθνος Ἰνδῶν αὐτόνομον.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 710, line 10
Στράβων πεντεκαίδε-κάτῃ “τῷ ὀρίζοντι αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ἐξῆς Ὠριτῶν· Ἰνδῶν δὲ ἐστὶ καὶ αὕτη μερίς, ἔθνος αὐτόνομον”.
- Stephanus Gramm., Ethnica (epitome) Page 710, line 13
καὶ Ἀπολλῶνιος δευτέρῳ “ἔπειτα δ’ Ὠρίτας τε καὶ Γεδρωσίους, ὧν τοὺς μὲν Ἰνδοὺς ὡς ἐνοικοῦντας πέτραις .

6.41 Scholia In Demosthenem

The Demosthenes Scholia

Malcolm Heath (Contributor Webpage)

DOI:10.1093/acprof:oso/9780199259205.003.0005

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

This chapter presents a source-critical analysis of the scholia (explanatory notes) found in the medieval manuscripts of Demosthenes. These scholia are based on remnants of commentaries composed in late antiquity. It is shown that the scholia have been transmitted in three main strands of tradition. A lightly redacted version of Menander's commentary is the sole source of one strand. In the other two strands, material derived from Menander has been combined with material from other commentators: one of these commentators was probably Zosimus (fifth century AD), the other is unidentified. Some material, which is identified as Menander's, is attributed to Ulpian in manuscript superscriptions. The identity of this Ulpian and the nature of his contribution to the formation of the scholia is unknown. (From Wikipedia³⁸)

Scholia In Demosthenem, Scholia in Demosthenem (scholia vetera) (fort. auctore Ulpiano) (5017: 001) "Scholia Demosthenica, 2 vols.", Ed. Dilts, M.R. Leipzig: Teubner, 1:1983; 2:1986. Oration 17, section 2, line 43

ὅτι δὲ οὐ διὰ γῆρας οὐδὲ δι' ἀπονίαν λόγου τοῦτο συμβέβηκεν, εὐδὴλον ἐκ τοῦ περὶ στεφάνου λόγου, ὃς πολὺ μεταγενέστερός ἐστι ταύτης τῆς δημηγορίας· ὁ μὲν γὰρ εἴρηται ἐν ἀρχῇ τῆς Ἀλεξάνδρου καταστάσεως, ὁ δὲ περὶ τοῦ στεφάνου λόγος Ἀλεξάνδρου ὄντος ἐν Ἰνδοῖς ἢ Πέρσαις.

6.42 Joannes Chrysostomus

John Chrysostom (c. 347–407, Greek: Ἰωάννης ὁ Χρυσόστομος), Archbishop of Constantinople, was an important Early Church Father. He is known for his eloquence in preaching and public speaking, his denunciation of abuse of authority by both ecclesiastical and political leaders, the Divine Liturgy of St. John Chrysostom, and his ascetic sensibilities. After his death in 407 (or, according to some sources, during his life) he was given the Greek epithet chrysostomos, meaning "golden mouthed" in English, and Anglicized to Chrysostom.[2][5] (From Wikipedia³⁹)

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., De incomprehensibili dei natura (= Contra Anomoeos, homiliae 1–5) (2062: 012) "Jean Chrysostome. Sur l'incompréhensibilité de

38. <http://www.oxfordscholarship.com/view/10.1093/acprof:oso/9780199259205.001.0001/acprof-9780199259205-chapter-5>

39. http://en.wikipedia.org/wiki/Joannes_Chrysostomus

6.42. JOANNES CHRYSOSTOMUS

Dieu”, Ed. Malingrey, A.–M. Paris: Cerf, 1970; Sources chrétiennes 28 bis. Homily 2, line 263

Μὴ ἀπλῶς παρέλθῃς τὸν λόγον, ἀλλ’ ἀνάπτουξον τὸ εἰρημένον καλῶς καὶ ἐξέτασον· ἀνα-
λόγισαι πάντα τὰ ἔθνη, Σύρους, Κίλικας, Καππαδόκας, Βιθυνούς, τοὺς τὸν Εὐξείνιον πόντον
οἰκοῦντας, Θράκην, Μακεδονίαν, τὴν Ἑλλάδα πᾶσαν, τοὺς ἐν ταῖς νήσοις, τοὺς ἐν τῇ Ἰταλίᾳ,
τοὺς ὑπὲρ τὴν καθ’ ἡμᾶς οἰκουμένην, τοὺς ἐν ταῖς νήσοις ταῖς Βρεττανικαῖς, Σαν- ρομάτας,
Ἰνδοὺς, τοὺς τὴν τῶν Περσῶν οἰκοῦντας γῆν, τὰ ἄλλα τὰ ἄπειρα γένη καὶ φῦλα ὧν οὐδὲ τὰ
ὀνόματα ἴσμεν· ἀλλὰ πάντα ταῦτα τὰ ἔθνη «.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Ad populum Antiochenum (homiliae 1–21) (2062: 024); MPG 49. Vol 49, pg 106, ln 8

Εἰ μὲν γὰρ διὰ βιβλίων ἐπαίδευσεν καὶ διὰ γραμμάτων, ὁ μὲν εἰδὼς γράμματα ἔμαθεν
ἂν τὰ ἐγγε- γραμμένα, ὁ δὲ οὐκ εἰδὼς ἀπῆλθεν ἂν μηδὲν ἐκείθεν ὠφεληθεὶς, εἰ μή τις ἐνήγαγεν
ἕτερος· καὶ ὁ μὲν εὐπο- ρος ἐπρίατο ἂν τὸ βιβλίον, ὁ δὲ πένης οὐκ ἂν ἴσχυσε κτήσασθαι· πάλιν
ὁ μὲν τὴν φωνὴν ἐκείνην εἰδὼς τὴν διὰ τῶν γραμμάτων σημαινομένην ἔγνω ἂν τὰ ἐγ- κείμενα,
ὁ δὲ Σκύθης, καὶ ὁ βάρβαρος, καὶ ὁ Ἰνδός, καὶ ὁ Αἰγύπτιος, καὶ πάντες οἱ τῆς γλώττης
ἐκείνης ἀπεστε- ρημένοι ἀπῆλθον ἂν μηδὲν μαθόντες· ἐπὶ δὲ τοῦ οὐ- ρανοῦ οὐκ ἔστι τοῦτο
εἰπεῖν, ἀλλὰ καὶ Σκύθης, καὶ βάρ- βαρος, καὶ Ἰνδός, καὶ Αἰγύπτιος, καὶ πᾶς ἄνθρωπος ἐπὶ
τῆς γῆς βαδίζων ταύτης ἀκούσεται τῆς φωνῆς· οὐ γὰρ δι’ ὧτων, ἀλλὰ καὶ δι’ ὀφθαλμοῦ εἰς τὴν
διάνοιαν ἐμπί- πτει τὴν ἡμετέραν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Ad populum Antiochenum (homiliae 1–21) Vol 49, pg 106, ln 12

γραμμένα, ὁ δὲ οὐκ εἰδὼς ἀπῆλθεν ἂν μηδὲν ἐκείθεν ὠφεληθεὶς, εἰ μή τις ἐνήγαγεν ἕτερος·
καὶ ὁ μὲν εὐπο- ρος ἐπρίατο ἂν τὸ βιβλίον, ὁ δὲ πένης οὐκ ἂν ἴσχυσε κτήσασθαι· πάλιν ὁ μὲν
τὴν φωνὴν ἐκείνην εἰδὼς τὴν διὰ τῶν γραμμάτων σημαινομένην ἔγνω ἂν τὰ ἐγ- κείμενα, ὁ δὲ
Σκύθης, καὶ ὁ βάρβαρος, καὶ ὁ Ἰνδός, καὶ ὁ Αἰγύπτιος, καὶ πάντες οἱ τῆς γλώττης ἐκείνης
ἀπεστε- ρημένοι ἀπῆλθον ἂν μηδὲν μαθόντες· ἐπὶ δὲ τοῦ οὐ- ρανοῦ οὐκ ἔστι τοῦτο εἰπεῖν,
ἀλλὰ καὶ Σκύθης, καὶ βάρ- βαρος, καὶ Ἰνδός, καὶ Αἰγύπτιος, καὶ πᾶς ἄνθρωπος ἐπὶ τῆς γῆς
βαδίζων ταύτης ἀκούσεται τῆς φωνῆς· οὐ γὰρ δι’ ὧτων, ἀλλὰ καὶ δι’ ὀφθαλμοῦ εἰς τὴν διάνοιαν
ἐμπί- πτει τὴν ἡμετέραν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Ad populum Antiochenum (homiliae 1–21) Vol 49, pg 165, ln 41

Ἰδοὺ γοῦν ἐξ ἐκεί- νου μέχρι νῦν πόσος διαγέγονε χρόνος, καὶ λαμπρότε- ρον τὸ ὄνομα τοῦ
δεσμίου γέγονε τούτου· καὶ ὑπατοὶ μὲν ἅπαντες, ὅσοι γεγονάσιν ἐν τοῖς ἔμπροσθεν χρόνοις, σε-
σίγηται καὶ οὐδὲ ἐκ προσηγορίας εἰσὶ γνώριμοι τοῖς πολλοῖς· τὸ δὲ τοῦ δεσμίου τούτου ὄνομα
τοῦ μακαρίου Παύλου πολὺ μὲν ἐνταῦθα, πολὺ δὲ ἐν τῇ βαρβάρων χώ- ρα, πολὺ δὲ παρὰ
Σκύθαις καὶ Ἰνδοῖς, καὶ πρὸς αὐτὰ τῆς οἰκουμένης ἔλθῃς τὰ πέρατα, ταύτης ἀκούσῃ τῆς
προσηγορίας, καὶ ὅπου περ ἂν τις ἀφίκηται, Παῦλον παν- ταχοῦ ἐν τοῖς ἀπάντων στόμασι
περιφερόμενον εἶσεται.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., De sancta pentecoste (homiliae 1–2) (2062: 037); MPG 50. Vol 50, pg 459, ln 19

Ὁ βαπτιζόμενος εὐθέως ἐφθέγγετο τῇ τῶν Ἰνδῶν φωνῇ, τῇ τῶν Αἰγυπτίων, τῇ τῶν Περσῶν, τῇ τῶν Σκυθῶν, τῇ τῶν Θρακῶν, καὶ εἰς ἄνθρωπος πολλὰς ἐλάμβανε γλώσσας, καὶ οὗτοι οἱ νῦν εἰ ἦσαν τότε βαπτισθέντες, εὐθέως ἂν ἤκουσας αὐτῶν διαφόροις φθεγγομένων φωναῖς.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In principium Actorum (homiliae 1–4) (2062: 064); MPG 51. Vol 51, pg 87, ln 45

Καὶ ὅτι πανταχοῦ τῆς οἰκουμένης τὰς Γραφὰς ἠπλώσεν, ἄκουσον τοῦ προφήτου λέγοντος· Εἰς πᾶσαν τὴν γῆν ἐξῆλθεν ὁ φθόγγος αὐτῶν, καὶ εἰς τὰ πέρατα τῆς οἰκουμένης τὰ ῥήματα αὐτῶν. Κὰν πρὸς Ἰνδοὺς ἀπέλθης, οὓς πρῶτους ἀνίσχων ὁ ἥλιος ὄρᾳ, κὰν εἰς τὸν ὠκεανὸν ἀπέλθης, κὰν πρὸς τὰς Βρεταννικὰς νήσους ἐκείνας, κὰν εἰς τὸν Εὐξείνιον πλεύσης πόντον, κὰν πρὸς τὰ νότια ἀπέλθης μέρη, πάντων ἀκούσῃ πανταχοῦ τὰ ἀπὸ τῆς Γραφῆς φιλοσοφούντων, φωνῇ μὲν ἑτέρα, πίστει δὲ οὐχ ἑτέρα, καὶ γλώσσῃ μὲν διαφόρῳ, διανοίᾳ δὲ συμφώνῳ.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In principium Actorum (homiliae 1–4) Vol 51, pg 88, ln 28

Οὐ γὰρ τὸν Τίγρητα, οὐδὲ τὸν Εὐφράτην, οὐδὲ τὸν Αἰγύπτιον Νεῖλον, οὐδὲ τὸν Ἰνδὸν Γάγγην, ἀλλὰ μυρίους ἀφίησι ποταμοὺς αὕτη ἡ πηγὴ.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In principium Actorum (homiliae 1–4) Vol 51, pg 92, ln 47

Ἐπειδὴ γὰρ ἔτι ἀσθενέστερον δέκνυντο οἱ τότε, καὶ τὰ νοητὰ χαρίσματα ὄραν οὐκ ἠδύναντο τοῖς ὀφθαλμοῖς τῆς σαρκὸς, ἐδίδοτο αἰσθητὸν χάρισμα, ὥστε τὸ νοητὸν γενέσθαι καταφανές· καὶ ὁ βαπτισθεὶς εὐθέως καὶ τῇ ἡμετέρᾳ γλώσσῃ, καὶ τῇ τῶν Περσῶν, καὶ τῇ τῶν Ἰνδῶν, καὶ τῇ τῶν Σκυθῶν ἐφθέγγετο, ὥστε μαθεῖν καὶ τοὺς ἀπίστους, ὅτι Πνεύματος ἁγίου ἠξίωτο.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Ad eos qui scandalizati sunt (2062: 087) “Jean Chrysostome. Sur la providence de Dieu”, Ed. Malingray, A.–M. Paris: Cerf, 1961; Sources chrétiennes 79. Chapter 22, section 9, line 6

Ἐκαστος γὰρ τὸ Εὐαγγέλιον ἀναγινώσκων τοῦτο, λέγει· «Οὐκ ἔξεστὶ σοὶ ἔχειν τὴν γυναῖκα Φιλίππου τοῦ ἀδελφοῦ σου»· καὶ τοῦ Εὐαγγελίου χωρὶς ἐν λόγοις καὶ συνουσίαις, ταῖς οἰκοῖς, ταῖς ἐν ἀγορᾷ, ταῖς ἀπανταχοῦ, κὰν εἰς τὴν Περσῶν χώραν ἀπέλθης, κὰν εἰς τὴν Ἰνδῶν, κὰν εἰς τὴν Μαύρων, κὰν ὅσῃ ἥλιος ἐφορᾷ γῆν καὶ πρὸς αὐτὰς τὰς ἐσχατίας, ταύτης ἀκούσης τῆς φωνῆς καὶ ὅψῃ τὸν δίκαιον ἐκείνον ἔτι καὶ νῦν βοῶντα, ἐνηχοῦντα καὶ τὴν κακίαν ἐλέγχοντα τοῦ τυράννου καὶ οὐδέποτε σιγῶντα, οὐδὲ τῷ πλήθει τοῦ χρόνου τὸν ἐλεγχον ματαιούμενον.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., De Chananaea [Dub.] (2062: 101); MPG 52. Vol 52, pg 453, ln 48

ἡ δὲ οἰκουμένη πᾶσα ἔρημος, Σκύθαι, Θραῖκες, Ἰνδοί, Μαῦροι, Κίλικες, Καππάδοκες, Σύροι, Φοίνικες, ὅσῃ ὁ ἥλιος ἐφορᾷ γῆν;

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., De Chananaea [Dub.] Vol 52, pg 460, ln 2

6.42. JOANNES CHRYSOSTOMUS

Ὅπου ἐὰν ἀπέλθῃς, ἀκούεις τοῦ Χριστοῦ λέγοντος, Ὡ γύναι, μεγάλη σου ἡ πίστις. Εἰσελθε εἰς Περσῶν τὴν ἐκκλησίαν, καὶ ἀκούσεις τοῦ Χριστοῦ λέγοντος, Ὡ γύναι, μεγάλη σου ἡ πίστις· εἰς τὴν Γότθων, εἰς τὴν βαρβάρων, εἰς τὴν Ἰνδῶν, εἰς τὴν Μαύρων, ὅσῃ ἡλὶος ἐφορᾷ γῆν· ἕνα λόγον ὁ Χριστὸς ἐφθέγγετο, καὶ οὐ σιωπᾷ ὁ λόγος, ἀλλὰ μεγάλη τῇ φωνῇ ἀνακηρύττει τὴν πίστιν αὐτῆς, λέ- γων, Ὡ γύναι, μεγάλη σου ἡ πίστις· γεννηθήτω σοι ὡς θέλεις. Οὐκ εἶπε, Θεραπευθήτω τὸ θυγάτριόν σου· ἀλλ', Ὡς θέλεις. Σὺ αὐτὴν θεράπευσον· σὺ γενοῦ ἰατρός· σοὶ ἐγχειρίζω τὸ φάρμακον· ὕπαγε, ἐπίθες, Γεννηθήτω σοι ὡς θέλεις. Τὸ θέλημά σου θεραπευσάτω αὐτήν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In pentecosten (sermo 1) [Sp.] (2062: 107); MPG 52. Vol 52, pg 808, ln 12

Ὅπου δ' ἂν ἀπέλθῃς, εἰς Ἰνδοὺς, εἰς Μαυ- ροὺς, εἰς Βρετανοὺς, εἰς τὴν οἰκουμένην, εὐρήσεις, Ἐν ἀρχῇ ἦν ὁ Λόγος, καὶ βίον ἐνάρετον.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In Genesim (homiliae 1–67) (2062: 112); MPG 53:21–385; 54:385–580. Vol 53, pg 258, ln 21

Κὰν πρὸς Ἰνδοὺς γὰρ ἀπέλθῃς, κὰν πρὸς Σκύθας, κὰν πρὸς αὐτὰ τὰ πέρατα τῆς οἰκου- μένης, κὰν εἰς αὐτὸν τὸν ὠκεανὸν, πανταχοῦ εὐρήσεις τοῦ Χριστοῦ τὴν διδασκα- λίαν καταυ- γάζουσιν τὰς ἀπάντων ψυχὰς.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., De Anna (sermones 1–5) (2062: 114); MPG 54. Vol 54, pg 664, ln 8

Βασιλεῖς μὲν γὰρ καὶ στρατηγοὶ καὶ δυνάσται, πολλὰ πραγματευσάμενοι πολλάκις, ὥστε αὐτῶν ἄλλῃ- στον γενέσθαι τὴν μνήμην, καὶ τάφους λαμπροὺς οἰκο- δομησάμενοι, καὶ ἀνδριάντας ἀναστήσαντες, καὶ εἰκό- νας πολλὰς πολλαχοῦ, καὶ κατορθωμάτων ὑπομνήματα μυρία καταλιπόντες, σεσίγηται, καὶ οὐδὲ ἀπὸ ψιλῆς προσηγορίας εἰσὶ τινι γνώριμοι· αὕτη δὲ ἡ γυνὴ παν- ταχοῦ τῆς οἰκουμένης ἄδεται νῦν· κὰν εἰς Σκυθίαν ἀπέλθῃς, κὰν εἰς Αἴγυπτον, κὰν εἰς Ἰνδοὺς, κὰν εἰς αὐτὰ τὰ πέρατα τῆς οἰκουμένης, πάντων ἀκούσῃ τὰ κατορθώματα τῆς γυναικὸς ταύτης ἁδόντων, καὶ πᾶ- σαν ἀπλῶς, ὅσῃ ἡλὶος ἐφορᾷ γῆν, ἡ δόξα τῆς Ἄννης καταλαμβάνει.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Homilia de capto Eutropio [Dub.] (2062: 142); MPG 52. Vol 52, pg 409, ln 19

Πρὸς Θραῖκας, πρὸς Σκύθας, πρὸς Ἰνδοὺς, πρὸς Μαύ- ρους, πρὸς Σαρδονίους, πρὸς Γοτθοὺς, πρὸς θηρία ἄγρια, καὶ μετέβαλε πάντα.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Expositiones in Psalmos (2062: 143); MPG 55. Vol 55, pg 58, ln 4

Οὐ γὰρ οὕτω Σκύθαι, οὐδὲ Θραῖκες, οὐ Σαυρομά- ται, καὶ Ἰνδοί, καὶ Μαῦροι, καὶ ὅσα ἄγρια ἔθνη πολε- μεῖν εἰώθασιν, ὡς λογισμὸς ἀτοπώτατος ἐνδομυχῶν τῇ ψυχῇ, καὶ ἐπιθυμία ἀκόλαστος, καὶ χρημάτων ἔρω, καὶ δυναστείας πόθος, καὶ τῶν βιωτικῶν πραγμάτων ἡ προσπάθεια.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Expositiones in Psalmos Vol 55, pg 203, ln 7

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Ὁ Ῥω-μαίων βασιλεὺς οὐκ ἂν δύναίτο νομοθετεῖν Πέρσαις, οὐδὲ ὁ Περσῶν Ῥωμαίοις· οἱ δὲ Παλαιστῖνοι οὗτοι καὶ Πέρσαις, καὶ Ῥωμαίοις, καὶ Θραῖ, καὶ Σκύ-θαις, καὶ Ἰνδοῖς, καὶ Μαύροις, καὶ πάσῃ τῇ οἴκου-μένη νόμους ἔθηκαν· καὶ οὐχὶ ζώντων αὐτῶν ἐκρά-τησαν μόνον, ἀλλὰ καὶ τελευτησάντων· καὶ μυριά-κις ἂν ἔλοιντο οἱ νομοθετηθέντες τὴν ψυχὴν ἀφεῖναι, ἢ τῶν νόμων ἀποστῆναι ἐκείνων.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Expositiones in Psalmos Vol 55, pg 390, ln 16

Ἐφη γάρ, Ἐν ταῖς θαλάσσαις καὶ ἐν πάσαις ταῖς ἀβύσσοις. Ἡ τε γὰρ Κασπία, ἡ τε Ἰνδική, ἡ τε Ἐρυθρὰ διηρημένοι σχεδὸν ταύ-της εἰσὶ, καὶ ἔξωθεν περικείμενος ὁ Ὠκεανός.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Expositiones in Psalmos Vol 55, pg 467, ln 57

μένων καὶ περὶ ἡμᾶς, τροπὰς ἐτησίους, ἡμέρας, παραδείσους, λειμῶνας, ἄνθη ποικίλα, ὕδωρ πότιμον καὶ γλυκὺ, καὶ τὸ ἐκ τῶν ὑετῶν χρήσιμον, τῆς γῆς τὰς ὠδῖνας, τοὺς ποικίλους καρπούς, τὰ δένδρα τὰ διάφορα, τοὺς ἀνέμους τοὺς προσηνεῖς, τὴν ἡλιακὴν ἀκτῖνα, τὴν σεληνιαίαν λαμπάδα, τὸν ποικίλον τῶν ἄστρων χορὸν, τὸ προσηνές τῆς νυκτός· καὶ ἐπὶ τῶν ἀλόγων, πρόβατα, καὶ βοῦς, καὶ αἶγας· καὶ ἐπὶ τῶν ἀγρίων, δορκάδας, καὶ ἐλάφους, λαγωούς, καὶ ἕτερα πλείονα· καὶ ἐπὶ τῶν πετεινῶν, τοὺς ὄρνιθας τοὺς Ἰνδικούς· καὶ ἐν τοῖς ἔργοις αὐτοῖς ἴδοι τις ἂν οὐ κολάζοντα μόνον, ἀλλὰ καὶ εὐεργετοῦντα πολλῶ πλεῖον ἢ κολάζοντα.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In illud Isaiæ: Ego dominus deus feci lumen (2062: 148); MPG 56. Vol 56, pg 143, ln 53

Οἷόν τι λέγω, Ἑλλάδι διαλεγόμενῳ μοι γλώττη, ἂν τοίνυν τὴν φωνὴν εἶδῃ τις, ἐκεῖνος ἀκούσεται μου· ὁ δὲ Σκύθης, καὶ ὁ Θραῖ, καὶ ὁ Μαῦ-ρος, καὶ ὁ Ἰνδὸς οὐκέτι· ἡ γὰρ διαφορὰ τῆς γλώττης οὐκ ἀφίησιν εὐσημον αὐτῶ γενέσθαι τὴν ἐμὴν διά-λέξιν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In illud Isaiæ: Ego dominus deus feci lumen Vol 56, pg 144, ln 18

Οὐ γὰρ ἐστὶ λαλιά, φησί, τουτέστιν, οὐκ ἐστὶν ἔθνος, οὐκ ἐστὶ φωνή, ἔνθα μὴ ἀκούεται ἡ φωνὴ τοῦ οὐρανοῦ· ἀλλὰ καὶ ὁ Σκύθης, καὶ ὁ Θραῖ, καὶ ὁ Μαῦρος, καὶ ὁ Ἰνδός, καὶ ὁ Σαυρομάτης, καὶ πᾶσα λαλιά, καὶ πᾶσα γλώττα, καὶ πᾶν ἔθνος δυνήσεται ταύτης ὑπακούειν τῆς φωνῆς.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In illud Isaiæ: Ego dominus deus feci lumen Vol 56, pg 144, ln 39

Ἐπειδὴ γὰρ οὐκ ἐστὶν ἀκοὴ ταῦτα μαθεῖν, ἀλλ' ὄφει καὶ θεωρία, ὅψις δὲ πᾶσι μία, εἰ καὶ ἡ γλώττα διάφορος, καὶ Βάρβαρος, καὶ Σκύθαι, καὶ Θραῖκες, καὶ Μαῦροι, καὶ Ἰνδοὶ ταύτης ἀκούουσι τῆς φωνῆς, τουτέστι, τὸ θαῦμα βλέποντες, τὸ κάλλος ἐκπληττόμενοι, τὴν φαιδρότητα, τὸ μέγε-θος, τὰ ἄλλα ἅπαντα τὰ πρὸς τὸν οὐρανόν, δόξαν ἀνα-φέρουσι τῷ Δημιουργῷ οἱ καλῶς φρονοῦντες.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., De prophetiarum obscuritate (homiliae 1–2) (2062: 150); MPG 56. Vol 56, pg 179, ln 24

Οὐκ ἦν ἑτερόγλωσσος ἀπ' ἀρχῆς, οὐκ ἦν ἑτερόφωνος, οὐκ ἦν Ἰνδός, οὔτε Θραῖ, οὔτε Σκύθης, ἀλλὰ πάντες μιᾷ διελέγοντο γλώσση.

6.42. JOANNES CHRYSOSTOMUS

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In Matthaeum (homiliae 1–90) (2062: 152); MPG 57:13–472; 58:471–794. Vol 58, pg 725, ln 53

καὶ στρατηγῶν ἀνδραγαθήματα, ὧν καὶ τὰ ὑπομνήματα μένει, σεσίγηται· καὶ πόλεις ἀναστήσαντες, καὶ τείχη περιβαλόντες, καὶ πολέμους νικήσαντες, καὶ τρόπαια στήσαντες, καὶ ἔθνη πολλὰ δουλωσάμενοι, οὐδὲ ἐξ ἀκοῆς, οὐδὲ ἐξ ὀνόματός εἰσι γνώριμοι, καίτοι καὶ ἀνδριάντας ἀναστήσαντες καὶ νόμους θέντες· ὅτι δὲ πόρνη γυνὴ ἔλαιον ἐξέχεεν ἐν οἰκίᾳ λεπροῦ τινος, δέκα ἀνδρῶν παρόντων, τοῦτο πάντες ᾄδουσι κατὰ τὴν οἰκουμένην, καὶ χρόνος τοσοῦτος διῆλθε, καὶ ἡ μνήμη τοῦ γενομέ- νου οὐκ ἐμαράνθη· ἀλλὰ καὶ Πέρσαι, καὶ Ἰνδοί, καὶ Σκύθαι, καὶ Θράκες, καὶ Σαυρομάται, καὶ τὸ Μαύρων γένος, καὶ οἱ τὰς Βρεττανικὰς νήσους οἰκοῦντες τὸ ἐν Ἰουδαίᾳ γενόμενον λάθρα ἐν οἰκίᾳ παρὰ γυναικὸς πεπορνευμένης περιφέρουσι.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In Joannem (homiliae 1–88) (2062: 153); MPG 59. Vol 59, pg 32, ln 20

Ἀλλ' οὐ τὰ τοῦ ιδιώτου καὶ ἀγγραμμάτου οὕτως· ἀλλὰ καὶ Σύροι, καὶ Αἰγύπτιοι, καὶ Ἰνδοί, καὶ Πέρσαι, καὶ Αἰθίοπες, καὶ μυρία ἕτερα ἔθνη, εἰς τὴν αὐτῶν μεταβαλόντες γλῶτταν τὰ παρὰ τούτου δόγματα εἰσαχθέντα, ἔμαθον ἄνθρωποι βάρβαροι φιλοσοφεῖν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In Joannem (homiliae 1–88) Vol 59, pg 361, ln 58
Ὁ ἐν Ῥώμῃ καθήμενος τοὺς Ἰνδοὺς μέλος εἶναι νομίζει ἑαυτοῦ.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In Acta apostolorum (homiliae 1–55) (2062: 154); MPG 60. Vol 60, pg 47, ln 32

Καὶ ὁ μὲν πολλὰ ληρήσας Πλά- των, σεσίγηκεν· οὗτος δὲ φθέγγεται, οὐχὶ παρ' οἰκείοις μό- νοις, ἀλλὰ καὶ παρὰ Πάρθοις, παρὰ Μή- δοις, παρὰ Ἑλαμίταις, καὶ ἐν Ἰνδίᾳ, καὶ πανταχοῦ γῆς, καὶ εἰς τὰ πέρατα τῆς οἰκουμένης.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In Acta apostolorum (homiliae 1–55) Vol 60, pg 56, ln 26

Κὰν εἰς Ἰν- δοὺς ἀπέλθης, ἀκούσῃ τούτων· καὶ εἰς Ἰσπανίαν, καὶ πρὸς αὐτὰ τῆς γῆς τὰ τέρματα, οὐδεὶς ἀν- ήκοος τυγχάνει, πλὴν εἰ μὴ παρὰ τὴν οἰκείαν ἑαθν- μίαν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In Acta apostolorum (homiliae 1–55) Vol 60, pg 220, ln 18

Καὶ ἐν Ἰνδοῖς δὲ τὸ μέγα θηρίον καὶ φοβερόν τῶν ἐλεφάντων λέγεται καὶ δεκα- πενταέτει παιδί γεγονότι μετὰ πολλῆς εἴκειν τῆς προθυ- μίας.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistolam ad Romanos (homiliae 1–32) (2062: 155); MPG 60. Vol 60, pg 517, ln 18

Καὶ οὐ παρ' ἡμῖν μόνον, ἀλλὰ καὶ παρὰ Σκύθαις καὶ Θραξὶ καὶ Ἰνδοῖς καὶ Πέρσαις, καὶ ἑτέροις δὲ βαρβάροις πλείοσι, καὶ παρθένων χοροὶ καὶ μαρτύρων δῆμοι καὶ μοναχῶν συμμορίαι, καὶ πλεί- ους οὗτοι λοιπὸν τῶν γεγαμηκότων εἰσὶ, καὶ νηστείας ἐπίτασις καὶ ἀκτημοσύνης ὑπερβολή· ἅπερ, πλὴν ἐνός ἢ δυεῖν, οὐ φαντασθῆναι ὄναρ οἱ κατὰ τὸν νόμον ἡδυνή- θησαν πολιτευόμενοι.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Corinthios (homiliae 1-44) (2062: 156); MPG 61. Vol 61, pg 52, ln 3

πῶς δ' ἂν τὰ γραφέντα, καὶ εἰς τὴν βαρβάρων καὶ εἰς τὴν Ἰνδῶν, καὶ πρὸς αὐτὰ τοῦ ὠκεανοῦ τὰ πέ- ρατα ἀφίκετο, οὐκ ὄντων τῶν λεγόντων ἀξιοπίστων;

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Corinthios (homiliae 1-44) Vol 61, pg 53, ln 12

Ἡμεῖς δὲ βουλό- μεθα πολλῆς ἀπολαύειν τρυφῆς καὶ ἀναπαύσεως καὶ ἀδείας· ἀλλ' οὐκ ἐκεῖνοι, ἀλλ' ἐβόων, Ἄχρι τῆς ἄρτι ὥρας καὶ πεινώμεν καὶ διψῶμεν καὶ γυμνη- τεύομεν καὶ κολαφιζόμεθα καὶ ἀστατοῦμεν. Καὶ ὁ μὲν ἀπὸ Ἱερουσαλήμ μέχρι τοῦ Ἰλλυρικοῦ ἔτρε- χεν, ὁ δὲ εἰς τὴν Ἰνδῶν, ὁ δὲ εἰς τὴν Μαύρων, ἄλ- λος δὲ πρὸς ἄλλα μέρη τῆς οἰκουμένης· ἡμεῖς δὲ οὐδὲ τῆς πατρίδος ἐξελθεῖν τολμῶμεν, ἀλλὰ τρυφήν ζητοῦμεν καὶ οἰκίας λαμπράς καὶ πᾶσαν τὴν ἄλλην ἀφθονίαν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Corinthios (homiliae 1-44) Vol 61, pg 68, ln 22

διὰ τοῦτο αὐτὸ μάλιστα θαυμάζειν ἐχρῆν, ὅτι ἂν-θρώπους βαρβάρους τοιαύτην ἔπεισαν καταδέξασθαι πίστιν, καὶ χρηστὰς περὶ τῶν μελλόντων ἔχειν ἐλπίδας, καὶ τὸ πρότερον τῶν ἀμαρτημάτων φορτίον ἀπεσκευασμένους μετὰ πολλῆς τῆς προθυμίας εἰς τὸ ἐπὶ τῶν ὑπὲρ τῆς ἀρετῆς ἅπτεσθαι πόνων, καὶ πρὸς αἰσθητὸν μὲν μηδὲν κεχηνέναι, πάντων δὲ ἀνωτέρους τῶν σωματικῶν γεγεννημένους νοεράς δέ- ξασθαι δωρεάς, καὶ τὸν Πέρσην καὶ τὸν Σαυρομάτην, καὶ τὸν Μαῦρον καὶ τὸν Ἰνδὸν εἶδέναι ψυχῆς καθ-αρμὸν, καὶ Θεοῦ δύναμιν καὶ φιλανθρω-πίαν ἄφατον, καὶ πίστεως φιλοσοφίαν, καὶ Πνεύματος ἁγίου ἐπι-φοίτησιν, καὶ σωμάτων ἀνάστασιν, καὶ ζωῆς ἀθανάτου δόγματα.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Corinthios (homiliae 1-44) Vol 61, pg 239, ln 39

Ἐπειδὴ γὰρ ἀπὸ τῶν εἰδώλων προσιόντες, οὐδὲν εἰδότες σαφῶς, οὐδὲ ταῖς παλαιαῖς ἐντρα-φέντες βίβλοις, βαπτισθέντες εὐθέως Πνεῦμα ἐλάβανον, τὸ δὲ Πνεῦμα οὐχ ἐώρων· ἀόρατον γὰρ ἐστίν· αἰσθητὸν τινα ἔλεγχον ἐδίδου τῆς ἐνεργείας ἐκείνης ἡ χάρις· καὶ ὁ μὲν τῇ Περσῶν, ὁ δὲ τῇ Ῥω-μαίων, ὁ δὲ τῇ Ἰνδῶν, ὁ δὲ ἑτέρα τινὲς τοιαύτη εὐ-θέως ἐφθέγγετο γλώσση· καὶ τοῦτο ἐφάνερον τοῖς ἔξωθεν, ὅτι Πνεῦμά ἐστιν ἐν αὐτῷ τῷ φθεγγομένῳ.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Corinthios (homiliae 1-44) Vol 61, pg 296, ln 45

Καὶ ὥσπερ ἐν τῷ καιρῷ τῆς πυρ-γοποιίας ἡ μία γλῶττα εἰς πολλὰς διετέμνετο· οὕτω τότε αἱ πολλαὶ πολλάκις εἰς ἓνα ἄνθρωπον ἦσαν, καὶ ὁ αὐτὸς καὶ τῇ Περσῶν καὶ τῇ Ῥωμαίων καὶ τῇ Ἰνδῶν καὶ ἑτέραις πολλαῖς διελέγετο γλώτταις, τοῦ Πνεύματος ἐνηχοῦντος αὐτῷ· καὶ τὸ χάρισμα ἐκαλεῖτο χάρισμα γλωττῶν, ἐπειδὴ πολλαῖς ἀθρόον ἐδύνατο λαλεῖν φωναῖς.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Corinthios (homiliae 1-44) Vol 61, pg 299, ln 2

6.42. JOANNES CHRYSOSTOMUS

Τοσαῦτα, εἰ τύχοι, γένη φωνῶν ἐστὶν ἐν κόσμῳ, καὶ οὐδὲν αὐτῶν ἄφωνον. Τουτέστι, Τοσαῦται γλῶσσαι, τοσαῦται φωναί, Σκυθῶν, Θρακῶν, Ῥωμαίων, Περσῶν, Μαύρων, Ἰνδῶν, Αἰγυπτίων, ἐτέρων μυρίων ἐθνῶν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam ii ad Corinthios (homiliae 1–30) (2062: 157); MPG 61. Vol 61, pg 506, ln 45

Τοιούτους τοὺς ἀμαξοβίους εἶναι φασὶ, τοὺς παρὰ Σκύθαις νομάδας, τοὺς γυμνοσοφιστὰς τοὺς τῶν Ἰνδῶν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam ad Philippenses (homiliae 1–15) (2062: 160); MPG 62. Vol 62, pg 237, ln 17

ἀλλ' οὐχ οὕτως, ὡς οἱ Ἰνδικοὶ μύρμηκες.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Thessalonicenses (homiliae 1–11) (2062: 162); MPG 62. Vol 62, pg 405, ln 16

Ὅσπερ οὖν, εἰ περὶ τίνος ἔλεγον φυτοῦ ἐν Ἰνδία τικτομένου, οὗ μηδεὶς μηδὲ πείραν ἔλαβεν, οὐκ ἂν ἴσχυσεν ὁ λόγος παραστήσαι, καὶ εἰ μυρία εἶπον· οὕτω καὶ νῦν ὅσα ἂν εἴπω, εἰκῇ ἔρῳ· οὐδεὶς γὰρ ἐπιστῆναι δυνήσεται.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Timotheum (homiliae 1–18) (2062: 164); MPG 62. Vol 62, pg 513, ln 15

Καυχᾷ ἐπὶ πράγματι, ὃ σκώληκες τί- κτουσι, καὶ ἀπολλύουσι· λέγονται γὰρ Ἰνδικὰ τινα ζωῷφια εἶναι, ὅθεν τὰ νήματα ταῦτα κατασκευάζεται.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Timotheum (homiliae 1–18) Vol 62, pg 513, ln 39

Τί ἂν τις εἴποι τὴν τῶν ἀρωμάτων πολυτέλειαν, τῶν Ἰνδικῶν, τῶν Ἀραβικῶν, τῶν Περσικῶν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In epistulam i ad Timotheum (homiliae 1–18) Vol 62, pg 596, ln 38

Ἐν δὲ τῇ ἀρωματοφόρῳ Ἀραβία καὶ Ἰνδία, ἔνθα εἰσὶν οἱ λίθοι, πολλὰ τοιαῦτα ἐστὶν εὐρεῖν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Homilia habita postquam presbyter Gothus concionatus fuerat (2062: 177); MPG 63. Vol 63, pg 501, ln 5

οὐκ ἐν Ἰουδαίᾳ μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐν τῇ τῶν βαρβάρων γλώττῃ, καθὼς ἠκούσατε σήμερον, ἡλίου φανότερον διαλάμπει· καὶ Σκύθαι καὶ Θράκες καὶ Σαυρομάται καὶ Μαῦροι καὶ Ἰνδοὶ καὶ οἱ πρὸς αὐτὰς ἀπακισμένοι τὰς ἐσχατίας τῆς οἰκουμένης, πρὸς τὴν οἰκείαν ἕκαστος μεταβαλόντες γλώτταν, τὰ εἰρημένα φιλοσοφοῦσι ταῦτα· ἃ μηδὲ ὄναρ ἐφαντάσθησαν οἱ παρὰ τοῖς Ἑλλήσι τὸν πάγονα ἔλκοντες, καὶ τῇ βακτηρίᾳ τοὺς ἀπαντῶντας ἐπὶ τῆς ἀγορᾶς σοβοῦντες, καὶ τοὺς βοστρύχους ἀπὸ τῆς κεφαλῆς σείοντες, λεόντων μᾶλλον ἢ ἀνθρώπων ἐπιδεικνύμενοι πρόσωπα.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In illud: Messis quidem multa (2062: 179); MPG 63. Vol 63, pg 519, ln 55

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Σκύθαι μὲν γὰρ καὶ Θρᾶκες καὶ Μαῦροι καὶ Ἰνδοὶ καὶ Πέρσαι καὶ Σαυρομάται, καὶ οἱ τὴν Ἑλλάδα καὶ οἱ τὴν Ἡπειρον οἰκοῦντες, καὶ πᾶσα, ὡς εἶπεῖν, ἡ ὑφ' ἡλίῳ τοῖς δαίμοσιν ἐτελείτο, καὶ ὑπὸ τῶν ἀλαστόρων ἐκείνων ἐξεβακχεύετο καὶ χώρα καὶ πόλις καὶ ἔρημος, καὶ γῆ καὶ θάλαττα, καὶ βάρβαρος καὶ Ἑλλὰς, καὶ ὄρη καὶ νᾶπαι καὶ βουνοί· μόνον δὲ τὸ Ἰουδαίων ἔθνος τὸ δοκοῦν εὐσεβεῖν προφήτας εἶχε καὶ θεογνωσίας σπέρματα μικρά· ἀλλὰ καὶ ταῦτα χρόνῳ κατεχώννυτο, καὶ οἱ διδάσκαλοι τοῦ γένους ἐκείνου κατ- ἡγοροὶ πικροὶ τῶν ἀμαρτανομένων αὐτοῖς ἐγίνοντο·

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Fragmenta in Jeremiam (in catenis) (2062: 186); MPG 64. Vol 64, pg 829, ln 5

Σαβὰ δὲ χώρα ἐστὶν Ἰνδῶν.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., De perfecta caritate [Sp.] (2062: 211); MPG 56. Vol 56, pg 282, ln 7

Ὡς- περ γὰρ εἰ ἔλεγον περὶ τίνος φυτοῦ ἐν Ἰνδῷ τιχτομέ- νου, καὶ οὐ μὴδὲς πεῖραν ἔλαβεν, οὐκ ἂν ἴσχυσεν ὁ λόγος παραστήσαι, καὶ μυρία περὶ αὐτοῦ ἔλεγον· οὕτω καὶ νῦν ὅσα ἂν εἴπω, μάτην ἔρῳ· οὐ γὰρ συνιοῦσί τινες τὰ λεγόμενα.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In Genesim (sermo 3) [Sp.] (2062: 216); MPG 56. Vol 56, pg 527, ln 17

Διὸ ταύτην ὑποδεξώμεθα, τὸ τίμιον δῶρον, τὸ ἅγιον κειμήλιον, τὸ τῆς ἀληθείας ἵνδαλμα, τῆς εὐσε- βείας τὸ κεφάλαιον, τὸν τῆς πνευματικῆς διδασκαλίας συνήγορον, τῶν παθῶν τὴν νεκρωσιν, τῆς ἀμαρτίας τὴν ἀναίρεσιν, τῆς κακίας τὸν ἀντίπαλον, τῆς παρθενίας τὴν ὁμόδοξον, τῶν δαιμόνων τὴν ἀφανίστριαν, τοῦ διαβόλου τὴν ἀποτίμησιν, τῶν εἰδώλων τὴν καθαίρεσιν, τῶν Ἑκ- κλησιῶν τὴν εὐπρέπειαν, τῶν βασιλέων τὸ κράτος, τῶν ἱερέων τὸ ἐγκαλλώπισμα, τῶν ἀνδρῶν τὴν φρόνησιν, τῶν γυναικῶν τὴν σωφροσύνην, τῶν νηπιῶν τὴν παιδαγωγίαν, τῶν δούλων τὴν ἀνάεξιν, τῶν πτωχῶν τὴν

παραμυ-

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In adorationem venerandae crucis [Sp.] (2062: 326); MPG 62. Vol 62, pg 753, ln 38

Τοῦτο τὸ τί- μιον καὶ σεβάσμιον ξύλον ὑπὸ πάντων τιμώμενον προς- κυνεῖται· Ἕλληνες τε καὶ βάρβαροι, Μακεδόνες καὶ Θετταλοὶ, Παῖονες, καὶ Ἰλλυριοί, Ἀθηναῖοι καὶ Ἀργεῖοι καὶ Λάκωνες, Πάρθοι καὶ Μῆδοι καὶ Ἑλαμίται, καὶ οἱ κατοικοῦντες τὴν Μεσοποταμίαν, Ἰουδαίαν τε καὶ Καπ- παδοκίαν, Πόντον καὶ Ἀσίαν, Αἴγυπτον καὶ τὰ μέρη τῆς Λιβύης τῆς κατὰ Κυρήνην, Κρήτες καὶ Ἀραβες, Ἰνδοὶ καὶ Αἰθίοπες, καὶ Ὀμηρίται, καὶ πάντες οἱ λοι- ποὶ τῶν ἐθνῶν, ὅσους ὁ ἥλιος ἐφορᾷ, τὴν ἑαυτῶν κατα- λιπόντες ἀπάτην, τῷ σταυρῷ σημειούμενοι προσκυ- νοῦσι, φεύγοντες τὰς πολυπλόκους σειρὰς τοῦ διαβόλου.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., In illud: Si qua in Christo nova creatura [Sp.] (2062: 359); MPG 64. Vol 64, pg 27, ln 1

ἀλλ', ὅπου ἂν ἀπέλθης, ἀκούεις, ὅτι Ἐν ἀρχῇ ἦν ὁ Λόγος· καὶ ἐν χώρᾳ, καὶ ἐν πόλει, προέλαβεν, Ἐν ἀρχῇ ἦν ὁ Λόγος· καὶ ἐν Περσίδι καὶ ἐν Ἰνδῷ καὶ ἐν τῇ Μαυ- ριτανῶν χώρᾳ

6.43. FRAGMENTA ALCHEMICA, TRACTATUS ALCHEMICUS
(FRAGMENTA) (DATE?)

λάμπει τὸ ἔῃμα τοῦτο ἡλίου φανερώ-τερον.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., De laudibus sancti Pauli apostoli (homiliae 1–7) (2062: 486) “Jean Chrysostome. Panégyriques de S. Paul”, Ed. Piédagnel, A. Paris: Cerf, 1982; Sources chrétiennes 300. Homily 4, section 8, line 3

Πάντως ἠκούσατε, ὅτι καὶ παρὰ Πέρσαις καὶ Ἰνδοῖς πολλοὶ γεγονάσι μάγοι, καὶ εἰσὶν ἔτι καὶ νῦν· ἀλλ’ οὐδὲ ὄνομα αὐτῶν ἐστὶν οὐδαμοῦ.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., De laudibus sancti Pauli apostoli (homiliae 1–7) Homily 4, section 10, line 8

Ἄνθρωπος γὰρ ἐπ’ ἀγορᾶς ἐστηκώς, περὶ δέρματα τὴν τέχνην ἔχων, τοσοῦτον ἴσχυσεν, ὥς καὶ Ῥωμαίους, καὶ Πέρσας, καὶ Ἰνδοὺς, καὶ Σκύθας, καὶ Αἰθίοπας, καὶ Σαυρομάτας, καὶ Πάρθους, καὶ Μήδους, καὶ Σαρακηνούς, καὶ ἅπαν ἀπλῶς τὸ τῶν ἀνθρώπων γένος πρὸς τὴν ἀλήθειαν ἐπαναγαγεῖν ἐν ἔτεσιν οὐδὲ ὅλοις τριάκοντα.

Joannes Chrysostomus Scr. Eccl., Commentarius in Job (2062: 505) “Johannes Chrysostomos. Kommentar zu Hiob”, Ed. Hagedorn, U., Hagedorn, D. Berlin: De Gruyter, 1990; Patristische Texte und Studien 35.

6.43 Fragmenta Alchemica, Tractatus alchemicus (fragmenta) (date?)

? (From Wikipedia⁴⁰)

Fragmenta Alchemica, Tractatus alchemicus (fragmenta) (P. Holm.) (1379: 002) “Les alchimistes grecs, vol. 1 [Papyrus de Leyde, Papyrus de Stockholm, fragments de recettes]”, Ed. Halleux, R. Paris: Les Belles Lettres, 1981.

Fragmenta Alchemica, Tractatus alchemicus (fragmenta) (P. Holm.) Fragment 60, line 3

| Ἄν δέ ποτε τῇ χρήσει τὸ ἀληθινὸν μάργαρον | ἐκπνεῦσαν ῥυπωθῇ, ὥδε ἀποσμῶσιν Ἰνδοί·
| ἐνιᾶσιν ὡς ἐδωδὴν ἀλεχτρύονι τὴν ψῆφον | ἐσπέρας.

Fragmenta Alchemica, Tractatus alchemicus (fragmenta) (P. Holm.) Fragment 63, line 6

Καὶ τῇ τὸν χρυστα | χρύσταλλον βήρυλλον ἔξεις αὐτὸν ἄρα | ἀραΐωσας τὸν λίθον καὶ
μετὰ τὴν πύρωσι(ν) || τὴν πύρωσιν ἀποψυγέντα εἰς τε τὴν προειρη|μένην ῥητίνην ἰνδικῶ τε τῷ
φαρμάκῳ συμ|μεμιγ- μένῳ ἐμβαλῶν.

40.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Fragmenta Alchemica, Tractatus alchemicus (fragmenta) (P. Holm.) Fragment 64, line 2

|| Ἐλύδριον μειχθέν ἰνδικῷ χρώματι γίνε|ται χλωρόν.

Fragmenta Alchemica, Tractatus alchemicus (fragmenta) (P. Holm.) Fragment 84, line 3

Χρυσοκόλλης Σ' θ', ἰ|οῦ μείξας Σ' α', ἐλυδρ<ί>ου Σ' α', ἰνδικοῦ τρι|ώβολον ῥητίνην χρῖε.

Fragmenta Alchemica, Lexicon alchemicum (= Λεξικὸν κατὰ στοιχεῖον τῆς χρυσοποιίας) (e cod. Venet. Marc. 299, fol. 131r) (1379: 008) “Collection des anciens alchimistes grecs, vol. 2”, Ed. Berthelot, M., Ruelle, C.É. Paris: Steinheil, 1888, Repr. 1963. Volume 2, page 9, line 4

<Ιός> ἐστὶ ξάνθωσις, καὶ ὕδωρ θεῖον ἄθικτον, καὶ κόμῃς σκυθικὴ, καὶ ἴσατις ἰνδική, καὶ βατράχιον, καὶ χρυσόπρασον, καὶ χρυσό- κολλα.

Fragmenta Alchemica, Lexicon alchemicum (= Λεξικὸν κατὰ στοιχεῖον τῆς χρυσοποιίας) (e cod. Venet. Marc. 299, fol. 131r) Volume 2, page 11, line 6

<Μία φύσις> ἐστὶ θεῖον καὶ ὑδράργυρος διαφόρως οἰκονομηθέντα. <Μέλαν>9 ἰνδικὸν ἀπὸ ἰσάτιος γίνεται καὶ χρυсолίθου.

Fragmenta Alchemica, Περὶ ποιήσεως κινναβάρεως (e cod. Venet. Marc. 299, fol. 106r) (1379: 024) “Collection des anciens alchimistes grecs, vol. 2”, Ed. Berthelot, M., Ruelle, C.É. Paris: Steinheil, 1888, Repr. 1963. Volume 2, page 38, line 12

– Δεῖ γινώσκειν ὅτι ἡ μαγνησία ἡ ὑελοργικὴ ταύτη ἐστὶν ἡ τῆς Ἀσίας, δι' ἧς ὁ ὕελος τὰς βαφὰς δέχεται, καὶ ὁ ἰνδικὸς σιδήρεος γίνεται, καὶ τὰ θαυμάσια ἔφη.

Fragmenta Alchemica, Περὶ βαφῆς σιδήρου (e cod. Venet. Marc. 299, fol. 104r) (1379: 028) “Collection des anciens alchimistes grecs, vol. 2”, Ed. Berthelot, M., Ruelle, C.É. Paris: Steinheil, 1888, Repr. 1963. Volume 2, page 343, line 21

– Ἔστι δέ τις καὶ ἄλλη βαφῆς ἰδέα, ἡ οὐ μόνον τὸ κοινὸν τῶν σιδήρων ἀποβάπτουσα, στίλβον τε καὶ λαμπρότερον ἢ περ ἡ προειρημένη βαφή, ἀπεργάζεται, ἀλλὰ γε καὶ τὸν ὀνομαζόμενον ἰνδικὸν παραπλησίως ἢ μικρὸν πλέον στομοῦσα.

Fragmenta Alchemica, Περὶ βαφῆς σιδήρου (e cod. Venet. Marc. 299, fol. 104r) Volume 2, page 345, line 1

Αὕτη ἐστὶν ἡ μυστικωτάτη βαφή, τὸν ἰνδικὸν ἐκβάπτουσα σίδηρον.

Fragmenta Alchemica, Βαφή τοῦ ἰνδικοῦ σιδήρου γραφεῖσα ἀπὸ ἀρχῆς Φιλίππου (e cod. Venet. Marc. 299, fol. 118v) (1379: 030) “Collection des anciens alchimistes grecs, vol. 2”, Ed. Berthelot, M., Ruelle, C.É. Paris: Steinheil, 1888, Repr. 1963. Volume 2, page 347, line 8t

ΒΑΦΗ ΤΟΥ ΙΝΔ*ΙΚΟΥ ΣΙΔΗΡΟΥ, ΓΡΑΦΕΙΣΑ ΤΩ ΑΥΤΩ ΧΡΟΝΩ.

Fragmenta Alchemica, Βαφή τοῦ ἰνδικοῦ σιδήρου γραφεῖσα ἀπὸ ἀρχῆς Φιλίππου (e cod. Venet. Marc. 299, fol. 118v) Volume 2, page 348, line 7

Ἡύρέθη δὲ ὑπὸ τῶν Ἰνδῶν, καὶ ἐξεδόθη Πέρσαις, καὶ παρ' ἐκείνων ἦλθεν εἰς ἡμᾶς.

6.44. ANONYMI IN ARISTOTELIS (DATE ?)

Fragmenta Alchemica, Καταβαφή λίθων καὶ σμαράγδων καὶ λιχνιτῶν καὶ ὑακίνθων (e cod. Paris. B.N. gr. 2327, fol. 147r) (1379: 032) “Collection des anciens alchimistes grecs, vol. 2”, Ed. Berthelot, M., Ruelle, C.É. Paris: Steinheil, 1888, Repr. 1963. Volume 2, page 351, line 24

Φησὶ γὰρ καὶ ἡ <Μαρία>. «Ἐὰν μὲν χλωρὸν θέλῃς, συμμάλασσε τὸν ἰὸν τοῦ χαλκοῦ μετὰ χορῆς χελώνης, ἐὰν δὲ κάλλιον βούλῃς, τῆς ἰνδικῆς χελώνης, ἐπίβαλε, καὶ ἔσται πάννυ πρωτεῖον· ἐὰν δὲ μὴ εὖρης χορὴν χελώνης πνεύμονι θαλασσίῳ τῷ κυανέῳ χρῶ, καὶ κάλλιον ποιήσεις· συντελες- θέντες δὲ, φέγγος βάλλουσιν· ὥστε τὰς μὲν χορὰς τῶν ζώων καὶ τὸν ἰὸν τοῦ χαλκοῦ <Ὀστάνης> ἐπὶ τῶν σμαράγδων ἐξέλαβε, μὴ προσθεῖς τὸ θαλάσσιον· ἐπὶ ὑακίνθου δὲ, πόαν ὑακίνθου, καὶ μέλαν ἰνδικόν, καὶ ἰσάτιδος ῥίζαν· ἐπὶ δὲ τοῦ λιχνίτου, τὴν ἄγκουσαν καὶ τὸ δρακόντειον αἶμα· ἡ δὲ <Μαρία>, τὸν ἰὸν τοῦ χαλκοῦ καὶ τὰς χορὰς τῶν θαλασσίων ζώων· ἐπὶ δὲ τοῦ νυκτοφανοῦς δῆλον <ὅτι> καλοῦσιν ὑακίνθου οἱ περὶ λίθων σοφοί.

Fragmenta Alchemica, Καταβαφή λίθων καὶ σμαράγδων καὶ λιχνιτῶν καὶ ὑακίνθων (e cod. Paris. B.N. gr. 2327, fol. 147r) Volume 2, page 360, line 22

– Λαβὼν χαλκοῦ κεκαυμένου ἰὸν, καὶ ἔλαιον δάδιον, καὶ ὀλίγον ἰνδικόν, καὶ χρυσοκόλλης καὶ ἐλυθρίου μέρη γ', ἔμβαλε ἐντὸς τοῦ ἄγγους ἔνθα τὸ ἔλαιον, καὶ ἔφει μαλθακῶ πυρὶ ἐπὶ ἀνθράκων.

Fragmenta Alchemica, Καταβαφή λίθων καὶ σμαράγδων καὶ λιχνιτῶν καὶ ὑακίνθων (e cod. Paris. B.N. gr. 2327, fol. 147r) Volume 2, page 362, line 14

Εἴτα ὀλίγον τοῦ ἰνδικοῦ ἐπίβαλε, καὶ τὴν χρυσόκολλαν, τριπλασίαν τοῦ ἰνδικοῦ.

Fragmenta Alchemica, Διαφοραὶ μολίσδου καὶ χρυσοπετάλου (e cod. Venet. Marc. 299, fol. 130r) (1379: 042) “Collection des anciens alchimistes grecs, vol. 2”, Ed. Berthelot, M., Ruelle, C.É. Paris: Steinheil, 1888, Repr. 1963. Volume 2, page 38, line 11

Ἐπὶ χρυσολίθου Νο α' πηχῶν ζ', μίξεως μύσεως, κασσιτέρου παλαιοῦ, ἀρτεμισίας ἰνδικῆς.

6.44 Anonymi In Aristotelis (date ?)

? (From Wikipedia⁴¹)

Anonymi In Aristotelis Sophisticos Elenchos Phil., Scholia in sophisticos elenchos (= commentarium 2) (4193: 002) “Commentators and commentaries on Aristotle’s *sophistici elenchi*. A study of post-Aristotelian ancient and medieval writings on fallacies, vol. 2”, Ed. Ebbesen, S. Leiden: Brill, 1981; Corpus Latinum commentariorum in Aristotelem Graecorum 7. Bekker pagēline 165a8-9, line of scholion 9

ὁ Σωκράτης ἄρα καὶ ὁ Ἰν- δὸς ποταμὸς οἱ αὐτοί.

41.

CHAPTER 6. LATE ANTIQUE

Anonymi In Aristotelis Sophisticos Elenchos Phil., Scholia in sophisticos elenchos (= commentarium 2) Bekker pagēline 165a8-9, line of scholion 18

ὁ Πλάτων ἄρα καὶ ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς οἱ αὐτοί.

Anonymi In Aristotelis Sophisticos Elenchos Phil., In Aristotelis sophisticos elenchos paraphrasis (4193: 012) “Anonymi in Aristotelis sophisticos elenchos paraphrasis”, Ed. Hayduck, M. Berlin: Reimer, 1884; Commentaria in Aristotelem Graeca 23.4. Section 24, line 12

καὶ πάλιν ὁ Ἰνδὸς μέλας ὦν ἀπλῶς λευκός ἐστιν τοὺς ὀδόντας, ὥστε λευκός καὶ οὐ λευκός.

Anonymi In Aristotelis Sophisticos Elenchos Phil., In Aristotelis sophisticos elenchos paraphrasis Section 79, line 15

ἐν οἷς τε μὴ ὀνόμασι σημαίνεται τὸ καθόλου, ἀλλὰ τῇ κατὰ μέρος ὁμοιότητι λόγῳ τὸ κοινὸν θηρᾶται, χρηστέον πρὸς τὸ συμφέρον· οἷον ἐπεὶ τὸ κερασφόρον μὴ ὄνομα ὄν ἀλλὰ λόγος τῷ εἶναι σύνθετον, καὶ ἐξ ὁμοιότητος ἐπὶ τὰ μὴ τῶν ζώων ἀμφόδοντα εἴληπται, οἷον αἰγὰ, πρόβατον, βοῦν καὶ τὰ λοιπά, χρηστέον ταῖς ἐπαγωγαῖς πρὸς τὸ συμφέρον, ὥς ἐπεὶ τὸ καὶ τὸ κερασφόρον ὄντα οὐκ ἀμφόδοντα, καὶ πᾶν ἄρα· καὶ ἄλλου μὲν ἐπάγοντος αὐτὸν φέρειν ἔνστασιν τὸν ὄνον τὸν Ἰνδικὸν ἀμφόδοντα ὄντα καὶ κερασφόρον, αὐτὸν δὲ χρώμενον προσομολογεῖν οὕτως ἐπὶ πάντων.

Chapter 7

Byzantine

Contents

| | | |
|------|--|-----|
| 4.1 | Historia Alexandri Magni | 71 |
| 4.2 | Claudius Ptolemaeus | 106 |
| 4.3 | Anonymi Historici (FGrH), Heraclis historia (Tabula Albana) (IG 14.1293) | 118 |
| 4.4 | Adespota Papyracea (SH), Epigrammata | 118 |
| 4.5 | Dionysius Scytobrachion | 119 |
| 4.6 | Vettius Valens | 119 |
| 4.7 | Apollodorus of Artemita | 121 |
| 4.8 | Scholia In Homerum | 123 |
| 4.9 | Timon | 124 |
| 4.10 | Lyrica Adespota | 124 |
| 4.11 | Theopompus | 125 |
| 4.12 | Anaxarchus | 125 |
| 4.13 | Speusippus | 127 |
| 4.14 | Callixenus of Rhodes | 127 |
| 4.15 | Paradoxographus Vaticanus | 128 |
| 4.16 | Theophrastus | 129 |
| 4.17 | Ephraem the Syrian | 132 |
| 4.18 | Artaxerxis Epistulae | 133 |
| 4.19 | Polemon Periegetes | 133 |

CHAPTER 7. BYZANTINE

| | | |
|--------|--|-----|
| 4.20 | Phylarchus | 134 |
| 4.21 | Demosthenes | 135 |
| 4.22 | <i>Scholia In Apollonium Rhodium</i> | 135 |
| 4.23 | Philochorus | 136 |
| 4.24 | Aristodemus | 137 |
| 4.25 | <i>Scholia In Euclidem</i> | 137 |
| 4.26 | Ephorus | 138 |
| 4.27 | Lycophron (scholia in) | 139 |
| 4.28 | Phaenias of Eresus | 141 |
| 4.29 | Berosus | 141 |
| 4.30 | <i>Scholia In Theocritum</i> | 142 |
| 4.31 | Megasthenes, <i>Indica</i> | 142 |
| 4.31.1 | About Megasthenes | 142 |
| 4.31.2 | <i>Indica</i> | 144 |
| 4.32 | Hipparchus | 170 |
| 4.32.1 | About Hipparchus | 170 |
| 4.32.2 | Fragmenta geographica | 170 |
| 4.33 | Nicander | 172 |
| 4.34 | Aristophanes of Byzantium | 173 |
| 4.35 | Callisthenes | 179 |
| 4.36 | Duris of Samos | 181 |

7.1 Georgius Acropolites

George Akropolites, Latinized as Acropolites or Acropolita (Greek: Γεώργιος Ἀκροπολίτης, Georgios Akropolitēs, 1217 or 1220 – 1282), was a Byzantine Greek historian and statesman born at Constantinople. (From Wikipedia¹)

1. http://en.wikipedia.org/wiki/George_Akropolites

7.2. TESTAMENTA XII PATRIARCHARUM

Georgius Acropolites Hist., Epitaphius in Joannem Ducam (3141: 009) “Georgii Acropolitae opera, vol. 2”, Ed. Heisenberg, A. Leipzig: Teubner, 1903, Repr. 1978 (1st edn. corr. P. Wirth). Section 13, line 16

ἀλλὰ τὰ μὲν τῆς ἀνδρείας ἐκείνου γνω- ρίσματα τοῦ στερροῦ καὶ καρτερικοῦ καὶ βε- βηκότος ὡς τὸ τετράγωνον, τοῦ ὀξυτέρου πνεύματος ἢ πυρὸς ὁπότε καιρὸς καλοῖ καὶ ἀκμὴ κατεπείγει καιροῦ, κατὰ ταῦτα δὲ καὶ τὰ τῆς φρονήσεως σύμβολα, ἢ πασῶν τῶν ἀρετῶν ὑπερτίθεται ἢ μᾶλλον κρεῖττον εἰπεῖν ἢ τὰς ἀρετὰς εἰδοποίησε καὶ ἀρε- τὰς εἶναι καὶ ὀνομά- ζεσθαι πέπεικε, τούτων δὲ πάντων ὡς ἐνὸν ἡμῖν καὶ ὡς ὁ καιρὸς δίδωσιν οἱ χαρακτηῖρες καὶ τὰ ἰνδάλματα προκεκέντηνται· ἐπεὶ δὲ καὶ καλοκαγαθίας καὶ ἡμερότητας ἐμνήσθημεν, ἐν- ταῦθά μοι τοῦ λόγου τὰ δάκρυα προπηδᾷ ἀναλογιζομένῳ τὴν τούτου περὶ τοὺς ἐπταικότας συμπάθειαν, οἶμαι δὲ καὶ πάντες ἐν τούτοις πλέον θρηνησέτε.

Georgius Acropolites Hist., In Gregorii Nazianzeni sententias (3141: 012) “Georgii Acropolitae opera, vol. 2”, Ed. Heisenberg, A. Leipzig: Teubner, 1903, Repr. 1978 (1st edn. corr. P. Wirth). Section 8, line 3

πᾶσι δὲ λέγω Χαλδαίοις, Αἰγυπτίοις, Ἰνδοῖς, αὐτοῖς Ἑλλήσιν, ἀπα- ξαπλῶς τοῖς ὁπωσοῦν ἀψαμένοις θεολογίας καὶ βεβουλημένοις διαλεχθῆναι περὶ θεοῦ τοῦτο γοῦν τὸ ὃν καὶ δημιουρ- γικὸν καθω- μολόγηται αἷτιον.

Georgius Acropolites Hist., In Gregorii Nazianzeni sententias Section 9, line 8

καὶ τοῦτο εἰκότως· τὰ γὰρ ἐκ διαμέτρου πρὸς ἄλληλα κείμενα ἰνδάλματά τινα προβάλλου- σιν ὁμοιότητος.

Georgius Acropolites Hist., Laudatio Petri et Pauli (3141: 013) “Georgii Acropolitae opera, vol. 2”, Ed. Heisenberg, A. Leipzig: Teubner, 1903, Repr. 1978 (1st edn. corr. P. Wirth). Section 17, line 54

καὶ ἵνα συντόμως ἐρῶ· Πέτρον μὲν εὐρίσκω τῆς πρακτικῆς εἰκόνας ἀκριβεστάτας ἐμφαί- νοντα, Παῦλον δὲ θεωρίας ὡς ἐναργῆ τὰ ἰνδάλματα.

7.2 Testamenta XII Patriarcharum

“” (From Wikipedia²)

Testamenta XII Patriarcharum, Testamenta xii patriarcharum (1700: 001) “Testamenta xii patriarcharum, 2nd edn.”, Ed. de Jonge, M. Leiden: Brill, 1970; Pseudepigrapha veteris testamenti Graece 1. Testamentum 11, chapter 11, section 2, line 2

Ἐλθὼν δὲ εἰς Ἰνδοκολπίτας μετὰ τῶν Ἰσραηλιτῶν, ἠρώτουν με· καὶ γὰρ εἶπον ὅτι δοῦλος αὐτῶν εἰμι ἐξ οἴκου, ἵνα μὴ αἰσχύνω τοὺς ἀδελφούς μου.

2.

7.3 Geoponica

The Geoponica (also spelled Geoponika) is a twenty-book collection of agricultural lore, compiled during the 10th century in Constantinople for the Byzantine emperor Constantine VII Porphyrogenitus. The Greek word Geoponica signifies "agricultural pursuits" in its widest sense.

The 10th century collection is sometimes (wrongly) ascribed to the 7th century author Cassianus Bassus, whose collection, also titled Geoponica, was integrated into the extant work. Bassus drew heavily on the work on another agricultural compiler, Vindonius Anatolius (4th century). The ultimate sources of the Geoponica include Pliny, various lost Hellenistic and Roman-period Greek agriculture and veterinary authors, the Carthaginian agronomist Mago, and even works passing under the name of the Persian prophet Zoroaster. (The names of the principal sources for each section are attached to the text, although the age and correctness of these attributions remains in doubt.) The Greek manuscript tradition is extremely complex and not fully understood. Syriac, Pahlavi, Arabic and Armenian translations attest to its worldwide popularity and complicate the manuscript tradition still further. Contents

The Geoponica embraces all manner of "agricultural" information, including celestial and terrestrial omens, viticulture, oleoculture, apiculture, veterinary medicine, the construction of fishponds and much more. (From Wikipedia³)

Geoponica, Geoponica (4080: 001) "Geoponica", Ed. Beckh, H. Leipzig: Teubner, 1895. Book 2, chapter 6, section 23, line 5

σχοίνους τε γὰρ φυομένας <ᾶς> τινες ὀλοσχοίνους καλοῦσι, καὶ βούτομον, καὶ βάτους, καὶ κύπειρον, ἣν τινες ζέρναν καλοῦσιν· ἔτι δὲ καὶ ἄγρωστιν πολλὴν καὶ εὐτροφον, καλάμους τε τοὺς καλουμένους Ἰνδικούς, ὑπὸ τινων δὲ μεστοκαλάμους, ὑπ' ἐνίων βαλίτας, καὶ σύριγγας δασεῖς καὶ ἀπαλούς σημαίνειν φασίν, ὡς ὕδωρ ἔχοντος τοῦ τόπου.

Geoponica, Geoponica Book 6, chapter 8, section 1, line 2

β' νάρδου Ἰνδικῆς ἢ Κελτικῆς λ.

Geoponica, Geoponica Book 8, chapter 22, section 2, line 3

θ' νάρδου Ἰνδικῆς δραχ.

Geoponica, Geoponica Book 16, chapter 22, section 3, line 3

3. <http://en.wikipedia.org/wiki/Geoponica>

7.4. CONSTANTINE VII

τὴν δὲ Βακτριανὴν κάμηλον, ἐν τοῖς ὅρεσι τοῖς πρὸς τῇ Ἰνδικῇ, ὑπὸ συννεμο-
μένων συλλαμβά- νειν, ὁ αὐτὸς Δίδυμός φησιν.

Geoponica, Geoponica Book 16, chapter 22, section 9, line 1

Ἐγὼ δὲ ἀπὸ τῆς Ἰνδίας ἐνεχθεῖ- σαν ἐθεασάμην ἐν Ἀντιοχείᾳ καμηλοπάρδαλιν.

7.4 Constantine VII

Constantine VII Porphyrogenetos or Porphyrogenitus, "the Purple-born" (that is, born in the imperial bed chambers) (Greek: Κωνσταντῖνος Ζ' Πορφυρογέννητος, Kōnstantinos VII Porphyrogenētōs; September 2, 905 – November 9, 959), was the fourth Emperor of the Macedonian dynasty of the Byzantine Empire, reigning from 913 to 959. He was the son of the emperor Leo VI and his fourth wife, Zoe Karbonopsina, and the nephew of his predecessor, the emperor Alexander.

Most of his reign was dominated by co-regents: from 913 until 919 he was under the regency of his mother, while from 920 until 945 he shared the throne with Romanos Lekapenos, whose daughter Helena he married, and his sons. Constantine VII is best known for his four books, *De Administando Imperio* (bearing in Greek the heading *Πρὸς τὸν ἴδιον υἱὸν Ρωμανόν*), *De Ceremoniis* (*Περὶ τῆς Βασιλείου Τάξεως*), *De Thematibus* (*Περὶ θεμάτων Ἀνατολῆς καὶ Δύσεως*), and *Vita Basilii* (*Βίος Βασιλείου*). (From Wikipedia⁴)

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus (3023: 001)
"Excerpta historica iussu imp. Constantini Porphyrogeniti confecta, vol. 1: excerpta de legationibus, pts. 1–2", Ed. de Boor, C. Berlin: Weidmann, 1903. Page 91, line 28

3. Ὅτι Ἰουστινιανὸς ὁ βασιλεὺς, ἐν μὲν Αἰθίοφι βασιλεύ- οντος Ἑλλησθεαίου, Ἐσιμιφαίου δὲ ἐν Ὀμηρίταις, πρεσβευτὴν Ἰουλιανὸν <ἐπεμψεν> ἄξιων ἅμφω Ῥωμαίοις διὰ τὸ τῆς γνώμης ὁμόγνωμον Πέρσαις πολεμοῦσι ξυνάρασθαι, ὅπως Αἰθίοπες μὲν ὠνούμενοί τε τὴν μέταξαν ἐξ Ἰνδῶν, ἀποδιδόμενοι δὲ αὐτὴν ἐς Ῥωμαίους, αὐτοὶ μὲν κύριοι γένωνται χρημάτων μεγάλων, Ῥωμαίους δὲ τοῦτο ποιήσωσι κερδαίνειν μόνον, ὅτι δὴ οὐκ ἔτι ἀναγκασθή- σονται τὰ σφέτερα αὐτῶν χρήματα ἐς τοὺς πολεμίους μετενεγκεῖν (αὕτη δὲ ἐστὶν ἡ μέταξα, ἐξ ἧς εἰώθασι τὴν ἐσθῆτα ἐργάζεσθαι, ἣν πάλαι μὲν Ἕλληνες Μηδικὴν ἐκάλουν, τὰ νῦν δὲ σηρικὴν ὀνομά- ζου- σιν), Ὀμηρίται δὲ ὅπως Κάϊσόν τε τὸν φυγάδα φύλαρχον Μααλ- δηνοῖς καταστήσωνται καὶ στρατῷ μεγάλῳ αὐτῶν τε Ὀμηριτῶν καὶ Σαρακηνῶν τῶν Μααλδηνῶν ἐσβάλωσιν ἐς τὴν Περσῶν γῆν.

4. http://en.wikipedia.org/wiki/Constantine_VII

CHAPTER 7. BYZANTINE

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 92, line 11
τοῖς τε γὰρ Αἰθίοφι τὴν μέταξαν ὠνεῖσθαι πρὸς τῶν Ἰνδῶν ἀδύνατα ἦν, ἐπειδὴ αἰεὶ οἱ
Περσῶν ἔμποροι πρὸς αὐτοῖς <τοῖς ὅρμοις> γενόμενοι, οὗ δὴ τὰ πρῶτα αἱ τῶν Ἰνδῶν νῆες
καταΐρουσιν, ἅτε χώραν προσοικούντες τὴν ὁμῶρον, ἅπαντα ὠνεῖσθαι τὰ φορτία εἰώθασιν·
καὶ τοῖς Ὀμηρίταις χαλεπὸν ἔδοξεν εἶναι χώραν ἀμει- ψαμένοις ἔρημόν τε καὶ χρόνου πολλοῦ
ὁδὸν κατατείνουσιν ἐπ' ἀνθρώπους πολλῶ μαχιμωτέρους ἵεναι.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 123, line
30

ἡμῶν δὲ ἐς ἕτερα τρεφάντων τὸν λόγον καὶ φιλοφροσύνῃ τὸν σφῶν αὐτῶν καταπραῦνάντων
θυμόν, μετὰ τὸ δεῖπνον ὡς διανέστημεν, δώροις ὁ Μαξιμίнос Ἐδέκωνα καὶ Ὀρέστην ἐθεράπευσε
σηρικοῖς ἐσθήμασι καὶ λίθοις Ἰνδικοῖς.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 132, line
12

ἐπιμεληθέντες δὲ καὶ τῶν ἵππων καὶ τῶν λοιπῶν ὑποζυγίων παρὰ τὴν βασιλίδαν ἀφικόμεθα,
καὶ αὐτὴν ἀσπασάμενοι καὶ δώ- ροις ἀμειψάμενοι, τρισὶ τε ἀργυραῖς φιάλαις καὶ ἐρυθροῖς
δέρ- μασι καὶ τῷ ἐξ Ἰνδίας πεπέρει καὶ τῷ καρπῷ τῶν φοινίκων καὶ ἑτέροις τραγήμασι διὰ
τὸ μὴ ἐπιχωριάζειν τοῖς βαρβάροις οὗσι τιμίους, ὑπέξιμεν εὐξάμενοι αὐτῇ ἀγαθὰ τῆς ξενίας
πέρει.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 428, line
10

49. Ὅτι πλείστοι ὅσαι πρεσβεῖαι πρὸς Τραϊανὸν παρὰ βαρ- βάρων ἄλλων τε καὶ Ἰνδῶν
ἀφίκοντο.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 478, line 9
ὁπνήκα δ' εἶδε τὸ Ἰνδικὸν ζῶον ὁ Χαγάνος ἐλέφαντα, παραντίκα καταλύει τὸ θέα- τρον
καὶ παλιννοστεῖν προστάττει τὸ θηρίον παρὰ τὸν Καίσαρα, ἢ καταπλαγείς ἢ ἀποφανλίσας
τὸ θαυμαζόμενον, οὐκ ἔχω εἰπεῖν· οὐ γὰρ ἂν ἐκρυψάμην.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 488, line
21

τετάρτη δὲ ἡμέρα, καὶ τῆς Ῥω- μαϊκῆς δυνάμεως εὐσθενούσης τοῖς πρὸς ζωὴν ἀναγκαιοτά-
τοις τῷ βίῳ, ὁ Χαγάνος πρέσβεις ἐξέπεμψεν Ἰνδικὰς ὑπὸ τοῦ Πρίσκου λαβεῖν ἀξίων καρυκείας.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 488, line
23

ὁ μὲν οὖν Πρίσκος τοῦ βαρβάρου τὴν ἀξίωσιν ἐθεράπευε πέπερί τε ἐξέπεμψε καὶ φύλλον
Ἰνδικὸν κας- σίαν τε καὶ τὸ λεγόμενον κόστον.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 514, line
24

αὐτῷ δὲ τὰ Ἰνδῶν ἔφη ἐν τῷ τότε μέλειν.

7.4. CONSTANTINE VII

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 514, line 32

ἦκον δὲ καὶ παρὰ τῶν αὐτονόμων τῶν Ἰνδῶν πρέσβεις παρὰ Ἀλέξανδρον καὶ παρὰ Πώρου ἄλλου τοῦ ὑπάρχου Ἰνδῶν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 515, line 7

6. Ὅτι παρεγένοντο παρὰ Ἀλέξανδρον τῶν Μαλλῶν τῶν ὑπολειπομένων πρέσβεις ἐνδιδόντες τὸ ἔθνος, καὶ παρὰ Ὀξυδρακῶν οἱ τε ἡγεμόνες τῶν πόλεων καὶ οἱ νομάρχαι αὐτοὶ καὶ ἄλλοι ἅμα τούτοις ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα οἱ γνωριμώτατοι αὐτοκράτορες περὶ σπονδῶν δῶρά τε ὅσα μέγιστα παρ' Ἰνδοῖς κομίζοντες καὶ τὸ ἔθνος καὶ οὗτοι ἐνδιδόντες.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 515, line 11

συγγνωστὰ δὲ ἀμαρτεῖν ἔφασαν οὐ πάλα παρ' αὐτὸν πρεσβευσάμενοι· ἐπιθυμεῖν γάρ, ὥσπερ τινὲς ἄλλοι, ἔτι μᾶλλον αὐτοὶ ἐλευθερίας τε καὶ αὐτόνομοι εἶναι, ἥντινα ἐλευθερίαν ἐξ ὅτου Διόνυσος ἐς Ἰνδοὺς ἦκε σῶαν σφίσιν εἶναι ἐς Ἀλέξανδρον· εἰ δὲ Ἀλέξανδρῳ δοκοῦν ἐστίν, ὅτι καὶ Ἀλέξανδρον ἀπὸ θεοῦ γενέσθαι λόγος κατέχει, ξατράπην τε ἀναδέξασθαι ὄντινα τάττοι Ἀλέξανδρος καὶ φόρους ἀποίσειν τοὺς Ἀλέξανδρῳ δόξαντας· δίδοναι δὲ καὶ ὁμήρους ἐθέλειν ὅσους ἂν αἰτῇ Ἀλέξανδρος.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 515, line 18

ὁ δὲ χιλίους ἤτησε τοὺς κρατιστεύοντας τοῦ ἔθνους, οὓς, εἰ μὲν βούλοιντο, ἀντὶ ὁμήρων καθέξειν, εἰ δὲ μὴ, ξυστρατεύοντας ἔξειν, ἐστ' ἂν διαπολεμηθῇ αὐτῷ πρὸς τοὺς ἄλλους Ἰνδοὺς.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 515, line 24

7. Ὅτι καὶ παρὰ Ὀσσαδίων γένους αὐτονόμου Ἰνδικοῦ πρέσβεις ἦκον ἐνδιδόντες καὶ οὗτοι τοὺς Ὀσσαδίους.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De legationibus Page 516, line 8

9. Ὅτι παρελθόντι Ἀλέξανδρῳ ἐς Βαβυλῶνα πρεσβεῖαι παρὰ τῶν Ἑλλήνων ἐνέτυχον, ὑπὲρ ὧν μὲν ἕκαστοι οὐκ ἀναγέγραπται· δοκεῖν δ' ἔμοιγε αἱ πολλαὶ στεφανούντων τε αὐτὸν ἦσαν καὶ ἐπανούντων ἐπὶ ταῖς νίκαις ταῖς τε ἄλλαις καὶ μάλιστα ταῖς Ἰνδικαῖς, καὶ ὅτι σῶος ἐξ Ἰνδῶν ἐπανήκει χαίρειν φασκόντων.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De virtutibus et vitiis (3023: 002) "Excerpta historica iussu imp. Constantini Porphyrogeniti confecta, vol. 2: excerpta de virtutibus et vitiis, pts. 1 & 2", Ed. Büttner-Wobst, T., Roos, A.G. Berlin: Weidmann, 2.1:1906; 2.2:1910. Volume 1, page 147, line 23

Ἐπὶ τούτου γάρ τοῦ μακαρίου καὶ οἱ ἐνδότεροι Ἰνδοὶ καὶ Ἰβηρες προσῆλθον τῷ ἀγίῳ βαπτίσματι, καὶ οἱ Ἀρμένιοι τελείως ἐπίστευσαν μετὰ καὶ τοῦ βασιλέως αὐτῶν Τιριδάτου διὰ τοῦ πολυάθλου μάρτυρος καὶ μεγάλου Γρηγορίου ἀρχιεπισκόπου αὐτῶν.

CHAPTER 7. BYZANTINE

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De virtutibus et vitiis Volume 1, page 246, line 30

(17, 108, 4). Ὅτι Ἄρπαλος ὁ τῶν ἐν Βαβυλῶνι θησαυρῶν καὶ τῶν προσόδων τὴν φυλακὴν πεπιστευμένος, ἐπειδὴ ὁ βασιλεὺς εἰς τὴν Ἰνδικὴν ἐστράτευσεν, ἀπέγνω τὴν ἐπάνοδον αὐτοῦ· δούς δ' αὐτὸν εἰς τρυφὴν καὶ πολλῆς χώρας ἀποδεδειγμένος σατράπης τὸ μὲν πρῶτον εἰς ὕβρεις γυναικῶν καὶ παρανόμους ἔρωτας ἐξετράπη καὶ πολλὰ τῆς γάλης ἀκρατεστάταις ἡδοναῖς κατηνάλωσεν· ἀπὸ δὲ τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης πολὺ διάστημα κομίζων ἰχθύων πλῆθος καὶ δῖαιταν πολυδάπανον ἐνιστάμενος ἐβλασφημεῖτο.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De virtutibus et vitiis Volume 1, page 300, line 26

(33, 18). Ὅτι ὁ Ἀρσάκης ὁ βασιλεὺς ἐπιείκειαν καὶ φιλανθρωπίαν ζηλώσας αὐτομάτην ἔσχε τὴν ἐπὶ ῥοίαν τῶν ἀγαθῶν καὶ τὴν βασιλείαν ἐπὶ πλεῖον ἡύξησε· μέχρις ὅτι τῆς Ἰνδικῆς διατείνας τῆς ὑπὸ τὸν Πῶρον γενομένης χώρας ἐκυρίευσεν ἀκινδύνως.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De virtutibus et vitiis Volume 2, page 253, line 14

καὶ αὐτῷ διὰ τοῦτο πολλοὶ μὲν δῆμοι πολλοὶ δὲ καὶ δυνάσται, ἄλλοι τε καὶ Ἰνδὶβολις καὶ Μανδόνιος Ἰαγερτανοί, προσεχώρησαν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis (3023: 003) “Excerpta historica iussu imp. Constantini Porphyrogeniti confecta, vol. 3: excerpta de insidiis”, Ed. de Boor, C. Berlin: Weidmann, 1905. Page 3, line 24

2. Ὅτι μετὰ τὸν Ἰνδικὸν πόλεμον Σεμίραμις, ἐπεὶ ὁδοιποροῦσα ἐγένετο ἐν Μήδοις, ἀναβᾶσα ἐπὶ τι ὑψηλὸν ὄρος πάντοθεν πλὴν καθ' ἓν μέρος περιερωγὸς καὶ ἄβατον λισσάδι καὶ ἀποτόμῃ πέτρα, ἐθεῖατο τὴν στρατιὰν ἀπὸ τίνος ἐξέδρας, ἣν παραχρῆμα ὠκοδομήσατο.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 47, line 12

Ὁ δὲ νεκρὸς ἔτι ἔκειτο ἐνθα ἔπεσεν ἀτίμως πεφυρμένος αἵματι, ἀνδρὸς ἐλάσαντος μὲν πρὸς ἐσπέραν ἄχρι Βρεττανῶν τε καὶ Ὤκeanοῦ, διανοομένου δ' ἐλαύνειν πρὸς ἑῷ ἐπὶ τὰ Πάρθων ἄρχεια καὶ Ἰνδῶν, ὡς ἂν, κακείνων ὑπηκόων γενομένων, εἰς μίαν ἀρχὴν κεφαλαιωθείη γῆς πάσης καὶ θαλάττης τὰ κράτη· τότε δ' οὐκ ἔκειτο, μηδενὸς τολμῶντος ὑπομένειν καὶ τὸν νεκρὸν ἀναιρεῖσθαι.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 130, line 12

ὁ δὲ τοῦ βασιλέως γαμβρὸς Ζήνων τὴν ὑπατον ἔχων ἀρχὴν ἔστειλε τοὺς τὸν Ἰνδακὸν ἀποστήσοντας ἀπὸ τοῦ λεγομένου Παπιρίου λόφου.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 130, line 15

τοῦτον γὰρ πρῶτος Νέων ἐφώλευε· μεθ' ὃν Παπίριος καὶ ὁ τοῦδε παῖς Ἰνδακός, τοὺς προσοίκους ἅπαντας βιαζόμενοι καὶ τοὺς διδεδυγμένους ἀναιροῦντες.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 138, line 4

ὁ δὲ Ἰλλοὺς τὴν τοῦ φρουρίου φυλακὴν ἐπιτρέψας Ἰνδακῷ Κοττούνῃ τὸ λοιπὸν ἐσχόλαζεν ἀναγνώσει βιβλίων, καὶ ὁ Λεόντιος ἐν νηστείᾳ τε καὶ θρήνοις διετέλει.

7.4. CONSTANTINE VII

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 139, line 10

Ἐπράχθη δὲ καὶ ἡ τοῦ φρουρίου Χέρρις κατάληψις τρόπῳ τοιῷδε. Ἰνδακὸς ὁ Κοττούνης πάλαι τὴν προδοσίαν μελετῶν, ἅμα δὲ καὶ τὴν φυλακὴν τοῦ ἐρύματος ἐπιτετραμμένος, πείθει τὸν Ἰλλοῦν ἔξω τοῦ φρουρίου τοὺς ἄμφ' αὐτὸν παρασκευάσαι, ὥς δὴ τῶν ἐναντίων διὰ τῆς νυκτὸς ἐπιόντων, αὐτὸν τε ἅμα Λεοντίῳ ἐν τῷ συνήθει κατευνασθῆναι κοιτῶνι.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 139, line 18

καὶ πρῶτα μὲν οἱ τῶν πυλῶν φύλακες ἀποσφάττονται, ἔπειτα βοῆς ἀκουσθείσης, ὡς ἔθος ἐστὶ Ῥωμαίοις λέγειν· Ζήνων Αὐγουστε τοῦμβικας, παραχρῆμα μὲν Ἰνδακὸς καὶ οἱ σὺν αὐτῷ προδόντες ἀναιροῦνται, Ἰλλοὺς δὲ καὶ Λεόντιος εἰς τὸ τέμενος τοῦ μάρτυρος Κόνωνος καταφεύγουσιν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 158, line 17

καὶ δεξάμενος τὸ ἔτοιμον τῆς ἀπολογίας αὐτῶν συνεχώρησε τὸ πταῖσμα <καὶ> ἰνδουλγεν-
τίας αὐτοῖς παρασχὼν ἐδέξατο αὐτούς, καὶ ἐκτίσεν αὐτοῖς δημόσιον λουτρὸν τὸ Σεβήριον καὶ ἱερά.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 168, line 8

καὶ πάλιν συνεκροτήθη πόλεμος μετὰ Ἰσαύρων, καὶ εἰσπνέχθησαν αἰχμάλωτοι Σιλοῦν-
τιος καὶ Ἰνδῆς καὶ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ ἀπὸ τῆς Ἰσαυρίας, καὶ Λογγίνος ὁ ἀδελφὸς Ζήνωνος τοῦ βασιλέως ἐξωρίσθη.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 174, line 4

οἱ δὲ τὴν αὐτὴν σκέψιν τῆς ἐπιβουλῆς μελετήσαντες ἦσαν οὗτοι· Ἀβλάβιος ὁ κατὰ Μελ-
τιάδην ὁ μελιστής, καὶ Μάρκελλος ὁ ἀργυροπράτης ὁ τῶν Κιλικίων ὁ ἔχων τὸ ἐργαστήριον
πλησίον τῆς ἀγίας Εἰρήνης τῆς ἀρχαίας καὶ νέας ὁ κατὰ Αἰθέριον τὸν κουράτορα, καὶ Σέργιος
ὁ ἀνεψιὸς τοῦ αὐ- τοῦ Αἰθέριου, ἵνα καθημένου τοῦ βασιλέως ἐν τῷ παλατίῳ ὀφίας πρὸ μινσῶν
σφάξωσιν αὐτὸν στήσαντες καὶ ἀνθρώπους ἰδίους εἰς τε τὸ Ἄρμα καὶ εἰς τὸ Σελεντιαρίκιν καὶ
κατὰ τοὺς Ἰνδοὺς καὶ κατὰ τὸν Ἀρχάγγελον, ἵνα, γινομένης τῆς αὐτῆς ἐπιβουλῆς, ταραχὴν
ποιήσωσιν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De insidiis Page 194, line 1

10. Ὅτι οἱ Σκύθαι τὸν ὁμορον χώρον οἰκοῦντες τῆς Ἰνδικῆς ἐξ ἀρχῆς μὲν ὀλίγην ἐνέμοντο
χώραν, ὕστερον δὲ κατ' ὀλίγον αὐξή- θέντες διὰ τὰς ἀλλὰς καὶ τὴν ἀνδρείαν πολλὴν μὲν
κατεκτήσαντο χώραν, τὸ δὲ ἔθνος εἰς μεγάλην ἡγεμονίαν καὶ δόξαν προήγαγον.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De sententiis (3023: 004)
“Excerpta historica iussu imp. Constantini Porphyrogeniti confecta, vol. 4: excerpta de
sententiis”, Ed. Boissevain, U.P. Berlin: Weidmann, 1906. Page 62, line 23

τὸν δὲ Καύκασον τὸ ὄρος ἐκ τοῦ Πόντου ἐς τὰ πρὸς ἑὼ μέρη τῆς γῆς καὶ τὴν Παραπα-
μισαδῶν χώραν ὡς ἐπὶ Ἰνδοὺς μετὰγειν τῷ λόγῳ τοὺς Μακεδόνας, Παραπάμισον ὄντα τὸ
ὄρος αὐτοὺς καλοῦντας Καύ- κασον τῆς Ἀλεξάνδρου ἕνεκα δόξης, ὡς ὑπὲρ τὸν Καύκασον ἄρα
ἐλθόντα Ἀλέξανδρον.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De sententiis Page 62, line 26

CHAPTER 7. BYZANTINE

ἐν τε αὐτῇ τῇ Ἰνδῶν γῇ βούς ἰδόντας ἐγκε- καυμένας ῥόπαλον τεκμηριοῦσθαι ἐπὶ τῷδε ὅτι Ἡρακλῆς ἐς Ἰνδοὺς ἀφίκετο.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De sententiis Page 63, line 11
καὶ Ἀλέξανδρος τούτῳ ἔτι μᾶλλον τῷ λόγῳ ἡσθεὶς τὴν τε ἀρχὴν τῷ Πάτρῳ τῶν τε αὐτῶν Ἰνδῶν ἔδωκε καὶ ἄλλην ἔτι χώραν πρὸς τῇ πάλαι οὐσῇ πλείονα τῆς πρόσθεν προσέθηκεν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De sententiis Page 64, line 8
18. Ὅτι φησὶν ὁ Ἀρριανός· ἐπὶ τῷδε ἐπαινῶ τοὺς σοφιστὰς τῶν Ἰνδῶν, ὧν λέγουσί τινας συλληφθέντας ὑπ' Ἀλεξάνδρου ὑπαι- θρίους ἐν λειμῶνι, ἵνα περ αὐτοῖς διατριβαὶ ἦσαν, ἄλλο μὲν οὐδὲν ποιῆσαι πρὸς τὴν ὄψιν αὐτοῦ τε καὶ τῆς στρατιᾶς, κρούειν δὲ τοῖς ποσὶ τὴν γῆν ἐφ' ἧς βεβηκότες ἦσαν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De sententiis Page 356, line 6
295. Ὅτι ὁ Ἰνδιβέλης ὁ Κελτίβηρ συγγνώμης τυχὼν παρὰ Σκιπίωνος καιρὸν εὐρὼν ἐπι- τήδειον πάλιν ἐξέκαυσε πόλεμον.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De strategematibus (olim sub auctore Herone Byzantio) (3023: 005) “Griechische Poliorketiker”, Ed. Schneider, R. Berlin: Weidmann, 1909, Repr. 1970; Abhandlungen der königlichen Gesellschaft der Wissenschaften zu Göttingen, Philol.-hist. Kl., N.F. 11, no. 1. Wescher page 203, line 15

Οὐκ ἀπεικὸς οὖν πρὸς τοὺς πολυγραφοῦντας καὶ εἰς οὐκ ἀναγκαίους λόγους τὸν χρόνον κα- ταναλίσκοντας, ἀνθηρολεκτοῦντας πρὸς κενοὺς λόγους, ἄψυχα ἐκφράζοντας κοσμεῖν καὶ ζῶα αἰνοῦντας ἢ ψέγοντας οὐ κατ' ἀξίαν δι' ἐμφασιν τῆς ἑαυτῶν πολυμαθείας, καὶ Κάλανον τὸν Ταξιληνὸν Ἰνδὸν εἰρηκέναι· Ἑλλήνων φιλοσόφοις οὐκ ἔξο- μοιούμεθα παρ' οἷς ὑπὲρ μικρῶν καὶ ἀφελῶν πραγμάτων πολ- λοὶ καὶ δεινοὶ ἀναλίσκονται λόγοι· ἡμεῖς γὰρ ὑπὲρ τῶν μεγίστων καὶ βιωφελεστάτων ἐλάχιστα καὶ ἀπλᾶ, ὥς πᾶσιν εὐμνημόνευτα, παραγγέλλειν εἰώθαμεν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De administrando imperio (3023: 008) “Constantine Porphyrogenitus. De administrando imperio, 2nd edn.”, Ed. Moravcsik, G. Washington, D.C.: Dumbarton Oaks, 1967; Corpus fontium historiae Byzantinae 1 (= Dumbarton Oaks Texts 1). Chapter 16, line 6

Ἐξήλθον οἱ Σαρακηνοὶ μηνὶ Σεπτεμβρίῳ τρίτῃ, ἰνδικτιῶνος δεκάτης, εἰς τὸ δωδέκατον ἔτος Ἡρακλείου, ἔτος ἀπὸ κτίσεως κόσμου 5597'.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De administrando imperio Chapter 27, line 54

Εἰσὶ δὲ μέχρι τῆς σήμερον, ἥτις ἐστὶν ἰνδικτιῶν 5', ἔτη ἀπὸ κτίσεως κόσμου 5597', ἀφ' οὗ ἐμερίσθη ἡ Λαγού- βαρδία, ἔτη σ'.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De administrando imperio Chapter 29, line 234

Ἀφ' οὗ δὲ ἀπὸ Σαλῶνα μετόκη- σαν εἰς τὸ Ῥαούσιον, εἰσὶν ἔτη φ' μέχρι τῆς σήμερον, ἥτις ἰνδικτιῶν 5' ἔτους 5597'.

7.4. CONSTANTINE VII

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De administrando imperio Chapter 45, line 40

Ἀπὸ δὲ τῆς ἐξ Ἱερουσαλήμ μετοικήσεως αὐτῶν εἰς τὴν νῦν οἰκουμένην παρ' αὐτῶν χώραν εἰσὶν ἔτη υ' ἢ καὶ φ' μέχρι τῆς σήμερον, ἥτις ἐστὶν ἰνδικτιῶν ι', ἔτος ἀπὸ κτίσεως κόσμου 559 ἐπὶ τῆς βασιλείας Κωνσταντίνου καὶ Ῥωμανοῦ, τῶν φιλοχρίστων καὶ πορφυρογεννήτων βασιλέων Ῥωμαίων.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De thematibus (3023: 009) “Costantino Porfirogenito. De thematibus”, Ed. Pertusi, A. Vatican City: Biblioteca Apostolica Vaticana, 1952; Studi e Testi 160. Asia-Europe Asia, chapter 1, line 5

Πρὸς δὲ τοὺς κατοικοῦντας τὴν Μεσοποταμίαν Συρίας καὶ τὴν μεγάλην Ἀσίαν, ἐν ἣ κατοικοῦσιν Ἰνδοὶ καὶ Αἰθίοπες καὶ Αἰγύπτιοι, λέγεται δυτικὸν μέσον καὶ Ἀσία μικρά· ἡ γὰρ Ἀνατολή, καθὼς περ ἔφημεν, Ἰνδῶν ἐστὶ καὶ Αἰθιοπῶν καὶ Αἰγυπτίων καὶ τῶν λοιπῶν τῶν Ἀνατολὴν κατοικούντων.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De thematibus Asia-Europe Europ, chapter 8, line 11

Ἀπὸ δὲ τοῦ ἀκρωτηρίου τοῦ καλουμένου Ἀκτίου καὶ τὰς καλουμένας ἰνδικτιῶνας ἐκάλεσεν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De thematibus Asia-Europe Europ, chapter 8, line 12

Οὕτω γὰρ γράφει Ἡσύχιος ὁ Ἰλλουστριος· «ἰνδικτιῶν τουτέστιν ἰνακτιῶν ἢ περὶ τὸ Ἀκτιον νίκη· διὰ τοῦτο ἄρχεται μὲν ἰνδικτιῶν ἀπὸ πρώτης καὶ καταλήγει μέχρι τῆς ιε'· καὶ πάλιν ὑποστρέφει καὶ ἄρχεται ἀπὸ πρώτης, διὰ τὸ τὸν Ἀντώνιον συνάρχοντα γενέσθαι Αὐγούστῳ τῷ Καίσαρι μέχρι τοῦ ιε' χρόνου, μετὰ δὲ ταῦτα μόνος ἐκράτησεν Αὐγούστῳ».

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84–2.56) (3023: 010) “Constantini Porphyrogeniti imperatoris de cerimoniis aulae Byzantinae libri duo, vol. 1”, Ed. Reiske, J.J. Bonn: Weber, 1829; Corpus scriptorum historiae Byzantinae. Page 433, line 4

τῇ οὖν τετάρτῃ τοῦ Ἀπριλίου μηνὸς ἰνδ. ε', μαγίστρου ὄντος Τατιανοῦ, ἐκέλευσεν σιλέντιον καὶ κομέντον καὶ τὰς σχολὰς καὶ τὰ στρατεύματα πάντα παραγενέσθαι ἐν τῷ δέλφαι.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84–2.56) Page 433, line 15

Τελευτήσαντος Ῥωμανοῦ βασιλέως τοῦ νέου, υἱοῦ Κωνσταντίνου τοῦ μεγάλου καὶ πορφυρογεννήτου βασιλέως Ῥωμαίων τοῦ Μακεδόνα, εἰς μῆνα Μάρτιον ιε', ἰνδ. ζ', ἔτους 560, τῇ τεσσαρακοστῇ τῶν νηστεϊῶν, κατέλειπεν τὴν αἰατοῦ βασιλείαν Βασιλείῳ καὶ Κωνσταντίνῳ, τοὺς νηπίους υἱοὺς αὐτοῦ καὶ τὴν ἰδίαν γαμετὴν καὶ αὐγούστην Θεοφανῶ βασιλεύειν τῆς Ῥωμαίων ἀρχῆς.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84–2.56) Page 434, line 2

CHAPTER 7. BYZANTINE

ἐκράτησεν δὲ ἡ τῶν ἐξηθέντων προσώπων ἐξουσία ἀπὸ πεντε- καιδεκάτην μηνὸς Μαρτίου
ινδ. 5' μέχρι Αὐγούστου πεντε- καιδεκάτης, ινδ.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae
(lib. 1.84-2.56) Page 434, line 3

5' μέχρι Αὐγούστου πεντε- καιδεκάτης, ινδ. τῆς αὐτῆς.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae
(lib. 1.84-2.56) Page 434, line 3

Ἰουλίου δὲ μηνὸς δευτέρου, ινδ. ὁμοίως, ἀνηγορεύθη ἐν τοῖς τῆς ἀνατολῆς μέρεσιν ὁ εὐσεβὴς
καὶ φιλόχριστος βασιλεὺς ἡμῶν Νικηφόρος παρὰ τοῦ ἰδίου στρατοπέδου βασιλεὺς Ῥωμαίων.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae
(lib. 1.84-2.56) Page 438, line 3

καὶ τῇ ἐπαύριον, ἐξ- καιδεκάτη τοῦ αὐτοῦ Αὐγούστου μηνὸς, ινδ. 5', ἡμέρα κυ- ριακῇ
πρῶτ' ἐμβὰς εἰς τὸ βασιλικὸν δρομόνιον προσέβαλεν ἐν τῇ χρυσῇ πόρτῃ.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae
(lib. 1.84-2.56) Page 511, line 1

περὶ τῆς δοχῆς τῆς γε- νομένης ἐν τῷ αὐτῷ τρικλίνῳ ἐπὶ Κωνσταντίνου καὶ Ῥωμανοῦ ἐπὶ
τῇ παρουσίᾳ τῶν παρὰ τοῦ Ἀμεριμνῆ ἀπὸ Ταρσοῦ ἐλθόντων πρέσβεων περὶ τοῦ ἀλλαγίου
καὶ τῆς εἰρήνης, μηνὶ Μαΐου λα', ἡμέρα α', ἰνδικτίωνι δ'.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae
(lib. 1.84-2.56) Page 514, line 11

Ἡ κατὰ τῆς αὐτῆς θεολέστου Κρήτης γενομένη ἐκστρα- τεία καὶ ἔξοδος ἐπὶ Κωνσταντίνου
καὶ Ῥωμανοῦ τῶν Πορφυρογεννήτων εἰς ἰνδικτίονα ζ'.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae
(lib. 1.84-2.56) Page 570, line 15t

Περὶ τῆς γενομένης δοχῆς ἐν τῷ περιβλέπτῳ καὶ μεγάλῳ τρικλίνῳ τῆς μανναύρας ἐπὶ
Κωνσταντίνου καὶ Ῥωμανοῦ τῶν Πορφυρογεν- νήτων ἐν Χριστῷ βασιλέων Ῥωμαίων, ἐπὶ τῇ
παρουσίᾳ τῶν παρὰ τοῦ Ἀμεριμνῆ ἀπὸ τῆς Ταρσοῦ ἐλθόντων πρεσβέων περὶ τοῦ ἀλλα- γίου
καὶ τῆς εἰρήνης, μηνὶ Μαΐου λα', ἡμέρα α', ἰνδικτ.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae
(lib. 1.84-2.56) Page 588, line 16t

Περὶ τοῦ γεγονότος ἱπποδρομίου ἐπὶ τῇ ἐλεύσει τῶν φίλων Σαρα- κηνῶν, διὰ τὴν εἰρήνην καὶ
τὸ ἀλλάγιον, εἰς ινδ. δ' ἐπὶ Κων- σταντίνου καὶ Ῥωμανοῦ τῶν Πορφυρογεννήτων βασιλέων.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae
(lib. 1.84-2.56) Page 627, line 17

Χρὴ εἶδέναι, ὅτι κατὰ τὴν τετάρτην τοῦ Ἰουλίου μη- νός, ινδ. ια', ὁ αὐτοκράτωρ καὶ μέγας
βασιλεὺς θελήσας ἀναγορεῦσαι Ἡράκλειον τὸν τούτου υἱὸν ἀπὸ τῆς ἀξίας τοῦ καίσαρος εἰς τὸ
σχῆμα τῆς βασιλείας, ἐποίησεν οὕτως.

7.4. CONSTANTINE VII

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 628, line 23

Χρὴ εἰδέναι, ὡς τῇ πρώτῃ τοῦ Ἰαννουαρίου μηνὸς, ἰνδ. ιβ', ἐποίησεν πρόκενσον ὁ βασιλεὺς ἐν τῇ ἁγιοτάτῃ μεγάλῃ ἐκκλησίᾳ, καὶ ἐξῆλθεν μετ' αὐτοῦ Κωνσταντῖνος ὁ δεσπότης, φορῶν χλανίδιον, καὶ Ἡράκλειος ὁ δεσπότης καὶ υἱὸς αὐ- τοῦ, φορῶν πραΐσεκστον, καὶ παρὰ τοῦ ἰδίου ἀδελφοῦ πα- ρακρατούμενος.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 630, line 14

Χρὴ εἰδέναι, ὅτι τῇ ιγ' τοῦ Δεκεμβρίου μηνὸς, ἰνδ. ιβ', ἐτελειώθη Σέργιος ὁ πατριάρχης Κωνσταντινουπόλεως ἡμέρᾳ κυριακῇ· καὶ μετὰ τὸ δέξασθαι τὸν βασιλέα τοὺς ἄρχοντας κατὰ τὸ εἰωθὸς, ἀπέστειλεν αὐτοὺς εἰς τὴν κηδείαν τοῦ αὐ- τοῦ πατριάρχου.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 641, line 3

καὶ εἰς ἰνδ. δ' ἀνεκαινίσθη ἐξ αὐτῶν ιβ', καὶ τῶν ς' τὰ ἔργα εἰσὶν κατακλα- σμένα μὴ ἔχοντα περιποίησιν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 660, line 14t

Διὰ τῶν ἐν Λαγοβαρδία ταξιδευσάντων ἐπὶ τοῦ κυροῦ Ῥωμανοῦ τοῦ βασιλέως εἰς ἰνδ. η'.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 660, line 16

Τὰ κατελθόντα μετὰ τοῦ πρωτοσπαθαρίου Ἐπιφανίου βασιλοπλόιμα χελάνδια εἰς ἰνδι- κτίονα η' ια'· τὰ προκατελ- θόντα μετὰ τοῦ πατρικίου Κοσμᾶ χελάνδια εἰς ἰνδικτίονα ζ' ια'· Ῥῶς καρᾶβια ζ' ἔχοντα ἄνδρας υἱέ'.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 664, line 6t

Ἦ κατὰ τῆς νήσου Κρήτης γενομένη ἐκστρατεία καὶ ἐξόπλισις τῶν τε πλοΐμων καὶ καβαλ- λαρικῶν ἐπὶ Κωνσταντίνου καὶ Ῥωμανοῦ τῶν Πορφυρογεννήτων ἐν Χριστῷ πιστῶν βασιλέων εἰς ἰνδικτίονα ζ'.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 665, line 2

κατελείφθη δὲ καὶ μία οὐσία εἰς τὸ κόψαι τὴν τῆς ὀγδόης ἰνδικτίονος ξυλὴν.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 665, line 11

κατελείφθη δὲ καὶ εἰς τὸ κόψαι τὴν τῆς ὀγδόης ἰν- δικτίονος ξυλὴν οὐσίαι β'.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 691, line 20

εἰς τὸν ὑπερέχοντα κυριεύοντα Ἰνδίας· “Κων- σταντῖνος καὶ Ῥωμανὸς, πιστοὶ ἐν Χριστῷ τῷ Θεῷ μεγάλοι αὐτοκράτορες βασιεῖς Ῥωμαίων, πρὸς ὁ δεῖνα τὸν ὑπερ- ἔχοντα κύριον τῆς

CHAPTER 7. BYZANTINE

Ἰνδίας, τὸν ἡγαπημένον ἡμῶν φίλον.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.84-2.56) Page 702, line 6t

ΑΚΡΙΒΟΛΟΓΙΑ ΤΗΣ ΤΩΝ ΒΑΣΙΛΙΚΩΝ ΚΛΗΤΩΡΙΩΝ ΚΑΤΑ- ΣΤΑΣΕΩΣ, ΚΑΙ ΕΚΑΣΤΟΥ ΤΩΝ ΑΞΙΩΜΑΤΩΝ ΠΡΟΣΚΛΗΣΙΣ ΚΑΙ ΤΙΜΗ, ΣΥΝΤΑΘΕΙΣΑ ΕΞ ΑΡΧΑΙΩΝ ΚΛΗΤΩΡΟΛΟΓΙΩΝ ΕΠΙ ΛΕΟΝΤΟΣ ΤΟΥ ΦΙΛΟΧΡΙΣΤΟΥ ΚΑΙ ΣΟΦΩΤΑΤΟΥ ΗΜΩΝ ΒΑΣΙΛΕΩΣ, ΜΗΝΙ ΣΕΠΤΕΜΒΡΙΩ, ΙΝΔ*ΙΚΤ.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.1-92) (3023: 011) “Le livre des cérémonies, vols. 1-2”, Ed. Vogt, A. Paris: Les Belles Lettres, 1:1935; 2:1939, Repr. 1967. Volume 1, page 127, line 22

Καὶ εἴθ' οὕτως ἐπαίρουσιν οἱ δεσπότες τὴν λιτὴν ἀπὸ τοῦ ναοῦ τῆς ὑπεραγίας Θεοτόκου, καὶ ἀπέρχονται λιτανεύοντες εἰς τὸν ναὸν τοῦ Ἁγίου Βασιλείου, καὶ κεῖσε ἀποδιδόντες τὴν λιτὴν, ἴστανται μέχρι τῆς ἀπολύσεως τοῦ ἁγίου Εὐαγγελίου, καὶ μετὰ τὴν ἀπόλυσιν τῆς ἐκτενοῦς εἰσέρχονται πάλιν οἰκειακῶς ἐν τῷ Χρυσοτρικλίνῳ, [Συνέβη δὲ καὶ τοῦτο γενέσθαι τῇ αὐτῇ ἡμέρᾳ, ἰνδικ- τιῶνι γ', τῆς λιτῆς τελεσθείσης, καθὼς προεῖρηται, μετὰ τὴν τῆς λειτουργίας ἀπόλυσιν ἐγένετο μεταστάσιμον καὶ ἀπῆλθον πάντες οἱ ἄρχοντες ἐν τῇ Μανναύρᾳ.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.1-92) Volume 2, page 42, line 15

Καὶ μνηύεται ἀφ' ἐσπέρας πᾶσα ἡ σύγκλητος, ἵνα προέλθωσιν ἐπὶ προελεύσει, καὶ τὸ πρῶτ' ἀλλάσσει ἡ σύγκλητος ἐν τῷ μάκρῳ τῶν κανδιδάτων, καὶ οἱ πατρίκιοι ἀλλάσσουσιν εἰς τοὺς Ἰνδούς, μὴ ἔχοντες ἄδειαν εἰσεῖναι ἐν τῷ Κονσιςτωρίῳ, ἵσταμένου τοῦ σένζου.

Constantinus VII Porphyrogenitus Imperator Hist., De cerimoniis aulae Byzantinae (lib. 1.1-92) Volume 2, page 43, line 24

Ὁ δὲ προβληθεὶς μάγιστρος ἐξέρχεται εἰς τοὺς Ἰνδούς, καὶ ἀλλάσσει σαγίον ἀληθινὸν ἐπάνω τοῦ στι- χαρίου αὐτοῦ, καὶ ἀναχωρεῖ εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ εἰ μὲν ἐστὶν πλησιάζων τῷ παλατίῳ ὁ οἶκος αὐτοῦ, ὀφικεύε- ται ὑπὸ ἀξιώματικῶν καὶ δομεστικῶν πεδίτου καὶ σχολαρίων πεδίτου καὶ σκουταρίων τοῦ ἀριθμοῦ καὶ διαιταρίων καὶ δεκα- νῶν· εἰ δὲ ἐστὶν μακρόθεν, οἱ αὐτοὶ ἄνευ τῶν ἀξιώματικῶν.

7.5 Patria of Constantinople

The Patria of Constantinople (Greek: Πάτρια Κωνσταντινουπόλεως), [1] also known by the Latin name *Scriptores originum Constantinopolitarum* (“writers on the origins of Constantinople”), is a Byzantine collection of historical works on the history and monuments of the Byzantine imperial capital of Constantinople (modern Istanbul, Turkey). [2]

7.6. JOANNES RHET (?)

Although in the past attributed to the 14th-century writer George Kodinos,[3] the collection in fact dates from earlier centuries, being probably first compiled in ca. 995 in the reign of Basil II (r. 976–1025) and then revised and added to in the reign of Alexios I Komnenos (r. 1081–1118).[4] (From Wikipedia⁵)

Patria Constantinopoleos, *Διήγησις περὶ τῆς Ἀγίας Σοφίας* (3120: 002) “Scriptores originum Constantinopolitanarum, pt. 1”, Ed. Preger, T. Leipzig: Teubner, 1901, Repr. 1975. Section 23, line 14

Ἐπεκύρωσε δὲ καὶ κτήματα τῆς ἀπὸ Αἰγύπτου καὶ Ἰνδίας καὶ πάσης ἐφ’ ἧς καὶ δύσεως ὑπάρχοντα εἰς διοίκησιν τοῦ ναοῦ· ἐκτυπώσας μίαν ἐκάστην ἐορτὴν δίδοσθαι ἔλαιον μέτρα χιλιάδα μίαν καὶ οἶνου μέτρα τ’, ἄρτους τῆς προθέσεως χιλίους.

7.6 Joannes Rhet (?)

? “” (From Wikipedia⁶)

Joannes Rhet., Prolegomena in Hermogenis librum περὶ ἰδεῶν (4235: 001) “Prolegomenon sylloge”, Ed. Rabe, H. Leipzig: Teubner, 1931; Rhetores Graeci 14. Volume 14, page 413, line 14

ἐπὶ τὴν θεωρίαν, ἐνθα δεῖξομεν κατὰ ποσὸν καταληπτοὺς εἶναι τοὺς χαρακτῆρας, εἴ γε καὶ οἱ περὶ Διονύσιον εἰς ὠρισμένον αὐτοὺς ἀποδεδώκασιν ἀριθμόν· ἐκεῖνο γὰρ λῆρος τὸ τὰς ἐπιτάσεις τούτων καὶ ἀνέσεις ἀντ’ ἄλλων παρὰ τοὺς ἐξ ἀρχῆς ὑπολαμβάνειν· ὠρισμένοι γὰρ ὄντες τὴν ἀρχὴν, καὶ αὐξήσιν ἢ μείωσιν δέξωνται, οὐδὲν ἥττον οἱ αὐτοὶ εἰσιν· ἐπεὶ καὶ τῶν σωμάτων οἱ χαρακτῆρες ἄπειροι δοκοῦντες ἐκ λευκοῦ καὶ μέλανος συν-εστήκασιν, ὧν ὁ μὲν πρὸς ἑκατέραν ἐπίτασιν λευκὸν λέγει τὸν χαρακτῆρα εἶναι ἢ μέλανα, Σκύθην τυχὸν ἢ Ἰνδόν, ἢ δὲ ἐκ τούτων μίξιν, καὶ ἐπὶ τὸ μᾶλλον καὶ ἥττον γένηται, ὑπόλευκον ποιεῖ καὶ εἶναι καὶ λέγεσθαι ἢ ὑπομέλανα ἢ σιτόχρουν καὶ ἢ συνήθεια καλεῖ· καὶ μέντοι ὑπέρυθρόν τι εἴη ἢ φοινικοῦν ἢ ἄλλο τι τῶν τοιούτων, οὐ διὰ τοῦτο ἐρυθρίας λέγεται ὁ ἔχων ἢ φοινικοῦς, ἀλλὰ τι τῶν ὠρισμένων, καὶ ἀπερρίφθω τὰ ἐκ πάθους, παρατροπὴ γάρ ἐστι φύσεως.

Joannes Rhet., Commentarium in Hermogenis librum περὶ ἰδεῶν (4235: 002) “Rhetores Graeci, vol. 6”, Ed. Walz, C. Stuttgart: Cotta, 1834, Repr. 1968. 6, Page 87, line 13

τὸ τελέως, ὡς οὗτοι λέγουσιν, αἰσθήσει καταλαμβάνεται, καὶ οὐδὲν διαφέρει τοῦ ἀκριβοῦς κατὰ ταύτην, ὡς τινες οἰοῦνται· ἀλλ’ ὁ μὲν τὸ ὅλον ταύτη ἀνείη, περὶ τὴν ταύτης τέχνην ἀλόγως ἔχει, καὶ τὴν ἐκείνης διοίκησιν ἀγνοεῖ, μᾶλλον δὲ καὶ πολὺ ἐαπίζειται καὶ ἀπορρίπτεται·

5. http://en.wikipedia.org/wiki/Patria_of_Constantinople

6.

CHAPTER 7. BYZANTINE

ὥσπερ ἴσμεν τινὰ τοῖς θεολογικοῖς ἐπιστήσαντα, τοῦτο δὴ τὸ τοῦ λόγου ἡλίῳ νυκτάλωπα· ὁ δὲ κατὰ μέρος ἔχων ἐπιστημό- νως καὶ ἐμβατεύων μετὰ λόγου ταῖς θεωρίαις, ὃ ἂν βού- ληται λογισμῷ καὶ τέχνῃ ποιῇ, καὶ καθάπερ ὁ ἐπ' Ἀλε- ξάνδρου τοξότης Ἰνδός.

7.7 Michael Apostolius

Michael Apostolius (Μιχαὴλ Ἀποστόλιος or Μιχαὴλ Ἀποστόλης; c. 1420 in Constantinople – after 1474 or 1486, possibly in Venetian Crete) [1] or Apostolius Paroemiographus, i.e. Apostolius the proverb-writer, was a Greek teacher, writer and copyist who lived in the 15th century CE.

Of his numerous works a few have been printed:

Παροιμίαι (Paroemiae, Greek for "proverbs"), a collection of proverbs in Greek an edition published in Basel in 1538, now exceedingly rare a fuller edition edited by Daniel Heinsius ("Curante Heinsio") and published in Leiden in 1619 [2] "Oratio Panegyrica ad Fredericum III." in Freher's Scriptores Rerum Germanicarum, vol. ii. (Frankfort, 1624) Georgii Gemisthi Plethonis et Mich. Apostolii Orationes funebres duae in quibus de Immortalitate Animae exponitur (Leipzig, 1793) a work against the Latin Church and the council of Florence in Le Moine's Varia Sacra. (From Wikipedia⁷)

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum (9009: 001) "Corpus paroemiographorum Graecorum, vol. 2", Ed. von Leutsch, E.L. Göttingen: Vandenhoeck & Ruprecht, 1851, Repr. 1958. Centuria 5, section 9, line 2

<Βοῦς εἰς ἀμητόν:> ἐπὶ τῶν ἐπ' ὠφελείᾳ καμνόντων. <Πτολεμαίῳ τῷ> δευτέρῳ, φασίν, ἐξ Ἰνδῶν κέρασ' ἐκομίσθη καὶ τρεῖς ἀμφορέας ἐχώρησεν.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 7, section 4, line 3

<Ἐλέφαντος οὐδὲν διαφέρει:> ἐπὶ τῶν ἀναισθή- των· παρόσον καὶ τὸ ζῶον τοιοῦτον. <Ἐλέ- φαντος> πω- λὶν περιτυγχάνει λευκῷ πωλευτῇ Ἰνδός, καὶ παραλαβὼν ἔτρεφεν ἔτι νεαρόν καὶ κατὰ μικρὰ ἀπέφηνε χειροῆθη, καὶ ἐπωχεῖτο αὐτῷ· ὁ τοίνυν βασιλεὺς τῶν Ἰνδῶν πυθόμενος, ἥτοι λαβεῖν τὸν ἐλέφанта.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 7, section 4, line 10

7. http://en.wikipedia.org/wiki/Michael_Apostolius

7.7. MICHAEL APOSTOLIUS

ὁ δὲ ὡς ἐράμενον ζηλοτυπῶν καὶ μέντοι περιαλγῶν, εἰ ἔμελλε δεσπόσειν αὐτοῦ ἄλλος, οὐκ ἔφατο δώσειν, καὶ ὥχeto ἀπιὼν ἐς τὴν ἔρημον, ἀνα- βάς τὸν ἐλέφαντα· ἀγανακτεῖ ὁ βασιλεὺς, καὶ πέμπει κατ' αὐτοῦ τοὺς ἀφαιρησομένους, καὶ ἅμα καὶ τὸν Ἰνδὸν ἐπὶ τὴν δίκην ἄξοντας· ἐπεὶ δὲ ἤκον, ἐπειρῶντο πείραν πρὸς- φέρειν· οὐκοῦν καὶ ὁ ἄνθρωπος ἔβαλλεν αὐτοὺς ἄνωθεν, καὶ τὸ θηρίον ὡς ἀδικούμενον συνημύνετο· καὶ τὰ μὲν πρῶτα ἦν τοιαῦτα.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 7, section 4, line 14

ἐπεὶ δὲ βληθεὶς ὁ Ἰνδὸς κατώλισθε, περιβαίνει μὲν τὸν τροφέα ὁ ἐλέφας κατὰ τοὺς ὑπερασπίζοντας ἐν τοῖς ὄπλοις, καὶ τῶν ἐπιόντων πολλοὺς ἀπέ- κτεινε, τοὺς δὲ ἄλλους ἐτρέψατο· περιβαλὼν δὲ τῷ τροφεῖ τὴν προβοσκίδα, αἶρει τε αὐτὸν καὶ ἐπὶ τὰ αὐλῖα κομίζει, καὶ παρέμεινεν ὡς φίλῳ φίλος πιστός.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 7, section 8, line 5

<Ἐλέφας μὴν οὐκ ἀλεγίζει:> ἐπὶ τῶν τὰ μικρὰ καὶ φαῦλα ὑπερορώντων & <Λόγος> τίς ἐστίν, ἐλέφαντα μὴ πρό- τερον πίνειν, πρὶν ἂν ὑποθολώσῃ τῇ προνομαίᾳ τὰ νά- ματα· τὸ δ' αἴτιον, ὅτι μορμολύττεται τὴν ἑαυτοῦ σκιὰν ἐν ὕδατι ὁ ἐλέφας θεώμενος· διὸ καὶ τοὺς Ἰνδοὺς ἐπιτη- ρεῖν ἀσέλγηνον νύκτα, ὅπηνίκα διαπορθμεύωσι, τουτὶ δεδιό- τες τὸ ζῶον.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 7, section 74, line 1

<Ἐποπος Ἰνδοῦ στοργή:> ἐπὶ τῶν ἄλλαν φιλοῦντων προσγενεῖς καὶ φίλους, καὶ ὑπὲρ τούτων θανεῖν αἰρουμένων & <Περὶ τοῦ Ἰνδοῦ> ἔποπος μῦθόν φασιν οἱ Βραχμᾶνες.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 7, section 74, line 4

Ἐγέ- νετο παῖς Ἰνδῶν βασιλεῖ, καὶ ἀδελφοὺς εἶχεν, οἵπερ οὖν ἀνδρωθέντες ἐκδικώτατοι τε γίνονται καὶ λεωργότατοι, καὶ τούτου μὲν ὡς νεωτάτου καταφρονοῦσι, τὸν δὲ πατέρα ἐκερτόμουν καὶ τὴν μητέρα, τὸ γῆρας αὐτῶν ἐκφαυλίσαν- τες· ἀναίνονται οὖν ἐκεῖνοι τὴν σὺν τούτοις διατριβήν, καὶ ὥχοντο φεύγοντες ὃ τε παῖς καὶ οἱ γέροντες.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 7, section 74, line 29

ὃς ἔφασκε λέγων κορυδὸν πάντων πρῶτην ὄρνιθα γενέσθαι, προτέραν τῆς γῆς· κα̐πειτα νόσῳ τὸν πατέρα αὐτῆς ἀποθνήσκειν· γῆν δὲ οὐκ εἶναι· τὸν δὲ προκεῖσθαι πεμ- πταῖον, τὴν δὲ ἀποροῦσαν ὑπ' ἀμηχανίας τὸν πατέρα αὐτῆς ἐν τῇ κε- φαλῇ κατορύξαι· > εἰσὶν οὖν ἐξ Ἰνδῶν τὸ μυθολόγημα ἐπ' ἄλλου μὲν ὄρνι- θος, ἐπιτρέψαι δ' οὖν καὶ τοῖς Ἑλλησιν· ὡγύγιον γάρ τι χρόνου μῆκος λέγουσι Βραχμᾶνες, ἐξ οὗ αὐτῷ τῷ ἔποπι τῷ Ἰνδῷ, ἔτι ἀνθρώπῳ ὄντι καὶ παιδὶ τὴν γε ἡλικίαν, ἐς τοὺς γεναμένους πέπρακται.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 7, section 74, line 32

CHAPTER 7. BYZANTINE

προτέραν τῆς γῆς· κάπειτα νόσῳ τὸν πατέρα αὐτῆς ἀποθνήσκειν· γῆν δὲ οὐκ εἶναι· τὸν δὲ προκείσθαι πεμ- πταῖον, τὴν δὲ ἀποροῦσαν ὑπ' ἀμηχανίας τὸν πατέρα αὐτῆς ἐν τῇ κε- φαλῇ κατορύξαι· > ἔοικεν οὖν ἐξ Ἰνδῶν τὸ μυθολόγημα ἐπ' ἄλλου μὲν ὄρνι- θος, ἐπιῤῥέυσαι δ' οὖν καὶ τοῖς Ἑλλήσιν· ὡγύγιον γάρ τι χρόνου μῆκος λέγουσι Βραχμᾶνες, ἐξ οὗ αὐτῷ τῷ ἔποπι τῷ Ἰνδῷ, ἔτι ἀνθρώπῳ ὄντι καὶ παιδί τὴν γε ἡλικίαν, ἐς τοὺς γεναμένους πέπρακται.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 9, section 75, line 2

<Κερκιῶνων ἐλευθερία:> ἐπὶ τῶν ἀδεσπότης ζῆν ἐθελόντων. > Γίνεται ἐν τοῖς 20 Ἰνδοῖς ὄρνις ὄνομα κερ- κίων, μέγεθος κατὰ ψᾶρας, καὶ ἔστι ποικίλον καὶ μουσῶ- θέν ἀνθρώπων φωνήν.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 9, section 87, line 2

<Κορώνη γράμμα κομίζει:> ἐπὶ τῶν ἀγγελίας ταχείας φερόντων. > Τῷ γὰρ βασιλεῖ τῶν Ἰνδῶν, Μάρης οὗτος ἐκαλεῖτο, ἦν κορώνη θρέμμα πάνυ ἡμέρον· καὶ τῶν ἐπι- στολῶν αἱ ἐβούλετό οἱ κομισθῆναι· που θᾶπτον ἐκόμιζεν αὐτή, καὶ ἦν ἀγγέλων ἀκίστη, καὶ ἀκούσασα ἤδει, ἔνθα ἰθύναι χρή τὸ πτερὸν καὶ τίνα χρή παραδραμεῖν χώρον, καὶ ὅπου ἤκουσαν ἀναπαύσεσθαι, ἀνθ' ὧν ἀποθανοῦσαν αὐτὴν ὁ Μάρης ἐτίμησε καὶ στήλη καὶ τάφῳ. > <Λέγεται καὶ τοῦτο> περὶ κορωνῶν, ὅτι ἀλλήλαις εἰοὶ πιστόταται, καὶ ὅταν εἰς κοινωνίαν συνέλθωσι, πάνυ σφόδρα ἀγαπῶσιν ἀλλήλας· καὶ οὐκ ἂν ἴδοι τις μιγνύμενα ταῦτα τὰ ζῶα

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 10, section 32, line 1

<Κύνες Ἰνδικοί:> θηρία δὲ οἷδε τὴν ψυχὴν θυμοει- δέστατα· καὶ τῶν μὲν ἄλλων ζώων ὑπερφρονοῦσι, λέοντι δὲ ὁμόσε χωρεῖ κύων Ἰνδικὸς καὶ ἐγκείμενον ὑπομένει καὶ βρυχωμένῳ ἀνθυλακτεῖ καὶ ἀντιδάκνει δάκνοντα· καὶ πολλὰ λυπήσας τελευτῶν ἡττᾶται ὁ κύων.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 10, section 32, line 6

εἴη δ' ἂν καὶ λέων ἡττη- θεῖς ὑπὸ κυνὸς Ἰνδοῦ, καὶ μέντοι καὶ δακῶν ὁ κύων ἔχε- ται καὶ μάλα ἐγκρατῶς· κἂν προσελθὼν μαχαίρᾳ τὸ σκέλος ἀποκόπτης τοῦ κυνός, ὁ δὲ οὐκ ἄγει σχολὴν ἀλγῆσας ἀνεί- ναι τὸ δῆγμα, ἀλλ' ἀπεκόπη μὲν πρότερον τὸ σκέλος, νε- κρὸς δὲ ἀνῆκε τὸ στόμα. > <Ἀνθρώπου μόνου> καὶ κυ- νὸς κορεσθέντων ἀναπλεῖ ἡ τροφή.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 10, section 37, line 1

<Κώνωπος ἐλέφας Ἰνδὸς οὐκ ἀλεγίζει.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 11, section 81, line 1

<Μύδας ὀφθαλμοὺς Ἰνδικὸς δοκιμάζει:> ἔστι δὲ ὁ μύδας λίθος ἐν Ἰνδία, διττὰ ἀφίεις τὰ σέλα, τοῖς μὲν πονήρως ἔχουσι τῶν ὀμμάτων θριμὺ καὶ πυρῶδες καὶ ἐπιει- κῶς φλογωπὸν, τοῖς δὲ κατὰ φύσιν καὶ ῥωστικὸν καὶ σω- τήριον.

7.8. PSEUDO-MACARIUS

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 12, section 82, line 4

<Ὀνος λύρας· ἀκούων κινεῖ τὰ ὦτα:> ἐπὶ τῶν ἀπαι- δεύτων· ἢ ἐπὶ τῶν συγκαταθεμένων μηδὲ ἐπαινούντων. <Πέπυσμαι> ὄνους ἀγρίους οὐκ ἐλάττονας ἵππων τὰ με- γέθη ἐν Ἰνδοῖς γίνεσθαι· κέρας δὲ ἔχειν ἐπὶ τῷ μετώπῳ, ὅσον πήχεως τὸ μέγεθος καὶ ἡμίσεος προσέτι, καὶ τὸ μὲν κάτω μέρος τοῦ κέρατος εἶναι λευκόν, τὸ δὲ ἄνω φοινι- κοῦν, τό γε μὴν μέσον μέλαν δεινῶς.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 14, section 71, line 1

<Ποηφάγου δειλότερος· τουτὶ τὸ> ζῶον ἐν Ἰνδοῖς ἐστί, καὶ πέφυκέν γε διπλάσιον ἵππου τὸ μέγεθος· οὐρὰν δὲ ἔχει δασυτάτην καὶ μελαίνης ἀκράτως χροῶς· καὶ εἰσιν αὗται αἱ τρίχες τῶν ἀνθρωπίνων λεπτότεραι ἂν καὶ ἐν μεγάλῳ τίθενται ταύτας ἔχειν Ἰνδῶν αἱ γυναῖκες· καὶ γάρ τοι παραπλέκονται μάλα ἐξ αὐτῶν καὶ κοσμοῦνται ὡραίως, ταῖς πλοκαμίσι ταῖς συμφύτοις καὶ ταύτας ὑποδέουσαι.

Michael Apostolius Paroemiogr., Collectio paroemiarum Centuria 17, section 71, line 2

<Ἵς Διαροῖδων:> ἐπὶ τῶν σκαιῶν καὶ ἀπαιδεύτων· Κράτης. <Ἵν οὔτε> ἄγριον οὔτε ἡμε- ρον ἐν Ἰνδοῖς γενέ- σθαι λέγει Κτησίας, πρόβατα δὲ τὰ ἐκείνων οὐρὰς πήχεως ἔχειν τὸ πλάτος που φησίν.

7.8 Pseudo-Macarius

Macarius of Egypt (ca. 300 – 391) was an Egyptian Christian monk and hermit. He is also known as Macarius the Elder, Macarius the Great and The Lamp of the Desert.

Fifty Spiritual Homilies were ascribed to Macarius a few generations after his death, and these texts had a widespread and considerable influence on Eastern monasticism and Protestant pietism. [5] This was particularly in the context of the debate concerning the 'extraordinary giftings' of the Holy Spirit in the post-apostolic age, since the Macarian Homilies could serve as evidence in favour of a post-apostolic attestation of 'miraculous' Pneumatic giftings to include healings, visions, exorcisms, etc. The Macarian Homilies have thus influenced Pietist groups ranging from the Spiritual Franciscans (West) to Eastern Orthodox monastic practice to John Wesley to modern charismatic Christianity.

However, modern patristic scholars have established that it is not likely that Macarius the Egyptian was their author.[6] Exactly who the author

CHAPTER 7. BYZANTINE

of these fifty Spiritual Homilies was has not been definitively established, although it is evident from statements in them that the author was from Upper Mesopotamia, where the Roman Empire bordered the Persian Empire, and that they were not written later than 534.[7] (From Wikipedia⁸)

Pseudo-Macarius Scr. Eccl., Sermones 64 (collectio B) (2109: 001) “Makarios/Symeon Reden und Briefe, 2 vols.”, Ed. Berthold, H. Berlin: Akademie-Verlag, 1973; Die griechischen christlichen Schriftsteller. Homily 34, chapter 7, section 1, line 3

ὅθεν ἐν τῇ Ἰνδικῇ ἀπὸ τοσούτου διαστήματος μόνον ἀκούσαντες βάρβαροι περὶ Ἰησοῦ, ὅτι ἐν τῇ Παλαιστίνῃ ἐπεφάνη ἐν σώματι ἀνθρώπου, καὶ ἐποίησε σημεῖα σταυρωθεὶς καὶ ἀναστάς, ἐκ τῆς φήμης ἐπίστευσαν τοσοῦτον, ὅτι θεὸς ἐστίν, ὥστε καὶ εἰς μαρτυρίαν καὶ καῦσιν τὰ σώματα αὐτῶν παραδοῦναι.

Pseudo-Macarius Scr. Eccl., Sermones 64 (collectio B) Homily 34, chapter 8, section 1, line 1

Ὡς περ ἴνα ἡ πόλις καὶ εἰσελθόντες Ἰνδοὶ καὶ Σαρακηνοὶ κατὰσχωσιν αὐτήν, ἔλθῃ δὲ ὁ βασιλεὺς, οὗ ἐστίν ἡ πόλις, καὶ ἐκβάλῃ αὐτοὺς καὶ δώῃ αὐτῇ ἰδίαν βασιλείαν καὶ ἰδίαν στρατιάν, ὥστε εἶναι ἐκείνην τὴν πόλιν ἐν χαρᾷ καὶ εἰρήνῃ βαθυτάτῃ, ἔχουσιν ἡμέρον βασιλέα.

7.9 Michael Attaleiates

Michael Attaleiates or Attaliates (Greek: Μιχαήλ Ἀτταλειάτης) (c.1022-1080) was a Byzantine public servant and historian active in Constantinople and around the empire's provinces in the second half of the eleventh century.[1] He was a younger contemporary (possibly even a student) of Michael Psellos and likely an older colleague of John Skylitzes, the two other Byzantine historians of the eleventh century whose work survives.

Michael Attaleiates was probably a native of Attaleia (now Antalya, in Turkey) and moved to Constantinople between 1030 and 1040 to pursue studies in law.[2] During years of service in the empire's judicial system he built a small private fortune. Prominence on the judge's bench also brought him to the attention of a number of emperors who rewarded him with some of the highest honours available to civil servants (patrikios and anthypatos).

8. <http://en.wikipedia.org/wiki/Pseudo-Macarius>

7.9. MICHAEL ATTALEIATES

In 1072 Attaleiates compiled for Emperor Michael VII a synopsis of law, known as the *Ponema Nomikon*, based on the late ninth-century *Basilika*.

In addition he drew up an Ordinance for the Poor House and Monastery which he founded at Constantinople in the mid-1070s. This work, known as the *Diataxis*, is of value for students of the social, economic, cultural and religious history of Byzantium in Constantinople and the provinces during the eleventh century. It also provides invaluable information regarding the life of Attaleiates himself. It includes a catalogue of the books available in the monastery's library, while also offering details about the founder's fortune in the capital and in Thrace. From the *Diataxis* we learn that Attaleiates owned numerous properties (both farms and urban real estate) in Constantinople, Raideustos (mod. Tekirdag), Selymbria (mod. Silivri).

Around 1079/80 Michael Attaleiates circulated *The History*, a political and military history of the Byzantine Empire from 1034 to 1079. This vivid and largely reliable presentation of the empire's declining fortunes after the end of the Macedonian dynasty, offered Attaleiates the opportunity to engage with political questions of his time also addressed, albeit often from a different point of view, by his contemporary Michael Psellos.[3] *The History* concludes with a long encomium to Emperor Nikephoros III Botaneiates, to whom the whole work is dedicated. On account of this encomium and dedication, Attaleiates was for years considered an honest supporter of this elderly and largely ineffective emperor. Careful reading of his text, however, suggests that the words of praise may be less than honest. Instead Attaleiates appears to be partial towards the young military commander and future emperor Alexios Komnenos.[4]

Attaleiates probably died around 1080, shortly before the beginning of the Komnenian era. He therefore had no chance to rededicate his work to the founder of the Komnenian dynasty, Alexios I Komnenos, whom *The History* treats as a potential saviour of the Byzantine state. He was outlived by his son Theodore, who died sometime before 1085. Their bodies, along with those of the judge's two wives, Eirene and Sophia, were put to rest on the grounds of the church of St. George of the Cypresses in the southwestern side of Constantinople. This was the area where the family's Constantinopolitan estates were likely clustered, close to the monastery of Christ Panoikteirmon, of which the Attaleiatai were patrons. One may still visit the church of St George (Samatya Aya Yorgi Rum Ortodoks Kilisesi), which today, after two fires and extensive reconstruction, bears no resemblance to the church of

CHAPTER 7. BYZANTINE

Attaleiates' day.[5] (From Wikipedia⁹)

Michael Attaliates Hist., Historia (3079: 001) "Michaelis Attaliotae historia", Ed. Bekker, I. Bonn: Weber, 1853; Corpus scriptorum historiae Byzantinae.

Michael Attaliates Hist., Historia Page 85, line 12

καὶ ἐώ- κει τῇ μυθευομένη τοῦ Διονύσου στρατιᾷ, ὅτε μετὰ τῶν μαι- νάδων ἐκεῖνος καὶ τῶν Σειληνῶν ταύτην ἐπ' Ἰνδοὺς ἤλαυνεν.

Michael Attaliates Hist., Historia Page 148, line 9

Διελθὼν οὖν ἡμέραν ἐξ ἡμέρας τὴν προκειμένην ὁδὸν, κατέλαβε τὴν Θεοδοσίου πόλιν, ἐπὶ μὲν τῷ πρὸ τοῦ χρόνῳ παραμεληθεῖσαν καὶ ἀοίκητον γενομένην διὰ τὸ ἐν τῇ πολι- τείᾳ τοῦ Ἄρτζη πλησίον οὔσῃ καὶ ἐν καλῇ τῆς θέσεως ὁρῶ- μένῃ μεταθέσθαι τοὺς ἀνθρώπους τὴν οἰκῆσιν, καὶ μεγάλην ἐγκαταστήσαι χωρόπολιν καὶ παντοίων ἀνίων, ὅσα Περσικὴ τε καὶ Ἰνδικὴ καὶ ἡ λοιπὴ Ἀσία φέρει, πλῆθος οὐκ εὐαρίθ- μητον φέρουσιν, πρὸ ὀλίγων δὲ χρόνων ἀνοικοδομηθεῖσαν καὶ κατοχυρωθεῖσαν, τὴν Θεοδοσίου πόλιν λέγω, τάφρῳ καὶ τεί- χεσι διὰ τὴν τῶν Τούρκων ἐκ τοῦ ἀνεπίστου γειτνίασιν, δι' ὧν ἐξ ἐπιδρομῆς ἡ πολιτεία τοῦ Ἄρτζη παμπληθεὶ τὴν σφα- γὴν προϋπέμεινε καὶ τὴν ἄλωσιν.

7.10 George Pachymeres

ation, search Georgios Pachymeres

Georgius Pachymeres (Greek: Γεώργιος Παχυμέρης) (1242 – c. 1310), a Byzantine Greek historian, philosopher and miscellaneous writer, was born at Nicaea, in Bithynia, where his father had taken refuge after the capture of Constantinople by the Latins in 1204. Upon the recovery of The City from the Latin Empire by Michael VIII Palaeologus, Pachymeres settled in Constantinople, studied law, entered the church, and subsequently became chief advocate of the church and chief justice of the imperial court. His literary activity was considerable, his most important work being a Byzantine history in thirteen books, in continuation of that of George Acropolites from 1261 (or rather 1255) to 1308, containing the history of the reigns of Michael and Andronicus II Palaeologus. He was also the author of rhetorical exercises on philosophical themes; of a Quadrivium (arithmetic, music, geometry, astronomy), valuable for the history of music and astronomy in the Middle Ages; a general sketch of Aristotelian philosophy; a paraphrase of the

9. http://en.wikipedia.org/wiki/Michael_Attaliates

7.11. ANTHOLOGIA GRAECA

speeches and letters of Pseudo-Dionysius the Areopagite; poems, including an autobiography; and a description of the square of the Augustaeum, and the column erected by Justinian in the church of Hagia Sophia to commemorate his victories over the Persians. The History was first published in print by I Bekker (1835) in the *Corpus scriptorum hist. byzantinae*; also in JP Migne, *Patrologia Graeca*, vol. cxliii, cxliv; for editions of the minor works see Karl Krumbacher, *Geschichte der byzantinischen Litteratur* (1897). A more recent edition with French translation of the 'History' by Failler and Laurent was published in 1984. An English translation of Books I and II (up to the recovery of Constantinople in 1261), with commentary, exists in the form of a PhD thesis (author Nathan Cassidy) held in the Reid Library of the University of Western Australia. (From Wikipedia¹⁰)

Georgius Pachymeres Hist., *Συγγραφικαὶ ἱστορίαι* (libri vi de Michaelae Palaeologo) (3142: 001) "Georges Pachymérès. Relations historiques, 2 vols.", Ed. Failler, A., Laurent, V. Paris: Les Belles Lettres, 1984; *Corpus fontium historiae Byzantinae* 24.1–2. Series Parisiensis.

Georgius Pachymeres Hist., *Συγγραφικαὶ ἱστορίαι* (libri vii de Andronico Palaeologo) Page 459, line 5

οὗτος αὐτανέψιον ἔχων Τουκταῖν, ᾧ δὴ προσῆκεν ἐκ γένους καὶ ἡ ἀρχή, ἐπεὶ πρὸς θανάτῳ ἦν καὶ οὐ τοῖς ἰδίῳ τρόποις τοὺς ἐκείνου συμβαίνοντας ὑπετόπαζε, παριδὼν αὐτὸν ἔφεδρον εἰς ἀρχὴν ἐκ τοῦ ἀναγκαίου ὄντα, πέμψας μετακαλεῖται τὸν αὐτοῦ ἀδελφὸν περὶ τοῦ τῆς Ἰνδίας μέρη σὺν ἰδίῳ στρατεύματι διατρίβοντα, ᾧ δὴ Χαρμπαντᾶς τοῦνομα· ὁρεοκόμενον εἶπε τις ἂν ἐκείνον, οὕτω συμβὰν ἐπὶ τῇ γεννήσει, φανέντος εὐθὺς τοιούτου, ὡς εἴθιστο σφίσι γεννωμένοις ποιεῖν κατὰ τι νόμιμον.

7.11 Anthologia Graeca

The Greek Anthology (also called *Anthologia Graeca*) is a collection of poems, mostly epigrams, that span the classical and Byzantine periods of Greek literature. Most of the material of the Greek Anthology comes from two manuscripts, the Palatine Anthology of the 10th century and the Anthology of Planudes (or Planudean Anthology) of the 14th century.[1][2] (From Wikipedia¹¹)

10. http://en.wikipedia.org/wiki/Georgius_Pachymeres

11. http://en.wikipedia.org/wiki/Anthologia_Graeca

CHAPTER 7. BYZANTINE

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca (7000: 001) “Anthologia Graeca, 4 vols., 2nd edn.”, Ed. Beckby, H. Munich: Heimeran, 1–2:1965; 3–4:1968. Book 4, epigram 3, line 80

Ἄλλ’ ἴθι νῦν ἀφύλακτος ὅλην ἥπειρον ὁδεύων, Αὐσόνιε, σκίρτησον, ὁδοιπόρε· Μασσαγέτην δὲ ἀμφιθέων ἀγκῶνα καὶ ἄξενα τέμπεα Σούσων Ἰνδῶν ἐπίβηθι κατ’ ὀργάδος· ἐν δὲ κελεύθοις εἴ ποτε διψήσεις, ἄρύεο δούλον Ὑδάσπην.

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 5, epigram 132, line 8

εἰ δ’ Ὀπικὴ καὶ Φλώρα καὶ οὐκ ἄδουσα τὰ Σαπφούς, καὶ Περσεύς Ἰνδῆς ἠράσατ’ Ἀνδρομέδης.

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 5, epigram 251, line 1

ΕΙΡΗΝΑΙΟΥΤ ΡΕΦΕΡΕΝΔΑΡΙΟΥΤ

Ὅμματα δινεύεις κρυφίων ἰνδάλματα πυρσῶν, χεῖλεα δ’ ἀκροβαφῇ λοῖζα παρεκτανύεις, καὶ πολὺ κιχλίζουσα σοβεῖς εὐβόστρυχον αἶγλην, ἐκχυμένας δ’ ὀρώ τὰς σοβαράς παλάμας.

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 5, epigram 270, line 5

μάργαρα σῆς χροῖς ἀπολείπεται, οὐδὲ κομίζει χρυσὸς ἀπεκτῆτου σῆς τριχὸς ἀγλαΐην· Ἰνδῶν δ’ ὑάκινθος ἔχει χάριν αἶθοπος αἶγλης, ἀλλὰ τεῶν λογάδων πολλὸν ἀφαιροτέρην.

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 6, epigram 261, line 1

ΚΡΙΝΑΓΟΡΟΥΤ

Χάλκεον ἀργυρέω με πανείκελον, Ἰνδικὸν ἔργον, ὀλπην, ἡδίστου ξείνιον εἰς ἐτάρου, ἦμαρ ἐπεὶ τόδε σείο γενέθλιον, υἱὲ Σίμωνος, πέμπει γηθομένη σὺν φρενὶ Κριναγόρης.

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 7, epigram 153, line p1

ΟΜΗΡΟΥΤ, οἱ δὲ ΚΛΕΟΒΟΥΛΟΥΤ ΤΟΥ ΛΙΝΔ*ΙΟΥΤ

Χαλκῇ παρθένος εἰμί, Μίδα δ’ ἐπὶ σήματι κείμεαι.

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 9, epigram 524, line 10

ΑΔΕΣΠΟΤΟΝ

Μέλπωμεν βασιλῆα φιλεύιον, εἰραφιώτην, ἀβροκόμην, ἀγροῖκον, αἰοίδιμον, ἀγλαόμορφον, Βοιωτόν, βρόμιον, βακχεύτορα, βοτρυοχαίτην, γηθόσυνον, γονόεντα, γιγαντολέτην, γελώντα, Διογενῆ, δίγονον, διθυραμβογενῆ, Διόνυσον, Εὖιον, εὐχαίτην, εὐάμπελον, ἐχρεσίκωμον, ζηλαῖον, ζάχολον, ζηλήμονα, ζηλοδοτῆρα, ἥπιον, ἡδυνότην, ἡδύθροον, ἡπεροπῆα, θυρσοφόρον, Θρήικα, θιασώτην, θυμολέοντα, Ἰνδολέτην, ἡμερτόν, ἰοπλόκον, ἰραφιώτην, κωμαστήν, κεραόν, κισσοστέφανον, κελαδεινόν, Λυδόν, ληναῖον, λαθικηδέα, λυσιμέριμον, μύστην, μαινόλιον, μεθυδῶτην, μυριόμορφον, νυκτέλιον, νόμιον, νεβρώδεα, νεβριδόπεπλον, ξυστοβόλον, ξυνόν, ξενοδώτην, ξανθοκάρηνον, ὀργίλον, ὀβριμόθυμον, ὀρέσκιον, οὐρεσιφοίτην, πουλυπότην, πλαγκτήρα, πολυστέφανον, πολύκωμον, ρήξινοον, ραδινόν, ρικινάδεα, ρηνοφορῆα, σκιρτητήν, Σάτυρον, Σεμεληγενέτην, Σεμελῆα,

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 9, epigram 544, line 1

ΦΙΛΙΠΠΟΥΤ

7.12. THEOPHANES CONTINUATUS

Θεσσαλῆς εὐίππος ὁ ταυρελάτης χορὸς ἀνδρῶν, χερσὶν ἀτευχήτοις θηρσὶν ὀπλιζόμενος, κεν-
τροτυπῆς πῶλους ζεῦξεν σκιρτήματι ταύρων, ἀμφιβαλεῖν σπεύδων πλέγμα μετωπίδιον· ἀκρό-
τατον δ' ἐς γῆν κλίνας ἅμα κεῦροπον ἅμμα θηρὸς τὴν τόσσην ἐξεκύλισε βίην. ΑΔΑΙΟΥ}1 Ἴνδῆν
βήρυλλον με Τρύφων ἀνέπεισε Γαλήνην εἶναι, καὶ μαλακαῖς χερσὶν ἀνῆκε κόμας· ἠνίδε καὶ
χείλη νοτερὴν λειοῦντα θάλασσαν, καὶ μαστοὺς, τοῖσιν θέλγω ἀνηνεμίνην.

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 11, epigram 428, line 1

<ΤΟΥ ΑΥΤΟΥ>

Εἰς τί μάτην νίπτεις δέμας Ἰνδικόν;

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 16, epigram 39, line 1

ΑΡΑΒΙΟΥ ΣΧΟΛΑΣΤΙΚΟΥ

Νεῖλος, Πέρσις, Ἴβηρ, Σόλυμοι, Δύσις, Ἀρμενίς, Ἴνδοι καὶ Κόλχοι σκοπέλων ἐγγύθι Καυ-
κασίων καὶ πεδία ζείοντα πολυσπερέων Ἀγαρηνῶν Λογγίνου ταχινῶν μάρτυρές εἰσι πόνων·
ὡς δὲ ταχὺς βασιλῆι διάκτορος ἦεν ὁδεύων, καὶ ταχὺς εἰρήνην ὥπασε κευθομένην.

Anthologia Graeca, Anthologia Graeca Book 16, epigram 183, line 6

καὶ γὰρ ἐμοὶ πολέμων φίλιον κλέος· οἶδεν ἅπας μοι ἡΐου δμηθεὶς Ἴνδὸς ἀπ' ὠκεανοῦ.

7.12 Theophanes Continuatus

Theophanes Continuatus (Greek: *συνεχισταί Θεοφάνους*) or Scriptores post Theophanem (*Οἱ μετὰ Θεοφάνην*, "those after Theophanes") is the Latin name commonly applied to a collection of historical writings preserved in the 11th-century Vat. gr. 167 manuscript.[1] Its name derives from its role as the continuation, covering the years 813–961, of the chronicle of Theophanes the Confessor, which reaches from 285 to 813. The manuscript consists of four distinct works, in style and form very unlike the annalistic approach of Theophanes.[2]

The first work, of four books consists of a series of biographies on the emperors reigning from 813 to 867 (from Leo the Armenian to Michael III). As they were commissioned by Emperor Constantine VII (r. 913–959), they reflect the point of view of the reigning Macedonian dynasty. The unknown author probably used the same sources as Genesios.[2] The second work is known as the *Vita Basilii* (Latin for "Life of Basil"), a biography of Basil I the Macedonian (r. 867–886) written by his grandson Constantine VII probably around 950. The work is essentially a panegyric, praising Basil and his reign while vilifying his predecessor, Michael III.[3] The third work is a

CHAPTER 7. BYZANTINE

history of the years 886–948, in form and content very close to the history of Symeon Logothetes, and the final section continues it until 961. It was probably written by Theodore Daphnopates, shortly before 963.[4] (From Wikipedia¹²)

Theophanes Continuatus, Chronographia (lib. 1–6) (4153: 001) “Theophanes Continuatus, Ioannes Cameniata, Symeon Magister, Georgius Monachus”, Ed. Bekker, I. Bonn: Weber, 1838; Corpus scriptorum historiae Byzantinae.

Theophanes Continuatus, Chronographia (lib. 1–6) Page 55, line 6

ὅθεν τοῦ μὲν βουλευματος οὐ διήμαρτεν τοῦ οἱ- κείου, ἀλλὰ καὶ στέφους μεταλαγχάνει καὶ αὐτοκράτωρ ἀναγο- ρεύεται παρὰ τοῦ τὸν ἐν Ἀντιοχείᾳ θρόνον τῆνικαῦτα μεταποιου- μένου Ἰακώβ, καὶ χεῖρα συλλέγει πολλήν, μᾶλλον δὲ λαμβάνει πρὸς τὴν αὐτοῦ κραταίωσιν· οὐ γὰρ Ἀγαρηνῶν μόνον τούτων δὴ τῶν ἡμῖν γειτονούντων καὶ ὁμορούντων, ἀλλὰ καὶ αὐτῶν τῶν ἐν- δότερον οἰκούντων, Αἰγυπτίων Ἰνδῶν Περσῶν Ἀσσυρίων Ἀρμε- νίων Χάλδων Ἰβήρων Ζηχῶν Καβείρων καὶ πάντων τῶν δὴ Μά- νεντος συστοιχούντων δόγμασι καὶ θεσπίσμασι.

Theophanes Continuatus, Chronographia (lib. 1–6) Page 330, line 23

ἡ δὲ διείργουσα τὰ ἄδυστα τοῦ θείου οἴκου τούτου κιγκλῖς, Ἡράκλεις, ὅσον ὄλβον ἐν ἑαυτῇ περιείλη- φεν! ἥς οἱ στῦλοι μὲν καὶ τὰ κάτωθεν ἐξ ἀργύρου διόλου τὴν σύ- στασιν ἔχουσιν, ἡ δὲ ταῖς κεφαλῇσι τούτων ἐπικειμένη δοκὸς ἐκ καθαροῦ χρυσοῦ πᾶσα συνέστηκε, τὸν πλοῦτον πάντα τὸν ἐξ Ἰν- δῶν περικεχυμένον πάντοθεν ἔχουσα· ἐν ᾗ κατὰ πολλὰ μέρη καὶ ἡ θεανδρική τοῦ κυρίου μορφή μετὰ χυμεύσεως ἐκτετύπεται.

καὶ ταῖς γὰρ πολυτελέσι καὶ πολυλόφοις ἐκείναις τραπέζαις τὴν σύγ- κλητον ἄπασαν δεξιούμενος χορηγίαις εὐεργετικωτέραις τὸ φαιδρὸν τῆς ἐορτῆς ἐπολλαπλασίαζεν, σπηρικῶν πε- ριβολαίων ἐπιδίδων, ἀρ- γυρίων πολλῶν καὶ ἀπείρων, ἐσθημάτων ἀλουργῶν, ξύλων Ἰνδι- κῶν εὐωδίας, ἃ οὐ τις ἀκήκοεν ἢ γεγονότα τεθεάσθαι.

7.13 Manuel Philes

Manuel Philes (c. 1275–1345), of Ephesus, Byzantine poet.

At an early age he removed to Constantinople, where he was the pupil of Georgius Pachymeres, in whose honour he composed a memorial poem. Philes appears to have travelled extensively, and his writings contain much information concerning the imperial court and distinguished Byzantines. Having offended one of the emperors by indiscreet remarks published in

12. http://en.wikipedia.org/wiki/Theophanes_Continuatus

7.13. MANUEL PHILES

a chronography, he was thrown into prison and only released after an abject apology.

Philes is the counterpart of Theodorus Prodromus in the time of the Comneni; his character, as shown in his poems, is that of a begging poet, always pleading poverty, and ready to descend to the grossest flattery to obtain the favorable notice of the great. With one unimportant exception, his productions are in verse, the greater part in dodecasyllabic iambic trimeters, the remainder in the fifteen-syllable "political" measure.

Philes was the author of poems on a great variety of subjects: on the characteristics of animals, chiefly based upon Aelian and Oppian, a didactic poem of some 2000 lines, dedicated to Michael IX Palaiologos; on the elephant; on plants; a necrological poem, probably written on the death of one of the sons of the imperial house; a panegyric on John VI Kantakouzenos, in the form of a dialogue; a conversation between a man and his soul; on ecclesiastical subjects, such as church festivals, Christian beliefs, the saints and fathers of the church; on works of art, perhaps the most valuable of all his pieces for their bearing on Byzantine iconography, since the writer had before him the works he describes, and also the most successful from a literary point of view; occasional poems, many of which are simply begging letters in verse. (From Wikipedia¹³)

Manuel Philes Poeta, Scr. Rerum Nat., Carmina (2718: 001) "Manuelis Philae Carmina, vols. 1–2", Ed. Miller, E. Paris, 1855–1857, Repr. 1967. Chapter 1, poem 213, line 63

Φρενῶν δὲ μεστήν εὐτυχεῖς τὴν καρδίαν, Ἡρακλῆς Ἑρμῇ, καὶ σφριγᾶς πρὸς τὰς μάχας
Καὶ τοῖς πονηροῖς ἐξ ἀπόπτου συμπλέκη Πρηνστῆρσιν ὀργῆς τὴν καλὴν θήγων σπάθην, Καὶ
πρὶν μὲν ἐλθεῖν εἰς βελῶν περιστάσεις, Ὁρᾶς ἱλαρὸν ὀπτικὸν χέων μέλι· Τομῶς δὲ χωρῶν εἰς τὸ
πῦρ τοῦ κινδύνου, Τὸ βλέμμα γοργὸν καὶ φλογῶδες δεικνύεις Καθάπερ ὄξυς καὶ πολύστροφος
δράκων Ὅταν πρὸς ἐλέφαντας Ἰνδοὺς ἐρπύση Καὶ τὸν μαχιμώτατον αὐτῶν ἀρπάσῃ.

Manuel Philes Poeta, Scr. Rerum Nat., Carmina Chapter 2, poem 95, line 107

Καὶ τοῦτ' ἀπαρχὴν τῷ θεῷ δοὺς τοῦ κράτους, Εἶτα προχωρεῖς εἰς τὰ λοιπὰ τῆς τύχης, Καὶ
τῶν μὲν ἐθνῶν τὰς παρατάξεις λύεις, Στρατευμάτων ἄπειρον ἰσχὺν συλλέγων· Καὶ τὸ ἔφος
πρόκωπον εἰς πάντας φέρων, Οὓς εἶδεν ἐχθροὺς ὁδρομεὺς τότε χρόνος, Τῷ δὲ κράτει σχοίνισμα
τὰς πράξεις δίδως Αἷς βαρβάρων ἥρηκας ἀρχισατράπας, Καὶ πᾶσαν ἀπλῶς δυσμενῶν ὁμαι-
χμίαν, Ὡς ἄχρῃς Ἰνδῶν καὶ Σκυθῶν καὶ Περσίδος Καὶ γῆς Ἰταλῶν καὶ Μυσῶν πολυσπόρων,
Τὴν σὴν διελθεῖν εὐχερῶς κραταρχίαν· Ποῖος γὰρ οὐκ ἔγνω σε πορθμὸς δεσπότην;

Manuel Philes Poeta, Scr. Rerum Nat., Carmina Chapter 2, poem 214, line 22

13. http://en.wikipedia.org/wiki/Manuel_Philes

CHAPTER 7. BYZANTINE

Γαλῇ δὲ μὺς ἐξ ὅπῃς δεδραγμένη τοῖς ὀστέοις βέβρυχε τοῦ θηράματος· Ὁξὺς δὲ κυνὸς καὶ πολὺστροφος δρόμος Αἰρεῖ λαγῶν εἰς φυγὴν ἡπειγμένον· Φεύγει δὲ τοὺς δράκοντας Ἰνδὸς ἐλέφας, Στυγῶν τὸν ὄλκον ὡς ταχὺν πρὸς ἀγχόνῃν, Τάχα δὲ καὶ πῦρ καὶ κριὸν καὶ δέλφακα, Καὶ μὺν κρεμαστὸν εἰς λινόπλοκον βρόχον.

Manuel Philes Poeta, Scr. Rerum Nat., Carmina Chapter 3, poem 58, line 71

Εἰς τόξα πυκνὰ καὶ βελῶν περικλάσεις, Εἰς ἀγρίας φάραγγας, εἰς τραχεῖς τόπους, Εἰς ἄξυλον γῆν, εἰς περίξυλον λόφον, Εἰς ὑδάτων ἔρημον οὐχ ἅπαξ τρίβον, Εἰς θῆρας ὀξεῖς, εἰς ἀνίκμους σκορπίους, Εἰς νιφετούς τε καὶ κρυμούς ὀλεθρίους, Εἰς ἡλιακὰς ἐν μεσημβρίᾳ ζέσεις, Εἰς ἀκρατεῖς αἰάλαπας, εἰς ἐπομβρίας, Εἰς Πέρσας, εἰς Ἀραβας, εἰς πτηνοὺς Σκύθας, Εἰς βαρβάρων δύναμιν, εἰς Ἰνδῶν θράσος, Τὰ παντοδαπὰ δυσχερῇ τῆς Περσίδος;

7.14 Joannes Zonaras

Ioannes (John) Zonaras (Greek: Ἰωάννης Ζωναρᾶς; fl. 12th century) was a Byzantine chronicler and theologian, who lived at Constantinople.

Under Emperor Alexios I Komnenos he held the offices of head justice and private secretary (protasēkrētis) to the emperor, but after Alexios' death, he retired to the monastery of St Glykeria, where he spent the rest of his life in writing books.

His most important work, Extracts of History (Greek: Ἐπιτομή Ἱστοριῶν, Latin: Epitome Historiarum), in eighteen books, extends from the creation of the world to the death of Alexius (1118). The earlier part is largely drawn from Josephus; for Roman history he chiefly followed Cassius Dio up to the early third century. Contemporary scholars are particularly interested in his account of the third and fourth centuries, which depend upon sources, now lost, whose nature is fiercely debated. Central to this debate is the work of Bruno Bleckmann, whose arguments tend to be supported by continental scholars but rejected in part by English-speaking scholars.[1] An English translation of these important sections has recently been published: Thomas Banchich and Eugene Lane, *The History of Zonaras from Alexander Severus to the Death of Theodosius the Great* (Routledge 2009). The chief original part of Zonaras' history is the section on the reign of Alexios Komnenos, whom he criticizes for the favour shown to members of his family, to whom

7.14. JOANNES ZONARAS

Alexios entrusted vast estates and significant state offices. His history was continued by Nicetas Acominatus. (From Wikipedia¹⁴)

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) (3135: 001) “Ioannis Zonarae epitome historiarum, 3 vols.”, Ed. Dindorf, L. Leipzig: Teubner, 1:1868; 2:1869; 3:1870. Volume 1, page 16, line 8

καὶ Φεισῶν μὲν ὄνομα τῶ ἐνὶ· πληθὺν δὲ τοῦτο δη- λοῖ· τοῖς δ’ Ἑλλησι Γάργγης οὗτος ἀνόμασται, τὴν Ἰνδικὴν διῶν καὶ ἐκδιδούς εἰς τὸ πέλαγος.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 24, line 14

Σὴμ δὲ τῶ υἱῶ Νῶε πέντε τίκτονται παῖδες, οἳ τὴν μέχρῃς ὠκεανοῦ τοῦ κατ’ Ἰνδῖαν οἰκοῦσιν Ἀσίαν, ἀπ’ Εὐφράτου ἀρξάμενοι.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 200, line 16

τῇ τε γὰρ Ἰνδία προσέβαλε καὶ τὸν Πῶρον ἐνίκησε καὶ τὸν Ταξίλην ὠκείωσατο καὶ ἄλλα μέρη τῆς Ἰνδικῆς κατέσχευεν.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 228, line 6

ταῦτα δὲ διανοηθεὶς τοὺς τε ὑφ’ ἑαυτὸν ἡτοίμαζεν, ἔπεμψε δὲ καὶ πρὸς Κροῖσον τὸν βασιλέα Λυδῶν καὶ πρὸς ἄμφω τοὺς Φρύγας, πρὸς Παφλαγόνας τε καὶ Ἰνδοὺς καὶ πρὸς Κᾶρας καὶ Κίλικας, αἰτῶν συμμα- χήσιν αὐτῶ κατὰ Μήδων ὠρμημένῳ, ὥς καὶ αὐτοῖς τοῦ πολέμου συμφέροντος, δυνατὸν εἶναι λέγων τὸ ἔθνος, ἐπιγαμίαν τε πρὸς Πέρσας πεποιημένον καὶ τὴν παρ’ ἐκείνων προσκτήσασθαι ἀρωγὴν, καὶ θάτε- ρον συγκροτεῖσθαι παρὰ θατέρου, ὥστε εἰ μὴ τις αὐ- τοὺς φθάσας ἀσθενώσῃ, ἐκάστω τῶν ἐθνῶν ἐπιόν- τας κρατήσῃ αὐτῶν.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 228, line 31

ἐν τούτοις δὲ παρὰ Κυαζάρου ἦκεν ἄγγελος λέγων ὅτι Ἰνδῶν παρεῖη πρεσβεία, καὶ “δεῖ παρεῖναι καὶ σέ.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 229, line 2

φέρω δέ σοι καὶ στολὴν τὴν καλλίστην· βούλεται γὰρ σε προσάγειν ἐστολισμένον λαμπρό- τατα, ἵν’ οὕτω τοῖς Ἰνδοῖς ὀφθείῃς.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 229, line 5

κληθέντες δὲ οἱ Ἰνδοὶ εἶπον ἐστάλ- θαι παρὰ τοῦ σφετέρου βασιλέως ἐρωτῶντος ἐξ οὗ ὁ πόλεμος εἴη Μήδοις τε καὶ τῶ Ἀσσυρίῳ, τὰ αὐτὰ δὲ πυθέσθαι καὶ κείνου, καὶ ἀμφοτέροις εἰπεῖν ὅτι ὁ Ἰν- δῶν βασιλεὺς τὸ δίκαιον σκεψάμενος μετὰ τοῦ ἡδι- κημένου ἔσται.

14. http://en.wikipedia.org/wiki/Joannes_Zonaras

CHAPTER 7. BYZANTINE

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 229, line 13

ὁ δὲ Κῦρος εἶπεν “εἰ παρ’ ἡμῶν ἀδικεῖσθαί φησιν ὁ Ἀσσύριος, ὦ Ἴνδοί, αὐτὸν αἰ- ρούμεθα δικαστὴν τὸν βασιλέα ὑμῶν.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 245, line 3

Ἦλθον δὲ τῷ Κύρῳ παρὰ τοῦ Ἰνδοῦ χρήματα, καὶ οἱ ἄγοντες αὐτὰ ἀπήγγελλον αὐτῷ ὅτι ὁ Ἰνδὸς λέγει ὡς “ἡδομαι, ὦ Κῦρε, ὅτι μοι περὶ ὧν ἐδέου ἐδήλωσας, καὶ βούλομαι σοι ξένος εἶναι, καὶ πέμπω σοι χρήματα, καὶ ἄλλων δέη, μεταπέμπου· ἐντέταλται δὲ τοῖς παρ’ ἐμοῦ ποιεῖν ὃ ἂν σὺ κελεύῃς.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 245, line 12

ὁ δὲ Κῦρος “κελεύω τοίνυν” εἶπε “τοὺς μὲν ἄλλους μένον- τας ἐνθα κατεσκηνώσατε φυ- λάττειν τὰ χρήματα, τρεῖς δέ μοι ἐλθόντες ὑμῶν εἰς τοὺς πολεμίους ὡς παρὰ τοῦ Ἰνδοῦ περὶ συμμαχίας, καὶ τὰ ἐκεῖ μαθόντες ὃ, τι ἂν λέγῳσί τε καὶ ποιῶσιν ὡς τάχιστα ἀπαγγείλατε ἐμοί τε καὶ τῷ Ἰνδῷ.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 245, line 14

οἱ μὲν δὴ Ἴνδοι συσκευασά- μενοι τῇ ὑστεραίᾳ ἐπορεύοντο, ὁ δὲ Κῦρος τὰ πρὸς τὸν πόλεμον παρεσκευάζετο μεγαλοπρεπῶς.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 245, line 24

οὕτω δὲ διατιθεμένων τῷ Κύρῳ τῶν τοῦ πολέμου ἤκον οἱ Ἴνδοι ἐκ τῶν πολε- μίων καὶ ἔλεγον ὅτι Κροῖσος ἡγεμὼν καὶ στρατηγὸς ἤρηται, καὶ πολλοὶ μὲν βασιλεῖς, πολλὰ δ’ ἔθνη καὶ Ἕλληνες συμμαχήσιν ἡτοίμασται.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 297, line 11

Μέλλων δὲ εἰς τὴν Ἰνδικὴν ἐμβάλλειν, συνε- σκευασμένων τῶν ἀμαξῶν πρώταις μὲν ταῖς οἰκείαις ἐνῆκε πῦρ, εἶτα καὶ ταῖς τῶν φίλων, καὶ μετὰ ταῦτα καὶ τὰς τῶν Μακεδόνων κατα- πρῆσαι ἐκέλευσε.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 298, line 7

Ὁ μέντοι Ταξίλης μοίρας ἄρχων τῆς Ἰνδικῆς παμ- φόρου τε καὶ εὐδαίμονος, οὐκ ἀποδεούσης Αἰγύπτου, σοφὸς δὲ ὧν ἀνὴρ, πέμψας ἡσπάσατο τὸν Ἀλέξαν- δρον καὶ “τί δεῖ πολέμων ἡμῖν” ἔφη, “εἰ μήτε ὕδωρ ἀφαιρησόμενος ἡμῶν ἀφίξαι μήτε τροφὴν ἀναγκαίαν;

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 298, line 19

7.14. JOANNES ZONARAS

σπεισάμενος δὲ τινι πόλει τῶν Ἰνδικῶν, ἀπιόντας ἐκεῖθεν τοὺς ἐν αὐτῇ μισθοφοροῦντας τῶν μαχιμωτάτων Ἰνδῶν ἀπέκτεινεν ἅπαντας· ὁ τοῖς αὐτοῦ πολεμικοῖς ἔργοις οἷά τις κηλὶς πρόσσεστιν.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 298, line 23

εἵτα πρὸς Πῶρον ἐμαχέ- σατο, καὶ τοῦτον χώρας Ἰνδικῆς βασιλεύοντα, τὸ μέ- γεθος τοῦ σώματος ἔχοντα εἰς τέσσαρας πῆχεις ἀνα- τρέχον καὶ σπιθαμὴν.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 299, line 17

ἐν δὲ Μαλλοῖς γεγονώς, μαχιμωτάτοις οὖσιν Ἰνδῶν, μικροῦ ἐκινδύνευσε.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 1, page 300, line 28

εἵτα ἀναστρέφων τὰς μὲν ναῦς παραπλεῖν ἐν δεξιᾷ τὴν Ἰνδικὴν ἐχούσας ἐκέλευσεν, αὐτὸς δὲ περὶ πορευόμενος εἰς ἐσχάτην ἀπορίαν κατήντησε καὶ πλῆθος τοσοῦτον ἀπώλεσεν ὥστε τῆς στρατιᾶς μὴδὲ τὸ τέταρτον ἐκ τῆς Ἰνδικῆς ἀνακομισθῆναι διὰ νό- σους καὶ πονηρὰς διαίτας καὶ καύματα καὶ λιμόν.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 2, page 280, line 8

καὶ μετὰ τοῦτο τὴν μισθοφορὰν τοῖς ἄλλοις δούς ἐπὶ τὸν Ἰνδὶβιλιν καὶ ἐπὶ τὸν Μανδόνιον ἐστράτευσε.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 2, page 442, line 14

καὶ ὁ Αὐγουστος ἐθνῶν ἡγεμονίας τισὶ δέδω- κώς ἐπανῆλθεν εἰς Σάμον, καὶ αὐτὸς ἐχείμασε καὶ πολλὰ διώκησεν· ἀφίκοντο γὰρ ἐνταῦθα πρε- βεῖαι πλείεσται· καὶ οἱ Ἰνδοὶ τότε φιλίαν ἐποίησαντο, δῶρα πέμψαντες ἄλλα τε καὶ τίγρεις, πρῶτον τότε Ῥωμαίοις ὀφθείσας.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 3, page 17, line 16

ὁ δὲ τὸν τοῦ Ἀλεξάνδρου, ὡς ἔλεγε, θῶ- ρακα ἐνδυσάμενος καὶ ἐπ' αὐτῷ χλαμύδα σηρικὴν ἀλουργῇ πολὺ μὲν χρυσίον, πολλοὺς δὲ λίθους Ἰνδι- κοὺς ἔχουσιν, καὶ ξίφος περιζωσάμενος καὶ ἀσπίδα λαβὼν δρυὶ τε στεφανωσάμενος, σπουδῇ καθάπερ ἐπὶ πολεμίαν εἰς τὴν πόλιν εἰσῆλασε, παμπληθεῖς ἰππεῖς τε καὶ πεζοὺς ὠπλισμένους ἐπαγόμενος· καὶ ἄλλα δὲ τινα τοιαῦτα ποιήσας καὶ ἑαυτὸν ἀποσεμνύ- νας ἐν δημηγορίᾳ διὰ ταῦτα ἐς τὸν Δαρεῖον καὶ τὸν Ξέρξην ἀπέσκωπτεν, ὡς πολλαπλάσιον ἢ ἐκεῖνοι τῆς θαλάσσης μέτρον ζεύξας αὐτός.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 1-12) Volume 3, page 69, line 24

ἐνενοεῖ δὲ καὶ Ἰνδούς, καὶ ἔλεγεν ὡς “εἰ νέος ἔτι ἦν, καὶ ἐπ' αὐ- τοὺς ἂν ἐπεραιώθην.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 13-18) (3135: 002)
“Ioannis Zonarae epitomae historiarum libri xviii, vol. 3”, Ed. Büttner-Wobst, T. Bonn:

CHAPTER 7. BYZANTINE

Weber, 1897; Corpus scriptorum historiae Byzantinae. Page 156, line 18

Ἐν δὲ τῇ στάσει ταύτῃ, ὡς εἴρηται, τῆς μεγάλης ἐκκλησίας καυθείσης, ἥς δομήτωρ ἦν ὁ Κωνσταντῖος, ἑτέραν πολλῶν μείζω καὶ περιφανεστέραν ὁ βασιλεὺς Ἰουστινιανὸς ἀπήρξατο καινουργεῖν, τῆς οἰκοδομῆς αὐτῆς ἀρχθείσης κατὰ τὸ 550 ἔτος, ἰνδικτιῶνος πεντεκαίδεκάτης ἐνισταμένης ἐν Φεβρουαρίῳ μηνί.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 13-18) Page 172, line 6

μοναχοὶ δὲ δύο τινὲς πρὸς τὸ Βυζάντιον ἐξ Ἰνδίας ἀφικόμενοι τὴν ταύτης γένεσιν ἀφηγήσαντο καὶ ὑπισχνοῦντο κομίσαι τῶν σκωλήκων ἐκεῖνων γόνον, ὥα ὄντα τὸν ὄγκον βραχύτατα, καὶ δεῖξαι Ῥωμαίοις ὅπως ἐκεῖνα ζωογονοῦνται θαλπόμενα καὶ εἰς σκώληκας μεταμείβονται, καὶ ὅπως δημιουργοῦσι τὴν μέταξιν, τὴν φύσιν σχόντα διδάσκαλον.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 13-18) Page 241, line 6

Ἄ μαθὼν Ἰουστινιανὸς τοὺς μὲν τοῦ Ἠλίας παιδᾶς ἐν τῷ κόλπῳ κατέσφαξε τῆς μητρός, ἐκείνην δὲ δούλῳ αὐτῆς Ἰνδῶν μαγεῖρῳ συνέζευξεν.

Joannes Zonaras Gramm., Hist., Epitome historiarum (lib. 13-18) Page 634, line 11

ἐπεὶ δ' ἡ Περσῶν ἀρχὴ ἢ μᾶλλον ἢ Μακεδόνων, ἢ τὴν Περσῶν βασιλείαν καθεῖλεν, ὑπὸ Σαρακηνῶν καθήρητο, εἶτα καὶ οὗτοι πρὸς ἀλλήλους στασιάσαντες εἰς ἀντιπάλους μοῖρας διήρηντο καὶ ἀλλήλοις ἐμάχοντο, Μουχούμετ ὁ τοῦ Ἰμβραήλ, Περσίδος ἄρχων καὶ Χορασμίων καὶ Μηδίας καὶ τινῶν ἄλλων, πόλεμον ἤρατο κατὰ τοὺς χρόνους Βασιλείου τοῦ βασιλέως κατὰ Βαβυλωνίων τε καὶ Ἰνδῶν, ἡττώμενος δὲ συμμαχικὸν ἐκ Τούρκων μετεπέμφατο· ἦν δὲ τοῖς εἰς συμμαχίαν ἐλθοῦσι τῷ Μουχούμετ στρατηγὸς Ταγγρολίπιξ Μουκάλετ.

7.15 *Scholia In Clementem Alexandrinum*

Titus Flavius Clemens (c.150 – c. 215), known as Clement of Alexandria, was a Christian theologian who taught at the Catechetical School of Alexandria. A convert to Christianity, he was an educated man who was familiar with classical Greek philosophy and literature. As his three major works demonstrate, Clement was influenced by Hellenistic philosophy to a greater extent than any other Christian thinker of his time, and in particular by Plato and the Stoics.[1] His secret works, which exist only in fragments, attest that he was also familiar with pre-Christian Jewish esotericism and Gnosticism. Among his pupils were Origen and Alexander of Jerusalem.

Clement is regarded as a Church Father, and he is venerated as a saint in Orthodox Christianity, Eastern Catholicism and Anglicanism. He was previously revered in the Roman Catholic Church, but his cult was suppressed

7.16. PHALARIDIS EPISTULAE

in 1586 by Pope Sixtus V due to concerns about his orthodoxy. (From Wikipedia¹⁵)

Scholia In Clementem Alexandrinum, Scholia in protrepticum et paedagogum (scholia recentiora partim sub auctore Aretha) (5048: 001) “Clemens Alexandrinus, vol. 1, 3rd edn.”, Ed. Stählin, O., Treu, U. Berlin: Akademie-Verlag, 1972; Die griechischen christlichen Schriftsteller 12. Page 337, line 22

253, 21 ὅρνεις Ἰνδικούς] ψιττακούς φησι.

7.16 Phalaridis Epistulae

Who is this?

Phalaridis Epistulae, Epistulae (0053: 001) “Epistolographi Graeci”, Ed. Hercher, R. Paris: Didot, 1873, Repr. 1965. Epistle 86, section 1, line 3

Πολλὰ λέγειν ἔχων καὶ κατὰ σοῦ καὶ περὶ ἧς κατ' ἐμοῦ πεφλυάρηκας ἐν Λεοντίνοις δημοκοπίας οὐδὲν ἐρῶ περισσώτερον πλὴν ὅτι κώνωπος ἐλέφας Ἰνδὸς οὐκ ἀλεγίζει.

7.17 Theodorus Scutariota

Who is this? Theodorus Scutariota Hist., Additamenta ad Georgii Acropolitae historiam (3157: 001) “Georgii Acropolitae opera, vol. 1”, Ed. Heisenberg, A. Leipzig: Teubner, 1903, Repr. 1978 (1st edn. corr. P. Wirth). Fragment 33, line 46

ἐν δὲ τῇ κατὰ Λυδίαν Μαγνησίᾳ, ὅπου καὶ τὰ πλείω τῶν χρημάτων ἀπέθετο, τί τίς ἂν ἐζήτησεν ἀφ' ὧν ἄνθρωποι χρῆζομεν, καὶ οὐχ εὐρὼν ἐκκληρώσατο τὴν ἀπόλαυσιν, οὐ τῶν ἐν τοῖς ἡμετέροις τόποις εὕρισκομένων ἀλλὰ καὶ ὅσα ἐνιαχοῦ τῆς οἰκουμένης, κατ' Αἴγυπτόν φημι καὶ Ἰνδίαν καὶ ἀλλαχοῦ;

7.18 Nikephoros I of Constantinople

St. Nikephoros I or Nicephorus I (Greek: Νικηφόρος Α', Nikēphoros I), (c. 758 – April 5, 828) was a Christian Byzantine writer and Ecumenical Patriarch of Constantinople from April 12, 806, to March 13, 815. (From Wikipedia¹⁶)

15. http://en.wikipedia.org/wiki/Clement_of_Alexandria

16. http://en.wikipedia.org/wiki/Nikephoros_I_of_Constantinople

CHAPTER 7. BYZANTINE

Nicephorus I Scr. Eccl., Hist., Theol., Breviarium historicum de rebus gestis post imperium Mauricii (e cod. Vat. gr. 977) (3086: 001) “Nicephori archiepiscopi Constantinopolitani opuscula historica”, Ed. de Boor, C. Leipzig: Teubner, 1880, Repr. 1975.

Nicephorus I Scr. Eccl., Hist., Theol., Breviarium historicum de rebus gestis post imperium Mauricii (e cod. Vat. gr. 977) Page 46, line 15

τούτων αἰσθόμενος Ἰουστινιανὸς καὶ μείζονι θυμῷ ἑξαπτό- μενος τὰ μὲν Ἡλία τέκνα τῷ μητρῷ κόλπῳ φερόμενα ἀναλίσκει, τὴν δὲ αὐτοῦ γυναῖκα τῷ ἰδίῳ μαγεῖρῳ ζευχθῆ- ναι ἠνάγκασεν, Ἰνδῷ τῷ γένει καὶ ὅλῳ δυσειδεῖ τυγχάνοντι.

Nicephorus I Scr. Eccl., Hist., Theol., Chronographia brevis [Dub.] (recensiones duae) (3086: 002) “Nicephori archiepiscopi Constantinopolitani opuscula historica”, Ed. de Boor, C. Leipzig: Teubner, 1880, Repr. 1975. Page 98, line 20

Τῷ ζ' ἔτει αὐτοῦ ἐπληρώθη κύκλος α' τοῦ ἀγίου πάσχα ἐτῶν φλβ', ἐξότε ὁ κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς ἐσταυ- ρώθη 8[ινδ. 5'] ἔτους ἀπὸ κτίσεως κόσμου 555'.

Nicephorus I Scr. Eccl., Hist., Theol., Chronographia brevis [Dub.] (recensiones duae) Page 99, line 11

Ἐτους γ' τῆς βασιλείας αὐτοῦ ὁ Πέρσης 8[Χοσρόης] πλεῖστον μέρος τῆς Ῥωμαίων πα- ρέλαβε πολιτείας καὶ τὰ Ἱεροσόλυμα καὶ τοὺς σεβασμίους τόπους ἐνέπρησε πλήθη τε λαῶν ἡχμαλώτευσεν σὺν τῷ πατριάρχῃ Ζαχαρία καὶ τοῖς τιμίσις ξύλοις εἰς Περσίδα ἀπήγαγεν· ἔτει δὲ αὐτοῦ ιβ' Χοσρόης 8[ὁ Πέρσης] ἀνῆρέθη καὶ ἡ αἰχμα- λωσία ἀνεκλήθη, καὶ ὁ ζω- ποιὸς σταυρὸς τοῖς ἰδίσις τόποις ἀπεκατέστη 8[ἀνεγερθεῖσιν]. Οἱ δὲ Σαρακηνοὶ ἤρξαντο τῆς τοῦ παντός ἐρημώσεως τῷ 557' ἔτει ινδ. ζ'.

Nicephorus I Scr. Eccl., Hist., Theol., Chronographia brevis [Dub.] (recensiones duae) Page 102, line 22

Ἀπὸ δὲ Κωνσταντίνου ἕως Θεοφίλου ινδ. ε' ἔτη φλ'.

Nicephorus I Scr. Eccl., Hist., Theol., Refutatio et eversio definitionis synodalis anni 815 (3086: 012) “Nicephori Patriarchae Constantinopolitani Refutatio et Eversio Definitionis Synodalis Anni 815”, Ed. Featherstone, J.M. Turnhout: Brepols, 1997; Corpus Christianorum, Series Graeca 33. Chapter 2, line 23

λα περιστολίζοντο· ὅτε θεῖος φόβος ταῖς ψυχαῖς τῶν εὐσε- βούντων ἐνίδρυτο καὶ ἡ περὶ τὰ θεῖα αἰδώς καὶ εὐλάβεια· ὅτε τὸ τῆς ἀγάπης δῶρον πανταχοῦ διαφοιτῶν περιηγέλλετο· ὅτε τὰ τῆς ἱερωσύνης δίκαια κομῶντα συνδιεφυλάσσετο καὶ οἱ ἱερεῖς κυρίου δικαιοσύνην ἐνεδύκεσαν, ὥσπερ στολὴν ἀγίαν περιχλαινιζόμενοι τὴν εὐσέβειαν, ἀμφιεννύμενοι δὲ κρῖμα ἴσα διπλοῖδι, καὶ ἡ εὐλογία κυρίου πᾶσιν ἐπέπρεπεν, εἰ δὲ τι καὶ τῶν Ἰᾶβ φθέγγασθαι ἐρημάτων· ὅτε καὶ βασιλεῖς μέγα ἐφρό- νουν ἐπ' εὐσεβείᾳ μᾶλλον ἢ τῷ διαδήματι καὶ χρυσῷ καὶ λίθοις τοῖς Ἰνδικαῖς λαμπρὸν ἀπαστράπτουσιν, εὐθύτητι δὲ δογμάτων ἢ τῷ ἀλουργῷ ἐκαλλωπίζοντο χρώματι καὶ ὅσον <***> τρόπαια στήσωσι.

7.19. JOSEPHUS GENESIUS

7.19 Josephus Genesis

Genesisius (Greek: Γενέσιος, Genesios) is the conventional name given to the anonymous Greek author of the tenth century chronicle, *On the reign of the emperors*. His first name is sometimes given as Joseph, combining him with a "Joseph Genesis" quoted in the preamble to John Skylitzes. Traditionally, he has been regarded as the son or grandson of Constantine Maniakes.

Composed at the court of Constantine VII, the chronicle opens in 814, covers the Second Iconoclast period and ends in 886. It presents the events largely from the view of the Macedonian dynasty, though with a skew less marked than the authors of *Theophanes Continuatus*, a collection of mostly anonymous chronicles meant to continue the work of *Theophanes the Confessor*.

The chronicle describes the reigns of the four emperors from Leo V down to Michael III in detail; and more briefly that of Basil I. It uses *Constantine VII's Life of Basil* as a source, though it appears to have been finished before *Theophanes Continuatus*, and gives information present in neither *Continuatus* nor *Skylitzes*. Modern editions

English

Genesios, Joseph, A. Kaldellis. (trans.) *On the reigns of the emperors*. *Byzantina Australiensia*, 11. Canberra: Australian Association for Byzantine Studies, 1998. ISBN 0-9593626-9-X.

Greek

A. Lesmüller-Werner, and H. Thurn, *Corpus Fontium Historiae Byzantinae*, Vol. XIV, Series Berolinensis. Berlin: De Gruyter, 1973. ISSN 0589-8048.

(From Wikipedia¹⁷)

Josephus Genesisius Hist., *Βασιλείαι* (3040: 001) "Iosephi Genesii regum libri quattuor", Ed. Lesmüller-Werner, A., Thurn, J. Berlin: De Gruyter, 1978; *Corpus fontium historiae Byzantinae* 14. Series Berolinensis.

Josephus Genesisius Hist., *Βασιλείαι* Book 2, section 2, line 33

ποιεῖται τοῖνυν σπονδὰς μετ' Ἀγαρηνῶν, εἰδήσει τοῦ αὐτῶν ἀρχηγοῦ ἀναδεῖται στέφος βα-
σίλειον παρὰ τοῦ ἀρχιερέως Ἀντιοχείας Ἰάβ, εἶτα μετ' Ἀγαρηνῶν Ἰνδῶν Αἰγυπτίων Ἀσσυρίων

17. http://en.wikipedia.org/wiki/Joseph_Genesius

CHAPTER 7. BYZANTINE

Μήδων Ἀβασίων Ζηχῶν Ἰβήρων Καβείρων Σκλάβων Οὐννων Βανδή-λων Γετῶν καὶ ὅσοι τῆς Μάνεντος βδελυρίας μετεῖχον, Λαζῶν τε καὶ Ἀλανῶν Χάλδων τε καὶ Ἀρμενίων καὶ ἐτέρων παντοίων ἐθνῶν πολυθρύλ-λητον πανστρατιάν στρατοπεδευσάμενος ἀπάσης τῆς ἀνατολῆς ἐκυρίευσεν, τελευταῖον μέρεσι τοῖς κατὰ Θράκην προσεμπελάσας ἐλεπολεῖν τὸ Βυζάντιον ἐκβιάζεται ἱππεῦσιν εὐόπλοις καὶ πετροβολισταῖς τοῖς ὑπὸ χεῖρα πεζοῖς, ἔτι καὶ σφενδονισταῖς γε καὶ πελτασταῖς ἀμέτροις ἐπιρρωννύμενος, προσέτι μὴν καὶ πολιορκητικοῖς οὐκ ὀλίγοις τεχνάσμασι κρατυνόμενος.

Josephus Genesius Hist., Βασιλεῖαι Book 2, section 5, line 47

μετ' οὐ πολὺ δὲ καὶ αὐτὸς σὺν π' χιλιάσιν ἐφίσταται τῇ πόλει, ἐπὶ δὲ τῷ προτέρως ποιηθέντι υἱῷ καὶ ἑτερον ἀναδείκνυσιν, Ἀναστάσιον ὄνομα, πάλαι μὲν εἰς τοὺς καλουμένους τελέσαντα μοναχούς, εἰς κοσμικῶν δὲ τρόπων φαυλότητι τάξιν ἐληλυθότα, αἰσχρὸν τὸ εἶδος, ὥστε δοκεῖν ἐξ οἰνοποσίας ἰνδογενῆς εἶναι, μοχθηρότερον τῇ ψυχῇ ὑπὸ ἐμπληξίας ἐσχάτης.

7.20 Nicephorus Gregoras

Nikephoros Gregoras, Latinized as Nicephorus Gregoras (Greek: Νικηφόρος Γρηγοράς; c. 1295-1360), Byzantine astronomer, historian, man of learning and religious controversialist, was born at Heraclea Pontica. (From Wikipedia¹⁸)

Nicephorus Gregoras Hist., Historia Romana (4145: 001) “Nicephori Gregorae historiae Byzantinae, 3 vols.”, Ed. Schopen, L., Bekker, I. Bonn: Weber, 1:1829; 2:1830; 3:1855; Corpus scriptorum historiae Byzantinae. Volume 1, page 9, line 22

οὐ μὴν ἀλλ' ἔσθ' ὅτε καὶ δι' ἀμαθίαν τοῦ βελτίονος καὶ ἀπειρίαν πραγμάτων ἅπερ ὁτουοῦν ἠκηκόε-σαν, πρὶν βασανίσαι, εἰ τὰ μὲν τῶν εἰκότων τάδ' ἦκιστα, καὶ τὰ μὲν ἔοικεν ἀληθείας οἴκοις ἐνδιδαιτᾶσθαι, τάδ' ὑπερόριον ἀλη-θείας τείνουσι γλῶσσαν, οὕτω ταῦτ' ἐφαπλοῦσι ταῖς ἑαυτῶν συγγραφαῖς καὶ τῷ χρόνῳ, αἰτιώμενοί τε τὰ ἀναίτια, καὶ φά-σκοντες ἂ μὴτ' ἐγέ-νοντο, μῆτε γενέσθαι τῶν δυνατῶν ἦν· οἷας τοῦ Πλάτωνος τὰς ἰδέας ἀκούομεν, καὶ ὅσοι τοὺς τραγελάφους ἐκ τῶν τῆς Ἰνδίας τεράτων ἐς τὰς τῆς Ἀσίας διαβιβάζουσιν ἀκοάς, ἐκ μὴ ὄντων αὐθις μὴ ὄντα καθιστῶντες, ἵνα μᾶλλον ἐκπλήττω-σι τοὺς ἀκούοντας.

Nicephorus Gregoras Hist., Historia Romana Volume 1, page 38, line 6

(Δ.) Ἀλλὰ γὰρ ἦρος ἐπιγενομένου, ὅτε πᾶν τὸ πρόσωπον τῆς γῆς τὴν χλόην τῆς πόας ἐνδύεται, τὰ παρὰ τοὺς πρόποδας τῶν ὄρων χειμάδια καταλιπόντες οἱ Σκύθαι, καθάπερ αἰ-πόλια καὶ βουκόλια, κατὰ πλῆθος τὰς κορυφὰς τῶν ὄρων ὑπερβάλλουσι, ῥέουσί τε κατὰ τῶν

18. http://en.wikipedia.org/wiki/Nicephorus_Gregoras

7.20. NICEPHORUS GREGORAS

ὑποκειμένων ἐθνῶν καὶ πάν- τας ἐν λόγῳ λείας ποιούμενοι, καταντῶσιν ἐς Ἰνδικήν, ὅποση ἐφ' ἐκάτερα κεῖται τοῦ μεγίστου τῶν ποταμῶν Ἰνδοῦ.

Nicephorus Gregoras Hist., Historia Romana Volume 1, page 107, line 5

οἱ γὰρ κατ' Αἴγυπτον Ἀραβες πλείστην προσειληφότες δύναμιν διὰ τοῦ Σκυθικοῦ στρατεύμα- τος ἐκείνου, καθάπερ ἔφθηνεν εἰρηκότες, πλείστον ὅσον μάλα ἐξήν τοὺς οἰκείους παρῆδραμον ὄρους· πρὸς μὲν ἐσπέραν Λιβύας καὶ ὅσα Μαυρουσίων ἔθνη δουλωσάμενοι· πρὸς δ' ἀνατέλλοντα ἥλιον ἔνθεν μὲν Ἀραβίαν εὐδαίμονα πᾶσαν ὅσῃν τὰ τε ἄκρα τῶν Ἰνδικῶν ὀρίζει θαλασσῶν καὶ ἐκατέρωθεν ὃ, τε Περσικὸς καὶ ὁ Ἀραβικὸς τειχίζουσι κόλποι· ἔνθεν δὲ τὴν τε Κοίλιν Συρίαν καὶ τὴν Φοινίκην πᾶσαν, ὅσῃν ὁ ποταμὸς Ὀρόντης ἔνδον ποιεῖ- ται, τοὺς τῶν Κελτογαλατῶν ἐκείνων ἐκγόνους τοὺς μὲν ἐκεῖθεν ἀποβήσαντες, τοὺς δ' ἐς ὀλεθρον, οἷον πολέμιος ὑποτίθεται νό- μος, ὀλίγου παραπέμψαντες χρόνου.

Nicephorus Gregoras Hist., Historia Romana Volume 1, page 188, line 21

τοιούτον μέντοι καὶ τῶν ἐν Ἰνδοῖς σοφιστῶν ἡ παραί- νεσις ὑφηγεῖται τὸν ἄρχην βουλόμενον· οὕτω γὰρ ἂν τὰ μάλιστά φησι φιληθείη τοῖς ὑπ' αὐτόν, ἂν φύσει τούτων ὑπέρτερος ᾖν, ὃ δ' ἔπειτ' ἐπικεικὴς ἐκὼν γε εἶναι σφισιν ὁράται καὶ μέτριος.

Nicephorus Gregoras Hist., Historia Romana Volume 1, page 332, line 23

πείθομαι γὰρ μὴδ' ἂν τοῖς ἐπ' ἔσχατα γῆς Κελτοῖς, οὐδ' ἂν οὐδέσιν ὅσοι πρὸς τῷ ὠκεανῷ τυγχάνουσιν ὄντες, οὐ μέντοι οὐδ' ἂν ἐνδεῖν σου τῆς φήμης, οὐδ' αὐτοῖς Ἰνδοῖς· ἀλλὰ κακέειπεν τὸ κύρος σε δέχεσθαι τοῦ νικᾶν περιουσίᾳ φρονήσεως πάντα ἀνθρώπων γένη.

Nicephorus Gregoras Hist., Historia Romana Volume 1, page 369, line 13

Ἀλεξανδρεῖς μὲν γὰρ πρὸ τριῶν ἡμερῶν τῆς πρώτης τοῦ καθ' ἡμᾶς σεπτεμβρίου τὴν ἀρχὴν τοῦ σφετέρου τίθενται ἔτους· Αἰγύ- πτιοι δὲ νῦν μὲν αὐτὴν, νῦν δ' ἑτέραν, καὶ ἄλλοτ' ἄλλην αἰεῖ· καὶ Πέρσαι δὲ καὶ Μῆδοι καὶ Ἰνδοὶ τούτοις τε πᾶσι καὶ σφισιν αὐτοῖς ἀλλήλοις ἀσύμφωνα.

Nicephorus Gregoras Hist., Historia Romana Volume 2, page 807, line 24

ᾧ δ' ἐκατέροις τοῖς βίοις ἐν πείρᾳ γενέσθαι τετύχη- κεν, ἄρχεσθαι μᾶλλον οὗτος ἢ βασι- λεύειν ἔλοιτ' ἂν οἶμαι μάλα προθύμως, καὶ πένητα μᾶλλον τρίβειν βίον, ἢ ὃς μυρίαὶς περι- στοιχίζεται δόξαις καὶ χρήμασιν· εἰ δ' οὖν, λεγέτω τις παρελθὼν, πῶς Ἀλέξανδρος ἐκεῖνος ὁ μέ- γας, ὁ μέχρις Ἰνδῶν τὰ τῆς Εὐρώ- πης διαβιβάσας ὅπλα, τὸν εὐτελῆ τοῦ Διογένους πίθον καὶ τὴν διεξέρωγυϊαν ἀμπέχεσθαι μᾶλλον ἐσθῆτα ποθεῖν ὡμολόγει, ἢ τὴν τῆς ὅλης Ἀσίας τε καὶ Εὐρώπης ἔχειν ἀρχὴν, καὶ τὸν Βαβυλώ- νιον ἐκεῖνον περιβεβλησθαι πλουτόν· ὅθεν καὶ τὸ πολὺ τῆς ῥα- στῶννης χεθὲν Δαρείῳ καὶ Πέρσαις ὄνειρον ἔδειξεν εἶναι σαφῶς τὰς δοκούσας εὐδαίμονας τύχας τοῦ βίου.

Nicephorus Gregoras Hist., Historia Romana Volume 3, page 19, line 3

ἐξ ὅτου γὰρ τὸ Σκυθικὸν ἐπιρρεῦσαν γένος καὶ ἐκχυθὲν ἄνωθεν ποθεν ἐξ ἀρκτικῶν πηγῶν καθάπερ ἀχανοῦς τινὸς ὕδωρ πελάγους, Πέρσας τε ἐδουλώσατο καὶ Μήδους καὶ πᾶσαν εἰπεῖν ταυτηνὴ τὴν Ἀσίαν ἄχρις Ἰνδῶν τε ἐκείνων πρὸς ἑω καὶ ἄχρις Ἀράβων τουτωνῶν πρὸς νότον, οὐ μόνον τὰ πλείω τῶν ἐγχωρίων ἡθῶν ἐκείνων ἔσβη καὶ ἐτεθνήκει, ἀλλὰ καὶ αὐτὰ τῶν ἐθνῶν

CHAPTER 7. BYZANTINE

ἐκεῖνων τὰ τοπικὰ διαστήματα τε καὶ ὅρια συγκέχεται καὶ παντάπασιν ἐστὶ δυσεῖκαστα νῦν.

Nicephorus Gregoras Hist., Historia Romana Volume 3, page 354, line 8

οὔτε γὰρ οὐδὲν πρὸς ἔπος ἔοικε λέγειν, ἀλλ' ἄλλην τρέχων ἄλλην ἐβάδισεν, οὔτε εἰ ἀντιλέγειν ἐβούλετο, τὰς ὁμῶσε προσηκούσας ἀντιθέσεις ἐπήνεγκεν, ἀλλ' ὁμοιον ποιεῖ ὥσπερ ἂν εἰ τὴν πρὸς ἑω τῶν τε Αἰθιόπων καὶ Ἰνδῶν εἰπεῖν ἀπαιτούμενος οἴκησιν, ὃ δ' ἐκ διαμέτρου τοὺς ἐσπερίους ἐπειρᾶτο δεικνύειν Κελτούς, καὶ ὅποι τὰ Βρετανῶν προσοικοῦσιν ἔθνη.

7.21 Anthologiae Graecae Appendix

The Greek Anthology (also called Anthologia Graeca) is a collection of poems, mostly epigrams, that span the classical and Byzantine periods of Greek literature. Most of the material of the Greek Anthology comes from two manuscripts, the Palatine Anthology of the 10th century and the Anthology of Planudes (or Planudean Anthology) of the 14th century.[1][2] (From Wikipedia¹⁹)

Anthologiae Graecae Appendix, Epigrammata sepulcralia (7052: 002)
“Epigrammatum anthologia Palatina cum Planudeis et appendice nova, vol. 3”,
Ed. Cougny, E. Paris: Didot, 1890.

Anthologiae Graecae Appendix, Epigrammata sepulcralia Epigram 402, line 7

Ἀλλὰ σὺ, Γαῖα, πέλοις ἀγαθὴ κούφη τ' Ἀκυλίνῳ, καὶ δὲ παρὰ πλευρὰς ἀνθεα λαρὰ φύοις,
ὅσσα κατ' Ἀραβίους τε φέρεις, ὅσα τ' ἐστὶ κατ' Ἰνδοῦς, ὡς ἂν ἀπ' εὐόδμου χρωτὸς ἰούσα δρόσος
ἀγγέλλῃ τὸν παῖδα θεοῖς φίλον ἔνδοθι κεῖσθαι, λοιβῆς καὶ θυέων ἄξιον, οὐχὶ γόων.

Anthologiae Graecae Appendix, Epigrammata demonstrativa (7052: 003)
“Epigrammatum anthologia Palatina cum Planudeis et appendice nova, vol. 3”,
Ed. Cougny, E. Paris: Didot, 1890. Epigram 55, line 3

..... Ὑσμίνην δεδάηκας ἀμετροβίων ἐλεφάντων· Ἰνδοφόρων κρατεροὺς οὐ τρομέεις
πολέμους.

Anthologiae Graecae Appendix, Epigrammata demonstrativa Epigram 76, line 1

Ἀμφιλόχου τοῦ Λάγου Ποντωρέως. Ἦκει καὶ Νείλου προχοὰς καὶ ἐπ' ἔσχατον Ἰνδὸν
τέχνας Ἀμφιλόχοιο μέγα κλέος ἀφθιτον αἰί.

Anthologiae Graecae Appendix, Epigrammata exhortatoria et supplicatoria (7052: 004)
“Epigrammatum anthologia Palatina cum Planudeis et appendice nova, vol. 3”, Ed.
Cougny, E. Paris: Didot, 1890. Epigram 77, line 19

19. http://en.wikipedia.org/wiki/Greek_Anthology

7.22. NICETAS CHONIATES

Ἄπελθε τοῖνυν εἰς τόπους τῆς Ἰνδίας, εἰς τ' Ἀγησύμβων, εἰς τε Βλεμμύων πόλεις, ὅπου λέγουσιν ἀμπέλους μὴ βλαστάνειν· ἐκεῖσε δεῖξον σὴν ἰατρικὴν, σοφέ.

Anthologiae Graecae Appendix, Oracula (7052: 006) “Epigrammatum anthologia Palatina cum Planudeis et appendice nova, vol. 3”, Ed. Cougny, E. Paris: Didot, 1890. Epigram 313, line 3

Ἐς δῖνας Ἰστροῖο διυπετέος ποταμοῖο ἐσβαλέειν κέλομαι δοίους Κυβέλης θεράποντας, θήρας ὀρειτρεφέας, καὶ ὅσα τρέφει Ἰνδικὸς ἀήρ ἄνθεα καὶ βοτάνας εὐώδεις· αὐτίκα δ' ἔσται νίκη καὶ μέγα κῦδος ἅμ' εἰρήνῃ ἐρατεινῇ.

7.22 Nicetas Choniates

Niketas or Nicetas Choniates (Νικήτας Χωνιάτης, ca. 1155 to 1215 or 1216), sometimes called Acominatos, was a Greek historian – like his brother Michael Acominatus, whom he accompanied from their birthplace Chonae to Constantinople. Nicetas wrote a history of the Eastern Roman Empire from 1118 to 1207. (From Wikipedia²⁰)

Nicetas Choniates Hist., Scr. Eccl., Rhet., Historia (= Χρονικὴ διήγησις) (3094: 001) “Nicetae Choniatae historia, pars prior”, Ed. van Dieten, J. Berlin: De Gruyter, 1975; Corpus fontium historiae Byzantinae 11.1. Series Berolinensis. Reign Alex2, page 243, line of page 4

Ἐπεὶ δὲ ἡ κυρία τῆς ἀνόδου ἐνιστήκει, ὅποσοι τῶν ἐν τέλει καὶ ὅσοι τοῦ βήματος τοῦ καλοῦ ἔτρεφον ἔρωτα καὶ ὁ τῆς πόλεως ἅπας δῆμος εἰς τὸ ἱερὸν φροντιστήριον συνδραμόντες λαμπροτάτην ἐκείνῳ συντελοῦσι τὴν πρόοδον μύροις τὰς ἀγυῖας τέγγοντες καὶ τοῖς Ἰνδικοῖς ξύλοις καὶ καρυκευτοῖς ἀρώμασι τὸν ἀέρα εὐωδιάζοντες.

7.23 Pseudo-Codinus

Jump to: navigation, search

George Kodinos or Codinus (Greek: Γεώργιος Κωδινός), also Pseudo-Kodinos, kouropalates in the Byzantine court, is the reputed 14th-century author of three extant works in late Byzantine literature.

20. http://en.wikipedia.org/wiki/Nicetas_Choniates

CHAPTER 7. BYZANTINE

Their attribution to him is merely a matter of convenience, two of them being anonymous in the manuscripts. Of Kodinos himself nothing is known; it is supposed that he lived towards the end of the 15th century. The works referred to are the following:

Patria (Πάτρια Κωνσταντινουπόλεως), treating of the history, topography, and monuments of Constantinople. It is divided into five sections: (a) the foundation of the city; (b) its situation, limits and topography; (c) its statues, works of art, and other notable sights; (d) its buildings; (e) and the construction of the Hagia Sophia. It was written in the reign of Basil II (976–1025), revised and rearranged under Alexios I Komnenos (1081–1118), and perhaps copied by Codinus, whose name it bears in some (later) manuscripts. The chief sources are: the *Patria* of Hesychius Illustrius of Miletus, the anonymous *Parastaseis syntomoi chronikai*, and an anonymous account (ἔκφρασις) of St Sophia (ed. Theodor Preger in *Scriptores originum Constantinopolitanarum*, fasc. i, 1901, followed by the *Patria* of Codinus). Procopius, *De Aedificiis* and the poem of Paulus Silentiarius on the dedication of St. Sophia should be read in connexion with this subject. *De Officiis* (Τακτικόν περί των οφφικίων του Παλατίου Κωνσταντινουπόλεως και των οφφικίων της Μεγάλης Εκκλησίας), a treatise, written in an unattractive style between 1347 and 1368, of the court and higher ecclesiastical dignities and of the ceremonies proper to different occasions, as they had evolved by the middle Palaiologan period. It should be compared with the earlier *De Ceremoniis* of Constantine Porphyrogenitus and other *Taktika* of the 9th and 10th centuries. A chronological outline of events from the beginning of the world to the taking of Constantinople by the Turks (called *Agarenes* in the manuscript title). It is of little value.

Complete editions are (by Immanuel Bekker) in the *Bonn Corpus scriptorum Hist. Byz.* (1839–1843, where, however, some sections of the *Patria* are omitted), and in JP Migne, *Patrologia graeca civil.*; see also Karl Krumbacher, *Geschichte der byzantinischen Litteratur* (1897). (From Wikipedia²¹)

Pseudo-Codinus Hist., *De officiis* (= officia palatii Constantinopoleos) (3168: 001) “Pseudo-Kodinos. Traité des offices”, Ed. Verpeaux, J. Paris: Centre National de la Recherche Scientifique, 1966; *Le monde byzantin* 1.

21. <http://en.wikipedia.org/wiki/Pseudo-Codinus>

7.24. CHRONICON PASCHALE

Pseudo-Codinus Hist., De annis ab orbe condito (3168: 004) “Die byzantinischen Kleinchroniken, vol. 1”, Ed. Schreiner, P. Vienna: Österreichische Akademie der Wissenschaften, 1975; Corpus fontium historiae Byzantinae 12.1. Series Vindobonensis.

Pseudo-Codinus Hist., Patria Constantinopoleos Book 2a, section 1, line 7

Ἡ πρώτη σύνοδος γέγονεν ἐν τῇ Νικαίᾳ τῆς Βιθυνίας ὑπὸ τοῦ μεγάλου Κωνσταντίνου συνελθόντων τῶν τριακοσίων δέκα καὶ ὀκτὼ ἀγίων πατέρων καὶ Σιλβέστρου πάπα Ῥώμης· οἱ καὶ καθεῖλαν Ἀρειον, ὅστις ἦν πρῶτος πρεσβύτερος Ἀλεξανδρείας· τὸν γὰρ κύριον ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστὸν ψιλὸν ἄνθρωπον ἔλεγεν εἶναι· Ἰβηρες δὲ καὶ Ἰνδοὶ τότε ἐχριστιάνισαν.

Pseudo-Codinus Hist., Patria Constantinopoleos Book 3, section 89, line 2

(c255, m262) Ἐν τοῖς χρόνοις τοῦ μεγάλου Θεοδοσίου ἤχθη ἐλέφας μικρὸς ἀπὸ Ἰνδίας καὶ ἐκεῖσε ἔτρεφον αὐτὸν εἰς τὰ οἰκήματα· καὶ ἵππικου γενομένου ἔφερον αὐτὸν.

7.24 Chronicon Paschale

Chronicon Paschale (“the Paschal Chronicle, also Chronicum Alexandrinum or Constantinopolitanum, or Fasti Siculi”) is the conventional name of a 7th-century Greek Christian chronicle of the world. Its name comes from its system of chronology based on the Christian paschal cycle; its Greek author named it “Epitome of the ages from Adam the first man to the 20th year of the reign of the most August Heraclius.”

The Chronicon Paschale follows earlier chronicles. For the years 600 to 627 the author writes as a contemporary historian – that is, through the last years of emperor Maurice, the reign of Phocas, and the first seventeen years of the reign of Heraclius.

Like many chroniclers, the author of this popular account relates anecdotes, physical descriptions of the chief personages (which at times are careful portraits), extraordinary events such as earthquakes and the appearance of comets, and links Church history with a supposed Biblical chronology. Sempronius Asellio points out the difference in the public appeal and style of composition which distinguished the chroniclers (Annales) from the historians (Historia) of the Eastern Roman Empire.

The “Chronicon Paschale” is a huge compilation, attempting a chronological list of events from the creation of Adam. The principal manuscript, the 10th-century Codex Vaticanus græcus 1941, is damaged at the beginning and end and stops short at AD 627. The Chronicle proper is preceded by

CHAPTER 7. BYZANTINE

an introduction containing reflections on Christian chronology and on the calculation of the Paschal (Easter) cycle. The so-called 'Byzantine' or 'Roman' era (which continued in use in Greek Orthodox Christianity until the end of Turkish rule as the 'Julian calendar') was adopted in the *Chronicum* as the foundation of chronology; in accordance with which the date of the creation is given as the 21st of March, 5507.

The author identifies himself as a contemporary of the Emperor Heraclius (610–641), and was possibly a cleric attached to the suite of the œcumenical Patriarch Sergius. The work was probably written during the last ten years of the reign of Heraclius.

The chief authorities used were: Sextus Julius Africanus; the consular *Fasti*; the *Chronicle* and *Church History* of Eusebius; John Malalas; the *Acta Martirum*; the treatise of Epiphanius, bishop of Constantia (the old Salamis) in Cyprus (fl. 4th century), on *Weights and Measures*. (From Wikipedia²²)

Andromachus Poet. Med., Fragmentum (0280: 001) “Die griechischen Dichterfragmente der römischen Kaiserzeit, vol. 2”, Ed. Heitsch, E. Göttingen: Vandenhoeck & Ruprecht, 1964. Line 133

ἢ ἔτι καὶ σμύρνης καὶ εὐόδμου κόστοιο καὶ κρόκου, ὃν τ' ἄντρον θρέψατο Κωρύκιον, καὶ κασίην Ἰνδὴν τε βάλοις εὐώδεα νάρδον καὶ σχοῖνον νομάδων θαῦμα φέροις Ἀράβων καὶ λιβάνου μίσγοιο καὶ ἀγλαΐην στήσαιο ἄμμιγα κυανέῳ κατθέμενος πεπέρει δικτάμνου τε κλῶνας ἰδὲ χλοεροῦ πρασίοιο καὶ ῥῆον, στοιχὰς δ' οὐκ ἀπάνευθε μένοι, οὐδέ νυ πετροσέλινον ἰδ' εὐώδης καλαμίνθη θριμύ τε τερμίνθου δάκρυ Λιβυστιάδος, θερμὸν ζιγγίβερι κεύκλωνον πενταπέτηλον· τὰς δοῖας δραχμῶν πάντα φέροι τριάδας.

7.25 Laonicus Chalcocondyles Hist.

Laonikos Chalkokondyles, Latinized as Laonicus Chalcondyles (Greek: Λαόνικος Χαλκοκονδύλης, from *λαός* “people”, *νικᾶν* “to be victorious”, an anagram of Nikolaos which bears the same meaning; c. 1423 – 1490) was a Byzantine Greek scholar from Athens. (From Wikipedia²³)

22. http://en.wikipedia.org/wiki/Chronicon_Paschale

23. http://en.wikipedia.org/wiki/Laonicus_Chalcocondyles

7.25. LAONICUS CHALCOCONDYLES HIST.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae (3139: 001) "Laonici Chalcocandylae historiarum demonstrationes, 2 vols. in 3", Ed. Darkó, E. Budapest: Academia Litterarum Hungarica, 1:1922; 2.1:1923; 2.2:1927. Volume 1, page 4, line 1

μετὰ δὲ ταῦτα ὕστερον οὐ πολλαῖς γενεαῖς Ἀλέξανδρον τὸν Φιλίππου, Μακε- δόνων βασι- λέα Πέρσας ἀφελόμενον τὴν ἡγεμονίαν καὶ Ἰνδοὺς καταστρεφάμενον καὶ Λιβύης μοῖραν οὐκ ὀλίγην, πρὸς δὲ καὶ Εὐρώπης, τοῖς μεθ' ἑαυτὸν τὴν βασιλείαν καταλιπεῖν, ἐς ὃ δὴ Ῥωμαῖοις ἐπὶ τὴν τῆς οἰκουμένης μεγίστην ἀρχὴν ἀφικομένους, ἰσοτάλαντον ἔχοντας τύχην τῇ ἀρετῇ, ἐπιτρέψαντας Ῥώμῃ τῷ μεγίστῳ αὐτῶν ἀρχιερεῖ καὶ διαβάντας ἐς Θράκην, ὑψηγομένου ἐπὶ τὰδε τοῦ βασιλέως, καὶ Θράκης ἐπὶ χώραν, ἥτις ἐς τὴν Ἀσίαν ἐγγυτάτω ᾤκηται, Βυζάν- τιον Ἑλληνίδα πόλιν μητρόπολιν σφῶν ἀποδεικνύντας, πρὸς Πέρσας, ὑφ' ὧν ἀνῆκεστα ἐπεπόν- θεισαν, τὸν ἀγῶνα ποιεῖσθαι, Ἑλληνας τε τὸ ἀπὸ τοῦδε

Ῥω-

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 110, line 11

διώρυχα μέντοι ἐπυθόμην ἐγώ γε ἀπὸ ταύτης διήκειν καὶ ἐς τὴν Ἰνδικὴν θάλασσαν ἐκδιδόι.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 110, line 14

καὶ ἰχθύας μὲν φέρει αὕτη ἡ θά- λασσα πολλοὺς τε καὶ ἀγαθοὺς, φέρει δὲ καὶ ὄστρεα μαργαρί- τας ἔχοντα, ἥπερ δὴ καὶ ἡ Ἰνδικὴ θάλασσα.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 120, line 20

ἔστι δὲ τοῦτο τὸ γένος ἄλκιμόν τε τῶν κατὰ τὴν Ἀσίαν καὶ πολεμικώτατον, καὶ σὺν τούτοις λέγεται Τεμήρης τὴν ἡγεμονίαν τῶν ἐν τῇ Ἀσίᾳ παραλαβεῖν, πλὴν Ἰνδῶν.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 124, line 19

ἔστι μέντοι, ἥ πυνθάνομαι, καὶ τὰ ὑπὲρ τὴν Κασπίαν θάλασσαν καὶ τοὺς Μασσαγέτας ἔθνος Ἰνδικὸν ἐς ταύτην τετραμμένον τὴν θρησκείαν τοῦ Ἀπόλλωνος.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 135, line 4

ὁ γάρ τοι τῆς Χαταΐης βασιλεὺς τῶν ἐννέα καλούμενος, οὗτος δ' ἂν καὶ ὁ τῆς Ἰνδίας βασιλεὺς, διαβάς τὸν Ἀράξην τὴν τε χώραν ἐπέ- δραμε τοῦ Τεμήρεω, καὶ ἀνδράποδα ὡς πλεῖστα ἀπάγων ᾤχετο αὐθις ἐπ' οἴκου ἀποχωρῶν.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 139, line 20

καὶ τοὺς Τριβαλλοὺς αὐτοῦ δορυφόρους, ἐς μυρίους μάλιστά που γενομένους τούτους, ἐφ' οἷς δὲ μέγα ἐφρόνει ὡς, ὅποι παρα- τυγχάνοιεν, ἀνδρῶν ἀγαθῶν γενομένων, καὶ προθέμενος ὡς Ἀλέ- ξανδρος ὁ Φιλίππου τοὺς Μακεδόνας ἔχων μεθ' ἑαυτοῦ καὶ ἐς τὴν Ἀσίαν διαβάς, Δαρεῖον αἰτιασάμενος τῆς ἐς τοὺς Ἑλληνας Ξέρξεω ἐλάσεως, τῷ ἑαυτοῦ ἐλάσσονι δὴ στρατῷ ἐπιὼν κατε- στρέψατο, καὶ τὴν Ἀσίαν ὑφ' αὐτῷ ἐποίησατο, ἔστε ἐπὶ Ἰφασιν τῆς Ἀσίας ἐληλάκει· ἐπίστευε δὲ καὶ αὐτὸς τῷ ἑαυτοῦ στρατεῦ- ματι ἐπιὼν καθαιρήσειν ταχὺ πάντῃ τὴν Τεμήρεω βασιλείαν καὶ ἐπὶ Ἰνδοὺς ἀφικέσθαι.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 151, line 15

Οὕτω μὲν οὖν ἦρει Τεμήρης τὰς πόλεις· ὡς δὲ ἤδη ἔαρ ὑπέφαιεν, ἀφίκετο παρ' αὐτὸν ἀγγελία, ὡς τοῦ Ἰνδῶν βασιλέως πρεσβεία ἀφικομένη ἐπὶ Χεσίην μεγάλην χεῖρὶ δεινὰ τε τὴν

CHAPTER 7. BYZANTINE

πόλιν ἐργάσαιτο, καὶ ἐπὶ τοὺς θησαυροὺς παριὼν τοῦ βασιλέως τὸν τε φόρον λαβὼν οἴχοιτο, καὶ ἀπειλοίη, ὥς οὐκέτι ἐμμένοι ταῖς σπονδαῖς ὁ Ἰνδῶν βασιλεὺς.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 151, line 20

ταῦτα ὡς ἐπύθετο, περιδεὲς γενόμενος, μὴ ἐπειδὴ ἀφίκοιτο ἡ πρεσβεία παρὰ βασιλέα τῶν Ἰνδῶν, ἐπιὼν καταστρέφοιτο τὴν ἑαυτοῦ χώραν, σχόντος αὐτοῦ ἀμφὶ τοὺς ἐπὶ ἡλυδας πολέμους, καὶ ἅμα ἐσθλὴν αὐτὸν καὶ τὰ ἀνθρώ- πεια ἐν οὐδενὶ ἐστηκότα ἀσφαλεῖ, καὶ δεινὰ ποιησάμενος τοὺς Ἰνδοὺς πρέσβεις ἐξυβρίσαι ἐς αὐτὸν οὕτως ἀναίδην, ἤλαυνεν, ὥς εἶχε τάχιστα, ἐπὶ Χεσίης, τὸν τε Παιαζήτην ἔχων μεθ' ἑαυτοῦ καὶ τὸν παῖδα αὐτοῦ.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 152, line 15

Ὁ δὲ Ἰνδῶν βασιλεὺς οὗτος ἐστὶν ὁ τῶν ἐννέα βασιλέων τοῦνομα ἔχων, Τζαχατάης βασι- λεύς.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 152, line 20

Σίνης τε βασιλεύει καὶ Ἰνδίας [καὶ] ξυμπάσης, καὶ διήκει αὐτῷ ἡ χώρα ἐπὶ Ταπροβάνην νῆσον, ἐς Ἰνδικὴν θάλασσαν, ἐς ἣν οἱ μέγιστοι τῆς Ἰνδίας χώρας ποταμοὶ ἐκδιδοῦσιν, ὃ τε Γάγγης, Ἰνδός, Ἀκεσίνης, Ἰδασπης, Ἰδραώτης, Ἰφασις, μέγιστοι δὲ οὗτοι ὄντες τῆς χώρας.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 153, line 2

φέρει δὲ ἡ Ἰνδικὴ χώρα ἀγαθὰ μὲν πολλὰ καὶ ὄλβον πολύν, καὶ ὃ τε βασιλεὺς ξυμπάσης τῆς χώρας ὑπ' αὐτὸν γενομένης.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 153, line 5

ὀρμώμενος δὲ οὗτος ἀπὸ τῆς ὑπὲρ Γάγγην χώρας καὶ τῆς παραλίου Ἰνδικῆς καὶ Ταπρο- βάνης, ἐλθεῖν ἐπὶ τὸν βασιλέα Χαταΐης, τῆς χώρας τῆς ἐντὸς Γάγγου καὶ Ἰνδοῦ, καὶ κατα- στρεφάμενον τὴν ταύτην χώραν τὰ βασίλεια ἐν ταύτῃ δὴ τῇ πόλει ποιήσασθαι· ξυμβῆναι δὲ τότε γενέσθαι ὑφ' ἐνὶ βασιλεῖ ξύμπασαν τὴν Ἰνδικὴν χώραν.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 153, line 19

φέρει δὲ ἡ Ἰνδική, ὥς λέγουσι, τοσοῦτον τὸ μέγεθος, ὥστε ἀπ' αὐτοῦ ναυπηγεῖσθαι πλοῖα μεδίμων τεσσαράκοντα Ἑλληνικῶν.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 154, line 4

γένος μέντοι ἰσχυρότατον γενόμενον τὸ παλαιὸν τοὺς τε Περσῶν βασιλεῖς καὶ Ἀσσυρίων, ἡγουμένους τῆς Ἀσίας, θεραπεύειν μὲν τοὺς Ἰνδῶν βασιλεῖς, ἐπεὶ τε Σεμί- ραμις καὶ Κύρος ὁ τοῦ Καμβύσου τὸν Ἀράξην διαβάντες με- γάλῳ τῷ πολέμῳ ἐχρήσαντο.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 154, line 7

ἢ τε γὰρ Σεμίραμις τῶν Ἀσσυρίων βασίλισσα ἐπὶ τῶν Ἰνδῶν βασιλέα ἐλαύνουσα μεγάλη παρασκευή, ἐπεὶ τε τὸν ποταμὸν διέβη, ἐπεπράγει τε χαλεπώτατα καὶ αὐτοῦ ταύτη ἐτελεύ- τησε.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 154, line 20

βασιλεὺς δὲ Τεμήρης ὡς ἐγένετο ἐς τὰ βασίλεια τὰ ἑαυτοῦ, τὰ τε ἐν τῇ ἀρχῇ αὐτοῦ καθίστη, ἣ ἐδόκει κάλλιστα ἔχειν αὐτῷ, καὶ πρὸς τὸν Ἰνδῶν βασιλέα διενεχθεὶς ἐπολέμει.

Laonicus Chalcocondyles Hist., Historiae Volume 1, page 156, line 3

7.26. ETYMOLOGICUM GUDIANUM

πρὸς τοῦτον Μπαῖμπούρης τῶν ἐννέα βασιλέων ἐπιγαμίαν ποιησάμενος καὶ ἐπιτραφθεὶς ἔσχε τὴν βασιλείαν· καὶ τὰ Σαμαρχάνδης πράγματα κατασχών, καὶ Ἰνδῶν συμμαχίαν ἐπαγόμενος, πρὸς τε τὸν Τζοκίην Παῖαγγούρειω ἐπολέμει παῖδα.

7.26 Etymologicum Gudianum

The Etymologicum Genuinum (standard abbreviation E Gen) is the conventional modern title given to a lexical encyclopedia compiled at Constantinople in the mid ninth century. The anonymous compiler drew on the works of numerous earlier lexicographers and scholiasts, both ancient and recent, including Aelius Herodianus, Georgius Choeroboscus, Saint Methodius, Orion of Thebes, Oros of Alexandria and Theognostus the Grammarian.[1] The Etymologicum Genuinum was possibly a product of the intellectual circle around Photius. It was an important source for the subsequent Byzantine lexicographical tradition, including the Etymologicum Magnum, Etymologicum Gudianum and Etymologicum Symeonis.[2]

Modern scholarship discovered the Etymologicum Genuinum only in the nineteenth century. It is preserved in two tenth-century manuscripts, codex Vaticanus graecus 1818 (= A) and codex Laurentianus Sancti Marci 304 (= B; AD 994). Neither contains the earliest recension nor the complete text, but rather two different abridgements. The manuscript evidence and citations in later works suggest that the original title was simply τὸ Ἐτυμολογικόν and later τὸ μέγα Ἐτυμολογικόν. Its modern name was coined in 1897 by Richard Reitzenstein, who was the first to edit a sample section.[3] The Etymologicum Genuinum remains for the most part unpublished except for specimen glosses.[4] Two editions are in long-term preparation, one begun by Ada Adler and continued by Klaus Alpers,[5] the other by François Lasserre and Nikolaos Livadaras.[6] The latter edition is published under the title Etymologicum Magnum Genuinum, but this designation is not widely used and is a potential source of confusion with the twelfth-century lexical compendium conventionally titled the Etymologicum Magnum.[7] (From Wikipedia²⁴)

24. http://en.wikipedia.org/wiki/Etymologicum_Genuinum

CHAPTER 7. BYZANTINE

Etymologicum Gudianum, Etymologicum Gudianum (ἁάλιον – ζειαί) (4098: 001)
“Etymologicum Gudianum, fasc. 1 & 2”, Ed. de Stefani, A. Leipzig: Teubner, 1:1909;
2:1920, Repr. 1965. Alphabetic entry alpha, page 196, line 10

τὸ δὲ <ινδην> .

Etymologicum Gudianum, Etymologicum Gudianum (ζείδωρος – ὦμαι) (4098: 002)
“Etymologicum Graecae linguae Gudianum et alia grammaticorum scripta e codicibus
manuscriptis nunc primum edita”, Ed. Sturz, F.W. Leipzig: Weigel, 1818, Repr. 1973.

Etymologicum Gudianum, Etymologicum Gudianum (ζείδωρος – ὦμαι)

Etymologicum Gudianum, Additamenta in Etymologicum Gudianum (ἁάλιον – ζειαί)
(e codd. Vat. Barber. gr. 70 [olim Barber. I 70] + Paris. suppl. gr. 172) (4098: 003)
“Etymologicum Gudianum, fasc. 1 & 2”, Ed. de Stefani, A. Leipzig: Teubner, 1:1909;
2:1920, Repr. 1965. Alphabetic entry delta, page 348, line 20

ἔνιοι δὲ αὐτὸν Δεύνυσον ὀνομάζεσθαι φασιν, ἐπεὶ δὴ ἐβασίλευσε Νύσης· κατὰ γὰρ τὴν τῶν
Ἰνδῶν φωνὴν δεῦνος ὁ βασιλεύς.

Etymologicum Gudianum, Additamenta in Etymologicum Gudianum (ἁάλιον – ζειαί)
(e codd. Vat. Barber. gr. 70 [olim Barber. I 70] + Pari Alphabetic entry epsilon, page 519,
line 16

οἱ δὲ τοὺς Ἰνδοὺς· παρὰ τὸ Ἑρεβος· μέλανες γάρ.

7.27 Nikephoros Bryennios

Byzantine general, statesman and historian, was born at Orestias (Orestia, Adrianople) in the theme of Macedonia

At the suggestion of his mother-in-law he wrote a history (“Materials for a History”, Greek: Ὑλη Ἱστορίας or Ὑλη Ἱστοριῶν) of the period from 1057 to 1081, from the victory of Isaac I Komnenos over Michael VI to the de-thronement of Nikephoros III Botaneiates by Alexios I. The work has been described as a family chronicle rather than a history, the object of which was the glorification of the house of Komnenos. Part of the introduction is probably a later addition.

In addition to information derived from older contemporaries (such as his father and father-in-law) Bryennios made use of the works of Michael Psellos, John Skylitzes and Michael Attaleiates. As might be expected, his views are biased by personal considerations and his intimacy with the royal family, which at the same time, however, afforded him unusual facilities for

7.28. PSEUDO–SPHRANTZES

obtaining material. His model was Xenophon, whom he has imitated with a tolerable measure of success; he abstains from an excessive use of simile and metaphor, and his style is concise and simple. (From Wikipedia²⁵)

Nicephorus Bryennius Hist., Historiae (3088: 002) “Nicéphore Bryennios. Histoire”, Ed. Gautier, P. Brussels: Byzantion, 1975; Corpus fontium historiae Byzantinae 9. Series Bruxellensis. Book 1, section 7, line 24

ἐπικρατείας μὴ μόνον Περσίδος καὶ Μηδίας καὶ Βαβυλῶνος καὶ Ἀσσυρίων κυριευούσης, ἀλλ’ ἤδη καὶ Αἰγύπτου καὶ Λιβύης καὶ μέρους οὐκ ἐλαχίστου τῆς Εὐρώπης, ἐπεὶ περ ἁλλήλων καταστασιάσαντες οἱ ἐξ Ἄγαρ τὴν μεγίστην ἀρχὴν εἰς πολλὰς ἐμερίσαντο, ἄλλος ἄλλης κατάρχων, καὶ εἰς ἐμφυλίου πολέμου τὸ ἔθνος ἐχώρησεν, ἀρχηγὸς Περσίδος καὶ Χω- ρασμίων καὶ Ἀβριτανῶν καὶ Μηδίας ὑπάρχων τότε Μουχούμετ ὁ τοῦ Ἰμβραήλ κατὰ τοὺς χρόνους Βασιλείου τοῦ αὐτοκράτορος καὶ πολεμῶν Ἰνδοῖς καὶ Βαβυλωνίοις, ἐπεὶ δὴ πρὸς τὸ κατόπιν ἑώρα χωροῦντα ἑαυτῷ τὰ πράγματα, ἔγνω δεῖν πρὸς τὸν Οὐννων δια- πρεσβεύσασθαι ἄρχοντα καὶ ξυμμαχίαν ἐκείθεν αἰτήσασθαι.

Nicephorus Bryennius Hist., Historiae Book 1, section 7, line 38

Ἐπανελθὼν δὲ εἰς τὴν ἑαυτοῦ ἔσπευσε καὶ πρὸς τοὺς πολεμοῦντας Ἰνδοὺς μετὰ τῶν ξυμμά- χων διαγωνίσασθαι.

7.28 Pseudo–Sphrantzes

“” (From Wikipedia²⁶)

Pseudo-Sphrantzes Hist., Chronicon sive Maius (partim sub auctore Macario Melisseno) (3176: 001) “Georgios Sphrantzes. Memorii 1401–1477”, Ed. Grecu, V. Bucharest: Academie Republicii Socialiste România, 1966; Scriptores Byzantini 5.

Pseudo-Sphrantzes Hist., Chronicon sive Maius (partim sub auctore Macario Melisseno) Page 352, line 2

Ὁ δὲ κύριος αὐτοῦ ἔμπο- ρος ὢν καὶ μετὰ ἐτέρων πολλῶν ἐμπόρων θέλοντες ἐλθεῖν κατὰ τὰ τῶν Ἰνδῶν μέρη ποιῆσαι τὴν αὐτῶν νενομισμένην ἐμπορίαν καὶ περιπατοῦντες ἡμέρας οὐκ ὀλίγας, ἤγ- γισαν ἔνδον τῆς τῶν Ἰνδῶν χώρας.

Pseudo-Sphrantzes Hist., Chronicon sive Maius (partim sub auctore Macario Melisseno) Page 352, line 12

Ἐκεῖ δὲ καὶ τὰ μεγάλα Ἰνδικὰ γίνονται κάρυα καὶ δυσπόριστα ἡμῖν καὶ πάνυ ἐπιθυμητὰ ἀρώματα καὶ ὁ μαγνήτης λίθος.

Pseudo-Sphrantzes Hist., Chronicon sive Maius (partim sub auctore Macario Melisseno) Page 352, line 34

25. http://en.wikipedia.org/wiki/Nikephoros_Bryennios_the_Younger.

26.

CHAPTER 7. BYZANTINE

Καὶ ἐνεθυμήθη, ἵνα ἐν τῇ πατρίδι ἐπανέλθῃ· καὶ τινι τῶν ἐντοπίων τὴν γνώμην αὐτοῦ εἰπὼν, παρέλαβεν αὐτὸν καὶ ἤγαγεν ἐν τόπῳ τινί, ἐνθα ἐκ τῶν ἔξωθεν Ἰνδῶν ἀκάτια ἐρχόμενα καὶ φόρτον ποιῶντα ἀρωμάτων ἦν.

Pseudo-Sphrantzes Hist., Chronicon sive Maius (partim sub auctore Macario Melisseno) Page 498, line 11

Ὁ δὲ ἑτέρος Λουκᾶς, Ἑλληνικῶς δέ· καὶ ἐδόθη εἰς τὴν Ἀσίαν καὶ Αἰθιοπίαν καὶ Περσίαν καὶ Ἰνδίαν καὶ Ἀραβίαν.

7.29 *Encomium Heraclii ducis*

“” (From Wikipedia²⁷)

Epica Adespota (GDRK), Encomium Heraclii ducis (PSI 3.253) (1816: 015) “Die griechischen Dichterfragmente der römischen Kaiserzeit, vol. 1, 2nd edn.”, Ed. Heitsch, E. Göttingen: Vandenhoeck & Ruprecht, 1963. Line 50

τῷ δὲ μέλας βοέοιο φ[ερῶ]νυμ[ος] πορφυρέ<ε>ι κ[.....] ο...ω[] Ἰνδῶν ἡλ[ιβάτων] κυαν[...].λ...α...εὐ μαστιγ[...]. γε..... βασιληῖ[] [] [] .ε....των κλ[...]. [ο]ῦτος ἀνὴρ με[] .μιν..αδιν[]

7.30 Joannes VI Cantacuzenus

John VI Kantakouzenos or Cantacuzenus (Greek: Ἰωάννης ΣΤ΄ Καντακουζηνός, Iōannēs VI Kantakouzēnos) (c. 1292 – 15 June 1383) was the Byzantine emperor from 1347 to 1354.

His History in four books deals with the years 1320–1356. An apologia for his own actions, it needs to be read with caution; fortunately it can be supplemented and corrected by the work of a contemporary, Nikephoros Gregoras. It possesses the merit of being well arranged and homogenous, the incidents being grouped round the chief actor in the person of the author, but the information is defective on matters with which he is not directly concerned. Kantakouzenos also wrote a defence of Hesychasm, a Greek mystical doctrine. (From Wikipedia²⁸)

27.

28. http://en.wikipedia.org/wiki/Joannes_Cantacuzene

7.31. CONSTANTINUS MANASSES

Joannes VI Cantacuzenus, *Historiae* (3169: 001) “Ioannis Cantacuzeni eximperatoris *historiarum libri iv*, 3 vols.”, Ed. Schopen, L. Bonn: Weber, 1:1828; 2:1831; 3:1832; *Corpus scriptorum historiae Byzantinae*.

Joannes VI Cantacuzenus, *Historiae* Volume 2, page 331, line 17

βασιλεὺς δὲ ἐπεὶ γένοιτο μακρὰν Φερῶν, συνιδὼν ὡς ἡ ἐπομένη στρατιὰ τῶν Τριβαλῶν ὄχλος μόνον ἀνόννητός εἰσι, (τοὺς ἀρίστους γὰρ αὐτῶν ἀπολεξάμενος πρότερον ὁ Κράλης, φρουρὰν κατέλειπε ταῖς πόλεσιν, ἃς Χρέλη ἔ- χοντος μετὰ τὴν ἐκείνου τελευτὴν ἔλαβεν αὐτός,) ἄλλως τε καὶ τῶν ὑπολειφθέντων χρονίῳ τε στρατεία τεταλαιπώ- ρηκότων, (ἦσαν γὰρ πλεόν ἢ δυσὶ πρότερον μισὶ Κράλῃ ἐπόμενοι στρατευομένοι,) ἄλλως τε καὶ δέει ἀσχέτῳ κατε- χο- μένων καὶ νομιζόντων, οὐκ εἰς Θράκην, ἀλλ’ εἰς Πάρ- θους ἢ Ἰνδοὺς στρατεύεσθαι, ὅθεν οὐκ ἐξέσται μηχανῇ οὐ- δεμιᾶ οἴκαδε ἐπανελθεῖν, καὶ διὰ τοῦτο καὶ ἵππους πολεμι- στηρίους καὶ ὅπλα καὶ εἴ τι ἐπεφέροντο χρήσιμον πρὸς τὸν πόλεμον, οἴκαδε ἀποπεμπόντων, ἵνα ταῦτα γούν τοῖς παισὶν ὑπολειφθεῖν, ὡς ἐκείνων ἀπολουμένων πάντως· ταῦτα δὲ συνορῶν ὁ βασιλεὺς καὶ βουλόμενος εἰς Διδυμότειχον μὴ οὐ- τως ἀφικέσθαι ἀσθενής, ὥσθ’ ὑπὸ Βυζαντίων καὶ αὐτὸς πο- λιορκεῖσθαι, (οὐτ’ αὐτῷ γὰρ οὔτε τοῖς συνοῦσι τοῦτο μάλι- στα συνοίσειν,) ἐσκέφατο εἰς Κράλῃν ἀναστρέφειν καὶ στρα- τιὰν ἀξιόχρεων αἰτεῖν, ὥστε εἰς Διδυμότειχον φοβερόν τοῖς

7.31 Constantinus Manasses

Constantine Manasses (Greek: Κωνσταντῖνος Μανασσῆς; c. 1130 - c. 1187) was a Byzantine chronicler who flourished in the 12th century during the reign of Manuel I Komnenos (1143-1180). He was the author of a chronicle or historical synopsis of events from the creation of the world to the end of the reign of Nikephoros Botaneiates (1081), sponsored by Irene Komnene, the emperor’s sister-in-law. It consists of about 7000 lines in the so-called political verse. It obtained great popularity and appeared in a free prose translation; it was also translated into Bulgarian and Roman Slavic in the 14th century and enjoyed a great popularity. (From Wikipedia²⁹)

Constantinus Manasses *Hist.*, *Poeta*, *Compendium chronicum* (3074: 001) “Constantini Manassis *breviarium historiae metricum*”, Ed. Bekker, I. Bonn: Weber, 1837; *Corpus scriptorum historiae Byzantinae*. Line 924

Οὗτος Περσῶν ἐκράτησεν, οὗτος Ἰνδῶν κατήρξε, τούτῳ καθυπετάγησαν Συρία καὶ Φοινίκη καὶ πᾶν ἔθνος καὶ πάσης γῆς χωράρχαι καὶ σατράπαι ἀπ’ ἄκρων τῶν ἀνατολῶν μέχρι δυσμῶν ἐσχάτων.

29. http://en.wikipedia.org/wiki/Constantinus_Manasses

CHAPTER 7. BYZANTINE

Constantinus Manasses Hist., Poeta, Compendium chronicum Line 1367

τὸν οὖν Ταντάνην τῶν Ἰνδῶν Πρίαμος ἰκετεύει, καὶ μετὰ πλήθους στέλλεται Μέμνων ἀπειραρίθμου.

Constantinus Manasses Hist., Poeta, Compendium chronicum Line 1369

ὁ δὲ στρατὸς ἦσαν Ἰνδοὶ πάντες μελανοχρῶτες· οὐσπερ ἰδόντες Ἕλληνες ἐν ἀλλοκότῳ θέα, καὶ δειλιάσαντες αὐτῶν μορφὴν καὶ πανοπλίαν, καὶ ζῶα περιτρέσαντες ἅπερ Ἰνδία τρέφει, νύκτωρ φυγεῖν ἐσκέπτοντο καὶ προλιπεῖν τὴν Τροίαν.

Constantinus Manasses Hist., Poeta, Compendium chronicum Line 1375

ἀλλ' ὅμως ἀντετάξαντο πρὸς τοὺς κελαινοχρῶτας, καὶ τῶν Ἰνδῶν τοῖς αἵμασιν ἠρύθρωσαν ἀρούρας, καὶ τοῦ Σκαμάνδρου τὰς ῥοὰς ἐφοίνιζαν τοῖς λύθροις.

Constantinus Manasses Hist., Poeta, Compendium chronicum Line 2931

ὁ Βασιλίσκος γὰρ πολλῶ φαρμακευθεὶς χρυσίῳ ἔβλεφε πρῶτος εἰς φυγὴν κατὰ τὰς ὑποσχέσεις, κἀντεῦθεν ἀνεδράπησαν τὰ πράγματα Ῥωμαίοις, καὶ τὸν Ἰνδοὺς φοβήσαντα καὶ τοὺς ἐν Βρεττανίᾳ καὶ πᾶν ἔθνος καὶ πᾶσαν γῆν στόλον τὸν φρικαλέον μόνῃ χρυσίου στιλβηδῶν ἰσχυσεῖν ἀφανίσαι ἄνευ χειρῶν, ἄνευ βελῶν, ἅπερ ὀπλοφορίας.

Constantinus Manasses Hist., Poeta, Compendium chronicum Line 3129

φιλίαν γάρ τοι καθαράν καὶ πρὸ τῆς βασιλείας πρὸς τὸν Ἰνδέριχον πλουτῶν τῶν Οὐαν-δήλων ῥήγα, καὶ γράμματα δεξάμενος ὡς ὁ σκαιὸς Γελίμερ ἐπανασταίῃ κατ' αὐτοῦ καὶ κατακλείσας ἔχει αὐτόν τε τὸν Ἰνδέριχον καὶ γαμετὴν καὶ τέκνα, καὶ τὴν ἀρχὴν ἀφέλοιτο σύμπασαν Ἰνδερύχου, ταῦτα μαθὼν ὁ βασιλεὺς, πληγεὶς τε τὴν καρδίαν καὶ μέγα παθηνάμενος ὑπὲρ τοῦ δυσπραγοῦντος, στόλον κατὰ Γελίμερος μυριάνδρον ἐκπέμπει, στολάρχην δὲ καθίστησι καὶ στρατηγὸν τῆς μάχης τὸν μέγαν Βελισάριον, τὴν τῶν Ῥωμαίων χεῖρα,

7.32 Michael Glycas

Michael Glycas or Glykas (Greek: Μιχαὴλ Γλυκάς; 12th century) was a Byzantine historian, theologian, mathematician, astronomer and poet. He was probably from Corfu and lived in Constantinople (now Istanbul).

His chief work is his Chronicle of events from the creation of the world to the death of Alexius I Comnenus (1118). It is extremely brief and written in a popular style, much space is devoted to theological and scientific matters. Glycas was also the author of a theological treatise and a number of letters on theological questions.

A poem of some 15-syllable verses, written in 1158/1159 during his imprisonment on a charge of slandering a neighbor and containing an appeal

7.32. MICHAEL GLYCAS

to the emperor Manuel I, is extant, and is commonly regarded as the first dated work of Modern Greek literature, since it contains several vernacular proverbs. The exact nature of his offence is not known, but his punishment was to be blinded. (From Wikipedia³⁰)

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales (3047: 001) “Michaelis Glycae annales”, Ed. Bekker, I. Bonn: Weber, 1836; Corpus scriptorum historiae Byzantinae. Page 27, line 13

ὁ μὲν οὖν Θεοδώρητός φησιν ὅτι καλῶς εἶπε καὶ συναγωγὴν καὶ συναγωγὰς ἐπὶ τῶν ὑδάτων· τὰ γὰρ πε- λάγη κατὰ τὴν ἔξω ἐπιφάνειαν διηρημένα δοκοῦσιν (ἄλλο γὰρ τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος καὶ ἄλλο τὸ Ἰρκανικόν), κάτωθεν δὲ συν- ἡρμύσται διὰ τινων ὑπογείων πόρων.

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales Page 82, line 7

λέγεται γὰρ ὅτι γενόμενος ἔγκυος ὁ γυνὴ πορεύεται εἰς τὴν Ἰνδικήν, καὶ λαβὼν λίθον τὸ καλούμενον εὐτόκιον ἐπά- νω αὐτοῦ κάθηται συνεχόμενος ὡδίσι, καὶ οὕτως ἀποτίκτει.

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales Page 100, line 7

διὸ καὶ τοὺς Ἰνδοὺς ἐπιτηρεῖν ἀσέληνον νύκτα φασίν, ὅπηνίκα διαπορθμεύουσι τουτὶ δι' ὑδάτων τὸ ζῶον.

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales Page 100, line 11

τὸν γὰρ Ἰνδὸν ποταμὸν ἔστιν ὅτε δια- περαιούμενοι οὐχ ἀπλῶς καὶ ὡς ἔτυχε τὴν ἐκεῖσε ποιοῦνται διάβασιν, ἀλλ' ὁ μικρότατος πάντων τῆς περαιώσεως πρῶτος ἀπάρχεται, μετὰ τοῦτον ὁ μείζων αὐτοῦ, ἔπειτα καὶ ὁ ἄμφο- τέρων ἐπέκεινα.

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales Page 105, line 2

Γίνωσκε δὲ τοῦτο, ὅτι γεννήτορες τοῦ ἀρώματος μόσχου οἱ ἐν Ἰνδία νεμόμενοι ἔλαφοι.

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales Page 236, line 15

ἀλ- λά καὶ συναγόμενα ὀρῶντες τὰ θηρία πάντα, καθά φησιν ὁ θεὸς Ἐφραΐμ, ἐλέφαν- τας μὲν ἀπὸ Ἰνδικῆς καὶ Περσίδος ἐρχόμενα, λέοντας καὶ παρδάλεις μετὰ προβάτων καὶ αἰ- γῶν μιγάδας, ἐρπετὰ καὶ πετεινὰ ἄνευ τινὸς διώκοντος ἐρχό- μενα καὶ κύκλω τῆς κιβωτοῦ αὐλιζόμενα, οὐδαμῶς κατε- νύγησαν.

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales Page 269, line 2

Οὗτος μὲν οὖν Ἀλέξανδρος καὶ μέχρι τῶν ἐνδοτάτων Ἰνδῶν καὶ αὐτοῦ τοῦ ὠκεανοῦ καὶ τῆς μεγίστης νήσου τῶν Βραχμάνων φθάσας, ὧν καὶ τὸν θαυμάσιον βίον θαυμάσας καὶ τὴν εἰς θεὸν εὐσέβειάν τε καὶ λατρείαν ἐξεπλάγη, ἐν ᾧ τό- πῳ καὶ στήλην στήσας ὑπέγραψεν “ἐγὼ μέγας Ἀλέξανδρος βασιλεὺς ἔφθασα μέχρι τούτου.

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales Page 269, line 17

καὶ οἱ μὲν ἄνδρες εἰς ποταμὸν παροικοῦσιν, αἱ δὲ γυναῖκες αὐτῶν ἐντεῦθεν εἰς τοῦ ποταμοῦ Γάγγου τοῦ παραρρέοντος εἰς τὸν ὠκεανὸν ἐπὶ τὸ μέρος τῆς Ἰνδίας.

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales Page 318, line 3

30. http://en.wikipedia.org/wiki/Michael_Glycas

CHAPTER 7. BYZANTINE

τούτων οὖν ἕνεκεν ὁ παρὰ τῷ βασιλεῖ μέγι- στος Ἀμμάν λυπηθεὶς ἔπεισε τὸν βασιλέα κατὰ Ἰουδαίων ἐπεξελθεῖν, καὶ γράμματα στείλαι τοῖς τῶν εἴκοσι καὶ ἑπτὰ χωρῶν ἄρχουσιν, ἀπὸ Ἰνδικῆς ἕως Αἰθιοπίας, τοὺς ὅπουδῃ ποτε παρευρισκομένους Ἰουδαίους τελείως κατασφάττειν κατὰ τὴν τεσσαρεσκαίδεκάτην τοῦ δωδεκάτου μηνός.

Michael Glycas Astrol., Hist., Annales Page 501, line 17

μοναχοὶ δὲ δύο τινὲς ἐξ Ἰνδίας ἐλθόντες τὴν γένεσιν αὐτῆς διηγήσαντο, καὶ ὑπισχυοῦντο κομίσαι τὸν τῶν σκωλήκων ἐκείνων γόνον, ὃν ὄντα καὶ πάνυ σμικρὰ, δεῖξαι τε Ῥωμαίοις ὅπως ἐκεῖνα ζωογονοῦνται θαλπόμενα καὶ εἰς σκώληκας μεταβάλλονται, καὶ ὅπως δημιουργοῦσι τὴν με- τάξιν.

7.33 Lexica In Opera Gregorii Nazianzeni

“” (From Wikipedia³¹)

Lexica In Opera Gregorii Nazianzeni, Lexicon in carmina Gregorii Nazianzeni (ordine alphabetico) (e cod. Paris. Coislin. 394) (4303: 004) “Λεξικά τῶν ἐπῶν Γρηγορίου τοῦ Θεολόγου μετὰ γενικῆς θεωρήσεως τῆς πατερικῆς λεξικογραφίας”, Ed. Kalamakis, D. Athens: Papadakis, 1992. Alphabetic letter iota, lemma 38, line 1

<ἰκέσιον>· ἰκέτην <ἰκμαλέω τε>· καὶ διϋγρῶ, ἰδρωτοποιῶ <ἰκωμαι>· παραγένωμαι <ἰλαος <εἶης>>· <εὐμενῆς> γένοιο <ἰλαος>· εὐμενῆς <ἰλαθι>· ἰλεως γενοῦ <ἰλυόεντι>· καὶ πηλώδει <ἰλύος>· γῆς, πηλοῦ <ἰμεύρων>· ἐπιθυμῶν <ἰμερόεντα>· ἐπιθυμητικόν <ἰνδαλμα>· ὁμοίωμα, εἶδωλον <ἰν>δοῖσι>· τοῖς Ἰνδοῖς <ἰνδάλματα>· εἶδωλα, ἀπεικάσματα <ἰξεται>· παραγενήσεται <ἰόμεν>· βαδίσωμεν <ἰόντα>· περαιούμενον <ἰόντι>· πορευομένῳ <ἰότητι>· τῇ βουλήσει <ἰούσης>· συντρεχούσης <ἰφρείαις> (nusquam)· ταῖς διαφόροις τῇ ἰρίδι εἰκυῖαις

Lexica In Opera Gregorii Nazianzeni, Lexicon in carmina Gregorii Nazianzeni (ordine alphabetico) (e cod. Paris. Coislin. 394) Alphabetic letter iota, lemma 39, line 1

<ἰκμαλέω τε>· καὶ διϋγρῶ, ἰδρωτοποιῶ <ἰκωμαι>· παραγένωμαι <ἰλαος <εἶης>>· <εὐμενῆς> γένοιο <ἰλαος>· εὐμενῆς <ἰλαθι>· ἰλεως γενοῦ <ἰλυόεντι>· καὶ πηλώδει <ἰλύος>· γῆς, πηλοῦ <ἰμεύρων>· ἐπιθυμῶν <ἰμερόεντα>· ἐπιθυμητικόν <ἰνδαλμα>· ὁμοίωμα, εἶδωλον <ἰν>δοῖσι>· τοῖς Ἰνδοῖς <ἰνδάλματα>· εἶδωλα, ἀπεικάσματα <ἰξεται>· παραγενήσεται <ἰόμεν>· βαδίσωμεν <ἰόντα>· περαιούμενον <ἰόντι>· πορευομένῳ <ἰότητι>· τῇ βουλήσει <ἰούσης>· συντρεχούσης <ἰφρείαις> (nusquam)· ταῖς διαφόροις τῇ ἰρίδι εἰκυῖαις <ἰρι (ἰριν)>· †ο ἰρίδι εἰκυῖα· ἐστὶ δὲ ὡς τόξον ἐν οὐρανῷ

Lexica In Opera Gregorii Nazianzeni, Lexicon in carmina Gregorii Nazianzeni (ordine alphabetico) (e cod. Paris. Coislin. 394) Alphabetic letter iota, lemma 39, line 1

<ἰκωμαι>· παραγένωμαι <ἰλαος <εἶης>>· <εὐμενῆς> γένοιο <ἰλαος>· εὐμενῆς <ἰλαθι>· ἰλεως γενοῦ <ἰλυόεντι>· καὶ πηλώδει <ἰλύος>· γῆς, πηλοῦ <ἰμεύρων>· ἐπιθυμῶν <ἰμερόεντα>·

31.

7.33. LEXICA IN OPERA GREGORII NAZIANZENI

ἐπιθυμητικόν <ἰνδαλμα>· ὁμοίωμα, εἶδωλον <Ἰ<ν>δοῖσι>· τοῖς Ἰνδοῖς <ἰνδάλματα>· εἶδωλα, ἀπεικασματα <ἴξεται>· παραγενήσεται <ἴομεν>· βαδίσωμεν <ἰόντα>· περαιούμενον <ἰόντι>· πορευομένῳ <ἰότητι>· τῇ βουλήσει <ἰούσης>· συντρεχούσης <ἴρειαις> (nusquam)· ταῖς διαφοροῖς τῇ ἰριδι ἐοικυῖαις <ἴρι (ἴριν)>· τὸ ἰριδι ἐοικυῖα· ἐστὶ δὲ ὡς τόξον ἐν οὐρανῷ

Chapter 8

Unsorted entries

8.1 Vitae Dionysii Periegetae, Vita Dionysii

Vitae Dionysii Periegetae, Vita Dionysii (4173: 001) “Antimachos in der Vita Chisiana des Dionysios Periegetes”, Ed. Kassel, R. Basel: Seminar für klassische Philologie, 1985; Catalepton. Festschrift für Bernhard Wyss. Line 38

Ἀλέξανδρος μὲν οὖν ἐπὶ Σκύθας ἰὼν καὶ τοὺς Ἰνδοὺς ἔγνω τὸν ἑῷον Ὡκεανόν, Ἀντίοχοί τε καὶ Πτολομαῖοι περιμόντες οὐκ ὀλίγην ἰστόρησαν γῆν.

8.2 Apomasar Astrol.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatū (4361: 008) “Albumasar de revolutionibus nativitatū”, Ed. Pingree, D. Leipzig: Teubner, 1968. Page 2, line 12

καὶ τοῦ ἐπιμερίζοντος καὶ τοῦ κοινωνούντος αὐτῷ β' Περὶ ὧν σημαίνουσιν οἱ τε ἀγαθοποιοὶ ἐπιμερίζοντες καὶ οἱ κακοποιοὶ καὶ οἱ κοινωνούντες κατὰ τε ὄριον καὶ κατὰ τὰς ἀκτῖνας γ' Καὶ περὶ τῆς παραδόσεως τοῦ ἐνὸς πρὸς τὸν ἕτερον δ' Περὶ τῆς σημασίας τῶν ἀστέρων ὅτε ὁ μὲν εἰς αὐτῶν ἐπιμερίζει, ὁ δὲ κοινωνεῖ αὐτῷ ε' Περὶ τῆς σημασίας τοῦ χρονοκράτορος καὶ τοῦ ἐπιμερίζοντος <καὶ> τοῦ ὠροσκόπου ς' Περὶ ὧν εἶπον οἱ Ἰνδοὶ περὶ τοῦ νουπεύχρες καὶ περὶ ὧν σημαίνει ἀγαθῶν καὶ κακῶν Τμῆμα τέταρτον περιέχον λόγους <ζ> α' Περὶ τῆς περιόδου τῶν <ζ> ἀστέρων τῆς λεγομένης φαρταρίας β' Καὶ περὶ τοῦ Ἀναβιβάζοντος καὶ Καταβιβάζοντος Τμῆμα πέμπτον περιέχον λόγους <η> α' Περὶ τῆς ἀποκατα<στά>σεως τῶν ἀστέρων ἐν ταῖς τῶν χρόνων ἐναλλαγαῖς εἰς τοὺς ἰδίους τόπους καὶ τῆς εἰς ἀλλήλους αὐτῶν ἐπεμβάσεως

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatū Page 12, line 8

Περὶ ὧν συμβάλλεται πρὸς διά- γνωσιν τῶν διαθέσεων ἢ τῶν ἐτῶν ἐναλλαγῇ ἥτοι περὶ τῆς ὠφελείας τῆς ἀπὸ τῶν ἐναλλαγῶν τῶν ἐτῶν

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Ἡ μὲν ἀρετὴ τῆς διαγνώσεως κατὰ τοὺς ἀνθρώπους πραγμάτων καὶ διαθέσεων ἀπὸ τῆς τῶν ἐτῶν ἐναλλαγῆς πρόδηλος· ἅπαντα γὰρ τὰ ἔθνη, οἳ τε Βαβυλώνιοι καὶ Πέρσαι καὶ Ἰνδοὶ καὶ Αἰγύπτιοι, καὶ οἱ τούτων βασιλεῖς καὶ ἰδιῶται οὐ πρότερον ἐπεχείρουν τινὶ πράγματι ἐν τινι <ἔτει> πρὶν ἢ ἰδεῖν τὴν ἐναλλαγὴν τοῦ χρόνου τοῦ γενεθλίου αὐτῶν.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatum Page 170, line 12t

Περὶ τῶν λεγομένων νουπαρχατῶν καὶ τῶν κυρίων αὐτῶν καὶ τοῦ περιπάτου αὐτῶν καὶ τῆς τρίτης διαιρέσεως αὐτῶν, καὶ περὶ δια- γνώσεως παντὸς ἐπιμερίζοντος καὶ τῆς σημασίας αὐτοῦ καὶ τῆς σημασίας τοῦ συνεπιμερίζοντος αὐτῶ ἢ κατὰ σῶμα ἢ κατὰ ἀκτῖνα καθὼς οἱ Ἰνδοὶ ἐξέθεντο.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatum Page 170, line 15

Τῷ μὲν ἐπιμερισμῷ ᾧ προείπομεν ἑναγχος χρῶνται οἳ τε Βαβυλώνιοι καὶ οἱ Πέρσαι καὶ οἱ Αἰγύπτιοι· οἱ μὲντοι Ἰνδοὶ καὶ οἱ γειτνιάζοντες αὐτοῖς, ἰδόντες ἐν ἐνὶ ἐπιμερισμῷ διάφορα πάθη τοῖς ἀνθρώποις ἐπισυμβαίνον- τα, οὐκ ἐποίησαν τὸν ἐπιμερισμὸν κατὰ τὰ ὅρια ὡς οἱ λοι- ποί, ἀλλ' ἐποίησαν τοῦτον κατὰ τὰ νουπάχρατες ὡς ἂν ἀκριβέστερον προβαίνωσι τὰ ἀποτελέσματα.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatum Page 171, line 3

Τὸ δὲ τοιοῦτον ὄνομα τῇ Ἰνδῶν διαλέκτῳ ἐρμηνεύεται τὸ ἑννατον, καὶ ἔστι διακοσίων λεπτῶν ἥτοι τριῶν μοιρῶν καὶ τρίτου μοίρας ὀρθῆς· ἔσται οὖν ἐν ἐκάστῳ ζῳδίῳ ἑννέα ἑννατα, ὧν ἕκαστον ἔχει ἴδιον ἐπικρατήτορα.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatum Page 172, line 22

Τὸν δὲ περίπατον τῶν τοιούτων ἐννάτων ἐν τε τοῖς γενεθλίοις καὶ ἐν ἐτέροις καὶ τὴν διαίρεσιν αὐτῶν τὴν εἰς τὰ τρίτα ὡς ἐν μυστηρίῳ κατεῖχον οἱ Ἰνδοί, μὴ ἀπο- καλύπτοντες τοῦτο εἰ μὴ γε μόνοις τοῖς ἐπ' ἄκρον ἑλη- λακόσι τῆς ἐπιστήμης, ὀρκίζοντες αὐτοὺς πρότερον ἐν μυστηρίῳ ἔχειν τὴν τοιαύτην διδασκαλίαν καὶ μὴ ἀνα- κοινοῦσθαι ταύτην τοῖς ἀγροικοτέροις, ἀλλὰ μόνοις τοῖς γινώσκουσι τὸ μέτρον τοῦ μαθήματος καὶ ὅσον ὑπερέχει ὁ ἐπιστήμων τῶν ἄλλων ἀνθρώπων· οἱ δὲ παραλαβόντες τὴν τοιαύτην μέθοδον μεγάλας ὠμολόγουν χάριτας τῷ διδάσκοντι.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatum Page 178, line 20t

Περὶ διαγνώσεως τοῦ χρόνο- κράτορος ἐκ τῶν ἐννάτων κατὰ τὴν Ἰνδῶν δόξαν

Ὅτε καταντήσῃ ὁ χρόνος εἰς τι ζῳδίου, λαμβάνουσιν οἱ Ἰνδοὶχρονοκράτορα τὸν κύριον τοῦ πρώτου ἐννάτου, εἴτε εἰς τὴν ἀρχὴν τοῦ ζῳδίου κατήνησεν ἡ ἐναλλαγὴ εἴτε εἰς τὸ τέλος.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatum Page 179, line 19

εἰ δὲ καταντήσῃ τὸ ἔτος τυχὸν ἐπὶ τοὺς Διδύμους εἰς οἰονδήποτε τόπον αὐτῶν, ἔσται ἡ Ἀφροδίτη κυρία τοῦ ἔτους διὰ τὸ κυρίαν αὐτὴν εἶναι τοῦ πρώτου ἐννάτου τῶν Διδύμων· εἰ δὲ τὸ ἔτος καταντήσῃ ἐπὶ τὸν Καρκίνον, παραλαμβάνουσιν ὡσαύτως οἱ Ἰνδοὶ τὴν Σελήνην κυρίαν τοῦ ἔτους διὰ τὸ κυριεύειν αὐτὴν τοῦ πρώτου ἐννάτου τοῦ Καρκίνου.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatum Page 180, line 10

περὶ δὲ τῶν κατὰ μῆνα καὶ τῶν καθ' ἡμέραν ἀποτελεσμάτων ἀπὸ τῶν ἐννάτων καθὼς ἐδό- ξασαν οἱ Ἰνδοὶ διηγησόμεθα εἰς τὸ μετέπειτα, τοῦ Θεοῦ θέλοντος.

8.3. [CLITOPHON] HIST.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatum Page 235, line 26

κατὰ τὸ μὲν [τὸ] ἀπὸ τοῦ ζωδίου τοῦ καταντήματος ὀφείλεις ποιεῖν οὕτως· ἵνα ἐπιβλέπῃς πρὸς τὸν κύριον τοῦ κατα<ντήματος> ὅς ἐστιν κύριος τοῦ πρώτου ἐννατημορίου [τοῦ ἀπαντήματος] τοῦ ζωδίου ὡς οἱ Ἴνδοὶ δοξάζουσι, καθὼς ἐδηλώσαμεν ἐν τῷ τρίτῳ τμήματι ταύτης τῆς βίβλου.

Apomasar Astrol., De revolutionibus nativitatum Page 236, line 33

ὁ αὐτὸς γοῦν ἀριθμὸς παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς ἐστὶ ἐκάστου μηνός, διότι ποιοῦσι τὰς ἡμέρας τῶν ὅλων μηνῶν τῶν γενεθλιακῶν ἐτῶν ἴσας ὥστε μὴ εἶναι τὸν ἕνα μῆνα ἐλάττονα ἢ μείζονα τοῦ ἐτέρου.

8.3 [Clitophon] Hist.

[Clitophon] Hist., Fragmenta (1281: 002) “FHG 4”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment t1, line 1

INΔ*ΙKA.

[Clitophon] Hist., Fragmenta Fragment 1, line 2

E LIBRO DECIMO.

Plutarch. De fluv. 25, 3: Φύεται δὲ καὶ βοτάνη (sc. ἐν Ἰνδῷ), Καρπύκη καλουμένη, βουγλώσσω πα- ρόμοιος· ποιεῖ δ' ἄριστα πρὸς ἰκτερικὸν μεθ' ὕδατος χλιαροῦ διδομένη τοῖς πάσχουσι· καθὼς ἱστορεῖ Κλει- τοφῶν ὁ Ῥόδιος ἐν ἰ' Ἰνδικῶν.

8.4 Georgius Syncellus Chronogr.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica (3045: 001) “Georgius Syncellus. Ecloga chronographica”, Ed. Mosshammer, A.A. Leipzig: Teubner, 1984. Page 2, line 32

πρωτόκτιστος ἡμέρα, ἣν ὡς θεμέλιον ἀρραγῇ καὶ βάσιν ἀσειστον πηξάμενος τῆσδε τῆς συγγραφῆς, λιπαρῶ τὸν ἐν αὐτῇ καὶ κατ' αὐτὴν οὐ μόνον τὴν αἰ- σθητὴν κτίσιν ὑποστησάμε- νον, ἀλλὰ καὶ τὴν ἐν αὐτῷ καινὴν κτίσιν Χριστὸν θεὸν ἡμῶν συνεργῆσαί μοι τῷ ἀμαθεστάτῳ, ὥστε σαφῶς ἀποδείξαι τῷ **Β**εφ' ἔτει τοῦ κόσμου τὴν ἐνσαρκον αὐτοῦ γεγενῆσθαι οἰκονομίαν, καὶ ὅσα ἐν τῷ μεταξὺ χρόνῳ γέγονεν ἐπίσημα πράγματα περὶ τε ἔθνη καὶ βασιλείας καὶ τῶν μετὰ ταῦτα ὀκτακοσίων δύο ἐτῶν, λγ' μὲν ἐτῶν καὶ ἡμερῶν μ' τῆς ἐπὶ γῆς οἰκονομίας, ἐπτακοσίων δὲ καὶ ξς' καὶ μηνῶν ι' καὶ ἡμερῶν κ' τῶν μετὰ τὴν ἀγίαν αὐτοῦ ἀνάληψιν, τοῦτ' ἐστὶν ἀπὸ τῆς πρωτοκτίστου ἡμέρας ἕως τοῦ κοσμικοῦ καθολικοῦ **Β**ςτ' ἔτους ἰνδικτίωνος α', ὡς ὑποτέτακται.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 6, line 12

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

μάτων ακολουθίας, διαφοράς φημι βασιλέων καὶ ἱερέων ἀριθμόν, προφητῶν τε καὶ ἀποστόλων καὶ μαρτύρων καὶ διδασκάλων, καὶ τῶν παρ' Ἑλληνισιν ἢ ἄλλοις ἔθνεσιν ἐπὶ σοφία βεβοημένων ἢ ἄλλῃ τινὶ τέχνῃ ἢ ἀριστεία πολεμικῇ καὶ ἐπὶ μοχθηρίᾳ προδήλῳ, πάντα ὡς οἷός τε ὦν ἀναλεξάμενος ἐκ τῶν προειρημένων ἱστορικῶν ἀνδρῶν· ἐπὶ πᾶσι τὴν κατὰ Χριστοῦ καὶ τοῦ γένους ἡμῶν θεοβδέλυκτον διαθήκην, ἣν διέθετο τὰ σκηνώματα τῶν Ἰδουμαίων καὶ οἱ Ἰσραηλιταὶ διώκοντες τὸν κατὰ τὸ πνεῦμα λαόν, θείοις κρίμασι καὶ ἀποστασίαν μελετῶντες τὴν ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν ὑπὸ τοῦ μακαρίου Παύλου προφητευθεῖσαν, διαγράψω κατὰ δύναμιν, ἕως τοῦ νῦν ἐνεστῶτος **Β**ΨΤ' ἔτους ἀπὸ κτίσεως κόσμου ἰνδικτίωνος α'.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 6, line 22

διὸ καλὸν ἡγούμενος τὰς ἐπισημοτέρας αὐτῶν διαφοράς τρεῖς οὐσας καὶ ταῖς πατρικαῖς διδασκαλίαις εὐδιαγνώστους εἶναι τοῖς φιλομαθέσιν ἐκθήσομαι τὰς λοιπὰς παρεῖς, ὡς ἀτρίπτους οἷον εἰπεῖν, Ἰνδῶν ἢ Χαλδαίων ἢ ἄλλων τινῶν ἀσυνήθων.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 46, line 24

Σὴμ τῷ πρωτοτόκῳ αὐτοῦ υἱῷ κατὰγοντι <ἔτος> υλα' ἔδωκεν ἀπὸ Περσίδος καὶ Βάκτρων ἕως Ἰνδικῆς μῆκος, πλάτος δὲ ἀπὸ Ἰνδικῆς ἕως Ῥινοκουρούρων τῆς Αἰγύπτου, ἥτοι τὰ ἀπὸ ἀνατολῆς ἕως μέρους τῆς μεσημβρίας, τὴν τε Συρίαν καὶ Μήδειαν καὶ ποταμὸν διορίζοντα αὐτοῦ τὰ ὅρια τὸν Εὐφράτην.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 49, line 8

ιδ' Ἑλμωδάμ, ἀφ' οὗ Ἰνδοί.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 49, line 17

κγ' Σαβάτ, ἀφ' οὗ Ἀραβες Ἰνδῶν.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 49, line 21

Οὗτοι πάντες ἐκ τοῦ Σὴμ κατὰγονται, ὧν ἡ κατοικία ἐστὶ κατὰ μῆκος μὲν ἀπὸ Βάκτρων καὶ Ἰνδικῆς ἕως Ῥινοκουρούρων τῆς ὀριζούσης Συρίαν καὶ Αἰγύπτον καὶ τὴν ἐρυθρὰν θάλασσαν ἀπὸ στόματος τοῦ κατὰ Ἀρσινόῃ τῆς Ἰνδικῆς, κατὰ πλάτος δὲ ἀπὸ Περσίδος καὶ Βάκτρων ἕως Ἰνδικῆς.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 50, line 9

οἱ δὲ ἐπιστάμενοι αὐτῶν γράμματα Ἰουδαῖοι, Πέρσαι, Μῆδοι, Χαλδαῖοι, Ἰνδοί, Ἀσσύριοι.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 52, line 20

αἱ δὲ χῶραι αὐτῶν Αἰγύπτος, Αἰθιοπία ἢ βλέπουσα κατὰ Ἰνδοὺς πρὸς εὐρόνοτον, ἄλλη Αἰθιοπία πρὸς νότον, ὅθεν ἐκπορεύεται ὁ Νεῖλος ποταμός, ἐρυθρὰ ἢ βλέπουσα κατὰ ἀνατολὰς, Θηβαῖς, Λιβύη ἢ παρεκτείνουσα μέχρι Κορκυρίνης, Μαρμαρὶς καὶ τὰ περὶ αὐτὴν πάντα, Σύρτις ἔχουσα ἔθνη τρία, Νασαμώνας, Μάκας, Ταυταμαῖους.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 56, line 2

τοῦ δὲ Χάμ πλεῖστα μέχρι καὶ νῦν ἔθνη ἐστὶν ἐν ἀποστασίᾳ κατὰ τε τὰς Ἰνδίας καὶ Αἰθιοπίας καὶ Μαυριτανίας, ἐν οἷς Ἀραβῖαι καὶ Ἰδουμαῖαι κατὰ θεοῦ καὶ τῶν ἁγίων αὐτοῦ θρασύνονται τῇ τοῦ Χάμ καὶ Χαναὰν κατάρᾳ καθυποβεβλημένοι.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 71, line 20

8.4. GEORGIUS SYNCCELLUS CHRONOGR.

πρώτος ἦρξε Νίνος ἀπάσης τῆς Ἀσίας, πλὴν Ἰνδῶν, ἔτεσι τριακοσίοις, οὐ πολὺ πρότερον Ὡγύγου.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 177, line 11

Αἰθίοπες ἀπὸ Ἰνδοῦ ποταμοῦ ἀναστάντες πρὸς τῇ Αἰγύπτῳ ᾤκησαν.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 190, line 8

Διόνυσος ἐπὶ Ἰνδοὺς ἐστράτευσε καὶ Νῦσαν πόλιν ἔκτισε πρὸς τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 190, line 16

Διονύσου πράξεις καὶ τὰ περὶ Ἰνδοὺς, Λυκούργον τε καὶ Ἀκταίωνα καὶ Πενθέα, ὅπως τε Περσεΐ συστάς εἰς μάχην ἀναιρεῖται, ὥς φησι Δείναρχος ὁ ποιητής, οὐχ ὁ ῥήτωρ.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 194, line 22

καὶ ἐπάγει· αὕτη μὲν οὖν βασιλεύσασα τῆς Ἀσίας ἀπάσης πλὴν Ἰνδῶν ἐτελεύτησε τὸν προειρημένον τρόπον, βιώσασα μὲν ἔτη ξβ', βασιλεύσασα δὲ δύο πρὸς τοῖς μ'.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 195, line 29

στρατεῖν τε αὐτῆς κατὰ τῶν Ἰνδῶν καὶ ἦτταν καὶ ὅτι τοὺς ἰδίους ἀνείλεν υἱοὺς καὶ ὑπὸ Νίνου τῶν παίδων ἐνός ἀνηρέθη τοῦ διαδεξαμένου τὴν ἀρχήν.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 259, line 22

καὶ ἀπὸ τῆς ἀρχῆς Ἰούδα ἀρχιερέως υἱοῦ Ματθίου ἕως λγ' ἔτους Ἡρώδου, τεσσαρακοστοῦ δὲ τρίτου ἔτους Αὐγούστου Καίσαρος, ὅτε τὸ κατὰ σάρκα ἐκ τῆς ἀγίας παρθένου ὁ κύριος ἐτέχθη, ἔτη ρξζ', κόσμου δὲ Ϡεφα', μηνὶ Δεκεμβρίῳ ἰνδικτ.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 264, line 1

Τὸν Ναβουχοδονόσωρ ὁ Μεγασθένης ἐν τῇ δ' τῶν Ἰνδικῶν Ἡρακλέους ἀλκιμώτερον ἀποφαίνει, ὃς ἀνδρεῖα μεγάλη Λιβύης τὸ πλεῖστον καὶ Ἰβηρίας κατεστρέψατο.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 277, line 2

Ὁ αὐτὸς πάππος ἦν Κύρου, Δαρεῖος, Ἀσούηρος ὁ καὶ Ἀστυάγης. Κατ' Ἰνδῶν καὶ ἄλλων ἐθνῶν ἐορτάζων ἐπινίκια Οὐασθὴν τὴν ἰδίαν γυναῖκα ὡς ὠραιότατην ὀφθῆναι τοῖς συνισταμένοις αὐτῷ μεγιστάσιν ἤξιον· τὴν δὲ μὴ βουλευθεῖσαν ἠτίμωσε, προστάξας ἐπιλεγῆναι παρθένους ἐκ πάσης αὐτοῦ τῆς ἐξουσίας, ὧν εὐρέθη πασῶν εὐμορφοτάτη Ἑδεσα ἢ καὶ Ἑσθήρ, ἀνεψιὰ Μαρδοχαίου Ἑβραία ἀπὸ τῆς αἰχμαλωσίας τῆς ἐπὶ Σεδεκίου.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 314, line 26

ὁ αὐτὸς τὴν Ἀορνὴν πέτραν ἐχειρώσατο καὶ Βερναβοᾶν ποταμὸν Ἰνδῶν πρὸς Δάνδαμιν διέβη Βραχμανόν.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 318, line 19

κάκειθεν μεταχωρήσας ἐπὶ τοὺς Ἰνδοὺς παντός τε κρατήσας ἔθνους Ἰνδικοῦ μέχρι ποταμοῦ Γάγγου πάλιν ἀναξέγγυσσι διὰ τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ μέχρι τῆς Ἰνδικῆς θαλάσσης, καὶ οὕτως εἰς τὴν Ἀσσυρίαν ἐπάνεισι Βαβυλῶνα, πᾶσαν ἔχων Εὐρώπην ὑπὸ χεῖρα καὶ τὴν Ἀσίαν.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 368, line 10

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Τῷ Μενξ' ἔτει τοῦ κόσμου δεύτερον ἐχρημάτισεν Αὐγούστου Καίσαρος πλήρες καὶ ἀρχὴ τοῦ τρίτου, ἐν ᾧ καὶ ἡ Ἰνδικτος ὑπ' αὐτοῦ ἦτοι ἐπινέμησις ἐθεσπίσθη, ὡς μαρτυρεῖ ὁ μακάριος Μάξιμος ἐν τῷ περὶ τοῦ πάσχα λόγῳ.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 376, line 6

Τότε καὶ Πανδίων ὁ τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς ἐπεκηρυκέσατο φίλος Αὐγού- στοῦ γενέσθαι καὶ σύμμαχος.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 376, line 15

Πανδίων ὁ τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς φίλος Αὐγούστου καὶ σύμμαχος εἶναι πρεσβεύεται.

Georgius Syncellus Chronogr., Ecloga chronographica Page 416, line 22

τὸν γὰρ πρεσβύτε- ρον υἱὸν Τίτον τὸν πρὸς Ἰουδαίους πόλεμον ἐκτελέσαντα καταλιπὼν αὐ- τὸς ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα παραγίνεται, χαίρων, ὡς Ἕλληνες μυθεύονται, ἐφ' οἷς ἡκηκόει παρὰ τοῦ Τυανέως Ἀπολλωνίου περὶ τοῦ χρόνου τῆς βασιλείας καὶ τῶν λοιπῶν εὐδοκιμήσεων, κατὰ τὴν Αἴγυπτον συντυχῶν αὐτῷ ἐξ Ἰνδῶν καὶ Βραχμάνων ἐπανελθόντι τῶν ἐκεῖσε Γυμνοσοφιστῶν.

8.5 Plutarchus Biogr.

Plutarchus Biogr., Phil., Lycurgus (0007: 004) “Plutarch’s lives, vol. 1”, Ed. Perrin, B. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1914, Repr. 1967. Chapter 4, section 6, line 3

ταῦτα μὲν οὖν Αἰγυπτίοις ἔνιοι καὶ τῶν Ἑλληνικῶν συγγραφέων μαρτυροῦσιν· ὅτι δὲ καὶ Λιβύην καὶ Ἰβηρίαν ἐπῆλθεν ὁ Λυκοῦργος καὶ περὶ τὴν Ἰνδικὴν πλανηθεὶς τοῖς Γυμνοσοφισταῖς ὠμίλη- σεν, οὐδένα πλὴν Ἀριστοκράτη τὸν Ἰππάρχου Σπαρτιάτην εἰρηκότα γινώσκωμεν.

Plutarchus Biogr., Phil., Aemilius Paullus (0007: 019) “Plutarchi vitae parallelae, vol. 2.1, 2nd edn.”, Ed. Ziegler, K. Leipzig: Teubner, 1964. Chapter 12, section 11, line 1

Ἀλέξανδρος δὲ τῆς ἐπ' Ἰνδοὺς στρατείας ἀπτόμενος, καὶ βαρὺν ὄρων καὶ δύσογκον ἤδη τὸν Περσικὸν ἐφελκομένους πλοῦτον τοὺς Μακεδόνας, πρῶτας ὑπέπρησε τὰς βασιλικὰς ἀμά- ξας, εἶτα τοὺς ἄλλους ἐπεισε ταὐτὸ ποιήσαντας ἐλαφροὺς ἀναξεύξαι πρὸς τὸν πόλεμον ὥσπερ λελυμένους.

Plutarchus Biogr., Phil., Crassus (0007: 039) “Plutarchi vitae parallelae, vol. 1.2, 3rd edn.”, Ed. Ziegler, K. Leipzig: Teubner, 1964. Chapter 16, section 2, line 4

τότε δ' ἐπηρεζόμενος κομιδῇ καὶ διεφθαρμένος, οὐ Συρίαν οὐδὲ Πάρθους ὄρον ἐποιεῖτο τῆς εὐ- πραξίας, ἀλλ' ὡς παι- διὰν ἀποφανῶν τὰ Λευκόλλου πρὸς Τιγράνην καὶ Πομπηίου πρὸς Μιθριδάτην, ἄχρι Βακτριῶν καὶ Ἰνδῶν καὶ τῆς ἔξω θαλάσσης ἀνῆγεν ἑαυτὸν ταῖς ἐλπίσι.

Plutarchus Biogr., Phil., Comparatio Niciae et Crassi (0007: 040) “Plutarchi vitae parallelae, vol. 1.2, 3rd edn.”, Ed. Ziegler, K. Leipzig: Teubner, 1964. Chapter 2, section 7, line 5

8.5. PLUTARCHUS BIOGR.

ὁ μὲν γὰρ τῆς εἰρήνης ἔρως θεῖος ἦν ὡς ἀληθῶς, καὶ τὸ λῦσαι τὸν πόλεμον ἐλληνικώτατον πολίτευμα, καὶ τῆς πράξεως ἕνεκα ταύτης οὐκ ἄξιον Νικίᾳ παραβαλεῖν Κράσσον, οὐδ' εἰ τὸ Κάσπιον φέρων πέλαγος ἢ τὸν Ἰνδῶν ὠκεανὸν τῇ Ῥωμαίων ἡγεμονίᾳ προσώρισε.

Plutarchus Biogr., Phil., Comparatio Niciae et Crassi Chapter 4, section 2, line 4

ὁ μὲν γὰρ ἐμπειρία καὶ λογισμῷ χρῆσάμενος ἡγεμόνος ἔμφρονος, οὐ συνη- πατήθη ταῖς ἐλπίσι τῶν πολιτῶν, ἀλλ' ἔδεισε καὶ ἀπέγνω λήψεσθαι Σικελίαν· ὁ δ' ὡς ἐπὶ ῥᾶστον ἔργον τὸν Παρθι- κὸν ὀρμήσας πόλεμον, ἡμαρτε <μέν>, ὠρέχθη δὲ μεγά- λων, Καίσαρος τὰ ἐσπέρια καὶ Κελτοὺς καὶ Γερμανοὺς καταστρεφόμενον καὶ Βρεττανίαν, αὐτὸς ἐπὶ τὴν ἑω καὶ τὴν Ἰνδικὴν ἐλάσαι θάλασσαν καὶ προς<κατ>εργάσασθαι τὴν Ἀσίαν, οἷς Πομπήιος ἐπῆλθε καὶ Λεύκολλος ἀντέσχεν, ἄνδρες εὐμενεῖς καὶ πρὸς πάντας ἀγαθοὶ διαμείναντες, προελόμενοι δ' ὅμοια Κράσσῳ καὶ τὰς αὐτὰς ὑποθέσεις λαβόντες· ἐπεὶ καὶ Πομπηίῳ τῆς ἀρχῆς διδομένης ἡ σύγ- κλητος ἠναντιοῦτο, καὶ Καίσαρα μυριάδας τριάκοντα Γερμανῶν τρεφόμενον συνεβούλευεν ὁ Κάτων ἐκδοῦναι τοῖς ἡττημένοις καὶ τρέφειν τὸ μῆνιμα τοῦ παρασπονδή- ματος εἰς ἐκεῖνον, ὁ δὲ δῆμος ἐρρῶσθαι φράσας Κάτωνι πεντεκαίδεκα ἡμέρας ἔθυσεν ἐπινίκια καὶ περιχαρῆς ἦν.

Plutarchus Biogr., Phil., Eumenes (0007: 041) "Plutarchi vitae parallelae, vol. 2.1, 2nd edn.", Ed. Ziegler, K. Leipzig: Teubner, 1964. Chapter 1, section 5, line 1

μετὰ δὲ τὴν ἐκείνου τελευτὴν οὔτε συνέσει τινὸς οὔτε πίστει λείπεσθαι δοκῶν τῶν περὶ Ἀλέξ- ανδρον, ἐκαλεῖτο μὲν ἀρχιγραμματεὺς, τιμῆς δ' ἥσπερ οἱ μάλιστα φίλοι καὶ συνήθεις ἐτύγγα- νεν, ὥστε καὶ στρατηγὸς ἀποσταλῆναι κατὰ τὴν Ἰνδι- κὴν ἐφ' ἑαυτοῦ μετὰ δυνάμεως, καὶ τὴν Περδίκκου παραλαβεῖν ἱππαρχίαν, ὅτε Περδίκκας ἀποθανόντος Ἡφαιστίωνος εἰς τὴν ἐκείνου προῆλθε τάξιν.

Plutarchus Biogr., Phil., Pompeius (0007: 045) "Plutarch's lives, vol. 5", Ed. Perrin, B. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1917, Repr. 1968. Chapter 70, section 3, line 1

πολὺ δὲ καὶ Σκυθία λειπόμενον ἔργον καὶ Ἰνδοί, καὶ πρόφασις οὐκ ἄδοξος ἐπὶ ταῦτα τῆς πλεον- εξίας ἡμερῶσαι τὰ βαρβαρικά.

Plutarchus Biogr., Phil., Pompeius Chapter 70, section 3, line 5

τίς δ' ἂν ἡ Σκυθῶν ἵππος ἢ τοξεύματα Πάρθων ἢ πλοῦτος Ἰνδῶν ἐπέσχε μυριάδας ἑπτὰ Ῥωμαίων ἐν ὅπλοις ἐπερχομένας Πομπηίου καὶ Καίσαρος ἡγουμένων, ὧν ὄνομα πολὺ πρότερον ἤκουσαν ἢ τὸ Ῥωμαίων;

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander (0007: 047) "Plutarchi vitae parallelae, vol. 2.2, 2nd edn.", Ed. Ziegler, K. Leipzig: Teubner, 1968. Chapter 13, section 4, line 2

ὅλως δὲ καὶ τὸ περὶ Κλεῖτον ἔργον ἐν οἴνῳ γενόμενον, καὶ τὴν πρὸς Ἰνδοὺς τῶν Μακεδόνων ἀποδειλιάσιν, ὥσπερ ἀτελῆ τὴν στρα- τείαν καὶ τὴν δόξαν αὐτοῦ προεμένων, εἰς μῆνιν ἀνῆγε Διονύσου καὶ νέμεσιν.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 47, section 11, line 3

διὸ καὶ πρὸς ἀλλήλους ὑπούλως ἔχοντες, συνέκρουον πολλάκις, ἅπαξ δὲ περὶ τὴν Ἰνδικὴν καὶ εἰς χεῖρας ἦλθον σπασά- μενοι τὰ ξίφη, καὶ τῶν φίλων ἐκατέρῳ παραβοηθούντων, προσελάσας

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

<ό> Ἀλέξανδρος ἐλοιδόρει τὸν Ἡφαιστίωνα φανερώς, ἐμπληκτον καλῶν καὶ μαινόμενον, εἰ μὴ συνίησιν ὥς ἐάν τις αὐτοῦ τὸν Ἀλέξανδρον ἀφέληται, μηδέν ἐστίν· ἰδίᾳ δὲ καὶ τοῦ Κρατεροῦ πικρῶς καθήψατο, καὶ συν- αγαγὼν αὐτούς καὶ διαλλάξας, ἐπάμωσε τὸν Ἀμμωνα καὶ τοὺς ἄλλους θεούς, ἧ μὴν μάλιστα φιλεῖν ἀνθρώπων ἀπάντων ἐκείνους· ἂν δὲ πάλιν αἰσθηται διαφερομένους, ἀποκτενεῖν ἀμφοτέρους ἢ τὸν ἀρξάμενον.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 55, section 9, line 7

ἀποθανεῖν δ' αὐτὸν οἱ μὲν ὑπ' Ἀλέξανδρου κρεμασθέντα λέγουσιν, οἱ δ' ἐν πέ- δαις δεδεμένον καὶ νοσήσαντα, Χάρης δὲ (FGrH 125 F 15) μετὰ τὴν σύλληψιν ἐπτά μῆνας φυλάττεσθαι δεδεμένον, ὥς ἐν τῷ συνεδρίῳ κριθεῖν παρόντος Ἀριστοτέλους· ἐν αἷς δ' ἡμέραις Ἀλέξανδρος [ἐν Μαλλοῖς Ὁξυδράκαις] ἐτρώθη περὶ τὴν Ἰνδιαν, ἀποθανεῖν ὑπέρπαχυν γενόμενον καὶ φθειρί- σαντα.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 57, section 1, line 1

Μέλλων δ' ὑπερβάλλειν εἰς τὴν Ἰνδικὴν ὥς ἑώρα πλήθει λαφύρων τὴν στρατιὰν ἤδη βαρεῖαν καὶ δυσκίνητον οὔσαν, ἅμ' ἡμέρᾳ συνεσκευασμένων τῶν ἀμαξῶν πρῶ- τας μὲν ὑπέπρησε τὰς αὐτοῦ καὶ <τὰς> τῶν ἐταίρων, μετὰ δὲ ταύτας ἐκέλευσε καὶ ταῖς τῶν Μακεδόνων ἐνεῖναι πῦρ.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 59, section 1, line 1

Ὁ δὲ Ταξίλης λέγεται μὲν τῆς Ἰνδικῆς ἔχειν μοῖραν οὐκ ἀποδέουσιν Αἰγύπτου τὸ μέγεθος, εὐβοτον δὲ καὶ καλλίκαρπον ἐν τοῖς μάλιστα, σοφὸς δὲ τις ἀνὴρ εἶναι καὶ τὸν Ἀλέξανδρον ἀσπασάμενος “τί δεῖ πολέμων” φάναι “καὶ μάχης ἡμῖν Ἀλέξανδρε πρὸς ἀλλήλους, εἰ μήθ' ὕδωρ ἀφαιρησόμενος ἡμῶν ἀφίξαι, μήτε τροφὴν ἀναγκαίαν, ὑπὲρ ὧν μόνων ἀνάγκη διαμάχεσθαι νοῦν ἔχουσιν ἀνθρώποις;

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 59, section 6, line 1

Ἐπεὶ δὲ τῶν Ἰνδῶν οἱ μαχιμώτατοι μισθοφοροῦντες ἐπε- φοίτων ταῖς πόλεσιν ἐρρωμένως ἀμύνοντες, καὶ πολλὰ τὸν Ἀλέξανδρον ἐκακοποιοῦν, σπεισάμενος ἐν τινὶ πόλει πρὸς αὐτούς, ἀπιόντας ἐν ὁδῷ λαβὼν ἀπαντας ἀπέκτεινε.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 62, section 1, line 2

Τοὺς μέντοι Μακεδόνας ὁ πρὸς Πῶρον ἀγὼν ἀμβλυτέρους ἐποίησε, καὶ τοῦ πρόσω τῆς Ἰνδικῆς ἔτι προελθεῖν ἐπέσχε.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 62, section 4, line 4

Ἀνδρόκοττος γὰρ ὕστερον οὐ πολλῷ βασιλεύσας Σελεύκῳ πεντακοσίους ἐλέφαντας ἐδωρή- σατο, καὶ στρατοῦ μυριάσιν ἐξήκοντα τὴν Ἰνδικὴν ἐπῆλθεν ἀπασαν καταστρεφόμενος.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 63, section 2, line 3

πρὸς δὲ τοῖς καλουμένοις Μαλλοῖς, οὓς φασιν Ἰνδῶν μαχιμωτά- τους γενέσθαι, μικρὸν ἐδέησε κατακοπῆναι.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 65, section 5, line 2

τὸν μέντοι Καλανὸν ἔπεισεν ὁ Ταξίλης ἐλθεῖν πρὸς Ἀλέξανδρον· ἐκαλεῖτο δὲ Σφίνης· ἐπεὶ δὲ κατ' Ἰνδικὴν γλῶτταν τῷ καλῷ προσαγορευῶν ἀντὶ τοῦ χαίρειν τοὺς ἐντυγχάνοντας ἡσπάζετο, Καλανὸς ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ὠνομάσθη.

8.5. PLUTARCHUS BIOGR.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 66, section 3, line 2

καὶ τὰς μὲν ναῦς ἐκέλευσε παρα- πλεῖν, ἐν δεξιᾷ τὴν Ἰνδικὴν ἐχούσας, ἡγεμόνα μὲν Νέαρχον ἀποδείξας, ἀρχικυβερνήτην δ' Ὀνησίκριτον· αὐτὸς δὲ πεζῇ δι' Ὀρειτῶν πορευόμενος, εἰς ἐσχάτην ἀπορίαν προήχθη, καὶ πλῆθος ἀνθρώπων ἀπώλεσε <τοσοῦτον>, ὥστε τῆς μα- χίμου δυνάμεως μὴδὲ τὸ τέταρτον ἐκ τῆς Ἰνδικῆς ἀπαγα- γεῖν.

Plutarchus Biogr., Phil., Alexander Chapter 69, section 8, line 2

(τοῦτο πολ- λοῖς ἔτεσιν ὕστερον ἄλλος Ἰνδὸς ἐν Ἀθήναις Καίσαρι συνὼν ἐποίησε, καὶ δείκνυ- ται μέχρι νῦν τὸ μνημεῖον, Ἰνδοῦ προσαγορευόμενον).

Plutarchus Biogr., Phil., Demetrius (0007: 057) "Plutarchi vitae parallelae, vol. 3.1, 2nd edn.", Ed. Ziegler, K. Leipzig: Teubner, 1971. Chapter 7, section 2, line 4

Ἐπεὶ δὲ Σέλευκος ἐκπεσὼν μὲν ὑπ' Ἀντιγόνου τῆς Βαβυλωνίας πρότερον, ὕστερον δ' ἀνα- λαβὼν τὴν ἀρχὴν δι' αὐτοῦ καὶ κρατῶν ἀνέβη μετὰ δυνάμεως τὰ συν- οροῦντα τοῖς Ἰνδοῖς ἔθνη καὶ τὰς περὶ Καύκασον ἑπαρ- χίας προσαξόμενος, ἐλπίζων Δημήτριος ἔρημον εὐρήσειν τὴν Μεσοποταμίαν καὶ περάσας ἄφνω τὸν Εὐφράτην, εἰς τὴν Βαβυλῶνα παρεισπεσὼν ἔφθη, καὶ τῆς ἐτέρας ἄκρας – δύο γὰρ ἦσαν – ἐκκρούσας τὴν Σελεύκου φρουρὰν καὶ κρατήσας, ἰδίους ἐγκατέστησεν ἑπτακισχιλίους ἀνδρας.

Plutarchus Biogr., Phil., Demetrius Chapter 32, section 7, line 5

Κιλικίαν δ' ἀξιῶν χρήματα λαβόντα παραδοῦναι Δημήτριον, ὥς <δ'> οὐκ ἔπειθε Σιδῶνα καὶ Τύρον ἀπαιτῶν πρὸς ὀργήν, ἐδόκει βίαιοι εἶναι καὶ δεινὰ ποιεῖν, εἰ τὴν ἀπ' Ἰνδῶν ἄχρι τῆς κατὰ Συρίαν θαλάσσης ἅπασαν ὑφ' αὐτῷ πεποιημένος, οὕτως ἐνδεής ἐστιν ἔτι πραγμάτων καὶ πτωχός, ὥς ὑπὲρ δυεῖν πόλεων ἀνδρα κηδεστήν καὶ μεταβολῇ τύχης κεχρημένον ἐλαύνειν, λαμπρὰν τῷ Πλάτῳ μαρτυρίαν δίδούς, δια- κελευομένῳ (leg. 5, 736e) μὴ τὴν οὐσίαν πλείω, τὴν δ' ἀπληστίαν ποιεῖν ἐλάσσω τὸν γε βουλούμενον ὥς ἀληθῶς εἶναι πλούσιον, ὥς ὁ γε μὴ παύων φιλοπλουτίαν [οὗτος] οὔτε πενίας οὔτ' ἀπορίας ἀπήλλακται.

Plutarchus Biogr., Phil., Antonius (0007: 058) "Plutarchi vitae parallelae, vol. 3.1, 2nd edn.", Ed. Ziegler, K. Leipzig: Teubner, 1971. Chapter 37, section 5, line 2

τοσαύτην μέντοι παρασκευὴν καὶ δύναμιν, ἣ καὶ τοὺς πέραν Βάκτρων Ἰνδοὺς ἐφόβησε καὶ πᾶσαν ἐκρά- δανε τὴν Ἀσίαν, ἀνόνητον αὐτῷ διὰ Κλεοπάτραν γενέ- σθαι λέγουσι.

Plutarchus Biogr., Phil., Antonius Chapter 81, section 4, line 3

Καισαρίωνα δὲ τὸν ἐκ Καίσαρος γεγονέναι λεγόμενον ἢ μὲν μήτηρ ἐξέπεμψε μετὰ χρημά- των πολλῶν εἰς τὴν Ἰνδικὴν δι' Αἰθιοπίας, ἕτερος δὲ παιδαγωγὸς ὅμοιος Θεοδώρῳ Ῥόδων ἀνέπει- σεν ἐπανελ- θεῖν, ὥς Καίσαρος αὐτὸν ἐπὶ βασιλείαν καλοῦντος.

Plutarchus Biogr., Phil., Comparatio Dionis et Bruti (0007: 062) "Plutarchi vitae parallelae, vol. 2.1, 2nd edn.", Ed. Ziegler, K. Leipzig: Teubner, 1964. Chapter 4, section 3, line 3

Διονυσίου μὲν γὰρ οὐδεὶς ὅστις οὐκ ἂν κατεφρό- νησε τῶν συνήθων, ἐν μέθαις καὶ κύβοις καὶ γυναιξὶ τὰς πλείστας ποιου- μένου διατριβάς· τὸ δὲ τὴν Καίσαρος κατὰλυσιν εἰς νοῦν ἐμβαλέσθαι καὶ μὴ φοβηθῆναι τὴν δεινότητα καὶ δύναμιν καὶ τύχην, οὗ καὶ τοῦνομα τοὺς

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Παρθυαίων καὶ Ἰνδῶν βασιλεῖς οὐκ εἶα καθεύδειν, ὑπερφυοῦς ἦν ψυχῆς καὶ πρὸς μηθὲν ὑφίεσθαι φόβῳ τοῦ φρονήματος δυναμένης.

Plutarchus Biogr., Phil., De tuenda sanitate praecepta (122b–137e) (0007: 077) “Plutarch’s *moralia*, vol. 2”, Ed. Babbitt, F.C. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1928, Repr. 1962. Stephanus page 133, section C, line 1

ἀλειπτῶν δὲ φωνὰς καὶ παιδοτριβῶν λόγους ἐκάστοτε λεγόντων ὡς τὸ παρὰ δεῖπνον φιλο-
λογεῖν τὴν τροφήν διαφθείρει καὶ βαρύνει τὴν κεφαλὴν τότε φοβητέον, ὅταν τὸν Ἰνδὸν ἀναλύειν
ἢ διαλέγεσθαι περὶ τοῦ Κυριεύοντος ἐν δείπνῳ μέλλωμεν.

Plutarchus Biogr., Phil., Regum et imperatorum apophthegmata [Sp.?] (172b–208a) (0007: 081) “Plutarchi *moralia*, vol. 2.1”, Ed. Nachstädt, W. Leipzig: Teubner, 1935, Repr. 1971. Stephanus page 181, section B, line 5

Τῶν δ’ Ἰνδῶν τὸν ἄριστα τοξεύειν δοκοῦντα καὶ λεγόμενον διὰ δακτυλίου τὸν οἰστὸν ἀφιέναι
λαβῶν αἰχμὰ-
λωτον ἐκέλευσεν ἐπιδείξασθαι, καὶ μὴ βουλόμενον ὀργι-
σθεῖς ἀνελεῖν προσέ-
ταξε· ἐπεὶ δ’ ἀγόμενος ὁ ἄνθρωπος ἔλεγε πρὸς τοὺς ἄγοντας ὅτι πολλῶν ἡμερῶν οὐ μεμελέ-
τηκε καὶ ἐφοβήθη διαπεσεῖν, ἀκούσας ὁ Ἀλέξανδρος ἐθαύμασε καὶ ἀπέλυσε μετὰ δῶρων αὐτόν,
ὅτι μᾶλλον ἀποθανεῖν ὑπέμεινεν ἢ τῆς δόξης ἀνάξιος φανῆναι.

Plutarchus Biogr., Phil., Regum et imperatorum apophthegmata [Sp.?] (172b–208a) Stephanus page 181, section C, line 1

Ἐπεὶ δὲ Ταξίλης, εἷς τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς ὢν, ἀπαντήσας προκαλεῖτο μὴ μάχεσθαι μηδὲ
πολεμεῖν Ἀλέξανδρον, ἀλλ’ εἰ μὲν ἐστὶν ἡττων, εὖ πάσχειν, εἰ δὲ βελτίων, εὖ ποιεῖν, ἀπεκρίνατο
περὶ αὐτοῦ τούτου μαχη-
τέον εἶναι, πότερος εὖ ποιῶν περιγένηται.

Plutarchus Biogr., Phil., Regum et imperatorum apophthegmata [Sp.?] (172b–208a) Stephanus page 181, section C, line 6

Περὶ δὲ τῆς λεγομένης Ἀόρνου πέτρας ἐν Ἰνδοῖς ἀκούσας, ὅτι τὸ μὲν χωρίον δυσάλωτόν ἐστιν
ὁ δὲ ἔχων αὐτὸ δειλὸς ἐστὶ, ‘νῦν’ ἔφη ‘τὸ χωρίον εὐάλωτόν ἐστιν.

Plutarchus Biogr., Phil., Apophthegmata Laconica [Sp.?] (208b–242d) (0007: 082) “Plutarchi *moralia*, vol. 2.1”, Ed. Nachstädt, W. Leipzig: Teubner, 1935, Repr. 1971. Stephanus page 219, section E, line 8

ΔΑΜΙΣ

Δᾶμις πρὸς τὰ ἐπισταλέντα περὶ τοῦ Ἀλέξανδρον θεὸν εἶναι ψηφίσασθαι, ‘συγχωρῶμεν’
ἔφη Ἀλεξάνδρῳ, ἐὰν θέλῃ, θεὸς καλεῖσθαι.’

ΔΑΜΙΝΔ*ΑΣ

Δαμίνδας, Φιλίππου ἐμβολόντος εἰς Πελοπόννησον καὶ εἰπόντος τινὸς ‘κινδυνεύουσι δεινὰ
παθεῖν Λακεδαιμόνιοι, εἰ μὴ τὰς πρὸς αὐτὸν διαλλαγὰς ποιήσονται,’ ‘ἀνδρό-
γυνε’ εἶπε, ‘τί δ’
ἂν πάθοιμεν δεινὸν θανάτου καταφρονή-
σαντες;

Plutarchus Biogr., Phil., Apophthegmata Laconica [Sp.?] (208b–242d) Stephanus page 236, section A, line 8

8.5. PLUTARCHUS BIOGR.

ὥς δ' ἐκεῖνος ἀγασθεὶς ἀπέλυσε τοὺς ἄνδρας καὶ ἤξιον μένειν παρ' αὐτῷ, 'καὶ πῶς ἂν' ἔφασαν 'δυναίμεθα ζῆν ἐνταῦθα, πα- τρίδα καταλιπόντες καὶ νόμους καὶ τούτους τοὺς ἄνδρας, ὑπὲρ ὧν τοσαύτην ἤλθομεν ὁδὸν ἀποθανοῦμενοι;' Ἰνδάρνου δὲ τοῦ στρατηγοῦ ἐπὶ πλεόν δεομένου καὶ λέ- γοντος τεύξεσθαι αὐτοὺς τῆς ἴσης τιμῆς τοῖς μάλιστα ἐν προαγωγῇ φίλοις τοῦ βασιλέως, ἔφασαν 'ἀγνοεῖν ἡμῖν δοκεῖς, ἡλικὸν ἐστὶ τὸ τῆς ἐλευθερίας, ἧς οὐκ ἂν ἀλλὰ- ξαιτό τις νοῦν ἔχων τὴν Περσῶν βασιλείαν.

Plutarchus Biogr., Phil., De Alexandri magni fortuna aut virtute (326d-345b) (0007: 087) "Plutarchi moralia, vol. 2.2", Ed. Nachstädt, W. Leipzig: Teubner, 1935, Repr. 1971. Stephanus page 327, section A, line 10

πρῶτον ἐν Ἰλλυριοῖς λίθῳ τὴν κεφαλὴν ὑπὲρ ἧς τὸν τράχηλον ἠλοήθη. ἔπειτα περὶ Γράνικον τὴν κεφαλὴν βαρβαρικῇ μαχαίρᾳ διεκόπην, ἐν δ' Ἰσῶ ξίφει τὸν μηρόν· πρὸς δὲ Γάλῃ τὸ μὲν σφυρὸν ἐτοξεύθη, τὸν δ' ὦμον ἐμπεσὼν βῶλος ἐξ ἔδρας περιεδίνησε· πρὸς δὲ Μαρακανδάνοις τοξεύμασι τὸ τῆς κνήμης ὁστέον διεσχίσθη· τὰ λοιπὰ δ' Ἰνδῶν πληγαὶ καὶ βίαι **** θυμῶν· ἐν Ἀσπασίοις ἐτοξεύθη τὸν ὦμον, ἐν δὲ Γανδρίδαις τὸ σκέλος· ἐν Μαλλοῖς βέλει μὲν ἀπὸ τόξου τὸ στέρνον ἐνερεισθέντι καὶ καταδύσαντι τὸν σίδηρον, ὑπέρου δὲ πληγῇ παρὰ τὸν τράχηλον, ὅτε προστεθεῖσαι τοῖς τεύχεσιν αἱ κλίμακες ἐκλάσθησαν, ἐμὲ δ' ἡ Τύχη μόνον συνεῖρξεν οὐδὲ λαμπροῖς ἀνταγωνισταῖς, ἀλλὰ βαρβάροις ἀσήμεσι χαριζομένη τηλικούτον ἔργον· εἰ δὲ μὴ Πτολεμαῖος ὑπερέσχε τὴν πέλτην, Λιμναῖος δὲ πρὸ ἐμοῦ τοῖς μυριοῖς ἀπαντήσας βέλεσιν ἔπεσεν, ἤρειψαν δὲ θυμῷ καὶ βίᾳ Μακεδόνες

Plutarchus Biogr., Phil., De Alexandri magni fortuna aut virtute (326d-345b) Stephanus page 328, section C, line 8

ὦ θαυμαστῆς φιλοσοφίας, δι' ἣν Ἰνδοὶ θεοὺς Ἑλληνικοὺς προσκυνοῦσι, Σκύθαι θάπτουσι τοὺς ἀποθανόντας οὐ κατεσθίουσι.

Plutarchus Biogr., Phil., De Alexandri magni fortuna aut virtute (326d-345b) Stephanus page 328, section F, line 6

οὐκ ἂν εἶχεν Ἀλεξάνδρειαν Αἴγυπτος οὐδὲ Μεσοποταμία Σελεύκειαν οὐδὲ Προφθασίαν Σογδιανὴν οὐδ' Ἰνδία Βουκεφαλίαν οὐδὲ πόλιν Ἑλλάδα Καύκασος παροι- κοῦσαν, | αἷς ἐμπολι- σθείσαις ἐσβέσθη τὸ ἄγριον καὶ μετέβαλε τὸ χεῖρον ὑπὸ τοῦ κρείττονος ἐθιζόμενον.

Plutarchus Biogr., Phil., De Alexandri magni fortuna aut virtute (326d-345b) Stephanus page 332, section B, line 1

νῦν δὲ σύγγνωθι, Διόγενες, Ἡρακλέα μιμοῦμαι καὶ Περσέα ζηλῶ, καὶ τὰ Διονύσου μετιῶν ἵχνη, θεοῦ γενάρχου καὶ προπάτορος, βούλομαι πάλιν ἐν Ἰνδίᾳ νικῶντας Ἕλληνας ἐγχορεῦσαι καὶ τοὺς ὑπὲρ Καύκασον ὀρείους καὶ ἀγρίους τῶν βακχικῶν κώμων ἀναμνήσαι.

Plutarchus Biogr., Phil., De Alexandri magni fortuna aut virtute (326d-345b) Stephanus page 341, section B, line 6

ἰδοῦ κατατετρωμένον· ἐξ ἄκρας κεφαλῆς ἄχρι ποδῶν δια- κέκοπται καὶ περιτέθλασται τυπτόμενον ὑπὸ τῶν πολε- μίων (Hom. Λ 265. 541) 'ἐγχεῖ τ' ἄορί τε μεγάλοισι τε χερμα- δίοισιν·' ἐπὶ Γρανίκου ξίφει διακοπεῖς τὸ κράνος ἄχρι τῶν τριχῶν, ἐν Γάλῃ βέλει πληγεῖς τὸν

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

ᾧμον, ἐν Μαρακάνδοις τοξεύματι τὴν κνήμην ὥστε τῆς κερκίδος τὸ ὀστέον ἀποκλασθὲν ὑπὸ τῆς πληγῆς ἐξαλέγθαι· περὶ τὴν Ἴρκανίαν λίθῳ τὸν τράχηλον, ἐξ οὗ καὶ τὰς ὀφείας ἀμαυρωθεῖς ἐφ' ἡμέρας πολλὰς ἐν φόβῳ πηρώσεως ἐγέ- νετο· πρὸς Ἀσσακάνοις Ἰνδικῶ βέλει τὸ σφυρόν, ὅτε καὶ πρὸς τοὺς κόλακας εἶπεν ἐπιμειδιάσας 'τουτὶ μὲν αἷμα, οὐκ (Hom. E 340) 'ἰχώρ, οἶός περ τε ῥέει μακάρεσσι θεοῖσιν·' ἐν Ἰσῶ ἔφει τὸν μηρόν, ὡς Χάρης (fr. 1) φησὶν, ὑπὸ Δαρείου τοῦ βασιλέως εἰς χεῖρας αὐτῷ συνδραμόν-τος· αὐτὸς δ' Ἀλέξανδρος ἀπλῶς γράφων καὶ μετὰ πάσης ἀληθείας πρὸς Ἀντίπατρον 'συνέβη δέ μοι' φησὶ 'καὶ αὐτῷ ἐγχειριδίῳ πληγῆναι εἰς τὸν μηρόν· ἀλλ' οὐδὲν ἄτοπον οὔτε παραχρήμα οὔθ' ὕστερον ἐκ τῆς πληγῆς ἀπήντησεν.

Plutarchus Biogr., Phil., De Iside et Osiride (351c–384c) (0007: 089) "Plutarchi moralia, vol. 2.3", Ed. Sieveking, W. Leipzig: Teubner, 1935, Repr. 1971. Stephanus page 362, section B, line 11

Οὐ γὰρ ἄξιον προσέχειν τοῖς Φρυγίοις γράμμασιν, ἐν οἷς λέγεται † χαροπῶς τοὺς μὲν τοῦ Ἡρακλέους γενέσθαι θυγάτηρ, † ἰσαιοῦ δὲ τοῦ Ἡρακλέους ὁ Τυφών, οὐδὲ Φυλάρχου μὴ καταφρονεῖν γράφοντος (FGrHist. 81 fr. 78), ὅτι πρῶτος εἰς Αἴγυπτον ἐξ Ἰνδῶν Διόνυσος ἤγαγε δύο βοῦς, ὧν ἦν τῷ μὲν Ἄπις ὄνομα τῷ δ' Ὅσιρις· Σάραπις δ' ὄνομα τοῦ τὸ πᾶν κοσμοῦντός ἐστι παρὰ τὸ σαί- ρειν, ὃ καλλύνειν τινὲς καὶ κοσμεῖν λέγουσιν.

Plutarchus Biogr., Phil., De defectu oraculorum (409e–438d) (0007: 092) "Plutarchi moralia, vol. 3", Ed. Sieveking, W. Leipzig: Teubner, 1929, Repr. 1972. Stephanus page 422, section D, line 8

ἐλέγχει δ' αὐτὸν ὁ τῶν κόσμων ἀριθμὸς οὐκ ὧν Αἰγύπτιος οὐδ' Ἰνδὸς ἀλλὰ Δωριεὺς ἀπὸ Σικελίας, ἀνδρὸς Ἱμεραίου τοῦνομα Πέτρω- νος.

Plutarchus Biogr., Phil., An vitiositas ad infelicitatem sufficiat (498a–500a) (0007: 099) "Plutarchi moralia, vol. 3", Ed. Pohlenz, M. Leipzig: Teubner, 1929, Repr. 1972. Stephanus page 499, section C, line 3

καὶ μὴν τὸ πῦρ σου Δέκιος ὁ Ῥωμαίων στρατηγὸς προέ- λαβεν, ὅτε τῶν στρατοπέδων ἐν μέσῳ πυρὰν νήσας τῷ Κρόνῳ κατ' εὐχὴν αὐτὸς ἑαυτὸν ἐκαλλιέρησεν ὑπὲρ τῆς ἡγεμονίας. Ἰνδῶν δὲ φίλανδροι καὶ σώφρονες γυναῖκες ὑπὲρ τοῦ πυρὸς ἐρίζουσι καὶ μάχονται πρὸς ἀλλήλας, τὴν δὲ νικήσαντες τεθνηκότι τῷ ἀνδρὶ συγκαταφλεγῆναι μακα- ρίαν ἄδουσιν αἱ λοιπαί· τῶν δ' ἐκεῖ σοφῶν οὐδεὶς ζηλωτὸς οὐδὲ μακαριστὸς ἐστίν, ἂν μὴ ζῶν ἔτι καὶ φρονῶν καὶ ὑγιαίνων τοῦ σώματος τὴν ψυχὴν πυρὶ διαστήσῃ καὶ καθαρὸς ἐκβῇ τῆς σαρκὸς ἐκνιψάμενος τὸ θνητόν.

Plutarchus Biogr., Phil., De facie in orbe lunae (920b–945e) (0007: 126) "Plutarchi moralia, vol. 5.3, 2nd edn.", Ed. Pohlenz, M. Leipzig: Teubner, 1960. Stephanus page 921, section B, line 2

ὥσπερ οὖν τὴν ἱ<ριν> οἶεσθ' ὑμεῖς ἀνακλωμένης ἐπὶ τὸν ἥλιον τῆς ὀφείας ἐνορᾶσθαι τῷ νέφει λαβόντι νοτερὰν ἡσυχῇ λειότητητα καὶ <πῇ>ξιν, οὕτως ἐκεῖνος ἐνορᾶσθαι τῇ σελήνῃ τὴν ἕξω θάλασσαν οὐκ ἐφ' ἧς ἐστὶ χώρας, ἀλλ' ὅθεν ἡ κλάσις ἐποίησε τῇ ὀφεί τὴν ἐπαφὴν αὐτῆς καὶ τὴν ἀνταύγειαν· ὥς που πά- λιν ὁ Ἀγησιάνναξ εἴρηκεν (fr. 2)

8.6. EUSTATHIUS

ἢ πόντου μέγα κύμα καταντία κυμαίνοντος δείκελον ἰνδάλλοιτο πυριφλεγέθοντος ἐσόπτρου.

Plutarchus Biogr., Phil., De facie in orbe lunae (920b-945e) Stephanus page 938, section B, line 11

τὴν μὲν γὰρ Ἰνδικὴν εἴζαν, ἣν φησι Μεγασθένης τοὺς <μήτ' ἐσθίων-τας> μήτε πίνοντας ἀλλ' ἀστόμους ὄντας ὑποτύφειν καὶ θυμῶν καὶ τρέφεσθαι τῇ ὁσμῇ, πόθεν ἂν τις ἐκεῖ φυομένην λάβοι μὴ βρεχομένης τῆς σελήνης;

Plutarchus Biogr., Phil., Aquane an ignis sit utilior [Sp.] (955d-958e) (0007: 128) "Plutarchi moralia, vol. 6.1", Ed. Hubert, C. Leipzig: Teubner, 1954, Repr. 1959. Stephanus page 957, section A, line 9

νυνὶ δὲ τοῦτο μὲν παρ' Ἰνδῶν ἄμπελον τοῖς Ἑλλήσιν, ἐκ δὲ τῆς Ἑλλάδος καρπῶν χρῆ-σιν τοῖς ἐπέκεινα [ὁ] τῆς θαλάσσης ἔδωκεν, ἐκ Φοινίκης δὲ γράμματα μνημόσυνα λήθης ἐκόμισε, καὶ ἄοινον καὶ ἄκαρπον καὶ ἀπαίδευτον ἐκώλυσεν εἶναι τὸ πλεῖστον ἀνθρώπων γένος.

Plutarchus Biogr., Phil., De sollertia animalium (959a-985c) (0007: 129) "Plutarchi moralia, vol. 6.1", Ed. Hubert, C. Leipzig: Teubner, 1954, Repr. 1959. Stephanus page 970, section F, line 5

φασὶ δὲ καὶ τὸν πρωτεύοντα κύνα τῶν Ἰνδικῶν † καὶ μαχεσθέντα πρὸς Ἀλέξανδρον, ἐλά-φου <μὲν> ἀφιεμένου καὶ κάπρου καὶ ἄρκτου, ἡσυχίαν ἔχοντα κείσθαι καὶ περιορᾶν, ὀφθέντος δὲ λέοντος εὐ-θὺς ἐξαναστῆναι καὶ διακονέσθαι | καὶ φανερόν εἶναι αὐτοῦ ποιούμενον ἀνταγωνιστήν, τῶν δ' ἄλλων ὑπερφρο-νοῦντα πάντων.

Plutarchus Biogr., Phil., De sollertia animalium (959a-985c) Stephanus page 975, section D, line 9

ἀλλὰ μὴ φοβηθῆτε· χρήσομαι γὰρ αὐτῇ μετρίως, οὔτε δόξας φιλοσόφων οὔτ' Αἰγυπτίων μύθους οὔτ' ἁμαρτύ-ρους Ἰνδῶν ἐπαγόμενος ἢ Λιβύων διηγήσεις· ἃ δὲ παν-ταχοῦ μάρτυρας ἔχει τοὺς ἐργαζομένους τὴν θάλατταν ὀρώμενα καὶ δίδωσι τῇ ὀφεί πίστιν, τούτων ὀλίγα παρα-θήσομαι.

Plutarchus Biogr., Phil., Fragmenta (0007: 145) "Plutarchi moralia, vol. 7", Ed. Sandbach, F.H. Leipzig: Teubner, 1967. Fragment 9, line t

Ξηαιρόνεος πλου-archus nostrarum esse partium comprobatur, qui in Oetaeis verticibus Herculem post morborum comitialium ruinas dissolutum in cinerem prodidit.

<ΠΙΝΔ*ΑΡΟΥ ΒΙΟΣ>

8.6 Eustathius

Eustathius, Prooem. Comm. Pindaricorum, c. 25. Ἐπι-μεμέληται ὑπὸ τῶν παλαιῶν καὶ εἰς γένους ἀναγραφὴν τὴν κατὰ τε Πλούταρχον καὶ ἑτέρους, παρ' οἷς φέρεται ὅτι κώμη Θηβαίων οἱ Κυνοσκέφαλοι.

8.7 Joannes Scylitzes Hist.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum (3063: 001) “Ioannis Scylitzae synopsis historiarum”, Ed. Thurn, J. Berlin: De Gruyter, 1973; Corpus fontium historiae Byzantinae 5. Series Berolinensis. Emperor life Leo5, section 2, line 5

ἔξαπέστειλε γοῦν τινα τῶν οἱ πιστοτάτων, ἀναθήματά τε ὡς αὐτὸν κομίζοντα καὶ ἔπιπλα καὶ σκευὴ ἀργύρεα καὶ χρύσεια καὶ εἶδη εὐώδη τῶν εἰς ἡμᾶς ἐξ Ἰνδίας κομιζομένων.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich2, section 6, line 16

χεῖρα δὲ πολλὴν αὐτὸς τε συλλέγει καὶ παρὰ τῶν Ἀγαρηνῶν λαμβάνει, οὐ μόνον δὲ τῶν προς- οίκων ἡμῖν, ἀλλὰ καὶ τῶν ἐκ τῆς περαιῆς Αἰγυπτίων, Ἰνδῶν, Περσῶν, Ἀσσυρίων, Ἀρ- μενίων, Χάλδων, Ἰβήρων, Ζεχῶν καὶ Καβείρων.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Theoph, section 1, line 3

ΘΕΟΦΙΛΟΣ

Μετὰ δὲ τὸν τοῦ Μιχαὴλ θάνατον ὁ υἱὸς αὐτοῦ Θεόφιλος, ἀνδρὸς ἤδη ἡλικίαν ἔχων, διεδέ- ξατο τὴν πατρίαν ἀρχὴν κατὰ τὸν Ὀκτώβριον μῆνα τῆς ὀγδόης ἰνδικτιῶνος, λόγῳ μὲν τῆς δικαιοσύνης ἔμπυρος ἐραστὴς καλεῖσθαι βουλόμενος νόμων τε φύλαξ πολιτικῶν ἀκριβής, τῇ δ' ἀλη- θεία ἔξωθεν αὐτὸν τῶν ἐπιβουλευόντων διατηρῶν, ὡς ἂν μή τις κατ' αὐτοῦ νεανικὸν τι τολμήσειε, ταῦτα ὑπεκρίνετο.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Theoph, section 15, line

14

ὡς δ' οὐκ ἐκ μόνων ἰνδαλμάτων, ἀλλὰ καὶ τῶν τῆς ψυχῆς καὶ σώματος γνωρισμάτων ὁ ζητούμενος ἐδηλοῦτό τε καὶ ἐγνωρίζετο, προσεμαρτύρει δὲ καὶ τις τῶν ἐκ γειτόνων τὴν γενομένην τῇ γυναικὶ πρὸς τὸν Πέρσῃ συνάφειαν (οὐ γάρ τι κρυπτόν, ὃ τοῖς πολλοῖς οὐ γνωσθήσεται), δῆλους αὐτοὺς οἱ σταλέντες καθιστᾷσι τῷ βασιλεῖ καὶ τὰ τοῦ σκοποῦ σαφηνίζουσιν, εἰρήνην καὶ σπονδὰς καὶ παντὸς τοῦ ἔθνους ὑποταγὴν ὑπισχνούμενοι, εἰ τὸν Θεόφοβον αὐτοῖς ἀποδοῦναι οὐ παραιτήσεται.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const7, section 8, line 24

κατὰ δὲ τὴν ἑκτὴν τοῦ Αὐγούστου μηνός, τῆς πέμπτης ἰνδικτιῶνος, πολέμου συρραγέντος Ῥωμαίοις τε καὶ Βουλγάροις πρὸς τῷ Ἀχελῷ φρουρίῳ τρέπονται κατὰ κράτος οἱ Βούλγαροι, καὶ φόνος αὐτῶν ἐγένετο πολὺς.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 2, line

1

Ἰουλίῳ δὲ μηνὶ ἰνδικτιῶνος ὀγδόης ἡ τῆς ἐκκλησίας γέγονεν ἔνωσις, ἐνωθέντων τῶν διαφορο- μένων μητροπολιτῶν τε καὶ κληρικῶν τῶν ἀπὸ Νικολάου πατριάρχου καὶ Εὐθυμίου διεσχί- σμένων.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 7, line

1

8.7. JOANNES SCYLITZES HIST.

Εἰκάδι δὲ Φεβρουαρίου μηνός, ἰνδικτιῶνος δεκάτης, θνήσκει Θεοδώρα ἡ σύμβιος Ῥωμανοῦ καὶ θάπτεται ἐν τῷ Μυρελαίῳ.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 12, line 1

Σεπτεμβρίῳ δὲ μηνί, ἰνδικτιῶνος δευτέρας, ὁ ἄρχων Βουλγαρίας Συμεὼν πανστρατὶ κατὰ Κωνσταντινουπόλεως ἐκστρατεύει καὶ λήζεται μὲν Μακεδονίαν, ἐμπιπρᾷ δὲ τὰ ἐπὶ Θράκης χωρία, καὶ πάντα καταστρέ- φει τὰ ἐν ποσίν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 13, line 1

Κατὰ δὲ τὴν ἑορτὴν τῶν Χριστουγέννων, ἰνδικτιῶνος δευτέρας, Ῥωμανὸς ὁ βασιλεὺς στέφει τοὺς δύο υἱοὺς αὐτοῦ, Στέφανον καὶ Κωνσταν- τῖνον ἐν τῇ μεγάλῃ ἐκκλησίᾳ.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 14, line 1

Πεντεκαίδεκάτῃ δὲ Μαΐου μηνός, ἰνδικτιῶνος τρίτης, τελευτᾷ ὁ πατριάρχης Νικόλαος, κρατήσας ἐν τῇ δευτέρᾳ ἀναρρήσει ἔτη τρισκαί- δεκα.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 16, line 1

Μαΐῳ δὲ μηνί, ἰνδικτιῶνος πεντεκαίδεκάτης, εἰσβολὴν Συμεὼν ὁ τῆς Βουλγαρίας ἄρχων ἐποιήσατο κατὰ Χρωβάτων, καὶ συμβαλὼν μετ' αὐτῶν καὶ ἡττηθεὶς ἐν ταῖς τῶν ὁρῶν δυσ- χωρίαις ἅπαν τὸ ἑαυτοῦ ἀπώλεσε στράτευμα.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 21, line 1

Μηνὶ δὲ Ἰουλίῳ πεντεκαίδεκάτῃ, ἰνδικτιῶνος ἑκτης, ἐτελεύτησεν ὁ Ἀμασείας Στέφανος, πατριαρχήσας ἔτη δύο καὶ μῆνας ἑνδεκα.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 25, line 2

Ἐτελεύτησε δὲ καὶ Χριστοφόρος ὁ βασιλεὺς, μηνὶ Αὐγούστῳ, ἰνδικτιῶνος τετάρτης, καὶ ἐτάφη ἐν τῇ μονῇ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 26, line 36

καὶ μετὰ χρόνον ἓνα καὶ μῆνας πέντε (τοσοῦτον γὰρ ὁ τῆς ἡλικίας τοῦ Θεοφυλάκτου ἐνέδει χρόνος πρὸς τελειότητα καὶ χειροθεσίαν ἀρχιερωσύνης) Φεβρουαρίῳ, δευτέρας ἰνδικτιῶνος, χειροτονεῖται πατριάρχης Θεοφύλακτος ὁ τοῦ βασιλέως υἱός.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 29, line 2

Ἐγένετο δὲ καὶ εἰσβολὴ Τούρκων κατὰ Ῥωμαίων Ἀπριλίῳ μηνί, ἰνδικτιῶνος ἐβδόμης, καὶ κατέδραμον πᾶσαν τὴν δύσιν μέχρι τῆς πόλεως.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 31, line 1

Δεκάτη δὲ καὶ τετάρτη ἰνδικτιῶνι, Ἰουνίῳ μηνί, ἐπέλευσις κατὰ τῆς πόλεως ἐγένετο Ῥωσικοῦ στόλου πλοίων χιλιάδων δέκα.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 34, line 1

Κατὰ δὲ τὴν πρώτην ἰνδικτιῶνα τῶν Τούρκων πάλιν ἐπιδρομὴν ποιησαμένων κατὰ Ῥωμαίων, ὁ παρακοιμώμενος Θεοφάνης ἐξελθὼν ἐσπείσατο μετ' αὐτῶν καὶ λαβὼν ὀμήρους ὑπέστρεψε.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 35, line 1

Δευτέρα δὲ ἰνδικτιῶνι Πασχάλιον πρωτοσπαθάριον καὶ στρατηγὸν Λογγιβαρδίας ἐξεπέμψεν ὁ βασιλεὺς πρὸς τὸν ἑῷγα Φραγγίας Οὐῶνα, τὴν αὐτοῦ θυγατέρα ἐπιζητῶν νυμφευθῆναι τῷ τοῦ Πορφυρογεννήτου υἱῷ Ῥωμανῷ.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman1, section 39, line 5

τῇ δὲ αὐτῇ ἰνδικτιῶνι κατήγαγον τὸν βασιλέα Ῥωμανὸν τοῦ παλατίου καὶ εἰς τὴν Πρώτην ἀγαρόντες νῆσον ἀπέκειραν μοναχόν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const7 iterum, section 1, line 73

προσεταρισάμενος οὖν σὺν τῷ ῥηθέντι Βασιλείῳ καὶ τὸν μοναχὸν Μαριανὸν τὸν υἱὸν Λέοντος τοῦ Ἀργυροῦ, ὑπὸ τοῦ βασιλέως Ῥωμανοῦ λίαν καὶ τιμώμενον καὶ πιστευόμενον, καὶ τινὰς ἄλλους σὺν αὐτοῖς, εὐκαιρήσας κατασπᾶ τῆς ἀρχῆς τὸν αὐτοῦ πατέρα, μηνὶ Δεκεμβρίῳ ἑξακαιδέκῃ, ἰνδικτιῶνος τρίτης, ἔτους Β' συνγ', εἰκοστὸν ἕκτον ἀνύοντα ἐν τῇ βασιλείᾳ ἐνιαυτόν, καὶ τῇ νήσῳ Πρώτῃ περιορίζει, ἀποκείρας καὶ ἄκοντα τοῦτον μοναχόν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const7 iterum, section 2, line 20

ἐκφῆνας οὖν τὸ μυστήριον τῷ εἰρμένῳ Βασιλείῳ τῷ Πετεινῷ, καὶ δι' αὐτοῦ προσκτεσάμενος τὸν Μαριανόν, ἔτι δὲ Νικηφόρον καὶ Λέοντα τοὺς υἱοὺς Βάρδα τοῦ Φωκᾶ, Νικόλαόν τε καὶ Λέοντα τοὺς Τορνικίους, καὶ ἄλλους οὐκ ὀλίγους, μηδὲν ὑφωμένους τὸν Στέφανον καὶ τὸν Κωνσταντῖνον, κατ' αὐτὸν τὸν καιρὸν τοῦ ἀρίστου συναριστοῦντας αὐτῷ, ἀναρπάστους τίθησι καὶ καταβιβάζει τῶν βασιλείων, τῇ εἰκάδι ἐβδόμῃ τοῦ Ἰαννουαρίου μηνός, τῆς αὐτῆς τρίτης ἰνδικτιῶνος, καὶ πλοιαρίοις ἐνθήμενος ὑπερρίξει τὸν μὲν ἐν τῇ Πανόρμῳ νήσῳ, τὸν Κωνσταντῖνον δὲ ἐν τῇ Τερεβίνθῳ.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const7 iterum, section 2, line 31

μηνὶ δὲ Ἰουλίῳ τῆς ἑκτῆς ἰνδικτιῶνος καὶ Ῥωμανὸς ὁ τούτων πατὴρ ἀπέτισε τὸ χρεῶν, καὶ ἐν τῷ Μυρελαίῳ θάπτεται.

8.7. JOANNES SCYLITZES HIST.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const7 iterum, section 3, line 3

Ὁ δὲ Πορφυρογέννητος τὰ ὑποπτα περιελὼν ἐκ μέσου, καὶ μόνος τὴν αὐτοκράτορα περιζωσάμενος ἀρχὴν, κατὰ τὸ θεῖον πάσχα τῆς αὐτῆς ἰνδικτιῶνος καὶ τῷ υἱῷ Ῥωμανῷ περιτίθῃσι διάδημα, τελέσαν- τος δὴ τὰς εὐχὰς Θεοφυλάκτου τοῦ πατριάρχου.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const7 iterum, section 10, line 3

Ἐτεὶ δὲ δωδεκάτῳ τῆς Κωνσταντίνου βασιλείας, τοῦ δὲ κόσμου ἑξακισχιλιοστῷ τετρακοσιοστῷ ἑξηκοστῷ τετάρτῳ, μηνὶ Φεβρουαρίῳ εἰκάδι ἐβδόμῃ, ἰνδικτιῶνος τεσσαρεσκαίδεκάτης, κατέλυσε τὸν βίον Θεοφύλακτος ὁ πατριάρχης, ἀρχιερατεύσας ἐπ' ἔτη εἴκοσι καὶ τρία, ἡμέρας εἰκοσιπέντε, ἑκαίδεκα μὲν ἐτῶν ὧν, ὅτε τοὺς τῆς ἐκκλησίας ἀκα- νονίστως παρείληφεν οἶακας, ὑπὸ παιδαγωγούς δέ, φεῦ μοι, ὁ ἀρχιερεὺς μέχρι τινὸς διετέλεσε.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const7 iterum, section 11, line 2

Καὶ χειροτονεῖται κατὰ τὴν τρίτην τοῦ Ἀπριλίου μηνός, τῆς αὐτῆς ἰνδικτιῶνος, ἀντ' αὐτοῦ πατριάρχης Πολυεύκτος μοναχός, τῆς Κωνσταντίνου καὶ θρέμμα τυγχάνων καὶ παίδευμα, ὑπὸ τῶν γονέων μὲν εὐνουχισθεὶς, ἐπὶ πολὺν δὲ χρόνον τῇ μοναδικῇ πολιτείᾳ ἐνδιαπρέ- ψας.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const7 iterum, section 17, line 2

Πεντεκαίδεκάτῳ δὲ χρόνῳ τῆς αὐτοῦ βασιλείας, κατὰ τὸν Σεπτέμβριον μῆνα τῆς τρίτης ἰνδικτιῶνος, ἐν ἔτει κοσμικῷ ἑξακισχιλιοστῷ τετρακοσιοστῷ ὀγδόῳ, ἕξεισι Κωνσταντίνος ὁ βασιλεὺς ἐν τῷ τοῦ Ὀλύμπου ὄρει, τῷ μὲν δοκεῖν ταῖς τῶν ἐκεῖσε πατέρων εὐχαῖς θωρακισθῆναι καὶ μετ' αὐτῶν κατὰ Σαρακηνῶν ἐν Συρίᾳ στρατεῦσαι, ἀληθεῖ δὲ λόγῳ ἐνωθῆναι Θεοδῶρ τῷ τῆς Κυζίκου προεδρεύοντι, ἐκεῖσε τότε τὰς διατριβὰς ποιούμενῳ, καὶ μετ' αὐτοῦ περὶ τῆς καθαιρέσεως τοῦ Πολυεύκτου βουλευσάσθαι.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman2, section 1, line 5

καὶ ἄρχοντας προβαλλόμενος εὐνοϊκοὺς αὐτῷ καὶ θυμήρεις, καὶ τὴν βασιλείαν, ὡς ἐνῆν, κρατυνάμενος, κατὰ τὴν ἑορτὴν τοῦ πάσχα τῆς αὐτῆς τρίτης ἰνδικτιῶνος στέφει καὶ Βασίλειον τὸν υἱὸν αὐτοῦ διὰ τῶν χειρῶν Πολυεύκτου τοῦ πατριάρχου ἐν τῇ μεγάλῃ ἐκκλησίᾳ.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman2, section 4, line 16

τῇ ἐβδόμῃ δὲ τοῦ Μαρτίου μηνός, τῆς τετάρτης ἰνδικτιῶνος, καὶ τὴν πασῶν ὀχυρωτέραν πόλιν, ἣν ἐγχαρῖως Χάνδακα ἐκάλουν, πεπορθηκώς, καὶ τὸν ἀμηρεύοντα τῆς νήσου Κουρούπην ὄνομα λαβὼν αἰχμάλωτον καὶ Ἀνεμᾶν τὸν μετ' αὐτὸν ἐν τῇ νήσῳ πρωτεύοντα, καὶ τὴν νῆσον ὅλην δουλωσάμενος, ἔμελλε μὲν ἐπὶ πλείονα προσμεῖναι χρόνον καὶ τὰ κατ' αὐτὴν καταστήσεσθαι, φήμης δὲ κρατούσης, ὡς ὁ μέλλων κατασχεῖν αὐτὴν Ῥωμαῖος ἀνὴρ ἐξ ἀνάγκης βασιλεύσει Ῥωμαίων, ἅμα τῷ γνωσθῆναι τὴν τῆς νήσου κατάσχεσιν ταῖς τοῦ Ἰωσήφ ὑποθή-

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

καις ἀποστείλας ὁ Ῥωμανὸς προσεκαλέσατο τὸν Νικηφόρον ἐκεῖθεν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman2, section 9, line 10

ἡ δὲ Ἑλένη τῇ τῶν θυγατέρων καταγωγῇ περιαλγήσασα, καὶ μικρὸν ἐπιζήσασα χρόνον, τῇ εἰκοστῇ τοῦ Σεπτεμβρίου μηνὸς τῆς πέμπτης ἰνδικτιῶνος ἀπεβίω, καὶ βασιλικῶς ἐκκομισθεῖσα ἐτάφη ἐν τῇ λάρνακι τοῦ πατρός.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman2, section 11, line 1

Πεντεκαίδεκάτῃ δὲ Μαρτίου μηνός, τῆς ἑκτῆς ἰνδικτιῶνος, ἐν ἔτει ἑξακισχιλιοστῷ τετρακοσιοστῷ ἐβδομηκοστῷ πρώτῳ ἐτελεύτησε Ῥωμανὸς ὁ βασιλεὺς, ἐτῶν ὑπάρχων εἰκοσιτεσσάρων, βασιλεύσας ἔτη τρισκαίδεκα, μῆνας τέσσαρας, καὶ ἡμέρας πέντε, ὡς μὲν τινες, προκαταναλώσας τὸ ἑαυτοῦ σαρκίον ταῖς αἰσχίσταις καὶ φιληδόνοις πράξεσιν, ὡς δ' ἕτερος ἔχει λόγος, φαρμάκοις ἀναιρεθεῖς.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas+Const, section 3, line 1

Ἀπριλίῳ δὲ μηνί, τῆς αὐτῆς ἑκτῆς ἰνδικτιῶνος, εἴσεισιν ὁ Φωκᾶς Νικηφόρος κελεύσει τῆς δεσποίνης, τοῦ Ἰωσήφ καθάπαξ καὶ πάλιν κωλύοντος, ἐν Κωνσταντινουπόλει.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas+Const, section 6, line 22

καὶ δευτέρα τοῦ Ἰουλίου μηνός, τῆς αὐτῆς ἑκτῆς ἰνδικτιῶνος, ὑπὸ τῶν ἐν τῇ ἑφ' στρατευμάτων ἀπάντων παρακεκινημένων ὑπὸ τοῦ Τζιμισκῇ Ῥωμαίων ἀναγορεύεται βασιλεὺς.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas+Const, section 7, line 54

στέφει οὖν τοῦτον ὁ Πολύευκτος ἐν τῷ ἄμβωνι τῆς τοῦ θεοῦ μεγάλης ἐκκλησίας, ἡμέρα δὲ ἦν κυριακή, ἑχαιδεκάτῃ τοῦ Αὐγούστου μηνός ἄγοντος, τῆς ἑκτῆς ἰνδικτιῶνος.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Niceph2, section 11, line 2

Ὁ δὲ Νικηφόρος κατὰ τὸ δεύτερον ἔτος τῆς αὐτοῦ βασιλείας, ἐν μηνί Ἰουλίῳ, ἰνδικτιῶνος ἐβδόμῃ, ἔξεισι κατὰ Κιλικίας σὺν βαρεῖ στρατῷ Ῥωμαίων καὶ συμμάχων Ἰβήρων καὶ Ἀρμενίων, ἔχων Θεοφανὸν τὴν γαμετὴν σὺν τοῖς τέκνοις αὐτῆς.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Niceph2, section 14, line 2

Δηώσας δὲ καὶ τεφρώσας καὶ τὰς λοιπὰς πόλεις τῆς Κιλικίας τῷ Ὀκτωβρίῳ μηνί, τῆς ἐνάτης ἰνδικτιῶνος, ὑπέστρεψεν εἰς Κωνσταντινούπολιν, ἔχων μεθ' ἑαυτοῦ καὶ τὰς τῆς Ταρσοῦ πύλας καὶ τὰς τῆς Μόψου ἐστίας, ἃς καὶ χρυσῷ καταστίξας ἔξωθεν ἀνάθημα τῇ βασιλίδι διεκόμισε, τὰς μὲν κατὰ τὴν ἀκρόπολιν στήσας, τὰς δὲ κατὰ τὸ τῆς Χρυσῆς πόρτης τεῖχος.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Niceph2, section 20, line 14

8.7. JOANNES SCYLITZES HIST.

τετάρτῳ δὲ τῆς αὐτοῦ βασιλείας ἔτει, μηνὶ Ἰουνίῳ, τῆς δεκάτης ἰνδικτιῶνος, τὰς ἐν τῇ Θράκῃ πόλεις ἐξῆλει ἐπισκεψόμενος, καὶ γενόμενος ἄχρι τῆς λεγομένης μεγάλης τάφρου ἔγραψε Πέτρῳ τῷ Βουλγαρίας ἄρχοντι, μὴ εἶναι τοὺς Τούρκους διαπερᾶν τὸν Ἰστρὸν καὶ τὰ Ῥωμαίων λυμαίνεσθαι.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Niceph2, section 20, line 23

πισθέντες οὖν οἱ Ῥῶς καὶ ἐπελθόντες τῇ Βουλγαρίᾳ κατὰ τὸν Αὐγούστον μῆνα, τῆς ἐνδεκάτης ἰνδικτιῶνος, πέμπτῳ τῆς βασιλείας ἔτει αὐτοῦ Νικηφόρου, πολλὰς πόλεις καὶ χώρας ἠδάφισαν τῶν Βουλγάρων, καὶ λείαν ὅτι πλείστην περιβαλλόμενοι ὑπέστρεψαν εἰς τὰ ἴδια.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Niceph2, section 20, line 28

δευτέρῳ δὲ Σεπτεμβρίου μηνός, ὥρα τῆς νυκτὸς δωδεκάτῃ, ἰνδικτιῶνος ἐνδεκάτης, γέγονε βρασμὸς καὶ κλόνος γῆς ἐξαισίος, καὶ ἔπαθε κακῶς Ὀνωριάς καὶ Παφλαγονία.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Niceph2, section 20, line 31

ἐγένοντο δὲ καὶ ἄνεμοι κατὰ τὸν Μάϊον μῆνα τῆς αὐτῆς ἰνδικτιῶνος σκληροὶ καὶ καυματώδεις, οἵτινες τοὺς καρποὺς διέφθειραν αὐταῖς ἀμπέλοις καὶ δένδρεσιν, ὥς ἐντεῦθεν κατὰ τὴν δωδεκάτην ἰνδικτιῶνα σφοδρότατον ἐπενεχθῆναι λιμόν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Niceph2, section 22, line 9

καὶ τοῦ βασιλέως ὑπομνησθέντος, εἰ δεῖ τοῦτον εἰσελθεῖν ἐν τῇ βασιλίδι, κάκεινον προσμένειν μικρὸν ἐπιτρέψαντος, ἐκείνη νυκτὸς ἐνδεκάτῃ τοῦ Δεκεμβρίου μηνός, ἰνδικτιῶνος τρισκαιδεκάτης, ἔτους ἐξακισχιλιοστοῦ τετρακοσιοστοῦ ἐβδομηκοστοῦ ὀγδόου, ἀποστείλασα ἄγει τοῦτον πρὸς τὸν κάτωθεν τῶν παλατίων χειροποίητον λιμένα, καὶ κοφίνῳ ἀνιμήσατο μετὰ πάντων τῶν περὶ αὐτόν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life John1, section 20, line 1

Αὐγούστῳ δὲ μηνί, ἰνδικτιῶνος τρίτης, ἐφάνη καὶ κομήτης ὁ λεγόμενος πωγωνίας, καὶ ἐφαίνετο ἕως Ὀκτωβρίου μηνὸς τῆς τετάρτης ἰνδικτιῶνος.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 1, line 4

ὧ μᾶλλον πιστευτέον. ΒΑΣΙΛΕΙΟΣ ΚΑΙ ΚΩΝΣΤΑΝΤΙΝΟΣ

Τὸ μὲν οὖν Ἰωάννου τέλος τὸν εἰρημένον συνηνέχθη τρόπον, τὸ δὲ τῆς βασιλείας κράτος εἰς Βασίλειον μετέχθη καὶ Κωνσταντῖνον τοὺς υἱοὺς Ῥωμανοῦ, κατὰ τὸ ἐξακισχιλιοστὸν τετρακοσιοστὸν ὀγδοηκοστὸν τέταρτον ἔτος, ἰνδικτιῶνος τετάρτης, μηνὸς Δεκεμβρίου.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 10, line 20

καὶ τούτους μὲν εἶχεν ἡ φρουρά, τῶν δὲ μὴ συνανελθόντων ἀποστατῶν τῷ Σκληρῷ Λέων μὲν ὁ αἰχμάλωτος καὶ οἱ τοῦ δουκὸς Ἀνδρονίκου τοῦ Λυδὸς παῖδες Χριστοφόρος ὁ Ἐπεικτής καὶ

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Βάρδας ὁ Μουγγός (ἔφθη γὰρ ἐκεῖνος ἀποθανεῖν) τὸ Ἀρμακούριον καὶ τὴν Πλατεῖαν πέτραι καὶ ἄλλα τινὰ φρούρια ἐρυμνά ἐν τῷ θέματι κείμενα τῶν Θρακησίων κατεσχε- κότες ἀντείχον ἕως ὀγδῆς ἰνδικτιῶνος, καὶ ἐπεκδρομὰς ἐκ τούτων ποιούμενοι τὰ βασιλέως ἐλύπουν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 13, line 1

οὗτος δὲ μὴ ἐνεγκὼν πρῶως τὴν ἐπιτίμησιν, ἀλλ' ἔτι μᾶλλον τραχυνόμενος καὶ δίκαια συμβουλευσαι ἰσχυρίζομενος, ἠνάγκασε τὸν βασιλέα διὰ τὴν ἀναίσχυντον ἰταμότητα ἀναπη- δῆσαι τε τοῦ θρόνου καὶ τῶν τριχῶν αὐτοῦ καὶ τῆς γενειάδος λαβόμενον κατασπάσαι εἰς γῆν. Ἰνδικτιῶνος δὲ πεντεκαίδεκάτης, ἔτους ἑξακισχιλιοστοῦ τετρα- κοσιοστοῦ ἐνενηκοστοῦ τετάρ- του, Ὀκτωβρίῳ μηνί, ἐγένετο κλόνος μέγας, καὶ κατέπεσον οἰκίαι καὶ ναοὶ πολλοὶ καὶ μέρος τῆς σφαίρας τῆς τοῦ θεοῦ μεγάλης ἐκκλησίας.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 14, line 7

Οἱ δὲ τῶν Ῥωμαίων μεγιστᾶνες μηνιῶντες τῷ βασιλεῖ, ὁ μὲν Φωκᾶς Βάρδας καὶ τινες σὺν αὐτῷ, ὅτι περ εἰς Βουλγαρίαν ἐκστρατεύ- σας ὑπερεῖδεν αὐτούς, μὴδ' ἐν Καρὸς λογισάμενος μοῖρα, ἄλλοι δὲ καὶ ἄλλοι δι' ἄλλους προπηλακισμούς τε καὶ παροινίας, ὁ δὲ μάγιστρος Εὐ- στάθιος ὁ Μαλεῖνος διὰ τὸ ἀτίμως ἀπὸ τῆς εἰρημένης ἐκστρατείας ἀποπεμ- φθῆναι, συνα- θροισθέντες ἐν τῷ Χαρσιανῷ κατὰ τὸν οἶκον τοῦ ῥηθέντος Μα- λεῖνου, πεντεκαίδεκάτῃ τοῦ Αὐγούστου μηνός, τῆς πεντεκαίδεκάτης ἰνδικ- τιῶνος, Βάρδαν τὸν Φωκᾶν ἀνεῖπον βασιλέα, διάδημά τε περιθέντες αὐτῷ καὶ τὰ λοιπὰ τῆς βασιλείας γνωρίσματα.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 19, line 2

Ἄρτι δὲ τοῦ Φωκᾶ ἀποθανόντος κατὰ τὸν Ἀπρίλλιον μῆνα τῆς δευτέρας ἰνδικτιῶνος, τοῦ ἑξακισχιλιοστοῦ τετρακοσιοστοῦ ἐνενη- κοστοῦ ἐβδόμου ἔτους, καὶ τῆς κατ' αὐτὸν ἀποστασίας διαλυθείσης, ἀδείας λαβόμενος ὁ Σκληρὸς πάλιν ἀνελάμβανεν ἑαυτὸν καὶ τὴν προ- τέραν ἐσωμάσκει ἀποστασίαν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 22, line 4

Νικολάου δὲ τοῦ Χρυσοβέργη ἐπὶ χρόνοις δώδεκα καὶ μῆνας ὀκτῶ τὴν ἐκκλησίαν ἰθύναντος καὶ καταλύσαντος τὴν ζωὴν, χειροτονεῖ- ται Σισίνιος μάγιστρος, ἀνὴρ ἐλλόγιμος καὶ ἰατρικῆς τέχνης ἥκων εἰς τὸ ἀκρότατον, ἐν ἔτει ἑξακισχιλιοστῷ πεντακοσιοστῷ τρίτῳ, ἰνδικτιῶνος ὀγδῆς· ὅστις καὶ τοὺς διακρινομένους ἠνώσε διὰ τὴν τετραγαμίαν Λέοντος τοῦ βασιλέως, ἐξ ὅτου τοῦτον Εὐθύμιος εἰς κοινωνίαν ἐδέξατο, ἠνώσεν. καὶ οὗτος δὲ ἐπὶ τρεῖς μόνους ἐνιαυτούς τὴν ἐκκλησίαν ποιμάνας ἐξέστη τῆς ζωῆς, καὶ προεβλήθη Σέργιος, ἡγούμενος ὢν τῆς μονῆς τοῦ Μανουὴλ καὶ τὸ γένος ἀναφέρων πρὸς Φώτιον τὸν πατριάρχην.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 26, line 2

Τῷ δὲ ἑξακισχιλιοστῷ πεντακοσιοστῷ ὀγδῶ ἔτει, τῆς τρισκαίδε- κάτης ἰνδικτιῶνος, δύ-

8.7. JOANNES SCYLITZES HIST.

ναμιν βαρεϊαν ἐκπέμψας ὁ βασιλεὺς κατὰ τῶν πέραν τοῦ Αἵμου Βουλγαρικῶν κάστρων, ἀρχηγούς ἔχουσιν τὸν πατρίκιον Θεοδωροκάνον καὶ Νικηφόρον πρωτοσπαθᾶριον τὸν Ξιφίαν, τὴν τε μεγάλην εἴλε Περσθλάβαν καὶ τὴν μικρὰν καὶ τὴν Πλίσκοβαν, καὶ ἄσινῆς καὶ τρο-
παιοῦχος ἡ Ῥωμαϊκὴ ὑπενόστησε δυνάμεις.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 30, line 1

Ὁ δὲ βασιλεὺς κατὰ τὸ ἐπιὸν ἔτος, ἰνδικτιῶνος πεντεκαίδε- κάτης, ἐκστρατεύει κατὰ Βιδίνης, καὶ ἐφ' ὅλους ὀκτῶ μῆνας ἐμφιλοχ- ρήσας τῇ προσεδρεΐα αἰρεῖ κατὰ κράτος τὴν πόλιν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 32, line 1

Καὶ τῇ αὐτῇ ἰνδικτιῶνι δόγμα ἐξέθετο, τὰς τῶν ἀπολωλότων ταπεινῶν συντελείας τελεῖ-
σθαι παρὰ τῶν δυνατῶν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 33, line 1

Ὁ γδοή δὲ ἰνδικτιῶνι, ἐν ἔτει ἐξακισχιλιοστῷ πεντακοσιοστῷ ὀκτωκαίδεκάτῳ, ὁ τῆς Αἰγύ-
πτου κατάρχων Ἀζίζιος διὰ μικρὰς αἰτίας καὶ μηδενὸς λόγου προσκρούσματα ἄξια τὰς πρὸς
Ῥωμαίους λύσας σπονδὰς τὸν τε ἐν Ἱεροσολύμοις ἐν τῷ τάφῳ τοῦ σωτῆρος Χριστοῦ ἀνεγνηγερ-
μένον πολυτελῶς θεῖον ναὸν κατεστρέψατο, καὶ τὰ εὐαγῇ ἐλυμήνατο μοναστήρια, καὶ τοὺς ἐν
τούτοις ἀσκουμένους ἀπανταχοῦ τῆς γῆς ἐφυγάδευσε.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 35, line 21

τούτου καὶ ἀποπειρασμένου τῆς εἰσόδου, ἐπεὶ περ ἀντεῖχον γενναίως οἱ φυλάσσοντες καὶ
τοὺς βιαζομένους ἐξ ὑπερδεξίων ἀνήρουν βάλλοντες καὶ τιτρώσκοντες, καὶ ἤδη ἀπὲγνωστο τῷ
βασίλει ἡ διάβασις, Νικη- φόρος ὁ Ξιφίας τῆς Φιλιππουπόλεως τότε στρατηγῶν τῷ βασιλεῖ
συνταξάμενος, καὶ αὐτὸν μὲν προσμένειν καὶ συνεχεῖς προσβολὰς ποιῆσθαι τῷ δέματι πα-
ρεγγυήσας, αὐτὸς δὲ ἀπιέναι φήσας, εἴ πως καὶ δυνῇ- θεῖν λυσιτελές τι διαπράξασθαι καὶ
σωτήριον, τὸν περὶ αὐτὸν εἰληφῶς λαὸν ὑποστρέφει, καὶ περιοδεύσας τὸ πρὸς μεσημβρίαν τοῦ
Κλειδίου κείμενον ὑψηλότερον ὄρος, ὃ Βαλασίτζαν κατονομάζουσι, καὶ τραχυ- πορίαις καὶ ἀνο-
δίαις χρησάμενος, εἰκοστῇ ἐνάτῃ τοῦ Ἰουλίου μηνός, ἰνδικτιῶνος δωδεκάτης, ἄνωθεν ἐξαίφνης
μετ' ἀλαλαγμοῦ καὶ δούπου κατὰ νότου γίνεται τῶν Βουλγάρων.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 35, line 44

λαβὼν δὲ καὶ πῶν ἐλήφθη καρδιωγμῷ, καὶ μετὰ δύο ἡμέρας θνήσκει κατὰ τὴν ἔκτην
τοῦ Ὀκτωβρίου μηνός. παραλαμβάνει δὲ τὴν ἀρχὴν τῶν Βουλγάρων ὁ υἱὸς αὐτοῦ Γαβριήλ
ὁ καὶ Ῥωμανός, ῥάμῃ μὲν καὶ ἰσχύϊ τοῦ πατρὸς ὑπερέχων, φρονήσει δὲ καὶ διανοίᾳ πολλῷ
λειπόμενος, τεχθεὶς τῷ Σαμουήλ ἀπὸ τινος αἰχμαλώτιδος Λαρισσαίας ἀπὸ τινος αἰχμαλώτιδος
Λαρισσαίας] ἐξ Ἀγάθης τῆς θυγατρὸς Ἰωάννου τοῦ Χρυσή- λίου τοῦ ἐν Δυρραχίῳ πρωτεύοντος.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

ἤρξε δὲ κατὰ τὴν πεντεκαίδεκάτην τοῦ Σεπτεμβρίου μηνός, ἰνδικτιῶνος τρισκαίδεκάτης.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 40, line 2

Ἐξακισχιλιοστῶ δὲ πεντακοσιοστῶ εἰκοστῶ τετάρτῳ ἔτει, ἰνδικτιῶνος τεσσαρεσκαίδεκάτης, ἀπάρας τῆς βασιλίδος ὁ βασιλεὺς ἄπεισιν εἰς Τριάδιτζαν, καὶ τὸ Φρούριον Πέρνικον περικαθίσας ἐπολιόρκει, τῶν ἔνδον δὲ καρτερῶς καὶ ἐκθύμως ἀγωνιζομένων, καὶ πολλῶν Ῥω-μαίων πιπτόντων.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 40, line 42

καὶ κτείνουσι μὲν πολλούς, συλλαμβάνουσι δὲ καὶ διακοσίους πανοπλίτας καὶ τοὺς ἵππους καὶ τὴν ἀποσκευὴν Ἰωάννου καὶ τὸν τούτου ἀνεψίον· ὃν καὶ παραυτίκα στερεῖ τῶν ὀφθαλμῶν. ταῦτα δράσας ἐπάνεισι πρὸς τὰ Βο-δηνά, καὶ πάντα τὰ ἐκεῖσε καταστησάμενος ἐπαναξυγνύει πρὸς τὸ Βυζάντιον, κατὰ τὴν ἐνάτην τοῦ Ἰαννουαρίου μηνός, ἰνδικτιῶνος πεντεκαίδεκάτης, ἔτους ἑξακισχιλιοστοῦ πεντακοσιοστοῦ εἰκοστοῦ ἔκτου.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 43, line 51

καὶ τῶν λοιπῶν Βουλγάρων καὶ τοῦ ἀρχιερέως Βουλγάρων. ἰνδικτιῶν ἦν δευτέρα, ἔτος ἑξακισχιλιοστὸν πεντακοσιοστὸν εἰκοστὸν ἑβδόμον.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 43, line 57

ὃς ἐπὶ εἴκοσιν ὅλους ἐνιαυ-τοὺς τὴν τοῦ θεοῦ ποιμένας ἐκκλησίαν Ἰουλίῳ μηνί, ἰνδικτιῶνος δευτέρας, ἐν ἔτει τῷ ἑξακισχιλιοστῷ πεντακοσιοστῷ εἰκοστῷ ἑβδόμῳ, πρὸς κύριον ἐξεδήμησε.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 45, line 28

μετὰ δὲ ταῦτα δευτέρας συμπλοκῆς γενομένης, τῇ ἐνδεκάτῃ τοῦ Σεπτεμβρίου μηνός, ἰνδικτιῶνος ἑκτῆς, κατὰ τὸ ἑξακισχιλιοστὸν πεντα-κοσιοστὸν τριακοστὸν πρῶτον ἔτος, πίπτει μὲν ὁ Λιπαρίτης (οὗτος γὰρ ἦν ἀρχιστράτηγος τῷ Γεωργίῳ) καὶ σὺν αὐτῷ πᾶν τὸ κρατιστεύον ἐν Ἀβασγοῖς, φεύγει δὲ καὶ ὁ Γεώργιος εἰς τὰ ἐνδότερα ὄρη τῆς Ἰβηρίας.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Bas2+Const8, section 47, line 4

Δεκεμβρίῳ γὰρ μηνί, ἰνδικτιῶνος ἐνάτης, ἔτους ἑξακισχιλιοστοῦ πεντακοσιοστοῦ τριακοστοῦ τετάρτου, αἰφνιδίῳ νόσῳ ληφθεὶς ἀπεβίω, πρό τινων ἡμερῶν τῆς αὐτοῦ τελευτῆς καὶ Εὐσταθίου τοῦ πατριάρχου ἀποθανόντος, περὶ οὗ λέγεται, ὅτι ἐν μιᾷ τῶν ἐπισήμων ἐορτῶν τῆς ἱερουργίας τελουμένης – τοῦτο μὲν [γὰρ add. C] διὰ τὸ γῆρας· ἕξωρος γὰρ (γὰρ om. C) ἦν, τοῦτο δὲ διὰ μαλακίαν σωματικὴν· ἐνοσηλεύετο γὰρ – τῆς εἰσόδου τῶν ἀγίων ἀργῶς τε καὶ σχολαίως πλεῖον (πλείω EU) τοῦ (τοῦ] τῆς E) συνήθους τελουμένης (τελωμένης C), μετὰ τὸ τελέσαι τὴν εὐχὴν μὴ δυνάμενος ἴστασθαι, δόξαν αὐτῷ ἤχθη θρόνος, ἐφ' ᾧ ἀναπαύεσθαι (ἀναπεπαῦ-σθαι A) εἴθιστο.

8.7. JOANNES SCYLITZES HIST.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const8, section 3, line 1

Ἐννάτῃ δὲ Νοεμβρίου μηνός, τῆς δωδεκάτης ἰνδικτιῶνος, ἐν ἔτει ἑξακισχιλιοστῷ πεντακοσιοστῷ τριακοστῷ ἐβδόμῳ, αἰφνιδίῳ νόσῳ ληφθεὶς ὁ Κωνσταντῖνος καὶ παρὰ τῶν ἱατρῶν ἀπαγορευθεὶς ἐσκέπτετο, τίνα ἂν καταλίποι διάδοχον τῆς βασιλείας.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman3, section 5, line 38

καὶ δὴ κατὰ τὴν δευτέραν τοῦ Αὐγούστου μηνός, ἰνδικτιῶνος τρισκαίδεκάτης, ἔτους ἑξακισχιλιοστοῦ πεντακοσιοστοῦ τριακοστοῦ ὀγδόου, κατὰ τὰ βεβουλευμένα τὰς τῆς στρατοπεδείας ἀνοίξαντες πύλας ἀπανταχῇ τῆς ἐπ' Ἀντιόχειαν εἶχοντο, οἱ πλείους μὲν κοιλιακῷ κατεργασμένοι νοσήματι, οἱ πλείους δὲ καὶ ὑπὸ τῆς ἀνάγκης τοῦ δίψους κατεργασμένοι.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman3, section 8, line 10

τούτῳ τῷ ἔτει ἑξακισχιλιοστῷ πεντακοσιοστῷ τριακοστῷ ἐννάτῳ τυγχάνοντι, ἰνδικτιῶνος τεσσαρεσκαίδεκάτης, καὶ ὁ Προυσιάνος ἐκουσίως ἀποκίρεται μοναχός, καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ ἐκ Μαντινείου τῆς ἐν Βουκελλαρίῳ μονῆς εἰς Θρακησίους μεταβιβάζεται, καὶ Κωνσταντῖνος πατρίκιος ὁ Διογένης ἐκβληθεὶς τοῦ πύργου ἐν τῇ μονῇ τῶν Στουδίου ἀποκίρεται μοναχός.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman3, section 9, line 1

Τῷ δὲ ἑξακισχιλιοστῷ πεντακοσιοστῷ τετρακοστῷ ἔτει, ἰνδικτιῶνος πεντεκαίδεκάτης, μηνὶ Σεπτεμβρίῳ, ἦλθε πρὸς τὸν βασιλέα Ῥωμανὸν μετὰ δώρων πολλῶν ὁ τοῦ Χαλεπίτου υἱὸς Ἄμερ, ἑξαιτῶν ἀνανεῶσαι τὴν εἰρήνην καὶ τοὺς πρόσθεν παρέχειν φόρους.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Roman3, section 17, line 37

διήρκεσεν οὖν ἄχρι τῆς ἐνδεκάτης τοῦ Ἀπριλλίου μηνός, τῆς δευτέρας ἰνδικτιῶνος, τοῦ **Ϡ**φμβ' ἔτους.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 5, line 22

καὶ εὐθὺς ἄγεται εἰς τὰ βασίλεια, καὶ κατὰ τὴν τρίτην τοῦ Αὐγούστου μηνός τῆς δευτέρας ἰνδικτιῶνος ἐν τῇ νήσῳ Πλάτῃ περιορίζεται.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 8, line 1

Τῷ δὲ **Ϡ**φμγ' ἔτει, ἰνδικτιῶνος τρίτης, Μαΐῳ μηνί, Ἄφροι καὶ Σικελοὶ καταδραμόντες τὰς Κυκλάδας καὶ τὰ τοῦ Θρακησίου παράλια, τελευταῖον κατεπολεμήθησαν ὑπὸ τῶν ἐκεῖσε φυλαττόντων, καὶ πεντακόσιοι μὲν ζῶντες ὡς βασιλέα ἤχθησαν, οἱ δὲ λοιποὶ πάντες ἀνεσκολοπίσθησαν ἐν τῇ παραλίῳ ἀπὸ Ἀτραμυτίου καὶ μέχρι Στροβίλου.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 10, line 1

Τῷ δὲ **Ϡ**φμδ' ἔτει, ἰνδικτιῶνος τετάρτης, διὰ τοῦ ἔαρος τρεῖς εἰσβολὰς οἱ Πατζινάκαι ποιησάμενοι κατὰ Ῥωμαίων ἄρδην τὰ παρατυχόντα ἠφάνισαν, ἠβηδὸν τοὺς ἀλισκομένους ἀναιροῦντες καὶ τιμωρίαις τοὺς αἰχμαλώτους ὑποβάλλοντες ἀνεκδιηγῆτοίς.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 10, line 14

Δεκεμβρίῳ δὲ μηνί, ἰνδικτιῶνος πέμπτης, ἔτους Β΄Φμε΄, κατὰ τὴν ὀκτωκαιδεκάτην τοῦ μηνός, περὶ τετάρτην ὥραν τῆς νυκτός, γεγόνασι σεισμοὶ τρεῖς, δύο μικροὶ καὶ εἰς μέγας.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 13, line 1

Τῷ δὲ Β΄Φμς΄ ἔτει, ἰνδικτιῶνος ἑκτῆς, Νοεμβρίου δευτέρα, γέγονε σεισμός περὶ ὥραν δεκάτην τῆς ἡμέρας, καὶ διετέλεσεν ἡ γῆ σειομένη ἄχρι ὅλου τοῦ Ἰαννουαρίου μηνός.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 17, line 1

Τῷ δὲ Β΄Φμς΄ ἔτει, ἰνδικτιῶνος ἑκτῆς, γέγονεν ἐπιβουλὴ κατὰ τῆς πόλεως Ἐδέσσης· καὶ μικροῦ ἂν ἐάλω, εἰ μὴ θεὸς διεσώσατο.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 18, line 1

Τῷ δὲ Β΄Φμς΄ ἔτει, ἰνδικτιῶνος ἐβδόμης, ἐπιτείνων τὸ πρὸς τὸν Δαλασσηνὸν ἔχθος ὁ Ἰωάννης ὑπερρρίζει καὶ Θεοφύλακτον πατρικίον τὸν αὐτοῦ ἀδελφόν, καὶ τὸν ἕτερον ἀδελφὸν αὐτοῦ τὸν πατρικίον Ῥωμανόν, καὶ Ἀδριανὸν τὸν ἀνεψιὸν αὐτῶν καὶ τοὺς λοιποὺς τοὺς κατὰ γένος αὐτῷ ἐγγίζοντας.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 19, line 1

Φεβρουαρίου δὲ μηνός δευτέρα, ἰνδικτιῶνος ὀγδόης, ἔτους Β΄Φμη΄, γέγονε σεισμός φρικώδης, καὶ ἔπαθον μὲν καὶ ἄλλοι τόποι καὶ πόλεις, ἐγένετο δὲ ἡ Σμύρνα ἐλεεινὸν θέαμα, καταπεσόντων τῶν καλλίστων οἰκοδομημάτων αὐτῆς καὶ πολλοὺς τῶν οἰκητόρων ἀναλωσάντων.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 21, line 14

Μαῖῳ δὲ μηνὶ τοῦ Β΄Φμη΄ ἔτους, ἰνδικτιῶνος ὀγδόης, ἡ ἀδελφὴ τοῦ βασιλέως Μαρία, μήτηρ δὲ τοῦ καίσαρος, ἄπεισιν ἐν Ἐφέσῳ εἰς προσκύνησιν τοῦ ἡγαπημένου.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 27, line 1

Σεπτεμβρίου δὲ μηνός, ἰνδικτιῶνος ἐνάτης τοῦ Β΄Φμθ΄ ἔτους, Ἀλουσιάνος πατρικίος καὶ στρατηγός Θεοδοσιουπόλεως, ὁ τοῦ Ἀαρὼν δεύτερος υἱός, ἄφνω τῆς πόλεως ἀποδράς τῷ Δελεάνῳ προσέρχεται ἐξ αἰτίας τοιαύτης.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 28, line 1

Τούτῳ τῷ ἔτει, ἰνδικτιῶνος ἐνάτης, Ἰουνίου δεκάτη, περὶ ὥραν τῆς ἡμέρας δωδεκάτην, γέγονε σεισμός.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich4, section 29, line 23

Δεκεμβρίου δὲ δεκάτῃ, τοῦ Β΄Φν΄ ἔτους, ἰνδικτιῶνος δεκάτης, θνήσκει ἐν μετανόῃ καὶ ἐξομολογήσει, τὴν εἰς τὸν βασιλέα Ῥωμανὸν ἀμαρτάντα ἀποκλαιόμενος, βασιλεύσας ἐπὶ ἔτη ἑπτὰ καὶ μῆνας ὀκτὼ, ἀνὴρ τᾶλλα μὲν ἐπιεικής καὶ χρηστός καὶ εὐλαβῶς δόξας βιοῦν, πλὴν τοῦ εἰς τὸν βασιλέα Ῥωμανὸν ἀμαρτήματος.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich5, section 2, line 27

8.7. JOANNES SCYLITZES HIST.

τυφλωθέντες οὖν ἐξορίζονται, ὁ μὲν Μιχαὴλ εἰς τὸ μοναστήριον τῶν Ἐλεγκμῶν εἰκάδι πρώτη μηνὸς Ἀπριλλίου, ἰνδικτιῶνος δεκάτης τοῦ ϠϚφν' ἔτους, βασιλεύσας ἐπὶ μῆνας τέσσαρας καὶ ἡμέρας πέντε, καὶ οἱ συγγενεῖς δὲ πάντες αὐτοῦ ἄλλος ἄλλαχού διεσπάρησαν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 2, line 10
καὶ ταῦτα μὲν ἐπράχθη ἐν προοιμίῳ τῷ Μονομά- χω, κατὰ τὴν δεκάτην ἰνδικτιῶνα.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 2, line 11
κατὰ δὲ τὴν ἕκτην τοῦ Ὀκτωβρίου μηνός, τῆς ἐνδεκάτης ἰνδικτιῶνος, τοῦ ϠϚφνα' ἔτους, ἐφάνη κομήτης ἀπὸ τῆς ἑωτῆς πρὸς δύσιν ποιούμενος τὴν πορείαν, καὶ ὥρατο λάμπων παρ' ὅλον τοῦτον τὸν μῆνα.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 5, line 1

Τῇ δὲ εἰκοστῇ τοῦ Φεβρουαρίου μηνός, τῆς ἐνδεκάτης ἰνδικτιῶνος, κατέλυσε τὴν ζωὴν Ἀλέξιος ὁ πατριάρχης, καὶ ἀνάγεται εἰς τὸν αὐτοῦ θρόνον Μιχαὴλ ὁ Κηρουάριος κατὰ τὴν ἡμέραν τοῦ εὐαγγελισμοῦ, μοναχὸς ὢν, ἐξ οὗπερ ὁ ὀρφανοτρόφος αὐτὸν διὰ τὴν ἐπιβουλήν ἐξώρισε.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 5, line 7

Μαΐου δὲ δευτέρα, τῆς αὐτῆς ἰνδικτιῶνος, ἐκτυφλοῦται καὶ ὁ ὀρφανοτρόφος ἐν τῷ λεγομένῳ χωρίῳ τῶν Μαρυκά- των, ὡς μὲν τινὲς φασιν, ὑπὸ Θεοδώρας ἄκοντος τοῦ βασιλέως, ὡς δὲ ὁ τῶν πολλῶν κρατεῖ λόγος, παρ' αὐτοῦ τούτου ἐγκοτῶντος αὐτῷ διὰ τὰς ὑπερβολάς, καὶ τῇ τρισκαιδεκάτῃ τοῦ αὐτοῦ μηνός ἀποθνήσκει.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 5, line 12

Ἰουλίῳ δὲ μηνὶ τῆς αὐτῆς ἰνδικτιῶνος κατηγορήθη καὶ Στέφανος ὁ σεβαστοφόρος, ὡς ἐπι- βουλευὼν τῷ βασιλεῖ καὶ βασιλέα βουλόμενος ποιῆ-σαι Λέοντα πατρίκιον καὶ στρατηγὸν Μελιτηνῆς, τὸν υἱὸν τοῦ Λαμπροῦ.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 6, line 1

Ἐγένετο δὲ καὶ κατὰ τὸν Ἰούλιον μῆνα τῆς αὐτῆς ἰνδικτιῶνος καὶ ἡ τοῦ ἔθνους τῶν Ῥῶς κινήσις κατὰ τῆς βασιλίδος.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 7, line 1

Σεπτεμβρίῳ δὲ μηνί, ἰνδικτιῶνος δωδεκάτης, ἔτους ϠϚρνβ', ἐπνευσεν ἄνεμος σφοδρὸς, ὡς διαφθαρῆναι σχεδὸν τοὺς τῶν ἀμπέλων καρπούς.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 8, line 1

ἦν δὲ ὁ Σπηθάτος οὗτος ἀρετῆς εἰς ἄκραν ἐπιμελούμενος καὶ νηστεία καὶ σκληραγωγία καὶ πάσῃ ἄλλῃ ἀρετῇ ἐντήκων τὸ σῶμα ἑαυτοῦ, ὡς καὶ ποτε τεσσαράκοντα ἡμέρας ἄσιτος διατελέσαι, μηδενὸς τὸ παράπαν ἐν τῷ μέσῳ γευσάμενος. Ἰνδικτιῶνος δὲ τρισκαιδεκάτης ὁ κατὰ τοῦ Ἀνίου ἀρχὴν ἐλάβανε πόλεμος.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 8, line 130

ἀλλὰ τοῦτο μὲν ὕστερον· πρὶν ἢ δὲ τὰς δυνάμεις ἐλθεῖν, ὁ Τορνίκιος κατὰ τὸν Σεπτέμ- βριον μῆνα, τῆς πρώτης ἰνδικτιῶνος, βασιλεύς, ὡς ἐλέχθη, ἀναρρηθείς θᾶπτον ἢ λόγος τὴν βασιλίδά καταλαμβάνει, ἐλπίζων αὐτοβοεῖ ταύτην αἰρήσειν διὰ τὸ μὴ εὐπορεῖν τὸν βασιλέα δυνάμεων.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 9, line 15

ἀρχῆς εἰς Σαρακηνούς διαλυθείσης, καὶ τῆς τῶν Σαρακηνῶν ἐπικρατείας μὴ μόνον Περσίδος καὶ Μηδίας καὶ Βαβυλῶνος καὶ Ἀσσυρίων κυριευούσης, ἤδη δὲ καὶ Αἰγύπτου καὶ Λιβύης καὶ μέρους οὐκ ὀλίγου τῆς Εὐρώπης, ἐπεὶ περ ἔτυχον ἐν διαφόροις καιροῖς ἀλλήλων καταστασιάσαντες καὶ ἡ μία καὶ μεγίστη αὕτη ἀρχὴ εἰς πολλὰ διηρέθη μέρη, καὶ ἄλλον μὲν ἀρχηγὸν εἶχεν ἡ Ἰσπανία, ἄλλον δὲ ἡ Λιβύη, ἄλλον δὲ ἡ Αἴγυπτος, ἄλλον δὲ ἡ Βαβυλών, ἕτερον δὲ ἡ Περσίς, καὶ πρὸς ἀλλήλους μὲν οὐχ ὠμονόουν, μᾶλλον μὲν οὖν καὶ προσεπολέμουν οἱ γειτονοῦντες, ἀρχηγὸς Περσίδος καὶ Χωρασμίων καὶ Ὀρητανῶν καὶ Μηδίας ὑπάρχων Μουχούμετ κατὰ τοὺς χρόνους Βασιλείου τοῦ βασιλέως, ὁ τοῦ Ἰμβραήλ, καὶ πολεμῶν Ἰνδοῖς καὶ Βαβυλωνίοις καὶ κακῶς ἐν τῷ πολέμῳ φερόμενος, ἔγνω δεῖν πρὸς τὸν ἄρχοντα Τουρκίας διαπρεσβεύσασθαι καὶ συμμαχίαν ἐκεῖθεν αἰτήσασθαι.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 9, line 30

ὑποστρέψας δὲ εἰς τὴν ἑαυτοῦ ἡπείρου καὶ πρὸς τοὺς πολεμοῦντας Ἰνδοὺς διαγωνίσασθαι μετ' αὐτῶν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 14, line

7

ἀλλ' ὁ Λιπαρίτης οὐκ ἤθελε διὰ τὴν ἡμέραν· ἦν γὰρ σάββατον, ὀκτωκαιδεκάτην ἄγοντος τοῦ Σεπτεμβρίου μηνός, τῆς δευτέρας ἰνδικτιῶνος, ἐν ταῖς ἀποφράσι δὲ τῶν ἡμερῶν τῷ Λιπαρίτῃ τὸ σάββατον ἐνομιζέτο, ὅπερ ἀποτροπιάζομενος ἀνεδύετο πολεμεῖν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 22, line

80

τῆς δὲ τρίτης ἐπιστάσης ἰνδικτιῶνος τοῦ β' φησὶ ἔτους, τὸν ἑταίρην ἀρχὴν Κωνσταντῖνον στρατηγὸν αὐτοκράτορα προχειρισάμενος ὁ βασιλεὺς ἐκπέμπει κατὰ τῶν Πατρινάκων.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 25, line

29

διὸ καὶ τὰς ἐκδρομὰς οὐκ ἀνέτως, ὥς τὸ πρότερον, ἀλλὰ μετὰ φειδοῦς ἐποιοῦντο κατὰ τὴν τετάρτην καὶ πέμπτην ἰνδικτιῶνα.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 30, line

2

Ἐνέσκηψε δὲ καὶ λοιμικὴ νόσος τῇ βασιλίδι κατὰ τὴν ἐβδόμην καὶ ὀγδόην ἰνδικτιῶνα, ὥς μὴ ἐξισχύειν τοὺς ζῶντας ἐκφέρειν τοὺς τεθνεῶτας.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Const9, section 30, line

3

ἠνέχθη δὲ καὶ κατὰ τὸ θέρος τῆς ἐβδόμης ἰνδικτιῶνος μέγιστόν τι χρῆμα χαλάξης, καὶ πολλὰ ὑπ' αὐτῆς οὐ ζῶα μόνον, ἀλλὰ καὶ ἄνθρωποι διεφθάρησαν.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Theod, section 1, line 27

ὅλην οὖν τὴν θ' ἰνδικτιῶνα, τοῦ β' φησὶ ἔτους βιώσασα ἡ βασιλίς, καὶ περὶ τὰ τέλη τοῦ Αὐγούστου μηνός τῆς αὐτῆς ἰνδικτιῶνος ἰλεοῦ νοσήματι περιπεσοῦσα ἀπέθανεν.

8.8. PYTHEAS PERIEG.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich6, section 1, line 2
ΜΙΧΑΗΛ Ο ΓΕΡΩΝ

Ἀναρρηθέντος δὲ τοῦ Μιχαήλ αὐτοκράτορος κατὰ τὴν λα΄ ἡμέραν τοῦ Αὐγούστου μηνός, τῆς θ΄ ἰνδικτιῶνος, Θεοδόσιος πρόεδρος ὁ τοῦ πατραδέλφου τοῦ βασιλέως Κωνσταντίνου τοῦ Μονομάχου υἱός, πυθό-μενος τὴν ἀνάρρησιν καὶ δεινοπαθήσας, καὶ μὴ βουλευσάμενος, μηδὲ λογισά-μενος τὴν τοῦ ἔργου δυσχέρειαν καὶ ἀπότευξιν, μηδ’ οἷον κύβον μέλλει ἀναρριπτεῖν, ἀνειληφώς τοὺς οἰκογενεῖς καὶ δούλους καὶ τοὺς ἄλλως ὑπηρετουμένους αὐτῷ, πολλοὺς δὲ καὶ τῶν γειτόνων καὶ τινὰς τῶν συνήθων, ὅσοι περ ἦσαν τὰς φρένας κουφότεροι, ἄρας περὶ δέλην ὁψίαν ἐκ τῆς οἰκίας (κεῖται δὲ αὕτη περὶ τὸ λεγόμενον Λεωμακέλλιον) προῆει διὰ τῆς πλατείας ὡς εἰς τὸ παλάτιον, ἀγανακτῶν καὶ δυσχεραίνων, καὶ τὴν ἀδικίαν ὡς ἂν τὰ ἔσχατα ἡδικημένος πρὸς τοὺς

παρατυ-

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich6, section 6, line 45

κάκεισε τοὺς πλησιοχώρους ἀθροίσαντες στρατιώτας καὶ τοὺς ὅσοι πυθόμενοι τὴν κίνησιν ἐθελονταὶ παρεγένοντο, μετὰ πάντων αὐτῶν ἀναγορεύουσι τοῦτον αὐτοκράτορα βασιλέα Ῥωμαίων, ὁγδόην ἄγοντος τότε τοῦ Ἰουνίου μηνός, τῆς δεκάτης ἰνδικτιῶνος.

Joannes Scylitzes Hist., Synopsis historiarum Emperor life Mich6, section 12, line 67

τοῦ δὲ κατὰ τὴν ἐν ἀκροπόλει οἰκίαν αὐτοῦ γενομένου ἡμέρᾳ τετράδι, τριακοστὴν πρώτην ἄγοντος τοῦ Αὐγούστου μηνός, τῆς δεκάτης ἰνδικτιῶνος, στέλλεται ὁ Κεκαυμένος κουροπαλάτης ὑπὸ τοῦ Κομνηνοῦ τιμηθεὶς μετὰ τινων οὐκ ὀλίγων εὐπατριδῶν τῇ πέμπτῃ πρωΐᾳ διὰ δρόμωνος, καὶ εἰσελθὼν κρατεῖ τὰ ἀνάκτορα.

8.8 Pytheas Perieg.

Pytheas Perieg., Fragmenta (1650: 001) “Pytheas von Massalia”, Ed. Mette, H.J. Berlin: De Gruyter, 1952. Fragment 5, line 17

τί<ς> γάρ ἢ πιθανότης πρῶτον μὲν τῆς κατὰ τὸν Ἰνδὸν περιπετείας;

(See also Posidonius Phil., Fragment 13, line 209.)

Pytheas Perieg., Fragmenta Fragment 6a, line 52

ὅτι μὲν γάρ πλεονὴ διπλάσιον τὸ γινώριμον μῆκός ἐστι τοῦ γινώριμου πλάτους, ὁμολογοῦσι καὶ οἱ ὕστερον καὶ τῶν ἄλλων οἱ χαριέστατοι· λέγω δὲ <τὸ> ἀπὸ τῶν ἄκρων τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰβηρίας τοῦ <ἀπὸ τῶν> Αἰθιοπῶν ἕως τοῦ κατὰ Ἰέρην κύκλου.

Pytheas Perieg., Fragmenta Fragment 6a, line 57

φησὶ δ’ οὖν τὸ μὲν τῆς Ἰνδικῆς μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τὸ στενώτατον σταδίων μυρίων ἑξακισχιλίων – τὸ γάρ ἐπὶ τὰ ἀκρωτήρια τεῖνον τρισχιλίοις εἶναι μείζον – , τὸ δὲ ἔνθεν ἐπὶ Κασπίους Πύλας μυρίων τετρακισχιλίων, εἴτ’ ἐπὶ τὸν Εὐφράτην μυρίων, ἐπὶ δὲ τὸν Νεῖλον

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

ἀπὸ τοῦ Εὐφράτου πεντακίς- χιλίων, ἄλλους δὲ χιλίους καὶ τριακοσίους μέχρι Κανωβικοῦ Στόματος, εἴτα μέχρι τῆς Καρχηδόνας μυρίου τρισχιλίους πεντακοσίους, εἴτα μέχρι Σπηλῶν ὀκτακισχιλίους τοῦλάχιστον· ὑπεραίρειν δὲ τῶν ἑπτὰ μυριάδων ὀκτακοσίους.

Pytheas Perieg., Fragmenta Fragment 6b, line 3

ὅρα γάρ, εἰ τοῦτο μὲν μὴ κινοίη τις τὸ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς τὰ μεσημβρινὰ ἀνταίρειν τοῖς κατὰ Μερόην, μηδὲ τὸ διάστημα τὸ ἀπὸ Μερόης ἐπὶ τὸ στόμα τὸ κατὰ τὸ Βυζάντιον ὅτι ἐστὶ περὶ μυρίου σταδίου καὶ ὀκτακισχιλίους, ποιοίη δὲ τρισμυρίων τὸ ἀπὸ τῶν μεσημβρινῶν Ἰνδῶν μέχρι τῶν Ὀρῶν, ὅσα ἂν συμβαίη ἄτοπα.

Pytheas Perieg., Fragmenta Fragment 9b, line 1

KOSMAS DER INDIENFAHRER Χριστιανικὴ τοπογραφία II p. 82, 18 E. O. Winstedt: <Πυθέας> δὲ ὁ <Μας<ς>αλιώτης> φησὶν <ἐν τοῖς Περὶ Ὤκεανού> ὅτι παραγενομένῳ αὐτῷ ἐν τοῖς βορειοτάτοις τόποις ἐδείκνυον οἱ αὐτόθι βάρβαροι τὴν ἡλίου κοίτην, ὡς ἐκεῖ τῶν νυκτῶν αἰεὶ γενομένου παρ' αὐτοῖς.

8.9 Maximus Confessor Theol.)

Maximus Confessor Theol., Quaestiones et dubia (2892: 002) “Maximi confessoris quaestiones et dubia”, Ed. Declerck, J.H. Turnhout: Brepols, 1982; Corpus Christianorum. Series Graeca 10. Section 119, line 20

Κατὰ δὲ τὴν θεωρίαν οὕτως ἐκκληπτέον τὸν τόπον· ὁ γνωστικὸς νοῦς κατὰ τὸν Παῦλον ἔχει συνόντας αὐτῷ τοὺς λογισμούς· κατὰ οὖν τὴν πρώτην τοῦ λόγου πρὸς τὸν νοῦν γινομένην ἐμφάνειαν οἱ λογισμοὶ ἀπηχήματα μόνον καὶ ἰνδαλματα τῆς γνώσεως ἀκούουσιν, οὐδὲν δὲ τετρανωμένον θεωροῦσιν· προκόπτωντος δὲ τοῦ νοῦ καὶ ἐπὶ τῶν ἀναβαθμῶν γινομένου, τουτέστιν ἐπὶ τῆς ὑψηλῆς θεωρίας, οὐκέτι οἱ λογισμοὶ ἰνδαλμάτων ἀλλὰ τοῦ φωτὸς τῆς γνώσεως τέλειον ἐν μετουσίᾳ γίνονται.

Maximus Confessor Theol., Scholia in Ecclesiasten (in catenis: catena trium patrum) (2892: 097) “Anonymus in Ecclesiasten commentarius qui dicitur catena trium patrum”, Ed. Lucà, S. Turnhout: Brepols, 1983; Corpus Christianorum. Series Graeca 11. Section 1, line 65

Τῶνδ' εἰρημένων 8. Πάντες οἱ λόγοι ἔγκοποι· οὐ δυνήσεται ἀνὴρ τοῦ λαλεῖν, καὶ οὐκ ἐμπλησθήσεται ὀφθαλμὸς τοῦ ὁρᾶν, καὶ οὐ πληρωθήσεται οὐς ἀπὸ ἀκροάσεως. Δηλαδή, ὁ διὰ τελειότητα φρενῶν τῆς κατὰ τὴν ἄστατον φορὰν τῶν ὄντων ὑπεριδὼν ματαιότητος, καὶ τῆς τούτων φύσεως πάντας τοὺς καθόλου ἐρευνώμενος λόγους, πολλὰ καμῶν, μόλις νῶ μόνῳ ἐν ἄλλῃ ἐξ ἄλλου φαντασίᾳ ἐν τι συλλέξει τῆς ἀληθείας ἰνδαλμα, πρὶν κρατηθῆναι φεῦγον καὶ πρὶν νοηθῆναι διαδιδράσκον.

Socrates Scholasticus Hist., Historia ecclesiastica (2057: 001) “Socrates' ecclesiastical history, 2nd edn.”, Ed. Bright, W. Oxford: Clarendon Press, 1893. Book 1, chapter 19, line 2

8.10. SOCRATES SCHOLASTICUS HIST.

Τίνα τρόπον ἐπὶ τῶν χρόνων Κωνσταντίνου τὰ ἐνδοτέρω ἔθνη τῶν Ἰνδῶν ἐχριστιάνισαν.

Αὐθις οὖν μνημονευτέον καὶ ὅπως ἐπὶ τῶν καιρῶν τοῦ βασιλέως ὁ Χριστιανισμὸς ἐπλά-
τύνετο· τήνικαυτα γὰρ Ἰνδῶν τε τῶν ἐνδο- τέρω καὶ Ἰβήρων τὰ ἔθνη πρὸς τὸ Χριστιανίζειν
ἐλάμβανε τὴν ἀρχήν.

8.10 Socrates Scholasticus Hist.

Socrates Scholasticus Hist., Historia ecclesiastica Book 1, chapter 19, line 10

Ἦνίκα οἱ ἀπόστολοι κλήρῳ τὴν εἰς τὰ ἔθνη πορείαν ἐποιοῦντο, Θωμᾶς μὲν τὴν Πάρθων
ἀποστολὴν ὑπέδεχετο, Ματθαῖος δὲ τὴν Αἰθιοπίαν, Βαρθολομαῖος δὲ ἐκκληροῦτο τὴν συνημ-
μένην ταύτῃ Ἰνδιάν· τὴν μέντοι ἐνδοτέρω Ἰνδιάν, ἣ προσοικεῖ βαρβάρων ἔθνη πολλὰ, διαφό-
ροις χρώμενα γλώσσαις, οὐδὲ πω πρὸ τῶν Κωνσταντίνου χρόνων ὁ τοῦ Χριστιανισμοῦ λόγος
ἐφώτιζε.

Socrates Scholasticus Hist., Historia ecclesiastica Book 1, chapter 19, line 14

Μερόπιός τις φιλόσοφος, τῷ γένει Τύριος, ἱστορῆσαι τὴν Ἰνδῶν χώραν ἔσπευσεν, ἀμιλλησά-
μενος πρὸς τὸν φιλόσοφον Μητροδωρον, ὃς πρὸ αὐτοῦ τὴν Ἰνδῶν χώραν ἱστόρησεν.

Socrates Scholasticus Hist., Historia ecclesiastica Book 1, chapter 19, line 21

Συμβεβήκει δὲ τότε πρὸς ὀλίγον τὰς σπονδὰς διεσπᾶσθαι τὰς μεταξὺ Ῥωμαίων τε καὶ
Ἰνδῶν.

Socrates Scholasticus Hist., Historia ecclesiastica Book 1, chapter 19, line 21

Συλλαβόντες δὲ οἱ Ἰνδοὶ τὸν φιλόσοφον καὶ τοὺς συμπλέοντας, πλὴν τῶν δύο συγγενῶν
παιδα- ρίων, ἅπαντας διεχρήσαντο· τοὺς δὲ δύο παῖδας, οἵκτω τῆς ἡλικίας διασώσαντες, δῶρον
τῷ Ἰνδῶν βασιλεῖ προσκομίζουσιν.

Socrates Scholasticus Hist., Historia ecclesiastica Book 1, chapter 19, line 38

Κατὰ βραχὺ δὲ προϊόντος τοῦ χρόνου, καὶ εὐκτῆριον κατεσκεύασε, καὶ τινες τῶν Ἰνδῶν
κατη- χοῦντες συνεύχεσθαι αὐτοῖς παρεσκεύασαν.

Socrates Scholasticus Hist., Historia ecclesiastica Book 1, chapter 19, line 48

Αἰδέσιος μὲν οὖν ὡς ἐπὶ τὴν Τύρον ἐσπουδάζεν, ὀφόμενος γονέας τε καὶ συγγενεῖς· Φουρ-
μέντιος δὲ καταλαβὼν τὴν Ἀλεξάνδρειαν, τῷ ἐπισκόπῳ Ἀθανασίῳ τότε νεωστὶ τῆς ἐπισκοπῆς
ἀξιωθέντι, ὑπαναφέρει τὸ πρᾶγμα, διδάξας τὰ τε τῆς ἑαυτοῦ ἀποδημίας, καὶ ὡς ἐλπίδας
ἔχουσιν Ἰνδοὶ τὸν Χριστιανισμόν παραδέξασθαι· ἐπίσκοπόν τε καὶ κληρὸν ἀποστέλ- λειν, καὶ
μηδαμῶς περιορᾶν τοὺς δυναμένους σωθῆναι.

Socrates Scholasticus Hist., Historia ecclesiastica Book 1, chapter 19, line 54

Γίνεται δὲ τοῦτο· καὶ Φουρμέντιος ἀξιωθείς τῆς ἐπισκοπῆς αὐθις ἐπὶ τὴν Ἰνδῶν παραγίνε-
ται χώραν, καὶ κήρυξ τοῦ Χριστιανισμοῦ γίνεται, εὐκτῆριά τε πολλὰ ἰδρύει, ἀξιωθείς τε θείας
χάριτος, πολλὰ μὲν σημεία, πολλῶν δὲ σὺν τῇ ψυχῇ καὶ τὰ σώματα ἐθεράπευε.

8.11 Sextus Empiricus Phil.

Sextus Empiricus Phil., Pyrrhoniae hypotyposes (0544: 001) “Sexti Empirici opera, vol. 1”, Ed. Mutschmann, H. Leipzig: Teubner, 1912. Book 1, section 80, line 2

διαφέρει μὲν γὰρ κατὰ μορφήν σῶμα Σκύθου Ἰνδοῦ σώματος, τὴν δὲ παραλλαγὴν ποιεῖ, καθάπερ φασίν, ἢ διάφορος τῶν χυμῶν ἐπικράτεια.

Sextus Empiricus Phil., Pyrrhoniae hypotyposes Book 1, section 80, line 7

ταῦτά τοι καὶ ἐν τῇ αἰρέσει καὶ φυγῇ τῶν ἐκτὸς διαφο- ρὰ πολλή κατ’ αὐτούς ἐστίν· ἄλλοις γὰρ χαίρουσιν Ἰνδοὶ καὶ ἄλλοις οἱ καθ’ ἡμᾶς, τὸ δὲ διάφορος χαίρειν τοῦ παραλλαγμένου ἀπὸ τῶν ὑποκειμένων φαντασίας λαμβά- νειν ἐστὶ μνηστικόν.

Sextus Empiricus Phil., Pyrrhoniae hypotyposes Book 1, section 148, line 6

οἷον ἔθος μὲν ἔθει οὕτως· τινὲς τῶν Αἰθιοπῶν στίζουσι τὰ βρέφη, ἡμεῖς δ’ οὐ· καὶ Πέρσαι μὲν ἀνθοβαφεῖ ἐσθῆτι καὶ ποδήρει χρῆσθαι νομίζουσιν εὐπρεπὲς εἶναι, ἡμεῖς δὲ ἀπρε- πές· καὶ οἱ μὲν Ἰνδοὶ ταῖς γυναιξὶ δημοσίᾳ μίγνυνται, οἱ δὲ πλείστοι τῶν ἄλλων αἰσχρὸν τοῦτο εἶναι ἡγοῦνται.

Sextus Empiricus Phil., Pyrrhoniae hypotyposes Book 3, section 200, line 6

καὶ τὸ δημοσίᾳ γυναικὶ μίγνυσθαι, καίτοι παρ’ ἡμῖν αἰσχρὸν εἶναι δοκοῦν, παρὰ τισι τῶν Ἰν- δῶν οὐκ αἰσχρὸν εἶναι νομίζεται· μίγνυνται γοῦν ἀδια- φόρως δημοσίᾳ, καθάπερ καὶ περὶ τοῦ φιλοσόφου Κράτητος ἀκηκόαμεν.

Sextus Empiricus Phil., Pyrrhoniae hypotyposes Book 3, section 227, line 3

Αἰθιοπῶν δὲ οἱ ἰχθυοφάγοι εἰς τὰς λίμνας ἐμ- βάλλουσιν αὐτούς, ὑπὸ τῶν ἰχθύων βρωθη- σομένους· Ἴνδοι δὲ κυσὶν αὐτούς ἐκτίθενται βορὰν, Ἰνδῶν δὲ ἔνιοι γυνήν.

Sextus Empiricus Phil., Adversus mathematicos (0544: 002) “Sexti Empirici opera, vols. 2 & 3 (2nd edn.)”, Ed. Mutschmann, H., Mau, J. Leipzig: Teubner, 2:1914; 3:1961. Book 7, section 249, line 7

δεύτερον δὲ τὸ καὶ ἀπὸ ὑπάρχοντος εἶναι καὶ κατ’ αὐτὸ τὸ ὑπάρχον· εἶναι γὰρ πάλιν ἀπὸ ὑπάρχοντος μὲν εἰσιν, οὐκ αὐτὸ δὲ τὸ ὑπάρχον ἰνδάλλονται, ὥς ἐπὶ τοῦ μεμνηνότες Ὀρέστου μικρῶ πρότερον ἐδείκνυμεν.

Sextus Empiricus Phil., Adversus mathematicos Book 7, section 425, line 4

τοῦτο μέντοι τῶν ἀδυνάτων ἐστίν· καὶ γὰρ παρὰ τὰς διαφορὰς τῶν τόπων καὶ παρὰ τὰς τοῦ ἐκτὸς περιστάσεις καὶ παρ’ ἄλλους πλείονας τρόπους οὔτε τὰ αὐτὰ οὔτε ὡσαύτως ἰνδάλλεται ἡμῖν τὰ πράγματα, κα- θάπερ ἀνώτερον ἐπελογισάμεθα, ὥστε ὅτι μὲν φαίνεται πρὸς τῇδε τῇ αἰσθήσει καὶ τῇδε τῇ περιστάσει δύ- νασθαι λέγειν, τὸ δ’ εἰ ταῖς ἀληθείαις τοιοῦτόν ἐστιν οἷον καὶ φαίνεται, ἢ ἄλλοῖον μὲν ἐστίν, ἄλλοῖον δὲ φαίνεται, μὴ ἔχειν ἡμᾶς διαυθεντεῖν, διὰ δὲ τοῦτο μηδεμίαν εἶναι φαν- τασίαν χωρὶς ἐνστήματος.

Sextus Empiricus Phil., Adversus mathematicos Book 9, section 45, line 3

Οἱ δὲ καὶ πρὸς τοῦτό φασιν, ὅτι ἢ μὲν ἀρχὴ τῆς νοή- σεως τοῦ εἶναι θεὸν γέγονεν ἀπὸ τῶν κατὰ τοὺς ὕπνους ἰνδαλλομένων ἢ ἀπὸ τῶν κατὰ τὸν κόσμον θεωρουμένων, τὸ δὲ αἰδῖον εἶναι

8.12. EUSTATHIUS PHILOL., SCR. ECCL.

τὸν θεὸν καὶ ἄφθαρτον καὶ τέλειον ἐν εὐδαιμονίᾳ παρήλθε κατὰ τὴν ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων μετά-
βασιν.

Sextus Empiricus Phil., Adversus mathematicos Book 11, section 15, line 5

Ἄλλοι δὲ κακείνως ἐνέστησαν· πᾶσα γάρ, φασίν, ὑγιῆς διαίρεσις γένους ἐστὶ τομὴ εἰς τὰ
προσεχῇ εἶδη, καὶ διὰ τοῦτο μοχθηρὰ καθέστηκεν ἡ τοιαύτη διαίρεσις· “τῶν ἀν-
θρώπων οἱ μὲν εἰσιν Ἕλληνες, οἱ δὲ Αἰγύπτιοι, οἱ δὲ Πέρ-
σαι, οἱ δὲ Ἰνδοί”.

Sextus Empiricus Phil., Adversus mathematicos Book 11, section 16, line 1

τῷ γὰρ ἑτέρῳ τῶν προσεχῶν εἰδῶν οὐ τὸ συζυγοῦν καὶ προσεχές εἶδος ἀντιδιέζευκται, ἀλλὰ
τὰ τούτου εἶδη, δέον οὕτως εἰπεῖν· “τῶν ἀνθρώπων οἱ μὲν εἰσιν Ἕλληνες, οἱ δὲ βάρβαροι”, καὶ
καθ’ ὑποδιαίρεσιν λοι-
πόν “τῶν δὲ βαρβάρων οἱ μὲν εἰσιν Αἰγύπτιοι, οἱ δὲ Πέρσαι, οἱ δὲ Ἰνδοί”.

Sextus Empiricus Phil., Adversus mathematicos Book 11, section 17, line 4

ἐφίκει γὰρ ἡ μὲν τοιαύτη διαίρεσις τῇ λε-
γούσῃ “τῶν ἀνθρώπων οἱ μὲν εἰσιν Ἕλληνες, οἱ
δὲ βάρ-
βαροι, τῶν δὲ βαρβάρων οἱ μὲν Αἰγύπτιοι, οἱ δὲ Πέρσαι, οἱ δὲ Ἰνδοί”· ἡ δὲ ἐκκειμένη
ὁμοίωτο τῇ τοιουτοτρόπῳ· “τῶν ἀνθρώπων οἱ μὲν εἰσιν Ἕλληνες, οἱ δὲ Αἰγύπτιοι, οἱ δὲ Πέρσαι,
οἱ δὲ Ἰνδοί”.

Sextus Empiricus Phil., Adversus mathematicos Book 11, section 20, line 3

περὶ μὲν γὰρ τῆς πρὸς τὴν φύσιν ὑποστάσεως τῶν τε ἀγαθῶν καὶ κακῶν καὶ οὐδε-
τέρων
ικανοὶ πῶς εἰσιν ἡμῖν ἀγῶνες πρὸς τοὺς δογματι-
κούς· κατὰ δὲ τὸ φαινόμενον τούτων ἕκαστον
ἔχομεν ἔθος ἀγαθὸν ἢ κακὸν ἢ ἀδιάφορον προσαγορεύειν, καθά-
περ καὶ ὁ Τίμων ἐν τοῖς
ἰνδαλμοῖς ἔοικε δηλοῦν, ὅταν φῇ· ἡ γὰρ ἐγὼν ἐρέω, ὥς μοι καταφαίνεται εἶναι, μῦθον ἀληθείης
ὀρθὸν ἔχων κανόνα, ὥς ἡ τοῦ θεοῦ τε φύσις καὶ τὰγαθοῦ αἰεὶ, ἐξ ὧν ισότατος γίνεται ἀνδρὶ
βίος.

Sextus Empiricus Phil., Adversus mathematicos Book 11, section 122, line 10

ὁ ἄρα τὸν πλοῦτον μέγιστον ἀγα-
θὸν ἰνδαλλόμενος ἐν τῷ σπεύδειν ἐπὶ τοῦτον γίνεται φι-
λάργυρος.

8.12 Eustathius Philol., Scr. Eccl.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem (4083: 001)
“Eustathii archiepiscopi Thessalonicensis commentarii ad Homeri Iliadem pertinentes,
vols. 1–4”, Ed. van der Valk, M. Leiden: Brill, 1:1971; 2:1976; 3:1979; 4:1987. Volume
1, page 309, line 11

Αὕτη ἡ ἀρχή, ἡ βασιλικὴ δηλαδή, καὶ τὰς θρυλλουμένας ποτὲ μεγάλας ἀρχὰς κατέστησε,
τὴν τῶν Περσῶν, τὴν τῶν Ἰνδῶν, τὴν τῶν Ῥω-
μαίων· καὶ οὐδεμία τις ἀρχὴ ἐπὶ τοσοῦτον ἦλθε
λόγου, ὅσον ἡ βασιλική.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 1, page 319,
line 23

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

ὑπερφρονεῖ γὰρ τοῦ φαυλοτάτου Θερσίτου, καθὰ καὶ τὸν Ἀλεξάνδρου φασὶ κύνα τὰ μὲν μικρὰ θηρία παριέναι, ὁρμᾶν δὲ ἐπὶ τὰ κρείττω, ὅπερ ὁ Θεμιστίος ἐπὶ κυνῶν Ἰνδικῶν οὕτω φράζει· «κύνων Ἰνδὸς λέοντι μὲν ἐπέξεισι καὶ παρδάλει, λύκους δὲ ὑπερορᾷ καὶ ἀλώπεκας».

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 1, page 479, line 25

Καὶ ἡ Βουκεφάλα δὲ τῆς τοιαύτης ἐφόδου ἐστί, πόλις Ἰνδικὴ ἐκείνη, κτισθεῖσα ὑπ' Ἀλεξάνδρου ἐπ' ἀμφοτέραις, φασί, ταῖς ὄχθαις τοῦ ποταμοῦ Ὑδάσπου, διότι διαβάντος Ἀλεξάνδρου ἐκεῖ καὶ μαχομένου ὁ Βουκεφάλας ἵππος ἀπέθανε.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 1, page 481, line 19

Ὅρος δέ τι Ἰνδικὸν Μηρὸς ἐκλήθη, Διονύσω ἀνακείμενον, ὅθεν μηροτραφῆς μεμύθευται, φασίν, ὁ Διόνυσος.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 1, page 518, line 26

ἔστι δὲ καὶ Ἀστερουσία Κρήτης, φασίν, ὅρος καὶ πόλις δὲ περὶ τὸν Ἰνδικὸν Καύκασον.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 1, page 569, line 4

ἐν δὲ τῇ Ἰνδικῇ πολὺς που ὁ ἔβενος.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 1, page 606, line 24

καὶ κύων δὲ εὐγενὴς ὑπηγάγετό τινα εἰς ὅμοιον πάθος, ὅποια τις ἢ τοῦ Τρωϊκοῦ Φοινοδάμαντος, ἣν Κρημισσὸς ὁ ποταμὸς λέγεται ζεῦξαι λέκτροις »ἰνδαλθεῖς κυνί«.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 1, page 750, line 17

καὶ τοῦτό ἐστι τὸ ἐπὶ τριῶν ταχθῆναι τὴν φάλαγγα, ὃ δὴ φησιν Ἀρριανὸς ἐν τῇ Ἰνδικῇ, ἡγουν ἐπὶ τρεῖς ὡς εἰπεῖν στίχους ἢ ὀρδίνους.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 2, page 4, line 14

κινδυνεύων γὰρ ἐκεῖνός που ἐν Ἰνδίᾳ ἐτινάξατο τοῖς ὅπλοις κατὰ τὴν ἱστορίαν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 2, page 261, line 2

Εἰσὶ δὲ καὶ ἕτεραι Νύσσαι κατὰ τὰς ἱστορίας, αἱ μὲν ὄρη, ὡς ἐν Βοιωτίᾳ καὶ Ἀραβίᾳ καὶ Ἰνδικῇ καὶ Λιβύῃ, ἡ δὲ τις καὶ νῆσος ἐν τῇ Καυκασίῳ ὄρει καὶ τῷ ποταμῷ Νείλῳ.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 2, page 561, line 12

Παρὰ μέντοι τῷ Γεωγράφῳ δοκεῖ διαφορά τις εἶναι σίτου καὶ πυροῦ, ἐνθα λέγει γίνεσθαι ἐν Ἰνδίᾳ σῖτον αὐτοφυῆ ὁικότα πυρῷ.

8.12. EUSTATHIUS PHILOL., SCR. ECCL.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 2, page 744, line 12

Ὅμοίως καὶ τὸ «ὄστρακον φέρει τὸν θαυμαζόμενον μαργαρί- την λίθον, ὃ καλοῦσιν Ἴνδοι βέρβερι.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 3, page 42, line 22

ὁποῖοι καὶ οἱ παρ' Ἴνδοις κύνες, οὓς ἄλλοι τε ἱστοροῦσι καὶ ὁ σοφὸς Θεμίστιος, γράψας, ὡς καὶ ἀλλαχοῦ δηλοῦται, κύνα Ἴνδον λέοντι μὲν ἐπεξίέναι καὶ παρδάλει, λύκους δὲ ὑπερορᾶν καὶ ἀλώπεκας.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 3, page 225, line 2

ὥς δὲ καὶ ἑτεροῖον ὄστρακον χαλαζᾷ κατὰ τὸν Κωμικὸν εἰπεῖν χαλάζαις τοιαύταις, καὶ ὅτι βέρβερι παρὰ Ἴνδοις ἐκεῖνο καλεῖται ἀλλαχοῦ δηλοῦται σαφῶς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 3, page 621, line 5

Ὅρα δὲ ὡς Ἥρα μὲν ἀπλῶς οὕτω φιλότητα καὶ ἡμερον ἐξ Ἀφροδίτης ἐζήτησε τὰ κατὰ μῦθον ἰνδάλ- ματα, Ὅμηρος δὲ καὶ τὸ αὐτοῖς ὑποκείμενον ἡρμήνευσε, τὸν κεστὸν ἱμάντα, καὶ πλεῖον δὲ τι ἐδήλωσεν αὐτὸν ἔχειν, ὅπερ ἦν ἡ ὁαριστὺς πάρφασις.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 3, page 727, line 2

Ἰδαῖα δὲ ὄρη τὴν Ἰδὴν φησὶν, ἣν καὶ αὐτὴν πληθύνει τὸ ἐν αὐτοῖς μέγεθος, καθὰ καὶ τὰ Ἡμῶδὰ Ἰνδίας ὄρη καὶ τὰ Ἀρμένια καὶ τὰς Ἀλπεις καὶ ἄλλα.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 3, page 804, line 17

ἐκεῖνο δὲ καὶ ἀστεῖον, εἴπερ ἐνταῦθα μὲν Ἀχιλλέως εἰκασμὸς ἐκφοβεῖ τοὺς Τρῶας, ἐν τοῖς ἐξῆς δὲ τοὺς αὐτοὺς ὁ αὐτὸς εἰκασμὸς τέρπει, ὅτε δηλαδὴ αὐτὰ Ἐκτωρ φορῶν ἰνδάλλεται τῷ Ἀχιλλεῖ.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 40, line 20

μετὰ δὲ κλειτοὺς ἐπικούρους ἔβη μέγα ἰάχων. ἰνδάλλετο δὲ σφισι πᾶσι τεύχεσι λαμπόμε- νος μεγαθύμου Πηλείωνος», ἡγοῦν εἰκασμὸν ἑαυτοῦ ἔπεμπε τοῖς βλέπουσιν καὶ οὐκ ἐμφανῶς ἐγινώσκετο Ἐκτωρ εἶναι, οἷα μὴ τὰ ἑαυτοῦ φορῶν, ἀλλὰ τοῖς Ἀχιλλέως ὅπλοις λαμπόμενος.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 40, line 23

ἑτέροι δὲ φασιν, ὅτι μεγαθύμῳ Πηλείωνι ἰνδάλλετο, ἀπὸ κοινοῦ τὴν τοιαύτην λαβόντες δοτικὴν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 47, line 19

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

(v. 262) Ἐπάγει γὰρ «Τρῶες δὲ προὔτυψαν ἀολλέες, ἦρχε δ' ἄρ' Ἑκτωρ», ποθῶν τε, ὡς εἰκός, ἀντιστῆναι τῷ Αἴαντι, καὶ ἵνα μὴδὲ τὸ πρὸς Ἀχιλλέα ἵνδαλμα αἰσχύνῃ ἀχρειώσας, εἰ μὴ προμάχοιτο.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 110, line 6

(v. 698 s.) Ὅτι Ἀντίλοχος θεῶν εἰς Ἀχιλλέα τὰ οἰκεῖα τεύχεα ἔδωκεν ἀμύμονι Λαοδόκῳ ἐταίρῳ, οὐ μόνον ἵνα ἐλαφρῶς ἔχῃ θεῖν, ὡς καὶ Ὀδυσσεὺς ἐν τῇ βῆτα ῥαψῳδίᾳ τὴν χλαῖναν ἀποβαλὼν, ἀλλὰ καὶ ἵνα ἵνδαλλόμενος δοκῇ παραμένειν τῷ πολέμῳ, καθά φασιν οἱ παλαιοί.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 111, line 13

πρὸς μέντοι ταῖς ναυσὶ πρὸ τῆς τοιαύτης ὀπλοποιίας ἐπιφανεῖς μόνον καὶ οὐ πέμψας ἵνδαλμα ἑαυτοῦ ὡς ἐπὶ Πατρόκλου γέγονεν, ἀλλ' ἑαυτὸν ἐκφήνας, τρέφεται τοὺς Τρῶας εἰς φυγὴν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 216, line 5

Σημείωσαι δὲ καὶ ὅτι τοσαῦτα ποιήσας Ἥφαιστος δαῖδαλα οὐδαμοῦ ναυτιλίας ἵνδαλμα θέμενος ἔτευξεν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 468, line 12

(v. 107 s.) Σημείωσαι δὲ καὶ ὅτι ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, καθὰ καὶ τινι σμικροτάτῳ ἐνόπτρῳ, ἵνδαλμά τι ὅλου ἐγκωμίου ἐμφαίνεται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 484, line 4

Σημείωσαι δὲ ὅτι ἔδει μὲν ἐν τοιούτῳ τόπῳ συγκρίσεως τὸν ποιητὴν μὴ Ἀχελῷου μνησθῆναι, ἀλλὰ τίνος ἑτέρου τῶν μειζόνων ἢ μεγίστων, ὅποιοι πολλοὶ ποταμοί, ὁ Ἰνδός, ὁ Ἰστρος, ὁ Νεῖλος, ὃν Αἰγυπτὸν ὁ ποιητὴς ἐν Ὀδυσσεΐᾳ καλεῖ.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 764, line 8

(v. 459 – 64) «Ἄλλοι μοι δοκέουσι παροίτεροι ἔμμεναι ἵπποι, ἄλλος δ' ἡνίοχος ἵνδαλλεται· αἱ δέ που αὐτοῦ ἐβλάβεν ἐν πεδίῳ», ἤγουν ἐβλάβησαν, «αἱ κεῖσε φέρτεραι ἦσαν· ἦτοι γὰρ τάς», ἤγουν ταύτας, «πρῶτα ἴδον περὶ τέρμα βαλούσας, νῦν δ' οὐ πῇ δύναμαι ἰδεῖν», καὶ ἐξῆς, ὡς προγέγραπται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 765, line 9

(v. 459 s.) Ὅρα δὲ καὶ ὅτι τὸ δοκεῖν ταυτόν εἶναι δοξάζει Ὅμηρος τῷ ἵνδαλλεσθαι ἐν τῷ «ἄλλοι μοι δοκέουσι», καὶ «ἄλλος ἵνδαλλεται».

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 765, line 11

8.12. EUSTATHIUS PHILOL., SCR. ECCL.

λέγεται δὲ ἐπὶ εἰκασμοῦ καὶ ὁμοιώσεως καὶ δοκίσεως τὸ ἰνδάλλεσθαι, ἀφ' οὗ καὶ ἐπὶ εἰδώλων τὸ ἱνδαλμα λέγεται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 765, line 12

ἀντίκειται δὲ πρὸς τὸ ἰνδάλλεσθαι καὶ τὸ δοκεῖν τὸ εὖ διαγινώσκειν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 765, line 13

γίνεται δὲ τὸ ἰνδάλλω ἐκ τοῦ εἶδω, τὸ ὁμοιω, τραπέντος τοῦ <ι> εἰς <ν> ὡς ἐπὶ τοῦ αἰεὶ αἰέν, καὶ αὐτίκα τετραμμένον καὶ τοῦ <ε> εἰς <ι>, ὡς ἐπὶ τοῦ ἔχω ἴσχω καὶ τῶν ὁμοίων γίνεται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Iliadem Volume 4, page 766, line 6

(v. 459 s. et v. 467) Οὐ μόνον γοῦν φησιν, Ἴδομενεύς, ὡς «ἄλλοι μοι δοκέουσι παροίτεροι ἔμμεναι ἵπποι», καὶ «ἄλλος ἡνίοχος ἰνδάλλεται», ἀλλὰ καὶ ὅτι ἐκπεσέειν οἶω τὸν Εὐμήλον καὶ ἔξῃς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam (4083: 003) "Eustathii archiepiscopi Thessalonicensis commentarii ad Homeri Odysseam, 2 vols. in 1", Ed. Stallbaum, G. Leipzig: Weigel, 1:1825; 2:1826, Repr. 1970. Volume 1, page 25, line 41

καθὰ καὶ κύων φασὶν Ἴνδὸς λέοντι ἔπε- ξιών καὶ παρδάλει, λύκους ὑπερορᾷ καὶ ἀλώπεκας.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 124, line 8

ὥς τέ μοι ἀθανάτοις ἰνδάλ- λεται εἰσοράασθαι.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 124, line 10

Καὶ ὅρα τὸ ἰνδάλλεται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 124, line 11

οὐ γὰρ θεὸς ἀντικρυς ὁ ἐπὶ μακρὸν βιοῦς, ἀλλὰ θεοῦ ἱνδαλμα.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 124, line 12

μακρόβιος δὲ ὁ Νέστωρ, ὥστε καὶ ἱνδαλμά τι ἔχει πρὸς θεόν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 149, line 35

καὶ ὅτι Μενέλαος πρὸς Αἰθίοπας ἦλθε κατὰ μὲν τινας, περιπλεύσας τὸν Ὠκεανὸν διὰ τῶν Γαδεύρων μέχρι τῆς Ἰνδικῆς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 150, line 14

τινὲς δὲ Ἑρεμ- βούς, τοὺς Ἰνδοὺς νοοῦσι παρὰ τὸ ἔρεβος.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 151, line 43

καὶ τὰ μὲν Ἰνδικὰ, σιγάσθω.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 251, line 19

ὁ ἐστὶ μελαίνας κατὰ τὸν ὑάκινθον τὸ ἄνθος, ὅποίας καὶ τοῖς Ἰνδοῖς ὁ περιηγητὴς χρώζει τὰς κόμας.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 437, line 18

ἦν δὲ αὕτη παρ' Ἰνδοῖς πόσις ἐν ποτηρίοις μεγάλοις, ἐξ ᾧν ἐκεῖνοι καθεύδειν μέλλοντες ἔπινον, κύπτοντες ἐπὶ τὰς φιάλας ὡς λέγεται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 437, line 20

φασὶ δὲ καὶ ὑπὲρ φιλότητος τὸ ποτὸν τοῦτο εὐρῆσθαι τοῖς Ἰνδοῖς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 1, page 437, line 22

Καὶ ὅρα τὸ περιώνυμον τοῦ Ταντάλου εἰ καὶ Ἰνδοῖς ἔγνωσται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 2, page 148, line 7

Σημείωσαι δὲ, ὡς εἰ καὶ ἐπίσημα κυνῶν παραδέδονται γένη, Ἰνδοί, Ὑρκανοί, Μολοσσοί, πρὸς δὲ ἄλλοις καὶ Λακωνικοί, ὡς Πίνδαρος οἶδεν, εἰπὼν Λάκαιναν ἐπὶ θηρσὶ κύνα τρέφειν πυκινώτατον ἔρπετον, ὅμως ἡ φύσις καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις ἅπασιν τόποις διασπείρει κύνας ἀγαθοὺς, ὅποῖός τις καὶ ὁ Ἄργος.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 2, page 163, line 1

ἄριστα οὖν τοῦτό γε φρονοῦσιν Ἰνδοί· παρ' οἷς, ὡς ἱστορεῖ Κτησίας, οὐκ ἔστι τῷ βασιλεῖ μεθυσθῆναι.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 2, page 175, line 27

ἐκεῖνο μὲν γὰρ μέλαν ἐπιφαίνεται, καθὰ δηλοῖ καὶ ὁ εἰπὼν αὐτὸν Ἰνδὸν θῆρα κελαινόρξειον.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 2, page 199, line 46

ἀκκισάμενος οὖν πρῶτον καὶ εἰπὼν, ὡς ἀργαλέον τόσον χρόνον ἀμφὶς ἐόντα εἰπέμεν, ἥδη γάρ οἱ εἰκοστὸν ἔτος ἐστὶν ἐκ τότε, εἴτα ὑποσχόμενος εἰπεῖν ἐν τῷ, (Vers. 224.) ἀλλὰ καὶ ὡς ἐρέω ὡς μοι ἰνδάλλεται ἦτορ, τουτέστι φαντάζεται ἀνειδωλοποιεῖται, ἃ περ εἴποι ἂν ὁ δυσχερῶς μεμνημένος τινὸς, ἐπιφέρει· χλαῖναν πορφυρέην οὐλῃν ἔχε διὸς Ὀδυσσεὺς, διπλῇν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 2, page 240, line 41

8.12. EUSTATHIUS PHILOL., SCR. ECCL.

ἐδήλου δὲ ταῦτα τῷ μαντικοῖς ὄμμασι βλέ- ποντι χύσεις αἱμάτων καὶ γόους καὶ δάκρυα, ὧν πειράσσονται οἱ κακοί· ὥς που καὶ ἡ παρὰ Λυκόφρονι Κασάνδρα οἰμωγὴν αὐτῇ λέγει ἰνδάλλῃσθαι μαντευομένη τὰ ὕστερον τῶν Τρώων κακά.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarii ad Homeri Odysseam Volume 2, page 333, line 34

sqq.) Ὅτι βραχύτατόν τι τῶν κατὰ τὴν Ἰλιάδα ἰνδαλμα σεμνῶς ἐμφαίνων ἐνταῦθα ὁ ποιητὴς πλάττει τὸν Ὀδυσσεά οὕτω σφοδρὸν ἐμπεσόντα τοῖς προμάχοις ἐπικουρούσης Ἀθηνᾶς, ὥς μὴ ἂν ἄλλως ἐκείνον παύσασθαι, εἰ μὴ Διὸς τὴν Ἀθηνᾶν ἐκφοβήσαντος ἐπεσχέθῃ αὐτὸς ὑπ' ἐκείνης τοῦ πολεμεῖν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., De capta Thessalonica (4083: 004) “Eustazio di Tessalonica. La espugnazione di Tessalonica”, Ed. Kyriakidis, S. Palermo: Istituto Siciliano di Studi Bizantini e Neoellenici, 1961; Testi e Monumenti. Istituto Siciliano di Studi Bizantini e Neoellenici. Testi 5. Page 64, line 9

Καὶ ἦσαν οὕτως αὐτῷ οἱ ἱππότες οἷοι ἀλαζονεύεσθαι κατὰ τὴν ἐν αὐτοῖς φύ- σιν τριηκοσίων ἀνδρῶν ἕκαστος ἅντα κατὰ πόλεμον στήσεσθαι, οὐδὲν ἄπειο- κότες οὐδ' αὐτοὶ τοῦ Κομνηνοῦ, ὃς μόνος ἐδόξαζε τὴν τοσαύτην βασιλείαν ταχὺ καταλήψεσθαι, βραχὺ κατ' αὐτῆς παρα- καλπάσας τὸν ἵππον, καὶ κατα- κτήσεσθαι αὐτὴν χειρῶσάμενος ὥσεί καὶ στρουθοῦ φωλεόν, λόγῳ μὲν τῷ Σικελῷ, ὃν καὶ γνησίως αὐθέντην ἐπεγράφετο, ψυχῇ δὲ ἑαυτῷ. Ἰνδάλλετο γάρ, οὐκ οἶδαμεν ὅπως, καθὰ καὶ προεξεθέμεθα, ἅμα τε ἐκφαίνεσθαι που καὶ πάντας εὐθύς τοὺς Ῥωμαίων ὀφθαλμοὺς εἰς αὐτὸν ὥς ἥλιον ἐπιστρέφεσθαι καὶ αὐτοῦ μόνου γίνεσθαι.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., De capta Thessalonica Page 140, line 3

Δοτέον μοι τοὺς αὐτοὺς καλέσαι καὶ χρυσωρύχους τὴν ἐπιβολὴν κατὰ γε τοὺς Ἰνδό- θεν μύρμηκας· τοιαύτης γὰρ ὕλης ἔρωτι παρηνώχλουν τῇ γῇ· τοὺς δ' αὐτοὺς καὶ τυμβωρύχους μυριαχοῦ.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem (4083: 006) “Geographi Graeci minores, vol. 2”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1861, Repr. 1965. Section 28, line 9

Καὶ ὁ μὲν πρὸς ξέφυρον ὠκεανὸς Ἀτλας ἐσπέριος λέγεται, ἥγουν ἐσπέριον πέλαγος καὶ Ἀτλαν- τικόν· ὁ δὲ πρὸς βορρᾶν πεπηγὼς λέγεται πόντος καὶ Κρόνιος καὶ νεκρὸς, ὥς μετ' ὀλίγα ἐξηθήσεται· ὁ δὲ τῆς ἀνατολῆς ἡῶς καλεῖται καὶ Ἰνδικός, ὁ δὲ πρὸς νότον Ἐρυθραῖός τε ὀνομάζεται καὶ Αἰθιοπίας.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 28, line 12

Ση- μειωτέον δὲ ὅτι ἐν οἷς μέρος τι λέγει τοῦ ὠκεανοῦ, πόντον Κρόνιον καὶ αὖθις Ἰνδικὸν κύμα θαλάσσης, καὶ ἐν τῷ «οἱ εἰσὶν ἀπὸ νοτίας ἀλός», καὶ «σκιδνάμενος ἐκ Κρονίας ἀλός», οὐ ποταμὸν νοεῖ τὸν ὠκεανὸν κατὰ τοὺς πολλοὺς τῶν ποιητῶν· τὸ γὰρ πόντος καὶ τὸ κύμα θαλάσσης καὶ τὸ ἄλς οὐδὲν προσήκουσι ποτα- μοῖς.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 36, line 3

Ὅτι τὴν ἀνατολὴν οὕτω περιφράζει, ὅπου πρῶτιστα φαίνεται ἀνθρώποις ἥλιος, ἥτοι ὅπου ἐστὶν ἡ ἀνατολή, ἐνθα καὶ τὸν ἥλιον καὶ Ἰνδικὸν εἶναι φη- σιν ὠκεανόν· ἥλιον μὲν λεγόμενον, διὰ τὸ ἐκεῖθεν ἀνα- τέλλοντος ἡλίου τὴν ἡμέραν γίνεσθαι, ἡ καὶ, ὡς ἐν ἀνθ' ἐνὸς εἰπεῖν, ἥλιον ἀντὶ τοῦ ἀνατολικόν, ἡὼς γὰρ πολλάκις καὶ ἡ ἀνατολή· Ἰνδικὸν δὲ διὰ τοὺς παροι- κοῦντας Ἰνδούς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 41, line 3

Ὅτι εἰπὼν τέσσαρα τὰ πελάγη τοῦ ὠκεανοῦ, τὸ ἐσπέριον Ἀτλαντικόν, καὶ τὸ ἀρκτῶον Κρόνιον, καὶ τὸ κατὰ τὴν ἑω Ἰνδικόν, καὶ τὸ νότιον Αἰθιοπικόν, καὶ οὕτω τοῖς τοῦ κόσμου τέσσαρσι κέντροις ἐπέξεσθαι, ἐπάγει συμπληρωματικῶς ἅμα καὶ ἐπιφωνηματικῶς, ὅτι «Οὕτως ὠκεανὸς περιδέδρμε γαῖαν ἅπασαν»· ὡς ἤδη δείξας ὅτι πᾶσαν τὴν γῆν στεφανοῖ, ὡς προεῖρηται· εἰ καὶ τινες τῶν παλαιῶν ἀντιλέγειν ἐβούλοντο, καθὰ καὶ Ἡρόδοτος, ὃς οὐκ ἀποδέχεται τοὺς γράφοντας τὸν ὠκεανὸν ῥέειν πέριξ τῆς γῆς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 142, line 53

Ἔστι δὲ καὶ Βόσπορος Ἰνδικός.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 239, line 12

Ἐκλήθη δὲ ποτε κατὰ τὴν ἰστο- ρίαν ἡ τοιαύτη χώρα καὶ Ἀερία καὶ Ποταμία καὶ Αἰθιοπία διὰ τοὺς ἐκεῖ Αἰθίοπας, περὶ ὧν πολλοὶ τῶν παλαιῶν ἰστοροῦσι· ναὶ μὴν καὶ Αετία ἐκ τίνος Ἰνδοῦ Αετοῦ καλουμένου, καὶ Ὠγυγία δὲ καὶ Μελάμβωλος καὶ Ἡφαιστία.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 323, line 6

Διὸ καὶ Ἡρόδοτος λέγει τοὺς Θρᾷκας ἐθνῶν μέγιστον μετὰ τοὺς Ἰνδούς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 566, line 33

Εἶτα συγκρίνων ῥητορικῶς ταῦτα τὰ ἱερὰ πρὸς ἄλλα ὁμοιά φησιν, οὐχ οὕτως οἱ Ἀφίνθιοι Θρᾷκες, οὐδ' οὕτως οἱ Ἰνδοὶ μελανδίνην ἀνὰ ποταμὸν Γάγγην κῶ- μον, ἥγουν καμαστικὴν ἐορτὴν ἄγουσι τῷ Διονύσῳ, ὡς αἱ νησιώτιδες αὗται γυναῖκες ἀνεύαζουσι, τουτέστιν ὑμνοῦσι τὸν Εὐεῖον Διόνυσον, εὐοῖ εὐᾶν ἀνακράζουσαι, ταῦτα δὲ τὰ ἐπὶ Διονύσῳ ἐνθουσιαστικὰ ἐπιφω- νήματα.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 566, line 40

Λόγος γὰρ τὰς τῶν Ἀμιντῶν γυναῖκας δι' ὅλης νυκτὸς ἐξαλλομένας χορεύειν, ὥστε ἐν τούτῳ καὶ τοὺς Θρᾷ- κας εἰκεῖν αὐταῖς καὶ τοὺς Ἰνδούς, καίτοι καὶ αὐτοὺς κατόχους ὄντας τῷ Διονύσῳ, καὶ πάνυ ὀργιάζοντας αὐτῷ.

8.12. EUSTATHIUS PHILOL., SCR. ECCL.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 568, line 5

Ὅτι τὸ μέγεθος τῶν Βρεττανίδων νήσων, ὥς ἄλλοι, ὡς προεγρέθη, διὰ τοῦ π Πρεττανίδας καλοῦσιν, οὐ μόνον ὁ Διονύσιος ἐνέφηνεν, ὡς ἀνωτέρω ἐγρέθη, ἀλλὰ δηλοῖ καὶ ὁ Πτολεμαῖος ἐν τῇ γεωγραφικῇ ὑψηλῇ γήσει, λέγων ὅτι τῶν νήσων πρωτεύει ἡ Ἰνδικὴ Τα-προβάνη μεγέθει καὶ δόξῃ, μεθ' ἣν ἡ Βρεττανικὴ, τρίτη ἡ Χρυσὴ χερρόνησος, τετάρτη ἑτέρα Βρεττανῶν ἡ Ἰουερνία, πέμπτη Πελοπόννησος, Σικελία μετ' αὐτὴν ἕκτη, ἐβδόμη Σαρδῶν, ὀγδόη Κύρνος, Κρήτη ἐνάτη· ἐπὶ δὲ ταύταις ἡ Κύπρος οὕσα δεκάτη γίνεται τοῦ καταλόγου κορωνίς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 606, line 11

Οἱ δὲ κατὰ ἐπίθετον ἐθνικὸν Ἐρυθραῖον βα-σιλέα τὸν Δηριάδην νοοῦσιν αὐτόθι τεθαμμένον, οὗ καὶ πρὸ τούτων ἐμνήσθημεν, ὃς Ἐρυθραῖος μὲν ἦν τῷ γένει, χρόνῳ δὲ ὕστερον εἰς Ἰνδοὺς ἐλθὼν ἀντέστη λαμπρῶς τῷ τοῦ Διὸς Διόνυσῳ στρατευσαμένῳ κατὰ τῶν Ἰνδῶν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 623, line 4

Ὡς περ γὰρ ἐν Γαδείροις περὶ τὸ ἐσπέριον ὁξὺ τοῦ κώνου Ἡράκλειαι ἐστᾶσι στῆλαι, οὕτω καὶ ἐν Ἰνδῇ πύματον περὶ ῥέον ὠκεανοῦ Ἰνδῶν ὑστατίοις ἐν οὖρεσι στῆλαι Θηβαίου Διόνυσου, ἐλθόν-τος μέχρι καὶ ἐκεῖ, ὅτε καὶ ὑφ' αὐτῷ τὴν χώραν ἐποίησεν, ὡς καὶ ἐν τῷ τέλει λεχθήσεται τῆς περι-γῆσεως.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 625, line 1

Ὅτι ἐν οἷς λέγει ὡς ὁ Γάγγης ὁ Ἰνδικὸς πο-ταμὸς λευκὸν ὕδωρ Νυσσαῖον ἐπὶ πλαταμῶνα κυλίνει, οὐ κυρίως ἔοικε χρῆσθαι τῇ λέξει, ἀλλ' ἀπλῶς ἐπὶ γῆς πλάτους λέγει τὸν πλαταμῶνα.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 625, line 12

Φασὶ δὲ τοὺς περὶ τὴν Νυσσαῖαν Ἰνδικὴν ταύτην ὁδὸν ὄντας καὶ τοὺς περὶ τὸ Νυσσαῖον ὄρος τοῦτο οἰκοῦντας ἀνθρωποφάγους εἶναι.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 638, line 2

Ὅτι ὁ Ταῦρος τὸ ὄρος ἀρξάμενος ἐκ τῆς Παμ-φυλίας, ὡς οὗτος δοξάζει, ἄχρι καὶ Ἰνδῶν παρῆκει, διὰ πάσης ἡκων Ἀσίας· ἄλλοτε μὲν, φησὶ, λοξὸς καὶ ἀγκύλος, καὶ, ὡς ἐρεῖ κατωτέρω, πολλὰς ἔχων στρο-φάλιγγας, ἄλλοτε δὲ ὀρθότερος ἵχχυσιν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 647, line 7

Ὁ δὲ Γεωγράφος οὕτω περὶ τοῦ Ταύρου φησὶ· «διέζωκεν ὁ Ταῦρος μέσσην τὴν Ἀσίαν, ἀπὸ ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἑω τετραμμένος, οὗ τελευταῖον τὸ Ἰμαῖον τῇ Ἰνδικῇ θαλάσῃ συνάπτον».

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 700, line 7

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Οὗτοι οἱ Καμαρίται τὸν Βάκχον Ἰνδῶν ἐκ πολέμου, φησὶ, δεξάμενοι ἐξένισαν, καὶ ταῖς Λήναις, ὃ ἔστι ταῖς Βάκχαις, συνεχόρευσαν, τὰ ἐκείνων φορήματα, ζώματα δηλαδὴ καὶ νεβρίδας, ἐπὶ στήθεσι βαλόντες, εὐοῖ Βάκχε λέγοντες.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 747, line 5

Ὅρος δὲ τὸ Ἡμῶδον Ἰνδικὸν πρὸς ταῖς τοῦ Διονύσου στήλαις, ὅπερ τινὲς προπαροξυτόνως Ἡμῶδον λέγουσι, καθὰ καὶ τὸ Ἰμάϊον, ὅπερ ἐστὶ τμήμα τοῦ Ταύρου.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 775, line 27

Καὶ ὁ Γάγγης δὲ πεδίον τι ἐν Ἰνδῇ προσέχωσεν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 875, line 21

Ἰστέον δὲ ὅτι ἔστι καὶ ἔθνος μαχιμώτατον Ἰνδικὸν οἱ Μαλλοὶ πληθυντι- κῶς, ἐνθα παρὰ βραχὺ ἐκινδύνευσεν ἂν εἰς ζωὴν ὁ μέ- γας Ἀλέξανδρος.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 936, line 4

Σκοπητέον δὲ εἴτε ὁ ἐνταῦθα εὐώδης κάλαμος ὁ αὐτός ἐστι ταῖς παρὰ τῷ Γεωγράφῳ Ἰνδικαῖς καλάμοις, ἃς μελιτοποιεῖν ἐκεῖνός φησιν, εἴτε καὶ διαφέρει μάλιστα ἐκείνων οὗτος ὡς εὐώδης μὴ τοιούτων.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 936, line 8

Ἰστέον δὲ ὅτι κατὰ τὴν πα- λαιὰν ἱστορίαν, Ἀλέξανδρος διανοεῖτο μετὰ τὴν ἐξ Ἰνδῶν ἐπά- νοδον βασιλείον ἑαυτοῦ τὴν Ἀραβίαν ποιῆ- σαι, καὶ ὅτι εἰς καὶ Σκηνῖται Ἀραβες περὶ τὰ πέραν Εὐφράτου ἕως Κοίλης Συρίας.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 988, line 15

Ὅτι δευτερεύουσι μετὰ τοὺς Ἰνδικούς ποταμούς Εὐφράτης καὶ Τίγρις, καὶ ὅτι μείζων Εὐφράτης Τίγρις ῥέοντος ἀπὸ Νιφάτα ὄρους, καὶ πλείω διέξεισι χώραν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1039, line 40

Ἀφ' οὗ μέντοι εἰς τὴν Ἀσίαν διέβη, καὶ τετράπλευρόν τι χωρίον περιέγραψε πλευραῖς τῷ τε Ταύρῳ καὶ τῷ Νείλῳ καὶ τῷ Ἰνδικῷ ὠκεανῷ καὶ τῷ νοτίῳ, τότε δὴ πλατύτερον τοῖς ἱστορουμένοις ἐπ- εξέρχεται, ὡς δῆλον ἐκ τε τῶν εἰς Ἀραβίαν λεχθέντων καὶ τῶν περὶ Μηδείας ἱστορηθέντων καὶ τῶν νῦν δὲ ἐκτεθέντων.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1039, line 46

Ἐν τοῖς ἐξῆς δὲ καὶ ἡ Ἰνδία ἱκανὴν αὐτῷ παρέξει λόγου τρι- βήν.

8.12. EUSTATHIUS PHILOL., SCR. ECCL.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1069, line 4

Ἐν δὲ τοῖς ἐξῆς καὶ Ἰνδικὸν ἔθνος οἱ Σάβαι εὐρίσκονται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1073, line 2

Ὅτι Κύρος ποταμὸς Περσικὸς, ἔτι δὲ καὶ Χοάσπης Ἰνδὸν μὲν ὕδωρ ἔλκων, ὡς ἐκ τοῦ Ἰνδοῦ σχιζόμενος ποταμοῦ, παραρρέων δὲ τὰ Σοῦσα, ἐξ οὗ καὶ μόνου ἔπινεν ὁ τῶν Περσῶν βασιλεύς· καὶ ἦν βασιλι- κὸν ὕδωρ τὸ Χοάσπειον.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1088, line 1

Ὅτι πρὸς αὐγὰς τῆς Γεδρωσίας ὁ Ἰνδὸς μέ- γιστος ποταμὸς, ὃν Σκύθαι νότιοι παροικοῦσιν, οἱ καὶ Ἰνδοσκύθαι συνθέτως λεγόμενοι.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1088, line 5

Ρέειν δὲ φασὶ τὸν Ἰνδὸν, καθὰ καὶ τὸν Γάγγην, ἀρξάμενον ἀπὸ τινος Καυκάσου ὄρους ἀρκτικοῦ ἀνατο- λικοῦ, λαβρότατον ῥέον ὁξὺν ἐπὶ νότον ὀρθὸν ἐλαύνοντα, κατεναντίον τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης, ἡγουν τοῦ Ἐρυ- θραίου καὶ Αἰθιοπικοῦ ὠκεανοῦ, περὶ τὰ ἐῶα τοῦ Περ- σικοῦ κόλπου, καὶ σχιζόμενον εἰς δύο στόματα διέχοντα ἀλλήλων στάδια ἑκατὸν καὶ ὡ', ὡς καὶ Ἀρριανὸς ἱστορεῖ, ἃ δὲ στόματα ποιοῦσι τὴν Παταληνὴν οἶα νῆσον ἀπο- λαμβανομένην, ἣν καὶ ἐπαναλαμβάνει ὡς λόγου ἄξιαν,

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1088, line 18

Φησὶ γοῦν Ἀρριανός· «δίστομός ἐστιν ὁ Ἰνδὸς, καὶ Δέλτα ποιεῖ καὶ οὗτος ἐν τῇ τῶν Ἰνδῶν γῇ, τῇ Αἰγυπτίῳ Δέλτα παραπλήσιον.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1088, line 24

Τοῦ δὲ μεγέθους καὶ τῆς ὀξύτητος τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ δεῖγμα καὶ τοῦτό φασιν οἱ παλαιοί, ὅτι ἐκλιπὼν τὸ οἰκεῖον ῥεῖθρόν ποτε καὶ εἰς πεδία τινὰ κοῖλα ἐκτραπόμενος καὶ οἶον καταρ- ράξας ἠρήμωσε χώραν πλειόνων ἢ χιλίων πόλεων σὺν ταῖς κώμαις.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1095, line 1

Ὅτι πρὸς δύσιν τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ Ὠρεῖται, διὰ διχρόνου γραφόμενοι, πρὸς ἀντιδιαστολὴν τῶν ἐν τῷ Ὠρεῶ τῆς Εὐβοίας Ὠρειτῶν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1095, line 9

Μέμνηται γὰρ τοιοῦτου ἔθνους Ἰνδικοῦ ὁ Γεωγράφος, λέγων· Ἄρβιες ὁμώνυμοι ποταμῶ Ἄρβει, ὀρίζοντι αὐτοὺς ἀπὸ τῶν Ὠριτῶν.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1096, line 5

Τοὺς δὲ Ἀρα- χώτας τινὲς Ἀραχωτοὺς φασιν ὀξύτωνως, λέγοντες ὅτι μετὰ τὸν Ἰνδὸν οἱ Παροπαμισάδαι, εἴτα πρὸς νότον Ἀραχωτοί· πρὸς ἐσπέραν δὲ τοῖς Παροπαμισάδαις πα- ρά- κεινται Ἄριοι.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1097, line 2

Ὅτι βούλονται τινες Παρπάνισον προπαρο- ξυτόνως λέγεσθαι ὅρος Ἰνδικὸν, οὐ μὴν Παρ- νησὸν, ὥς πολλὰ τῶν ἀντιγράφων ἔχουσι.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1097, line 9

Καὶ ἡ χώρα αὐτῶν Ἀριανὴ κατὰ τὸν Γεωγράφον, λέγοντα ὅτι μετὰ τὴν Ἰνδικὴν ἡ Ἀ- ριανὴ μερίς, ἔνθα καὶ οἱ Ἀρβιες, εἴτα Ὠρίται, οἷς ἐφέξῃς Ἰχθυοφάγοι.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 1

Ὅτι ἡ τῶν Ἰνδῶν γῆ, ἔθνους μεγίστου πάντων καὶ εὐδαιμονεστάτου, πασῶν ἐσχάτη παρὰ τοῖς τοῦ ὠκεανοῦ κεῖται χεῖλεσιν, ἣν ὁ ἥλιος πρώταις ἐπιφλέγει ἀκτίσιν, ἐπὶ τὴν γῆν ἀνερχόμενος, τουτέστιν ἀνίσχων, ἀνατέλλων· διὸ καὶ θερμώτατος παρ' αὐτοῖς ὁ ἥλιος τὸ ἐωθινὸν, ὥς φασιν οἱ παλαιοί, καὶ πολλῶ μᾶλλον ἢ ἐν μεσημβρίᾳ κατὰ τὴν Ἑλλάδα.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 10

Ὁ δὲ Διόνυσιος πολὺν ἔπαινον κατατείνων τῆς Ἰνδικῆς φησι, διὸ τὸν τε χρὸα οἱ ἐκεῖ κυανέουσι θε- σπέσιον λιπώοντες, τρίχας τε πιότατας φοροῦσιν ὑακίνθῳ ὁμοίας, ὅπερ ὁ Ποιητὴς πού φησιν, ὑακινθίνῳ ἄνθει ὁμοίας, ἥτοι μελαίνας.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 14

Μελανότριχες δὲ καὶ τῶν Ἰνδῶν μάλιστα οἱ μεσημβρινοί, καὶ τὴν χρὸαν ὅμοιοι τοῖς Αἰθίοφι, διὰ τὸ ἐπιλείπειν τὴν ἐπιπολῆς ἰκμάδα, ἐπικαίοντος τοῦ ἡλίου, ὅθεν οὐδὲ οὐλοτριχοῦσιν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 23

Καὶ οἱ μὲν, φησί, χρυσοῦ μεταλλεύουσι γενέθλην, τὴν χρυσῖτιν ψάμμον μακέλλαις λαχαί- νοντες, ὃ ἔστιν ἀνοίγοντες, σκάπτοντες· ἐξ οὗ καὶ τὸ λάχανον· οἱ δὲ ἰστοὺς ὑφαίνουσι λινεργέας, οἱ δὲ ἐλεφάντων λευκοὺς πρισθέντας ἀποξύνουσιν ὀδόντας, οὓς ἕτεροι ἐλεφάντων κέρατά φασιν, ἄλλοι δὲ, φησί, τῶν Ἰνδῶν ἐπὶ ταῖς τῶν χειμάρρων προβολαῖς ἢ προμολαῖς, ἥγουν ἐκρύσεσιν, ἢ βηρύλλου γλαυκὴν λίθον ἰχνεύουσιν ἢ ἀδάμαντα μαρμαίροντα ἢ χλωρὰ διαυγάζουσιν ἰασπιν ἢ γλαυκὴν λίθον καθαροῦ τοπάξου καὶ γλυκερὰν ἀμέθυσον ὑπη- ρέμα πορφύρουσαν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 36

8.12. EUSTATHIUS PHILOL., SCR. ECCL.

Οὕτω τιμίους λίθοις κα- ταστρώσας τὴν Ἰνδικὴν ὁ Διονύσιος ἐπάγει ἐπιφωνη- ματικῶς κατὰ συντομίαν, ὅτι παντοῖον ὄλβον αὖξει, ποταμοῖς οὔσα κατάρρυτος ἔνθα καὶ ἔνθα.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 42

Ναὶ μὴν, φησὶ, καὶ οἱ λειμῶνες ἐκεῖ αἰεὶ κομῶσι πετάλοις· ἄλλοθι μὲν γὰρ κέγχρος αὖξε- ται, ἄλλοθι δὲ ὕλαι θάλλουσιν Ἐρυ- θραίου καλάμου, τοῦ ἀρωματικοῦ δηλαδή, Ἐρυθραίου λεγομένου διὰ τὸ τὴν Ἰνδίαν ἕως καὶ εἰς τὸν Ἐρυθραῖον παρῆκειν ὠκεανόν· ὅπερ δῆλόν ἐστι καὶ ἐκ τοῦ τὴν Γαγγίτιν χώραν κατὰ τὸν Διονύσιον περὶ τὰ τέρματα ἔλκεσθαι τῆς Κωλιάδος γῆς, ἥτοι τῆς Ταπροβάνης, ὅπου τὰ μέγιστα κήτη, ἅπερ αὐτὸς Ἐρυθραίου πόντου εἶπε βοτά.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 48

Ἔτεροι δὲ καὶ πολυφάρμακον τὴν Ἰνδικὴν ἱστοροῦσι καὶ πολύρριζον καὶ πολυχρώματον καὶ δίκαρπον καὶ διφόρον, καὶ τοὺς ἐκεῖσε ἄνδρας εὐμεγέθεις καὶ πενταπῆχεις τοὺς πολλοὺς ἢ ὀλίγους ἀποδέοντας· ὧν καὶ ὁ βασιλεὺς Πῶρος ὑπὲρ πεντάπηχυν ἱσθόρηται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 52

Καὶ φιλωδοὶ δὲ οἱ Ἰνδοὶ λέ- γονται, καὶ φιλορχήμονες ἀπὸ Διονύσου.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 54

Ἐλεύθεροι δὲ πάντες Ἰνδῶν, καὶ οὔτις δοῦλος Ἰνδός.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 57

Φασὶ δὲ καὶ Σηρικὰ παρ' Ἰνδοῖς γίνεσθαι ἐκ τινων φλοιῶν ξαινομένης βύσσου.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 62

Λέγεται δὲ καὶ ὅτι ἰχθυοφαγοῦσι πολλοὶ τῶν Ἰνδῶν ὠμοὺς ἰχθύας σιτούμενοι, καὶ ὅτι τὰ ἑῷα τῆς Ἰνδίας ἐρημία ἐστὶ διὰ τὴν ψάμμον, καὶ ὅτι οἱ ἰχθυοφάγοι πλοῖα ποιοῦνται καλάμινα, καὶ ὅτι ἐν γόνυ καλάμου πλοῖον ἀπαρτίζει, ὥς φησιν Ἡρόδοτος.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 71

Καὶ ἄλλως δὲ κάλαμοι ἀπλῶς ἕτεροι παράσημοι ἐν Ἰνδία, ὡς ἐρρέθη, καθὰ καὶ παρὰ τοῖς ἐσπερίοις Αἰθίοψιν, ὧν καλάμων ἕκαστον γόνυ χωρεῖν λέγεται χοίνικας τρεῖς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1107, line 74

Λέγεται δὲ νόμον ἄριστον εἶναι παρ' Ἰνδοῖς, τὸν εὐ- ρόντα τι ὀλέθριον ἀνάγκην ἔχειν ἐξευρί- σκειν καὶ ἄκος τοῦ κακοῦ.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1134, line 1

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Ὅτι τὸ σχῆμα τῆς Ἰνδικῆς, ὡς καὶ ὁ Γεω- γράφος φησὶ, τέσσαρσιν ἡμίσται πλευραῖς
λοξαῖς πά- σαις, ῥόμβον ἀποτελούσαις.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis
descriptionem Section 1134, line 4

Ὡν ἐσπερία μὲν ἡ πρὸς τῷ Ἰνδῷ ποταμῷ, νοτία δὲ ἡ πρὸς τὴν Ἐρυθρὰν νεύουσα, ὁ δὲ
Γάγγης ἑῷα, εἰς δὲ πόλιν ἄρκτων ὁ Καύκασος, ἡγουν κατὰ τὸν Γεωγράφον τὰ τοῦ Ταύρου
ἔσχατα.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis
descriptionem Section 1134, line 8

Καὶ σημείωσαι ὅτι κατὰ τὸν Διονύσιον καὶ Ἰνδικός ἐστι Καύκασος, ὡς καὶ ἀνόπιν εἴρηται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis
descriptionem Section 1134, line 11

Ὅτι δὲ ὁ Γάγγης καὶ ὁ Ἰν- δὸς μέγιστοι ποταμῶν, καὶ αὐτὸ προεῖρηται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis
descriptionem Section 1134, line 20

Γάγγης. Ἰνδός.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis
descriptionem Section 1138, line 1

Ὅτι οἱ Δαρδανεῖς Ἰνδικὸν ἔθνος· οἱ μὲντοι Δάρδανοι Τρωϊκόν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis
descriptionem Section 1139, line 1

Ὅτι ὁ Ὑδάσπης (ποταμός δὲ καὶ οὗτος Ἰνδι- κός) πλωτός ἐστι ναυσὶν, εἰς ὃν Ἀκεσίνης
ἐμβάλλει, λοξὸς ἀπὸ σκοπέλων φερόμενος· περὶ οὗ ὁ Γεωγράφος φησὶν, ὅτι Ἀκεσίνης ἐν τροπαῖς
θεριναῖς ἀναβαίνει πῆχεις μ', ὧν οἱ μὲν κ' πληροῦσι μέχρι χείλους τὸ ῥεῖθρον, οἱ δὲ κ' ὑπερχέονται
εἰς τὸ πεδίον, διὸ καὶ νησιζοῦσιν οἷον αἱ πόλεις, ὡς καὶ ἐν Αἰγύπτῳ, ἔδρυν- ται γὰρ ἐπὶ χωμάτων.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis
descriptionem Section 1140, line 1

Ὅτι καὶ ὁ Κώφης Ἰνδικός ἐστι ποταμός, ὃν Ἡρωδιανὸς μὲν καὶ αὐτὸν ἐν τῇ καθόλου
βαρυτόνως ἐκφέρει καὶ μετὰ τοῦ σ, ὡς τὸ Χρύσης, Ἀριστοτέλης δὲ ὡς φασιν ἐν πέμπτῳ περὶ
Ἀλεξάνδρου τὸν Κωφῆνά φησιν, ὡς τὸν σωλῆνα.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis
descriptionem Section 1140, line 7

Ὁ Γεωγράφος δὲ ὁμοίως τῷ Διονυσίῳ ἐκφέρει, λέγων «Χοάσπης εἰς τὸν Κώφην ἐμβάλλει»
καὶ πάλιν «μετὰ τὸν Κώφην ὁ Ἰνδός, εἴτα ὁ Ὑδάσπης, εἴτα ὁ Ἀκεσίνης, καὶ ὕστατος ὁ Ὑπανις.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis
descriptionem Section 1141, line 2

Ὅτι εἰ καὶ πολλὰ τῶν ἀντιγράφων Τοξίλους γράφουσι τὸ Ἰνδικὸν ἔθνος, ἀλλ' ὁ Γεωγράφος
Ταξίλους γράφει διὰ τοῦ α, καὶ Τάξιλα τὴν κατ' αὐτοὺς πόλιν, μεγάλην αὐτὴν λέγων καὶ

8.12. EUSTATHIUS PHILOL., SCR. ECCL.

εὐδαίμονα καὶ εὐνομωτά- την, καὶ τινὰ ἄνδρα Ταξίλην ἱστορῶν αὐτῆς καὶ βασι- λέα, καὶ λέγων ὅτι φιλανθρώπως αὐτὸς καὶ οἱ ἐκεῖ δεξάμενοι τὸν Ἀλέξανδρον ἔτυχον πλειόνων ἢ ἔδωκαν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1141, line 9

Διὸ καὶ φθονοῦντες οἱ Μακεδόνες ἔλεγον ὡς οὐκ εἶχεν Ἀλέξανδρος οὓς εὐεργετήσῃ, πρὶν διαβῆναι τὸν Ἰνδόν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1143, line 1

Ὅτι ἔθνος Ἰνδικὸν οἱ Πευκαλεῖς, ἄγρια φύλα.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1143, line 2

Τινὲς δὲ διὰ τοῦ ν γράφουσι Πευκανεῖς. Ἰνδοὶ δὲ καὶ οἱ Γαργαρίδαι, οὓς Διονύσου καλεῖ θεράποντας, ὅπου, φησί, χρυσὸν καταφέρουσιν ὁ Ὑπανίς τε ποταμὸς ὁ καὶ ἀνωτέρω ῥηθεῖς, καὶ ὁ Μάγαρσος, λαβρότατοι πο- ταμῶν, ἀπὸ τοῦ Ἡμωδοῦ ὄρους προρρέοντες ἐπὶ τὴν Γαργήτιδα χώραν, πρὸς νότον εἰς τὴν προγραφεῖσαν Κωλιάδα νῆσον τετρασυλλάβως, ἢ Κωλίδα τρισυλλά- βως κατὰ συγκοπὴν, ἣν καὶ προνενευκέναι εἰς τὸν ὠκεα- νὸν φησιν, ὡς ὑπ' αὐτοῦ νησιζομένην, καὶ δυσέμβατον οἰωνοῖς εἶναι λέγει, διὸ καὶ καλεῖσθαι Ἄορνιν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1143, line 26

Λέγεται δὲ καὶ πέτρα τις Ἄορνος περὶ τὴν Ἰνδιάν, ἥπερ ὁ Ἡρακλῆς μὲν προσβαλὼν εἰς τρεῖς ἀπεκρού- σθη, Ἀλέξανδρος δὲ κατὰ μίαν εἴλε προσβολήν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1143, line 29

Ταύ- της δὲ τῆς Ἀόρνου τὰς εἰζας ὁ Ἰνδὸς ποταμὸς ὑπο- ῥέειν λέγεται.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1143, line 35

Πολὺς δὲ ἐν ταῖς ἱστο- ρίαις ὁ Ἰνδικὸς Ὑπανίς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1143, line 45

Μεθ' ὃν δεύτερον εἶναι λέγουσι τὸν Ἰνδόν, καὶ τρίτον καὶ τέταρτον Ἰστρον καὶ Νεῖλον.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1143, line 48

Φασὶ δὲ καὶ ἐ' ποταμοὺς τοὺς ἀξιολογωτάτους εἰσβάλλειν εἰς τὸν Ἰν- δόν, ὧν ὕστερον εἶναι τὸν Ὑπανιν· οὓς πάντας ὁ Ἰνδὸς παραλαβὼν, ὡς φησιν Ἀρριανὸς, καὶ τῇ ἐπῶνυ- μίᾳ κρατήσας ἐκδιδοῖ ἐς θάλασσαν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1143, line 61

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Τὸν δὲ Ἰνδὸν ποταμὸν εὐρύ- νεσθαί πού φασι καὶ ὑπὲρ πεντήκοντα σταδίου, ὅτε πληρωθεῖν, τὸ δὲ ἐλάχιστον εἰς ἑπτὰ.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1143, line 66

Ἀρριανὸς δὲ φησιν ὅτι ἵνα μὲν στενότατος ὁ Ἰνδὸς, μ' σταδίου διέχουσιν αὐτῷ αἱ ὄχθαι, ἵνα δὲ πλατύτατος καὶ ἑκατόν.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1153, line 2

Ὅτι ὁ Θηβαῖος Διόνυσος τοὺς κελαινοὺς Ἰν- δοὺς ὀλέσας ἀντιστάντας αὐτῷ δύο στήλας ἔστησε περὶ τὰ τῆς γῆς τέρματα, καὶ αὖθις καρχαλῶν, ὃ ἔστι χαί- ρων, εἰς Θήβας ἐπανῆλθε.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1153, line 6

Καὶ ὅρα ὅτι ὥσπερ κυανέους ἀλλαχοῦ εἶπε τοὺς Αἰθίοπας, οὕτως ἐνταῦθα κελαι- νοὺς εἶπε τοὺς Ἰνδοὺς.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1153, line 21

Νύσσα δὲ κατὰ τὸν Γεωγράφον πό- λιν ἐν Ἰνδία, κτίσμα Διονύσου, καὶ ὅρος αὐτόθι Μηρός, ὅθεν παρὰ τοῖς μύθοις μηροτραφῆς ἐνομίσθη Διόνυσος.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1153, line 36

Ἀρριανὸς δὲ λέγει καὶ ὅτι κισσὸς ἄλλη τῆς Ἰνδικῆς γῆς μὴ φυόμενος παρὰ Νυσσαίοις φύεται, καὶ ὅτι εἰς τὸ Νυσσαῖον ὅρος τὸν Μηρὸν ἐλθόντες οἱ Μακεδόνες ἠδέως τὸν κισσὸν εἰ- δον, καὶ στεφάνους σπουδῇ ἀπ' αὐτοῦ ἐποιοῦντο, καὶ ὅτι Νυσσαίων πρέσβεις τὸν Ἀλέξανδρον ἐν ὅπλοις ἰδόντες κεκονιμένον ἐκ τῆς ὁδοῦ ἐθάμβησάν τε τὴν ὄψιν καὶ πεσόντες εἰς γῆν ἐπὶ πολὺ σιγὴν εἶχον.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1153, line 53

Πάντων γάρ, φασί, τὰ κατὰ τὸν δεσμὸν τοῦ Προμηθέως ὑποθεμένων ἐν τῷ ἀρκτῷ γε- νέσθαι Καυκάσῳ, οἱ Μακεδόνες κολακείᾳ τῇ πρὸς τὸν Ἀλέξανδρον μετέθηκαν τῷ λόγῳ τὸν Καύκασον εἰς τὴν ἑῴαν θάλασσαν, καλέσαντες Καύκασον ὅρη τινὰ ἐκεῖ Ἰνδικά.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1153, line 72

Οἱ δ' αὐτοὶ κόλακες κατὰ τοὺς παλαιοὺς Καύκασον ὠνόμα- σαν ὁμοῦ τὸν τε Παροπαμισὸν καὶ τὸ Ἡμῶδον καὶ τὸ Ἰμάϊον, τὰ Ἰνδικὰ ὅρη.

Eustathius Philol., Scr. Eccl., Commentarium in Dionysii periegetae orbis descriptionem Section 1153, line 76

Ἀρριανὸς δὲ τάδε γράφει περὶ τῆς εἰς Ἰνδοὺς τοῦ Διονύσου στρατείας· «Διόνυσον πολεμῆσαι Ἰνδοῖς λόγος, ὅστις δὴ οὗτος ὁ ἐπὶ Ἰν- δοὺς στρατεύσας Διόνυσος.

8.13. SCHOLIA IN ARISTOTELEM

8.13 Scholia In Aristotelem

Scholia In Aristotelem, Scholia in Aristotelis sophisticos elenchos (scholia recentiora) (e cod. Vat. Urb. gr. 35) (5015: 001) “Vaticanus Urbinas Graecus 35. An edition of the scholia on Aristotle’s *sophistici elenchi*”, Ed. Bülow-Jacobsen, A., Ebbesen, S., 1982; Cahiers de l’Institut du moyen-âge grec et latin 43. Bekker page 5, line 167a7-8m, line of scholion 1

ὄν> <οἶον ὁ ἰνδός>) <λευκός καὶ οὐ λευκός οὐ λευκός μὲν ἐστὶ κατὰ τὴν ἐπιφάνειαν· λευκός δὲ κατὰ τοὺς ὀδόντας ὁ αἰθίοψ> <λευκός μέλας αἰθίοψ> <ἄμφω>· <μέλας καὶ λευκός

8.14 Uranius Hist.

Uranius Hist., Fragmenta (2461: 003) “FHG 4”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 20, line 1

Idem: Σῆρες, ἔθνος Ἰνδικόν, ἀπροσμιγῆς ἀνθρώ- ποις, ὡς Οὐράνιος ἐν τρίτῳ Ἀραβικῶν.

8.15 Sopater Rhet.

Sopater Rhet., Scholia ad Hermogenis status seu artem rhetoricam (2031: 002) “Rhetores Graeci, vol. 5”, Ed. Walz, C. Stuttgart: Cotta, 1833, Repr. 1968. Volume 5, page 4, line 13

Διενήνοχε δὲ ἡ τέχνη τῆς ἐπι- στήμης, τῷ μὴ ἀδιαπτῶτῳ κεχρηῆσθαι τῷ σκοπῷ, ἀλ- λά μεθαυμολέσθαι πρὸς πρόσωπα καὶ καιροὺς, ὥσπερ οἱ ἰώμενοι, ἵνα κατ’ ἰατροὺς εἴπωμεν, ζη- τοῦσιν ὥραν, χώραν, ἡλικίαν, καὶ τῷ Σκύθῃ μὲν νοσοῦντι θερμὰ ἐπ- ἄγουσι βοηθήματα, διὰ τὴν φύσιν τῆς χώρας καὶ τὸ πᾶν ψυχρόν, τῷ δὲ Ἰνδῷ ψυχρὰ διὰ τὸ θερμὸν τῆς χώρας, καὶ πρεσβύτη καὶ νέῳ διαφόρως.

8.16 Theognostus Gramm.

Theognostus Gramm., Canones sive De orthographia (3128: 001) “Anecdota Graeca e codd. manuscriptis bibliothecarum Oxoniensium, vol. 2”, Ed. Cramer, J.A. Oxford: Oxford University Press, 1835, Repr. 1963. Section 88, line 3

Ἡ ἰ συλλαβὴ εἶτε κατ’ ἀρχὴν λέξεως, εἶτε κατὰ τὸ μέσον ἐν ἀπλῇ καὶ ἀκινήτῳ λέξει λήγουσα εἰς ν, ἐπαγομένου τοῦ δ, διὰ τοῦ ἰ γράφεται· οἶον, ἰνδικτός· ἰνδαλμα· ἰνδιξ· Ἰνδός· σινδῶν· σκινδαλός· Πίνδαρος· γίνδος· γινδαρίς· καλινδοῦμαι· πινδηρα, ἄροτρον· Πίνδος ὄρος Θεσσαλίας· πίνδακας θραύ- ματα σανίδων· σκινδαλαγμός· σκίνδιον τὸ λευκόν· φυγίνδα·

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

βασιλίνδα· κρυπτίνδα· τὸ ἦνδανε ἐκ τοῦ ἀνδάνω γεγονὸς οὐ μάχεται, ὡς οὐδὲ τὸ ἥσχαλλον, εἰστήκειν, ἐκ τοῦ ἀσχάλλω, εἰστήκω, γεγονότα εἰς τὸν προλαβόντα κανόνα.

Theognostus Gramm., Canones sive De orthographia Section 89, line 5

Ἡ ι συλλαβὴ εἴτε κατ' ἀρχὴν λέξεως, εἴτε κατὰ τὸ μέσον ἐν ἀπλῇ καὶ ἀκινήτῳ λέξει λήγουσα εἰς ρ, ἢ εἰς ἓν τι τῶν ἀμεταβόλων τῆς ἐξῆς συλλαβῆς ἀρχομένης ἐκ συμφῶ- νου, διὰ τοῦ ι γράφεται· καὶ κατ' ἀρχὴν μὲν λέξεως· ἴννος· Ἰμβρος· ἰνδάλω· ἰνδαλμα· Ἰνδός· ἰνδικτος· Συλιμβρία· Κιμμέριος· σκίνπους· στίλβων· στιλβανός· οἰκτίρμων· σκιρτῶ· κιρνῶ· κίρκος· θιζέρον τὸ τρυφερόν· ἰλκαγλοῖός, ῥύ- πος· ἴλλον, πλάγιον, στραβόν· ἰλλάδας ἀγελαιάς, διεστραμ- μένας· Ἰλλυρίς· ἰλμηδεσμός, σειρά· ἴννος ὁ ἐξ ὄνου θηλείας καὶ ἵππου, ἢ τὸ ἐν τῇ κυήσει νοσῆς βρέφος· κιλλαγκτήρ ὁ ὀνελάτης· κίλλοι ὄνοι τὸ ἐρμός ἐκ τοῦ εἶρω γεγονὸς τοῦ τάσσω ἐν κινήσει ὄν, οὐκ ἀντίκειται· σεσημειώται τὸ εἶργω τὸ κωλύω, ἐξ οὗ καὶ εἵρκτῃ διὰ τῆς ει διφθόγγου· καὶ μή- ποτε παρὰ τὸ ἔργω ἐστὶν ἐν πλεονασμῷ τοῦ ι, καὶ οὐ

γνη-

Theognostus Gramm., Canones sive De orthographia Section 90, line 5

Ἡ ι συλλαβὴ ἐν ἀπλῇ καὶ ἀκινήτῳ λέξει, εἴτε κατ' ἀρ- χὴν λέξεως, εἴτε κατὰ τὸ μέσον, πρὸ τοῦ κτ εὐρισκομένη διὰ τοῦ ι γράφεται· ἴκτινος, τὸ ὄρνεον· ἴκτερος, ἢ νόσος· ἴκτον τὸ εὐικός· ἴκτης, οἰκέτης· ἴκταιον τὸ τρόφημον· ἴκταρ τὸ πρόσφατον· ἴκτυς, ὁμοίωμα, εἰκῶν· ἰνδικτος· βίκτωρ· προ- τίκτωρ· τὸ ἐπείκτης ἐκ τοῦ ἐπείγω γεγονὸς κεκινημένον ὄν, οὐκ ἀντίκειται.

Theognostus Gramm., Canones sive De orthographia Section 157, line 4

Τὰ διὰ τοῦ ιων ὑπὲρ δύο συλλαβὰς, μὴ ἔχοντα πρωτοτύ- που φωνῆς τὴν ει δίφθογγον, ὡς ἔχει τὸ Καδμείος Καδ- μείων, καὶ Ἀργεῖος Ἀργείων, διὰ τοῦ ι γράφεται· οῖον, Ἀμ- φίων· Ὑπερίων· Ἀμφικτίων· περικτίων· ἰνδικτίων.

Theognostus Gramm., Canones sive De orthographia Section 293, line 1

Τὰ διὰ τοῦ ινδος, εἴτε δισύλλαβα, εἴτε ὑπὲρ δύο συλλα- βὰς, διὰ τοῦ ι γράφονται· οῖον, Ἰνδός· Ἄλινδος· Ἰσινδος πόλις Μακεδονίας· Ἄρινδος ὄνομα ποταμοῦ· Βερέκινδος.

Theognostus Gramm., Canones sive De orthographia Section 851, line 1

Τὰ διὰ τοῦ ινδῶ ῥήματα περισπώμενα διὰ τοῦ ι γρά- φει τὴν παραλήγουσαν· κυλινδῶ· ἀλινδῶ· καλινδῶ.

Theognostus Gramm., Canones sive De orthographia Section 999, line 1

Τὰ διὰ τοῦ ινδα ἐπιρῥήματα παροξύνονται, καὶ διὰ τοῦ ι γράφονται, καὶ ἐπὶ παιδίων λαμβάνονται, καὶ πρὸς αἰτιατι- κὴν συντάσσεται· οῖον, βασιλίνδα παιδίαν· χυτρίνδα· δρα- πετίνδα· ποσίνδα· ἐπαιτίνδα· ξυφίνδα· δαλχηκίνδα· μυῖνδα, ἀπὸ τοῦ μύειν τοὺς ὀφθαλμούς, καὶ ἐρωτώμενον λέγειν τινὰ τάδε καὶ πόσα τάδε, ἐάν τις ἐπιτύχη· φυγίνδα· χυτρίνδα· ὀστρακίνδα, καὶ εἴτι ἕτερον.

8.17 Pseudo-Zonaras Lexicogr.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon (3136: 001) "Iohannis Zonarae lexicon ex tribus codicibus manuscriptis, 2 vols.", Ed. Tittmann, J.A.H. Leipzig: Crusius, 1808, Repr. 1967. Alphabetic letter alpha, page 231, line 18

πέτρα ἐν τῇ Ἰνδικῇ, ἐν ᾗ οὐ κάθεται ὄρνις διὰ τὸ εἶναι αὐτὴν ὑπερύψηλον.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter alpha, page 327, line 8

παρὰ τὸ ἄχω, ἀφ' οὗ ἄχραι, γίνεται ἀχάλλω, ὥσπερ ἄγω ἀγάλλω, εἶδω εἰ- δάλλω καὶ ἰνδάλλω.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter delta, page 478, line 20

κατὰ γὰρ τὴν τῶν Ἰνδῶν φωνὴν δεῦνος ὁ βα- σιλεύς.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter iota, page 1109, line 8

κύριον. [<Ἰνδακος>.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter iota, page 1109, line 9

κύριον.] <Ἰνδοί>.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter iota, page 1110, line 4

παρὰ Ῥωμαίοις τοῖς ἀσθενέσι διδό- μενον σιτίον, ὃ οὔτε ζῆν οὔτε ἀποθνήσκειν ποιεῖ. <Ἰνδι- κτίων>.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter iota, page 1110, line 4

λέγεται καὶ ἰνδικτός.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter iota, page 1110, line 12

ὄνομα θεᾶς. <Ἰνδαλμα>.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter iota, page 1110, line 14

[παρὰ τὸ εἶδω, τὸ ὁμοιω, εἰδάλλω καὶ ἀποβολῇ τοῦ <ε> καὶ πλεονασμῷ τοῦ <ν>, ἰνδαλμα.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter iota, page 1110, line 21

ἰσχὺν παρέχω. <Ἰνδάλλεται>.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter iota, page 1123, line 8

ὁ ποταμὸς ὁ παρ' Ἑβραίοις Φεισσών, παρὰ δὲ Ἰνδοῖς Γάγγης, παρὰ δὲ Αἰθίοψιν Ἰν- δός, παρ' Ἑλλησι δὲ Δανούβιος.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter kappa, page 1209, line 2

λέγει δὲ καὶ Διονύσιος, ὅτι ἔθνος ἐστὶν Ἰνδικόν.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter nu, page 1409, line 11

οἱ μὲν τὸ Σίναιον ὄρος φασίν, οἱ δὲ ἕτερον ὄρος τοῦ Διονύσου, ἐνδότερον καὶ ἐπέ- κεινα τῆς Ἰνδικῆς.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter sigma, page 1686, line 30

ἡ κειμένη πρὸς τῇ θαλάσῃ τῇ Ποντικῇ τῇ φερομένη ἐπὶ Περσίδα καὶ Ἰνδιαν καλεῖται Συρία.

Pseudo-Zonaras Lexicogr., Lexicon Alphabetic letter tau, page 1738, line 13

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

λίθος διαυγέστατος καὶ ὑποχλωρίζων, ἐν Τοπάζῳ, πόλει Ἰνδικῇ, εὕρισκόμενος· ὃς τριβόμενος ἐν ἱατρικῇ ἀκόνῃ οὐκ ἐρυθρὸν ἀπο- δίδωσι κατὰ τὸ χρῶμα χυμὸν, ἀλλὰ γαλακτώ- δη· ἐμπί- πλησι δὲ κρατῆρας, ὅσους ἂν ἐθέλῃ ὁ ὑποτρίβων, καὶ οὔτε τῷ σταθμῷ, οὔτε τῇ πε- ριφερείᾳ ἐλαττοῦται, ὃ καὶ παράδοξον.

8.18 Scholia In Lucianum

Scholia In Lucianum, Scholia in Lucianum (scholia vetera et recentiora Arethae) (5029: 001) “Scholia in Lucianum”, Ed. Rabe, H. Leipzig: Teubner, 1906, Repr. 1971. Lucianic work 14, section 19, line 2

ΥΓΦΟΥΩ <μίσγονται μὲν ἀναφανδόν>] Ἡρόδοτον [3, 101] κωμῶδει Ἰνδοῖς τοιοῦτον γίνεσθαι ἱστοροῦντα.

Scholia In Lucianum, Scholia in Lucianum (scholia vetera et recentiora Arethae) Lucianic work 77,25, section 6, line 2

>] σὺ σωφρονέστερον διε-γέν-ου, Ἀμμω- νίδη, Ἰνδίας ἀπο-χωρῶν, ὃς πᾶσαν τὴν ἀπὸ ταύτης ἐπὶ Πέρσας ὁδὸν ἀσε-λγέστατα πάντων διήεις αὐτῷ στρ-ατο- πέδῳ μέθῃ καὶ γυ- ναι-κείᾳ ὕβρει δουλεύων, καὶ τοῦτο ἐκ-εῖνο τὸν Λυαῖον Διόνυσον καὶ λυσιμελῆ μετιών, καὶ ταῦτα φιλοσοφεῖν ἐπ-ανηρημένος.

8.19 (H)eren(n)ius Philo Gramm.

(H)eren(n)ius Philo Gramm., Hist., Fragmenta (1416: 006) “FGrH #790”. Volume-Jacoby’-F 3c,790,F, fragment 26, line 4

> ἔστι καὶ νῆσος μία τῶν Κυκλάδων· <καὶ <γ> Ἰνδικῆς, ἣν ἀναγράφει Φίλων> καὶ Δημο- δάμας ὁ Μιλήσιος (428 F 3).

(H)eren(n)ius Philo Gramm., Hist., Fragmenta (1416: 008) “FHG 3”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 16, line 11

Ἔστι καὶ νῆσος μία τῶν Κυκλάδων (?), καὶ τρίτη Ἰνδικῆς, ἣν ἀναγράφει Φίλων καὶ Δημοδάμας ὁ Μιλήσιος.

8.20 Hippocrates et Corpus Hippocraticum Med.

Hippocrates et Corpus Hippocraticum Med., De mulierum affectibus i–iii (0627: 036) “Oeuvres complètes d’Hippocrate, vol. 8”, Ed. Littré, É. Paris: Baillière, 1853, Repr. 1962. Section 81, line 13

8.21. ANONYMI MEDICI MED.

Ἡ κόκκους ἐκλέφαντα ὅσον τρεῖς ἰνδικοῦ φαρμάκου, τοῦ τῶν ὀφθαλμῶν, ὃ καλέσεται πέ-
περι, καὶ τοῦ στρογγύλου, τρία ταῦτα λεῖα τρίβειν, καὶ οἶνω παλαιῷ χλιηρῷ διεῖς, βαλάνιον
περὶ πτερὸν ὄρνιθος τιθέναι, καὶ ᾧδε προσάγειν.

Hippocrates et Corpus Hippocraticum Med., De mulierum affectibus i-iii Section
158, line 13

Ἡ ἐκλέφας κόκκους πεντεκαίδεκα, ἔστω δὲ καὶ ἰν- δικοῦ ποσόν, ἣν δοκῇ δεῖν, ἐν γάλακτι
δὲ γυναικὸς κουροτρόφου τρίβειν, καὶ παραμίσγειν ἐλάφου μυελὸν καὶ τᾶλλα ὁκόσα εἴρηται,
καὶ μέλιτι ὀλίγῳ μίσγειν· τὸ δὲ εἴριον μαλθακὸν καθαρὸν ἔστω, καὶ προστίθεται τὴν ἡμέρην·
ἣν δὲ βούλῃ ἰσχυρότερον ποιέειν, σμύρ- νης σμικρὸν τι παραμίσγειν· ἄριστον δὲ ὡοῦ τὸ πυρρὸν
καὶ αἰγὸς στέαρ καὶ μέλι καὶ ἔλαιον ῥόδιον, τουτέοισιν ἀναφυρῆν, παραχλιαί- νειν δὲ παρὰ
τὸ πῦρ καὶ τὸ ἀποστάζον εἰρίῳ ξυλλέγειν καὶ προστιθέ- ναι.

Hippocrates et Corpus Hippocraticum Med., De mulierum affectibus i-iii Section
185, line 15

Τοῦτο τὸ φάρμακον ὀδόντας καθαίρει καὶ εὐώδεις ποιέει· καλέσεται δὲ ἰν- δικὸν φάρμακον.

Hippocrates et Corpus Hippocraticum Med., De mulierum affectibus i-iii Section
205, line 13

Ἐτερον προσθετόν· ἐκλέφας κόκκους τριήκοντα, τὸ ἰνδικόν, ὃ καλέουσιν οἱ Πέρσαι πέ-
περι, καὶ ἐν τουτέῳ ἐνι στρογγύλῳ, ὃ καλέουσι μυρτίδανον, ξὺν γά- λακτι γυναικείῳ ὁμοῦ τρίβειν
καὶ μέλιτι διέναι· ἔπειτα εἴριον μαλ- θακὸν καὶ καθαρὸν ἀναφυρῆσας, περὶ πτερὸν περιελίξας
προσθεῖναι, καὶ τὴν ἡμέρην ἐῖν· ἣν δὲ ἰσχυρότερον βούλῃ ποιῆσαι, σμύρναν ὀλί- γην παραμί-
σγειν ὅσον τριτημόριον, καὶ εἴριον μαλθακὸν καθαρὸν ἢ ἡμίρρυνον.

Hippocrates et Corpus Hippocraticum Med., Epistulae (0627: 055) “Oeuvres
complètes d’Hippocrate, vol. 9”, Ed. Littre, É. Paris: Baillière, 1861, Repr. 1962. Epistle
18, line 8

Ὅκόσα γὰρ ἰνδαλμοῖσι διαλλάττοντα ἀνὰ τὸν ἥερα πλάζει ἡμέας, ἃ δὴ κόσμῳ ξυνεώραται
καὶ ἀμειψιρυσμέοντα τέτευχε, ταῦτα νόος ἐμὸς φύσιν ἐρευνήσας ἀτρεκέως ἐς φάος ἡγαγεν·
μάρτυρες δὲ τουτέων βίβλοι ὑπ’ ἐμοῖο γραφεῖσαι.

8.21 Anonymi Medici Med.

Anonymi Medici Med., De urinis secundum Syros (0721: 012) “Physici et medici
Graeci minores, vol. 2”, Ed. Ideler, J.L. Berlin: Reimer, 1842, Repr. 1963. Section 1,
line 10

πιέτω δὲ τὴν διὰ κρόκου ἢ μάννα μετὰ ὕδατος ἢ φοίνικας ἰνδικὰς καὶ τὰς βιόλας τὰς συν-
θέτους ἢ τὸ χεράβιν τῶν βιόλων καὶ εἰ ἔαρ ἐστὶ καὶ γέ- ρων ὑπάρχη, κενωσάτω αἷμα διότι
πλησμονὴ αἵματός ἐστιν.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Anonymi Medici Med., De urinis in febris (0721: 016) “Physici et medici Graeci minores, vol. 2”, Ed. Ideler, J.L. Berlin: Reimer, 1842, Repr. 1963. Volume 2, page 324, line 21

εἰ δὲ καὶ ὁ κάμνων ὑπάρχει ἐπίσημος, πρόσθε τὸ μέλι τοῦ μέλανος καλάμου τοῦ ἰνδικοῦ στάθμην οὐγγίας εἴ LL ἢ καὶ εἴ καὶ πῖετω καὶ μετὰ τὴν κένωσιν λαβέτω δῖαιταν ἐκ τῶν προειρημέ- νων λαχάνων.

Anonymi Medici Med., De urinis in febris Volume 2, page 325, line 29

πότιζε δὲ αὐτὸν καθ’ ἡμέραν τὸ ὀξυσάχαρ μετὰ τῆς πτισάνης καὶ ἀπόφυγε τὰ θερμὰ ἀπὸ τε διαίτης καὶ θεραπείας, διότι ἐὰν θρέ- ψῃς αὐτὸν μετὰ τῆς θερμῆς διαίτης καὶ τῆς ἰατρείας, ἐξέρχεται εἰς ἵκτερον ὁ λεγόμενος χρυσιασμός ασκός καὶ λύρα, βλάπτεται τὸ ὅλον σῶμα, καὶ οἱ ὀφθαλμοί, καὶ τὸ κλοκίον κίτρινον, καὶ ὁ ἀφρὸς αὐτοῦ, καὶ ἐὰν ἴδῃς τὸ τοι- οῦτον κλοκίον, εἴπερ ἵκτερον ἔχει καὶ ἀρμόζει ἰατρυνέσθαι ὡς τριταῖος, πινέτω δὲ τὸν χυλὸν τῶν ἰνδίων ἐξαφρισμέ- νον καὶ τοῦ στρύχνου μετὰ ὀξυμέλιτος καὶ πᾶν ὄξυνον φαγέτω, ἐκτὸς τῶν ἀλμυρῶν καὶ φλεβοτόμησον, εἰ πλη- θωρικὸν σῶμα ἔχει ὁ κάμνων καὶ δύναμιν, καὶ ἡλικίαν καὶ δύναμιν, κενοῦται γὰρ ἡ χολή.

8.22 Dionysius Hist.

Dionysius Hist., Fragmenta (2354: 002) “FHG 2”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 5, line 7

ποτρ. c. 4: Πολλοὶ δ’ ἂν τάχα πού θανυμάσειαν εἰ μάθοιεν τὸ Παλλάδιον τὸ διοπετὲς καλούμενον, ὃ Διομήδης καὶ Ὀδυσσεὺς ἱστοροῦνται μὲν ὑφελέσθαι ἀπὸ Ἰλίου, παρακαταθέσθαι δὲ Δημοφῶντι, ἐκ τοῦ Πέλο- πος ὁστῶν κατεσκευάσθαι, καθάπερ τὸν Ὀλύμπιον ἐξ ἄλλων ὁστῶν Ἰνδικοῦ θηρίου.

8.23 Hesychius Lexicogr.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) (4085: 002) “Hesychii Alexandrini lexicon, vols. 1–2”, Ed. Latte, K. Copenhagen: Munksgaard, 1:1953; 2:1966. Alphabetic letter alpha, entry 4350, line 1

ἢ ἄνωθεν, ἐν ὕψει, ἄνω <ἀνάκης>· ὀρνέον τι Ἰνδικόν, ὅμοιον ψάρῳ <ἀνακῆσαι>· ἡσυχάσαι <ἀνακηκίει>· ἀναφέρεται (N 705) <ἀνακείρει>· ἀποτέμνει * <ἀνακεφαλαιοῦται>· συμπλη- ροῦται.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter alpha, entry 6399, line 1

regn. 9,24) ἀση † <ἀποκολοκαύτωσις>· παρ’ † Ἰνδοῖς ἢ συνουσία.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter beta, entry 90, line 1

8.23. HESYCHIUS LEXICOG.

καὶ <βαῖων> <βαισίνης>· παρ' Ἰνδοῖς στρατόπεδον <βαίσηνος>· ὁ στρατός †<βαισσόν>· βάθος <βαίταν>· Ἕλληνες <βαιτάς>· εὐτελής γυνή.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter beta, entry 900, line 3

) καὶ ὁ Ἀλεξάνδρου ἵππος, ἀφ' οὗ πόλιν ἐν Ἰνδοῖς κτίσαι λέγεται *<βουκολέοντι>· <βοῦς νέμοντι> (E 313) Sn <βουκολητής>· ἀπατεών <βουκόλια>· ἀγέλη βοῶν (Hdt. 1,126,2? 1.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter beta, entry 1076, line 1

καὶ θύεται αἶξ <βραυῶσα>· κεκραγυῖα hf <βράχαλον>· χρεμετισμόν *<βράχε>· ἐφόφησε (M 396 etc.) n (*)<βραχεῖν>· ἤχησαι (Sn) ψοφήσαι (n) †<βραχιόνα>· τὸν τράχηλον *<βραχεῖς>· ὀλίγοι (Psalm. 104,12) vgAS <βράχιστον>· ἐλάχιστον (Soph. fr. 172) <βραχίων>· βραχύτατος <Βραχυᾶνες>· οἱ παρ' Ἰνδοῖς Γυμνοσοφισταὶ καλούμενοι <βραχύ>· ἀντὶ τοῦ οὐδέν (Eur. Tro. 1248) ὀλίγον, *μικρόν (Eur. Phoen. 738) g [<βραχυτελόν>· μικρόν] a) <βραχύλον>· .

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter gamma, entry 142, line 1

..> *<γανανυγέας>· τέλειος ἐν τῷ ὄραν AS [<γανδᾶν ἦ> γανᾶν>· λάμπειν <γανδάνειν>· ἀρέσκειν <Γάνδαρος>· ὁ ταυροκέρατος, παρ' Ἰνδοῖς <γάνδιον>· κιβώτιον <γάνδομα>· πυροὶ <γανδόμην>· ἄλευρα <γάνδος>· ὁ πολλὰ εἰδὼς καὶ πανοῦργος.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter gamma, entry 217, line 1

vgAS ἀκαταπλήκτω gAS <γαυσάδας>· ψευδής <γαυσαλίτης>· ὄρνειον, παρὰ Ἰνδοῖς <γαυσόν>· σκαμβόν, στρεβλόν (Hippocr. artic. 77 .

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter delta, entry 2248, line 1

καὶ πρόσωπον <κωφόν> <δορυφοροῦντες>· προβαδίζοντες ἔνοπλοι r <δορυφόρους>· ἀναβαστάζοντας S τὰ ὅπλα [<δῶρων>· τῶν δοράτων] <δορχελοί>· ἀστράγαλοι <δόσαν>· παρέσχον, ἔδωκαν (A 162) †<Δορσάνης>· ὁ Ἡρακλῆς, παρ' Ἰνδοῖς <δοσείειν>· δοτικῶς ἔχειν *<δόσις>· ἡ δωρεά (K 213 .

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter epsilon, entry 5716, line 1

Αἰθίοπες, Ἀραβες, Ἰνδοὶ r Ἀράβιοι (δ 84) <ἐρεμνή>· σκοτεινή (AS).

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter epsilon, entry 6694, line 1

εὐμοῖρος *†<εὐαλῶς>· εὐχερῶς θηρώμενος ASn <εὐαλδῆ>· εὐαυξή <Εὐαλωσία>· Δημήτηρ, ὅτι μεγάλας τὰς ἄλως ποιεῖ καὶ πληροῖ <εὐάλωτον>· εὐθήρατον (Prov. 24,63) r. g <εὐαμερία>· θεοσημία <εὐάν>· ὁ κισσός, ὑπὸ Ἰνδῶν <Εὐάνασσα>· ἡ Δημήτηρ *<εὐανδρείας>· καλῆς ἰσχύος (2).

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter iota, entry 665, line 1

λέγονται δὲ καὶ *αἱ τῶν ἀδελφῶν γυναῖκες <ινάτερες> n <ἰν αὐτῷ>· αὐτὸς αὐτῷ (Hes. fr. 11 Rz.) <Ἰνάχεια>· ἐορτὴ Λευκοθέας ἐν †Κρήτεσιν, ἀπὸ Ἰνάχου *<Ἰναχος>· ποταμός rA <Θεσσαλίας> A <ινδάλλεται>· *ὁμοιοῦται vg, φαίνεται (ψ 460) Avg, δοκεῖ.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter iota, entry 666, line 1

σοφίζεται An *<ινδάλλετο>· ὁμοιοῦτο (P 213) r. n *<ινδάλλονται>· φαίνονται An καὶ τὰ ὅμοια *<ινδάλλματα>· φαντάσματα.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter iota, entry 670, line 1

Μακεδόνες * <Ἰνδός>· ὁ τὸν ἐλέφαντα ἄγων ἀπὸ Αἰθιοπίας (1).

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter iota, entry 671, line 1

μαcc. 6,37) <Ἰνδουρός>· ἀσπάλαξ r <ἴν' ἔκδηλος>· ἴν' ἐπίσημος ἤ (E 2) <ἰνέκεσθαι>· μαθεῖν * <ἴνες>· νεῦρα (λ 219) ASgn <ἰνεύει>· τείνει <ἰνηθεῖσα>· καθαρθεῖσα, κενωθεῖσα (Hippocr.) [<ἰνία>· λῶρα] <ἰν ἰμῖνα>· ἐν ἡμίσει <ἰνίον>· τὸ ὀπισθεν τοῦ τραχήλου νεῦρον (E 73) r. καὶ ἡ συνα- γωγή τῶν χειρῶν πρὸς ἀλλήλας.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter kappa, entry 28, line 1

Ξηραίνει A <κάγκανα ξύλα>· ξηρά An. ἐλαφρά (Φ 364) <καγκαλέα>· κατακεκαυμένα <κάγκαμον>· παρ' Ἰνδοῖς ξύλου δάκρυον, καὶ θυμίαμα <καγκές>· πτύλος <καγκομένης>· ξηρᾶς τῷ φόβῳ <καγκύλας>· κηκῖδας.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter kappa, entry 2328, line 1

ἀπὸ τῶν εὐρόντων <Κερκέται>· ἔθνος Ἰνδικόν <κερκίδα>· δονακίνας.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter kappa, entry 2730, line 1

καὶ Ἰνδοί <κίνδυνος ἢ ἐν πρῶν σελίσ>· οἱ πολέμοι γὰρ τὴν πρῶραν εὐθέως ἐφάλλονται.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter kappa, entry 2800, line 1

(Σα) [ῆ] ἄπαξ <εἰρημένον> (ζ 76) <κιτρίον>· τὸ Ἰνδικὸν μῆλον r <κιτταί>· πρόγονοι <κιττᾶν>· γλίχεσθαι S· ἐπὶ τῶν γυναικῶν. Ξεπιθυμεῖν S <κίτταλος>· μυξένη <κιττάναλον>· ἢ κρησέρα <κίττανος>· ἢ κονιακὴ τίτανος <κίτταρις>· διάδημα, ὃ φοροῦσι Κύπριοι.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter mu, entry 63, line 1

οἱ δὲ μέτρα, ὡς κύαθοι (Blaes. fr. 2 Kaib.) <μάθαμι>· ζητῶ <μάθας>· μαθήσεως <μαθήματα>· ἃ οἱ ὑποκριταὶ ἀνελάμβανον <μάθυιαι>· γνάθοι <μαῖ>· μέγα. Ἰνδοί <μαῖα>· πατρός καὶ μητρός μήτηρ.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter mu, entry 95, line 1

Ταραντῖνοι δὲ <μαιριήν>· τὸ κακῶς ἔχειν <μαίσωλος>· ζῶον τετράπουν, γενόμενον ἐν τῇ Ἰνδικῇ, ὅμοιον μόσχῳ <μαίσων>· μάγειρον.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter mu, entry 215, line 1

Δόλοπες <Μάμερτος>· Ἄρης <μαμαῖτριαι>· οἱ στρατηγοί, παρ' Ἰνδοῖς <μαμμάκυθος>· μωρός S· ἔστι δὲ καὶ δράμα πεποιημένον Πλάτωνι <Μαμβρή>· ἀπὸ ὀράσεως <μαμμᾶν>· ἐπὶ τῆς παιδικῆς φωνῆς.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter mu, entry 1686, line 1

*μοῖρα τοῦ βίου (AS) <μοροπονοῦν>· κακοπαθοῦν <μόροττον>· ἐκ φλοιοῦ πλέγμα τι, ᾧ ἔτυπτον ἀλλήλους τοῖς Δημητρίοις <μορσική>· ἥ ἰνδική† <μόρσιμοι>· ἀναγκαῖαι, *εἰμαρμέναι, μεμοιραμέναι (ASvgb).

Hesychius Lexicogr., Lexicon (A – O) Alphabetic letter mu, entry 2067, line 1

.) (avgn) <μώνυχα>· ἀπλὴν καὶ <μῆ> διεστῶσαν [<μῶρα>· συκάμινα] <μωραίνει>· ἀφραίνει, παρακόπτει, μαίνεται <μωρία>· ἁμαρτίαι <μωρία>· ἵπποι καὶ βοῦς ὑπὸ Ἀρκά-

8.23. HESYCHIUS LEXICOG.

δων <Μωριείς>· οἱ τῶν Ἰνδῶν βασιλεῖς (Euphor. fr. 168 Pow.) <μῶριον>· πόα τις, ἥ πρὸς φίλτρα χρῶνται τ <μωρός>· ἄφρων, μάταιος <μωρόν>· ὄξύ.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (Α – Ο) Alphabetic letter nu, entry 742, line 3

ἔστι γὰρ Ἀρα- βίας, Αἰθιοπίας, Αἰγύπτου, Βαβυλῶνος, Ἐρυθρᾶς, Θράκης, Θετταλίας, Κιλικίας, Ἰνδικῆς, Λιβύης, Λυδίας, Μακεδονίας, Νάξου, περὶ τὸ Πάργαιον, τόπος Συρίας <νύσσει>· παίει.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (Π – Ω) (4085: 003) “Hesychii Alexandrini lexicon, vols. 3–4”, Ed. Schmidt, M. Halle: *n.p., 3:1861; 4:1862, Repr. 1965. Alphabetic letter pi, entry 4214, line 1

ὅταν γὰρ τὰ μήπω δυνάμενα πέτεσθαι τῶν ὀρνέων πειράζοντα ἐπιβάλληται καὶ κινή τὰς πτέρυγας <πτερυ- γίζειν> λέγεται <πτερύγιον>· ἀκρωτήριον, πτέρυξ <πτερυξαμένη>· διασειάσσα <πτερύσσει>· τὰ πτερὰ τινάσσει, πέτεται <πτερ[ε]υγοτύραννος>· ὄρνις ποιὸς ἐν Ἰνδικῇ Ἀλεξάνδρῳ δοθεὶς <πτέρων>· ἀλλ’ ἢ τρίορχος, ἢ πτέρων, ἢ στρουθίας εἶδος ὀρνέου <πτερῶν ταρσοῦ>· τῶν πτερῶν <πτερωτοῖς>· πετεινοῖς <πτερωτός>· ἀναπτερωθεῖς.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (Π – Ω) Alphabetic letter sigma, entry 81, line 1

θέλει δὲ εἰπεῖν τὴν πῆραν, κατὰ μετάληψιν [<σακοφόροι>· ὀπλοφόροι] <σάκταρον>· τοῦτο ἐμφερές ἐστὶ κόμ(μ)ει, γεν(ν)ώμενον ἐν τῇ Ἰνδικῇ, διαλυτικόν <σάκτας>· ὁ θύλακος <σακτῆ- ρος>· θυλάκου.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (Π – Ω) Alphabetic letter sigma, entry 151, line 1

ἔστι δὲ καὶ ἑτέρα ἱστορία, δι’ ἣν <πολυγράμματον> ἔφη <δῆμον>· ἐπειδὴ Ἑλλήνων Σάμιοι πολυγράμματοι ἐλέγοντο πρῶτοι καὶ χρησάμενοι καὶ δι(α)δόντες εἰς τοὺς ἄλλους Ἑλληνας τὴν διὰ τῶν τεσσάρων καὶ εἰκοσι στοιχείων χρῆσιν <σάμμα>· ὄργανον μουσικὸν παρὰ Ἰνδοῖς <Σάμου ὑληέσσης Θρηϊκῆς>· τῆς Σαμοθράκης.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (Π – Ω) Alphabetic letter sigma, entry 682, line 1

καὶ ἡ πόρνη <Σινδικὸν διάσφαγμα>· τὸ τῆς γυναικὸς <σίνδης>· γέρων <Σίνδοι>· ἔθνος Ἰνδικόν.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (Π – Ω) Alphabetic letter sigma, entry 1368, line 1

σώζεται <σοφία>· πᾶσα τέχνη, καὶ ἐπιστήμη *<Σουφεῖρ>· χώρα, ἐν ἣ οἱ πολῦτιμοι λίθοι, καὶ ὁ χρυσός, ἐν Ἰνδίᾳ <σοφίης>· τῆς περὶ τὴν τέχνην σχολῆς <σοφίζεται>· σοφόν τι λέγει.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (Π – Ω) Alphabetic letter sigma, entry 1994, line 1

Δωριεῖς <Στρεφοῦραι>· τῶν Ἰνδῶν γένος τι, οἱ καλοῦνται Κοφίλοι <στρέφωσις>· κάλυψις ἀργείων δέρματι γινομένη <Στρεψαῖοι>· ἔθνος περὶ Μακεδονίαν <στρεψίμαλ(λ)ος>· μεταφο- ρικῶς λέγουσιν ἀπὸ τῶν ἐρίων.

Hesychius Lexicogr., Lexicon (Π – Ω) Alphabetic letter chi, entry 582, line 1

καὶ ἔλαιον <χρανεῦσαι>· χωνεῦσαι <χράνη>· χώνη, τύπος, εἰς ὃν μεταχεῖται τὸ χωνεούμε- νον <χράνοις>· τοῖς φυσητήρσι, ταῖς χώναις, καὶ κοιλώμασιν, εἰς ἃ ἐγχεῖται τὸ χωνεούμενον, ἢ τοῖς πηλίνοις τύποις <χράρβηνα>· τὰ γράμματα <χράς>· τὰς σπονδὰς τῶν νεκρῶν <χο- ᾶσθαι>· καυχᾶσθαι <χράς[ε]ομαι>· ἐπιζομαι <Χοάσπης>· ποταμὸς Ἰνδίας <χοδιτεύειν>·

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

ἀποπατεῖν <χόδανον>· τὴν ἔδραν <χόες>· χῶναι <χοῖ>· χῶματι [<χοῖνον>· ποτήριον χαλκοῦν] <χοῖας>· τὸ ἀθροῖσθαι <χοϊκός>· πῆλινος, γήινος <χοϊνικες>· αἱ βαθεῖαι πέδαι.

8.24 Achilles Tatius Scr. Erot.

Achilles Tatius Scr. Erot., Leucippe et Clitophon (0532: 001) “Achilles Tatius. Leucippe and Clitophon”, Ed. Vilborg, E. Stockholm: Almqvist & Wiksell, 1955. Book 2, chapter 14, section 9, line 1

ἀλλὰ καὶ λίμνη Λιβυκὴ μιμεῖται γῆν Ἰνδικήν, καὶ ἴσασιν αὐτῆς τὸ ἀπόρρητον αἱ Λιβύων παρθένοι, ὅτι τὸ ὕδωρ ἔχει πλούσιον.

Achilles Tatius Scr. Erot., Leucippe et Clitophon Book 3, chapter 7, section 5, line 6

ποδῆρης χιτῶν, λευκὸς ὁ χιτῶν· τὸ ὕφασμα λεπτόν, ἀραχνίων ἑοικὸς πλοκῇ, οὐ κατὰ τὴν τῶν προβατείων τριχῶν, ἀλλὰ κατὰ τὴν τῶν ἐρίων τῶν πτηνῶν, οἷον ἀπὸ δένδρων ἔλκουσαι νήματα γυναῖκες ὑφαίνουσιν Ἰνδαί.

Achilles Tatius Scr. Erot., Leucippe et Clitophon Book 3, chapter 9, section 2, line 5

καὶ ἅμα πλήρης ἦν ἡ γῆ φοβερῶν καὶ ἀγρίων ἀνθρώπων· μεγάλοι μὲν πάντες, μέλανες δὲ τὴν χροίαν (οὐ κατὰ τὴν τῶν Ἰνδῶν τὴν ἄκρατον, ἀλλ’ οἷος ἂν γένοιτο νόθος Αἰθίοψ), ψιλοὶ τὰς κεφαλὰς, λεπτοὶ τοὺς πόδας, τὸ σῶμα παχεῖς· ἐβαρβάριζον δὲ πάντες.

Achilles Tatius Scr. Erot., Leucippe et Clitophon Book 4, chapter 3, section 5, line 4

καὶ γὰρ δεύτερος φαίνεται εἰς ἀλλήν ἐλέφαντος Ἰνδοῦ.

Achilles Tatius Scr. Erot., Leucippe et Clitophon Book 4, chapter 4, section 8, line 2

ὁ δὲ ἄνθρωπος ἔλεγεν ὅτι καὶ μισθὸν εἶη δεδωκὸς τῷ θηρίῳ· προσπνεῖν γὰρ αὐτῷ καὶ μόνον οὐκ ἀρωμάτων Ἰνδικῶν· εἶναι δὲ καὶ κεφαλῆς νοσοῦσης φάρμακον.

Achilles Tatius Scr. Erot., Leucippe et Clitophon Book 4, chapter 5, section 1, line 3

“Ὅτι,” ἔφη Χαρμίδης, “τοιαύτην ποιεῖται καὶ τὴν τροφήν. Ἰνδῶν γὰρ ἡ γῆ γείτων ἡλίου· πρῶτοι γὰρ ἀνατέλλοντα τὸν θεὸν ὁρῶσιν Ἰνδοί, καὶ αὐτοῖς θερμότερον τὸ φῶς ἐπικάθηται, καὶ τηρεῖ τὸ σῶμα τοῦ πυρὸς τὴν βαφήν.

Achilles Tatius Scr. Erot., Leucippe et Clitophon Book 4, chapter 5, section 1, line 4

Ἰνδῶν γὰρ ἡ γῆ γείτων ἡλίου· πρῶτοι γὰρ ἀνατέλλοντα τὸν θεὸν ὁρῶσιν Ἰνδοί, καὶ αὐτοῖς θερμότερον τὸ φῶς ἐπικάθηται, καὶ τηρεῖ τὸ σῶμα τοῦ πυρὸς τὴν βαφήν.

Achilles Tatius Scr. Erot., Leucippe et Clitophon Book 4, chapter 5, section 2, line 2

8.25. ANTENOR HIST.

γίνεται δὲ παρὰ τοῖς Ἑλλήσιν ἄνθος Αἰθίοπος χροιάς· ἔστι δὲ παρ' Ἰνδοῖς οὐκ ἄνθος ἀλλὰ πέταλον, οἷα παρ' ἡμῖν τὰ πέταλα τῶν φυτῶν· ὁ μὲν κλέπτει τὴν πνοὴν καὶ τὴν ὁσμὴν οὐκ ἐπιδείκνυται· ἢ γὰρ ἀλαζονεύεσθαι πρὸς τοὺς εἰδότας ὀκνεῖ τὴν ἡδονὴν ἢ τοῖς πολίταις φθονεῖ· ἂν δὲ τῆς γῆς μικρὸν ἐξοικήσῃ καὶ ὑπερβῇ τοὺς ὅρους, ἀνοίγει τῆς κλοπῆς τὴν ἡδονὴν καὶ ἄνθος ἀντὶ φύλλου γίνεται καὶ τὴν ὁσμὴν ἐνδύεται.

Achilles Tatius Scr. Erot., Leucippe et Clitophon Book 4, chapter 5, section 3, line 1

μέλαν τοῦτο ῥόδον Ἰνδῶν· ἔστι δὲ τοῖς ἐλέφασιν σιτίον, ὥς τοῖς βουσί παρ' ἡμῖν ἡ πόα.

8.25 Antenor Hist.

Antenor Hist., Fragmentum (2322: 003) “FHG 4”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 1, line 14

Λέγει δὲ ὁ Ἀντήνωρ καὶ ἔτι κατὰ τὴν Ἰδὴν τὴν Κρηῖσαν ἐκείνου τοῦ γένους τῶν μελιττῶν εἶναι ἰνδάλματα, οὐ πολλὰ μὲν, εἶναι δ' οὖν καὶ πι- κρὰς ἐντυχεῖν, ὥς ἐκεῖναι ἦσαν.

8.26 Julianus Scr. Eccl.

Julianus Scr. Eccl., Commentarius in Job (4105: 001) “Der Hiobkommentar des Arianers Julian”, Ed. Hagedorn, D. Berlin: De Gruyter, 1973; Patristische Texte und Studien 14. Page 173, line 14

> οὐδὲν τούτων τῶν ἐπὶ γῆς καλλίστων ἢ τιμίῳ τῇ σοφίᾳ συγκριθῆναι δύναται· οὐκ ἄβυσσος, οὐ πλῆθος, οὐ θαλάσσης σεσωρευμένα πελάγη, οὐχ ὁ ταύτης ὄγκος περιγραφῆται ταύτην <δύναται>· οὐ στυγνότης ἢ χρυσίου μαρμαρυγή, οὐ λίθων Ἰν- δικῶν ξένη θέα σέλας ἐκπέμπουσα εἰς τὰς τῶν ὁρώντων ὄψεις, οὐδὲ τὰ κάλλιστα τῶν ὄντων, οὐδὲ τὰ ἐκλελεγμένα, οὐχ ὕψος οὐρανοῦ, οὐ πλάτος γῆς ἀντιταλαντεύ- σει ποτὲ τῇ σοφίᾳ, οὐχ ὁ διειδὴς καὶ καθαρὸς ὕελος.

Julianus Scr. Eccl., Commentarius in Job Page 236, line 1

χρυσὸν καὶ ἄργυρον καὶ χαλκὸν καὶ σίδηρον μόλιβδον κασσίτερον ἐκ τῶν λαγόνων τῆς γῆς ἀνωρύξατο, λίθους Ἰνδικούς καὶ πέπλον τὸ ἐκ Σηρῶν σκωλήκων ὃν γένημα ἐξεῦρεν, καὶ τῆς θαλαττίας κόχλου τὸ αἶμα πολυπραγμονῶν ἔσχεν τὸ εὖαν- θὲς τῆς πορφύρας.

Julianus Scr. Eccl., Commentarius in Job Page 236, line 5

οὐκ ἔλαθεν αὐτὸν πῖνα, οὐ κατεκρύβη αὐτὸν ὁ βόμβυξ, καὶ οὐκ ἔφυγεν αὐτὸν τὰ διάφορα τῶν βυσσοποιῶν χρώματα οὐδὲ τὰ ποικίλα τῶν ἀρωμάτων, οὐκ Ἰνδικοὶ κόκκοι, οὐχὶ ποῶν τὰ ἄνθη, οὐ τῶν ῥιζῶν αἱ δυνάμεις, οὐ τῶν ἔρπε- τῶν αἱ ἐνέργειαι, οὐχὶ ἰχθύων ἢ ὀρνίθων ποικιλία, οὐ τῶν βλαβερῶν ἡ ἀποφυγή, οὐ τῶν προσφύων ἡ χρῆσις, οὐχ ἡ ἐξ ἰατρικῆς ὑγεία, οὐχὶ τῶν

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

μελιττῶν ἢ ἔργα- σία, οὐ τοῦ γάλακτος τὸ προσηνές, οὐ τῶν ἀκροδρύων τὸ πολυσχιδές, οὐχ αἱ τού- των ποιότητες.

Julianus Scr. Eccl., Commentarius in Job Page 291, line 17

εἶδος δέ ἐστι λίθου οὕτω καλούμενον παρ' Ἰνδοῖς, ὅπερ σίδηρος οὐ δύναται διατεμεῖν, τούναν-
τίον δὲ πρὶν τι ἂν αὐτὸν διάθῃται αὐτὸς φθάσας θρύπτεται διὰ τὸ ἀντιτυπές.

Julianus Scr. Eccl., Commentarius in Job Page 311, line 19

καὶ Ἡρόδοτος ὁ ἱστοριογράφος φησί· περιτέμνονται δὲ Ἴνδοι καὶ Αἰγύπτιοι καὶ Ἀραβες
καὶ οἱ ἐν Παλαιστίνῃ Σύροι, τοὺς Ἰουδαίους καταλέγων.

8.27 Lycophron Trag.

Lycophron Trag., Alexandra (0341: 002) “Lycophronis Alexandra”, Ed. Mascialino, L. Leipzig: Teubner, 1964. Line 254

οἰμωγὴ δέ μοι ἐν ὥσὶ πύργων ἐξ ἄκρων ἰνδάλλεται, πρὸς αἰθέρος κυροῦσα νηνέμους ἔδρας,
γόφῳ γυναικῶν καὶ καταρραγαῖς πέπλων, ἄλλην ἐπ' ἄλλῃ συμφορὰν δεδεγμένων.

Lycophron Trag., Alexandra Line 597

Ὁ δ' Ἀργυρίππαν Δαυνίων παγκληρίαν παρ' Αὐσονίτην Φυλαμὸν δαμήσεται, πικρὰν
ἐταίρων ἐπτερωμένην ἰδὼν οἰωνόμικτον μοῖραν, οἱ θαλασσίαν δίαίταν αἰνήσουσι πορκέων δίκην,
κύκνοισιν ἰνδαλθέντες εὐγλήνοισι δομήν.

Lycophron Trag., Alexandra Line 961

αἱ δ' αὖ παλαιστοῦ μητέρος Ζηρυνθίας σηκὸν μέγαν δείμαντο δωτίνην θεᾶ, μόρον φυγοῦσαι
καὶ μονοικήτους ἔδρας, ὧν δὴ μίαν Κριμισός, ἰνδαλθεὶς κυνί, ἔξευξε λέκτροις ποταμός· ἡ δὲ δαίμονι
τῷ θηρομίκτῳ σκύλακα γενναῖον τεκνοῖ, τρισσῶν συνοικιστῆρα καὶ κτίστην τόπων.

8.28 Paulus Silentarius Poeta

Paulus Silentarius Poeta, Descriptio Sanctae Sophiae (4039: 001) “Prokop. Werke, vol. 5 [Die Bauten]”, Ed. Veh, O. Munich: Heimeran, 1977. Line 230

ἡρεμέει καὶ Μῆδος ἀναξ καὶ Κελτὶς ὁμοκλή, καὶ ἕξφοις ὑμετέροις φιλοτήσιον ὥπασε θά-
κοις Ἰνδὸς ἀνὴρ, ἐλέφαντας ἄγων καὶ μάργαρα πόντου· Καρχηδῶν γόνυ δούλον ἐμοῖς ἐκλινε
τροπαίσις.

Paulus Silentarius Poeta, Descriptio Sanctae Sophiae Line 694

οὐδὲ μὲν οὐ μούνοισι ἐπὶ τείχεσιν, ὅππῃσιν μύστην ἄνδρα πολυγλώσσοιο διακρίνουσιν ὁμί-
λου, γυμνάς ἀργυρέας ἔβαλε πλάκας, ἀλλὰ καὶ αὐτοὺς κίονας ἀργυρέοισιν ὅλους ἐκάλυψε
μετάλλοις, τηλεβόλοισι σελάεσσι λελαμπότας, ἐξάκι δοιούς· οἷς ἐπι, καλλιπόνιοι χερὸς τεχνή-
μονι ἔνθμῳ, ὀξυτέρους κύκλοιο χάλυψ κοιλήνατο δίσκους, ὧν μέσον ἀχράντοιο θεοῦ δείκῃλα
χαράξας ἄσπορα δυσαμένου βροτέης ἰνδάλματα μορφῆς, πῇ μὲν εὐπτερύγων στρατὸν ἔξεσεν

8.29. SIMPLICIUS PHIL.

*ἀγγελιάων αὐχενίων ξυνοχῆα κατακλίνοντα τενόντων (οὐ γὰρ ἰδεῖν τέτληκε θεοῦ σέβας οὐδὲ καλύπτρηι ἀνδρομέηι κρυφθέντος, ἐπεὶ θεός ἐστιν ὁμοίως ἐσσάμενος καὶ σάρκα λυτήριον ἀμ-
πλακιάων), πῆι δὲ θεοῦ κήρυκας ὁδοὺς ἥσκησε σιδήρου τοὺς προτέρους, πρὶν σάρκα λαβεῖν θεόν,
ᾧν ἀπὸ φωνῆς ἐσσομένου Χριστοῦ διέπτατο θέσπις ἀοιδή.*

8.29 Simplicius Phil.

Simplicius Phil., In Aristotelis quattuor libros de caelo commentaria (4013: 001) “Simplicii in Aristotelis de caelo commentaria”, Ed. Heiberg, J.L. Berlin: Reimer, 1894; Commentaria in Aristotelem Graeca 7. Volume 7, page 548, line 2

*εἰ δὲ μὴ πάνυ μεγάλη, φησὶν, ἐστὶν ἡ γῆ, οὐ χρὴ νομίζειν ἄπιστα λέγειν τοὺς ὑπολαμβάνον-
τας τὸν δυτικώτατον καὶ τὸν ἀνα- τολικώτατον τῶν ἐγνωσμένων ἡμῖν τόπων τὸν τε περὶ τὰ
Γάδειρα καὶ τὰς Ἡρακλείους στήλας, ὃν Ἡράκλειαν ἐκάλεσε, καὶ τὸν περὶ τὴν Ἰνδικὴν συνά-
πτειν ἀλλήλοις οὐ πόρρωθεν, καὶ οὕτως εἶναι τὴν θάλατταν μίαν τὴν τε Ἐρυθρὰν καλουμένην
καὶ τὴν παρ’ ἡμῖν.*

8.30 Oppianus Epic.

Oppianus Epic., Halieutica (0023: 001) “Oppian, Colluthus, Tryphiodorus”, Ed. Mair, A.W. Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1928, Repr. 1963. Book 2, line 233

*Πουλυπόδων δ’ οὐπω τιν’ οἶομαι ἔμμεν’ ἄπυστον τέχνης, οἱ πέτρησιν ὁμοῖοι ἰνδάλλονται,
τὴν κε ποτιπτύξωσι περὶ στείρης τε βάλονται.*

Oppianus Epic., Halieutica Book 5, line 17

*ὅσους μὲν κατ’ ὄρεσφι βίην ἄτρεστον ἔχοντας θῆρας ὑπερφιάλους βροτὸς ἐσβεσεν· ὅσσα
δὲ φύλα οἰωνῶν νεφέλῃσι καὶ ἥερι δινεύοντα εἴλε, χαμαίζηλόν περ ἔχων δέμας· οὐδὲ λέοντα
ῥύσατ’ ἀγνορίῃ δηθημένοι, οὐδ’ ἐσάωσεν αἰετὸν ἠνεμόεις πτερύγων ῥόθος, ἀλλὰ καὶ Ἰνδὸν
θῆρα κελαινόριον ὑπέρβιον ἄχθος ἀνάγκη κλῖναν ἐπιβρίσαντες, ὑπὸ ζεύγλῃσι δ’ ἔθηκαν οὐρήων
ταλαεργὸν ἔχειν πόνον ἐλκυστῆρα.*

8.31 Pseudo-Symeon Hist.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) (3182: 001) “Theophanes Continuatus, Ioannes Cameniata, Symeon Magister, Georgius Monachus”, Ed. Bekker, I. Bonn: Weber, 1838; Corpus scriptorum historiae Byzantinae. Page 723, line 3

8.31. PSEUDO-SYMEON HIST.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 742, line 13

37. Τῇ ιη' τοῦ Ἰουνίου μηνός, τῆς ε' ἰνδικτιῶνος, τελευτᾷ Στέφανος πατριάρχης, κρατήσας ἔτη β' μηνῶν ια'.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 744, line 21

41. Τῷ δὲ Αὐγούστῳ μηνί, τῆς δ' ἰνδικτιῶνος, τελευτᾷ Χριστοφόρος ὁ βασιλεύς, καὶ ἐτάφη ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 745, line 15

43. Τῷ δὲ Φεβρουαρίῳ μηνί, τῆς ε' ἰνδικτιῶνος, τῇ ἑορτῇ τῆς ὑπαπαντῆς, χειροτονεῖται πατριάρχης ὁ ἑηθείς τοῦ βασιλέως υἱὸς Θεοφύλακτος, τοποτηρητῶν ἐκ Ῥώμης ἀνελθόντων καὶ τόμον συνοδικὸν ἐπιφερομένων περὶ τῆς αὐτοῦ χειροτονίας διαγορεύοντα· οἱ καὶ τῷ πατριαρχικῷ θρόνῳ τοῦτον ἐνίδρυσαν.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 746, line 1

44. Μηνὶ Ἀπριλλίῳ, ἰνδικτιῶνος ζ', γέγονε πρώτη ἐκ- στρατεία τῶν Τούρκων κατὰ Ῥωμανίας· καὶ κατατρέχουσι μέχρι τῆς πόλεως, καὶ λεηλατοῦσι πᾶσαν Θρακίαν ψυχὴν.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 748, line 1

47. Τῷ δὲ Ἀπριλλίῳ μηνί, τῆς α' ἰνδικτιῶνος, πάλιν ἦλθον οἱ Τούρκοι μετὰ πλείστης δυνάμεως· ὁ δὲ παρακοιμώμενος ἐξελθὼν σπονδὰς εἰρηνικὰς μετ' αὐτῶν ἐποίησατο, ὅθεν καὶ ἐπὶ χρόνους ε' ἡ εἰρήνη διεφυλάχθη.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 748, line 5

48. Τῇ δὲ β' ἰνδικτιῶνι, Πασχάλιος πρωτοσπαθάρης καὶ στρατηγὸς Λαγουβαρδίας ἀποστέλλεται πρὸς ἑῆγα τῶν Φράγγων, ἀγαγεῖν τὴν αὐτοῦ θυγατέρα Ῥωμανῶ τῷ Κωνσταντίνῳ τοῦ γαμ- βροῦ αὐτοῦ υἱῷ εἰς νύμφην.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 748, line 9

ἦν καὶ μετὰ πλούτου πολλοῦ ὁ Πασχάλιος ἀνήγαγεν· καὶ γέγονεν ὁ γάμος Σεπτεμβρίῳ μηνί, ἰνδικτιῶνος γ'.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 748, line 13

49. Τῷ Δεκεμβρίῳ μηνί, τῆς δ' ἰνδικτιῶνος, ἀνέμου βιαίου καὶ σφοδροῦ πνεύσαντος οἱ λεγόμενοι ἐν τῷ ἱππικῷ ἔξ' ἑναντίας τοῦ βασιλικοῦ θρόνου Δῆμοι κατέπεσον, καὶ συνέτριψαν τὰ ὑποκάτω αὐτῶν βάθρα καὶ στήθεα.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 753, line 2

Ἐπελείφθη οὖν αὐτοκράτωρ Κωνσταντῖνος ὁ τούτου γαμβρός, μηνὶ Δεκεμβρίῳ κ', ἰνδικτιῶνος γ', ἐν ἔτει ϠϚυνδ'.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 754, line 10

3. Τῷ Δεκεμβρίῳ μηνί, τῆς ε' ἰνδικτιῶνος, ἐπιβουλῆς γενομένης εἰς τὸν Στέφανον ἐκ τῆς νήσου ἀγαγεῖν ἐν τῷ παλατίῳ, ἐπεὶ παρὰ Μιχαὴλ τοῦ Διαβολίνου ἐμνηύθη, πάντων κρατηθέντων τῶν μὲν τὰς ῥίνας καὶ τὰ ὦτα ἀπέτεμε, τοὺς δὲ δαρμῷ ἀφορήτῳ ὑπέβαλεν καὶ ὄνοις ἐπικαθίσας καὶ θριαμβεύσας ἐξώρισεν.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 754, line 16

4. Τῇ δὲ κε' τοῦ Ἰουλίου μηνός, τῆς ε' ἰνδικτιῶνος, Ῥωμανὸς ὁ βασιλεὺς ἐν τῇ νήσῳ τελευτᾷ, καὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐν τῇ πόλει διακομισθὲν ἐν τῇ αὐτοῦ ἀπετέθη μονῇ.

Pseudo-Symeon Hist., Chronographia (partim edita e cod. Paris. gr. 1712) Page 756, line 17

ἔζησε δὲ χρόνους νε', καὶ ἐτελεύτησε μηνὶ Νοεμβρίῳ ιε', ἰνδικτιῶνος ε', ἔτους ϠϚυνς', καταλείψας αὐτοκράτορα Ῥωμανὸν τὸν υἱὸν αὐτοῦ μεθ' Ἑλένης τῆς μητρὸς αὐτοῦ.

8.32 Joannes Antiochenus Hist.

Joannes Antiochenus Hist., Fragmenta (4394: 001) "FHG 4", Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1841–1870. Fragment 24, line 16

3. Δίκτυς ὁ μετὰ Ἰδομενέως συστρατεύσας ἐπὶ Τροίαν φησὶν ὅτι Πρίαμος ἔπεμψε καὶ πρὸς τὸν Δαυὶδ πρεσβείαν, καὶ πρὸς Ταυτάνην βασιλέα Ἀσσυρίων· καὶ ὁ μὲν Δαυὶδ οὐ προσήκατο ταύτην, ὁ δὲ Ταυτάνης ἔπεμψε τὸν Τιθωνὸν καὶ τὸν Μέμνονα μετὰ πλῆθους Ἰνδῶν.

Joannes Antiochenus Hist., Fragmenta Fragment 41c, line 1

Suidas I. I: "Τσπερον δὲ εἰς Ἰνδίαν ἀφικόμενος ὑπὸ Κανδάκης τῆς βασιλίσσης συνελήφθη ἐν ἰδιώτου σχήματι.

Joannes Antiochenus Hist., Fragmenta Fragment 206, line 25

– Ὁ δὲ τοῦ βασιλέως γαμβρὸς Ζήνων, τὴν ὑπάτον ἔχων ἀρχήν, ἔστειλε τοὺς τὸν Ἰνδακὸν ἀποστή-
σοντας ἀπὸ τοῦ λεγομένου Παπιρίου λόφου.

Joannes Antiochenus Hist., Fragmenta Fragment 206, line 28

Τοῦτον γὰρ πρῶτος Νέων ἐφώλευε· μεθ' ὃν Παπίριος καὶ ὁ τοῦδε παῖς Ἰνδακός, τοὺς προσδίκους ἀπαντας βιαζόμενοι, καὶ τοὺς διοδεύοντας ἀναιροῦντες.

Joannes Antiochenus Hist., Fragmenta Fragment 214, line 71

Ὁ δὲ Ἰλλοὺς, τὴν τοῦ φρουρίου φυλακὴν ἐπιτρέψας Ἰνδακῷ Κοττούνῃ, τὸ λοιπὸν ἐσχόλαζεν ἐν ἀναγνώσει βιβλίων.

8.33 Cosmas Indicopleustes Geogr.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana (4061: 002) “Cosmas Indicopleustès. Topographie chrétienne, 3 vols.”, Ed. Wolska-Conus, W. Paris: Cerf, 1:1968; 2:1970; 3:1973; Sources chrétiennes 141, 159, 197. Book pinax, section 3, line 33

Ἔτι ἔξωθεν τῆς βίβλου· Λόγος ἰα΄ Καταγραφὴ ζώων ἰνδικῶν καὶ περὶ αὐτῶν διήγησις· ἔτι καὶ περὶ δένδρων καὶ τῆς Ταπροβάνης.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 27, line 15

Τίσι δὲ Σήμ, Ἐλάμ καὶ Ἀσούρ», τουτέστιν Ἐλαμίτας καὶ Ἀσσυ-ρίους καὶ τὰ λοιπὰ ἔθνη καὶ ὅσα ἐξ αὐτῶν ἐπεκτάθησαν ἕως Ἀσίας καὶ ἐπὶ ἀνατολήν, Περσῶν, Οὐννων, Βάκτρων, Ἰνδῶν ἕως τοῦ Ὤκεανοῦ.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 29, line 9

Ἰσασι δὲ τὸ λεγόμε-νον Ζίγγιον οἱ τὴν Ἰνδικὴν θάλατταν διαπερῶντες, περαιτέρω τυγχάνον τῆς λιβανωτοφόρου γῆς τῆς καλουμένης Βαρβαρίας, ἣν καὶ κυκλοῖ ὁ Ὤκεανὸς εἰσβάλλων ἐκεῖθεν εἰς ἀμφοτέρους τοὺς κόλπους.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 30, line 1

Ἐν οἷς ποτε πλεύσαντες ἐπὶ τὴν ἐσωτέραν Ἰνδίαν καὶ ὑπερβάντες μικρῶ πρὸς τὴν Βαρβαρίαν, ἔνθα περαιτέρω τὸ Ζίγγιον τυγχάνει – οὕτω γὰρ καλοῦσι τὸ στόμα τοῦ Ὤκεανοῦ –, ἐκεῖ ἐθεωροῦμεν εἰς τὰ δεξιὰ εἰσερχομένων ἡμῶν πλη-θος πετεινῶν πετομένων, ἃ καλοῦσι σοῦσφα· εἰσὶ δὲ ὡς διπλοὶ ἰκτῖνες, καὶ μείζους μικρόν· καὶ δυσαιρίαν πολλὴν ἐν τῷ τόπῳ, ὡς καὶ δειλιάν πάντα.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 45, line 7

Αὕτη δὲ ἡ χώρα τοῦ μεταξίου ἐστὶν ἐν τῇ ἐσωτέρᾳ πάντων Ἰνδία, κατὰ τὸ ἀριστερόν μέρος εἰσιόντων τοῦ Ἰνδικοῦ πελάγους, περαι-τέρω πολὺ τοῦ Περσικοῦ κόλπου καὶ τῆς νήσου τῆς καλου-μένης παρὰ μὲν Ἰνδοῖς, Σελεδίβα, παρὰ δὲ τοῖς Ἑλλήσι, Ταπροβάνη, Τζίνιστα οὕτω καλουμένη, κυκλομένη πάλιν ἐξ ἀριστερῶν ὑπὸ τοῦ Ὤκεανοῦ, ὥσπερ καὶ ἡ Βαρβαρία κυκλοῦ-ται ἐκ δεξιῶν ὑπ’ αὐτοῦ.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 45, line 13

Καὶ φασιν οἱ Ἰνδοί, οἱ φιλόσοφοι, οἱ καλούμενοι Βραχμάνες, ὅτι ἐὰν βάλης ἀπὸ Τζίνιστα σπαρτίον διελθεῖν διὰ Περσίδος ἕως Ῥωμανίας ὡς ἀπὸ κανόνος τὸ μεσαίτατον τοῦ κόσμου ἐστί, καὶ τάχα ἀληθεύουσιν.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 46, line 9

Ὅσον γὰρ διάστημα ἔχει ὁ κόλπος ὁ Περσικὸς εἰσερχόμενος ἐν Περσίδι, τοσοῦτο διάστημα πάλιν ἀπὸ τῆς Ταπροβάνης καὶ περαιτέρω ποιεῖ ἐπὶ τὰ ἀριστερὰ εἰσερχόμενός τις ἐν αὐτῇ τῇ Τζίνιστα, μετὰ τὸ καὶ διαστήματα πάλιν ἱκανὰ ἔχειν ἀπὸ τῆς ἀρχῆς ἐξ αὐτοῦ τοῦ Περσικοῦ κόλπου, ὅλον τὸ Ἰνδικὸν πέλαγος ἕως Ταπροβάνης καὶ ἐπέκεινα.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 47, line 5

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Μετρητέον δὲ οὕτως· ἀπὸ τῆς Τζίνιστα ἕως τῆς ἀρχῆς τῆς Περσίδος πᾶσα ἡ Οὐννια καὶ Ἰνδία καὶ ἡ Βάκτρων χώρα εἰσὶ περί που μοναὶ ρν', εἰ μὴ τι πλείους, οὐκ ἔλαττον· καὶ πᾶσα ἡ Περσῶν χώρα μο- ναὶ π'· καὶ ἀπὸ τοῦ Νίσιβι εἰς Σελεύκειαν μοναὶ ιγ'· καὶ ἀπὸ Σελευκείας εἰς Ῥώμην καὶ Γάλλους καὶ Ἰβηρίαν, τοὺς νῦν λεγομένους Ἰσπανούς, ἕως Γαδείρων ἔξω εἰς τὸν Ὠκεανόν, μοναὶ ρν' καὶ πλέον, ὥς γίνεσθαι τὸ πᾶν μοναὶ υ' πλέον ἔλαττον.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 49, line 8

Ἔστι δὲ ἡ χώρα ἡ λιβανωτοφόρος εἰς τὰ ἄκρα τῆς Αἰθιοπίας, μεσόγειος μὲν οὖσα, τὸν δὲ Ὠκεανὸν ἐπέκεινα ἔχουσα, ὅθεν καὶ οἱ τὴν Βαρβαρίαν οἰκοῦντες, ὥς ἐγγύθεν ὄντες, ἀνερχόμενοι εἰς τὰ μεσόγεια καὶ πραγματευόμενοι κομίζουσιν ἐξ αὐτῶν τὰ πλείστα τῶν ἡδυσμάτων, λίβανον, κασίαν, κάλαμον καὶ ἕτερα πολλά, καὶ αὐτὰ πάλιν διὰ θαλάσσης κομίζουσιν ἐν τῇ Ἀδούλῃ καὶ ἐν τῇ Ὀμηρίτῃ καὶ ἐν τῇ ἐσωτέρᾳ Ἰνδία καὶ ἐν τῇ Περσίδι.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 59, line 5

Κυριεύσας δὲ τῆς τε ἐντὸς Εὐφράτου χώρας πάσης, καὶ Κιλικίας καὶ Παμφυλίας καὶ Ἰωνίας καὶ τοῦ Ἑλλησπόντου καὶ Θράκης καὶ τῶν δυνάμεων τῶν ἐν ταῖς χώραις ταύταις πασῶν καὶ ἐλεφάντων ἰνδικῶν, καὶ τοὺς μονάρχους τοὺς ἐν τοῖς τόποις πάντας ὑπηκόους καταστήσας, διέβη τὸν Εὐφράτην ποταμὸν καὶ, τὴν Μεσοποταμίαν καὶ Βαβυλωνίαν καὶ Σουσιάνην καὶ Περσίδα καὶ Μηδείαν καὶ τὴν λοιπὴν πᾶσαν ἕως Βακτριανῆς ὑφ' αὐτῷ ποιησάμενος καὶ ἀναζητήσας ὅσα ὑπὸ τῶν Περσῶν ἱερὰ ἐξ Αἰγύπτου ἐξήχθη καὶ ἀνακομίσας μετὰ τῆς ἄλλης γάζης τῆς ἀπὸ τῶν τόπων εἰς Αἴγυπτον, δυνάμεις ἀπέστειλε διὰ τῶν ὀρυχθέντων ποταμῶν.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 79, line 2

Ἐφόρου ἐκ τῆς δ' Ἱστορίας

Τὸν μὲν γὰρ Ἀπηνιῶτην καὶ τὸν ἐγγὺς ἀνατολῶν τόπον Ἰνδοὶ κατοικοῦσι, τὸν δὲ πρὸς Νότον καὶ μεσημβρίαν Αἰθίοπες νέμονται, τὸν δὲ ἀπὸ Ζεφύρου καὶ δυσμῶν Κελτοὶ κατέχουσι, τὸν δὲ κατὰ Βορρᾶν καὶ τὰς ἄρκτους Σκυῖται κατοικοῦσιν.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 79, line 7

Ἔστι μὲν οὖν οὐκ ἴσον ἕκαστον τούτων τῶν μερῶν, ἀλλὰ τὸ μὲν τῶν Σκυθῶν καὶ τῶν Αἰθιόπων μείζον, τὸ δὲ τῶν Ἰνδῶν καὶ τῶν Κελτῶν ἔλαττον.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 79, line 9

Οἱ μὲν γὰρ Ἰνδοὶ εἰσι μεταξὺ θερινῶν καὶ χειμερινῶν ἀνατολῶν, Κελτοὶ δὲ τὴν ἀπὸ θερινῶν μέχρι χειμερινῶν δυσμῶν χώραν κατέ- χουσι.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 2, section 81, line 4

Ὁ μὲν Φεισῶν ἐν τῇ Ἰνδικῇ χώρᾳ, ὃν καλοῦσιν τινες Ἰνδὸν ἢ Γάγγην, ἐκ τῶν μεσογείων που κατερχόμενος πολλὰς ἐκροίας ἔχει ἐν τῇ Ἰνδικῇ πελάγει.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 3, section 65, line 1

Ἐν Ταπροβάνῃ νήσῳ ἐν τῇ ἐσωτέρᾳ Ἰνδία, ἔνθα τὸ Ἰνδικὸν πέλαγός ἐστι, καὶ Ἐκκλησία χριστιανῶν ἐστὶν ἐκεῖ καὶ κληρικοὶ καὶ πιστοί, οὐκ οἶδα δὲ εἰ καὶ περαιτέρω.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 3, section 65, line 7

8.33. COSMAS INDICOPLEUSTES GEOGR.

Ὁμοίως καὶ ἐν τῇ νήσῳ τῇ καλουμένῃ Διοσκορίδους κατὰ τὸ αὐτὸ Ἰνδικὸν πέλαγος, ἔνθα καὶ οἱ παροικοῦντες ἑλληνιστὶ λαλοῦσι, πάροιχοι τῶν Πτολε- μαίων τῶν μετὰ Ἀλέξανδρον τὸν Μακεδὸνα ὑπάρχοντες, καὶ κληρικοὶ εἰσιν ἐκ Περσίδος χειροτονούμενοι καὶ πεμπόμενοι ἐν τοῖς αὐτόθι καὶ χριστιανοὶ πλῆθος· ἦν νῆσον παρέπλευσα μὲν, οὐ κατήλθον δὲ ἐν αὐτῇ· συνέτυχον δὲ ἀνδράσι τῶν ἐκεῖ ἑλληνιστὶ λαλοῦσιν, ἐλθοῦσιν ἐν τῇ Αἰθιοπία.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 3, section 65, line 14

Ὁμοίως δὲ καὶ ἐπὶ Βάκτροις καὶ Οὔνοις καὶ Πέρσαις καὶ λοιποῖς Ἰνδοῖς καὶ Περσαρμενίοις καὶ Μήδοις καὶ Ἑλαμίταις καὶ πάσῃ τῇ χώρᾳ Περσίδος καὶ ἐκκλησίαι ἄπειροι καὶ ἐπίσκοποι καὶ χριστιανοὶ λαοὶ πάμπολλοι καὶ μάρτυρες πολλοὶ καὶ μονάζοντες ἡσυ- χασταί.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 6, section 3, line 8

Ὅθεν ἀπαιτηθεὶς τῷ Θῶθ μηνὶ τῆς παρουσίας δεκάτης ἰνδικτιῶνος παρὰ ἀνδρὸς ἐπιστήμονος, Ἀναστασίου τοῦνομα, μηχανικοῦ ἀνδρὸς λογίου καὶ ὑπὲρ πολλοὺς ἐμπείρου, προειπεῖν ἔκλειψιν ἡλίου, ἔφη γενέσθαι ἐν αὐτῷ τῷ καιρῷ κατὰ τὴν δωδεκάτην τοῦ Μεχεῖρ μηνὸς καὶ σεληνιακὴν Μεσορῇ εἰκοστῇ τετάρτῃ πάλιν τῷ αὐτῷ καιρῷ.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 10, section 68, line 11t

Τοῦ αὐτοῦ εἰς τὰ Ἁγία Θεοφάνια, εἰς τὴν γενέθλιον τοῦ Χριστοῦ ἡμέραν, Χοιὰκ λ', ἰνδ. ι' Ἔτεκεν ἡ Παρθένος ἄνθρωπον τέλειον, ἀναμάρτητον.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 10, section 69, line 6t

Καὶ πάλιν, ἐν τῷ Ἀγίῳ Θεοδώρῳ, Τυβὶ η', ἰνδ. ι'

Διὰ γὰρ τοῦ φαινομένου ἔδειξε τὴν δύναμιν τοῦ κρυπτο- μένου.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 10, section 69, line 11t

Τοῦ αὐτοῦ ἐν τῇ Κυρίνου ἐκκλησίᾳ, Κυριακῆς οὔσης, Παχῶν κβ', ἰνδ. ε', ἀναγνωσθέντος τοῦ κατὰ Ἰωάννην Εὐαγγελίου »ὁ δὲ Ἰησοῦς κεκοπιακῶς ἐκ τῆς ὁδοιπορίας ἐκαθέζετο»

Τοιγαροῦν ἐπειδὴ Θεός ἐστιν ἅμα καὶ ἄνθρωπος ὁ αὐτός, πιστοῦται διὰ τῶν ἔργων ἀμφότερα καὶ λανθάνειν τοὺς ὁρῶν- τας οὐκ ἀνέχεται.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 10, section 72, line 13t

Τοῦ αὐτοῦ ἐν τῇ τεσσαρακοστῇ τῆς ἀναλήψεως τοῦ Κυρίου ἡμέρα, Παχῶν κε', ἰνδ. θ', εἰς τὸ ῥητὸν τοῦ κατὰ Ἰωάννην Εὐαγγελίου τὸ λέγον »συμφέρει ὑμῖν ἵνα ἐγὼ ἀπέλθω»

Ἀλλ' οἶα καὶ νῦν τὰ παρ' αὐτοῦ πρὸς τοὺς ἀοιδίμους μαθητὰς εἰρημένα κατανοήσωμεν· «Συμφέρει ὑμῖν ἵνα ἐγὼ ἀπέλθω.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section t, line 2

ΛΟΓΟΣ ΙΑ' Καταγραφὴ περὶ ζώων ἰνδικῶν καὶ περὶ δένδρων ἰνδικῶν καὶ περὶ τῆς Τα- προβάνης νήσου.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 3, line 1

Τοῦτο τὸ ζῷον ὁ ταυρέλαφος καὶ ἐν τῇ Ἰνδία καὶ ἐν τῇ Αἰθιοπία εὕρισκεται.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 3, line 2

Ἀλλὰ τὰ μὲν τῆς Ἰνδίας ἡμέρᾳ εἰσι, καὶ ἐν αὐτοῖς ποιοῦσιν ἐν δισακκίοις βασταγάς πιπέ- ρεως καὶ ἐτέρων φορτίων, καὶ γάλα ἀμέλγουσιν ἐξ αὐτῶν καὶ βούτυρον.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 5, line 1

Ἀγριόβους ἐστὶ μέγας, τῆς Ἰνδικῆς τοῦτο τὸ ζῶον, ἐξ οὗ ἐστὶν ἡ λεγομένη τοῦφα, ἥ κοσμοῦσι τοὺς ἵππους καὶ τὰ βάνδα οἱ ἄρχοντες εἰς τοὺς κάμπους.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 11, line 2

Τὸ δὲ ἄλλο τῶν ἀργελλίων ἐστὶ τῶν λεγομένων, τουτέστι τῶν μεγάλων καρύων τῶν ἰνδικῶν· παραλλάττει δὲ τοῦ φοίνικος οὐδέν, πλην ὅτι τελειότερόν ἐστι καὶ ἐν ὕψει καὶ ἐν πάχει καὶ ἐν τοῖς βαῖοις.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 11, line 8

Οὐ βάλλει δὲ καρπὸν, εἰ μὴ δύο ἢ τρία σπάθια ἀπὸ τριῶν ἀργελλίων· ἔστι δὲ ἡ γεῦσις γλυκεῖα πάνυ καὶ ἡδεῖα, ὡς τὰ κάρυα τὰ χλωρά· ἐξ ἀρχῆς μὲν τοῦ ὕδατος γέμει γλυκέος πάνυ, ὅθεν καὶ ἐξ αὐτῶν πίνουσιν οἱ Ἰνδοὶ ἀντὶ οἴνου· λέγεται δὲ τὸ πινόμενον ῥογχοσοῦρα ἡδὺ πάνυ· τρυγώμενον δὲ καὶ παραμένον αὐτὸ τὸ ἀργελλιν, πηγνυται τὸ ὕδωρ αὐτοῦ κατὰ πρόσβασιν τὸ ἐπὶ τὸ ὄστρακον αὐτοῦ, καὶ μένει τὸ ὕδωρ εἰς τὸ μέσον ἀπηκτον, μέχρις ὅτου καὶ αὐτὸ ἐκλίπη· ἐὰν δὲ καὶ πλέον παραμείνη, ταγγίζει ὁ καρπὸς αὐτοῦ ὁ πεπηγὼς καὶ οὐ δύναται ἔτι βρωθῆναι.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 13, line 2

Περὶ τῆς Ταπροβάνης νήσου

Αὕτη ἐστὶν ἡ νῆσος ἡ μεγάλη ἐν τῷ Ὠκεανῷ, ἐν τῷ Ἰνδικῷ πελάγει κειμένη, παρὰ μὲν Ἰνδοῖς καλουμένη Σιελε-δίβα, παρὰ δὲ Ἑλλησι Ταπροβάνη, ἐν ἣ εὐρίσκεται ὁ λίθος ὁ ὑάκινθος· περαιτέρω δὲ κεῖται τῆς χώρας τοῦ πιπέρεως.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 15, line 1

Ἐξ ὅλης δὲ τῆς Ἰνδικῆς καὶ Περσίδος καὶ Αἰθιοπίας δέχεται ἡ νῆσος πλοῖα πολλὰ, μεσῆτις οὔσα, ὁμοίως καὶ ἐκπέμπει.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 16, line 1

Ἡ Σινδοῦ δὲ ἐστὶν ἀρχὴ τῆς Ἰνδικῆς.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 16, line 2

Διαιρεῖ γὰρ ὁ Ἰνδὸς ποταμός, τουτέστιν ὁ Φεισών, εἰς τὸν κόλπον τὸν Περσικὸν ἔχων τὰς ἐκροίας, τὴν τε Περσίδα καὶ τὴν Ἰνδιάν.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 16, line 4

Εἰσὶν οὖν τὰ λαμπρὰ ἐμπόρια τῆς Ἰνδικῆς ταῦτα, Σινδοῦ, Ὀρροθᾶ, Καλλιανᾶ, Σιβῶρ, ἡ Μαλέ, πέντε ἐμπόρια ἔχουσα βάλλοντα τὸ πέπερι, Πάρτι, Μαγγαρούθ, Σαλοπάτανα, Ναλο-πάτανα, Πουδαπάτανα.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 16, line 14

Αὕτη οὖν ἡ Σιελεδίβα μέση πῶς τυγχάνουσα τῆς Ἰνδικῆς, ἔχουσα δὲ καὶ τὸν ὑάκινθον, ἐξ ὧν τῶν ἐμπορίων δέχεται καὶ ὅλοις μεταβάλλει, καὶ μέγα ἐμπόριον τυγχάνει.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 20, line 4

8.33. COSMAS INDICOPLEUSTES GEOGR.

Ἀνώτεροι δέ, τουτέστι βορειότεροι, τῆς Ἰνδικῆς εἰσι λευκοὶ Οὔννοι, ὁ λεγόμενος Γολλαῖς ἐκβάλλων εἰς πόλεμον, ὥς φασιν, οὐκ ἔλαττον τῶν δισχιλίων ἐλεφάντων καὶ ἵππων πολλήν· κατακρατεῖ δὲ καὶ τῆς Ἰνδικῆς καταδυναστεύων καὶ φόρους ἀπαιτῶν.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 20, line 8

Ποτὲ γοῦν, ὥς φασι, βουλόμενος πόλιν τῶν Ἰνδῶν μεσόγειον πορθῆσαι, τῆς δὲ πόλεως κύκλῳ ὕδατι φρουρουμένης, αὐτὸς ἱκανὰς ἡμέρας περικαθίσας καὶ φρουρήσας καὶ ἀναλώσας τὸ ὕδωρ διὰ τῶν ἐλεφάντων καὶ ἵππων καὶ τοῦ στρατοπέδου, ὕστερον διὰ ξηρᾶς περάσας τὴν πόλιν παρέλαβεν.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 21, line 4

Εἰσφέρουσι γὰρ οἱ Αἰθίοπες συναλλαγὰς ποιοῦντες μετὰ τῶν Βλεμμύων ἐν τῇ Αἰθιοπίᾳ τὸν αὐτὸν λίθον ἕως εἰς τὴν Ἰνδίαν· καὶ αὐτοὶ τὰ καλλιστεύοντα ἀγοράζουσι.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 22, line 1

Οἱ δὲ κατὰ τόπον βασιλεῖς τῆς Ἰνδικῆς ἔχουσιν ἐλέφαντας, οἷον ὁ τῆς Ὀρροθᾶ καὶ ὁ Καλλιανῶν καὶ ὁ τῆς Σινδοῦ καὶ ὁ τῆς Σιβῶρ καὶ ὁ τῆς Μαλέ, ὁ μὲν ἑξακόσια, ὁ δὲ πεντακόσια, ἕκαστος πλέον ἢ ἔλαττον.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 23, line 8

Ὀδόντας δὲ μεγάλους οἱ Ἰνδικοὶ οὐκ ἔχουσιν, ἀλλὰ καὶ ἐὰν σχῶσι, πρίζουσιν αὐτοὺς διὰ τὸ βάρος, ἵνα μὴ βαρῇ αὐτοὺς ἐν τῷ πολέμῳ.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 23, line 13

Οἱ δὲ Αἰθίοπες οὐκ ἴσασι ἡμερῶσαι ἐλέφαντας, ἀλλ' εἰ τύχοι θελῆσαι τὸν βασιλεῖα ἓνα ἢ δεύτερον πρὸς θῆαν, μικροὺς πιάζουσι καὶ ἀνατρέφουσιν· ἔχει γὰρ ἡ χώρα αὐτῶν πληθὺς καὶ μεγάλους ὀδόντας ἔχοντας· ἐκ τῆς γὰρ Αἰθιοπίας καὶ εἰς Ἰνδίαν πλωτίζονται ὀδόντες καὶ ἐν Περσίδι καὶ ἐν τῷ Ὀμηρίτῃ καὶ ἐν τῇ Ῥωμανίᾳ.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 24, line 1

Πᾶσαν δὲ τὴν Ἰνδικὴν καὶ τὴν Οὔννιαν διαιρεῖ ὁ Φεισὼν ποταμός.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 24, line 3

Καλεῖται γὰρ παρὰ τῇ θεῇ Γραφῇ ἡ γῆ τῆς Ἰνδικῆς χώρας «Εὐιλάτ»· οὕτως γὰρ γέγραπται ἐν τῇ Γενέσει· «Ποταμός δὲ ἐκπορεύεται ἐξ Ἐδέμ ποτίζειν τὸν παράδεισον· ἐκεῖθεν ἀφορίζεται εἰς τέσσαρας ἀρχάς· ὄνομα τῷ ἐνὶ Φεισῶν, οὗτος ὁ κυκλῶν πᾶσαν τὴν γῆν Εὐιλάτ· ἐκεῖ οὖν ἐστὶ τὸ χρυσίον, τὸ δὲ χρυσίον τῆς γῆς ἐκείνης καλόν· ἐκεῖ ἐστὶν ὁ ἄνθραξ καὶ ὁ λίθος ὁ πρᾶσινος», γῆν Εὐιλάτ σαφέστερον αὐτὴν ὀνομάσας.

Cosmas Indicopleustes Geogr., Topographia Christiana Book 11, section 24, line 12

Οὗτος δὲ Εὐιλάτ ἐκ τοῦ Χάμ ἐστίν· οὕτω γὰρ πάλιν γέγραπται· «Υἱοὶ Χάμ, Χούς καὶ Μεσραῖμ, Φοῦδ καὶ Χαναάν· υἱοὶ δὲ Χούς, Σαβᾶ καὶ Εὐιλάτ», τουτέστιν Ὀμηρίται καὶ Ἰνδοί· ἡ Σαβᾶ γὰρ ἐν τῷ Ὀμηρίτῃ κεῖται, καὶ Εὐιλάτ ἐν τῇ Ἰνδίᾳ ἐστί· τὰς δύο γὰρ ταύτας χώρας ὁ Περσικὸς κόλπος διαιρεῖ.

8.34 Cyrillus Biogr.

Cyrillus Biogr., Vita Euthymii (2877: 001) “Kyrillos von Skythopolis”, Ed. Schwartz, E. Leipzig: Hinrichs, 1939; Texte und Untersuchungen 49.2. Page 26, line 22

καὶ κατελθὼν Ἰουβενάλιος ὁ ἀρχιεπίσκοπος εἰς τὴν λαύραν ἔχων μεθ’ ἑαυτοῦ Πασσαρίωνα τὸν ἐν ἀγίοις, ὄντα τὸ τνικαῦτα χωρεπίσκοπον καὶ τῶν μοναχῶν ἀρχιμανδρίτην καὶ τὸν πεφωτισμένον Ἡσύχιον τὸν πρεσβύτερον καὶ τῆς ἐκκλησίας διδάσκαλον ἐγκαινίζει τὴν τῆς λαύρας ἐκκλησίαν μηνὶ Μαΐῳ ἐβδόμῃ τῆς ἐνδεκάτης ἰνδικτιόνος κατὰ τὸν πεντηκοστὸν δεῦτερον τῆς τοῦ μεγάλου Εὐθυμίου ἡλικίας χρόνον.

Cyrillus Biogr., Vita Euthymii Page 54, line 10

τεσσάρων δὲ μηνῶν πληρωθέντων μετὰ τὸν ἐγκαινισμὸν εὐσεβῶς καὶ θεαρέστως διαθεμένη εἰς χεῖρας θεοῦ τὸ πνεῦμα παρέθετο μηνὶ Ὀκτωβρίῳ εἰκάδι τῆς τεσσαρεσκαίδεκάτης ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Euthymii Page 54, line 13

Τῷ ἐνενηκοστῷ τῆς τοῦ μεγάλου Εὐθυμίου ἡλικίας χρόνῳ ὁ μέγας πατὴρ ἡμῶν Θεόκτιστος ἡσθένησεν ἀσθένειαν μεγάλην, εἰς ἣν καὶ ἐκοιμήθη μηνὶ Σεπτεμβρίῳ τρίτῃ ἀρχῇ τῆς πέμπτῃς ἰνδικτιόνος <πρεσβύτης καὶ πλήρης ἡμερῶν>.

Cyrillus Biogr., Vita Euthymii Page 60, line 1

οὔτε γὰρ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ἢ οἱ ὀδόντες τὸ παράπαν ἐβλάβησαν, ἀλλὰ στερρός τε καὶ πρόθυμος ὢν ἐτελειώθη, ἡ δὲ τελείωσις αὐτοῦ γέγονεν κατὰ τὴν εἰκάδα τοῦ Ἰαννουαρίου μηνὸς τῆς ἐνδεκάτης ἰνδικτιόνος ἀπὸ μὲν κτίσεως κόσμου, ἀφ’ οὔπερ χρόνος ἤρξατο τῇ τοῦ ἡλίου φορᾷ μετρεῖσθαι, ἔτους πέμπτου ἔξηκοστοῦ ἐνακοσιοστοῦ πεντακισχιλιοστοῦ, ἀπὸ δὲ τῆς τοῦ θεοῦ λόγου ἐκ παρθένου ἐνανθρωπήσεως καὶ κατὰ σάρκα γεννήσεως ἔτους πέμπτου ἔξηκοστοῦ τετρακοσιοστοῦ κατὰ τοὺς συγγραφέντας χρόνους ὑπὸ τῶν ἁγίων πατέρων Ἱππολύτου τοῦ παλαίου καὶ γνωρίμου τῶν ἀποστόλων καὶ Ἐπιφανίου τοῦ Κυπριώτου καὶ Ἡρωνος τοῦ φιλοσόφου καὶ ὁμολογητοῦ.

Cyrillus Biogr., Vita Euthymii Page 70, line 22

ὁκτῶ τοίνυν χρόνους τὴν Εὐθυμίου τοῦ μεγάλου κυβερνήσας μονὴν ὁ Θωμᾶς ἐτελεύτησεν μηνὶ Μαρτίῳ εἰκάδι πέμπτῃ τῆς πέμπτῃς ἰνδικτιόνος ἔτους ἐβδομηκοστοῦ τῆς τοῦ μεγάλου Εὐθυμίου κοιμήσεως. Λεόντιος δὲ τὴν ἡγουμένην παρέλαβεν ὁ ἐμὲ τὸν ἀμαρτωλὸν εἰς τὴν ἐμοὶ σεβασμίαν μονὴν εἰσδεξάμενος.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae (2877: 002) “Kyrillos von Skythopolis”, Ed. Schwartz, E. Leipzig: Hinrichs, 1939; Texte und Untersuchungen 49.2. Page 93, line 14

Αὐτοῦ δὲ ἐν αὐτῷ τῷ κοινοβίῳ ἤδη τὸν δέκατον διατελοῦντος ἐνιαυτὸν συνέβη τελευτῆσαι τὸν τρισμακάριον Θεόκτιστον τρίτῃ τοῦ Σεπτεμβρίου μηνὸς τῆς τετάρτης ἰνδικτιόνος, ὁ δὲ μέγας Εὐθύμιος ἐκεῖσε κατελθὼν καὶ τὸ νικηφόρον κηδεύσας σῶμα Μάριν τινὰ ἀξιοθαύμαστον διάδοχον τῆς ἡγουμενίας κατέστησεν.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 103, line 10

8.34. CYRILLUS BIOGR.

Τοῦ δὲ ἐν ἁγίοις Μαρτυρίου τὸν ὄγδοον ἐν τῇ πατριαρχίᾳ διατε-
 λούντος ἐνιαυτὸν πρὸς
 τὸν θεὸν ἐκδημήσαντος μηνὶ Ἀπριλίῳ τρισκαί- δεκάτῃ τῆς ἐνάτης ἰνδικτιόνης καὶ Σαλουστίου
 τὴν ἱεραρχίαν δια- δεξαμένου τῷ τεσσαρακοστῷ ὀγδῶν τῆς τοῦ πατρὸς ἡμῶν Σάβα ἡλικίας
 χρόνῳ ἀνεφύησαν τινὲς ἐν τῇ αὐτοῦ λαύρᾳ σαρκικοὶ τῷ φρονήματι καὶ κατὰ τὴν γραφὴν
 <πνεῦμα μὴ ἔχοντες>· οἵτινες ἐπὶ χρόνον ἱκανὸν συσκευὴν ποιησάμενοι ἔθλιβον αὐτὸν παντοίως.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 104, line 24

καὶ ταῦτα εἰπὼν λαβὼν τὸν τε μακαρίτην Σάβαν καὶ αὐτοὺς ἐκείνους κατήλθεν εἰς τὴν
 λαύραν ἔχων μεθ' ἑαυτοῦ τὸν μνημονευθέντα σταυροφύλακα Κυρικὸν καὶ τὴν θεοκτίστον ἐκ-
 κλησίαν ἐγκαινίσας θυσιαστήριον ἡγιασμένον ἐν τῇ θεοκτίστῳ κόγχῃ κατέπηξεν πλείστα
 λείψανα ἁγίων καὶ καλλινίκων μαρτύρων ὑπὸ τὸ θυσιαστήριον καταθέμενος μηνὶ Δεκεμβρίῳ
 δωδεκάτῃ τῆς τεσσαρεσκαίδεκάτης ἰνδικτιόνης πεντηκοστῷ τρίτῳ τῆς τοῦ μακαρίου Σάβα
 ἡλικίας χρόνῳ, ἐν ᾧ χρόνῳ Ζήνωνος τοῦ βασιλέως τελευτήσαντος Ἀναστάσιος τὴν βασι-
 λεύαν παρέλαβεν.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 110, line 4

Τῷ πεντηκοστῷ τετάρτῳ τῆς τοῦ μεγάλου Σάβα ἡλικίας χρόνῳ, δευτέρῳ δὲ ἔτει τοῦ
 ἐγκαινισμού τῆς θεοκτίστου ἐκκλησίας καὶ τῆς τοῦ ἐπισκόπου Ἰωάννου ἐν τῇ λαύρᾳ παρου-
 σίας τῇ εἰκάδι πρώτῃ τοῦ Ἰαννουαρίου μηνὸς τῆς πεντεκαίδεκάτης ἰνδικτιόνης ἦλθεν ὁ ἐν ἁγίοις
 πατὴρ ἡμῶν Σάβας εἰς τὸν τοῦ Καστελλίου βουνὸν ὡς ἀπὸ εἴκοσι σταδίων ὄντα τῆς λαύρας
 κατὰ τὸ πρὸς ἀνατολὰς ἀρκτῶιον μέρος.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 112, line 15

οὐστinas ἀδελφούς μετὰ τοῦ φόρτου ὁ θεὸς δεξάμενος πρεσβύτης τὰς εὐχαριστηρίους φωνὰς
 τοῦ τε Δαυὶδ καὶ τοῦ Δανιὴλ ἐπὶ τῇ τοῦ θεοῦ ἐπισκοπῇ ἐμελέτα προσφῶρας καὶ γέγονεν
 περὶ τὴν τοῦ κοινο- βίου οἰκοδομὴν προθυμότερος· ὁ μὲντοι ἐν ἁγίοις Μαρκεριανὸς μετὰ τὴν
 εἰρημένην ἀποκάλυψιν τέσσαρας μῆνας ἐπιβιώσας εἰς τὸν ἀγῆρω καὶ ἄλυπον μετέστη βίον
 μηνὶ Νοεμβρίῳ εἰκάδι τρίτῃ τῆς πρώτης ἰνδικτιό- νος.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 116, line 1

Τοῦ μὲντοι ἀρχιεπισκόπου Σαλουστίου ἐπὶ ὀκτῶ χρόνους καὶ μῆνας τρεῖς τοῦ Ἱεροσολύμων
 θρόνου κρατήσαντος καὶ ἐν Χριστῷ κοιμηθέντος μηνὶ Ἰουλίῳ εἰκάδι τρίτῃ τῆς δευτέρας ἰνδικτι-
 όνος Ἡλίας ὁ πλειστάκις ἐν τῷ περὶ τοῦ ὁσίου Εὐθυμίου λόγῳ μνη- μονευθεὶς τὴν πατριαρχίαν
 διεδέξατο τῷ πεντηκοστῷ ἑκτῷ τῆς τοῦ μακαρίου Σάβα ἡλικίας χρόνῳ.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 117, line 18

τῆς οὖν μεγάλης ἐκκλησίας οἰκοδομηθείσης καὶ κόσμῳ παντὶ διακοσμῇ- θείσης κατελθὼν
 ὁ ἐν ἁγίοις Ἡλίας ἀρχιεπίσκοπος εἰς τὴν λαύραν ταύτην ἐνεκαίνισεν καὶ θυσιαστήριον ἡγια-
 σμένον κατέπηξεν ἐν αὐτῇ μηνὶ Ἰουλίῳ πρώτῃ τῆς ἐνάτης ἰνδικτιόνης, ἑξηκοστῷ δὲ τρίτῳ τῆς
 τοῦ μεγάλου Σάβα ἡλικίας χρόνῳ.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 146, line 23

καὶ λαβὼν ἀπὸ χειρὸς τοῦ βασιλέως ἄλλα χίλια νομίσματα καὶ συνταξάμενος κατέπλευ-
 σεν ἐπὶ Παλαιστίνῃ περὶ τὸν Μάιον μῆνα τῆς πέμπτης ἰνδικτιόνης.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 148, line 26

καὶ πάλιν ἀποστέλλει τὰ αὐτὰ συνο- δικὰ εἰς Ἱεροσόλυμα τῷ Μαίῳ μηνὶ τῆς ἑκτῆς ἰνδικτιόνος μετὰ τινων κληρικῶν καὶ δυνάμεως βασιλικῆς.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 150, line 11

ὅστις Ὀλυμπος μετὰ δυνάμεως βασιλικῆς παραγενόμενος καὶ πολλοῖς τρόποις καὶ μηχανήμασιν χρησάμενος καὶ τὴν εἰρημένην ἐπιστολὴν ἐμφανίσας Ἡλίαν μὲν τῆς ἐπισκοπῆς ἐξέωσεν καὶ εἰς τὸν Ἀιλᾶν περιώρισεν, Ἰωάννην δὲ τὸν Μαρκιανοῦ υἱὸν συνθέμενον τὸν τε Σευῆρον κοινωνικὸν εἰσδέξασθαι καὶ τὴν σύνοδον Χαλκηδόνος ἀναθεματίσαι ἐπίσκοπον Ἱεροσολύμων πεποίηκεν τῇ πρώτῃ τοῦ Σεπτεμβρίου μηνὸς ἀρχῇ τῆς δεκάτης ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 161, line 4

Ὁ ἐν ἀγίοις πατὴρ ἡμῶν Σάβας τῷ ὀγδοηκοστῷ τῆς αὐτοῦ ἡλικίας χρόνῳ περὶ τὰς θερινὰς τροπὰς τῆς ἑνδεκάτης ἰνδικτιόνος ἀπῆλθεν εἰς Ἀιλᾶ πρὸς τὸν ἀρχιεπίσκοπον Ἡλίαν ἐκ θεοῦ οἰκονο- μίας ἔχων μεθ' ἑαυτοῦ Στέφανον τὸν ἡγούμενον τῆς μονῆς τοῦ μεγάλου Εὐθυμίου καὶ Εὐθάλιον τὸν ἡγούμενον τῶν ἐν Ἱερὶχωι μοναστηρίων αὐτοῦ τοῦ μακαρίου Ἡλία.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 170, line 5

Τῷ ὀγδοηκοστῷ ἔκτῳ τῆς τοῦ πατρὸς ἡμῶν Σάβα ἡλικίας χρόνῳ ὁ ἀρχιεπίσκοπος Ἰωάννης τὸν ἑβδομον ἐνιαυτὸν καὶ ἑβδομον μῆνα ἐν τῇ πατριαρχίᾳ πληρώσας καὶ τὸν μακαριώτατον Πέτρον Ἐλευθεροπολίτην ὄντα τῷ γένει διάδοχον τῆς ἱεραρχίας καταλιπὼν ἐτελεύτησεν μηνὶ Ἀπριλλίῳ εἰκάδι τῆς δευτέρας ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 170, line 14

προάγεται τοίνυν αὐτόν, ὡς εἴρηται, βασιλέα μηνὶ Ἀπριλλίῳ τῆς πέμπτῃς ἰνδικτιόνος ἐν τῇ ἀγίᾳ πέμπτῃ.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 171, line 28

Ἀρχομένου τοῦ ἐνενηκοστοῦ πρώτου τῆς τοῦ ἀγίου πατρὸς ἡμῶν Σάβα ἡλικίας χρόνου ὁ ἐν ἀγίοις ἀββᾶς Θεοδόσιος τέλει τοῦ βίου ἐχρήσατο μηνὶ Ἰαννουαρίῳ ἑνδεκάτῃ τῆς ἐβδόμης ἰνδικτιόνος, <πρεσβύτης καὶ πλήρης ἡμερῶν>.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 173, line 11

καὶ εἵξας ταῖς τῶν ἀρχιερέων παρακλή- σεσιν ὁ πρεσβύτης ἀνέρχεται ἐν Κωνσταντινουπόλει περὶ τὸν Ἀπρίλ- λιον μῆνα τῆς ὀγδῆς ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 179, line 11

καὶ ταῦτα μὲν ὕστερον· ὁ δὲ θεὸς πρεσβύτης ἀποστήσας, ὡς εἴρηται, τῆς ἑαυτοῦ συνοδίας Λεόντιόν τε τὸν Βυζάντιον καὶ τοὺς τῷ Θεοδώρῳ τῷ Μομφουεστίας προσκειμένους καὶ τούτους ἐν Κωνσταντινουπόλει καταλιπὼν κατέπλευ- σεν ἐπὶ Παλαιστίνῃ μηνὶ Σεπτεμβρίῳ τῆς ἐνάτης ἰνδικτιόνος καὶ ἐλθὼν εἰς Ἱεροσόλυμα τὰς μὲν θείας κελεύσεις ἐνεφάνισεν, ὅπερ δὲ ἡγαγεν ἀπὸ τοῦ Βυζαντίου χρυσίον, δένειμεν τοῖς ὑπ' αὐτὸν μονα- στηρίοις.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 183, line 6

καὶ ἡ μὲν τελείωσις αὐτοῦ γέγονεν κατὰ τὴν πέμπτῃν τοῦ Δεκεμβρίου μηνὸς τῆς δεκάτης ἰνδικτιόνος, ἀπὸ μὲν κτίσεως κόσμου ἀφ' οὗπερ ἤρξατο χρόνος τῇ τοῦ ἡλίου φορᾷ μετρεῖ-

8.34. CYRILLUS BIOGR.

σθαι ἔτους τετάρτου εἰκοστοῦ ἑξακισχιλιοστοῦ, ἀπὸ δὲ τῆς τοῦ θεοῦ λόγου ἐκ παρθένου ἐνανθρωπήσεως καὶ κατὰ σάρκα γεννήσεως ἔτους τετάρτου εἰκοστοῦ πεντακοσιοστοῦ κατὰ τοὺς συγγραφέντας χρόνους ὑπὸ τῶν ἁγίων πατέρων Ἰππολύτου τε τοῦ παλαιοῦ καὶ γνωρίμου τῶν ἀποστόλων καὶ Ἐπιφανίου τοῦ τῶν Κυπρίων ἀρχιερέως καὶ Ἡρωνος τοῦ φιλοσόφου καὶ ὁμολογητοῦ· ὁ δὲ χρόνος τῆς αὐτοῦ ἐν σαρκὶ ζωῆς οὗτός ἐστιν.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 184, line 13

τοῦτο γὰρ ἐγὼ αὐταῖς ὄψεσιν ἐθεασάμην ἐπὶ τῆς παρελθούσης δεκάτης ἰνδικτιόνης.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 189, line 14

ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ Γελάσιος τὴν τοῦ ἀββᾶ Σάβα ἡγεμονίαν διεδέξατο ἐν ἀρχῇ τῆς πεντεκαίδεκάτης ἰνδικτιόνης.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 192, line 13

Τοῦ τοίνυν κατὰ Ὠριγένους ἰδίκτου ἐν Ἱεροσολύμοις ἐμφανισθέντος περὶ τὸν Φεβρουάριον μῆνα τῆς πέμπτης ἰνδικτιόνης τῷ ἐνδεκάτῳ τῆς τοῦ πατρὸς ἡμῶν Σάβα κοιμήσεως χρόνῳ καὶ πάντων τῶν κατὰ Παλαιστίνην ἐπισκόπων καὶ τῶν τῆς ἐρήμου ἡγουμένων τῷ αὐτῷ καθυπογραφάντων ἰδίκτῳ παρεκτὸς Ἀλεξάνδρου τοῦ ἐπισκόπου Ἀβίλης ἀγανακτήσαντες οἱ περὶ Νόννον καὶ Πέτρον καὶ Μηνᾶν καὶ Ἰωάννην καὶ Κάλλιστον καὶ Ἀναστάσιον καὶ λοιποὺς τῆς αἰρέσεως ἀρχηγοὺς τῆς τε καθολικῆς κοινωνίας ἀπέστησαν καὶ τῆς Νέας λαύρας ὑποχωρήσαντες ἔμειναν εἰς τὴν πεδιάδα.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 195, line 6

καὶ δὴ φθάσας τὸ Ἀμόριον ἐτελεύτησεν μηνὶ Ὀκτωβρίῳ τῆς ἐνάτης ἰνδικτιόνης.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 195, line 19

καὶ καταφέρουσιν αὐτὸν εἰς τὴν λαύραν δρυφορούμενον καὶ καθίζουσιν αὐτὸν ἐν τῷ θρόνῳ τοῦ ἐν ἁγίοις πατρὸς ἡμῶν Σάβα μηνὶ Φεβρουαρίῳ τῆς ἐνάτης ἰνδικτιόνης.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 196, line 17

ὅστις ἀββᾶς Κασσιανὸς τὴν τοῦ θεοῦ πρεσβύτου ἱεράν ποιμνὴν ἐπὶ δέκα μῆνας ποιμάνας ἐν εἰρήνῃ ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἐκοιμήθη καὶ ὑπνώσεν μηνὶ Ἰουλίῳ εἰκάδι τῆς δεκάτης ἰνδικτιόνης τῷ ἑκαίδεκάτῳ τῆς τοῦ μεγάλου Σάβα κοιμήσεως χρόνῳ.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 198, line 6

ὅστις Ἰσίδωρος μὴ ἰσχύων ἀντιστῆναι τῷ Ἀσκιδᾷ καὶ τοῖς Νεολαυρίταις προσερρῆναι τῷ τῆς ἡμετέρας ἀγέλης ποιμένι ἀββᾶ Κόνωνι καὶ δοὺς αὐτῷ λόγον εἰς τὴν ἁγίαν Σιών ὥς οὐκ ἀντιλαμβάνεται τοῦ τῆς προυπάρξεως δόγματος, ἀλλὰ καὶ πάσῃ δυνάμει συναγωνίσσεται κατὰ τῆς ἀσεβείας, ἀνέβη σὺν αὐτῷ ἐν Κωνσταντινουπόλει ἐν ἀρχῇ τῆς πεντεκαίδεκάτης ἰνδικτιόνης.

Cyrillus Biogr., Vita Sabae Page 200, line 2

τοιγαροῦν συναθροισθέντες εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν ἐξήλθομεν μετὰ τοῦ πατριάρχου καὶ τοῦ νέου ἡγουμένου ἐπὶ Θεκῶαν τὴν κώμην καὶ τῶν Ὠριγενιαστῶν ὑπὸ Ἀναστασίου τοῦ δουκὸς διωχθέντων παρελάβομεν τὴν Νέαν λαύραν μηνὶ Φεβρουαρίῳ εἰκάδι πρώτη τῆς δευτέρας ἰνδικτιόνης τῷ εἰκοστῷ τρίτῳ τῆς τοῦ μακαρίου Σάβα κοιμήσεως χρόνῳ.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae (2877: 003) “Kyrillos von Skythopolis”, Ed. Schwartz, E. Leipzig: Hinrichs, 1939; Texte und Untersuchungen 49.2. Page 201, line 17

Τοιγαροῦν ἐγεννήθη, ὡς αὐτός μοι διηγήσατο, κατὰ τὴν ὀγδόην τοῦ Ἰαννουαρίου μηνὸς τῆς ἐβδόμης ἰνδικτιόνος τῷ τετάρτῳ ἔτει τῆς Μαρκιανοῦ τοῦ θεοφιλοῦς βασιλείας· καὶ Χριστιανῶν ὄντων τῶν γεγεννηκότων Χριστιανικῶς ἀνήγετο σὺν τοῖς ἑαυτοῦ ἀδελφοῖς, χρόνου δὲ τινὸς διελθόντος καὶ τῶν γονέων ἐν Χριστῷ τελειωθέντων καὶ τῆς γονικῆς οὐσίας διανεμηθείσης ὁ θεοφόρος οὗτος ἀνὴρ τῷ θεῷ ἑαυτὸν ἀφιέρωσεν καὶ οἰκοδομήσας ἐν αὐτῇ τῇ Νικοπόλει ἐκκλησίαν τῇ πανμυνήτῳ θεοτόκῳ καὶ ἀειπαρθένῳ Μαρίας ἀπετάξατο τοῖς τοῦ βίου πράγμασιν τῷ ὀκτωκαιδεκάτῳ τῆς ἑαυτοῦ ἡλικίας χρόνῳ καὶ προσλαβόμενος δέκα ἀδελφοὺς θέλοντας σωθῆναι κοινόβιον αὐτόθι συνεστήσατο.

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae Page 204, line 23

καὶ πιστεύσας ἐξῆλθεν εὐθέως καὶ τῷ φωτὶ ἐκείνῳ ἠκολούθει καὶ τοῦ φωτὸς ὁδηγοῦντος ἦλθεν εἰς τὴν Μεγίστην λαύραν τοῦ ἐν ἁγίοις πατρὸς ἡμῶν Σάβα Σαλουστίου τὸ τηνικαῦτα ἱεραρχοῦντος τῆς Ἱεροσολυμιτῶν ἐκκλησίας ἐπὶ τῆς τεσσαρεσκαίδεκάτης ἰνδικτιόνος τῷ τριακοστῷ ὀγδῶν τῆς αὐτοῦ ἡλικίας χρόνῳ, ἐν ᾧ χρόνῳ ἢ μὲν θεόκτιστος ἐκκλησία τῆς Μεγίστης ἐνεκαινίσθη λαύρας, ὁ δὲ Ἄναστάσιος τὴν βασιλείαν Ζήνωνος τελευτήσαντος διεδέξατο, καθὼς τῆς αὐτοῦ ἀκήκοα διηγουμένης γλώσσης, γεγονὼς τοίνυν εἰς τὴν Μεγίστην λαύραν εὔρεν τὸν μακαρίτην Σάβαν συνοδίαν ἑκατὸν πενήκοντα ἀναχωρητῶν περιποιησάμενον, ἐν πολλῇ μὲν τῶν σωματικῶν διαγόντων πτωχεῖαι, τοῖς δὲ πνευματικαῖς πλουτούντων χαρίσμασιν.

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae Page 205, line 27

τοῦ δὲ καιροῦ τῆς ἀλλαγῆς τῶν διακονιῶν φθάσαντος ἐπὶ τῆς πρώτης ἰνδικτιόνος ὁ προβληθεὶς οἰκονόμος τοῦτον τὸν μέγαν φωστήρα ξενοδόχον προβάλλεται καὶ μάγειρον, καὶ ταύτην μετὰ προθυμίας καὶ χαρᾶς τὴν διακονίαν δεξάμενος πάντας τοὺς πατέρας ταῖς ὑπουργίαις ἐθεράπευεν δουλεύων ἐκάστῳ μετὰ πάσης ταπεινοφροσύνης καὶ ἐπεικειας.

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae Page 207, line 7

πληρώσαντα δὲ τὴν διακονίαν ἠβουλήθη ὁ μακάριος Σάβας χειροτονῆσαι αὐτὸν ὡς ἐνάρετον καὶ τέλειον μοναχὸν καὶ λαβὼν αὐτὸν εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν ἐπὶ τῆς ἑκτῆς ἰνδικτιόνος προσήγαγεν τῷ μακαρίτῃ Ἠλίῳ τῷ ἀρχιεπισκόπῳ καὶ τὰς αὐτοῦ ἀρετὰς διηγησάμενος παρεκάλει χειροτονηθῆναι αὐτὸν πρεσβύτερον.

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae Page 208, line 27

ὁ δὲ γέρων ὑπέσχετο διὰ τοῦ λόγου τοῦ θεοῦ μηδὲν τὸ σύνολον τοῦτο ἀπαγγεῖλαι, καὶ ἀπὸ τότε ἡσύχαζεν εἰς τὸ κελλίον αὐτοῦ μήτε εἰς τὴν ἐκκλησίαν προερχόμενος μήτε τινὲ τὸ σύνολον συντυγχάνων παρεκτὸς τοῦ διακονοῦντος αὐτῷ ἐπὶ τέσσαρας χρόνους πλὴν τῆς ἡμέρας τοῦ ἐγκαινισμοῦ τοῦ γεγονότος ἐν τῇ λαύρᾳ ἐπὶ τῆς ἐνάτης ἰνδικτιόνος τοῦ σεβασμίου οἴκου τῆς παναγίας θεοτόκου καὶ ἀειπαρθένου Μαρίας.

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae Page 209, line 11

Τοῦ δὲ τετραετοῦς χρόνου πληρωθέντος καὶ τοῦ μακαρίου Σάβα τῆς λαύρας ὑποχωρή-

8.34. CYRILLUS BIOGR.

σαντος ἐπὶ τὰ μέρη Σκυθοπόλεως διὰ τὴν ἀκα-
ταστασίαν τῶν εἰς ὕστερον τὴν Νέαν λαύραν
οἰκησάντων ὁ τιμιώτατος οὗτος Ἰωάννης φεύγων τὸ τῆς ἀταξίας συνέδριον ἀνεχώρησεν εἰς τὴν
ἐρημον τοῦ Ρουβᾶ τῷ πεντηκοστῷ τῆς αὐτοῦ ἡλικίας χρόνῳ ἐπὶ τῆς ἐνδεκάτης ἰνδικτιόνος,
ἡσύχασεν δὲ αὐτόθι ἐν σπηλαίῳ χρόνους ἕξ πάσης ἀνθρωπίνης συναναστροφῆς ἀφιστῶν ἑαυ-
τόν, ὁμιλεῖν τῷ θεῷ ἐπιποθῶν ἐν ἡσυχίᾳ καὶ τὸ τῆς διανοίας ὀπτικὸν τῇ μακρᾷ φιλοσοφίᾳ
ἐκκαθαῖραι πρὸς τὸ ἀνακαλυμμένῳ προσώ-
πῳ τὴν δόξαν κυρίου κατοπτρίζεσθαι, πᾶσαν
σπουδὴν ποιούμενος ἀπὸ δόξης εἰς δόξαν προκόπτειν τῇ τῶν κρειττόνων ἐπιθυμίᾳ.

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae Page 212, line 24

καὶ πολλαῖς ἐτέραις πρὸς αὐτὸν χρησάμενος παραιnéσεσιν ἀνήγαγεν αὐτὸν εἰς τὴν Μεγί-
στην λαύραν ἐπὶ τῆς δευτέρας ἰνδικτιόνος καὶ καθεῖρξεν αὐτὸν εἰς κελλίον πεντηκοστὸν ἔκτον
χρόνον τῆς ἑαυτοῦ ἡλικίας ἄγοντα μηδενὸς ἐτέρου τῆς συνοδείας γινώσκοντος ὅτι ἐπίσκο-
πός ἐστιν.

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae Page 214, line 7

Τῷ ἐβδομηκοστῷ ἐνάτῳ τῆς τοῦ ὁσίου τούτου Ἰωάννου ἡλικίας χρόνῳ, εἰκοστῷ τετάρτῳ
δὲ τῆς αὐτοῦ ἐν τῷ κελλίῳ καθεύξεως ὁ ἐν ἀγίοις πατὴρ ἡμῶν Σάβας ἐν εἰρήνῃ ἐπὶ τὸ αὐτὸ
ἐκοιμήθη καὶ ὕπνωσεν μηνὶ Δεκεμβρίῳ πέμπτῃ τῆς δεκάτης ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae Page 216, line 9

Τῷ ἐνενηκοστῷ τῆς τοῦ ὁσίου τούτου γέροντος ἡλικίας χρόνῳ κατὰ τὸν Νοέμβριον μῆνα
τῆς ἑκτῆς ἰνδικτιόνος ἐξερχόμενος ἐκ τῆς Σκυθοπολιτῶν μητροπόλεως, ὡς καὶ ἤδη μοι εἴρηται
ἐν τῷ περὶ Εὐθυμίου τοῦ ἀγίου λόγῳ, ἐντολὰς ἔλαβον παρὰ τῆς ἐμῆς φιλο-
χρίστου μητρὸς μηδὲν τῶν εἰς ψυχὴν συντεινόντων διαπράξασθαι χωρὶς γνώμης καὶ ἐπιτροπῆς τούτου τοῦ θε-
σπεσίου Ἰωάννου, μήποτε, λέγουσά μοι, τῇ τῶν Ὀριγενιαστῶν πλάνῃ συναπαχθεὶς ἐκπέσης
ἐκ προοιμίων τοῦ ἰδίου στηριγμοῦ.

Cyrillus Biogr., Vita Joannis Hesychastae Page 217, line 12

καὶ οὕτως ἀνελθὼν ἔμεινα εἰς τὴν τοῦ ἐν ἀγίοις Εὐθυμίου μονὴν μηνὶ Ἰουλίῳ τῆς ἑκτῆς
ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Cyriaci (2877: 004) “Kyrillos von Skythopolis”, Ed. Schwartz, E.
Leipzig: Hinrichs, 1939; Texte und Untersuchungen 49.2. Page 223, line 6

Οὗτος τοίνυν ὁ τὴν ψυχὴν ἔχων πεφωτισμένην Κυριακὸς γένος μὲν τῆς Ἑλλάδος ὑπῆρχεν
πόλεως Κορίνθου, γονέων δὲ πατὴρ μὲν Ἰωάννου πρεσβυτέρου τῆς κατὰ Κόρινθον ἀγίας τοῦ
θεοῦ καθολικῆς ἐκκλησίας, μητρὸς δὲ Εὐδοξίας, ὑφ’ ἧν ἐγεννήθη περὶ τὸ τέλος τῆς Θεοδοσίου τοῦ
νέου βασιλείας μηνὶ Ἰαννουαρίῳ ἐνάτῃ τῆς δευτέρας ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Cyriaci Page 224, line 12

καὶ τοῖς τοιούτοις ἀδολεσχῶν λογισμοῖς ἤκουσεν ἐν μιᾷ κυριακῇ τοῦ εὐαγγελίου λέ-
γοντος <εἴ τις θέλει ὀπίσω μου ἐλθεῖν, ἀπαρνησάσθω ἑαυτὸν καὶ ἁράτω τὸν σταυρὸν αὐτοῦ καὶ
ἀκολουθεῖτω μοι>, καὶ παραυτίκα ἐξελθὼν τῆς ἐκκλησίας καὶ μηδὲν μηδὲν εἰρη-
κῶς ἦλθεν ἐπὶ Κεγχρεὰς καὶ ἐπιβὰς πλοίῳ διαπερῶντι ἐν Παλαι-
στίνῃ παρεγένετο εἰς Ἱεροσόλυμα ὁκτω-

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

καιδέκατον μὲν ἔτος ἄγων τῆς ἡλικίας, ὀγδόω δὲ ἔτει τῆς ἱεραρχίας ἐν Ἱεροσολύμοις Ἀναστα-
σίου, ἐνάτῳ δὲ τῆς βασιλείας Λέοντος τοῦ μεγάλου βασιλέως ἐν ἀρχῇ τῆς πέμπτης ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Cyriaci Page 225, line 20

τῷ μέντοι ἐνάτῳ χρόνῳ τῆς ἐν Παλαιστίνῃ παρουσίας τοῦ ἀββᾶ Κυριακοῦ ὁ μέγας
πατὴρ ἡμῶν Γεράσιμος ἐτελεύτησεν καὶ τῷ τῆς δικαιοσύνης κατεκοσμήθη στεφάνῳ μηνὶ
Μαρτίῳ πέμπτῃ τῆς τρισκαίδεκάτης ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Cyriaci Page 226, line 22

τότε οἱ μὲν τῆς μονῆς τοῦ μεγάλου Εὐθυμίου ἠγόρασαν ξενοδοχεῖον τῶν αὐτῶν διακοσίων
νομισμάτων πλησίον τοῦ πύργου τοῦ Δαυὶδ παρὰ τῶν πατέρων τῆς λαύρας τοῦ Σουκᾶ· ὁ
δὲ ἀββᾶς Κυριακὸς διὰ τὴν γενομένην τῶν μοναστηρίων διαίρεσιν ἀναχωρεῖ λυπηθεὶς κατὰ
διάνοιαν καὶ ἔρχεται εἰς τὴν λαύραν τοῦ Σουκᾶ περὶ τὸ τέλος τῆς ὀγδῆς ἰνδικτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Cyriaci Page 227, line 8

τῷ μέντοι ἐβδομηκοστῷ ἐβδόμῳ τῆς αὐτοῦ ἡλικίας χρόνῳ παραδίδωσι τὸ κειμηλιαρχεῖον
ἐπὶ τῆς τρίτης ἰνδικτιόνος καὶ ἀναχωρεῖ ἐπὶ τὴν τοῦ Νατουφᾶ πανέρημον μαθητὴν τινα ἔχων
μεθ' αὐτοῦ.

Cyrillus Biogr., Vita Theodosii (2877: 005) “Kyrillos von Skythopolis”, Ed. Schwartz,
E. Leipzig: Hinrichs, 1939; Texte und Untersuchungen 49.2. Page 239, line 8

ἡ δὲ τελείωσις αὐτοῦ γέγονεν κατὰ τὴν ἐνδεκάτην τοῦ Ἰαννουαρίου μηνὸς τῆς ἐβδόμης ἰνδι-
κτιόνος ἐν εἰκοστῷ δευτέρῳ μηνὶ τῆς βασιλείας τοῦ θεοφυλάκτου βασιλέως ἡμῶν Ἰουστινιανοῦ.

Cyrillus Biogr., Vita Theodosii Page 241, line 2

διαλάμπουσιν γὰρ οἱ πόνοι Σωφρονίου καὶ τὰ τούτου κατορθώ- ματα ἐν τῇ τοῦ μακα-
ρίου ἀββᾶ Θεοδοσίου μονῇ· οὐ μόνον γὰρ κτή- μασι καὶ προσόδοις ἐνιαυσιαίοις ἐπλούτισεν
ταύτην, ἀλλὰ καὶ τὴν ἐν αὐτῇ ἐν Χριστῷ συνοδίαν ἐπλήθυνεν τριπλασίως καὶ ἀπλῶς εἰπεῖν
ἐπὶ δέκα τέσσαρας χρόνους [καὶ δύο μῆνας] καλῶς αὐτὴν κυβερνήσας ἐτελεύτησεν ἐν χαρᾷ
μηνὶ Μαρτίῳ εἰκάδι πρώτῃ τῆς πέμπτης ἰνδι- κτιόνος.

Cyrillus Biogr., Vita Abramii (2877: 007) “Kyrillos von Skythopolis”, Ed. Schwartz,
E. Leipzig: Hinrichs, 1939; Texte und Untersuchungen 49.2. Page 245, line 3

καὶ γενόμενος ἐν πολλῇ ἀθυμίᾳ ἐξῆλθεν λάθρα τὴν πόλιν καὶ φυγὰς ὤιχετο ἐπὶ τὴν ἀγίαν
πόλιν μηδὲν τοῦ αἰῶνος τούτου ἐπιφερόμενος καὶ μετὰ πολλῆς ἐνδείας καὶ στενοχωρίας ἦλθεν εἰς
Ἱεροσόλυμα ἐν ἀρχῇ τῆς πέμπτης ἰνδικτιόνος τὸν τριακοστὸν ἐβδομον τῆς ἡλικίας πλη-
ρώσας ἐνιαυτόν.

Cyrillus Biogr., Vita Gerasimi [Sp.] (2877: 008) “Ἀνάλεκτα Ἱεροσολυμιτικῆς σταχυολο-
γίας, vol. 4”, Ed. Papadopoulos-Kerameus, A. St. Petersburg: Kirschbaum, 1897, Repr.
1963. Page 184, line 5

10 Ἡ μέντοι τελείωσις τοῦ πατρὸς ἡμῶν Γερασίμου γέγονε κατὰ τὴν πέμπτῃν τοῦ μαρ-
τίου μηνὸς τῆς τρισκαίδεκάτης ἰνδικτιῶ- νος, ἐν ἀρχῇ τῆς βασιλείας Ζήνωνος.

Cyrillus Biogr., Vita Gerasimi [Sp.] Page 184, line 13

8.35. CLEMENS ROMANUS ET CLEMENTINA THEOL.

Βασίλειον δὲ καὶ Στέφανον ἀδελφούς αὐτοῦ κατὰ σάρκα διαδόχους τῆς ἡγεμονίας κατέλιπεν, οἵτινες ἐπὶ ἕξ ἔτη τὴν αὐτὴν ποιμάναντες συνοδίαν ἔτε- λεύτησαν, καὶ οὕτως ψήφῳ πάντων τῶν ἁγίων πατέρων ὁ τρισμακάριος Εὐγένιος τῆς τοῦ μεγάλου Γερασίμου ἀγέλης ἐκράτησε, καὶ ταύτην καλῶς καὶ θεαρέστως ἐπὶ τεσσαράκοντα καὶ πέντε ἔτη καὶ μῆνας τεσσαρας ποιμάνας ἐκοιμήθη μηνὶ αὐγούστῳ ἰθ' τῆς τετάρτης ἰνδικτιῶνος.

8.35 Clemens Romanus et Clementina Theol.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Epistula i ad Corinthios (1271: 001) “Clément de Rome. Épître aux Corinthiens”, Ed. Jaubert, A. Paris: Cerf, 1971; Sources chrétiennes 167. Chapter 23, section 2, line 1

Διὸ μὴ διψυχῶμεν, μηδὲ ἰνδαλ- λέσθω ἡ ψυχὴ ἡμῶν ἐπὶ ταῖς ὑπερβαλλούσαις καὶ ἐνδόξοις δωρεαῖς αὐτοῦ.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Homiliae [Sp.] (1271: 006) “Die Pseudoklementinen I. Homilien, 2nd edn.”, Ed. Rehm, B., Irmscher, J., Paschke, F. Berlin: Akademie-Verlag, 1969; Die griechischen christlichen Schriftsteller 42. Homily 4, chapter 4, section 2, line 1

Ἡ Βερνίκη δὲ ἀξιωθείσα· Ταῦτα μὲν οὕτως, ἔφη, ἔχει ὡς ἠκούσατε, τὰ δὲ ἄλλα τὰ κατ’ αὐτὸν τὸν Σίμωνα, ἅπερ ἴσως ἀγνοεῖτε, ἀκούσατε· φαντάσματα τε γὰρ καὶ ἰνδάλματα ἐν μέσῃ τῇ ἀγορᾷ φαίνεσθαι ποιῶν δι’ ἡμέρας πᾶσαν ἐκπλήττει τὴν πόλιν καὶ προϊόντος αὐτοῦ ἀνδριάντες κινοῦνται καὶ σκιαὶ πολλαὶ προηγοῦνται, ὥσπερ αὐτὰς ψυχὰς τῶν τεθνηκότων εἶναι λέγει.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (ex Eusebio) [Sp.] (1271: 008) “Die Pseudoklementinen II. Rekognitionen”, Ed. Rehm, B., Paschke, F. Berlin: Akademie-Verlag, 1965; Die griechischen christlichen Schriftsteller 51. Book 9, chapter 20, line 1

Παρὰ Ἰνδοῖς καὶ Βάκτροις εἰσὶ χιλιάδες πολλαὶ τῶν λεγομένων Βραχ- μάνων, οἵτινες κατὰ παράδοσιν τῶν προγόνων καὶ νόμων οὔτε φονεύουσιν οὔτε ξόανα σέβονται, οὐκ ἐμψύχου γεύονται, οὐ μεθύσκονται ποτε, οἴνου καὶ σίκερος μὴ γευόμενοι, οὐ κακία τινὶ κοινωνοῦσι προσέχοντες τῷ θεῷ, τῶν ἄλλων Ἰνδῶν φονευ- όντων καὶ ἐταιρευόντων καὶ μεθυσκομένων καὶ σεβομένων ξόανα καὶ πάντα σχεδὸν καθ’ εἰμαρμένην φερομένων.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (ex Eusebio) [Sp.] Book 9, chapter 20, line 8

ἔστι δὲ ἐν τῷ αὐτῷ κλίματι τῆς Ἰνδίας φυλὴ τις Ἰνδῶν, οἵτινες τοὺς ἐμπίπτοντας ξένους ἀγρεύοντες καὶ θύοντες ἐσθίουσι· καὶ οὔτε οἱ ἀγαθοποιοὶ τῶν ἀστέρων κεκωλύκασιν τοῦ- τους μὴ μαιφονεῖν καὶ μὴ ἀθεμιτογαμεῖν οὔτε οἱ κακοποιοὶ ἠνάγκασαν τοὺς Βραχμᾶνας κακοურ- γεῖν.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (ex Eusebio) [Sp.] Book 9, chapter 25, line 4

Οἱ Μῆδοι πάντες τοῖς μετὰ σπουδῆς τρεφομένοις κυσὶ τοὺς νεκροὺς ἔτι ἐμπνέοντας παραβάλλουσι, καὶ οὐ πάντες σὺν τῇ Μήνῃ τὸν Ἄρεα ἐφ' ἡμερινῆς γενέσεως ἐν Καρκίνῳ ὑπὸ γῆν ἔχουσιν. Ἰνδοὶ τοὺς νεκροὺς καίουσι, μεθ' ὧν συγκαίουσιν ἐκούσας τὰς γυναῖκας, καὶ οὐ δήπου πᾶσαι αἱ καϊόμεναι ζῶσαι Ἰνδῶν γυναῖκες ἔχουσιν ὑπὸ γῆν ἐπὶ νυκτερινῆς γενέσεως σὺν Ἄρει τὸν Ἥλιον ἐν Λέοντι ὁρίοις Ἄρεος.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (ex Eusebio) [Sp.] Book 9, chapter 25, line 5

Ἰνδοὶ τοὺς νεκροὺς καίουσι, μεθ' ὧν συγκαίουσιν ἐκούσας τὰς γυναῖκας, καὶ οὐ δήπου πᾶσαι αἱ καϊόμεναι ζῶσαι Ἰνδῶν γυναῖκες ἔχουσιν ὑπὸ γῆν ἐπὶ νυκτερινῆς γενέσεως σὺν Ἄρει τὸν Ἥλιον ἐν Λέοντι ὁρίοις Ἄρεος.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (ex Eusebio) [Sp.] Book 9, chapter 25, line 13

καὶ οὐκ ἀναγκάζει ἡ γένεσις τοὺς Σῆρας μὴ θέλοντας φονεῦν ἢ τοὺς Βραχμᾶνας κρεοφαγεῖν ἢ τοὺς Πέρσας ἀθεμίτως μὴ γαμεῖν ἢ τοὺς Ἰνδοὺς μὴ καίεσθαι ἢ τοὺς Μήδους μὴ ἐσθίεσθαι ὑπὸ κυνῶν ἢ τοὺς Πάρθους μὴ πολυγαμεῖν ἢ τὰς ἐν τῇ Μεσοποταμίᾳ γυναῖκας μὴ σωφρονεῖν ἢ τοὺς Ἕλληνας μὴ γυμνάζεσθαι γυμνοῖς τοῖς σώμασιν ἢ τοὺς Ῥωμαίους μὴ κρατεῖν ἢ τοὺς Γάλλους μὴ γαμεῖσθαι ἢ τὰ ἄλλα βάρβαρα ἔθνη ταῖς ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων λεγομέναις Μούσαις κοινωνεῖν· ἀλλ', ὡς προεῖπον, ἕκαστον ἔθνος καὶ ἕκαστος τῶν ἀνθρώπων χρῆται τῇ ἑαυτοῦ ἐλευθερίᾳ ὡς βούλεται καὶ ὅτε βούλεται, καὶ δουλεύει τῇ γενέσει καὶ τῇ φύσει δι' ἣν περικείται σάρκα, πῇ μὲν ὡς βούλεται, πῇ δὲ ὡς μὴ βούλεται.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (ex Eusebio) [Sp.] Book 9, chapter 27, line 2

μνημονεύειν τε ὀφείλετε ὧν προεῖπον, ὅτι καὶ ἐν ἐνὶ κλίματι καὶ ἐν μιᾷ χώρᾳ τῶν Ἰνδῶν εἰσιν ἀνθρωποφάγοι Ἰνδοὶ καὶ εἰσιν οἱ ἐμψύχων ἀπεχόμενοι· καὶ ὅτι οἱ Μαγουσαῖοι οὐκ ἐν Περσίδι μόνῃ τὰς θυγατέρας γαμοῦσιν, ἀλλὰ καὶ ἐν παντὶ ἔθνει, ὅπου ἂν οἰκήσωσι, τοὺς τῶν προγόνων φυλάσσοντες νόμους καὶ τῶν μυστηρίων αὐτῶν τὰς τελετάς.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (e Pseudo-Caesario) [Sp.] (1271: 009) “Die Pseudoklementinen II. Rekognitionen”, Ed. Rehm, B., Paschke, F. Berlin: Akademie-Verlag, 1965; Die griechischen christlichen Schriftsteller 51. Book 9, chapter 20, line 3

Νόμος δὲ καὶ παρὰ Βακτριανοῖς ἤτοι Βραγμανοῖς ἡ ἐκ προγόνων παιδεία, μὴ μεθύειν μηδὲ ἐμψύχων ἀπογεύεσθαι, οὐκ αἶνου ἀπλοῦ ἢ νόθου μετέχειν, θεὸν τὸν ἐμὸν δεδοικότας, καίτοι τῶν παρακειμένων αὐτοῖς Ἰνδῶν μαιφο- νούντων καὶ οἰνοφλυγούντων καὶ μονιῶν ἀγρίων ἢ συῶν δίκην θηλυμανούν- των καὶ τῷ πάθει κραδαινομένων.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (e Pseudo-Caesario) [Sp.] Book 9, chapter 20, line 6

8.35. CLEMENS ROMANUS ET CLEMENTINA THEOL.

ἐν δὲ τοῖς ἐσπερίοις κλίμασιν ἐνδοτέρω τῶν ἐκεῖσε Ἰνδῶν ξενοβόροι τινὲς ὑπάρχοντες τοὺς ἐπήλυδας ἀναιροῦντες ἐσθίουσι, καὶ οὐδεὶς τῶν ἀγαθοποιῶν ἀστέρων τῆς μαιφονίας αὐτοὺς ἀποστῆσαι ἴσχυσε μέχρι τήμερον.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (e Pseudo-Caesario) [Sp.] Book 9, chapter 25, line 6

Μῆδοι δὲ πάντες μετὰ σπουδῆς ἔτι ἐμπνέοντας τοὺς κάμνοντας κυσὶ βορὰν προτιθέασιν ἀναλγήτως· καὶ οὐ πάντως σὺν τῇ Μήνῃ, ὥς φατε, τὸν Ἄρεα ἐπὶ ἡμερινῆς γενέσεως ἐν Καρκίνῳ Μῆδοι ἔλαχον; Ἰνδοὶ τοὺς νεκροὺς ἑαυτῶν τεφροποιῶσι πυρί, μεθ' ὧν καταφλέγουσιν τινῶν τὰς συμβίους.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (e Pseudo-Caesario) [Sp.] Book 9, chapter 25, line 7

καὶ οὐ δήπου πᾶσαι αἱ πυριάλωτοι Ἰνδῶν γυναῖκες [ἢ] αἱ ζῶσαι ἔλαχον ὑπὸ τῆς νυκτερινῆς συνελεύσεως τῶν γονέων σὺν Ἄρει τὸν Ἥλιον, ἐν νυκτὶ μὴ φαίνοντα ἐν μοίραις Ἄρεος.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (e Pseudo-Caesario) [Sp.] Book 9, chapter 25, line 17

οὐ γὰρ οἷα τε ἡ καθ' ὑμᾶς γένεσις ἀναγκάσαι Σῆρας ἀναιρεῖν ἢ Βραχμᾶνας κρεοβορεῖν καὶ σικερο- ποτεῖν ἢ Πέρσας μὴ μητρογαμεῖν καὶ ἀδελφοφθορεῖν ἢ Ἰνδοὺς μὴ πυρί διδόναι τοὺς νεκροὺς ἢ Μῆδους μὴ κυσὶ τοὺς θνησκομένους προτιθέναι ἢ Πάρθους μὴ πολυγαμεῖν ἢ τοὺς Μεσοποταμίτας μὴ ἄκρως σωφρονεῖν ἢ Ἑλλήνας μὴ σωμασκεῖσθαι ἢ τὰ βάρβαρα ἔθνη ταῖς ὑφ' Ἑλλήνων προσαγορευόμεναις <Μούσαις> κοινωνεῖν· ἀλλ', ὥς πρόεφην, ἕκαστος βροτῶν χρῆται τῇ τοῦ νόμου ἐλευθερίᾳ, τὰ ἐκ τῶν ἄστρων μυθουργούμενα καθ' Ἑλλήνας παραπεμπόμενος, τῷ ἐκ τῶν νόμων δέει ἢ τῷ ἐξ ἔθνους ἔθει πατρίῳ τῶν φαύλων εἰργόμενος· αἱ μὲν γὰρ τῶν ἀρετῶν ὑπάρχουσι προαιρετικά, αἱ δὲ περιστατικά, ἀνάγκη ἐπὶ τὸ κρεῖττον χαροῦντος τοῦ ζητουμένου ὑπὸ τῶν νόμων.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Recognitiones (e Pseudo-Caesario) [Sp.] Book 9, chapter 27, line 1

πῶς δὲ ἐν ταύτῳ τμήματι τοὺς ἀνθρωποβόρους Ἰνδοὺς καὶ τοὺς ἐμψύχων καὶ θοίνης ἀπάσης ἀπεχομένους Βραχμανοὺς οἰκοῦντας ὁρῶμεν;

Clemens Romanus et Clementina Theol., Pseudo-Clementina (epitome altera auctore Symeone Metaphrasta) [Sp.] (1271: 011) "Clementinorum epitomae duae, 2nd edn.", Ed. Dressel, A.R.M. Leipzig: Hinrichs, 1873. Section 45, line 3

φαντάσματα γὰρ, ἔφη, μετὰ τὸ τῇδε αὐτὸν ἐπιστῆναι καὶ ἰνδάλματα καθ' ἐκάστην ἐν μέσῃ τῇ ἀγορᾷ ποιῶν πᾶσαν ἐκπλήττει τὴν πόλιν· ὥς ἀνδριάντας μὲν αὐτοῦ διερχομένου κινεῖσθαι, καὶ σκιάς δὲ πολλάκις αὐτοῦ προηγεῖσθαι, ἃς καὶ τῶν τεθνηκό- των ψυχὰς αὐτὸς ὀνομάζει.

Clemens Romanus et Clementina Theol., Pseudo-Clementina (epitome de gestis Petri praemetaphrastica) [Sp.] (1271: 012) "Clementinorum epitomae duae, 2nd edn.", Ed. Dressel, A.R.M. Leipzig: Hinrichs, 1873. Section 45, line 2

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Ἡ δὲ Βερνίκη εἶπεν· ταῦτα οὕτως ἔχει, τὰ δὲ ἄλλα τὰ κατὰ τὸν Σίμωνα ἀκούσατε· φαντάσματα καὶ ἰνδάλματα ἐν μέσῃ τῇ ἀγορᾷ ποιῶν καθ' ἡμέραν πᾶσαν ἐκπλήττει τὴν πόλιν· διερχομένου γὰρ αὐτοῦ ἀνδριάντες κινοῦνται καὶ σκιαὶ πολλαὶ προηγούνται, ὥσπερ αὐτὰς ψυχὰς τῶν τεθνη-κότων λέγει.

8.36 Philosophus Christianus Alchem.

Philosophus Christianus Alchem., Τίς ἡ ἐν ἀποκρύφοις τῶν παλαιῶν ἐκδιδόμενη τάξις (e cod. Venet. Marc. 299, fol. 124v) (4328: 012) “Collection des anciens alchimistes grecs, vol. 2”, Ed. Berthelot, M., Ruelle, C.É. Paris: Steinheil, 1888, Repr. 1963. Volume 2, page 418, line 22

Οὕτω γὰρ δεκτικὰ γίνεται τῶν χρωμάτων· ὥσπερ δὲ χρυσοποιηθεὶς ὁ ἐστὶν λάχιον ὃ καλοῦσιν <λαχάν> οἱ λαχῶται, τουτέστιν οἱ ἰνδικοβάφοι.

8.37 Scholia In Dionysium Periegetam

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) (5019: 001) “Geographi Graeci minores, vol. 2”, Ed. Müller, K. Paris: Didot, 1861, Repr. 1965. Vita-verse of Orbis descriptio 1, line of scholion 56

Τό τε Ἰνδικὸν πέλαγος, ὅπερ ἐστὶ τῆς Ἐρυθρᾶς, ἄρχεται μὲν ἐκ τοῦ Ἀραβικοῦ κόλπου, παρατείνει δὲ μέσον ἔχον Ταπροβάνην νῆσον ἕως Μεγάλου τοῦ παρ' Ἰνδοῖς τε καὶ Σινδοῖς οὕτως καλουμένου ἑώου κόλπου.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 1, line of scholion 69

Φησὶ γὰρ ὁ ἀνὴρ (Ptol. 7, 5) διαιρεῖσθαι μὲν τὴν οἰκουμένην ἅπασαν εἰς τρεῖς ἡπείρους, Λιβύην, Εὐρώ-πην, Ἀσίαν· καὶ ἐκ μὲν τῶν ἐώων ἀγνώστῳ γῇ περιόριζεσθαι τῇ παρακειμένη τοῖς ἀνατολικοῖς ἔθνεσι τῆς Μεγάλῃς Ἀσίας, Σιναῖς τε καὶ Σηρικῇ· ἐκ δὲ μεσημβρίας ὁμοίως ἀγνώστῳ γῇ περικλειούσῃ τὸ Ἰν-δικὸν πέλαγος· ἐκ δὲ τῶν δυτικῶν γῇ τε ἀγνώστῳ περιλαμβανούσῃ τὸν Αἰθιοπικὸν οὕτω λεγόμενον κόλ-πον καὶ τῷ δυτικῷ ἐφεξῆς ὠκεανῷ καὶ πελάγει [τῷ περιέχοντι] τοῖς ἐκεῖ πέρασιν ὁμοῦ Λιβύης τε καὶ Εὐ-ρώπης· ἐκ δὲ τῶν ἄρκτων αὐτὴν περιέχεσθαι [τῷ περιέχοντι] Θούλῃν ὠκεανῷ καὶ Βρεττανίαν καὶ τὰ βορειότερα μέρη τῆς Εὐρώπης· καλεῖσθαι δὲ φησὶ τὸν ἄρκτῶν ὠκεανὸν Σαρματικὸν τε καὶ Δουηκαληδόνιον· οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ γῇ ἀγνώστῳ περιέχεσθαι, παρακει-μένη ταῖς ἀρκτικωτάταις χώραις τῆς μεγάλης ἐώας,

8.37. SCHOLIA IN DIONYSIUM PERIEGETAM

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 1, line of scholion 90

Τὰς δὲ θαλάσσας ὧδε ἔφη καθόλου κεῖσθαι· μίαν μὲν τὴν καθ' ἡμᾶς ἅμα τοῖς κόλποις, Ἀδριατικῷ τε καὶ τῷ Αἰγαίῳ πελάγει καὶ Προποντίδι καὶ Πόντῳ καὶ Μαιώ- τιδι λίμνῃ, φέρεσθαι δὲ διὰ τῶν Ἡρακλέους στηλῶν, ἀρχομένην ἐκ τῶν Ἰβήρων· ἑτέραν δὲ διώνυμον οὕτω λέγεσθαι Κασπίαν τε καὶ Ὑρκανίαν, ἣν ἀποκλείουσά τις ἡπειρος ἐκ τοῦ ἐναντίου νησοποιεῖ τὴν θάλασσαν· τρίτην δὲ εἶναι τὴν Ἰνδικήν, ἐπιφανῆ τοῖς ἐν αὐτῇ διαπρέπουσι κόλποις, Ἀραβίῳ τε καὶ Περσικῷ, Γαλ- γητικῷ τε καὶ τῷ ἰδίῳ οὕτω καλουμένῳ Μεγάλῳ· περιλαμβάνεσθαι μέντοι καὶ αὐτὴν ὑπὸ ἀγνώστου, καὶ μείζονα μὲν ἔφη τῷ καταλόγῳ τῶν ἄλλων καὶ πρώτην, δευτέραν δὲ τὴν καθ' ἡμᾶς τῷ μεγέθει, ἐλατ- τοῖ δὲ τὴν Ὑρκανίαν, καὶ ὑπὸ ταύτης * ὀρίζει.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 1, line of scholion 108

Πρωτεύει μὲν ἡ Ἰνδικὴ Ταπροβάνη με- γέθει καὶ δόξῃ· μεθ' ἣν ἡ Βρεττανικὴ καλουμένη, παρὰ δὲ τοῖς οἰκοῦσιν αὐτὴν Ἀλουιωνίς, τρίτη δὲ ἡ Χρυσῇ, χειρρόνησος Ἰνδική· τετάρτη τῶν Βρεττανῶν ἡ ἑτέρα, λεγομένη παρ' αὐτοῖς Ἰουερνία· πέμπτη τούτων ἡ Πελοπόννησος, καὶ ἡ Σικελία μετ' αὐτὴν ἕκτη· Σαρδῶ μετ' ἐκείνην ἑβδόμη· μετὰ δὲ ταύτην ἡ Κύπρος ὀγδόη· Κρήτη δὲ τάξεως ἑνάτης· μετὰ δὲ ταύτην ἡ Κύπρος οὕσα δεκάτη τῷ καταλόγῳ, εἰπεῖν δὲ κορωνίς.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 37, line of scholion 1

Ὅτι τὸ πρὸς ἑὼ μέρος ἡῶν καὶ Ἰνδικόν.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 37, line of scholion 2

Οἱ γὰρ Ἰνδοὶ ἀνατολικοί.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 37, line of scholion 2

Ἐνθα καὶ ὁ Ἰνδὸς ποταμός.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 180, line of scholion 6

Εἰσὶ γὰρ καὶ ἀνατολικοί, Ἰνδοὶ καλούμενοι.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 593, line of scholion 4

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Ταύτην δὲ Χρυσὴν χερ- σόνησον ὁ Πτολεμαῖος φησί· κεῖται δὲ ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἰνδῶν.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 607, line of scholion 8

Ἐρύθρας δὲ βασιλεὺς, ἀφ' οὗ τὸ πέλαγος, ἦν τοῦ Δηριάδου, ὃς ἀντετάξατο Διονύσῳ ὑπὲρ Ἰνδῶν.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 1074, line of scholion 1

<Ἐλκων Ἰνδὸν ὕδωρ>] ἀπὸ Ἰνδῶν ἐξίῳν ἐπὶ Σοῦσα δι' ἀδῆλων.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 1097, line of scholion 3

Παρνησοῖο] Τὰ κρείττονα τῶν ἀντιγράφων ἢ <Παρπάνισσον> γράφουσι προπαροξυτό- νως, ὅρος δὲ Ἰνδικόν, ἢ Παρπαμισσόν ὀξύτόνως διὰ τοῦ μ. <Ἀριηνούς>] οὕτω καλουμένους πάν- τας ὁμοίως Ἀριηνούς· εἶπε γὰρ ἄνω Ἐρυθραίων Ἀριηνῶν· πάντας τοὺς Ἀριηνούς καλουμένους ὁμοίως· ἀλλ' ὅμως ἀφορ- μαὶ καὶ ὁδοὶ τοῦ βίου πολλαὶ εἰσι τοῖς ἀνθρώποις.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio 1139, line of scholion 8

Περὶ τῶν συμβεβηκότων οὖν ὁ βασιλεὺς ἀθυμήσας τὴν μὲν ἐνεδρεύσασαν αὐτὸν γραῦν ζῶσαν κατέχωσε, τὴν δὲ θυγατέρα σταυρώσας διὰ λυπῆς ὑπερβολὴν ἔρριψεν ἑαυτὸν εἰς ποτα- μὸν Ἰνδὸν, ὃς ἀπ' αὐτοῦ Ὑδάσπης με- τωνομάσθη· ἔστι δὲ τῆς Ἰνδίας καταφερόμενος εἰς τὸν Σαρωνικὴν Ἀρότην.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (olim sub auctore Demetrio Lampsaceno) Vita-verse of Orbis descriptio append, line of scholion 39

Ὅτι ὁ ὠκεανὸς εἰς τέσσαρα πελάγη μερίζεται· εἰς τὸ Ἀτλαντικόν, Κρόνιον τὸ καὶ νεκρὸν, Ἰνδικόν Ἐρυ- θραῖόν τε ἢ Αἰθιοπικόν.

Scholia In Dionysium Periegetam, Scholia in Dionysii periegetae orbis descriptionem (scholia vetera) (5019: 002) “Aristarchs Homerische Textkritik nach den Fragmenten des Didymos, vol. 2”, Ed. Ludwich, A. Leipzig: Teubner, 1885, Repr. 1971. Vita-scholion 43, line 14

BV. δύο δὲ νοτίους ἥπτονας ἔχειν μὲν γένεσιν θαλάσσης Ἰνδικῆς, ὀνομάζεσθαι δὲ Περσικὸν καὶ Ἀραβικόν.

8.38 Flavius Josephus Hist.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae (0526: 001) “Flavii Iosephi opera, vols. 1–4”, Ed. Niese, B. Berlin: Weidmann, 1:1887; 2:1885: 3:1892; 4:1890, Repr. 1955. Book 1, chapter 38, line 5

καὶ Φεισῶν μὲν, σημαίνει δὲ πληθὺν τοῦνομα, ἐπὶ τὴν Ἰνδικὴν φερόμενος ἐκδί-
δωσιν εἰς τὸ πέλαγος ὑφ’ Ἑλλήνων Γάγγης λεγόμενος, Εὐφράτης δὲ καὶ Τίγρις ἐπὶ τὴν Ἐρυθρὰν ἀπίασι
θάλασσαν· καλεῖται δὲ ὁ μὲν Εὐφράτης Φοράς, σημαίνει δὲ ἥτοι σκεδασμὸν ἢ ἄνθος, Τίγρις
δὲ Διγλάθ, ἐξ οὗ φράζεται τὸ μετὰ στενότητος ὄξύ· Γηὼν δὲ διὰ τῆς Αἰγύπτου ῥέων δημοῖ τὸν
ἀπὸ τῆς ἐναντίας ἀναδιδόμενον ἡμῖν, ὃν δὴ Νεῖλον Ἕλληνες προσαγορεύουσιν.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 1, chapter 143, line 2

Σημᾶ δὲ τῷ τρίτῳ τῶν Νώχου υἱῶν πέντε γίνονται παῖδες, οἳ τὴν μέχρι τοῦ κατ’ Ἰνδίαν
ὠκεανοῦ κατοικοῦσιν Ἀσίαν ἀπ’ Εὐ- φράτου τὴν ἀρχὴν πεποιημένοι.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 1, chapter 147, line 4

οὗτοι ἀπὸ Κωφῆνος ποταμοῦ τῆς Ἰνδικῆς καὶ τῆς πρὸς αὐτῇ Σηρίας τινὰ κατοικοῦσι.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 8, chapter 164, line 4

ἔτυχε δὲ καὶ τῆς ἀρμοζούσης εἰς τὰς ναῦς δωρεᾶς παρ’ Εἰρώμου τοῦ Τυρίων βασιλέως·
ἄνδρας γὰρ αὐτῷ κυβερνήτας καὶ τῶν θαλασσιῶν ἐπιστήμονας ἔπεμψεν ἱκανούς, οἷς ἐκέλευσε
πλεύσαντας μετὰ τῶν ἰδίων οἰκονόμων εἰς τὴν πάλαι μὲν Σώφειραν νῦν δὲ χρυσὴν γῆν καλου-
μένην, τῆς Ἰνδικῆς ἐστὶν αὕτη, χρυσὸν αὐτῷ κομίσαι.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 10, chapter 227, line 1

καὶ Μεγασθένης δὲ ἐν τῇ τετάρτῃ τῶν Ἰνδικῶν μνημο- νέει αὐτῶν δι’ ἧς ἀποφαίνειν πει-
ρᾶται τοῦτον τὸν βασιλέα τῇ ἀνδρείᾳ καὶ τῷ μεγέθει τῶν πράξεων ὑπερβεβηκότα τὸν Ἡρα-
κλέα· καταστρέψασθαι γὰρ αὐτὸν φησι Λιβύης τὴν πολλὴν καὶ Ἰβηρίαν.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 10, chapter 228, line 2

καὶ Διοκλῆς δ’ ἐν τῇ δευτέρᾳ τῶν Περσικῶν μνημονεύει τούτου τοῦ βασιλέως καὶ Φιλόστρα-
τος ἐν ταῖς Ἰνδικαῖς καὶ Φοινικικαῖς ἱστορίαις, ὅτι οὗτος ὁ βασιλεὺς ἐπολιόρκησε τὴν Τύρον ἔτεσι
τρισὶ καὶ δέκα βασιλεύοντος κατ’ ἐκείνον τὸν καιρὸν Ἰθωβάλου τῆς Τύ- ρου.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 11, chapter 33, line 4

Τῷ δὲ πρώτῳ τῆς βασιλείας ἔτει Δαρεῖος ὑποδέχεται λαμ- πρῶς καὶ μετὰ πολλῆς πα-
ρασκευῆς τοὺς τε περὶ αὐτὸν καὶ τοὺς οἴκοι γεγονότας καὶ τοὺς τῶν Μήδων ἡγεμόνας καὶ
σατράπας τῆς Περσίδος καὶ τοπάρχας τῆς Ἰνδικῆς ἄχρι τῆς Αἰθιοπίας καὶ τοὺς στρατηγούς
τῶν ἑκατὸν εἰκοσιεπτὰ σατραπειῶν.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 11, chapter 186, line 2

παραλαβὼν γὰρ τὴν βασιλείαν ὁ Ἀρταξέρξης καὶ καταστήσας ἀπὸ Ἰνδίας ἄχρι Αἰθιο-
πίας τῶν σατραπειῶν ἑκατὸν καὶ εἰκοσιεπτὰ οὐσῶν ἄρχοντας, τῷ τρίτῳ τῆς βασιλείας ἔτει
τούς τε φίλους καὶ τὰ Περσῶν ἔθνη καὶ τοὺς ἡγε- μόνους αὐτῶν ὑποδεξάμενος ἐστὶ πολυτελῶς,

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

οἷον εἰκὸς παρὰ βασιλεῖ τοῦ πλούτου παρασκευαζομένῳ τὴν ἐπίδειξιν ποιήσασθαι, ἐπὶ ἡμέρας ἑκατὸν ὀγδοήκοντα.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 11, chapter 216, line 1

τυχὼν δὲ ὧν ἐπεθύμει Ἀμάνης παραχρῆμα πέμπει διὰ- ταγμα ὡς τοῦ βασιλέως εἰς ἅπαντα τὰ ἔθνη περιέχον τοῦτον τὸν τρόπον· “βασιλεὺς μέγας Ἀρταξέρξης τοῖς ἀπὸ Ἰνδικῆς ἕως τῆς Αἰθιοπίας ἑπτὰ καὶ εἴκοσι καὶ ἑκατὸν σατραπειῶν ἄρχουσι τάδε γράφει.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 11, chapter 272, line 3

μεταπεμφθέντας οὖν τοὺς βασιλικοὺς γραμματεῖς ἐκέλευσε γράφειν τοῖς ἔθνεσι περὶ τῶν Ἰουδαίων τοῖς τε οἰκονόμοις καὶ ἄρχουσιν ἀπὸ Ἰνδικῆς ἕως τῆς Αἰθιοπίας ἑκατὸν εἰκοσιεπτὰ σατραπειῶν ἡγουμένοις.

Flavius Josephus Hist., Antiquitates Judaicae Book 13, chapter 251, line 2

μάρτυς δὲ τούτων ἡμῖν ἐστὶν καὶ Νικόλαος ὁ Δαμασκηνὸς οὕτως ἱστορῶν· “τρόπαιον δὲ στήσας Ἀντίοχος ἐπὶ τῷ Λύκῳ ποταμῷ νικήσας Ἰνδάτην τὸν Πάρθων στρατηγὸν αὐτόθι ἔμεινεν ἡμέρας δύο δεηθέντος Ἰρκανοῦ τοῦ Ἰου- δαίου διὰ τινὰ ἐορτὴν πάτριον, ἐν ᾗ τοῖς Ἰουδαίοις οὐκ ἦν νόμιμον ἐξοδεύειν.

Flavius Josephus Hist., Contra Apionem (= De Iudaeorum vetustate) (0526: 003) “Flavii Iosephi opera, vol. 5”, Ed. Niese, B. Berlin: Weidmann, 1889, Repr. 1955. Book 1, section 144, line 3

περὶ τούτων γοῦν συμφωνεῖ καὶ Φιλόστρατος ἐν ταῖς ἱστορίαις μεμνημένος τῆς Τύρου πολιορκίας, καὶ Μεγασθένης ἐν τῇ τετάρτῃ τῶν Ἰνδικῶν, δι’ ἧς ἀποφαίνειν πειράται τὸν προειρημένον βασιλέα τῶν Βαβυλωνίων Ἡρακλέους ἀνδρεία καὶ μεγέθει πράξεων διεννηοχέαι· καταστρέφασθαι γὰρ αὐτόν φησι καὶ Λιβύης τὴν πολλὴν καὶ Ἰβηρίαν.

Flavius Josephus Hist., Contra Apionem (= De Iudaeorum vetustate) Book 1, section 179, line 2

οὗτοι δὲ εἰσὶν ἀπόγονοι τῶν ἐν Ἰνδοῖς φιλοσόφων, κα- λοῦνται δέ, ὥς φασιν, οἱ φιλόσοφοι παρὰ μὲν Ἰνδοῖς Καλανοί, παρὰ δὲ Σύροις Ἰουδαῖοι τοῦνομα λαβόντες ἀπὸ τοῦ τόπου· προς- αγορεύεται γὰρ ὃν κατοικοῦσι τόπον Ἰουδαία.

Flavius Josephus Hist., De bello Iudaico libri vii (0526: 004) “Flavii Iosephi opera, vol. 6”, Ed. Niese, B. Berlin: Weidmann, 1895, Repr. 1955. Book 2, section 385, line 2

καὶ τί δεῖ πόρρωθεν ὑμῖν τὴν Ῥωμαίων ὑποδεικνύναι δύναμιν παρὸν ἐξ Αἰγύπτου τῆς γειτνι- ώσης, ἥτις ἐκτεινομένη μέχρις Αἰθιοπῶν καὶ τῆς εὐδαίμονος Ἀραβίας ὅρμος τε οὖσα τῆς Ἰνδικῆς, πεντήκοντα πρὸς ταῖς ἑπτακοσίαις ἔχουσα μυριάδας ἀνθρώπων δίχα τῶν Ἀλεξάνδρειαν κα- τοικούντων, ὥς ἐνεστὶν ἐκ τῆς καθ’ ἑκάστην κεφαλὴν εἰσφορᾶς τεκμήρασθαι, τὴν Ῥωμαίων ἡγεμονίαν οὐκ ἀδοξεῖ, καίτοι πηλίκον ἀποστάσεως κέντρον ἔχουσα τὴν Ἀλεξάνδρειαν πλήθους τε ἀνδρῶν ἕνεκα καὶ πλούτου πρὸς δὲ μεγέθους· μῆκος μὲν γε αὐτῆς τριά- κοντα σταδίων, εὖρος δ’ οὐκ ἔλαττον δέκα, τοῦ δὲ ἐνιαυσιαίου παρ’ ὑμῶν φόρου καθ’ ἓνα μῆνα πλέον Ῥωμαίοις παρέχει καὶ τῶν χρημάτων ἔξωθεν τῇ Ῥώμῃ σίτον μηνῶν τεσσάρων· τετείχισται δὲ πάντοθεν ἢ δυσβάτοις ἐρημίαις ἢ θαλάσσαις ἀλιμένοις ἢ

8.39. ZOSIMUS HIST.

ποτα-

Flavius Josephus Hist., De bello Judaico libri vii Book 7, section 351, line 4

ἔδει μὲν οὖν ἡμᾶς οἰκοθεν πεπαιδευμένους ἄλλοις εἶναι παράδειγμα τῆς πρὸς θάνατον ἐτοιμότητος· οὐ μὴν ἀλλ' εἰ καὶ τῆς παρὰ τῶν ἀλλοφύλων δέόμεθα πίστεως, βλέψωμεν εἰς Ἰνδοὺς τοὺς σοφίαν ἀσκεῖν ὑπὸ ἰσχυρομένους.

Flavius Josephus Hist., De bello Judaico libri vii Book 7, section 357, line 1

ἄρ' οὖν οὐκ αἰδούμεθα χεῖρον Ἰνδῶν φρονούντες καὶ διὰ τῆς αὐτῶν ἀτολμίας τοὺς πατέρας νόμους, οἳ πᾶσιν ἀνθρώποις εἰς ζῆλον ἤκουσιν, αἰσχυρῶς ὑβρίζοντες;

8.39 Zosimus Hist.

Zosimus Hist., Historia nova (4084: 001) “Zosime. Histoire nouvelle, vols. 1–3.2”, Ed. Paschoud, F. Paris: Les Belles Lettres, 1:1971; 2.1–2.2:1979; 3.1:1986; 3.2:1989. Book 1, chapter 5, section 1, line 2

Ἐπεὶ δὲ Δαρεῖον μὲν Βῆσος ἀνεῖλεν, Ἀλέξανδρος δὲ μετὰ τὰς ἐν Ἰνδοῖς πράξεις ἐπανελθὼν εἰς Βαβυλῶνα τοῦ βίου μετέστη, τότε δὴ τῆς Μακεδόνων ἀρχῆς εἰς σατραπείας διαιρεθείσης, οὕτω τε τοῖς πρὸς ἀλλήλους συνεχέσι πολέμοις ἐλαττωθείσης, ἡ τύχη Ῥωμαίοις τὰ [τε] λειπόμενα τῆς Εὐρώπης πεποίηκεν ὑποχείρια.

8.40 Hephaestion Astrol.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica (2043: 001) “Hephaestionis Thebani apotelesmaticorum libri tres, vol. 1”, Ed. Pingree, D. Leipzig: Teubner, 1973. Page 9, line 4

κατὰ δὲ μέρος τῷ μὲν βορείῳ Διδύμων ὑπόκειται κατὰ τοὺς πόδας Βοιωτία, παρὰ τὴν χεῖρα Θράκη, ὑπὸ τὸν νῶτον Γαλατία, τοῦ δὲ νοτίου ὑπὸ τὸν γλουτὸν Πόντος, κατὰ νῶτον Κιλικία, κατὰ τὴν ὠμοπλάτην Φοινίκη, κατὰ τὴν κορυφὴν Ἰνδική.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica Page 24, line 22

κατὰ δὲ Πτολεμαῖον Ἰνδική, Ἀριανή, Γεδρωσία, Θράκη, Μακεδονία, Ἰλλυρίς.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica Page 29, line 9

κατὰ μὲν τὸν Ὠδαῖον τὰ ἐμπρόσθια Εὐφρατησία καὶ Τίγρις, καὶ τὰ μέσα Συρία καὶ Ἐρυθρὰ θάλασσα, Ἰνδική, μέση Περσίς, καὶ ὑπὸ τὸν νῶτον Ἀραβικὴ θάλασσα καὶ Βορυσθένης, κατὰ δὲ τὸν σύνδεσμον τοῦ βορείου Θράκη, τοῦ νοτίου Ἀσία καὶ Σαρδῶ.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica Page 56, line 5

τὴν δὲ Σελήνην τὸν δυναστεύοντα Συρίας πρὸς ἄλλον δυνάστην συγκρούσειν καὶ τινα μέγαν ἄνδρα ἀπολέσθαι, ὑπὸ τε τῶν ὄχλων προδοθήσεσθαι τὸν ἡγούμενον καὶ τόπους ἐπιφανεῖς ἀφανισθήσεσθαι ὑπὸ σεισμῶν καὶ ἀνθρώπους ἐνδόξους ἀναιρεθήσεσθαι, ἐν δὲ ταῖς <β> τριάροις

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

ταῖς τελευταίαις Βαβυλῶνι καὶ Αἰθιοπία φθορὰν ἔσεσθαι, Ἰνδοῖς δὲ εὐστάθειαν, ἀφανισμόν δὲ τοῖς ἀπανταχοῦ ζώοις.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica Page 60, line 12

Ἡλίου δὲ ἐν Αἰγοκέρωτι περὶ τὴν πρώτην τρίωρον ἐκλείποντος τοῖς πρὸς νότον οἰκοῦσι κακὰ σημαίνει, περὶ δὲ δευτέραν τρίωρον κακὰ Ἑλυμαία, Περσίδι, Μηδία, Γερμανία, Ἰνδία δηλοῖ καὶ τοῖς πρὸς ἀνατολὴν καὶ ἀπηλιώτην οἰκοῦσιν, ἐν δὲ τῇ τρίτῃ τρίωρῳ τοῖς ἐν τῷ Πόντῳ πόλεμον καὶ τοῖς ἐν τῇ Ἀσία καὶ Κύπρῳ καὶ τοῖς πρὸς νότον οἰκοῦσι σημαίνει, ἔτι δὲ νόσους καὶ φθορὰς καρπῶν καὶ φυτῶν καὶ γῆς, ἐν δὲ τῇ τελευταίᾳ τρίωρῳ τετραπόδων διαφθορὰν τῶν ἐν τῇ δύσει.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica Page 64, line 5

εἰάν δὲ ἐν Καρκίνῳ αἱματώδης γένηται, ταράξει τὴν Ἰνδῶν καὶ Σύρων καὶ Αἰγυπτίων βασιλείαν.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica Page 222, line 8

ἐν δὲ τοῖς τοῦ <Ἄρεως ὁμμάτων ἀσθενείας ποιεῖ, μ>άλιστα ἐπὶ ἡμέρας, καὶ αὐ<ξίφως οὔσα πυρετούς, αἱμαγμούς, κ]2ινδύνους, στομάχου πόνον <καὶ ἀνασκευὰς ποιεῖ, νυκτός> δὲ ἐν πᾶσιν ἀγαθὴ τοῖς ἐγ<χειριζομένοις, καὶ ὀξέως τὰς> πράξεις διαλύσει, καὶ <δοκοῦντες βλάπτεσθαι ἀπροσδο>κῆτως ὠφελοῦνται.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica (epitomae quattuor) (2043: 002)
“Hephaestionis Thebani apotelesmaticorum libri tres, vol. 2”, Ed. Pingree, D.
Leipzig: Teubner, 1974. Page 128, line 17

τῆς δὲ Σελήνης ὥρα πρώτη, δευτέρα καὶ τρίτη ἐκλείπουσιν τὸν δυναστεύοντα τῆς Συρίας πρὸς ἄλλον δυνάστην συγκρούσειν καὶ τινα μέγαν ἄνδρα ἀπολέσθαι, ὑπὸ τε <τῶν ὀχλῶν> προδοθήσεσθαι τὸν ἡγούμενον καὶ τόπους ἐπιφανεῖς ἀφανισθήσεσθαι ὑπὸ σεισμῶν τε καὶ ἀστραπῶν καὶ ἀνθρώπων ἐνδόξους ἀν- αιεθήσεσθαι, ἐν δὲ τῇ β' τρίωρῳ ἦτοι δ', ε', ζ' τῆς τε Βαβυλῶνος καὶ Αἰθιοπίας φθορὰν ἔσεσθαι, Ἰνδοῖς δὲ καὶ ἀφανισμόν τοῖς ζώοις, ζ' δὲ καὶ ἡ' καὶ θ' ἐν Περσίδι φθο- ρὰν σημαίνει, ι' καὶ ια' καὶ ιβ' ὁμοίως ἐν Βαβυλῶνι φθορὰν ἔσεσθαι ἀνθρώπων καὶ προβάτων.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica (epitomae quattuor) Page 132, line 10

Τοῦ Ἡλίου δὲ ἐν Αἰγοκέρωτι περὶ τὴν πρώτην τρίωρον ἐκλείποντος τοῖς πλησίον νότου οἰκοῦσι κακὰ σημαίνει, περὶ δὲ δευτέραν τρίωρον κακὰ Ἑλυμαία, Περσίδι, Μηδία, Γερμανία, Ἰνδία δηλοῖ καὶ τοῖς πρὸς ἀνατολὰς καὶ ἀπηλιώ- την οἰκοῦσιν, ἐν δὲ τῇ τρίτῃ τρίωρῳ τοῖς ἐν τῷ Πόντῳ πόλεμον καὶ τοῖς ἐν τῇ Ἀσία καὶ Κύπρῳ καὶ τοῖς πρὸς νότον οἰκοῦσι σημαίνει;

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica (epitomae quattuor) Page 140, line 13

ὥς δὲ κατὰ μέρος οἱ παλαιοὶ διωρίσαντο, τῷ μὲν βορείῳ Διδύμῳ κατὰ τοὺς πόδας ὑπόκειται Βοιωτία, τῇ χειρὶ Θράκη, ὑπὸ τὸν νῶτον Γαλατία, τῷ δὲ νοτίῳ ὑπὸ τὸν γλουτὸν Πόντος, κατὰ δὲ τὸν νῶτον Κιλικία, κατὰ τὸν ὠμοπλάτην Φοι- νίκη, κατὰ τὴν κορυφὴν Ἰνδική.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica (epitomae quattuor) Page 154, line 10

8.40. HEPHAESTION ASTROL.

Προσφκείωνται δὲ αὐτῷ χώραι κατὰ μὲν τοὺς παλαιούς Κιμμέριοί τε καὶ ἡ πανέρημος, κατὰ δὲ τὸν Πτολεμαῖον Ἰνδική, Ἀρ[ρ]ιανή, Γεδρωσία, Θράκη, Μακεδονία, Ἰλλυρίς.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica (epitomae quattuor) Page 158, line 4

ὥς δὲ κατὰ μέρος οἱ ἀρχαιότεροι διεῖλον τοῖς μὲν ἐμπρος- θίοις Εὐφράτης καὶ Τίγρις, τοῖς δὲ μέσοις Συρία, Ἐρυ- θρὰ θάλασσα, Ἰνδική, μέση Περσίς, τοῖς δ' ὑπὸ τὸν νῶτον Ἀραβικὴ θάλασσα καὶ Βορυσθένης, τῷ συνδέσμῳ τοῦ βορείου Ἰχθύος Θράκη, τῷ δὲ τοῦ νοτίου Ἀσία καὶ Σαρδῶ.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica (epitomae quattuor) Page 171, line 26

τῆς δὲ Σελήνης τὸν δυνα- στεύοντα τῆς Συρίας πρὸς ἄλλον δυνάστην συγκρούσειν καὶ τινα μέγαν ἄνδρα ἀπολέσθαι, ὑπὸ τε τῶν ὄχλων προδο- θήσεσθαι τὸν ἡγούμενον καὶ τόπους ἐπι- φανεῖς ἀφανί- θήσεσθαι, ἐν δὲ ταῖς δευτέραις τριώροις καὶ ταῖς τελευταί- ας Βαβυλῶνι καὶ Αἰθιοπία φθορὰν ἔσεσθαι, Ἰνδοῖς δὲ εὐ- στάθειαν καὶ ἀφανισμόν τοῖς ἀπανταχοῦ ζώοις.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica (epitomae quattuor) Page 175, line 2

Ἐν δὲ Αἰγοκέρῳτι Ἡλίου ἐκλείποντος κατὰ τὴν α' τρί- ωρον τοῖς πρὸς νότον οἰκοῦσι κακὰ σημαίνει, περὶ δὲ τὴν β' τρίωρον τοῖς Ἑλυμαίοις, τῇ Περσίδι, τῇ Μηδικῇ, τῇ Γερμανία, τῇ Ἰνδία καὶ τοῖς πρὸς ἀνατολὴν καὶ ἀπηλι- ώτην οἰκοῦσιν, κατὰ δὲ τὴν γ' τρίωρον τοῖς ἐν τῷ Πόντῳ πόλεμον καὶ τοῖς ἐν τῇ Ἀσίᾳ καὶ Κύπρῳ καὶ πρὸς νότον οἰκοῦσιν, ἔτι δὲ νόσους καὶ φθορὰς καρπῶν καὶ φυτῶν γῆς, κατὰ δὲ τὴν τελευταίαν τρίωρον τετραπύδων δια- φθορὰν τῶν ἐν τῇ δύσει.

Hephaestion Astrol., Apotelesmatica (epitomae quattuor) Page 178, line 4

ἐν Καρκίνῳ δὲ αἱματώδης γενόμενος ταράξει τὴν Ἰνδῶν καὶ Σύρων καὶ Αἰγυπτίων βασι- λείαν.

Hephaestion Astrol., Excerptum (e cod. Paris. gr. 2506) (2043: 003) "Hephaestionis Thebani apotelesmaticorum libri tres, vol. 2", Ed. Pingree, D. Leipzig: Teubner, 1974. Page vii, line 12

καὶ ἐπεὶ ὁ Ἥλιος ὁ τὸ πατρικὸν ἐπέχων πρόσωπον πρὸς τὴν τοῦ Διὸς καὶ Ἑρμοῦ ἐπιμαρ- τυρίαν καὶ κόλλησιν φέρεται ἔστιν εὐτυχίας ἐλπίς· μετὰ γὰρ ἔτη <ιγ> πλήρη καὶ ἡμέρας <κδ> ὁ τοῦ Διὸς ἐπέρχεται τῷ ἡλιακῷ τόπῳ, καὶ ἔστιν ὁ καιρὸς τῆς ἐπερχομένης ἰνδικτιῶνος γ' περὶ τὸν Ὀκτώβριον· εἴτε γὰρ εἰς κριτικὸν ἀξίωμα ἢ χαρτουλαρικὸν ἢ βασιλικὸν νοτάριον ἢ εἰς ἀναστροφὰς δημοσίων πραγμάτων ἢ τι τοιοῦτον προβληθεῖν.

Hephaestion Astrol., Excerptum (e cod. Vat. gr. 1056) (2043: 005) "Hephaestionis Thebani apotelesmaticorum libri tres, vol. 2", Ed. Pingree, D. Leipzig: Teubner, 1974. Page xxii, line 2

..> Ὑπόδειγμα ἕτερον

Μηνὶ Ἰουνίῳ α' ἰνδ. ε' ἦλθεν ἀγγελία ἀπὸ τῆς δύνσεως ὡς τοῦ μεγίστου κάστρου τῶν Σερβίων παρὰ τοῦ βασιλέως κρατηθέντος.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

8.41 Antiphon Orat.

Antiphon Orat., Fragmenta (0028: 008) “Antiphontis orationes et fragmenta”, Ed. Thalheim, T. (post F. Blass) Leipzig: Teubner, 1914, Repr. 1982. Fragment 25-33t, line 1

Harp. ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΛΙΝΔ*ΙΩΝ ΦΟΡΟΥ
<Ἀμφίπολις>· Ἀ.

8.42 Pausanias Perieg.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio (0525: 001) “Pausaniae Graeciae descriptio, 3 vols.”, Ed. Spiro, F. Leipzig: Teubner, 1903, Repr. 1:1967. Book 1, chapter 12, section 3, line 5

ἐλέφαντας δὲ πρῶτος μὲν τῶν ἐκ τῆς Εὐρώπης Ἀλέξανδρος ἐκτῆσατο Πῶρον καὶ τὴν δύναμιν καθελὼν τὴν Ἰνδῶν, ἀποθανόντος δὲ Ἀλεξάνδρου καὶ ἄλλοι τῶν βασιλέων καὶ πλείστους ἔσχεν Ἀντίγονος, Πύρρῳ δὲ ἐκ τῆς μάχης ἐγεγόνει τῆς πρὸς Δημήτριον τὰ θηρία αἰχμάλωτα· τότε δὲ ἐπιφανέντων αὐτῶν δαῖμα ἔλαβε Ῥωμαίους ἄλλο τι καὶ οὐ ζῶα εἶναι νομίσαντας.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 1, chapter 12, section 4, line 5

ἐλέφанта γάρ, ὅσος μὲν ἐς ἔργα καὶ ἀνδρῶν χεῖρας, εἰσὶν ἐκ παλαιοῦ δῆλοι πάντες εἰδότες· αὐτὰ δὲ τὰ θηρία, πρὶν ἢ διαβῆναι Μακεδόνας ἐπὶ τὴν Ἀσίαν, οὐδὲ ἐωράκεσαν ἀρχὴν πλὴν Ἰνδῶν τε αὐτῶν καὶ Λιβύων καὶ ὅσοι πλησιόχωροι τούτοις.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 2, chapter 28, section 1, line 8

τὸ δὲ αὐτὸ εὐρίσκω καὶ ἄλλαις χώραις συμβεβηκός· Λιβύῃ μὲν γε μόνῃ χρὸς κοδείλους τρέφει χερσαίους διπλήρων οὐκ ἐλάσσονας, παρὰ δὲ Ἰνδῶν μόνων ἄλλα τε κομίζεται καὶ ὄρνιθες οἱ ψιττακοί.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 2, chapter 28, section 1, line 11

τούς δὲ ὄφεις οἱ Ἐπιδαύριοι τοὺς μεγάλους ἐς πλέον πηχῶν καὶ τριάκοντα προήκοντας, οἷοι παρὰ τε Ἰνδοῖς τρέφονται καὶ ἐν Λιβύῃ, ἄλλο δὲ τι γένος φασὶν εἶναι καὶ οὐ δράκοντας.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 3, chapter 12, section 4, line 2

ἀργύρου γάρ οὐκ ἦν πῶς τότε οὐδὲ χρυσοῦ νόμισμα, κατὰ τρόπον δὲ ἔτι τὸν ἀρχαῖον ἀντεδίδοντο βούς καὶ ἀνδράποδα καὶ ἀργὸν τὸν ἀργυρον καὶ χρυσόν· οἱ δὲ ἐς τὴν Ἰνδικὴν ἐσπλέοντες φορτίων φασὶν Ἑλληνικῶν τοὺς Ἰνδοὺς ἀγώγιμα ἄλλα ἀνταλλάσσεσθαι, νόμισμα δὲ οὐκ ἐπίστασθαι, καὶ ταῦτα χρυσοῦ τε ἀφθόνου καὶ χαλκοῦ παρόντος σφίσι.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 4, chapter 32, section 4, line 5

ἐγὼ δὲ Χαλδαίους καὶ Ἰνδῶν τοὺς μάγους πρῶτους οἶδα εἰπόντας ὡς ἀθάνατός ἐστιν ἀνθρώπου ψυχὴ, καὶ σφισι καὶ Ἑλλήνων ἄλλοι τε ἐπέισθησαν καὶ οὐχ ἥκιστα Πλάτων ὁ Ἀρίστωνος· εἰ δὲ ἀποδέχεται καὶ οἱ πάντες ἐθελήσουσιν, ἐκεῖνό γε ἀντειπεῖν οὐκ ἔνεστι μὴ οὐ τὸν πάντα αἰῶνα Ἀριστομένει τὸ μῖσος τὸ ἐς Λακεδαιμονίους ἐνεστάχθαι.

8.42. PAUSANIAS PERIEG.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 4, chapter 34, section 2, line 7

θηρία δὲ ἐς ὅλε- θρον ἀνθρώπων οὐ πεφύκασιν οἱ Ἑλλήνων ποταμοὶ φέρειν, καθάπερ γε Ἰνδὸς καὶ Νεῖλος ὁ Αἰγύπτιος, ἔτι δὲ Ῥήνος καὶ Ἰστρος Εὐφράτης τε καὶ Φᾶσις· οὐ- τοι γὰρ δὴ θηρία ὅμοια τοῖς μάλιστα ἀνδροφάγα αὐ- ξουσι, ταῖς ἐν Ἑρμῇ καὶ Μαιάνδρῳ γλάνισιν ἐοικότα ἰδέας πλὴν χροᾶς τε μελαντέρας καὶ ἀλκῆς· ταῦτα δὲ αἱ γλάνεις ἀποδέουσιν.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 4, chapter 34, section 3, line 1

ὁ δὲ Ἰνδὸς καὶ ὁ Νεῖλος κρο- κοδείλους μὲν ἀμφότεροι, Νεῖλος δὲ παρέχεται καὶ ἵππους, οὐκ ἔλασσον ἢ ὁ κροκόδειλος κακὸν ἀνθρώ- ποις.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 5, chapter 12, section 3, line 13

ὁ μὲν δὴ ἐλέφας παρὰ τὰ λοιπὰ ζῷα διάφορον καὶ τὴν ἑκ- φυσιν παρέχεται τῶν κεράτων, ὥσπερ γε καὶ τὸ μέγε- θὸς ἐστὶν αὐτῷ καὶ εἶδος οὐδὲν ἐοικότα ἐτέρῳ θηρίῳ· φιλότιμοι δὲ ἐς τὰ μάλιστα μοι καὶ ἐς θεῶν τιμὴν οὐ φειδωλοὶ χρημάτων γενέσθαι δοκοῦσιν οἱ Ἕλληνες, οἷς γε παρὰ Ἰνδῶν ἤγετο καὶ ἐξ Αἰθιοπίας ἐλέφας ἐς ποίησιν ἀγαλμάτων.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 6, chapter 26, section 9, line 9

οὗτοι μὲν δὴ τοῦ Αἰθιοπῶν γένους αὐτοὶ τέ εἰσιν οἱ Σῆρες καὶ ὅσοι τὰς προσεχεῖς αὐτῇ νέμονται νήσους, Ἀβασαν καὶ Σακαϊάν· οἱ δὲ αὐτούς οὐκ Αἰθίοπας, Σκύθας δὲ ἀναμειγμένους Ἰνδοῖς φα- σὶν εἶναι.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 8, chapter 23, section 9, line 5

ἄγχι μὲν δὴ ὁ Σόρων τὴν ἐπὶ Ψωφίδος· θηρία δὲ οὗτός τε καὶ ὅσοι δρυμοὶ τοῖς Ἀρκάσιν εἰσὶν ἄλλοι παρέχονται τοσάδε, ἀγρίους ὥς καὶ ἄρκτους καὶ χελώ- νας μεγίστας μεγέθει· λύρας ἂν ποιήσαιο ἐξ αὐτῶν χελώνης Ἰνδικῆς λύρα παρισυμένεας.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 8, chapter 29, section 4, line 7

τοῦτον τὸν νεκρὸν <ὁ> ἐν Κλάρῳ [ὁ] θεός, ἀφικομένων ἐπὶ τὸ χρηστήριον τῶν Σύρων, εἶπεν Ὀρόν- τιν εἶναι, γένους δὲ αὐτὸν εἶναι τοῦ Ἰνδῶν.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 8, chapter 29, section 4, line 11

εἰ δὲ τὴν γῆν τὸ ἀρχαῖον οὔσαν ὑγρὰν ἔτι καὶ ἀνάπλεων νοτίδος θερμαίνων ὁ ἥλιος τοὺς πρῶτους ἐποίησεν ἀνθρώπους, ποῖαν εἰκὸς ἐστὶν ἄλλην χώραν ἢ προ- τέραν τῆς Ἰνδῶν ἢ μείζονας ἀνεῖναι τοὺς ἀνθρώπους, ἢ γε καὶ ἐς ἡμᾶς ἔτι καὶ ὄψεως τῷ παραλόγῳ καὶ μεγέθει διάφορα ἐκτρέφει θηρία;

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 9, chapter 21, section 3, line 1

εἶδον δὲ καὶ ταύρους τοὺς τε Αἰθιοπικούς, οὓς ἐπὶ τῷ συμβεβηκότι ὀνομάζουσι ῥινό- κερως, ὅτι σφίσιν ἐπ' ἄκρα τῇ ῥινὶ ἐν ἐκάστῳ κέρασ καὶ ἄλλο ὑπὲρ αὐτὸ οὐ μέγα, ἐπὶ δὲ τῆς κεφαλῆς οὐδὲ ἀρχὴν κέρατά ἐστι, καὶ τοὺς ἐκ Παιόνων – οὗτοι δὲ οἱ ἐκ Παιόνων ἔς τε τὸ ἄλλο σῶμα δασεῖς καὶ ἀμφὶ τὸ στέρνον μάλιστα εἰσι καὶ τὴν γένυν – καμήλους τε Ἰνδικὰς χρῶμα εἰκασμένας παρδάλεσιν.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 9, chapter 21, section 4, line 2

θηρίον δὲ <τὸ> ἐν τῷ Κτησίου λόγῳ τῷ ἐς Ἰνδοὺς – μαρτιχόρα ὑπὸ τῶν Ἰνδῶν, ὑπὸ δὲ Ἑλλήνων φησὶν ἀνδροφάγον λελέχθαι – εἶναι πείθομαι τὸν τίγριν· ὁδόντας δὲ αὐτὸ τριστοίχους

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

καθ' ἑκατέραν τὴν γένυν καὶ κέντρα ἐπὶ ἄκρας ἔχειν τῆς οὐράς, τούτοις δὲ τοῖς κέντροις ἐγγύθεν ἀμύνεσθαι καὶ ἀποπέμπειν ἐς τοὺς πορρωτέρω τοξότου ἀνδρὸς οἰστῶ ἴσον, ταύτην οὐκ ἀληθῆ τὴν φήμην οἱ Ἴνδοι δέξασθαι δοκοῦσί μοι παρ' ἀλλήλων ὑπὸ τοῦ ἄγαν ἐς τὸ θηρίον δείματος.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 9, chapter 21, section 5, line 7

δοκῶ δέ, εἰ καὶ Λιβύης τις ἢ τῆς Ἰνδῶν ἢ Ἀράβων γῆς ἐπέρχοιτο τὰ ἔσχατα ἐθέλων θηρία ὁπόσα παρ' Ἑλλήσιν ἐξευρεῖν, τὰ μὲν οὐδὲ ἀρχὴν αὐτὸν εὐρήσειν, τὰ δὲ οὐ κατὰ ταῦτα ἔχειν φανεῖσθαι οἷ· οὐ γὰρ δὴ ἄνθρωπος μόνον ὁμοῦ τῷ ἀέρι καὶ τῇ γῇ διαφόροις οὔσι διάφορον κτᾶται καὶ τὸ εἶδος, ἀλλὰ καὶ τὰ λοιπὰ τὸ αὐτὸ ἂν πάσχοι τοῦτο, ἐπεὶ καὶ τὰ θηρία αἱ ἀσπίδες τοῦτο μὲν ἔχουσιν αἱ Λίβυσσαι παρὰ τὰς Αἰγυπτίας τὴν χροάν, τοῦτο δὲ ἐν Αἰθιοπία μελαίνας τὰς ἀσπίδας οὐ μείον ἢ καὶ τοὺς ἀνθρώπους ἢ γῇ τρέφει.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 9, chapter 40, section 9, line 9

μαρτυρεῖ δὲ τῷ λόγῳ καὶ Ἀλέξανδρος, οὐκ ἀναστήσας οὔτε ἐπὶ Δαρείῳ τρόπαια οὔτε ἐπὶ ταῖς Ἰνδικαῖς νίκαις.

Pausanias Perieg., Graeciae descriptio Book 10, chapter 29, section 4, line 5

τὴν δὲ Ἀριάδνην ἢ κατὰ τινὰ ἐπιτυχὼν δαίμονα ἢ καὶ ἐπίτηδες αὐτὴν λοχίσας ἀφείλετο Θησέα ἐπιπλεύσας Διόνυσος στόλῳ μείζονι, οὐκ ἄλλος κατὰ ἐμὴν δόξαν, ἀλλὰ ὁ πρῶτος μὲν ἐλάσας ἐπὶ Ἰνδοῦς στρατεία, πρῶτος δὲ Εὐφράτην γεφυρώσας ποταμόν· Ζεῦγμά τε ὠνομάσθη πόλις καθ' ὃ τι ἐξεύχθη τῆς χώρας ὁ Εὐφράτης, καὶ ἔστιν ἐνταῦθα ὁ κάλως καὶ ἐς ἡμᾶς ἐν ᾧ τὸν ποταμόν ἐξευξεν, ἀμπελίνους ὁμοῦ πεπλεγμένος καὶ κισσοῦ κλήμασι.

8.43 Alexander Med.

Alexander Med., Therapeutica (0744: 003) “Alexander von Tralles, vols. 1–2”, Ed. Puschmann, T. Vienna: Braumüller, 1:1878; 2:1879, Repr. 1963. Volume 2, page 19, line 12

δ' νάρδου Ἰνδικῆς .

Alexander Med., Therapeutica Volume 2, page 21, line 17

ή' λυκίου Ἰνδικοῦ .

Alexander Med., Therapeutica Volume 2, page 41, line 3

ή' λυκίου Ἰνδικοῦ .

Alexander Med., Therapeutica Volume 2, page 63, line 26

β' νάρδου Ἰνδικῆς .

Alexander Med., Therapeutica Volume 2, page 91, line 14

ε' λυκίου Ἰνδικοῦ .

Alexander Med., Therapeutica Volume 2, page 223, line 26

ς' νάρδου Ἰνδικῆς .

Alexander Med., Therapeutica Volume 2, page 301, line 19

8.44. CLAUDIUS AELIANUS SOPH.

κέ' νάρδου Ἰνδικῆς .

Alexander Med., Therapeutica Volume 2, page 543, line 9

καλοῦσι δ' αὐτό τινες Ἰνδόν, ἄλλοι δὲ Ἀσκληπιόν.

Ξηρίον μετασυγκριτικὸν πῶρων καὶ πρὸς τοὺς οἰδηματώδεις ὄγκους μετ' ὅξους ἐπιπλαττόμενον καλῶς ποιεῖ καὶ τοῖς κεφαλᾷς ὑγρὰς ἔχουσι καὶ θώρακας καὶ λέπρας καὶ ἀλφούς καὶ δυσπνοίας καὶ ὅσα ἄλλα πάθη ἐκ τῆς κεφαλῆς ἢ ἐκ τοῦ θώρακος ἔχει τὴν αἰτίαν, ἀποκρουστικὸν ὑπάρχον βοήθημα πάσης ὕλης κακῆς καὶ πληθωρικῆς φοινίσσον σφόδρα καὶ διαφοροῦν τοὺς καχεκτικούς καὶ ἐμπεπηγότες χυμούς καὶ τοὺς θηριώδεις, ἀρθριτικοῖς καὶ στομαχικοῖς ἀρμόζον καὶ τὸν διὰ παντός αὐτῷ χρώμενον οὐ συγχωροῦν ποδαγριάν ἢ ἰσχύου πείραν ὀδύνης λαβεῖν.

Alexander Med., Therapeutica Volume 2, page 543, line 21

Γραφὴ τοῦ Ἰνδοῦ.

Ἀλῶν Καππαδοικῶν, ἀλῶν κοινῶν, ἀλῶν πικρῶν, ἀλῶν νιτροπηγικῶν, ἀλῶν Τραγασαίων, νίτρου Ἀλεξανδρινοῦ καὶ ἀφρονίτρου, κισσήρεως, ἀδάρκης, ἀνὰ λιτ.

8.44 Claudius Aelianus Soph.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium (0545: 001) "Claudii Aeliani de natura animalium libri xvii, varia historia, epistolae, fragmenta, vol. 1", Ed. Hercher, R. Leipzig: Teubner, 1864, Repr. 1971. Book 2, section 11, line 15

εἰ μὲν οὖν ἔμελλον τὴν ἐν Ἰνδοῖς αὐτῶν εὐπείθειαν καὶ εὐμάθειαν ἢ τὴν ἐν Αἰθιοπία ἢ τὴν ἐν Λιβύῃ γράφειν, ἴσως ἂν τῷ καὶ μῦθον ἐδόκουν τινὰ συμπλάσας κομπάζειν, εἴτα ἐπὶ φήμῃ τοῦ θηρίου τῆς φύσεως καταψεύδεσθαι· ὅπερ ἐχρῆν δρᾶν φιλοσοφούντα ἄνδρα ἡκιστα καὶ ἀληθείας ἐραστὴν διάπυρον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 2, section 34, line 1

Εἰ σαφὴ ταῦτα καὶ μὴ ἀμφίλογα, Ἰνδῶν λόγοι πειθέτωσαν· ἃ δὲ νῦν ἐρῶ, τῆς ἐκείθεν φήμης διακομιζούσης, ταῦτά ἐστιν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 2, section 34, line 6

καὶ τὸν μὲν ὄρνιν κομίζειν τὸ φερῶν νυμνον τοῦτο δὴ φυτὸν ἐς Ἰνδοὺς, εἰδέναι δὲ ἄρα τοὺς ἀνθρώπους ὅπου τε καὶ ὅπως φύεται οὐδὲ ἓν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 3, section 3, line 2

Ἵν οὔτε ἄγριον οὔτε ἡμέρον ἐν Ἰνδοῖς γίνεσθαι λέγει Κτησίας, πρόβατα δὲ τὰ ἐκείνων οὐράς πῆχεως ἔχειν τὸ πλάτος πού φησιν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 3, section 4, line 1

Οἱ μύρμηκες οἱ Ἰνδικοὶ οἱ τὸν χρυσὸν φυλάττοντες οὐκ ἂν διέλθοιεν τὸν καλούμενον Καμπύλινον ποταμόν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 3, section 34, line 1

Πτολεμαίῳ τῷ δευτέρῳ φασὶν ἐξ Ἰνδῶν κέρας ἐκομίσθη, καὶ τρεῖς ἀμφορέας ἐχώρησεν.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 3, section 41, line 1

Ἴππους μονόκερως γῇ Ἰνδικῇ τίκεται, φασί, καὶ ὄνους μονόκερως ἡ αὐτὴ τρέφει, καὶ γίνεται γε ἐκ τῶν κεράτων τῶνδε ἐκπάσματα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 3, section 46, line 2

Ἐλέφαντος πωλίῳ περιτυγχάνει λευκῷ πωλευτῆς Ἰνδός, καὶ παραλαβὼν ἔτρεφεν ἔτι νεαρόν, καὶ κατὰ μικρὰ ἀπέφηνε χειροήθη, καὶ ἐπωχεῖτο αὐτῷ, καὶ ἦρα τοῦ κτήματος καὶ ἀντηρᾶτο, ἀνθ' ὧν ἔθρεψε τὴν ἀμοιβὴν κομιζόμενος ἐκεῖνος.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 3, section 46, line 6

ὁ τοίνυν βασιλεὺς τῶν Ἰνδῶν πυθόμενος ἤτει λαβεῖν τὸν ἐλέφанта.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 3, section 46, line 11

ἀγανακτεῖ ὁ βασιλεὺς, καὶ πέμπει κατ' αὐτοῦ τοὺς ἀφαιρησομένους καὶ ἅμα καὶ τὸν Ἰνδὸν ἐπὶ τὴν δίκην ἄξοντας.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 3, section 46, line 16

καὶ τὰ μὲν πρῶτα ἦν τοιαῦτα· ἐπεὶ δὲ βληθεὶς ὁ Ἰνδὸς κατῴλισθε, περιβαίνει μὲν τὸν τροφέα ὁ ἐλέφας κατὰ τοὺς ὑπερασπίζοντας ἐν τοῖς ὅπλοις, καὶ τῶν ἐπιόντων πολλοὺς ἀπέκτεινε, τοὺς δὲ ἄλλους ἐτρέψατο· περιβαλὼν δὲ τῷ τροφῇ τὴν προβοσκίδα, αἶρει τε αὐτὸν καὶ ἐπὶ τὰ αὐτὰ κομίζει, καὶ παρέμεινεν ὡς φίλῳ φίλος πιστός, καὶ τὴν εὐνοίαν ἐπεδείκνυτο.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 19, line 1

Κύνες Ἰνδικοί, θηρία καὶ οἷδε εἰσὶ καὶ ἄλλην ἄλκιμα καὶ ψυχὴν θυμοειδέστατα καὶ τῶν πανταχόθεν κυνῶν μέγιστοι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 19, line 4

καὶ τῶν μὲν ἄλλων ζώων ὑπερφρονοῦσι, λέοντι δὲ ὁμόσε χωρεῖ κύων Ἰνδικός, καὶ ἐγκείμενον ὑπομένει, καὶ βρυχωμένῳ ἀνθυλακτεῖ, καὶ ἀντιδάκνει δάκνοντα· καὶ πολλὰ αὐτὸν λυπήσας καὶ κατατρώσας, τελευτῶν ἡττᾶται ὁ κύων.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 19, line 8

εἴη δ' ἂν καὶ λέων ἡττηθεὶς ὑπὸ κυνὸς Ἰνδοῦ, καὶ μέντοι καὶ δακνὸν ὁ κύων ἔχεται καὶ μάλα ἐγκρατῶς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 21, line 1

Θηρίον Ἰνδικὸν βίαιον τὴν ἀλκὴν, μέγεθος κατὰ τὸν λέοντα τὸν μέγιστον, τὴν δὲ χροάν ἐρυθρόν, ὡς κιναβάρινον εἶναι δοκεῖν, δασὺ δὲ ὡς κύνες, φωνὴ τῇ Ἰνδῶν μαρτιχόρας ὠνόμασται.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 21, line 25

λέγει δὲ ἄρα Κτησίας καὶ φησιν ὁμολογεῖν αὐτῷ τοὺς Ἰνδοὺς, ἐν ταῖς χώραις τῶν ἀπολυμένων ἐκεῖνων κέντρων ὑπαναφύεσθαι ἄλλα, ὡς εἶναι τοῦ κακοῦ τοῦδε ἐπιγονήν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 21, line 37

τὰ βρέφη δὲ τῶνδε τῶν ζώων Ἰνδοὶ θηρῶσιν ἀκέντρους τὰς οὐρὰς ἔχοντα, καὶ λίθῳ γε διαθλῶσιν αὐτάς, ἵνα ἀδυνατώσι τὰ κέντρα ἀναφύειν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 21, line 41

8.44. CLAUDIUS AELIANUS SOPH.

λέγει δὲ καὶ ἐορακέναι τὸδε τὸ ζῷον ἐν Πέρσαις Κτησίας ἐξ Ἰνδῶν κομισθέν δῶρον τῷ Περσῶν βασιλεῖ, εἰ δὴ τῷ ἱκανὸς τεκμη- ριῶσαι ὑπὲρ τῶν τοιούτων Κτησίας.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 24, line 1

Οἱ Ἰνδοὶ τέλειον μὲν ἐλέφαντα συλλαβεῖν ῥαδίως ἀδυνατοῦσιν, ἐς δὲ τὰ ἔλη φοιτῶντες τὰ γειτνιῶντα τῷ ποταμῷ εἴτα μέντοι λαμβάνουσιν αὐτῶν τὰ βρέφη.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 26, line 1

Τοὺς λαγῶς καὶ τὰς ἀλώπεκας θηρῶσιν οἱ Ἰνδοὶ τὸν τρόπον τοῦτον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 27, line 1

Τὸν χρῦπα ἀκούω τὸ ζῷον τὸ Ἰνδικὸν τετράπουν εἶναι κατὰ τοὺς λέοντας, καὶ ἔχειν ὄνυχας καρτεροὺς ὥς ὅτι μάλιστα, καὶ τούτους μέντοι τοῖς τῶν λεόν- των παραπλησίους· κατάπτερον δὲ εἶναι, καὶ τῶν μὲν νωτιαίων πτερῶν τὴν χροάν μέλαιναν ἄδουσι, τὰ δὲ πρόσθια ἐρυθρά φασι, τὰς γε μὴν πτέρυγας αὐτὰς οὐκέτι τοιαύτας, ἀλλὰ λευκάς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 27, line 14

καὶ Βάκτριοι μὲν γειτνιῶντες Ἰνδοῖς λέγουσιν αὐτοὺς φύλακας εἶναι τοῦ χρυσοῦ τοῦ αὐτόθι, καὶ ὀρύττειν τε αὐτόν φασιν αὐτοὺς καὶ ἐκ τούτου τὰς καλιάς ὑποπλέκειν, τὸ δὲ ἀπορρέον Ἰνδοὺς λαμβάνειν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 32, line 1

Προβατεῖται δὲ Ἰνδῶν ὅποιαι μαθεῖν ἄξιον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 32, line 4

τὰς αἰγας καὶ τὰς οἷς ὄνων τῶν μεγίστων μείζονας ἀκούω καὶ ἀποκύνειν τέτταρα ἐκάστην· μείω γε μὴν τῶν τριῶν οὐτ' αἰξ' Ἰνδικὴ οὐτ' ἂν οἷς ποτε τέκοι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 36, line 1

Ἡ τῶν Ἰνδῶν γῆ, φασὶν αὐτὴν οἱ συγγραφεῖς πολυφάρμακόν τε καὶ τῶν βλαστημάτων τῶνδε δεῖ- νῶς πολύγονον εἶναι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 36, line 14

ὀδόντων δὲ ἄγονός ἐστιν ὁ ὄφης οὗτος· εὐρίσκεται δ' ἐν τοῖς πυρωδεστάτοις τῆς Ἰνδικῆς χωρίοις.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 41, line 1

Γένος ὀρνίθων Ἰνδικῶν βραχυτάτων καὶ τοῦτο εἴη ἄν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 41, line 5

καὶ Ἰνδοὶ μὲν αὐτὸ φωνῇ τῇ σφετέρᾳ δίκαιρον φιλοῦσιν ὄνο- μάζειν, Ἕλληνες δὲ ὡς ἀκούω δίκαιον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 41, line 15

σπουδὴν δὲ ἄρα τὴν ἀνωτάτω τίθενται Ἰν- δοὶ ἐς τὴν κτῆσιν αὐτοῦ· κακῶν γὰρ αὐτὸ ἐπί- ληθον ἡγοῦνται τῷ ὄντι· καὶ οὖν καὶ ἐν τοῖς δώροις τοῖς μέγα τιμίοις τῷ Περσῶν βασιλεῖ ὁ Ἰν- δῶν πέμπει καὶ τοῦτο.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 41, line 24

καὶ διὰ ταῦτα ἀντικρίνοντες βασανίσωμεν τῶν φαρμά- κων τοῦ τε Ἰνδικοῦ καὶ τοῦ Αἰγυ- πτίου ὁπότερον ἦν προτιμότερον· ἐπεὶ τὸ μὲν ἐφ' ἡμέραν ἀνεῖργέ τε καὶ ἀνέστελλε τὰ δάκρυα

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

τὸ Αἰγύπτιον, τὸ δὲ λήθην κακῶν παρεῖχεν αἰώνιον τὸ Ἰνδικόν· καὶ τὸ μὲν γυ- ναικὸς δῶρον ἦν, τὸ δὲ ὄρνιθος ἢ ἀπορρήτου φύσεως δεσμῶν τῶν ὄντως βαρυτάτων ἀπολουούσης δι' ὑπη- ρέτου τοῦ προειρημένου.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 41, line 30

καὶ Ἰνδοὺς κτήσασθαι αὐτὸ εὐτυχήσαντας, ὥς τῆς ἐνταυθοῖ φρουρᾶς ἀπολυθῆναι ὅταν ἐθέλωσιν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 42, line 11

ταῖς δὲ ἰνδαλμά τε καὶ σπέρμα τοῦ τότε πένθους ἐντακῆναι, καὶ ἐς νῦν ἔτι Μελέαγρόν τε ἀναμέλπειν, καὶ ὥς αὐτῷ προσή- κουσιν ἄδειν καὶ τοῦτο μέντοι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 46, line 1

Ἐν Ἰνδοῖς γίνεται θηρία τὸ μέγεθος ὅσον γέ- νοιντο ἂν οἱ κάνθαροι, καὶ ἔστιν ἐρυθρά- κινναβά- ρει δὲ εἰκάσειας ἂν, εἰ πρῶτον θεάσαιτο αὐτά.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 46, line 7

θηρῶσι δὲ αὐτά οἱ Ἰνδοὶ καὶ ἀποθλίβουσι, καὶ ἐξ αὐτῶν βάπτουσι τὰς τε φοινικίδας καὶ τοὺς ὑπ' αὐταῖς χιτῶνας καὶ πᾶν ὃ τι ἂν ἐθέλωσιν ἄλλο ἐς τήνδε τὴν χρόαν ἐκτρέψαι τε καὶ χρῶσαι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 46, line 17

Γίνονται δὲ ἐνταῦθα τῆς Ἰνδικῆς, ἐνθα οἱ κάν- θαροι, καὶ οἱ καλούμενοι κυνοκέφαλοι, οἷς τὸ ὄνομα ἔδωκεν ἢ τοῦ σώματος ὅψις τε καὶ φύσις· τὰ δὲ ἄλλα ἀνθρώπων ἔχουσι, καὶ ἡμφιεσμένοι βαδίζουσι δορὰς θηρίων.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 46, line 23

καὶ εἰσι δίκαιοι, καὶ ἀνθρώπων λυποῦσιν οὐδένα, καὶ φθέγγονται μὲν οὐδὲ ἓν, ὠρύονται δέ, τῆς γε μὴν Ἰνδῶν φωνῆς ἐπαῖουσι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 52, line 2

Ὅνους ἀγρίους οὐκ ἐλάττους ἵππων τὰ μεγέθη ἐν Ἰνδοῖς γίνεσθαι πέπυσμαι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 52, line 9

ἐκ δὴ τῶνδε τῶν ποι- κίλων κεράτων πίνειν Ἰνδοὺς ἀκούω, καὶ ταῦτα οὐ πάντας, ἀλλὰ τοὺς τῶν Ἰνδῶν κρατίστους, ἐκ διαστη- μάτων αὐτοῖς χρυσὸν περιχέαντας, οἷονεὶ ψελίοις τισὶ κοσμήσαντας βραχίονα ὠραῖον ἀγάλματος.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 52, line 22

πεπίστευται δὲ τοὺς ἄλλους τοὺς ἀνὰ πᾶσαν τὴν γῆν ὄνους καὶ ἡμέρους καὶ ἀγρίους καὶ τὰ ἄλλα μώνυχα θηρία ἀστραγάλους οὐκ ἔχειν, οὐδὲ μὴν ἐπὶ τῷ ἥπατι χολήν, ὄνους δὲ τοὺς Ἰνδοὺς λέγει Κτησίας τοὺς ἔχοντας τὸ κέρασ ἀστρα- γάλους φορεῖν, καὶ ἀχόλους μὴ εἶναι· λέγονται δὲ οἱ ἀστράγαλοι μέλανες εἶναι, καὶ εἴ τις αὐτοὺς συντρί- ψειεν, εἶναι τοιοῦτοι καὶ τὰ ἔνδον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 52, line 32

διατριβαὶ δὲ τοῖς ὄνοις τῶν Ἰνδικῶν πεδίων τὰ ἐρη- μότατά ἐστιν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 52, line 33

8.44. CLAUDIUS AELIANUS SOPH.

ιόντων δὲ τῶν Ἰνδῶν ἐπὶ τὴν ἄγρην αὐτῶν, τὰ μὲν ἀπαλὰ καὶ ἔτι νεαρὰ ἐαυτῶν νέμεσθαι κατόπιν ἑῶσιν, αὐτοὶ δὲ ὑπερμαχοῦσι, καὶ ἴασι τοῖς ἱππεῦσιν ὁμόσε, καὶ τοῖς κέρασι παίουσιν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 52, line 48

ζῶντα μὲν οὖν τέλειον οὐκ ἂν λάβοις, βάλλονται δὲ ἀκοντίοις καὶ οἰστοῖς, καὶ τὰ κέρατα ἐξ αὐτῶν Ἰνδοὶ νεκρῶν σκυ- λεύσαντες ὡς εἶπον περιέπουσιν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 4, section 52, line 49

ὄνων δὲ Ἰνδῶν ἄβρωτόν ἐστι τὸ κρέας· τὸ δὲ αἷτιον, πέφυκεν εἶναι πικρότατον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 5, section 3, line 1

Ὁ ποταμὸς ὁ Ἰνδὸς ἄθηρός ἐστι, μόνος δὲ ἐν αὐ- τῷ τίκεται σκώληξ φασί.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 5, section 3, line 41

τοῦτο δὴ τὸ ἔλαιον τῷ βασιλεῖ τῶν Ἰνδῶν κομίζουσι, σημεῖα ἐπιβαλόντες· ἔχειν γὰρ αὐτοῦ ἄλλον οὐδὲ ὅσον ῥανίδα ἐφεῖται.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 5, section 3, line 49

τούτῳ τοί φασι τὸν τῶν Ἰνδῶν βασιλέα καὶ τὰς πό- λεις αἰρεῖν τὰς ἐς ἔχθραν προελθούσας οἱ, καὶ μήτε κριοὺς μήτε χελώνας μήτε τὰς ἄλλας ἐλεπόλεις ἀνα- μένειν, ἐπεὶ καταπιμπρὰς ἤρηκεν· ἀγγεῖα γὰρ κερα- μεῖα ὅσον κοτύλην ἕκαστον χωροῦντα ἐμπλήσας αὐτοῦ καὶ ἀπο- φράξας ἄνωθεν ἐς τὰς πύλας σφενδονᾷ.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 5, section 21, line 41

Ἀλέξανδρος δὲ ὁ Μακεδὼν ἐν Ἰνδοῖς ἰδὼν τοῦσδε τοὺς ὄρνιθας ἐξε- πλάγη, καὶ τοῦ κάλλους θαυμάσας ἠπέιλησε τῷ κα- ταθύσαντι ταῶν ἀπειλὰς βαρυτάτας.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 5, section 51, line 4

ὁ γοῦν Σκύθης ἄλλως φθέγγεται καὶ ὁ Ἰνδὸς ἄλλως, καὶ ὁ Αἰθίοψ ἔχει φωνὴν συμφυᾶ καὶ οἱ Σάκαι· φωνὴ δὲ Ἑλλὰς ἄλλη, καὶ Ῥωμαία ἄλλη.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 5, section 55, line 1

Ἐν τοῖς Ἰνδοῖς οἱ ἐλέφαντες, ὅταν τι τῶν δέν- δρων αὐτόρριζον ἀναγκάζωσιν αὐτούς οἱ Ἰνδοὶ ἐκ- σπάσαι, οὐ πρότερον ἐμπηδῶσιν οὐδὲ ἐπιχειροῦσι τῷ ἔργῳ πρὶν ἢ διασεῖσαι αὐτὸ καὶ διασκέψασθαι ἄρα γε ἀνατραπῆναι οἷόν τέ ἐστίν ἢ παντελῶς ἀδύνατον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 6, section 21, line 1

Ἐν Ἰνδοῖς, ὡς ἀκούω, ἐλέφας καὶ δράκων ἐστὶν ἐχθίστα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 7, section 37, line 1

Πύρου τοῦ τῶν Ἰνδῶν βασιλέως ὁ ἐλέφας ἐν τῇ πρὸς Ἀλέξανδρον μάχῃ τετρωμένου πολλὰ ἡσυχῇ καὶ μετὰ φειδοῦς τῇ προβοσκίδι ἐξήρει τὰ ἀκόντια, καὶ μέντοι καὶ αὐτὸς τετρωμένος πολλὰ οὐ πρότερον εἶξε πρὶν ἢ συνεῖναι ὅτι ἄρα ὁ δεσπότης αὐτῷ διὰ τὴν ῥοὴν τοῦ αἵματος τὴν πολλὴν παρεῖται καὶ ἐκ- θνήσκει.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 8, section 1, line 1

καὶ τοῦτο ἀκουέτω Ἑρατοσθένης τε καὶ Εὐφορίωνος καὶ ἄλλων περιηγουμένων αὐτό. Ἰνδικοὶ λόγοι διδάσκουσιν ἡμᾶς καὶ ἐκεῖνα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 8, section 1, line 21

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Ἀλεξάνδρῳ γοῦν τῷ Φιλίππου πείραν ἔδωσαν οἱ Ἴν-δοὶ τῆς τῶν κυνῶν τῶνδε ἀλλῆς τὸν τρόπον τοῦτον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 8, section 1, line 29

ὁ τοίνυν Ἰνδὸς ὁ τὴν θέαν τῷ βασιλεῖ τήνδε παρέχων κάλλιστα εἰδὼς τοῦ κυνὸς τὸ καρτερικόν, προσέταξεν οἱ τὴν οὐραν ἀποκοπῆναι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 8, section 1, line 32

προσέταξεν οὖν ὁ Ἰνδὸς καὶ τῶν σκελῶν ἐν ἀποκόψει, καὶ ἀπεκόπη· ὁ δὲ ὡς ἐξ ἁρ-χῆς ἐνέφυ εἶχετο, καὶ οὐκ ἀνίει, ὥσπερ οὖν ἄλλο-τρίου κοπτομένου σκέλους καὶ ὀθνείου.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 8, section 1, line 46

ἰδὼν οὖν ὁ Ἰνδὸς αὐτὸν ἀνιώμενον, τέτ-ταρας ὁμοίους ἐκείνῳ κύνας ἔδωκεν οἱ.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 8, section 7, line 2

Μεγασθένους ἀκούω λέγοντος περὶ τὴν τῶν Ἴν-δῶν θάλατταν γίνεσθαι τι ἰχθύδιον, καὶ τοῦτο μὲν ὅταν ζῇ ἀθέατον εἶναι, κάτω που νηρόμενον καὶ ἐν βυθῷ, ἀποθανὼν δὲ ἀναπλεῖν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 8, section 15, line 12

Ἔστι δὲ ἐν τοῖς Ἰνδοῖς ἄρουρα, καὶ κέκληται Φα-λάκρα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 9, section 30, line 2

Λέων ὅταν βαδίῃ, οὐκ εὐθύωρον πρόεισιν, οὐδὲ ἔα τῶν ἰχθῶν ἑαυτοῦ ἀπλᾶ εἶναι τὰ ἰνδάλματα, ἀλλὰ πῇ μὲν πρόεισι, πῇ δὲ ἐπάνεισι, καὶ αὖ πάλιν τοῦ πρόσω ἔχεται, καὶ μέντοι καὶ ἵεται ἐς τοῦμπαλιν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 9, section 58, line 10

λέγει δὲ ὁ Ἰόβας γενέσθαι μὲν αὐ-τοῦ τῷ πατρὶ πολυετῇ Λίβυν ἐλέφαντα κατιόντα ἐκ τῶν ἄνω τοῦ γένους· καὶ Πτολεμαίῳ δὲ τῷ Φιλα-δέλφῳ Αἰθίοπα, καὶ ἐκείνον ἐκ πολλοῦ βιώσαντα γενέσθαι πρῶτατον καὶ ἡμερώτατον τὰ μὲν ἐκ τῆς πρὸς τοὺς ἀνθρώπους συντροφίας, τὰ δὲ πωλευθέντα· Σελεύκου τε τοῦ Νικάτορος κτήμα ἄδει Ἰνδὸν ἐλέ-φαντα, καὶ μέντοι καὶ διαβιῶναι τοῦτον μέχρι τῆς τῶν Ἀντιόχων ἐπικρατείας φησίν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 10, section 13, line 5

αἱ τε γὰρ ἀκρίδες καὶ οἱ ὄφεις, χρυσοειδῆ ἰνδάλματα καὶ ἐπ' αὐτῶν κατέστικται· οἱ δὲ ἰχθῆς ἔτι καὶ πλεόν τῆς πολυκόσμου χροᾶς μετεληχότες εἴτα ἰδεῖν ἐκπληκτικοὶ εἰσι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 11, section 14, line 10

ταύτη τοίνυν ἡ τοῦ τρέφοντος αὐτὸν γυνὴ παιδίον, ὃ ἔτυχε τεκοῦσα πρὸ ἡμερῶν τριάκοντα, παρακατέθετο φωνῇ τῇ Ἰνδῶν, ἧς ἀκούουσιν ἐλέφαντες.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 11, section 15, line 12

καὶ τοῦτο μὲν Ἰνδικὸν τὸ ἔργον, ἐκείθεν δὲ ἐξεφοί-τησε δεῦρο· ἀκούω δὲ καὶ ἐπὶ Τίτου ἀνδρὸς καλοῦ καὶ ἀγαθοῦ ἐν τῇ Ῥώμῃ ταῦτον γεγονέναι· προστι-θέασι δὲ ὅτι ἄρα ὁ ἐνθάδε ἐλέφας ἀπέκτεινεν ἀμφο-τέρους, καὶ ἱματίῳ κατεκάλυψε, καὶ ἐλθόντι τῷ τροφῇ ἀποβαλὼν τὸ ἱμάτιον κειμένους ἀλλήλων πλησίον ἀπέδειξε, καὶ τὸ κέρας δέ, ὥπερ οὖν διέπει-ρεν αὐτούς, καὶ τοῦτο ἡμαγμένον ἑώρατο.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 11, section 25, line 4

8.44. CLAUDIUS AELIANUS SOPH.

ἐπεπίστευτο δὲ πρὸ τοῦδε τοῦ ζώου τῆς Ἰνδῶν μόνης φωνῆς ἐπαΐειν τοὺς ἐλέφαντας.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 11, section 33, line 1

Ταῶν δὲ Ἰνδικὸν δῶρον λαβὼν ὁ τῶν Αἰγυπτίων βασιλεὺς, ταῶνων ἰδεῖν μέγιστόν τε καὶ ὠραιότατον, οὐκ ἄξιόι σὺν τοῖς ἀγέλαοις τρέφειν, ὡς οἰκίας ἄθυρμα αὐτὸν εἶναι ἢ γαστρὸς χάριν, ἀλλὰ ἀνάπτει τῷ Πολιεῖ Δίῃ, κρίνας ἀνάθημα ἐπάξιον τῷ θεῷ τὸν ὄρνιν τὸν προειρημέ-
νον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 12, section 32, line 1

Ἡ Ἰνδῶν γῆ φέρει πολλὰ καὶ ποικίλα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 12, section 32, line 19

καὶ ταῦτα μὲν αὐτοῖς ἐς ἐπικουρίαν τὴν ἀναγκαίαν καὶ μάλα εὐπόρως ἀνίσχιν ἢ χώρα καὶ ἀφθόνης· ὅφισ δὲ ὅς ἂν ἀποκτείνῃ ἄνθρωπον, ὡς Ἰνδοὶ λέγουσιν (καὶ μάρτυρας ἐπάγονται Λιβύων πολ-
λοὺς καὶ τοὺς περὶ Θήβας οἰκοῦντας Αἰγυπτίων), οὐκέτι καταδύναι καὶ ἐσερ-
πύσαι ἐς τὴν ἑαυτοῦ οἰκίαν ἔχει, τῆς γῆς αὐτὸν μὴ δεχομένης, ἀλλ' ἐκβαλλούσης τῶν οἰκείων ὡς ἂν εἴποις φυγάδα κόλπων.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 12, section 41, line 1

Ὁ Γάγγης ὁ παρὰ τοῖς Ἰνδοῖς ῥέων ὑπαρχόμενος μὲν ἐκ τῶν πηγῶν βαθύς ἐστιν ἐς ὄρ-
γυϊὰς εἴκοσι, πλατὺς δὲ ἐς ὀγδοήκοντα σταδίους· ἔτι γὰρ αὐθιγε-
νεὶ τῷ ὕδατι πρόεισι καὶ ἀμιγεῖ πρὸς ἕτερον· προῖων δὲ τῶν ἄλλων ἐς αὐτὸν ἐμπιπτόντων καὶ ἀνακοινου-
μένων οἱ τὸ ὕδωρ ἐς βάθος μὲν ἦκει καὶ ἐξήκοντα ὄργυιων, πλατύνεται δὲ καὶ ὑπερεκχεῖται ἐς σταδίους
τετρακοσίους.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 12, section 44, line 1

Λόγω δὲ ἄρα τῷδε Ἰνδὸς καὶ Λίβυς τὸ γένος δια-
φόρων· ἐρεῖ δὲ ὁ μὲν Ἰνδὸς τὰ ἐπιχώρια, ὁ
δὲ Λίβυς ὅσα οἶδε καὶ ἐκεῖνος· ἃ δ' οὖν ἄδετον ἀμφω τῷ λόγῳ ἐστὶν ἐκεῖνα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 12, section 44, line 4

ἐν Ἰνδοῖς ἐὰν ἀλῶ τέλειος ἐλέφας, ἡμερωθῆναι χαλεπὸς ἐστι, καὶ τὴν ἐλευθερίαν πο-
θῶν φονᾶ.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 12, section 44, line 8

ἀλλ' οἱ Ἰνδοὶ καὶ ταῖς τρο-
φαῖς κολακεύουσιν αὐτόν, καὶ ποικίλοις καὶ ἐφολλκοῖς δελέασι
πραϋνέειν πειρῶνται, παρατιθέντες ὅσα πλη-
ροὶ τὴν γαστέρα καὶ θέλγει τὸν θυμόν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 7, line 2

Τῶν τεθηραμένων ἐλεφάντων ἰῶνται τὰ τραύματα οἱ Ἰνδοὶ τὸν τρόπον τοῦτον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 8, line 19

κατασπείρει δὲ καὶ τοῦ χώρου ἐνθα αὐλίζεται τῶν ἀνθέων πολλὰ, ἥδου-
σμένον αἰρεῖσθαι
γλιχόμενος ὕπνον. Ἰνδοὶ δὲ ἐλέφαν-
τες ἦσαν ἄρα πήχεων ἐννέα τὸ ὕψος, πέντε δὲ τὸ εὖρος.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 9, line 1

Ἴππον δὲ ἄρα Ἰνδὸν κατασχεῖν καὶ ἀνακροῦσαι προσηδῶντα καὶ ἐκθέοντα οὐ παντὸς ἦν,
ἀλλὰ τῶν ἐκ παιδὸς ἱππείαν πεπαιδευμένων.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 18, line 1

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Ἐν δὲ τοῖς βασιλείοις τοῖς Ἰνδικοῖς, ἔνθα ὁ μέγι- στος τῶν βασιλέων διαιτᾶται τῶν ἐκεῖθι, πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα ἐστὶ θαυμάσαι ἄξια, ὥς μὴ αὐτοῖς ἀντικρί- νειν μήτε τὰ Μεμνόνεια Σοῦσα καὶ τὴν ἐν αὐτοῖς πολυτέλειαν μήτε τὴν ἐν τοῖς Ἐκβατάνοις μεγαλουρ- γίαν· ἔοικε γὰρ κόμπος εἶναι Περσικὸς ἐκεῖνα, εἰ πρὸς ταῦτα ἐξετάζοιτο.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 18, line 19

καὶ τὸ σεμνότερον τῆς ὥρας τῆς ἐκεῖθι, τὰ δένδρα αὐτὰ τῶν ἀειθαλῶν ἐστὶ, καὶ οὐποτε γηρᾷ καὶ ἀπορρέει τὰ φύλλα· καὶ τὰ μὲν ἐπιχωρία ἐστὶ, τὰ δὲ ἀλλαχόθεν σὺν πολλῇ κομι- σθέντα τῇ φροντίδι, ἅπερ οὖν κοσμεῖ τὸν χῶρον καὶ ἀγλαΐαν δίδωσι, πλὴν ἐλαίας· οὐ γὰρ αὐτὴν ἡ Ἰνδῶν φέρει, οὔτε αὐτή, οὔτε ἤκουσαν ἀλλαχόθεν τρέφει.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 18, line 24

σιτεῖται δὲ Ἰνδῶν οὐδὲ εἷς ψιτ- τακόν, καίτοι παμπόλλων ὄντων τὸ πλῆθος· τὸ δὲ αἴτιον, ἱεροὺς αὐτοὺς εἶναι πεπιστεύκασιν οἱ Βρα- χμᾶνες, καὶ μέντοι καὶ τῶν ὀρνίθων ἀπάντων προτι- μῶσι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 22, line 1

Τὸν Ἰνδῶν βασιλέα προϊόντα ἐπὶ δίκαις προσκυ- νεῖ ὁ ἐλέφας πρῶτος, δεδιδαγμένος τοῦτο, καὶ μάλα γε δρῶν μνημόνως τε καὶ εὐπειθῶς αὐτό (παρέστηκε δὲ καὶ ἐκεῖνος, ὅσπερ οὖν ἐνδίδωσιν οἱ τοῦ παιδευ- ματος τὴν ὑπόμνησιν τῇ ἐκ τῆς ἄρπης κρούσει καὶ φωνῇ τινι ἐπιχωρίῳ, ἥσπερ οὖν ἐλέφαντες ἐπαΐειν εἰλήχασιν φύσει τινὶ ἀπορρήτῳ καὶ μάλα γε ἰδίᾳ τοῦ ζώου τοῦδε)· καὶ μέντοι καὶ κίνησιν τινα ὑποκινεῖται πολεμικὴν, οἷον ἐνδεικνύμενος ὅτι καὶ τοῦτο τὸ μά- θημα ἀποσώζει.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 22, line 14

τέτταρες δὲ καὶ εἴκοσι τῷ βασιλεῖ φρουροὶ παραμένουσιν ἐλέφαντες ἐκ διαδοχῆς, ὥσπερ οὖν οἱ φύλακες οἱ λοιποί, καὶ αὐτοῖς παιδεύμα τὴν φρουρὰν ἔχειν οὐ κατανυστάζουσι· διδάσκονται γὰρ τοι σοφία τινὶ Ἰνδικῇ καὶ τοῦτο.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 25, line 2

Ἴππους καὶ ἐλέφαντας ἅτε ζῶα καὶ ἐν ὅπλοις καὶ ἐν πολέμοις λυσιτελεῖ τιμῶσιν Ἰνδοί, καὶ μάλα γε ἰσχυρῶς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 25, line 9

οὐκ ἀτιμάζει δὲ οὐδὲ τὰ ἄλλα ζῶα, ἀλλὰ καὶ ἐκεῖνα προσίεται δῶρά οἱ κομιζόμενα. Ἰνδοὶ γὰρ οὐκ ἐκφραυλίζουσι ζῶον οὔτε ἡμέρον οὔτε μὴν ἄγριον οὐδέν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 13, section 27, line 4

ταύτης οὖν τὴν δεξιὰν πτέρυγα εἰ ὑποθείης ἀνθρώ- πῳ καθεύδοντι, εὖ μάλα ἐκταράξεις αὐτόν· δέα γὰρ τινα καὶ ἰνδάγματα καὶ φάσματα ὄψεται, καὶ ἐνύπνια ἕτερα οὐδαμῶς εὐμενῇ καὶ φίλα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 14, section 13, line 2

ὁ τῶν Ἰνδῶν βασιλεὺς ἐπιδόρπια σιτεῖται ταῦτα, οἷα δήπου Ἕλληνες ἐντραγεῖν αἰτοῦσι, φοινίκων τῶν χαμαιζήλων· ἐκεῖνος σκώληκά τινα ἐν τῷ φυτῷ τικτό- μενον σταθευτὸν ἐπιδειπνεῖ

8.44. CLAUDIUS AELIANUS SOPH.

γλύκιστον, ὡς Ἰνδῶν λέγουσι λόγοι, καὶ φασιν οἱ τὴν ἡδονὴν τὴν τοσαύτην ἐκ τοῦ σιτεῖσθαι ** καὶ ἐμέ γε αἰροῦσι λέγοντες.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 14, section 13, line 13

τὰ μὲν οὖν ἄλλα οὐ μέμφομαι αὐτῶ, κύκνων γε μὴν Ἀπόλλωνι μὲν λατρευόντων ὠδίκων-
τάτων δὲ ὡς ἡ φήμη διαρρέουσα λέγει ἐπιβουλεύειν ἐκγόνους καὶ διαφθεῖρειν τὰ ὥα, ὧ Ἰνδοὶ
φίλοι, οὐκέτι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 7, line 1

Ἦτεται ἡ Ἰνδῶν γῆ διὰ τοῦ ἥρος μέλιτι ὑγρῶ, καὶ ἔτι πλέον ἡ Πρασίων χώρα, ὅπερ οὖν ἐμ-
πίπτει ταις πόαις καὶ ταις τῶν ἐλείων καλὰμων κόμαις, νομας τοῖς βουσί καὶ τοῖς προβάτοις
παρέχει θαυμαστάς, καὶ τὰ μὲν ζῶα ἐστιᾶται ἡδίστην τήνδε ἐστίασιν (μάλιστα γὰρ ἐνταῦθα
οἱ νομῆες ἄγουσιν αὐτά, ἐνθα καὶ μᾶλλον ἡ δρόσος ἡ γλυκεῖα κάθηται πεσοῦσα), ἀνθεστιᾶ δὲ
καὶ τὰ ζῶα τοὺς νομέας· ἀμέλγουσι γὰρ περιγλύκι- στον γάλα, καὶ οὐ δέονται ἀναμιῆσαι
αὐτῶ μέλι, ὅπερ οὖν δρῶσιν Ἕλληνες.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 8, line 1

Ὁ δὲ Ἰνδὸς μάργαρος (ἄνω γὰρ εἶπον περὶ τοῦ Ἐρυθραίου) λαμβάνεται τρώπῳ τοιῷδε.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 8, line 23

ἄριστος δὲ ἄρα ὁ Ἰνδικὸς γίνεται καὶ ὁ τῆς θαλάττης τῆς Ἐρυθρᾶς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 8, line 29

γίνεσθαι δὲ φησιν Ἰόβας καὶ ἐν τῷ κατὰ Βόσπορον πορθμῷ, καὶ τοῦ Βρεττα- νικοῦ ἡττά-
σθαι αὐτόν, τῷ δὲ Ἰνδῷ καὶ τῷ Ἐρυθραίῳ μηδὲ τὴν ἀρχὴν ἀντικρίνεσθαι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 8, line 30

ὁ δὲ ἐν Ἰνδῷ χερ- σαῖος οὐ λέγεται φύσιν ἔχειν ἰδίαν, ἀλλὰ ἀπογέννημα εἶναι κρυστάλλου,
οὐ τοῦ ἐκ τῶν παγετῶν συνιστα- μένου, ἀλλὰ τοῦ ὀρυκτοῦ.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 14, line 1

Κομίζουσι δὲ ἄρα τῷ σφετέρῳ βασιλεῖ οἱ Ἰνδοὶ τίγρεις πεπωλεμένους καὶ τιθασοὺς πᾶν-
θηρας καὶ ὄρνυγας τετράκερως, βοῶν δὲ γένη δύο, δρομικούς τε καὶ ἄλλους ἀγρίους δεινῶς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 15, line 1

καὶ περιστράς ὡχρὰς κομίζουσιν, ἅσπερ οὖν καὶ λέγουσι μήτε ἡμεροῦσθαι μήτε ποτὲ
πραῦνε- σθαι, καὶ ὄρνιθας δέ, οὓς κερκοράνους φιλοῦσιν ὄνο- μάζειν, καὶ κύνας γενναίους, ὑπὲρ
ᾧ ἄνω μοι λέ- λεκται, καὶ πιθήκους λευκοὺς καὶ μελαντάτους ἄλ- λους· τοὺς γὰρ τοὶ πυρρὺς
ὡς γυναιμανεῖς ἐς τὰς πόλεις οὐκ ἄγουσιν, ἀλλὰ καὶ ποθεν ἐπιπηδήσαντες ἀναιροῦσιν, ὡς
μοιχοὺς μεμισνηκότες. Ἰνδῶν δὲ ὁ μέγας βασιλεὺς μιᾶς ἡμέρας ἀνὰ πᾶν ἔτος ἀγωνίας προτίθησι
τοῖς τε ἄλλοις ὅσοις εἶπον ἐτέρωθι, ἐν δὲ τοῖς καὶ ζῴοις ἀλόγοις, ἀλλὰ ἐκείνοις γε ὧν ἐκπέφυκε
κέρατα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 21, line 1

Ὅτε Ἀλέξανδρος τὰ μὲν ἐδόνει τῆς Ἰνδῶν γῆς τὰ δὲ ἤρει, πολλοῖς μὲν καὶ ἄλλοις ζῴοις
ἐνέτυχεν, ἐν δὲ τοῖς καὶ δράκοντι, ὅνπερ οὖν ἐν ἄνθρωπῳ τινὶ νομίζοντες ἱερὸν Ἰνδοὶ μετὰ πολλοῦ
τοῦ θειασμοῦ προσετρέποντο.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 21, line 5

οὐκοῦν παντοῖοι ἐγένοντο οἱ Ἰνδοὶ δε- όμενοι τοῦ Ἀλεξάνδρου μηδένα ἐπιθέσθαι τῷ ζῳῳ· ὃ δὲ κατένευσε.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 15, section 24, line 1

ἐπιφανεῖς δὲ ὁ Ἀπόλλων τὴν μὲν κόρην ἀρπάζει, τὴν δὲ ναῦν λίθον ἐργάζεται, τὸν δὲ Πομπίλον ἐς τὸν ἰχθὺν τοῦτον μετέβαλεν. Ἰνδοὶ δὲ ἄρα καὶ περὶ τοὺς βοῦς τοὺς δρομικοὺς τίθενται σπουδὴν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 2, line 1

Ἐν Ἰνδοῖς μανθάνω σιττακοὺς ὄρνεις γίνεσθαι, ὧν περ οὖν καὶ ἀνωτέρω μνήμην ἐποιήσαμην· ἃ δὲ πρότερον ὑπὲρ αὐτῶν οὐκ εἶπον, ταῦτά μοι λεχθῆναι νῦν δοκεῖ πρεπωδέστατα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 2, line 10

γίνονται δὲ καὶ ταῶς ἐν Ἰνδοῖς τῶν πανταχόθεν μέγιστοι, καὶ πελειάδες χλωρόπτιλοι· φαίη τις ἂν πρῶτον θεασάμενος καὶ οὐκ ἔχων ἐπιστήμην ὄρνι- θογνώμονα, σιττακὸν εἶναι καὶ οὐ πελειάδα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 2, line 22

χρῶαν δὲ ἔχει τὰ πτερὰ τῶν Ἰνδῶν ἀλεκτρυόνων χρυσωπὸν τε καὶ κυά- ναυγῇ κατὰ τὴν σμάραγδον λίθον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 3, line 1

Γίνεται δὲ ἐν Ἰνδοῖς καὶ ἄλλο ὄρνειον, καὶ ἔχει τὸ μέγεθος κατὰ τοὺς ψάρας, καὶ ἔστι ποικίλον, καὶ μουσῳθὲν ἀνθρώπου φωνὴν εἶτα μέντοι τῶν σιττα- κῶν ἔστι λαλίστερόν τε καὶ θυμοσφώτερον.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 3, line 8

καλοῦσι δὲ αὐτὸ οἱ Μακεδόνων Ἰνδοῖς ἐποικήσαντες ἐν τε Βουκεφάλοις πόλει καὶ τῇ περὶ ταύτην καὶ τῇ καλουμένῃ Κύρου πόλει καὶ ταῖς ἄλλαις, ἃς ἀνέστησεν Ἀλέξανδρος ὁ Φιλίππου, κερκίωνα· ἔσχε δὲ ἄρα τὸ ὄνομα τήνδε τὴν γένεσιν, ἐπεὶ καὶ αὐτὸ διασεῖι τὸν ὄρρον, ὥσπερ οὖν καὶ οἱ κίγκλοι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 4, line 1

Γίνεσθαι δὲ ἐν Ἰνδοῖς καὶ κήλαν ἀκούω ὄρνιν· καὶ τὸ μέγεθος τριπλασίον αὐτίδος ἔστί, καὶ τὸ στόμα ἔχει γενναῖον δεινῶς καὶ μακρὰ τὰ σκέλη· φέρει δὲ καὶ πρηγορεῶνα καὶ ἐκεῖνον μέγιστον προσεμφερῇ κωρύκῳ, φθέγμα δὲ ἔχει καὶ μάλα ἀπηχές.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 5, line 1

Ἀκούω δὲ ἔγωγε καὶ Ἰνδὸν ἔποπα διπλασίονα τοῦ παρ' ἡμῖν καὶ ὡραιότερον ἰδεῖν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 5, line 4

καὶ Ὅμηρος μὲν λέγει βασιλεῖ κεῖσθαι ἄγαλμα Ἑλληνι χαλινὸν καὶ κόσμον ἵππου, ὃ δὲ ἔποψ οὗτος Ἰνδῶν βασιλεῖ ἀθυρμά ἐστι, καὶ διὰ χειρῶν αὐτὸν φέρει, καὶ ἥδεται αὐτῷ, καὶ συνεχές ἐνορᾷ τὴν ἀγλαῖαν τεθηπῶς τοῦ ὄρνιθος καὶ τὸ κάλλος τὸ αὐτοφυές.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 5, line 9

8.44. CLAUDIUS AELIANUS SOPH.

παῖς ἐγένετο Ἰνδῶν βασι- λεῖ, καὶ ἀδελφοὺς εἶχεν, οἵπερ οὖν ἀνδρωθέντες ἐκ- δικάτατοί τε γίνονται καὶ λεωργότατοι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 5, line 39

ἔοικεν οὖν ἐξ Ἰνδῶν τὸ μυθολόγημα ἐπ' ἄλλου μὲν ὄρνιθος, ἐπιρρεῦσαι δ' οὖν καὶ τοῖς Ἑλ- λησιν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 5, line 42

Ὡγύ- γιον γάρ τι μῆκος χρόνου λέγουσι Βραχμᾶνες, ἐξ οὗ ταῦτα τῷ ἔποπι τῷ Ἰνδῷ ἔτι ἀνθρώπῳ ὄντι καὶ παιδὶ τήν γε ἡλικίαν ἐς τοὺς γειναμένους πέπρακται.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 6, line 1

Ἐν Ἰνδοῖς γίνεταί ζῶον κροκοδείλῳ χερσαίῳ πα- ραπλήσιον ἰδεῖν· μέγεθος δὲ αὐτῷ κυνιδίου Μελι- ταίου εἴη ἄν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 8, line 1

Ἡ δὲ Ἰνδῶν θάλαττα ὕδρους θαλαττίους τίκτει πλατεῖς τὰς οὐράς· τίκτουσι δὲ καὶ λίμναι μεγίστους ὕδρους.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 9, line 1

Ἐν Ἰνδοῖς ἵππων τε ἀγρίων καὶ ὄνων τοιούτων εἰσὶν ἀγέλαι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 10, line 1

Ἐν Πρασίοις δὲ τοῖς Ἰνδικοῖς εἶναι γένος πιθή- κων φασὶν ἀνθρωπόνουν, ἰδεῖν δὲ εἰσι κατὰ τοὺς Ἵρκανοὺς κύνας τὸ μέγεθος, προκομῖα τε αὐτῶν ὁρᾶται συμφυῆς· εἴποι δ' ἂν ὁ μὴ τὸ ἀληθὲς εἰδὼς ἀσκητὰς εἶναι αὐτάς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 10, line 12

φοι- τῶσι δὲ ἄθροοι ἐς τὰ τῆς Λατάγης προάστεια (πόλις δὲ ἐστὶν Ἰνδῶν ἢ Λατάγη), καὶ τὴν προτεθειμένην αὐτοῖς ἐκ βασιλέως ἐφθὴν ὄρυζαν σιτοῦνται· ἀνὰ πᾶσαν δὲ ἡμέραν ἥδε ἡ δαῖς αὐτοῖς εὐτρεπὴς πρό- κειται.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 11, line 1

Ποηφάγον ἐν Ἰνδοῖς ζῶον ἐστὶ, καὶ πέφυκὲ γε διπλάσιον ἵππου τὸ μέγεθος.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 11, line 5

οὐρανὸν δὲ ἔχει δασυ- τάτην καὶ μελαίνης ἀκράτως χροῆς, καὶ εἶεν αὗται αἱ τρίχες καὶ τῶν ἀνθρωπείων λεπτότεραι ἄν, καὶ ἐν μεγάλῳ τίθενται ταύτας ἔχειν Ἰνδῶν αἱ γυναῖκες· καὶ γὰρ τοὶ παραπλέκονται ἐξ αὐτῶν καὶ κοσμοῦνται μάλα ὡραίως, ταῖς πλοκαμῖσι ταῖς συμφύτοις καὶ ταύτας ὑποδέουσαι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 11, line 25

καὶ δείρας τὸ πᾶν σῶμα (ἀγα- θὸν γὰρ καὶ ἡ δορά) ἀφῆκε τὸν νεκρόν· σαρκῶν γὰρ τῶν ἐκείνου δέονται Ἰνδοὶ οὐδὲ ἓν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 12, line 1

Κήτη δὲ ἦν ἄρα ἐν τῇ τῶν Ἰνδῶν θαλάττῃ πεν- ταπλασίονα τὸ μέγεθος ἐλέφαντος τοῦ μεγίστου.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 13, line 1

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

καὶ αἰροῦσιν οἱ γεωργοῦντες αὐτοὺς ἀσθενεῖ τῇ νήξει χρωμένους, ἅτε μὴ ἐν βυθῷ φερό-
μένους ἀλλὰ ἐπιπολῆς, καὶ ἐκ τοῦ ὀλίγου ὕδατος ἀγαπητῶς καὶ μόλις ἀποζῶντας. Ἰνδῶν δὲ
ἰχθύων ἴδια καὶ ἐκεῖνα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 13, line 3

βατίδες γίνον- ται παρ' αὐτοῖς οὐδέν τι μείους Ἀργολικῆς ἀσπίδος ἐκάστη, καρίδες δὲ καὶ
μείζους καράβων αἱ Ἰνδῶν εἰσίν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 13, line 7

αἱ μὲν οὖν ἐκ τῆς θαλάττης ἀναθέουσαι διὰ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Γάγγου χηλᾶς μεγίστας
ἔχουσι καὶ τραχείας θιγεῖν, τὰς γε μὴν ἐκ τῆς Ἐρυθρᾶς ἐκπι- πτούσας ἐς τὸν Ἰνδὸν λείας ἔχειν
πέπυσμαι τὰς ἀκάνθας, προμήκεις γε μὴν καὶ βοστρυχώδεις τὰς ἀπηρτημένας ἑλίκας.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 14, line 1

Χελώνη δὲ ἐν Ἰνδοῖς ποταμίᾳ τὸ χελώνιον ἔχει σκάφης οὐ μείον τελείας.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 15, line 2

Θυμόσοφα δὲ καὶ παρ' ἡμῖν ζῷα ἐστίν, οὐ μὴν ὅσα ἐν Ἰνδοῖς ἀλλὰ ὀλίγα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 15, line 5

ἐκεῖ δὲ ὃ τε ἐλέφας τοι- οὔτός ἐστι καὶ ὁ σιττακὸς καὶ αἱ σφίγγες καὶ οἱ κα- λούμενοι
σάτυροι· σοφὸν δὲ ἄρα ἦν καὶ ὁ μύρμηξ ὁ Ἰνδός.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 15, line 9

οἱ μὲν οὖν ἡμεδαποὶ τὰς ἑαυτῶν χειρᾶς καὶ ὑποδρομὰς ὑπὸ τὴν γῆν ὀρύττουσι, καὶ φωλεοὺς
τινας κρυπτοὺς ἀποφαίνουσι γεωρυχοῦντες, καὶ με- ταλλείαις ὥς εἰπεῖν τισιν ἀπορρήτοις καὶ
λανθανού- σαις καταξαίνονται· ἀλλὰ οἳ γε Ἰνδοὶ μύρμηκες οἰκί- σκους τινας συμφορητοὺς
ἐργάζονται, καὶ τούτους γε οὐκ ἐν χωρίοις ὑπτίοις καὶ λείοις καὶ ἐπικλυζομένοις ῥᾶστα, ἀλλὰ
μετεώροις καὶ ὑψηλοῖς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 15, line 31

καὶ μυρμηκῶν μὲν Ἰνδῶν πέρι Ἰόβα πάλαι, ἐμοὶ δὲ νῦν ἐς τοσοῦτον λελέχθω.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 16, line 1

Παρὰ τοῖς Ἀριανοῖς τοῖς Ἰνδικοῖς χάσμα Πλού- τωνός ἐστι, καὶ κάτω τινὲς ἀπόρρητοι
σύριγγες καὶ ὁδοὶ κρυπταὶ καὶ διαδρομαὶ ἀνθρώποις μὲν ἀθέατοι, βαθεῖαι δ' οὖν καὶ ἐπὶ
μήκιστον προήκουσαι· γενό- μεναι δὲ πῶς καὶ ὀρωρυγμέναι τρόπῳ τῷ, οὔτε Ἰνδοὶ λέγουσιν,
οὔτε ἐγὼ μαθεῖν πολυπραγμονῶ.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 16, line 7

ἄγουσιν οὖν Ἰνδοὶ καὶ ὑπὲρ τὰ τρισμύρια ἐνταῦθα κτήνη προβάτων τε καὶ αἰγῶν καὶ βοῶν
καὶ ἵππων· καὶ ἕκαστος τῶν ἢ ἐνύπνιον ἢ ὅτταν τινὰ ἢ φήμην ἢ ὄρνιν οὐκ εὐέδρον ὑφορωμένων
ἀντὶ τῆς ἑαυτοῦ ζωῆς ἐμβάλλει κατὰ τὴν οἴκοθεν δύναμιν, ἑαυτὸν λυτρούμενος καὶ διδούς ὑπὲρ
τῆς ἑαυτοῦ ψυχῆς τὴν τοῦ ζώου.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 20, line 1

Ἐν τοῖς χωρίοις τοῖς ἐν Ἰνδίᾳ (λέγω δὲ τοῖς ἐν- δοτάτω) ὄρη φασὶν εἶναι δύσβατά τε καὶ
ἐνθηρα, καὶ ἔχειν ζῷα ὅσα καὶ ἡ καθ' ἡμᾶς τρέφει γῆ, ἄγρια δέ· καὶ γάρ τοι καὶ τὰς οἷς τὰς

8.44. CLAUDIUS AELIANUS SOPH.

ἐκεῖ φασι εἶναι καὶ ταύ- τας θηρία, καὶ κύνας καὶ αἶγας καὶ βοῦς, αὐτόνομά τε ἀλᾶσθαι καὶ ἐλεύθερα, ἀφειμένα νομειτικῆς ἀρχῆς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 20, line 8

πλήθη δὲ αὐτῶν καὶ ἀριθμοῦ πλείω φασὶν οἱ τῶν Ἰνδῶν λόγιοι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 20, line 34

εἴτα ταύτης παραδραμούσης καὶ τῆς θηλείας κυούσης, ἐκθηριοῦται αὐθις, καὶ μονίας ἐστὶν ὅδε ὁ Ἰνδὸς καρτάζωνος.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 21, line 2

Ὑπερελθόντι τὰ ὄρη τὰ γειτνιῶντα τοῖς Ἰν- δοῖς κατὰ τὴν ἐνδοτάτῳ πλευρὰν φανοῦνται φασι αὐλῶνες δασύτατοι, καὶ καλεῖται γε ὑπ' Ἰνδῶν ὁ χῶρος Κόλουδα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 22, line 1

Ἔστι δὲ καὶ Σκιράται πέραν Ἰνδῶν ἔθνος καὶ τοῦτο, καὶ εἰσὶ σιμοὶ τὰς εἰνας, εἴτε οὕτως ἐκ βρε- φῶν ἀπαλῶν ἐνθλάσει τῇ τῆς εἰνὸς διαμεινάντες, εἴτε καὶ τοῦτον τὸν τρόπον τίκτονται.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 31, line 1

Λέγει δὲ ἄρα Κτησίας ἐν λόγοις Ἰνδικοῖς τοὺς καλουμένους Κυναμολγούς τρέφειν κύνας πολλοὺς κατὰ τοὺς Ἵρκανοὺς τὸ μέγεθος, καὶ εἶναι γε ἰσχυ- ρῶς κυνοτρόφους.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 33, line 5

Λιβύων δὲ ἄρα τῶν γειτνιῶντων Ἰνδοῖς ὀπισθονόμων βοῶν ἀγέλας εἶναι τινὰς ἀκούω.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 35, line 2

ὅσπερ οὖν ἐν Ἰνδοῖς λόγοις φησὶ Κώυθα μὲν οὕτως εἶναι κώμην τὸ ὄνομα λαβοῦσαν, ταῖς δὲ αἰξὶ ταῖς ἐπιχω- ρίοις ἔνδον ἐν τοῖς σηκοῖς παραβάλλειν τοὺς νομέας ἰχθῦς ξηροὺς χιλόν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 37, line 1

Παρά γε τοῖς Ψύλλοις καλουμένοις τῶν Ἰνδῶν (εἰσὶ γὰρ καὶ Λιβύων ἕτεροι) οἱ ἵπποι γί- νονται τῶν κριῶν οὐ μείζους, καὶ τὰ πρόβατα ἰδεῖν μικρὰ κατὰ τοὺς ἄρνας, καὶ οἱ ὄνοι δὲ τοσοῦτοι γίνονται τὸ μέ- γεθος καὶ οἱ ἡμίονοι καὶ οἱ βοῦς καὶ πᾶν κτήνος ἕτερον ὅ τι οὖν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 37, line 6

Ἦν δὲ ἐν Ἰνδοῖς οὐ φασι γίνεσθαι οὔτε ἡμέρον οὔτε ἄγριον· μυσάπτονται δὲ καὶ ἐσθίειν τοῦδε τοῦ ζώου Ἰνδοί, καὶ οὐκ ἂν γεύσαιντό ποτε ὑείων, ὥσπερ οὖν οὐδὲ ἀνθρωπείων οἱ αὐτοί.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 39, line 1

Ὀνησίκριτος ὁ Ἀστυपालαιεὺς λέγει ἐν Ἰνδοῖς κατὰ τὴν Ἀλεξάνδρου τοῦ παιδὸς Φιλίππου ἀνάβασιν γενέσθαι δράκοντας δύο, οὓς Ἀβισάρης ὁ Ἰνδὸς ἔτρε- φεν, ὃν ὁ μὲν ἦν πήχεων τεττα- ράκοντα καὶ ἑκατόν, ὃ δὲ ὀγδοήκοντα· καὶ φησὶ ἐπιθυμῆσαι δεινῶς Ἀλέ- ξανδρον θεάσασθαι αὐτούς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 16, section 41, line 1

Μεγασθένης φησὶ κατὰ τὴν Ἰνδικὴν σκορπίους γίνεσθαι πτερωτοὺς μεγέθει μεγίστους, τὸ κέντρον δὲ ἐγχερίμπτειν τοῖς Εὐρωπαίοις παραπλησίως.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 2, line 1

Κλείταρχος ἐν τῇ περὶ τὴν Ἰνδικὴν φησὶ γίνεσθαι ὄφεις πήχεων ἑκαταίδεκα.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 6, line 21

περὶ δὲ τὴν Γεδρωσίων χώραν (ἔστι δὲ μοῖρα τῆς γῆς τῆς Ἰνδικῆς οὐκ ἄδοξος) Ὀνησίκριτος λέγει καὶ Ὀρθαγόρας γίνεσθαι κήτη ἡμισυ ἔχοντα σταδίου τὸ μῆκος.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 22, line 2

λέγει δὲ Κλεί- ταρχος ἐν Ἰνδοῖς γίνεσθαι ὄρνιν, καὶ εἶναι σφόδρα ἐρωτικόν, καὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ λέγει ὠρίωνα εἶναι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 23, line 1

Κατρέα τὸ ὄνομα, Ἰνδὸν τὸ γένος, τῇ φύσει ὄρνιν λέγει Κλείταρχος εἶναι τὸ κάλλος ὑπερή- φανον· τὸ μέ- γεθος γὰρ εἴη ἂν κατὰ τὸν ταῶν, τὰ δὲ ἄκρα τῶν πτερῶν ἔοικε σμαράγδῳ.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 23, line 13

ἔχει δὲ καὶ φώνημα εὐμουσον καὶ κατὰ τὴν ἀηδὸνα τορόν. Ἰνδοὶ δὲ ἄρα τὴν ἐξ ὀρνίθων τροφήν ** εἶχον, ἵνα καὶ οἱ ὀρῶντες ἐστιᾶν τὴν ὄψιν δύνωνται.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 25, line 1

Λέγει δὲ Κλείταρχος πιθήκων ἐν Ἰνδοῖς εἶναι γένη ποικίλα τὴν χροάν, μεγέθει δὲ μέγιστα.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 25, line 20

κατόπτρῳ δὲ χρησάμενος ὁ Ἰνδὸς ὀρώντων ἐκείνων, οὐκ εἰσὶ δ' ἔτι τὰ κατόπτρα, ἀλλὰ ἕτερα προστιθέν- τες· εἶτα καὶ τούτοις ἔρματα ἰσχυρὰ ὑποπλέκουσι· καὶ μέντοι καὶ τοιαυτὰ ἐστίν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 25, line 28

εἴρηται μὲν ὑπὲρ πιθήκων καὶ ἄλλα, Ἰνδῶν τε καὶ οὐκ Ἰνδῶν· καὶ ταῦτα δὲ ἔχει τινὰ τῶ συνιέντι οὐκ ἀσπούδαστα, οὐ μὰ Δία.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 26, line 1

Λέοντας ἐν Ἰνδοῖς γίνεσθαι μεγίστους οὐ δια- πορῶ· τὸ δὲ αἷτιον, τῶν ζώων τῶν ἐτέρων ἥδε ἢ γῆ μήτηρ ἐστὶν ἀγαθή.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 29, line 1

Τοῦ Ἰνδῶν βασιλέως ἐλαύνοντος ἐπὶ τοὺς πολε- μίους δέκα μυριάδες ἐλεφάντων προηγοῦν- ται μαχί- μων.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 29, line 11

ιδεῖν δὲ ἐν Βαβυλῶνι ὁ αὐτὸς λέγει τοὺς φοίνικας αὐτορρίζους ἀνατρεπομένους ὑπὸ τῶν ἐλε- φάντων τὸν αὐτὸν τρόπον, ἐμπιπτόντων τῶν θηρίων αὐτοῖς βιαιότατα· δρῶσι δὲ ἄρα, ἂν ὁ Ἰνδὸς ὁ πω- λεύων αὐτοὺς κελεύσῃ δρᾶσαι τοῦτο αὐτοῖς.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 33, line 9

Κάσπιος δὲ ἄρα καὶ οὗτος ὄρνις ἢ Ἰνδὸς μᾶλλον (λέγεται γὰρ καὶ ἐκείνη τὸ γένος οἱ καὶ ταύτη), καὶ εἴη τὸ μέγεθος κατὰ χῆνα ἂν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 35, line 13

λέγει δὲ ὁ Ἀντήνωρ καὶ ἔτι κατὰ τὴν Ἰδὴν τὴν Κρήσσαν ἐκείνου τοῦ γένους τῶν μελιττῶν εἶναι ἰν- δάλματα, οὐ πολλὰ μὲν, εἶναι δ' οὖν, καὶ πικρὰ ἐν- τυχεῖν, ὥς ἐκείναι ἦσαν.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 39, line 1

8.44. CLAUDIUS AELIANUS SOPH.

Ἐν τῇ Πρασιακῇ χώρᾳ, (Ἰνδῶν δὲ αὕτη ἐστὶ) Μεγασθένης φησὶ πιθήκους εἶναι τῶν μεγίστων κυνῶν οὐ μείους, ἔχειν δὲ οὐράς πῆχεων πέντε· πρὸς- πεφυκέναι δὲ ἄρα αὐτοῖς καὶ προκόμια καὶ πάγωνας καθειμένους καὶ βαθεῖς· καὶ τὸ μὲν πρόσωπον πᾶν εἶναι λευκούς, τὸ σῶμα δὲ μέλανας ἰδεῖν, ἡμέρους δὲ καὶ φιλανθρωποτάτους, καὶ τὸ τοῖς ἀλλαχόθι πιθήκοις συμφυεῖς οὐκ ἔχειν τὸ κακότηες.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 40, line 1

Ἐν Ἰνδοῖς ἐστὶ χώρα περὶ τὸν Ἀσταβόρραν ποταμὸν ἐν τοῖς καλουμένοις Ῥιζοφάγοις.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 40, line 6

κατὰ μέντοι τὴν λίμνην τὴν καλουμένην Ἀορατίαν (Ἰνδῶν δὲ ἄρα καὶ αὕτη· πλησίον δὲ ἐστὶ τοῦ προειρημένου ποταμοῦ) τοῦτο μὲν τὸ θηρίον τὸν κῶνωπα ἐπιπολάζειν· ἔρημον δὲ καὶ εἶναι τὸν χώρον καὶ καλεῖσθαι.

Claudius Aelianus Soph., De natura animalium Book 17, section 40, line 10

τὴν δὲ αἰτίαν ἐκείνην Ἰνδοὶ φασιν οἱ κύκλῳ περιοικούντες, τὸν χώρον τὸν προειρημένον οὐκ ἄνωθεν οὐδὲ ἐξ ἀρχῆς ἄγονον ἀνθρώπων γενέσθαι, σκορπίους δὲ ἐπιπολάσαι πλήθος ἄμαχον, καὶ φαλαγγίων τινὰ ἐπιφοιτῆσαι φορὰν, φαλαγγίων δὲ ἅ καλοῦσι τετράγναθα.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia (0545: 002) "Claudii Aeliani de natura animalium libri xvii, varia historia, epistolae, fragmenta, vol. 2", Ed. Hercher, R. Leipzig: Teubner, 1866, Repr. 1971. Book 1, section 15, line 21

εἰ δέ τι Καλλιμάχῳ χρὴ προσέχειν, φάτταν καὶ πυραλλίδα καὶ περιστερὰν καὶ τρυγόνα φησὶ μηδὲν ἀλλήλαις εἰκέναι. Ἰνδοὶ δὲ φασὶ λόγοι περιστερὰς ἐν Ἰνδοῖς γίνεσθαι μηλίνας τὴν χροῶν.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 1, section 15, line 22

Ἰνδοὶ δὲ φασὶ λόγοι περιστερὰς ἐν Ἰνδοῖς γίνεσθαι μηλίνας τὴν χροῶν.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 2, section 31, line 7

οὐδεὶς γοῦν ἔννοιαν ἔλαβε τοιαύτην, οἷαν Εὐήμερος ὁ Μεσσήνιος ἢ Διογένης ὁ Φρυγὴς ἢ Ἴππων ἢ Διαγόρας ἢ Σωσίας ἢ Ἐπίκουρος οὔτε Ἰνδὸς οὔτε Κελτὸς οὔτε Αἰγύπτιος.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 2, section 41, line 15

καὶ Ἀλέξανδρος δὲ ὁ Μακεδὼν ἐπὶ Καλανῶ τῷ Βραχμαῖνι, τῷ Ἰνδῶν σοφιστῇ, ὅτε ἑαυτὸν ἐκεῖνος κατέπρησεν, ἀγῶνα μουσικῆς καὶ ἱππέων καὶ ἀθλη- τῶν διέθηκε.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 2, section 41, line 17

χαριζόμενος δὲ τοῖς Ἰνδοῖς καὶ τι ἐπι- χώριον αὐτῶν ἀγώνισμα ἐς τιμὴν τοῦ Καλανοῦ συγ- κατηγρίθησε τοῖς ἀθλοῖς τοῖς προειρημένοις.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 3, section 23, line 5

Καλὰ μὲν οὖν Ἀλεξάνδρου τὰ ἐπὶ Γρανίκῳ καὶ τὰ ἐπὶ Ἰσῶ καὶ ἡ πρὸς Ἀρβήλοισι μάχη καὶ Δαρεῖος ἡττημένος καὶ Πέρσαι δουλεύοντες Μακεδόσι· καλὰ δὲ καὶ τὰ τῆς ἄλλης ἀπάσης Ἀσίας νενικημένης, καὶ Ἰνδοὶ δὲ καὶ οὗτοι Ἀλεξάνδρῳ πειθόμενοι· καλὸν δὲ καὶ τὸ πρὸς τῇ Τύρῳ καὶ τὰ ἐν Ὀξυδράκαις καὶ τὰ ἄλλα αὐτοῦ.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 3, section 29, line 8

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

καὶ ὁμῶς ἐπὶ τούτοις μέγα ἐφρόνει οὐδὲν ἥττον ἢ Ἀλέξανδρος ἐπὶ τῇ τῆς οἰκουμένης ἀρχῇ, ὅτε καὶ Ἰνδοὺς ἐλὼν ἐς Βαβυλῶνα ὑπέστρεψεν.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 3, section 39, line 3

Ὅτι βαλάνους Ἀρκάδες, Ἀργεῖοι δ' ἀπίους, Ἀθη- ναῖοι δὲ σῦκα, Τιρύνθιοι δὲ ἀχράδας δεῖπνον εἶχον, Ἰνδοὶ καλάμους, Καρμανοὶ φοίνικας, κέγχρον δὲ Μαιῶται καὶ Σαυρομάται, τέρμινθον δὲ καὶ κάρδα- μον Πέρσαι.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 4, section 1, line 9

Ὅτι Δαρδανεῖς τοὺς ἀπὸ τῆς Ἰλλυρίδος ἀκούω τρεῖς μόνον λούεσθαι παρὰ πάντα τὸν ἑαυτῶν βίον, ἐξ ὠδίνων καὶ γαμοῦντας καὶ ἀποθανόντας. Ἰνδοὶ οὔτε δανεῖζουσιν οὔτε ἴσασι δανεῖζεσθαι.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 4, section 1, line 10

ἀλλ' οὐδὲ θέμις ἄνδρα Ἰνδὸν οὔτε ἀδικῆσαι οὔτε ἀδικηθῆναι.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 4, section 20, line 6

ἦκεν οὖν καὶ πρὸς τοὺς Χαλ- δαίους ἐς Βαβυλῶνα καὶ πρὸς τοὺς μάγους καὶ τοὺς σοφιστὰς τῶν Ἰνδῶν.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 5, section 6, line 1

Ἄξιον δὲ καὶ τὸ Καλανοῦ τοῦ Ἰνδοῦ τέλος ἐπαινέ-σαι· ἄλλος δ' ἂν εἶπεν ὅτι καὶ ἀγασθῆναι.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 5, section 6, line 3

Καλανὸς ὁ Ἰνδῶν σοφιστῆς μακρὰ χαί- ρειν φράσας Ἀλεξάνδρῳ καὶ Μακεδόσι καὶ τῷ βίῳ, ὅτε ἐβουλήθη ἀπολῦσαι αὐτὸν ἐκ τῶν τοῦ σώματος δεσμῶν, ἐνένηστο μὲν ἡ πυρὰ ἐν τῷ καλλίστῳ προ- αστείῳ τῆς Βαβυλῶνος, καὶ ἦν τὰ ξύλα αὐὰ καὶ πρὸς εὐωδίαν εὖ μάλα ἐπί- λεκτα κέδρου καὶ θύου καὶ κυ- παρίττου καὶ μυρσίνης καὶ δάφνης· αὐτὸς δὲ γυμνα- σάμενος γυμνάσιον τὸ εἰωθὸς (ἦν δὲ αὐτὸ δρόμος), ἀνελθὼν ἐπὶ μέσης τῆς πυρᾶς ἔστη ἐστεφανωμένος καλάμου κόμη.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 6, section 14, line 14

ὁ δὲ διέστησεν ἄλλους ἄλλη, καὶ τοὺς μὲν ἐπὶ τὰ τῆς Ἰνδικῆς ὄρια ἀπέπεμψε, τοὺς δὲ ἐπὶ τὰ Σκυθικά.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 7, section 18, line 3

παρὰ Ἰνδοῖς δὲ αἱ γυναῖκες τὸ αὐτὸ πῦρ ἀποθανοῦσι τοῖς ἀνδράσιν ὑπο- μένουσι.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 8, section 7, line 18

ἦσαν δὲ καὶ ἐκ τῆς Ἰνδικῆς θαν- ματοποιοὶ διαπρέποντες, καὶ ἔδοξαν δὲ αὐτοὶ κρατεῖν τῶν ἄλλων τῶν ἀλλαχόθεν.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 10, section 14, line 3

καὶ μαρτύριον ἔλεγεν ἀνδρειοτάτους καὶ ἐλευθεριωτάτους Ἰνδοὺς καὶ Πέρσας, ἀμφοτέρους δὲ πρὸς χρηματισμὸν ἀργοτάτους εἶναι· Φρύγας δὲ καὶ Λυδοὺς ἐργαστικωτάτους, δουλεύειν δέ.

Claudius Aelianus Soph., Varia historia Book 12, section 48, line 1

Ὅτι Ἰνδοὶ τῇ παρὰ σφισιν ἐπιχωρίῳ φωνῇ τὰ Ὀμήρου μεταγράφαντες ἄδουσιν οὐ μόνοι ἀλλὰ καὶ οἱ Περσῶν βασιλεῖς, εἴ τι χρὴ πιστεύειν τοῖς ὑπὲρ τούτων ἱστοροῦσιν.

8.45. PROCOPIUS RHET., SCR. ECCL.

Claudius Aelianus Soph., Fragmenta (0545: 004) “Claudii Aeliani de natura animalium libri xvii, varia historia, epistolae, fragmenta, vol. 2”, Ed. Hercher, R. Leipzig: Teubner, 1866, Repr. 1971. Fragment 85, line 1

οἱ ἄνεμοι οἱ σκληροὶ τε καὶ ἐχθροὶ παραχρῆμα ἐκόπασαν, καὶ τὸ κῦμα ἐστορέσθη· πνεῦμα δὲ κεκρι- μένον κατὰ πρύμναν ἐπέρρει, καὶ τὰ ἰστία ἐπλήρου. ἰνδάλματα εἰκασμένα κυσὶν ἕκ- τινος θείας ὀρμῆς τοῦτον ἐπιπηδήσαντα, οἰκτρῶς, ὅσα ἰδεῖν, διέξυνεν.

Claudius Aelianus Soph., Fragmenta Fragment 99, line 8

καὶ ἔστι τὸ ἰνδάλμα τοῦ πάθους μάλα ἐναργές.

Claudius Aelianus Soph., Fragmenta Fragment 106, line 18

ὁψις οὖν ἰνδάλματος ἱεροῦ ὄναρ ἐπιστάσα λέγει ποιήσασθαι μεταβολὴν βίου.

8.45 Procopius Rhet., Scr. Eccl.

Procopius Rhet., Scr. Eccl., Catena in Canticum canticorum (2598: 002); MPG 87.2. Page 1561, line 54

μὲν διάνοιαν κατωτέρα τῆς ἀληθείας κατανοήσεως· πάντα δὲ λόγον ἐρμηνευτικὸν στι- γμὴν βραχεῖαν δο- κεῖν, μὴ δυνάμενον τῷ πλάτει τῆς διανοίας ἐπεκτεῖ- νεσθαι· τὴν οὖν διὰ τῶν τοιούτων ῥημάτων χειρ- αγωγουμένην ψυχὴν πρὸς τὴν τῶν ἀλήπτων περι- νοιαν, διὰ μόνης πίστεως εἰσοικίζειν ἐν αὐτῇ λέγει δεῖν τὴν πάντα νοῦν ὑπερέχουσαν φύσιν· καὶ τοῦτο ἔστι τὸ παρὰ τῶν φίλων λεγόμενον, ὅτι Σοὶ ποιήσω- μεν, ὧ ψυχὴ, τῇ καλῶς πρὸς τὸν ἵππον ἀπεικασθείσῃ, ἰνδάλματά τινα τῆς ἀληθείας καὶ ὁμοιώματα· τοι- αύτη γὰρ καὶ τοῦ τῶν λόγων ἀργυρίου ἡ δύναμις ὡς ἐναυγάσματα σπινθηροειδῆ δοκεῖν εἶναι τὰ ῥήματα, μὴ δυνά- μενα δι' ἀκριβείας ἐμφῆναι τὸ ἐγκείμενον νόημα· σὺ δὲ ταῦτα δεξαμένη, ὑποζύ- γιον τε καὶ οἰκητήριον γενήσῃ διὰ πίστεως, τοῦ ἐν σοὶ ἀνακλίνεσθαι μέλλοντος διὰ τῆς ἐν σοὶ κατοικη- σεως· τοῦ γὰρ αὐτοῦ καὶ θρόνος ἔσῃ καὶ οἶκος γε- νήσῃ· ταῦτα τῶν φίλων τοῦ νυμφίου τῇ καθαρᾷ καὶ παρθένῳ χαρισσάμενων ψυχῇ, εἶεν δ' ἂν οὗτοι τὰ

Procopius Rhet., Scr. Eccl., Commentarii in Isaiam (2598: 004); MPG 87.2. Page 2084, line 37

Σουφεῖρ δὲ χώρα τῆς Ἰνδικῆς, ἐνθα γίνε- σθαι τὰς τιμιωτάτας λίθους φησί.

Procopius Rhet., Scr. Eccl., Commentarii in Isaiam Page 2628, line 19

Θαυμαζούσης δὲ τῆς Ἐκκλησίας, τὴν τοῦ πράγματος αἰτίαν ὁ σαγηνεύων φησὶν· Ἐμὲ νῆσοι ὑπέμειναν, τοὺς νησιώτας λέ- γων, καὶ πλοῖα Θαρσεῖς. Τὰς Ἰνδικὰς δὲ χώρας Θαρσεῖς ἢ Γραφὴ καλεῖ.

Procopius Rhet., Scr. Eccl., Commentarii in Isaiam Page 2629, line 19

Πλοῖα δὲ Θαρσεῖς καλεῖ, τοὺς ἀπὸ τῆς Θαρ- σεῖς ἐρχομένους ἐν Ἰνδίᾳ κειμένης ἥς καὶ ἐν Ἰωνίᾳ μέμνηται.

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Procopius Rhet., Scr. Eccl., Epistulae 1–166 (2598: 005) “Procopii Gazaei epistolae et declamationes”, Ed. Garzya, A., Loenertz, R.–J. Ettal: Buch–Kunstverlag, 1963; Studia patristica et Byzantina 9. Epistle 165, line 8

ὁ δὲ μισθὸς οὐ μὰ Δία χρυσὸς οὐδὲ λίθοι τινὲς Ἰνδικαί – οὔτε γὰρ τούτων πλουτῶ, οὔτε τούτων θηρεύσων ὁ νέος ἀφίικται – ἀλλ’ οὐδὲ λόγων κάλλος – οὐ γὰρ Μουσῶν εὐφορος ἐγώ, οὐδὲ τοῖς ἐξ Ἀττικῆς ἐναβρύνομαι, ταῦτα γὰρ εὐδαιμόνων εὐτύχησαν παῖδες – ἀλλ’ εἰ τὴν ἐμὴν δόσιν ἥτις ἐστὶν ἐθέλεις σκοπεῖν, εὐνοιά τε καὶ προθυμία· τούτων γὰρ κύριος ἐγώ, Δημοσθένης φησὶν, τῶν δὲ ἄλλων τύχη καὶ Μοῦσαι πρὸς τὸ δοκοῦν αὐταῖς τὴν δωρεάν πρυτανεύουσαι.

Procopius Rhet., Scr. Eccl., Descriptio imaginis (2598: 009) “Spätantiker Gemäldezyklus in Gaza”, Ed. Friedländer, P. Vatican City: Biblioteca Apostolica Vaticana, 1939; Studi e Testi 89. Section 22, line 7

τοσοῦτον γὰρ ἡ κεκτημένη περικείται κόσμον, ὅσον τῇ κατ’ οἶκον ἀρμόσει διαίτη, ἀμφιδέ-
τας τε καὶ περιβραχιόνια· ὅρμοι τε περὶ τῇ δέρῃ καὶ τοῖς ὠσὶν ἐλικτῆρες καὶ χρυσὴ ταινία τὴν
κεφαλὴν περισφίγ- γουσα Ἰνδικῶν λίθων διαδοχῇ περικλείεται.

Menander Rhet., Διαίσεις τῶν ἐπιδεικτικῶν (olim sub auctore Genethlio) (2586: 001) “Menander rhetor”, Ed. Russell, D.A., Wilson, N.G. Oxford: Clarendon Press, 1981. Spengel page 358, line 14

ἐπὶ πένθει δὲ καὶ οἴκτῳ, <ὡς> ἱστοροῦσι Βουκέφαλον τὴν ἐν Ἰνδοῖς πόλιν ἐπὶ τῷ ἵππῳ τοῦ
Ἀλεξάνδρου τῷ Βουκεφάλῳ ἀνοικισθῆναι· τὴν Ἀντινόου δὲ ἐν Αἰγύπτῳ <ἐπὶ τῷ> Ἀντινόου
θανάτῳ ὑπὸ Ἀδριανοῦ.

8.46 Etymologicum Genuinum

Etymologicum Genuinum, Etymologicum genuinum (ἀνάβλησις – βώτορες) (4097: 002) “Etymologicum magnum genuinum. Symeonis etymologicum una cum magna grammatica. Etymologicum magnum auctum, vol. 2”, Ed. Lasserre, F., Livadaras, N. Athens: Parnassos Literary Society, 1992. Alphabetic letter alpha, entry 1332, line 4

philox. l. c. <Ἀσχάλλων> (Eur. Or. 785)· ἀδημονῶν, λυπούμενος, χαλεπαίνων, ἢ ἀγα-
νακτῶν· παρὰ τὸ ἄχω, ἀφ’ οὗ ἄχομαι, οἶον (σ 256)· νῦν δ’ ἄχομαι· τόσα γὰρ μοι ἐπέσειεν
κακά, γίνεται ἀχάλλω, ὥσπερ ἄγω ἀγάλλω, εἶδω εἰδάλλω καὶ ἰνδάλλω, καὶ πλεονασμῷ
τοῦ <σ> ἀσχάλλω· ἐκ δὲ τοῦ ἀσχάλλω γίνεται περισπώ- μενον ῥῆμα ἀσχαλῶ, τὸ τρίτον
πρόσωπον ἀσχαλᾷ, καὶ πλεονασμῷ τοῦ <α> ἀσχαλάα, ὡς παρ’ Ὀμήρῳ (B 292 – 293)· καὶ
γὰρ τίς θ’ ἓνα μῆνα μένων ἀπὸ ἧς ἀλόχοιο ἀσχαλάα.

8.47 Scholia In Pindarum

Scholia In Pindarum, Scholia in Pindarum (scholia vetera) (5034: 001) "Scholia vetera in Pindari carmina, 3 vols.", Ed. Drachmann, A.B. Leipzig: Teubner, 1:1903; 2:1910; 3:1927, Repr. 1:1969; 2:1967; 3:1966. Ode O 3, scholion 52a, line 13

ὅτι δὲ συνέβαινε καὶ εἰκὸς ἐστὶν ἐνίας ἔχειν, ἐκεῖθεν δὴλον, ὅτι τῶν ἐλεφάντων οἱ μὲν ἐξ Αἰθιοπίας καὶ Λιβύης πάντες σὺν ταῖς θηλείαις ὀδόντας ἔχουσιν, ἢ κέρατα, ὥς τινες· καθὰ καὶ Ἀμυντιανὸς (Script. rer. Alex. M. p. 162 M.) ἐν τῷ περὶ ἐλεφάντων φησί· τῶν δὲ Ἰνδικῶν αἰθῆ- λειαι χωρὶς ὀδόντων εἰσὶν. 53eCDQ 54E <ἂν ποτε:> ἦν ποτε.

8.48 Posidonius Phil.

Posidonius Phil., Fragmenta (1052: 001) "Posidonios. Die Fragmente, vol. 1", Ed. Theiler, W. Berlin: De Gruyter, 1982. Fragment 2, line 5

τὸ μὲν γὰρ ἑωθινὸν πλευρόν, τὸ κατὰ τοὺς Ἰνδοὺς, καὶ τὸ ἐσπέριον, τὸ κατὰ τοὺς Ἰβήρας καὶ τοὺς Μαυρουσίους, περιπλεῖται πᾶν ἐπὶ πολὺ τοῦ τε νοτίου μέρους καὶ τοῦ βορείου· τὸ δὲ λειπόμενον ἄπλουν ἡμῖν μέχρι νῦν τῷ μὴ συμμῖξαι μηδένας ἀλλήλοις τῶν ἀντιπεριπλεόντων οὐ πολὺ, εἴ τις συντίθῃσιν ἐκ τῶν παραλλήλων διαστημάτων τῶν ἐφικτῶν ἡμῖν.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 3a, line 11

ὁμοίως δὲ καὶ τὸ παρ' Ἰνδοῖς οἰκεῖν ἢ παρ' Ἰβήρσιν· ὧν τοὺς μὲν ἑώους μάλιστα, τοὺς δὲ ἐσπερίους, τρόπον δὲ τινα καὶ ἀντίποδας ἀλλήλοις ἴσμεν.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 138

τυχεῖν δὴ τινα Ἰνδὸν κομισθέντα ὡς τὸν βασιλέα ὑπὸ τῶν φυλάκων τοῦ Ἀραβίου μυχοῦ, λεγόντων εὐρεῖν ἡμιθανῆ καταχθέντα μόνον ἐν νηί, τίς δ' εἶη καὶ πόθεν, ἀγνοεῖν, μὴ συνιέντας τὴν διάλεκτον.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 141

τὸν δὲ παραδοῦναι τοῖς διδάξουσιν ἐλληνίζειν· ἐκμαθόντα δὲ διηγήσασθαι, διότι ἐκ τῆς Ἰνδικῆς πλέων περιπέσοι πλάνη καὶ σωθεῖη δεῦρο, τοὺς σύμπλους ἀποβαλὼν λιμῶ.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 143

ὑποληφθέντα δὲ ὑποσχέσθαι τὸν εἰς Ἰνδοὺς πλοῦν ἡγήσασθαι τοῖς ὑπὸ τοῦ βασιλέως προ- χειρισθεῖσι· τούτων δὲ γενέσθαι τὸν Εὐδόξον.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 173

καὶ πρῶτον μὲν εἰς Δικαιαρχίαν, εἴτ' εἰς Μασσαλίαν ἐλθεῖν, καὶ τὴν ἐξῆς παραλίαν μέ- χρι Γαδείρων, πανταχοῦ δὲ διακωδωνίζοντα ταῦτα καὶ χρη- ματιζόμενον κατασκευάσασθαι πλοῖον μέγα καὶ ἐφόλκια δύο λέμβοις ληστρικοῖς ὅμοια, ἐμβιβάσαι τε μουσικὰ παιδισκάρια καὶ ἰατροὺς καὶ ἄλλους τεχνίτας, ἔπειτα πλεῖν ἐπὶ τὴν Ἰνδικὴν μετέωρον ζεφύροις συνεχέσι.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 182

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

Ἀφέντα δὴ τὸν ἐπὶ Ἰνδοὺς πλοῦν ἀναστρέφειν· ἐν δὲ τῷ παράπλῳ νῆσον εὐνδρον καὶ εὐδενδρον ἐρήμην ἰδόντα σημειώσασθαι.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 209

Τίς γάρ ἢ πιθανότης πρῶτον μὲν τῆς κατὰ τὸν Ἰνδὸν περιπετείας;

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 213

οὐκ εἰκὸς δ' οὐτ' ἔξω που τὸν πλοῦν ἔχοντας εἰς τὸν κόλπον παρωσθῆναι τοὺς Ἰνδοὺς κατὰ πλάνην (τὰ γὰρ στενὰ ἀπὸ τοῦ στόματος δηλώσειν ἔμελλε τὴν πλάνην), οὐτ' εἰς τὸν κόλπον ἐπιτήδες καταχθεῖσιν ἔτι πλάνης ἢν πρόφασις καὶ ἀνέμων ἀστάτων.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 222

ὁ δὲ δὴ σπονδοφόρος καὶ θεωρὸς τῶν Κυζικηνῶν πῶς ἀφείς τὴν πόλιν εἰς Ἰνδοὺς ἔπλει;

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 270

Ὑπονοεῖ δὲ τὸ τῆς οἰκουμένης μῆκος ἐπτά που μυριάδων σταδίων ὑπάρχον ἡμῖσι εἶναι τοῦ ὅλου κύκλου, καθ' ὃν εἴληπται, ὥστε, φησὶν, ἀπὸ τῆς δύσεως εὐρὴ πλέων ἐν τοσαύταις μυριάσιν ἔλθοι ἂν εἰς Ἰνδοὺς.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 287

Ἐπαινῶν δὲ τὴν τοιαύτην διαίρεσιν τῶν ἡπείρων, οἷα νῦν ἐστὶ, παραδείγματι χρῆται τῷ τοὺς Ἰνδοὺς τῶν Αἰθιοπῶν διαφέρειν τῶν ἐν τῇ Λιβύῃ· εὐερνεστέρους γὰρ εἶναι καὶ ἥττον ἔφεσθαι τῇ ξηρασίᾳ τοῦ περιέχοντος.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 13, line 298

ἐπειθ' Ὅμηρος οὐ διὰ τοῦτο διαιρεῖ τοὺς Αἰθίοπας, ὅτι τοὺς Ἰνδοὺς ἥδει τοιούτους τινὰς τοῖς σώμασιν (οὐδὲ γὰρ ἀρχὴν εἶδέναι τοὺς Ἰνδοὺς εἰκὸς Ὅμηρον, ὅπου γε οὐδ' ὁ Εὐεργέτης κατὰ τὸν Εὐδόξειον μῦθον ἥδει τὰ κατὰ τὴν Ἰνδικήν, οὐδὲ τὸν πλοῦν τὸν ἐπ' αὐτήν), ἀλλὰ μᾶλλον κατὰ τὴν λεχθεῖσαν ὑφ' ἡμῶν πρότερον διαίρεσιν.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 26, line 50

Ἀλέξανδρος δὲ τῆς Ἰνδικῆς στρατείας ὅρια βωμοὺς ἔθετο ἐν τοῖς τόποις εἰς οὓς ὑστάτους ἀφίκετο τῶν πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς Ἰνδῶν, μιμούμενος τὸν Ἡρακλέα καὶ τὸν Διόνυσον· ἦν μὲν δὴ τὸ ἔθος τοῦτο.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 26, line 56

οὐ γὰρ νῦν οἱ Φιλαίνων βωμοὶ μένουσιν, ἀλλ' ὁ τόπος μετέληφε τὴν προσηγορίαν· οὐδὲ ἐν τῇ Ἰνδικῇ στήλας φασὶν ὀραθῆναι κειμένας οὐθ' Ἡρακλέους, οὐτε Διονύσου, καὶ λεγομένων μέντοι καὶ δεικνυμένων τῶν τόπων τινῶν οἱ Μακεδόνες ἐπίστευον τούτους εἶναι στήλας, ἐν οἷς τι σημεῖον εὕρισκον ἢ τῶν περὶ τὸν Διόνυσον ἱστορουμένων ἢ τῶν περὶ τὸν Ἡρακλέα.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 26, line 82

τὸ δὲ ἐπ' αὐτάς ἀναφέρειν τὰς ἐν τῷ Ἡρακλείῳ στήλας τῷ ἐνθάδε ἥττον εὐλογον, ὥς ἐμοὶ φαίνεται· οὐ γὰρ ἐμπόρων, ἀλλ' ἡγεμόνων μᾶλλον ἀρξάντων τοῦ ὀνόματος τούτου, κρατῆσαι πιθανὸν τὴν δόξαν, καθάπερ καὶ ἐπὶ τῶν Ἰνδικῶν στηλῶν.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 37, line 4

8.48. POSIDONIUS PHIL.

Strabo 5,2,6 Τοῦτό τε δὴ παράδοξον ἡ νῆσος ἔχει καὶ τὰ ὀρύγματα ἀναπληροῦσθαι πάλιν τῷ χρόνῳ τὰ μεταλλευθέντα, καθάπερ τοὺς πλαταμῶνάς φασι τοὺς ἐν Ῥόδῳ καὶ τὴν ἐν Πάρῳ πέτραν τὴν μάρμαρον καὶ τοὺς ἐν Ἴν-δοῖς ἄλας, οὓς φησι Κλείταρχος.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 66, line 17

ὥς δὲ λέγεται πρὸς τὴν οἰκουμένην ὅλην καὶ τὰς ἐσχατίας τὰς τοιαύτας, οἷα καὶ ἡ Ἰνδικὴ καὶ ἡ Ἰβηρία, λέγοι ἂν, εἰ ἄρα, τὴν τοιαύτην ἀπόφασιν.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 68a, line 10

πρῶτος δὲ Δημόκριτος (Vors. 68 B 15) πολυπείρος ἀνὴρ συνεῖδεν, ὅτι προμήκης ἐστὶν ἡ γῆ, ἡμιόλιον τὸ μῆκος τοῦ πλάτους ἔχουσα· συνήνεσε τούτῳ καὶ Δικαίταρχος ὁ Περιπατητικὸς (109 Wehrl.)· Εὐδόξος (276a Lasserre) δὲ τὸ μῆκος διπλοῦν τοῦ πλάτους, ὁ δὲ Ἐρατοσθένης πλεῖον τοῦ διπλοῦ· Κράτης (8a Mette) δὲ ὡς ἡμικύκλιον, Ἰππαρχος δὲ τραπεζοειδῆ, ἄλλοι οὐροειδῆ, Ποσειδώνιος δὲ ὁ Στωϊκὸς σφενδονοειδῆ καὶ μεσόπλατον ἀπὸ νότου εἰς βορρᾶν, στενὴν πρὸς ἑὼ καὶ δύσιν, τὰ πρὸς εὐρον δ' ὅμως πλατύτερα <τὰ> πρὸς τὴν Ἰνδικήν.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 78, line 71

διὰ δὲ τὰς αὐτὰς αἰτίας κατὰ μὲν τὴν Αἴγυπτον τοὺς τε χροκοδείλους φύεσθαι καὶ τοὺς ποταμίους ἵππους, κατὰ δὲ τὴν Αἰθιοπίαν καὶ τὴν τῆς Λιβύης ἔρημον ἐλεφάντων τε πλῆθος καὶ παντοδαπῶν ὀφειῶν τε καὶ τῶν ἄλλων θηρίων καὶ δρακόντων ἐξηλλαγμένων τοῖς τε μεγέθεσι καὶ ταῖς ἀλκαῖς, ὁμοίως δὲ καὶ τοὺς περὶ τὴν Ἰνδικὴν ἐλέφαντας, ὑπερβάλλοντας τοῖς τε ὄγκοις καὶ πλήθεσιν, ἔτι δὲ ταῖς ἀλκαῖς.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 78, line 116

ὁ δ' αὐτὸς λόγος καὶ κατὰ τὰς ἄλλας χώρας τῆς γῆς τὰς κατὰ τὴν ὁμοίαν κλίσιν κειμένας, λέγω δ' Ἰνδικὴν καὶ τὴν Ἐρυθρὰν θάλατταν, ἔτι δὲ Αἰθιοπίαν καὶ τινὰ μέρη τῆς Λιβύης.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 113, line 3

Diodor 33,18 18. Ὅτι ὁ Ἀρσάκης ὁ βασιλεὺς ἐπιείκειαν καὶ φιλάνθρωπίαν ζηλώσας αὐτομάτην ἔσχε τὴν ἐπὶ ῥοιαν τῶν ἀγαθῶν καὶ τὴν βασιλείαν ἐπὶ πλεονῇ ἤξησε· μέχρι <γὰρ> τῆς Ἰνδικῆς διατείνας τῆς ὑπὸ τὸν Πῶρον γενομένης χώρας ἐκυρίευσεν ἀκινδύνως.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 133, line 69

τοιούτος δὲ ὁ Ἀμφιάρεως καὶ ὁ Τροφῶνιος καὶ <ὁ> Ὀρφεὺς καὶ ὁ Μουσαῖος καὶ ὁ παρὰ τοῖς Γέταις θεός, πρὸ μὲν παλαιὸν Ζάμολξις Πυθαγόρειός τις, καθ' ἡμᾶς δὲ ὁ τῷ Βυρεβίστα θεσπίζων Δεκαίνεος· παρὰ δὲ τοῖς Βοσπορήνοισι Ἀχαΐκαρος, παρὰ δὲ τοῖς Ἰνδοῖς οἱ γυμνοσοφισταί, παρὰ δὲ τοῖς Πέρσαις οἱ Μάγοι καὶ νεκυομάντεις καὶ ἔτι οἱ λεγόμενοι λεκανομάντεις καὶ ὕδρομάντεις, παρὰ δὲ τοῖς Ἀσσυριοῖς οἱ Χαλδαῖοι, παρὰ δὲ τοῖς Ῥωμαίοις οἱ Τυρρηνικοὶ ἱεροσκόποι.

Posidonius Phil., Fragmenta Fragment 310, line 59

πρὸ παραπλήσιον μέντοι καὶ τοὺς κατὰ τὴν Ἰνδικὴν δράκοντάς φασι πάσχειν· ἀνέρποντας γὰρ ἐπὶ τὰ μέγιστα τῶν ζώων, ἐλέφαντας, περὶ νῶτα καὶ νηδὺν ἅπασαν εἰσεῖσθαι, φλέβα δ' ἦν ἂν τύχη διελόντας ἐμπνέειν τοῦ αἵματος, ἀπλήστως ἐπισπωμένους βιαίῳ πνεύματι καὶ συντόνῳ ῥοίῳ· μέχρι μὲν οὖν τινος ἐξαναλουμένους ἐκείνους ἀντέχειν ὑπ' ἀμνηχανίας ἀνασκιρ-

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

τῶντας καὶ τῇ προνομαίᾳ τὴν πλευρὰν τύπτοντας ὡς καθιζομένους τῶν δρακόντων, εἴτα ἀεὶ κενουμένου τοῦ ζωτικοῦ, πηδᾶν μὲν μηκέτι δύνασθαι, κραδαιομένους δ' ἐστάναι, μικρὸν δ' ὕστερον καὶ τῶν σκελῶν ἐξασθενησάντων, κατασει- σθέντας ὑπὸ λιφαιμίας ἀποψύχειν, πεσόντας δὲ τοὺς αἰτίους τοῦ θανάτου

Posidonius Phil., Fragmenta (1052: 003) "FGrH #87". Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 28, line 106

τυχεῖν δὴ τινα Ἰνδὸν κομισθέντα ὡς τὸν βασιλέα ὑπὸ τῶν φυλάκων τοῦ Ἀραβίου μυχοῦ, λεγόντων εὐρεῖν ἡμιθανῆ καταχθέντα μόνον ἐν νηί, τίς δ' εἶη καὶ πόθεν, ἀγνοεῖν, μὴ συνιέντας τὴν διάλεκτον· τὸν δὲ παραδοῦναι τοῖς διδάξουσιν ἐλληνίζειν.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 28, line 109

ἐκμαθόντα δὲ διηγῆσασθαι, διότι ἐκ τῆς Ἰνδικῆς πλέων περι- πέσοι πλάνη καὶ σωθεῖν δεῦρο, τοὺς σύμπλους ἀποβαλὼν λιμῶι.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 28, line 111

ὑπο- ληφθέντα δὲ ὑποσχέσθαι τὸν εἰς Ἰνδοὺς πλοῦν ἡγήσασθαι τοῖς ὑπὸ τοῦ βασιλέως προχειρισθεῖσι τούτων δὲ γενέσθαι τὸν Εὐδόξον.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 28, line 141

καὶ πρῶτον μὲν εἰς Δικαιαρχίαν, εἴτ' εἰς Μασσαλίαν ἐλθεῖν καὶ τὴν ἐξῆς παραλίαν μέχρι Γαδείρων· πανταχοῦ δὲ διακωδωνίζοντα ταῦτα καὶ χρηματι- ζόμενον κατασκευάσασθαι πλοῖον μέγα καὶ ἐφόλκια δύο λέμβοις ληιστρι- κοῖς ὅμοια, <οἷς> ἐμβιβάσασθαι μουσικὰ παι- δισκάρια καὶ ἰατροὺς καὶ ἄλλους τεχνίτας, ἔπειτα πλεῖν ἐπὶ τὴν Ἰνδικὴν μετέωρον ζεφύροις συνε- χέσι.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 28, line 150

ἀφέντα δὴ τὸν ἐπὶ Ἰνδοὺς πλοῦν ἀναστρέφειν· ἐν δὲ τῷ παράπλωι νῆσον εὐύδρον καὶ εὐδεν- δρον ἐρήμην ἰδόντα σημειώσασθαι.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 28, line 191

εἰκάξει δὲ καὶ τὴν τῶν Κίμβρων καὶ τῶν συγγενῶν ἐξανάστασιν ἐκ τῆς οἰκείας γενέσθαι κατὰ θαλάττης ἔφοδον, οὐκ ἀθρόαν συμβᾶσαν (F 31). ὑπονοεῖ δὲ τὸ τῆς οἰκουμένης μήκος ἐπτά που μυριάδων σταδίων ὑπάρχον ἡμισυ εἶναι τοῦ ὅλου κύκλου, καθ' ὃν εἴληπται, <«ὥστε»>, φησὶν, <«ἀπὸ τῆς δύσεως εὐρὺι πλέων ἐν τοσαύταις μυριάσιν ἔλθοι ἂν εἰς Ἰνδοὺς»>.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 28, line 208

οὐ γὰρ φύσει Ἀθηναῖοι μὲν φιλόλογοι, Λακε- δαιμόνιοι δ' οὐ καὶ οἱ ἐτι ἐγγυτέρω Θηβαῖοι, ἀλλὰ μᾶλλον ἔθει· οὕτως οὐδὲ Βαβυ- λῶνιοι φιλόσοφοι φύσει καὶ Αἰγύπτιοι, ἀλλ' ἀσκήσει καὶ ἔθει· καὶ ἵππων τε καὶ βοῶν ἀρετὰς καὶ ἄλλων ζώων οὐ τόποι μόνον ἀλλὰ καὶ ἀσκήσεις ποιοῦσιν· ὁ δὲ συγγεῖ ταῦτα. ἐπαινῶν δὲ τὴν τοιαύτην διαίρεσιν τῶν ἡπειρῶν, οἷα νῦν ἐστι, παραδείγματι χρῆται τῷ τοῦ Ἰνδοὺς τῶν Αἰθιόπων διαφέρειν τῶν ἐν τῇ Λιβύῃ· εὐερνεστέρους γὰρ εἶναι καὶ ἥττον ἐψέσθαι τῇ ξηρασίᾳ τοῦ περιέχοντος.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 53, line 43

..... Ἀλέξαν- δρος δὲ τῆς Ἰνδικῆς στρατείας ὄρια βωμοὺς ἔθετο .

8.49. ERATOSTHENES ET ERATOSTHENICA PHILOL.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 70, line 66

(39) ταῦτα γὰρ ὅπως ποτὲ ἀλη-θείας ἔχει, παρὰ γε τοῖς ἀνθρώποις ἐπεπίστευτο καὶ ἐνενόμιστο, καὶ διὰ τοῦτο καὶ οἱ μάντιες ἐτιμῶντο, ὥστε καὶ βασιλείας ἀξιούσθαι, ὡς τὰ παρὰ τῶν θεῶν ἡμῖν ἐκφέροντες παραγγέλματα καὶ ἐπανορθώματα καὶ ζῶντες καὶ ἀποθανόντες, καθάπερ καὶ ὁ Τειρεσίας, τῷ καὶ τεθνεῶτι νόον πόρε Περσεφόνεια οἷω πεπνῦσθαι· τοὶ δὲ σκιαί αἰσσοῦσι' (Od. κ 495). τοιοῦτος δὲ ὁ Ἀμφιάρεως καὶ ὁ Τροφώνιος καὶ <ὁ> Ὀρφεὺς καὶ ὁ Μουσαῖος καὶ ὁ παρὰ τοῖς Γέταις θεός, [τὸ μὲν παλαιὸν Ζάμολξις Πυθαγόρειός τις, καθ' ἡμᾶς δὲ ὁ τῷ Βυρεβίσται θεσπίζων Δεκαίνεος]· παρὰ δὲ τοῖς Βοσπορηνοῖς Ἀχαΐκαρος, παρὰ δὲ τοῖς Ἰνδοῖς οἱ γυμνοσοφισταί, παρὰ δὲ τοῖς Πέρσαις οἱ Μάγοι καὶ νεκυομάντιες καὶ ἔτι οἱ λεγόμενοι λεκανομάντιες καὶ ὕδρο- μάντιες, παρὰ δὲ τοῖς Ἀσσυρίοις οἱ Χαλδαῖοι, παρὰ δὲ τοῖς Ῥωμαίοις οἱ Τυρρη- νικοὶ † ὠροσκόποι.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 80, line 17

ὥς δὲ λέγεται πρὸς τὴν οἰκουμένην ὅλην καὶ τὰς ἐσχατίας τὰς τοιαύτας, οἷα καὶ ἡ Ἰνδικὴ καὶ ἡ Ἰβηρία, λέγοι ἂν, εἰ ἄρα, τὴν τοιαύτην ἀπόφασιν.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 98a, line 8

...· Εὐδόξος δὲ τὸ μῆκος διπλοῦν τοῦ πλάτους· ὁ δὲ Ἐρατοσθένης (V) πλεῖον τοῦ διπλοῦ· Κράτης δὲ ὡς ἡμικύκλιον· Ἰππαρχος δὲ τραπεζοειδῆ· ἄλλοι οὐροειδῆ· Ποσειδώνιος δὲ ὁ Στωϊκὸς σφενδονοειδῆ καὶ μεσόπλατον ἀπὸ νότου εἰς βορρᾶν, στενὴν πρὸς ἑω καὶ δύσιν, τὰ πρὸς εὐρον δ' ὅμως πλατύτερα <τὰ> πρὸς τὴν Ἰνδικήν.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 114, line 64

(4) διὰ δὲ τὰς αὐτὰς αἰτίας κατὰ μὲν τὴν Αἴγυπτον τοὺς τε χροκοδείλους φύεσθαι καὶ τοὺς ποταμίους ἵππους· κατὰ δὲ τὴν Αἰθιοπίαν καὶ τὴν τῆς Λιβύης ἔρημον ἐλεφάντων τε πλῆθος καὶ παντοδαπῶν ὀφειῶν τε καὶ τῶν ἄλλων θηρίων καὶ δρακόντων ἐξηλλαγμένων τοῖς τε μεγέθεσι καὶ ταῖς ἀλκαῖς· ὁμοίως δὲ καὶ τοὺς περὶ τὴν Ἰνδικὴν ἐλέφαντας ὑπερβάλλοντας τοῖς τε ὄγκοις καὶ πλήθεσιν, ἔτι δὲ ταῖς ἀλκαῖς.

Posidonius Phil., Fragmenta Volume-Jacoby'-F 2a,87,F, fragment 114, line 103

(3) ὁ δ' αὐτὸς λόγος καὶ κατὰ τὰς ἄλλας χώρας τῆς γῆς τὰς κατὰ τὴν ὁμοίαν κραῖσιν κειμένας, λέγω δ' Ἰνδικὴν καὶ τὴν Ἐρυθρὰν θάλατταν, ἔτι δὲ Αἰθιοπίαν καὶ τινὰ μέρη τῆς Λιβύης.

8.49 Eratosthenes et Eratosthenica Philol.

Eratosthenes et Eratosthenica Philol., Catasterismi (0222: 001) "Pseudo-Eratosthenis catasterismi", Ed. Olivieri, A. Leipzig: Teubner, 1897; Mythographi Graeci 3.1. Chapter 1, section 5R[:], line 19

Ἡφαίστου δὲ ἔργον εἶναι φασιν ἐκ χρυσοῦ πυράδους καὶ λίθων ἰνδικῶν· ἰστο-ρεῖται δὲ διὰ τούτου καὶ τὸν Θησέα σωθῆναι ἐκ τοῦ λαβυρίνθου ποιούντος τοῦ στεφάνου φέγγος· ἐν δὲ

CHAPTER 8. UNSORTED ENTRIES

τοῖς ἀστροῖς ὕστερον αὐτὸν τεθεικέναι, ὅτε εἰς Νάξον ἦλθον ἀμφοτέρω, σημείον τῆς αἵρέσεως· συνεδόκει δὲ καὶ τοῖς θεοῖς.

Eratosthenes et Eratosthenica Philol., Catasterismi Chapter 1, section 5D, line 14

Ἡφαίστου δὲ ἔργον εἶναι φασιν ἐκ χρυσοῦ πυρώδους καὶ λίθων ἰνδικῶν· ἴστο- ρεῖται δὲ καὶ διὰ τούτου τὸν Θησέα σεσῶσθαι ἐκ τοῦ λαβυρίνθου, φέγγος ποιούντος.

8.50 Theodore (? Abu-Qurrah) | (? of Nicaea)

“” (From Wikipedia¹) Theodorus Epist., Epistulae (3158: 001) “Épistoliers byzantins du x^e siècle”, Ed. Darrouzès, J. Paris: Institut Français d’Études Byzantines, 1960; Archives de l’orient chrétien 6. Epistle 7, line 21

Τὸν δὲ κοινωνοῦντά σοι καὶ τῆς στέγης καὶ τοῦ πρὸς ἐμὲ φίλτρου ὡς ἐξ ἡμῶν προσαγό- ρευσον· οὕτω γὰρ τὰς ὀλυμπιακὰς ἐδοξάμην θρίδακας ὑπὲρ τοὺς τῶν Ἰνδῶν λυχνίτας καὶ σμαράγδους· εἰ δὲ δι’ ἐπιστολῆς ἡμᾶς οὗτος δεξιῶσεται, τάχα ἂν τῶν αὐτοῦ σπερμάτων τοὺς καρποὺς φάγεται· ὁμῶς ἔρρωσο καὶ αὐτός· τοῦτο γὰρ φίλον ἐμοί.

1.